

في المالية الم



لِالتَّيْخِ بِجَدِّرُ لِرُكِنَ بِن زُنِي بَكْرِهَ لَالْ لِلْرِينِ السَّيوطِي عاا٥٩٥

شاح چ<u>چ</u>م*ولانامجگان بُلکانهٔ هُوی استاد دَارالعُلوم دَیّوبند*

نَاشِيرَ --- زمكزمر ميكاشيكرر --- نزدمُقدس مُنْتَجِدُ أُرْدُوبَازْارْ الْاَلِيْقِ --- نزدمُقدس مُنْتَجِدُ أُرْدُوبَازْارْ الْاَلِيْقِ

جُلَامِقُونَ جَيَّ الْمُرْكِفُوطُ هِيْنَ

" بَحَمُّالْ لَذِنْ اللَّهِ فَيْنَ " بَحَمُلِالْ لَذِنْ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ اللَ المَسْزَفَرَ بَهِ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللللْمُ اللَّهُ الللللِّلْمُلِّلِي اللللللِّلْمُ الللللِّلْمُ الللللللِّلْمُ الللللللللِّ

از جَجِينَ وَلِاللَّهُ عَلَيْجَالَ بُلِكَانِهُ هَوَيْ

اس کتاب کا کوئی حصہ بھی فرمستنظر کی اجازت کے بغیر کی بھی ذریعے بشمول فوٹو کا پی برقیاتی یا میکا نیکی یا کسی اور ذریعے ہے نقل نہیں کیا جاسکتا۔

ڡؙؚڶڬؙڮػۣڒۣؖڲڒؚڮ

💥 مكتبديت أهلم، اددوبازادكراجي _ نون 32726608

📜 دارالاشاعت،أردد بازاركرايي

🖬 قدي كتب خار بالقابل آدام باخ كراجي

😫 كتيدرهانيه أردوبازارلامور

🗱 كتيدرشديد مركى دود كوك

👪 مكتبه علميه ، علوم حقانيه اكوژ و نشك

كتاب كانام _____ فرورى مان ما من المناه المن المناه المن المان المن المناه المن المناه المن المناه المن المناه ال

Madrassah Arabia Islamia

1 Azaad Avenue P.O Box 9786-1750 Azaadville South Africa Tel . 00(27)114132786

Azhar Academy Ltd.

54-68 Little Mord Lane Manor Park London E12 5QA Phone: 020-8911-9797

ISLAMIC BOOK CENTRE

119-121 Halliwell Road, Bolton Bit 3NE U.S.A

TeVFax: 01204-389080

AL FAROOD INTERNATIONAL 38

58, Asfordby Street Leicester LE5-3QG Tel: 0044-118-2537640 شاه زیب سینزز دمقدس معجد، آرد و بازار کراچی

ون: 021-32760374

فيس: 32725673 -021

ائ کیل: zamzam01@cyber.net.pk

ویب سائٹ: zamzampublishers.com



الشيخ محرجمال القاتمي استاذ دارلعلوم ديوبند (الهند)

MAULANA MOHD, JAMAL QASMI (PROF.)

DARUL ULOOM DEOBAND DISTT. SAHARANPUR (U.P) INDIA PIN 247554 PHONE. 01338-224147 Mob. 9412848280

كبسانوا ارعن الزكرييم مالين في ارد حلالين كم صقوق إناعت ولما عست المي الك سامدہ کے کت یاکستان می تولانا فحر زمنی بن سر المجمد مالک زمز ، بدلت رای درمرے کے بی درا باکسان می کوی الداره مالين كاكل يا جزوك وف عت وطياعت كالجاز ريوا لصورت دیمراداره رمز کو ما فرنی جاره جولی کا اختیار بو کا استا و داراسه دیوند المد ١١ د مرات ع مراا رساله

فهرست مضامين جلد ششم

| صفحةبر | عناوين | صخيم | عناوين |
|--------|---|--------------------|---|
| ۸۲ | صلح حديد بيبيكا واقعدا جمالا: | | سورة احقاف |
| ۸۳ | واقعهُ حديبيدي تفصيل اور تاريخي پس منظر: | F Z | يهال شاہدے كون مراد ہے؟ |
| ۸۳ | الل مكه كى مقابله كے لئے تيارى: | rr | شان نزول: |
| ۸۳ | خبررسانی کاساده ممرعجیب طریقه: | ۳۳ | قریش کاعوام الناس کو بہکانے کا ہتھنڈہ: |
| | عروہ بن مسعود سفارت کا رکی حیثیبت سے | P"P" | تکبراورغرور عقل کو بھی سنج کردیتا ہے: |
| ۸۵ | آپ ﷺ کی خدمت میں: | المالية المالية | استنقامت على التوحيد كامفهوم: |
| Ê | حضرت عثمان تفعّالله منهم المروائل اورآ م | 20 | والده كي خدمت كي زياده تا كيد كيون؟ |
| ۸۵ | عَدُ كَا قُرِيشَ كَمَام بِيغَام: | ra | شان نزول: |
| | قریش کے ستر آ دمیوں کی گرفتاری اور | ۳٩ | ا كثر مدت ممل اورمدت رضاعت مين فقها وكا اختلاف: |
| PA | آپ کی خدمت میں پیشی: | ۳٦ | ربطآ يات: |
| ۸۷ | بيعت رضوان كاواقعه: | 6.4 | جنات کے قرآن سننے کا واقعہ: |
| | گفت وشنیداور بحث ومباحثہ کے بعد جوسلح نامہ لکھا گیا | P'4 | جنات میں ہے کوئی رسول نہیں: |
| ۸۸ | اس کی دفعات مندرجه ذیل تھیں: | | سورة قتال |
| | شرا تطملح سے عام سحابہ کرام تضوّف تعالیفان کی | ۵۷ | جنگی قیدیوں کے بارے میں اسلامی نقطہ نظر: |
| ۸۸ | ناراصی اور رنج: | | میروعیت جہادی ایک حکمت: |
| A9 | ایک حادثهٔ اور پابندی معاہدہ کی بےنظیر مثال: | ۵۸ | |
| 9+ | احرام کھولنااور قربانی کے جانور ذیح کرنا: | | کھڑے ہوکر کھانے کی ممانعت: |
| 9+ | معجز ے کاظہور: | | شانِ نزول: |
| | صحابه کے ایمان اور اطاعت رسول کا ایک اور امتحان اور | 79 | شانِ نزول: |
| 41 | صحابه کی بے نظیر قوت ایمانی: | 41 | صلەر حمى كى تخت تاكىد : |
| 91 | و فاءعبد كا دوسرابِ نظيروا قعه: | | سورة فتح |
| 1 | صحابہ کے لئے سندخوشتودی: | Ar | سورت كانام: |
| | | | |

| صفحةنمبر | عناوين | صختبر | عناوين |
|----------|--|------------|---|
| Ira | يهلا واقعه: | !•• | صحابه کرام پرزبان طعن وشنیع بد بختی ہے: |
| PH | بعض القاب كالشتناء: | t+1 | شجرة رضوان: |
| 172 | نخن حرام: | 1+1 | فتح نيبر: |
| 11/2 | نظن واجب: | 1+2 | شان نزول: |
| IPA | ظن مباح: | 1+1 | صحابه تَضَعَلَكُ مُنَالِعَنَهُ كَ فَصَائِلَ |
| IPA | نظمن مستحب: | | سورة حجرات |
| 179 | شان زول: | | 1 |
| 144 | شان نزول: | 110 | شان نزول: |
| 1970 | اسلام اورا بمان ایک ہیں یا پھیفرق ہے؟ | нь | زمانة نزول: |
| ,, - | - | | علماء دین اور دینی مقتدا ؤں کے ساتھ بھی یہی |
| | سورهٔ ق | ۵۱۱ | ا د ب ملحوظ رکھنا جا ہے: |
| ira | سورهٔ نُ می خصوصیات: | 11.4 | شان زول: |
| 120 | سورهٔ ق کی اہمیت: | 11.4 | حجرات امهات المونين: |
| ۱۳۵ | كيا آسان نظرآ تائے؟ | 114 | شان نزول: |
| 120 | آب يَعْقَافِقَةُ كَي بعثت بِرشر كبين مكد كوتعب: | | عدالت محابه فغ فلي كنة الصينة كم تعلق أيك |
| 124 | د وسر اتعجب: | 84 | ا ہم سوال اوراس کا جواب: |
| 124 | كفار مكه تذبذب اورب يقنى كے شكار تھے: | IIA | سی صحابی کو فاسق کہنا درست نہیں ہے: |
| 174 | قَ مِ نُو حَصَّلَ الْعَلَى ال | IIA | اس آیت ہے شان زول میں فاس کس کوکہا گیا: |
| 174 | اصحاب الرِّس كون لوگ ميں؟ | 119 | شان نزول: |
| ITA | اصحاب الايكه: | | مسأئل متعلقة مسلمانوں کے دوگر وجوں کی |
| IFA | قوم تبع: | 114 | بالهمى لرائى كى چندصورتم بين: |
| irr | ربط آیات: | | شانِ نزول: |
| | | | |

| صفحةمبر | عناوين | صفحة نمير | عناوين |
|-------------|---|-----------|---|
| | سورة نجم | IFF | الله تعالیٰ انسان کی شدرگ ہے بھی زیادہ قریب ہے: |
| | | (Pr | اعمال کور کارڈ کرنے والے فرشتے: |
| 149 | ر ليط: خ | الساسان | انسان کا ہرقول رکار ڈکیا جاتا ہے: |
| 1/4 | المصوصيات سورهٔ جم: | In'A | اوّاب کون لوگ ہیں؟ |
| 191" | ایک علمی اشکال اوراس کا جواب: | | سورة والذاريات |
| ř** | صغیره دکبیره گناه میں فرق: | y. | |
| r+ 4 | شان زول: | 104 | صدقه وخیرات کرنے والول کوخاص ہدایت: |
| Y+2 | تنین انهم اصول: | HE | آدابِ مهمانی: |
| r•A | تنین اہم اصول: | ۱۲۵ | وه نشانی کیانتھی؟ |
| r•A | مئلهایصال تواب: | AYI | ربط:ربط: |
| 149 | عبادات کی تلین قشمیں: | 144 | اعتراض اول: |
| *1+ | ايسال ثواب كي حقيقت: | 149 | اعتراض اول کا پہلا جواب: |
| / [• | قرآن خوانی کاایسال ثواب: | 144 | ند کوره اعتراض کا دوسرا جواب: |
| 711 | ابصال عذاب ممكن تبين: | (4+) | ند کوره اعتراض کا تیسرا جواب: |
| FIL | خالص بدنی عبادات میں نیابت اوران کا ایصال ثواب: | 14+ | د وسراا شكال: |
| MI | مأنعيين كااستدلال: | 14. | دوسرے اشکال کا جواب: |
| | سورة قمر | | سورة طور |
| *** | ربط: | 120 | سورة الطّور: |
| *** | زمانة مزول: | | بشرط ایمان بزرگوں ہے تعلق نسبی آخرت |
| *** | معجزة شق القمر: | الا | مین نفع د ہے گا: |
| rri | واقعه كي تفصيل: | fAr | كفارة مجلس: |
| | الْمُزَّمُ بِبَالتَهِ الْمُ | | |

| صفحتبر | عناوين | صغخبر | عناوين |
|-------------|---|-------|---|
| ۳۳۳ | شانِ زول: | PPI | كفاركا دليل صدافت كومان يسانكار: |
| TOT | ريط: | rri | ايك مغالطه: |
| | سورة واقعه | rrr | چاند کے دو کلڑے ہو گئے یا قرب قیامت میں ہول گے: |
| | | 111 | معجز وَشق القمر براعتر إضات: |
| TOA | رابط: | *** | كرة ارض أيك ز ماند مين متصل أيك كره تها: |
| ran | سورهٔ واقعه کی خصوصی فضیلت: | **** | 🛈 افجارارض کی پہلی دلیل: |
| roa | عبدالله بن مسعود کے مرض الوفات کاسبق آ موز واقعہ: . | *** | 🕝 دومري دليل: |
| r69" | میدان حشر میں حاضرین کی تین قسمیں ہوں گی: | *** | 🗃 تيسري دليل: |
| | قرآن بے طہارت چھونے کے مسئلہ میں | *** | 🛈 دوسرااعتراض: |
| 1 21 | فقهاء کے مسالک: | TTT | 🗨 پېلاواقعه: |
| 1 21 | مسلك حنفي: | rra | 🕡 دومراواقعه: |
| 121 | مسلک شافعی: | 770 | تاریخی شهادت: |
| 121 | مالكى مسلك: | | حضرت صالح علي كالشب نامه: |
| 12 Y | مسلك عنبلي: | 111 | قوم شود کی بستیا ں : |
| | مىلكىنىن سورة حديد | 1771 | واقعه كي تفصيل: |
| | سوره حدید | rmr | توم لوط كااجمالي واقعه: |
| 144 | رنيا: | rrr | بائبل کے الفاظ: |
| 122 | سورة حديد كے فضائل: | rra | خلاصة كلام: |
| 144 | لطيف كمته: | | ایک پیشکو ئی: |
| rA• | راہِ خدا میں خرج کرنے کی ترغیب وفضیات: | ተተለ | مئلهٔ تقدیم: |
| MY | انفاق في سبيل الله كاعجيب واقعه: | | ً سورة رحمٰن |
| rar | د نیا کی ناپائیداری کی ایک مشاہداتی مثال: | | سيرت ابن بشام كي ايك روايت: |
| | | | يركِ، ان من المن المنظرة المن |

| صفحتمبر | عناه ين | صغينبر | عناوين |
|--------------------|---|---------------|--|
| mil | 🗗 تيسراواقعه: | rgm | مثال كاخلاصه: |
| 1 "11 | 🕝 چوتخاداتهه: | F97' | الله کی یاد سے غافل کرنے والی دو چیزیں: |
| r rii - | 🙆 پانچوال واقعه: | ray | ربطآ يات: |
| 1"11 | 🕥 چيناواقعه: | 794 | ر هبا نيت كامغبوم: |
| P 11 | 🗗 ساتوان واقعه: | | رببانيت مطلقا مذموم وناجا تزب ياس ميس |
| rir | خفیه مشورول کے متعلق مدایات: | ree | کے تفسیل ہے؟: |
| MIT | مسلمانوں کے لئے سر کوشی ہے متعلق ہدایت: | | سورة مجادله |
| FIF | ندكوروآيت كاشان زول: | | |
| | سورة الحشر | , , , | شان نزول المستعمل الم |
| | | bn+ln. | مئله ظهارے تین اصولی بنیادی مستنبط ہوتی ہیں: |
| rr | رابط: | 4. •4. | الرکی تعریف اوراس کاشری عظم: |
| 277 | شان زول: | F+0 | مسائل: |
| 770 | بيرمعو نداور عمروبن اميضم ي كاواقعه: | F-0 | کیامرد کی طرح عورت بھی ظہار کر شکتی ہے؟ |
| rry | يېود كا تارىخى پىل منظر : | F-Y | كفارة ظهاراد اكرنے سے ملتعلق قائم كرنے كا تھم : |
| mrA. | مېوداوران کې عبد شکني: | | بیوی کوس کے ساتھ تشبید ینا ظہار ہے؟ |
| TTA | کعب بن اشرف کاقتل اوراس کے اسباب: | r=2 | ظهار كے صريح اور غيرصر يح الفاظ كيا جي ؟ |
| | کعب بن اشرف اوراس کی درید ه دُنی اور | | ندكوره مسائل عے مراجع اور مصاور: |
| P*** | قتل کے اسباب: | r.2 | خوله بنت نقلبه صحابه کرام کی نظر میں: |
| rr • | بنونضير کی جلاوطنی کے وقت مسلمانوں کی رواداری: | ! "I+ | شان نزول: |
| | آپ پھیٹیٹا کے بدر ین دشمن کے ساتھ | 171 + | اسباب نزول ان آیات کے چندوا قعات ہیں: |
| rr. | يه مثال رواداري | | 🕡 اول داقعه: |
| ۳۳۰ | يېود کې شرارت اور پدعېدې: | | ودمراواتعه: |
| | الْمُؤَمُّ بِيَالِثَهُ إِنْ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ | | |

| صغيبر | عنادين | صفخبر | عناوين |
|--------------|---|---------|--|
| | سورة صف | rrr | ند کوره مسئله کی مزید وضاحت |
| 7 74 | شان زول: | bule. | غزوهٔ بن قعیقاع: |
| 7 21 | محمرنام رکھنے کی وجہ: | | سورة ممتحنه |
| 1 21 | عبدالمطلب كے خواب كى تعبير: | roi | خلاصته کلام: |
| 72r | انجیل میں محر کے بجائے احمد نام سے بشارت کی مصلحت: | roi | ند کوره اعتراض کا دوسراجواب: |
| r ∠r | الجيل مِن محمد رسول الله ﷺ كي بشارت: | 701 | شان زول: |
| 727 | کیلی بشارت: | rar | واقعه کی تفصیل: |
| P2 P | دوسری بشارت: | ror | محط كامنتن: |
| 721° | تیسری بشارت: دیم مور مین | | واطب بن الى بلنعد للفَاللهُ تَعَاللهُ آبِ وَعَلَامَهُ لَكُ كَا |
| F20 | چوتمی بشارت: حداری بر ۲۱۴ مکانتهار ف | ror | غدمت میں: |
| FLA | انجیل برنایاس کانغارف: | P04 | شان نزول: |
| rA+ | انجیل برناباس کی مخالفت کی اصل دجه: | raq | معاہدۂ سلح عدیبیا کی بعض شرا اکا کی تحقیق: |
| PAI | آب عَقَالِيًا كَن آمكا ثبوت الل كمّاب عند | P.4+ | ندکوره آیات کا پس منظر: روی میانده به اروسیان به |
| TAT | شان نزول: | F 11 | مهاجرات کاامتحان کینے کاطریقہ: |
| MA | عيمائيول كے تمن فرقے: | P**10" | کیامسلمانوں کی بچھے مورتیں مرتد ہوکر مکہ چلی گئے تھیں؟ . عورتوں کی بیعت : |
| | چواری برناباس کا تعارف انجیل برناباس کا تعارف انجیل برناباس کی خالفت کی اصل وجه: آپ شیختان کی آمد کا شوت الل کماب سے: شان نزول: عیما ئیوں کے تین فرقے: | mate. | ابوسفیان نوخاننهٔ مُعَالِثَةُ کی بیوی مند بنت عتبه کی بیعت: |
| 17 19 | زمانة نزول: | lm.Alu. | دوا ہم قانونی کلتے: |
| r 41 | بعثت نبوی کے تمین مقاصد : شان نزول : | PYF | پېلاا جم نکتهٔ |
| may. | شان زول: | מציין | دوسراانهم نکته |
| | | | اِمْزَ مُ سَالِنَهُ اِ اِ |

| 1:0 | et les | صفختبر | , r , l-e |
|--------|--|--------------|--|
| صغحهم | عناوين | که بر | عمناو بين |
| | سورة تحريم | | سورة منافقون |
| ٠٣٠ | شانِ زول: | l.,++ | سورهٔ منافقون کے نزول کامفصل واقعہ: |
| ا۳۳ | حضرت ماريه وَقِعَالِمُلِمَتَ النَّفِقَا كاواقعه: | (*** | غزوهٔ مریسیع کا سبب: |
| ۳۳۲ | حفرت زينب رَقِحَالِمُنْكُمَّنَا لَيْهَا كَاوا قد: | f*+1 | ايك نا خوشگوار واقعه: |
| | حضرت نينب رَقِعَالِمُنَّعَالِكَفَا كاواتد: مسورة ملك | (4.4) | عبدامتدین أنی کی شرارت: |
| 66. L | ق بات: | | سورة تغابن |
| ~~~ | سورهٔ ملک کے نصائل: سورهٔ ملک کے دیگرتام: موت وحیات کے درجات مختلفہ: | r*4 | ئىانو را كى صرف دوېى قىتمىيى بىي: |
| מהר | سورة ملك كريكرنام: | (r+q | ر پودارنغره. |
| L,L,L, | موت وحیات کے درجات مختلفہ: | ("1+ | فىس كون ہے؟ |
| | سورهٔ نون | Mr | ئان نزور: |
| ۲۵۸ | باغ والول كاقصه: شان زول: | MIT . | ئان نزول: |
| ۳۲۲ | شان زول: | | سورة طلاق |
| | سورة حاقه | MIA | ورهٔ طلاق کے نزول کا مقصد: |
| | سورة معارج | MIA | سلامی عاکلی تا نون کی روح [.] |
| | | [" [" | ىبلاختكم بىلاختكى |
| ۳۷۲ | شان زول: | וזייז | وسراحكم |
| ۳۷۸ | نیامت کادن ایک ہزار سال کا ہوگایا بچاس ہزار سال: ء | rri | بسراحكم |
| | سورة نوح | mri | وعلى علم |
| ram | شان زول: نیامت کادن ایک بزار سال کا بوگایا بچاس بزار سال:. سورهٔ نوح نفرت توح علیه کافران کا | rrs | لَلْهُنَ كَيْ نَسِيرا حاديث كَي روشْني مِين أَ |
| | | | <u> </u> |

| صفحة نمبر | عناوين | صفحنبر | عن و ين |
|-----------|--|--------------|---|
| | سورهٔ نبأ | የ 'ለም | حضرت و ح عليلا والفياد كا واقعه إجمالاً: |
| ۵۳۹ | ر رو . نیند بهت بروی نعمت ہے: | | سورة جن |
| | سورة نازعات | ("91" | شان نزول: |
| | نفس اورروح سے متعلق قاضی ثناء اللہ رَحِّمَ کلالْمُعَمَّلِانَ مَعَالَیْ | rer | 🛈 پېلاواقعه: |
| 004 | ى تختين: | rgr | 🕝 دوسراواقعه: |
| | سورة عبس | rer | 🕝 تيسراوا تعه: |
| | سوره عبس | rgr | چوتند واقتد: |
| AFG | ى بېلااشكال: | rey | علم غیب اور غیبی خبروں میں فرق: |
| AYA | دوسراا مخال: | | سورة مزمل |
| AFG | اشكال اول كاجواب: | | |
| AFG | وومراء الشكال كاجواب: | | سورة مدثر |
| 944 | شان زول: | ۵۱۳ | شان نزول: |
| ۵۷۰ | آب يَعْقَدُهُمُنا كا اجتها داوراس كي اصلاح: | ۵۱۵ | متفقہ لائحۂ عمل کے سئے مشرکین مکہ کی کا نفرنس: |
| ۵۷۰ | تبلغ وتعليم كالكه اجم قر آنى اصول: | | |
| | سورة التكوير | | سورهٔ قدامه . نفس اوره ، لوامد ، مطمئنه |
| ٥٢٢ | اڑ کیوں کوزندہ دفن کرنے کی وجہ: | arr | |
| ۵۷۸ | بٹی <i>کے ساتھ ہے رحی</i> کا واقعہ '۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ | | سورة انسان |
| ۵۷۸ | اسلام كاعورت يراحسان: | ara | نذر ما نے کی چند تمرا نکلا ' |
| | سورة انفطار | | سورة مرسلات |
| | *************************************** | 1 | |
| | | | ه (وَكَزَم بِسَبُلَسَّ فِيْ) > |

| صفحةنمبر | عناو ين | صخيبر | عناوين |
|-------------|---|-------|---|
| | سورة والشمس | | سورة مطففين |
| | سورة الليل | | سورة انشقاق |
| 786 | سعی اور عمل کے اعتبار ہے انسانوں کی تشمیں: | | \$ |
| 488 | محلبه كرام رَبَعَ فَ مَعَالَكُ جَنَّم مَ مَعْفُوظ مِن | | سورة بروج |
| 777 | شان نزول: | ۸۹۸ | سورهٔ بروج کے نزول کی حکمت: |
| | سورة والضخي | ۵۹۸ | صى ب اخدو د كا واقعه: |
| 172 | شان زول: | 7** | جيب تاريخي واقعه: |
| | سورة المرنشرح | 7** | 🛭 پېپلەداقعە: |
| | 141414111-14144444444444444444444444444 | Y++ | 🛭 دومراواقعه: |
| | سورة والتين | 741 | 🗗 تيسراوا تعه: |
| 444 | حسنِ انسانی کاایک جیب واقعه: | | سورة طارق |
| | سورة اقرأ | | 1 _ 1 = |
| 101 | ىب سے میمیلی وحی: | | سورة اعلى |
| Tar | ئايىزول: | | سورة غاشيه |
| 101 | آغاز دى كاواقعه: | | |
| 105 | عارحراء مين قيام كامرت: | AID | بعض " داب معاشرت |
| ۳۵۳ | دومرے حصہ کا شان نزول: | | سورة فجر |
| | سورة قدر | | *************************************** |
| rar | شان زول: | | سورة بلد |
| | ح (مَرْزَم بِبَلتَ فِي) > | - | |

| صفحةمبر | عناو بن | صفخمبر | عناوين |
|---------|---|----------|--|
| | (. à | 104 | سلة القدر كم عنى: |
| | سورة فيل | 104 | ليلة القدر كي تعيين: |
| 444 | واقعه کی تفصیل اور پس منظر: | ı | . سورة بينه |
| PAF | تاریخی پی سنظر | uub | سورت کامضمون اورمو ضوع: |
| 191 | مقصودكلام: | 444 | |
| | سورة قريش | | سورة زلزال |
| | *************************************** | YYY | فضائل سورت: |
| | سورة ماعون | PPF | زلزلدہے کون سازلزلہ مرادہے؟ |
| 194 | مجيب واقنعه: | | سورة والعاديات |
| | سورة كوثر | | and the first of t |
| | | | سورة القارعه |
| ۷•• | شاپزول: | 146 | وزن اعمال کے متعلق ایک شیداوراس کا جواب: |
| | سورة كافرون | | سورة تكاثر |
| ∠•٢ | اس مورت کے فضائل اور خواص: | Y44 | سورهٔ تکاتر کی فضیلت: |
| ۷۰۳ | شان زول: | | سورة عصر |
| 4.4 | کفارسے ملے کیفن مسائل: مسورة نصو | | _ |
| | سو ر هٔ نصر | IAF | سورة العصر کی فضیلت: سرمعند سرین سر |
| 4.34 | قرآن مجیدگ آخری سورت اور آخری آیات · | • | مورت کے مغمون کے ساتھ ڈیانہ کی مناسبت: |
| ۷•۲ | | | نجات کے لئے مرف اپٹے ممل کی اصلاح کافی نہیں بر |
| | آپﷺ کی و فات کے قریب آ جانے کی ملین میشند | I | بلکه دوسرول کی فکر بھی ضروری ہے: |
| 4.4 | طرف اشاره: جب موت قریب ہوتو تبیج واستغفار کرنی جا ہے | | سورة همزه |
| | جب موت قریب ہوتو تن واستعفار مرق جائے | <u> </u> | ح (مَئزَمُ بِبَالثَانِ ﴾ |
| | | | الرابها المالية |

| صفحةبر | عناوين | صفخمبر | عناوين | |
|--------------|--|---------------|---|--|
| | سورة الناس | 4.1 | سورهٔ ابی لهب | |
| | سورة فاتحه | ۷•۱ | شىزول: سورة اخلاص | |
| 44 | خلاصة الكلام: | ∠1 1 ° | سورة اخلاص كى فضيلت: | |
| ۲۳۱ | ردی ^{بر} لی دلیل: | کا لا | ش ن نزول | |
| اسم | دوسري دليل: | | سورہ اخلاص میں مکمل تو حبیداور ہرطرح کے | |
| ∠۳۱ | اعتراض ادراس کی تفصیل تقریمی: | 210 | شرک کی نفی ہے: | |
| 28°F | پہلی شق کوا ختیار کر سے جواب کی تقریر: | | سورة فلق | |
| ∠ r r | دوسری شق کواختیار کرنے کی صورت میں جواب: | 212 | سور و فعن اورسور و ناس کے فضائل: | |
| 2 mm | قرآنی سورتول کوسورت کہنے کی وجہشمید | ∠I ∧ | سحر، نظر بداورتمام آفات كاعلاج: | |
| <u> ۲۳۵</u> | مورهٔ فاتحه کے فضائل و خصوصیات: | 41 A | زمانة نزول: | |
| ۷۳۵ | ایک تنبیدن | ∠19 | آپ ﷺ پرجاد و کااثر ہونا: | |
| 4 84 | بم الله ہے متعلق مباحث: | | واقعه کی تفصیل: | |
| 484 | سورهٔ فاتخه کے مضامین: | | معو ذتمین کی قرآنیت: قرآن میں مخالفین کاطعن: | |
| 272 | ۇغاء: | | طعن کے جوارت · | |
| | ا قشه جات | ******** | ************* | |
| | rr | | صحرائے احقاف کا نقشہ: | |
| | ۴۸ | | | |
| 1 | 19 <u>r</u> | | | |
| ł | PYZ | | | |
| ۵ | 9Y | | ط رحل آسان کی خوبصور تی کا نقشہ: | |
| I | | | | |

به غانیخن وکلمات نشکر

الحمد منتد کہ جمالین شرح اردو جلالین نصف ٹانی کی چھٹی اور آخری جلد جو کہ سور ہُ احقاف ہے سور ہُ ناس تک مع سور ہُ فاتحہ پائچ پاروں پر ششتل ہے، منظر عام پر آر بھی ہے، مولائے کریم کا بیچھٹی کرم وفضل بھی ہے کہ چھا او کی قلیل مدت میں تقریباً سوا سات سوصفحات پر ششتل چھٹی جلد آپ کے ہاتھوں میں ہے، نصف ٹانی کی دوجلدیں چہارم و پنجم شائع ہو کرعلمی صلقوں میں تبول عام حاصل کرچکی ہیں۔

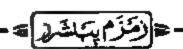
جلالین کی تشری کرتے وقت اس بات کا بطور خاص خیال رکھا گیا ہے کہ جلالین کا کوئی مقام تشد کام ندرہ جائے ،مشکل اور پیچیدہ ترکیبوں کو بطور خاص حل کرنے کی کوشش کی گئی ہے، لغات کومتنداور معتبر کتابوں کی مدد ہے حل کیا گیا ہے، جاب قرآنی تاریخ کے تنگین اور سادہ نقشے دیئے گئے ہیں تا کہ معلوم ذبنی اور موجود خارجی میں مطابقت کے ذریعی وجہ البصیرت استفادہ کیا جاسکے، جلد چہارم کا پہلا ایڈیشن تقریباً فتم ہور ہا ہے، تھے واصلاح کے بعداس کو دوبارہ شائع کیا جارہا ہے، چوتھی جلد میں بھی حسب موقع قرآنی تاریخی تنگین اور سادہ نقشوں کا اضافہ کردیا گیا ہے؛ تا کہ یکسانیت باتی رہ سکے۔

انشاء التدالعزيز جلالين كے نصف اول كى پانچ پاروں پرمشتل بہلی جلد چھ ماہ میں امید ہے كہ منظر عام پر آج ئے گی، اللہ تعالیٰ سے دعاء ہے كہاس كار عظیم كے انجام دینے كی تو فیق اور ہمت عطافر مائے۔ (آمین)

فقظ والسلام احقر محمد جمال سيفی استاذ دارائعلوم ديوبند

لۇن: 01338-224147





٩

سُوْرَةُ أَلاَ حُقَافِ مَكِيَّةُ الاقُلُ ارَأَيْتُم اِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللهِ الاية والا فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ أُولُو الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ الآية والا وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ الثَّلَاثُ اياتٍ وهي اربع او خمس وثلثون آية. الإِنْسَانَ بِوَ الِدَيْهِ الثَّلَاثُ اياتٍ وهي اربع او خمس وثلثون آية. سورة احقاف كل مهم سوائ قُلُ ارَأَيْتُمْ (الآية) اورسوائ فَلْ ارَأَيْتُمْ (الآية) اورسوائ فَاصْبِرُ كَمَا صَبَر (الآية) اورسوائ وَوَصَّيْنَا الإِنْسَانَ كَ فَاصْبِرُ كَمَا صَبَر (الآية) اورسوائ وَوَصَّيْنَا الإِنْسَانَ كَ فَاصْبِرُ كَمَا صَبَر (الآية) اورسوائ وَوَصَّيْنَا الإِنْسَانَ كَ الْمَارِيَّ الْمِيْنَ الْمِيْسَانَ الْمِيْسَانَ كَ الْمَانِيْنَ الْمُانِيْنَ الْمِيْسَانَ الْمُرْسَانَ الْمُعْمَا صَبَرَ (الآية) اورسوائ وَوَصَّيْنَا الإِنْسَانَ كَ

كَفِرِيْنَ ۞ حَاجِدِيْنَ وَإِذَاتُتُلَكَعَلِيْهِمْ اي اَهُلِ مِكَة أَيْتُنَا النُّرالُ بَيِّنْتٍ طَاهِرَاتٍ حَالٌ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا مِنهِم لِلْحَقِّ اي القُرانِ لَمَّاجَاءَهُمُ كُلُولُونَ البِيحُرُّمُ بِينَ فَاهِرٌ أَمْرِ سمعني بلُ وهَمْرَةِ الانكار يَقُولُونَ افْتَرابِهُ ۗ اي النُّران **قُلُّ إِنِ افْتَرَبْيَتُهُ** فرُضًا ف**َلَاتُمْلِكُنُونَ لِي مِنَ اللهِ** من عذانه شَيِّئًا الله لِنقَدِرُونَ على دَفعِه عَنَى إذا عدَبى اللهُ هُوَاعُلَمُ بِمَاتُفِيضُونَ فِيهِ تَعْوَلُونَ فِي النُران كَفَى بِهِ تعالَى شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمُ وَهُوَالْغَفُوْرُ لِمَنْ تَابِ **الْرَحِيْمُ،** مِه فِيهُ يُعَاجِنَكُمُ بِالْعُتُوبِةِ قُلْمَاكُنْتُ بِذَعًا مِنَ الرَّسُلِ اي أوّلَ مُرْسَل قَدْ سَنِقَ مِثْنِيْ قَبْيِي كَثِيْرٌ مِنْهِم فَكَيْف تُكَدِّبُو نَنِي **وَمَّالَدْرِيْ مَالِيُفْعَلُ بِيَّ وَلَالِكُمُ** في الدُنيا اَلْخُرَحُ مِنْ بَلَدي ام أَقْتَلُ كَمَا فُعِلَ بِالْأَنْبِياءَ قَبُلِي او تُرسُونَ بالحجارة ام يُحْسِفُ بِكُم كَالمُكَذِّبِين قَلْلَكم إِنَّ ما أَتَّبِحُ إِلْهُمَايُوْكِي إِلَيَّ اى السَّرانَ ولا انتبعُ سن عِنْدِي شَيْفًا وَمَاأَنَا إِلْانَذِيْرُمُّوِينُ © نَيْنُ الإندار قُلْأَنَا يُتُمْ احبروني مَاذا خَالُكُم إِنْكَانَ اى القُرارُ مِنْ عِنْدِاللّهِ وَكَفَرُ تُمْرِيهِ خُمُنَةٌ خَالِيَةٌ وَشَهِدَ شَاهِدُ مِنْ بَنِيَ اِسْرَاءَيْلَ هُو عَبْدُ اللَّهِ بنُ سلامٍ عَلَى مِثْلِم اي عَلْمِهِ اي أَنَّهُ مِن عِنْد اللَّهِ فَأَصَّ الشَّاهِدُ وَاسْتَكُرُرُتُورٌ تكرتم عن الإيمان ع وجَوَابُ الشَّرُطِ بِمَا عُطِفَ عليه السُّتُم ظالمِينَ دَلَّ عليه لَنَّاللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمُ الظّلِمِينَ ٥

ت بالمجر الله على الله الله كام مع جوبزامبر بان نبايت رحم والاب، حقر ال سابي مرادكوالله بي بهتر جانتا ے، كتاب يعنى قرآن كانازل كرناائي ملك ميں غالب الى صنعت ميں تحكمت والے (خدا) كى طرف سے براك كتاب مبتداء،اورمِنَ اللّه اس کی خبر ہے، ہم نے آ تا نوں اور زمین اوراس کے درمیان کی تمام چیز وں کو حکمت کے ساتھ اور ایک مقررہ مدت (تک) کے لئے پیدا کیا ہے لینی قیامت کے دن ان کے فنا ہونے تک کے لئے ، تا کہ بماری قدرت اور ہماری وحدا نیت پر دلالت کرے اور کافرلوگ جس چیز ہے ڈرائے جاتے ہیں (لیحنی) جس عذاب سے خوف دلائے جاتے ہیں اس سے منہ موڑ لیتے ہیں، آپ کہتے، بھلاد یکھوتو جن کوتم اللہ کے سوایکارتے ہو بندگی کرتے ہو، لیعنی بتوں کی ، مجھے بتاؤ کہانہوں نے زمین کا كونسا حصد پيداكيا ہے ما، تَدْعُونَ كامفعول اول إِ أَرُونِي بَمعَى أَخْدِرُ وْنِي (أَرَايَتُمْ) كى تاكيد ہے (مَاذا خَلَفُو ا)مفعول ٹانی ہے (مِنَ الارْضِ) ما کابیان ہے، یا آ سانوں کی پیدائش میں ان کو اللہ کے ساتھ مشارکت ہے ما استفہام انکاری کے معنی میں ہے میرے یاس کوئی کتاب جواس قرآن ہے پہلے نازل کی گئی ہو لاؤیا کوئی اورمنقول مضمون جوتمہاری بت پرتی کے دعویٰ ک صحت میں اسلاف ہے منقول چلا آیا ہو کہ رہے بت تم کوالقد کا مقرب بنادیں گے اً برتم اپنے دعوے میں سیجے ہواوراس ہے بڑھ کر گمراہ اور کون ہوگا؟ استفہام جمعنی تفی ہے لینی کوئی نہیں جواللہ کے سواایسوں کو پکارے لینی بندگی کرے جوتا قیامت اس کی د عا ہ تبول نہ کرسکیں ، اور وہ بت ہیں ، اپنی عبادت کرنے والوں کے سی سوال کا بھی بھی جواب نہیں دے سکتے ، بلکہ وہ تو ان کی پکار بندگی ہے بے خبرمحض ہیں، اس لئے کہ وہ تو جمادِ لا یعقل ہیں اور جب لوگوں کو جمع کیا جائے گا تو یہ بت ان کے بینی اپنی بندگی - ﴿ [وَمُؤَمِّ بِهَالثَّمْ لِيَا الثَّمَ لِهُ] ٢

19

كرنے والول كے وشمن ہول كے، اور ان كى لينى اپنى عبادت كرنے والول كى عبادت ہى كا انكار كر بينيس كے، اور جب انہیں بعنی اہل مکہ کو ہماری واضح آیتیں بعنی قر آن پڑھ کرسنائی جاتی ہیں تو ان میں کے منکرین حق بعنی منکرین قر آن تھی بات کو جبکہ ان کے پاس آ چکی کہہ دیتے ہیں کہ بیتو کھٹا جادو ہے کہ وہ ہی کہتے ہیں کہ اس قر آن کوتو اس (رسول) نے خور گھڑ لیا ہے؟ اُم بمعنی بسل ہے اور ہمزہ انکار کا ہے، آپ ان سے کہدد بیجئے کہ اگر بالفرض میں نے اس کو گھڑ کیا ہے تو تم مجھے خدا کے عذاب سے ذ را بھی نہیں بچاسکتے ، یعنی جب اللہ مجھے عذاب دینے پرآ ئے توتم اس عذاب کو مجھ ہے دفع نہیں کر سکتے ، قر آن کے بارے میں جو ہا تیں تم بناتے ہووہ اسے خوب جانتا ہے، میرے اور تمہارے درمیان گواہی کے لئے وہی کافی ہے جس نے تو ہے کہ وہ اسے بردا معاف کرنے والا ہے وہ اس پر بڑارحم کرنے والا ہے اس وجہ ہے وہ تمہاری سر امیں جلدی نہیں کرتا آپ کہتے کہ میں کوئی نرالا رسول تو ہوں نہیں یعنی پہلا (رسول تو ہوں نہیں) مجھ سے پہلے میرے جیسے بہت سے رسول گذر چکے ہیں تو تم میری تکذیب کس بنیا دیرکرتے ہو؟ اور میں نہیں جانتا کہ (کل)میرے ساتھ اورتمہارے ساتھ دنیا میں کیا معاملہ کیا جائے گا آیا میں اپنے شہرے نكالا جاؤل گاياتش كيا جاؤل كا؟ جيها كه مجھ سے پہلے انبيائے كے ساتھ كيا گيا، ياتم پر پچتر برسائے جائيں گے ياتم ہے پہلے مكذبين كے ما نندتم زمين دوز كرديئے جاؤ كے ميں تو صرف اى كى بيردى كرتا ہوں جوميرى طرف وحى جيبى جاتى ہے اور میں تو ایک صاف صاف ڈرانے (خبر دار) کرنے والے کے سوا پچھنیں ہوں آپ کہدد بیجئے کہتم مجھ کو یہ بتلا دو کہ اگریہ قراتن منجانب الله مواورتم في اس كان كاركرديا، توتههارا كياانجام موكا؟ (وَ كَفَرْتُهْرِبهِ) جمله حاليه هيم اوراس جيسے كلام پرتو ایک بنی اسرائیل کا گواہ اور وہ عبداللہ بن سلام ہے شہادت بھی دے چکا ہے لینٹی اس بات پر کہ بید (قر آن)منجا نب اللہ ہے اور وہ شاہد ایمان لے آیا اور تم گھمنڈ میں پڑے رہے لینی ایمان کے مقابلہ میں تکبر کرتے رہے اور شرط کا مع اس پر معطوف کے جواب اکستُمْ ظالمین ہے، جس پر اِن الله لا يَهْدى القوم الطّلمين والات كرم الم

جَّقِيق تَرَكِيكِ لِيَسَهُ الْحَقْفِيلِيرِي فَوَائِل

ہوئے جن پرخطمساری میں کچھ کندہ تھالیکن افسوں کے سرمانید کی کی کے باعث اس مہم سے دست بردار ہونا پڑا۔

(لغات القرآن)

فِيَّوَلِينَى، إلَّا بِالْحَقِّ بِالْحَقِّ سَي بِهِلْ خَلْقًا محذوف ال كرمفسرعلام في الله الله الله وكرديا كه بالحقّ متلبسًا كم تعلق مورخلقًا مصدر محذوف كي صفت من القذري عبارت بيه الاخلقًا مُنَلَبّسًا بالحقّ.

فَيُولِكُمْ ؛ و آَجَلِ مُسَمَّى واوَعاطفه ب، آجَلِ كاعطف آلْحَقِّ برب اى بحقٍّ و باَجَلِ مُسَمَّى لِينَ بم نَ آ الوں اور زمين كو برت اور تعيين مدت كے ساتھ پيدا كيا ہے يعن ان كى فنا كا ايك دن متعين ہاور وہ قيامت كا دن ہے ، كلام ميں مضاف محذوف ہے اى وَ إلَّا بتعيينِ اجلِ مسمّى.

قِوُلْ الله وَالله بِهِ كَفَرُوا مُوسولٌ صلت لكر مبتداءاور مُغوضُونَ اس كي خبر باور عَمَّا أُنْدِرُوا، مُغْرِطُونَ ك متعلق ب، ماسم موسول بم مُغرِطُونَ جمله وكرصله ب، عائد محذوف ب جس كي طرف مفسر علام في به مقدر مان كر

قَیْنُ لَکُرُ ؛ عَسَمَ ٱنْدِرُوْا مِیںمَا موصولہ اور مصدریہ دونوں ہوسکتا ہے، موصولہ ہونے کی صورت میں نفذریع بارت بیہ وگی عَنْ عَذَابِ الَّذِی اُندِرُوهُ مُعْرِضُونَ.

قِوَّلِكَمَّى اللهِ الل

چَوَلِی، مُشَارِكُ فی النَحلْقِ، مشارک بمعنی مشارکت ہے اگر مفسر علام رَیِّمَ کُلانلکتَعَالیٰ مشارک کے بجائے مشارکة فرماتے تو زیادہ داضح ہوتا موجودہ ننے ہیں مشارکۃ ہے۔

فِيُولِكُمْ : مِن قبلِ هذا يه بكتابٍ كي صفت بي جومطلق بمنزً ل موياغير منزً ل ١٠٥ إيتونسي بكتابٍ كاننٍ مِن قبلُ مَرمفسرعلام في ابوالبقاء كي اتباع بين مِن قبل كامتعلق خاص يعنى منزل محذوف مانا بي مرمطلق ركهنا زياده بهتر ب

ای کائن من قبل هذا. (حمل)

---- ﴿ (حَزَم بِبَائِينَ ﴾ -

قَوْلَنَى اَنَارَةِ بقيةٍ ، بَقِيَّةٍ كَالصَّافَدِينِ المُعَى كَلِّ هِ اَسْارَة ، غَوَايَة وطَلَالَة كورَن يرمصدر إوريه وَكُولَنَى النَّافَة على اَثَارَةٍ مِن لحمِ ، اى على بقيةٍ منه عصتن على اوريق حضرات فَاتَارة كمعن رواية اورعلامة كريم بيان كي ، فلاصه يركواللُعت كاشارة مِن تين تولي الاشارة بمعنى بقية يه اَتُوتُ الشيء الثارة عصتن عن الأثر ، اى الرواية والنقل عن الأثر ، بمعنى العلامة (اعراب القرآن) مرادوه علوم بين جواسلاف عيد بسين بسين منقول عِلى آتے ہوں۔ العلامة (اعراب القرآن) مرادوه علوم بين جواسلاف عيد بسين بسين منقول عِلى آتے ہوں۔

فَيْوَلِينَ ؛ مِنْ قَبْلِ هذا ، كانن محذوف كم تعلق بوكربكتابٍ كي صفت باور بكتاب ايتُوني كم تعس باور أثَارَةِ

اب برمعطوف ہے۔

فِيُولِينَ ؛ إِنْ كُنْتُهُ صَادِقِينَ شُرط إلى كراء فأتوني محذوف إورصَادِقينَ كنتُمرَى خبر إ-

قِيُّولَ مَنْ لَا يَسْتَجِيْبُ النح مَنْ عَره موصوف بهي موسكتاب ما بعد كاجمله ال كي صفت موكا، تقدير عبارت موكى مَنْ اَضَلُّ مِنْ شَخْصِ يَغْبُدُ شَيْنًا لَا يُجِيْبُهُ: اور موصوله بهي موسكتاب الصورت مين ما بعد كاجمله السكا صله وكا، تقدير عبارت بيه وك

مَنْ أَضَلُّ مِنْ شَخْصٍ يَعْبُدُ الشيءِ الَّذِي لَا يُجِيْبُهُ وَلَا يَنْفَعُهُ في الدنيا وَلَا فِي الآخرة.

فَيُولِن ؛ مَنْ لَا يَسْتَجِيْبُ لَهُ جِلد بوكريَدْعو اكامفعول بب-

فَخُولِ ﴾ النبي يومِ القِيمامَةِ يه لَا يَسْتَجِيْبُ كَي عَايت بِ، جَسَ سے بظامِ معلوم ہوتا ہے كہ قيامت كے بعد اِستجابة ہوگى ، باير طور كه عايت مغيامي واظل نه ہو، حالانكه ايمانبيس ہے بلكه يبال بيان عايت سے تابيد مراد ہے اور عايت مغيامي داخل ہے ، جيما كه الله تعالى كةول و إن عَلَيْكَ لَعْنَتِي الى يومِ الدِّين.

قَبُولَى ؛ لِأَنَهُ مُرَجَمَادٌ لا يَعْفِلُونَ ، غافلون كَنْسِر لأنهم جَمادٌ النع الركاشاره كرديا كه ففلت سے عدم فهم مراد به نوجي (و هم عن دعائهم غافلون) بين اول هم شميراصنام كي طرف اور ثاني هم عابدين اصنام كي طرف راجع به دونو ل شميرول كوجمع له : معنى مَنْ كي رعايت كي وجه ہے ہا صنام كے لئے ذوى العقول كي جمع اس لئے لائے بين كه شركين كا بيا عقق دقعا كه اصنام بي عقق دقعا كه اصنام بي الله عند و الله عند الله

قِوْلَى، قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا يهوضع الاسم الظاهر موضع الضمير كَتْبِل عهال كَ كه قالوا كَهَا كَا فَي تَعَا مُراال مكى صفت كفركوبيان كرنے كے لئے اسم ظاہر كواسم شمير كى جگدر كھ دیا۔

قِيَوْلَنَى : لَمَّا جاءَ هم، قَالَ كاظرف إورهاذا سِحرٌ مُبِينٌ مقوله إ

قَوْلَ فَي اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللهُ اللهُ

ه (زَمَزُم بِبَلشَد)≥

جِيُوَلِهُ ؛ بِذَعًا بِدِيعًا، بِدعًا مصدر بهى بوسكما ہے گراس صورت ميں مضاف محذوف بوگااى ذابدع اوريہ بھى بوسكما ہے كه بذعًا بَدِيْعًا كَ معنى ميں صيغة مفت بوجيسے زهن بمعنی خفیف بذع بمعنی بَدیعٌ انو کھا، نرالا۔

فَيُوَلِّنَى : وَمَا اَدْرِی مَا يُفْعَلُ مِی وَ لا بِکُمْ بِهلامانافیه بِهَ اَنْ مَا استفهامی مِبتداء اور ما بعداس کی خبر، بیدها، اَدْرِی کومل سے مانع ہے اس کا مابعد قائم مقام دومفعولوں کے ہے۔

فَخُولَنَى : مَا أَنَا إِلَّا نَهُ ذِيْوُ مُبِينٌ مِهِ حَرِقَيْقَى بَهِنَ ہِ كَاعتراض ہوكہ آب بشیر بھی ہیں پھریدند رہیں حصر كیما؟ جواب مہ ہے كہ يہ حصراضا فی ہے بعنی میراڈرا تا اور آگاہ كرنا ، اللہ ہی كی طرف ہے ہے خود میری طرف ہے پھو بیں ہے جبیبا كه آپ لوگوں كا خيال ہے۔

قِحُولَیکی ؛ اُزَایِنُهُ مِنْ کَانَ مِنْ عَندِ اللَّهِ وَ کَفُو تَمْ بِهِ جَلَد اَزَایتُم النح قول کامقولہ ہے اُزَایتُمْ کے دونوں مفعول محذوف ہیں ، تقذیر عبارت یہ ہے اُخبِرُونِی مَاذَا حَالْکُمراِنْ کَان مِنْ عند اللَّه و کَفَر تُمْ به شرطاوراس پرمعطوف کا جواب محذوف ہے ، جس کی طرف علامہ کی وَقِمَ کُلُونُهُ عَالَیْ نَے اُلَسْتُمْ ظالمین مقدر مان کراشارہ کردیا ہے ، جواب شرط کی فہورہ تقدیم نظری کے قول کے مطابق ہے گراس پر ابوحیان نے روکرتے ہوئے فرمایا ہے کہ اگر زخشری کی جان کردہ تقدیم مان کی جاتے تو کہ واب تا مروری ہے اس لیے کہ جملہ استفہامیہ جب جواب شرط واقع ہوتا ہے تواس پرفاء لازم ہوتی ہے ، یہی وجہ ہے کہ دیگر حضرات نے فقد ظلمتمر جواب شرط محذوف مانا ہے۔ اور اسلامان)

تَفَيْهُ رُوَتُشِينَ عَيْ

اس سورت کانام احقاف ہے، احقاف جسفف کی جمع ہے، دیت کے بلند مستطیل خمدار شیے کو کہتے ہیں، بینام آیت الاف آنیڈر قفو میں ہالاحقاف سے ماخوذ ہے، بیقوم عاد کامرکزی مقام تھا، بی حضرموت کشال میں اس طرح واقع ہے کہ اس کے مشرق میں مجمان اور شال میں رابع خال ہے جے صحراء اعظم الدنیا بھی کہا جاتا ہے، رابع خالی گوآبادی کے لائق نہیں تا ہم اس کے اطراف میں کہیں کہیں آبادی کے قابل کچھ زمین ہے، خصوصا اس حصد میں جو حضر موت سے نجران تک پھیلا ہوا ہے، قدیم زمان میں اسی حضر موت اور نجران کے درمیانی حصد میں عادِارم کامشہور قبیلہ آباد تھا، جس کو خدانے ان کی تافر مانیوں کی پاواش میں آندھی کاعذاب بھیج کر نبیست و نابود کر دیا تھا۔ (لفات الفرآن) کرفت شیخ: حال ہی میں 1991ء میں کھدائی کے دوران قوم عادو شمود کے مکانوں کے کھنڈرات اور نبیادیں خاہر ہوئی ہیں جو کہ تصویر میں صاف نظر آر ہی ہیں۔ (قوم عادو شمود کے فرابات کا نقشہ اسکلے صفحہ پر ملاحظہ فرما کیں)۔

< (طَزَم بِبَالتَهِ إِ

(صحرائے احقاف کا نقشہ ملاحظہ فرمائیے)



خمر حروف متشابهات میں ہے واجب الاعقاد قابل السکوت ہے، اس کتاب کا نزول اللہ زبردست اور دانا کی طرف ہے، اور واقعی حقیقت یہ ہے کہ یہ نظام کا نئات ہے مقصد کھلو تانہیں، بلکہ یا مقصد ایک حکیمانہ نظام ہے، نیز کا نئات کا موجودہ نظام دائی اور ابدی نہیں ہے بلکہ اس کی ایک خاص عمر مقرر ہے جس کے خاتمے پر اس کو لا زما درہم برہم ہوجانا ہے اس کو آخرت کہتے ہیں، اور خدا کی عدالت کے لئے بھی ایک طے شدہ وقت ہے جس کے آنے پروہ ضرور قائم ہوئی ہے، لیکن یہ کا فرلوگ اس حقیقت سے منہ موڑے ہیں، انہیں اس بات کی کوئی فرنہیں ہے کہ ایک وقت ایسا آنے والا ہے جب انہیں اس بات کی کوئی فرنہیں ہے کہ ایک وقت ایسا آنے والا ہے جب انہیں اس بات کی کوئی فرنہیں ہے کہ ایک وقت ایسا آنے والا ہے جب انہیں اس بات کی کوئی فرنہیں ہے کہ ایک وقت ایسا آنے والا ہے جب انہیں اس بات کی کوئی فرنہیں ہے کہ ایک وقت ایسا آنے والا ہے

ندگورہ آیات ہیں مشرکین کے دعوائے شرک کو باطل کرنے کے لئے ان سے ان کے دعوے پردلیل کا مطالبہ کیا گیا ہے،

اس لئے کدکوئی دعوئی بغیر شہادت اور دلیل کے عقافیا شرعا قابل قبول نہیں ہوتا، دلائل کی جتنی قسمیں ہو تکی ہیں سب کواس ہیں

جع کر دیا ہے اور ثابت کیا ہے کہتمبارے دعوے پر کسی تشم کی دلیل موجود نہیں اس لئے اس بے دلیل دعوے پر قائم رہنا گراہی

ہا آ آیت ہیں دلائل کی تین قسمیں کی ٹی ہیں، ایک عقلی دلیل جس کی نفی کے لئے فرمایا اُڈونی ماذا حکفو امین الاُڈ ضِ

ہا آہ لھے فر شدر لئے فی السمنوت ولیل کی دوسری شم فلی ہے خلا ہم ہے کہ القد تولی کے معاملہ میں دلیل نفتی وہی معتبر ہو تک ہے جو

خود حق تعالیٰ کی طرف ہے آئی ہو جھے آسانی کتا ہیں قرآن، تو رہت، انجیل وغیرہ، اِنیکٹونیوں دیل نفتی وہی معتبر ہو تک ہے جو

دلیل نفتی کے مطالبہ کی طرف اشارہ ہے، آنو اشارہ فی میں دلیل نفتی ہے انہیا ء سابھین کے وہ اتو ال اور روایا ہے مراد ہیں جو بعد کی

نسلوں تک سید بسید کی قابل اعتماد ذر لید ہے کہتی ہوں، یہ دلیل نفتی کی دوسری قسم ہے، ان متیوں ذرائع ہے جو کچھ بھی انسان

کو پہنچا ہے اس ہیں کہیں بھی شرک کا شائبہ تک موجود نہیں ہے، تمام کت آسانی وہ کو حید چیش کرتی ہیں جس کی طرف قرآن

ولی نے بھی لوگوں کو خدا کے سواکسی اور کی بندگی کرنے کی تعلیم دی ہو۔ آفارہ ہیں علم سے علم الا ولین مراد ہے، اور فرآ اء اور متم و دنے والے میں جو بعد والوں تک بہنچ ہوں، ابن قتید نے کہا ہے کہ آفارہ ہیں علم سے علم الا ولین مراد ہے، اور فرآ اء اور متم و دنے کہا ہے ما نو ثو میں متن مراد ہے، اور فرآ اء اور متم و دنے کہا ہے میں علم سے علم الاولین مراد ہے، اور فرآ اء اور متم و دنے کہا ہے ما قو ثور ہن من کلم الله ولین مراد ہے، اور فرآ اء اور متم و دندی

وَإِذَا حُشِهِ النَّاسُ كَانُوا لَهِمِ أَغَدَاءً مطلب بيب كه قيامت كه دن اصنام، عابدين اصنام كه دثمن بوجائيں گ اور بعض حضرات نے كانوا كى خمير كو عابدين كى طرف كو ثايا ہے جيبا كه الله تقالی كے قول و الله دبغا ما گنّا مُشركين ميں ہے، گراول رائح ہے، غرضيكہ روز قيامت عابدين و معبودين ايك دوسرے پرلعنت ملامت كريں گے، په لعنت ملامت اور اظہار بيزارى يا تو هيفة بوگى كه اللہ تعالى اصنام حجربيه وغيرہ ميں حيات پيدا فرماديں گے، اور بعض حضرات نے لسان حال سے لعنت

--- ﴿ (فَكُزُم بِبَلْظُهُ إِ

وَإِذَا تُتَلَى عَلَيْهِم اِيتُنَا (الآية) اور جب ان کوواضح اور صاف صاف قرآنی آیتی پڑھ کرسائی جاتی ہیں تو یہ سنتے ہی بغیر فور وفکر کے کہد ہے ہیں کہ بیتو کھلا جادو ہے، مطلب یہ ہے کہ جب قرآن کی آیات کقاد کے سامنے پڑھی جاتی تھیں تو وہ صدف محسوں کرتے تھے کہ اس کلام کی شان انسانی کلام ہے بدر جہا بلندہ، ان کے شاعر ، کی ذھیب، کی ادیب کے کلام کو جمد آخرین ، اس کے بلنداور پاکیزہ مضابین اور دلوں کو کر مادینے اور گرمادینے بھی قرآن کی بے مثال فصاحت و بلاغت اس کی وجد آخرین ، اس کے بلنداور پاکیزہ مضابین اور دلوں کو کر مادینے اور گرمادینے والے انداز بیان ہے کوئی منا سبت ندھی ، اور سب سے بڑی بات یہ کہ خود آخضرت پیلائی کام ہی نظر آئی تھی ، آپ می شان بھی وہ ندھی جو الکل وہ الکال میں نظر آئی تھی ، آپ پیلوٹی کام میں نظر آئی تھی ، آپ پیلوٹی کا بینے کار اس کے مام سے حق کو بالکل خدا کہ کام میں نظر آئی تھی ، گروہ چونکہ اپنے کہ براڑے رہے تھے کہ یہ کوئی جادو کا کر شمہ ہے ، گران کا بید خیال اس کے غلامت کو دکھی کر سیدھی خود وہ خود بھی وہ دو کے ذریعہ ایسا کلام لاکر پیش کر کے قرآن کے فیک طرح اس کلام کوکلام اللی مان لینے کے بجائے یہ بات بناتے تھے کہ یہ کوئی جادو کا کر شمہ ہے ، گران کا بید خیال اس کے غلامت کو دکھی جو دو سے تو وہ خود بھی واقف تھے اگر قرآن کوئی جادو تی جادو تھی جادو کے ذریعہ ایسا کلام لاکر پیش کر کے قرآن کے چیخ فیلا وہ تھی ہادو کہ خور ایسا کلام لاکر پیش کر کے قرآن کے چیخ میں کہ می کہ جس کی وجہ سے یہ میں جانہ کیام کوافر اور تھیں ہیں جنہ میں خدا کہ کام کوافر اور تھیں ہیں جہنہ میں خدا کے کلام کوافر اور کوایک سائس کے بعد دو مراسائس لینا فیسیت بھی وہ سے کہ جس کی وجہ سے یہ جنہ میں خدا کہ کام کوافر اور دیا ہے سائس کے دور ایک کوئی ہا کہ اور شم نہیں ، ورشکوئی ہے دیم جنہ گر مدااس کا نات کا میاس کے دور اس کے دیم جنہ گر مداس کا نات کا میاس کے دور میں کہ جس کی وجہ سے یہ جنہ میں خدالے کلام کوافر اور کوئی ہا کہ اور شم نہیں ، ورشکوئی ہے دیم کی وجہ سے یہ مرشل کرنے والوں کوا کہ کیا کوئی ہا کہ اور دور اسائس کیا تھیں ہو تھا کہ دور اسائس کیا تھیں کا کہ دور اسائس کیا کہ دور اسائس کیا کہ دور کوئی ہو کہ کوئی ہا کہ دور کوئی کے دور کوئی کی کر دور کوئی کوئی ہا کہ دور کوئی کوئی ہا کہ دور کوئی کے دور کی دور کوئی کی کوئی کوئی کوئی ہو کوئی کوئی کے دور کوئی

دوسرامطلب میبھی ہوسکتا ہے،اے ظالمو!اب بھی اس ہث دھرمی اوراڑیل رویتے سے باز آ جاؤتو خدا کی رحمت کا درواز ہ تہارے لئے کھلا ہواہے اور جو کچھتم نے اب تک کیا ہے وہ معاف ہوسکتا ہے۔

فیل ما کنت بدخا مِن الرسل بدراصل مشرکین مکہ کے وائی اور لچرشہات کا جواب ہے، اس ارشاد کا پی منظر ہیہ کہ جب نی پین کی افزوت کا دعویٰ چیش کیا اور خود کو خدا کا نما کندہ بتایا تو مکہ کو گورح طرح کی باتیں بنانے گئے، ان کا کہ جب بر نوت کا دعویٰ چیش کیا اور خود کو خدا کا نما کندہ بتایا تو مکہ کو گاتا چیتا ہے، خرضکہ عام انس نول کی طرح زندگی بسر کرتا ہے، آخر اس میں وہ فرائی بات کیا ہے جس میں بیعام انسانوں سے مختلف ہواور ہم ہے جھیں کہ خاص طور پر اس شخص کو خدانے اپنارسول اور نما کندہ بنایا ہوتا تو اس کی شخص کو خدانے اپنارسول اور نما کندہ بنا کر بھیجا ہے؟ اور وہ یہ بھی کہتے تھے کدا گر خدانے اس شخص کو اپنارسول بنایا ہوتا تو اس کی ارد کی میں کوئی فرشتہ بھیجتا جو چیش چیش ہی ہی سے اور وہ یہ بھی کہتے تھے کدا گر خدانے اس شخص کو اپنارسول بنایا ہوتا تو اس کی ارد کی میں گوٹر ایس اور پی ملک گیوں شان میں ذرائی بھی گئت نور کر میں ہوتا کہ خداا ہے درسول کے لئے شان میں خراح کی زیادتیاں سہنے کیلئے ہے سہارا چھوڑ دے اور پچھٹیس تو کم اذکر میں ہوتا کہ خداا ہے رسول کے لئے ایک شندار کل اور یک لہم اتا باغ بیدا کر ویتا ، ان سب باتوں کے علاوہ شرکین مکہ آئے دن آپ سے طرح طرح کے مجز ات کہ شدار کی اور یک لہم باتا باغ بیدا کر ویتا ، ان سب باتوں کے علاوہ شرکین مکہ آئے دن آپ سے طرح طرح کے مجز ات

كامطالبه كرتے رہتے تھے،ادرغیب كى باتيں يو چھتے تھے،ان كے خيال ميں كسى كارسول خدا ہونا بيمعنى ركھتا تھا كہ وہ فوق البشرى طاقتوں کا مالک ہواس کے اشارے پر پہاڑنل جائیں، ہتے دریارک جائیں اورایک اشارہ ہے ریگزارکشت زار میں تبدیل ہوجا کیں، نیزاس کو ماکان و ما یکو ٹ کاعلم ہو۔

یمی وہ باتیں ہیں جن کا جواب ان فقروں میں ویا گیاہے،ان میں کے ہرفقرہ میں معانی کی ایک دنیا پوشیدہ ہے،فر مایا ان سے کبومیں کوئی نرالا رسول تو ہوں تبیں لیعنی میرارسول بتایا جاتا دنیا کی تاریخ میں کوئی پہلا دا قعدتو ہے تبیں کے تہمیں یہ بیصنے میں پریشانی ہو كەرسول كىسا ہوتا ہے؟ اوركيمانبيس ہوتا، مجھے پہلے بہت سے رسول آھيے ہيں اور ميں ان مے مختلف نبيس ہوں ، آخر د نياميں كب کوئی ایسارسول آیا ہے کہ جوکھا تا پیتانہ ہو یاعام انسانوں کی طرح زندگی بسرنہ کرتا ہو؟ یا کس رسول کے ساتھ کوئی فرشتہ اتر ا، جواس کی رس لت کا اعلان کرتا ہوا وراس کے آگے آگے ہاتھ میں کوڑا لئے پھرتا ہو؟ اور کونسار سول ایسا گذرا ہے کہ جواینے اختیار سے کوئی معجز ہ دکھا سکتا ہویا اپنے علم سے سب کچھ جانتا ہو، پھریہ زالے معیار میرے ہی رسالت کو پر کھنے کے لئے کہاں سے لئے چلے آرہے ہو۔ وَ مَا أَدْرِى مَا يُفْعَلُ بِي وَ لا بكمر اس كے بعدقر مايا كدان كے جواب سى كبوء مين بيس جانتا ككل مير سے ساتھ كيا ہونے والا ہے اور تمہار بے ساتھ کیا؟ میں تو صرف اس وحی کی پیروی کرتا ہوں جو مجھے جیجی جاتی ہے بیعنی میں عالم الغیب نہیں ہوں کہ ماضی حال واستنقبال سب مجھ پرروش ہوں اور و نیا کی ہر چیز کا مجھے علم ہو تجھا رامستنقبل تو در کنار مجھے تو اپنامستنقبل بھی معلوم نہیں کہ د نیا میں میرے سرتھ کیا ہونے والا ہے، آیا مجھے آل کیا جائے گایا اپنی موت مروں گا، یا مجھے مکہ سے نکالا جائے گایا مکہ میں رہنے دیا جائے گا، بعض حضرات نے اس آیت کا تعلق دنیا دی امور ہے کیا ہے گرمفسرین کی ایک بڑی تعدا ددنیا وآخرت دونوں ہے متعلق مانتی ہے بعنی دنیا وآخرت کے امور پر آپ کو جوآ گاہی اور وا تفیت تھی وہ بذر بعدوجی ہی تھی۔

فوائد عثانی میں مولا ناشبیراحمرصاحب عثانی ریخم تلانائ تعالیٰ اس آیت کے فوائد میں لکھتے ہیں کہ مجھے اس ہے پچھسرو کا رنہیں کے میرے کام کا آخری نتیجہ کیا ہوتا ہے،میرے ساتھ اللہ کیا معاملہ کرے گا، اور تمہارے ساتھ کیا؟ نہ میں اس وفت یوری تفصیل ا ہے اورتمہار ہے انجام کے متعلق بتلاسکتا ہوں کہ دنیا وآخرت میں کیا کیا صورتیں چیش آئیں گی ، ہاں ایک بات کہتا ہوں کی میرا کا مصرف دحی البی کا تباع اور حکم خدا دندی کا اتنثال کرنا اور کفر دعصیان کے بخت اور خطرناک نتائج ہے خوب کھول کرآگاہ کر دینا ہے آ گے چل کر دنیا وآخرت میں میرے اور تمہارے ساتھ کیا مجھ پیش آئے گا ،اس کی تمام تفصیلات فی الحال میں نہیں جانہ اور نہ اس بحث میں پڑنے سے مجھے کچھ مطلب، بندہ کا کام نتیجہ سے قطع نظر کر کے مالک کے احکام کی تعمیل کرنا ہے اور بس ۔

(فوائد عثماني)

فُلْ أَرَأَيْتُم إِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ و كَفَوْتُمْربه (الآية) كانَ كَامَيرة رآن كى طرف راجع إوريكى اخمال بك رسول كى طرف راجع مواور تكفَرْ تُمْربه اور وشَهدَ شَاهِدٌ تَقْدْرِقد كرماته حال بير

اس زمانہ میں عرب کے جاہل مشرکین بنی اسرائیل کے علم وصل ہے مرعوب تھے، جب آپ میں عظیمی کی نبوت کا چرجیا ہوا تو مشرکین نے اس باب میں علماء بنی اسرائیل کاعند بیہ لیٹا جاہا،مقصد بیتھا کہ وہ لوگ آپ کی تکذیب کردیں تو کہنے کوایک بات

باته آج نكرد يهوابل علم اورابل كتاب بهي ان كى باتو ل وجهونا كہتے ہيں ، گراس مقصد ميں مشركين بميشه نا كام رہے ، خداتع لى نے ان ہی بنی اسرائیل کی زبانوں ہے حضور کی تقیدیت و تائید کرائی نہصرف اتنی بات ہے کہ وہ لوگ بھی قر آن کی طرح تو رات کو آس نی کتاب اور آنخضرت میلانشگا کی طرح حضرت موی علیقلانطشان کو پیغیبر کہتے تھے اس طرح آپ میلانگا کا دعوائے رسالت اور قرآن کی وحی کوئی انو تھی چیز نہیں رہی بلکہ اس طرح کہ بعض علماء یہود نے صریحاً اقرار کیا ادر گواہی دی کہ بیٹک ہمارے یہاں ا یک عظیم الثان رسول اور کتاب کے آنے کی خبر دی گئی ہے اور بید سول وہی معلوم ہوتا ہے اور بیا کتاب اس طرح کی ہے جس کی خبر دی گئی تھی ،علاء یہود کی شہادتیں دراصل ان پیشین گوئیوں پر بنی تھیں جو ہزار ہاتحریف و تبدیل کے باوجود آج بھی تو رات وغیرہ میں موجود چلی آ رہی ہیں جس ہے صاف ظاہر ہے کہ بنی اسرائیل کاسب سے بڑا گواہ بعنی حضرت موکی علیہ کلاکا کلاکٹیکا مزار وں سال يہلے خود گواہى دے چكا ہے، كه بنى اسرائيل كے اقارب اور بھائيوں (بنى اساعيل) ميں سے اسى كے مثل ايك رسول آنے وال ب،إنا أَرْسَلنا إليكمررسولًا شَاهِدًا عليكم كما أَرْسَلْنَا إلى فرعونَ رسُولًا (المزمل: ركوع ١) بمسبب لل كبعض منصف اورحق برست احبار يهودمثوا عبدالله بن سلام وغيره حضور كا چبرهٔ انورد مجصته بي اسلام في آئے اور بول اشھے إت هذا الوجه ليس بوجه كاذب يه چره جمو في كانبين بوسكتا، پر حضرت موى عليفالافاليكا اس چيز پر بزارول سال پهلے ایمان رھیس اور علماء یہوداس کی صدافت کی گوہی دیں ان سب شہادتوں کے باوجودتم اپنی چنی اورغرور سے اس کوقبول نہ کروتو سمجھ لواس سے بڑھ کرظلم اور گناہ کیا ہوگا۔ (فوائد عندانی ملعصا)

یہاں 'شامر'' سے کون مراد ہے؟

مفسرین کی ایک بڑی جماعت نے اس گواہ سے مراد حضرت عبداللہ بن سلام کولیا ہے جومدین طیب کے مشہور بہودی عالم نتھے اور بجرت کے بعد مسلمان ہوئے تھے بیرواقعہ چونکہ مدینہ منورہ میں چیش آیااس لئے ان مفسرین کا قول بیہ ہے کہ بیآ یت مدنی ہے اس تفسیر کی بنیا دحضرت سعد بن ابی وقاص کا بیر بیان ہے کہ بیر آیت حضرت عبد الله بن سلام کے بارے میں نازل ہوئی تھی (بخارى بمسلم وغير بها) (و اخرج التومذي و ابن جريو و ابن مودويه عن عبد الله بن سلام قال نزل في آيات من

کتاب الله، نزلت فی و شهد شاهد من بنی اسرائیل). (فتح القدیر شو کانی ملعث) اورای بناء پرابن عباس، مجامِد، قناده، ضحاک، ابن سیرین، حسن بصری، این زیداور عوف بن ما لک اینجی رَضِوَالنَّهُ تَعَالَعُنْهُمْ جیسے متعددا کا برمفسرین نے اس تفسیر کوقبول کیا ہے، گر دوسری طرف ،عکر مداور شعبی اورمسروق کہتے ہیں کہ بیآیت عبدالقد بن سلام ک بارے میں نہیں ہوشکتی کیونکہ ریہ بوری سورت کلی ہےاوراین جربرطبری نے بھی اسی **تول کوتر ج**ے وی ہےاوران کی دلیل ریہ ہے کہاو پر کدم کا پوراسلسله شرکین مکه کومخاطب کرتے ہوئے چلا آر ہاہے، اور آ کے بھی سارا خطاب ان ہی ہے ہے، اس سیاق وسباق میں یکا بیک مدینہ میں نازل ہونے والی آیت کا آ جانا قابل تصور نہیں ہے بعد کے جن مفسرین نے اس دوسرے قول کو قبول کیا ہےوہ حضرت سعد بن ابی و قاص کی روایت کورونبیں کرتے بلکهان کا خیال میہ ہے کہ ریآیت چونکہ عبداللہ بن سلام کے ایمان لانے پر بھی

- ﴿ (زَمَزَمُ بِبَالشِّرزَ ﴾ -

چیاں ہوتی ہے،اس صورت میں بیآ بت پیشین گوئی کے طور پر ہوجائے گی۔

اس آیت کے الفاظ میں کسی خاص عالم بنی اسرائیل کا نام نہیں لیا گیا ، اور نہ میتعین کیا گیا کہ بیشہادت اس آیت کے نزول ے پہلے لوگوں کے سامنے آجکی ہے یا آئندہ آنے والی ہے بلکدایک جملہ شرطید کے طور پر فرمایا ہے کداگر ماضی میں یا بالفعل یا آئندہ ایہا ہوجائے تو تہمیں اپنی فکر کرنا جاہئے کہتم عذاب سے کیسے بچو گے ،اس لئے آیت کامفہوم بھینا اس برموقوف نہیں کہ علماء بنی اسرائیل میں ہے کس کو''شاہد'' کا مصداق قرار دیا جائے ، بلکہ جتنے حضرات بنی اسرائیل میں سے اسلام میں داخل ہوئے جن میں حصرت عبدالله بن سلام زیاد دمعروف میں و دسب ہی اس میں داخل میں اگر چدحصرت عبدالله بن سلام کا ایمان لا نااس آیت كے نازل ہونے كے بعد مدينه متوره يس جوا ہو، اور بيد بورى سورت كى ہے۔ (ابن كنبر بحواله معادف الفرآن)

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْ اللَّذِيْنَ أَمَنُوا اى في حَقِهم لَوْكَانَ الإيْمَانُ خَيْرًا مَّنَاسَبَقُوْنَا اليَّهُ وَاذْلُمْ يَشْتُدُوْا أَى القَابَلُونَ ٢٦٠ اى بِسالفُران فَسَيَقُولُونَ هُذًا اللهُ السَفُرانُ إِفَكَ كَذِبٌ قَدِيْرُ®وَمِنْ قَبْلِم اى السَفُران كَيْنُ مُوسَى اى السَود : إِمَامًا وَيَحْمَةُ لِلمُؤْمِنِيْنَ بِهِ حَالَانِ وَهُلَا اى القُرانُ كَلْبُمُّصَدِّقٌ لِلكُتُبِ قَبْلَه لِسَانَا عَرَبِيًّا حَالٌ مِنَ الضَّمِير نِي مُصَدِق لِينُذِرَالَذِيْنَ ظَلَمُوا ۗ مُشْرِكِي مَكَّةَ وَيُشَرِي لِلْمُحْسِنِيْنَ ۚ لِلمُؤْسِنِينَ ۚ لِلمُؤسِنِينَ أَنَّ الْكِوْبِينَ قَالُوْارَيُّبَااللَّهُ ثُمَّالِسْتَقَامُوْا عدى الطَّاعَةِ فَكُلِّ حَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلِاهُمْ يَخْزَنُونَ ﴿ أُولَاكُ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ خِلِدِيْنَ فِيهَا * حالٌ جَزَازً منتَ صُوبٌ على المَصدَرِ بِفعيه المقدرِ اي يُجزَونَ كِمَاكَانُوْايَعْمَلُوْنَ®وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ إِحْسَانًا وفي قراءَ إِ الْحَسَانَا اي أنسرنهاه أن يُحسِنَ إلَيه مافَنَصب إحسانًا على المَصْدَر بِفِعله المُقَدَّر ومثلُه حُسْنًا حَمَلَتْهُ أَمُّهُ لَهُا وَصَعَتْهُ لَوْهَا اى على سَشَقَةٍ وَحَمَّلُهُ وَفِصْلُهُ مِنَ الرِّضَاعِ ثَلَاتُونَ شَهْرٌ سِتَّهُ أَشُهُ و أَفَلُ سُدُةٍ الحَمْلِ والبَاقِيُ أَكْثَرُ مُدَّةِ الرِّضَاعِ وقِيلَ إنْ حَمَلَتْ به سِتَّةً أو تِسْعَةُ أَرْضَعَتُهُ البَاقِي حَتَّى عَايَةٌ لِجُمْلَةٍ مُقَدَّرَةٍ اى وعَاشَ حَثَى لِذَالِلَغَ اَشُكَّهُ هُوَ كَمَالُ قُوَّتِهِ وعَقُلِهِ ورَأْيِهِ اَقَلُهُ ثَلَاثٌ وَقَلْتُوْنَ سَنَةً وَبَلِغَ أَرْبَعِينَ سَنَةٌ ۖ اى تَـمَا مَها وهُوَا كُثَرُ الله شُدِ قَالَ رُبِّ اللي الخِرِهِ نَزَلَ فِي الي بَكُرِ ن الصِّدِيقِ لَمَّا بَنَغَ أَرُبَعِين سنَةُ بعد سَنَتْيُنِ بِنْ مَبْغَبِ النبي صلى الله عليه وسلم أمَنَ بِه ثُم أمَّنَ أَبُوَاهُ ثُم إِبْنُهُ عَبْدُ الرِّحَمٰنِ وابْنُ عبدِ الرَّحمن ألُو عَبْيُقِ أَوْزِعْنِي اللهْ نَبِي أَنْ اَتُكُرُّرُ نِعْمَتَكَ انْتِي اَنْعَمْتَ بِهَا عَلَيُّ وَعَلَى وَالدَّيِّ وهي التَوْحِيْدُ وَأَنْ أَعْمَلُ صَالِعًا تَرْضُمهُ مَاعُتَى تِسْعَةُ مِّنَ المُؤْمِنِينَ يُعَذَّبُوْن فِي اللَّهِ وَ**اصْلِحَ لِيَ فِي ذُرِيَّتِيَ ۚ م**َكُلُهُم مُؤْمِنُونَ إِلِي **تُنْتُ الْلِكَ وَالْمِي** الْمُسْلِمِيْنَ®أُولَلِكَ اى فَالِسُلُوا هذا القَولِ ابُوبَكرِ وغيره الَّذِيْنَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمُ أَحْسَنَ بمعنى حسَس مَاعَمِلُوْاُونَتَجَاوُرُعَنْ سَيِّاتِهِمْ فِي آصَحْبِ الْجُنَّةُ حَالَ اى كَائِينِينَ فِي جُمُلَتِهِم وَعُدَالصِّلْقِ الَّذِي كَانُواْيُوعَدُونَ ۖ في قــوُلِـه تعالى وغد الله المُؤْمِنِينَ وَالمؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ **وَالَّذِي قَالَ لِوَالْدَيْهِ** وفي قِرَاءَ ةِ بِالْإِ فُرَادِ أُرِيْدَ به الحنسُ

أَنِّ كَسَرِ العَهُ وَعَتَحَهَا بِمعنى سفندراى مِنْ وَيَحُ الْكُمُّ التَعْتَحُو مَنْكُما التَّعِدُ فَيَ وَفَى قراء وَهُ اللهِ يَسَالاتِهُ الْمُوْتَى بِسَالاتِهِ النَّهُ وَلَهُ تَخْرَح بِنِ التَّبُورِ وَهُمُ الْيَسْتَغِيْنِ اللَّهُ يَسَالاتِهِ العَوْدِ وَعَهُ ويقُولان الله تَرْجِ وَلَكُ اى هلاكك بِمعنى هَلَكت امِن البَعْت القَّ وَعُدَاللهِ مَحَقَّ فَيَعُولُ مَاهٰذَا اى النَّولُ اللهِ تَرْجِ وَلَكُ الْمُولِينُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ وَلَى اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ وَلَى اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ وَلَى اللهُ اللهُ وَلَى اللهُ وَلَا اللهُ اللهُ وَلَا اللهُ وَلَا اللهُ وَلَا اللهُ وَلَا اللهُ و

مرائی ہے جو اور کافروں نے ایمان والوں کے بارے میں کہااگر یہ ایمان کوئی بہتر چیز ہوتی تو یہ لوگ اس کی طرف بھت کرنے نہ پاتے اور چونکہ ان کہنے والوں نے اس قر آن سے ہدایت نہیں پائی ہیں اب یہ ہددیں گے کہ یہ بینی قرآن تو کہی جوٹ ہے حالائد اس سے لینی قرآن سے پہلے موئی کی گاب لینی تورات اس پر ایمان لانے والوں کے نیٹی قرآن کی بینے ہوران کی کتاب موسی سے کا حال ہیں ، یہ قرآن عربی نیز زبان کی گتاب ہو سب سے کا کہ کتابوں کی تقد بین کرنے والی ہے مصدق کی شمیر سے حال ہے تا کہ ظالموں لیمی شرکین زبان کی گتاب ہوں کی کتابوں کی تقد بین کرنے والی ہم صدق کی شمیر سے حال ہے تا کہ ظالموں لیمی شرکین کوئی خوف ہوگا اور نہ وہ ممکنین ہوں گے بیتو اہل جن جو بھیشدای میں رہیں گے (حسالہ بین کے ساتھ اس کے ان اعمال کی کتابوں کی مقدر سے مصدریت کی بناء پر مضوب ہے آئی یُں جوز وُں جَوز اُء ہم نے اُس ان کوا بین میں موں گے بیتو اٹل ہے ایک مقدر سے مصدریت کی بناء پر مضوب ہے آئی یُں جوز وُں جَوز اُء ہم نے اس کو بین میں رہیں گے دائے باتھ حسالہ اس کو بین میں رہیں گے دائے باتھ حسالہ اس کو بین میں مقدر سے مصدریت کی بناء پر مضوب ہے اورای طرح میں اس کو بین میں رہیں اور اس کی باتھ حس سلوک کر نے اگر مقدر سے مصدریت کی بناء پر مضوب ہے اورای طرح میں اس کے کہا تھا جو جو اُتی اُن کو جو بین میں رہیں اس کی باتھ حس سلوک کر ہے اُتی سے جو ماہ اقل مدت میں ہورہ جو اُتی رہا تھی ہورہ کی ان کی بیا ہیں ہورہ کی اکر مشقت کے ساتھ اس کو بین میں رہی تو باتی ہورہ بی ہورہ بی تو باقی ایا م بیچ کو دود دھیل کے بیاں تک کہ جب وہ ای بی وہ کی جو بی میں بی بی ہورہ کی بیاں تک کہ جب وہ ای بی کو حتی جملہ مقدرہ کی نے بیاں تک کہ جب وہ ای کی کو حتی جملہ مقدرہ کی نے بیاں تک کہ جب وہ ای کی کو حتی جملہ مقدرہ کی نے بیاں تک کہ جب وہ ای کی کو حتی جملہ مقدرہ کی نے بیاں تک کہ جب وہ ای کی کو حتی جملہ مقدرہ کی نے بیاں تک کہ جب وہ ای کی کو حتی جملہ مقدرہ کی نے بیاں تک کہ جب وہ ای کی کو حتی جملہ مقدرہ کی نے بیاں تک کہ جب وہ ای کی کو حتی جملہ مقدرہ کی نے بیاں تک کہ جب وہ ای کی کو حتی جملہ مقدرہ کی نے بیاں تک کہ جب وہ ای کو حتی جملہ مقدرہ کی نے بیاں تک کہ جب وہ ای کی کو حتی جملہ مقدرہ کی نے بیاں تک کی کو حتی جملہ مقدرہ کی کو حتی بیاں بیاں کو حتی کی کوروں کی کو کو کو کی کو حتی کی کو کو کی کو کو کو کی کو کو کو کی کور

ے ای عسال حتّٰی اور اَشُدّ اس کی قوت وعقل ورائے کا کمال ہے اور اس کی اقل مدت بینتیس سال ہے اور جو کیس سال کی عمر کو پہنچیا اور وہ پختگی کی اکثر مدت ہے تو اس نے کہا: اے میرے پرور دگار! الخ (بیآیت) حضرت ابو بکرصدیق کی شان میں نازل ہوئی جبکہ وہ آپ بیٹھنٹیا کی بعثت کے دوسال بعد جالیس سال کی عمر کو پہنچے، آپ بیٹھنٹی پرایمان لائے پھر آپ کے دالدین ایمان لائے پھر آپ کے صاحبز ادے عبدالرحمٰن اور عبدالرحمٰن کے بیٹے ابوعتیق ایمان لائے تو مجھے تو فیق د ہے مجھے الہا م فر مامیں تیری اس نعمت کاشکر بجالا وَل جوتو نے مجھ پراورمیر ہے ماں باپ پرانعہ م فر مائی اور وہ تو حید ہے اور یہ کہ میں ایسے نیک عمل کروں جن سے تو خوش ہوجائے چنانچے نو ایسے مومن غلاموں کوآ زاد کیا جن کوراہ خدا میں ایڈ اوی ج رہی تھی ، اور مجھے میری اولا دیسے راحت مینجا چٹانچہ وہ سب کے سب ایمان لائے ، اور میں تیری طرف رجوع کرتا ہوں اور میں فرما نبر داروں میں ہے ہوں، یہی ہیں وہ لوگ اس قول کے کہنے والے ابو بکر رفوٰ قائلہ تَعَالِيَّةُ وغيرہ ہيں جن کے نیک اعمال کوہم قبول کر لیتے ہیں آخسن مجمعن حسن ہے، اورجن کے بداعمال سے درگذر کرد سے ہیں، حال بہ ہے کہ یاہل جنت سے ہوں گے (فی اصحب الجنة) حال ہے ای کانن من جملة اهل الجنة اس سے وعدہ کے مطابق جو ان كَ الْمُؤمِنَاتِ الروه وعده) الله تعالى كقول وَعَدَ الله المُؤمِنِيْنَ وَالْمُؤمِنَاتِ جَنَّتٍ مِين كيا به، اورجس في اسیخ ماں باپ سے کہا: اُف! تنگ کردیاتم نے اورا یک قراءت میں افراد کے ساتھ ہے اس ہے جنس کاارادہ کیا گیا ہے اُف ن ء کے کسرہ اور فتح کے ساتھ ،مصدر کے معنی میں ہے ،تمہارے لئے بد بواور خرابی ہے میں تم سے تنگ آگیا ہوں تم مجھ سے یہ کہتے رہتے ہواورایک قراءت میں اَتسعِداتِ ادغام کے ساتھ ہے، کہیں قبرے نکالا جاؤں گا حالا نکہ مجھ سے پہلے بہت ہی امتیں گذر چکی ہیں اور وہ قبروں ہے نہیں نکالی گئیں، اور وہ دونوں (لیعنی والدین)اللہ ہے فریا دکرتے ہیں (یعنی) اس كے (ايمان كى طرف)رجوع كرنے كى دعاء كرتے ہيں اور كہتے ہيں كدا كرتوندلو فے گاتو تيراستياناس ہوگا هَلا سَحَكَ جمعیٰ هَلَکتَ ہے، بعث بعدالموت پر ایمان لے آ، بے شک اللّٰد کا بعث کا وعدہ حق ہے تو وہ جواب دیتا ہے کہ یہ لیعنی بعث بعدالموت کی با تنیں تو محض افسانے ہیں لیعنی جھوٹی با تنیں ہیں ، یہ وہ لوگ ہیں کہ جن پر ان سے پہلے امم سابقہ پر جنات سے ہوں یا انسانوں سے عذاب کا دعدہ صادق آچکا، بے شک ریزیاں کاروں میں سے نتھے جنس کا فراورموس میں سے ہرایک کے لئے اپنے اپنے اعمال کے مطابق درجات ملیں گے بایں طور کہ مومنین کے درجات جنت عالیہ میں ہول گے اور کا فروں کے جہنم میں درجات سافلہ ہوں گے، لینی مومنین نے جوفر مانبرداری کے کام کئے اور کا فروں نے معصیت کے کام کئے، تا کہوہ یعنی اللہ انہیں ان کے اعمال کابدلہ دے اور ایک قراءت میں نون کے ساتھ ہے تا کہ ہم ان کے اعمال کا پورا پورا بدل دیں اور ان پر ذرہ برابر تظلم نہ کیا جائے گا کہمونین کے (نیک اعمال) کم کردیتے جائیں ، اور کا فرول کے (برے اعمال) میں اضافہ کردیا جائے ، اور جس دن کافر آگ کے سامنے لائے جائیں گے ،اس طریقہ پر کہ ان کے سامنے سے جہنم کے بردے ہٹاویئے جائیں گے،ان سے کہا جائے گائم نے اپنی نیکیاں اپنی لذتوں میں مشغول ہوکر دنیا < (طَزَم بِسَانَتِن ﴾ =

بی میں برباد کردیں ایک ہمزہ کے ساتھ اور دو (محقق) ہمزوں کے ساتھ اور ایک ہمزہ اور مدے ساتھ ، اور دونوں کے ساتھ مع ٹانی (ہمزہ) کی شہیل کے اور تم ان سے فائدہ اٹھا چکے لیس آج تم کوذلت کے عذاب کی سزادی ہوئے گی ، کھوں معتی کھنے ہوان ہے ، اس باعث کہتم و نیا ہیں ناحق تکبر کیا کرتے تھے اور اس باعث بھی کہتم تھم عدولی کیا کرتے تھے اور اس کا جہنم کے ذریعیتم کوعذاب دیا جائے گا۔

عَجِقِيق اللَّهِ اللَّهُ اللّلَّا اللَّهُ اللَّالِمُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّا اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ

فَيُولِلَى ؛ لَوْ كَانَ خَيْرًا ، لَو حرف شرط م كَانَ خَيْرًا جمله بوكرش طاور مَا سَبَقُوْنَا جَمله بوكرجزاء ،شرط وجزاء للكر قَالَ كامقوله ..

ﷺ فَادَهُ اللّٰهِ وَإِذْ لَمْ يَهْتَدُوْا بِهِ ، إِذْ كَاعَالْ مُحَدُوف ہے، ای ظَهَرَ عِنَادهم إِذْ لَمْ يَهْتَدُوّا بِهِ ،إِذْ مِسْ فَسَيَقُوْلُوْنَ كَاعَالَ فَعَلَا وَوَجِه ہے درست بیس ہے، اول تواس کے کہ دونوں کے زمانے مختلف ہیں، اِذْ ماضی کے لئے ہے اور فَسَيَـقُولُوْنَ استقبال کے سے ، دوسری وجہ یہ ہے کہ فاءا ہے مابعد کو ماقبل میں عمل کرنے سے ماتع ہے۔

فَيْخُولْنَى ؛ إِمَامًا ورحمة ونول خبر مقدم كائِنْ كي ممير عال بين اور ابوعبيد في جَعَلْفَاهُ محذوف كامفعول بونيكي وجه عدم منصوب قرارديا ہے۔ (فتح القدير، شوكاني)

قِيُّولِكُونَى ؛ لِسَانًا عَرَبيًا موسوف مفت سے ل كرمُصَدِق كاخمير سے حال بين، اور مصدق كي خمير كتاب كى طرف راجع ہے۔ قِيُّولِكُونَ ؛ لِيُنْدِرَ، مُصَدِّقُ كِ مُتعلق ہے۔

فَيْوَلْكَمْ ؛ ای عَلَیٰ مشقّهٔ اس مضرعلام نے اشارہ کردیا کہ مُحرُ ھا بزع الخافض منصوب ہے اصل میں علی مُحرُ ہوتا ، اور بعض نے حال کی مشقّهٔ اس منصوب کہا ہے ، بعض نے حال کی وجہ سے منصوب کہا ہے ، بعض نے حال کی وجہ سے منصوب کہا ہے ، ای حَمْلا کُرُ ھا .

فِيَوْلَكُ ؛ ثَلْنُونَ شَهْرًا كَالُمِ مِنْ صَرْف ٢٥٥ مدة حمله و فِصَالَهِ ثَلْنُونَ شَهْرًا.

ھ (نِحَزَم ہِبَاشَ لِ) ≥-

چَوَٰلِیْ، اَفْ کَرِهِ بِهِ اِنْ یَا اور بغیر تنوین کے اور فقہ بغیر تنوین کے اُتِ، اُفْ یَوْفُ اُفّا ہے مصدر ہے بحقیٰ مَنْدُمنا و قُبِعُوا کرفی کُومُلُلْلُمُعَالُان نے کہا ہے یہ اُفّ یوُف کا مصدر ہے اور تَبَا و قبعُ اے عنی بیل ہے اُقِ بیل تین احمال ہیں۔ ① مصدر ﴿ اسم صوت ﴿ اسم صوت ﴿ اسم فعل مفسر علام نے ان بیل ہے دو کی طرف اشارہ کیا ہے، بہمنی مصدر ہے اول کی طرف اور اُتَصَبِعُولُ ہے تافن کی طرف، گویا کہ مفسر علام نے اشارہ کر دیا کہ دونوں تغییری ہائتِ برتم کے میل کچیل کو کہتے ہیں جسے نافن کا کرا شہرہ فغیرہ ، اور ای اعتبار ہے کی چیز کے متعلق شدگی اور نفرت کے اظہار کے لئے اس کا استعمال ہوتا ہے، فتح القدریمیں قضی شوکانی سورہ اسراء میں تحریفر ماتے ہیں ، اصمعی کا بیان ہے کہ اُف کان کا میل ہے اور تُف نافن کا کہ ہر او بیت رساں چیز کے بارے میں عرب اس کا استعمال کرنے لئے اُف کہا جاتا ہے ، چنا نچواس معنی میں اس کھڑ ت ہے استعمال کیا گیا کہ ہر او بیت رساں چیز کے بارے میں عرب اس کا استعمال کرنے لئے اُف کہا کہ کہا وا تا ہے ، چنا نچواس معنی میں اس کھڑ ت سے استعمال کیا گیا کہ ہر او بیت رساں چیز کے بارے میں عرب اس کا استعمال کرنے کے اُن کہا جاتا ہے ، چنا نچواس معنی میں اس کھڑ ت سے استعمال کیا گیا کہ ہر او بیت رساں چیز کے بارے میں عرب اس کا میں ہون ہی گھٹنا ، نگ ول ہونا استعمال کرنے اس کے معنی بد ہو بتا ہے ہیں ۔ (العات الذران)

قِحُولَیْ ؛ هَلَاکُكَ ، ویْلُكَ کَ تَفییر هَلَاکُكَ ہے کرے اشارہ کردیا کہ وَیْلُكَ اپِ ہم مَعَیْ فعل مقدر ہے منصوب ہا اور دہ هَلُكَ ہے ، اس لئے کہ وَیْلُ کافعل نہیں آتا اور معنی میں هَلْکُتَ کے ہے جو بظاہر بددعاء ہے مگر بددعاء مرادنہیں ہے بلکہ اظہار نا گواری اور تحریص علی الایمان ہے نہ کہ دھیقۃ ہلاکت، جیسے مال اپنے بیٹے سے کہددیت ہو، تو مرے ایسامت کر، یا تیراستیانا س ہو، وَیْلُكَ کے معنی فاری میں، وائے برتو، کے بیں یعنی تیرے او پرافسوں۔

قِولَى : درجات كلام من تغليب بورندتوجبم كورجات كودركات كهاج تاب-

فِيُولِكُمْ : يَوْمَ يُعْرِضُ ، يَوْمَ تعل مقدر ، يقال لَهم عمصوب --

قِحُولَ آئی: اَذْهَبْنُفْرِ اکثر کے نزدیک ایک ہمزہ کے ساتھ ہے لینی ہمزۂ استفہام کے بغیراوردو ہمزوں کے ساتھ کہ دونوں محققہ ہوں اور ایک ہمزہ اور مدکے ساتھ یہ ہشام کے نزدیک ہے، دو ہمزول کے ساتھ گردوسرے میں تسہیل بغیر مدکے یہ ابن کثیر کے نزدیک ہے۔ قِحُولِ آئی ؛ بغیو حقّ یہ مَنْسَنَکْبِوو نَ کی صفت کا شفہ ہے اس لئے کہ تکبرنا حق ہی ہوتا ہے۔

تَفَيْرُوتَشِينَ فَيَ

شان نزول:

کوب کرتے تھے،اور کفار کہا کرتے تھے کہ اگر محمد ﷺ کی دعوت میں کوئی خیر ہوتی تو زنیرہ اس کو تبول کرنے میں ہم ہے سبقت نەكرتى،اى داقعە كےسلسلەملى مذكورد آيت نازل ہوئى۔ (روح المعانی) ابوالىتوكل نے كہا ہے كەقرىش نے بيە بات اس وقت کہی تھی کہ جب ابو ذراور قبیلہ عفار ایمان لایا تھا، اور نتیلی نے کہا ہے کہ جب عبداللہ بن سلام اور ان کے ساتھی ایر ن لائے تھے تو بہود نے بید بات کہی تھی ، مگراس صورت میں لازم آتا ہے کہ آیت مدنی ہو، حالانکہ پوری سورت مکی ہے اس وجہ سے ،اس آیت کومستنظیات میں شار کیا ہے۔ (دوح المعانی)

قریش کاعوام الناس کو بہکانے کا ہٹھکنڈہ:

قریشی مردارعوام ایناس کو نبی کریم بیلی فیتا کے خلاف بہکانے اور دین حنیف سے برگشتہ کرنے کیسے جو ہٹھکنڈے اور تدابیر استعمال کرتے تنصان میں ہے ایک بیکھی تھا کہ اگر بیقر آن برحق ہوتا اور محمد فانقطانیا کی دعوت سیجے ہوتی تو قوم کےسر داراور شیوخ اورمعززین آ گے بڑھ کراس کو قبول کرتے ، آخریہ کیسے ہوسکتا ہے کہ چندنا تجربہ کارلڑ کے اور چنداد فی درجہ کے غلام تو ایک بات کو مان کیس اور توم کے بڑے بڑے بڑے لوگ جو دانا اور جہاندیدہ ہیں اور جن کی عقل ومذہیر برقوم آج تک اعتما د کرتی رہی ہے اس کور د کردیں ،اس پُر فریب استدلال سے وہ عوام کومطمئن کرنے کی کوشش کرتے تھے کہ اس نی دعوت میں ضرور پچھ خرابی ہے اس لیے تو قوم کے اکا براس کوئییں مان رہے ہیں انہذاتم لوگ بھی اس سے دور رہو۔

تکبراور غرور عقل کو بھی سخ کردیتاہے:

لَو كانَ خيرًا ما سبقونا اليه متكبراً دمي إني عقل اورايي عمل كومعيار حسن وبيح وخيروش مجصفے لكتا ہے جو چيز اس كو پسند نه مو خواہ دوسر ہےلوگ اس کوکتنا ہی پسند کرتے ہوں بیان کو بے وقوف سمجھتا ہے، حالا نکہ خود بے وقوف ہے کفار کے غرور وتکبر کا اس آیت میں بیان ہے کہاسلام اورایمان ان کو چونکہ پیندنبیں تھا تو دوسر ہے لوگ جوایمان کے دلدادہ اور فریفتہ تھے ان کویہ کہتے تھے کہ اگر بیا یمان کوئی اچھی چیز ہوتی تو سب سے پہلے ہمیں بیندآتی ان غریبوں فقیروں مسکینوں اور غلاموں کی پسند کا کیا اعتبار۔ خلاصہ بیر کہان ہو گوں نے خود کوخن و باطل کا معیار قرار دے رکھاہے، وہ بیجھتے ہیں کہ جس مدایت کووہ قبول نہ کریں وہ ضرور ضلالت ادر گمراہی ہونی جاہئے ،لیکن بیلوگ اس ہدایت کو نیا مجھوٹ کہنے کی ہمت نہیں رکھتے تتھے بلکہ قندیم اور پران مجھوٹ کہتے ہے، کیونکہ اس سے پہلے انبیاء پیبلانیلا میں چیش کرتے رہے ہیں۔ گویا ان کے نز دیک وہ سب لوگ بھی دانائی سے بحروم تھے جو ہزاروں برس سےان حقائق کو پیش کرتے اور مانتے چلے آ رہے ہیں اور تمام دانائی صرف ان کے حصہ میں آگئی ہے۔

وَمِن قَبْلِهِ كَتَابُ مُوسَى إِمَامًا ورحمة ال جمله كالمقصد الكياؤمَا كَنْتُ بِدْعًا مِنَ الرُّسُل كا ثبوت فراجم كرنا ب کہ آپ کوئی انو کھے اور نرالے رسول نہیں اور قر آن کوئی انو کھی کتاب نہیں کہ ان پر ایمان لانے میں لوگوں کو اشکال ہو ہلکہ آپ ے پہیے موی علاق لا الفظاف رسول ہوکر آ مجکے ہیں اور ان پرتو رات نازل ہو چکی ہے جس کو یہ کفار، میہود، نصاری سب سلیم کرت ئیں ، دوسرے سابق میں جو شھیدَ ش**ے ہیڈ آیا ہے ا**س کی بھی تقویت ہوگئی ، کیونکہ موٹی علیج کا ڈاکٹا کا اور تو رات خود قر آن اور رسول

كريم بلقطفها كحقانيت كمثامرين

اِنَّ الَّذِينَ قَالُوْا رَبُّنَا اللَّه ثُمَّ اسْتَقَامُوا فَلَا خَوْفُ عَلَيْهِمْ (الآية) الَّذِينَ قالُوا (تا) اسْتَقَامُوا معطوف، معطوف عليه على الله على الله ثمَّ الله ثمَّ الله تعلق الله على الل

استنقامت على التوحيد كامفهوم:

آیت ندکورہ میں ایمان واستفامت پر بیدوعدہ کیا گیاہے کہ ایسے لوگوں کونہ آئندہ کمی تکلیف کا خوف ہوگا نہ ماضی کی تکلیف پر رنج وافسوس رہے گا ،اس کے بعد کی آیت میں اس بےنظیر راحت کے دائمی اور غیر منقطع ہونے کی بشارت دی گئی ہے ،اس کے بعد کی چار آینوں میں انسان کواپنے والدین کے ساتھ حسن سلوک کی تا کیدی ہدایت دی گئی ہے۔

ترق مَّ بْهُنَا الإِنْسَانَ بِوَ الِدَيْهِ اِحْسَانًا لفظِ وصيت خاص تا كيدى عَلَم كے لئے استعال ہوتا ہے اوراحسان وُسن دونوں حسن سبوک کے معنی میں ہیں جس میں خدمت واطاعت بھی داخل ہے اور تعظیم و تکریم بھی۔

ندکورہ آیت اس امر کی طرف اشارہ کرتی ہے کہ اگر چہاولا دکو ماں اور باپ دونوں ہی کی ضدمت کرنی جا ہے لیکن ماں کاحق اپی اہمیت میں اس بناء پر زیادہ ہے کہ وہ اولا د کے لئے بہ نسبت باپ کے زیادہ تکلیف اٹھ تی ہے، یہی بات اس حدیث سے معلوم ہوتی ہے جوتھوڑ نے تھوڑ کے فنطی اختلاف کے ساتھ، بخاری مسلم، ابودا ؤد، ترندی وغیرہ میں وار دہوئی ہے۔

﴿ (مَنزَم بِبَاشَرِ عَالَ ٢٠٠٥) ٢٠٠

ندکورہ حیارا تیوں میں اصل مضمون انسان کواینے والدین کے ساتھ حسن سلوک کی تلقین کرتا ہے ہضمنا دوسری تعلیمات بھی زیر بحث آگئی ہیں۔

والده کی خدمت کی زیاده تا کید کیوں؟

خدمت اگر چہ دونوں ہی کی کرنی جائے مگر چونکہ والدہ بیجے کے لئے زیادہ تکلیف اٹھاتی ہے اس لئے اس کی خدمت ک اہمیت اور تا کیدزیاوہ ہے، ایک صحافی دَفِحَانلاُ مُنالِحَةُ نے حضور بِلاَ اللّٰ اللّٰ ہے کو چھا بکس کاحق خدمت مجھ پرزیادہ ہے؟ فرمایا حِسل اُمَّكَ ثُمَّ اُمَّكَ ثُمَّ اُمَّكَ ثُمَّ ابَاكَ ثُمَّ اَدْنَاكَ فادناكَ (مظهرى) تيرى مال كا پھر يو چھااس كے بعدس كا؟ فرمايا تيرى مارى ، پھر ہو چھا پھرکس کا؟ فروایا تیری وال کا، جب چوتھی مرتبہ ہو چھا پھرکس کا؟ آپ نے فروایا: تیرے باپ کا آپ بلقائق کا فرون تھیک ٹھیک اس آیت کی ترجمانی ہے، کیونکہ آیت میں بھی ماں کے تہرے فق کی طرف اشارہ کیا گیا ہے: 🛈 اس کی ہوں نے مشقت اٹھا کر پیٹ میں رکھا 🏵 مشقت اٹھا کر ہی اس کو جنا 🏵 اوراس کے خمل اور دو دھ چھڑانے میں تمیں ماہ لگے۔

شان نزول:

بعض روایات حدیث مصعلوم موتاب كه مذكوره آیات حضرت ابو بكر رضّ فالله فلا كی شان میں نازل مولی میں احوج ابن عساكر من طريق الكلبي عن ابي صالح عن ابن عباس قال نزل (ووصينا الانسان بوالديه (الي يوعدون) فى ابى بىكى الصديق اسى بناء يرتفير مظهرى بين وَوَصَّيْفَ الانسانَ كالفالم كوعهد كاقرارد كراس سے مرادا بو بكر صدیق لئے ہیں کیکن بیظا ہر ہے کہ اگر چیکسی آیت کا سبب نزول کوئی خاص فردیا خاص واقعہ ہو، مگر تھم سب کے لئے عام ہوتا ہے، اگرآیت کوتعلیم عام کے لئے قرار دیا جائے تو اس صورت میں بھی صدیق اکبراس تعلیم کے پہلے مصداق قرار پائمیں گے، جوان ہونے اور چالیس سال عمر ہونے کے بعد کی تخصیصات جوان آیات میں مذکور میں بطور تمثیل کے ہوں گے۔

حَمْلُهُ وَفِصَالُهُ ثَلَثُوْذَ شَهْرًا اس جمله من بھی مال کی مشقت کابیان ہے کہ یے کے سکے مل اور وضع حمل کی مشقت کے بعد بھی ، ل کومحنت ومشقت ہے فراغت نہیں ملتی کیونکہ اس کے بعد بیچے کی غذا بھی قدرت نے مال کی چھاتیوں میں اتاری ہے، ''یت میں ارشادفر مایا کہ بچہ کاحمل اور دو دھ چھڑا تا تمیں مہینہ میں ہے، حضرت علی تَفْعَلَانْتُهُ نے اس آیت ہے اس بات پراستدلال کیا ہے کے حمل کی مدت کم ہے کم چھر وہ ہے،اس کئے کہ قر آن کریم نے اکثر مدت رضاعت دوسال کامل متعین فرمادیے ہیں،جیسا کہ ارشاد ہے واٹسو البیداتُ بُسر ضِبعْنَ او لا دَهُنَّ حَولَيْنِ تَحَامِلَينِ اوريهال حمل اور رضاعت دونوں کی مدت تميں ماه قرار دی گنی ہے،تورف عت کے دوسال لیعن ۲۴ میں نکلنے کے بعد چھ ماہ ہی باقی رہتے ہیں جس کوشل کی کم از کم مدت قرار دیا گیا ہے۔

ھ (زَمَزُمُ بِبَلْنَهُ فِيَ

اس آیت اور سورهٔ لقمان کی آیت ۱۱ اور سورهٔ بقره کی آیت ۲۲۳ سے ایک قانونی کلته بھی نکاتا ہے جس کی نشاند ہول دیا۔ میں حضرت علی تفکی نشانگانے اور عباس این تفعی الفائی تفایق نے کی ، اور عثمان تفکی نشائی نے اس کی بناء پر اپنا فیصلہ بدل دیا۔ فا تو بھی تفکی اس آیت میں حمل کی اقل مدت کا بیان ہے اور رضاعت کی اکثر مدت کی طرف اشارہ ہے جمل کی کم از کم چھاہ کی مدت متعین ہے ، اس سے کم میں صحیح سالم بچے بیدانہیں ہوسکتا، گرزیادہ سے زیادہ کتنی مدت بچے حمل میں رہ سکتا ہے اس میں عاد تیں مختلف ہیں ، اس طرح رضاعت کی زیادہ سے زیادہ مدت متعین ہے کہ دوسال تک دودھ پلایا جا سکتا ہے کم سے کم مدت کی کوئی تعیین نہیں۔

اكثر مدت حمل اور مدت رضاعت مين فقهاء كااختلاف:

اکثر مدت حمل امام اعظم ابوصنیفہ وَعَمَّلُاللَهُ عَالَیٰ کے نزد کی دوسال ہے، امام مالک وَعَمَّلُاللَهُ عَالَیٰ کَ مُشہور وایات معقول بیں چارسال، پانچ سال، سات سال، امام شافعی وَعَمَّلُاللَهُ عَالَیٰ کے نزد کی چارسال ہے، امام احمد وَعَمَّلُاللَهُ عَالَیٰ کَ مُشہور وایت بھی چار ہی سال کی ہے۔ (مظہری) اور اکثر مدت رضاعت جس کے ساتھ احکام رضاعت متعلق ہوتے ہیں جمہور فقہاء کے نزد کید دوس ل ہے، امام مالک، شافعی، احمد بن صنبل وَعِمَلُولَاللَهُ اور اکثر حنفیہ بیں ہے امام ابو بوسف اور امام حمد وَعَمَلَاللَهُ مَاللَهُ اللهُ مَللَهُ اللهُ الل

میں لگے،اورسورۂ احقاف میں فرمایا اس کے حمل اور دووھ چھڑانے میں تمیں مہینے لگےاب اگر تمیں مہینوں میں ہے رضاعت کے دوسال نکال دیتے جاتھی توحمل کے چھ ماہ رہ جاتے ہیں ، اس سے معلوم ہوا کہ حمل کی کم از کم مدت جس میں بجہ زند و سلامت پیدا ہوسکتا ہے، چھے مہینے ہیں،للندا جس عورت نے نکاح کے بعد چھے ماہ میں بچہ جنا ہے اسے زاند قر ارنہیں دیا جاسکتا۔ عورت کو واپس بلوایا اورا پنے فیصلے ہے رجوع کرلیا، ایک روایت میں ہے کہ حضرت علی روایت کی نفونگانٹاؤٹ کے فیصیے کی تا نید حضرت ا بن عم س رَضِيَا اللهُ تَعَالَتُ مِن مُحِي فره ألى - (ابن حرير، احكام القرآد للحصاص، ابن كثير)

فَا عِكِنَا ؛ اس مقام پریہ جان لیما فا كدہ ہے خالی نہ ہوگا كہ جدید ترین طبی تحقیقات كی روسے مال كے پیٹ میں ایك بي کے سئے کم از کم ۲۸ بفتے ورکا رہوتے ہیں جن میں وہ نشو ونما یا کرزندہ، ولادت کے قابل ہوسکتا ہے، بیدت جھے مہینے سے کچھزا کد بنتی ہے،اسلامی قانون میں نصف مہینے کے قریب مزیدرعایت دی گئی ہے کیونکدا بک عورت کوزا نیے قرار دیتا اور ا یک بیجے کونسب ہے محروم کرنا بڑا سخت معاملہ ہے ، اور اس کی نزا کت اس کا نقاضہ کرتی ہے کہ ماں اور بیجے کو قانونی نتائج ے بی نے کے لئے زیادہ سے زیادہ گنجائش دی جائے۔

وَ الَّذِيْ قَالَ لِوَ الِدَيْهِ مَاسِبْقَ مِينِ اللَّهُ تَعَالَى نِهِ السَّخْصِ كَاذَ كُرفر ما ياجس نے اپنے اوراپنے والدین کے اوپراملّہ کی نعمتوں کا شكراداكيا (بعني ابو بمرصديق تفقانناهُ تَعَالَقُهُ) اس آيت مين اس تخف كاذكر فرمايا جس نے اپنے والدين سے جبكه انہوں نے اس كو ا يمان كى دعوت دى ايباكلمه كها جوان كى طرف سے تنك دلى ير دلالت كرتا تھا ،فرمايا: والسذى قسال بواللّه يه أتب لكها استخص عدم ادعهد الرحمن بن ابو بمر بح جيها كدروايات عدمعلوم بوتا ب، أخورَ ج ابن جريس عن عباس في الآية، قال: هذا ابس لا بی بکو تفقاننا، تغالث اس کے مثل ابوحاتم نے سدی سے روایت کیا ہے مگر میسی ہے، جیسا کہ بخاری کی روایت سے بھی اس کی تصدیق ہوتی ہے کہ وہ روایتیں جواس آیت کا مصداق عبدالرحمٰن بن ابی بحر کو تھ ہر اتی ہیں سیجے نبیس ہیں۔

ا مام بخاری رَیِّمَ کاهندُه کَتَالی نے بوسف بن ما مک ہے روایت کیا ہے کہ مروان ، معاویہ رَفِعَانندُ تَعَالَی بن سفیان کی ج نب ہے مدینه کا حاکم تھا ایک روز اس نے خطبہ دیا اور خطبہ ہیں اس بات کا ذکر کیا کہ امیر معاویہ وَیُحَانِّتُهُ کَالَیْ کَ خواہش ہے کہ ان کے بعد ان کے بیٹے بزید کی بیعت کی جائے ،اس پرعبدالرحمٰن بن افی بکر پچھ بولے ،مروان نے کہااس کو پکڑلو،حضرت عبدالرحمٰن اپنی بہن حضرت ی کشہ کے گھر میں داخل ہو گئے جس کی وجہ ہے مروان ان پر قابونہ یا سکا ،تو مروان نے کہا یہی ہے وہ تحض جس کے بارے مِن آيت وَالَّـذِي قَالَ لِوَالدَيْهِ أَتِ لكما تازل بولَى جعرت عائشَهُ وَفَاللَّهُ عَالَيْكُمَا فَ فرما يا مَا أَنْزَلَ اللَّه فِينا شيئاً من القر آن إلّا أنَّ اللَّهُ أَنْزَلَ عُذْرِى لينى سورة نورك ان آينول كعلاوه جن من ميرى براءت نازل كي كن بهمار برب میں کیجھٹاز کیمیں ہوا۔ (فتح القدیر، شو کانی)

ا یک دوسری روایت جس کوعبد بن حمید والنسائی وابن المنذ روالحا کم نے نقل کیا ہے ابن مردویہ نے محمد بن زیاوے اس کی تصبح ک ہے، فرمایا. جب حضرت امیر معاویہ تَعْمَالْنَافَةُ نَے اپنے بیٹے (یزید) کے لئے بیعت لی تو مروان نے کہا بیا ہو بکر وعمر کی

٠ ﴿ (فِئزَمُ بِبَلْنَهُ إِنَّ ﴾ ----

سنت ہے،عبدالرحمٰن بن ابی بکرنے کہا ہرقل اور قیصر کی سنت ہے،تو اس وقت مروا ن نے کہا یہی ہے وہ مخص جس کے بارے میں آيت والذي قال لوالديه أفيِّ لكما تازل بوئي بيه بات جب حضرت عائشه صديقه دَضِعَاللَّهُ عَالِيَعُفَا كو كَبِيجي توفر ما يامروان نے جھوٹ بولا والتدایب نہیں ہے،اگر میں جا ہوں تو اس تخص کا تام بتا سکتی ہوں ،جس کے بارے میں بیآیت نازل ہوئی ہے، ہاں البتة رسول الله بلاقطية بنے مروان کے باپ (حکم) پرلعنت فرمائی اور مروان اس وفت حکم کی پشت میں تھے، لنبذا مروان ان لوگوں میں ہے ہے جن براللہ نے لعنت فرمائی۔

ان تمام روایات ہے معلوم ہوتا ہے کہ عبدالرحمن بن ابی بکر اس آیت کے مصداق نہیں ہیں اور ہوبھی کیسے سکتے ہیں کہ عبدا رحمن جیسے جلیل القدرصی بی جن کی تکوارآ بدارنے قیصر و کسری کو بست کر دیااور جن کے خون زخم ہے شام وعراق کی زمینیں آج تک کلکوں وگل ہو ہیں،جنہوں نے اپنی جان ابتد کے لئے فدائی، پیمجھ اور عقل سے بالاتر ہے کہ ایسے یا کیزہ ویاک باطن کے بارك إلى اللَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أَمْمِ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَنْلِهِمْ مِنَ الْجِنِّ وَالانسِ إِنَّهُم كَانُوْا خَاسِرِيْنَ جيسي وعيدشد يدنازل بوب (علاصة التعاسير للنائب لكهدوى، فتح القدير شوكاني منحصا)

وَلَوْكُرْآخَاعَادٍ هُو هُودَ عليه السلامُ إِذْ إلى احره بدلُ اشتمالِ أَنْذَرَقُومَةُ حوِّقهم بِالْآخْقَافِ وَادِ باليمرِ به سار لُهِم وَقَدُخَلَتِ النُّكُذُرُ سِنستِ الرُّسُلُ صِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهَ اي سِ قَبْسِ هُودٍ وسُ بَعْدِه الى اقوامهم ال اي مال قال اللَّاتَعَبُّدُوَّا اللَّهُ وحُمْنَهُ، وقد حدث مُعترضة إلَيْ أَخَافُ عَلَيْكُمْ إلْ عَبَدْتُمْ عَيْر الله عَذَابَيَوْمِ عَظِيْمٍ ۗ قَالُوْٓا أَجِئْتَنَا لِنَا فِكَنَا عَنَ الِهَتِنَا ۚ لِسَمْهِ مِا عَلَ عَنَادَتِهَا فَأَيْنَا بِمَاتَعِدُنَا مِن العَدَاب على عنادتها النكنت مِنَ الصَّدِقِينَ ٥ من أنه باتبنا قَالَ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللَّهِ أَنْ هُو الَّذِي يَعْلَمُ مَتَى يَاتِيْكُمُ العدابُ وَأَبَلِغُكُمْ مِثَآ الْسِلْتُ بِهِ اليَّهُ وَلَكِيْنَ الْكُمْوَقُومًا تَجْهَلُوْنَ ﴿ مَسْتِغَجَا لِكُمُ العَدَابِ فَلَمَّا رَاؤُهُ اى ما هُو العدابُ عَارِضًا سخابُ عُرضَ في أفُق السّماءِ مُسْتَقْبِلَ أَوْدِيَتِهِ مُقَالُوا هٰذَا عَارِضٌ مُمْطِرُنَا الى سُمَطر إيّانَا قَالَ تَعَالَى بَلُهُوَمَا السَّتَغَجَلْتُمُرِيمُ مِن العداب رِنْحُ مِنْ مِن مَا فِيْهَاعَذَاكَ ٱلِيُمُنَّ مُؤلِمٌ تُكَوِّرُ تُهْلِكُ كُلَّ شَيْءً مَرَتْ عَدِيه بِأَمْرِرَ بِهَا بارادته اي كُلّ شيء ازادَ إهلاكة بها فأهْلكت رجَالَهُم ونِسَاء هُمُ وصمعارهُمْ و كبارُهُم وأَمْوالَهُم بال طارتُ بذلك بيْنَ السَّمَاء والْارُص و مزَّقَتُهُ وبَقِيَ هُودٌ و مَنُ النَّ مَعَهُ فَأَصْبَحُوالَا يُرْكِى إِلْاَمَسْكِنْهُمْ كَذَٰ إِلَّ كَما خَرَيْنَاهِم فَجْرِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿ غَيرَ هِم وَلَقَدُمَكَنَّهُمُ فِيْمَا مى الدى إنْ نافية أو زائدةً مُكَنَّكُم يَا أَهُلَ سَكَة فِيلِي مِن القُوّة والمال وَجَعَلُنَالَهُمُ سَمِّعًا بمغمى المسمع قَابَصَارًا قَافَيِدَةً لَهُ فَهُمَا أَغْنَى عَنْهُمْ سَمَعُهُمْ وَلا أَبْصَارُهُمْ وَلا أَفِيدَتُهُمْ مِنْ شَي الله منا س الاعَدَاء ومن رَائِدةً إِذْ سَعُمُولَةٌ لاعْنِي وَأَشْرِبتُ سَعْنِي النَّغْلِيلِ كَانُوْايَجْحَدُوْنَ بِالْيِتِاللَّهِ خُجْجَهُ و اسية وَحَاقَ مرل بِهِمُمَّاكَانُوْابِهِ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿ اي العداب.

ت این توم کو جب وہ احقاف میں مقیم تھی و الماؤلا کا ذکر کر وجب کہ انہوں نے اپنی قوم کو جب وہ احقاف میں مقیم تھی ڈرایا (خبر داركيا) (إذى كيكرة خرتك (أخسا عَادٍ) سے بدل الاشتمال ب، احقاف يمن ميں ايك وادى ہے اى ميں ان كے مكانات شے اوریقینا اس سے پہنے بھی ڈرانے والے یعنی رسول گذر چکے تھے اور اس کے بعد بھی یعنی ہود ہے پہلے بھی اور ان کے بعد بھی ا پی قوموں کی طرف مید کہ انہوں نے کہا کہ اللہ کے سوائسی کی بندگی نہ کرواور قبلہ محلت جملہ معتر ضہ ہے،اً نرتم غیراللہ کی بندگی َ سرتے رہے تو مجھے تمہارے اوپر ایک بڑے دن کے عذاب کا اندیشہ ہے، قوم نے جواب دیا کہ کیاتم ہمارے یاس اس نے آئے ہوکہ ہم کو ہمارے معبودول کی بندگی ہے برگشتہ کردوا گرتم اس بات میں سیچے ہو کہ عذاب ہمارےاو پرآئے گا تو وہ عذاب جس کاتم بتوں کی عبادت کرنے پر ہم ہے وعدہ کرتے ہو لے آؤ، تو ہود علیج کا دالے کا نے جواب دیا کہاس کاعلم تو اللہ ہی ہے باس ہے وہی جانتا ہے کہتمہارے اوپر کب عذاب آئے گا، مجھے تو جو پیغام دے کر تمہاری طرف بھیجا گیا ہے وہمہیں پہنیا ر ہا ہوں الیکن میں د مکھے رہا ہوں کہتم لوگ عذا ہے جارے میں جلدی کر کے تا دانی کررہے ہولیکن جب انہوں نے اس کو یعنی عذاب کو جو بادل کی صورت میں افتی آ سان پر پھیل گیا تھااپنی وادیوں کی طرف آتے ہوئے دیکھا تو کہنے لگے بیاب بادل ہے کہ ہم کوسیراب کرے گا یعنی ہم ہر برے گا ،اللہ تعالیٰ نے فر مایا (شبیس) بلکہ بیو ہی عذا ب ہے جس کی تم جلدی مچاتے تھے (یعنی ہوا کا طوفان ہے) دیائے، مسا ہے بدل ہے، جس میں در دناک عذاب ہے یہ (عذاب) ہراس چیز کو ا ہے رب کے حکم ہے جس نہس کرد ہے گا جس پروہ گذر ہے گا بعنی ہراس شنی کو ہر با دکرد ہے گا جس کواس عذاب کے ذریعہ التدبر ہا دکرنے کا ارادہ کرے گا، چنانچہاس (طوفانی عذاب) نے ان کے مُر دول کوان کی عورتوں کوان کے جِھوٹوں کوان کے بروں کواوران کے اموال کو بلاک کردیا ،اس طریقہ ہے کہان چیزوں کو آسان اورزمین کے درمیان لے کراڑ گیا ،اور ان کوریزه ریزه کردیا اور بهود علیج لافظ اور جوان پرایمان لائے تصفیح سلامت نیج گئے، چنانچہوہ ایسے بو گئے کہان ک گھرول کے علاوہ کیجھ نظرنہ آیا اس طرح جس طرح ان کوسزادی ان کے ملاوہ ہرمجرم قوم کوسزاد بیتے ہیں اور یقیناً ہم نے ان کووہ قوت اور مال دیا تھاا ہے اہل مکہ! جوتم کوتو دیا بھی نہیں ،إن نافیہ ہے یاز ائدہ ہے اور ہم نے ان کو کان سے سے مجمعنی السماع ہے، آئکھاور دل سب کچھ دیئے تھے مگران کے نہوہ کان کچھ کا م آئے اور ندآ تکھیں اور نہ دل یعنی کچھ کا م نہآئے من زائدہ ہے(انی) آغےنے کامعمول ہےاورتغلیل کے معنی پرمشتمل ہے جب کہوہ القد تعالی کی آیتوں لیعنی اس کی واضح حجتوں کاا نکارکرنے لگےاورجس عذاب کاوہ مٰداق اڑایا کرتے تنےوہی عذاب ان پرالٹ پڑا۔

عَيِقِيق الْرَكْبِ لِسَهْيَالُ لَفَيْسَايُرِي فُوالِلْ

قِرُ لَكَىٰ ؛ أَخَاعَادٍ عَادِ مَعْرِت نُوحَ عَلِيْجَنَا وَلِيْنَا فَيْ مَ مِن الكِنْحُصُ كَذِرا بِ حَسَ كَاسسلدنس تين واسطول سے حضرت نوح عَلِيْنَا وَالنَّا اللهِ عَنْ اللهِ عَنْ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى عَمْ مُولَى جُوطُوفَان نُوحَ عَلِيْنِ الْوَالنَّالَةُ كَ بِعَدِ مِلَكَ عَرِب مِن مِن مِن عَلَى جُوطُوفَان نُوحَ عَلَيْنِ الْوَالنَّالَةُ كَ بِعَدِ مِلْكَ عَرِب مِن مَن مِن مِن

﴿ (مَنْزَم بِسَالَشَرِنَ ﴾ •

ے پہلی با قند ارتوم تھی، عادا گرشخص کے معنی میں ہوتو منصرف ہو گااورا گرقبیلہ کے معنی میں ہوتو غیر منصرف ہو گا (لغات القرآن) اور یہال، اخ سے مراذ نبی اخوت ہے نہ کہ دینی، بِالاَحْفَافِ یہ حِفَفٌ کی جمع ہے ریت کے دراز و بلند وخمدار ثیلوں کو کہتے ہیں مزید حقیق ابتداء سورت میں گذر چکی ہے۔

فَيْخُولْنَى : بِالْآخْفَافِ بِهِ أَنَّذُو كَاصَلَيْ بِي بِهِيما كَه بِظَاهِ مَعْلَم بُوتا بِ بَلَكَ بِيعَادٌ عَالَ بِأَنْ شَارِح فِي الْكَونِهِمْ مُعْلَم بُوتا بِ بِلَكَ بِي الْآخْفَافِ البَرِهِ أَنَّذُو كَاصِلَه تَوْوه لا تعبدُوا إلَّا الله ب كما ياتي (جمل) بِأَنْ شارح فِي اشاره كرديا كَه أَنْ مصدريه يا مُنْفقه ب اور با يَقور يه بِين كُرْد فِي كَ صورت شي حال اوركيفيت كوبيان كرفى كي من مها يعني وه انبياء ورس اس حال اورصورت من كرد كرائي الى قومول كودُراف والحقيد

چَوَلْنَى ؛ تَـاْفِكَـٰنَا (ض،س) ہے اِفْكَا اس کے عنی جھوٹ بولنے کے ہیں گر جب اس کا صلہ عَن آتا ہے تو اس کے معنی برگشتہ کرنے اور پچیرنے کے ہوتے ہیں یہ برگشتگی اور پھیرنا خواہ اعتقاد کے اعتبار سے ہو یا کمل کے اعتبار سے۔

يَنِيَوُ إِنْ مُسْتَقَبَلَ أَوْ دِيتَهِمْ عادِضًا كَ صَفَت بَ حالانكه مُوسُونُ عَادِضًا نكره بِ اور مستقبل أوْ دِيتَهُم اضافت كى وجه معرفه اور عادِضٌ نكره ب وجه معرفه اور عادِضٌ نكره ب وجه معرفه اور عادِضٌ نكره ب وجه ب معرفه اور عادِضٌ نكره ب معرفه اور عادِضٌ نكره ب مثارح بي المبدار على المبدار معرف المبدار وكم المبدار وكما وكالمبدار من المبدار من المبدار من المبدار وقال المبدال معرف المبدار من المبدار والمبدار وا

فَيْوَلِّنَّهُ: فَاهْلَكَت كَاضَافَه كَامْقَصِدْ فَأَصْبَحُوْ الْكَعْطَف كودرست كرنا م

فَوْلَى ؛ أَوْ ذَائِدة (فيه افيه) ال لئے كه اكوزاكده مائے كي صورت ميں معنى بول كے كہم نے ال كود ليى قدرت دى جائ ميں قوم عاد كى قدرت مشبه بدہ اور قريش كى قدرت مشبه بدہ اور مشبه بدہ مشبه سے اقوىٰ بہوتا ہے ال سے فابت ہوا كہ قريش كوقدرت اور تمكين قوم عاد سے زياده دى تھى اللہ سے قريش كى عظمت بجھ ميں آتى ہے جو كه خلاف مقصود ہے ، لہذا شرح عليہ الرحمة كا أَوْ ذائدة ، كہنا ذائد معلوم ہوتا ہے (جمل) وَأَشُوبَتُ معنى المتعليل زخشرى نے كہا ہے ، إذْ ظرفيه ہوتا ہے جورى عليه ماك ہوتا ہے جورى قلبه مراى علي قلبه مراى علي قلبه مراى علي قلبه مراى علي قلبه مراى على قلبه مراى على قلبه مراى على قلبه مراى على قلوبه مر.

تَفْسِيرُ وَتَشِينَ عَيْ

اُذک رائعا عَادٍ (الآیة) اَحْقَاف، حقَفٌ کی جمع ہے ریت کے متنظیل، بلنداورخدار ٹیلوں کو کہتے ہیں، حضرت ہود علیقالاً والٹائلا کی قوم عاداولی اس علاقہ میں رہتی تھی، بیرحضرموت (یمن) کے قریب کا علاقہ ہے، آج کل یہاں کوئی آبادی نہیں،

الْمِنْزَمُ بِيَالَشَهُ عَالَى اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهُ

اغلب بیہ ہے کہ ہزاروں سال پہلے یہ ایک شاداب اورکشت زارعلاقہ ہوگا بعد میں آب وہوا کی تبدیلی نے اسے ریگز اربنادی ہوگا ، سنخضرت بلظنظمًا کی کفار مکدکی تکذیب کے پیش نظرآ پ بیٹھنٹیا کی تعلی کے لئے گذشته انبیاءاورسالقہ قوموں کے واقعات سائے جارہے ہیں،اس کےعلاوہ چونکہ سردارانِ قریش اپنی بڑائی کا زعم رکھتے تھے اوراپنی ٹروت ومشیخت پر پھولے نہ ساتے تھے، نیز انہیں اپنی حافت وقوت پر بڑا گھمنڈ اورغر ورتھاوہ اپنے آ گے کسی کی کوئی حیثیت نہیں سمجھتے تھے اس لئے یہاں اِن کوقوم عاد اور ان کی حافت وزوراً ورکی کا قصه سنایا جار ہاہے، توم عادقدیم زمانہ میں سب سے زیادہ طاقتوراور مرماییدار نیز مہذب تو م تھی توم یا د کا قصہ سن کراہل مکہ کوخود فریبی ہے نکالنااوران کی خوش فہمی کودور کرنا ہے،اس لئے کہاونٹ جب تک بہاڑ کے پنچے ہے ہیں نکاتہ اس وقت تک اس پراپی حقیقت آشکارانہیں ہوتی کنوئیں کامینڈک کنوئیں ہی کوسب کچھ بھتا ہے۔

حضرت ہود علیفتلاؤلاﷺ کی قوم جو بت پرئتی اورمظاہر پرئتی کی خوگرو دل دادہ تھی تو حیداور خدا پرئتی کے آثار ونشانات تک ان ہے معدوم ہو چکے تنھے انبیاء سابقین کی تعلیمات کو یکسر بھلا دیا تھا،حضرت ہود عَلِیجَالاً طَلاَيْكِ کو انبیاء سابقین کی تعیم ت اور تو حید کی تبدیغ کے لئے قوم عاد کی طرف مبعوث کیا گیا تھا،حضرت ہود علیہ لائل اللہ کے فرمایا اللہ کے سواکسی کی بندگی نه کرو مجھے تمہارے حق میں یہوم عسطیسمر (روز قیامت) کے عذاب کا اندیشہ ہے، قوم بجائے اس کے کہاس معقول ہ ت کو شجیدگی سے لیتی الٹااس کا نداق اڑا نا شروع کر دیا اور کہنے لگے وہ عذاب جس سے تم ہمیں ڈرار ہے ہوجیدی لے آؤ اگرتم اپنے دعوے میں سیچے ہو، ہمیں تو ایسامعلوم ہوتا ہے کہتم ہم کو بہکا کر ہمارےمعبودوں سے برگشتہ کرنا چاہتے ہو، حضرت ہود علاقالاً والنظر نے جواب دیا ہے بات تو اللہ ہی کومعلوم ہے کہ تم پرعذاب کب آئے گا ،اس کا فیصلہ کرنا میرا کا منہیں ہے،البنتہ اتنی بات ضرور ہے کہتم میرےانذار و تنبیہ کو مُذاق تمجھ کرعذاب کا مطالبہ کررہے ہوء تمہیں انداز ہنہیں کہ خدا کا عذاب کیا ہوتا ہے اور تمہاری نازیباحر کتوں کی وجہ ہے وہ کس قدر قریب آچکا ہے۔

فَلَمَّا رأوهُ عَادِضًا جبقوم عادن ايك كرااورساه بادل إنى واديوس كى طرف آت بوع ويه توبهت خوش بوئ اور کہنے لگے یہ برس وَبادل ہے ہم کوضر ورسیراب کرے گا ،ارشاد ہوانہیں ، بلکہ یہ وہی عذاب ہے جس کی تم جلدی مجاتے تھے ، یہ جواب يا توحضرت مود علاية للأولاية كل طرف يه تقايا مجرز بان حال كا، بخارى وسلم وغير بمانے عائشه رَضِحَا لله تَعَالِعُظَا ي روايت كيا كه بين نے رسول الله يَلِينَ عَلَيْهِ كُوبِهِي كُلْكُصلاتے ہوئے منتے ہوئے بين ديكھا، ہاں البته آپ مسكرا، كرتے تھے، اور آپ ہول یار تکے شدید (آندھی) دیکھتے تو آپ کے چہرۂ انور پراضطراب کے آثارنمودار ہوجاتے (ایک روز) میں نے عرض کیایا رسول امتد لوگ جب بادل دیکھتے ہیں تو خوش ہوتے ہیں کہاب بارش ہوگی ،اور میں دیکھتی ہوں کہ جب آپ باول ویکھتے ہیں تو آپ کے چہرۂ اور پرنا گواری ظاہر ہوتی ہے آپ ﷺ نے ارشادفر مایا: میں کس طرح مامون ہوجا وَل کہ اس میں عذا بنہیں ہے، حار نکمہ ا یک قوم آندھی کی وجہ سے ہلاک ہو چکی ہے،اورا یک قوم نے جب عذاب کودیکھا تھا تو کہاتھا یہ بادل ہم کوضر ورسیراب کرے گا۔ تُدَمِّرُ مُكلَّ شَیْءٍ بِأَمْرِ رَبِّهَا (الآیة) بیہوا کاطوفان ہے جس میں دردناک عذاب ہے ایتے رب کے حکم سے ہراس شک کو تباه کردے گاجس پراس کا گذر ہوگا، آخر کاران کا پیرحشر ہوا کہ ان کے مکانوں کے خرابات کے سواو ہاں کچھ نظر نہ آتا تھ، ہوا کا یہ

طوفان آیا کہ ریت کے تو دوں کوان پر بلیٹ دیا چنانچے سات را توں اور آٹھ دنوں تک وہ لوگ ریت ہیں دیے رہے ، پھراللّٰہ نے ہوا کو تھم دیا ، ہوائے ان کے اوپر سے ریت کو ہٹایا اور ان کو دریا میں کھینک دیا ، اب ان کا بیرحال ہے کہ وہاں ان کے مکانوں کے نشانول کے علاوہ کوئی چیز نظر نہیں آئی۔ (منع الفدیر ملعصا)

وَ لَـفَـدْ مَـكَمَّا هُمْرِ فيها (الآية) مطلب بيب كدار الله مكهم كوا ين قوت، قدرت اور ثروت، يرفخر ونازنيس موناحيائ س بق ز مانہ میں جوقو میں تم ہے کہیں زیاد ہ زور آور ہسر مایہ دارتھیں ہم ان کوان کی نافر ہ نیوں کی وجہ سے ہلاک کر چکے ہیں تمہاری ان کے مقابلہ میں کوئی حقیقت نہیں ہے لیعنی مال ، دولت ، طافت ، اقتدار _غرضیکہ کسی چیز میں بھی تمہارا اور ان کا کوئی مقابلہ نہیں ہے تمہارا دائر وَاقتدارتو شہر مکہ کے حدود ہے باہر کہیں بھی نہیں ،اوروہ زمین کے ایک بڑے تھے پر چھائے ہوئے تھے۔

و حَعَلْمًا لَهُمْ سَمْعًا وَ أَبْصَارًا و أَفْنِدَةً (الآية)اس كَخَاطب بحى ابل مكرى بين ان كَهَاج ربا ع كم كيا چيز بو؟ تم ے پہلی قومیں جنہیں ہم نے ہلاک و ہر باد کر دیا قوت وشوکت میں تم ہے کہیں زیادہ تھیں،کین جب انہوں نے اللہ کی دی ہوئی صلاحیتوں (آگھے، کان، ول) کوحق کو سننے، دیکھنے اور اے سمجھنے کے لئے استعمال نہیں کیا تو بالآخر ہم نے انہیں تناہ کر دیا اور میہ چیزیں ان کے بچھاکام نہ آسکیں ، فقیقت بھی یہی ہے کہ جب انسان آیات الہیامانے سے انکار کر دیتا ہے تو آئی جیس رکھتے ہوئے بھی نگاہ حق شناس نصیب نہیں ہوتی ، کان رکھتے ہوئے بھی وہ ہرکلہ نصیحت کے لئے بہرا ہوجا تا ہےاور دل ود ماغ کی جونعتیں خدا نے اسے دی ہیں ،ان سے الٹا سوچرااور ایک سے ایک بڑھ کر نعط نتیجہ اخذ کرتا ہے ، یہاں تک کہ خود اس کی ساری قوتیں اپنی ہی تابی میں صرف ہونے لکتی ہیں۔

وَلَقَدُ اَهْلَكُنْنَامَاحَوْلِكُمْرِمِنَ الْقُرى اي أَهْ مَنِيا كَنْمُود وعادٍ و قَوْم لُوطٍ وَصَرَّفُنَا الْايتِ كَرَزْنَا الحُحج الميّناتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿ فَلُولًا هَلَا نَصَرَهُمْ مِدفعِ العِدابِ عِنهِ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ أَنلُهِ اي الموضول اي هُمْ، وقُرِيانًا، الثاني واليهةُ بدلُ منه بَلْضَلُوْا عِنُوا عَنْهُمْ عَنْدَنُزُولِ العذاب وَذَٰلِكَ اي اتَحدُهُم الاصمام الهة قُرِبانًا إِقَالُهُمْ كَذَبْهُمْ وَمَاكَانُوْ اِيَفْتُرُونَ * يُكَدِّنُون ومَا مَصْدريّة او مَوْ صُولةٌ والبعائدُ محدُوفُ اي فيه وَ ادْكُرْ إَنْصَرَفْنَا اسْلُما إِلَيْكَ نَفَرَّاهِنَ الْجِنِّ جن نصيبين اليَس او جن سُوي وكَالُمُوا سَنْعَةُ او بَسُغَةً وكمان صلى الله عليه وسيلم سَتُلُن نَجُل يُصَلِّي بأصحابه الفحر زواهُ الشَّبْحار يَسْتَمِعُونَ الْقُرْانَ قَلَمَّا حَضَرُوهُ قَالُوَّا اى قَالَ عَضُهِم لِنِعُض أَنْصِتُوا ۚ اصْعُوا لاسْتِمَاعِه فَلَمَّا قَضِيَ مِع سُ قِرَاءَ تِه **وَلَوْ ا**رَجَعُوا **الْكُقُومِهِمْ مُّنْ ذِرِيْنَ ® مُخَ**وَفِينَ قَوْمَهُم بالعداب انْ لَمْ يُؤْسِنُوا وَكَانُوا يَهُودُا ۖ قَالُوا يُفَوْمَنَا إِذَّا سَمِعْنَا كَتْنًا هُو القُرارُ أُنْزِلُ مِنْ بَعْدِمُوسَى مُصَدِقًا لِمَابَيْنَ يَدُيهِ اى تقدمه كالتورة يَهْدِي إلى الْحَقّ الاسلا وَالْيَطِرِيْقِ مُّسَتَقِيْمٍ اي طريقه لِقُوْمَنَا آجِيْبُوْادَاعِيَاللّٰهِ سحمدًا صدى الله عليه وسلم الى الايمار والمِنُوْابِه يَغْفِرُلُّكُو

براس ردیا اور ہم نے بین کو میں اور سے بیان کی درکیوں نے کی اور بیات کی استیوں کو لیخی بستی والوں کو مثل خمود اور ما داور تو م لوط کو بیان میں ردیا اور ہم نے بین مردیا تا کہ وہ (کفر وشرک ہے) باز آبا کیں ، تو انہوں نے ان کے مدد کیوں نہ کی ؟ جن کو اللہ کے ملاوہ اللہ کا تقرب حاصل کرنے کے لئے اپنا معبود بنا رکھ نئی ، اور وہ دو بین اتسے حلوا کا مفعول ہن کی مدد کیوں نہ کی ؟ جن کو اللہ کے ملاوہ اللہ کا تقرب حاصل کرنے کے لئے اپنا معبود بنا رکھ نئی ، اور دو ہے اس کے مدوور کا معرود بنا رکھ بنا ہوگئی ہوں اور دو ہے ہوں وصول کی طرف و نے رہی ہوں کو تقرب ان کا معبود بنا لین مفعول ہن کی بنا ہوگئی ہوں ہوں کی خور ہوں معمود بیا ہو گئی ہوں ہوں کے لئے معبود بنا لین ان کا جمون اور اور نہ ہو گئی ہوں ہوں کے لئے معبود بنا لین کا جمون اور افتر ان کی جمود ہوں کے لئے معبود بنا لین کی ہوں کو بین ہوں ہوں کو جمود ہوں کہ ہوں کو ہوں کو ہوں کے لئے معبود بنا لین کو ہوں کو بین ہوں کو ہوں کو

کرتی ہے جن بینی اسلام کا کہامانو اس پرامیان لاؤ گے تو القد تعالیٰ تمہارے گنا ہوں کومعاف کردے گا، یعنی بعض گن ہوں کواس لئے کہ گنا ہوں میں حقوق العباد بھی ہیں وہ صاحب حق کی رضا مندی کے بغیر معاف نہیں کئے جاسکتے ، اور تمہیں در دناک عذاب ہے پناہ دے گا ،اور جو خص اللہ کے داعی کی بات نہ مانے گا تو وہ التدکوز مین میں عاجز نہیں کرسکتا ، بعنی اس سے بھا گ کر التدکو ی جزنہیں کرسکتا نداس کی پکڑ ہے نے کرنگل سکتا ،اوراس بات کونہ ماننے والے کے لئے اللہ کے سوانہ مدد گار ہوں گے کہ اس ہے اس عذاب کو دفع کرشکیس ، بیلوگ بعنی بات نه ماننے والے تھلی گمرا ہی میں میں کیا بیمنکرین بعث اس بات کونہیں جانتے؟ که جس الله نے آسان اور زمین بیدا کئے اور ان کے پیدا کرنے میں تھ کانبیں لیعنی اس سے عاجز نہیں ہوا، کیاوہ اس بات پر قادر تہیں کہ مردول کوزندہ کر سکے، کیول نہیں؟ بے شک وہ مُر دول کے زندہ کرنے پر قادر ہے، بسے سلدر، اِنَّ کی خبر ہے اور کلام النيسسَ اللّه بقَادِر كَ توت من به بلاشهوه مرشى يرقادر بوه لوك جنبول نے كفركيا جس دن آگ كے سامنے لائے ج تیں گے بایں طور کدان کوآگ میں عذاب دیا جائے گا،توان ہے کہا جائے گا کیا یہ عذاب حق نبیں ہے؟ جواب دیں گے ہال قتم ہے ہی رے رب کی (حق ہے) (اللہ) فرمائے گااب اپنے کفر کے بدلے عذاب کا مزاچکھو، پس (اے پیغمبر!) اپنی قوم کی اذیت پر ایها ہی صبر کر وجیها کہ آپ ہے پہلے اولوا العزم پنمبروں نے صبر کیا (لیمنی) ٹابت قدم رہے والوں اور تکایف پرصبر کرنے والوں جبیبا (صبر کرو) تو آپ بھی اولواالعزم ہوں گے،اور میٹ بیانیہ ہے اس صورت میں کل کے کل اولوا العزم ہوں گے،اور کہا گیا ہے کہ من تبعیضیہ ہے تو آ وم عَلِيْجَلا والشَّلا ان میں شارنہ ہوں گے،اللّٰہ تعالیٰ کے قول وَ لَمَّم مَسجِدْ لَمَهُ عَـزْمًا كى وجه سے اور نه يولس عَالِجَهَا وَالواالعزم يَغْمِرول مِينَ أَمار بول كَاللَّه لَعَ لَي كَقُولُ وَ لَا تسكُنْ كها حب الـــحــوت کی وجہ ہے اورآپ ان کے لئے (عذاب طلب کرنے میں) جلدی نہ کریں، یعنی اپنی قوم پرنز ول عذاب کے ہارے میں جلدی نہ کریں ، کہا گیا ہے کہ گویا آپ بین مجتبع ان ہے تنگ آ گئے تنے جس کی وجہ ہے آپ نے ان پرنز ول عذاب کو پندفر مایا، لہٰذا آپ کوصبر کا اور عذاب طلب کرنے میں عجلت کوٹرک کرنے کا تھم دیا گیا ، اس کئے کہ وہ تو ان پر لامحالہ نازل ہونے ہی والا ہے، جس روز بیلوگ آخرت کے اس عذاب کو دیکھے لیس گے جس کا ان سے وعدہ کیا جاتا رہا ہے تو انہیں یول معلوم ہوگا وہ دنیا میں ان کے خیال میں دن کی ایک گھڑی ہی رہے تھے ، بیقر آن تہہاری طرف اللہ کی طرف سے تبییغ ہے، پس عذاب و بھینے کے وقت فاسق کا فر کے علاوہ کوئی ہلاک نہ کیا جائے گا۔

جَِّفِيق يَرْكَيْكِ لِيَسْبَيُكُ تَفْسِّارِي فَوْالِل

فِيُوْلِكَ ؛ ولَهَذَ أَهْلِكُمَا ما حَوِّلِكُمْ مِنَ القرى بيكلام متانف ب، مشركين مكه يخطاب بإلام بشم محذوف ك جواب یر ہے مِنَ القُریٰ، ماکا بیان ہے اَھلَھا کے اضاف کا مقصد حذف مضاف کی طرف اشارہ ہے۔ فِيوَلِينَ ؛ لَوْ لَا، لولا كَيْفير هَلَا ي كرك بديناديا كه لَوْ لَا تَحضيضيه باور مقصدتون يخب

• ﴿ (مَنْزُم بِبَالشَّرْزِ) ≥

فِحُولِ ؛ لَدِس اتَّ حدوا، الَّدين التم موسول اتَّ حدُوا جمله بوَراس كا سلموصول صله على كر، نَصَرَ كا فاعل ، إتَّ خَذُوا كا مُنْولُ اللهُمْرُعَدُ وف بِ ورَهُ فَي قُوْمَامًا بِ اللهِ أَهُ قُوْمَامًا بِ مِل بِ كَمَا صوّح بِه المهسر، قربانًا بإب عَمْ إلى كامسدر بالدرية على بالهامة التحدُّوا كالفعول على مواور قُرْ بَانًا حال يامفعول لد مو

فِحْوَلَ يَن صَلُوا اى الاصنام اور بعض حضرات نے صَلُوا كافاعل كفاركوقر ارديا ہے ليعنى عابدين معبودين كوترك كرديل بَ

اوران ت ظہر رہتر اری کریں گے (اول اول ہے)۔ (منع الغدير)

فَيْفُولْ إِن عَمِوا مَهِ عَنْ بَهِ عَت جُوتُمِن سے زیادہ اوروس سے م جول اجمع الفار.

فَخُولِ : من الحق ميدهرًا كي صفت اول بياء وريستم عُون القُر وصفت تالى ب-

جَوْلِ ﴾ : حصرُ وَهُ سَمِيهِ كام جَعَ قر آن اور نبي ، ونوں بو سَكَّة بيں۔

فِيْفُولِنْ ؛ فلمّا فُصى جمهور في مجهول يزها اورصبيب بن مبيد في معروف يزها بمجهول كي صورت مين حضرُوهُ كي شمير قرآن کط ف اورمعروف کی صورت میں آپ این میں کی طرف راجع ہوگی۔ (متع الفدیر شو کاری)

فَوْلِلْ : مُلْدرن عال مقدره بون كي وجهة منسوب عاى مقدريس الإندار، نصيبين يمن كالكريت، نیدنوی نو ن مکسوره اور یا دسما کند کے سرتھ ،اورنوان ثانی میں فتحہ اورضمہ دونوں جائز ہیں ،آخر میں الف مقصور ہ ہے۔

فَخُولِ ﴾ وبعط معلى معلى منام نے اس واقع أن سبت بطن كل كرد بب كى ہے، اس ميں تسائح ہے اس كنے كدوه مقام جہال جنت ئے قرم ن شغنے کا مذکورہ واقعہ چیش آیا تھا وہ طن خلہ تھا ای کونخلہ بھی کہا جا تا تھا اور بیہ مقام مکہ سے حا کف کے راستہ میں ایب رات کی مسافت پر دا آنے ہے،اورطن کل وہ مقام ہے جہاں آپ بلن کتابی نے صلوٰ ق خوف پڑھی تھی اور بیدمقام مدینہ ہے دومنول کی دوري پرواقع ہے۔ (حسل)

فَخُولَ ﴾ : في ضلال مبين يبال جنات كاكلام يورا بوكيا أو لَمْريَوُوْ السّاللة كاكلام شروع موتاب-

يَحُولَنَى : وزيدت الماء فيه لِآنَ الكلام فِي قُوَّةِ ٱلنِّسَ اللَّهُ بقَادِرِ علامَكُلَى كامقصدا سعبارت كاضافدت ايب احترِ انس فاو فی ہے، اسمۃ انس میہ ہے کہ ہا وکلام کئی کے بعدز ائد ہوتی ہے اور جوات کے تحت ہے وہ شبت ہے 'البذائ فا ادر میں ہوء

جِيَّهُ إِنْ إِنَا بِهِ اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ اللهِ عَلَى اللهِ المِلْمُ اللهِ اللهِ اللهِ اله ہے ً و یا کے کام النیس اللّهُ بِفَادِرِ کَ قوت میں ہے اہذا ہا ء کا داخل کرنا جائز ہے اور یمی وجہ ہے کہ اس کا جواب القد تعالیٰ کے قول بلنی إلهٔ علی كل سىء قدير ش بلی ے ديا كيا بريال بات كى طلامت بكه كلام قوت مل كفى ك باس ك ملی کے دراید کلام تفی کا بی جواب آتا ہے۔

فِيْوَلِيْنَ : يُلقالُ لَهُمْ على مَكِلَى فِي عَلَى لَهُمْ مُعذوف ان راشاره كرديا كديوم كاناصب يُلقال تعلى محذوف هي، اوريوم يُعْرَضُ _ أَلْيْسَ هذا بالحق تك يقال كامقولد إ-

فِيُولِينَ ؛ وَرَبِنَا مِن واوَقيميد برائ الدي-

چَوُلِی ؛ ذو و النبات باولواالعزم ک نمیر جاس ئے معنی بین عالی بمت، ثابت قدم، اگر مس کو بیا نید ما ناجائے تو تمام انبیاء به الواالعزم میں شامل ہول گے اور بعض حضرات نے مسن کو تبعیف نیا ہے، اس صورت میں بعض انبیاء اولوا العزم سے مشتنی ہول گے، کما اشار البه المفسو و خملان الناقات

فَيُولِنَّهُ ، فَاصْبِرُ جَوَابِشِرطَ بَ ، فَا وَبِرُ النَيبِ ، شَرط مُحَدُ وف بِ اى ادَا كَانَ عَاقَدَةُ أَمْرِ الكفارِ مَا دُكِرَ ، فَاصِيرُ على أَدَاهُمْ ، قيل كَانَة ضَبَرَ مناسب بوتا كمفسر علام كَانَّة كوحذ ف رحية . (صاوى)

فَخُولِنَى: يَوْم يَرَوْدَ يولمريلبنواكاظرف بلطوله، لمريكننوا كالعليل مقدم ب

يَّنُ اللَّهُ: هذا القرآن بلاغ ، هذا القرآن محذوف ال كراش روكرويا كه بلاغ مبتدا محذوف كرتبر باوروبلاغ السرِّ للتبليغ. (ترويح الارواح)

تِفَيْرُوتِشِنَ

ربطآيات:

جنات کے قرآن سننے کا واقعہ:

صحیح مسلم کی روایت ہے معلوم ہوتا ہے کہ یہ واقعہ مکہ کے قریب واد کُ نخلہ میں پیش آیا جہاں آپ میں نیشین سے برام کو فجر کی نماز پڑھارہے تھے، ادھرایک نیا واقعہ بیر ونما ہوا کہ آپ میلین تھیلی کی بعثت کے بعد جنات کو آس نی خبریں سننے سے روک دیو کیو اس کے بعد اگر کوئی جن آسانی خبریں سننے کے لئے آس نوں کارخ کرتا تو اس پرشہاب اشاقب بھینک کرروک دیا جاتا، جنات

﴿ المِنْزَم بِبَلتَ إِنَا

میں اس کا تذکرہ ہوا کہ اس کا سب معلوم کرنا جائے کہ کونسانیا واقعہ دنیا ہیں رونما ہوا ہے جس کی وجہ ہے جنوں کے آسانوں پر جانے پر پابندی عائد کردی گئی ہے، جنات کے مختلف گروہ مختلف خطوں میں اس کی تحقیقات کے لئے بھیل گے، ان میں کا ایک سروہ حجاز کی طرف بھی پہنچا اس روز آنخضرت بھی تھی اپنچ چند صحابہ کے ساتھ مقام بطن نخلہ میں تشریف فرما تھے، اور سوق عکا ظ کی طرف جانے کا قصد تھا (عرب کے لوگ تجارتی اور معاشرتی امور کے لئے مختلف مقامات پر مختلف ایام میں بازار لگاتے تھے جن مین ہر خطے کے لوگ جمع ہوتے تھے، وکا نیں لگی تھیں، اجتماعات اور جلے ہوتے تھے۔ شعروخن کے لئے مشاعر ہے ہوتے تھے، جس طرح موجودہ زمانہ میں نمائش ہوتی ہیں ان بی میں سے ایک بازار عکا ظ میں لگنا تھا) رمول اللہ پیوٹھ تا باز موجودہ وہ سے جن میں ہوتی ہیں ہے۔ ہی جب آپ طون نخلہ پہنچ تو آپ اپ صحابہ کو فجر کی نماز پڑھا دے ہے جنات کی ایک جمامت میاں نہنچ ، قرآن من کر کہنے گئے ہیں وہ نیاواقعہ بی ہے جس کی وجہ ہے آسانوں پر جانے پر پابندی گئی ہے۔ (رواہ احمد، وابخاری وسلم، بحوارہ معارف) ایک روایت میں ہے کہ جنات کی ہے جنات کی ہے جنات کی ہے۔ اور اور اور اس کی تعداد سات یا نوٹس وہا کہ جب اپنی تو م کو پہر خانی کو تعداد سات یا نوٹس وہا کہ وہ ہو ۔ آسانوں کی تعداد سات یا نوٹس وہا کہ وہ ہے۔ آسانوں کی تعداد سات یا نوٹس وہا کہ وہ ہے۔ آسانوں کی تعداد سات یا نوٹس وہا کہ وہ کے لئے حاضر خدمت ہوئے۔

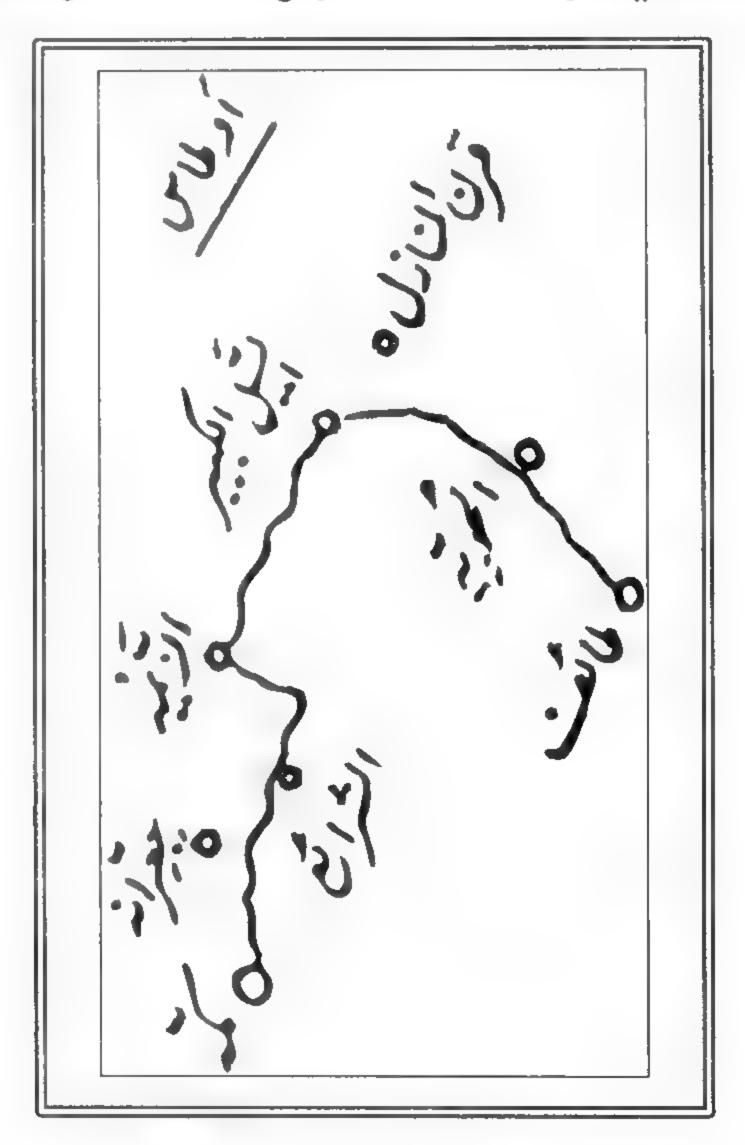
(رواه ابو نعيم والواقدي عن كعب الاحباره روح المعاني)

جنوں کی پہلی حاضری کا واقعہ جس کا اس آیت میں ذکر ہے بطن نخلہ میں پیش آیا تھا، اور واقد ی کا بیان ہے کہ بید واقعہ اس وقت کا ہے جب آپ طائف سے مایوس ہوکر مکہ عظمہ کی طرف واپس ہوئے تنے راستہ میں آپ نیطن نخلہ کے مقام پر قیام فرمایا، آپ نماز میں قرآنِ کریم کی تلاوت فرمار ہے بھے کہ جنوں کا ایک گروہ ادھر سے گذرااور آپ کی قراءت سنے کے سئے تھم گیا۔

بطن نخله کے جس مقام پریدواقعہ چین آیا یا توالمؤیمه تھا، یا السیال الکبیر کیونکہ یددونوں مقام بطن نخله میں واقع ہیں۔



(نقشه میں ان مقامات کا موقع ملاحظه فرمائیں)



ایک دوسری روایت میں ہے کہ جنات جب یہاں آئے تو باہم کہنے گئے خاموش ہوکر قرآن سنو جب آپ نماز ہے فارغ ہوگئے تو یہ جن سالم کی حقاشیت پرایمان لاکرا پی قوم کے پاس واپس گئے ان کو پورے واقعہ کی تفصیلی خبر سنائی کہ ہم تو مسلمان ہو گئے ہیں ہتم کو جس جی ہم تو مسلمان ہو جاؤ ہگر رسول اللہ بھی گئے کو ان جنات کے آنے جانے اور قرآن سن کرایمان لانے کی خبر نہیں ہوئی ، یہاں تک کہ سورہ جن کا نزول ہوا جس میں آپ کواس واقعہ کی خبر دی گئے۔

(رواه اين المنذر عن عبد الملك، معارف)

ویگراہ ویث میں بھی جنت کے آنے کی روایت دوسری طرح آئی ہیں گرچونکہ بیمتعدد واقعہ ت مختلف اوقات میں پیش سے ہیں اس پیش سے ہیں اس لئے ان میں کوئی تعارض ہیں ،خفا تی نے کہا ہے کہ جنات کی آمد کی روایات کو جمع کرنے سے معلوم ہوتا ہے کہ جنات کے وفود آپ کی خدمت میں چھ مرتبہ آئے ہیں۔

جنات میں ہے کوئی رسول نہیں:

اس امریس اہل علم کے درمیان اختلاف ہے کہ اللہ تعالیٰ نے جنات میں ہے کوئی رسول بھیجایا نہیں؟ ظاہر آیات قرآنیہ ہے یہی معلوم ہوتا ہے کہ جنات میں سے کوئی جن رسول نہیں ہوا، آپ نیافٹی کی بعثت جن اور انس دونوں کے لئے ہے۔



ڔڒٷ؞ؙٷ؉ڹؾؾ؞ڰٙڿؿٵ؈ؘٛؾٳٷۥ۠ٳؽڗؙ۫ٷڒڮڰڰؙٷۼٳ ڛ؈ڿڛڣڒ؋ڿؽٵؽڹڸؠۅ۫ڶؿڗؙۅٳڒڰؠڒٷۼٳ

سُوْرَةُ الْقِتَالِ مَدَنِيَّةٌ إِلَّا وَكَايِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ (الله يَةَ)، او مَكِّيَّةٌ وهي ثَمانُ أو تِسْعٌ وَّثلثُونَ آيةً.

سورهٔ قال مدنی ہے سوائے و کایّن مِنْ قَرْیَةٍ (پوری آیت) کے، یا کی ہے اور میہ ۳۸ یا ۳۹ آ بیتی ہیں۔

اى الايمان آصَّلُ أَحْبَطُ أَعُمَالُهُمُ كَاطَعَامِ الطَّعَامِ وصِلةِ الْارْخَامِ فَلَا يَرَوْنَ لها في الاخِرَةِ ثَوَابًا ويُجزون بها في الدُّنيا من فضَّلِهِ تعالى <u>ۗ وَالْذِيْنَ الْمَثُوَّا</u> اى الانصَارُ وغيرُهم وَكَيَلُواالصَّلِعْتِ وَالْمَثُوابِمَاثُرُلُ عَلَى مُحَمَّدُ اى القُرانُ وَهُوَالْحَقَّمِنَ عِنْدِ رَبِّهِ مُرَّلَقَرَعَنْهُمْ غَنْرَلهم سَيِيانِهِمْ وَأَصْلَحَ بَالَهُمْ اى حالهم فلا يَعْصُونَه ذَاكَ اى إضُلَالُ الاعمال وتَكفِيرُ السَّيَئاتِ بِهَكَّ بِسَبَبِ أَنَّ الْآذِينَ كَفَرُوااتَّ يَعُواالْبَاطِلَ الشَيطان وَاَنَّالَّذِينَ الْصَوَاالَّبَعُواالْحَقَّ يَدُ الغُرانَ مِنْ زَيْهِمْ كُذَٰ إِلَى اللهُ البَيَانِ كَضُرِبُ اللَّهُ النَّالِ الْمُثَالَكُمْ يُبَيِنُ احوالهم اى فالكَافِرُ يُخبَطُ عَمَلُه وَالمُؤْمِنُ يُغْفَرُ زَلَلُهُ فَإِلْا لَقِيْتُمُ الْالْمِيْنَ كَفُرُوافَضَرْبَ الرِّقَالِينَ مَصدرٌ بدَلٌ مِنَ اللَّفَظِ بفعدِ اي فاضربُوا رِ قَ يَهُم اي افْتُلُوهِ وعُبَرَ بضَرُب الرّقاب لأنّ الغَالتَ في القَتُل ان يُكُونَ بضَرُب الرّق حَتَى إِذَ الغُنتموهم اى أكثرُتُمْ بيهم القَتُلَ فَشُرُّوا اى فسانسِسَكُوا عَنْهُ وَأُسِرُوهُم وشُدُّوا الْوَثَاقَةُ ما يُوثُقُ مه الأسرى فَإِمَّا مَنَّا ابْعَدُ مَصْدَرٌ بِدَلٌ مِن اللَّفُظِ بِفِعِلِهِ أَى تَمُنُّونَ عِلِيهِم بِإِطُّلاقِهِم مِن غَيْرِ شيء وَإِمَّا فِذَاءً أَى تُفَادُونَهِم بِمالِ او أُسْرَى مُسَلِمِينَ حَتَى تَضَعَ الْحَرَبُ اي آهُلُها أَوْزَارَهَا أَوْ أَنْقَالَها مِنَ السِّلاح وغيره بأن يُسْلِمَ الكُفَّرُ او يَـذَخُلُوا فِي العَهدِ وهذه غَايَةٌ لِلْقَتْلِ والاَسْرِ ذَالِكُ خَبَرُ مُبْتَدَا مُقَدَّرِ اي الاَمُرُ فيهم مَادُكرَ

ەكەن-

وَلُوَيْتُكُا اللهُ النّهُ النّهُ النّهُ الْمَارِ وَالْمَانُ اَمْرَكُم بِهِ الْمَسَلُولُ اَعْتَمُ النّهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ مَزَلَت يومَ أحدِ وقد فشا في مسكم الى النّبَ والنّبِ اللهُ الل

میں اللہ کے اللہ کے اللہ کے نام ہے جو برد امہر بان نہایت رحم والا ہے اہل مکہ میں سے جن لوگوں نے کفر کیااور د وسروں کو اللہ کے راستہ لیعنی ایمان ہے روکا اللہ نے ان کے اعمال بر با دکردیئے، مثلاً کھانا کھلا نا اورصلہ رحی کرنا ، تو ان اعمال کا آ خرت میں پچھا جرنہ یا ئیں گے،البنة دنیامیں ان کواللہ کی مہر بانی ہے ان اعمال کا صلہ دیا جائے گا،اور و ہلوگ بینی انصار وغیر ہ ایمان لائے اور نیک اعمال کئے اور جومحمہ ﷺ پرنازل کیا گیا ہے لیعنی قرآن اس پر بھی ایمان لائے اور وہ ان کے رب کی طرف ہے جن ہے تو اللہ نے ان کے گناہ معاف کردیئے اوران کے حال کی اصلاح کردی تو وہ اس کی نافر مانی نہیں کرتے ، بیہ یعنی اعمال کو بر با دکرنا اور گذہوں کومعاف کرنا اس سب سے ہے کہ جن لوگوں نے کفر کیا تو انہوں نے باطل شیطان کی اتباع کی اور جولوگ ایمان لائے انہوں نے اپنے رب کی جانب سے حق یعنی قرآن کی اتباع کی تک ذالک سیخی اس بیان کے مانند اللہ تعالی لوگوں کے احوال کو بیان فرما تا ہے چتانچہ کا فر کے ممل کو ہر باد کردیتا ہے، اور مومن کی خطا وَں کو معاف کردیتا ہے، جب كا فرول سے تمہارى يُر بھير ہوتو گردنوں پر واركرو (ضَرّبٌ) مصدر بلفظ الفعل این تعل كے عض میں ہے لیعنی فاصّب مُو ار قَابَهُ مَر یعنی ان کوتل کرواور قل کوگردن مارنے سے تعبیر کرنے کی وجہ رہ ہے کول اکثر گردن مارنے سے (بآسانی) ہوتا ہے جب ان کو ا تحچی طرح کچل دو بعنی ان کوخوب قبل کر دوان کے بندھن خوب کس دو بعن قبل کرتا بند کر دواوران کوقید کرلو (وَ شَافَ) وہ شک جس کے ذریعہ قیدیوں کو باندھاجا تاہے (ری وغیرہ) (پھراختیارہے) خواواحسان رکھ کرچھوڑ دو(مَــــنَّـا) اینے فعل کا مصدر لفظی ہے اورا پے فعل کے وض میں ہے لیجنی بغیر کچھ لئے ان پراحیان کر کے چھوڑ دویاان سے فدید لے لو لیعنی فدید میں ان سے مال لے ﴿ (مَ زَمُ بِبَلْقَ إِ

نو یامسلمان قید بول کا تبادله کرلویهاں تک که جنگ بعنی جنگ کرنے والے اپنے ہتھیارڈ ال دیں تا آں که کفارمسلمان ہوجا کیر یا معاہدہ میں شریک ہوجا کئیں ،اور بین اور قبل اور قبد کی نایت ہے ذلِكَ مبتدا ءمقدر کی خبر ہے ای الاغمرُ ذلِكَ لیعنی ان کےمعاملہ میر تھم یہی ہے اوراً سرالقد جا بتا تو (خود) ہی بغیر قبال کے ان ہے بدلہ لے لیتر کیکن تم کوفٹال کا تھم دیا تا کہتم میں ہے بعض کو ال میں سے بعض کے ذریعیہ آ زمائے سوتم میں جوشہید کر دیا جائے وہ جنت کی طرف چلا جائے اور جوان میں سے قل کیا جائے وہ جہنم کی طرف چلا جائے ، جولوگ اللہ کے راستہ میں شہید کر دیئے جاتے ہیں اللہ تعالی ان کے اعمال کو ہرگز ضا کئع نہ کرے گا ، اورایکہ قراءت میں فَساتَـلُوْا ہے(یہ) آیت یوم احدمیں نازل ہوئی ،حال یہ کے مسلمانوں میں قتل اور زخم عام ہو گئے تھے، عنقریب الا تع یٰ ان کی دنیاوآ خرت میں ایسی چیز کی طرف رہنمائی کرے گا جوان کے لئے نافع ہوگی ،اور دنیاوآ خرت میں ان کے حال ک اصلاح کرے گا، اور دنیا میں جو کچھ ہے (مدایة واصلاح حال وغیرہ)اس کے لئے ہے جوشہ پیزئیں ہوا،اور جومقتول نہیں ہو_ ان کومقتولین میں تغلیباً شامل کر دیا گیاہے اوران کوالی جنت میں داخل فر مائے گا جس کی ان کوشنا خت کرادے گا چنا نچہوہ جنب میں اپنے مکانوں کی طرف اوراپی از واج کی طرف اور اپنے خدام کی طرف بغیر معلوم کئے پہنچ جائیں گے اے ایمان والو!اگر ا مند کی مدد کرو گے لینی اس کے دین اور اس کے رسول کی (مدد کرو گے) تو وہ تم کو تمہارے دشمن پر غالب کرے گا اورتم کو ثابت قدم رکھے گالیعی معرکہ میں تم کوقائم رکھے گا، اور اہل مکہ میں ہے جنہوں نے کفر کیا وہ ہلاک ہوئے (والملذیس کلفروا) مبتدا ہاور تَعَسُوا اس کی خبر ہے،اس حذف خبر پر فَتَعَسَا لَهُمْ ولالت كرتا ہے توان كے لئے اللہ كى طرف سے ہلاكت اور زيال کاری ہے،اوران کے اعمال ضائع ہوئے اس کا عطف تھے شہوا پر ہے بیہ ہلا کت اور حبط اعمال اس وجہ ہے کہ انہوں ۔ اس کو تا پسند کیا جس کواللہ نے نازل فر مایا لیعنی قرآن کو جواحکام پرمشمنل ہے تو اللہ تعالی نے ان کے اعمال ضائع کردیئے کیا بیلوگ ز مین میں چلے پھر نے بیں اور انہوں نے دیکھانہیں کہ جولوگ ان سے پہلے گذر چکے ہیں ان کا کیا انجام ہوا؟ اللہ نے ان ہلاک کردیا لیعنی خودان کواوران کی اولا دکواوران کے اموال کو ہلاک (ویر باد) کردیا، اور کا فروں کے لئے اسی طرح کی سزا کیر جیں کیعنی ان سے پہلے لوگوں جیسی سز ائمیں ہیں میہ لیعنی موشین کی نصرت اور کا فروں پرغضب اس وجہ ہے ہے کہ اللہ ایمان والوں مولیٰ (یعنی)ولی اور مددگار ہے اور بیر کہ کا فروں کا کوئی کارساز نبیں۔

عَيِقِيق اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللّلِي اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللّلْمُ اللَّهُ اللَّالِمُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّا اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ

ال سورت كانام سورة قال بترتيب صحفى كاعتبارت ال كانمبر ٢٥ باورينام آيت نمبر ٢٠ كفقر ك و فيه القِفَال عن ما فوق ب ال كوونام اورين ، ايك محمد اور دوسر اللذين كفروا. القِفَال عن ما فوق ب ، ال كوونام اورين ، ايك محمد اور دوسر اللذين كفروا. قِفُولَ فَي عَمَدُو الازم اور متعدى دونول مستعمل بيعني فووركنا اور دوسرول كوروكنا ، اور اللّذِيْنَ كَفَرُو استمراد كفار قرايش بين. قِفُولَ فَي اصَدَّ اعْمَالُهُمْ اى ابْطَلَهَا وَجَعَلَهَا صَايعَةً.

— ﴿ (مَ زَمُ بِبَالِثَ إِنَّ ﴾ -

فِجُوْلِكُمْ : وَالَّذِيْنَ امَنُوْا وَعَمِلُوا الصَّلِحْتِ ، عَمِلُوا الصَّلِحْتِ كَاعَطَفَامَنُوْا بركيا كيا _اسمين اس، تكرف اش رہ ہے کیمل صالح حقیقت ایمان کا جزنہیں ہے اس لئے کہ عطف مغایرت کو جا ہتا ہے، البتہ مل صالح کمال ایمان کے لئے شرطك درجه مي ب(كما هو محتار الاشاعرة).

فِيُوَكِّنَى: وامَـنُوا بِمَا نُزِّلَ عَلَى محمدٍ بيعطف غاص على العام كتبيل سے ہے مقصداس كامعطوف كى اہميت اور عظمت كو ُظا ہر کرنا ہے اور اس بات کی طرف بھی اشار ہ ہے کہ ٹھر بلانٹھٹٹا کی بعثت پر اور جو آپ بلونٹٹٹا لے کر آئے ہیں اس پر ایمان لائے بغيرايمان تامنبيل ہوگا،ليعني اگر کوئي تو حيداورلواز مات تو حيداورلواز مات دين نيز انبياء سابقين پرايمان رکھٽا ہو گرمجر بنظائلتا ک

نبوت كا قائل نه موتواس كاليايمان عندالله مقبول نه موگا

فِيْوَلِكُمْ : وَالَّذِيْنَ امَنُوا مبتدا بِ اور كَفَّرَ عَنْهُمْ سَيّا تِهِمْ اسْ كَيْجِر بِ اور وَهُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ مبتداونبر كے درمیان

فِيْ فُولِ مَن وَلِكَ مِبْدَا إِدِيانَ اللَّذِينَ كَفَرُوا النَّا مِبْدَا كَا جَرب،

فِيُولِكُنَّ : فَإِذَا لَقِينتُمُ الَّذِينَ كَفَرُوْ ا فَضَرْبَ الرِقَابِ ظرف يعنى إذَا لَقِينتُمْ كاعامل محذوف باورضوّ ب الرقاب كا بهى وى على ب تقدير عبارت بيب فاصر بوا الرقاب وقت مُلاقاتِكُمُ العَدُوَّ.

يَوْلِكُنَّ ؛ فَسَسَوْبَ الرِقابِ اس مين اس بات كي طرف اشاره بي كه صَوْبٌ مصدرات فعل امر إصر بُوا كان بب باس سے کہ اس کی اصل ف احسر بُسو ا المرِ فَابَ صوبًا ہے تعل حذف کیا گیا مصدر کومفعول کی جا بب مضاف کر کے تعل کے ق تم مقام کردیا گیا ،اس میں اختصار کے ساتھ ساتھ تا کیدبھی ہے۔

فِيُولِكُمُ ، إِذَا ٱلْمَعَنْلُتُمُوهُمْ جبتم ان كواتِهِي طرح قُلْ كر چكوانْ عَمَانُ مِنْ اللهِ عَالَى من جمع مذكرها ضر، همه ضمير جمع مذكر عًا بُب، اى أَكْثَرُ تُمْرِفِيهِم القتل اورمصاح بين أَتْخَنَ فِي الأرض، سارَ الى العدو.

قِجُولِكُمْ ؛ الْوِثَاقَ بِالفتح والكسر، مَا يُوثَقُ بِهِ رَى دغيره، جُعُوثُقُ جِيبٍ عِنَاقَ كَ جُع عُنُقٌ.

هِوَ لَهُ ﴾ : وهذه غاية لِلقنل والاسر ليني جب حرب بتهيارة الدےاور دعمن كے دم ثم، بالكل فتم موجا كيں توقل وقيد موقوف كردو_ فِيَوْلِلَى اللَّهِ مِنْ قُتِلُوا مِبْدَاء بِ اور فَلَنْ يُضِلُّ أَعْمَالُهُمْ مَبِعَداء كَيْ جُرب،

قِحُولَى ؛ لِيَبْلُو بَعْضَكُمْ بِبَغْضِ بِامر بالقتال كَاعلت بـــ

قِوْلَ ﴿ وَمَا فِي الدُّمِيا لَمِن لَمْ يَقْتُلُ وَادْرَحُوا فِي قَتْلُوا تَعْلَبُهَا مِاكِمَ اصْ كَاجِواب مُواحد أَضْ مِن مُاللَّهُ تى لى كِول يصلح بالهمر كَاتغير حيالهم فيهما اى في الدنيا والآخرة كي بهمر بمرادمقولين في الحرب ہیں، ظاہر ہے کہ دنیامیں اصلاح حال ہے مرادوہ چیزیں ہیں جود نیامیں نافع ہوں،مثلاً عمل صالح ،اخلاص، مدایت مگراس قتم کی صلاح حال توان کے لئے ہوئتی ہے جومقتول ندہوئے ہوں (تنبیہ)اس بات کا خیال رہے کدندکورہ اعتراض قتلو اوا قراءت پربهوگا،اوراً مر قاتلو ۱ والی قراءت لی جائے تو کوئی اعتراض نه ہوگا۔

<u>ێٙڣٚؠؗۯۅؖێۺٛڕؙڿ</u>

ال سورت کے تین نام بیں: ① سورہ محمد ﷺ، ② دوسرا سورہ قال اس لئے کہ اس میں قال کے ادکام فدکور ہیں،
ﷺ تیسرا السذیب محفوو اسپنام سورت کے اول کلے ہی ہے اخوذ ہے، اس سورت کا زمان تزول ہجرت کے فور ابعد ہے،
حضرت ابن عباس تَضَافَتُ النظافِ ہے مروی ہے کہ کے ایس من قسریة کی ہے اس لئے کہ اس کا نزول اس وقت ہوا کہ جب آپ فیسے میں بیار اور ہمکر مہ اور بیت اللہ پرنظر ڈال کرآپ نے فرمایا کہ ساری دنیا کے شہروں میں مجھے تو ہی محبوب ہے اگر اال مکہ مجھے یہاں سے نہ تکا لئے تو میں اپنے اختیار ہے اے مکہ استجے ہرگز نہ چھوڑتا ہفسرین کی اصطلاح کے مطابق جو آیا سفر ہجرت کے دوران نازل ہوئی ہیں وہ کی ہی کہلاتی ہیں۔

صدوا عن سبیل الله ، صدے معنی دوسروں کورو کے اورخودر کے کے جیں، سبیل الله سے اسلام مراد ہے، دوسروں کورا وِ خدا سے روک دے، دوسری صورت ہے کہ زبردی کی کوایان لانے سے روک دے، دوسری صورت ہے کہ زبردی کی کوایان لانے سے روک دے، دوسری صورت ہے کہ ایمان ہے کہ ایمان برقائم رہنا اور دوسروں کوایسے خوفناک حالات میں ایمان لانا مشکل ہوجائے، تیسری صورت ہے کہ لوگوں کو مختلف طریقوں سے دین اور اہل دین کے خلاف ورغلائے اور ایسے وسوسے ڈالے کہ لوگ اس دین سے برگمان ہوجائے میں، یا اسلام اور سلمانوں کے خلاف ایسایرو پیگنڈا چھیڑد ہے کہ اسلام بدنام ہوکررہ جسے اور لوگوں کے ذہنوں میں اسلام کی سے اور صاف صورت آنے کے بجائے ناط اور گندی صورت ذبنوں میں اسلام کی سے اور صاف صورت آنے کے بجائے ناط اور گندی صورت ذبنوں میں اسلام کی سے جائے دور ہونے گیں اور محبت کے بجائے نظر ت کرنے لیس، موجودہ دور میں سے صورت زیادہ رائے ہے بیائے نظر ت کرنے لیس، موجودہ دور میں سے صورت زیادہ رائے ہے ہوئے صدوا عن صعبیل الله میں شامل ہے۔

اصل اعمالهم اس کاایک مطلب توبیہ کے مشرکین مکہ میں جومکارم اخلاق پائے جاتے تھے مثلاً صلد حمی ،قیدیوں کو تزاد کرنا ، نیبیوں اور بیوا وَل کی مدد کرنا ، ہے سہاروں کوسہارا دیتا ،مہمان نوازی وغیرہ ، یا خانۂ کعبہ کی پاسبانی اور حجاج کی خدمت کرنا ، ان کاموں کا صله انہیں آخرت میں نہیں ملے گا ، اس لئے کہ آخرت کا اجروثواب ایمان کے بغیر مرتب نہیں خدمت کرنا ، ان کاموں کا صله انہیں آخرت میں نہیں ملے گا ، اس لئے کہ آخرت کا اجروثواب ایمان کے بغیر مرتب نہیں

﴿ (مَكْزُم بِبَالشَّهِ) ≥ ·

ہوگا، اور دوسرا مطب یہ کہ ان لوگوں نے نبی کریم بھی تھا کے خلاف جو سازشیں کیس اللہ نے انہیں ٹاکام ہن دیا بلکہ ان کی سازش کوان بی پر بلیٹ دیا، تیسرا مطلب ہیہ ہے کہ راہ حق کورو کئے اور کفروشرک کوعرب میں زندہ رکھنے کے لئے جو کوشش وہ تحد بلائیں تاکہ مقابلہ میں کررہے تھے، اللہ نے ان کورائیگاں کردیا ان کی ساری تدبیریں تھن تیر بے ہدف ہو کررہ گئیں، ب وہ اینے مقصد کو ہرگز ہ صل نہ کرسکیں گے۔

کفر عنه مرسیبلاته مروات و اصلح بالهم اول فقره کا مطلب بیہ کرز مانہ جاہیت میں جوگناہ ان سے سرز دہوئے سے التد تو گی نے ان کے ایمان کی بدولت وہ سب ان کے حیاب سے ساقط کرد ہے ،اب ان گناہوں پر ان سے کوئی باز پر نہ ہوگی اور اگر سینات ما بعدالا سلام سراد کی جائیں تو یہا کہ وعدہ ہے عفومعاصی کا ، و اصلح بالهم بال شان اور حال کے معنی میں ، یبال دونوں معنی سراد ہو سکتے ہیں ، پہلے معنی لئے جائیں تو مطلب آیت کا بیہ ہوگا کہ اللہ تعالیٰ نے ان کے ونیا و آخرت کے تمام کا مول کو درست کردیا ، و نیوی حالات کو درست کرنے سے مالی شکلات کو دور کرنا نہیں ہے ،اس لئے کہ مالی مشکلات تو عام طور پر مسلمانوں کے لئے ہر دور اور ہرز مانہ میں رہی ہیں اور شکلات کو دور کرنا نہیں ہے ،اس لئے کہ مالی مشکلات تو عام طور پر مسلمانوں کے لئے ہر دور اور ہرز مانہ میں رہی ہیں اور آئندہ بھی رہیں گی ،اس لئے کہ مالی مشکلات تو عام طور پر مسلمانوں سے تکالد یا ہے ،اب اس نے کہ ہمسلمان جس کم زوری اور بری اور بری میں اور مظلوی کی حالت میں اب تک بیتلا شے اللہ کریں گے ،گوم ہو کر دہنے کے بچائے اپنی زندگی کا نظام خود آزادی کے ساتھ چلائیں گی ،اور مغلوب ہونے کے بجائے غالب ہو کر دہنے کے بچائے اپنی زندگی کا نظام خود آزادی کے ساتھ چلائیں گی ،اور مغلوب ہونے کے بجائے غالب ہو کر دہنیں گے۔

دوسری صورت میں آیت کے معنی میہوں گے کہ اللہ تعالیٰ نے ان کے قلوب کو درست کر دیا، مطلب میہ کہ انہیں معاصی ہے بچا کر رشد وخیر کی راہ پر لگادیا، ایک مومن کے لئے اصلاح حال کی یہی سب سے بہتر صورت ہے، میہ مطلب نہیں ہے کہ مال دولت کے ذریعہ ان کی حالت درست کروں کیونکہ اول تو ہرمومن کو مال ملتا بھی نہیں، علاوہ ازیں محض دنیوی مال اصلاح احوال کا یقینی ذریعہ بھی نہیں، بلکہ اس سے فسادِ احوال کا زیادہ امکان ہے، اس لئے نہی ﷺ نے کثر ت مال کو پسندنہیں فر میں۔

﴿ (مَنْزُم بِبَاشَ إِ

فعاذا لقيتم الذين كفروا (الآية) ماقبل مين جب دونون فريقول كاذكركرديا كياتواب كافرون اورغيرمعامدال كتاب ہے جہاد کرنے کا حکم دیاجہ رہاہے،اور یہاں''لقاء'' ہے مطلقاً ملا قات مرادنہیں ہے بلکہ حالت جنگ میں مڈبھیڑ اور مقابلہ مراد ے، یہال قبل کرنے کے بجائے گردنیں مارنے کا حکم دیا ہے اس نئے کہاس تعبیر میں خاطت اور شدت کا زیادہ اظہار ہے۔ ندکورہ آیت ہے دو ہاتیں ٹابت ہوئیں ،اول پہ کہ جب قبال کے ذریعہ کفار کی شوکت وقوت ٹوٹ جائے تو اب بجائے قلّ ئر نے کے ان کوقید کرلیا جائے ، پھران جنگی قیدیوں کے متعلق مسلمانوں کو دواختیار دیئے گئے ، ایک بیہ کدان پراحسان کیا جائے لیحنی بغیر کسی فدیداورمعاوضہ کے چھوڑ ویا جائے ، دوسرے بیا کہان ہے کوئی فدید(معاوضہ)لیکر چھوڑ ویا جائے اور فدید کی ایک صورت یہ بھی ہوسکتی ہے کہ اگر پچھ مسلمان ان کے ہاتھ لگ گئے ہوں تو ان سے تبادلہ کرلیا جائے ، بیٹکم بظ ہراس حکم کے خلاف ہے جوسور وَانفال کی آیت میں مذکور ہے جس میں غز وہُ بدر ئے قید یوں کومعا دضہ لیکر چھوڑنے کی رائے پراللہ تعالی کی طرف ہے عن ب ہوا ،اوررسول اللہ بلان فیلٹانے فر مایا کہ ہمارے اس عمل پراللہ کا عذاب قریب آگیا تھا ،اگریہ عذاب آتا تو اس ہے بجزعمر بن خطاب اور سعد بن معاذ کے کوئی نہ بچتا کیوں کہانہوں نے فعہ بیکر حجبوڑ نے کی رائے سے اختلاف کیا تھا،خلاصہ بیر کہ آیت انفال تے بدر کے قیدیوں کوفند بیلیر بھی چھوڑ ناممنوع کر دیا تو بلامعاوضہ جھوڑ نا بطریق اولی ممنوع ہوگا،سورہ محمد کی اس آیت نے ان د دنوں ہو توں کو جائز قرار دیا ہے،اس لئے اکثر صحابہ اور فقہاء نے فر مایا کہ سور ہ محمد کی اس آیت نے سور ہُ انفال کی آیت کومنسوخ َ سردیا ، تفسیر مظہری میں قاضی صاحب تحریر فر ماتے ہیں کہ حضرت عبدالقد بن عمر دُفِحًا لَنامُ تَعَالَیٰ ُ اورحسن اورعطا اورا کثر صحابہ اور جمہور فقہاء کا یمی قول ہے اور ائمہ فقہاء میں ہے، تو ری ، شافعی ، احمہ ، ایخق رَحِمُللِظَ مُفاكّ کا بھی یمی مذہب ہے ، اور حضرت ابن عباس تصَحَاتُ نَعَالَتُ عَالَيْ عَنْ ما یا که غزوهٔ بدر کے بعدمسلمانوں کی تعداداورقوت بڑھ گئی تو سورۂ محمد میں احسان اورفدیہ کی اجازت ہوگئی ، تفسیر مظہری میں قاضی ثناء الله ریخم کلافائد تعالیٰ نے اس قول کو قتل کرنے کے بعد فرمایا کہ یہی قول سیحیح اور محتار ہے کیونکہ خو در سول الله نیں بھی نے اس پڑمل فر مایا اور آپ کے بعد خلفاء راشدین نے اس پڑمل فر مایا اس لئے بیہ آیت سور وَ انفال کی آیت کے لئے ناسخ ہے اور اس کی وجہ بیہ ہے کہ سورہَ انفال کی آیت غزوہُ بدر کے موقع پر ۴ ھابیں نازل ہوئی اور رسول اللہ ﷺ کا ھابی سلح حدید پیر بین جن قید بول کو بلامعاوضه آزادفر مایا ہے وہ سور ہ محمد کی اس آیت کے مطابق ہے۔ (معادف) تصحیم مسلم میں حضرت انس رکھ کا فند نَعالی کے سے روایت ہے کہ اہل مکہ میں سے ای آ دمی اج یک جبل تعلیم سے اتر آئے جورسول الله ينتينين كو بخبري مين قبل كرنا حاسة تنفيه، رسول الله يتنتين ني ان كوكر فيّار كراميا چر بلامعاوضه آزاد كرديا، اي يرسورة فتح كي بيآيت نازل بمونى وهو المذى كف ايديهم عنكم وايديكم عنهم (الآية) المم الوطنيف رَيِّمَ ثَلَاثُمُ قَعَالَىٰ كالمشبور فدبب ان کی ایک روایت کے مطابق میہ ہے کہ جنگی قید یوں کو بلہ معاوضہ یا معاوضہ کیکر آ زاد کرنا جائز نہیں ہے،ای لئے علماء حنفیہ نے سورہ محمد کی مذکورہ آیت کوامام صاحب کے نز دیک منسوخ اورسورہ انفال کی آیت کوناسخ قرار دیا ہے تفسیرمظہری نے بیواضح کر دیا کے سورۂ انفال کی آیت پہلے اور سورہ محمد کی آیت بعد میں نازل ہوئی ہے،اس لئے سورۂ محمد کی آیت نائخ اور سورۂ انفال کی آیت منسوخ ہے،اہ م صاحب کا مختار مذہب بھی جمہور صحابہاور فقہاء کے مطابق آزاد کر دینے کے جواز کا نقل کیا گیاہے، جب کہ اسلام

اورمسلمانوں کی اس میں مصلحت ہو،امام صاحب ہے دوسری روایت سیر کبیر میں جمہور کے قول کے مطابق جواز کی منقول ہے اور یمی اظہر ہے اور امام طحاوی نے معانی الآثار میں ای کوابوحنیفہ کامذیب قرار دیا ہے۔

خلاصہ بیکہ دونوں آیتوں میں ہے کوئی منسوخ نہیں ہے مسلمانوں کے حالات اور ضرورت کے مطابق امام اسلمین کواختیار ے کدان میں سے جس صورت کومناسب سمجھے اختیار کر لے ، قرطبی نے رسول الله ﷺ اور خلفا وداشدین کے مل سے بیٹا بت کیا ہے کہ جنگی قیدیوں کو بھی قتل کیا گیااور بھی غلام بنایا گیااور بھی فعہ پیکر چھوڑا گیااور بھی بغیر فعہ یہ کے آزاد کر دیا گیے ،اور فعہ بیہ لینے میں ریجی داخل ہے کہ مسلمان قیدیوں کو ان کے بدلے میں آزاد کرالیا جائے ، اور ریجی کہ ان سے پچھ مال لیکر چھوڑ دیا جائے ،اس ہےمعلوم ہوا کہ نہ کورہ دونوں آیتیں تھکم ہیں منسوخ نہیں ہیں ،مجموعی طور پر جوصورت حال واضح ہوئی وہ یہ ہے کہ جب کفار کے قیدی مسلمانوں کے قبضے میں آ جا کیں تو امام اسلمین کو جار چیز وں کا اختیار ہے 🛈 ۔اگر مناسب اور مسلحت سمجھے تو قتل کردے 🕑۔ اورا گرمسلمانوں کی مصلحت لونڈی اورغلام بنانے میں ہوتو ایبا کرلے 🤭۔ اورا گرمصلحت فدیدلیکر یا مسمان قیدیوں کا تبادلہ کرنے میں سمجھے تو رہیجی کرسکتا ہے 🏵۔ اوراگر بغیر کسی معاوضہ کے احسان کر کے چھوڑ نا اسلام اور مسلمانوں کی مصلحت اور مفادمیں ہوتو امام کو بیجی اختیار ہے۔ (معادف)

جنگی قید بوں کے بارے میں اسلامی نقطہ نظر:

قرآن مجید کی میرپہلی آیت ہے جس میں قوانین جنگ کے متعلق ابتدائی ہدایات دی گئی ہیں ،اس سے جواحکام نکلتے ہیں اور اس كے مطابق رسول الله ﷺ اور صحابہ كرام نے جس طرح عمل كيا اور فقهاء نے اس آيت اور سنت ہے جواشنباطات كئے ہيں

🗗 جنگ میں مسلمانوں کی فوج کا اصل مدف دخمن کی جنگی طافت کوتو ڑ دینا ہے، جتی کہ اس میں نڑنے کی سکت ندر ہے اور جنگ ہتھیارڈ الدے،اس ہدف ہے توجہ ہٹا کر دشمن کے آ دمیوں کو گرفتار کرنے ہیں نہ لگ جانا جا ہے، غلام بنانے کی طرف اس وفتت توجه کرنی جاہئے، جب دشمن کا اچھی طرح قلع قمع کردیا جائے ،مسلمانوں کو بیہ ہدایت آغاز ہی میں اس لئے دے دی گئی کہ کہیں وہ فدیدحاصل کرنے یاغلام فراہم کرنے کے لاچ میں پڑ کر جنگ کے اصل ہدف مقصود کوفراموش نہ کر بینصیں۔

🕜 جنگ میں جولوگ گرفتار ہوئے ہوں ان کے بارے میں فر مایا گیا کہتہیں اختیار ہے خواہ ان پرا حسان کرویا ان ے فدید کا معاملہ کرلو، اس سے عام قانون بی نکاتا ہے کہ جنگی قیدیوں کوفٹل نہ کیا جائے، حضرت عبداللہ بن عمر، حسن بھری،عطاءاورحمادین ابیسلیمان، قانون کےاس عموم کو لیتے ہیں، وہ کہتے ہیں کہ آ دمی کولل کرنا حالت جنگ میں درست ہے جب از ائی ختم ہوگئی اور قیدی ہارے قبضہ میں آ گئے تو ان گوتل کرنا درست نہیں ، ابن جربر اور ابو بمر بصاص کی روایت ہے کہ تجاج بن یوسف نے جنگی قیدیوں میں ہے ایک قیدی کوحضرت عبداللہ بن عمر کے حوالہ کیا اور حکم دیا کہ اسے قلّ کردیں،انہوں نے انکارکردیا اور **ندکورہ آیت پڑھ کرفر مایا کہ میں قید کی حالت میں کسی گوٹل کرنے کا تھم نہیں دیا گیا،اما**م

محد نے السیر الکبیر میں بھی ایک واقعہ لکھاہے کہ عبداللہ بن عامر نے حضرت عبداللہ بن عمر کوایک جنگی قیدی کے تل کا حکم دید تھا ورانہوں نے حکم کی تعمیل سے اسی بناء برا نکار کر دیا تھا۔

بن قریظہ نے چونکہ اپنے آپ کو حضرت سعد بن معاذ کے فیصلے پر حوالہ کیا تھا اور ان کے اپنے تشہیم کر دو تھم کا فیصلہ بہتھا کہ ان کے مردوں کو تل کر دیا جائے ، اس لئے آپ نے ان کو تل کرادیا ، بنی قریظہ کے قید یوں میں ہے آپ ہو تھا تھا نے زبیر بن باطا اور عمر بن سعد کی جان بخشی کی ، زبیر کو اس لئے جھوڑا کہ اس نے جاہلیت کے زمانہ میں جنگ بعث کے موقع پر حضرت ثابت بن قیس انصاری کو پناہ دی تھی ، اس لئے آپ نے اس کو ثابت بن قیس کے حوالہ کردیا تا کہ اس کے احسان کا بدلہ اداکر دیں ، اور عمر بن سعد کو اس لئے چھوڑا کہ جب بنی قریظہ حضور کے ساتھ بذعبدی کر رہے تھے اس وقت یہ خض اپنے بدلہ اداکر دیں ، اور عمر بن سعد کو اس لئے چھوڑا کہ جب بنی قریظہ حضور کے ساتھ بذعبدی کر رہے تھے اس وقت یہ خض اپنے قبیلے کوغداری سے منع کر رہا تھا۔

ویسلے کوغداری سے منع کر رہا تھا۔

(کتاب الاموال لابھ عبد ملحما)

مشروعیت جہاد کی ایک حکمت:

--- ﴿ (مَكْزُمُ بِبَاشَهُ } -

حکم: بیضروری نبین که قیدتل سے مؤخر ہوجیہا کہ بظاہر کلمہ حتی اور فاء سے متبادر ہے، بلکہ بیتر یض و تاکید ہے کہ صرف لڑ نے والوں کے بی تل پراکتفاء نہ ہو بلکہ مغلوبوں کوخوب س کر باندھ لو، مطلب بید کہ ہتھے ، ہتھیار بندو خانہ شین غرضیکہ میدان میں آنے والے سب پرعذاب الٰہی نازل ہے ایک کونہ چھوڑ و چونکہ بدون قبال وخونر ہزی دشمن مغلوب نبیس ہوتا۔

(خلاصة انتعاسير، تألب)

تجتمم: شدونات ہے صرف کس کر بائدھ لیٹا ہی مراد نہیں ہے بلکہ کمال ہوشیاری مراد ہے،خواہ باندھویا اسیر کرویا اور وئی طریقہ اختیار کرو۔

فَا فَيْنَ اللّهِ عَلَيْهِ مِنْ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ

(خلاصة التفاسير بحواله عالمكيري)

منگ لین مفت چھوڑ نااس وقت تک جائز ہے کہ وہ اسیر کسی کے حصہ میں نہ آیا ہو۔ مدابہ) منگ کی اسیر کے وض رہا کرنا تب ہے کہ وہ قیدی ایمان نہ لایا ہو۔

فَا عَبِهُ ﴾ كا فرجب قيد بهوكرا يمان لے آئے تو ہوائے استرقاق كے تمام امور سے برى ہے يعنی ندل كيا جا سكتا ہے اور ندفند يہ ميں ديا جا سكتا ہے البتہ غلامی سے رہائی بدون عتق ند ہوگی۔

تحكم: الزائى موقوف بوجائے سے بید مطلب نہیں كہ مقابل مغلوب بوكر مطیع بوجائے بلكہ مراوبیہ بے كہ تمام عالم میں كوئى مقابل ندر ہے اور بید حضرت عیسی اورا مام مہدى كے زمانہ میں بوگا، صدیت میں وارو ہے لاتنز ال طائفة من امتى بقات لون على من ناوالهم حتى يقاتل آخو هم المسيح الدجال (ابوداؤو) اور فرما يا الجهاد ماضِ الى يوم القيامة. (ابن كتير) (علاصة التفاسير ملعصّاء تاب لكهنوى)

إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ امَنُوْ اوَعِمِلُوا الشِّلِي جَلْتِ بَخْرِي مِنْ تَغْتِهَا الْأَنْهُرُّ وَالْذِيْنَ كَفُرُوْ الْيَتَمَتَّعُوْنَ مِي الدُّنيا وَيَأْكُلُوْنَ

كَمَا تَأَكُّلُ الْإِنْعَامُ اي لَيْسَ لَهُم همَّةُ الا بُطُونَهُم وفُرُوجَهُم وَلَا يَلْتَفِتُونَ الى الاخِرَةِ وَالْتَارُمَنُوَّي لَّهُمْ® سَنْرِلٌ وسَفَامٌ وسَصِيرٌ وَكَلَيِّنُ وكَمُ مِ**نْ قَنْهَةٍ أُ**ريدَبِهَا أَهُلُها جَى أَشَدُ قُوَّةً مِّنْ قَرْيَتِكَ سَكَّةَ اى أَهُمِها الَّتِيُّ أَخْرَجَبُكُ رُوعِي لِفِظُ قَرُيَةٍ **الْمُلَّذُهُمُّ** رُوعِي مَعْنَى قَرْيَةٍ الأولى فَ**لَانَاصِرَلْهُمُ** سِنُ إِهُلا كِنا <u>ٱفَمَنْ كَانَ عَلَى بَيْنَاتِهِ حُجَّةٍ وبُرهَان مِّنْ لَيْهِ وهُم المُؤْمِنُونَ كُمَنْ زُيِّنَ لَأُسُونَ كَلَمْ فَرَاهُ حَسَنًا وهُم كُفًّارُ</u> مكَّة وَاتَّنَعُوَّا اَهُوَاءَهُمْ فِي عِبَادَةِ الأَوْثَانِ اي لَا مُمَاثَلَة بينهما مَثَلُ اي صِفَةُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ " المُشْتَرِكَةُ بَيْنَ دَاخِبِيْهَا مُبْتَدَأً خَبَرُه فِ**يْهَا أَنْهَارُضِّنْ مَّآءِغَيْرِالِسِنَّ** بالمَدِّ والقَصرِ كَضَارب وحَدِر اي غَيْر مُتَغَيَّرُ بِخِلَافِ مَاءِ الدُّنْيَا فَيَتَغَيَّرُ لِعَارِض وَأَنْهُرُمِّنَ لَبَنِ أَمْرِيَّغَيَّرُطُعُمُهُ " بِحَلافِ لَبَنِ الدُّنْيَا لِخُرُوجِه مِنَ الضُّرُوعِ وَ**أَنْهُرُّمِّنَ تَمُولِلْآةٍ** لَذِيْذَةٍ **لِلشَّرِيانِيَّة** بِخلاف خَـمْرِ الدُّنْيَا فَاِنَّهَ كَرِيُهَةٌ عِنْدَ الشَّرْبِ وَإَنَّهُرَّقِنَّ كَسَلِّمُ مُصَفَّى بِخِلَافِ عَمَسَلِ الدُّنْيا فَإِنَّهُ لِخُرُوجِهِ مِن بُطُونِ النَّحْل يُخَالِطُهُ النَّسْمُعُ وغَيْرُهُ وَلَهُوْ فِيْهَا أَصْنَاتُ مِنْ كُلِ التَّمَرُتِ وَمَغْفِرَةً مِنْ تَلِيهِمْ فَهُ وَ رَاضٍ عَنْهُم مَعَ إِحْسَانِه اليهم بِمَا ذُكِرَ بِحَلافِ سَيِّد العَبِيْدِ فِي الدُّنْيا فَإِنَّه قَدْ يَكُونُ مَع إحْسَانِهِ اليهم سَاخِطًا عليهم كَمَنَّهُوَكَالِدُفِي النَّالِ خَبَرُ مُبَتَدَأُ سُقَدِّرِ اى أَسَنُ هُو في هذا النَعِيم وَسُقُوْامَآءُ حَيْمًا اى شَدِيدَ الحَرَارةِ فَقَطَّعَ أَمْعَآءُهُمْ اى سَصَارينَهم فَخَرَجَتُ مِنْ أَدْبَارهم وهو جَمْعُ مَعَا بالقَصْر وألِفُه عِوَضٌ عَن يَاءٍ لِقَوْلِهم مَعْيَان وَ**وَيْنُهُمْ ا**ى الـكُفَّارِ مِّنْ لَيُّنَّتِّمِ كُلُوكَ في خُطْبَةِ السجُمْعَةِ وهُم المُنَافِقُونَ حَتَّى إِذَا خَرَجُوْ أَمِنْ عِنْدِكَ قَالْوَالِلَّذِينَ أُوتُواا لَعِلْمَرَ لِعُلَمَاءِ الصَّحَابَةِ مِنْهِم ابُنُ مَسْعُودٍ وابنُ عَبَّاسِ اِسْتِهزَاءً وسُخُرِيَّةً مَاذَاقَالَ انِقًا بالمَدِوالقَصر اى السَاعَة اى لَايُرُجَعُ اليه أُولِيكَ الَّذِيْنَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ بِالكُفُرِ وَاتَّبَعُوَّا اَهُوَا عُمْرَ فَى النِفَاقِ وَالَّذِيْنَ اهْتَدُوْ وَهُمُ المُؤْمِنُونَ زَادَهُمُ اللَّهُ هُدّى وَاتَهُمُ رَتَقُوبِهُمْ الْهَمَ مَهُم مَا يَتَقُونَ به النَّارَ فَهَلْ يَنْظُرُونَ مَا يَنْتَطِرُونَ اي كُفَّارُ مَكَّةَ اِلَّاالْسَاعَةَ أَنْ تَأْتِيَهُمْ بَدَلِ اشْتِمَالِ مِنَ السَّاعَةِ اي لَيْسَ الاَمْرُ إِلَّا أَنْ تَاتِيهِم تَبُغْتُكُ فَجَاةً فَقَدُجَاءًأَشَرَاطُهَا عَلامَاتُها منها بعَنَهُ النَّبي صلى الله عليه وسلم وَانْشِقَاقُ القَمَرِ وَالدُخَانِ فَالْكُلُهُمُ إِذَا جَاءَتُهُمُ السَّاعةُ فِأَرْلِهُمْ اللَّمَاء لَهُ اللَّمَاء والدُخَانِ فَالْكُلُهُمُ اللَّمَاء الللَّمَاء اللَّمَاء اللَمَاء اللَّمَاء اللَّمَاء اللَّمَاء اللَّمَاء اللَّمَاء اللَّمَ فَاعْلَمْ إِنَّهُ لِآلِاللَّهُ اللَّهُ اى دُم يَا مَحمدُ على عِلْمِك بِذَٰلِكَ النافع فِي القيامَةِ وَاسْتَغْفِرُ لِذَنْبِكَ لِخِيه فِهِلَ ــةُ ذلك سَعَ عِصْمَتِهِ لِتَسْمَتَنَّ بِهِ أُمَّتُهُ وقَدْ فَعَلَهُ صلى الله عليه وسلم قال صلى الله عليه وسلم إِنِّى لَاسْتَغُورُ اللَّه فِي كُلَّ يَوم مِائَةَ مَرَّةٍ **وَلِلْمُؤْمِرِيُّنَ وَالْمُؤْمِرِيْنَ وَالْمُؤُمِرِيْنَ وَالْمُؤْمِرِيْنَ وَاللَّهِمِ بِالإستعفار** ﴾ لهم وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ مُنْصَرِفَكُمْ لِاشْتِغَالِكُم بِالنَّهَارِ وَمَثَّوْبِكُمْ إِن مَاوَكُمُ الى مَضاجعِكم بليل اي هُو غالم بجميع احوَالِكُم لا يَخْفَى عليه شيءٌ مِنْها فَاحْذَرُوهُ والخِطابُ لِنُمُؤْمِنِينَ وعيرهم

سید ہے۔ میر جی بنا ہے اور نیب مال کئے انہیں القدیق کی یقینا ایسے باغوں میں داخل کرے گا کہ جن کے نیجے میں میں داخل کرے کا کہ جن کے نیجے نہ یں بہتی ہیں،اورکفرکرنے والے دنیامیں (چندروزہ) زندگی کے مزیاوٹ رہے ہیں اور جانوروں کی طرح کھا (بی) رہے بیں لیعنی ان کے بیش نظر (شہوت بطن وفر ن لیعنی) ہیت اور پیچھ کی شہوت کے ملاوہ پچھنبیں اور وہ '' خرت کی طرف متوجہ نہیں ہوت اور جہنم ان کا ٹھکانہ ہے (یعنی)ان کی منزل ، مقام اور ٹھکانہ جہنم ہے (اے نبی) ہم نے کتنی ہی بستیوں کو مرادبستی والے تیں جوجا فت میں تیری اُس ستی مکہ ہے لیعنی مَدوااول ہے زیادہ تھیں جس ہے تجھ کو کالا (اَحْسرَ جَعْلُ) میں غطافسریاۃ ک رے بت کی تی ہے بان کے کردیا اول قسسریۃ کے معنی کی رعایت کی گئی ہے کہ کوئی ان کو ہماری ہلا کت سے بچانے والا شہوا، بھد ' نہیں ایسا: وسکنا ہے کہ وہ لوگ جواہیے ہیر در دگار کی طرف ہے ججت وہر بان ہیر ہوں اور وہ مومن بھی ہوں اس شخص کی طرح ہو جا کیں جس کے لئے اس کابُرانمل خوشنما بنادی_ا کیا ہو ووااس ممل کواحیصا سیجھنے نگا ہو،اور بنول کی بندگی میں اپی خواہشات کے پیروبن سیاہولین ان کے درمیان میں کوئی مما ثدیث نہیں ہے اوراس جنت کی صفت جس کامتقیوں ہے وعدہ کیا گیا ہے وہ جنت ب جومشتر ك باس ميل داخل بونے والول ميل (السجدة النع) مبتداء ب (فيها أيهَارٌ) ال كي فير ب يد ب كداس ميل ا یہ پانی کی نہریں بیں جو ہد ہوکر نے والہ نہیں (سٹ) مداور بغیر مد (دونو ل طرح ہے) جیسا کہ ضار ب و محلذ ہ لیعنی وہ یا نی متغیر ہونے والنبیں بخلاف دنیا کے یانی کے کہ وہ سی عارض کی وجہ ہے متغیر ہوجا تا ہے اور دووھ کی نہریں ہیں کہ جن کا مزہ نہیں برایا جنایاف دنیا کے دودھ کے، اس کے نقنول سے نطفہ کی مجہ سے اورشر اب کی نہریں جن میں چینے والول کے لئے بڑی لذب ہے بخلاف دنیا کی شراب کے کہ وہ پینے کے وقت بدمزہ ہے اور صاف شہد کی نہریں بیں بخلاف دنیوی شہد کے اس شہد کے تعلق کے پیٹ سے نکلنے کی وجہ ہے اس میں موم وغیر وال جاتا ہے اور ان کے لئے وہاں ہرفتم کے میوے ہیں اور ان کے رب ں طرف ہے مغفرت ہے وہ ان ہے راضی ہے ان کے ساتھ مذکورہ احسان کرنے کے باوجود، بخلاف و نیا میں غلامول کے آت ئے، کہ وہ بعض او قات ان پراحسان کرنے کے ساتھ ان سے ناراض بھی ہوتا ہے کیا بیاس کے مثل ہے جو ہمیشہ ہ گ میں رہنے والا ہے؟ پیمبتدا ہمجذ وف (بعنی) اَمَنْ هُوَ فِی هذا الععیم کی خبر ہے یعنی وہ مخص جوان نعمتوں میں ہوگاوہ اس شخص جیسا ہے کہ جو ہمیشہ آ " میں رہے گا اور جنہیں ً رم لین نہایت شدیدً رم یانی پلایا جائے گا، جوان کی امعاء کے عکر نے ککڑے کردے گا یعنی ان کی آنتوں کے ہتو وہ (کٹ کر)ان کی ذہروں ہے نگل جا ئیس گی ،اور اُمعاء معاً بلامد کی جمع ہے،اوراس کا الف یاء کے مون میں ہے(مثنیہ)میں ان کے قول مغیال کی دلیل ہے اور ان کفار میں بعض ایسے میں کہ جو جمعہ کے خطبہ میں آپ کی طرف (بظاہر) کان لگاتے ہیں اور وہ منافق ہیں یبال تک کہ جب وہ آپ کے پیس سے جاتے ہیں تو اہل علم علماء صی بہ ہے جس میں ابن مسعود اور ابن عباس شامل میں استہزاء پوچھتے میں ابھی اس نے کیا کہا؟ (آنھًا) مداور بلامد (وونوں) ے جمعنی ساعت (ابھی) ہم اس کی طرف توجہ ہیں ویتے یہی ہیں وہ لوگ جن کے دلوں پر کفر کی وجہ سے املد نے مہر لگا دی - ﴿ (مَكُونَ مُ مِسُلِقَهِ () ك

عَيِقِيق الْرَكْيِ لِيَسْسُلُ لَفَيْسَايُرِي فَوَالِلْ

قِولَنَى : مَنْوًى ظرف مكان ب، تهكاند، مدت درازتك فرفر في كامق مرجع) مناوى.

فَيُولِكُمْ: والنارُ مَتُوى لَهُمْ مبتدا فِهِر على كرجمد متانف بـ

فَيْوَلْنَى ؛ كَأْبِنَ يِكَافُ ورائي سے مركب ب كَفْر فبريك عنى بن ب مبتداء بونے كى وجد ي كال مرفوع ب-

فِيُولِكُمْ : هِي أَشَدُّ الْخِ جَلْهِ بُوكِر قَرْية كَ صفت بـ

قِوَّوَلِكُنَى: أَحرَ جَعْلُ أَخْرَ جَعْلُ كَالْمُعِيرِمُوَ نَتْ لائ يُس قَريدًا ولى كَالفَظُ ورعايت كَاللَّهُ الفَلْكُعَاهُمْ وَالْمُعِيرِ مِن قريدُ ثانيه كِمعَىٰ كى رعايت كَالَى ، لعِنى قَرْيَةً سے اہل قريم ادہونے كى وجہ سے تمير كوند كرلايا كيا ہے۔

فَيْوَلْنَ ؛ المشتركة يعنى جس جنت كامتقيول بومده كيا كياب وهتمام مونين كورميان مشترك باس لئ كه هرمومن

شرك ہے متق ہے، البية متقين كاملين كے لئے اعلى ورجه كى جنت ہے۔

فِيُولِنَى ؛ الجنهُ الَّتِي مبتداء باور فيها انهرٌ اس كي خرب-

میکوان؛ خبر جملہ ہے،اور جب خبر جملہ ہوتی ہے قائد ضروری ہوتا ہے مگریہاں کوئی عائد نہیں ہے۔

جِجُولِثِينَ: جب خبر عين مبتداء بوتى ہے تو ما كد ضرورى نبير، يبال ايسا بى ہے۔

-- ﴿ (مَ زَمُ بِهَ لِشَرْ) ٢٠

هِ فَوَلَى : السِنّ (س بنس) أَسْفًا بِإِنَّى كامتغير بونا، بد بودار بونا_

قِوْلَى، لَـذِيدةِ اس مِس اشاره بِ كرمصدر بمعنی اسم فاعل ہے اور اسناد مجازی ہے جیسا كه زید عدل میں یعنی جنت كی شراب اس قدر لذیذ ہے كه گویاوه خود سرایالذت بى لذت ہے، اس كوسوال وجواب كی شكل میں یوں بھی كهد سكتے ہیں كه حس حصرٍ لذةِ میں مصدر كاحمل ذات بر بهور ہاہے جو درست نہیں ہے، جواب بیہ كه بیمل زید عدل کے قبیل سے مربعة ہے۔

فَيْ فَلْنَىٰ: لَهُمْ فيها ، لَهُمْ كَانَنُ ياموجود كَمْتَعَلَق بُوكَرْجُرِمْقدم ب فيها محذوف منعنق باورمبتدا ، محذوف ب جيسا كمفسرعاد م فيها كان كرمبتدا ، محذوف كي طرف اشاره كردياب -

فَيُولِنَى ؛ فَهُوَر اصِ عنهم اس جمله كاضافه كامقصدايك سوال كاجواب ب-

لَيْبِهُوْ الْنَّ: اللّه تعالَىٰ كَوْلُو لههم فيها من كلِّ النّمواتِ ومغْفُرة من رَّبِهم سيمعلوم ہوتا ہے كہ جس طرح دخول جنت كے بعد جنتيوں كوميو كليں گے اى طرح مغفرت بھى جنت ميں ملے گى حالانكه مغفرت دخول جنت سے پہلے ہوئى چاہئے۔ جَجُولَ ثِبِيْ: مغفرت سے يبال رضام راد ہے جو كہ جنت ميں حاصل ہوگ۔

يَجُولُ الله مَنْ هُو خَالِدٌ في النار مبتدا محذوف كي خبر بي مفسر علام في مبتدا محذوف كي طرف اين تول أمَنْ هُو في هذا النعيد ستا ثاروكر ديا-

فَيْخُولْكُنَى ؛ أَمْعاء انتزيال أَمْعَاء ، مَعَا كَ جَمْع باس كاالف ياء سے بدلا ہوا ہے ندكدوا وَسے ، اس سے كداس كا واحد معى اور تثنيد مَعْيَانُ آتا ہے جواس بات كى دليل ہے كہ مَعَا كا الف ياء سے بدلا ہوا ہے۔

فَخُولَنَّ، مَصَارِیْنَ، مصارِیْن مَصِیْرٌ کی بَنْ بَنْ بَنْ الجَنْ عَصِیر کی بَنْ مصوران اور مصوران کی بَنْ مَصَارِینَ بِاس کِمعنی انتزیں، فاری میں رورہ کہتے ہیں۔

فَيْحُولْ ﴾ الأيُوجع الميه اس كى طرف توجه بيس كى جاتى ياوه قابل التفات نهيل مسيح نسخه نوجع متكلم كاصيغه ب يعنى بم اس كى با تول كى طرف توجه بين دينة تم بى بتادو مصرت نے ابھى كيا فرمايا؟ (منع الله مد شو كانى)

قِيُّولَ ﴾ فَانْسَى لَهُمْ خَرِمَقدم بِ اور ذِكو اهم مبتداء مؤفر بِ إِذَا جَاءَ تَهُمُ السَّاعَةُ جَمَلُهُ عَر محذوف بِ تَقدر عَبارت بيبِ إِذَا جَاءَ تَهُمُ السَّاعَةُ فَكَيْفَ يَتَذَكَّرُوْنَ.

قِوَلَيْ ؛ أُولَنْكَ مبتداء ب آلَذِيْنَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ ال كَيْرِ

قِوَلَنَى : وَالَّذِينَ اهْتَدُوا مِبْدَاء زَادَهُمْ اللَّي فَجِر

فِيَّوْلَ أَنْ اللهُ اللهُ السراط جمع شَرَطٍ بفتح الراء بمعنى علامت-

قِحُولَ ﴾ : فَاغْلَمْ اللَّهُ لَا إِلَهُ اللَّهُ لِعِنْ جب مونين كى سعادت اور كافروں كى شقادت معلوم ہوگئ تو آپ آئندہ بھى اپنے علم بالوحدانیت وغیرہ پرقائم رہیے۔

<! (مَنْزَمُ بِسَبُلَشَٰ لِيَا) عَالِمَ الْمُؤَمِّ إِسَبُلِثَ لِيَا إِلَيْهِ إِلَيْهِ إِلَيْهِ إِلَيْهِ إِلَي

قِخُولَكَ ؛ اسْتَغْفِرْلِذَنْبِكَ اى اِستَغْفِراللَّهَ أَنْ يَقَعَ مِنْكَ الذَّنْبُ او اِسْتَغْفِر اللَّهَ لِيَعْصِمَكَ وقيل الحطاب له والمراد الأمَّة حُمَراسَ آخري توجيها، آحمده جمله جوكه ووللمؤمنين والمؤمنات ٢٠١١ لكاركرتا ٢٠

وَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا يَتَمَتَّعُونَ وَيَا كُلُونَ كَمَا تَا تُكُلُ الْآنْعَامُ (الآية) لِينْ جس طرح جانوركها تاب اور يَحْتَبين سوچّنا كه بدرزق کہاں سے آیا ہے؟ کس کا پیدا کیا ہوا ہے؟ اور اس رزق کے ساتھ میرے اوپر رازق کے کیا حقوق عائد ہوتے ہیں؟ اس طرح بہلوگ بھی بس کھائے جارہے ہیں ، چرنے تھیتے ہے مطلب ، آ گے آخیں کسی چیز کی فکرنہیں ہے ، جانور کے کھانے میں اور انسان کے کھانے میں بظاہر کوئی فرق نہیں دونوں کی غرض ایک ہے بینی تلذذ اور بقائے جسم وقوت ، تمرحقیقت یے بین ہے، جانور اس لئے کھاتا ہے کہ لذت اندوز ہوا ور حیات وصحت باقی رہے اور انسان کا مقصد اس کھانے ہے توت خدمت ،اطمینان قلب، توت ذکر، کثرت عبادت ہوتی ہے، اگر کسی انسان کا میہ مقصد نہ ہوتو اس کا کھانا پینا جانور کے مانند ہوگا، ایسے ہی انسانوں کے بارے میں کہ جن کا مقصد شکم پُری اور جنس کا تقاضہ پورا کرنے کے علاوہ کچھے نہ ہو،فر مایا:ان کا کھانا حیوانوں کے ما نند ہوتا ہے۔

کھڑ ہے ہوکر کھانے کی ممانعت:

عظم: اس سے ضمناً کھڑے کھڑے کھانے کی ممانعت کا بھی اثبات ہوتا ہے جس کا مغربی تہذیب کی اتباع میں آج کل دعوتوں میں عام رواج ہوچلا ہے، کھڑے ہو کر کھانا چینا جانوروں کی خصلت ہے، حدیث شریف میں کھڑے ہو کریائی پینے کی تا کیدی ممانعت آئی ہے جس سے کھڑے ہوکر کھانے کی ممانعت بطریت اولی ٹابت ہوتی ہے ، اس لئے جانوروں کی طرح کھڑے ہوکر کھانے پینے سے اجتناب کرنا جا ہے۔ (زادالمعاد) مغربی تہذیب کا مقصد ہی منصوبہ بند طریقے سے اسلامی تہذیب کی مخالفت کرنا ہے،لہٰذامسلمانوں اورعلاء کو ہالخصوص ایسی محفلوں ، دعوتوں میں شرکت سے احتر از کرنا جا ہے۔

شان نزول:

عبد بن تميد اور ابويعلى اور ابن جرير وابن الى حاتم اور ابن مردويه نے ابن عباس تفعَالله تفالق سے روايت كيا ہے ك آنخضرت يَعْنَيْكِ جب مكدے (بارادة جرت)غارى طرف نكلة آپ نے مكدى طرف رخ كر كے فرمايا أنْت أَحَبُ ملادِ الله فِيَّ وَلَو لَاأَنَّ اَهْلَكَ احْرِجُونِي مغكَ لَمْرأَحْوج الْحَ السَمَدَةِ الله فِيَّ وَلَو يَش تیرے فرزند مجھے تھے سے نہ نکالے تو میں نہ نکاتا ،اس وقت بیآیت تازل ہوئی۔ (منع المدیر سو کانی)

اَفَهَنْ كَانَ علىٰ بَيّنَةٍ من رّبّه (الآية) بهلايديم مكن ب كريغ بمراوراس كتبعين كوجب خدا كي طرف سايك صاف اورسیدهاراستدل گیاہے اور پوری بصیرت کے ساتھ وہ اس پر قائم ہو چکے ہیں تو اب وہ ان لوگوں کے ساتھ چل سکیں جو

ا پی پرانی جا جیت کے ساتھ چینے ہوئے ہیں جو شیطان کے دام فریب میں پھنس کر صلالتوں کو ہدایت اور اپنی ہدکر داریوں کوخو بی سمجھ رہے ہیں، جو کسی دلیل کی بناء پرنہیں بلکہ اپنی خواہشات کی بناء پرخق و باطل کا فیصلہ کرتے ہیں، ندد نیامیں ان دونوں فریقوں ک زندگی ایک جیسی ہے اور ند آخرت میں ان کا انجام کیسال ہوسکتا ہے۔

مِنْ ماءِ عَيْرِ آمِنِ ، آمِن اس بانی کو کہتے ہیں جس کارنگ و حزویدل گیا ہو نیز بد بودار بھی ہوگی ہو، دنیا میں دریاؤں اور نہروں کے بانی سامطور پر گند ہے ہوتے ہیں ان میں ریت مٹی طرح طرح کی نہا تات ملنے کی وجہ سے ان کارنگ اور مزہ بدل جا تا ہے ، اس سے جنت کی نہروں کی ریتر بیف ہیان کی گئی ہے کہ وہ غیر آس ہوگا ، ای طرح دنیا کا دودھ چونکہ گائے ہینس بکر کی وغیرہ کے تفنوں سے نکلا ہوائہیں وغیرہ کے تفنوں سے نکلا ہوائہیں ہوگا بلکہ اس کی نہریں ہوں گی ، اس لئے جس طرح وہ نہایت لذیذ ہوگا ای طرح خراب ہوئے ہے بھی محفوظ ہوگا ، غرض رید ہنت ہوگا بلکہ اس کی نہریں ہوں گی ، اس لئے جس طرح وہ نہایت لذیذ ہوگا ای طرح خراب ہوئے ہے بھی محفوظ ہوگا ، غرض رید کہ ہنت کی نعمتوں میں مشارکت اس کے حالا و داور کوئی متا سبت نہیں ہوگی اور بیاس کے شہر کو یہاں کے شہر سے اور وہاں کے شہر کے بیاں کے شہر کے بیاں کے شہر کے بیاں کے شہر کے بیاں کے تھوں کے دودھ کو یہاں کے شہر کے بیاں کے تھوں کے دودھ کی بہاں کے تھوں سے نہوگی منا سبت اور نہمواز نہ۔

و کَمَنْ خُفْرَ اَنْ وَبِهِمْ اللّه اللّهِ اللّهِ عَنْ اللّهِ اللّهُ عَلَيْهِ اللّهِ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّ مو یحتے ہیں اول میر کہ بیغمت جنت کی ساری نعمتوں سے بڑھ کر ہوگی ،اور دوسرا مطلب میدہے کہ دنیا میں جوکوتا ہیں جنت مولی تھیں ان کا ذکر تک جنت میں بھی سامنے نہیں آئے گا بلکہ اللّہ تعالیٰ ان پر ہمیشہ کے لیے پر دہ ڈالمہ ہے گا تا کہ جنت میں وہ شدہ میں دہ

فَهَلْ بَنْظُرُوْنَ إِلَا السَّاعَةُ أَنْ مَأْتِيهِم بَغْنَةً جَهِال تَكْنَّ كَواضَى بونْ كَاتَعْلَى ہِوہ وَ ولاك ہاور قرآن كَ مَعْرَانه بيان ہے، محمد ظِولا السَّاعة أَنْ مَأْتِيهِم بَغْنَةً جَهِال تَكْنَّ كَواضَى بوئاتك ہے انقلاب ہے انتہائى روشن طريقه پر وائن معجزانه بيان ہے، محمد ظِولا الله على مروبروآ كھڑى ہو؟ اور يہتمام نيبى بوچكاہ، اب كيا ايمان لائے كيلئے يہلوگ اس بات كا انتظار كردہے ہيں كہ قيامت ان كے روبروآ كھڑى ہو؟ اور يہتمام نيبى باقوں كا مينى مشہدہ كرليس، اس وقت تو بڑے ہے بڑا كا فربھى ايمان لا تاہے مگراس ايمان كا كوئى اعتبار نبيس فلا صديد كما يمان

. ﴿ إِنْ مُنْزَمُ بِيَهُ الشَّرْزِ] ٢٠

کے لئے تمام شواہد و دلاکل آ چکے جو کہ ایک صاحب عقل وبصیرت کے ایمان لانے کے لئے کافی ہیں اب بھی اگر ایمان نہیں لاتے توبس اب ایک علامت جس میں تمام مغیبات مشام بہوجا کیں گے باقی رہ گئی ہے، اور وہ ہے قیامت۔

فَفَدْ جَاء اَشْرَاطُها (الآیة) اگرمشرکین وکفارکوقیامت کے بریا ہونے کا انتظار ہے تواس کی علامات بعیدہ تو آنچکی ہیں ان میں ہے ایک بڑی علامت خود نبی پیٹھ کی بعثت ہے، صحیحین وغیر ہما میں حضرت انس تفتحاناتُهُ تَغَالِثُهُ سے مروی ہے کہ رسول الله بالقلط في ما يابعضتُ أنها والسَّاعَةُ كهاتمين مين اورقيامت اس طرح بينج كن مين اورا ين الكشت شهادت او ورمیانی انگل ہے اشارہ کر کے فرمایا: جس طرح ان دونوں انگلیوں کے درمیان کوئی انگلینبیں ہے، ای طرح میرے اور قیامت کے درمیان کوئی نبی نبیس ہے اور اس جیسی ایک حدیث بخاری شریف میں کہل بن سعد دینے کا نشانی کے سے بھی مروی ہے۔

وَاسْتَغْفِرُ لِلَانْبِكَ وَلِلْمُؤمِنِيْنَ وَالمُمُؤمِنَاتِ (الآية) الآيت مِن بِي يُتَفَادَ كَامَنغفار كاتَكم ويا كما بالسيخ لي مجمّ اور مومنین کے لئے بھی ، یہاں پیشبہ ہوسکتا ہے کہ انبیاء پیبالنا او معصوم ہوتے ہیں پھران کواستغفار کا کیوں تھم دیا گیا ہے؟ جَنُ لَئِيْ: بیجہ عصمت اگر چہ انبیاء پیبلیٰلا سے گناہ کے سرز دہونے کا اخمال نہیں تھا گرعصمت کے باوجود بعض او قات خطا اجتہا دی سرز دہوجہ تی ہے،خطاءاجتہا دی اگر چہ قانون شرع میں گناہ نہیں ہے بلکہ اس پرجھی اجرماتا ہے انبیاء پیبہ پنالا کوان کی خطا پرمتنبه کردیا جا تا ہے مگران کی شانِ عالی کے اعتبار ہے اس کو ذنب سے تعبیر کردیا جا تا ہے جیسا کہ سورہ عبس میں آپ پرایک شم عتر ب فرما يا وه بھى اسى خطاء اجتها دى كى مثال تھى جسى كى تنصيل (انشاء الله:) سور وعبس بيس آئيگى ۔ (معادف)

اوربعض حضرات نے'' ذنب'' ہے مراد خلاف ادلی لیا ہے جس کا انبیاء سے سرز د ہوتاممکن ہے اور نہ بیعصمت کے خلاف ہے، بعض اوقات امت کی سہولت اور بیانِ جواز کے لئے نبی خلاف اولی کوا ختیار کر لیتا ہے، اس کے علاوہ اسلام نے جواخلاق انسان کوسکھائے ہیں ان میں سے ایک ریمی ہے کہ بندہ اسینے رب کی بندگی بجالانے میں اداء حق کی خاطر ج ن لزانے میں خواہ اپنی حد تک کتنی ہی کوشش کرتار ہا ہو، بندہ کواس زعم میں مبتلانہ ہوتا جا ہے ، کہ جو پھے کرنا جا ہے تھاو میں نے کردیا ہے اس لئے کہ سی بھی بندے ہے اس کی شایا نِ شان حق ادا ہو بی نہیں سکتا ،اس لئے کہ بندہ جس قدر بھی شک کرے گا تو نیل شکر کاشکر لازم ہوگا اور بندہ جتنا بھی شکر کرے گا بیسلسلہ بڑھتا ہی رہے گا ،ادا وشکر میں اگر جان بھی وید _ پھر بھی اس کاحق ا دانہ ہوگا آ خریش میں کہنا ہوگا۔

حق توبہ ہے کہ حق ادا نہ ہوا جان دی دي ہوئی ای کی تھی اس کے علاوہ کوئی جارہ ہی تہیں کہ اس بات کا اقر ارکرے کہ اے میرے مالک، تیرا جومیرے اوپر حق تھا میں وہ کماھنہ ا نہیں کرسکا ہوں،اور ہمہ دفت اپنے قصور کا اعتراف کرتارہ، یہی روح ہے اللہ کے اس ارشاد کی کہاہے نبی اپنے قصور کی معاد ما تكو،اس كا مطلب ينهيس كرمعاذ الله نبي نے في الواقع جان يو جھ كركوئي قصوركيا تھا۔

وَيَقُولُ الَّذِينَ امُّنُوا طلبا للجهاد لَوْلًا هلا مُزِّلَتُسُورَةٌ فِيهَا ذِكْرُ الجِهَادِ فَإِلْاَ الْنِزِلَتُسُورَةٌ نُخَلَّمَةً اى لَمْ يُنسَدِ

سها شَىءٌ وَّذُكِرَ فِيْهَا الْقِتَالُ اى طَلَبَه رَأَيْتَ الَّذِيْنَ فِي قُلُوْ بِهِمْ مَرَضٌ اى شَكَّ وهُــهُ السُسَامِةُ و يَّنْظُرُونَ اِليَّكَ نَظَرَ الْمَغْشِي عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ خَوْفًا منه وكراهِيَة له اى فَهُمْ يَخَافُونَ مِنَ القِتَالِ ويَكُرهُونَهُ فَأُولَىٰ لَهُمْ اللَّهُ مُنْ مَنْدَا ، خَبَرُه طَأَعُهُ وَقُولُ مُعَوُولُ مُ اللَّهُ الله عَسَنَ لك فِإِذَا عَزَمُ الْأَمْرُ اللَّهِ الله فَي مُنْ القِتَالُ فَأَوْصَدَهُ وَاللَّهُ وَي الايُمان والطَّاعَةِ لَكَانَ خَيْرًا لَهُمُونَ وَجُمُلَةُ لَوجَوابُ إِذَا فَهَـَلُّعَيْتُمْ بكسرَ السين وفتجها وفيه التفات عنِ الغَيْبَةِ الى الخطاب اى لَعَلَّكُم الْنُقُولِيَّتُمُ اَعُرَضْتُم عَنِ الاِيْمَانِ ا**َنُ تُفْسِدُوا فِي الْاَصْ وَتُقَطِّعُوا اَزْحَامَكُمْ** اى تَعُودُوا الى أَمْرِ الدَّبَاهِ لِيَةِ مِنَ الْبَعْيِ والقَتْلِ أُولِيْكُ أَى المُفْسِدُونَ ال**َّذِيْنَ لَعَنْهُمُ اللَّهُ فَأَصَّمُّهُمْ** عَن اسْتِمَاعِ الحَقِ وَ**اَعْلَى اَبْصَارَهُمُ عَن ط**ريقِ الهِداية **ۖ أَفَلَا يَتَذَبَّرُونَ الْقُرْانَ** فيَعْرِفُونَ الحَقَّ **اَمْ** بَل عَلَى قُلُوبٍ لهم أَفْقَالُهُ اللهُ فَلَا يَفُهَ مُوْنَهُ إِنَّ الَّذِيْنَ التَّذُوْلَ بِالْمِنْفَاقِ عَلَى أَدْبَارِهِمْ مِنْ بَعْدِمَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَى الشَّيْطَانُ سَوَّلَ رَيَّن لَهُمْ وَأَمْلَى لَهُمُ بِضَمِّ أَوَّلِه وبِفَتَحِهِ واللَّامِ والمُمْلِي الشَّيطَانُ بِإِرادَتِهِ تعالى فَهُو المُضِلُّ لهم ذَلِكَ اي إِضُلَالُهِم **بِأَنْهُمُ قَالُوْلِلَّذِينَ رَجُوْلُمَانَزَّلَ اللهُ** اى لِلمُشركين مَ**سُطِيْعُكُمْ فِي بَعَضِ الْلَمَرَ** أَسُرِ السُعَاوَنَة على عَدَاوةِ النبي صنى اللُّه عليه وسلم وتَثْبيط الناس عنِ الجِهَادِ سعَةً قالُوا ذلك سِرًّا فاظهره اللَّهُ تعالى وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِسْرَارَهُمْ فَ بِفَتْحِ الهَمْزَةِ جمعُ سِرٌ وَبِكَسُرِها مَصدر فَكَيْفَ حالُهِم إِذَا تُوقَتُّهُمُ الْمَلَلِكَةُ يَضْرِبُونَ حالٌ سِ المديكة وَجُوْهُمُ وَالْدَبَارَهُوْ طُهُ وَرَهُم بِمَقَاسِعَ مِنْ حدِيدٍ لَلِكَ اى التَوَقِي على الحالةِ المَذْكُورَةِ بِأَنْهُمُ التَّبَعُوْ اللَّهُ وَكُرِهُ وَارِضُوانَهُ اى العَمَلَ بِمَا يُرَضِيْهِ فَأَحْبَطَ اعْمَالُهُمُ

الرس المراق الم

ھ (فِرَمُ بِبَالثَ لِ) ≥-

عَمِينَ فَيْرَكِيكِ لِسِيمَ الْحَالَةِ لَقَيْسَارِي فَوَالِلا الْمَالِمَ الْمَالِمَةِ الْمِلْ الْمُلْكِلِينَ الْمُلْكِلِينَ الْمُؤْلِدِينَ الْمُؤْلِدِينَا الْمُؤْلِدِينَا الْمُؤْلِدِينَ الْمُؤْلِدِينَا الْمُؤْلِدِينَا الْمُؤْلِدِينَ الْمُؤْلِدِينَ الْمُؤْلِدِينَ الْمُؤْلِدِينَا الْمُؤْلِدِينَ الْمُؤْلِدِينَا الْمُؤْلِدِينَا الْمُؤْلِدِينَا الْمُؤْلِدِينَا الْمِنْ الْمُؤْلِدِينَا الْمُؤْلِدِينَا الْمُؤْلِدِينَا الْمُؤْلِدِينَا الْمُؤْلِدِينَا الْمُؤْلِدِينَا الْمُؤْلِدِينَا الْمُؤْلِدِينَالِيلِيلِينَا الْمُؤْلِدِينَالِيلِيلِينَا الْمُؤْلِدِينَا الْمُؤْلِيلِيلِيلِيلِيلِينَا الْمُؤْلِدِينَالِيلِيلِينَا الْمُؤْلِيلِيلِي الْمُؤْلِدِينَالِيلِيلِيلِيلِيلِيلِيلِيلِي الْمُؤْلِدِيلِ

ح (مَزَم پِبَالشَ إِ ﴾

فِيُوَلِنَى : فَلَوْصَدَقُوا اللَّهَ بِعَضَ حَطْرات نَهُما ہے کہ لَو صَدَقُوا اللَّهُ مَعَ اینے جواب کے اِذَا کا جواب ہے اور بعض حضرات نے اِذَا کا جواب کَرِهُوا محذوف مانا ہے اور فَلَو صَدَقُوا اللَّهَ کوشرط اور لَکانَ حیرًا لهم کواس کی جزاء قرار دیا ہے۔

دیا ہے۔ چُول آن : فَهَلْ عَسَيْتُمْ إِنْ تَوَلَّيْتُمْ ، عسَيْتُمْ افعال رجاء (مقارب) من سے فعل ماضی ہے بین 'تم ہے بعیر نہیں کتم''ال میں مزید تو تَحَ وَتَعْرِ لِعے کے لئے غیبت سے خطاب کی طرف التقات ہے ، حضرت قناده تفاق اللّهُ مُنالِقَةُ نے تَو لَیْنَدُمْ کے عنی اعراض عن الطاعة کے کئے بیں مفسر علام نے بہی معنی مراد لئے بیں اور کلبی نے تَو لَیْنَدُمْ کے معنی اِنْ تَو لَیْنُدُمْ اَمْوَ الْاَمَّةِ کے لئے بیں ، یعنی اگرتم کو امت کے امور کا والی اور ذمہ دار بنادیا گیا تو تم ملک میں ظلم کے ذریعہ فساد ہریا کروگے۔

فَيْقُولْنَى الْفَالُهَا، اقفال فَفُلُ كَ جَعْبَ بِمعنى تالاءاً فَفَال كَاضَافت قلوب كَ طَرِف كَرَكِ اشاره كردياكه يهال تفل عرفى تالامراونيين به بلكه فاص تم كا غيبى تالامراد به جوقلوب كے مناسب جوء مثلاً توفيق كاسلب جونا ، غوروفكر كى صلاحيت كافتم بوجانا وغيره وغيره ، مفسر علام نے فلا يَفْهِمُونَهُ سے اى نيبى تالے يعنی سلب صلاحيت فيم كی طرف اشاره كيا ہے۔

قر این میں دوقراء تیں ہیں ﴿ ہمزہ کا ضمداور لام کا کسرہ معیاء کے فتہ کے ای اُمْلِی ہاضی مجبول ان کوڈھیل دی گئی اور ﴿ وَ مَلْمَ اَلَّمُ اَلَى اَلْمُ اَلَى اللّٰهِ اَلَٰهِ اَلْمُ اَلَٰمُ اَلْمُ اَلْمُ اَلْمُ اَلْمُ اَلْمُ اللّٰمِ اللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمِ اللّٰمُ الللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمُ

قِوْلِينَ ؛ المُمْلِي الشيطانُ بار ادته تعالى العبارت كامقصدا يكسوال مقدر كاجواب ب-

نينوان، مهت ديناييفداكاكام بالبذاشيطان كاطرف ال كانست درست نبيل ب-

جَجُولَ بِنِي: وَهِيل اورمهانت دينے والا درحقيقت الله بي بيم اساد مجازي كے طور پرشيطان كي طرف نسبت كردى ہے اس سے كديدات كے وسوے كے ذريعه بهوتى ہے۔

فَيْ وَلَكُ اللَّهُ مبتداء بِأَنَّهُمْ قالوا اس كَ خبر، باءسبيه بـ

ێٙڣٚؠؗڔؘۅڷؿ*ٛڽؙڿ*

شانِ نزول:

وَیَقُولُ الَّذِیْنَ امَنُوْ ا (الآیة) یہاں ہے آخرتک تمام آیات مدنی ہیں اس لئے کہ جہاد کی مشروعیت مدینہ ہی میں ہوئی ہے اور اس لئے بھی کہ نفاق بھی مدینہ ہی میں پیدا ہوا، مکہ میں نفاق کی کوئی ضرورت ہی نہیں تھی کیونکہ مکہ میں اسلام کمزور اور دشمن

ھ[نۇقۇم پەتىكىتىنى]≥——

طا قتورتها مکی زندگی کا بوراز مانداور مدنی زندگی کا ابتدائی زمانه برایرآ شوب اوراضطراب و بے چینی کا زمانه تھا ہرآن اور ہروفت خطرہ لاحق رہتا تھا راتوں کومسلمان ہتھیار بندسوتے تھے، ذرابھی کوئی شوروغل ہوتا تھا تو مسلمان سمجھتے تھے کہ دشمن چڑھآیا ،مشر کین مکہ کی ریشہ دوانیاں نہصرف بیر کہ جاری تھیں بلکہ شباب پرتھیں ہمسلمان جس اضطرابی دورے گذررے بتھےاس ہے تنگ آ کر'' تنگ آ مہ بجنگ آ مد'' کےمطابق مسلمانوں نے بھی من بنالیا تھا کہا ب آ ریار کی ہوجانی جا ہے گر ابھی تک جہاد کا تھم نازل نہیں ہوا تھا تحلصین مومنین جذبہ جہادے سرشار تھے اور اس بات کے خواہشمند تھے کہ جہاد کی اجازت ہوجائے ، اور بے چینی کے ساتھ اللہ کے فرمان کا انتظار بھی کررہے تھے،اورآپ بیٹن بیٹ ہے بار باردریا فٹ کرتے تھے کہ جمیں ان ظالموں سے لڑنے کا حکم کیوں نہیں دیا جا تا اوراس بارے میں کوئی محکم غیرمنسوخ سورت کیوں نا زلنہیں کی جاتی ؟

تکر جومنافقین مسلمانوں کی جماعت میں شامل ہو گئے تھے ان کا حال مومنین مخلصین کے حال ہے مختلف تھا وہ اپنے جان و مال کو خدا وراس کے دین سے عزیز سمجھتے تھے اس لئے وہ کوئی خطرہ مول لینے کے لئے تیار نہیں تھے ان ہی میں بعض ضعیف الایمان بھی شامل ہو گئے تھے۔اس موقع پر بیآیات نازل ہوئیں۔

فَسَاذًا ٱنْسَوْلَتْ سُسوَّرَةٌ محكمةٌ بدان بى منافقين كاذكر بجن يرجها دكاتكم نهايت كرال كذرتا تها، اس جها و كتلم في منافقوں کو سیچے مسلمانوں سے چھانٹ کر بالکل الگ کردیا آیت جہاد نازل ہونے سے پہلے منافقین بھی جہاد میں بہادری دکھانے کے بڑی شدومہ ہے دعوے کرتے تھے جمر جب اسلام کے لئے جان کی بازی لگانے کا وقت آیا تو ان کے نفاق کا حال کھل گیے ، اور نمائش ایمان کا نبادہ اتر گیا اب جب جہاد کا تھم نازل ہو گیا ہے تو ان منافقوں کی بدحالی کا یہ عالم ہے کو یا کہ ان برموت کی میہوشی چھا گئی اور جس طرح مرتے وفت مرنے والے کی آنکھیں پھرا کرایک جگہ تھبر جاتی ہیں ، یہ آپ کی طرف اس طرح مبہوت اور متحیر ہو کر تمنئی باندھ کر دیکھ رہے ہیں، ان کے لئے جہاد اور موت سے تھبرانے کے بجائے بہتر تھا کہ وہ سمع وطاعت کا مظاہرہ کرتے اور نبی ﷺ کی بابت گستا خانہ کلے کہنے کے بجائے اچھی بات کہتے بیمطلب اس صورت میں ہوگا جب اولنی جمعنی آجدَر (بہتر)لیاجائے، ابن کثیرنے اس کواختیار کیا ہے بعض حضرات نے اولنی ویل سے کلمہ تہدید مراد لیا ہے،اس صورت میں مطلب بیہو گا کے نفاق کی وجہ سے ان کی ہلا کت قریب ہے او لیے لَهُمْ کے معنی اسمعی رَحِمَ كُلافْهُ تَعَالَانَ كے تول كے مطابق بيہ بين قبار بَه أما يُهلكه ليمني اس كى ہلاكت كے اسباب قريب آئيكے۔ (قرطبی) اور طباعةٌ و قولٌ معروث جملہ متانفہ ہوگا اور اس کی خبر محذوف ہوگی اور وہ خیر لکھر ہے۔

— ﴿ (مَ زَمُ بِهَ المَ لِهَ ا

فَهَلْ عَسَيْلُهُ مِّ إِنْ تَوَلَّيْلُمُ أَنْ تُفْسِلُوا فِي الْأَرْضِ (الآية) تولّى كلخت كاعتبارت ومعنى موسكة بين، ايك اعراض اور دوسرے کسی قوم و جماعت پرافتذ ار وحکومت،اس آیت میں بعض حضرات نے پہلے معنی لئے ہیں،اس معنی کے اعتبار ے آیت کا مطلب میہ ہے کہ اگرتم نے احکام شرعیہ الہیہ ہے روگر دانی کی جس میں تھم جہاد بھی شامل ہے تو اس کا اثر یہ ہوگا کہ تم جا ہلیت کے قدیم طریقوں پر پڑ جا ؤگے، جس کالا زمی نتیجہ زمین میں فسادادر قطع حمی ہے۔

روح المعانی اور قرطبی نے اس جگہ تو کئی کے دوسر ہے معنی لیعنی حکومت اور امارت کے لئے ہیں تو مطلب آیت کا یہ ہوگا کہ تہمار سے حالات جس کا ذکر اوپر آچکا ہے ان کا تقاضہ رہے کہ اگر تمہاری مراد پوری ہولیعنی اس حالت ہیں تمہیں ملک وقوم کی ولایت اور افتد ار حاصل ہوجائے تو نتیجہ اس کے سوانہیں ہوگا کہ تم زمین میں فساد ہر با کردگے اور رشتوں اور قرابتوں کوتو ڑڈ الوگے۔ معادف

صلەرخى كى سخت تاكىد:

اَدِّ حَسام، دِ حسم کی جمع ہے بچہ دانی کو کہتے ہیں، چونکہ عام رشتوں، قرابتوں کی بنیا درحم ہی ہے چلتی ہے اس لئے عرف اور می ورہ میں رخم رشتہ داری اور ذوک الارحام رشتہ داروں کو کہتے ہیں، اسلام نے رشتہ داری اور قرابت کے حقوق اواکر نے کی ہوی تاکید فرمائی ہے۔ ذیل میں چندا حادیث ذکر کی جاتی ہیں۔

حدیث 🛈 : صحیح بخاری میں حضرت ابو ہریرہ تؤخَاننْدُمُّغَالِگُ اور دیگر دواصحاب تفخَالِگُ گالی سے اس مضمون کی حدیث قل کی گئی ہے کہ اللہ تعالیٰ نے فر مایا کہ جو محص صلہ رحمی کرے گا اللہ اس کوا پنے قریب کریں گے اور جوقطع رحمی کرے گا اللہ اس کوقطع کردیں گے۔

حدیث 🗗: ایک حدیث میں ارشاد ہے کہ کوئی ایسا گناہ کہ جس کی سز االلہ تعالی دنیا میں بھی دیتا ہے اور آخرت اس کی میں اس کے علاوہ ہوظلم اور قطع حمی کے برابرنہیں۔ (دواہ ابو داؤد، والترمذی، ابن کٹیر)

حدیث ت حضرت ثوبان تفکانلهٔ تفلای ہے مروی ہے کہ آپ ظفی ان فرمایا کہ جو محض چاہتا ہے کہ اس کی عمر زیادہ اور دزق میں برکت ہوا س کوچا ہے کہ صلد حی کر سے بعنی رشتہ داروں کے ساتھا حسان کا معاملہ کر ہے، احادیث سیحہ میں یہ بھی ہے کہ حق قرابت کے معاملہ میں دوسری طرف سے برابری کا خیال نہ کرنا چاہئے اگر دوسرا بھی کی قطع تعلق اور نا رواسلوک بھی کرتا ہے جب بھی تمہیں حسن سلوک کا معاملہ کرنا چاہئے ، سیحے بخاری میں ہے کہ وہ مخص صلد حی کرنے وال نہیں جو صرف برابر کا بدلہ دے بلکہ صلد حی کرنے والا وہ ہے کہ جب دوسری طرف سے قطع تعلق کا معاملہ کیا جائے تو یہ مدنے اور جوڑنے کا کام کرے۔

(ابن کنیں)

حضرت عمر نفخاندہ تغالظ نے میں بیٹ میں بیٹ کے سے استدلال کر کے ام ولد کی فروخت کی ممانعت فرہ اُئی تھی ، حاکم نے
متدرک میں حضرت بریدہ سے روایت نقل کی ہے کہ ایک روز میں حضرت عمر کی مجلس میں بیٹھا ہوا تھا ، کہ یکا کی محلّہ میں شور مجنے
رکا ، دریافت کرنے پر معلوم ہوا کہ ایک لونڈ کی فروخت کی جارہی ہے اور اس کی لڑکی رور ہی ہے ، حضرت عمر نے اس وقت ابنصار
اور مہ جرین کوجع کیا اور ان سے بوچھا کہ دین اسلام میں کیا قطع حری کا بھی کوئی جواز ہے؟ سب نے کہ نہیں ، تو آپ نے فرمایا پھر
یہ کیا ہور ہا ہے ، مال سے بیٹی کو جدا کیا جارہا ہے ، اس سے بردی قطع حری اور کیا ہو سکتی ہے ، پھر آپ نے بید آیت تلاوت فرمائی اور
یور سے ملک میں ام ولد کے فروخت کی ممانعت فرمادی۔

اُولئِلكَ اللَّذِیْنَ لَعَنَهُمُ اللَّهُ یہ مفیدہ پرداز تُطِی کرنے والے بی لوگ ہیں جن پرامتد نے لعنت فر مائی رحمت ہے دور کردیا اور ان کی شنوائی و بینائی حق سننے اور حق و کھنے ہے سب کرلیس ، یہی وجہ ہے کہ قرآن کے معانی ومطالب ان کے دل میں نہیں اترتے ، بلکہ اس سے بھی بڑھ کر بات ہیہے کہ ان کے قلوب پر مبر شبت کردی گئی ہے۔

اَکشَیْطَانُ سَوَّلَ لَهُمْ اس میں شیطان کی طرف دوکامول کی نبیت کی ٹی ہے ایک'' تسویل''جس کے معنی تزیین کے ہیں کے بیر کے اور مہلت دینے کے بیر مطلب مید کہ شیطان نے اول تو ان کے برے اٹل کو ان کی نظروں میں مزین اور آراستہ کر کے دکھا، یا پھران کو ایسی طویل آرزؤں اورامیدوں میں الجھا دیا جو پوری ہونے والی نہیں۔

اَمْرِحَسِبَ الَّذِيْنَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضُ اَنْ لَنْ يُنْحِجَ اللهُ اَضْغَانَهُمْ ۚ يُـطَهِرُ احْنَادهُم على النبي والمُؤسِس وَلُونَشَاءُ لَأَرْسُكُهُمْ عَرِّفُما كُنِّهِ وَكُرِّرَتِ اللَّامُ فَى فَلَعَرُفِتَهُمْ يُسِيِّمُهُمْ عَلامَتَهِم وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ الوَاوُ لقَسم مَخذُوبِ وما عدها حواله في لَحْنِ الْقُولِ أي مَعماهُ ادا نكلَمُوا عندكَ بان يُعرّضُوا بما فيه تَهْحيُنُ أَمُر المُسْلمِين وَاللَّهُ يَعْلَمُ اَعْمَالَكُمُ وَلِنَبْلُوَتُكُمُ نَحْتَبِرَنَكُم بالحهاد وعيره حَثَّى نَعْلَمَ عِلْمَ طُهُورِ الْمُجْهِدِيْنَ مِنْكُمْ وَالصَّبِرِيْنَ في احهادِ وعيرِه وَ**نَدَاُواً** نُظْهِر اَخْبَارَكُمُ من طاعبكُم وعضيانكم في الجهادِ وغيره بالياء والنُون في الأفعال الثلثة إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيلِ اللهِ طريقِ الحقِ وَشَأَقُوا الرَّسُولَ خَالَمُوه مِن بَعْدِمَ اتَّبَيَّنَ لَهُمُر الْهُدُيِّ هُـوَ سَعْنَى سَبِيلِ اللَّهِ لَنَّ يَضُرُّوااللَّهَ شَيْئًا وَسَيُحْيِطُ أَعْمَالُهُمُ ﴿ يُبْطِلُها سَ صَدَقَةٍ ونحوها فلا يرؤن لها في الاحرة ثوالًا تَرَلَتُ في المُطُعمين من اصحاب بَدْر او في قُرَيْظَة والنضير يَآيَٰهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۤا اَطِيۡعُوااللّٰهَ وَاطِيْعُواالرَّسُولَ وَلَائَبْطِلُوٓا اَعۡمَالَكُمْ ۚ بالمعاصى سنلا إِنَّ الَّذِيْنَ كَفُرُوْا وَصَدُّواعَنَ سَبِيلٍ الله طريقه وهُوالهُدي تُثَرِّمَاتُوْاوَهُمَّرُكُفَّارُفَكُن يَغْفِرَالله لَهُمْو سرَلَمت في أصحاب الفَييب فَلَاتِّهِمُوا تَضُعُفُوا وَتَذَعُوا إِلَى السَّالِمُ بِنتِح السين وكسرها اى الصُّنح مَع الكُمَّار إِذَا لَعَبْتُمُوهُم وَأَنْتُمُ الْأَعْلَوْنَ مُ حُذِفَ مِنه وَاوُ لام الفغل الاعُلُونَ القَاهِرُونَ وَاللَّهُ مَعَكُمُ سالغَوْن والنصر وَلَنَّيَّتِرَّكُمْ يُسْقِصَكُم أَعْمَالُكُمْ اي ثَوَانَهَا إِنَّمَا الْحَيْوةُ الدُّنْيَا أَى الإشْتِغَالُ فيها لَعِبُّ وَلَهْ وَ وَإِنْ تُؤْمِنُوا وَتَتَّقُوا اللهَ ذلك س أسُور الاخِرَةِ يُؤْمِنُكُمْ أَجُورَكُمْ وَلَا يَسْتَلَكُمْ إَمْوَالْكُمْ؟ جمِيعَها بل الركوة المدرُوضة ميها إِنْ يَسْتَكُلُمُوْهَافَيُعَوْلُمْ يُنالِعُ مِي طَلِيها تَبْعَلُوْاوَيُحُوجُ البُحُلُ كَضْغَانَكُمْ الله بِهِ الإسلام هَانَتُمُ يا هَؤُلاَءُتُدْعُونَ لِتُنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللهِ سافر ض عَديكم فَمِنَكُمُ مَّن يَنْبَحَلُ اللهِ اللهِ اللهِ عَديكم فَمِنَكُمُ مَّن يَنْبَحَلُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اله وَمَنْ يَبْخُلُ فَإِنَّمَا يَبْخُلُ عَنْ نَفْسِمْ يُقَالُ بَخِلَ عليه وعنه وَاللَّهُ الْغَنِيُّ عن يفقتكم وَأَنْتُمُ الْفُقَرْآءُ الله وَإِنْ تَتَوَلَّوْا عن طَاعتِه يَسْتَبْدِلْ قُوْمًاغَيْرَكُمْ اي يَجْعِلْهُم بدلكم تُتُمَرُلايَكُوْنُوَاامَتَالَكُمْ فَي الدِّي عَن طَاعتِه بن

مُطِيُعِينَ له عَرَّوَجَلَّ.

ت ان لوگوں نے جن کے دلول میں بیاری ہے یہ بھور کھا ہے کہ اللہ ان کی نبی سے اور مومنین سے دلی عداوتوں کو ظاہر نہ کرے گا اور اگر جم جا ہے تو ان سب کو آپ کو دکھا دیتے (بینی) ان سب کی آپ کو شنا خت کرا دیتے ، اور لام فَسَلَعَرَ فَنَهُمْ مِينَ مَررلا يأكياب سوآب ان كوان كے چرول كى علامتوں بى سے بہجان ليتے اور يقينا آپ ان كوطر إِ گفتگو ہے بہجان لیں گے، واؤ بشم محذوف کے لئے ہے اور اس کا مابعد جواب تشم ہے،مطلب بیہ ہے کہ جب وہ آپ ہے گفتگو کرتے ہیں تو اس طریقہ سے تعریض کرتے ہیں کہ جس میں مسلمانوں کے بارے میں تحقیر ہوتی ہے تمہارے سب کام اللہ کومعلوم ہیں اوریقیناً ہمتم سب کی جانچ کریں گے، لینی جہاد وغیرہ کے ذریعہ تمہارا امتحان لیں گے، تا کہتم میں سے مجاہدین کو اور جہاد وغیرہ میں ثابت قدم رہنے والوں کو جان لیں بیعنی ظاہر کر دیں ، اور جہاد وغیرہ میں تمہاری نافر مانی اور فر مانبر داری کی حالت کو جانچ لیں ، تینوں افعال ، یاءاورنون کے ساتھ ہیں یقیینا جن لوگوں نے *کفر کیا اور اللہ کے راستہ* یعنی راوحق سے لوگوں کو رو کا اور رسول کی مخالفت کی ،اس کے بعد کدان کے لئے مدابت ظاہر ہو چکی ، سبیل اللہ کے یہمعنی ہیں ، یہ ہر گز اللہ کا کچھ نقصان نہ کریں گے، عنقریب وہ ان کے اعمال کوغارت کردیے گا (یعنی) ان کےصدقہ وغیرہ کو باطل کردیے گا،تو وہ آخرت میں ان کا کوئی ثواب نہ دیکھیں گے (ندکورہ آیت) اصحاب بدریا (بنی) قریظہ اور (بنی) نضیر کے کھانا کھلانے والوں کے ہارے میں نازل ہوئی ہے، اے ایمان والو!اللّٰہ کی اطاعت کرواوررسول کا کہنا ما تو اور اپنے اعمال کو معاصی کے ذریعیہ مثلاً باطل نہ کروجن لوگوں نے کفر کیا اور دوسروں کوالند کے راستہ ہے کہ وہ ہدایت کا راستہ ہے روکا پھر وہ کفر کی حالت ہی میں مر گئے، یفین مانو الندان کو ہر گزنہ بخشے گا (ندکورہ آیت) بدر کے کنوئیں والوں کے بارے میں نازل ہوئی، پس اےمسلمانو! ہمت مت ہارو، اور سکے کی درخواست ندکرو (اَلسَّلَمِ) میں سین کے فتہ اور کسرہ کے ساتھ ، لیعنی جب تمہارا کفارے مقابلہ ہوتو صلح کی درخواست نہ کرو ، اورتم ہی غالب رہو سے ،اور (اَلاغسلون) ہے واوکو جوکہ لام فعل ہے حذف کردیا گیاہے بعنی تم بی غالب اور قاہر رہو گے، نصرت اور مدد کے ساتھ الله تمهارے ساتھ ہے وہ تمہارے اعمال بعنی ان کے ثواب کو کم نہیں کرے گا واقعی دنیا کی زندگانی بعنی اس میں مشغول رہنا تو صرف کھیل کود ہاورا گرتم ایمان لے آؤ گے اور اللہ کے لئے تقوی اختیار کرو گے اور بی آخرت کے امور میں ہے ہے تو وہ تم کو تمہارے اعمال کا اجردے گا، دہتم ہے تمہارا تمام مال نہیں ما نگتا، بلکہ اس میں سے ذکو قالی فرض مقدار ما نگتا ہے اگروہ تم سے تمہارا سارا مال طلب کرے اور سب کاسب مانگ لے (بعنی) اس کی طلب میں مبالغہ کرے توتم اس ہے بخیلی کرنے لگو گے ، اور بخل وین اسلام کے لئے تمہاری نا گواری کوظاہر کردے، ہال تم لوگ ایسے ہو کہم کواللہ کی راہ میں وہ مقدار خرچ کرنے کے لئے بدیا ج تاہے جوتمہارےاو پرفرض ہے بعض تم میں ہے وہ ہیں جو بکل کرتے ہیں اور جو تحض بخل کرتا ہے وہ اپنے ہے بخل کرتا ہے کہا جاتا ہے بہنجے ل علیه وعنه اللہ تو تمہارے خرچ کرتے ہے مستغنی ہااں کے تاج ہواورا گرتم اس کی اطاعت ہورو ٥ (مَرْمُ بِبَالشَّلَ ٥)

گردانی کرو گے تو خدا تعالیٰ تمہاری جگہ دومری قوم پیدا کردے گا بعنی تمہاری جگہ کردے گا، پھروہ اطاعت ہے روگر دانی کرنے میں تم جیسے نہ ہوں گے بلکہ اللہ عز وجل کے اطاعت گزار ہوں گے۔

عَجِفِيقَ الْأِكْدِينَ لِيسَهُ الْحَالَةُ لَفَيْسَارُ كَافِيلًا الْحَالِدُ الْفِيسَارُ فَالْمِلْ الْحَالِدُ الْفِيسَارُ فَالْمِلْ الْحَالِمُ الْمُؤْلِدُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللّلِهُ اللَّهُ اللللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ ا

فِيُولِكُم : أَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ الخ أم منقطعه إى بَـلْ أحسِبَ الْمُنَافِقُونَ ، الَّذِيْنَ الهِصل موجودٌ في قُلُوبهِم مَرَضٌ سے لكر، حَسِبَ كافاعل أَنْ لَنْ يُحْرِجَ اللَّهُ أَصْغَانَهُمْ، حَسِبَ كَوَمْفُعُولُول كَاتَامٌ مقام ب، أَنْ تَفْف عَن المُقله بِ بَعْمِيرِ شان اس كا اسم محذوف ب، أي أنَّهُ اس كا ما بعد جمله موكر ، أنَّ كَي خبر ب

فِيْغُولِكُمْ ؛ أَضْغَالُ ، أَضْغَان ، ضِغْنُ كَ جَمْع ب، كينه عداوت.

فِيْ فَلْكُونَا ؛ لَارَيْهُ لَا كُهُمْ يبال رويت سے رويت بھرى مراد ہاك وجهد متعدى بدومفعول ہاكررويت البي مراد بوتى تو متعدی سے مفعول ہوتا تکھے بیر اگریٹ کے دومفعول ہیں (اعراب القرآن) بعض حضرات نے نے رویۃ علمیہ بھی مراد لی ے مفسر علام نے اُدیا کی تفسیر عَد فَفا ہے کر کے اس کی طرف اشارہ کیا ہے اور معرفت سے ایسی معرفت مراد ہے کہ جو کالمشاہد (چپتم دید)جیسی ہو۔

قِيُولِكَ ؛ لَارَيْنْكُهُمْ، لَوْ كاجواب مِ فَلَعَرَفْتَهُمْ كاجواب لَوْ يرعطف مِلام تاكيد ك ليح كررم، فاءعاطفه م فِيْ فُلْكُ ؛ وَلَتَعْرِ فَنَهُمْ لام تُم محدوف كجواب يرداخل بـ

يَجُولُكُونَ ؛ لَحْنَ الْقَوْلِ لَحن كِرومُعَنَ بِينَ ﴿ خطاء فِي الاعرابِ ﴿ خطاء فِي الْكلام، لَحَن في الكلام بيبك ظا ہر کلام تعظیم پراور باطن کلام تحقیر بردلالت کرتا ہواور مشکلم باطن کلام مراد لےرہا ہو یا کلمہ کواس طرح اوا کرنا کہاس کے معنی بدل ج تمیں اور تعظیم کے بی نے تحقیر کے معنی بیدا ہوجا تمیں ، جیسے منافقین آب میں اور تعظاب کرتے ہوئے د اعسا کے بجائے راعینا کہاکرتے تھے، دَاعِنا کے معنی ہیں ہاری رعایت کیجئے ،اور دَاعِینا کے معنی ہیں ہاراج واہا، یاالسلام علیکم کے بجائے السام علیکم کہا کرتے تھے (بعنی تیرے اوپر موت ہو، تو ہلاک ہو)۔

قِيْخُولِكَ ﴾؛ في الافعال الثلاث بيتين صنى انعال ① وَلَيَبلونَّكُم ﴿ يَعْلَمَ ﴿ يَبْلُوَ مِين ان تَيُون افعال مين واصد ع نب اورجع متعلم دونوں قراء تیں ہیں۔

فِيُولِكُ : شَاقُوا ماضى جَمْ مُدَرَعًا يُب، انهون نے خالفت كى يه مُشَاقَة اور شقَاقَ ع شتق بـ

قِيَّوْلِكَى، سَيُحْبِطُ أَعْمَالَهُمْ، حَبُط المال معراداً خرت مِن ان كاجركُتْمْ كرديناب، اورا ممال مهوه المال مراوبين جوعرف عام میں اعمال خیر شخصے جاتے ہیں ،مثلاً صله رحمی ،غریبوں ،مسکینوں ،مسافروں کی مدد کرنا ، بھوکوں کو کھانا کھلانا وغیرہ۔

فِيُوْلِينَى: أَنْوَلْتَ فِي المُطْعِمِينَ يَهِال مطعِمين سے وہ شركين مكه مرادين جنهوں نے غزوة بدر كے موقع برنشكر كفارك کھانے کا بی اپی طرف ہے تھم کیا تھا۔

----- ﴿ [فَئَزُمُ بِهَاللَّهُ ﴿ عَ

يَكُولَى : اصحاب القليب " قليب ميدان برريس ايك كنوكي كانام ب جس من مقتولين مشركين كوآ تخضرت يَكُونَيْكَ اللهُ في أواديا تقاله

قِيَّوْلَ ﴾ : فسلا تهدفوا تم بمت نه باره، پست بمت نه به ه قاء جواب شرط پرداخل بے شرط محذوف ہے ، تقدیر عبارت یہ ب اِذا تَبَيَّنَ لکم بالدلا له القطعية عِزُّ الاسلام و ذِلُّ الكفو في الدنيا و الآخرة فَلَا تَهِنُو ا.

فَقُولَنَى ، وَأَنتُمُ الْأَعْلُونَ وَاوَحَالِيهِ بِهِلِمَالَ بُونَ كَي وَجِهِ عَلَى مِينَ صَبِ كَ بِ اى وَ أَنْتُمُ الْغَالِبُونَ بالسيف والحجة آحو الامر. اغلون اصل من اغلوق نقاء ببلاوا والام فعل باوردوسراوا وَجَعْ كاب،اول واومتحرك اسكا، قبل مفتوح بوئ كا به اول واومتحرك اسكا، قبل مفتوح بوئ كوجه بي الفاهرون كا معنى مفتوح بوئ وأعلون الفاهرون كم معنى مناور بعض شخول من قاهرون كر بجائ الظاهرون ب

فِوَلَيْ ؛ وَاللَّهُ معكم يَكُن جمله حاليه -

هِكُولِهُمْ ؛ يَتِرَ ، وتريترُ (ضٌ) كُم كرناـ

بَعَلَى : يُلِقَالَ بَخِلَ علَيهِ وعَنْهُ اس عبارت كامقصد بينانا ہے كہ بَخِلَ اگر شُتُّ (حرص) كے معنى كوشمن ہوتو متعدى بعلى : وتا ہے اور جب أمْسَكَ كِمعنى كوشمن ہوتا ہے تو متعدى بِعَنْ ہوتا ہے۔

<u>ێٙڣٚڛؗؽڒۅؖێۺٛؖؗڕؖ</u>

• ﴿ (مُرَرُم بِهُ لِشَرِلَ ٢٠

جِمهاِئے مگراس کی تفتگو جرکات وسکنات اوربعض مخصوص کیفیات اس کے دل کے راز کوآشکارا کردیتی ہیں .

وَلَنَبْلُوَ نَكُمْ حَتَّى نَعْلَمَ الْمُجَاهِدِيْنَ (الآية)الله تعالى كعلم مين توييكي ايسب يجهيب، يهال علم عراداس كاظهور ہے تا كدوسرك بھى جان كيس اور و كيركيل، اى لئے امام ابن كثير في قرمايا كه حتّى نعلم وُقُوْعَهُ ابن عباس تعَمَّكُ تَعَالَعُ فَال فتم کے الفاظ کا ترجمہ کرتے تھے لِنَوَیٰ تا کہ ہم دیکھ لیں۔ ابن کئیں

إِنَّ الْكَذِينَ كَفَرُوا وصدُّوا عَنْ سَبِيْلِ اللَّهِ (الآية) اسكاايك مطلب توييب كرجن كامون كوانبول في ال نزويك نيك مجهركيا بالله ان سب كوضائع كرو عام اورآخرت من ان كاكوني اجربهي نه ياسكيس كم انَّ السّندِيْنَ سَحفَرُوا ے منافقین مراد ہیں ،اور کہا گیا ہے کہ اہل کتاب مراد ہیں اور کہا گیا ہے کہ وہ مشرکین مراد ہیں ،جنہوں نے غز وہ بدر کے موقع پر کفار قریش کی امداداس طرح کی کہان میں ہے بارہ آ دمیوں نے ان کے بور کے شکر کا کھانا اینے ذمہ لے نیا ان میں ہے ایک آ دمی بور کے شکر کفار کے کھانے کا انتظام کرتا تھا،اوربعض حضرات نے بنونضیراور بنی قریظہ بھی مراد لئے ہیں۔

وَسَيُسحبِطُ أَغْمَالَهُمْ يهال حبطِ المال سے مرادبیمی ہوسکتا ہے کدان کی اسلام کے خلاف کوششوں اور تدبیروں اور ساز شول کو کامیاب نہ ہونے دے، بلکہ تا کام اورا کارت کردے، اور بیمطلب بھی ہوسکتا ہے کہان کے کفرونفاق کی وجہ ہےان کے نیک اعمال متل صدقہ وخیرات وغیرہ سب کےسب اکارت اورضا کع ہوجا تمیں گے۔

فَ لا تَهِ نُوْا وَتَذْعُوا إِلَى السَّلِمِ اسْ آيت مِن كفاركُونَكُ كي دعوت دينے كي ممانعت كي تئي ہےاور قر آن كريم ميں دوسري عِكْفِر ما يا كياب وَإِنْ جَنَحُوا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا لِين الركفارسُ كي جانب مأنل مول و آپجي مأنل موجايئ اس سيسلح ک اجازت معلوم ہوتی ہے،اس لئے بعض مصرات نے فر مایا کہ اجازت اس شرط کے ساتھ ہے کہ کفار کی جانب ہے سکتا جوئی کی ابتداء ہو، اور اس آیت میں جوممانعت آئی ہے وہ بہ ہے کہ مسلمانوں کی طرف ہے صلح جوئی کی ابتداء کی جائے ،اس لئے ان دونوں آیتوں میں کوئی تعارض نہیں ہے جمریحے بیہ ہے کے مسلمانوں کے لئے ابتداء صلح کر لینا بھی جائز ہے جبکہ اس میں مسلمانوں کی مصلحت ہو بحض بزدلی اور عیش کوشی اس کا سبب ندہو، اوراس آیت میں فلا تھنو اکہدکراس بات کی طرف اشارہ کردیا گیا ہے۔ (معارف)

یہاں یہ بات بھی قابل لحاظ ہے کہ ریارشاداس زمانہ ہی فرمایا گیا کہ جب مدینہ کی تچھوٹی میستی میں چندسومہا جرین وانصار کی ایک منصی بھر جمعیت اسلام کی علم برداری کررہی تھی ،اوراس کا مقابلہ تھش قریش کے طاقتو رقبیلہ ہی ہے نہیں بلکہ پورے ملک کے کفار ومشرکین سے تھا ،اس حالت میں فر مایا جار ہاہے کہ ہمت ہار کران دشمنوں سے سکح کی درخواست نہ کرنے لگو ،اس ارشا د کا مطلب پیبیں ہے کہ مسلمانوں کو بھی سکے کی بات چیت کرنی ہی نہیں جا ہے ، بلکہ مطلب بیہ ہے کہ ایسی صورت میں صلح کی سسلہ جنبانی کرنا درست نہیں ہے جب اس کے معنی اپنی کمزوری کے اظہار کے ہوں اور اس سے دشمن اور زیادہ دلیر ہو جائیں، مسلمانوں کو پہلے اپنی طافت کالو ہامنوالیما جا ہے ،اس کے بعد اگر شکح کی بات چیت کریں تو کوئی حرج نہیں۔

إنسما الحيوة الدنيا اورجهادكاذ كرتفاءاور جونك جهاد بروك والى جيزانسان كيل ونياك محبت بوعتى بجس ميس

——— ﴿ (مَنزَمُ مِنَ الشِّهِ اللَّهِ عَلَى السَّهِ اللَّهِ السَّهِ اللَّهِ السَّاحِ اللَّهِ السَّاحِ

ا پی جان کی محبت اہل وعیال کی محبت مال و دولت کی محبت سب داخل ہیں ،اس آیت میں یہ بتایا گیا ہے کہ یہ سب چیزیں بہر حال ختم اور فنا ہونے والی ہیں ،اس وقت اگر ان کو بچا بھی لیا تو کیا فائدہ؟ آخر کار بیسب چیزیں ہاتھ سے نکلنے ہی والی ہیں ،اس لئے ان فانی اور نا پائیدار چیز وں کی محبت کو آخرت کی دائمی پائیدار نعمتوں کی محبت پر غالب ندا نے دو۔

وَلاَ يَسْفَلْكُمْ اَمْوَ الْكُمْ الله تعالیٰ تبهار ہے اموال ہے بے نیاز ہے اس لئے اس نے تم ہے ذکوۃ میں کل مال کا مطالبہ بین بلکہ اس کے ایک نہایت ہی قلیل حصے کا یعنی صرف ڈھائی فی صد کا مطالبہ دکھا اور وہ بھی ایک سال کے بعد اپنی ضرورت سے زیادہ ہونے پر علاوہ ازیں اس کا مقصد بھی تبہارے اپنے بھائی بندوں کی مدداور خیر خواہی ہے نہ کہ اللہ اس مال سے اپنی حکومت کے اخراجات یورے کرتا ہے۔

اگراللہ تعالیٰ زائداز ضرورت کل مال کا مطالبہ کرتا اور وہ بھی اصرار کے ساتھ اور زور دیکر تو تم بخل کرنے لگتے اور بخل کی وجہ سے جونا گواری اور کرا ہت تمہارے الوں میں ہوتی وہ لامحالہ ظاہر ہوجاتی اس لئے اس نے تمہارے اموال میں سے ایک حقیر و قلیل حصہ تم پر فرض کیا ہے بتم اس میں بھی بخل کرنے لگے۔

تُدعَوْنَ لِتُنْفِقُوْا فِی سَبِیْلِ اللّٰهِ فَمِنْکُمْ مَنْ یَبْخُلْ تَمْ کُوتِهارے اموال کا پچھ حصہ راہِ خدا میں خرچ کرنے کی وعوت دک جاتی ہے تو تم میں ہے بعض اس میں بھی بخل کرنے گئتے ہیں اس کے بعد فر مایا وَ مَنْ یَبْخُلْ فَالنَّمَا یَبْخُلُ عَنْ نَفْسِهِ لِیعَیٰ جو شخص اس میں بخل کرتا ہے وہ پچھالٹد کا نقصان نہیں کرتا بلکہ خود اپنا ہی نقصان کرتا ہے کہ آخرت کے اجروثو اب سے محرومی اور ترک فرض کرد اللہ میں بنا کہ میں اس میں بخل کرتا ہے وہ پچھالٹد کا نقصان نہیں کرتا بلکہ خود اپنا ہی نقصان کرتا ہے کہ آخرت کے اجروثو اب سے محرومی اور ترک فرض کا دائے۔ یہ



مروق الفتي من وي المراق المرا

سُوْرَةُ الْفَتْحِ مَدَنِيَّةٌ تِسْعٌ وَّعِشْرُوْنَ ايَةً. سورهُ فَخَدنی ہے انتیس ۲۹ آبیس ہیں۔

يسم الله الرّحم من الرّحمة من الرّحمة من الرّحمة وغيره المستقبل عنوة بجهادك فَتُحَالَّهُ بِينَا ظاهرا لِيُغَفِرُكُ اللهُ بجهادك مَاتَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَاتَاكُمُ منه لترغب استك في الجهماد وهنو سؤول لنعصمة الانبياء عليهم الصلوة والسلام بالدليل العقلي القاطع من الذنوب واللام للعدة الغائية فمدخولها مسبب لا سبب وَيُرَتُّمُ بالفَتَح المَذْكور نِعَمَّتَهُ إِنْعامَهُ عَلَيْكَ وَيَهْدِيَكَ به صِرَاطًا طريقًا شَّسَتَقِيًّا لَى يُتَبَتَكَ عليه وهُودينُ الإسلامِ قَيْنُصُرَكُ اللهُ به نَصَرًا فَاعِزَيْرًا عَنْ الإسلامِ وَيَنُصُرَكُ اللهُ به نَصَرًا فَاعِزَا عَزَا وَلَا مَعَه <u>هُوَالَّذِيْ اَنْزَلَ التَّكِيْنَةَ</u> الطَمَانِيُنَةَ فِي **فَ قُلُوْبِ الْمُؤُونِيْنَ لِيَزُدَادُوَٓ الْيَمَانَاتَتَ الْيُمَانِيُوَمْ بِشَرَاثِع الدِّيُنِ كُنَّما نزل** وَاحِدَةٌ سِنها السِّنُوابِها ومنها الجهَادُ وَلِلْهِجُنُوكَ السَّمُوتِ وَالْرَضِ فَلَوَارَادَ نَصْرَ دِينَهِ بِغَيْرِكُم لَفَعلَ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيْمًا بخلقه حَيْكِيمًا ﴿ فِي صُنْعِهِ اى لَمُ يَزَلُ مُتَّصِفًا بِذلك لِيُكْخِلُّ مُتَعَبِقٌ بِمَحذُوبِ اى أَمَرَ بالجهادِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنْتِ جَنْتِ تَجْرِيْ مِنْ تَعْيَهَ الْاَنْهُرُخْلِاِيْنَ فِهُ اوَلَكُفِّرَ عَنْهُمُ مَسِيْاتِهِمَّوْكَانَ ذَٰ لِكَ عِنْ دَاثلَهِ فَوْزًا عَظِيْمًا فَ المَوَاضِع الثَلثِة ظَنُوْا أَنَّهُ لا يَنْصُرُ محمَّدًا صلَّى اللهُ عليه وسلم والمُؤمِنينَ عَلَيْهِمُوكَآيِرَةُ السَّوعُ بالذِّلّ والعَذَابِ وَغَضِبَ اللَّهُ عَلِيْهُمُ وَلَعَنَهُمُ ابْعَدَهُم وَلَعَذَلُهُمْ جَهَنَّمَ وَكَالَّهُمْ حَهَنَّمَ وَكَالَّهُمْ وَلَيْكُوكُ السَّمَاوَتِ وَالْأَرْضُ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيْزًا فِي مُلَكِهِ حَكِيْمًا ﴿ فِي صُنْعِهِ اى لَمْ يَزَلُ مُتَّصِفًا بذلك إِنَّا أَرْسَلُنْكَ شَاهِدًا عَلَىٰ اُسَّتِكَ مِي القِيمَةِ وَ**رُمُبَيِّسً** لهم في الدُنيا بالجَنَّةِ وَلَكِيرًا لله مُنذِرًا مُخَوِّفًا فيها مِن عَمَل سُوءِ بالنار لِتُتُومِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ بِاليّاءِ والتّاء فيهِ وفي الثَلثةِ بَعُدَه وَ**رُحُرِّرُوه** يَنْصُرُوه وقُرِئُ نَرَايَسُ مَعَ الفَوْقا نيَّة وَتُوَقِّرُوهُ مَّ تُعَطِّمُوه وصَمِيرُها لِلَٰهِ ورَسُولِه **وَتُسَيِّحُوهُ** اى الله تَكُرَةً وَآصِيلُا العَدَاةِ والعَشَى إِنَّ الَّذِيْنَ

ت مروع كرتا مول الله تعالى كه نام يجو برا مهر بان نهايت رحم والاب، ب شك بم ن آب كو (اب نبی) ایک تحلی فتح عطاء کی (یعنی) آپ کے جہاد کے ذریعہ ہم نے بر درشمشیر ستقبل میں مکہ وغیرہ کی فتح کا فیصلہ کر دیا، تا کہ آپ کے جب دے صدین آپ کی اگلی پچیلی کوتا بیول کومعاف کریں، تا کہ تیری امت کو جہاد میں رغبت ہو، اور مذکورہ آیت مؤوّل ہے انبیاء پیبینی کے گنا ہول سے دلیل عقلی طعی سے معصوم ہونے کی وجہ سے ، اور لام علت غائبہ کے لئے ہے لہٰذااس کا مدخول مسبب ہے نہ کہ سبب،اور (تا کہ) فتح مذکور کے ذریعہ اپنی نعمتوں کی آپ پر بھیل کرے اور اس کے ذریعہ سیدھاراستہ دکھ ئے (یعنی) آپ کواس پر ثابت قدم رکھے،اور وہ (سیرهارات) دین اسلام ہے اور تا کہ وہ اس فتح کے ذریعہ آپ کوایک زبروست لسرت تغفیٰ ہام اِست نصرت، جس میں ذلت شہو ، وی ہے ووڈ ات جس نے مونین کے دل بین کیا ہے انتہا کہ مان کے یہا ن کے ساتھ وین کے احکام پر ایمان کا اوراضا فہ ہو جب جب بھی ان میں ہے کوئی تھم نازل ہواس پر ایمان لائیں ، اوران ہی احکام میں سے جہاد ہے، اورز مین وا سان کے سب کشکراللہ ہی کے بیں ،سواگر و دِتمبارے بغیر اپنے دین کی نصرت کا اراد و کرتا تو اید ارسکت تھا، اور المدتعال این مخلوق کے بارے میں دانا اور این صنعت کے بارے میں باحمت ہے لیمن وہ اس صفت نے ساتھ ہمیشہ متصف ہے (اس نے جہاد کا تھم اس لئے دیا ہے) تا کہوہ لِید خِلَ، اَمَر بالجهاد محذوف کے متعلق ہے، مومنین اور مومن ت کوای جنت میں داخل کرے کہ جس کے نیچ نہری بہدری بول گی ، جن میں ہمیشہ ہمیشہ ر بیں گے ، اور تا کہ ان کے گنا ہوں کوان ہے دور کرے، اللہ کے نز دیک بیہ بڑی کامیا بی ہے، اور تا کہ منافق مردوں اور منافق عورتوں کو اور مشرک مرداور مشرك عورتول كوسرادے جواللہ كے ساتھ أرے برے كمان ركھتے ہيں (اكسوء) نتيوں جنگبول برسين كے فتہ اورضمہ كے ساتھ ہے، ان کا گمان ہے کہ اللہ تعالیٰ محمہ ﷺ اور مومنین کی مدد نہ کرے گا، ذلت اور عذاب کے ساتھ برائی کے چکر میں وہ خود ہی آ گئے امراللہ ان پرغضیناک ہوگا، امران کو (رحمت) ہے وو کرے گا، امران کے لئے اس نے وو ش ہے کر کھی ہے او (وو) براٹھ کا نہ ہے اور آس نوں اور زمین کا سب نشکر اللہ ہی کا ہے اللہ تعالیٰ اپنے ملک میں زیر دست اور اپنی صنعت میں حکمت والا ہے اس صفت کے ساتھ ہمیشہ متصف ہے یقینا ہم نے آپ کو قیامت کے دن اپنی امت کے لئے گوا ہی دینے والا اور ان کو دنیا میں جنت كى خوشخبرى سنانے والا (بن كر بھيجا) اور دنيا ميں آگ ہے برے ائلال كى وجدے ۋرانے والا بنا كر بھيجا، تا كهم لوگ الله اور ت کے رسول پرایمہ ن رو (لِنتو مِنُو ۱) میں یا ءاور تا ء دونوں ہیں ، یہاں بھی اوراس کے بعد نتیوں جنگہوں پر بھی اوراس کی مدد کرو

اورتا ، فو قانبیہ کی صورت میں دوزا وی کے ساتھ پڑھا گیا ہے، اوراس کی تعظیم کرو ندکورو دونوں صیغوں کی ضمیر اللہ اوراس کے رسول کی جانب راجع ہے اور اس کی لیعنی اللہ کی صبح وشام پاکی بیان کرو بلاشبہ جولوگ آپ سے حدیبیمیں بیعت رضوان كررے بيں يقيناً وہ اللہ سے بيعت كررے بيں اوريه مَنْ يُطِع الرَّسُولَ فَقَدْ اَطَاعَ اللَّهَ كِها نند ہے، الله كا باتھ ان كے ہاتھ پر ہے، وہ ہاتھ جس پرمونین نے آپ یکھی سے بیعت کی لینی اللہ تعالی ان کی بیعت کی اس کاروائی سے باخبر ہے، سووہ ان کواس پر جزاء دےگا، تو جو تحق عہد شکنی کرے گا تعنی بیعت تو ڑے گا تو اس کی عبد شمنی کا وبال اس پر پڑے گا، لیعنی اس کی عبد شکنی ای کی طرف لوٹے گی اور جو تخص اس کو بیر را کرے گا جس کا اس نے القدے عبد کیا ہے تو الند تعی کی اس کواجر عظیم عطاء کرے كا (فَسَنُو تِيْهِ) مِن ياء اورنون دونول بيل-

عَجِفِيق الْرَكْ فِي لِيسَهُ مِنْ الْحَالَةُ لَفِيسَارِي فَوَالِالْ

فِيَوْلِنَى : إِنَّافَتَحْنَا لَكَ فَتَحًا مُّبِينًا، فَتَحْنَا كَتَفْير فَضَيْنَا عَرَفِكَ مَقصدايك شبركود فع كرنا ع

شبه: فتح ہم ادفتح مکہ ہاور فتح مکہ بالاتفاق ۸ ھیں ہوا ہے، اور بیسورت حدیبیہ سے واپسی کے وقت ضبحان جو مكەسە 27 كلومىنر كەممافت پر ئېيا بتول بىخش گىراع الىغىمىيىر كەتئام پەلايلىن ئازل بوڭى. ۋاب ئىبەيە ئەسە كەھ میں ہونے والے واقعہ کو ۲ ھیں إنّا فَتَحْمَا ماضی کے صیغہ سے کیوں تعبیر فرمایا؟

وقع: مفسرین نے اس شبہ کے تین جواب دیئے میں ایک تو وہی ہے جس کی طرف ملامہ محلی نے فَتَحْفَا کی تغییر فَضَیْفَا ے كركا شاره كيا ہے،اس جواب كا خلاصه يہ كونتے سے مراد قصا في الازل ہے اى حكمنا في الازل اور قصا في الازل یقیناصلح حدیبیہ سے مقدم ہے لینی ۸ ھیں فتح کمہ کا فیصلہ از ل میں ہو چکاتھا ،اس صورت میں ماضی ہے تعبیہ ھیتة ہوگ۔ گُرُونِينِينُ الجَوَلَثِي: بياب كه، فتح مك يقيني الوقوع بونے كى وجہ سے ماضى سے تعبير كرديا كيا، اس سے كه بس وَا وَوَع بونے كى وجہ سے ماضى سے تعبير كرديا كيا، اس سے كه بس وَا وَوَع بونے كى وجہ سے ماضى سے تعبير كرديا كيا، اس سے كه بس وَا وَوَع بونے كى وجہ سے ماضى سے تعبير كرديا كيا، اس سے كه بس وَا وَوَع بونے كى وجہ سے ماضى سے تعبير كرديا كيا، اس سے كه بس ہوتا ہاس کو ماضی تعبیر کردیتے ہیں ،اس صورت میں تعبیر بالماضی مجاز أہوگی ،اوربه وَ نُفِخَ فِی الصَّوْر کی نظیر ہوگی۔ یتیئیٹر**ا بیخائیے:** یہ ہے کہ درحقیقت فتح صلح حدیبیہ ہی ہے ،اس لئے کہ سلح حدیبیہ ی فتح مکہ اور دیگر فتو حات کا سبب بی تھی اور آنخضرت ﷺ نے بھی صلح حدیبیا وفتح مبین قرار دیا ہے، جب کراع اتعمیم کے مقام پریہ سورت نازل ہوئی تو آپ نے صحابہ کو پڑھ کرے کی او حضرت عمر نفخانٹائا تھا لیے نے اس وقت بھی سوال کیا کہ اے اللہ کے رسول کیا یہ فتح مبین ہے؟ آپ بلی ایک نے فرمایا فتم اس ذات کی جس کے قبضہ میں میری جان ہے رہ فتح مبین ہے،اس صورت میں بھی تعبیر بالماضی هیقة ہوگی۔ هِ فَكُولِ مَن : عنوة زبردت لينابزورشمشيرهاصل كرنا ، بيامام اعظم اورامام ما لك كاند بب بام شافعي كاند بب بيه ب كه مكه

فَيُولِكُنَّ : بينا، مىينا كَتْسِربينا كركاس بات كر طرف اشاره كياب كهمُبيْنُ ابَاذَ يَ مَعْنَ لازم بندكم متعدى ـ

قِوَلَى : فى السمستقبل، فتح ئ متعلق ، بعض شنول مين (فى) كي بغير ب جيها كه پيش نظر نسخ مين ب واس صورت مين المستقبل، بفتح كرصفت موكار

فَيُولِنَى : بجهادك اسكاتعلق، فتح مكه عب،اس كلمه كاضافه كامقصدايك والكاجواب ب-

سَيُوْلُنَ؛ فَتْحَ مَد بارى تعلى كافعل ب،اس لِنَهُ كدانًا فقص نا بي فَتْحَ كى نبست ذات بارى نے اپنی طرف فره كى ب،اور مغفرت كا تعلق آپ يَنْ الله كى ذات ہے ب،اس كا مطلب بيہ كدفتح جوكه بارى تعالى كافعل بيد علت به آپ يَنْ الله كَا مغفرت كى ،اور بيدورست نبيس باس لئے كدا يك كافعل دومرے كے لئے علت نبيس بن سكتا ، ابندا فتح مكه برآپ كى مغفرت كا مرتب ہونا بھى درست نبيس ب،اى سوال كے جواب كے لئے مغسرعلام نے بجھادك كا اضافه فرمایا۔

جِهُولَ بُنِي: جواب كا ماحصل يه ب كه بسجهادك كاتعلق فتح كمه كماته به مطلب به ب كه فتح توبارى تعالى بى نے عطافر مائى گراس كا ظاہرى سبب اور ذر بعد آپ وَ اللّٰ كَا جَهاد بنا ، اس طريقه سے خود آپ كافعل آپ كى مغفرت كى علت بوئى نه كه فعل بارى تعالى اور بيدرست ب، للبندااب كوئى اعتراض باتى نہيں رہا۔

فِيَوْلَيْنَ : هو مؤوّل يكي ايك سوال مقدر كاجواب -

سَيْوان، سوال يه ب كه ني معصوم بوتا بي في مرآب يتن الله الكران و كاكيامطلب ب؟

عرب الترغب امتك يه جهاد پرمغفرت كمرتب بون كاعلت ب، يعنى جهاد پرمغفرت مرتب بون كى وجهت تيرى امت جهاد كرمغفرت مرتب بون كى وجهت تيرى امت جهاد كل طرف راغب بوك ... امت جهاد كل طرف راغب بوگل...

فَيُولِكُ : ويتم الكاعطف بغفو بهاورلام كتحت س-

قِحُولَى ؛ بنبتك اس اضافه كامقصدا يك اعتراض كاجواب ب، اعتراض بيب كه آپ يَظْ عَنَّا تُوشروع بى سے ہدايت يافته تقے پھر آپ كے بارے ميں ويهديك صراطا مستقيما فرمانے كاكيامطلب ہے؟ جِكُولَاثِيْ : جواب كالمحصل يب كه مدايت براد مدايت بردوام واستقر ارب

فِيُولِكُ : ذاعز يكى ايك سوال مقدر كاجواب يـ

لَيْهُوْ إِلَى ؛ سوال بيت كه عزيز ، منصور كى صفت بنه كه نصر كى اوريها لى نصر كى صفت واقع موراى بيد فسقته جَوُل نَبِي : جواب كا حاصل بيب كه عزيز فعيل كه وزن برب او فعيل كاوزن نبست ميان كرنے كے لئے بھى آتا ہے جيسے فسقته ميں نے اس كو فسق كي اس كو قاسق كها ، اس طرح يهال بھى عزيز جمعنى ذو عز ہاور ذوعر منصور ہى موتا ہے۔ ميں نے اس كو فسق كي السام وقع وظننتم ظن المسوء.

(تندید) بیشار تعلیدالرحمة سے سبقت قلم ہے، اس کے کداول اور تیسرے مقام میں بالا تفاق صرف فتحہ ہے، اہذا سی بیتا کہ یوں فرماتے فی الموضع الثاني.

فَيُولِنَى ؛ والمتاء فيه ليحى لتؤمنوا بالله ميں ياءاورتاءوونول قراءتيں ہيں، گرتاءى صورت ميں بياعتراض ہوگا كه لتؤمنوا بالله ، انا ارسلنك كاتتر ہے اور انا ارسلنك ميں خطاب آپ نِيَقِقَعَيَّا كو ہے اور لتؤ منوا ميں خطاب امت كو ہے كلام واحد ميں انتش رمرجع له زم آتا ہے ، جبكه آخر كلام اول كلام كاتتر ہى ہے۔

جِيَّ لَبُنِيْ: لنسو مسنو الله بن اگرچه بظاہر خطاب امت كومعلوم ہوتا ہے گر حقیقت میں خطاب آپ كوہاس سے كه آپ اصل امت ہیں لہذااب كلام واحد میں تعدد مرجع لازم نہیں آتا۔

ؾٙڣٚؠؙڒ<u>ۅؖڷۺٛ</u>ڽؖ

سورت كانام:

سورت کانام بہل آیت انا فتحنا لك فتحا مبینا _ے ماخوز ہے۔

صلح حديبيه كاواقعها جمالا:

جمہور صحابہ و تابعین اور ائم تفسیر کے نز دیک سور ہ فتح لاہ میں اس وقت نازل ہوئی جبکہ آپ بقصد عمر ہ صحابہ کی ایک بڑی جماعت کے ساتھ مکہ کے لئے روانہ ہوئے ،اور حرم مکہ کے قریب مقام حدید بیبیتک پہنچ کر قیام فر مایا ، مگر قریش مکہ نے آپ کو

﴿ (مَرْمُ بِسُلِشَ فِي)>

مكه ميں داخل ہونے ہے روك دیا، پھراس بات برصلح كرنے كے لئے آمادہ ہوئے كہاس سال تو آپ بلان اللہ واپس جيے جائیں،اگلے سال اس عمرہ کی قضا کرلیں، بہت ہے صحابہ کرام بالخضوص حضرت عمر دیفتی انٹیڈ اس طرح کی صلح ہے کہیدہ خاطر تھے، مگر آنخضرت میں ایک باشارات ربانی اس صلح کوانجام کارمسلمانوں کے لئے ذریعہ کا میابی سمجھ کر قبول فر مالیے، جس کی تفصیل آئندہ پیش کی جائے گی، جب آنخضرت ﷺ نے اپنااحرام عمرہ کھولدیا اور حدیبیہ ہے واپس روانہ ہوئے تو راستہ میں بیسورت نازل ہوئی،جس میں بتلا دیا کہرسول اللہ ﷺ کا خواب سیاہے ضرور واقع ہوگا مگر اس کا بیہ وفت نہیں اوراس ملے کو فتح مبین ہے تعبیر فر مایا اس لئے کہ بیالح ہی در حقیقت فتح مکہ کا سبب بنی ، چنانچہ بہت ہے سی بداور خود آپ ﷺ صلح حدیبیہی کو فتح مبین قرار دیتے تھے، یہ سورت چونکہ واقعہ حدیبیمیں نازل ہوئی ہے اور اس واقعہ کے بہت سے اجزاء کا خوداس سورت میں تذکر وبھی ہے اس لئے مناسب معلوم ہوتا ہے کہ اس واقعہ کو تفصیل کے ساتھ مہینے ذکر کردیا جائے ،ابن کثیراورمظہری میں اس کی بڑی تفصیل ہے۔

واقعه حديبيه كي تفصيل اور تاريخي پس منظر:

جن واقعات کے سلسلہ میں بیسورت نازل ہوئی ان کی ابتداء کی عبد بن حمید دابن جرمر دبیمی کی روایت کے مطابق تفصیل اس طرح ہے کہایک روز رسول اللہ ﷺ نے خواب میں دیکھا کہ آپ اپنے اصحاب کے ساتھ مکہ مکرمہ تشریف لے گئے ہیں اور عمرہ کے احرام سے ف رغ ہوکر حلق کرایا اوز بعض لوگوں نے قصر کرایا اور میرکہ آپ بیت اللہ میں داخل ہوئے ،اور بیت اللہ کی جالی آپ کے ہاتھ آئی،اس جزء کاذکر بھی آگے ای سورت میں آر ہاہے،انبیا وکا خواب چونکہ وجی ہوتا ہے جس کی روسے اس خواب کا واقع ہونا ضروری تھا، گرخواب میں اس واقعہ کے لئے کوئی سال یا مہینہ متعین نہیں کیا گیا تھا گر درحقیقت بیخواب فتح مکہ کی صورت میں واقع ہوتے والانتما۔

بظاہراس واقعہ کے وتوع پذیر ہونے کے بالکل اسباب نہیں تھے، اور نہاس پڑمل کرنے کی بظاہر کوئی صورت نظر آتی تھی، ادھر كفار قريش نے جھ مال سے مسلمانوں كے لئے بيت الله كاراسته بند كرر كھا تھا، رسول الله يَنظِينَ الله الا تامل إينا خواب صحاب کرام کوسٹایا تو وہ سب کے سب مکہ کرمہ جانے اور بیت اللہ کا طواف کرنے وغیرہ کے ایسے مشاق تھے کہ ان حضرات نے فور آہی تیاری شروع کردی، جب صحابه کرام کی ایک بڑی تعداد تیار ہوگئی تو آپ ﷺ نے بھی ارادہ فرمالیا۔ (دوح المعانی ملعضا) ذ والقعده بروز پیر۲ هی ابتدائی تاریخوں میں بیمبارک قافلہ مدینہ سے روانہ ہوا، ذ والحلیفہ جس کواب بئر علی کہتے ہیں پہنچ کرسب نے عمرہ کا احرام باندھا،قربانی کے لئے • ماونٹ ساتھ لئے ، بخاری ،ابودا ؤونسائی وغیرہ کی روایت کے مطابق سلمہ کوساتھ لیا آپ کے ہمراہ مہاجرین وانصاراور دیہات ہے آنے والوں کا ایک بڑا مجمع تھاجن کی تعدا دا کثر روایات میں چوده سوبیان کی گئی ہے۔ (مظهری ملحق)

ابل مكه كى مقابله كے لئے تيارى:

دوسری جانب اہل مکہ کورسول اللہ یکھ کا گئی ہڑی جماعت صحابہ کے ساتھ مکہ کے لئے روانہ ہونے کی خبر لمی ، توجع ہوکر باہم مشورہ کیا کہ محمد یکھ کھٹی کے ایس کے ساتھ عمرہ کے لئے آ رہے ہیں ، اگرہم نے ان کو مکہ میں آنے دیا تو پورے عرب میں یہ شہرت ہوجائے گی کہ وہ ہم پر غلبہ پاکر مکہ کرمہ کڑئے گئے ، حالانکہ ہمارے اور ان کے درمیان کی جنگیں ہوچکی ہیں ، آخر کار ہڑی حشش و بڑنے کے بعد ان کی جاہلا نہ حمیت ہی ان پر غالب آکر رہی اور انہوں نے اپنی ناک کی خاطریہ فیصلہ کرلیا کہ کس قیمت پر بھی اس قافلہ کواپے شہر میں واخل نہیں ہونے و بیتا ہے۔

رسول الله فیلق کی حیثیت ہے بنی کعب کے ایک شخص کو آ سے جھیج رکھا تھا کہ وہ قریش کے ارادوں اور ان کی نقل وحرکت ہے آپ کو ہروفت اطلاع دی کہ قریش کے ارادوں اور ان کی نقل وحرکت ہے آپ کو ہروفت اطلاع دی کہ قریش کے نوگ پوری تیاری کے ساتھ دی طرف پوری تیاری کے ساتھ دی طوف کے جی اور خالد بن ولید کو انہوں نے دوسوسواروں کے ساتھ کراع العمیم کی طرف بھیج دیا ہے ، تاکہ وہ آپ کا راستہ روکیس ، قریش کا مقصد آپ کے ساتھ چھیڑ چھاڑ کرتا تھا تاکہ جنگ ہوجائے اور لڑائی شروع کرنے کا الزام آپ کے سرآجائے۔

رسول اللد ظِفَائِفَا فَ بِياطلاع پاتے ہی فوراراستہ بدل دیا اور ایک نہایت ہی دشوار گذار راستہ سے سخت مشقت اٹھا کر حدید یہ مقام پر پہنچ گئے جو عین حرم کی سرحد پر واقع ہے، شزاعہ کا سردار بدیل بن ورقاء اپنے قبیلہ کے چند آ دمیوں کے ساتھ آپ کے باس آیا اور آپ سے معلوم کیا کہ آپ کس غرض سے تشریف لائے ہیں؟ آپ نے فرمایا ہم کسی سے لڑنے نہیں آئے صرف بیت اللہ کی زیارت اور اس کا طواف کرنے کیلئے آئے ہیں، یہی بات ان لوگوں نے جا کرقریش کے سرداروں کو بتا دی اور ان کومشورہ دیا کہ وہ ان زائر بین حرم کا راستہ ندروکیں، مگروہ اپنی ضد پراڑے رہے۔

خبررسانی کاساده مگرعجیب طریقه:

ان لوگوں نے آنخضرت ﷺ کے حالات سے باخبر رہنے کا بیا انتظام کیا کہ مقام بلدح سے کیکراس مقام تک جہاں آنخضرت ﷺ کے حالات دیکھ کرآپ کے متصل آنخضرت ﷺ کے بیاڑوں کی چوٹیوں پر پچھآ دمی بٹھادیئے تاکہ آپ کے بورے حالات دیکھ کرآپ کے متصل پہاڑوالا باوروہ تیسرے تک اوروہ چوشھ تک پہنچادے اس طرح چندمنٹوں میں بلدح والوں کو آپ کے حالات کاعلم ہوجا تا تھا۔

قریش نے سفارت کاری کے لئے اول آپ ﷺ کے پاس احابیش کے مردار حلیس بن علقمہ کو بھیجا تا کہ وہ آپ کو واپس جانے پر آمادہ کرے ملیس نے جب آکرا بی آئکھوں سے دیکھ لیا کہ سارا قافلہ احرام بند ہے اور ہدی کے اونٹ ساتھ ہیں توسمجھ

٠٥ (وَكُزُمُ بِسَالِمَ إِنَّ الْمَالِمَ عِنْهِ الْمَالِمَ الْمَالِمَةِ الْمَالِمُ الْمَالِمُ الْمَالِمُ الْمَا

کیا کہان کا مقصد بیت املہ کا طواف وزیارت کرنا ہے ، جنگ کرنا ان کا مقصد نہیں ہے ، پیرحالات و کچھ کرآپ ہے گفتگو کئے بغیر واپس چلا گیا ،اوراس نے جا کرقر کیش کے سرداروں ہے صاف کہددیا کہ بیلوگ بیت اللہ کی زیارت ادرطواف کے لئے آئے ہیں،اگرتم ان کوروکو گے تو میں اس کام میں تمہارا ساتھ ہرگز نہ دوں گا، ہم تمہارے حلیف ضرور ہیں مگر اس سئے نہیں کہتم بیت الله کی حرمت کو یا مال کرواور ہم اس میں تمہاری حمایت کریں۔

عروه بن مسعود سفارت كاركى حيثيت سے آپ طِلقَ عَلَيْنَا كَي خدمت ميں:

اس کے بعد قریش کی طرف ہے عروہ بن مسعود تنقفی آیا اس نے بڑی او کیج نیج ،نشیب وفراز سمجھا کررسول املہ بین تاہیج کواس بات پرآ ما دہ کرنے کی کوشش کی کہ آپ مکہ میں داخل ہونے کے ارادے ہے باز آ جا نمیں مگر آپ نے اس کوبھی وہی جواب دیا جو بن خزاعہ کے سردار کو دیا تھ کہ ہم لڑائی کے ارادہ ہے نہیں آئے ہیں بلکہ بیت اللہ کی زیارت اور طواف کے ارادہ ہے آئے ہیں ، عروہ نے واپس جا کرقریش ہے کہا کہ میں قیصرو کسری اور نجاشی کے در باروں میں بھی گیر بول مگر خدا کی تسم میں نے اسحاب محمد کی فدائیت کا جیسا منظر دیکھا ہے، ایسا منظر کسی بڑے ہے بڑے بادشاہ کے یہاں بھی نہیں دیکھا ، ان کا حال تو یہ ہے کہ محمد بلان ہو جب وضوکر تے ہیں تو ان کے اصحاب یانی کا ایک قطر وبھی زمین پر گر نے نہیں دیتے اور اُ سے اپنے جسم اور کپڑوں کہتے ہیں ، ا بتم سوچ لوتمہارامقا بلیکس ہے ہے؟ اس دوران سفارت کاری کاثمل جاری تھاا بلجیوں کی آمد ورفت ہور بی تھی اور گفت وشنید کا سسدہ باری تھا،قریش کےلوگ بار باریہ کوشش کررہے تھے کہ چیکے ہے حضور کے بھپ پر چھاہے مارکرآپ کواشتعال در نمیں، اورکسی نیکسی طرح ان ہے ایبا اقدام کرالیں جس ہے اڑائی کا بہانہ ہاتھ آجائے ،گر ہر مرتبہ آپ کی تدبیروں اور صی بہ ک صبر وصنبط نے ان کی تدبیروں کو نا کام کر دیا،ایک د فعدان کے جالیس بچاس آ دمی رات کے وقت مسلمانوں کے قیموں پر پتھراور تیر برسانے لگے،صحابہ نے ان سب کوگر فقار کر کے آپ کی خدمت میں چیش کردیا، ایک روز مقام تعلیم کی طرف ہے ۰ ۸ آ دمیوں نے عین نماز فجر کے وقت آ کراچا تک چھاپہ ماردیا، یہ نوگ بھی گر فتار کر لئے گئے ، گرآپ پیلی تا بائے انہیں بھی رہا کردیا۔

حضرت عثمان رَضِكَانلُهُ تَغَالِظَيْهُ كَى سفارتى مهم برروانكى اورآب طِلْقَاعَتِهُ كَا قريش كے نام بيغام:

بدیل بن ورقاءاورعروہ بن مسعور تقفی کے بعد دیگرے آپ پیچھیلائے گفتگو کر کے واپس چلے گئے اور قریش ہے بوری صورت حال بیان کی اور بتایا کہ بیلوگ لڑائی کے ارادہ ہے نہیں بلکہ زیارت بیت اللہ کے ارادہ ہے آئے ہیں لہذا ان کا راستہ ر د کن من سب میں ہے مگر قریش پر جنگ کا جنون سوارتھاان کی ایک نہ ٹی اور آ ما دہ جنگ و پر کیار ہوئے۔

امام بیہتی نے عروہ ہے روایت کی ہے کہ جب رسول اللہ بالقطائیا نے حدید بیسے میں پہنچ کر قیام فرمایہ تو قریش کھبرا گئے تو آنخضرت بالقطائی نے ارادہ کیا کہ ان کے پاس اپنا کوئی آ دمی بھیج کر بتلادیں کہ ہم جنگ کرنے نہیں عمرہ کرنے آئے ہیں ہماراراستہ ندروکو،اس کام کے لئے اول حضرت عمر دیفتیانی کو بلایا ،حضرت عمر نے عرض کیا یارسول القدید قریش میر ۔

- ﴿ [زَمَزَمُ بِبَالشِّرْزُ] ≥ -

سخت دشمن ہیں ، کیونکہ ان کومیری عداوت اور شدت معلوم ہے اور میر زے قبیلہ کا کوئی آ دمی مکہ میں ایبانہیں جومیری حمایت کرے اس لئے میں آپ کے سامنے ایک شخص کا نام پیش کرتا ہوں جو مکہ مکرمہ میں اپنے قبیلہ وغیرہ کی وجہ ہے خاص قوت وعزت رکھتا ہے بعنی عثمان بن عفان ،آپ نے حضرت عثمان کواس کام کے لئے مامور فر ماکر بھیج دیا اور آپ میں ایک نے یہ بھی فر ما یا کہ جوضعفاء سلمین مکہ ہے ججرت نہیں کر سکے اور مشکلات میں <u>کھنسے ہوئے ہیں ان کے پ</u>یس جاکرتسلی دیں کہ پریش^ن نه ہوں انشاء اللہ مکہ مکر میہ فنتح ہو کرتمہاری مشکلات ختم ہونے کا وقت قریب آگیا ہے، حضرت عثمان غنی یَوْحَانِللُهُ تَعْالِيَّهُ مِهلے ان لوگول کے پاس گئے جومقام بلدح بیں آنخضرت بھٹھ کاراستدرو کئے کے لئے جمع ہوئے تھے،ان سے آپ بھٹھٹا کی وہی بات سن دی جوآ پ نے بدیل اور عروہ بن مسعود وغیرہ کے سامنے کہی تھی ان لوگوں نے جواب دیا ہم نے پیغام سن لیا ا ہینے بزرگوں سے جا کر کہہ دو کہ بیہ بات ہرگز نہ ہوگی ،ان لوگوں کا جواب من کرآ پ مکہ مکرمہ کے اندر جانے لگے تو ابان بن سعید (جوابھی مسلمان نہیں ہوئے تنھے) سے ملا قات ہوئی ،انہوں نے حضرت عثمان کا گرم جوثی سے استقبال کیااوراینی پناہ میں کیکران ہے کہا کہ مکہ میں اپنا پیغام کیکر جہاں جا ہیں جا سکتے ہیں ، پھرا بے گھوڑے پر حضرت عثمان کوسوار کرکے مکہ مکرمہ میں داخل ہوئے ، کیونکہ ان کا قبیلہ بنوسعد مکہ مکر مہ میں بہت قوی اور عزنت دار تھا ،حضرت عثمان مُفِحَانْلَائَةُ مُلہ کے ایک ا یک سردار کے پاس تشریف لے گئے اور آپ میلی تا کا پیغام سایاءاس کے بعد حضرت عثمان ضعفاء مسلمین سے ملے ان کو بھی آپ ملائقتا کا پیغام پہنچایا وہ بہت خوش ہوئے ، جب حضرت عثان پیغامات پہنچانے سے فارغ ہو گئے تو اہل مکہ نے ان ہے کہا اگر آپ جا ہیں تو طواف کر سکتے ہیں حضرت عثمان غنی نے فر مایا کہ میں اس وفت تک طواف نہیں کروں گا جب تك رسول الله فيقتلظيها طواف ندكرين_

قریش کے ستر آ دمیوں کی گرفتاری اور آپ کی خدمت میں پیشی:

بيعت رضوان كاواقعه:

حفرت عثمان کے آل کی خبرس کرآپ یکھ اللہ نے تمام مسلمانوں کوئٹ کیا اور ان سے اس بات پر بیعت کی بعض حفرات نے کہا ہے کہ یہ بیعت عدم فرار اور کمال کہا ہے کہ یہ بیعت موت برتھی بعنی مرجا کیں گرفقرم پیٹھے نہ ہٹا کیں گے، اور یہ بھی کہا گیا ہے کہ یہ بیعت عدم فرار اور کمال ثبات و قرار پرتھی، باوجود یکہ حالات برح نازک تے، فاہری حالات مسلمانوں کے موافق نہیں تھے، مسلمانوں کی تعداد صرف چودہ سوتھی، اور سامان جنگ بھی سوائے تکوار کے پائیس تھا، اپ مرکز ہے ڈھائی سومیل دور عین کہ کی سرحد پرتھم ہے ہوئے جہاں و شمن پوری طاقت کے ساتھ ان پرحملی آ ور ہوسکی تھا، اور گردوپیش سے اپنے حامی قبیلوں کو لاکر آئیس گھیر ہے میں لے ساتھ اس نے باوجود تمام سحاب نے سوائے جد بن قیس کے کہوہ اونٹ کے پیچھے چھپ کر بیٹھا رہا اور اس دولت خداواد سے محروم رہا بیعت کی (خلاصة النہ سیر) سب سے پہلے ابوسان اسدی نے ہاتھ بڑھایا، اس کے بعد کے بعد کے بعد دیگر سے جمعد حاضرین نے بیعت کی (خلاصة النہ سیر) سب سے پہلے ابوسان اسدی نے ہاتھ بڑھایا، اس کے بعد کے بعد دیگر سے جمعد حاضرین نے بیعت کی اور اپنے دست مبارک کو حضرت عثان رہے کا میں تھے اس لئے آپ نے تھی تھی ایس کے ایک ہاتھ کو دوسرے ہاتھ پر رکھ کر ان کی طرف نہیں تھے، اور دو آپ نے تھی تھی ہورکہ کر ان کی طرف نے بیعت کی اور اپنے دست مبارک کو حضرت عثان رہے کا تھی تھی اور دو آپ نے تھی خود در سے باتھ پر رکھ کر ان کی طرف نے بیعت کی اور اپنے دست مبارک کو حضرت عثان رہے کا تھی تھی تھی اور دو آپ نے تھی کہ دو سے دست مبارک کو حضرت عثان رہے کا تھی تھی اور دو آپ نے تھی در سام کی در اور دو آپ نے تھی در کی در اور دو آپ نے در سے دست مبارک کو حضرت عثان رہے کا تھی تھی اور دو آپ نے دست مبارک کو حضرت عثان رہے کا تھی تھی اور دو آپ نے دست میں دو اور دو آپ نے دست مبارک کو حضرت عثان رہے کی اور اپنے دست مبارک کو حضرت عثان رہے تھی تھی تھی کی دو اور دو آپ نے دست مبارک کو حضرت عثان رہے کوئی دو تاریخ کے دور اور دو آپ نے دست مبارک کو حضرت عثان رہے کوئی اس کی تھی تھی دور میاں کی دور سے دیکھ کی دور سے دی دور کی دور سے دور کے دور کی کی دور سے دور کے دور کے دور کے دور کی دور کی دور کی کی دور کے دور کے دور کی دور کی دور کی دور کے دور کی دور

بعد میں معلوم ہوا کہ حضرت عثمان کے ل کی خبر غلط تھی ،حضرت عثمان خود بھی واپس آ گئے۔

جس کا فیصلہ محدرسول اللہ نے کیا ہے تہبل نے اس پر بھی اعتراض کیا اور بھند ہوئے اور کہا اگر جم آپ کو اللہ کا رسول مانتے تو آپ کو ہرگز ہیت اللہ ہے نہ روکتے (صلح نامہ میں کوئی ایبالفظ نہ ہونا جاہئے جوکسی فریق کے عقیدہ کے خلاف ہو) آپ صرف محد بن عبدالله لکھوا ئیں ،آپ یٹھٹھٹٹانے اس کوبھی منظور فر ما کرحضرت علی تفقاً انام تنفالے سے فر مایا کہ جولکھا ہے اس کومٹ کرمحمد بن عبدالتدلکھ دو،حضرت علی نے باوجو دسرایا اطاعت ہونے کے عرض کیا، میں بیاکام تونہیں کرسکتا، کہ آپ کے نام کومٹادوں، ے ضرین میں سے حضرت اسیدین حفیراور سعدین عبادہ نے حضرت علی کا ہاتھ بکڑ لیا کہ اس کو ندمٹا تیں اور بجر محمد رسول اللہ کے اور پچھ نہ کھیں ،اگریدلوگ تہیں مانتے تو ہمارےاوران کے درمیان تکوار فیصلہ کرے کی اسی دوران جاروں طرف ہے آوازیں بیند ہونے لگیں ، تورسول اللہ ﷺ نے سلح نامہ کا کاغذخود اینے دست مبارک میں لے نبیا اور باوجود اس کے کہ آپ امی تھے پہلے بھی لکھانہیں تھا مگراس وقت خودا یے قلم سے آپ نے ریکھ دیا، ھلذا ماقاضی علیه محمد بن عبدالله و سهیل بن عمرو صلحا على وضع الحرب عن الناس عشر سنين يأمن فيه الناس ويكف بعضهم عن بعض ليخي بي وہ فیصلہ ہے جومحمہ بن عبداللہ اور سہیل بن عمرونے دس سال کے لئے باہم جنگ نہ کرنے کا کیا ہے جس میں سب لوگ مامون ر ہیں ایک دوسرے پر چڑ عاتی اور جنگ سے پر جیز کریں۔ (معادف ملعصا)

گفت وشنیداور بحث مباحثہ کے بعد جو سلح نامہ لکھا گیااس کی دفعات مندرجہ ذیل تھیں:

- 🛈 دس سال تک فریقین کے درمیان جنگ بندر ہے گی ،اور ایک دوسر ہے کے خلاف خفیہ یا علانیہ کوئی کارروائی نہ کی
- 🗗 اس دوران قریش کا جو شخص اپنے ولی کی اجازت کے بغیر بھا گ کرمجم (ﷺ) کے پاس جائے گا، اسے آپ واپس كرديں كے،اورآپ كے ساتھيوں ہے جو شخص قريش كے پاس چلاجائے گا،وہ اسے واپس نہ كريں گے۔
- 🗃 تبائل عرب میں ہے جونبیلہ بھی فریقین میں ہے کسی ایک کا حلیف بن کراس معاہدے میں شامل ہونا جا ہے گا اسے اس
- 🕜 محمد ﷺ اس سال داپس جائیں گے اور آئندہ سال وہ عمرہ کے لئے آ کر تین دن مکہ میں تفہر سکتے ہیں بشرطیکہ پرتکوں میں صرف ایک ایک تکوار لے کرآئئیں ،اور کوئی سامان حرب ساتھ نہ لائیں ،ان تین دنوں میں اہل مکہان کے لئے شہرخالی کردیں گے(تا کہ کس تصادم کی نوبت نہ آئے) گر جاتے وفت وہ یہاں کے کسی شخص کوساتھ بیجائے کے مجوز نہ ہوں گے۔

شرائط كي عام صحابه كرام دَضِحَاللهُ مَعَالِمُكُمَّ أَي ناراضي اوررنج:

جس وقت معاہدے کی شرائط طے ہور ہی تھیں تو مسلمانوں کے خیمے میں سخت اضطراب تھا کو کی شخص بھی ان مصلحتوں کونہیں سمجھ رہاتھ جنہیں نگاہ میں رکھ کرنبی ﷺ شرا نط قبول فرمار ہے تھے ،کسی کی نظراتنی دوررس نتھی کداس سکے کے نتیجے میں جوخیر عظیم

رونماہونے والی تھی اسے دیکھ سکے، کفار قریش اسے اپنی کامیا بی مجھ رہے تھے، اور مسلمان اس پربے تاب تھے، کہ ہم آخر دب کر ذکیل شرا لط کیوں قبول کریں؟ حضرت عمر جیسے بالغ نظر مد برتک کا میرحال تھا کہ ان سے نہ رہا گیا اور رسول بیس تا عرض کیا ، یا رسول القد کیا آپ اللہ کے نبی برحق نہیں ہیں؟ آپ نے فر مایا کیوں نہیں، پھر حضرت عمر نے عرض کیا ، کیا ہمارے مفتولین جنت میں اور ان کے مفتولین جہنم میں نہیں ہیں؟ آپ نے فر مایا کیوں نہیں، اس پر پھر حضرت عمر نے فر مایا پھر ہم اس ذات کو کیوں قبول کریں کہ بغیر عمرہ کئے واپس جلے جا تھیں۔

آنخضرت ظفظ الله نظر مایا میں الله کا بندہ اوراس کارسول ہوں ہرگزاس کے علم کے خلاف ندکروں گا اورا الله تقالی مجھے ضا کع منظر مانے گا وہ میرا مددگار ہے، حضرت محر فَقَعَلَا فَلَا تُعَلَّلُ الله نے کا دہ میرا مددگار ہے، حضرت محر فَقَعَلَا فَلَا تُعَلَّلُ الله نے کہا تھا گرکیا آپ نے ہم سے بینیں فر مایا تھا کہ بیت الله کے پاس جا کیں گے اور طواف کریں گے؟ آپ نے فر مایا ہے شک بید کہا تھا محر رہے گا ہاتھ کہ بیت اللہ کے حضرت عمر نے فر مایا ، آپ بیت اللہ کے مصرت عمر نے فر مایا ، آپ بیت اللہ کے بیاس جا کیں گے اور طواف کریں گے۔

یاس جا کیں گے اور طواف کریں گے۔

حضرت عمر خ موش ہو گئے مگر خم و فصد کم نہیں ہوا، حضرت عمر و فتحانات آپ فیلی گئی کے پاس سے اٹھ کر حضرت ابو بکر صدیق تفقی فائلہ کا اللہ کے اور اللہ ان کا اللہ کا اس اللہ تم مرتے دم تک بندے اور اللہ ان کا اللہ کا اس اللہ تم مرتے دم تک آپ کی رکاب تھا ہے رہو، خدا کی تم موحق پر ہیں، غرض حضرت عمر فاروق کو ان شراکط سے تحت رہ فرم کی بنچا، خود انہوں نے فرمایا کہ واللہ جب سے میں نے اسلام قبول کیا جھے بھی شک پیش نہیں آیا بجراس واقعہ کے۔

حضرت ابوعبیدہ نے سمجھا یا اور فرمایا شیطان کے شرسے بناہ ما گو، فاروق اعظم نے کہا میں شیطان کے شرسے بناہ ما تک محصرت ابوعبیدہ نے ہیں کہ جب مجھے اپنی لطمی کا احساس ہواتو میں برابر صدقہ خیرات کرتا اور وزے رکھتا اور فلام آزاد کرتا رہا کہ میری یہ خطاء معاف ہوجائے۔

کرتا رہا کہ میری یہ خطاء معاف ہوجائے۔

ایک حادثه اور پابندی معامده کی بےنظیر مثال:

جس واقعہ نے جلتی پرتیل کا کام کیا، وہ یہ تھا کہ مین ای وقت کہ جب صلح کا معاہدہ لکھا جارہا تھ اور صحابہ کرام اس معاہدے کی شرائط سے برہم اور زنجیدہ تھے کہ اچا تک سہیل بن عمر و (جو کہ قریش کی جانب سے معاہدہ کے فریق تھے) کے فرزند ابو جندل جومسلمان ہو چکے تھے، اور کفار مکہ نے ان کوقید کر رکھا تھا کسی نہ کسی طرح بھا گر پابز نجیر آپ ﷺ کے کمپ میں پہنچ گئے ،ان کے جسم پرتشدہ کے نشانات تھے ابو جندل نے آپ سے پناہ کی درخواست کی پھے مسلمان آگے ہو ھے اور ابو جندل کو اپنی بناہ میں لے نیا ہمیں چلاا تھا کہ رہے جہد نامہ کی خلاف ورزی ہے اگر اس کو واپس نہ کیا تو میں صلح کی کسی شرط کونہ ، نوں گا ،مسلمانوں نے کہا ابھی صلح نامہ کھل نہیں ہوا ابھی دستخط نہیں ہوئے ،الہٰذابیدوا قعد صلح نامہ کے تحت نہیں آتا ، سہیل نے کہاصلح نامہ کی تحریر خواہ کممل نہ ہوئی ہوگر شرا کطاتو ہمارے اور تمہارے درمیان طے ہو چکی ہیں ، اس سے اس لڑکے کو میرے حوالہ کیا جائے ، رسول اللہ یکھٹھ نے اس کی ججت کوشلیم فر مایا اور ابوجندل کفار کے حوالہ کردیئے گئے ، ابوجندل کو آواز دیکر فر مایا کہا ہے ، رسول اللہ یکھٹھٹھ نے اس کی ججت کوشلیم فر مایا اور ابوجندل کفار کے حوالہ کر دیئے جو مکہ ہیں محبوں ہیں جدر ہائی اور فراخی کا سامان کرنے والا ہے ، مسلمانوں کے دلوں پر ابوجندل کے اس واقعہ نے نمک پاشی کی گر معاہدہ مکمل ہو چکا تھا ، اس صلح نامہ پر مسلمانوں کی طرف سے ابو بکر وعمر وعبد الرحمٰن بن عوف اور عبد اللہ بن سمیل بن عمر و، سعد بن ابی وقاص مجمود بن مسلمہ اور علی بن ابی طالب تضفی کا کھٹھٹا گئے ہو ہے دستخط کئے ، اس طرح مشرکین کی طرف سے سمبیل کے ساتھ چند دوسرے لوگوں نے دستخط کئے۔

احرام کھولنااور قربانی کے جانور ذیج کرنا:

صلح نامہ سے فراغت کے بعد آپ فی ان کے فرمایا کہ سب لوگ اپنی قربانی کے جانور جو ساتھ ہیں ان کی قربانی کردیں اورسر کے بال منڈواکراحرام کھولدیں، صحابہ کرام کی خم کی وجہ سے بیحالت ہوگئ تھی کہ آپ کے فرمانے کے بوجود کوئی اس کام کے لئے تیار نہ ہوا، اور غم وشکتنگی کی وجہ سے کس نے حرکت نہ کی، حضور کے پورے دور رسالت میں اس ایک موقع کے سوابھی بیصورت پیش نہیں آئی کہ آپ صحابہ کو تھم دیں اور صحابہ اس کام کے لئے دوڑ نہ پڑیں، آئحضرت کو بھی اس صورت حال سے صدمہ ہوا، آپ نے اپنے خیمہ میں جاکرام المونین حضرت ام سلمہ دینے کا نائمائی النظامی اس کے اپنے دوڑ نہ پڑیں، آئے کھونہ کہ اس انہوں نے عرض کیا آپ خاموثی کے ساتھ تشریف لے جاکر خود اپنا اور نے ذکح فرمادیں، صحیبہ کرام سے اس پر پچھ نہ کہیں ان کواس وقت خت صدمہ اور رنج شرائط سلح اور بغیر عمرہ کے واپسی کی وجہ سے ہے، آپ سب کے سامنے تجام کو بلا کرخود اپنا صحابہ کرام نے جب آپ سب کے سامنے جام کو بلا کرخود اپنا صحابہ کرام نے جب آپ سب کے سامنے جام کو بلا کرخود اپنا صحابہ کرام نے جب دیکھا تو سب کھڑ ہے ہوگئے ، آپس طلق کر رہے احرام کھولدیں، آپ نے مشورہ کے مطابق ایسانی کیا صحابہ کرام نے جب دیکھا تو سب کھڑ ہے ہوگئے ، آپس میں ایک دوسرے کا حال کرنے لگے اور جانوروں کی قربانی کرنے گے، آپ نے سب کے لئے دعاء فرمائی ۔

معجز ہے کاظہور:

رسول الله ﷺ خود بیبید کے مقام پرانیس یا ہیں دن قیام فر مایا تھا، اب یہاں ہے واپسی شروع ہوئی جب آپ سی بہت کے جمع کے ساتھ پہنے مرانظہر ان پھرعسفان پہنچ، یہاں پہنچ کرمسلمانوں کا زادراہ تقریباً ختم ہوگیا، رسول الله ﷺ نے ایک دسترخوان بچھایا، اورسب کو تھم دیا کہ جس کے پاس جو کچھ ہا لکر جمع کردے، اس طرح جو کچھ باقی ماندہ کھانے کاس مان تھاسب اس دسترخوان پرجمع ہوگیا، چودہ سوحضرات کا جمع تھا، آپ نے دعاء فر مائی سب نے شکم سیر ہوکر کھایا اور اپنے اپنے برتنوں میں بھی بحرایا، اس کے بعد بھی اتنا ہی کھانا باقی تھا۔



صحابه کے ایمان اور اطاعت رسول کا ایک اور امتحان اور صحابه کی بےنظیر توت ایمانی:

اس کے بعد جب یہ قافلہ صدیبیہ کی سلم کواپی شکست اور ذات مجھتا ہوا مدینہ کی طرف والی جارہا تھا، تو ضجنان کے مقام پر اور بقول بعض کراع اہمیم کے مقام پر سورہ فتح نازل ہوئی، جس نے مسلمانوں کو جتایا کہ بیسلم جس کو وہ شکست سمجھ رہ جبی دراصل یہ فتح عظیم ہے، اس کے نازل ہونے کے بعد حضور نے مسلمانوں کو جمع فرمایا، اور فرمایا آج جمھ پر وہ چیز نازل ہوئی ہے جو میرے لئے دنیا وہ فیبا سے زیادہ فیتی ہے، پھر آپ نے یہ سورت تلاوت فرمائی، اور خاص طور سے حضرت عمر نفحاً فائدہ تقافی آئے ہوئے کہ میرے لئے دنیا وہ فیبا سے زیادہ فیتی ہے، پھر آپ نے یہ سورت تلاوت فرمائی، اور خاص طور سے حضرت عمر نفحاً فائدہ تقافی تقافی کے بہارہ خوردہ اور خم نوردہ اور خم سے ایک دورت نے بتایا کہ یہ فتح مبین حاصل ہوئی ہے، حضرت عمر نفخاً فلائے نئے پھرسوال کر جیٹھے کہ یارسول اللہ کیا یہ فتح ہیں میری جان ہے یہ فتح مبین ہے، صحابہ کرام نے اس پر سرسلیم خم کیا اور ان آپ نے فرمایا تھے مبین ہے، صحابہ کرام نے اس پر سرسلیم خم کیا اور ان سے چیز وں کو '' فتح مبین'' یقین کیا۔

و فاءعهد کا د وسراینظیر واقعه: ﴿

ابو جندل کے واقعہ کے بعد ابوبصیر کا واقعہ پیش آیا ، واقعہ بیہوا کہ ابوبصیر مسلمان ہو کرمدین آ گئے ان کے پیچھے دوقریش بھی ان کو والیس بینے کے لئے مدینہ منور ہ آئے ،آپ بھٹی ٹیٹیانے ابوبصیر کومعاہدے کے مطابق ان کے حوالہ کر دیا ،ابوبصیر نے بہت آ ہ وفریا دکی مگرآ پ نے فرمایا ہے ابوبصیر ہمارے دین ہیں غدرو ہے وفائی نہیں ،اللّٰہ تیرے اور تیرے ساتھیوں کے لئے کوئی صورت نکا لنے والا ہے، مجبورا ابوبصیر قریشیوں کے ساتھ چلے گئے ، راستہ میں ابوبصیر نے ان میں سے ایک سے کہا تیری تلوار . حچی نہیں معلوم ہوتی ، دوسرے نے تکوار نکالی اور کہامیری تکوار نہایت عمرہ ہے میں اس کا تجربہ کرچکا ہوں ،ابوبصیر نے کہامیں بھی ذرادیکھوں تلواران کودیدی،قریش بےخبر نخفلت میں شخے دفعۂ آن واحد میں ابوبصیر نے جا بکد سی سے ایک ہی وار میں سرتن ہے جدا کردیا، دوسرابھ گ کھڑا ہوا، بیاس کے بیچھے لیکے گروہ بھاگ کرمدینہ میں داخل ہو گیا اور آپ بیلین کی اے فریا د کی ،اتنے میں ابوبصیر بھی آ گئے اور عرض کیا یا رسول اللہ! آپ نے حسب معامدہ مجھے ان کے حوالہ کر دیا ،اب اللہ نے مجھے بھڑالیا ہے، آپ نے فرمایا اے ابوبصیرتو لڑائی کی آگ بھڑ کانے والا ہے، کاش اس کے ساتھ دوسرا بھی ہوتا ، ابوبصیر سمجھ گئے اور مقد مسیف البحرمیں آ کر قیام کیا، جولوگ مکہ میں تھے اور اینا اسلام چھیائے ہوئے یا مشرکین مکہ کے مظالم برداشت کرر ہے تھے مثلاً ابوجندل وغیرہ جب انہوں نے سنا کہ آپ ﷺ نے فر مایا ہے کہ کاش ابوبصیر کے ساتھ دوسرا ہوتا تو وہ لوگ بھی ایک ایک کر کے سیف البحر پہنچ کر ابوبصیر کے گروہ میں شامل ہو گئے حتی کدان کی تعدا دستر تک پہنچ گئی ،ادھرمشر کین مکہ کا جو قافداس راستہ ہے گذرتااس سے مزاحمت کرتے آسانی ہے مشرکین کا قافلہ بیں گذرسکتا تھا مشرکین مکماس ہے تنگ آ گئے، جب نہریت عاجز ہو گئے تو آپ بلائلی کی خدمت میں مدیند منورہ حاضر ہوئے ،اورعرض کیا کہم اس شرط سے دست بردار ﴿ ﴿ وَمُؤْمُ بِهَا لَمَنْ اللَّهِ الْحَالِمَ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ

ہوتے ہیں،اب آئندہ جوبھیمسلمان ہوکرآپ کے پاس آئے آپ اس کو بناہ دیجئے اور خدا کے واسطے ابوبصیر کے گروہ کو بماری مزاحمت ہے منع شیجئے ،مومنین نے اللہ کی مدود یکھی اور بہت خوش ہوئے ،ابوبصیر کا گروہ بھی مدینہ آ گیا اور آئندہ کے کئے راہ کھل گئی ،اس واقعہ کا اکثر حصہ بخاری ہے ہے اور پچھود مگر کتب ہے ہے۔ (حلاصة النفاسير)

ليدحل المؤمنين والمؤمنات (الآية) مروى بكرجب مسلمانوں نے سوره فتح كا ابتدائى حصدليغفرلك الله سنا تو صحابه کرام نے آپ ﷺ کومغفرت پرمبار کباودی،اورعرض کیا ہمارے لئے کیا ہے؟اس پرالقد تع لی نے مذکورہ

الظانين بالله ظن السوء عليهم دائوة السوء لين الله كواس كحكموس كي بار مين متم كرتے بي اوررسول الله عَلِينَ عَلَيْهِ اورصحابه كرام نَضَوَاللَّهُ مُعَالِثُنَّا المُنتَخِيرُ كِ بارے مِن الملام كا خاتمہ ہوجائے گا(ابن کثیر)اورجس گروش یا ہلاکت کے مسلمانوں کے لئے منتظر ہیں وہ نوان ہی کا مقدر بننے والی ہے۔

فَا رَكِهُ ان الذين يبايعونك (الآيه) جولوك آب سي بيعت كرتے بين وه الله بي سے بيعت كرتے بين اور الله كا باتھ ال کے ہاتھوں پر ہے، بیعت بالفتح عہد کرنا، بیعت کے عنوان اور طریقے آپ ہے مختلف منقول ہیں بہھی آپ نے کسی خاص امر پر بیعت لی،جیسا کہ جربرے عہدلیا، والنصح لکل مسلم ہرمسلمان کی خیرخواہی کرو،اوربعض عورتوں سے نوحہ نہ کرنے پرعہد لیا اور بھی ترک سوال پر اور بھی اطاعت وانقیا دیر ، اور بھی جہا دوقیال پر۔

میروان بروعدهٔ انعام اصحاب بیعت رضوان کے ساتھ خاص ہے یا عام ہے۔

جِينُ النَّهِ عَنِينَ مِن سَينَ مِن آيت نازل هو كَي هِ وه اول اور بالذات مصداق بين اور دوسر يجواسي اختيار كرين مصداق ثاني اور بالتبع ہیں،اصحاب بیعت رضوان یقینان دولت کو پا گئے گر دوسروں کے بارے میں یقین تعیین نہیں،اس لئے کہا عتبارعموم سبب کا ہے نہ کہ خصوص مور دکا۔

شبه: اللي آيت من اذببايعونك تحت الشجوة ال من الفظ تحت الثجرة كي قيد ب، البذاعموم باتى ندر با-جِينُ البيع: تحت المنسجرة كى قيدكورضا وقبول من مطلقا وخل نبيس به صرف ايك واقعدكا بيان ب، اكراس ورخت كى كوكى فضیلت ہوتی تو تمام بیعتیں ای درخت کے نیچے ہوا کرتیں اور حضرت عمراس کوند کواتے۔

﴾ ﴿ عَلَيْ ﴾ : خلفاء اسلام اور اولیاء کرام کی بیعت کا اسی بیعت پر قیاس ہے گمر بیعت خلافت تو مسنون ومتوارث ہے اورصو فیہ کی بیعت مضمن ہے بیعت خلافت کو (خلاصة التفاسیر) تفصیل کے لئے خلاصة کی طرف رجوع کریں۔

مَنْكُنَّلُكُنِّ: بيعت سنت ہےنہ كہ واجب، نہ بدعت،ايبا ہى فر مايا ہے شاہ ولى الله رَبِّعَ مُكَامِلُهُ مَعَاكَ نے قول الجميل ميں۔

مسئللنن، بعت ایک عهد بجوزبان اور کتابت سے تام بوجاتی مے مرمصافح مسنون ہے۔

مینئے گھنے: عورتوں سے بیعت بذریعہ مصافحہ جائز نہیں ہے، حضرت عائشہ کی روایت بخاری میں موجود ہے فرماتی ہیں کہ آپ نعورتوں سے زبانی بیعت لی مجھی آپ نے عورت کا ہاتھ نہیں چھوا۔

− ھ[زمَزَم پتکشرہ] ≥ −

مَسْئَلُنْهُ: م يده الرصغيره ويو عارم مين ت به تب بھي ترک مصافحه اولي ہے۔ مسئلہ عورتوں ہے بیعت کرنا منقول نہیں تعربی دوجوہ جائز ہے (تفصیل کے سئے خلاصة التفاسیر کی طرف رجوح

سَيَقُولُ لَكَ الشَّكَلَفُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ حنى المحيمة الى الدلي حليهم الله عن طبختك منه صنبهم لمخرُخوا معك التي منكه حنوف من معرُّص فريش من عام التُعديدية ادا رحفت منها شَعَلَتُنَا اَمُوَالُنَا وَاَهْلُونَا عن الحرُّوح معت فَالْسَتَغَفِرْلَنَا " الله مس سرت الحرُّوح معك قال تعالى مُكدِّبًا لَهِم يَقُولُونَ بِٱلْسِنَتِهِم اي س طلب الاستعد إلى الله مَّالَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ عَهُم كَادُون في اغتدار عم قُلُفَمَن اسْتَفَهَمُ معنى النفي اي لا احد تَيْمِاكُ لَكُمْ مِنَ اللَّهِ شَيًّا إِنْ أَرَادَكِكُمْ ضَرًّا عِنْجِ الصَّاد وصمَها أَوْأَرَادَ بِكُمْزَفُعًا بَلْ كَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيّرًا ۞ اى لم سرل المستعد عدلك بل من المسومسعيس الانتقال من عرص الى الحر ظَلَنَتُمْ إَنْ لَنْ يَنْقُلِبُ الرَّسُولُ ا وَالْمُؤْمِنُونَ اِلْيَاهَالِيهِمْ لَهَدُّا اَوَّزُيِّنَ ذَٰلِكَ فِي قُلُوبَكُمْ اللهِ اللهِ يُستاصلُون القَتْل فلا يرْحعُون وَظَنَنْتُمْظُنَّ السَّوْءِ عَلَيْ هذا و عبر ، وَكُنْتُمْ قَوْمًا أَبُوْرًا عِنْ مِنْ مِنْ اللَّهِ عَلَا كَتِي عَنْدَا لَيْهِ عِيدًا الْفَلَ وَمَنْ لَمُرْبُعُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ فَإِنَّا أَعْتَذُ فَالِلْكُفِرِيْنَ سَعِيرًا ﴿ وَاللَّهُ مُلْكُ السَّمَوْتِ وَالْأَرْضِ يَغْفِرُ لِمَنْ يَتَاكُ وَلُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءٌ وَكَانَ اللَّهُ عَفُوْرًا رَّحِيمًا ٩٠ اى مدر سُسف ما ذكر سَيقُولُ الْمُخَلَّقُونَ المذكورُون إِذَا انْطَلَقْتُمْ اللهُ مَغَانِمَ هي سعالم حنيد لِتَأْخُذُوْهَاذَرُوْنَا أَتُرُكُوا نَتَيْعُكُمْ للمدين يُرِيدُوْنَ دلك أَنْ يُبَدِّلُواكُلُمُالِلَةٍ وفِي قرَاءَ وَكُلِمَ بِكُسُر النام الى المواحيدة عمد لم حبير اعن الحديثة عاصّة قُلْ لَيْنَتَّ بِعُونَا كَذَٰلِكُمْ قَالَ اللهُ مِنْ قَبْلُ ال قلل عودما فَسَيَقُولُونَ بَلْ تَحْسُدُونَنَا الله عَلَم سالعانم فللله ولك بَلْ كَانُوا لا يَفْقَهُونَ . . ا مد العد الاقليلا ... مه قُلْ لِلْمُحَلَّفِينَ مِنَ الْأَعْرَابِ المدَّكُورِيسِ الْحَدِ السَّدْعُونَ إلى قَوْمِ أُولِي السحاب بَأْسٍ شَدِيدٍ فين غم منو حسف اضحاب اليماسة وقيل فارسُ والرَّوم تُقَاتِلُونَهُمُ حال مُقدَرةً هي ا مدنه والمه من المغمى أَوْ هم سُلِمُونَ ولا تُفاتلون فَإِنْ يُطِيعُوا الى قتاليم يُؤْتِكُمُ اللهُ أَجُرًّا حَسًّا وَانْ تَتُولُوْاكُمَا تُولَيْتُمْ مِنْ قَبْلُ يُعَدِّبُكُمْ عَذَابًا الْبِمَّادِ مُؤْمِمَ لَيْسَعَلَى الْأَعْمَى حَرَجُ وَلَاعَلَى الْمُريضِ حَرَجُ وَلَاعَلَى الْمُريضِ حَرَجُ وَلاعَلَى الْمُريضِ حَرَجُ وَلاعَلَى الْمُريضِ حَرَجُ وَلاعَلَى الْمُريضِ حَرَجُ سي الدالحياد وَمَنْ يُنْظِعِ اللَّهُ وَرَسُولَهُ يُذُخِلُهُ اللهِ والدُّور جَنْتِ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهُرُ وَمَنْ يَتُولَ يُعَذِّبُهُ اللهِ والنون عَذَابًا أَلِمًا هُ

ت اطراف مدینہ کے جودیہ تی (سفر حدیبیہ میں شرکت ہے) پیچھےرہ گئے تھے لیعنی وہ دیباتی جن کواللہ نے * پ کی معیت نے پیچھے کردیا (یعنی محروم کردیا) قدا ، جبد حدیبیہ کے سال آپ نے ان سے اپنی معیت میں مکہ کی طرف نکلنے ک

≤[لفِزَم پسَلشَرْ]>

نے قریش کے تعارض کے اندیشہ کے پیش نظر چلنے کے لئے فر مایا تھا وہ عنقریب کہیں گے کہ بھارے مال وعیاں نے آپ كے ساتھ كلنے ہے مشغول ركھا، تو آپ ہمارے ئے آپ كے ساتھ ند نكلنے پر ابتد تعالى سے معافی كى و ما رفر ما و بيجئے واللہ تعالی نے ان کی تکذیب کرتے ہوئے فرمایا ہے جومعافی طلب کرنے کے نئے اب جو کہدر ہے بیں اوراس سے پہلے جوعذر بیان کیا میہ بات محض زبان پر ہے دل میں نہیں ہے لبذا وہ اپنے عذر بیان کرنے میں جھوٹے ہیں، '' پ کہد دیجئے کہ تمہارے لئے اللہ کی طرف ہے کی چیز کا بھی کون اختیار رکھتا ہے؟ استفہام بمعنی فی ہے بیعنی کوئی افتیار نہیں رکھتا، آروہ تمہیں نقصان پہنچانے کاارادہ کرے (طنسق) صاد کے فتحہ اورضمہ کے ساتھ یا تمہیں نفع پہنچانے کاارادہ کرے، بلکہ جو پچھتم کررہے ہواللہ تعالی اس سے باخبر ہے لیعنی وہ اس صفت سے ہمیشہ متصف ہے بلکہ تم تو پیاسمجھے ہوئے نتھے کہ رسوں اور مومنین اپنے اہل وعمیال میں بھی بوٹ کرنہ آ ویں ہے (ہل) دونوں جگہہ پرا کیپ غربش سے دوسری غرض ں طرف انتفاں کے سے ہے اور بیہ بات تمہارے دلوں کواچھی بھی معلوم ہوتی تھی کہان لوگوں کا قتل کے ذریعہ صفایا کردیا جائے کہان کولوثن نصیب ہی نہ ہو اورتم نے بیاوراس جیسے اور (بہت ہے) ہرے گمان کرر کھے تنجے اورتم وٹ ہوجی ہداک مونے والے لوگ بورا بانس کی جمع ہے یعنی اس برگر ٹی کی وجہ سے عنداللہ ہلاک ہوئے والے اور جہ جنس القداوراس کے رسول پرایہ ان نہ رائے گا تو ہم نے ان کا فروں کے سئے دوز ٹ کی سخت آ گ تیار کررٹھی ہے آ سانوں اورز مین کی ہواش ہی کا ماک لقد ہی ے وہ جے جاہے معاف کرے اور جے جاہے مزاوے جب تم مال نمنیمت اور وہ خیبر کامال ننیمت ہے بیٹے جاؤ کے تو لیجی چیجے چیوڑ ہے ہوئے لوگ عنقریب کہیں گے کہ ہم کو بھی اپنے ساتھ چلنے کی اجازت دید بیجئے تا کہ ہم بھی مال غنیمت میں ے کچھ حاصل کریں وہ جا ہے ہیں کہ اس طریقہ ہے اللہ کے تنم کو بدل ڈالیس، ورایک قراءت میں کہ اسراللہ ہے، لام کے کسرہ کے ساتھ لیعنی مخصوص طور پر اہل حدیبہیے کے لئے تیبر کے مال نتیمت کے وعدوں کو (بدل ڈالیس) آپ کہدو تیجہ کہ القد تعالی ہمارے حدید ہیے ہے لوٹے ہے پہلے ہی فر ما چکا ہے کہتم ہمارے ساتھ ہر کزنہیں چل سکتے تو عنقریب (اس ک جواب میں) کہیں گے (یہ بات نبیں) بلکہتم ہمارے اوپر اس بات سے حسد کرتے ہو کہ تمہارے ساتھ ہم کوبھی ما پ غنیمت ال جائے اس کئے تم میہ بات کہدر ہے ہو(میہ بات نبیں ہے)اصل بات میہ ہے کہ ان او گوں میں ہے وین کی بات بہت کم لوگ سجھتے ہیں ،آپ ان چیچھے جھوڑ ہے ہوئے اعرابیوں ہے کہدوو کہ آز مائش کےطور پر عنقر یب تم کوایک تخت جنکجوقوم (ہے مقابلہ) کے لئے بلایا جائے گا کہا گیا ہے کہ وہ بمامہ کے باشندے بنوصنیفہ بیں ،اور کہا گیا ہے کہ فارس اور روم ہیں ، حال بیرکہتم ان ہے لڑ و گے بیرحال مقدر ہ ہے اور حالتِ قبال ہی حقیقت میں مدعوالیہا ہے یا وہ مسلمان ہوجا کمیں تو پھرتم ان ہے قال نہ کروگے، بیں اگرتم ان ہے قال کرنے میں اطاعت کروگے تو اللہ تم کو بہت بہتر اجر عطافر مائے گا اور اگرتم روگر دانی کرو گے جبیبا کہ پہلے روگر دانی کر چکے ہوتو وہتم کو در دنا ک سزادے گا ، نداند ھے پر کوئی گناہ ہے اور نہ ننگڑے یر کوئی گناہ ہے اور ندمریض پر کوئی گناہ ہے ، ترک جہاد میں اور جوابنداوراس کے رسول کی اطاعت کرے ہ آتا اس کوابندا پر ک

< (صَرْم پِبَالشَّرْ) ≥</

جنت میں داخل کرے گا جس میں نہریں بہتی ہوں گی (بدخله) میں یاءاورنون دونوں قراءتیں ہیں اور جوروگر دانی کرے گاوہ اس کو در دناک عذاب دے گا (یعذبه) یاءاورنون کے ساتھ ہے۔

عَجِقِيق اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللّلْمُ اللَّهُ اللّ

قِوَلْنَى : حول المدينة يالأعراب كاصفت ب، المقيمين حول المدينة حال بهى بوسكتاب، قدر عبارت يبوك كائنين حول المدينة.

فِيُولِكُ ؛ إِذَا رَجَعْتَ يوسيقولون كاظرف ٢٠١٥ سيقولُونَ اذا رَجَعْتَ من الحديبيةِ.

قَیْ لَنَ)؛ بَلْ فِی الْمَوْضِعَیْنِ لِلْاِنْتِقَالَ الْحُ بل دونوں جگہ ایک مضمون سے دوسر کے شمون کی طرف انقال کے لئے ہے،

بل اول سے پہلے منحلفون کے اعتذار میں تکذیب کابیان ہے اور بٹل کے بعدان کے عذر بارداور تخلف پروعید کابیان ہے،

دوسر سے بل کے بعداس سبب کابیان ہے جس نے ان کو تخلف اور عذر بارد پر آمادہ کیا، اور بیر تی فی المود کے طور پر ہے۔

قیر کی لی تنبعونا یہ جمد نہی کے معنی میں ہے ای لا تنبعوا معنا.

مرس و الله ، ای حکسر الله یعن الله تعن الله تعن الله تعن الله تعن الله تعالی نے حدید سے الوٹے سے پہلے تھم فر مادیا کہ غزوہ خیبر میں وہی لوگ شریک ہوں گے۔ لوگ شریک ہوں گے جوسفر حدید بیس شریک ہوئے ہیں اور وہی خیبر کے مال غنیمت کے ستحق ہوں گے۔

و سریت برای سے بول میں ہے۔ و سر میں ہیں ہوروں یہ برے مال فیست میں شریک نہر نے کا تھم ،تھم خداوندی نہیں ہے بلکہ یہ ہم چور کی کا فسیسے ولون بل تحسدوننا لینی ہم کو خیبر کے مال فیست میں شریک نہ کرنے کا تھم ،تھم خداوندی نہیں ہے بلکہ یہ ہم پرتہارے صد کا نتیجہ ہے۔

ێٙڣٚٳڔۅؖ<u>ڗۺؖڕ</u>ٛڿ

سیقول لک السمخطفون من الاعراب اعراب دو قبیلیمرادین جورید کاطراف مین آباد تصمثلاً غفار،
مزیند، جهید اورائه کم، جب آنخضرت فیلی نے خواب و کیفے کے بعد (جس کی تفصیل گذر چکی ہے) عام من دی کرادی تو ذکورہ قبیوں نے سوچا کہ موجودہ حالات مکہ جانے کے لئے سازگار نہیں ہیں وہاں ابھی کافروں کا غلبہ ہے اور مسمان کمزور ہیں،
نیز مسمی ن عمرہ کے لئے پور سے طور پر ہتھیار بند ہو کر بھی نہیں جاسکتے ،اگر خدانخو استدکا فرآ مادہ پیکار ہوگئے تو مسلمان ان کا مقابلہ
نیز مسمی ن عمرہ کے لئے پور سے طور پر ہتھیار بند ہو کر بھی نہیں جاسکتے ،اگر خدانخو استدکا فرآ مادہ پیکار ہوگئے تو مسلمان ان کا مقابلہ
کیسے کریں گے؟ اس وقت مکہ جانے کا مطلب ہے خود کو ہلاکت میں ڈالٹا، چتا نچے یہ لوگ عمرہ کے لئے نہیں کا ای کے لئے اللہ
تولی نے فرمایا کہ رہے تھے ہے اے محمد شخولیتوں کا عذر پیش کر کے مغفرت کی التجا کریں گے۔

افترَم بِسَائِسَ إِنَّا

جِجُولُ شِعِ: علا تِفسير نے فرمايا ہے كه اس تخصيص كاذكرا كر چهوجی مثلو (قرآن) میں نہیں ہے البنة وحی غير مثلو (حدیث) كے ذرایعہ سفر حدید بید میں فرمایا تھا ای كواس جگه سحلام اللّه اور قال اللّه ہے تعبیر كرديا گيا ہے۔

قبل لن تقبعو نا ساتھ چلنے کی ممانعت جو کہ س بقد جمعہ ہے بالکل واضح ہے یہ ممانعت صرف غز وہ خیبر کے ستھ فاص ہے، ویگر غز وات میں شرکت کی ممانعت نہیں ہے یہی وجہ ہے کہ قبیلہ جہینہ اور مزینہ بعد میں آپ پیلی نظیم کے ساتھ غز وات میں شریک ہوئے ہیں ، سلح حدید بیبیہ کے واقعہ کی تفصیل مع مباحث سورت کے شروع میں گذر چکی ہے۔

لَقَدْرَضِيَ اللَّهُ عَنِ الْمُؤْمِنِينَ إِذْيُبَايِعُونَكَ الخديسة تَحْتَ الشَّجَرَةِ هي سمرةٌ وهُم اعد وَسلمانةِ اوا كَثر مُمّ ا يعهم عملي أن يُعاجرُوا قُريشًا وان لا يعرُّوا على الموت فَعَلِمَ الله مَافِيُ قُلُوبِهِمُ سن الوفاء والصدق فَأَنْزَلَ الْتَيْكِيْنَةَ عَلَيْهِمْ وَأَثَابَهُمْ فَتْحَاقَرِيْبًا ﴾ هـ وفنح خيبر نعد انصرافه س الحُديبيّة قَمَغَانِمَكَتِثَيْرةً يَالْخُذُونَهَا س حَيْرِ وَكَانَاللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا® اي ليم يَرَلُ مُتَصِعًا بذلِكَ وَعَدَّكُمُّاللّٰهُ مَغَانِمَ كَيْزِيرَةٌ تَأْخُذُونَهَا من الفُنُوحات فَعَجَّلَ لَكُمُوهِذِهِ غَيِيمَة خَيْبَرَ وَكَفَّ آيْدِي النَّاسِ عَنْكُورٌ فِي عيالكم لَمَ حَرَحْتُم وَهُمَّت بهم اليهودُ فَقَذَفَ اللَّهُ في قُلُونهم الرُّعبَ وَلِتَكُونَ اي الـمُعَجَّنةُ عَنُفٌ عني مُنَذِّر اي لِنشَكُرُوه اليَّةَلِلْمُولَهِنِينَ في نَصُرهم وَيَهْدِيَّكُمْ وِسَلِطًا مُّسَتَقِيًّا ﴿ اى طريقَ التَّوَكُ لِ عليه وتَفُويضِ الْامُرِ اليه تعالى وَّالْخُرى صِعة سغَانِهَ مُقَدِّرِ مُبُنَدِإ لَمْرَتُقْدِرُواعَلَيْهَا هِي سن عارِسَ والرُّوم قَدَّلَحَاطَاللهُ بِهَا " عَلَم أنها سنَكُونُ لكم وكَانَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيءَ قَدِيرًا ۞ اى لـم يـزَلُ مُتَـعِـفُ الدلك وَلُوقَاتَلَكُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا بالحُدنينية **لُوَلُوُاالْاَدُبَارَتُنَمَّرَلَايَجِدُونَ وَلِيَّا يحرِسُهِم وَلَانَصِيرًا۞سُنَّةَاللهِ مَصْدَرٌ مُؤَكِدٌ لِمَصْمُونِ الجُمنةِ قَنْله من هزيمَة** الكَافرين ونَصْرِ المُؤسِينَ اي سَن اللهُ ذلك سُنَةُ اللِّي قَلْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُ ۗ وَلَنْ تَجِدَلِسُنَّةِ اللهِ تُبْدِيلًا ۗ ... وَهُوَالَّذِيْ كَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَايْدِيَكُمْ عَنْهُمْ مِيَظِن مَكَّةَ بالحُدَيْنَةِ مِنْ بَعْدِ أَنْ اَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ عَن ثماس منهم طَافُوا بِعَسكرِكم ليُصِيبُوا مِنكُمُ فأَخِذُوا وأتِي بِهِم الى رسُولِ الله صلى اللهُ عليه وسلم فعفَ عنهم وخلّي سبيعهم فكَانَ دلك سَنَتُ الصُّنَح وَكَانَ اللهُ بِمَاتَعُمَلُونَ بَصِيرًا ﴿ بِاللَّهِ وَالنَّاءِ أَى لَم يَزَلُ مُنْصَفًا بدلك هُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوا وَصَدُّوَكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اي عَن الوُصُول اليه وَالْهَذَى سَعَطُوت على كم مَعْكُوفًا مخبوسًا حال أَنْ يَبْلُغُ مِحِلَّهُ اى مَكَانِه الَّذِي يُنحَرُ فيه غادةً وهُوَ الحَرَمُ مَدلُ اشْتَمَالِ وَلُولَابِجَالُ مُّوْمِنُونَ وَنِسَاءُمُّومُ مِنْكُ مَـ وَجُـودُونَ بِـمَكَة مِـعِ الكُفَارِ لَمْرَتَعْلَمُوهُمْ بِـصَـفة الإيْمَانِ أَنْ تَطُوُّهُمْ اي تَفْتُلُوهِم مَعَ الكُفَّارِ لو أُدِنَ لكم في الغَتْحِ مَدَلُ اشْتِمَالِ س هم فَتُصِيْبَكُمْ مِّنْهُمْ مُعَرَّقٌ اي اثُمّ بِغَيْرِعِلْمٍ سبكم به وضَمَائِرُ الغَيبَةِ للصِّنُفينِ بتَعُليبِ الذُّكُورِ وجَوَابُ لولا محُدُوفُ اي لَادن لكم في العُلج

كن له يؤذن عيه حينند ليُكْفِل الله فِي رَحْمَتِه مَنْ يَشَاء كالمؤمنين لَوْمَرَيُوا مَن المُون الكَفْرِ الله فِي فتجها عَذَا اللّذِيْنَ كَفَرُوا مِنْهُ مِن الهل مَكَة حِينَئِد بان ناذَن لكم في فتجها عَذَا اللّذِيْنَ كَفَرُوا مِنْهُ مِن الهل مَكَة حِينَئِد بان ناذَن لكم في فتجها عَذَا اللّذِيْنَ كَفَرُوا الله مؤلم المَن الحَمِيّة الانفة مِن الشَّىء حَييّة الْجَاهِليّة بَدَل مِن الحَمِيّة وهي صَدُهُ السَّي صلى الله عبيه وسعم وأضخابة عن المسجد الحرّام فَاتَزل الله سَكِينَت عَلى سَوله وعلى المُؤمنين السَّي صلى الله عبيه وسعم وأضخابة عن المسجد الحرّام فَاتَزل الله سَكِينَت عَلى سَوله وعلى المُؤمنين الحَوام من أن يَعُودُوا مِن قَابِل ولم يَلْحَقُهُم مِن الحَمِيّةِ ما لَحِق الكُفّارَ حتى يُقَتِلُوهم وَالْرَمَهم وَالْمَهم من الحَمِيّة ما لَحِق الكُفّارَ حتى يُقَتِلُوهم وَالْرَمَهم من المَوْم الله ولم يَلْحَقُهُم مِن الحَمِيّة ما لَحِق الكُفّارَ حتى يُقَتِلُوهم وَالْرَمَهم وَل الله من المُؤمنين عَلَي النّقوى لا إلله الله محمد رّسُول الله وأضيف الي التّقوى لا نَه سَبُه مَا مُلُوم وَلَا الله عَلْ مَعْلُوم ومِن مَعْلُوم ومَالي انَّهُم الهُلُها.

سیب میں اور وہ یہ بینا اللہ تعالی مومنول سے راضی ہوا جب انہوں نے حدید بیس درخت کے بینچ آپ سے بیعت کی اور وہ ا بول کا درخت ہے اوراصحاب حدید بیا یک ہزار تین سویا اس ہے پچھزا کد تھے، پھران حضرات نے اس پر بیعت کی کہ وہ قریش کا مقا بهه کریں گے، و یہ یہ کہ ووموت سندراوفرارافتلیا رند کریں گے، اللہ کوان کے دلول کے وفا وصد ق کا حال مصوم نقااس کے ان پرسکینت نازل فر ، کی اوران کوقر یبی انتخ عطافر مائی اوروہ فنتح حدیبیہ ہے واپسی کے بعد خیبر کی فنخ تھی اور بہت سی سیستیں کہ جن کووہ خیبر ہے حاصل کریں گے اور اللہ تعالی غالب حکمت والا ہے، یعنی وہ اس صفت کے ساتھ ہمیشہ متصف ہے اللہ تعالی نے تم سے بہت ی نتیجوں کا وعد و فر و یا ہے جن کوتم فتو حات کے ذریعہ حاصل کرو گے بیہ لیتنی خیبر کی نتیمت تو تم کوسر دست عطا فر وا دی اور ہوگوں کے ہاتھ تمہارے اہل وعیال کے بارے میں روک دیئے جبتم (حدیبیہ کے لئے) نکلے اور یہود نے تمہارے اہل وعیال کا قصد کیا، کہ اللہ نے ان کے دلوں میں رعب ڈ الدیا اور تا کہ فوری طور پرعطا کی گئی پینیمت (دوسرے وعدوں کے لئے) مومنین کی نصرت پر مومنین کے لئے نشانی ہو و لنہ کو ن کاعطف لنشہ کروہ مقدر پر ہے اور تا کہ وہم کوایک سید ھے راستہ پر ڈ الدے اور وہ (سیدھاراستہ)اس پرتو کل کرنے اور معاملہ کواس کے سپر دکرنے کا ہے اور تہہیں دوسری سیمتیں بھی دے اخوی، مغانم مقدرمبتداء کی صفت ہے، جس برتم نے (ابھی) قبضیس کیاہے اوروہ فارس اورروم سے (حاصل ہونے وال میمتیس) میں، اور وو اللہ کے قابومیں میں لیعنی اللہ اس بات ہے بخو بی واقف ہے کہ و دعنقریب تم کو ملنے والی ہیں، اور اللہ تعالیٰ ہر چیز پر تا در ہے بعنی وہ اس صفت ہے ہمیشہ متصف ہے اور حدیبیہ میں اگر کا فرتم سے جنگ کرتے تو یقیناً بیٹے وکھا کر بھا گتے پھرنہ وہ كارس زيات كمان كي حفاظت كرے، اور ندمدد كارالله كاس دستور كے مطابق جو يہلے سے چلا آرہا ہے سے ند مصدر ہے جو سابق جمید کے مضمون کی تا کید کرر ہاہے اور وہ مضمون کا فرول کی ہزیمت اور موشین کی نصرت ہے، بیعنی ایند نے اپنا یہ دستور بنالیا ہے اور تو کبھی اللہ کے دستورکو اس سے بدلتا ہوانہ یائے گا،اوروہ وہی ہے کہ جس نے ان کے ہاتھوں کوتم سے اورتمہارے ہاتھوں ﴿ (مَرْمُ بِبَالتَهُ إِنَا كُلُّ

کوان ہے عین مکہ حدیبہ میں روک لیا،اس کے بعد کہاس نے تنہیں ان پر غلبہ دیدیا بایں طور کہان میں سے اس نے تمہار کے نشکر کو تھیرلیا تا کہ وہتم پر (حملہ آ ور ہوں) ٹوٹ پڑیں، مگر وہ گرفتار کرلئے گئے ،اوران کو آپ پیلونٹی کی خدمت میں پیش کیا گیا تو آپ نے ان کومعاف کر دیا اور ان کور ہا کر دیا، اور یہی بات صلح کا سبب ہوئی اور تم جو پچھ کررہ ہے ہواللہ اسے د کھےرہاہے(**تعب کو ن)میں یاءاور تاءدونوں ہیں،**لینی وہ اس صفت کے ساتھ ہمیشہ متصف ہے، یہی ہیں وہ لوگ جنہوں نے کفر کیا اورتم کوشہرحرام ہے لیعنی وہاں پہنچنے ہے روکا اور قربانی کے جانوروں کوبھی ان کی جگہ پہنچنے ہے روکا حال ہیا کہ وہ (قربانی کے لئے)وقف تھے لینی اس جگہ پہنچنے ہے رو کا جہاں عام طور پر مدی قربان کی جاتی ہے اور وہ حرم ہے،ان یبلغ الهدى سے بدل الاشتمال ہے، اور اگر بہت ہے مسلمان مرواور مسلمان عورتیں کفار کے ساتھ (خلط ملط) مکہ بیس موجود نہ ہوتے کہ جن کی صفت ایمان سے تمہارے بے خبر ہونے کی وجہ ہے تمہارے ان کو کچل ڈالنے کا احتمال نہ ہوتا ہے کہتم ان کو کفار کے ساتھ آل کر دو گے ،اگرتم کو فتح کی اجازت دیدی جاتی ان تَسطَنُو هُمْر تعلمو همر کی شمیر همرے بدل ہے جس پر ان کی وجہ ہےتم کو بھی بےخبری میں ضرر (ندامت) پہنچا، غائب کی ضمیریں وونوں صفت کے لئے ہیں (مذکر ومؤنث کے کے) ذکر کوغلبہ دیکر ، اور لو لا کا جواب محذوف ہاوروہ لاذن لکھرفی الفتح ہے کیکن اس وقت فتح کی اجازت نہیں دی گئی تا کہ اللہ مومنین فرکورین کے ما نند جس کو جا ہے اپنی رحمت میں داخل کرے اور اگریہ (مومنین) کفارے الگ ہوتے تو ہم اس وفت مکہ کے کا فرول کو در دنا ک سزا دیتے اس طریقہ پر کہ ہمتم کو مکہ فتح کرنے کی اجازت دیدیتے جبکہ ان کافرول نے اپنے دلول میں حمیت (تعصب) کوجگہ دی اور حمیت بھی جا ہمیت کی اذجہ مل علاب نما سے متعلق ہے الذين كفروا (جعل كا)فاعل بحميت، تكبركي وجه عشدت كوكت بي، المجاهلية، حمية بي بدل باور آب بين الرات ي كامحاب كومجد حرام يهني سے روكتا ہے سواللہ تع لى نے اپنے رسول پر اور مومنين برسكينت نازل فر مائی جس کی وجہ ہے ان لوگوں نے اس بات پر صلح کرلی کہ آئندہ سال آئیں گے اور جو حمیت کفار کو لاحق ہوئی وہ ان (اصحاب) کولاحق نہیں ہوئی جتی کہان ہے قبال کرتے اوراللہ نے موشین کو تقویٰ کی بات پر جمائے رکھااور وہ کلمہ لا الہ الا اللہ محمد رسول التدہے، اور تقوی کی اضافت کلمہ کی طرف اس لئے ہے کہ بیکلمہ ہی تقویٰ کا سبب ہے اور وہ اس کلمہ کے کفار ہے زیاوہ حقداراوراہل تھے ، بیعطف تفسیری ہے اورالقد تعالیٰ ہر چیز کوخوب جانتا ہے ، بیعنی ہمیشہ اس صفت کے ساتھ متصف ہے،اوراللہ تعالیٰ کی معلومات میں ہے رہی ہے کہ وہ (مومنین)اس (کلمہ) کے زیادہ اہل ہیں۔

عَجِفِيق تَرَكِي لِيسَهُ مِن الْحِقْفِيلِية فَالِلا الْعَالَمَ الْعَلَى الْحَالِمَ الْعَلَى الْحَالِمَ الْعَلْمَ الْعَلَى الْحَالَمُ الْحَلَى الْحَالَمُ الْحَالَمُ الْحَالَمُ الْحَالَمُ الْحَالَمُ الْحَلَى الْحَلْمُ الْحَلِمُ الْحَلْمُ الْحِلْمُ الْحَلْمُ الْحَلْمُ الْحَلْمُ الْحَلْمُ الْمُعْلِمُ الْمُعْلِمُ الْحَلْمُ الْحَلْمُ الْمُعْلِمُ الْحَلْمُ الْمُعْلِمُ الْحَلْمُ الْحَلْمُ الْمُعْلِمُ الْمُعِ

فِيُولِكَى؛ اذيبايعونك رضى كى وجه محلامنصوب باس كے كه اذر مانه ماضى كے لئے ظرف ب،اس كے بعد جميشه جملہ واقع ہوتا ہے، حکایت حال ماضیہ کے طور پر (صورت مبابعت کے استحضار) کے لئے مضارع کا صیغہ استعمال فرمایا ہے، اور

- ﴿ (زَمَزُم بِبَالشَّرْزِ) 5-

تحت، يبايعونك كاظرف إ_

فَیُوَلِنَیٰ اسمر برور ن رجل بول کادرخت بعض حفرات نے کہا ہے کہ جھاؤ کے درخت کو کہتے ہیں ان لایفروا علی المموت بعض نفرار اختیار نہ کریں گے مفسر علام نے من کے المموت بعض نفوں میں من المموت ہے مطلب طاہر ہے کہ موت سے داوِقرارا ختیار نہ کریں گے مفسر علام نے من کے بجائے عسلسی لاکراشارہ کردیا کہ ایک روایت میں رہے کہ بیعت موت پر ہوئی تھی ،اوردومری روایت میں رہے کہ بیعت ماہ تابت قدمی وعدم فرار پر ہوئی تھی۔

چَوُلِیَ ؛ فعلم، علم کاعطف اذیب ایعونك پهم، ابر بایر سوال که معطوف ماض هم اور معطوف علیه مضارع ، تواس کا جواب یو ہے کہ اذیبایعو نك بھی ماضی کے معن میں ہے، جیرا کراو پر بیان کیا گیا۔

فَيُولِينَ ؛ فانزل اس كاعطف دضى رب-

فَيُولِكُمُ : ومغانم كثيرة الكاعطف فتحا قريبا رٍےـ

قِيُولِكَى، وعد كمر الله چونكه مقام امتنان واحسان ب، للذا شرف خطاب سے نواز نے كے لئے غيبت سے خطاب كی طرف التفات فره يا ہے، بدال حديد بيد سے خطاب ہے۔

قَوْلَى، من المفتوحات مفسرعلام نے من المفتوحات کہدکراس بات کی طرف اشارہ کردیا کہ یعطف مغایرت کے لئے ہے، مطلب بیہ کداول مغانم کٹیو ق سے جو کہ معطوف علیہ ہے غنائم خیبو مراد ہیں اور ٹائی مغانم کٹیو ق سے جو کہ معطوف علیہ ہے غنائم خیبو مراد ہیں اور ٹائی مغانم کٹیو ق سے جو کہ معطوف ہے معانم مراد ہیں۔

فَحُولُكَى ؛ خسند منه خیب اگراس آیت کانزول فتح نیبر کے بعد موجیا کہ ظاہر یہی ہے، تو پوری سورت کانزول صدیبیت واپسی پرنہ ہوگا، اور نزول فتح نیبر سے پہلے ہوتو یہ اخبار غیبیہ سے ہوگا، اور ماضی تجبیر تحقق وقوع کی وجہ ہوگا اور یہ بات سابق میں گذر چک ہے کہ پوری سورت مدیبیہ سے واپسی کے وقت عسفان کے قریب کو اع المغمیم میں نازل ہوئی تھی۔ فی عیالکم ، فی عیالکم ، عنکم سے بدل ہے اس میں مضاف محذوف کی طرف اش رہے۔ فی خیالکم ، فی عیالکم ، عنکم سے بدل ہے اس میں مضاف محذوف کی طرف اش رہے۔ فی خیال کی مقدو اللہ محدوف کے معانم محذوف کی صفت ہے، موصوف صفت سے ل کرمبتداء اور لمر تقدروا علیما اس کی صفت ہے قدا حساط اللہ بھا مبتداء کی خبر (جمل) ذکورہ ترکیب کے علاوہ چار ترکیبیں اور ہیں ، طوالت کے خوف سے ترک کردیا (جمل کی طرف رجوع کریں)۔

قَوْلَى : اظفر عليهم ، اظفر كاصليل ستعل بيس ب عمر چونكه اظفو ، اظهر كمعن مي باس ك اسكاسليل لا ، ورست ب ، مفرعلام في الله الله الله عن الله عن

هِ فَكُولَ مَا وَ مَعْنَ مُروه ، كَناه ، ندامت.

قِعُولِ ثَنَى : جسو اب لو لا محدوف لولا كاجواب محذوف باوروه لاذن لسك مرفى الفقع ب،جيها كمفسر رَجِّمَ للاتفاقة ال

﴿ (صَرَّم بِسَالِثَه لِإِ

قِحُولَكَى ؛ فانزل الله سكينته الكاعطف مقدر يرب، تقريع إرت بيبكه اى فضاقت صدور المسلمين واشتد الكرب عليهم فانزل الله سكينته.

هِ فَوْلِيْ : لانَّها سببها اس شرحذف مضاف كى طرف اشاره ب كلمة التقوى اى سبب المتقوى اضافت ادنى أ من سبت كى وجهت ب، أوربعض حضرات نے تقوی سے پہلے اهل محذوف مانا ہے اى كلمة اهل التقوى ليمنى اللہ نے اہل بدر كے لئے متقى لوگول كاكلمہ يسندفر مايا۔

فَيُولِنَى : اهلها، احق بها كاعطف تفيري ہے۔

تَفَسِّلُاوَتَشِيحَ بَحَ

لقد رضی الملّٰه عن المؤمنین اذیبایعونك تحت الشجرة اس بیعت سے مراد بیعت صدیبی ہے جس کا ذکر پہلے ہو چكاہے، اس بیعت کو بیعت رضوان کہا جاتا ہے، کیونکہ اللّٰہ تعالیٰ نے اس آیت میں بیخوشخبری سنائی ہے کہ وہ ان اوگوں سے راضی ہوگیا جنہوں نے اس خطرنا کے موقع پر جان کی بازی لگا دینے میں ذرہ برابر تامل نہ کیا، اور رسول کے ہاتھ پر سرفروشی کی بیعت کر کے اپنے صادق الایمان ہونے کا صرح ثبوت پیش کیا، ان کے اپنے اخلاص کے سواکوئی خارجی د ہا والیانہ تھا جس کی بناء پر وہ اس بیعت کے لئے مجبور ہوتے، بیاس ہات کا ثبوت ہے کہ وہ اپنے ایمان میں صادق اور خلص اور رسول کی وفا واری میں صدورجہ کمال پر فائز تھے۔

صحابہ کے لئے سندخوشنودی:

اسی بناء پراللہ تعالیٰ نے ان کوسند خوشنودی عطا فرمائی،اوراللہ کی سند خوشنودی عطا ہونے کے بعدا گر کوئی ہخص ان سے
بدگمان یا ناراض ہو یا ان پرزبان طعن دراز کرے تو اس کا معارضدان ہے نہیں بلکہ اللہ ہے ،بعض حضرات (مثلا شیعہ) کا بیہ
کہنا کہ جس وفت اللہ نے ان کوسند خوشنودی عطا فرمائی تھی اسوفت تو پیخلص ہتے، گر بعد میں بیلوگ خدااور رسول سے بوفا
ہو گئے، وہ شاید اللہ سے بید گمانی رکھتے ہیں کہ اللہ کو ان حفرات کوسند خوشنودی عطا کرتے وقت ان کے آئندہ حالات کا علم نہ تھا
جو کہ احت میں الملہ قلو بھم للتقوی کے صریح خلاف اور متضاو ہے، بیر بشارتیں اور سندرضا وخوشنودی اس پرشاہ ہیں کہ ان
سب حضرات کا خاتمہ ایمان اور اعمال مرضیہ پر ہوگا۔

صحابہ کرام پرزبان طعن وشنیج بریختی ہے:

جن خیارامت کے متعلق اللہ تعالیٰ نے غفران ومغفرت کا اعلان فر مادیا، اگران ہے کوئی لغزش یا گناہ ہوا بھی ہے تو بیآیت اس کی معافی کا اعلان ہے، پھران کے ایسے معاملات کو جو مشخسن نہیں ہیں غور وفکر اور بحث ومباحثہ کا میدان بنانا بدختی اور اس

- ﴿ (اَمِّزَمُ بِبَاشَلِ ﴾

آیت کے مخالف ہے، یہ آیت روافض کے قول وعقیدے کی واضح تر دید ہے، جو ابو بکر دینو کا نشائے وعمر دینو کا نشائے اور دوسرے صحابہ پر کفرونفاق کا الزام لگاتے ہیں۔ (مظهری)

شجرهٔ رضوان:

حضرت نافع مولی ابن عمر کی بیروایت مشہور ہے کہ لوگ اس کے پاس جاجا کرنماز پڑھنے گئے تھے، حضرت عمر تفکی الفتہ تفلاق کو جنب اس کاعلم ہوا تو اس کو کو ادیا۔ (طبقات ابن سعد: ۲۶ می ۱۰۰) گرصیحین میں ہے کہ حضرت طارق بن عبدالرحمٰن فرماتے ہیں کہ میں ایک میں ایک مرتبہ جج کے لئے گیا تو راستہ میں میرا گذرا یسے لوگوں پر ہوا جو ایک مقام پر جے شے اور نماز پڑھ رہ سے میں میں ایڈ راست میں میرا گذرا یسے لوگوں پر ہوا جو ایک مقام پر جے شے اور نماز پڑھ رہ سے میں میں ایڈ راستہ میں میں اگذرا یسے دوسول اللہ وہ درخت ہوں کہا ہوہ وہ درخت ہوں کہا میرے والد کو تھی میں اس کے بعد سعید بن میں ہو کے مانبول نے مجھ سے فرمایا کہ ہم جب اسکیلے سال مکہ صاحب ان لوگوں میں سے تھے جو اس بیعت رضوان میں شریک ہوئے ، انہوں نے مجھ سے فرمایا کہ رسول اللہ بھی تھی کی مدمد میں حاضر ہوئے تو ہم نے وہ درخت تلاش کیا گراس کا پید نہ چا ، پھر سعید بن میتب نے فرمایا کہ رسول اللہ بھی تھی سے میں شریک شخصان کوتو پہنے ہیں لگا تنہیں وہ معلوم ہوگیا عجیب بات ہے؟ کیا تم اس سے زیادہ وا تف ہو۔ دروح المعابی معادل)

اس ہے معلوم ہوا کہ بعد میں لوگوں نے محض اپنے تخمینہ اور انداز ہ سے کسی درخت کو معین کرلیا اور اس کے بیچے نماز پڑھنا شروع کر دیا ، فاروق اعظم کے علم میں بیہ بات تھی کہ بیدرخت وہ نبیں ہے ، اس کے علاوہ ابتلائے شرک کا خطرہ بھی لاحق تھا ، جس کی وجہ ہے اس درخت کوکٹو ادیا۔

فتح خيبرا

خیبردرحقیقت ملک شام کے قریب ایک صوبہ کانام ہے جس میں بہت ی بستیاں ، قلع اور باغات شامل ہیں ، و افا بھھ فت حیا فریبا اور فیع ہول کے ھندہ میں فتح قریب اور نقذ مال غنیمت سے فتح خیبر اور وہاں سے حاصل ہونے والا مال غنیمت مراد ہے ، بعض روایات کے مطابق صدیبیہ ہے واپسی کے بعد آپ کا قیام مدینہ منورہ میں صرف دس دن اور دوسری روایت کے مطابق ہیں روزر ہاس کے بعد خیبر کے لئے روانہ ہوئے ، اور این آپ وایت کے مطابق آپ اور کی الحجہ کی آخری تاریخوں میں مدینہ طیبہ واپس تشریف لائے ، اور ماہ محرم کے میں آپ ظافین خیبر کے لئے روانہ ہوئے ، حافظ ابن جرنے اس کوران حقم میں آپ ظافین خیبر کے لئے روانہ ہوئے ، حافظ ابن جرنے اس کوران حقم ارد یا ہے۔

لَقُدُّصَدَقَ اللهُ رَسُولُهُ الرَّءَ يَا بِالْحَقِ وَاى رسُولُ الله صلى الله عليه وسلم في النَومِ عَامَ الحُدَيْبِيةِ قَبُلَ

خُرُوْجِهِ أَنَّهُ يَدُخُلُ مَكَّةً هُوَ وَأَصْحَابُهُ البِنِينَ ويَحُلِقُونَ ويَقُصُرُونَ فَٱخْبَرَ بِذَلك أَصْحَابُهُ فَفَرِحُوا فَلَمَّا خَرَجُوا مغـهُ وصَـدَّهُـمُ الكُفَّارُ بالحُدَيْبِيَةِ ورَجَعُوا وشَقَّ عليهم ذٰلِكَ وَرَابَ بَعْضُ المُنَافِقِينَ نزَلَتُ وقَوله بالحَقِّ مُتعَـتق بصَدَق او حالٌ مِنَ الرُّؤْيَا ومَا بَعُدَها تَفْسِيرٌ لها لَتُدُّخُلُنَّ الْمَعْجِدَ الْحَرّامَ إِنْ شَآءَاللَّهُ للتَّبَرُكِ المِنِيْنُ مُحَلِّقِيْنَ رُءُوْسَكُمْ اى جَمِيعَ شُعُورها وَمُقَصِّرِيْنَ اى بَعْضَ شُعُورِها هما حَالَانِ مُقَدَّرَتَانِ لَاتَخَافُونَ الْمِيْنَ الْمُعَلِيْنَ أَيْ الْفُوْنَ ابدًا فَعَلِمَ فَى الصُلَح مَالَمْ تَعَلَّمُوْ مِنَ الصَّلاح فَجَعَلَ مِنْ دُوْنِ ذَٰلِكَ اى الدُّحُولِ فَتْتَا قَرِيْيًا ﴿ هُوفَتُحُ خَيْبَرَ وتَحَقَّقَتِ الرُّؤْيَا فِي العَامِ القَابِلِ هُوَالَّذِيْكَالْسَلَرَسُولَةُ بِالْهُذِي وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ اي دِين الحَقِ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّمْ عَلَى جَمِيعِ بَاقِي الآدُيَانِ وَكَفَى إِلللهِ شَهِيْدًا ﴿ اَنَّكَ مُرْسَلٌ بِمَا ذُكِرَ كما قَالَ تعالَىٰ فَحُمَّلًا مُبَتَدًا رَّسُولُ اللَّهِ خَبَرُهُ وَالْذِيْنَ مَعَةَ اى أَصْحَابُهُ مِنَ المُؤمِنِينَ مُبَنَدًا خَبَرُه أَشِكَامُ غِلَاظٌ عَلَى الكُفَّالِ لَايَرْحَمُوْنَهُم رَحَمَا أَبَيْنَهُمْ خَبَرٌ ثان اى مُتَعاطِفُونَ مُتَوادُّونَ كَالوَ الِدِمَعَ الوَلَدِ تَرْبَهُمْ تَبْصُرُهُم كَلَّعًا سُجَّتَكُا حالان يَّنْبِتَغُونَ مُستانَتُ يَطُلُبُونَ فَضَلَّامِّنَ اللهِ وَرِضَوانًا لَسِيْعَاهُمْ عَلامَتُهم مُبَتَدا فِي فُرُجُوهِهِمْ وهي نُورٌ وبَيَاض يُعْرَفُونَ بِه في الاخِرَةِ أَنَّهُم سَجَدُوا في الدُّنيا صِ**نَ أَثَرَالتُجُودُ** مُتَعَلِقٌ بِمَا تَعَلَق به الحَبَرُ اي كَاتُنَةٌ وأعربَ الله الله المُنتَقِلِ الله الخَبَر ذلك الوَصْفُ المَدْكُورُ مَثَلَهُمْ صِفَتُهم فِي التَّوْلِيَةِ اللهُ الخَبَرُهُ وَخَبَرُهُ وَمَثَلُهُمْ فِي الْلِنْجِيْلُ فُهِ شَبَدَاً حَبَرُهُ كُرُبُ عَ أَخْرَجَ شَطْئَةُ بِسُكُونِ الطَّاءِ وفَتُحها فِراخَهُ فَالْزَرَةُ بِالمَدِ والقَصرِ قَوَّاه وأَعَانَه <u>فَالْمَتَّغَلَظَ</u> عَلَظَ فَالْمَتَولِي قَوِيَ واسْتَقَامَ عَلَيْسُوقِهِ أَصُولِهِ جَمْعُ سان يَعْجِبُ الزَّرَّاعَ ال زُرَّاعَة لِحُسُنِه مَثَّل الصَّحَابَة رَضِيَ اللهُ عنهم بذلك لِاَنَّهُمْ بَدَءُ وَا فِي قِلَّةٍ وضُغْفٍ فَكَثُرُوا وقَوُّوا عَلَىٰ أَحْسَنِ الوُجُوهِ لِي**َغِيْظَ بِهِمُ الْكُفَّالُ مُ**تَعَلِّق بمَحذُونٍ دلَّ عليه ما قبلَة اى شُبِهُوا وَعَكَاللهُ الَّذِينَ أَمَنُوْ اوَعَمِلُوا الصَّلِحْتِ مِنْهُم اي الصَّحابَةِ لِبَيان الجنس لا ﴾ لِلتَبُعِيُضِ لِآنَّ كُنَّهِم بِالصِّفَةِ المَذْكُورَةِ مَّغْفِرَةً وَّلَجَرَّاعَظِيْمًا فَ الجَنَّةَ وهُما لِمن بعدهم ايضًا في اياتٍ.

کے سال حدید بیالی طرف نکلنے سے پہلے خواب میں دکھایا کہ آپ بیٹھ تھا اور آپ کے اصحاب امن وامان کے ساتھ مکہ میں داخل ہورہے ہیں،اور حلق کرارہے ہیں اور قصر کرارہے ہیں،آپﷺ نے خواب کی اطلاع اپنے اصحاب کو دی تو آپ کے اصحاب بہت خوش ہوئے ، چنانچہ جب آ یہ کے اصحاب آ یہ کے ساتھ نکلے اور کا فرول نے ان کوحد بیبیٹیں روکا ، اور واپس ہوئے اور سیر واپسی ان پرگراں گزری اور بعض منافقین نے شک کیا ،توبیآیت ٹازل ہوئی ،اس کا قول بالحق، صدق کے متعلق ہے یا رؤیا ے حال ہے اور رؤیا کا مابعداس (رؤیا) کی تفسیر ہے، تم لوگ مسجد حرام میں ان شاءاللہ انشاءاللہ تبرکا ہے امن وامان کے ساتھ، ضرور داخل ہو گئے تہیں کسی ونت بھی خوف نہ ہوگا ، اللہ تعالیٰ کو صلح میں جس خیر کاعلم ہے تم اس کونہیں جانتے اس دخول سے

بہے ایک قریبی فتح دیدی، وہ فتح خیبر ہے اور خواب (کی تعبیر) آئندہ سال واقع ہوئی، وہ ایسا ہے جس نے اپنے رسول کو ہدایت کے ستھ اور دین حق کے ساتھ بھیجاتا کہ اس دین حق کو تمام باقی ادیان پر غالب کردے اور اللہ کافی گواہ ہے کہ آپ کو ندکورہ چیزیں دے کر بھیجا گیاہے،اللہ نعالی نے فرمایا محمد اللہ کے رسول ہیں، محمد مبتداء ہے (اور رسُول اللہ) اس کی خبر اور جولوگ آپ کے ساتھ ہیں یعنی آپ کے رفقاء مونین (و السذین معه) مبتداء ہے ،اَشِدَّاءُ اس کی خبر ہے، کا فروں پرسخت کہان پررم نہیں کرتے اورآپس میں رحم ول بیں (د حساء بینھم) خبر ثانی ہے لینی آپس میں مہر یانی اور محبت رکھتے ہیں ،جیب کہ باپ کا بیئے كساته برتاؤ بوتاب، توان كوركوع سجد كرتي موئ ديكھا وكسعا، مسجدا ددنوں حال ہيں، الله كفشل اور رضا مندى كى جنتوميل كيربت بين جمله مستانفه باور (يبتغون) يبطلبون كمعنى مين بين ان كانشان (يعني) ان كى علامت ان کے چہروں پرسجدوں کے اثر ہے ہے (سیسماهم) مبتداء ہے (فسی و جو ههم) اس کی خبر، دہ ایک نور ہے، اور ایک سفیدی ہے جس کے ذریعہ آخرت میں پہچانے جا کیں گے، کہ ان لوگوں نے دنیا میں تجدہ کیا، (مِن اَفَرِ الْسجود) اس سے متعلق ہے جس سے خبر متعلق ہاوروہ کائلة ہے اور نیز (من اثر السجو د) خبر کے متعلق (کائلة) کی اس خمیرے حال قرار دیا گیا ہے جوخبر کی طرف لوٹ رہی ہے اور یہی بیعنی وصف مذکور تو رات میں ان کی صفت ہے (ذلك مشلصہ) مبتداء وخبر ہیں ، اور انجیل میں ان کی مثال اس بھیتی جیسی بیان کی گئی ہے کہ جس نے (انکھوا) کونیل نکالی ہو (مثلھ مرفعی الانجیل) مبتداء ہے، اور گزرع اخوج المنع اس کی خبر ہے،اور مشطاہ طاء کے سکون اور فتھ کے ساتھ ہے، شطاہ ای فواخهٔ لینی اس نے اپنا چوزہ نکالا،مراد ابتدائی کونیل ہے، پھراس کوقوی کیااوراس کی مدد کی (خاذرہ) مداور بلامدوونوں طریقتہ پرہے، اس کومضبوط کیا پھرموٹا کیا، پھراپنے سے پر کھڑی ہوگئی بعنی اپنی جڑ پر سسوق، مساق کی جمع ہے کاشتکاروں کوخوش کرتی ہے بعنی اُن کھیتی کرنے والوں کوایے حسن ہے، صحابہ کرام کو کھیتی ہے تشبیہ دی اس لئے کہ ان کی ابتداء قلت اور ضعف ہے ہوئی پھروہ کثیر ہو گئے اور بہتر طریقہ پر طاقتور ہوگئے، تا کہ کا فران سے جلیس (لیعیظ) محذوف سے متعلق ہے اوراس صذف پراس کا ماقبل دلالت کرتا ہے یعن صحابہ کو کھیت کے ساتھ تشبیہ دی گئی ہے آپ کے رفقاء میں ہے جولوگ ایمان لائے اللہ تعالیٰ نے ان سے مغفرت اور اجرعظیم کا وعدہ کر رکھا ہے (منهم) من بیان جس کے لئے ہے نہ کہ بیض کے لئے اس لئے کہ تمام صحابہ فدکورہ صفت کے ساتھ متصف ہیں ،اوراج عظیم سے مراد جنت ہےاور وہ دونوں لیعنی (مغفرت اور جنت)ان کے بعد دالوں کے لئے بھی آیات میں مذکور ہیں۔

عَيِقِيق اللَّهِ اللَّلَّمِ الللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ الللَّمِي الللَّهِ اللللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ اللللللَّمِ الللَّهِ الللَّهِ الللللَّمِلْمِ

هِ فَكُولَ ﴾ : بالحق يەمىدىرى دف كى صفت ہے اى صدقا متلبسا بالىحق. هِ فَكُولَ ﴾ : كىقىد صدق اللّه ، لقد ميں لام جواب تىم كى تمہير كے طور پرہے ہتم محذوف ہے اور لتد خلن جواب تىم ہے جس پر

لام توطيه وتمهيد دلالت كرر ما ہے۔

فِيْ وَلِينَ اللَّهِ وَ لَهِ مِن الثَّاء اللَّه تبوك وتعليم ك ليَّ بندكة عليل ك ليّ

فِيُولِكُ ؛ للتبوك ال جمل كامقصدا يك سوال كاجواب ب-

بييجُوْلِكَ؛ انشاءالله ہے معلوم ہوتا ہے کہ مجرخبر کے بارے میں متر دو ہے اور یہاں مخبراللہ تعالیٰ ہیں ،اللہ کے لئے تر دومحال ہے۔ جِيجُ لَيْبِعِ: يهال انشاء الله تبرك اورتعليم كے لئے ہےند كتعليق كے لئے ، البذاكوئي اعتر اض نبيل۔

هِ فَوْلَكَى ؛ امنين اورمحلقين اورمقصرين بيتيول تدخلن كواؤمحذوف يحال بين،اس صورت مين بيحال متراوفه فِيْ وَلِي وَالان مقدر ان يهايك اعتراض كاجواب ب-

اعتر اصّ: حال اور ذوالحال كاز ماندا يك بهوتا ب-حالا نكه دخول كاز مانه جو كه حالت احرام كاز مانه ب-اور ب-اور مسحلقين ومقصرين ليحنى حلق وقصر كازمانه اور ي

جِجُولِ البُغِ: جواب كا خلاصہ يہ ہے كہ بيد دونوں حال مقدرہ بيں يعنی وہ اس حال ميں داخل ہوں گے كہ ان كے لئے حلق اور قصر

عَلَيْنَ ؛ الاستخدافون جمله متانفه بهي موسكما باوره ل بهي موسكما بخواه تسد خدلن كي خمير سے يا آمندن كي خمير سے، يا محلقین کی میرے یامقصرین کی میرے۔

فِوْلَكُ ؛ لاتخافون ابدا.

سَيُوالْنَ؛ ابدا كاضافدكيافا كدوم؟

جَيْ لَيْعُ: جواب كاماحصل يد كم آمنين كے بعد لا تخافون كااضافة كرارمعلوم بوتا باس كے كه جومامون بوتا بوبى بخوف بھی ہوتا ہے،اس تکرار کے شبہ کو دفع کرنے کے لئے اب دا کی قید کا اضافہ کیا ،اس لئے کہ آمنیس کا مطلب تو یہ ہے کہ حالت احرام میں تم مامون ہواس لئے کہ مشرکین مکہ محرم ہے تعارض نہیں کرتے تنے ای طرح حرم میں واخل ہونے والے ہے بھی تعارض نہیں کرتے تھے، گراحرام ہے فارغ ہونے کے بعد کی اوراس طرح حرم ہے نکلنے کے بعد کی کوئی گارٹی نہیں تھی کہاب بھی بیلوگ مامون رہیں گےتو ، لاتسخسافو ن ابدا کہہ کراشارہ کردیا کہ حالت احرام اورغیرحالت احرام نیزحرم اورخارج حرم ہر صورت میں ہمیشہ مامون و بے خوف رہیں گے۔

قِوْلَيْ ؛ من دون ذلك اي الدحول.

هِ وَكُولَكُ ؛ مُنَعَاطِفُونَ، مُتَوَادُونَ، وونوں اسم فاعل جمع مُدكرعًا بُ، تعاطف اور تو ادد (تفاعل) ہے ماخوذ ہیں آپس میں مهر بانی کرنا محبت کرنا۔

هِ فَوَلَّنَّى: في وجوههم يه كائنة محذوف كِ متعلق موكر سيماهم مبتداء كي خبر بـــ

- ﴿ (مِّزَم پِهَاشَ إِنَّ

قِيُّولَيْ : من اثر السجود بھی کائنة محذوف کے متعلق ہے اور من اثر السجود میں پیھی ہوسکتا ہے کہ کائنة کی شمیر سے حال ہوکرمحلامنصوب ہو۔

قِیُوَلِی، ذلک مبتداءاول ہےاور مثلهم مبتداء ٹانی ہےاور فسی التوراۃ مبتداء ٹانی کی خبرہے،مبتداءاور خبرل کر جملہ ہو کر مبتداءاول کی خبرہے۔

قِوُلَ ﴾ عنلهم فی الانجیل مبتداء ہے، کورع اخوج شطاہ اس کی خبر ہے۔ قِحُولَ ﴾ اسطاً شطء، فراخ النبات کو کہتے ہیں لیمی تخمک ہے ابتداءً نکلنے والی نوک، جس کو انکھوا، یا سوئی کہتے ہیں، انکھوا کہنے کی یہ وجہ معلوم ہوتی ہے کہ یہ سوئی تخم کے اس حصہ ہے نکلتی ہے جو تم کی آئے کہلاتی ہے جو کہا کشر تخموں میں بہت نمایاں ہوتی ہے مثلاً کھورکی تضلی یا ناریل کی آئے ، عمر بی میں اس کوفراخ کہتے ہیں، فراخ اور فرخ دراصل پرندے کے چوزے کو کہتے ہیں، مسلم طرح چوزہ ور نام کی وجہ سے بھنزلہ فراخ کے ہوتا ہے۔

فَيُولِنَينَ وَداع يدارع كى جمع بكاشكاركوكت بيل-

لَفَيْ إِيرُولَاثِينَ حَى

شان نزول:

جب صلح حدید بینمل ہوگئ اور بیہ بات طے ہوگئ کہ اس وقت بغیر دخول مکہ اور بغیر ادائے عمرہ کے والیس مدینہ جانا ہے،
اور صحابہ کرام کا بیعز معمرہ رسول اللہ بین ان فی بناء پر ہوا تھا، جوا کیے طرح کی وتی تھی ،اب بظاہراس کا خلاف ہوتا
ہوا د کھے کر بعض صحابہ کرام کے دلول میں بیشکوک وشبہات پیدا ہونے لگے کہ (معاذ اللہ) آپ کا خواب سچانہ ہوا، وومری
طرف کفار ومشرکین نے مسلمانوں کو طعند یا کہ تہار ہے رسول کا خواب سے نہوا، اس پر بیآ یت نازل ہوئی لے دصد ق
اللہ رسولہ الرؤیا بالحق. (معارف)

لقد صدق الله رسوله الرؤيا بالحق واقد صديبيت پيليدسول الله يقات كونواب ين مسلمانول كيماته بيت الله ين داخل بوكرطواف وعمره كرت بوئ وكوايا كياتها، ني كا خواب بي وي بي بوتا هئة النه النه وكا الله وكا الين ني يقتل الله بين الله ين اله ين الله ين الله

وجهاس کی میھی کہاں سلح کی مصلحتوں ہے مسلمان ناوا قف اور بے خبر تھے، آنخضرت بیٹھیٹیٹیا کی دور بین نگاہیں جو پچھ لیس پردہ دیکیر ہی تھیں وہ عام صحابہ سے بلکہ ان میں ہے اچھے اچھے مد بر اور ذی فہم صحابہ کی نظروں ہے بھی اس صلح کے فوائد پوشیدہ اور تفی تھے جس کی وجہ سے وہ تذبذب اور تر دد کا شکار ہو گئے۔

تکنتہ: خواب کی تعبیر میں اشتباہ پیغمبر سے محال نہیں ہے، ورنہ تو آپ اول سال عمرہ کے لئے نہ نکلتے ،اس ہے معلوم ہوا کہ اولیاءاللہ کے الہامات اور خواب بدرجہ اولی محتمل ہیں۔ (خلاصة التفاسیر) سیجے بخاری میں ہے کہ ایکے سال عمرة القصناء میں حضرت معاویہ نفخانفلائنا نے آنخضرت بیٹائٹیا کے موے مبارک فینجی ہے تراہے تھے۔

منت کائم از قصرے حلق افضل ہے، مروی ہے کہ آپ بیٹھٹا نے حدیدیہ میں فرمایا، اے اللہ حلق کرانے والوں پر رحم فرما، صحابہ نے عرض کیایارسول اللہ اور قصر کرنے والوں پر ، فر مایایا اللہ ! حلق کرنے والوں پر رحم فر ما پھر صحابہ نے عرض کیا ، اور قصر کرنے والوں یر تو آب نے فرمایا: قصر کرنے والوں پر بھی رحم کر۔

مستعلقتي: اخبار مين انشاءالله كهناممنوع نبين ہے گرمعامدات اورا قرار مين دياينة بهتر اور قضاء بوجها حمّال تعليق مناسب نبين _ محمد رسول الله قرآن بإك يس عموماً الخضرت يُلِقَدُنا كانام لين كربائ آپكاذ كراوصاف والقاب كساته كيا كياب، خصوصاً نداء كموقع ربيا ايها النبي، يا ايها الرسول، يا ايها المزمل وغيره ح خطاب كيا كيا ہے، بخلاف ویکر انبیاء کے کدان کے نام کے ساتھ نداک گنی ہے، مثلاً یا ابراجیم علیق الفاق ، یا موی علیق الفاق ، یاعیسی عليه والمنظرة ، يور عقر آن من آپ كاسم كرامي محدكي صراحت كے ساتھ جارجگه ذكركيا كيا ہے ، جہال آپ كا نام لينے ميں کوئی نہ کوئی مصلحت ضرور ہے،اس مقام پرمصلحت میتھی کہ حدید ہیں کے صلحنا مہیں آپ میلی کا انتقاد میں اس کے ساتھ حضرت علی ربانی اس کوتبول کرلیا ، جن تعالی نے اس مقام پرخصوصیت ہے آب کے نام کے ساتھ رسول التد کالفظ قرآن میں لا کراس کو دائمی بنادیا جوقیامت تک اس طرح پر صاحات گا۔ (معدف)

صحابه كرام رَضِحَاللهُ تَعَالَا عَنْهُمْ كِ فَضَائل:

والمذين معه آتخضرت بي كارسالت اورآب كردين كسب دينول يرغالب كرفي كاذكرفر ماكر صحابه كرام ك اوصاف وفضائل اورخاص علامات كا ذكر تفصيل ہے فرمايا ہے، يہاں آپ مِيْقَطَةً الكے اصحاب كے فضائل كابيان ہے اگر چهاس ے پہلے اصالۃ اور براہ راست خطاب شرکاء سفرحد بیبیاور بیعت رضوان کوتھا،لیکن الفاظ کے عموم میں سب ہی صحابہ کرام شامل ہیں،اس کئے کہ محبت اور معیت سب کو حاصل ہے۔

محمد رسول الله والذين معه (الآية) شي جارامور تذكور بين (آپ ﷺ كى رسالت (اصحاب ك فضائل واخلاق 🏵 صحابہ کے وہ اوصاف جو کتب ساوی قدیم میں ندکور ہیں 🍘 عام مسلمانوں سے اجرعظیم کا وعدہ۔

یہ آیت، اہل سنت والجماعت کے اس دعوے بقطعی ججت ہے کہ تمام صحابہ نہایت مخلص ہے اور از اول تا آخر ایمان واخلاص پر قرئم ہے، اور ان حضر ات کے ندن ف کہ جو صحابہ کے اعداء اور مخالف ہیں بر ہان قوی ہے، اللہ تعالیٰ نے فر مایا محمد رسول اللہ و الذین معه اور جو آپ کے ساتھ ہیں کفار پر شخت اور آپس ہیں زم ہیں، تو انہیں رکوع اور سجد ہیں و کھتا ہے اس طریقہ برکہ مخف فضل ورضائے الہی مطلوب ہے، ان کے چروں ہے آٹار سجود اور برکات نماز ظاہر ہیں، یہ مثال ان کی تو رات میں ہے، اور انجیل میں ان کی مثال ان کی تو رات میں ہے، اور انجیل میں ان کی مثال ایک کھیت کی ہے جو سوئی اگائے پھر اے مضبوط کر ہے پھر تناور اور تو کی ہو پھر اپنے سے پر استادہ اور قائم ہوجائے، کسان کو بیا گنا اچھامعلوم ہوتا ہے۔

آیت با متہ را سے عموم خطاب کے تمام انکہ بدی اور خلف و حضرت مصطفیٰ کوشائل ہے، محمد مبتداء ہے، دسول الله جملہ ہوکر خبر (مدارک) و المذین اپنے صلہ سے لکر مبتداء اور اوصاف ذیل اس کی خبر ہیں، پھریہ عام ہے تمام امت کو جو اوصاف فد کورہ سے متصف ہونے کے بعد مگر تبعیا فد کورہ سے متصف ہونے کے بعد مگر تبعیا وضلہ بین اس کے کہ وضلہ من اوصاف فد کورہ کے ساتھ متصف ہونے کے بعد اصالہ وقصد اوا خل ہیں، اس کے کہ معیت حقیق ان ہی کے لئے ہے سے اصحاب بیعت رضوان، شان نزول کا مصداق ہونے کی وجہ سے قطعاً ویقینان اوصاف سے متصف اور ان انعامات کے موعود ہیں۔

فَا يُرِمُ الرباب تاری اورائل فلاف کاايد دول جواصحاب بيعت کواوصاف ندکوره عاري کرے وه يقيام دود و به تفاير مشہوره کی روح معه عد صرحت ابو بکر صد الق برح می معیت نصص حرح ہے تا بت ب فر ما یا اف قال لصاحبه جب بیغیر علال الله الله نے اپنے صاحب ہے کہا: آپ یکھی ان ابو بکر کے بارے میں فر ما یا و لکن اخی و صاحبی (بخاری) پھر معیت ہم ادعام ہے خواہ آپ کی حیات مبارکہ میں آپ کے ساتھ رہنایا آپ یکھی گیا اتباع ہے بھی جدانہ ہونا، اس بناء پر قیامت تک جتنے مومن ہوں کے وہ بھی آپ یکھی کے ساتھ ایک درجہ کی معیت رکھے ہیں است دانہ یو حضرت عمر افزال میں تعدید امروین میں سلم ہے، آپ یکھی گیا نے فر ما یہ سلم ہے، آپ یکھی گیا ان المعیان نے فر ما یہ شیطان عمر کے ساتھ ایک درجہ کی اور شدت ہم واد جہاد وقال میں تنی ہے مسلم ہے، آپ یکھی گار عبار ان المعی اللہ ان المعی میں اللہ المعی اللہ المعی میں اللہ المعی میں المعی میں اللہ اللہ میں میں میں اللہ ہم سلم ہے، آپ کی میں شامل ہے، علت مشتر کہ کی وجہ سے اس میں شامل ہے اور آس میں تمام گلو کی وجہ سے اس میں شامل ہے، ورش و شیطان د لالئہ اور مربا فر مان، فاسق، عاصی، قیاسا شامل ہے، علت مشتر کہ کی وجہ سے اس میں شامل ہے، ورس المول ہے، ورس کی میں واجب الرحم ہوں تو بھی ہوسکا ہے، فر مایا اور حموا میں فی الارض یو حمکھ میں امرور ین کے دوسری باتوں میں واجب الرحم ہوں تو بھی ہوسکا ہے، فر مایا اور حموا میں فی الارض یو حمکھ میں امرور ین کے دوسری باتوں میں واجب الرحم ہوں تو بھی ہوسکا ہے، فر مایا اور حموا میں فی الارض یو حمکھ میں وفا کر دی تھی پھر ہر نمازی اس میں داخل ہے۔

تكننه: '' شطا'' سے مراد ابو بكر صديق فَعْ فَافْلَانَتْهُ بين، اور'' آزر' سے حضرت عمر فَعْ فَافْلَانَتْهُ مراد بين اور'' استغلاظ'' سے حضرت عثمان نَعْ فَافْلَانَتْهُ مراد بين اور'' استواء'' سے حضرت علی فَعْ فَافْلَانَتْهُ کی طرف اشارہ ہے۔

(معلاصة التفاسير ملحصًا)

اس بوری آیت کا ایک ایک جز صحابہ کرام تَصَوَّلَا اَسْتَالِیْنَا کَی عظمت وفضیلت، اخر دی مغفرت اور اجرعظیم کو واضح کر رہا ہے،اس کے بعد بھی صحابہ کرام کے انیمان میں شک کرنے والامسلمان ہونے کا دعویٰ کرے تو اسے کیوں کر دعوائے مسلمانی میں سچاسمجھا جا سکتا ہے۔



مُرَيُّ الْجُهُ مِلْ الْمُرْتِيَّةُ فِي كُلِّا فِي الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ

سُورَةُ الْحُجُرَاتِ مَدنِيَّةٌ ثَمَانِي عَشْرَةَ ايَةً.

سورۂ حجرات مدنی ہے،اٹھارہ آبیتیں ہیں۔

تَتَقَدَّمُوا بِقَوْلِ اوفِعُلِ بَيْنَ يَدَّى اللّٰهِ وَرَسُولِهِ المُبَلِّغ عَنه اى بِغَيرِ إِذْنِهِما وَاتَّقُوا اللَّهُ إِنَّ اللَّهُ مَسَمِيعٌ لِقَوْلِكُم عَلِيْمُ بِ فِيعَالِكُم نَزَلَتُ فِي شُجَادَلَةِ أَبِي بِكُرِ وعُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ تعالَىٰ عنَّهُمَا عَلَى النّبيّ صلى اللّهُ عليُهِ وَسَلّمَ فِي تَـاسِيُرِ الْأَقُرَعِ بِنِ حَـابِسِ أَوِ الْقَعُقَاعِ بِنِ مَعْبَدٍ ونَزَلَ فيمَنُ رَفَعَ صَوْتَهُ عِنْدَ النبي صلى اللَّهُ عليه وسلَّم لَّأَيُّهُ الْكَذِيْنَ امَنُوْ الْاتَّرْفَعُو الصَّوَاتَكُمْ إِذَا نَطَقَتُم فَوْقَ صَوْتِ النَّبِي إِذَا نَطَق وَلَاتَجْهَرُو الَّهُ بِالْقَوْلِ إِذَا نَاجَيَتُهُو وَ كَجَهْرِيَعْضِكُمُ لِبَعْضِ بس دُونَ ذلك إجلَالًا لَـهُ أَنْ تَعْبَطُ أَكُمُ أَلَاثُمُ لِالنَّتْعُرُونَ ® اى خَشْيَةَ ذلك بـالـرَّفع وَالجَهُرِ المَدُكُورَيُنِ وَنَزَلَ فيمَنْ كَانَ يَخْفَضُ صَوْتَهُ عِندَ النبي صلَّى اللَّهُ عليه وسلَّمَ كَابِي بَكُرِ وعُمَرَ وغيرهِ مَا رضِيَ اللهُ عنهم إِنَّ الَّذِيْنَ يَغُضُّونَ أَصُوَاتَهُمْ عِنْدَرَسُولِ اللهِ أُولِيِّكَ الَّذِيْنَ امْتَحَنَ اللهُ الخَتَبَرَ قُلُوبَهُمْ لِلتَّقُولِيُّ أَى لَتَظُهَرَ منهم لَهُمُّمِّغُفِرَةً وَالْجَرَّعُظِيمُ الجَنَّةُ ونَزَلَ فِي قومٍ جَاءُ وا وقت الظّهِيرَةِ والنَّي صلى الله عليه وسنَّم فِي مَنْزِلِهِ فَنَادَوْه إِنَّ **الَّذِيْنَ يُنَّادُونَكُ مِنْ وَرَآءِ الْحُجُرَاتِ** حُجُرَاتِ نِسَائِه صلَّى الله عليه وسلم حَـمُعُ حُجُرَةٍ وهي مَا يُحجرُ عليه مِنَ الارْضِ بِحَائطٍ ونحوِه كَانَ كُلُّ واحِدٍ منهم نَادي خَلُفَ حُجُرَةٍ لِانَّهُم لَـمُ يَعُلُموه فِي أَيِّها مُنَادَاةَ الأعُرابِ بِغِلُظَةٍ وجَفَاءٍ ۗ **ٱلْأَنْكُمُ لَالْيَحُقِلُونَ** فيـما فعَلُوه مَحَلَّكَ الرفِيعَ ومَا يُنَاسِبُهُ سِنَ التَّعظِيم وَ**لُوْالْهُمْ صَبُرُوْا** اَنَّهُمُ فِي مَحَلِّ رَفُع بِالإِبتِداءِ وقِيْلَ فاعِلَ لِفِعْلِ مُقَدَّرِ اي ثَبت حَتَّى تُخُرُجُ اللَّهِمْ لِكَالَ خَيْرًالْهُمْ وَاللَّهُ غَنُورُ الْحَيْرُ لِللهِ عَنْهُ النَّبِيُّ صلَّى اللُّهُ عنيه وسلم الني بَنِيُ المُصْطَلِقِ مُصَدِّقًا فخَافَهُم لِتِرة كَانَتُ بَيُنَهُ وبَيُنَهُم فِي الجَاهِلِيَّةِ فَرَجَعَ وقَـالَ إِنَّهُـمُ مَـنَعُوا الصَدْقَةَ وهَمُّوا بِقَتْلِهِ فهَمَّ النَّبي صلَّى الله عليه وسلَّمَ بِغَزُوهِمُ فَحَاءُ وا مُنكِرِينَ مَا قَالَهُ ﴿ (وَمُزَّمُ بِبَالشِّنِ] ◄

عنهم يَأَيُّهُا الَّذِيْنَ الْمُؤَالِنُ جَاءَكُمُوَالِقُ بُنِّيا حَبَر فَتَكَيُّنُوا صِدْفَ مِن كِدْبِه وفي قِرَاءَ ةِ فَتَثُبُتُوا مِن الثِّبَات أَنْ تُصِيْبُواْقُومًا مَفْعُولٌ له اى حَشْيَة ذلك بِجَهَالَةٍ حالٌ مِنَ الفاعِلِ اى خاعلين فَتُصْبِحُوا عَلى مَافَعَلْتُمْ مِـنَ الخَطَأُ بالقوم للِيمِينَ® وَأَرْسَـلَ اِلَيهـم صـلى الله عنيه وسلم بعُد عَوْدِهم الى بلادهم خَالِدًا فَلمُ يَرَ بِيُهِم إِلَّا الطَّاعَةَ والحَيْر فَاخْمَرَ النِّيُّ صلى الله عليه وسنَّم بذلك وَاعْلَمُوَّاكَ **فِيَكُمْرَرُسُولَ اللَّهِ** فَلَا تَقُولُوا البَاطِلَ فَإِنَّ اللَّهَ يُخُرِرُه بالحَالِ لَوَ يُطِيِّعُكُمْ فِي كَيْتِيرِضَ اللَّهِ الله الله الله المَا على خلاف الوَاقِع فَرُبَّبَ عَـــى ذلك مُقَتَضَاهُ لَعَنِتُمْ لَاثِـمْتُـمُ دُوْنَهُ إِثْمَ التَّسَبُبِ الى المُرتَّبِ وَالْكِنَّالِلَهُ حَبَّبَ الْكُمُّ الْإِيمَانَ وَزَيْنَهُ خَسَنَةُ فِي قُلُوكِكُمُ وَالْكُلُورُوالْفُسُوقَ وَالْعِصْيَانُ السُتِدُراكُ سِ حِيثُ المغنى دُوْنِ النَّفِطِ لِأَنَّ سَنْ خُسَب الَيهِ الإيْمَانُ النِع غَايَرَتْ صِفَتُهُ صِفَةَ مَنْ تَقَدَمَ ذِكُرُهُ أُولَيَاتُ هُمُ فِيهِ الْبَعاتُ عن الجطاب الرَّشِكُونَ ﴿ الثَابِتُونَ على دِينهم فَضَلَاصِّ اللهِ مَصْدَرُ منصُوبٌ بِعَعْلِه المُقَدّر اي أفضل وَيْعْمَةٌ منه وَاللّهُ عَلِيمٌ بهم حَكِيْمُ فِي إِنْ عَامِه عَدِيهِم وَإِنْ طَآيِفَتُنِ مِنَ الْمُؤْمِيْيِنَ الآيَةُ نَـزلَـتُ مِي قَـضيّةٍ هي أن النّي صلى الله عليه وسمدم رَكِبَ حِمَارًا ومَرَّ عملي اتن أبَيّ فبَالَ الحِمَارُ فَسَدَّ ابْنُ أَبِيّ أَنْفَهُ فَقَالَ ابْنُ رَوَاحَةَ واللّه لنَوْلُ حِمَارِه أَطْيَبُ ريْحًا مِنْ مِسْكِكَ فِكَانَ بَيْنَ قَوْمَيْهِما ضَرُبٌ بِالآيْدِي وَالبِّعالِ والسَّعَفِ اقْتَتَكُوا جُمعَ نَظَرًا الِّي المَعْنِي لِآنَ كُلَّ طَائِفَةٍ جَمَاعَةٌ وقُرِي اقْتَتَلَتَا فَأَصَّلِحُواْبَيْنَهُمَا ۚ ثُنِي نَظُرًا الى اللهُظِ فَإِنْ بَعَتُ تَعَدَّتُ إِحْدَى الْكُوْرِي فَقَالِلُوا الَّتِي تَبْغِي حَتَى تَفِيَّ مَرْحَمَ إِلَى أَمْرِاللَّهُ الحَق فَإِنْ فَآءَتُ فَأَصْلِعُو إبَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ بالإنصاب وَاَقْيِطُوا ۗ اِعْدِلُوا إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْيِطِينَ ۚ إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ إِخْوَةٌ في الدِينِ فَأَصْلِحُوْابَيْنَ أَخَوَيْكُمْ ۚ إِذَا تَسارَعَا وَقُرئ عَيْمُ اخْوَتَكُم بِالْفُوْقَائِيَةِ وَاتَّقُوااللَّهُ فِي الْإِصْلاحِ لَعَلَكُمُ تُرْجَمُونَ ٥

ت مرفع كرتا مول الله كام مع جوبرا مهربان نهايت رحم كرنے والا ب،اے وہ لوگو! جوايمان لائے مو فَدَّهَ بمعنی تَقَدَّهَ ہے مشتق ہے بعنی قول وقعل میں اللہ اوراس کے رسول پر جواس کا پیغا مبر ہے چیش قند می نہ کر و کیعنی ان دونوں کی اجازت کے بغیر اور اللہ سے ڈرتے رہو بلاشبہ اللہ تعالیٰ تمہاری باتوں کو سننے والا تمہارے کاموں کو جاننے والا ہے ، بیآیت آنخضرت بالتفظيظ كے حضور ابو بكر وغمر فضح كالف كا القي كا افرع ابن حالس يا قعقاع بن معبد كوامير بنانے ميں نزاع كے بارے ميں نازل ہوئی،اور (آئندہ آیت)ال محض کے بارے میں نازل ہوئی کہ جس نے اپنی آواز کو آپ بیٹھیٹا کے حضور بلند کیا،اے ایمان والو! جبتم گفتگوکیا کرو تو نبی کی آواز براین آواز بلندنه کیا کروجب وه کلام کرے اور نداس کے سامنے او کجی آواز میں با تیں کرو جبتم اس سے سر گوشی کرو جیسا کہم آپس میں او کچی آواز ہے با تیں کرتے ہو بلکہ اس کی آواز ہے پہت ہی رکھو، آپ کی جلالت شان کا خیال کرتے ہوئے تمہارے اعمال اکارت ہوجا ئیں اورتم کواس کا احساس بھی نہ ہو، ندکورہ بلنداوراو کچی آواز

کی وجہ سے تمہارے اعمال کے ضائع ہونے کے پیش نظر (آپ ﷺ سے بلند آواز سے کلام نہ کرو) اور (آئندہ آیت) اس شخص کے بارے میں نازل ہوئی جواپنی آواز کو آنخضرت ﷺ کے حضور پست کرتا تھا، جبیبا کہ ابو بکر وعمر نَعَحَالِكُ النَّيْكَ وغيره، بے شک وہ بوگ جورسول اللّٰہ کے حضور میں اپنی آ واز وں کو بست رکھتے ہیں یہی ہیں وہ لوگ جن کے قلوب کو اللّٰہ نے تقوی کے بارے میں جو دو پہر کے وقت آئے اور نبی ﷺ اپنے مکان میں تھے،سوانہوں نے آپ کو پکارنا شروع کردیا بلہ شہدہ ولوگ جو آپ کو جروں کے باہرے پکارتے ہیں یعنی آپ بیٹھا گیا کے بارے میں یہیں جانے تھے کہ آپ کس جرے میں ہیں؟ کرختگی اور شدت کے ساتھ دیہا یتوں کے مانند پکارنا تھا، ان میں کے اکثر آپ کے مقام بلنداور آپ کی مناسب تعظیم سے ناواقف تھے اس سسد میں جوانہوں نے کیا اور اگر بیلوگ صبر کرتے تا آنکہ آپ ﷺ خود ہی ان کی طرف نکلتے توبیان کے لئے بہتر ہوتا اُنَّهُمْرِ ابتداء کی وجہ ہے کل رفع میں ہے اور یہ بھی کہا گیا ہے کہ بیغل مقدر کا فاعل ہے بینی فبستَ کا اللہ اس مخص کے لئے غفوراور رجیم ہے جس نے ان میں سے تو بہ کی اور (آئندہ آیت)ولید بن عقبہ کے بارے میں نازل ہوئی اور آنخضرت بلان کا ان کو بن مصطلق کی جانب محصِّل بنا کر بھیجاتھا، چنانچہ انہوں نے اس عداوت کی وجہ سے جوان کے اور بنی مصطلق کے درمیان زہانہ ج ہلیت میں تھی ان سے اندیشہ کیا، جس کی وجہ سے وہ واپس چلے آئے ، اور (آکر) کہددیا کہ انہوں نے صدقہ دینے سے انکار كرديا، اورانہوں نے مير ئے قبل كا ارادہ كيا، چنانچەنبى يَلْقَطْقَتْانے ان سے جنگ كرنے كا ارادہ فرماسيا، چنانچەابل بنى مصطبق (آپ فیلنظیما کی خدمت میں) حاضر ہوئے اور ان کی طرف منسوب کر کے جو بات عقبہ تفخانندُ تفالا ان نے آپ ہے کہی اس کا ا نکار کیا ، اے ایمان والو! اگر تمہیں کوئی فاسق خبر دیا کرے تو اس کے بچے اور جھوٹ کی اچھی طرح شخصی کرلیا کر و اور ایک قراءت تَنْبُنُوا ہے ثبات ہے، (یعنی توقف کرو، جلدی نہ کرو) ایسانہ ہو کہ ہیں نادانی میں کسی قوم کو تکلیف پہنچادہ (اَنْ تُسعِیلُوا) مفعول لہ ہے، یعنی اس اندیشہ کی وجہ سے بِحَهَالَةِ (تُصیبُوا کے)فاعل سے حال ہے، اس حال میں کتم جال ہو پھر فسطی سے قوم کے سرتھ تم نے جو کچھ کرڈ الا اس پرشرمندہ ہونا پڑے ان حضرات کے اپنے شہروں کوواپس جانے کے بعدان کے پاس آپ النظال نے خالد تفکانند تعلی کو رواند فرمایا، تو انہوں نے ان سے سوائے اطاعت اور خیر کے بہتھ نہ دیکھا، تو خالد بات نه کہوالتد تعالی اس کو حقیقتِ حال کی خبر دیدےگا ، اگروہ بہت سے معاملات میں جن کی تم خلاف واقعہ خبر دیتے ہو تمہر ری بات مان لیا کرے پھراس پراس کامقتصیٰ بھی مرتب ہوجائے توتم گنہگار ہوگے نہ کہ وہ (آپ یکھیٹیا) مرتب کا سبب بننے ک وجہ سے (نہ کہاس کے ارتکارب کی وجہ سے) کیکن اللہ نے تم کوایمان کی محبت دی اور اسے تمہارے دلوں میں زینت بخش (یعنی پندیدہ بنادیا) کفرکواور گن ہ کواور نافر مانی کوتمہاری نگاہوں میں نالبندیدہ بنادیا (الکن سے)استدراک ہے معنی کی حیثیت سے نه كه فظ كى حيثيت سے اس كئے كه مَنْ حَبَّبَ إلكيهِ الإيْمَانَ النع كى صفت متغاير ہے، ان كى صفت سے جن كاذكر ماقبل ميں بوا ح (وَكُزُم بِهَ لِلشَّرْدَ ﴾ -

ے، یہی لوگ اس میں خطاب نے فیبت کی طرف التفات ہے، راہ یافتہ ہیں لیمن اپ دین پر ٹابت قدم رہنے والے ہیں القد کے نسل واحسان سے (فَضْلُا) مصدر منصوب ہے اپ نعل مقدر اَفْضَلَ کی وجہ ہے، اور اللہ ان کے حال ہے واقف ہے اور ان پر انعام فرمانے کے بار سے میں باحکمت ہے اور اگر مؤین کی دو جماعتیں لڑ پڑی تو ان کے درمیان سلح کرادیا کرو، یہ آیت ایک واقعہ کے بار سے ہوا تو حمار نے ہیں نازل ہوئی ہے، واقعہ یہ ہے کہ ایک روز آپ فیجھی حمار پر سوار ہوئے اور آپ کا گذر عبد الله بن الی کے پاس سے ہوا تو حمار نے ہیں بار کردیا جس کی وجہ سے عبداللہ بن ابی نے اپنی نک د بائی ، تو ابن رواحہ و تعالیف الله بولے، واللہ آپ بھی اس سے ہوا تو حمار نے ہیں اس کر دیا جس کی وجہ سے عبداللہ بن ابی نے اپنی نک د بائی ، تو ابن رواحہ و تعالیف اور اللہ آپ بھی پڑھا بائی ہوگئ اور جو تا اور فیڈ کہ اس کے حمار کا بیشا باتھا بائی ہوگئ اور جو تا دو ٹری جماعت پر زیاد تی کر نے والس سے اس جماعت سے جوزیاد تی کرتی ہوئے ۔ شفیدا یا گیا ہے، پھرا گران ووٹوں میں سے ایک ہوئی ہوا کہ جو تا کہ تی بال تک کہ وہ اللہ کے تھم کی طرف کوٹ آپ کی اگر لوٹ آئے تو انصاف کے ساتھ کی کراد واور عمل کرد و بے شک اللہ تعالی عدل کرنے والوں سے مجب کرتا ہوں اید رکھو) سارے مسلمان دینی بھائی بھائی بھائی بیس کی اپ اس ایک کہ وہ اللہ کے تو اللہ کہ کوٹ کے اور قانیے کہ ساتھ تھی پڑھا گیا ہے، اور اصلاح کرنے میں اللہ سے ڈر تے رہو تا کہ تم پردم کیا جائے۔

عَجِقِيق الْرَكْبِ لِسَهَا الْحَاتَ الْفَيْسَايُرِي فَوَالِلْ

فَیْوَلْکَ، لَاتُسَقَدِمُوْ الله مِی دوصورتی بی اول یہ کہ بیہ تعدی ہے، تعمیم کے تصدی اس کے مفعول کو حذف کردیا گیا ہے، یا نفس نغل کا قصد کرنے کی وجہ مفعول کور کے کردیا گیا ہے، جیسا کہ عرب کہتے ہیں فیلاٹ یدمنع ویعظی دوسری صورت بیا کہ یہ بیان نموان کے تاکیدائن عباس تعکن اور شاہ اور ایتقوب کی قراء ت تَفَدَّمُوا کرتی ہواور احدی نے کہا ہے کہ قَدَّم یہاں تَفَدَّم کے معنی میں ہے یعنی تم آگے نہ براعو (فتح القدیر) مفسر علام نے فدم بمعنی تقدیم کہ کراشارہ کردیا کہ قدم اور مے معنی میں ہے لہذا اس کا مفعول محذوف و نے کی ضرورت نہیں۔

قِوَّوُلِیَّ: أَلْمَبلِّغَ عَنْهُ يه رَسُولِهِ كَ صَفت بِ اوراللداوراس كرسول في آكند برا صنى كامطلب بيب كدان كي عمم واجازت كي بغير ند قول بين سبقت كرواور فعل بين بعض حضرات ني كها ب كه تُسقَدِّمُ وا كامفعول محذوف باى لا تُقَدِّمُوا أَمْرًا.

فَيُولِن إِذَا نَاجَيْتُمُونُ ال جمله كاضافه كامقصدايك سوال مقدر كاجواب ب-

ئِيبُوْلِكَ: اول جمد لِعِني لَا تَوْفَعُوا أَصْوَاتَكُمْ اوردوسِ الجمله وَ لَا تَجْهَرُوْا لَهُ بِالْفَوْلِ وونوں كامفہومِ ايك بى ہے جبكہ عطف مغابرت كا تقاضه كرتا ہے تو پھراس تكرار كا كيا مقصد ہے؟

جِ كُولِ شِيْء دونو بهلو كامفهوم اورمصداق الگ الگ ہے، اول جملہ كامفهوم بدكہ جب آپ ﷺ ہے گفتگو ہور ہى ہوليعنى سوال وجواب ہورہے ہول تو اس طریقتہ سے نہ بولوکہ تمہاری آواز آپ ﷺ کی آواز سے بلند ہوج ئے، اور دوسرے جملہ کا مصب بدكه جبتم آپ ينتين الكرر به بواورآپ ينتين خاموش من بهرن تو بهي زورز ورسے نه بولوجس طرح تم آپس میں بولتے ہو، للبذا تحرار کا شبختم ہو گیا۔

فِيْ فَلَنَّى: بَلْ دُوْدَ ذَلِكَ كامطلب م كهر حال مين الى آوازآب النفظ كي آواز سے پست ركھو، خواه آپ سے كفتگو مورى ہو ماتم بول رہے ہواورآپ ﷺ خاموش س رہے ہوں۔

فِيْوَلْكُونَ ؛ إِجْلَالًا بِهِ لَاتُوفَعُوا وَلَاتَجْهَرُوا كَعلت بِمطلب بيه كهرحال مِن آب كى جلالت شان كاخيال رمناها بيد جِيْوُلِيْ ؛ خَشْيَةَ ذَلِكَ اسْ عبارت كاضافه كامقصدية بتانا ہے كه أَنْ تَحْبَطَ عَدْف مضاف كے ساتھ مفعول له ہونے كى وجه يه منهوب الحل م ، تقدر عبارت بيه إنْ تَهُوا عَمَّا نُهِيْتُمْ لِخَشْيَةِ حُبُوطِ أَعْمَالِكمر.

فَيَ إِنَّ كُنَّ ؛ لَا تُسرُّ فَعُوا اور لا تَسجُّهَ رُوا دونول نے خشیة میں تنازع کیا ہے ہرایک خَشیة کواپنا مفعول له بنانا جا ہتا ہے، بصریین کے مذہب کے مطابق ٹانی کوعمل دیااوراول کے لئے مفعول لدمحذوف مان لیا (گویا کہ یہ باب تنازع فعلان سے ہے) فِيُولِكُ ؛ لِتَظْهَرَ مِنْهُمْ اس عبارت كاضافه كامقصدا يكسوال مقدر كاجواب بـ

بِيَيُواكَ، امتحان تقوى كاسبب بيس موتاب حالاتك إمْ مَن حَن اللَّهُ فَلُو بَهُمْ لِلنَّقُوسِي مِن امتحان كوتقوى كاسبب بيان كي

جَيْ لَيْكِ: اختبارتقوى كاسبنبيس بِمُرظهورتقوى كاسببضرورب بداطلاق السبب على المسبب كتبيل سے باس كتے كەامتخان دل كے اندر پوشيده تقوى كوظا ہركرديتا ہے، اى شبه كور فع كرنے كے لئے لِتَظْهَرَ مِنْهُمْ كااف فدكيا ہے۔

فِيْ فِي إِنَّ اللَّهِ مِن اورراء كَ تَخفيف كماته المعنى حسد اعداوت اشك -

فِيُوْلِكُ ؛ فَتَثَبَّتُوا مِهِ تَثَبَّتَ عِيهِ امر كاجمع مذكر حاضر بيتم توقف كرو، جلدى شكرو

قِحُولَكَ ؛ حشية ذلك بيار بات كلطرف الثاره بكه أنْ تُصِيّبُوا قَوْمًا، فَتَبَيّنُوا كامفعول لهب، أنْ تُصِيبُوا ي بيكمضاف كذوف ب اى خشية إصابة قوم.

فِوْلَنَى : عَنِتُمْ عَنِتَ مِي مَعْ مُرَمَ مُرَمَ مُرَمَ مَن كَنهَا ربوكَ بَم مشكل مِن يرك ي

قِعُولِكَى : دُونَهُ لِعِن دروغ كُونَى اور غلط بيانى كى وجد يجويجه فتيجه برآ مد موكااس كذمه دارغلط بيانى كرنے والے مول كه نه

هِ وَكُولَ فَي السَّمُ التَّسَبُّ بِ الم المُرَتَّبِ لِينَمُ لوك مرتب شده نتيجه كاذر لعداور سبب بننے كى وجه سے كنهار مو كے ندكدار تكاب

﴿ (مَرَّرُمُ بِسَالِشَهِ إِ

فِيْوَلِكَى : اِسْتِدْرَاك مِنْ حَيْثُ الْمَعْنى دُونَ اللفظِ اسعبارت كاضافه كامقصدا يكسوال كاجواب بـ مِیکُوالی: سوال یہ ہے کہ لیکن استدراک کے لئے ہے،اوراستدراک کے لئے ضروری ہے کہ مابعد ماقبل کانسفیساً و اثباتاً مخالف ہو،اور یہاں ایسانہیں ہے لہٰذا بیاستدراک سیجے نہیں ہے۔

جَوُلَتِيْ: لَكِنَ كَا، بعد البل عا أَرجِه نفيًا و اثباتًا، لفظًا منفارُ نبيس بِمَرمعنًا متغانو ب، للذااستدراك سيح ب اور معنوی اختلاف بیے کہ مَنْ حُبِّبَ اِلْیَهِ الاِیْمَان کی صفت ان لوگوں ہے مختلف ہے جن کا ذکر سابق میں گذر چکا ہے اس طریقہ سے متدرک مندرک مندسے مختلف ہے ، للبندا استدراک جھی درست ہے۔

يَخُولَكَ ؛ مسدرٌ منصوبٌ بفعله المقدر لين فَضَلًا اين فعل كامفول مطلق مونى ك وجهت منصوب ، ممر صحيح نہیں ہے)اس میں تسامح ہے اس کے کہ فضالا اسم مصدر ہے مصدراس کا افضالا ہے ، البت مفعول لہ درست ہے اور عامل اس میں حَبَّبَ ہے، ال اور معمول کے درمیان او آئیك همر الو اشِدُوْنَ جمله معترضه ب

فِيَوْلِكُ ؛ افْتَتَلُوْ الْجُمِعَ نظرًا إلى المعنى بدايك شبكا جواب -

شبه: اقتتلوا جمع كاصيغه بحالانكه اس كي خمير طائفتان عثنيه كي طرف لوث ربى به الهذا ضمير ومرجع كورميان مطابقت ہیں ہے۔

و فع: طائفتان كم منى كى طرف نظر كرتے ہوئے جمع كاصيغدلايا كيا ہے،اس لئے كه ہرطا كفه بہت سے افراد برمشتل ہوتا ہے، بَیْنَهُمَا میں تثنیه لایا گیاہے، طانفتان کے لفظ کی رعایت کرتے ہوئے۔

یہ سورت طوال مفصل میں ہے پہلی سورت ہے، سورہ حجرات ہے سورہ ناز عات تک کی سورتیں طوال مفصل کہلاتی ہیں بعض نے سورۂ ق کو پہلی مقصل سورت قرار دیا ہے (ابن کثیر، فتح القدیرِ)ان سورتوں کا فجر کی نماز میں پڑھنامسنون ومستحب ہے اورعیس سے سور و واشمس تک اوساط مفصل اور سور و صلی سے والناس تک قصار مفصل ہیں ،ظہر وعشاء میں اوساط اور مغرب میں قصار بردھنی مسنون ومستحب ہیں۔ (ایسر النفاسیر)

شان نزول:

يَآيُهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُقَدِمُوا (الآية) ان آيات كنزول كم تعلق روايات حديث من بقول قرطبي حيدوا تعات منقول ہیں،اور قاضی ابو بکر بن عربی نے فرمایا کہ سب واقعات بھی ہیں، کیونکہ وہ سب واقعات ان آیات کے مفہوم میں داخل ہیں،ان میں ہے ایک واقعہ بہے جس کوامام بخاری نے روایت کیا ہے، واقعہ بہے:

ایک مرتبہ قبیلہ بنوجمیم کے پچھ لوگ آنخضرت ﷺ کی خدمت میں حاضر ہوئے، یہ بات زیرغور تھی کہ اس قبیلہ

کا حاکم (امیر) کس کو بنایا جائے، حضرت ابو بکر صدیق و فقائلة تقالی نے قعقاع بن معبد کے بارے میں رائے دی اور حضرت عمر و فقائلة تقالی نے افرع بن حالی و فقائلة تقالی کے بارے میں رائے دی، اس معاملہ میں حضرت ابو بکر وعمر و فقائلة تقالی تقالی تعالی تعلق میں کہ تیز گفتگو ہوگئی اور بات بڑھ کئی جس کی وجہ سے دونوں کی آ وازیں بلند ہو گئیں اس پریہ آیات نازل ہوئیں۔

ز مانهٔ نزول:

یہ بات روایات ہے بھی معلوم ہوتی ہے اور سورت کے مضافین بھی ای کی تائید کرتے ہیں کہ بیسورت محتلف مواقع پر نازل شدہ احکام وہدایات کا مجموعہ ہے، جنہیں صفحون کی مناسبت ہے ایک جگہ جمع کردیا گیا ہے، اس کے علاوہ روایات سے یہ بھی معلوم ہوتا ہے کہ ان میں سے اکثر احکام مدینہ طیب کے آخری دور میں نازل ہوئے ہیں مثلاً آیت ہے۔ کے متعنق مفسرین کا بیان ہے کہ یہ بوتھیم کے وفد کے بارے میں نازل ہوئی تھی، جس وفد نے آکر ازواج مطہرات کے چروں کے باہر سے نبی بھی بھی گارنا شروع کردیا تھا، اور تمام کتب سیرت میں اس وفد کی آمد کا زمانہ و بیان کیا گیا ہے، اس طرح آ بیت ۲۔ کے متعلق حدیث کی اکثر روایات سے معلوم ہوتا ہے کہ یہ دلید بن عقبہ فاتی انداز اللہ ہوئی ہیں انزل ہوئی تھی، جنہیں رسول اللہ بھی تھا اور یہ بات معلوم ہی ہے کہ دلید بن عقبہ فاتی اور یہ بات معلوم ہی ہے کہ دلید بن عقبہ فتی بجنہیں رسول اللہ بھی ہے کہ معلق سے زکو ہ وصول کر کے لانے کے لئے بھیجا تھا اور یہ بات معلوم ہی ہے کہ دلید بن عقبہ فتی مکہ کے بعد مسلمان ہوئے تھے۔

آلائے قبیر میں ہیں آنخضرت بین ایک اسے چین قدمی اور سبقت نہ کرو، کس چیز ہیں چین قدمی کوئن کیا گیا ہے؟ اس کا ذکر قرآن میں نہیں ہے، اس میں عموم کی طرف اشارہ ہے، یعنی کسی بھی قول فعل میں آنخضرت فین اللہ عینی قدمی نہ کرو بلکہ انظار کرو کہ رسول اللہ فینی اللہ کیا جواب دیتے ہیں؟ البند اگر آپ ہی کسی کو جواب کے لئے مامور فرمادیں تو جواب دے سکتا ہے، ای طرح چلنے میں بھی کوئی آپ سے سبقت نہ کرے، اگر مثلاً کھانے کی مجلس ہے تو آپ سے پہلے کھانا شروع نہ کرے مگر قرائن یا صراحت سے اج زیت معلوم ہوجائے تو کوئی حرج نہیں ہے۔

علماء دین اور دین مقتدا ؤں کے ساتھ بھی یہی ادب ملحوظ رکھنا جا ہے:

اوراس کے رسول کی اطاعت کرو،اپی طرف سے دین میں اضافہ یا بدعات کی ایجاداللّٰداوراس کے رسول سے آگے بڑھنے کی بے جاجسارت ہے۔

لَاتَر فَعُوا أَضُواتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ اللَّهِي اس آیت می آپ بِظَافَتُنا کی مجلس کا دب بیان کیا گیا ہے کہ رسول اللہ بین آفٹو ا آضو اَتکُمْ فَوْقَ صَوْتِ اللَّهِي اس آیت میں آپ بِظَافَتُنا کے سامنے آپ بِظَافَتُنا کی آواز سے زیادہ آواز بلند کرنا یا بلند آواز سے اس طرح گفتگو کرنا جیسے آپس میں ایک دوسر سے سے بے کابا کیا کرتے ہیں ، ایک قتم کی ہے او بی اور گنتا فی ہے ، چنا نچ آ بت کے نزول کے بعد صحابہ کرام کا بیال ہوگیا تھا کہ حضرت ابو بکر صدیق نے عرض کیا کہ یارسول اللہ قتم ہے کہ اب مرتے دم تک آپ سے اس طرح بولوں گا جیسے کوئی کی سے سرگوشی کرتا ہو۔ (درمنٹور، ازیرہنی)

شان نزول:

اِنَّ الَّذِيْنَ يُنَا أُدُّوْ فَكَ مِنْ وَدَاءِ الْمُحْجُو اَبَ بِيَا بِينَ بَوْتِيم كِ بِعَض كُنوارِهم كِلوگوں كے بارے مِن نازل ہوئى، جنہوں في ايک روز دو پهر كے وقت، جو كه آخضرت في تفقيق كا في الله تعالى في مجرے باہر كھڑے ہوكر عاميا شائداز ہے، يا محديا محديد محتوا محديد محتوا مح

حجرات امهات الموثين:

ابن سعد نے بروایت عطاء خراسانی لکھا ہے کہ پیر تجر ہے مجبور کی شاخوں ہے ہے ہوئے تھے اوران کے دروازوں پرمو۔
سیاہ اون کے پرد بے پڑے ہوئے تھے، امام بخاری نے ادب المفرد میں اور بیعتی نے داؤد بن قیس سے روایت کیا ہے، وہ فرما
ہیں کہ میں نے ان حجروں کی زیارت کی ہے میرا گمان ہیہ کہ حجر ہے کے درواز سے مسقف بیت تک حجہ یا سات ہاتھ
اور کمرہ دس ہاتھ اور حجیت کی اونچائی سات یا آٹھ ہاتھ ہوگی، امہات الموشین کے بیر حجر سے دلید بن عبدالملک کے دور حکو،
میں ان کے حکم ہے مسجد نبوی میں شامل کردیئے گئے، مدید منورہ میں اس روز گریدو بکا طاری تھا۔
سے مسجد نبوی میں شامل کردیئے گئے، مدید منورہ میں اس روز گریدو بکا طاری تھا۔
سے مسجد نبوی میں شامل کردیئے گئے، مدید منورہ میں اس روز گریدو بکا طاری تھا۔
سے مسجد نبوی میں شامل کردیئے گئے، مدید منورہ میں اس روز گریدو بکا طاری تھا۔

شان نزول:

یہ آئیہ الگذین آمنو اون جاء کھر فاسِق بنیکا (الآیة) اس آیت کے زول کا دافقہ ابن کیر نے بحوالہ منداحہ یقل کی ہے کہ قبیلہ بن مصطلق کے رئیس حارث بن ضرار جن کی صاحبز ادک حضرت میمونہ بنت حارث امہات الموشین میں ہے ہیں فرماتے ہیں کہ میں رسول اللہ یکن گئی کی خدمت میں حاضر ہوا ، آپ نے جھے اسلام کی دعوت دی اور زکو قادا کرنے کا حم دیا ، میں نے اسلام قبول کیا اور زکو قادا کرنے کا افر ارکیا اور عرض کیا کہ اب میں اپنی تو م میں جا کراپی تو م کو اسلام اور اوائے زکو ق کی دعوت دوں گا ، جولوگ میری بات مان لیس گے اور زکو قادا کر ہے گئی اور آپ فلال مہینہ کی فلال تاریخ تک اپناکوئی قاصد میرے پاس جیج دیا ہی ، مگر دولید بن عقبہ کو اور کو قادا کر بی جوجائے اس کے ہردکر دوں۔

تاریخ تک اپناکوئی قاصد میرے پاس جیج دیں تاکہ زکو ق کی جورتم میرے پاس جیج ہوجائے اس کے ہردکر دوں۔

چنانچہ آنحضرت یکھ گئی نے مقررہ تاریخ پر ولید بن عقبہ بن معیط کو مصل زکو ق بناکر بھیج دیا تی ، مگر دلید بن عقبہ کوراست میں ہے خیال ہوا کہ اس کوف ہے دہ راست ہی ہو واپس خوف ہے دہ راست ہی ہو واپس کو خیال ہوا کہ اس دوانہ فرمانی تاریخ کے ادر آپ یکھ گئی کو یوں بھی دیورٹ دیدی کہ انہوں نے زکو ق دینے سا نکار کر دیا ہے ، جس پر آپ یکھ گئی نے ان پر فوج کشی کا ادادہ فرمالی ، اور فالد بن ولید فتحانش تھا گئی کہ بہ بات غلط تھی ، اور دلید فتحانش تھا گئی کی بیار سال میہ پت لگ گیا کہ یہ بات غلط تھی ، اور دلید فتحانش تھا گئی کی جانب روانہ فرمانی کی جانب روانہ فرمانی کی خوراس گئی کا ادادہ فرمالی ، اور فلید فتحانش تھا گئی کی بیات غلط تھی ، اور دلید فتحانش تھا گئی کی تیاری فرمانی بیات نکار کی کہ دیا بات غلط تھی ، اور دلید فتحانش تھا گئی کی بیات عام تھی ، اور دلید فتحانش تھا گئی کی بیات غلط تھی ، اور دلید فتحانش تھا گئی کی تیاری فرمانی ، بہر حال میہ پت لگ گیا کہ دیات غلط تھی ، اور دلید فتحانش تھا گئی کی تیاری فرمان کی بیات عدور است کی دوران گی کی تیاری فرمانی کی دوران کی کی کی بیات کیا کی کیا کہ کی بیات کا کھی کی دوران کی کی کو کی کی کھی کی دوران کی کھی کو کو کیا کہ کی کھی کی کی کھی کو کی کی کو کھی کی کھی کی کھی کی کو کہ کی کو کھی کو کو کی کھی کی کی کو کھی کو کو کی کھی کی کی کو کھی کی کو کی کو کو کھی کی کو کھی کو کھی کو کی کو کھی کی کو کھی کی کو

عدالت صحابه رَضِحَاللهُ تَعَالَا عَنْ أَكُمُ مَنْعَلَقِ الكِياجِم وال اوراس كاجواب:

بحى تبين ال يربيآيت نازل بوئي _ (معارف ملعمة م

اس آیت کا ولید بن عقبہ توکانفائنگانی کے متعلق نازل ہوتا میچے روایات سے تابت ہے اور آیت بیں ان کو' فاس ' کہا گیا ہے،

س سے بظاہر یہ معلوم ہوتا ہے کہ محابہ بیں کوئی فاس بھی ہوسکتا ہے اور بیاس مسلمہ اور متفقہ ضابطہ کے خلاف ہے کہ السط سے الله بھی عَدُول لیسی محابہ کرام سب کے سب ثقد ہیں ، ان کی شہادت پر کوئی گرفت نہیں کی جاسختی ، علامہ آلوی نے روح المعانی میں مایا کہ اس محالمہ بیں تحق المحقیق محالمہ بیں تحق ہیں ، کہ محابہ کرام وضح تحق ہیں ان سے گناہ کہ ہور علاء کے ہیں ، کہ محابہ کرام وضح تحق ہیں ، یعنی شری مرا اجاری کی زوبوسکت ہے جوفت ہے ، اور اس گناہ کی وجہ سے اس کے ساتھ وہ بی ایک محالمہ کیا جائے گاجس کے وہ محق ہیں ، یعنی شری مرا اجاری کی کے ، اور اگر کند ب ثابت ہوتو ان کی شہادت رد کر دی جائے گی لیکن اہل سنت والجماعت کا عقیدہ نصوص قر آن کی بنا ، پر یہ ہے کے گی ، اور اگر کند ب ثابت ہوتو ان کی شہادت رد کر دی جائے گی لیکن اہل سنت والجماعت کا عقیدہ نصوص قر آن کی بنا ، پر یہ ہوگا بی سے گناہ تو سرز د ہوسکتا ہے گرکوئی صحابی السان ان الملاق ان بیل بوسک محابی کی ایک صفت قد بھر ہے وہ اپنی رضا کا اعلان صرف ای کے لئے سبیں ہوگئی ، جیس کہ قاصی اور جانے ہیں کہ ان کی وفات موجبات رضاء ، الله عند محد ہودا پنی رضا کا اعلان صرف ای کے وفیل سے بیر جن کے متعلق وہ جانے ہیں کہ ان کی وفات موجبات رضاء ، بھوگا ہے ۔ (کلفی الصارہ المسلول لاہم تبد، معارف) سے تعربی جن کے متعلق وہ جانے ہیں کہ ان کی وفات موجبات رضاء ، بھوگا ہو گائی ہے ۔

کسی صحابی کو فاسق کہنا درست نہیں ہے:

گوآیت کا شان نزول حفزت ولید بن عقبہ تفخانندگانگانے کا واقعہ ہی سہی گر لفظ فاسق ان کے لئے استعمال کیا گیا ہو سے ضروری نہیں ، وجہ بیہ کہ کہ اس واقعہ سے پہلے تو ولید بن عقبہ سے کوئی ایسا کا م ہوانہ تی جس کے سبب ان کوفاسق کہا جائے ، اوراس واقعہ ہیں بھی جو انہوں نے بن مصطلق کے لوگوں کی طرف ایک نلط بات منسوب کی وہ بھی اپنے خیال کے مطابق صحیح سمجھ کرکی اگر چہ واقع میں نسط تھی اس لئے آیت فہ کورہ کا صاف اور بے خیار مطلب بیبن سکتا ہے کہ اس آیت نے قاعدہ کلیے فاسق کی خبر کے نامقبول ہونے کے متعمق بیان کیا ہے اور واقعہ فہ کورہ پراس آیت کے نزول سے اس کی مزید تاکیداس طرح ہوگئی کہ ولید بن عقبہ اگر چہ فاسق نہ جرقر اس تو ہے اعتبار سے نا قابل قبول معلوم ہوئی تو رسول القد مِلق تاکیدا نے کھن ان کی خبر پر کسی اقدام سے کریز کرکے خالد بن ولید کو تحقیقات پر مامور فرمایا تو جب ایک ثقہ اور صالح آوی کی خبر بیس قر اس کی بناء پر شبہ ہوجانے کا معاملہ یہ ہے کہ اس پرقبل از تحقیق عمل نہیں کیا گی تو فاسق کی خبر کوقول نہ کرنا اور اس پڑمل نہ کرنا اور زیادہ واضح ہے۔

(معارف)

اس آیت کے شان نزول میں ''فاسق'' کس کوکہا گیا:

زیادہ تر روایت سے تو صراحت کے ساتھ بی معلوم ہوتا ہے کہ حضرت ولید بن عقبہ مراد ہیں، حضرت امس ملہ دفعاً الناتھ الناقة النا

کو بیاصوی ہدایت دی کہ جب کوئی اہمیت رکھنے والی خبر جس پر کوئی بڑا نتیجہ مرتب ہوتا ہوتمہیں ملے تو اے قبول کر ہے یہ بید مکھلوکہ خبرلانے والاکیسا آ ومی ہے،اگروہ کوئی فاسق محض ہولیعنی اس کا ظاہر حال میہ بتار ہا ہوکہ اس کی بات اعتماد کے ں کُق نہیں ہے تو اس کی خبر پر ممل کرنے سے پہلے تحقیق کرلو کہ امر واقعہ کیا ہے؟ ایسانہ ہو کہ غلط نبی کی وجہ ہے کسی کے خلاف کوئی کارروائی ہوجائے ،اور بعد میں پشیمان ہوتا پڑے۔

شانِ نزول:

وَ إِنْ طَائِفْتَ انْ مِنْ الْمؤمنين (الآية) كسببزول مِي مغسرين في متعددوا قعات بيان فرمائ بين جن مي خوو مسلمانوں کے دوگروہوں میں باہم تصادم ہوااور کوئی بعید نہیں کہ بیسب ہی دافعات کامجموعہ سبب نزول ہوا ہویا نزول کسی ایک واقعہ میں ہوا ہواور دوسرے واقعات کواس کے مطابق پاکران کو بھی سبب نز دل میں شریک کر دیا گیا ،اس آیت کے اصل مخاطب تووہ اولواالا مراورملوک ہیں جن کو قبال وجہاد کے وسائل حاصل ہوں۔ (روح المعانی ،معارف) اور بالواسط بتمام مسممان مخاطب ہیں کہاولواالا مرکی اعانت کریں ، اور جہال کوئی امام وامیر بادشاہ نہ ہو ، دہاں تھم یہ ہے کہ جہاں تک ممکن ہودونوں کوفہماتش کر کے ترک تبال پرآ مادہ کیا جائے اورا گردونوں نہ مانیں تو دونوں ہے الگ رہے نہ کسی کی مخالفت کرےاور نہ موافقت۔

(بيان القرآن)

مسائل متعلقه:

مسلمانوں کے دوگروہوں کی باہمی لڑائی کی چندصور تیں ہیں:

🛈 اول مید کدوونوں جماعتیں امام اسلمین کے تجت ولایت ہوں 🏵 دوسرے دونوں جماعتیں امام اسلمین کے تحت ولایت ند ہوں 🍘 تیسری صورت ایک جماعت امام اسلمین کے تحت ولایت ہواور دوسری نہ ہو۔

پہلی صورت میں عام سلمانوں پرلازم ہے کہ فہمائش کر کے ان کو باجمی جنگ سے روکیں ،اگر فہمائش ہے بازندآ کیں تو امام المسلمین پراصلاح کرنا واجب ہے، اگر حکومت اسلامیہ کی مداخلت سے دونوں فریق جنگ سے باز آ مھے تو قصاص ودیت کے احکام جاری ہوں گے،اوراگر بازندآ تمیں تو دونوں فریق کے ساتھ باغیوں کا سامعاملہ کیا جائے گا،اوراگرایک بازآ گیا اور دوسرا ظلم وتعدی پر جمار ہاتو دوسرافریق باغی ہےاس کے ساتھ باغیوں کا سامعاملہ کیا جائے اور جس نے اطاعت قبول کر لی وہ فریق ے دل کہلائے گا (اور باغیوں کے احکام کی تفصیل کتب فقہ میں دیکھی جاسکتی ہے) مشاجرات صحابہ اورمسلمانوں کے باہمی تصادم كى مزيدتفصيل كے لئے بيان القرآن اور معارف القرآن كى طرف رجوع كريں اطناب كے خوف سے ترك كرويا گيا۔

يَأْتُهُ اللَّذِينَ امْنُواللَّيْنَ فَلَا يَهُ نَوْلَتُ فِي وَفُدِ تَمِيْمٍ حِيْنَ سَخِرُوا مِنْ فُقَرَاءِ المُسْلِمينَ كَعَمَّارِ وصُهَيْبِ ھ[زمَزَم بِبَلشَرن]≥

والسُّحُرِيَّةُ الاذُدِرَاءُ وَالاِحْتِقَارُ قَوْمٌ اي رجالٌ سِنكم مِنْ قَوْمِ عَلَى اَنْ يَكُونُوْ الْحَيْرا مِنْهُمْ عِبدَاللهِ وَلاِنسَاءُ سكم مِّنْ يِسَاءِ عَنِي الْهُونَ كُنُ تَحَيِّرًا مِنْهُنَ ۚ وَلَاتَلْمِزُوٓالْانْفُسُكُمْ لا تَعِيبُوا فَتُعَانُوا اي لايَعِيبُ بَعْضُكُم بَعْضًا وَلَاتَنَا بَزُوا بِالْأَلْقَالِ لَا يَدْعُو بَعْصُكُم بَعْصًا بِلَقَبِ يَكُرَهُهُ ومنه بِهِ فَاسِقُ يَا كَافِرُ بِشَ اللِّعْمُ اي المَذْكُورُ سِنَ السُّحُويّةِ والنَّمَر والتَّمَابُزِ الْفُسُوقُ بَعْدَالْإِيْمَانِ أَبِدلٌ مِنَ الاسْمِ لافَادة أَنَّهُ مِسْقٌ لِتَكُرُّره عادةً وَمَنْ لَمُبَيِّبُ مِن دى فَأُولَاكُهُمُ الْظَلِمُونَ®َيَأَيُّهُ الَّذِينَ امَنُوا اجْتَيْبُوا كَيْتُيُراقِنَ الظَّنِّ إِنَّ بَعْضَ الظَّنِ إِنَّكُمُ اى مُـوْبُهُ وهُو كَنِيرٌ كَطَنِ السُّوِّءِ بأَهُلِ الحَيْرِ مِنَ المُؤْمِنِينَ وهُمْ كَثِيْرٌ بِجَلَافِهِ بالفُسّاقِ سَهِم فَلَاأَتُم فيه فِي نَحُومًا يَطُهَرُ مِنهِم ۖ قَلَاتَجَسَّمُوا حُـدِفَ بِمهُ إِحْدَى التَّائِيلِ لَاتَتَبِعُوا عَوْرَاتِ الْمُسْلِمِينَ وَمَعَائِنَهُم بالبَحْثِ عنها ۗ **وَلَايَغْتُبُ بَعْضُكُوبَخُنَا** لَا يذكُرُهُ ىشىي ۽ يَكُرهُهُ وإنْ كَانَ فِيه لَيُحِبُّ أَحَلَكُمُّ إِنْ يَأْكُلُ لَحْمَ أَضِيهِ مَيْتًا سالنَحْ هِيفِ والتَشديدِ لَا يَحِسُ به لاَ فَكُرِهُتُمُوهُ ۚ أَيْ فَعْنِيانُهُ فِي حَيْتِهِ كَأْكُلِ لَحْمِه بَعُدَ مَمَانُهُ وَفَدْ غُرِضَ عَلَيْكُمُ النَّاسَ فَكَرَهُوا الأولَ **وَاتَّقُوااللَّهُ ا**ي عَفَانِهُ فِي الإعْتِيَابِ مِن تُتُونُوا مِنهِ إِنَّ اللَّهَ تَوَابُ فَسَ تَوْنَةِ النَّائِسِ تَرْجَيْمٌ ﴿ بِهِم يَا يَهُا النَّاسُ إِنَّا خَلَقَنْكُمْ مِنْ ذَكْرٍ وَأَنْتَى ادْمَ وحوّاءَ وَجَعَلْنَكُمْ شُعُوبًا حِمْهُ شَعْب بفتح الشّبيل وهُو اغلى طلقاتِ النّسب قَقَبَالِلَ هِي دُوْنَ الشّعُوب ويَعْدَهَا العَمَائِرُ ثم البُطُولُ ثم الافَحَادُ ثُم الفضائِلُ اجرُها، بِثالَهُ حُزِيْمَهُ شعْبٌ، كِنَانَةُ قَيْبَةٌ، قُزِيشٌ عِمَارَةٌ بكَسُر العين، قُضَيٌّ بَطَنَّ، هَاشِمٌ فَحُدِّ، الغَمَّاسُ فصيْلَةً، لِتَعَارَفُولُ خُذْفَ سنه إخْدى التَّاثَيْن اي لِيَعْرفَ بَعْضُكم بَعْضًا لا لتُناجِرُوا بعُلُو النَّسَبِ وانما المحرُ بالتَّقُوي إِنَّ ٱلْمِمَكُمُ عِنْدَ اللهِ أَتَفْكُمُ إِنَّ اللهَ عَلِيْمُ مَا يَعَالُكُ مَوَاطِبِكِم قَالَتِ الْأَعْرَابُ نَفَر سِ مَنِي اللهِ أَمَنّا صَدَفَنا بِقُلُونِنا قُلْ لَهِم لَمْرُقُومِنُوْا وَلَكِنْ فُولُوْا أَسْلَمْنَا اى الْتَذَنا طَاهِرًا وَلَمَّا اى لم يَذْخُلِ الْإِيمَانُ فِي قُلُولِكُمْ الى الان لكِنَّهُ يُتَوَقَّعُ مِنكُم قَا**نَ تُطِيْعُوااللَّهُ وَرَسُولَهُ** بالإيمان وعيره لَايَكِتَكُمْ سالهمر وتركه وبابذالِه الفًا لا يَنْقُصْكُم مِنْ أَعْمَالِكُمْ أَى س نوَابِها شَيًّا إِنَّاللَّهَ عَفُورٌ لِلْمُؤْمِنِينَ تَجِيمُ۞ بِهِم إِنَّمَاالْمُؤْمِنُونَ اي الصَّادِقُونَ في إيمَانِهِم كَمَا صُرَةِ مِه بعدُ الَّذِيْنَ أَمُنُوابِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ لَمْ يَرْبَابُوا نِهِ بِشُكُوا مِي الإيس وَجَاهَدُوَا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فَي سَيِيلِ اللَّهِ بحهَ دِهِم يَظْهَرُ صدُقُ إِيمَانِهِم أُولَاكُ هُمُ الصِّدِقُونَ۞ في إيمَانِهِم لَا مَنْ قَالُوا المَنَّا ولَمُ يُوجَد منهم غيرُ الإسُلام قُلُ لَهُمُ ٱلْتُعَلِّمُونَ الله بِدِينِكُمُّ مُصَعِف عَلِمَ بِمَعْنَى شَعْرَاي أَتشُعرُونَهُ بِمَا أَنْتُمُ عَليه في قَوْلِكم امّنا وَاللَّهُ يَعْلَمُوا فِي السَّمُوتِ وَمَافِي الْأَرْضِ وَاللهُ بِكُلِّ شَي وَعَلِيمُ ﴿ يَمُنُّونَ عَلَيْكُ أَنْ اَسْلَمُوا فِي عِيرِ قِنَال بحِلا فِ غيرِهم مِمَّن أَسْلَمَ بَعْدَ قِتَالِ مِنهِم قُلُلِاتُمُنُّوْاعَكِي إِلَى لَلْمَكُمُ مَسِصُوبٌ بِنرَعِ السَفِفِ الناء ويُقَدَّرُ قَبْلَ أَن في المَوْضِعَيْنِ مَلِ اللَّهُ يَكُنُ عَلَيْكُمْ أَنْ هَذَكُمُ لِلْإِيمَانِ إِنْ كُنْتُمْ صَلِيقِيْنَ ﴿ فِي قَوْلِكُمُ امْنَا إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ عَيْبَ السَّمُوٰتِ وَالْأَرْضُ اى مَا غَابَ

• ﴿ (مَنْزُم بِبَالْقَلْ ﴾

عورتوں کاممکن ہے کہ وہ عورتیں ان عورتوں ہے بہتر ہوں، یہ آیت وفیر بی تمیم کے بارے میں نازل ہوئی ، جبکہ انہوں نے فقرائے مسلمین کانتسنحرکیا تھا،مثلاً عمار،صہیب کا،اور تریتحقیروتذلیل کو کہتے ہیں اور آپس میں ایک دوسرے کوعیب نہ لگاؤ کہتم عیب جو کی کروتو تمہاری عیب جو کی کی جائے ، یعنی کو کی کسی کی غیب جو کی نہ کرے اور نہ کسی کو برالقب دو ، یعنی آپس میں ایک دوسرے کو ایے قب سے نہ پکاروجس کووہ نابیند کرے اور ان ہی (برے القاب) میں سے بیا فاسق یا تکافی ہے، (صفت) ایمان سے متصف ہونے کے بعد شق مذکورہ کا نام کہ وہ تنسخراور عیب جو کی اور برے لقب رکھنا ہیں گگنا براہے (آلفُسُوق) اسم سے بدل ہے،اس بات کافائدہ دینے کی وجہ سے کہ (نام بگاڑنا)عادۃ باربارہوتاہےادرگناہ صغیرہ، براصرار کی وجہ سے (صغیرہ کبیرہ ہوجاتا ہے) اوراس سے توبہ نہ کرنے والے ہی طالم لوگ ہیں، اور اے ایمان والو! بہت بدگمانیوں ہے بچویفین مانو کہ بعض بدگمانیاں گناہ ہیں تعنی گنہگار کرنے والی ہیں،اور بہ کثیر ہے،جیسا کہ مونیین اہل خیر کے ساتھ بدگمانی،اوروہ (اہل خیر) کثیر ہیں بخلاف اس برظنی کے ،موشین فساق میں تو اس برگمانی میں گناہ نہیں ہے ان گناہوں کے بارے میں جن کووہ تھلم کھلا کرتے ہیں اور کسی (کے عیب) نہ ٹٹو لا کرواور کوئی کسی کی نیبت بھی نہ کیا کرے (تَسجَسَّسُوّا) ہے ایک تا وحذف کروی گئی ہے (لیعنی)مسلمانوں کے عیوب اور رازوں کی جنتجو میں ندر ہا کرو ، اور نداس کا کوئی ایسی چیز ہے تذکر ہ کرے جس کووہ ٹاپیند کرے اگر چہوہ چیز اس کے تخفیف اورتشدید کے ساتھ ہے(یقیناً)نہیں پسند کرے گالہٰذاتم اس بات کو (بھی) ٹاپسند کرو، اس لئے کہ اس کی زندگی میں اس کی فیبت کرنااس کے مرنے کے بعداس کا گوشت کھانے کے مانند ہے، اور تمبارے سامنے ٹانی پیش کیا گیا تو تم نے اس کونا پسند کیا،تواول کوبھی ناپسند کرو،اوراللہ ہے ڈرتے رہو یعنی غیبت کے بارے میں اس کی سزاہے،اس طریقہ ہے کہ اس ہے تو بہکرو، ے شک القد بڑا تو بہ کا قبول کرنے والا ان پرمبریان ہے، لینی تو بہ کرنے والوں کی تو بہ کوقبول کرنے وال ہے، اے لوگو! ہم نے تم کوایک مرداورایک عورت سے بیدا کیا آ دم وحواءے اور ہم نے تم کوتو میں اور قبیلے بنایا شُعُوبٌ شَعْبٌ کی جمع ہے تین کے فتحہ کے ستھ ،اور وہ (مشعب) نسب کے طبقات میں سب سے اوپر ہے ،اور قبیلہ بیشعب سے نیچے ہے ،اوراس سے نیچ مما رئے ، پھربطون ہے اس سے بیچے افخا ذہے اور ان سب ہے آخر میں فصیلہ ہے ، اس کی مثال خزیمہ شعب ہے ، کنانہ قبیلہ ہے ، قریش عمارہ ہے مین کے کسرہ کے ساتھ اور تصی بطن ہے، ہاشم فخذ ہے، عباس فصیلہ ہے، تا کہتم ایک دوسرے کو شناخت کرسکو، (تَعسارَفُوا) سے ایک تاء حذف کردی گئی تا کہم ایک دوسرے کو پیچانونہ کہ عالیٰ نبی پرفخر کرواور فخر تو صرف تقویٰ کی وجہ ہے ہے اورتم میں سب سے زیادہ شریف وہ ہے جوسب ہے زیادہ متقی ہے اللہ تعالیٰ تمہارے ہارے میں خوب جاننے والا اورتمہارے طبقات نسب سے بوری طرح ہاخبر ہے، بنواسد کے دیہانیوں کی ایک جماعت کہتی ہے کہ ہم ایمان لے آئے، یعنی ہم نے اپنے ≤[زمَزُم بِبَلِثَهِ إِ

قال الشاعر:

قلوب سے تقدریت کردی آب ان سے فرمائے کہتم ایمان تو نہیں لائے کیکن یوں کہوہم اسلام لائے نیعیٰ ظاہری طور پر تابع فر مان ہو گئے کیکن ابھی تک تمہارے قلوب میں ایمان داخل نہیں ہوا، کیکن تم ہے اس کی تو قع رکھی جاستی ہے تم اگراللہ کی اور اس کے رسول کی ایمان وغیرہ میں فرما نبر داری کرنے لگو گے تو وہ تمہارے اعمال میں ہے لیعنی ان کے تواب میں ہے سیجھ بھی کم نہ کرے گا (یا لِنکُمْ) جمز واور ترک جمز و کے ساتھ ہے اور جمز و کوالف سے بدل کر یعنی تمہارے اجر کو کم نہ کرے گا، ب شک اللہ تق می مومنین کو معاف کرنے والا اوران پر رحم کرنے والا ہے ،مومن تو وہ ہیں جوالقد پر اوراس کے رسول پر ایمان لائے لیتنی اپنے ایمان میں سیجے ہوں جبیبا کہ بعد میں اس کی صراحت فر مائی پھرانہوں نے ایمان میں شک نہ کیا اور اپنے مالوں ہے اوراپنی جانوں سے اللہ کے راستہ میں جہاد کیا ان کے جہاد ہے ان کے ایمان کی صدافت طاہر ہوتی ہے (اپنے دعوائے ایمان میں) یہی لوگ سچے ہیں نہ کہ وہ جن کی طرف ہے سوائے طاہری اتباع کے پچھ نہ پایا گیا، آپ ان سے کہد دیجئے ، کیا تم اللہ کو اپنی وینداری کی خبردیتے ہو تُعلِّمُونَ عَلِم کامُصعَف ہے جمعنی شَعَوَ لیمن کیاتم اس کوآ گاہ کرتے ہواس بات ہے جس پرتم اپنے تول آمَــنّــا میں ہو اورالقد ہراس چیز ہے جوآ سانوں اور زمین میں ہے واقف ہے بیلوگ بغیر قبال کے اسلام لانے کا آپ پر احسان جمّاتے ہیں بخلاف دوسروں کے کہ وہ قال کے بعد اسلام لائے آپ کہہ دیجئے اپنے اسلام لانے کا مجھے پراحسان ندرکھو (إسلام كُفر) نزع فافض باء كى وجه سے منصوب ب، اور دونول جگہوں پر أن سے پہلے باء مقدر ب بلكه (ورحقیقت) الله كاتم پر احسان ہے کہ اس نے تم کوامیمان کی مدایت بخشی ، بشرطیکہ تم اپنے قول آمَانیا میں تیجے ہو،اللہ تعالیٰ آسانوں اور زمین کی سبخفی چیز وں کو جانتا ہے لیعنی زمین وآسان میں جو چیزیں پوشیدہ ہیں اور اللہ تعالیٰ تمبارے سب اعمال کوبھی جانتا ہے یاءاور تاء کے ساتھان میں ہے اس پر کوئی فئی تخفی نبیں ہے۔

جَِّفِيقَ فَيْرِكِنِ فِي لِيَّهُمُ الْحِلْقَالِيَّا لِمَا فَالْمِلْ فَالْمِلْ لَا فَالْمِلْ فَالْمِلْ

فِيْغُولْكُنَّ : لَا يَسْخُورُ مضارع منفى واحد مُدكر منائب (س) سَخُورٌ تُصْتُحا كرنا، مُدالْ كرنابه فِيُولِكُمْ: ألاذُدِرَاءُ وَالْإِخْتِقَارُ مِعْطَفَ تَفْسِري بِتَحْقِيروتذ ليل كرتا-فِيُولِكُنَى : قوم اى رِجَالٌ، رِجَالٌ عاشاره كرديا كه قوم اسم جمع بِ بمعنى رحالٌ چونكه قومٌ، نِسَاءٌ كمقابله من واقع ب اس لئے اس سے بہال مردمراد میں ،اورلغت عرب میں بھی قوم ، رجال کے معنی میں استعمال ہوا ہے۔

اقَـوْمٌ آلُ حِصَدِ الْمُ نِسَاءُ وَمَــا اَدْرِي وَلَسْتُ اَحِـالُ اَدْرِي شاعری مراد'' قوم''ے''رجال'ہیں،اوررجال کوقوم اس لئے کہا گیا ہے کہ وہ قبو امُون علی النِّساء ہیں،ابر ہامطلقا ----- ≤ (زَمَزُم پِبُلشَرِنَ ﴾ ---- مردوں اورعورتو کوقوم کہنا، جبیبا کے قوم فرعون اور قوم عاد وغیرہ ، تو وہ لبطور تبعیت ہے ا**صالحةٌ توم رجال ہی کو کہا جاتا ہے۔** چَوْلَنَىٰ : عَسى أَنْ يكونَ جمله متانفه ب بيان علت كے لئے اور عَسٰى فاعل كى وجہ بے خبر سے متعنی ب_

جِوْلَيْ : اللَّمْوُ، لَمْزُ اشاره كردن يحِشم، أنكه وغيره ياشاره كرنا_

فِيْ فَلْنَى : لَا تَعْدِبُوا فَتُعَابُوا مِهِ لَا تَلْمِزُوا أَنْفُ كُمْ كَاتُوجِيهِ بِينَ الرَتْم دوسرول كاعيب تكالو كَتُولوكَ تمهاراعيب تكاليس ك، الطرح كوياكم خودا پناعيب تكالوك، يد من صَعِف صُعِف كَي كَتْبِل عدي المِس طرح آب يَا الله الله الم لَاتَسْتُوا آبانكم، اين والدين كوكانى مت دور صحابية عرض كيايار سول الله اين آباءكوكون كانى ديكاآب فرمايا: الرتم سنس کے آباءکوگالی دو گے تو وہ تہمارے آباءکوگالی دے گاءاس طرح گویا کہتم اپنے آباءکوگالی دینے والے ہوئے۔

هِ فَكُولَكَ الله يعيبُ بَعْضُكم بَعْضًا يه لَاتَ لْمِزُوْ النَّفُسَكُمْ كَا دوسري توجيد بم مسرعلام الرائي كر بجائة فرماتے تو زیادہ بہتر ہوتا۔ (صادی)

نام نه بگاژو ـ

فَيْ وَلَكُنَّ ؛ اى السمد كور مِنَ السُّخريَةِ وَاللَّمْزِ والتَّنَابُز مَعْرَعَام كامقصداس عبارت كاضافه سے ايك سوال كا جواب دینا ہے۔

مَيْنُواكَ، الْاسْمُ يرالف لام عبد كاب جوجمع يرولائت كرتاب اورمرادا ساء ثلثه فدكوره يعنى السُنحوية، اللَّمز، التَّنَابُز بي لبذا مناسب تفاكدال سم مفرولان كي بجائ الاساء جمع لات_

جَوَّ لَبْعِ: اسم يهان ذكرمشبورك معنى مين ب جوك عرب كقول طاد اسمة عيمشتق ب،اساء ثلثة المذكور كمعنى مين ب بنداالاسم كامفردلا ناسيح باوراسم بمرادذ كراورشهرت ب ندمعروف اسم بمقابل حرف وتعل اورند بمعنى علم اوربيد سمو ي مشتق ہے جس کے معنی بلند ہونے کے ہیں۔

يَجُولَكُ ؛ بِسُسَ الإسْمُ الْفُسُوقُ بسُسَ تَعَلَىاضَ ، آلاسْم الكافاعل الفُسُوقُ ، الاسم ـ بدل ب مغرعلام في ال تركيب كواختياركيا بالصورت مين مخصوص بالذم محذوف جوگاء اى هُوَ. زياده واضح تركيب بيد به كه اَلْفُسُوقْ ومخصوص بالذم قرار دیا جائے ، ندکورہ جملے کی مشہور تر کیب رہے کہ اَلفُسُو قُ مبتداء ہے،اور بینسَ الإسھُرخبر مقدم ہے۔

فَوْلَنَى : لِافَادَةِ أَنَّهُ فِسْقُ لِنَكُرُدِهِ عَادَةً لِينَ مَر بيوغيره جوندكور بوئ الرچة كناه صغيره بي مكر جب صغيره براصرار ہواورا ک کاار تکاب بار بار کیا جائے تو وہ گناہ کبیرہ بن جاتا ہے،اور عام طور پر عاد**ۃ ایبا ہی ہوتا ہے ک**ہانسان ان القاب کو بار

فِيَّوْلِينَ : لَايَحِسُ به بيمنيتًا كي صفت بيعن مرده جو كرمحسون بين كرتا ، لين اگراس كوكوئي كھائة واس كواحساس بيس بوتا ، مفسر عدم نے لایئے جس بہ کا اضافہ فرما کراس بات کی طرف اشارہ فرمادیا کہ میت اور مغتاب لہ (جس کی غیبت کی جائے)کے

- ≤ [زمَزَم بِبَالشَرِز]» -

درمیان وجہ شبہ عدم علم ہے جس شخص کی بس پشت غیبت کی جاتی ہے اس کو بھی غیبت کاعلم نہیں ہوتا ، اور مردہ کا گوشت کھانے سے بھی مردہ کوعلم واحساس نہیں ہوتا گویا کہ عدم علم میں دونوں مشترک ہیں۔

فِيَوْلَنَى اللَّهُ مُصَعَّف عَلِمَ لِين تعليم اعلام كمعن من بجوكمتعدى بدومفعول بدوسرامفعول ديسنكم برسك طرف ہاء کے ذریعہ متعدی ہے۔

فِيْ فَلَنَّى اللَّهِ اللَّهِ عَلَيْكُمْ الايمان شرطب، الكاجواب محذوف م فَلِلْهِ الْمِنَّةُ عليكم. فِيَوْلِكُ ؛ في الموضعين يعي أن من يهل باء مقدر ب دوجكمول من أيك أنْ أسْلَمُوْ الم اور دوسرى أن هذا كُمْر اى بأن اَسْلَمُوا وِبأَنْ هَدَاكُمْرٍ.

ێٙڣٚؠؙڔۅؖؾؿ*ڽڂ*ڿ

يَنَأَيُّهَا الَّالِيْنَ الْمَنُوا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِنْ قَوْمٍ (الآية) گذشة دوآيول مِن مسلمانوں كى باجمى الزائى كے متعلق ضرورى ہدایات دینے کے بعداہل ایمان کو بیاحساس دلا یا گیا تھا کہ دین کے مقدس ترین رشتہ کی بناء پر وہ ایک دوسرے کے بھائی ہیں، اب آ گے کی دوآ پنوں ہیں ان بڑی بڑی برائیوں کے سد باب کا تھم دیا جار ہاہے جو بالعموم ایک معاشرے میں لوگوں کے باہمی تعلقات کوخراب کرتی ہیں، ایک دوسرے کی عزت پر حملہ ایک دوسرے کی دل آ زاری، ایک دوسرے سے بدگمانی اور ایک د وسرے کے عیوب کا بحسس ، درحقیقت بہی وہ اسباب ہیں جس ہے آپس کی عداوتیں پیدا ہوتی ہیں اور پھر دوسرے اسباب کے ساتھ مل کران ہے بڑے بڑے فتنے رونما ہوتے ہیں ، اس سلسلہ میں جوا دکام آگے کی آینوں میں دیئے گئے ہیں اور ان کی جو تشریحات احادیث میں ملتی ہیں ان کی بناء پر ایک مفصل قانون ہتک عزت مرتب کیا جاسکتا ہے، ایک صحف دوسرے مخص کا استهزا واور تمسخراس وقت كرتاب جب ده خودكواس سے بہتر اوراس كوائيے سے حقير اور كمتر سمحتنا ہے، حالا نكداللہ كےنز ديك ايمان اور عمل کے لحاظ ہے کون بہتر ہے اور کون نہیں؟ اس کاعلم صرف اللہ کو ہے اس لئے خود کو بہتر اور دوسر ہے کو کمتر سمجھنے کا کوئی جواز ہی مبیں ہےاس آیت کے شان نزول میں متعددوا قعات ذکر کئے گئے ہیں۔

شانِ نزول:

لایسىخىرقوم من قوم (الآية) صاحب معالم نے کہا ہے کہ بيآيت ثابت بن قيس كے بارے ميں تازل ہوئى، بير او نیجا سنتے تھے اس لئے آپ ﷺ کے قریب جیٹھتے تھے تا کہ آپ کی بات س سکیں ،ایک روز ان کی فجر کی نماز کی ایک رکعت چھوٹ گئی اس کے بعد جب مجلس میں پہنچے تو صحابہ اپنی اپنی جگہ لے چکے تھے، ٹابت بن قیس جب نماز پڑھ کرآئے تو کہنے لگے تسفسے وا (جگہدو)لوگوں نے ان کوجگہ دیدی تو ہیکودتے پھاندتے قریب پہنچ گئے ،صرف ایک شخص اپنی جگہ ہے نہ ہٹا لیس وہی شخص حضور کے اور ٹابت کے درمیان میں تھا، ٹابت نے مٹھونکا لگا کرنام پوچھا، اس نے اپنا نام بتایا اور کہا مجھے < (مَزُمُ بِبَالثَرُهِ ﴾

جب ، جگہل گئی و ہاں بہیٹے ہوں، چونکہاس مخض کوایام جاہلیت میں کسی عورت کی نسبت عار دلائی جاتی تھی تو ٹابت نے کہا تو فلائی کا بیٹا ہے اس نے شرم سے سرجھ کالیا تو مذکورہ آیت نازل ہوئی ، ضحاک نے کہا کہ بی تمیم کے بارے میں نازل ہوئی ، به لوَّ فَقُراء صحابه بريمنت منته عنه حيس كه ممار وَقِعَانَفَهُ مَعْمَالَ فَعُوَاللَّهُ مُعْمَالِكُ وصحابه بريمنت منته عنه الله ومن الله والمناقفة المناقفة الله والمناقفة الله والمناقفة الله والمناقبة المناقبة المناقبة والمناقبة والمناقبة الله والمناقبة الله والمناقبة الله والمناقبة الله والمناقبة الله والمناقبة الله والمناقبة المناقبة الله والمناقبة المناقبة ا رَضِّ كَانَتُهُ تَعَالِينَ وغيره ، اس يربية بيت نازل مولى _

حضرت انس نے فر مایا کہ امہات المونین کے حق میں نازل ہوئی ،از واج مطہرات میں ہے کسی نے حضرت امسلمہ کو کوتاہ قامت (ٹھکنی) کہددیا تھا،ای طرح کسی نے حضرت صفید کو یہودن کہددیا،اس آیت میں اس کی ممانعت آئی کہ تہیں کیا معنوم کے نفس الامر میں اور خاتمہ کے اعتبار ہے کون بہتر ہے؟ (خلاصة التفاسیر) میسب ہی واقعات نزول کا سبب ہو سکتے ہیں،ان میں کوئی تعارض نہیں ہے۔

يهلا واقعه:

کہتے ہیں کہ بیا خلاقی بیاری عورتوں میں زیادہ ہوتی ہے،اس لئے عورتوں کا بطور خاص الگ ذکر کر کے انہیں بھی بطور خاص اس سے روک دیا گیا ہے ورنہ عام طور پر مرووں کے بارے بیں حکم ذکر کر سے عورتوں کوان کے تابع کر دیا جا تا ہے۔

مردوں اورعورتوں کا الگ الگ ذکر کرنے کا بیمطلب نہیں ہے کہ مردوں کے لئے عورتوں کا اورعورتوں کے لئے مردوں کا مٰداق اڑانا جا تزہے، دراصل جس وجہ ہے دونوں کا ذکرا لگ الگ کیا گیا ہے وہ بیہ ہے کہ اسلام سرے سے مخلوط سوسائٹی کا قائل نہیں ہے، ایک دوسرے کی تضحیک عموماً بے تکلف مجلسوں میں ہوا کرتی ہے، اسلام میں اس کی گنجائش رکھی ہی نہیں گئی کہ غیرمحرم مردعورتوں کی بحس میں جمع ہوکر آئیں میں بنسی زاق کریں ،اس لئے اس بات کوایک مسلم معاشرہ میں قابل تصور نہیں سمجھا گیا ہے۔ وَلَا تَسْلُمِزُوا النَّفُسَكُمْ (الآية) السلمزُ، العيب، ابن جرير في عبك المز باته، آكه زبان اوراشاره عيه وتاب اورهمز صرف زبان ہی سے ہوتا ہے۔ افتح الندی

لَا تَسْلَابُوُوا (تفاعل) يه نَبْرُ مَ عَشْتَق ب، اور نَبَوْ حركت كماته معنى لقب (جمع) انباز ، القاب لَقَب كي جمع ب، اصلی نام کے علاوہ جونام رکھ لیا جائے اس کولقب کہتے ہیں یہاں برالقب مراد ہے آلات فیصر رُوّا اَنْ فَصَد مُحراب ہی ہے جیسا کہ لَا تَـفُّتُكُوا أَنْفُسَكُمْ يَعِيٰ اين آپُوْلَ نه كرومطلب بيه كه آپس ميں نه توعيب جو كى كرواور نه آپ اور نه آپس ميں ععنه زني کرو، آئے۔ زے مفہوم میں طعن دستنیج کےعلاوہ متعدد دوسرے مفہوم بھی شامل ہیں،مثلاً چوٹیس کمنا، پیبتیاں کسنا،الزام دھرنا، اعتراض جرانا ،عیب چینی کرنا ، تھلم کھلا زیرلب یا اشاروں ہے کسی کونشانہ ملامت بنانا ، بیسب افعال چونکه آپس کے تعلقات کو بگاڑتے ہیں اور معاشرہ میں فساد ہریا کرتے ہیں اس لیے ان کی بھی ممانعت کر دی گئی ہے، تیسری چیز جس ہے آیت میں ممانعت کی گئی ہے وہ کسی کو ٹرے قلب سے پکارتا ہے جس ہے وہ تاراض ہوتا ہوجیہے کسی کوشکڑ ا،لولا ،اندھا،گنجا وغیرہ کہہ کرپکارنا۔

حضرت ابوجبیرہ انصاری نے فرمایا کہ بیآیت ہمارے بارے میں نازل ہوئی ہے کیونکہ جب رسول القدظ اللہ علیہ نے اس کو عدر لائے تو ہم میں اکثر آدمی ایسے تھے جو بوگوں نے اس کو عدر لائے تو ہم میں اکثر آدمی ایسے تھے جو بوگوں نے اس کو عدر دلانے اور تحقیر وتو بین کے لئے مشہور کر دیئے تھے، آپ کو بیہ بات معلوم نہیں تھی بعض اوقات وہی نا پسندیدہ نام کیکر آپ اس کو خطاب کرتے تو صی بہ عرض کرتے یا رسول اللہ وہ اس نام سے ناراض ہوتا ہے، اس پربیآیت نازل ہوئی۔ (معارف)

حضرت ابن عباس نے فرمایا کہ آیت میں تنابز بالالقاب سے مراد ہے کہ سی شخص نے کوئی گناہ یا براعمل کیا ہواور پھراس سے تائب ہوگیا ہواس کے بعد پھراس کواس کے اس برے عمل کے نام سے پکارنا، مثلاً اے چور، اے زانی، اے شرابی وغیرہ کہنا، جس نے ان افعال سے تو بہ کرلی ہو، اس کواس پچھلے عمل سے عار دلا نا اور شخفیر کرنا حرام ہے، حدیث شریف میں آیا ہے کہ جو شخص کسی مسلمان کوالیے گناہ پر عار دلائے کہ جس سے اس نے تو بہ کرلی ہے تو اللہ نے اپنے ذمہ لے لیا کہ اس کواسی گناہ میں مبتلا کر کے دنیا و آخرت میں رسوا کرے گا۔ (قرطبی)

بعض القاب كالشثناء:

بعض لوگوں کے ایسے نام مشہور ہوجاتے ہیں کہ فی نفسہ وہ ہرہے ہیں ،گر وہ بغیراس لفظ کے پہچانے ہی نہیں جُاتے تو اس کو اس نام سے ذکر کرنے کی اجازت ہے بشرطیکہ ذکر کرنے والے کا مقصداس کی تحقیر اور تذلیل نہ ہوجیے بعض محدثین کے نام کے ساتھ ،اعرج ، یا احد ب ،یا آئمش وغیر ہمشہور ہے۔

حضرت عبداللد بن مبارک رَضِّمَ کلاللهٔ تعالیٰ ہے دریافت کیا گیا کہ اسانید صدیث میں بعض ناموں کے ساتھ کچھا ہے القاب آئے ہیں مثلاً حمیداللّٰہ ویل ،سلیمان اعمش ،مروان اصفر وغیر ہتو کیا ان الفاظ کے ساتھ ذکر کرنا جائز ہے؟ آپ نے فر ، یا کہ جب تمہارا قصداس کا عیب بیان کرنے کا نہ ہو بلکہ اس کی بہیان پوری کرنے کا ہوتو جائز ہے۔ (فرطبی)

یا این اگیف الگذیت آمنو البختین استیرا مِن الطّنِ (الآیة) اس آیت میں تین باتوں کوترام قرار دیو گیا ہے، اول ظن، دوسرے تبحس، تیسرے غیبت، پہلی چیز لیعن ظن کے معنی گمانِ غالب کے ہیں، اس کے متعلق قرآن کریم نے اول تو بیفر ، بیا کہ بہت گم نول سے بچا کرو، پھراس کی وجہ یہ بیان فر مائی کہ بعض گمان گناہ ہوتے ہیں جس سے معلوم ہوا کہ ہر گمان گناہ ہیں ہوتا۔

اس تلم كو بمجھنے کے لئے ہمیں تجزید كر كے و مجھنا چاہئے كه كمان كى كتنى قتميں ہیں اور ہرا يك كی اخلاقی حيثيت كيا ہے۔

گرن کی ایک قتم وہ ہے کہ جواخلاق کی نگاہ میں نہایت پیندیدہ اور دین کی نظر میں مطلوب مجمود ،مثلًا اللہ اوراس کے رسول اور اہل ایمان کے ساتھ نیک گمان رکھتا ،اسی طرح اپنے میل جول رکھنے والوں اور متعلقین سے حسن ظن رکھنا ، جب تک کہ بدگر نی کی کوئی معقول وجہ نہ ہو۔

---- ﴿ (فَرَامُ بِبَاشَلِ ﴾

دوسری شم کا گمان وہ ہے جس سے کام لینے کے سواعملی زندگی میں کوئی چارہ نہیں ہے، مثلاً عدالت میں اس کے بغیر کا منبیں چل سکتا کہ جوشہاد تیں حاکم عدالت کے سامنے پیش ہوں ان کے مطابق جانچ کروہ غالب گمان کی بناء پر فیصلہ کرے۔

گمان کی تیسر کاتم وہ ہے کہ جواگر چہ برگمانی ہے گرگناہ نہیں ہے، مثلاً کسی شخص یا جماعت کی سیرت یا کردار میں اس کے معاملات اور طور وطریقوں میں ایسی واضح علامات پائی جاتی ہوں کہ جن کی بنیاد پر وہ حسن ظن کا مستحق نہ ہوا دراس سے معامل کی محلول کے سینے معقول وجوہ موجوہ ہوں ایسی صورت میں بیضروری نہیں کہ لامحالہ اس سے حسن ظن ہی رکھے لیکن اس برگمانی کی آخری حدید ہے کہ اس کے خلاف محفل گمان کی بناء پراس کے خلاف کوئی کاروائی کرنا درست نہیں۔

امام ابو بکر جصاص رَبِّعَهٔ کلاللهُ تَعَالَیٰ نے احکام القرآن میں ایک جامع تفصیل اس طرح نکھی ہے کہ ظن کی چارفشمیں ہیں: ① حرام ④ مامور بداور واجب ④ مستحب اور مندوب ⑥ مباح اور جائز۔

ظن حرام:

یہ کہ اللہ تعالیٰ کے ساتھ بدگانی رکھے کہ وہ مجھے عذاب ہی دے گایا مجھے مصیبت ہی میں جتلار کھے گا ،اس طرح کہ اللہ کی مغفرت اور رحمت سے گویا مایوس ہے، حضرت جابر تفخانفنگنگانگ سے روایت ہے کہ رسول اللہ عظیمی نے فرمایا لکن مغفرت اور رحمت سے گویا مایوس ہے، حضرت جابر تفخانفنگنگانگ ہے دوایت ہے کہ رسول اللہ علیہ اللہ کے ساتھ اچھا لگا یہ مور اللہ کے معالی اللہ کے ساتھ اللہ کے ماتھ اس کا اللہ کے ساتھ اللہ کے اس کا اللہ کے ساتھ اور بوا ہے کہ آپ بیٹھ کے اس کے معلوم ہوا کہ اللہ کے ساتھ حسن طن فرض اور بدگمانی حرام بندے کے ساتھ ویہ بی ہوں جیسادہ مجھ سے گمان رکھے ،اس سے معلوم ہوا کہ اللہ کے ساتھ حسن طن فرض اور بدگمانی حرام ہوتے ہیں ان کے متعلق بلاکی قوی ولیل کے بدگمانی ہو سے ،اس طرح ایسے نیک مسلمان جو ظاہری حالت میں نیک معلوم ہوتے ہیں ان کے متعلق بلاکی قوی ولیل کے بدگمانی کرنا حرام ہے، حضرت ابو ہریرہ تفخانفلائنگ سے روایت ہے کہ آپ نے فر مایا یہ سے مقار کا لیکن المطن فیات المحدیث یعنی بدگمانی سے بچوکیونکہ بدگمانی جھوٹی بات ہے۔

ظن واجب:

اور جوکام ایسے بیں کہ ان پر کسی جانب پر کمل کرنا شرعا ضروری ہے اور اس کے متعلق قرآن وسنت میں کوئی دلیل واضح موجود نبیس، وہاں پر ظن غالب پر عمل کرنا واجب ہے، جیسے باہمی مناز عات ومقد مات کے فیصلے میں تُفتہ گوا ہوں کی گوا ہی کے مطابق فیصلہ کرنا کیونکہ حاکم اور قاضی جس کی عدالت میں مقدمہ دائر ہے اس پر اس کا فیصلہ وینا واجب اور ضروری ہے،

اوراس معاملہ کے متعلق کوئی نص موجود نہیں ، ندقر آن میں اور ندھدیث میں تو ثقد آدمیوں کی گواہی پراس کو مل کرنا واجب ہے ، اگر چداس بات کا امکان ہے کہ ثقد گواہ نے اس وقت جھوٹ بولا ہو ، اس لئے اس کا سچا ہو نا صرف ظن غالب ہے ، اس طرح جہاں سمت قبلہ معلوم نہ ہواور وہاں کوئی ایسا آدمی یا علامت موجود نہ ہو کہ جس سے قبلہ کا بیتی علم ہو سکے ایسے موقع پر ایسے ظرح جہاں سمت قبلہ کا بیتی عالم کا منا کے شدہ مال کا صاب بھی ظن غالب پر ہوتا ہے بینی غالب گمان سے انداز ہ کر کے اس کی قیمت لگا کر صاب دلوایا جاتا ہے۔

ظن مباح:

یہ ہے کہ مثلاً کسی کونماز کی رکعتوں میں شک ہو جائے کہ تمین پڑھی ہیں یا جار؟ تو اپنے ظن غالب پڑمل کرنا جا ئز ہے اور اگر وہ ظن غالب کوچھوڑ کرامریقینی پڑمل کر ہے یعنی تمین رکعت قمر ار دیکر چوتھی پڑھ لے ،تو بہ جا ئز ہے۔

ظن مستحب!

ظن مستحب ومندوب یہ ہے کہ ہر مسلمان کے ساتھ نیک گمان رکھے کہ اس پر تواب ملتا ہے۔

وَلَا تَحَسُّسُوْا الْنِح اس آیت میں تجسس ہے مع کیا گیا ہے، تجسس کسی کے عیب کی تلاش اور سراغ لگانے کو کہتے ہیں اور اس میں دوقراء تیں ہیں ،ایک لات جسس او اجیم کے ساتھ ،اور دوسری لات حسسسوا حاء کے ساتھ ، دونوں لفظوں کے معتی قریب قریب ایک ہی ہیں ،اخفش نے کہا ہے کہ جس چیز کولوگوں نے آپ سے چھپیا ہواس کی تلاش وجہتی کو تجسس کہتے ہیں اور حسس بالحاء مطلقا تلاش وجہتی کو کہتے ہیں۔

بیان القرآن میں حضرت تھانوی رئے ممثلالله مقالات کے تکھا ہے کہ چھپ کرکسی کی باتیں سندنا یا خود کوسوتا خاہر کرکس کی باتیں سندنا بھی تجسس میں داخل ہے، البت اگر کسی ہے مصنرت بینچنے کا اختیال ہوتو اپنی یا دوسر ہے کسی مسلمان کی حفاظت کی غرض ہے مصنرت پہنچانے والے کی خفیہ تدبیروں اور ارادوں کا تجسس کرنا جائز ہے، اس کے علاوہ جائز نہیں، ایک مومن کا بیاکا مہیں کہ دوسروں کے جن حالات پر پردہ پڑا ہوا ہے اس کی کھود کر بدکر ہے اور پردے کے پیچھے جھا مک کر یہ معلوم کرنے کی کوشش کرے کہ کسی میں کیا عیب ہے اور کس کی کوئی کمزوریاں چھپی ہوئی ہیں، لوگوں کے بی خطوط بڑھنا لوگوں کی خفیہ باتی کان لگا کر سندنا غرضیکہ کسی بھی طریقہ سے ذاتی معاملات کوئٹو لٹا ایک بڑی بدا خلاقی کی بات ہے جس سے طرح طرح طرح کے فیا دات رونما ہوتے ہیں، اس لئے آنخضرت پیٹوٹٹٹٹانے اپنے خطبہ ہیں تجسس کرنے والوں کے متعلق فر مایا:

يَا مَعْشَرَ مَنْ آمَنَ بِلِسَانِهِ وَلَمْ يَدْخُلِ الإِيْمَانُ قَلْبَهُ لَاتَتَّبِعُوْا عَوْرَاتِ المُسْلِمِينَ فَاِنَهُ مَنِ اتَّبَعَ عَوْرَاتِهِم يَتَّبِعُ الله عَوْرَتَهُ وَمَنْ يَتَّبِع عَوْرَتَهُ يَفْضَحهُ فِي بَيْتِهِ.

٠ ﴿ (مَكُزُمُ بِسُكُ الشِّيلَ ﴾ -

اے وہ لوگو! جوزبان سے ایمان لائے ہو گر ابھی تمہارے دلوں میں ایمان نہیں اتر اہے، مسلمانوں کے پوشیدہ حدیدہ عددت کی تھوج نہ لگایا کرو کیونکہ جو شخص مسلمانوں کے عیوب ڈھونڈنے کے دریے ہوگا اللہ اس کے عیوب کے دریے ہوجائے اسے اس کے گھر میں رسوا کر کے چھوڈ ہے گا۔

شان نزول:

یہ آئیکہ النگاس اِنگا تحکم مِنْ فَکُو وَ اُنظی یہ آیت فَحَ مَدے موقع پراس وقت نازل ہوئی جبکہ رسول اللہ علیہ النگاس اِنگا النگاس اِنگار کے معلمان ہم میں ہوئے سے ان میں سے الک نے کہ کہ اللہ کا شکر ہے کہ میر ہوا کو کی اوا ان کا حکم دیا تو قریش مکہ جوابھی تک مسلمان ہمیں ہوئے سے ان میں سے ایک نے کہ کہ اللہ کا شکر ہے کہ میر ہوالد پہلے ہی وفات پا گئے ان کو بدون و کھنا نہ پڑا اور صارت بن ہشام نے کہا کہ میر کو اللہ کے جو مجد حرام میں اذان دے، ابوسفیان نے کہا کہ میں کھی ہوں گا تو آسان کا ما لک اس کو خبر کردے گا، چنا نچہ جرائیل امین تشریف لائے اور کیونکہ مجھے خطرہ ہے کہ اگر میں پچھ کہوں گا تو آسان کا ما لک اس کو خبر کردے گا، چنا نچہ جرائیل امین تشریف لائے اور آخر کردے گا، چنا تھی جبرائیل امین تشریف لائے اقرار کرلیا اس کی جنر در حقیقت ایمان اور تقویٰ ہے جس سے تم لوگ خالی ہو اور بلال آراستہ ہیں، اس لئے وہ تم سے افضل ہیں۔ (مظہری معادف)

قالتِ الْاغْرَابُ الْمَنَّا سابقہ آیت میں بتلایا گیا ہے کہ اللہ تعالیٰ کے نزدیک عزت وشرافت کا معیار تقویٰ ہے جوایک باطنی چیز ہے اللہ تعالیٰ بی اس کو جانتے ہیں کسی شخص کے لئے تقدّس کا دعویٰ جائز نہیں ، نہ کورۃ الصدر آیات میں ایک خاص واقعہ کی بنء پر بتلایا گیا ہے کہ ایمان کا اصل مدارقابی تقید این پر ہے اس کے بغیر محض زبان سے خودکومومن کہنا تھے نہیں ہے۔

شانِ نزول:

امام بغوی رئے کمان کا تقیال نے اس آیت کے نزول کا سبب ایک روایت کے مطابق بیان کیا ہے کہ قبیلہ بنی اسد کے چند آدی
مدید طیبہ میں قحط شدید کے زمانہ میں آپ کی خدمت میں حاضر ہوئے ، یہ لوگ ول سے قو مومن سے نہیں محض صدق ت سینے
کے لئے اپیان کا اظہار کیا اور چونکہ وہ اسلام کے آداب واحکام سے بھی واقف نہیں تھے، انہوں نے مدید طیبہ کے
راستوں میں غلاظت و نجاست پھیلادی اور بازاروں میں اشیاء ضرورت کے نرخ بڑھاو سے ،اور حضور بلاتا ہی س منے
ایک تو جھوٹا ایک ن مانے کا دعوی اور دوسرے آپ کودھوکا دیتا جا ہا، تیسرے آپ یہ احسان جنالیا کہ دوسرے لوگ تو ایک زمانہ
تک آپ سے برسر پیکار رہے آپ کے خلاف جنگیں لڑیں، پھر مسلمان ہوئے اور ہم بغیر کسی جنگ کے آپ ک پات

آ کر مسلمان ہو گئے اس لئے ہماری قدر کرنی چاہئے، یقینا یہ با تیس شان رسالت میں ایک طرح کی گئا خی بھی تھیں کہ اپ مسلمان ہوج نے کا احسان آپ پر جنلا یا اور مقصوداس کے سوا کچھ نہ تھا کہ مسلمانوں کے صدقات ہے اپنی مفلسی دور کریں، اور اگریہ واقعی اور سپچے مسلمان ہی ہوجاتے تو رسول اللہ ﷺ پر کیا احسان تھا خود اپنا ہی نفع تھا اس پر آیات نہ کورہ نازل ہوئیں جن میں ان کے جھوٹے دعوے کی تکذیب اوراحسان جنلائے پر ندمت کی گئی ہے۔ (معارف)

فَیل کَیْرِ نُوفِونُ وَلَکُن فَوْلُوا اَسْلَمْنَا چونکدان کے دلوں میں ایمان نہ تھا صرف ظاہری افعال کی دجہ ہے ایمان کا جھوٹا دعویٰ کر رہے بتھے، اس لئے قرآن نے ان کے ایمان کی ٹئی کر کے بیفر مایا کرتم ہارا آمسنسا کہنا تو جھوٹ ہے، ہم زیادہ سے زیادہ اسلمنا کہدیکتے ہو کیونکد اسلام کے لفظی معنی ظاہری افعال میں اطاعت کرنے کے ہیں اور بیلوگ اپنے دعوائے ایمان کوسچا ٹا بت کرنے کے ہیں اور بیلوگ اسلمانوں جیسے کرنے گئے تھے اس لئے ظاہری طور پر ایک درجہ اطاعت ہوگئ تھی جس کی وجہ سے لغوی معنی کے اعتبار سے اصلمنا کہنا تھا۔

اسلام اورایمان ایک ہیں یا پھھفرق ہے؟

اوپری تقریر سے معلوم ہوگیا کہ اس آیت ہیں اسلام کے لغوی معنی مراد ہیں اصطلاحی معنی مراد ہیں ہاس لئے اس آیت سے اسلام اور ایمان ہیں اصطلاحی فرق پر کوئی استدلال نہیں کیا جا سکتا اور اصطلاحی ایمان اور اصطلاحی اسلام اگر چہ مفہوم ومعنی کے اعتبار سے الگ الگ ہیں کہ ایمان اصطلاح شرع میں تقعہ بیت قبلی کو کہتے ہیں بینی اپنے دل سے اللہ تعالی کو تو حیداور سول کی مسالتہ کو سے اللہ تعالی کو حیداور سول کی مسالتہ کو سیا منا اور اسلام نام ہے ظاہری افعال میں اللہ اور اس کے رسول کی ظاہری اطاعت کا ایمی شریعت میں اس وقت تک تقعہ بیت قبلی معتبر نہیں ، جب تک کہ اس کا اثر جوارح کے اعمال وافعال تک نہ پہنچ جائے ، جس کا ادنی درجہ یہ ہے کہ زبان سے کلمہ اسلام کا قرار کرے ، اس طرح اسلام اگر چہ ظاہری اعمال کا نام ہے لیکن شریعت میں وہ اس وقت تک معتبر نہیں جب تک کہ دل میں تقعہ بیتی دو ور نہ وہ نفاق ہے ، مطلب یہ کہ ظاہری معنی کے اعتبار سے اس وقت تک معتبر نہیں جب تک کہ دل میں تقیہ اور نہ وہ نفاق ہے ، مطلب یہ کہ ظاہری معنی کے اعتبار سے ان دونوں میں حلازم ہے کہ ایمان اسلام کے بغیر عندالشرع معتبر نہیں ۔



وري مرسري من من من المعن المعن المركزية المراكزية المركزية المركز

سُورَةُ قَ مَكِّيَةً إِلَّا وَلَقَدَ خَلَقَنَا السَّمُوتِ، الأية، فَمَدَنِيَّةٌ خَمْسٌ وَّارَبَعُونَ ايَةً.

سورة قَ عَلى ہے مگر و لَقَدْ خَلَقْنَا السَّمْوَاتِ (الآیة)، مدنی ہے پینتالیس ہیتیں ہیں۔

نغض رِّزُقًا لِلْعِبَادِ مَ فَعُولُ لِهِ وَأَحْيَيْنَابِهِ بَلْدَةً مَّيْتًا لَيسْتَوى فيه الـمُدَكُرُ والمُؤنَّثُ كَذُلِكَ اي مِثْل هذا الإخيَاءِ ٱلْخُرُونِجُ ۞ مِنَ التُّبُورِ فَكَيْفَ تُنْكِرُونَهُ وَالإسْتِعهَامُ للتَّقْرِيرِ والمَعْني أنَّهُم نَظَرُوا وعَلِمُوا ما ذُكِرَ كَذَّبَتُ قَبْلُهُمْ قَوْمُنُوْجَ تَانِيتُ الفِعُل لِمعْني قَوْم قَالَصُهُ الرَّبِيُّ هِي بِغُرُّ كَانُوا مُقِيمِينَ عليها بِمُواشِيهِمُ يَعْبُدُونَ الأَصْنَامَ ونَبِيُّهُم قِيلَ حَنْظَلَةُ بِلُ صَفُوان وقيلَ عَيرُه وَتُمُودُ ۗ قَـومُ نسالح وَعَادُ قـومُ هُودٍ وَّفِرْعُونُ وَانْحُوانُ لُوطٍ ﴿ قُوَّاصُحْبُ الْأَيْكَةِ اى الْغَيْصَةِ قُومُ شُعَيْبِ وَقُوْمُ أَنَّجُ الله صَلك كَان بِاليَمِ اَسُلَم ودَعَا قُوْمَهُ الى الاسْلامِ فَكَذَّنُوهُ كُلُّ مِنَ المذكُورِينَ كُذُّبَ الرُّسُلَ كَفُرَيْشِ فَحَقَّ وَعِيدٍ® وَجَبْ نُزُولُ العَدَابِ عَنِي الخَمِيعِ فَلَا يَضِيقُ صَدُرُكَ مِن كُفُرِ قُرَيشِ بِكَ ٱفْعَيِينَابِالْخَلْقِ الْأَوَّلِ اي لم نَعْيَ به فَلَا نَعْبي ﴾ بالإعادةِ بَلُهُم فِي أَبْسِ شَكِ مِّنْ تَحَلِّق جَدِيْدٍ ﴿ وَهُو الْبَعْثُ

ت اس اپن مراد کواللہ ہی بہتر جانتا ہے، قسم قرآن کریم کی کہ کفار مکہ جمعہ بیلان فیلی لائے، بلکدار بات پرتعجب ہوا کدان کے پاس انہی میں ہے ایک ڈرانے والا یعنی انہی میں ہے ایک رسول جوان کے زندہ ہونے کے بعدنار (جہنم) ہے ڈراتا ہے آگیا سوکا فرکہنے لگے بیڈراوا عجیب بات ہے، کیا جب ہم مرکئے اور مٹی ہوگئے؟ ہم کولوٹا یا جائے گا، دونوں ہمزوں کی تحقیق اور دوسرے کی تسہیل اور دونوں صورتوں میں ان کے درمیان الف داخل کر کے، بیروالیسی انتہائی درجہ بعید (بات) ہے ،زمین ان میں ہے جو کچھ کھا جاتی ہے وہ ہمیں معلوم ہے اور ہمارے یا سمحفوظ کرنے والی کتاب ہے اور وہ لوح محفوظ ہے جس میں تمام اشیاء مقدرہ موجود میں بلکہ انہوں نے حق یعنی قرآن کو جب کہ وہ ان کے پاس آیا جھوٹ کہالیں وہ ا یک انجھن میں پڑ گئے لینی مضطرب کرنے والی حالت میں ،کبھی تو انہوں نے ساحروسحر کہااور بھی شاعر وشعر کہااور بھی کا ہن اور کہانت کہا، کیاانہوں نے اپنی عقلوں کی چٹم عبرت ہے آ سانوں کونبیں دیکھا، جب انہوں نے بعث (بعدالموت) کاا نکار کیا ، حال ہے کہ وہ ان کے او پر ہے کہ ہم نے اس کو بغیر ستونوں کے کس طرح بنایا ، اور ہم نے ان کو ستار دل ہے زینت مجنشی ، اور ان میں کوئی رخنہ عیب دار کرنے والا شگاف نہیں ہے،اور کیاانہوں نے زمین کونبیں دیکھا السے المسماء کے کل پرعطف ہے کہ ہم نے اس کو پانی کی سطح پر کس طرح پھیلایا ،اور ہم نے اس پر پہاڑ جمائے جواس کوتھا ہے ہوئے ہیں اور ہم نے اس میں برقتم کی خوشنما نباتات اگائی کہ اس کی خوشنمائی ہے مسرت حاصل کی جاتی ہے آئکھیں کھو لئے کیلئے اور نصیحت حاصل کرنے کے لئے مفعول لہ ہے بینی ہم نے بیصنعت آنکھیں کھو لئے اور نقیحت حاصل کرنے کے لئے کی ، ہراس بندے کے لئے جو ہماری اطاعت کی جانب رجوع کرنے والا ہے،اور ہم نے آسان ہے مبارک لینی کثیر البرکت پانی برسایا بھراس ہے باغ اگائے اور کاٹے جانے والی بھیتی کا غلداور تھجوروں کے بلندو بالا درخت (منسِقاتِ) حال مقدرہ ہے جن کے خوشے تہ بہتہ ہیں لیعنی جو تہ بہ تة آپس میں جے ہوئے ہیں بندوں کوروزی دینے کے لئے می مفعول لہ ہے اور ہم نے یانی سے مردہ زمین کوزندہ کر دیا(مَیْنَا) میں

نہ کراورمؤنٹ دونوں برابر ہیں، ای طرح لینی ای زندہ کرنے کے ماندقبروں سے نکلناہوگا، پھرتم اس کا کیونکرانکارکت ہواور (افک کے دین کو یقیناد کی مااور ہجھا، اور ابن سے پہنے قوم نوح نے فعل کی تا نیٹ قوم کے معنی کی وجہ ہے ہے اور زس والوں نے بیا کواب تھا جہاں بیا ہے چو پایوں کے ساتھ بودو ہاش رکھتے تھے اور بتوں کو بوجتے تھے کہا گیا ہے کہ ان کے بی حظلہ بن صفوان تھے اور کہا گیا ہے کہ اس کے علاوہ تھے، بودو ہاش رکھتے تھے اور بتوں کو بوجتے تھے کہا گیا ہے کہ ان کے بی حظلہ بن صفوان تھے اور کہا گیا ہے کہ اس کے علاوہ تھے، اور صالح کی قوم شمود نے اور بود کی قوم عاد نے اور فرعون نے اور لوط کے بھائی بندوں نے اور ایک دوالوں نے لینی شعیب کی قوم جھ ڈی والوں نے ، اور تج کی قوم نے وہ یمن کا بادشاہ تھا جس نے اسلام قبول کر لیا تھا اور اس نے اپنی تو مہوا سے کی دعوت دی تھی ، مگر قوم نے اس کو جھٹا دیا نہ کورہ تمام قوموں نے قریش کے ماند رسولوں کی تکذیب کی تو سب پر عذا ب کی دعوت دی تھی ، مگر قوم نے اس کو جھٹا دیا نہ کورہ تمام قوموں نے قریش کے ماند رسولوں کی تکذیب کی تو سب پر عذا ب محقق ہوگیا، یعنی سب پر عذا ب کانزول محقق ہوگیا لہذا قریش کی انداد وبارہ پیدا کرنے ہے بھی نہ تھکیں گے ، بلکہ بیلوگ نی پیدائش کے بارے میں شک میں جی اور (نی پیدائش) بعث ہے۔

عَجِقِيق الْمِنْ الْمِينَانِ اللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الل

قِین کی جہور کے نز دیک قاف سکون کے ساتھ ہے اور شاذ قراءۃ میں کسرہ بنتہ اور ضمہ پر بنی بھی پڑھا گیا ہے۔ صا

فِيُولِكُمْ)؛ مَا آمَنَ كُفَّادِ مَكَّة بِمُحَمَّد صلى الله عليه وسلم شارح عليه الرحمه في ذكوره عبارت محذوف مان كراشاره كرديا كدية م كاجواب محذوف ب-

فَیُولِی ؛ بل عَبِعِبُوا أَن جساءَ هم المنع جواب تنم سے بیاع اض شرکین مکہ کے احوال شنیعہ کو بیان کرنے کے لئے ہ مطلب بیہ ہے کہ وہ ندصرف بیک مجمد ظِیْ اللّٰ اللّٰ بیان نہیں لائے بلکہ اس سے بڑھ کر بیکدائی میں کے ایک مخص کارسول بن کرآ جانا ان کے لئے تعجب خیز اور اچنھے کی بات تھی۔

فَيْوَلْنَى : غاية البُعد لينى عقل وامكان سے بہت دور بے كه كلنے مرف نے كے بعد انسان دوبارہ زندہ ہوجائے۔

قِیُوَلْنَی ؛ مَسرِیْجِ صفت مشہ ہے ، مادہ مَسرَجٌ البھی ہوئی بات ، غیریقینی کی کیفیت ، متزلزل حالت ، لیبنی بیشر کین مکہ قرآن اور رسول کے بارے میں تذبذ ب کا شکار ہیں آئیس خود کسی ایک بات پر قرار نہیں ہے ، بھی آپ کوساحراور قرآن کو سحراور آپ بیٹھیٹیٹا کوشاعراور قرآن کوشعراور بھی آپ بیٹھیٹیٹا کوکا ہن اور قرآن کو کہانت کہتے ہیں۔

﴿ (فَرَمْ بِبَاللَّهُ إِ

فِيْوَلْكُ : أَفَلَمْ يَنْظُرُوا جمزه ، محذوف يرداخل إلقريع إرت بيه أعَمُوا فَلَمْ يَنْظُرُوا الى السّماءِ.

فِيُولِكُ : كائنة شارح علام في كائنة تخذوف ال كراشاره كروياكه فَوْقَهُمْ و السَّمَاءُ عال إلى -

قِوْلَكُ يَ إِلَى السَّماءِ، يَنْظُرُوا كامفعول مونى كي وجد يحلا منصوب --

فِيُولِكُ : كَيْفَ بَنَيْنَهَا، كَيْفَ مفعول مقدم ب،اورجمله بَنَيْنَهَا، سمَاءً برل بـ

يَجُولَكَ ﴾: وَالْآدُ صَ كَالِسِي السَّمَاءِ كَلِ يرعطف ٢٠٠١ وروَالْآدُ صَ تَعَلَى مَذ وف مَدَ ذُنَا كي وجدت بعي منصوب بوسكتا ي جس كتفير ما بعد كالعل كرد باب، اى مَددن االارْضَ مدَدْنَاهَا الصورت مِن ما أَصْهِرَ عامله على شريطة التفسير كيبيل سي وكار

يَجُولِكُمْ ؛ اَلزَّرْعُ مفسرعلام في الزرع كوى ذوف مان كراشاره كردياكه الحصيد صفت بالزرع موصوف كوحدف كرك صفت کواس کے قائم مقام کردیا ہے اور حصید جمعنی محصوقہ ہے یعنی وہ بھیتی جس کی شان کثنا ہوجیے گندم، جووغیرہ۔ يَجُولَكُهُ: وَالنَّخُلَ بنسِفْتٍ، بَاسِقَات، النخل ـ عال مقدر إى قَدَّر اللَّه لهَا النُّسُوق اس لِح كه عال اور ذوالحال کاز ماندا بک ہوتا ہے حالانکہ نَعْمُ اِنعات (اگنے) کے وقت ہاسِقات (طویل) نہیں ہوتے بعد میں طویل ہوتے ہیں۔ يَيْكُوْإِلْنَ، نَخُولُ ذوالحال مفرد ہے اور بَامِيقاتِ حال جمع ہے، حالا نكه حال اور ذوالحال مِن مطابقت ضروري موتى ہے۔ جَوُلُ الْبِيْ اللَّه منافع كثيره اورنهايت دراز مونى كى وجدت قائم مقام جمع كے ہے۔

يَوْ لَكُونَ ؛ لَهَا طَلْعٌ نَصَيْدٌ بِهِ الرنحل يه حال موتو حال مترادف باورا كرباسفاتٍ كَصْمير ع حال موتو حال متدا فعد بـ

فَيُولِكُ : نضِيد صغت مشهر بمعنى منفود اسم مفعول كقاموا تدبدت جماموا

هِ فَكُولِكُ ﴾ : يَسْتُوى فِيْهِ المذكر والمؤنث العمارت كالمقصدا يك اعتراض كاجواب ب، اعتراض بيب كه مَيْتًا، بَلْدَةً کی صفت ہے بلدہ مؤنث ہے اور میتنا صفت ذکر ہے حالانکہ موصوف صفت میں مطابقت ضروری ہے۔

جِهُ لَيْنِيْ عَيْقًا مِين مُدكراورمؤنث دونول برابر بين لبذا حيتًا كاصفت واقع بوناورست بي مُكراس جواب مين نظر باس کے کہ فیعیل کا وزن مذکر ومؤنث میں برابر ہوتا ہے اور میٹنا، فیعیل کے وزن پڑئیں ہے،اس کا سیح جواب ہے کہ بسل قدة

مکان کے معنی میں ہے۔

قِيَّوْلَكُمُ : أَلْاسْتِفْهَامَ للتقرير، صَحِي يتما كمفرعلام الاستفهام للانكار والتوبيخ فرماتـــ هِ وَلَهُ ﴾ : والمعنى أنَّهُمْ نظرُوا وعَلِمُوا شارح كى يعبارت ذائدادر بحل به ال لئے كداگروه و يكھتے اور بجھتے توايمان لے آتے گرابیانہیں ہوا۔ (حاشیہ حلالین وصلوی)

فِيُولِكُم ؛ لمعنى قوم أي بمعنىٰ أُمَّةٍ.

قِوْلَى ؛ اصحاب الرّس، رَسُ كوال، امام بخارى نے رس كمتى معدن كے كئے بين اس كى جمع رساس بنائى ہے۔ قِوْلَنَى : عَبِيْنَا (س) عَيى يَعَىٰ عَيَّا عَهِمْ تَعَكَ كَءَ عَاجَزْ مُوكَدَ

ح [نِعَزَم پِدَالتَهْ إِ

ؾٙڣٚؠؗڒ<u>ۅۘ</u>ڗۺٛڕؙڿ

سورهٔ ق کی خصوصیات:

سورہ کی میں بیشتر مضامین آخرت اور قیامت اور مُر دول کو زندہ کرنے اور حساب و کتاب سے متعلق ہیں ،اور سورہ حجرات کے آخر میں بھی ان بی مضامین کا ذکر تھا، اس سے دونول سورتول کے در میان مناسبت بھی معلوم ہوگئی۔

سورهٔ ق کی اہمیت:

سورہ ق کی ایک خصوصیت اور اہمیت ہے کہ آپ اس سورت کونماز جمعہ کے خطبہ دعیدین ہیں اکثر تلاوت فرہ بیا کرتے تھے،
ام ہشام ہنت حارث کہتی ہیں کہ میرامکان رسول اللہ فیقٹ کی مکان کے بہت قریب تھا، دوسال تک ہمار ااور رسول اللہ فیقٹ کی اس مشام ہنت حارث کی تھا، فرماتی ہیں کہ مجمعے سورہ تی یا وہی اس طرح ہوئی کہ ہیں جمعہ کے خطبوں میں اکثر آپ کی زبان مبارک سے اس سورت کوسنا کرتی تھی ،حضرت جابر ہے منقول ہے کہ آپ فیقٹ کی نماز میں بکثر ت سورہ تی تلاوت فرہ تے تھے۔

کیا آسان نظرآ تاہے؟

اَفَلَمْ يَنْظُرُوا إِلَى الْسَماءِ سے بظاہر بیشبہ وتا ہے کہ آسان نظر آتا ہے اور مشہور بیہ کہ بینلگوں رنگ جونظر آتا ہے، بیہ ہوا کا رنگ ہے، گراس کی نفی کی بھی کوئی دلیل نبیس اس لئے کہ ہوسکتا ہے کہ یہی رنگ آسان کا بھی ہو، اس کے علاوہ آیت میں نظر سے مراد نظر عقلی یعنی غور وفکر کرنا بھی مراد ہوسکتا ہے۔

آپ مِلْقَافِظَةً كَا بعثت برمشركين مكه كوتعب:

قرآن کی تئم جس بات پرکھائی گئی ہے،اسے تو بیان نہیں کیا گیا اس کے ذکر کرنے کے بجائے بچ میں ایک لطیف فلا چھوڑ کر آگے کی بات، ''بُلْ'' سے شروع کر دی گئی ہے،آ دمی ذراغور کر سے اور اس لیس منظر کو بھی نگاہ میں رکھے جس میں یہ بات فر مائی گئی ہے ہوتو اسے معلوم ہوجائے گا کہ قتم اور بسل کے درمیان جو فلاء چھوڑ دیا گیا ہے اس کا مضمون کیا ہے ؟ جس بات کی قتم کھائی گئی ہے وہ یہ ہے کہ اہل مکہ نے محمد فیلی گئی ہے انکار کی معقول بنیاد پر نہیں کیا ہے بلکہ اس سراسر غیر معقول بنیا و پر کیا ہے کہ ان کی اپنی بی جنس کا ایک بشرادر ان کی اپنی بی قوم کے ایک فرد کا خدا کی طرف سے قاصد اور پیغیبر بن کے آجانا ان کے برد کی سخت قابل تعجب بات تھی ،اس تشریح سے معلوم ہوتا ہے کہ اس آجت میں قرآن کی قتم اس بات پر کھائی گئی ہے کہ محمد میں اور ان کی رسالت پر کھار کا تعجب ہے جا ہے۔

دوسراتعجب:

ان کی عقل میں یہ بات نہیں اتی تھی کہ انسان کے مرفے اور ریزہ ریزہ ہونے کے بعد جب کہ اس کے اجزاء منتشر ہوجا کیں گئی کی بات تھی اس سے تو بیلاز منہیں آتا کہ اللہ ہوجا کیں گئی کی بات تھی اس سے تو بیلاز منہیں آتا کہ اللہ کا علم اور اس کی قدرت بھی تنگ ہوجائے ان کے استعجاب کی دلیل بیتھی کہ ابتداء آفر بنش سے قیامت تک مرفے والے بے شار انسانوں کے جسم کے اجزاء جوز مین میں بھر بھر بھرتے چلے جا کیں گے ، ان کو جمع کر تاکسی طرح ممکن نہیں ہے ، لیکن واقعہ بیسے کہ ان میں سے ہر جزء جس شکل میں جہاں بھی ہے اللہ ہرا وراست اس کو جا نتا ہے ، اور مزید ہرآں اس کا پورار کارڈ اللہ کے دفتر میں محفوظ کیا جا رہا ہے جس سے کوئی ایک ذرہ بھی چھوٹا ہوانہیں ہے ، جس وقت اللہ کا تھم ہوگا ہی وقت آٹا فاٹا اس کے فرشح میں رہ کرانہوں نے دنیا کی زندگی میں کام کیا تھا۔

یہ آ بت بھی منجملہ ان آیات کے ہے جن میں اس بات کی صراحت کی گئے ہے کہ آخرت کی زندگی نہ صرف یہ کہ ایک ہی جسمانی زندگی ہو گی جیں اس و نیا میں ہے ، بلکہ جسم بھی ہر خض کا وہی ہوگا جواس د نیا میں تھا ، اگر حقیقت یہ نہ ہوتی تو کفار کی بات کے جواب میں یہ کہنا بالکل بے معنی تھا کہ زمین تہارے جسم میں سے جو کچھ کھاتی ہے وہ سب ہمارے کم میں ہے اور ذرہ فررہ کارکار ڈموجود ہے ، جو ذات ایسی علیم وبصیر ہے اور جس کی قدرت آئی کامل اور سب چیزوں پر حاوی ہے اس کے متعلق رہ تجب کرنا خود قابل تعجب ہے ، ما تَنْفُصُ الاَدْ صُ کی رہ تفییر حضرت ابن عباس تفکی اللہ تھا اور جمہور مفسرین رَجِمُ الله مُعَالَدٌ سے منقول ہے۔

(بحرمحیط)

كفار مكه تذبذب اوربي يقيني كاشكار تنصة:

آ کے حق تعالیٰ کی قدرت کاملہ کابیان ہے جوآ سان اور زمین اور ان کے اندر پیدا ہونے والی بڑی بڑی چیزوں کی تخلیق کے حوالہ سے کیا گیا ہے اس میں آسمان کے متعلق قرمایا و مَسَا لَهَا هِنْ فُوُوْج بہاں آسمان سے مراد پوراعالم بالا ہے، جسے انسان اپنے اوپر چھایا ہواد کھتا ہے جس میں دن کوسورج چمکتا ہے اور رات کو جانداور بے شارتارے جیکتے نظر آتے ہیں،

. ه (مَزُم بِهَالشَهِ عَ

جسے " دمی بر ہند آنکھ ہی سے دیکھے تو حیرت طاری ہوجاتی ہے، لیکن اگر دور بین نگالے تو ایک ایسی وسیع اور عریض کا مُن ت ا سکے سامنے آتی ہے جو نا پیدا کنار ہے ، کہیں جسے کہیں ختم ہوتی نظر نہیں آتی ، ہماری زمین سے لاکھوں گنا بڑے سیارے ا سکے اندر گنبدوں کی طرح گھوم رہے ہیں ، ہمارے سورج سے ہزاروں گناروش تارے اس میں چیک رہے ہیں ، ہمارا یہ پورانظام متسی اس کی صرف ایک کہکشال کے ایک کونے میں پڑا ہواہے، تنہا اس ایک کہکشال میں ہمارے سورج جیسے کم از کم ارب دوسرے تارے (نوابت) موجود ہیں اوراب تک کاانسانی مشاہرہ الیں الیں دی لا کھ کہکشا وں کا پیتہ دے رہاہے، ان لا کھوں کہکشاؤں میں سے ہماری قریب تزین ہمسایہ کہکشاں اتنے فاصلہ پر واقع ہے کہ اس کی روشنی ایک لا کھ ۸۶ ہزارمیل فی سیکنڈ کی رفتار ہے چل کروس لا کھ سال میں زمین ﷺ پہنچتی ہے، بیتو کا ئنات کے صرف اس حصے کی وسعت کا حال ہے جو' ب تک انسان کے علم میں اور اس کے مشاہدہ میں آپکی ہے، خدا کی خدائی کس قدروسیتے ہے ہم اس کا کوئی انداز ہنبیں کر سکتے ،اس عظیم کا کنات ہست و بود کو جوخدا وجود میں لایا ہےاس کے بارے میں زمین پررینگنے والا بیے چھوٹا سا حیوان ناطق جس کا نام انسان ہے اگر بیتکم نگائے کہ وہ اسے مرنے کے بعد دوبارہ پیدائبیں کرسکتا توبیاس کی اپنی ہی عقل ک تنگی ہے، کا سنات کے فالق کی قدرت اس سے کیے تنگ ہوجائے گی۔ (ملکیاتِ جدید ملعضا)

قوم نوح عَالِيَّةِ لَاهُ طَالِمَةُ لَاهُ طَالِمَةً كَانَ

كَدُّبَتُ قَبْلَهُ مُ قَوْمٌ نوح سابقة آيات من كفاركى تكذيب رسالت وآخرت كاذكر تفا، جس سے رسول الله والما الله الم پہنچنا طاہرہ،اس آیت میں حق تعالی ہے آپ کی سلی کے لئے پچھلے انبیاء کیہم السلام اوران کی امتوں کے حالات بیان کئے ہیں كه هر پیغمبر کومتنگبرین و کفار کی طرف سے الیم ایز ائیں چیش آتی ہیں ، بیسنتِ انبیاء ہے، اس سے آپ شکسته خاطر نه ہوں ، قوم نوح عَلَيْجَلَا وَلَيْتُكَا وَلَيْتُ مِن مَنْعَدُ وَجُكُهُ آيا ہے حضرت نوح عَلَيْجَلا وَلِيْتُلا وَلِي سوسال تك اپنى قوم كى اصلاح كى كوشش كرتے رہے تو م کی طرف سے نہ صرف انکار بلکہ شم کی ایذ ائیں چہنچی ہیں۔

اصحاب الرَّس كون لوك بير؟

رس، عربی زبان میں مختف معنی میں آتا ہے مشہور معنی کیے کنوئیں کے ہیں، اصحاب الرس سے قوم شود کے باقی ماندہ لوگ مراد ہیں جوعذاب کے بعد ہاتی رہ گئے تھے ضحاک وغیرہ مفسرین نے ان کا قصہ ریکھاہے کہ جب حضرت صالح عَلافِقَالاَ وَاللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّ کی قوم پرعذاب آیا توان میں سے حیار ہزارا آدمی جوحضرت صالح عَلْمَتَلَا اللَّهُ اللّ ا پنے مقام سے منتقل ہوکر ایک مقام پر جس کو اب حضر موت کہتے ہیں جا کر مقیم ہو گئے، حضرت صالح عَلَیْجَلَا وَاللّٰهُ بھی ان کے ساتھ تھے،ایک کنوئیں پر جاکر بیلوگ تھہر گئے اور بہبل صالح علیہ کا انتقال ہوگیا،ای وجہ ہے اس مقام کوحضرموت کہتے ہیں، پھران کی نسل میں بت پرسی رائج ہوگئی اس کی اصلاح کے لئے حق تعالیٰ نے ایک نبی بھیجا جس کو انہوں نے قتل کر ڈ الا ،اس - ﴿ (وَمُزَمُ بِهُ لِشَنْ اِ ﴾ ———

کے بعدان پر خدا کاعذاب آیاان کا کنوال جس پران کی زندگی کا انتھارتھا وہ برکار ہو گیا،اور نمارتیں ویران ہو گئیں،قر آن کریم نے اس کا ذکراس آیت میں کیا ہے وَبِی فیس مِ مَعَطَّلَةٍ وَقَصْرٍ مَشِیّدٍ لیعن چشم عبرت والوں کے لئے ان کا برکار پڑا ہوا کنوال اور پختہ ہے ہوئے محلات ویران پڑے ہوئے عبرت کے لئے کافی ہیں۔

اصحاب الايكه:

اسکة گفیجنگل اور جھاڑیوں کو کہتے ہیں بیلوگ ایسے ہی مقام پرآباد تھے،حضرت شعیب علیفتلافالیکا ان کی طرف نبی بناکر بھیجے گئے تھے،ان کی توم نے تافر مانی کی بالآخر عذاب الٰہی سے تباہ وہر باد ہوئے۔ (معارف الغرآن)

قوم تبع:

تُنگِ یمن کے بادشاہوں کالقب ہے جس طرح کہ قیصر وکسری روم وفارس کے بادشاہوں کالقب ہے اس کی ضروری تشریح سور وَ دخان میں گذر چکی ہے۔

وَلَقَدُ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ وَنُعْلَمُ حَالٌ بِتَفْدِيرِ نَحْنُ مَا مَصْدَريَّةٌ تُؤْمِّيوسُ تُحَدِّثُ بِهُ البَاءُ زَائِدةٌ او للتُّعُدِيّةِ وَالنَّسِمِيرُ لِلإنْسِانِ لِ**نَصُّهُ ۚ وَنَعُنَ اَقْرَبُ إِلَيْهِ** بِالْعِلْمِ صُ**نْ جَبْلِ الْوَيْدِ**® الاضَافَةُ لِللَّبَانِ وَالوَرِيُدَانِ عِرُقَان لصَفُحَتَى العُنُق إِنَّ نَاصِبُه اذْكُرُ مُقَدِّرًا يَتَكَفَّى بَاخُذُ ويُثبتُ الْمُتَكَفِّينِ المَلَكَان المُوَكِّلان بِالإنسان ما يَعْمَلُه عَنِ الْيَمِيْنِ وَعَنِ الشِّمَالِ منه قَعِيْدُ اى قَاعِدَان وهو مُنْبَتَدَأْ خَبَرُه ما قَبْلَهُ مَايَلْفِظُ مِنْ قَوْلِ الْالْكَيْهِ لَقِيْبٌ حَافِظُ عَتِيَيُّا ﴿ حَاضِرٌ و كُلِّ منهما بمعنى المُثَنَّى وَجَالَتُ سَكُّرُةُ الْمَوْتِ غَمُرَتُهُ وشِدُتُهُ بِالْحَقَّ بِن امْر الاَجْرَةِ حَتَّى يَرَاه المُنكر لها عِيَانًا وهُو نَفْسُ الشِّدَّةِ ذَلِكَ اي المَوْتُ مَكَّلَّتَ مِنْهُ تَحِيَّدُ ۞ تَهرُبُ وتفُزَعُ **وَنَفِحْ فِي الصَّوْرِ لِللَهُ عِنْ ذَٰلِكَ ا**ى يَـومُ النفُخ يَوْمُ الْوَعِيْدِ ﴿ لِللَّكُفَّارِ بالعَذَابِ وَجَاءَتْ فيه كُلُّ نَفْسٍ الى المَحْشَر مُّعَّهُكُمَّا إِنَّى مَلَكَ يَسُوقُها اليه وَّشِّهِيدُا وَشُهِدُ عليها بِعَمَلها وهُو الايدي والارْجُلُ وغيرُها ويقال لِلكَافِر لَقَلْ كُنْتَ فِي الدُّنْيَا فِي تَعْفَلَةٍ مِنْ هَلَا النَازل بك اليَوم فَكَتَفْنَاعَنْكَ غِطَلَةً أَزَلْنَا غَمُلَتَكَ بمَا تُشَاهِدُهُ اليَومَ فَبَصَرُكِ ٱلْيَوْمَرَحَدِينَدُ اللَّهِ تَدْرَكُ به مَا أَنْكَرْتَهُ فِي الدُّنيا وَقَالَ قَرِينُهُ المَلَكُ المُوَكَلُ به هَٰذَامَا ۖ أَى الَّذِي لَدَيَّكَ عَتِيدُهُ حَاضِرٌ فَيُقَالُ لِمَالِكِ ٱلْقِيَّا فِي جَهَنَّمَ اى ألْقِ أَلْقِ او أَلْقِينُ وبه قَرَأُ الحَسَنُ فَأَبُدِلَتِ النُّونُ أَلِفًا كُلَّكُفَّا إِعَنِيْدٍ ﴿ مُعَانِدِ لِلحَقِ مَّنَّا عَ لِلْخَدِرِ كَالزكوة مُعَتَدٍ ظَالِم مُرنيب ﴿ شَاكِ في دينِه إِلَّذِي جَعَلَ مَعَ اللهِ الْعَالَحَر مُنتَدَأً ضَمَّ وَالشَّرُط خَبَره فَٱلْقِيلَةُ فِي الْعَذَابِ الشَّادِيدِ تَفْسِيرُهُ مِثْلُ مَا تَقَدَّمَ <u>قَالَ قَرِيْنُهُ</u> الشَيطانُ رَبِّنَامَا **الطَّغَيْنَهُ** اَضُلَلْتُه **وَلَكِنْكَانَ فِي صَّلْلِ بَعِيْدٍ ۞** فَدَعَوْتُه فَاسْتَحَابَ لِي وَقَالَ هُو اَطُعَانِي

مُ عاله لى قَالَ تعالى لَا تَخْتَومُوْ الْكَتَّ اى ما ينْفعُ الخِصَامُ هُنَا وَقَدْقَدُّمْتُ الْكَلْمُ فى الدُنيا بِالْوَكِيْدِ فَ بِالغَذَابِ فَرِ الاحره لو لم تُؤسنُوا ولا بُدَ بِنَهُ مَالْيَبَدُّلُ يُغَيَّرُ الْقَوْلُ لَدَى فى دلك وَمَا اللَّهِ الْعَبِيدِ فَى فَاعَذَبُهُم بعير بَنِمُ عَلَيْهُم بعير عَلَيْ مَعْدى دى طُلْم لَقُولِه لاطُنم اليؤم ولا مفهُومَ له.

ترجيب ؛ اورہم نے انسان کو پيدا کيا اور ہم اس کے دل ميں نفس کے وسوسہ ڈالنے کو بھی جانتے ہيں (مُسف لَمُ نے کُن کی تقدیر کے ساتھ حال ہے، (بِ ہِ) میں باءزائدہ ہے یا تعدید کے لئے ہے،اور (بِ ہِ) کی تعمیرانسان کی طرف لوٹ ربی ہے اور ہم انسان کے علم کے اعتبار ہے اس کی شدرگ سے بھی زیادہ قریب ہیں (حب السورید) میں اضافت بیانیہ ہے،وَ رینے ان گردن کی دونوں طرف دور کیس ہیں،اور جب اخذ کر لیتے ہیں اور لکھ لیتے ہیں دواخذ کرنے والے اس ے عمل کود وفر شتے جوانسان پرمقرر ہیں ،انسان کے دائیں جانب اور بائیں جانب ہیٹے ہوئے ہیں (اِد) کا ناصب اذکر مقدر ب (قَعِيد) بمعنی قاعدان ہے، بیمبتداء ہاس کا ماقبل اس کی خبر ہے (انسان) کوئی لفظ منہ سے نہیں تکال یا تامگر یا اس کے پاس ایک بہان حاضر ہوتا ہے (فَعِید اور عَتِید) میں سے برایک تثنیہ کے معنی میں ہے اور موت کی بے ہوٹی آخرت کی حقیقت کیکر آئیجی یعنی موت کی بیہوٹی اور شدت کو (لیکر آئیجی کی کہ جو آخرت کامنکر ہے وہ بھی اس کو تھلم کھلا دیکیج لے گا،اور وہ امرآخرت نفس شدت ہے، یہ وہی موت ہے جس سے تو بھا گنا تھا اور ڈرتا تھا،اور بعث کے لئے صور میں پھونکا جائے گا اور یہی پھو نکنے کا دن کفار کے لئے وعید کا دن ہوگا اور اس وعید کے دن ہرنفس محشر کی طرف اس طرے آئے گا کہ اس کے ساتھ ایک ہانگنے والا ہوگا لیعنی فرشتہ ہوگا جواس کومیدان محشر کی طرف ہا تک کرلائے گا ، اور ایک گواہ ہوگا جواس کے خلاف اس کے اعمال کی گوا ہی دے گا اور وہ ہاتھ پیر وغیرہ ہیں ،اور کا فرے کہا جائے گا ، دنیامیں بلاشبہ تو آج کے دن تیرےاوپر نازل ہونے والی اس مصیبت سے غفلت میں تھالیکن ہم نے تیرے سامنے سے پر دہ ہٹادیا یعنی تیری نفلت کوز اکل کردیا جس کی وجہ ہے تو آج اس نازل ہونے والی مصیبت کا مشاہرہ کررہا ہے بی آج تیری نگاہ بڑی تیز ہے بینی وہ جواس برمقررتھ ،عرض کرے گا ہےوہ ہے جومیرے پاس تیار ہے مالک لیعنی (دوزخ کے نگران) ہے کہا جائے گا ڈال دوجہنم میں حق کے دشمن ہرضدی کا فرکو بعنی ڈالوڈ الویا ضرور ڈالو،اورحسن نے (اَلْیقِیَنْ) نون خفیفہ کے ساتھ پڑ ھاہے،نون خفیفہ کوالف سے بدل دیا گیا جو کہ خیر ز کو ۃ سے رو کنے والا ہو جوحد سے گذر جانے والا ظالم ہواور دین میں شك ألنے والا ہوجس نے خد كے ساتھ ووسرامعبو وتبويز كيا ہو (الّذِي) مبتداء تضمن بمعنی شرط ہے اس كی خبر ف ألْفِياهُ الے ہے ایسے تخص کوشد بدعذاب میں ڈالدواس کی تفسیر ماقبل کے مانند ہے وہ شیطان جواس کے ساتھ رہتا تھا کے گااے ہ رے پروردگار! میں نے اس کو گمراہ نہیں کیا بہتو خود ہی دورودراز کی گمراہی میں تھا سومیں نے اس کو بلایا تو اس نے میری بات مان لی، اور کہا کا فرنے مجھ کواس نے دعوت وے کر گمراہ کردیا، اللہ تعالیٰ ارشاد فرمائے گامیرے سامنے جھگڑے کی - ≤[زمِّزَم پِبَلشَّنِ]> —

عَجِقِيق الْمِرْكِ لِيَسْمَيُ لَيْ اللَّهُ اللَّاللَّالِيلَا اللللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّا

فَيْ فَلْنَى الله وَ الله وَا الله وَ الله وَ الله وَالله وَالله وَالله وَ الله وَالله وَالله وَالله وَالله و

مِينُوالْ، وَنَعْلَمُ يدِ خَلَفْنَا كَامْمِر سے حال ہے، اور مضارع ثبت جب حال واقع ہوتا ہے تو پھروا وَ حالیہ بیس آتا صرف ضمیر كافى ہوتى ہے، وا وَاس ونت آتا ہے جب حال جمله اسمیہ ہواور یہاں ایسانہیں ہے۔

قَوْلَ مَا اَتُوسُوسُ مَا مَصدر بِهِم بُوسَكَا ہے جیبا كه مُسرعلام نے اشاره كيا ہے تقدير عبارت بيہ وگی و مَعْلَمُ و سُوسَة نَفْسِهِ

اِبَّاهُ لِين انسان كه دل مِينْ هُس كه وسور الله و الله عن اور ماموصوله بهى بوسكتا ہے، اس صورت مِيں ہہ كی مُم برعا كد بوگى اور تقدير عبارت بيہ وگى و مَعْلَمُ الآهُو الَّذِي تُعَدِّتُ نَفْسُهُ به ليني بهم اس بات كوجائے بي جس كواس كانفس اس كه دل ميں والت ہو الله موسوله بونے كى صورت مِيں ہہ كى باء زائدہ بوگى ، اور خمير ماموصوله كى طرف داجع بوگى اورا كر مامصدر بيہ وتو باء تقديد كے لئے بوگى اور خمير انسان كى طرف داجع بوگ ۔ (دوج الادواج)

فِيُولِكُم ؛ نَحْنُ أَفْرَبُ اِلْيَهِ بِالْعِلْمِ.

سَيُوان بالعِلم كاضافها كيافا كدوب؟

جَوَلَ بُنِعَ: مفسرعلام نے بالعلم کااضافہ کر کے اشارہ کردیا کہ یہاں قربت سے قربتِ علمیہ مراد ہے نہ کہ قربت جسمیہ اس کئے کہ اللہ تعالیٰ جسم سے مز ہے جدل الورید سے شدت قرب کی طرف اشارہ ہے، جبل رگ کو کہتے ہیں اور جبل الورید سے شدت قرب کی طرف اشارہ ہے، جبل رگ کو کہتے ہیں اور جبل الورید شدرگ کو کہتے ہیں، جس کورگ جال ہے کہا جاتا ہے، یہر گیس دو ہوتی ہیں گردن کی دونوں جانب ایک ایک، ان کے کٹ جانے سے بقیناً موت واقع ہوجاتی ہے، ذبیح میں ان دونوں رگول کا کٹنا ضروری ہے۔

قِحُولِکَمَّ : مَا يَغْسَلُلُهُ بِي يَغَلَقِّى كامفعول ہے لیعنی انسان جو پچھ کرتا ہے اس کو تنعین کردہ دونوں فرشتے ا چک لیتے ہیں اور ثبت کردیتے ہیں۔

قِوَلْنَى: اى قاعِدَان يكى ايك شبكا جواب -

شبہ: قعید جملہ ہوکر السمتَ کَ قَیّبان سے حال ہے ذوالحال تثنیہ ہے اور حال مفرد ہے حالانکہ دونوں میں مطابقت روری ہے۔

وقع: قعید بروزن فعیل ہے اور فعیل کے وزن میں مفردو تثنیہ وجمع سب برابر ہیں، لہذا قعید مفرد تثنیہ کے قائم مقام ہے، قَعِیدٌ مبتداء اور اس کا مقبل یعنی عن الیمین وعن الشمال اس کی خبر مقدم ہے پھر جملہ ہوکر المتَلَقِّیکان سے حال ہے۔

فِيَوْلَكُ : لَدَيْهِ رَقِيْتُ، رَقِيبٌ مبتداء مؤخر إورلَدَيْهِ خبر مقدم إ_

فِيَوَلْنَى : عبيدٌ تار، وضر، يعِدَادٌ عب جس كمعنى ضرورت سے پہلے سى چيز كے ذخيره كر لينے كے بيں۔

فَيُولِكُنَى وهو نفس الشدة بهتر موتاكه فسر رَحِّمَ للفله تَعَاكَ اس عبارت كوحذف فرمادية اس لئے كه ماقبل كے موتے موت اس كى جوت اس كى چندال ضرورت نوس البتداگر هو كامر جع امرآ خرت جواورشدة سے مرادامر شديد ہواوروہ الله و الله تخرت بيل تو يجھ بات بن سكتى ہے۔

فَيْخُولْكَ ؛ اللَّهِ، اللَّهِ سياس بات كى طُرف اشاره ہے كہ الَّقِيمَا دراصل الَّتِي، الَّتِي تَفَا تَكُرادُ فعل كے ساتھ لِعِنى وُ الووُ الو، ايك فعل كو خذف كر كاس كى خير فاعل كواول فعل كے ساتھ ملاديا ، جس كى وجہ سے خمير مثنىٰ ہوگئ ۔

عَوْلِيْ ؛ أَو أَلْقِيَنُ اس كامطلب بي كه أَلْقِيَا بين الف تثنيه كانبين ب بلكنون تأكيد خفيفه سے بدا اوا ہے۔

سِيرُواكَ، نون تاكيدخفيفه كوالف سے حالت وقف ميں بدلتے ہيں نه كه وصل ميں _

جِجُولَ بَيْعَ: حالتِ وصل كوحالتِ وقف برجمول كرايا ب، اور بعض حفزات نے كہا ہے كه اَلْفِيكَ تثنيه بى كاصيغه ہے، اور مراداس سے سائق اور شہيد ہیں۔

فَيْ وَلَكُ ؛ عَنِيدٌ عن در كضوال ، خالف، ضدى ، سركش (جمع) عُندٌ آتى ہے۔

فَيْوَلِينَ ؛ الشديد يعن الْفِيا مِن شنيران في جوتين توجيرابق مِن كُنُ بِي وَى فَالْقِيلُهُ مِن موكر

قِوَّوْلَیْ، قَالَ قَرِیْنُهُ الشیطانُ رَبَّنَا مَا اَطْغَیْتُهُ، رَبَّنَا مَا اَطْغَیْتُهٔ یکافر کِوْل هُو اَطْغانی بدعائه لی کے جواب میں ہے کی جب کافر رب انعالمین کے حضور میں عذر پیش کرتے ہوئے کے گا، اس بینی شیطان نے مجھے گراہ کیا تھا تو اس کے جواب میں شیطان کے محقے گراہ کیا تھا تو اس کے جواب میں شیطان کے گاربینا مَا اَطْغَیْنَهُ گرمفسرعلام کے لئے مناسب تھا کہ ہُو اَطْغَانی کومقدم کرتے۔

فَيْوَلِّنَى: لَا تَخْتَصِمُوا يِكَافرول اوران كَ منشيول عضاب -

فَيْوَلْكَى : وَقَدْ فَلَدُّمْتُ اللَّهُ كَمُ بِالْوعيد ظَامِريه بِ كَدِيدِ لَاتَ خَتَصِمُوا سِحال بِمَّربيده وشوار باس لِحَ كه حال اور ذوالحال كا زمانه ايك بوتا ب حالانكه يهال ايمانبيل باس لِحَ كه تقذيم وعيدونيا مِن بوئي اوراختصام آخرت ميں۔

فِيُولِكَن : وَلَا مَفْهُومَ لَهُ لِينَ لَاظُلْمَ الْيَوْمَ كَامْفَهُومِ خَالَف مرادُنيس بِ، لِينى يمطلب نبيس بِ كَهَ آجْ ظَلَمْ بيس بِ آجَ كَ علاوه ميں ظلم بيد

تِفَيِّيُرُوتِيْنَ حَيِّ

ربطآ پات:

سابقہ آیات میں منکرین حشر ونشر اور مردول کے زندہ ہونے کو بعید ازعقل وامکان کہنے والوں کے شہبات کا از الہ تھا ، آیات

' رہ میں بھی علم اللّٰہی کی وسعت اور ہمہ گیری کا بیان ہے ، کہ انسان کے اجز اء منتشر ہ کاعلم ہونے ہے بھی زیادہ بروی ہت تو یہ ہے کہ ہم ہر انسان کے دل میں آنے والے خیالات ووسوسوں کو بھی ہر دفت اور ہر حال میں جانے ہیں ، اس کی وجہ یہ ہم انسان سے اسے زیادہ قریب ہیں کہ اس کی رگ جان کو جس پر اس کی زندگی کا مدار ہے وہ بھی اتنی قریب نہیں ، اس لئے ہم اس کے حالات کوخو داس سے بھی زیادہ جانے ہیں جیسا کہ تھی وتر کیب کے زیرعنوان عرض کیا جا چکا ہے ، کہ نصل اُلّٰہ وَ من اللّٰہ وَ وَ اللّٰہ وَ من اللّٰہ وَ من اللّٰ وَ من اللّٰہ وَ من اللّٰ وَ من اللّٰہ وَ من اللّٰ من اللّٰ وَ من اللّٰ م

الله تعالیٰ انسان کی شہرگ سے بھی زیادہ قریب ہے:

من حَبلِ المورِيدِ ، حبل الوريدِ ميں اضافت بيانيہ ہے يعنی وہ رکيس جووريد ہيں، جسم حيوانی ميں دوشم کی رکيس ہوتی ہيں، نہوتو وہ ہيں جوجسم حيوانی ميں خون کی سپلائی کا کام کرتی ہيں ان کا منبت جگر ہے اور دوسری شم کی شريان کہلاتی ہيں، ان کا کام جسم حيوانی ميں روح سپلائی کرتا ہے، ان کا منبت قلب ہے اور يہ بنسبت وريد کے باريک ہوتی ہيں، نہ کورہ اصطلاح طبی ہے ضروری نہيں کہ آ بت ميں وريد کا لفظ طبی اصطلاح کے مطابق ہی استعال ہوا ہو بلکہ قلب سے نگلنے والی رگوں کو بھی لغت کے اعتبار سے وريد کہا جاسکتا ہے، اور چونکہ اس جگہ مرادانسان کے قبی خيالات سے مطلع ہوتا ہے اس لئے وريد سے شريان مراد لينازياده مناسب ہے۔

مَّنَكُلُقُى المُعَلَقِيانِ اى مِانْحُذَان وينبتان، فَقَالقدير مِن شُوكا فَى نَے اس كايہ مطلب بيان كيا ہے كہم انسان كتمام حالات كوجانتے ہيں بغیراس كے كہم فرشتوں كے حتاج ہوں، جن كوہم نے انسانوں كے اقوال واحوال لكھنے كے سئے مقرر كيا به بين بغض كنزديك دوفرشتوں سے نيكی اور بدی لكھنے والے فرشتے مراد ہیں، اور بعض كنزديك دوفرشتوں سے نيكی اور بدی لكھنے والے فرشتے مراد ہیں، اور بعض كنزديك دات اور دن كفرشتے مراد ہیں۔

اعمال كوركار ذكرنے والے فرشتے:

حضرت حسن بھری دَیِّمَنُلُللُهُ مُعَالِیَّ نے مُدکورہ آیت عن المیمین وعن المشمال قعید تلاوت فرما کر، کہا: ''اے ابن آ دم! تیرے لئے نامہ انمال بچھا دیا گیا ہے اور تھھ پر دومعزز فرشتے مقرر کردیئے گئے ہیں، ایک تیری دائيل جانب اوردوسرابائيل جانب وابنى جانب والاتيرى حسنات لكهتا جاوربائيل جانب والاتيرى سيئات، اب اس حقيقت كو سائيل جانب اوردوسرابائيل جائيل جائيل جائيل الله عنه المسائل الميث وياج عدى المائل الميث المين المين المين المين المنائل حسينها المنائل المنائل المنائل المنائل المنائل المنائل المنائل المنائل حسينها المنائل المنا

تَبَرُجُهُمْ ﴾ جم نے ہرانسان کا اعمال نامہ اس کی گردن میں لگادیا ہے اور قیامت کے روز وہ اس کو کھلا ہوا پائے گا، اب اپن اعمال نامہ خود پڑھ لے اور تو خود ہی اپناحساب لگانے کے لئے کافی ہے۔ (معادف)

انسان کا ہرقول رکارڈ کیاجا تاہے:

مَايلفظ مِن قولٍ إلَّا لَدَيْهِ رَقيبٌ عَتِيدٌ يعنى انسان كونى كلمه ذبان سينهيں نكالما جس كوية كران فرشة محفوظ نه كرليتا هو، حضرت بصرى رَحِّمَ كلاللهُ تَعَالَىٰ اور قما وه رَحِّمَ كلاللهُ تَعَالَىٰ اور قما وه وَرَحِّمَ كلاللهُ تَعَالَىٰ اللهُ عَلَىٰ اللهُ اللهُ عَلَىٰ اللهُ عَل عَلَىٰ عَلَىٰ اللهُ عَلَىٰ الله

علی بن الی طلحہ نے ایک روایت ابن عباس ہی ہے ایس نقل فرمائی جس میں ہے دونوں قول جمع ہوجاتے ہیں، اس روایت میں یہ پہلے تو ہر کلمہ لکھا جاتا ہے خواہ اس میں کوئی ثواب وعقاب کی بات ہویا نہ ہو، مگر ہفتہ میں جمعرات کے روز اس پر فرشتے نظر ثانی کرتے ہیں، اور صرف وہ کلمات باقی رکھتے ہیں جن میں کوئی ثواب یا عقاب ہو باقی کونظر انداز کردیتے ہیں، قرآن کریم میں ویک شو واللہ ما یشاء ویشبت و عندہ اُم الکتاب کے مفہوم میں بیمووا ثبات بھی داخل ہے، قبال لاقت فی تسمیل المختلف کے منظم میں موقف داخل ہے، قبال لاقت فی تسمیل المختل کی ضرورت نہیں نہ اس کا کوئی فائدہ ہی ہے میں نے تو پہلے ہی رسولوں اور حسب یا عدالت انصاف میں لڑنے جھڑنے کی ضرورت نہیں نہ اس کا کوئی فائدہ ہی ہے میں نے تو پہلے ہی رسولوں اور کتر ہوں کے ذریعہ سے ان وعیدوں سے تم کوآگاہ کردیا تھا۔

يُوْمَر كَ صِنَهُ طَلَّام فَقُولُ بِالنُّون واليَاءِ لِجَهَنَّمَ هِلَ المُتَكَنَّقِ اسْتِفْهَا مُ تحقِيقِ لوَعُده بِملْبُه وَتَقُولُ بِعُسُورة الاسْتِفُهام تَاللُّنُ طَالَم اللَّهُ وَلَا السَّعُ غَيرَ مَا اسْتَلَاتُ به اى قَدِ اسْتَلاَثُ وَالْوَلَقِ الْجَنَّةُ قُرَتُ الاسْتِفُهام كَالسُّوال هَلْ مِنْ مُرْتِيلِ الله عَلَى الله مِ هَذَا المَرْئِيُ مَا الله الله عَلَى الله عِلَى الدُي ويُبُدَلُ مِن الله عَلَى الله على الله على

اوسَعَ سَلَامٍ او سَلِمُوا او ادْخُلُوا دُلِكُ اليَومَ الَّذِي حَصَلَ فيه الدُخُولُ يَوْمُ الْحُلُودِ الدوَام في احْمَة لَهُمُومَّا يَثَنَاءُوُلَ فِيْهَا دَائِمًا وَلَدَيْنَامَزِيْدٌ® زِيَادَةٌ علىٰ مَا عَمِلُوا وطَلَبُوا وَكَمْرَا**هُلَكُنَاقَبْلَهُ مُرِمِّنَ قَرُْنِ** اى أَهْنَكُنَا قَبُل كُفَّر قُرَيتِ قُرُونَ أَسَمًا كَثِيْرَةً مِنَ الكُفَّارِ هُمُّ أَشَكُمْ مِنْكُمَّا قُوَّةً فَنَقَبُّوا فَتَثُوا فِي الْيِلَادِ هَلَمِنَ تَجِيصٍ فَهُمُ لَكُلُّا قُوَّةً فَنَقَبُوا فَيَ الْيِلَادِ هَلَمِن تَجِيصٍ فَهِم اولِغَيْرِهِم مِنَ المَوْتِ فَلَم يَجِدُوا إِنَّ فِي ذَٰلِكَ الـمَدُكُورِ لَذِكْرَى لَعِظَةٌ لِمَنْ كَانَ لَهُ قُلْبٌ عَقُرٌ ٱوْاَلْقَى السَّمْعَ إِسْتَمَع الوَعْظ وَهُوَشَهِيدُ ﴿ حَاضِرٌ بِالقَلْبِ وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ وَمَابَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّالِمَ وَلُهَا الْاحَدُ والخِرُها الجُمُعَةُ وَهَمَامَسَنَامِنَ لَغُوبٍ ﴿ تَعْبِ نَنَزَلَ رَدًّا على اليَهُود فِي قَوْلِهِم إِنَّ اللّهَ اسْتَرَاحَ يَوْمَ السَّبَتِ وانْتِفَاءُ التَّعْبِ عَنْهُ لِتَنَزُّهِم تعالىٰ عَن صِفَاتِ المَحْلُوقِينَ ولِعَدَم المُجَانَسَةِ بَيْنَه وبينَ غيره انما اسره اذا اراد شيئا ان يقول له كن فيكون فَاصِير خِطَابٌ للنبي صلى الله عليه وسلم عَلَىمَايَقُولُونَ اي اليَهُودُ وغَيرُهم مِنَ التَّشبيهِ والتَكْذِيبِ وَسَيِّحْ بِحَمِّدِرَيِكَ صَلِ حَامِدًا قَبْلُطُلُوعَ الشَّمْسِ اى صَلاة الصُبْح وَقَبْلَ الْغُرُوبِ أَنَّ اى صَلَاةَ النظهرِ والعَصْرِ وَمِنَ لَيْلِ فَسَحَةُ اى صَلِ العِشَائَيْنِ وَالْأَبْكُودِ ﴿ بِفَتَحِ الهَمْزَةِ جَمُعُ دُبُرٍ وبِكَسُرِها مَصْدَر أَدْبَرَ اي صَلِّ النَوَافِلَ المَسْنُوْنَةَ عَقِبَ الفَرَانُضِ وقِيلَ المُرادُ حَقِيُقَةُ التَسْبيح فى هذه الْاَوْقاتِ شَلَابِسًا للحَمُد وَالسَّمِّعُ بِا مُخَاطَبُ مَقُولِي يَوْمِرُيْنَادِالْمُنَادِ هُوَ اسْرَافِيْلُ مِنْ مُكَانِ قَرِيْبٍ ﴿ سِنَ السَّمَاءِ وهُو صَحْرَةُ بَيْتِ المُقَدِّمِ أَقُرَبُ مَوْضِع مِنَ الْارْضِ إلى السَّمَاءِ يَقُولُ أَيَّتُها العِظَامُ البَالِيَةُ والاَوْصَالُ المُتَقَطِّعَةُ والُلحُومُ المُتَمَرَّقَةُ والشَّعُورُ المُتَفَرَّقَةُ إِنَّ اللَّهَ يَامُرُ كُنَّ أَنْ تَجْتَمِعْنَ لِفَصُلِ القضَاءِ ي**يُّوْمَ** بَدَلٌ مِن يومَ قَبُلَه كَيْمَعُونَ اي الحَلُقُ كُلُّهُم الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ بِالبَعْبِ وهِيَ النَفَحَةُ التَّنِيَةُ مِن إِسْرَافِيلَ ويَحْتَمِلُ أَنْ تَكُونَ قَبُلَ نِدَاتِهِ او بَعْدَهُ ذَ**رُكَ** اي يَومُ النِدَاءِ وَالسَّمَاعِ يَوْمُ النِّحُرُوجِ ﴿ مِن القُبُورِ وَنَاصِبُ يومَ يُنَادِي مُقَدِّرٌ اي يَعْدَمُونَ عَاقبَةَ تَكُذِيبِهِم إِنَّالْحَكُنُ ثُخْي وَنُمِيتُ وَالْيَنَاالْمَصِيُّنُ يَوْم بَدَلْ سِ يَوْمَّر قَهِم وَنَ بَينَهُما اِعْتِرَاضٌ تَشَقُّقُ بتخفِيفِ الشينِ وتَشُدِيدِهَا بادُغامِ التَّاءِ الثَّانِيَة فِي الاَصْل فِيه الْلِرَضُ عُلُّهُمُ سِرَّاعًا ۗ حَمُعُ سَرِيع حَالٌ مِن مُقَدِّرِاي فَيَخُرُجُونَ مُسُرِعِينَ ذ**الِكَ حَثَثُرُ عَلَيْنَايَسِيْنَ** فيه فصَلٌ بِي المَوْصُوفِ والصِّفةِ بِـمُتَـعَبَقِهَا لِلإحتِصَاصِ وهُو لَا يَضُرُّ وِذَلك إِشَارَةٌ الىٰ مَعْنَى الحَشُرِ المُخْبَرِ به عنه وهُو الاخياءُ بعُد العَمَاءِ والجَمْعُ لِمعَرُصِ وَالحِسَابِ لَحُنُ أَعُلُمُ مِمَا يُقُولُونَ اي كُفَّارُ قُرَيْشِ وَهَأَأَنْتَ عَلَيْهِم بِجَبَّالِ تُخرُهُم على الإيمَار يَّ وهدا قبَلَ الاَمْرِ بالجهَادِ فَذَكَرْ بِالْقُرْانِ مَنْ يَّخَافُ وَعِيْدِ فَ وهُم المُؤْمِنُونَ.

﴿ (مَكُزُمُ بِسَالِتُهُ إِلَيَّا

ہے؟ یعنی میرے اندر جو کچھ بھرا گیا اس ہے زیادہ کی گنجائش نہیں کینی میں بھرگئی اور جنت پر ہیز گاروں کے لئے بالکل قریب کردی جائے گی ،اتن کہ ذرابھی ان سے دور نہ ہوگی چتانچہ وہ اس کو دیکھیں گے اور ان سے کہا جائے گا کہ بیہ جو پچھ نظر آرہا ہے وى ب جس كاتم سے ونياميں وعده كيا كيا تھا، ياءاورتاء كے ساتھ اور للمتقين سے اس كا قول لِـ كُلِّ او اب بدل ب، براس شخص کے لئے جو اللہ کی طاعت کی طرف رجوع کرنے والا اور حدود کی حفاظت کرنے والا ہوجور خمن کا غائبانہ خوف رکھتا ہو ^{آیع}نی اس ہے ڈرتا ہو حالا نکہاں کو ویکھانہیں ہے اور اس کی طاعت کی طرف متوجہ ہونے والا دل لایا ہو اور پر ہیز گاروں ہے بیجی کہا ہ ئے گا اس میں سلامتی کے ساتھ داخل ہوجاؤلیعنی ہراندیشہ سے بےخوف ہوکر، یا سلامتی کے ساتھ، یا سلام کرواور واخل ہو ب و رون جس میں دخول حاصل ہواہے، دائمی طور پر جنت میں داخل ہونے کا دن ہان کے لئے وہاں جو جا ہیں گے وائمی طور پر سے گا (بلکہ) اور ہمارے پاس ان کے مل ہے اور طلب سے زیادہ ہے، اور ان سے بہلے بھی ہم بہت سی امتوں کو ہلاک کر تھے ہیں بعنی قریش سے پہلے کا فروں میں سے بہت می امتوں کو ہلاک کر چکے ہیں وہ ان سے طافت میں بہت زیادہ تھے تما م شہروں کو جیعان مارا تھا کیا ان کو اور دوسروں کوموت سے فرار کی کوئی جگہ لی ؟ نہیں ملی ، بلاشبہ اس مذکور میں ہرصا حب دل (صاحب عقل) کے لئے نفیحت ہے اور اس کے لئے جوحضوری قلب کے ساتھ نفیحت سننے کے لئے کان لگائے اور یقیناً ہم نے آسانوں اورز بین کواوران کے درمیان جو پھے ہے دنوں میں بیدا کیا، ان میں کا پہلا دن انوار ہے اوران کا آخری جمعہ ہے، اور ہم کو تکان نے چھوا تک نہیں، بیآیت یہود کے اس قول کورد کرنے کے لئے نازل ہوئی کہ ' ہفتہ کے روز اللہ تعالی نے آرام فر ، یا''اور تکان کا اس سے منتفی ہونا باری تعالیٰ کے مخلوق کی صفات سے منز ہ ہونے کی وجہ سے ہے، اور اس کے اور اس کے غیر کے درمیان می نست نہ ہونے کی وجہ ہے ہے، اس کی شان تو بیہ ہے کہ جب وہ کسی ہی کے کرنے کا ارادہ کرلیتا ہے تو وہ اس کے کے گئن کہددیتا ہے تو وہ ہی موجود ہوجاتی ہے پس بیہ یعنی یہود وغیرہ تشبیہ و تکذیب کی جوبات کہتے ہیں آپ اس پرصبر کریں میہ آنخضرت بين المنظمة كوخطاب م اوراين رب كى حمد كے ساتھ سيج مجيئ حمد بيان كرتے ہوئے نماز پڑھے طلوع شس سے پہلے یعن صبح کی نماز اورغروب سے پہلے بینی ظہر اورعصر کی نماز اور رات کے کسی وقت میں تسبیح بیان کریں بیعنی مغرب وعشاء کی نماز پڑھئے، اور نمازے بعد بھی اُدبار ہمزہ کے فتہ کے ساتھ دُبُو گی جمع ہے اور ہمزہ کے کسرہ کے ساتھ اَدْبَو کامصدر ہے،مطلب سے ہے کہ فرائض کے بعد نوافل مسنونہ پڑھئے اور کہا گیاہے کہ ان اوقات میں تمد کے ساتھ تنہیج پڑھنامراوہے اور اے مخاطب میری بات سن جس دن ایک پکارنے والا اور وہ اسرافیل ﷺ کی اسان سے قریبی مکان سے پکارے گا اور وہ بیت المقدر کا صحرہ (بڑا پھر) ہے (صحرہ) زمین ہے آسان کی طرف قریب ترین مقام ہے، وہ پکارنے والا کمے گا اے بوسیدہ بٹریواور ا کھڑے ہوئے جوڑ داور پارہ پارہ گوشتو اور بکھرے ہوئے بالو،اللّذتم کو حکم دیتا ہے کہ مقدمہ کے فیصلے کے لئے جمع ہو جاؤجس د ن بعث کے لئے پارکو پوری مخلوق من لے گی اور بیاسرافیل کا نفخہ ٹانیہ ہوگا، اور بیاحتال بھی ہے کہ بینخد اسرافیل علیفتلا کا نفکہ کا نامیہ ہوگا، اور بیاحتال کھی جار ے پہلے یابعد میں ہو وہ نداءوساع کاون قبرول سے نکلنے کا دن ہوگا اور یَوْمَ کا ناصب یُسنَادِی مقدر بے بعنی وہ اپن تکذیب < (مَزَم بِبَلشَ نِهَ عَهِ • ع

کے انجام کو جان لیں گے، بارشہ ہم ہی جلاتے ہیں اور ہم ہی ارتے ہیں اور ہماری ہی طرف بلٹ کرآنا ہے جس دن زیمن ان سے پھٹ جے گی حال یہ کہ وہ جلدی کرنے والے ہوں گے (تَشَقَّقُ) شین کی تخفیف اورتشد بد کے ساتھ تاء ثانیہ کواصل میں ادغام کر کے تو دوڑ تے ہوئے (تکل پڑیں گے) میسو اعًا، سرایع کی جمع ہے سِسو اعًا مقدر سے حال ہے، ای فیسخو جو ن ادغام کر کے تو دوڑ تے ہوئے کر لینا ہم پر (بہت) ہی آسان ہے اس میں موصوف اورصفت کے درمیان صفت کے متعلق کافصل ہے، اختصاص کے لئے اور یہ (فصل) معزمیں ہے اور (ذلیک) سے معنی حشر کی جانب اشارہ ہے جو کہ ذلک کا مخبر ہے اور وہ معنی) فناء کے بعد زندہ کرنا اور پیشی اور حساب کے لئے جم کو ب جانے ہیں جو پھی کفار کہ کہتے ہیں اور آپ ان پر جبر کرنے والے نیس ہیں کہ ان کو ایمان لائے پر مجبور کریں ، اور یہ کم جہاد کی اجازت سے پہلے کا ہے ، سوآپ ان کو آن کے ذریعہ ہم خوب جانہ کی اجازت سے پہلے کا ہے ، سوآپ ان کو آن کے ذریعہ ہم جانگ اجازی اجازت سے پہلے کا ہے ، سوآپ ان کو آن کے ذریعہ ہم جانگ اجازی اجازی اجازی اجازی ہم خوب ہم ان کے دریعہ ہم خوب ہم ان کا ایک ہم جانگ کی اجازی اجازی اجازی اجازی اجازی ہم خوب ہم توب ہم خوب ہم ان کے دریعہ ہم خوب ہم کی اجازی ہم کا ہم ہم خوب ہم کا ہم سوآپ ان کو آن کے ذریعہ ہم خوب ہم کے ایک اور دیم کی میں کہ دریعہ ہم خوب ہم کو دریعہ ہم خوب ہم کا ب سوآپ ان کو آن کے ذریعہ ہم خوب ہم کا ہم سوآپ ان کو آن کے دریعہ ہم کو دریعہ ہم کا ب سوآپ ان کو آن کے دریعہ ہم کو دریعہ کی دریعہ کی دریعہ کو دریعہ کی دریعہ کی دریعہ کو دریعہ کی دریعہ کے دریعہ کی دریعہ کا دریعہ کی دوری دو بی دریعہ کی دریعہ کی دریعہ کی دریعہ کی دریعہ کے دریعہ کی دریعہ کی دریعہ کی دریعہ کی دریعہ کی دریعہ کی دریعہ کر دریعہ کی دریعہ کو دریعہ کی در

جَِّفِيقَ الْأِلْبُ لِيَّامِينَ الْحَالَةِ الْفِيلِينَ الْحَالَةِ الْفِيلِينَ الْحَالَةِ الْفِلْسُونَ الْوَالْمِلْ

قِوَلِيْ : يَوْمَ ناصِبُهُ ظَلَّامٌ، يَوْمَ كِمنصوب بونے كى دووجہ بوسكتى بيں ،اول بيكه أُذْكُونعل محذوف ناصب بو، دوسرے بير كہ سابقه آيت بيں ظلّامٌ ناصب بومضرعلام نے دوسرى صورت كواختياركيا ہے۔

قِی کُی ایک میسل المتلات استفهام تحقیق لیمی تقریری ہاللہ نے جہتم سے جو بھرنے کا وعدہ فرہ ایا اس کے مقت اور پورا ہونے کو ابت کرنے کے لئے لیمی میں نے جھے سے جو بھرنے کا وعدہ کیا تھا وہ پورا ہوگیا؟ جہنم استفہام سوالی کے طور پر جواب دے گی ، کیا کہا وہ اور ہے اندر کنجائش نہیں ہے ، جواب اگر چہ بصورت استفہام ہے مگر سوال معنی میں خبر کے ہے ، جس کی طرف مفسر علام نے قلد المتذاب سے اشارہ کیا ہے۔

ييكوان، جنم كسوال كاصورت من جواب دية من كيافا كده ؟

جِوَ لَيْنِي: تاكير سوال وجواب مين مطابقت موجائـ

قِولَكُم ، مَكَانًا.

ينيكوان، مكامًا كومدوف مان سي كيافا كدوم؟

جِيَّ لَثِيْ: مكاناً محذوف مان كراس بات كى طرف اشاره كرديا كه غير بَعِيْدٍ جَنَّة كى صفت نبيس ہے بلكه مكانًا محذوف كى صفت ہے اس لئے كه اگر جَنَّةٍ كى صفت ہوتى توغير وقيدة ہوتى۔

فِيَّوُلِكَ، عَنِيرَ بَعِيْدٍ أَزُلِفَتِ الْجَنَّةُ كَالكِدِمِ اللَّهُ كَدونول كامفهوم الكِن مِهم المجاري المَ ذليل (يا) قريبٌ غَيْرَ بَعيدٍ.

فَيْخُولْ ﴾؛ لِكُلِّ أوَّابٍ مَتَقَيْن سے اعاد وَ جار كے ساتھ بدل ہے ، اور يھى كہا گيا ہے كہ هاذا موصوف اور مَاتُو عَدُوْ فَ اس كى صفت موصوف صفت سے ل كرمبتداء اور لِكُلِّ أوَّابِ اس كی خبرہے۔

- ه (مَزَم بِسَلفَ ﴿ ﴾ -

هِ فَكُولَنَى : خَافَهُ وَلَمْ يَوَهُ اس عبارت كاضافه كامقصديه بتانا الله يبالْغَيْبِ عال بيا تومفعول يعنى وحمن عال ب یعنی وہ رحمٰن سے ڈرا، حال بیہ ہے کہ وہ رحمٰن نظروں سے غائب ہے، یا پھر خَشِسے کے فاعل سے حال ہے، یعنی وہ القدہے ڈرا حال بدہے کہ اس نے اللہ کود یکھا تہیں ہے۔

قِحُولَى ؛ لَهُمْ اللهُمْ كاضافه كامقصدية تاناب كه لَهُمْ ومَحِيْصٌ مبتداء كى خبر محذوف بادر مِنْ زائده ب، اوراستفهام ا نکاری ہے،مطلب بیرکہ سابقہ امتوں نے دنیا چھان ماری مگر ان کوکہیں موت سے پناہ بیں ملی ، اسی طرح تم کوبھی اے اہل مکہ موت ہے کہیں پناہ نہ ملے گی۔

فَيْوَلِّنَّ اللَّهِ مِنْ لَغُوبٍ، من فاعل پرزائده ب أَخُوب (ن) مصدر بِ بمعنى تَعَبُّ تكان _

فِيَوْلِكُ ؛ لِعَدَم الْمُجَانَسَةِ بعض سُول مِن عدم المماشقة بي ين غالق وظوق كدرميان مِن سي سي المعنى ربط وتعلق

فَيُولِكُ ؛ مقولى، مَقُولِي مقدر مان كراشاره كرديا كمقولى استمع كامفعول بـ

فِيَوْلِكُ ؛ يَعْلَمُوْنَ عَافِيَهَ تَكُذِيْبِهِمْ بِينَوْمَ بُنَادِ الْمُنَادِ كاعال ناصب بِ مِفْسر رَيْمَ للهُ تَكَالِنَ كَ لِيَهِمْ بِينَوْمَ بُنَادِ الْمُنَادِ كاعال ناصب بِ مِفْسر رَيْمَ للهُ تَعَالَىٰ كَ لِيَ بَهِمْ تَقَا كَهُ ما کومعمول کےساتھ ہی ذکر کرتے۔

فِيْوُلْكُوا ؛ يَوْمَ تَسْقُقُ بِياتِ ما قبل يومُ النحروج يدبرل إورانًا نَحْنُ النح درميان من جمله معترضه --فِيُولِكُ ؛ بِادْعَامِ التَّاء النَّانيَةِ فِي الْآصَلِ فِيهَا، تَشَقَّقُ اصل مِن تَنَشَقَّقُ تَفا، اصل مِن تاء النَّانيَةِ فِي الْآصَلِ فِيهَا، تَشَقَّقُ اصل مِن تَنَشَقَّقُ تَفا، اصل مِن تاء النَّانيَةِ فِي الْآصَلِ فِيهَا، تَشَقَّقُ اصل مِن تَنَشَقَّقُ تَفا، اصل مِن تاء النَّانيَةِ فِي الْآصَلِ فِيهَا، تَشَقَّقُ اصل مِن تَنَشَقَّقُ تَفا، اصل مِن تاء النَّانيَةِ فِي الْآصَلِ فِيهَا، تَشَقَّقُ أَصل مِن النَّاء فِيْ وَلَكُنَّ ؛ سِرَاعًا، فينحوجون كَالْمُيرے حال إدرعَنْهُمْ كَالْمُيرے بھى حال بوسكتا ہے۔

فِيْ وَكُلُّ ؛ فيهِ فصل بين الموصوف والصفة بمتعلقها، علَيْنا موصوف اورصفت كورميان فاصل ب، تقدر عبارت يرهى وللك حسر يسير علينا اختصاص كے لئے علينا جار محرور كومقدم كرديا يعنى يدهشر جارے بى لئے آسان ہے اور فصل چونک اجنبی کانبیس اس کے مصر بھی نبیس ہے۔

هِ فَكُولَكُ } : ذلك إشارة الى معنى الحشر المخبر به عَنْهُ مُدُوره عبارت كاضاف كامقصد ايك سوال كاجواب بـ سَيْخُوالْ ؛ ذلك حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيْرٌ مِن مُخْرِعنه اور مُخْربددونون واحدى الله كَ كد ذَلِكَ كامثار اليه حَشْرٌ بجوكه مُخْرعنه بادريسيد مخربه اورحشر موصوف يسيد اس كاصفت ب،موصوف صفت ايك بواكرت بي الطريقه ع مخربهاور مخبرعنه واحد ہو گئے حالا نکہ ان کوالگ ہونا جا ہے۔

جِكُولَ شِيْ: جواب كا خلاصه بيب كدولك كامشار اليه حَشَّرُ نهيس بلكه اس كمعنى مين يين إحياء بعد الفناء اورجمع بيسن الأجسزاء المستفرقة جوكم تجرعته باوريسير مخربه ب،الطرح مخرعته اور مخربه دونول الك الك بوكء فيلا اعتراضَ عليه.

تَفْسِيرُ وَتَشِينَ عَ

اقراب كون لوگ بين؟

لٹکلِّ اَوَّابِ حفیظ کینی جنت کا دعدہ ہرا س شخص ہے جواقاب اور حفیظ ہوا قاب کے عنی ہیں رجوع کرنے والا ،اور مرادوہ فخص ہے جومعاصی ہے اللہ کی طرف رجوع کرنے والا ہو۔

حضرت عبداللہ بن مسعوداور شعبی اور مجاہد نے فر مایا کہ اقاب وہ مخص ہے جو خلوت میں اپنے گنا ہوں کو یا دکرے اور ان سے استغفار کر ہے، اور حضرت عبید بن عمیر نے فر مایا اقاب وہ مخص ہے جو اپنی ہر مجلس اور ہر نشست میں اللہ سے اپنے گنا ہوں کی مغفرت مائے ، اور دسول اللہ ظِرِ فَظَرِ ایا کہ جو محصل ایک مجلس سے اٹھنے کے وقت بیدعاء پڑھے اللہ تعالیٰ اس کے سب گناہ معاف فر مادیں گے جواس مجلس میں مرز دہوئے ، دعا ہے :

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ اَشْهَدُانَ لَا اللهِ إِلَّا أَنْتَ اسْتَغْفِرُكَ وَاتُّوبُ اِلَيْكَ.

اور حفیظ کے معنی حضرت ابن عباس تفکی کالٹی گئا الٹی گئے بیہ بتلائے ہیں کہ جو محض اپنے گنا ہوں کو یا در کھے تا کہ ان سے رجوع کر کے تلافی کرے، اور ایک روایت میں حفیظ کے معنی حافظ لامر اللہ کے بھی منقول ہیں بینی وہ محض جواحکام کو یا در کھے اور عدوداللّٰہ کی حفاظت کرے، حضرت ابو ہر ہر ہ دَفِعَ لَافَلُهُ مَنَعَالِقَةٌ ہے روایت ہے کہ جوشخص شروع دن میں چار رکعت (اشراق کی) پڑھ سلے وہ اوّاب أور حفيظ ہے۔ (قرطبي، معارف)

مَنْ حَشِى الرَّحْمُنَ بِالْغَيْبِ وَجَاءَ بِقَلْبٍ مُّنِيْب "حَثِيت بِالغيب" كامطلب دنيا مِن ورناب، جهال ناروتيم دونوں غائب ہیں ،اور قلب منیب سے قلب سکیم مرا ، ہے۔

فَنَقَبُوا فِي البِلَادِ هَلْ مِنْ مَّحِيْصِ نَقَّبُوا عقيب عداس كاصل منى سوراح كرف اور بها رف كري محاورات میں دور درازملکول کے سفر کرنے کوبھی کہتے ہیں۔ (کسانی الفاموس)

مَسجِيْت ظرف مكان ہے، پناه كاه ،لوٹنى كا جكه ،آيت كامطلب بيہ كدالله تعالى نے تم سے بہلے كتنى تومول كو ہلاك کردیا جوتوت وطاقت میںتم ہے کہیں زیادہ تھیں اورمختلف ملکوں اورخطوں میں تجارت وغیرہ کے لئے پھرتی رہیں گر دیکھو کہ انبی م کاران کوموت آئی اور ہلاک ہوئیں ، نہان کو کہیں پناہ ملی اور نہ راہ فغرار ، لیعنی خدا کی طرف سے جب ان کی پکڑ کا وقت آیا تو کیا ان کی وہ طاقت ان کو بچاسکی؟ اور کیاد نیامیں پھر کہیں ان کو پناہ ل سکی ،اب آخرتم کس بحروسہ پر بیامبدر کھتے ہوکہ خدا کے مقابلہ میں بغاوت کر کے تہمیں کہیں جگہ کی جائے گی۔

وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ آيَّام وَمَا مَسَّنَا مِنْ لُغُوْبِ امروا تعديب كدي بوری کا کتات ہم نے چھودن میں بناڈ الی اور اس کو بنا کرہم تھک تبین سے ،کداس کی تغییر نو جمارے بس میں شدرہی ہو،اب اگریہ نا دان لوگ آپ سے زندگی بعدالموت کی خبر من کرتمہارا نداق اڑاتے ہیں اور حمہیں دیوانہ قرار دیتے ہیں تو اس پرصبر' کرو، ٹھنڈے دل سے ان کی ہر بیبود ہ بات کوسنو اور جس حقیقت کے بیان کرنے پر آپ مامور کئے گئے ہیں اس کو بیان مرتے چلے جانیں۔

اس آیت میں همنی طور پر یہود ونصاری پرایک لطیف طنز بھی ہے،جس کا بائیل میں بدافسانہ گھڑا گیا ہے کہ خدانے چھ دنوں میں زمین وآسان کو بنایا اور (ہفتہ کو)ساتویں دن آ رام کیا اور عرش برجا کرلیث گیا (پیدائش۲:۲) اگر چہسیمی یا دری اس بات سے شرمانے لکے ہیں اورانہوں نے کتاب مقدی کے اردوتر جمہ میں آرام کیا کو فارغ ہوا' سے بدل ویا ہے مگر کتگ جیمس کی متنداتگریزی بائبل میں (And He rested on the seventh day) کے الفاظ صاف موجود ہیں، اور یہی الفاظ اس ترجمه مين بھي پائے جاتے ہيں جو ١٩٥٣ء ميں يہوديوں نے فليڈلفيا سے شائع كيا ہے، عربي ترجمه ميں بھي ف استواح في اليوم السابع كالقاظ بير.

يَوْمَ يُسنادِ السُسنَادِ مِن مَكانِ قَرِيْبِ ابن عساكر فريد بن جابر شافعي رَجْمَ لللهُ تَعَالَىٰ سے روايت كيا ہے كدي فرشة اسرافیل ہوگا جو بیت المقدس کے صحر ہ پر کھڑا ہوکرساری دنیا کے مردول کوخطاب کرے گا،اے گلی سڑی ہڈیو!اورریزہ ریزہ ہونے - ﴿ [(مُرْزَم بِهَلَمْ لِنَهُ لِللَّهُ لِيَ

والی کھالو! اور بھر جانے والے بالو! س لوہتم کواللہ تعالی سے کم دیتا ہے کہ حساب کے لئے جمع ہوجا کہ (مظہری)

بَوْمَ بَسْمَغُوْنَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ذَلِكَ يَوِّمُ الْخُورُوِّجِ مَيْكَهُ ثانيكابيان بِحِسَ دوباره عالم كوزنده كياجائ كا،اور مكان قريب سے مراديہ بے كهاس وقت اس فرشتے كى آواز پاس اور دور كے سب لوگول كواس طرح پنچے كى كه كويا پاس ہى سے پكارر ہا ہے اور بعض حضرات نے مكان قريب سے مراوسخ أبيت المقدس ليا ہے كيونكہ وہ زيمن كاوسط ہے۔ (قرطبى)

يَوْمَ تَشَقَقُ الأَرْضُ عَنْهُمْ سِوَاعًا لِين جب زمن مجد كرسب مرد عن من عنظم ألم من عنهم سواك اس آواز دين والي كلطرف دور بس عن بني كريم التقطيقات فرمايا ، جب زمن بحث كاتوسب سے بہلے نكلنے والا ميں ہونگا الما اول من تسلّشق عَنْهُ الاَرْضُ (صحح مسلم كتاب الفعائل) جامع ترثري ميں حضرت معاويد بن حيده تفقائلة تفالي سے روايت ہے كم رسول اللّد في تفاقيقات دست مبارك سے ملك شام كي طرف اشاره كرتے ہوئے فرمايا۔

من ہنگنا الی ہنگنا تحشرون رکبانا ومشاۃً و تجرّونَ علی و جو ہکھریوم القیامۃ. (معدید) یہاں سے اس طرف (لیتنی شام کی طرف) تم سب اٹھائے جاؤگے کچھلوگ سواراور کچھ پیدل اور بعض کو چہروں کے بل تھسیٹ کر قیامت کے روز اس میدان میں لایا جائے گا۔ (فرطبی، معارف)



مُنَا فَيْ الْدُرْدِيْ عِلَيْنَا فَا فَي مُنْ فَعِينَا فَي مَا فَعِينَا فَي مَا فَعِينَا فَي مَا فَعِينَا فَي مُنْ فَعَالِمَا الْمُؤْعِمَا فَي مُنْ فَعِينَا فَي مُنْ فَي مُنْ فَعِينَا فِي مُنْ فَعِينَا فَي مُنْ فَعِينَا فِي مُنْ فَعِينَا فِي مُنْ فَعِينَا فِي مُنْ فِي مُنْ فَعِينَا فِي مُنْ فَعِينَا فِي مُنْ فَعِينَا فِي مُنْ فِي مُنْ فَعِينَا فِي مُنْ فَعِلْ فَي مُنْ فَعِلَا فَي مُنْ فَعِلِقًا فِي مُنْ فَعِينَا فِي مُنْ فَعِلِقًا فِي مُنْ فَعِلِقًا فِي مُنْ فَعِلْ فَي مُنْ فَعِلِقًا فِي مُنْ فَعِلْ فَي مُنْ فَعِلْ فَي مُنْ فَعِلْ فِي مُنْ فَعِلْ فَي مُنْ فَعِلْ فِي مُنْ فَعِلْ فَي مُنْ فِي مُنْ فِي مُنْ فَعِلْ فِي مُنْ فِي مُنْ فِي مُنْ فِي مُنْ فَعِلْ فِي مُنْ فَالْمُنْ مُنْ فَالْمُنْ مُنْ فَعِلْ فِي مُنْ فَلِقًا فِي مُنْ فِي مُنْ فِي مُنْ فَالْمُنْ مُنْ فِي مُنْ فِي مُنْ فِي مُنْ فِي مُنْ فَالْمُنْ مُنْ مُنْ فِي مُنْ فِي مُنْ فِي مُن

سُورَةُ وَالذَّارِيكِ مَكِّيَّةٌ سِتُّوْنَ ايَةً.

سورة والذ اريات كمي ہے، ساٹھ آيتيں ہيں۔

بِنَ مِ الله الرَّحِ مِن الرَّحِ مِن الرَّحِ مِن الرَّحِ مَ وَالدُّراتِ الرِّيَاحِ تَذْرُوا التَّرابَ وَغَيرَهُ فَرُوَّا فَ مَضدرٌ ويُقالُ تَـذُرِيْهِ ذَرُيًا تَهُبُ بِهِ فَالْلِيلِيِّ السُّحْبِ تَحْمِلُ المَاءَ وِثَوَلِكَ يَقُلاَ مَفْعُولُ الْحَامِلاَتِ فَالْلِيلِيِّ السُّفُنِ تَجْرِي عَـلَىٰ وَجُهِ المَاءِ يُسْرُكُ بِسُهُ ولَةٍ مَـصْـدَرٌ فِي مَوْضِع الحَالِ اي مَيْسَرَةً فَالْمُقَيِّعْتِ أَفْرُكُ الْـمَلائِكَةِ تُقَسِّمُ الآرُزَاقَ والآسُطَارَ وغَيرَهَا بَيْنَ العِبَادِ والبِلاَدِ إِنَّمَالُتُوَعَكُونَ مَا سَصْدَرِيَّةٌ أَى إِنَّ وَعُدَهُمْ بِالْبَعْثِ وغيرِه **كَصَادِقُ** ۚ لَوَعُدُ صَادِقٌ قَلِ**نَ الدِّيْنَ** الجَزَاءَ بَعْدَ الحِسَابِ لَوَاقِعٌ ۚ لَا سُحَالَةَ وَالْتَكَاءِ ذَاتِ الْمُهُلِ ۗ خَمْعُ حَبِيْكَةِ كَطَرِيْقَةٍ وَطُرُقِ اي صَاحِبَةِ الطُّرُقِ فِي الجِلْقَةِ كَالطُّرُقِ فِي الرَّمَلِ لِٱلْكُمْ يَا أَهُلَ مَكَّةَ فِي شَانِ النَّيِي والقُران **لَفِي قُولٍ تُخْتَلِفٍ ﴾ قِيْلَ** شَاعِرٌ سَاجِرٌ كَاهِنَ شِعُرٌ سِخرٌ كَهَانَةٌ يُّؤُفَكُ يُصْرَفُ عَنَّهُ عَنِ النَّبِي والقُرانِ اى عَنِ الإيسمَانِ بِهِ مَ**نَ أَفِكَ ۚ** صُرِفَ عَنِ الهِدَايَةِ فِي عِلْمِ اللَّهِ تَعالَى ۖ قُرْلَ **الْخَرْصُونَ ۚ** لَعِنَ الكَذَّاءُونَ أَصْحَابُ القَوْلِ المُحْتَلِفِ ا**لَّذِيْنَ هُمْ فِي عُمْرَةٍ** جَهْلِ يَغْمُرُهم سَ**اهُونَ ۚ** غَافِلُونَ عَنِ أَمْرِ الاخِرَةِ يُسْتَكُونَ النَّبِيّ اِسْتِهُزَاءً أَيَّانَ يُومُ الدِّيْنِ ﴿ اى مَتْى سَجِينُهُ وَجَوَابُهِم يَجِي يُومُ هُمْ كَلَ النَّارِيُفَتَوُنَ ﴿ اى يُعَذَّبُونَ فيها ويُقالُ لهم حِيْنَ النَّعُذِيبِ **ذُوْقُوا فِتُنَتَّكُمُ** تَعُذِيْبَكُم هَلَا العَذَابُ الَّذِي **كُنتُمُرِهِ تَسْتَعْطِفُنَ** فِي الدُّنيا إسْتِهْزَاءُ <u>إِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِي جَنْتٍ</u> بَسَا تِيْنَ **وَعُمُّونٍ فَ** تَجُرِيُ فيها لِي**زِيْنَ** حَالٌ مِنَ الضَّمِيرِ فِي خَبَرِ إِنَّ مَ**التَّهُمُ** اَعْطَاهُمُ رَبُّهُمْ مِنَ النَّوَابِ النَّهُ مُكَانُوْا قَبْلَ ذَٰلِكَ اى دُخُولِهِم الجَنَّةَ مُحْسِيْلِينَ ﴿ فِي الدُّنيا كَانُوْا قَلِيلَامِنَ الْيُلِمَ ايَهُ جَعُوْنَ ﴿ يَـنَـامُــونَ ومَـا زَائِدَةً ويَهْجَعُونَ خَبَرُ كَانَ وقَلِيلاً ظَرُفُ اي يَنَامُونَ فِي زَمَنٍ يَسِيرٍ مِنَ اللَّيْلِ ويُصَلُّونَ اكْثَرَ وَبِالْإِسْعَارِ فَمْ يَسْتَغُفِرُونَ ۞ يَقُولُونَ اللَّهُمَّ اغْفِرَلَنَا ۖ وَفِي الْمِهُ وَاللَّهِ مَرَقَ اللَّهُ اللَّهُمَّ اغْفِرَلَنَا وَفِي اللَّهُ مَا عُفِرَلَنَا وَفِي اللَّهُ اللَّهُ مَا عُفِرَلَنَا وَفِي اللَّهُ مَا اللَّهُمَّ اللَّهُ اللَّ **وَفِي الْلَائِضِ** مِنَ الجِبَالِ والبِحَارِ والاَشْجَارِ والثِّمارِ والنَّبَاتِ وغيرِها **النَّ** دَلَالَاتٌ عـلىٰ قُـذرَةِ اللَّهِ تعالى < (مَثَزُمُ بِبَلَثَهُ إِنَّا لِشَرْدُ إِنَّا لِشَرْدُ] <

وَوَحَدَانِيَّتِهِ لِلْمُوْقِنِيُنَ ۚ **وَفِي اَنْفُسِكُمْ ا**يَاتَ اَيْضًا مِن مَبْدَا خَلْقِكم الى مُنْتَهاهُ ومَا فِي تَرْكِيبِ خَلْقِكُمْ مِنَ العَجَائِبِ أَفَلَاثُنْكِرُونَ @ ذلِكَ فَتَسْتَدِلُونَ بِه عَلَىٰ صَانِعِه وقُدْرَتِهِ وَفِي التَّمَاءِرِزُقُكُمُر اي المَطَرُ المُسَبَّبُ عبُ النّباتُ الَّذِي هُوَ رِزْقٌ **وَمَاتُوْعَكُونَ** عِنَ الـمَـابِ والشُّوَابِ والـجِقَابِ اي مَكْتُوبٌ ذلك فِي السَّمَاءِ ﴿ فَوَرَبِ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِنَّهُ اى مَا تُوعَدُونَ لَحَقٌ مِثْلُمَا الْكُفُرْتَنْطِقُونَ ﴿ رَفْع مِنْلُ صِفَةٌ ومَا مَزِيدَةٌ وبِفَتْح اللَّامِ مُرَكَّبَةٌ مَعَ مَا المعنى مِثُلُ نُطُقِكُمُ فِي حَقِّيْتِه اي مَعْلُومِيَّتِه عِنْد كم صَرُورَةَ صُدُوره عَنْكم.

ت مروع کرتا ہوں اللہ کے تام ہے جو بڑا مہر بان اور نہایت رقم والا ہے تم ہے ان ہواؤں کی جوغبار وغیرہ کو میں اللہ کے تام ہے جو بڑا مہر بان اور نہایت رقم والا ہے تم ہے ان ہواؤں کی جوغبار وغیرہ کو ۔ رن برا گندہ کرتی ہیں (ذَرْوًا) مصدر ہے اور کہا جاتا ہے تَفْدِيه فَرْيّا لَيني ہوائيس غبار کواڑاتی ہیں پھرتشم ہے ان باولوں کی جو پانی کے بوجھ کوا تھانے والے بیں وِ فُوا حاملات کامفعول ہے، پھرفتم ہےان کشتیوں کی جو یانی کی سطح پر سہولت کے ساتھ چلتی ہیں یُسے ا مصدر ہے حال کی جگہ میں بعنی حال یہ کہوہ سبک رفتاری ہے چلتی ہیں پھرفتم ہے ان فرشتوں کی جو کہ ایک بڑے اہم کام کی لینی رز ق اور بارش وغیرہ کی بندوں اورشہروں کے درمیان تقسیم کرنے والے ہیں اور جوتم سے وعدہ کیا جارہا ہے مسا مصدر بیہ ہے لیعنی ان سے بعث وغیرہ کا وعدہ سیا وعدہ ہے، اور حساب کے بعد جزاءا عمال لامحالہ پیش آنے والی ہے اور تسم ہے راستوں والے آسان کی (حُبُك) حَبِیْكَةُ كَ جَمْع ہے، جیسا كه طُــرُقْ، طــریـقةٌ كى جَمْع ہے لیعنی وہ آسان پیرائش طور پر راستوں والے ہیں ، جبیہا کہ ریت میں راستے ہوتے ہیں بلاشبہتم اے مکہ والو! حضور کی اور قرآن کی شان میں مختلف باتیں کرتے ہو (آپ کے بارے میں) کہا گیا ،شاعر ہیں، جادوگر ہیں، کا ہن ہیں، (اورقر آن کے بارے میں) کہا گیا شعر ہے! جادوہے، کہانت ہے اس سے بیتی نبی اور قر آن ہے لیتی اِن پرایمان لانے سے وہی بازر کھا جاتا ہے جس کو اللہ تعالیٰ کے علم میں ہدایت سے پھیردیا گیا ہوغارت ہوجائیں بے سند (انگل سے) باتیں کرنے والے ملعون ہوئے مختلف باتوں والے جھوٹے جو جہالت میں غرق ہیں جن کو جہالت نے غرق کر رکھا ہے اور امر آخرت سے غافل ہیں نبی بیٹھی سے بطور استہزاء یو جھتے ہیں جزاء کا دن کب ہوگا؟ لیعنی وہ کب آئےگا؟ان کا جواب سے ہ یوم جزاءاس دن آئے گا جس دن ان کوآگ پر بھونا جائے گالیعنی ان کوآ گ میں عذاب دیا جائے گا،اورعذاب دیتے دفت ان ہے کہا جائے گا، اپنی سزا کا مزاچکھو یہی ہے وہ عذاب جس کی دنیا میں تم استہزاء جلدی مجایا کرتے تھے، بلاشہ تقوے والے لوگ باغوں میں اور چشموں میں ہوں گے جو باغوں میں جاری ہوں کے ان کے رب نے ان کو جو پچھے تواب عطافر مایا ہے اس کو لے رہے ہوں گے وہ تو اس سے پہلے ہی دنیا میں نیکو کار تھے اور وہ رات كوبهت كم سوياكرتے تھے (يَهْجَعُونَ) بمعنى يَنَاهُونَ جِاور يَهْجَعُونَ كانَ كَ خَبر جِ،اور قَلِيْلًا ظرف جِيعن رات کے کم حصہ میں سوتے تھے اور اکثر حصہ میں نماز پڑھتے تھے اور سحر کے وقت استغفار کیا کرتے تھے، یوں کہا کرتے تھے اکسی کھے اغْفِرْ لَغَا اوران کے مالوں میں ما تکنے والوں کا اور نہ ما تکنے والوں کاحق ہے اورمحروم وہ مخص ہے جوسوال سے بیچنے کی وجہ سے سوال - ﴿ (مَرْزُم بِهَاللَّهُ إِنَّ اللَّهُ إِلَّهُ إِنَّ اللَّهُ إِنَّ اللَّهُ إِلَّهُ إِلَّهُ اللَّهُ الللَّالِي اللَّهُ اللَّذِاللَّهُ اللَّا اللَّهُ اللَّهُ اللَّا اللَّهُ اللَّالِي الللَّهُ ا

عَجِقِيق اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللّلَّا اللَّهُ اللَّالِمُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّا اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ

فَيُولِكُ ؛ ويُقَالُ ذَرى يَدُرِى ذَرْيًا سے إِلَى وَ فَكُولِ الله الله ع

فَيْ وَلَكُ ؛ تَهُبُ به اسكااضافه بان معنى كے لئے بهوااس كوبرا كنده كرتى ب،اڑاتى بـ

قِعُولِكَى ؛ إِنَّمَا تُوعَدُونَ علام كِن فِي المصدرية رارديا م لين وَعْدُ كَ عَن مِن مِ، تقرير عبارت بيم إنَّ وَعُدَّكُمْ لَهَ غُدُّ صَادة

فَيُّوَلِّهُ ؛ إِنَّمَا نُوعَدُوْنَ لَصَادِق معطوف عليه بهاورانَّ الدِّيْنَ لُوَاقِعٌ معطوف معطوف اورمعطوف عليل كرجمله وكر جوابِ شم ب، اوريهمى درست بكه إنَّ مَا يَس ما كوموسول قرار دياجائ اورتُوعَدُوْنَ جمله وكرصله و، عا كدم ذوف اى به جمله وكرانَّ كاسم اورلَصَادِقُ إِنَّ كَيْجِر، اورانَّ حرف مشه بالفعل ب_

قِهُولَى ؛ وَالسَّمَاءِ ذَاتِه النُحبُكِ واوَقَم يجاره بمعنى أَقْسِمُ السَّمَاء موصوف النُحبُك صفت ، موصوف بالصفت جمله ، وكرجواب فتم .

فَيْ فَلْكُونَى اللهِ عَبِيْكُةً كَ بَرِي مِنْ عَلِيهِ عُلْسُوقٌ طويقةً كَ بَرَع مِ بَعْن راسة، بإنى كالبر، ريت ين بواكى وجه من برند. والنانانات اور بعض معزات نحبُكُ كوجِباكُ كَ بَمْعَ كَهَا مِنْ عِنْ اللهِ كَابِمْعِ مِحْدِيْكَةً وجِبَاكُ ستارول كى ره

اعراب القرآن ، لغات القرآن) اعراب القرآن ، لغات القرآن)

قِحُولِ آنى؛ فى المنجلقة كَالطُوَّقِ فِي الرَّمَلِ السَّعارت كاضافه كافائده بيه كديداً سانى راسته خيالى يامعنوى نبيل بيل بلكه محسول اورموجود فى الخارج بين اگرچه بعيد بهونے كى وجه سے نظر نبيل آتے۔

فِيَوْلِكَى اللهُ عنه يُوفَكُ واحد مُدَرَعًا مُن مضارع مجبول إفْكُ (ض) سي بهيراجا تاب، بعثكا ياجا تاب-

فِيَوْلَكَى : صُرِفَ عَنِ الْهِدَايَةِ فِي علمِ الله تعالى العالى العارت كاضافه كامتعدايك والمقدر كاجواب -

جِينَ لَيْنِ : جوالله تع لي كم ازلى ميس بحثكاموا بوه خارج اورخام ميس بحثكا يا جائكا.

التلاغة

فَوْلَ مَن الله المعراصُونَ ، قُبِلَ كَ فَيْقَ مَعَى آل كَ عِنْ مِن الله عَلَى سبيل الاستعادة لعنت كمعنى ميل مستعمل ہے، باير طور كه مفقو دالسعادة كومفقو دالحيات كساتھ تشبيد دى ہے بيا ستعاره بالكناييه بواء مفقو دالسعادة كومفقو دالحيات كساتھ تشبيد دى ہے بيا ستعاره بالكناييه بواء مفقو دالمعادة كميليه مفقو دالحياقة مشه به باكر چه محذوف ہے مگر مشبه به كالوازم ميں سے قل كومشه كے لئے ثابت كرديا، بيا ستعارة تخييليه موا، فَيْ اللّه وَالله وَرُاف والله مِحوث بكنے موا، فَيْ اللّه وَرُاف والله مِحوث بكنے دالله والله ورائد والله محدوث بكنے دالله والله ورائد والله محدوث بكنے دالله والله ورائد والله معنى ميں الله كامينه ہے۔ دونات النوان الله ورائد والله محدوث بكنے دالله والله ورائد والله محدوث بكنے دالله ورائد والله ورائد والله ورائد والله وا

فَيُولِنَى ؛ عَمْرَةً عَمراياني جس كى تانظرندآئ، يهال جياجان والى جهالت مراوب (لغان الفران)

فَيْخُولْكُ ؛ أَيَّانَ يَوْمُ الدِّينِ أَيَّانَ خَرِمَقدم يَومُ الدِّينِ مبتداء مؤخر

قِيُّوَلِيْ، مَنْى مَنِي مَنْى ايّانَ كَاتَفْير عِمْ جِيدُهُ مَدْف مِضاف كَاطرف اشاره عِداد مضاف ايك سوال كا

مِينُولِكَ، اَيّانَ يومُ الدين مشركين كى طرف سے سوال ہے اور يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ يُفْتَنُوْنَ سوال كا جواب ہے بيوال اور جواب دونوں زمان بيں اور زمان كا جواب زمان ہے بين ہوتا بلكه زمان كا جواب حَسدَثَ منے ہوتا ہے ، مفسر رَحِّمَ كُلاللَّهُ عَالَیٰ نے اس سوال کے جواب کے لئے مجيئه مضاف محذوف ما تا ہے تا كه زمان كا جواب إخبار بالزمان سے ہوجائے۔

رى وال عدواب عصص معلى الدون من تعيين وقت كاسوال ب،اس كاجواب يَوْمَ هم عَلَى النَّارِ يُفُتَنُوْنَ بجوكم اورغير متعين المراح وكرام المراح والمراح والم

جِهُ لَبْنِ مَشركِين مَدُكَا سوال چونكه علم وفهم كے لئے نہيں بلكه بطوراستهزاء كے تفااى لئے حقیقتا جواب كے بجائے صورة جواب دیا تا كہ سوال وجواب میں مطابقت ہوجائے ، يَوْمَ كاناصب بعجيئ محذوف ہے، هُمْ مبتداء ہے يُـفْدَنُوْنَ خبراور

ھ[زمِّزَم پِتِنشَہ]≥۔

علی جمعن ہے۔

سَيُواكَ: يُفْتَنُونَ كاصل على كيول لايا كيا؟

جَوُلَتِي: يُفْتَنُونَ بِوَنَد يُعْرَضونَ كَمَعَى وصمن إلى التَي يُفْتَنُونَ كاصله على لايا كيا -

فَیُوَلْنَ ؛ تَجْوِیْ فِیْهَا اس اضافہ کامقصداس وال کاجواب ہے کہ اللہ تعالی کے قول اِن المعتقین فی جنّت و عُیُون سے معلوم ہوتا کہ تقی کہ اللہ تعلیم ہے معلوم ہوتا کہ تقی اوگ چشموں میں ہونے کا یار ہے کا کوئی مطلب ہیں ہے مفسر علام نے تسجسری فیدھا کہہ کراس کا جواب دیا۔ جواب کا ماحصل ہے ہے کہ تقی ایسے باغوں میں ہوں گے جن میں نہریں جاری ہوں گی۔

فَيْخُولْكُونَا ، آخِلِينَ بِإِن كَ خَرْمُحَدُوف كَاخْمِيرَ عَالَ بِ، تقديم بارت بيب كائِنُوْنَ في جناتٍ وعُيُون حالَ كونِهِم، آخِذِيْنَ مَا اتَاهُم رَبَّهُمْ

فَيُولِكُ ؛ مِنَ النواب يماكابيان ب،

قِولَانَ ؛ يَهْجَعُونَ هجوعٌ عرات كرون وكوكت بير

فَيْخُولْكَ ؛ وبِالْاسْحَارِ يَسْتَغْفِرُونَ كَ تَعَلَّى جِاور باءَ مَعَىٰ فَى جِ الاَسْحَار سحو كى جَعْ جرات كرسرب اخركوكت إلى ، يَسْتَغْفِرُونَ كَاعَطَف يَهْجَعُونَ برج ـ

ؿٙڣٚؠؙڒ<u>ۅؖڷۺٛڕ</u>ٛڿ

مفسر علام نے پہلے مقسم ہے ہے ہوائی اور دوسرے مقسم ہے بادل اور تیسرے سے کشتیال اور چو تھے سے فرشتے مراد

الئے ہیں ، ای مفہوم کی ایک مرفوع روایت بھی ہے جس کو ابن کثیر نے ضعیف کہا ہے ، اور حضرت عمر تفوق الله تفایق اور حضرت علی تفوی الله تعالی کا کا تعلیم میں مورد کے اس مورد کی الله تعالی کے اس دونوں سے بھی ہوائی مراد ہیں ، لینی پھر یہ مفسرین کے درمیان اختلاف ہے ، ایک جماعت نے اس بات کورجے دی ہے کہ ان دونوں سے بھی ہوائی مراد ہیں ، لینی پھر یہ ہوائی با دون کو کیکر چاتی ہیں ، اور پھر دوئے زہین کے خلف حصول میں پھیل کر الله تعالی کے تعلم سے جہاں جتنا تھم ہوتا ہے ، پانی تقسیم کرتی ہیں جو کہ رزق کا سبب ہے۔

وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الْحُبُكِ إِنْكُمْ لَفِي قُوْلٍ مُّخْتَلِفٍ، حُبُك، حَبِيْكَةً كَرْبَعْ مِ، كَيْرُ حِ كَ رهار يون كوكتي بن،

تاروں کے جھر منوں کی شکلیں مختلف ہیں ان میں کوئی مطابقت اور یکسانیت نہیں پائی جائی ،ای طرح آخرت کے متعلق تم لوگ ہمانت بھانت بھانت بھانت کی بولیاں بول رہے ہو ہرایک کی بات دوسر ہے سے مختلف ہے کوئی کہتا ہے کہ بید دنیااز لی وابدی ہے اس میں کوئی فکست ور پخت نہیں ہو سکتی اور نہ قیامت ہر پا ہوگی ، کوئی کہتا ہے کہ بید نظام حادث ہے اور ایک دن بیشتم ہوجائے گا، گر انسان سسیت جو چیز فنا ہوگئی گھراس کا اعادہ کمکن نہیں ہے ، کوئی اعادہ کو تو ممکن ما تا ہے گھراس کا عقیدہ بیر ہے کہ انسان اپنا اسلامی نہیں ہو کہ گئی گھراسی و نیا ہی بار بارجنم لیتا ہے ، کوئی جنت وجہنم کا قائل ہے گر اس کے ساتھ تنائح کو بھی ملاتا ہے بعنی ان کا بید خیال ہے کہ گئی اور پختی ہو ہو ہے کہ انسان اپنا ہے کوئی کہتا ہے کہ دنیا کی زندگی خودا یک عذاب ہے جب تک انسان کو و ندی زندگی ہے گا قائل ہے گر اس کے ساتھ تنائح کوئی کہتا ہے کہ دنیا کی زندگی خودا یک عذاب ہے جب تک انسان کو و ندی زندگی ہے گا کا کی رہتا ہے اس وقت تک وہ اس دنیا میں مرمرکر کہر نیا کی زندگی خودا یک عذاب ہے جب تک انسان کو و ندی زندگی ہے لگا کہ بات ہے اور کوئی آخرت اور و دنیا میں مرکز ہیں ہوجائے اور کوئی آخرت اور و زخ و جنت کا تو قائل ہے گر کہتا ہے کہ خدا نے اپنے اکلوتے ہیں کہ جواللہ کے ایسان لاکر آ دمی اپنے اٹک اور پھھا سے بیر گوں گوٹی ہوں کہ جو آخرت اور جزاء و مزاج جیز کو مان کر بعض ایسے بر گوں گوٹی جی ہیں کہ جو آخرت اور جزاء و مزاج جیز کو مان کر بعض ایسے بر گوں گوٹی جو ددنیا میں مرسب پچھ کر کے جمی مزاسے کے ساتھ کیا ہو ہے جیں یا اللہ کے بیباں ایساز وراور بین کی رکھتے ہیں کہ جوان کا درامن گوٹھ جو وہ دنیا ہیں مرسب پچھ کر کے جمی مزاسے کے ساتھ کیا ہے۔

اتوال کا بیاختلاف خود ہی اس امر کا ثبوت ہے کہ وتی رسالت سے بے نیاز ہوکر انسان نے اپنے اور اس دنیا کے انجام پر جب بھی کوئی رائے قائم کی ہے علم کے بغیر قائم کی ہے ورنداگر انسان کے پاس اس معاملہ میں فی الواقع براہِ راست علم کا کوئی ذریعہ ہوتا تو اتنے مختلف اور متضاد عقیدے پیدانہ ہوتے۔

ح (نَعَزَم بِبَاشَرِد) > -----

د وب_{ېرااح}تمال بيه ہے كه عَسنّهُ كَيْمبر قبولٍ منحتلف كي طرف راجع بهواورمعني بيهوں كهتمهار ميفتلف اورمتضا دا قوال كي وجه ہے وہی شخص قر آن اور رسول کامتکر ہوتا ہے جواز لی بدنھیب اورمحروم ہی ہو۔

قُبِّلَ الْحَرِّ اصُوْنَ، حَرَّاص كَلِغُوى معنى اندازه لكَّانے والے اور ظن وَتَجْمِين سے باتيں كرنے والے كے بيں،مراد کفار بیں جو آنخضرت ﷺ کے بارے میں بلائس علم ودلیل کے مختلف اور متضاد باتیں کہتے تھے اس لئے خسر احسون کا ترجمه كذابون ئے بھى كردياجائة وبعير تبين

كَ انْسُوا فَلللا مِّنَ اللَّيْلِ مَا يَهْجَعونَ كَفاراورمنكرين كَذَكرك بعدمونين ومتقين كاذكري آيول من آياب، يَهْ جَعُوْنَ، هيجوعٌ معشتق ہے جس مے معنی رات کے سونے کے ہیں، ما، قلّت کی تاکيد کے لئے ہے اس میں پر ہيزگار مومنین کی بیصفت بیان کی گئی ہے کہ وہ رات اللہ کی بندگی میں گذارتے ہیں ،سوتے بہت کم ہیں ، تیفسیر ابن جربرے منقول ہے، اورحسن بصری ہے بھی بہی تفسیر منقول ہے، اور حضرت ابن عباس تفعَلا الثاقات قادہ، مجاہد وغیرہ ائم تفسیر نے اس جملہ کا مطلب حرف ما کوفنی کے لئے قرار دے کریہ بتلایا ہے کہ رات کوان پرتھوڑ اسا حصدابیا بھی آتا ہے جس میں وہ سونتے نہیں بلکہ عبادت نماز وغیرہ میں مشغول رہتے ہیں ، اس مفہوم کے اعتبار سے وہ سب لوگ اس کا مصداق ہوجاتے ہیں جورات کے کسی بھی جھے میں عبوت كركيس خوا وشروع ميں يا آخر ميں يا ورميان ميں، اس كے حضرت انس تؤخلانفهُ مَعَالِفَة اور ابوالعاليه رَيِّمَ كالدلهُ تَعَالَنْ نے اس كا مصداق ان لوگوں کوقر اردیاہے، جومغرب وعشاء کے درمیان نماز پڑھتے ہیں۔ (ابن کلیں)

وَفِيْ أَمْوَ الِهِمْ حَقُّ لِلسَّائِلِ وَالْمَحْرُوم محروم مصرادوه ضرورت مندب جوسوال ساجناب كرتاب، چنانچه حق ہونے کے باوجودلوگ اسے نہیں دیتے ، بیر تخادہ ادر زہری کی رائے ہے (شوکانی) یا وہ مخص مرا دیے جس کا آفت ارضی وساوی سے سب پچھ تباہ ہوجائے ، بیزید بن اسلم سے منقول ہے (فتح القد مریشو کانی)حسن اور محمد ابن الحنفیہ نے کہا ہے کہمروم وہ مخص ہے کہ جو مال غنیمت اور مال فئی ہےمحروم رہے اس کےعلاوہ بھی اور بہت ہے اقوال ہیں۔

صدقہ وخیرات کرنے والوں کوخاص ہدایت:

اس آیت میں مونین متقین کی بیصفت بنلائی گئی ہے کہ وہ اللہ کی راہ میں مال خرچ کرنے کے وقت صرف سائلین ہی کونہیں دیتے بلکہا سے لوگوں کا بھی خیال رکھتے ہیں جواپنی حاجت شرم وشرافت کی وجہ ہے کسی پرخلاہر نہیں کرتے ،مطلب یہ کہ بیمومنین متقین صرف بدنی عبادت نماز روزه اورشب بیداری پر اکتفانهیں کرتے بلکه مالی عبادت میں بھی ان کا بڑا حصه رہتا ہے، که س مکین کے علاوہ ایسے لوگوں پر بھی نظرر کھتے ہیں کہ جوشرافت وشرم کے سبب اپنی حاجت کسی پر ظاہر ہیں کرتے ،اور بیلوگ جن فقراءومسا کین پرخرچ کرتے ہیںان پرکوئی احسان ہیں جتلاتے ، بلکہ پی*نچھ کر*دیتے ہیں کہ ہمارے اموال خدا داد میں ان کا بھی حق ہے اور حق دارکواس کا حق پہنچادینا کوئی احسان نہیں ہوا کرتا بلکدایک ذمہ داری سے اپنی سبک دوشی ہوا کرتی ہے۔

ح (مَثَزَم بِبَللتَهُ إِ

إِنَّهُ لَمَحَقُّ مِينُكُ مَا أَنَّكُ مُر تَنْطِقُونَ لِعِنْ جس طرحتم كواية بولناوركلام كرنے ميں كوئي شك وشبنبيں ہوتا اى طرح قیامت کابریا ہونا بھی ایہا ہی واضح کھلا ہوااور یقینی ہے کداس میں کسی شک وشبہ کی گنج کشنبیں۔

﴾ ﴿ فَلَالَتُكَ خِطَابٌ للسي صلى الله عليه وسلم حَدِيثُ ضَيْفِ إِبْرَهِيمَ ٱلْمُكْرَمِينَ ۗ وهُمُ مَدنكةٌ إثما عَشرَ اوعشرَةٌ اوثَلاثَةٌ مِنهم جَبُرِيلُ إِذَّ ظَرُتُ لِحَدِيْثِ ضَيُفٍ وَحَلُّواعَلَيْهِ فَقَالُوْلَسَامًا أَى هذا النفظ قَالَ سَلَمٌ اي هذا النفظ قَوْمُ مُنْكُرُونَ ۚ لَا نَعُرفُهُم قَالَ ذَلك في نَفْسِه وهو خَبَرُ مُبُتذا مُقَدر اي هؤلاء قَرَاغٌ مَالَ إلى أَهْلِهِ سِرًّا **غُلَّةُ رَبِّهُ لِسَمِيْنِ ﴿ وَمِي سُورَةِ هُـودٍ بِعِجُلِ خَنِيْدِ اى مَشُوىَ فَقَرَّبَهُ إِلَيْهِ مَقَالَ اللَّ تَأْكُلُوْنَ ﴿ عَرَضَ عَلَيْهِم** الأكُـلَ فَلَم يُجِيبُوا فَ**الَوْجَسَ** أَضْـمَرَ في نَفْسِه مِنْهُمْدِيْفَةٌ قَالُوْالْاَتَخَفَ إِنَا رُسُلُ رَبُك وَتَشَرُّوهُ بِغُلْمِ عَلِيْمِ وَي عِلْمِ كَثِيرٍ هُو إِسحاق كما ذُكِرَ في سُورَةِ هُودٍ فَأَقْبَلْتِ الْمَرَأَتُهُ سَارَةُ فِيْصَرَّةٍ صَيْحَةٍ حالٌ اي جاءُ ٺ صابِحَةُ قَصَكُتُوجَهَهَا لَطَمَتُه وَقَالَتُ عَجُورٌ عَقِيْمٌ له تَلِدقَطُ وعُمُرُها تسْمُ وتسْمُونَ سَنَةً وعُمُر الراهيم سالة سنة او عُمْرُهُ بِانَةٌ وَعِشْرُونَ سَنَةً وعمرها تِسعونَ سَنَةً قَالْوَاكُذُ إِلَيْ أي بِثُلَ قُولُنَا في البَشَارة قَالَ رَبُكِ إِنَّهُ هُوَلَكَكُمْمُ يْ في صُنعِه الْعَلِيْمُ® بِخَلْقِهِ قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ شَانُكُم أَيُّهُا الْمُرْسَلُونَ ۞قَالُوَ النَّا اللَّقَوْمِ تُجْرِهِ بُنَّ ﴾ كَافِرِينَ اي قَوْمٍ لُوطٍ لِلنُّولَ عَلَيْهِمْ حِجَارَةٌ مِّنْ طِينٍ ﴿ مَطْبُوحِ بِالْمَارِ مُّسَوَّمَةٌ مُعَدِّمةٌ عليها اِسُهُ سَلْ يُرْسَى مِها عِنْدُرَيِّكَ ظَرُف لها لِلْمُسْرِفِينَ ﴿ بِاتْبِ الهِ مِ الدُّكُ وَرَبْعَ كُفْرِهِم فَأَخْرَجْنَاصَ كَانَ فِيْهَا اى قرى قوم لُوطِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴾ لِاهلاكِ الكَافِرِينَ فَمَاوَجَدْنَافِيهَاغَيْرَيَيْتٍ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ أَلْمُسْلِمِينَ وَهُمَ لُوطٌ والمُنَاهُ وُصفُوا بالإيمار والإسلام اي هُمْ مُسصَدِقونَ بِقُلُوبِهِم عَامِلُون بِحَوَارِجِهِمُ الطَّعَاتِ وَتُرَكَّنَا فِيْهَا بعد إهلاكِ الكافرر أيَّةً عَلامةً علىٰ إِهُلا كِهِم لِلَّذِيْنَ يَخَافُونَ الْعَذَابَ الْأَلْيَمُ ۚ فَلَا يفْعَلُونَ مثل فعلهم وَفِي مُوسَى مُعْطُوتُ على فيها المعنى وحَعَلْنَا فِي قِصَّةِ مُوسى ايَةً إِذْ أَرْسَلْنَهُ إِلَى فِرْعَوْنَ مُنتِبَسَ بِسُلَطْنِ ثَبِيْنٍ ﴿ يَحْجَةِ واضحهِ فَتَوَلَّى اغرص عَنِ الْإِيْمَانِ يَ**زُلْنِهِ** مَعَ جُنُودِهِ لِانْهُمُ لِهِ كَالرُّكُنِ **وَقَالَ** لِمُوسى هو مُعِزَّاوٌ مَجْنُونٌ ۖ فَلَحَذَ لَٰهُ وَجُنُودَهُ فَنَبَذُ لَٰهُمْ طَرِحْنَاهِم فِي الْيَكِيرِ البَحْرِ فَعْرِقُوا وَهُو الى فِرْعُون مُلِيعُرُ الله سَمَا يُلامُ عليه من تكذيب الرُّسُل وذعُوى الرُّبُوبِيّةِ وَفِي إِهَلَاكِ عَادٍ ايَةً إِذْ أَسْلَنَاعَلَيْهِمُ الرِّيْحَ الْعَقِيمَ ﴿ هِي التِي لاخيرفيها لِانَّهَا لا تَحْمِلُ المَطرَ ولا تُنْقِحُ الشَّجَرَ وهي الدَّبُورُ مَاتَكُرُينَ شَيْءَ نَفْسِ اوسالِ أَتَتَ عَلَيْهِ إِلَّاجَعَلَتْهُ كَالرَّمِيْمِ أَكُ لَنالِي المُنَفَتَب وَفِي اهْلاكِ تُمُوِّدُ ايَةً **إِذْ قِيْلَ لَهُمْ بَعَدَ عَقُر النَّاقَةِ تَمَتَّعُوَّا حَتَّى حِيْنِ ® ا**ى إلى إنْقصاء احالِكُمْ كمامي التِي استَعُوا مِي دَارِكُم ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ فَعَتَّوْا تَكَبَّرُوا عَنَ أَمْرِمَ إِيهِمْ أَي عَنِ إِسْتِثَالِهِ فَلَضَدَّتُهُمُ الصَّعِقَةُ بَعْدَ مَضَى ثلاثَة أيّام أي الصَّيْخةُ المُهَلِكَةُ وَ**هُمْرَنِظُرُونَ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ السَّطَاعُوا مِنْ قِيَامِ** الله ماقدرُوا على النَّهُوض حيل نُرُول — ∈ [زمِئزم پتبلنتر() ≥ -

400

العَذَابِ قَمَاكَانُواْمُنْتَصِرِينَ أَعُلَى مَنُ اَهُلَكَهُم وَقُومُ لُوجَ بِالجَرِّ عَطُفٌ علىٰ ثَمُودَ اى وفي إهلا كِهِم بِمَاءِ السَدَى، والارُض آية وبالنَصبِ اى وَاهْلَكَنا قومَ نُوحٍ مِنْ قَبْلُ أَى قبل إهلاكِ هؤلاءِ المَذْكُورِينَ السَّدَى، والارُض آية وبالنَصبِ اى وَاهْلَكَنا قومَ نُوحٍ مِنْ قَبْلُ أَى قبل إهلاكِ هؤلاءِ المَذْكُورِينَ السَّمَ كَانُوا قَوْمًا فَيْهِ عَنْ اللهِ هُولاءِ المَذْكُورِينَ إِنَّهُ مُكَانُوا قَوْمًا فَيْهِ عَنْ أَنْ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ المَدْكُورِينَ إِنَّهُ مُكَانُوا قَوْمًا فَيْهِ عَلَى اللهِ اللهِ المَدْكُورِينَ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ

ترجيجي المحديقة كيابرابيم عليفلاه كمعززمهمانون كاواقعدآب تك بهنجا؟ اوروه باره يادس يا تين فرشة تے،ان میں جبرائیل علیہ اللہ بھی سے جبکہوہ (مہمان)ان کے پاس آئے (اِذْ) حسدیث ضیف کاظرف ہے، توانہوں نے سلام کیا لیعنی لفظ سکامسا کہا،حضرت ابراجیم علیقالا الفظائلانے بھی (جواب میں) لفظ سلام کہا حضرت ابراجیم علیقالا الفظائلانے ابیے جی میں کہ بیتوانجانے لوگ ہیں (قبوم منکرون) مبتداء مقدر کی خبر ہے اور و دھؤ لاء ہے پھروہ چیکے سے اپنے گھروالوں کے پاس گئے اور ایک (بھنا ہوا) فربہ پھڑ الائے اور سورہ ہوویس ہے جاء بعجل حَذِیْذِ لینی بھنا ہوا چھڑ الائے ، اوراسے ان کے سامنے رکھااور کہائم کھاتے کیوں نہیں ہو؟ یعنی ان کے سامنے کھاٹار کھالیکن انہوں نے توجہ نہ کی تو ان سے دل میں خوف زوہ ہوئے (یعنی) ایپنے دل میں (خوف محسوں کیا) تو ان لوگوں نے کہا ڈردمت بلاشبہ ہم تیرے پروردگار کے فرستادے ہیں اور انہوں نے ابراہیم علیقالاً النظالا کوایک ذی علم لڑ کے کی خوشخری دی تعنی کثیر العلم لڑ کے کی اور وہ الحق علیقالاً النظالا منتے جیسا کہ سور ہ ہود میں مٰدکورہوا توان کی بیوی سارہ چیختی ہوئی آ گے بڑھی (فی صَرَّةِ) حال ہے بینی (تعجب سے) چیختی ہوئی آ گے بڑھی اور اپنا منہ پینے میااور کہا بڑھیا بانچھ جس نے بھی پچھنبیں جنااوران کی عمر ننانو ہے سال تھی اورابراہیم عَالِيَةَ کَاوَلَا عَلَيْ کَا عَمرسوسال تھی ، یا حضرت ابرا ہیم علاقتلا کا تلافتان کی عمرایک سومیس سال تھی اوران کی ہیوی کی عمرنوے سال تھی ، فرشتوں نے کہا تیرے رب نے ایسا ہی فرمایا ہے بعنی ہماری بشارت کے مائند بلاشبہ وہ تھیم ہے اپنی صنعت میں اور باخبر ہے اپنی مخلوق کے بارے میں (حضرت) ابراجيم عَالِيهَ لَا النَّالِينَ فِي ما يا النَّادوا تم كوكيامهم در پيش ہے؟ فرشتوں نے جواب دیا ہم كومجرم كافر قوم كی طرف بھيجا گيا ہے یعنی قوم لوظ کی طرف تا کہ ہم ان پر آگ میں کیے ہوئے مٹی کے کنگر برسائیں جو تیرے رب کی طرف سے نشان زوہ ہیں صد سے گذرجانے والوں کے لئے اغلام ہازی کی وجہ سے ان کے ساتھ یعنی جس شخص کوجس کنگری کے ذریعہ ہلاک کیا جانا ہے اس پر اس كنام كى علامت كى ہوئى ہے (يعنى اس كانام لكھا ہواہے) عند رَبّكَ، مُسَوَّمَةً كاظرف ہے پس جتنے ايمان دارو ہاں یعنی قوط لوط کی بستیوں میں موجود تھے ہم نے نکال لئے کافروں کو ہلاک کرنے کے لئے ہم نے وہاں مسمانوں کا صرف ایک ى گھريايا اور وہ لوط علاقة لائتا كا وربيٹيوں كا گھرانہ تھا، اہل خانہ كا ايمان اور اسلام كے ساتھ وصف بيان كيا گيا ہے يعنی وہ ا پنے قلوب سے تصدیق کرنے والے اور اپنے اعضاء سے طاعت پڑھل کرنے والے اور ہم نے اس بہتی میں کا فروں کو ہلاک کرنے کے بعدان کی ہلاکت پران لوگوں کے لئے جو در دنا ک عذاب سے ڈرتے ہیں علامت چھوڑ دی تا کہان جیسی حرکت نہ کریں اور موی علیقالا تلاکے قصہ میں بھی اس کا عطف فیصا پرہاور معنی یہ ہیں اور ہم نے موک علیقالا تلاکا کا تصدیمیں بھی ﴿ (مَكْزُمُ بِبَالشَّرْزُ ﴾ •

علامت رکھی ہے کہ ہم نے اس کوواضح دلیل کے ساتھ فرعون کے پاس بھیجا تو فرعون نے مع اپنے نشکر کے ایم ن سے اعراض کیا (لشکر کورکن کہاہے) اس لئے کہ تشکر اس کے لئے رکن کے مانند تھا، اور فرعون نے موی علیجالا طائیاتا کے بارے میں کہا کہ وہ جادوگر یا با وَلا ہے بالاً خرہم نے اس کواور اس کے لشکر کو پکڑ کر سمندر میں پھینک دیا سووہ سب کے سب غرق ہو گئے اور وہ بعنی فرعون تھا ہی ملامت کے قابل بعنی الی حرکت کرنے والا تھا کہ جس پر اس کوملامت کی جائے (اور) وہ رسولوں کی تکذیب اور دعوائے رہوبیت ہے اور قوم عاد کو ہلاک کرنے میں بھی نشانی ہے جب ہم نے ان پر بانجھ (بے فیض) ہوا بھیجی وہ ایسی ہواتھی کہ اس میں کوئی فیض نہیں تھا،اس لئے کہ وہ ہوانہ تو حامل مطریقی اور نہ درختوں کو بار آ در کرنے والی ، کہا گیا ہے کہ وہ جنوبی ہواتھی وہ جس چیز پر بھی گذرتی تھی خواہ جان ہو یا مال اس کو بوسیدہ بٹری کے ما نندریزہ ریزہ کردیتی تھی اور شمود کے ہلاک کرنے میں بھی نشائی ہے جب ان سے اونٹنی کو ہلاک کرنے کے بعد کہا گیا چندون لیتنی اپنی زندگی کی مدت بوری ہونے تک اور مزے اڑالو جیہا کہ آیت تَمَتَّعُوا فی دارِ مُحَمِّ ثلاثَة ایّام میں ہے، لیکن انہوں نے اپنے رب کے تھم یعنی اس کی بجا آوری سے سرتالی کی جس پرانہیں تنین دن گذرنے کے بعد عذاب نے آ پکڑا لیعنی ایک مہلک چیخ نے ، اوروہ (عذاب) کوروزِ روش میں (تھلی آ تکھول سے) دیکھر ہے تھے پس نہ تو وہ کھڑ ہے ہو سکے بعنی نزول عذاب کے وقت وہ کھڑ ہے ہونے پر قا در نہ ہوئے اور نہ وہ ان کو ہلاک کرنے والے سے بدلہ ہی لے سکے ،اوران سے پہلے قو م نوح کا بھی یہی حال ہو چکا تھا لیعنی ان مکذبین مذکورین کو ہلاک كرنے سے مملے اوروہ بڑے تا فرمان لوگ تھے۔

عَيِقِيق الْرَبِي لِيسَهُ الْحِ لَفَيْسَارِي فَوَالِل

فِيُولِكَ ﴾ : هَـلُ أَتِكَ حَـدِيْثُ صَيْفِ إِبْوَاهِيْمَ، هَلْ يهال ثوق ولانے ، دلچين پيدا كرنے اوراس قصد كي عظمت شان كوظا مر كرنے كے لئے ہا اور يبي كها كيا ہے كہ هَلْ بمعن قَدْ ب، جيسا كه الله تعالى كةول هَمل أتى عَلَى الانسان حين مِن الدُّهر الخ من هَلْ بَمَعَىٰ قد ہے۔ (صاوی)

میر الی عضرت ابرا ہیم علی الفاق کی خدمت میں بطور مہمان آنے والے فرشتوں کی تعداد تین ہے زیادہ تھی،جس کے لئے ضوف جمع كالفظ استعال موتا جابية ، حالانكه صَيْفٌ مفرد كالفظ استعال مواباس كى كياوجه؟

جِينَ البِينِ عَلَيف چونكه اصل مين مصدر برس كااطلاق واحد تثنية جمع سب پر موتا بلندا كوئى اعتر اص نبيس ب

قِيُّولِكُمُ ؛ إِذْ دَخَعُلُوا لِعَصْ مِعْرات نِهُما ہے كہ إِذْ دَحَلُوا، أَذْ كُو تَعَلَّى كَذُوفَ كَاظْرِفْ ہے، اور وہى اس كا ناصب ہے اور بعض نے صدیت کوعامل بنایا ہے ای مقبل اتساك حدیثه مرالواقع فسی وقت دحولهم علیه اور بعض حضرات نے المكومين كوناصب قرارديا باس كے كه حضرت ابرائيم نے آنے والےمهمانوں كا داخل ہونے كوفت أرام كيا تھا۔

فِيْوَلِكَنَى: فَقَالُوا سَلَامًا مَسَلَامًا مفعول مطلق إلى كاتعل ناصب مسلَّمْتُ محذوف ب اى سَلَّمْتُ سَلَامًا يا نُسَلِّمُ عديكم سلامًا بمصدر جوكه فل كي جي قائم مقامي كررباب، ال لي تعل كوحذف كرديا كيا-

سلامٌ دعاء کے معنی کو تصمن ہے (نغات القرآن ، درویش) ثبات ودوام پر دلالت کرنے کے لئے رفع کی جانب عدول کیا ہے تا كەحفرت ابرابىم عَلَيْجِهِ وَالتَّنْوَ كَاسلام مهمانول كے سلام سے بہتر ہوجائے۔

فِيَوْلِكُنَّ وَاللَّهِ مَا أُوْجَسَ اس من يايا، اس فصول كيا، يد إيْسجَاسٌ سه ماضى واحد ذكر عائب م، إيْسجَاس كمعن دل يس محسوس كرنا ، اوردل ميس تخفي آواز كا آناب (نغات القرآن)

فِيَوْلِلْنَى الصَّمَرَ فِي نَفْسِهِ كَاصَافَ مَصْ بِإِن مَعَى كَلَّ جِد

فَيْكُولْكُ ؛ صَوَّة شديد فِي يكاركوكت بين، صوير الباب ورواز على آواز صَوِيرُ الفلم فلم كيك كا واز اَفْبَلَتْ صَائِحَةً اى جَاءَ تُصَائِحةً جِينَ حِلاتي آئي، اوربعض حضرات فِ أَفْبَلَتْ كاترجمه أَحَذَتْ كيابٍ يعنى ساره في جِينا جلانا شروع كرديا، يه أَفْبَلْتَ شَنَمْتَنِي كَتِبِل سے بِيعِيٰ تونے مجھے گالي ويشروع كردي_

فِيْكُولْكُوكُ ؛ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا لِين ساره نے بڑھا ہے میں فرزند کی خوشخبری من کرتیجب سے اپنامنہ پید لیاف الّت عَجُورٌ عَقِیمٌ اى أَنَا عَجُوزٌ عَقِيْمٌ فَكَيْفَ آلِدُ.

يَجُولُكُ : كَذَلِك بيمصدرمحذوف ك صفت بون ك وجد مضوب ب،اى قَالَ قولًا مِثْلَ ذَلْكَ الَّذِي قُلْنَا.

هِ فَالَ فَمَا خَطَبُكُمْ أَيُّهَا المُوسَلُونَ يجله متانفه إلى سوال مقدر كاجواب هي ، كويا كه كها كياب كه حضرت ابراجيم عَلَيْهَ كَا اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ فَي مَن وَلَهُ مَا تَعَلَّمُ وَاللَّهُ وَاللَّهِ اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّا اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللّلَّالِي اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّا اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّالِمُ وَاللَّهُ وَالَّاللَّهُ وَاللَّالِمُولُولُولُ اللَّهُ وَاللَّاللَّا اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّالِمُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّالِمُ اللَّهُ وَاللَّالِمُ اللَّهُ وَاللَّاللَّالِمُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّاللَّاللَّا لَا اللَّهُ وَاللَّا اللَّالِمُ الللَّا الللَّهُ وَاللَّاللَّا لَا اللَّهُ اللَّاللَّ اللَّهُ وَاللَّالِمُ اللَّهُ ال

وَفُولَكُم ؛ خطب، خطب كمعنى شان اورتصداورام عظيم، اوركارم كي بي-

فِيْوُلْكُ ، حِجَارَةً مِنْ طِينٍ مَطْبُوْ خِ بِالنَّارِ ، حِجَارةً بِهِ حَجَرٌ كَ جَعْ بِ-

سَيْنُواك، مِنْ طِيْنِ كَاضَافْهُ كَا كَيَافًا كُدُهُ إِنَّ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الله

جَوَى أَنْكِ الله الله الله الله المعاداة الم الكودفع كرنا الله الله كالمعض اوقات حسجارة اور حَسجَو اولوس كوبهى كهاجاتا ب جے بار ق کے بری معنی مراد ہوں تو مطلب ہوگا کہ قوم لوط کواولوں کے ذریعہ ہلاک کیا گیا حالا نکہ ایسانہیں ہے، یہ بالکل ایس ہی ے جیسا کہ استعالی نے فرمایا طَائِرٌ يَطِيْرُ بِجَنَاحَيْهِ اس من يطيرُ بِجَناحَيْهِ كاضافه كامقصداحمال مجازكووقع كرنا ہے، اس کئے کہ بعض اوقات تیز رفتار شخص کوبھی مجاز اطائر کہدویا جاتا ہے۔

يَيْكُواكَ: مفسرعلام نے مَطْبُوحٌ بالنار كااضافكس مقصد كے لئے كيا ہے؟

جَوْلَتُنِي: بياس شبه كاجواب ب كرجاره منى كالبيس موتاتو يهريهال منى كالتفركيون كها كياب يهال حدجدارة من طين ي آ گ میں بکی ہوئی مٹی مراد ہے جو تحق اور صلابت میں پھر ہی کے مثل ہوتی ہے ،ای کو میسے جیٹے گ کہتے ہیں یہ در حقیقت سنگِ گل کا

- ھ[زمَزَم پہَلشرز]≥

معرب ہے،جس کو کنگر بھی کہا جا تاہے۔

فَيُولِكُ ؛ مُسَوَّمَةً ، مُسَوِّمة كَ عَنَ معلَمة لِعِن نثان زوه كم بِن مُسَوَّمَةً بِالْوَجِجَارة كم مفت بونى ك وجه منصوب المجارة منسونة كا وجه منصوب المجارة منصوب المجارة منصوب المجارة منصوب المجارة الم

قِوْلَكُ : عِنْدَرَبِكَ يه مُسَوَّمَةُ كَاظْرِف إِي مُعَلَّمَةً عندةً.

چَوْلِیَّ؛ فَاخْوَجْنَا مَنْ کَانَ فِیْهَا یہاں۔ الله تعالیٰ کا کلام شروع ہور ہاہے، سابق میں حضرت ابراہیم اور فرشنوں کی ''نفتگونٹل کی ٹئی تھی۔

مین والت: فینها کامرجع قری قوم لوط ہیں، حالانکہ ماقیل ہیں اس کا کہیں ذکر نہیں ہے اس میں اصار قبل الذکر لازم آتا ہے۔ جی کی لینے: چونکہ قری قوم لوط معروف اور معبود فی الذہن تھے اس لئے ضمیر لانا درست ہے جیسے کہ مندرجہ ذیل شعر ہیں محبوب کے معروف یا معبود نی الذہن ہونے کی وجہ سے بغیر سابق میں ذکر کے ضمیر لائی گئی ہے۔

پوچھو پت نہ اُن کا آگے بڑھے چلو ہوگا کسی گل میں فتنہ جگا ہوا فی قصة موسیٰ فَیْ مِیں فَتْنہ جگا ہوا فی قصة موسیٰ فی موسیٰ اس کاعطف فینها پر ہاور تو کُنا کے تحت میں ہے، جیبا کہ فسرعلام نے جَعَلْمَا فی قصة موسیٰ آیة کہدکراشارہ کردیا ہے لیمن ہم نے چشم بصیرت رکھنے والوں کے لئے مولیٰ علی کا کا قصہ میں ہمی عبرت کا سامان رکھ دیا ہے اور وفی موسیٰ کا عطف فیلها پر ہے۔

فِيُولِكُونَ ، مَعَ جُنُودِهِ كااضافه كركاشاره كرديا كريد كنه مي باء بمعنى مع إد

قِحُولَی، سَاحِرُ اَوْ مَجْنُونُ آور مَعْنُ وا وَ بھی بوسکنا ہے اور بہن زیادہ بہتر معلوم ہوتا ہے اس کے کہ وہ حضرت موی علیقہ الفائلة ا

قِیُوَلْکُی ؛ و جُنُودَهٔ یه می درست ہے کہ اَخَدَافاہ کی خمیر مفتولی ؛ پرعطف ہویہ کہ مفتول معہ ہواور یکی ظاہر ہے۔ قِیُولْکُی ؛ عَقِیْہُ مَر بانجھ ورت السریسے المعقیم سے مرادوہ ہوا ہے جو بے فیض بلکہ مفر ہو، نہ شمر شجر ہواور نہ حامل مسطر اکثر مفسرین کا خیال ہے کہ وہ ہوا دَبُور (پچھوا) تھی ،حدیث ہے بھی اس کی تائید ہوتی ہے ، آپ نے فرمایا نُسصِسر تُ بالصَبَاء واهلکت عاد بالدبور اور بعض نے جنو فی ہوا مرادلی ہے۔

قِبُولَنَى، لَاتُلْقِحُ، اِلْقَاحْ ہے بمعنی حاملہ کرنا، بارآ ورکرنا، مادہ لقع ہے(س) لَقعُما حاملہ ہونا۔ قِبُولِنَی، اَلصَّعِقَةُ صَاعِقةً سَائِی بَلِی کوبھی کہتے ہیں اور چی ویتھاڑ کوبھی کہتے ہیں یہاں یہی دوسرے معنی مراد ہیں تا کہ دوسری

آيت إن عذابهم. الصيحة كالف نهو

— ﴿ (مَنْزُمْ بِبَلِثَهُ إِنَّ

فَيُولِنَى ؛ عَلَى مَنْ أَهْلَكُهُمْ بِيومَا كَانُوْا مُنْتَصِرِيْنَ كَأْفِيرِ بِالعِنْ وه النِي بِلاك كرف والي بإغالب ندآسكے يااس سے انقام ندلے سَكے، مگر يدعن ورست ببيس اس لئے كه الله تعالی سے نه كوئی انقام لينے پرقاور ہے اور نه غالب آنے پرالہذا بہتر موتا كه علامه كلى بجائے على مَنْ أَهْلَكُهُمْ كومًا كَانوا دَافِعين عَن أَنْفُسِهِم العذَابَ فرماتے۔

ێٙڣٚؠؙڒ<u>ٷڷۺٛ</u>ؙڕؙ

(فتح القدير)

فرشتوں نے آکرسلام کیا حضرت ابراہیم علیج کا فائد کا نظر ہے۔ بہتر طریقہ سے جواب دیا، اورائے دل میں کہاانجانے لوگ معلوم ہوتے ہیں، یا اپنے اہل کے پاس جاتے ہوئے اپنے کسی خادم وغیرہ سے کہا مطلب یہ ہے کہ خودم ہمانوں سے نہیں فرہایا اس لئے کہ بظاہریہ بات نامناسب معلوم ہوتی ہے، اور یہ جھی ممکن ہے کہ خودم ہمانوں سے فرمایا ہوکہ آپ حضرات سے بہتی اس سے پہلے شرف نیاز حاصل نہیں ہوا آپ شایداس علاقہ میں نئے نئے تشریف لائے ہیں۔

فَرَاغَ الليٰ اَخْلِهِ جَنِي سَاءُ مُوثَى كَمَاتَهِ مِهمانُوں كَكُمَا فِكَا انظام كَرِفْ كَ لِيُّ كَمِر مِين تشريف لِ مُكَةَ تاكه مهمان تكلفاً بينه كبيل كداس تكلف كى كياضرورت ہے؟

آ داب مهمانی:

ابن کیر نے فرمایا کداس آبت میں مہمان کے لئے چند آ داپ میزبانی کا تعلیم ہے، پہتی بات توبیہ کہ پہلے مہمانوں سے پوچھانیں کہ میں آپ کے لئے امانالاتا ہوں ، اور مہمان نوازی کے لئے ان کے پاس جوسب سے اچھی چیز موجود تھی کھانے کے لئے بیش کی ، پھڑا ذرج کیا اس کو بھونا اور لے آئے دوسری بات یہ کہ مہمانوں کواس بات کی تکلیف نہیں دی کہ ان کو کھانے کی طرف بلاتے بلکہ جہاں وہ بیٹھے تھے وہیں لاکران کے سامنے چیش کردیا ، گر کھانا سامنے رکھنے کے باوجود جب مہمانوں نے کھانے کی طرف بلاتے بلکہ جہاں وہ بیٹھے تھے وہیں لاکران کے سامنے چیش کردیا ، گر کھانا سامنے رکھنے کے باوجود جب مہمانوں نے کھانے کی طرف ہاتھ نہیں بڑھایا تو پوچھا آپ کھاتے کیوں نہیں ؟ اور ساتھ ہی اپنے دل میں خوف محسوس کیا ، غالبًا اس ملک کا دستور تھا کہ مہمان اگر کوئی براخیال رکھتایا اس کا ارادہ تکلیف پنچانے کا ہوتا تو وہ کھانا نہ کھاتا حضر سے ابراہیم علیہ کا کھائے تھی۔

(حَزَّم بِتَلِقَ لِيَّا

ان نو وار دمہمانوں کو کھانے ہے دست کش پایا تو دل عیں اندیشہ کیا کہ مباد اان کا کوئی شرکا ارادہ ہو، مہمان حضرت ابراہیم علیم فاضلا کے اندیشہ کو بجھ گئے اس لیے کہ اس وقت کے چوروں اور ظالموں میں بھی بیشرافت تھی کہ جس کا پچھ کھالیا تو پھراس کو نقصان نہیں پہنچاتے تھے اس لئے نہ کھانے ہے شبہ ہوتا تھا کہ آنے والے کی نیت خیرنہیں معلوم ہوتی ، چنانچہ حضرت ابراہیم علیم کاندیشہ کو وور کرنے کے لئے فرمایا ، ڈرونہیں ، ہم کھانے ہے دہشش اس لئے نہیں کہ ہم کوئی بُر اارادہ لیکر آئے ہیں بلکہ حقیقت سے کہ ہم بصورت انسانی فرشتے ہیں ہم کھایانہیں کرتے اور اپنے فرشتے ہونے کی تائید میں اللہ تعالی کی طرف ہے ایک دانشمندذی علم فرزندی خوشخری بھی دیدی کہ اللہ تعالی تم کوا یک لڑکا عطا کرے گا جو ایسا اور ویسا ہوگا ، اور پہنو شخبری جمہور کے لئے دانشمندذی علم فرزندگی خوسیا کہ سورہ ہود میں اس کی صراحت موجود ہے۔

مُسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ وَهُ كَكُر يَاں نيرے رب كی طرف سے نشان زوہ ہیں كداس كے ذريعه كس مجرم كی سركو بی ہونی ہے ہمورہ م ہوداورالحجر میں اس عذاب كی تفصیل به بنائی گئی ہے كدان كر بستيوں كو بلٹ ديا گيا اوراو پر سے بكی ہوئی مٹی کے پتھر برسا ديئے گئے ، كنگر يوں پر کيا علامت گئی ہوئی تھی ؟ بعض مفسر ین نے كہا كدان كنگر يوں پر سيا ووسفيد دھارياں تھيں اور به بھی كہا گيا ہے سياہ سرخ دھارياں تھيں اور به بھی كہا گيا ہے سياہ سرخ دھارياں تھيں اور به بھی كہا گيا ہے سام كے در بعد مركو بی كر نی تھی۔

(فتح القدير شوكاني)

فَاخُورَجُنَا مَنْ ثَكَانَ فِيْهَا مِنَ المؤمِنِيْنَ (الآية) مطلب يہ ہے کہ عذاب آئے سے پہلے ان کوآگاہ کردیا گیا تھا اوراس سبتی ہے نکل جائے کا تھم دیا تھا تا کہ وہ عذاب ہے محفوظ رہیں ،اور یہ حضرت لوط عَلِیْلِ کَا اَکْھُرْتِھا جس میں ان کی دو بیٹیاں اور کچھان پرایمان لانے والے تھے، کہتے نیں کہ یکل تیرہ آ دی تھےان میں حضرت لوط عَلا الله الله الله کی بیوی شام نہیں تھی، بلکہ وہ اپنی قوم کے ساتھ عذاب سے ہلاک ہونے والوں میں تھی۔ ایسر التفاسین

وَ مَسَ كَنَا فِيهَا آيَةً لِلَّذِينَ يَخَافُونَ الْعَذَابَ الْآلِيْمِ السِكِ بعد بم نے بس ايك نشانى ان لوگوں كے لئے جھوڑ دى جو وردنا ک عذاب سے ڈرتے ہیں۔

وه نشانی کیاتھی؟

بعض مفسرین حضرات نے ان نشان ز دہ کنگر یوں کونشانی قرار دیا ہے اور بعض حضرات نے کہاہے کہ اِس نشانی ہے مراد بحیرہ مردار (Dead Sea) ہے جس کا جنوبی علاقہ آج بھی تباہی وہربادی کے آثار پیش کررہاہے، ماہرین آثارِ قدیمہ کا انداز ہ ہے کہ قوم لوط کے بڑے شہر غالبًا شدیدزلز لے سے زمین کے اندرجنس کئے تضاوران کے ادیر بحیرة مردار کا یانی تھیل گیا تھ کیونکہ اس بحیرہ کا وہ حصہ جو'' اللسان'' نامی حجھو ئے سے جزیرہ نما کے جنوب میں واقع ہے صاف طور پر بعد کی پیدا وارمعنوم ہوتا ہے اور قدیم بحیرۂ مردار کے جوآثار اس جزیرہ نما کے شال تک نظر آتے ہیں وہ جنوب میں پائے جانے والے آثار ہے بہت مختف ہیں،اس لئے بیقیاس کیا جاسکتا ہے کہ جنوب کا حصہ پہلے اس بحیرہ کی سطح سے بلند تھا بعد میں کسی وقت وصنس کراس کے نیچے چلا گیا اس کے دھننے کا زمانہ بھی دوہزار قبل سے کے لگ بھگ معلوم ہوتا ہے اور یبی تاریخی طور پر حضرت ابراہیم علیق کا ظائے کا اور حضرت لوط عَلِيْقَانَا لَنَانَا اللَّهِ بِ١٩٦٥ ومِن آثار قديمه كي تلاش كرنے والى ايك امريكي جماعت كواللمان پرايك بهت برا قبرستان ملاہے جس میں ہیں ہزار سے زیادہ قبریں ہیں،اس سے اندازہ ہوتا ہے کہ قریب میں کوئی ہڑا شہر ضرور آباد تھا مگر کسی ایسے شہرکے آٹارآس پاس کہیں موجود نہیں ہیں،جس ہے متصل اتنابر اقبرستان بن سکتا ہو،اس ہے بھی اس شبہ کی تقویت ہوتی ہے کہ جس شہر کا بیقبرستان تھا وہ بحیرہ میں غرق ہو چکا ہے، بحیرہ کے جنوب میں جوعلاقہ ہےاس میں اب بھی ہرطرف تباہی کے آثار موجود ہیں اور زمین میں گندھک ،رال، تارکول، اور قدرتی گیس کے اہتے بڑے ذخائر پائے جاتے ہیں کہ جنہیں و کھے کر گمان ہوتا ہے کہ می وقت بجبیوں کے گرنے سے بازلز لے کالا وا نکلنے سے بہاں ایک جہنم میصٹ پڑی ہوگی۔

وَالسَّمَاءُ بَنَيْنُهَا بِالْيَدِ بِقُوَّةٍ قُولَا المُوسِعُونَ @ لَهَا قَادِرُونَ يُقالِ أَدَ الرَجُلُ يَئِيدُ قَوِى وأوسَع الرَّحُلُ صَار ذاسِعة وتُذرة والكَرْضَ فَرَشْنَهَا مَهَدناها فَيْعَمَ الله هَدُونَ عَن مَن كُلِّ شَيء مُتَعَلِق بِقَولِ خَلَقْنَا زَوْجَاينِ صننفين كالذكر والأنثي والشماء والارض والشمس والقمر والشهل والجبل والطيف والبُناء والخُلُقِ والخامِضِ والنُورِ والظُلُمةِ لَ**عَلَكُمْ تَكُلُّرُونَ۞** بِحَذْفِ إحدى التَّاتَينِ مِنَ الاَصْلِ فَتَعْلَمُونَ أَنَّ حَالِقَ الاَرْواح فَرُدٌ فَتَعُنُدُونَه فَقِوُّوُ اللَّهُ اللَّهُ اي اللي تَوَابِه مِن عِقابِه بِأَنْ تُطِيعُوه ولَا تَعْصَوه إِل**ِيَّ لَكُمُّ مِّنِنَهُ فَذِيْرُهُ مِن** عَقابِه بِأَنْ تُطِيعُوه ولَا تَعْصَوه إِل**ِيَّ لَكُمُّ مِّنِنَهُ فَذِيْرُهُ مِن** فَيَابِهُ فِي فَوَابِه مِن عِقابِه بِأَنْ تُطِيعُوه ولَا تَعْصَوه إِل**ِيَّ لَكُمُّ مِّنِنَهُ فَذِيْرُهُ مِن** فَي - ﴿ (زَمُزُمْ بِهَالشَّرْ) ﴾ -

الإندار وَلَاتَعْعَلُوامَعَ اللهِ اللهَ الْخَرِّ الْإِنْكُنُومِنْهُ نَذِيْرُمُّيِ مِنْ قَيْدُ قَسَل فَعَرُوا قُلَ لَهِم كَذَٰلِكُمَّ الْذِينَ مِنْ قَيْلِهِم مِّنْ رُّسُولٍ إِلَّاقَالُولُ هو سَلِحَزَّاوُمُجُنُونٌ ١٠ اي بشن تَكديمهم لَكَ نقولهم اِنْكَ سَاحِرٌ اومَحْنونٌ تكذيتُ الأمَمِ قَمَلَهِم رُسُنَهِم بِقُولِهِم ذلك أَتُوكِصُوا كُلُّهِم بِأَ اسْتَفَهَامٌ بِمعنى النَّفي بَلِّهُمِّ قُومٌ طَاعُونَ ﴿ حَمَعَهِم على هذا التقول طُغيَانُهم فَتُوَلُّ اعْرِضَ عَنْهُمْوَمُا أَنْتَ بِمَلُومٍ ﴿ لِاللَّهَ مَا لَا سَالَة وَكَرَرُ عِط بالقران قَإِنَّ الْذِّكُرِي ثَنْفَحُ الْمُؤْمِنِينَ® مَن عَلِمَه اللَهُ تعالى انّهُ يُؤمنُ ۖ وَمَاخَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّالِيَعْبُدُونِ® وَلا يُنَافِي دلك عَدُم عِناده الكَافريسَ لِآنَ الغَايَةَ لَا يِنْزُمُ وُخُودُهَا كَما في قوْلك بريْتُ هذا القِيمَ لِأكْتُبُ به فإنَّكَ قَد لا تَكُنُتُ بِهِ مَا أَرِي**َدُونَهُمْ مِّنْ رِنِّ قِ** لَى ولا نُسِهِمْ وعيرهم قَمَّا أَرِيكُ أَنْ يُ**طُعِمُونِ ﴿** وَلَا أَنْفُسَهِم ولَا غيرَهُم إِنَّ اللَّهَ هُوَالرَّزَّ اللَّهُ وَالْقُوَّةِ الْمَتِينُ ﴿ الشدِيدُ ۚ فَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَّمُوا اللَّهَ مِاللَّكُ فُر مِن أَهُل مِكَّةَ وغيرهم ذُنُونًا عَسِيبٌ مِن العدَابِ مِّشْلُ ذَنُوبٍ عَسِيب أَصْحِيهِمْ الهالكيْنِ قبلهِم فَلَايَسْتَعِجَلُونِ بالعَدَابِ إِن أَحْرِتُهُمْ عُ الى يوم القيمَهِ فَوَيُلُ شِدَة عَدَابِ لِللَّذِيْنَ كَفَرُ وَامِنَ مِي يُوْمِهِمُ الَّذِي يُؤْعَدُونَ ﴿ ال

ت اورآ سان کوہم نے اپن قدرت توت ہے بنایا اور بلاشبہم وسیج القدرت ہیں (یعنی) ہم اس پر قادر ہیں بولا جاتا ہے الدَ المرَجُلُ يَئِيدُ آ دمی قوی ہو گيا (اور بولا جاتا ہے) أوْسَعَ المرجُلُ آ دمی وسعت وقدرت والا ہو گيا اور ہم نے ز مین کو بچھا یا سوہم کیسے اچھے بچھانے والے ہیں اور ہم نے ہر چیز کو جوڑے جوڑے بنایا مثلاً نراور مادہ، آسان اورز مین ہمس اور قمر، میدان اور پہاڑ، گرمی اور سردی، شیریں اور ترش، نوراور ظلمت تا کتم سبق لو (مُسَدُّ تَحُووں) میں اصل ہے دوتا وَل میں ہے ا یک کوحذف کر کے تاکیتم جان لوکداز واج کا خالق ، فرد ہے (جوڑے کا پیدا کرنے والا اجوڑ ہے) لہٰذااس کی بندگی کرو (اے محمد کر واوراس کی نافر مانی ندکر ویقینا میں تم کواس کی طرف ہے صاف صاف تنبید کرنے والا ہوں اوراس کے ساتھ کسی اور کومعبود نہ عفہراؤ میں تم کواس کی طرف سے کھلاڈرانے والا ہول (فَفِرُّوا) سے پہلے قُلْ لَهُمْ مقدر مانا جائے گااس طرح جولوگ ان سے سلے گذرے ہیں ان کے پاس جوبھی رسول آیا ان ہے کہہ دیا کہ بیہ جا دوگر ہے یا دیوانہ لیعنی جس طرح بیلوگ اپنے قول اِنگ سَاحِرٌ أَوْمَجْنُونٌ كَوْرِيعِهَ بِي تَكذيب كررب بين اسلاح انهى كلمات كوزريعدان سي بهل امتول في بعي اسيخ ر سولوں کی تکذیب کی کیااس بات کی ایک دوسرے کو وصیت کر مرے ہیں؟ بیاستفہام جمعنی فی ہے (تہیں) بلکہ ریسب کے سب ہرکش لوگ ہیں ان کی سرکشی نے ان کواس بات پر جمع کر دیا ہے تو آپ ان ہے منہ پھیرلیں آپ پر کوئی ملامت نہیں اس لئے کہ آپ نے تو ان کو پیغام پہنچادیا اور آپ قر آن کے ذریعہ تھیجت کرتے ہیں یقینا پہلسےجت ایمان والوں کو نفع دیے گی ، جس کے بارے میں اللہ کوعلم ہے کہ وہ ایمان لائے گا، میں نے جنات کواور انسانوں کوشخض اس لئے پیدا کیا ہے کہ وہ صرف میری بندگی

کریں اور بیر(مقصد تخلیق) کا فروں کے عبادت نہ کرنے کے منافی نہیں ہے اس لئے کہ غایت کا وجود لازم نہیں ہوتا جیسا کہ تو کے کہ میں نے بیالم بنایا ہے لکھنے کے لئے اور بھی ایسا بھی ہوتا ہے کہ آپ اس قلم سے بیس لکھتے نہ میں ان سے اپنے لئے روزی **جا ہتا ہوں نہ خودان کے لئے اور ندان کے غیر کے لئے اور نہ میں بیرجا ہتا ہوں کہ وہ مجھے کھلائیں اور نہ خودان کواور ندان کے غیر کو** الله تو خودی سب کورزق دینے والانهایت توت والا ہے بلاشبہ مکہ وغیرہ کے ان لوگوں کے لئے جنہوں نے کفر کے ذریعہ اپنے اوپر ظلم کیاعذاب کی باری ہے ان کے ان ہم میٹر بول کی باری کے ما تند جوان سے پہلے ہلاک ہو بیچے لہٰذاوہ مجھ سے عذاب طلب کرنے میں جدی نہ مجائیں اگر میں ان کو قیامت تک مہلت دیدوں ان کا فروں کے لئے بڑی خرائی لیعنی سخت عذاب ہوگی اس ون کے آئے ہے جس کا ان سے وعد و کیا جاتا ہے لیعنی قیامت کا دن۔

عَجِقِيق الْمِرْكِ لِيسَهُ الْحَالَةِ لَفَيْسَارِي فَوَالِلاَ

فَيْكُولْكُ ؛ وَالسَّمَاءَ بَنَيْنَهَا جَهُور فِي وَالسَّمَاءَ بِإوروَ الْآرْضَ بِعلى سبيل الاشتغال نصب برحا ب، تقذير عبارت بيه وبَننينا السَّمَاءَ بَنَينها، وَفَرَشْنَا الآرْضَ فَرَشْنها اورابوالسماك اورابن مقسم في دونو ل جكم مبتداء ہونے کی وجہ سے رفع پڑھاہے ،اوران دونوں کا مابعدان کی خبر ہے ،اول بعنی نصب اولی ہے ، جملہ فعلیہ کا عطف جملہ فعلیہ

فَيُولِكُنَّ ؛ وَإِنَّا لَمُوسِعُونَ يه جمله شارح كاتقرير كارو الصحال مؤكده السائح كمثارح في بهات متعين كردى المك مُوسِعُونَ، فَادِرُونَ كَمْ عَنْ مِن بِالبَدَامُوسِعُونَ أَوْسَعَ لازم ہے ، وگا، اور برایا ی ہے جیبا كه كها جاتا ہے أَوْرَقَ الشَّجرُ اى صَارَ ذَاوَرَ قر جب بي بات جمين آئن كه لَـمُوسِعُونَ شارح كي تقرير كمطابق لازم بي تو پرجلالين كجن سنول میں لموسفون کے بعد لَها ہے وہ سی نہیں ہے، البتدان لوگوں کے زو یک جنہوں نے لموسفون کومتعدی کہا ہے ان كنز ديك لَهَا هيم موكاء اوراس صورت مين لَمُو سِعُونَ حال مؤسسه موكا جوايك نيافا كدود كار

> فِيُوْلِكُمُ ؛ خَلَقْنَا زَوْجَيْن. سيخوان، زوجين كي سات مثاليس كيون دي؟ جبكها يك مثال بهي كافي بوسكتي تقي؟

جَوْلَ شِعْ: متعدد مثالیں دیکراس بات ک طرف اشارہ کردیا کہ جوڑے اور زوج کی جوبات ہے بیمحسوسات تک محدود ہے تا کہ عرش کری بلوح محفوظ ،قلم کولیکراعتر اض نه مو۔

عِنْ إِنْ استفهام بمعنى النفى مطلب بيب كهاولين وآخرين كونبيول كى تكذيب كرفيس كيسال اورايك بى بات كين پر جمع کرنے والی چیز ایک دوسرے کو وصیت کرنانہیں ہے اس لئے کہ زمانے مختلف ہیں لاہذا تو اصی ممکن نہیں ہے، بلکہ اصل سبب اورعلت مشتر کہ بعناوت ،عنا داورسرکشی ہے جو دونوں فریفوں میں بدرجہ اتم موجود ہے۔

فَيْحُولْنَى ؛ لِأَنَّ الْفَالِمَةَ لَا يَكُونُهُ مَّ مَارِحَ وَعَمَّ كُلالْهُ مَعَاكُ كَا مقعدا سعبارت كاضافه عاس شبكوه فع كرنا ب كه لِيَعْهُدُون مِن لام علت باعث كے لئے ہے بینی جن وانس كو پيرا كرنے كى علت اورغرض عباوت ہے، اس سے لازم آتا ہے كه اللہ تعالى كے افعال معلّل بالاغراض ہوں حالا نكه اللہ تعالى كاكوئى فعل معلل بالاغراض ہيں ہوتا ، اس كا جواب و يا كه لِيَسَعْبُدُونِ مِن لام عاقبة اور مير ورت كے لئے ہے جس كوعلت غائبي كى كہتے ہيں ، نه كه علت باعث كے لئے۔

قِيُوْلِيَّىٰ؛ وَلَا يُنْاَفِي ذَلَكَ عَذْم عِبَادَةِ الْكَافُرِينَ اسْءِارت كِاضَافْهُكَا مَقْصِدا يكسوال مقدر كاجواب ہے۔ يَنِيُوْلِكُ: جب جن وانس كَى خليق كى علت غائية عبادت ہے تو ہرانسان كوعبادت كرنى جاہئے حالانكه ہم ديكھتے ہيں كه كافرالله كى بندگی نہيں كرمے ؟

جَوُلُ بُنِ عَنیة کاوتوع ضروری اور لازم نہیں ہوتا مثلا آپ ایک قلم بناتے ہیں لکھنے کے لئے گربعض اوقات اس سے نہیں لکھتے ،
حالانکہ آپ کے قلم بنانے کی غرض اور عایت لکھنا ہی ہے۔ دوسرا جواب بعض حضرات نے بید یا ہے کہ یہاں عبداد سے مرادعباو
مومنین ہیں جو کرتھیم بعد التخصیص کے قبیل ہے ہے، اور مومنین ایمان کے اعتبار سے عبادت گذار ہوتے ہیں۔
چوک کی : لِاَنْفُرِسِهِمْ اس کلمہ کے اضافہ کا مقصد ایک شہر کا دفع کرنا ہے۔

شہر: عام طور پر دنیوی سادات اور خلاموں کے مالکول کی بیدعادت اور طریقہ ہوتا ہے کہ غلام خرید نے کا مقصد ان سے اپنے لیئے اور خود غلاموں کے نفقہ کے لئے کسب کرانا ہوتا ہے تو کیا اللہ تعالیٰ کا بھی یہی مقصد ہے؟

د رفع : عام مالکول کی طرح القدت کی نہ بیادت ہے اور نہ ضرورت ہے بلکہ وہ تو خودا پنے بندوں کوروزی دیتا ہے۔ علی از ال کے فتح کے ساتھ ذنٹ کی جمع ہے بڑے ڈول کو کہتے ہیں ،اصطلاحی اور عرفی معنیٰ میں ،حصہ، باری کو کہتے ہیں۔

لِفَسِّ يُروَلَثُونَ مَنْ

ربط:

سابقہ آیات میں قیامت وآخرت کا بیان اور اس کے منگرین پرعذاب کا ذکرتھا، ان آیات میں حق تعالیٰ کی قدرت کاملہ کا بیان ہے اور روزِ قیامت زندہ کرنے اور ان ہے حساب کتاب لینے پر جومشر کین کو تعجب تھا اس کا ازالہ ہے، نیز تو حید کا اثبات اور رسالت برایمان کی تاکید ہے۔

بَنْیَنْهَا مِالَیدٍ وَإِنَّا لَمُوْسِعُوْنَ ، اَیْدُ قوت وقدرت کے منی میں آتا ہے، حضرت ابن عباس تفخلف کھالٹے کے بہاں بھی معنی لئے ہیں اَس کے منی طاقت وقدرت رکھنے والے کے بھی ہو سکتے ہیں اس معنی لئے ہیں اَس کے منی سیلازم ہوگا ، اس ارشاد کا مطلب سے ہے کہ سے صورت میں بیلازم ہوگا ، اس ارشاد کا مطلب سے ہے کہ سے آتان ہم نے کسی کی مدووتعاون سے نبیس بلکہ اپنے وست قدرت اور زور توت سے بنایا ہے ، پھر بیلقور تم لوگوں کے و ماغ میں آخر کیسے آتا ہے کہ ہم تہم مسلسل آخر کیسے آتا ہے کہ اس عظیم کا مُنات میں ہم مسلسل آخر کیسے آتا ہی کہ ہم تہم کی مدووتا وہ وہ اور کی کے دومرے معنی کے لیاظ سے مطلب سے ہے کہ اس عظیم کا مُنات میں ہم مسلسل

وسعت کررے ہیں اور ہر آن اس میں ہماری خلیق کے نئے نئے کر شھرونما ہوتے رہے ہیں، ایسی زبر دست خلاق ہستی کو آخرتم نے اعدہ سے عجز کیوں بچھ رکھاہے؟ اور کہا گیاہے کہ رزق میں وسعت کرتا مرادے ای اِنّسا لسمو سِسعُوْنَ الوزقَ بالمطر جو ہری نے کہا ہے:اُوْسَعَ الرجُلُ، صَارَ ذَا سِعَةٍ وغنیً.

فَفِرُوا الٰی اللهِ وورُ والله کی طرف، حضرت این عباس تفکین کانی کانی افرای مرادیه ہے کہ اپنے گنا ہوں ہے تو بہ کرکے اللہ کی طرف دعورت این عباس تفکین کانی کانی کی طرف دعورت دیتے ہیں تم ان اللہ کی طرف دعورت دیتے ہیں تم ان سے بھا گراندگی بناہ لووہ تمہیں ان کے شرے بچالے گا۔ (قرطبی)

وَمَا خَلَفْتُ الَّجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ لِينَ ہم نے جنات اورانسان کوتض عبادت کے لئے پیدا کیا ہے،اس میں طاہرنظر میں دواشکال پیدا ہوتے ہیں جس کا جواب اجمالی طور پر تحقیق وتر کیب کے زیرعنوان ہو چکا ہے اس کی مزید تفصیل ملاحظہ فرمائیں۔

اعتراض اول:

یہ ہے کہ جس مخلوق کواللہ تعالیٰ نے کسی خاص کام کے لئے پیدا کیا ہے اوراس کی مشیست بھی یہی ہے کہ پیخلوق اس کا م کوکر ہے، توعقلی طور پر بیناممکن اور محال ہوگا کہ پھروہ مخلوق اس کام سے انحراف کر سکے کیونکہ اللہ تعالیٰ کے ارادہ اور مشیست کے خلاف کوئی کام محال ہے۔

اعتراض اول كايبهلا جواب:

پہلے اشکال کے جواب میں بعض مغمرین نے اس مضمون کوصرف موشین کے ساتھ مخصوص قرار دیا ہے لینی ہم نے مومن جنات اور مومن انسانوں کو بجز عبادت کے اور کام کے لئے پیدائیس کیا اور بیہ بات طاہر ہے کہ مومن کم وہیں عبادت کے بائد ہوتے ہیں جو کہ اہم عبادت بلکہ اصل عبادت ہے، یہ قول ضحاک اور سفیان وغیرہ کا ہے اور حضرت ابن عباس تفتی اللہ بھی کا کہ قراءت آیت نہ کورہ میں اس طرح ہے وَ مَا خَلَقَتُ الْجِنَّ وَ الإنْسَسَ مِنَ الْمُوْمِنِيْنَ اِلّا لِيَعْبُدُون اس قراءت ہے بھی اس قول کی تائید ہوتی ہے کہ یہ ضمون صرف مونین کے ق میں آیا ہے۔ اللہ فومِنِیْنَ اِلّا لِیَعْبُدُون اس قراءت ہے بھی اس قول کی تائید ہوتی ہے کہ یہ ضمون صرف مونین کے ق میں آیا ہے۔

ندكوره اعتراض كاد وسراجواب:

ندکورہ اعتراض کا ایک جواب یہ بھی ہے کہ اس آیت میں ارادہ الہیہ سے مراد ارادہ کئو پی نہیں ہے جس کے خلاف کا دقوع محال ہوتا ہے، بلکہ ارادہ تشریعی مراد ہے بعنی یہ کہ ہم نے ان کو صرف اس لئے پیدا کیا ہے کہ ہم ان کوعبادت کے لئے مامور کریں، اور امرالہی چونکہ انسانی اختیار کے ساتھ مشروط ہوتا ہے، اس کے خلاف کا دقوع محال نہیں اللہ تعالیٰ نے اپنے تمام بندوں کوعبادت

≤[زمَزَم بِبَاشَهٰ]≥

كاحكم ديديا ہے مگرساتھ ہى اختيار بھى ديا ہے،اس لئے جس نے خداداداختيار كوچى استعال كياتو وہ عبادت ميں لگ كي اورجس نے غلط استعمال کیا وہ عمباوت ہے منحرف ہوگیا بیر حضرت علی تَوْعَلَقْلَةَ کَا اِللّٰهِ مَا اللّٰهُ مَا اللّٰهِ مَا اللّٰهِ عَلَيْ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ الل

ندکوره اعتراض کا تیسراجواب:

اس جواب کا خلاصہ رہے کہ اللہ تعالیٰ نے جن وانس کی تخلیق اس انداز پر کی ہے کہ ان میں استعداد اور صلاحیت عبادت کرنے کی ہو چنانچہ ہرجن وانس کی فطرت میں ہاستعداد قدرتی موجود ہے پھرکوئی اس استعداد کو سیح مصرف میں خرچ کر کے کا میاب ہوتا ہے اور کوئی اس استعداد کوایے معاصی اور شہوات میں ضائع کردیتا ہے اور اس مضمون کی تا ئیداس حدیث ہے بھی موتى ب، آپ نے فرمایا كُلُّ مولُودٍ يُولَدُ على الفطرةِ فَابَوَاهُ يُهَوِّ دَانِهِ أَوْ يُمَجِّسَانِهِ لِيمَن پيرامونے والا مر بحي فطرت پر پیدا ہوتا ہے، پھراس کے ماں باپ اس کواس کی فطرت ہے ہٹا کرکوئی یہودی بنادیتا ہےتو کوئی مجوی بنادیتا ہے اور فطرت سے مراداکش علماء کے نز دیک دین اسلام ہے اس آیت کا بھی یہی مطلب ہے۔ (مظهری، معارف)

د وسرااشکال:

د وسرا اشکال یہ ہے کہ اس آیت میں جن وائس کی تخلیق کو صرف عبادت میں منحصر کردیا ہے، حالا نکہ ان کی پیدائش کے علاوہ دوسرے فوائد و مبقاصدا و حکمتیں بھی موجود ہیں۔

دوسرے اشکال کا جواب:

د وسرےاشکال کے جواب کا خلاصہ بیہ ہے کہ حصراضا فی ہے حقیقی نہیں ، لہٰذا کسی مخلوق کوعباوت کے لئے پیدا کرنا اس ہے دیگرفوا کدومنا فع کی نفی نہیں کرتا۔



٩

سُورَةُ الطُّورِ مَكِّيَّةٌ تسعُ وَّارْبَعُونَ آيَةً.

سورهٔ طور کی ہے انبیاس آبیتیں ہیں۔

وَكُنْ مَسْطُورِ فِي رَقِي مَنْشُورِ أَى النُّورَةِ أو القُران وَالْبَيْتِ الْمَعْوُدِ أَمُ وَعَى السَّماءِ الشَّالِثَةِ أو السَّادِسَةِ أو السَّابِغَةِ بِحِيَالِ النَّكَعْبَةِ يَـزُّورُهُ فِي كُلِّ يَومِ سَبُعُونَ أَلْفَ مَلَكٍ بِالطُّوَافِ والصَّلُوةِ لَا يَعُودُونَ إليه أبَدًا وَالسَّقْفِ الْمَرْفُوعِي أَى السَّماءِ وَالْبَعْرِالْمَسْجُولِ اى المَمْلُوءِ إِنَّ عَذَابَ رَبِكَ لُواقِع ﴿ لَنَازِلٌ بِمُسْتَحِقِه مَّالَهُ مِنْ ذَافِجِ ﴿ عنه يَوْهُم مَعُمُولُ لَوَاقِعٌ تُمُورُالْتُمَاءُمُورًاكُ تَتَحَرَّكُ وتَدُورُ قَلَيْيُوالْجِبَالُسَيْرُافُ تَصِيرُ بَبَاءً سَّنْتُورًا وذلك في يَوم القيمة فَوَيْلُ شِدَّة عذَاب يَوْمَ إِلْمُكَلِّذِينِينَ ﴿ لِلرُّسُلِ الْآِيْنَ هُمْ فِي خَوْضٍ بَاطِل تَلْعَبُونَ الْ الدُيْنَ فُوسِهِ يِّوْمُ يُكَكُّمُونَ إِلَى نَارِجَهَنَّمَ دَعَّا^ق يُدْفَعُونَ بِعَنَفٍ بَدَلْ مِن يَومَ تَمُورُ ويُقالُ لهم تَبْكِيتًا هٰذِهِ التَّارُ الَّيِّيَ كُنْتُمْ بِهَا تُكَلِّرُ بُونَ اللهِ عَنَوْ مَنْ مَوْرُ ويُقالُ لهم تَبْكِيتًا هٰذِهِ التَّارُ الَّيِّيِ كُنْتُمْ بِهَا تُكَلِّرُ بُونَ اللهِ عَنَوْ مِنْ اللهِ عَنَوْ مِنْ اللهِ عَنَوْ مِنْ اللهِ عَنَوْ مِنْ اللهِ عَنْوْ اللهِ عَنْوْ اللهِ عَنْوْ مِنْ اللهِ عَنْوَاللهِ عَنْوْلُ اللهِ عَنْوَاللهِ عَنْوَاللهِ عَنْوَاللهِ عَنْوَاللهِ عَنْوَاللهِ عَنْوَاللهِ عَنْوَاللهِ عَنْوَاللهِ عَنْوَاللهِ عَنْوَاللّهُ عَنْوَاللّهُ عَنْوَاللّهُ اللّهُ عَنْوَاللّهُ عَنْوَاللّهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَنْوَاللّهُ عَنْ عَنْوَاللّهُ عَنْوَاللّهُ عَنْوَاللّهُ عَنْهُ عَنْ اللّهُ عَنْوَاللّهُ عَنْوَاللّهُ عَنْوَاللّهُ عَنْوَاللّهُ عَنْ عَنْ عَنْوَاللّهُ عَلَيْهُ عَنْهُ عَلَيْهِ اللّهُ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْ اللّهُ عَنْ اللّهُ عَنْ اللّهُ عَنْ اللّهُ عَلَيْهِ عَلَا لِمُعْلِقَالُ اللّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْ اللّهُ عَلَا عَلَيْ اللّهُ عَلَيْهِ عَلْمُ عَلَا عَلَا عَلَا عَلْمُ اللّهُ عَلَيْهِ عَلْمُ عَلَا عَلَا عَلْمُ عَلْمُ عَلَا عَلَا عَلَا عَلْمُ عَلَا عَلَاللّهُ عَلَيْهِ عَلَا عَلَا عُلْمُ عَلَيْكُ وَاللّهُ عَلَا عَلَا عَلَا عَلَا عَلَا عَلْمُ عَلَيْكُ اللّهُ عَلَيْكُوا عَلَا عَالْمُ عَلَا عَا عَلَا عَا عَلَا عَا عَلَا عَا عَلَا عَا <u> أَفَيتُ حُرُّهٰ ذَآ</u> العذابُ الَّذِي تَرَوْنَ كما كُنْتُمْ تَقُولُونَ فِي الوَحْي بِذا سِحُرٌ أَمُّ أَنْتُمُ لِلَّ تُنْجِرُونَ الصَّارِهُ الصَّارِهُ الْعَالِمُ الْعَلَامُ الْعَلَامُ الْعَلَامُ اللهِ عَلَى الوَحْي بِذا سِحُرٌ أَمُّ أَنْتُمُ لِلْ تُنْجِرُونَ الْعَلَوْهَا فَاصْدِرُواْ عسه أَوْلَاتَصْبِرُوَّا صَبَرُكُم وجَزَعُكُم صَوَّاءً عَلَيْكُمْ لِانَّ صَبَرَكُم لاَ يَنْفَعُكم إِنَّمَا أَنَّجُزَوْنَ مَاكُنْتُمْرَّعُمَلُوْنَ ® اى جَزَانَهُ إِنَّ الْمُتَّقِيِّنَ فِي جَنْتٍ وَّنَعِيمِ فَالْكِهِيْنَ مُتَلَذِذِينَ مِمَّا مَصُدِريَةٌ النَّهُمُ اعطامِم لَبُّهُمُ وَوَقَهُمُ رَبُّهُمُ عَذَابَ الْحِيْمِ عَـطُفٌ عـلى اتساسم اى بِإِتْيَانِهم ووِقَايَتِهم ويُقالُ لهم كَالُوَالُّالِّرُبُوالْكِنِيُّا حَالٌ اى مُتَهَبِينَ بِمَا البَاءُ سَسَيَّةٌ كُنْتُمْرَتُعْمَالُونَ ﴿ مُثَلِينَ حالٌ من الضَّميرِ المُسْتَكن فِي قولِه تعالى فِيُ جَنَّتٍ عَ**لَى سُرَى مَصْفُوفَاتُو** بَعُصْب الى حَنْب بَعْضِ وَزَقَجُهُم عَطْفٌ على فِي جَنَات اي قَرِنَاسِم بِمُوْرِعِينِ[©] عِظامِ الاَعْيُنِ حِسَانِها وَالْإِيْنَ اَمَنُوْا مُنتَداً وَالنَّبُعَثُهُمْ مَعُطُوفٌ على امْنُوا كَيْرِيُّنُّهُمْ الصِغار والكِبَار يَلِيمَانِ مِنَ الكِبَارومِن الاناءِ في الصّغار والخَبرُ ٱلْحَقْنَابِهِمْ ذُرِيَّتُهُمْ المَذَكُورِينَ في الجَنَّةِ فَيَكُونُونَ فِي دَرَجَتِهم وإن لم يَعَمَلُوا بِعَمَلِهمْ تَكْرِمَهُ للاناء بإنجتِمَاع الأوُلَادِ اليهم وَمَمَا ٱلْتَنْهُمُ بِفَتَح اللام وكسرهَا نَقَصْناهِم مِنْ عَمَلِهِمْ مِنْ وَائِدَةٌ شَيْعَ يُرَادُ ح (زَمَزُم پِبَالشَهِ) ≥

فِي عَمَلِ الأَوْلَادِ كُلِّ **الْمِرِيُّ بِمَا كُسَبَ** عَـمِلَ مِنْ خَيرِ او شَرِّ ك**َوْيِنُ** ۚ مَرُسُونٌ يُـؤَخَذُ بِالشَّرِّ ويُجَازى بِالخَيرِ ۗ وَٱ**مۡكَدُنۡهُمۡ** رَدۡنَاہِم فِي وَقُبِ بَـغَدَ وَقُبِ بِفَالِهَةِوَّلَةُمِرِّمَا كِشْتَهُوْنَ® وإن لَـمْ يُـصَـرَحُـوا بطَلْبه يَتَنَازَعُونَ يتعاطُوْر بينهم فِيْهَا اي الجَنَّةِ كَأْسًا خِمْرًا لِللَّغُوفِيهَا اي مسم شُربه يفَعُ سِمهم وَلَا تَأْتِنُونَ به يَلخَقُهُمْ بخلاب خمر الدُّنيَا وَيَطُوفُ عَلَيْهِم لِمحدمة غِلْمَانَ ارقَاءُ لَهُمُ كَانَّهُم خُسُمًا ومَطَافَة لُؤُلُو مَّكُنُونَ ﴿ مَصُونَ مِي الصَدَفِ لِآلَهُ فيها احْسَنُ منه فِي عيرِبا وَأَقْبَلَ بَعْضُهُ مُرَعَ لَي بَعْضٍ يَّتَسَأَءُلُوْنَ[®] يَسُأُلُ بَعْضُهم نَعْضًا عـمّا كَانُوا عليه ومَا وَصَلُوا اليه تَلَدُّدًا واعْتِرافًا بالنِّعْمَةِ قَالُوْ السِماءُ الى عَلَةِ الوُصُولِ إِنَّاكُنَّاقَبْلُ فِي آهْلِنَا في الدُّنيا مُشْفِقِينٌ ۚ خَابُفِينَ من عداب اللّهِ فَمَنَّاللهُ عَلَيْنَا المَعفرةِ وَوَقَٰمِنَاعَذَابَ السَّمُومِ اي النَّار لِلدُخُولِها فِي المسامَ وقَالُوا إِيْمَاءً ايْصًا إِنَّا كُنَّاصِنْ قَبْلُ اي فِي الدُّنْيا نَذَعُونُ اي نَعْبُدُ مُوجِدِينَ إِنَّهُ بِالكَسِرِ اسْنِينافًا وإن كَانَ تَعْبِيُلاً معنَى وبِالفَتْحِ تعْبِيلاً لفُطَّا هُوَالْكِرُّ المُحْسِنُ الصَّادِقُ في وَعُدِهِ عَ الرَّحِيمُ العَظِيمُ الرُّحَمَةِ.

تروع كرتا ہول اللہ تعالى كے نام ہے جو برا امبر بان نہايت رحم والا ہے، تتم بےطور كى لينى اس بباڑكى جس پر اللہ نے موکی علیق لا اللہ کا مرف کا شرف بخشا اور قتم ہے لکھی ہوئی کتاب کی جو کھلے ہوئے کا غذیب ہے لیعنی تو رات کی یا قرآن کی ، اورتشم ہے بیت المعمور کی وہ تیسر ہے یا حصے یا ساتویں آسان پر کعبۃ اللہ کے بالت بل ہےروز انہ طواف اورنماز کے سئے ستر ہزار فرشتے اس کی زیارت کرتے ہیں آئندہ ان کا بھی نمبر نہ آئے گا، اور شم ہے او نجی حصت یعنی آسان کی اور شم ہے تھرے ہوئے دریا کی بلاشبہ تیرے رب کاعذاب اس کے ستحق پر نازل ہونے والا ہے اس کو کوئی رو کئے والنہیں ہے جس دن آسان تھرتھرانے لگے گالیعنی حرکت اور گردش کرنے لگے گا اور پہاڑ (اپنی جگہ ہے) چلے لکیں گے اور اڑتے ہوئے غبار ہوجا تھیں گے اور ریہ قیامت کے دن ہوگا، پس ہلاکت یعنی سخت عذاب ہے اس دن رسولوں کی تکذیب کرنے والوں کے لئے جو کہ باطل میں بھٹک رہے ہیں تعنی اپنے کفر میں مشغول ہیں جس دن وہ دھکے دے دے کر نارجہنم کی طرف لیجائے جا تیں گے ، سختی کے ساتھ و ملکے دیئے جا کیں گے ، یکو م تکمور کے سے بدل ہے اور ان کولا جواب کرنے کے لئے کہا جائے گارہ وہی دوزخ ہے جس کوتم حجثلا یا کرتے تھےتو کیا ہے عذاب جس کوتم حجثلا یا کرتے تھے جادو ہے جیسا کہتم وحی کے بارے میں کہا کرتے تھے کہ ہے جادو ہے یاتم کوسو جتانبیں ہے دوزخ میں داخل ہوجا ؤاس پرصبر کرویا نہ کرو تنہاراصبر کرنا اور نہ کرنا دونوں برابر ہیں اس لئے کہ تمہاراصبر کرناتم کوکوئی فائدہ نہ دے گاتم کو دیسا ہی بدلہ لے گاجیے تم اعمال کرتے تھے یعنی تمہارے اعمال ہی کا بدلہ لے گامتی لوگ بلاشبہ باغوں میں اور سامان عیش میں ہوں گے مزے لے رہے ہوں گے لطف اٹھار ہے ہوں گے ان چیز وں سے جوان کو ان کے رب نے عطا کی ہوں گی اوران کا پروردگاران کوجہنم کے عذاب ہے محفوظ رکھے گا (و و فَاهُمْ) کاعطف آتاهم پر ہے

لینی ان کودیے ہے اور حفاظت کرنے ہے ،اوران ہے کہا جائے گاخوب کھاؤ پیومزے کے ساتھ (ھے بنیٹ کا) حال ہے معنی میں مُنَهُنَيْنَ كے ہے اپنے اعمال كے سبب سے وہ برابر بجھے ہوئے تختوں پر ٹيك لگائے ہوئے بیٹھے ہوں گے (مُتَّكِلِيْنَ) الله تعالى کے تول فسی حنّب میں ضمیر متنتر سے حال ہے اور ان کا بڑی بڑی خوبصورت آئکھوں والی حوروں سے جوڑ الگاویں گے اور جو لوگ ایمان لائے میمبتداء ہے اور ایمان میں ان کی ٹابالغ اور بالغ اولا دینے ان کی پیروی کی وَاتَّبَعَتْهُمْ کاعطف آمَـنُوْ ١ پر ہے بالغین کوخودان کے ایمان کی وجہ سے اور صغار کوان کے آباء کے ایمان کی وجہ سے جنت میں ان کے پاس پہنچادیں گے ،جس کی وجہ سے اولا دان کے آباء کے درجہ میں ہوگی ، آباء کے اگرام کے طور پران کی اولا دکوان کے ساتھ جمع کر کے ، اگر جہاولا دیے ا ہے آ باء جبیماعمل نہ کیا ہو، اور اجر کی جومقداران کی اولا د کے حق میں زیادہ کی گئی ہے اس مقدار کوہم ان کے آباء کے اجر ہے کم نہ کریں گے اَکْمَانْ مُنْ میں لام کے فتہ اور کسرہ کے ساتھ ہے میں شکٹی میں مین زائدہ ہے، ہر مخص اینے اعمال کے عوض کروی ے خواہ مل خیر ہویاشر رَهین جمعنی مسرهو ت ہے،اعمال بدکی وجہ ہے مواخذہ کیاجائے گااوراعمال خیر کی جزاء دی جائے گی، ادر ہم ان کے لئے روز افزوں میوے اور گوشت کی جس قتم کا ان کومرغوب ہوگا اگر چےصراحة مطالبہ نہ کیا ہو خوب ریل پیل ر ھیں گےاور جنت میں (خوش طبعی کے طور پر) جام شراب کی آپس میں چھینا جھپٹی کیا کریں گے اوران کی شراب نوشی کی وجہ ہے نہ بیہودہ کوئی ہوگی نہ بدکر داری جوشراب نوشی کی وجہ ہے ان کولاحق ہو، بخلاف دنیاوی شراب کے اوران کے یاس خدمت کے لئے ایسے لڑ کے آمد ورفت رکھیں گے جو خاص انہی کے لئے ہوں گے اور وہ حسن ونظافت میں ایسے ہوں گے گویا کہ صدف میں بحفاظت رکھے ہوئے موتی ہیں ،اس لئے کہ وہ موتی جوصدف میں ہوتا ہے وہ اس موتی ہے بہتر ہوتا ہے جوصدف میں نہیں ہوتا اور وہ ایک دوسرے کی طرف متوجہ ہوکر باتنس کریں گے (لیعنی) آپس میں ایک دوسرے سے ان کاموں کے بارے میں معلوم کریں گے جووہ (دنیا) میں کیا کرتے تھے،اوراس کے بارے میں بھی جوان کوعطا ہوا،اور بیسب کچھ تلذذ اوراعتر اف نعمت کے طور پر ہوگا ،اور سبب وصول کی علت کی طرف اشارہ کرتے ہوئے تھہیں گے ہم تواس سے پہلے دنیا میں اللہ تعالیٰ کے عذاب سے بہت ڈرا کرتے تھے سوالقدنے ہم پرمغفرت کر کے بڑااحسان کیا،اور ہم کونارجہنم ہے بچالیا (نارجہنم کوسموم اس لئے کہتے ہیں) کہ وہ مسامات میں داخل ہو جاتی ہے اوربطورا شارہ وہ یہ بھی کہیں گے کہ ہم تو اس سے پہلے و نیامیں ای کو پکارتے تھے یعنی تو حید کے ساتھ اس کی بندگی کرتے تھے اور وہ واقعی بڑا تھن ومہر بان ہے عظیم الرحمت ہے، (اِنَّهٔ) کسرہ کے ساتھ استیناف ہے اگر چہ معنی تعلیل ہے اور (اَمَّهُ) فتحہ کے ساتھ لفظا تعلیل ہے، اَلْبَوُ کے معنی اس محسن کے ہیں جواپنے وعدہ میں صادق ہو۔

عَجِفِيق الْمِرْكِ لِيَسْمَيُكُ الْفَيْسِيرَى فَوَالِا

فی کی ہے کہ طور عربی زبان میں بہاڑ کو کہتے ہیں، یبعض اہل لغت نے تصریح کی ہے کہ طور ہرے بھرے بہاڑ کو کہتے ہیں، یبعض اہل لغت نے تصریح کی ہے کہ طور ہرے بھرے بہاڑ کو کہتے ہیں، یبعض اہل لغت نے تصریح کی ہے کہ طور ہرے بھرے بہاڑ ہے جومصر ہیں، جب اس برالف لام واخل ہوتو طور ہے جزیرہ نمائے بینا کا ایک مخصوص و متعین پہاڑ مراد ہوتا ہے، یہ وہی بہاڑ ہے جومصر

و مدین کے درمیان داقع ہے،موک علیفالا اللہ اللہ کو ای پہاڑ پر تیل ہو کی تھی ،اور اس پہاڑ پر آپ کو ضلعت کلیمی ہے نو از اگیا تھا۔ (لعان الفرآن

قِعُولَهُ ؛ فِي رَقِّ مَّنْشُورٍ رَقُ كَاغْدُ ، ورق جَعلى ، اس كَ جَعْ رُفوقْ بالفتح كثيرًا وبالكسر قليلًا. قِعُولَهُ ؛ المَسْجُورِ اسم مفعول واحد فذكر ، بجرا بهوا ، اس كَ عَنْ نهايت كرم ك بحى آتے بي (ن) سُجُورًا كرم كرنا ، بجرنا ـ

فَيْكُولْنَى ؛ يُدَعُونَ ، دُعُ سے جمع مذكر عائب مضارع مجهول ،ان كود عكي ديكر منكايا جائے گا۔

قِوْلِلْ ؛ يومَ يُدَعُونَ ، تَمُورُ السَّمَاءُ مَوْرًا عَدِل -

فِيُولِكُمُ ؛ تَمُورُ (ن) مورًا كاشنا الرزنا-

فَيُولِنُّ ؛ بِمَا ين المصدريـ

مَنْ وَالْ عَلَيْ وَالْ وَمصدريد كيول قرارديا كيا؟

جِيُّ لَيْنِ ، ما كومصدرية راردين كي بيدوجه بكدا كر ما كوموصوله ما ناجائة معطوف من صلابين وَ فَساهُمْ كاعا كدي خالى بونا لازم آتا ہے،اس لئے كفعل نے اپنامفعول، هُسو لے ليا اور صله بغير عاكد كره گيا حالا نكه صله جسله بوتوء كد كا بونا ضرورى ہے اور يہ بھى درست ہے كہ ما موصولہ جواور جمله وَ وَ قاهُمْ جمله متانفه يا به تقدير قد حاليہ بو۔

فَیُوَ لِنَیْ ﴾ وَإِنْ کَانَ تَعلیلاً معنی ، إِنَّهُ کواگر کسرہ کے ساتھ پڑھاجائے توبہ جملہ متانقہ ہوگالیکن معنی کے اعتبارے نَدْعُو اللہ کی علت ہوگی ، مطلب بیکہ ہم اس کی بندگی اس لئے کرتے تھے کہ وہ صن اور رحیم ہاور اگر انسسلهٔ فتر کے ساتھ پڑھا ہے تو نَدْعُوهُ کی علق علت ہوگی۔ نَدْعُوهُ کی لفظ علت ہوگی۔

تَفْسِيْرُوتَشِيحَ

سورة الطّور:

دعوت کی طرف شجیدگی ہے توجہ نہ کریں۔

والسطور طورعبرانی زبان میں اس پہاڑکو کہتے ہیں جوخوب ہرا بھرا ہو، یہاں طورے مراد طور سینین ہے جوارض مدین میں واقع ہے جس پر حضرت موی طلبہ کا فائلہ کا فائلہ کا گھڑکا گھڑکا ہی بخٹا گیا تھا، طور کی تنم کھانے میں اس کی خاص تعظیم وتشریف کی طرف اشارہ ہے، مسطور ، مسطور کے معنی ہیں کھی ہوئی چیزیہاں مرادیا تو انسان کا اعمال نامہ ہے یالوح محفوظ، یا قرآن مجید یا کتب منزلہ ہیں، رق بار یک چہڑا یا جھلی جس پر لکھا جاتا تھا۔

وَالْبَيْتِ الْمَعْمُورِ بِيتَ معموراً بِادَهُم كُوكِتِ إِن بِيتَ معمور بِاتَوِي آسان بِرِبِتِ اللهُ كَمِ قَابِلهِ مِن فَرَشَوَل كَا بِارِي الْكِيم بِرَبِاً كَيْ فَهُم قَابِهِ مِن روزانه عبادت كرتے إلى جن فرها يارسول الله عَلَى ال

سمندر ہیں ان میں قیامت کے دن آگ بھڑک اٹھے گی، جینے فر مایا وَ إِذَا الْمِبِحَارُ سُجِّورَتْ اور بعض حضرات نے مجور کے معنی معملوء کے لئے ہیں، امام طبری نے اور صاحب جلالین نے اسی قول کوا ختیار کیا ہے اِن عذاب رَبِّكَ لُوَ اَفْعُ یہ مذکورہ قسموں کا جواب ہے۔

يَوْمَ تَـمُورُ السَّمَاءُ مَوْرًا، مَوْرٌ كَمَعْن حركت واضطراب كي بي، قيامت كون آسان كِظم مِين جواختلال اور كواكب وسيارگان كي نُوث بجوث كي وجه سے جواضطراب واقع بوگااس كوان الفاظ سے تعبير كيا گيا ہے، يَـوْمَ تـمُـورُ السَّمَاءُ مَوْدًا يوم مَدكوره عذاب كے لئے ظرف ہے۔

بشرطِ ایمان بزرگول سے تعلق نسبی آخرت میں نفع دے گا:

وَالْكَذِيْنَ آمَنُوْا وِالنَّبَعَنَهُمْ ذُرِيَّتُهُمْ بِإِيْمَانِ ٱلْحَقْفَا بِهِمْ ذُرِيَّتَهُمْ يَمْمُون سورهٔ رَعدا آيت ١٣ اورسورهُ مومن آيت ٨ مين جي گذر چاہے مگر بهال ان دونوں آيوں ئے زائد جو بات فرمانی گئ ہے وہ بہہ کداگر اولا وکی نہ کی درجه ايمان ميں جی النہ آباء کے نقش قدم کی پيروی کرتی رہی ہوخواہ اپنے عمل کے لحاظ ہے وہ اس مرتبے کی ستحق نہ ہوجو آباء کو ان کے بہتر ايمان وعلی بناء پر حاصل ہوگا پھر بھی بیاولا داپنے آباء کے ساتھ ملادی جائے گی ، اور بید لا نا اس نوعیت کا نہ ہوگا جیسے وقتاً فو قتا کوئی کسی کی منا قات کر لیا کرے بلکہ اس کے لئے اَلَحقَفَا بِھِمْ کے الفاظ استعمال ہوئے ہیں ، جن کا مطلب بہ ہے کہ وہ ان کے آباء کے ساتھ جنت ہی میں رکھے جائیں گے ، اس پر مزید اظمیمینان دلایا گیا ہے کہ اولا دسے ملانے کے لئے آباء کا درجہ گھٹا کر پنچنہیں ساتھ جنت ہی میں رکھے جائیں گے ، اس پر مزید اظمیمینان دلایا گیا ہے کہ اولا دسے ملانے کے لئے آباء کا درجہ گھٹا کر پنچنہیں

ا تاراجائے گا بلکہ آباءے ملانے کے لئے اولا دکا درجہ بڑھادیا جائے گا۔

اس مقام پریہ بات بیجھنے کے قابل ہے کہ بیارشاداس بالغ اولا د کے بارے بیں ہے جس نے س شعور کو پہنچ کراپنے اختیار اور ارادہ سے ایمان لانے کا فیصلہ کیا ہو، رہی موس کی وہ اولا دجوسنِ رشد کو چہنچنے سے پہلے ہی مرگئی ہوتو اس کے معاملہ میں کفروا بمان طاعت وعصیان کا سرے سے کوئی سوال ہی پیدائیس ہوتا انہیں تو ویسے ہی ان کے والدین یا ان میں ہے کسی ایک کے تابع کر کے ان کے والدین کی آنکھوں کو ٹھنڈ اکرنے کے لئے جنت میں داخل کر دیا جائے گا۔

طبرانی نے حضرت سعید بن جبیر سے روایت کیا ہے وہ کہتے جیں کہ ابن عباس نے فر مایا ، اور میرا گمان یہ ہے کہ انہوں نے اس کورسول اللہ ﷺ سے روایت کیا ہے کہ جب کوئی شخص جنت میں داخل ہوگا تو اپنے ماں باپ بیوی اور اولا دے متعلق پو جھے گا (وہ کہاں جیں؟) اس سے کہا جائے گا کہ تمہار ہے درجہ کونہیں جہنچ (اس لئے ان کا جنت میں الگ مقام ہے) یہ شخص عرض کرے گا ہے میرے پروردگار میں نے جو گمل کیاوہ اپنے لئے اور ان سب کے لئے کی تھا تو حق تع لی شانہ کی طرف سے تھم ہوگا کہ ان کو بھی اسی ورجہ بنت میں ان کے ساتھ درکھا جائے۔ (اس کیر)

وَمَا آلَتُنَاهُمْ مِنْ عَمَلِهِمْ مِنْ شَيْءٍ ، إِبِلَاتُ كَ معنى كم كرنے كے ہیں، آیت كے معنی یہ ہیں كہ صالحین كی اولاد ان كے درجہ كل سے بڑھا كرصاكين كے ساتھ التي كردى جائے گی لتى كرنے كے لئے ایب نہیں كیا گی كہ صالحین كے مل میں ہجھ كم كركے ان كی اولا د كاعمل پوراكیا جاتا بلكہ اپنے فضل سے ان كے برابر كرديا جائے گا، اور ہر شخص كے اپنے عمل میں مرہون ہونے كا مطلب ہہ ہے كہ ہر شخص اپنے اعمال كا جواب دہ ہوگا، جزاء یا سزا جو بھی ہوگ وہ اس كے عمل كی مكافات ہوگی ایسانہیں ہوگا كہ كى دومرے كا گناہ اس كے سرڈال دیا جائے۔

فَكُكُّرُ دُمْ عَلَى تَذَكِيرِ المُشُركِينَ وَلَا تُرْحَعُ عَنه لِقُولِهِم لِكَ كَاسٌ مَجُنُونٌ فَمَا آنَتَ بِنِحْمَتِ مَ الْكَافَونُ حوادِنَ عَلَيك بِكَافِينَ خَبُرُ ما قَلْاَمَجُنُونِ مَّ مَعُطُوفَ عليه أَمْ بَل يَقُولُونَ بِو شَاعِرُنَّ وَكُنَّ وَكُونُ بِهِ مَا كُمُونُ الْمُتَرَقِّ مِهِ الْمَنْوَنِ حوادِنَ السَّبِ وَيَهُبِكُ كَعَيْرِهِ مِنَ الشَّعْرَاءِ قُلِ تَرَقُّولُ البلاكِي فَالِنَّ مَعَكُمْ مِنَ الْمُعْرَاءِ فَلَ تَرَقُّولُ اللهُ الْمَارِقِ مَعْدُوا اللهُ الوَاحِدُ فَلِمَ الْمُعْرَفِينَ اللهُ الوَاحِدُ فَلِمَ لَا يَعْدُونَ وَالاَ اللهُ الوَاحِدُ فَلِمَ لا يُعَلَّونَ اللهُ وَالْمَالِقُولُونَ اللهُ الوَاحِدُ فَلِمَ لا يُعْدُونَ وَالاَ اللهُ الوَاحِدُ فَلِمَ لا يُعْدُونَ وَالاَلهُ الوَاحِدُ فَلِمَ لا يُعْدُونَ وَالاَلهُ الوَاحِدُ فَلِمَ لا يُوحِدُونَهُ ويؤونُونَ وَإِلا لاَ مَنُوا بِنَيْدَ أَمُونَ اللهُ الوَاحِدُ فَلِمَ لا يُوحِدُونَهُ ويؤونُونَ وَإِلا لاَ مَنْ وَاللهُ الوَاحِدُ فَلِمَ لا يُوحِدُونَهُ ويؤونُونَ وَإِلا لاَمَنُوا بِنَيْدَ أَمُونَا السَّمُونِ وَالاَلهُ الوَاحِدُ فَلِمَ لا يُوحِدُونَهُ ويؤونُونَ وَإِلا لاَمَنُوا بِنَيْدَ أَمُونَا السَّمُونِ وَالْمُولُ وَالْمُونَ وَاللهُ الوَاحِدُ فَلِمَ لا يُعْدُونَهُ ويؤونُونَ وَإِلاَ لاَمَنُوا بِنَيْدَ أَمُونَا اللهُ الوَاحِدُ فَلِمَ لا يُوحِدُونَهُ ويؤونُونَ وَإِلاَ لاَمَنُوا بِنَيْدَ أَمُونَا اللهُ الوَاحِدُ فَلِمَ لا يَعْدُونَهُ ويؤونُونَ وَإِلاَ لاَمَنُوا بِنَيْدَ أَمُونَا اللهُ الخَالِقُ فَلِمَ لا يَعْدُونَهُ ويؤونُونَ وَإِلاَ لاَمَنُوا بِنَبِيهِ آمَوْمُ الللهُ المَالُولُ اللهُ الخَالِقُ فَلِمَ لا يَعْدُونَهُ وَيُومِنُونَ وَإِلاَ لاَمَنُوا بِنَبِيهِ آمَونُونَ وَاللهُ المُحْرِقُ اللسَّلِي اللهُ الخَالِقُ فَلِمَ لا يَعْدُونَهُ وَيُونُونُ وَالاَلْا لاَمُنُوا بِنَبِيهِ آمَوْمُ وَلَا اللهُ اللهُ المُعْلِقُ وَلَمُ وَاللهُ وَالْمُونُ وَاللهُ اللهُ المُعْلَقِ وَلَهُ وَالْمُونُ وَاللّهُ الْمُؤْلِقُ وَلَا لاَمُونُ وَاللّهُ الْمُؤْلِقُ وَلَا لاَنْهُ الْمُؤْلُونَ اللّهُ الْمُولِولَ عَلَى مَا اللهُ المُعْلَقِ وَالْمُولُونُ اللهُ الْمُؤْلِقُونُ اللّهُ الْمُؤْلُولُونَا اللهُ الْمُؤْلُولُ اللهُ الْمُؤْلِقُ اللْمُولُولُ اللْمُؤْلُولُ اللهُ المُولِولُولُ اللهُ الْمُؤْلُو

من السَّبُوَّةِ والرِّرْقِ وغيرِسِما فَيَخُصُّوا مَنْ شَاءُ وا بِمَا شَاءُ وا أَمَرُهُمُ الْمُصَّيْطِرُونَ ۗ المُتَسَبِّطُونَ الجَبّرُون وبغنه صيطرو مِثُلُهُ بَيُصرَ وبَيَقَرَ أَمُرْلُهُمُّ مِسُلَّمٌ مِـرُقي ألى السَّمَاءِ لَيُنْتَمِعُونَ فِيَا اي عـى عـيه كلامَ المَلائِكة حَتّى يُـمْكِسهم سُنازَعَةُ النَّبي صلى الله عليه وسلم بِزَعْمِهم إن ادَّعُوا ذلك فَلْيَأْتِ مُسْتَمِعُهُمْ اي سُدّعِي الإستماع عليه يسكُظن مُبِينٍ ﴿ بِحُجَّةٍ بَيِّنَةٍ وَاضِحَةٍ ولِشِيهِ إِذَا الزَّعُم بِزَعُمِهِم أَنَّ المَلائِكَةَ بَنَاتُ اللَّهِ قَ تعالى أَمْرَلُهُ الْبَنْتُ اي رِزَعْمِكم وَلَكُمُ الْبَنُونَ ﴿ تعالَى اللَّهُ عَمَّا زَعَمُوهِ أَمْرَتُسْتُلُهُمْ أَجْرًا على مَا حِئْتَهم به مِنَ الدِّينِ فَهُمْ مِنْ مَنْ عَرَمٍ لك مُّتَقَلُونَ فَ فَلا يُسْلِمُونَ أَمْ عِنْكُمُ الْغَيْبُ اي عِلمه فَهُمُ لَكُنْ وَلَك حتى يُـمُكِنَهم سَنَازَعَةُ النبي صلى اللّه عليه وسلَّم فِي البَعْثِ وَأُسِرِ الأخِرَةِ بِزَعْمهِم أَ**مُ يُرِنْكُ وَنَ كَيْدًا** ۖ بك ليُهُ لِكُوك فِي دَارِالنَّدَوَةِ فَالْذِينَ كَفُرُواهُمُ الْمَكِيدُونَ الْمَعْلُوبُونَ المُهُلكُونَ فَحَفِظَه الله منهم ثم أَشِلَكُهُم بِبَدْرِ أَمْرَلِهُمُ إِللَّهُ عَبُولِللَّهِ سُبَحِنَ اللَّهِ عَمَّا لِنُشْرِكُونَ ۞ به مِنَ الألِهَةِ والإسْتِفْهَام بِأَمُ فِي مَوَاضِعِها لِلتَّقْبِيح والتَّوْبِيخِ وَإِنَّ تَيْرُوْاكِسُفًا بَعْضًا مِّنَ السَّمَاءِسَاقِطًا عليهم كَمَا قَالُوا فأَسْقِطُ عَلَيْنَا كِمنَفًا مِنَ السَّمَاءِ اي تَعْذِيبًا لهم يَّقُوُلُوْا مِنذا سَعَابٌ مِّرَكُومٌ مُتَرَاكِبٌ نَرُتَوِى بِهِ وَلاَ يُؤمِنُوا فَذَرْهُمْ حَتَّى يُلْقُوا يَوْمَهُمُ الْذِي فِيهِ يُصَعَقُونَ اللهِ يَمُوتُونَ **يَوْمَلِا يُغْنِيُّ** بَدَلٌ مِن يَوسهم عَنَّهُمُ حَي**ِّدُهُمْ شِيَّا وَلَاهُمْ بُيْنَصُرُونَ اللهُ عَنَهُ عَنَّهُمْ حَيِّنَهُمْ حَيِّنَا وَلَاهُمْ بُيْنَصُرُونَ اللهِ عَنَا اللهِ عَنْ اللهِ عَنَا اللهِ عَنْ اللهِ عَنَا اللهُ عَنَا اللهِ عَنَا اللهُ عَنَا اللهِ عَنَا اللهُ عَنَا اللهُ عَنَا اللهِ عَنَا اللهُ عَنَا اللهُ عَنَا اللهِ عَنَا اللهُ عَنَا اللهِ عَنَا اللهُ عَنَا اللهِ عَنَا اللهُ عَنَا اللهِ عَنَا اللهُ عَنَا اللهُ عَنَا اللهُ عَ** وَاكْ لِلَّذِيْنَ ظَلَّمُوْلَ بِكُفُرِهِم عَذَالًاكُونَ ذَٰلِكَ اي فِي الدُّنيا قبلَ موتِهم فَعُذِّبُوا بِالجُوعِ والقَحْطِ سَبُعَ سِنِينَ وبالقتل يَوْمَ بَدْرِ وَلَكِنَّ ٱلْتُرَهُمُ لَا يَعَلَمُونَ @ ان العذاب يَنْزِلُ بهم وَاصْرِرُ لِحُكْمِرَ بِإِكَ بِاسْمَ الِهم ولا يَضِيقُ صدرُك قِاتَكُ بِأَعْيُرُنَا مِمَرَاى مِنَا نَرَاك ونَحْفَظُك وَسَبِّحُ مُتَلَبِّمُا فِحَمَّدِ رَبِّكَ اى قُلُ شُبُحَانَ اللهِ وبحمده حِيْنَ تَقُومُ إِن مَّنَامِكَ او مِن مَّجلِسِكَ وَمِنَ الَّيْلِ فَسَيِّحَهُ حَقِيْقَةُ ايضًا وَإِذْ بَارَالْنُجُومِ فَي مَصدر اى عَقِبَ غُرُوبِهِ ايضًا او صَلَّ في الأوَّلِ العِثَائِينِ وفي التَّانِي سُنَّةَ الفَجِرِ وقيل الصُبُخُ.

< (مَنْزَم بِبَالشَّهٰ عَالِيَهُ إِنَّهُ الْمَالِيَةِ عَالِيَةً إِنَّهُ إِلَيْهُ إِلَيْهُ إِلَيْهُ إِلَيْهُ ا

کرلیا ہے بلکہ واقعہ میہ ہے کہ بیلوگ تکبر کی وجہ ہے ایمان نہیں لاتے پس اگران کا یہی کہنا ہے کہ بیقر آن ان کا خود ساختہ ہے تو یہ بھی اس طرح کا کوئی کلام بنا کرلے آئیں اگریہ اپنے قول میں سچے ہیں کیا یاوگ بدون کسی خالق کےخود بخو دپیدا ہوگئے ہیں یا میخود اینے خالق ہیں ،اور میہ بات عقل کے خلاف ہے کہ سی مخلوق کا وجود خالق کے بغیر ہواور ندید بات سمجھ میں آنے والی ہے کہ معدوم کسی کو پیدا کر کے لہٰذا (یہ بات ثابت ہوگئ) کہ ان کا کوئی نہ کوئی خالق ضرور ہے اور وہ تنہ اللہ ہے بس کس لئے اس کی تو حید کے قائل تبیں ہوتے اور اس کے رسولوں پر اور کتابوں پر ایمان نہیں لاتے کیا انہوں نے بی آسان اور زمین پیدا کئے ہیں؟ حالانکہ ان کی تخبیق پر اللہ خالق کے علاوہ کوئی قا درنہیں تو پھر اس کی بندگی کیوں نہیں کرتے بلکہ واقعہ یہ ہے کہ بیلوگ یقین نہیں رکھتے ورنہ تو اس کے نبی پرامیان لے آتے ، کیاان کے قبضہ میں بیں نبوت اور رزق وغیرہ کے تیرے رب کے خزانے کہ وہ جس کے لئے جا ہیں اور جو جا ہیں مخصوص کر دیں یا پہلوگ حاکم ہیں (لیتنی) مسلط حاکم ہیں ،اوراس کافعل صَدِ بط ہوَ ہے اوراس ك اند بيطر وبينفر بيفر، بيطار الهار عدي الورول كمعالي كوكت بين اور منفر بمعنى شق و أفسد و أهلك ہے) یا کیا ان کے پاس سیرھی ہے؟ آسان پر چڑھنے کا آلہ کداس پر چڑھ کر فرشتوں کی باتیں سن لیتے ہوں حتی کدان کے کئے نبی بلق پینے کے ساتھ ان کے خیال میں من زعت کرناممکن ہو گیا ہو،اً بران کا یہ دعویٰ ہے تو وہ سننے کا دعویدار اس پر کوئی واضح دلیل پیش کرے اور اس زعم کے،ان کے اُس زعم کے مشابہ ہونے کی وجہ ہے کہ فرشتے اللہ کی بیٹیاں ہیں،اللہ تعالیٰ نے قرمایا کیا اللہ کے لئے تمہارے زعم میں بیٹیاں ہیں اور تمہارے لئے بیٹے ہیں اللہ تعالیٰ اس سے بری ہے جو پہ گمان کرتے ہیں کیا آپ ان سے اس دین پر جوآپ ان کے پاس لے کرآئے ہیں کوئی اجرت طلب کرتے ہیں؟ کدوہ اس کے بوجھ سے دیے جاتے بیں جس کی وجہ ہے وہ اسلام قبول نہیں کرتے یا ان کے پاس غیب لیعنی علم غیب ہے جے بیاکھ لیتے ہیں حتی کہان کے لئے نبی بلی علیا کے ساتھ ان کے خیال میں بعث اور امر آخرت میں مزاع کرناممکن ہوگیا کیا بےلوگ آپ کے ساتھ دارالندوہ میں کوئی فریب کاارادہ رکھتے ہیں تا کہ آپ کو ہلاک کردیں ،تو آپ یقین کرلیں فریب خوردہ مغلوب ہونے والے ہلاک ہونے والے یہ کا فرجی ہیں چنانچہ اللہ تع کی نے آپ کی ان ہے حفاظت فریا کی پھران کو بدر میں ہلاک کردیا کیا اللہ کے سواان کا کوئی اور معبود ہے؟ سبی ن اللہ (ہرگزنہیں) اللہ تعالی (معبودان باطلہ) میں ہے ہراس معبود سے یاک ہے جس کو بیاس کے ساتھ شریک ئرتے ہیں ، اور استفہام اَم کے ساتھ تمام مقامات میں تھیج وتو بیخ کے لئے ہے ، اگریہ لوگ آسان کے سی مکڑے کو اپنے اوپر ً سرتا ہوا دیکھے لیس جیسا کہ انہوں نے کہاتھا کہ آسان کا کوئی ٹکڑا ہمارے او پر گرا دولیعنی ان کوعذاب دینے کے لئے تو کہہ ویں گے کہ بیتو تذہبہ تد باول ہے لیعنی جما ہوا بادل ہے جس ہے ہم سیراب ہوں گے، اور اس پرائیان ندلائیں، تو آپ انہیں چھوڑ دیجئے یہاں تک کہانبیں اپنے اس دن سے سابقہ پڑے جس دن میں ان کی موت واقع ہوگی جس دن ان کی تدبیریں ان کے پچھکا م نہ آ کیں گی (یَسوْمَ لَا یُسفسنی) یومَهُمْ سے بدل ہے اور نہان کو مدد ملے گی لیعنی آخرت میں ان سے عذاب دفع نہ کیا جائے گا اور ان کے لئے جنہوں نے اپنے کفر کے ذریعہ ظلم کیا ہے اس عذاب ہے قبل بھی عذاب ہونے والا ہے لیعنی دنیا میں ان کی موت

سے پہیے، چنا نچہ بھوک اور قحط کے ذریعہ سمات سال تک عذاب میں مبتلا کئے گئے اور یوم بدر میں قمل کے ذریعہ کیکن ان میں اکثر کومعلوم نہیں کہان کے او پرعذاب نازل ہوگا اور آپ اپنے رب کی (اس) تبجویز پرصبر سیجیجے ان کومہلت دے کر اور آپ دل تنگ نہ ہوں کہ آپ ہماری حفاظت میں ہیں لینی آپ ہماری نظروں کے سامنے ہیں ہم آپ کود کمھرہے ہیں اور آپ کی حفاظت کررے ہیں،اورآپاپ رب کی موکراٹھنے کے بعدیاا پی مجلس سے اٹھنے کے بعد سبیج وتم ید سیجئے بعنی سیحان اللہ و بھرہ کئے، اوررات میں بھی اس کی حقیقۂ تسبیح کیا سیجئے اورستاروں کے ڈو بنے کے بعد بھی اِڈبار ٔ مصدر ہے یعنی ستاروں کے غروب ہونے کے بعد بھی تنہیج بیان سیجئے ،اوراول میں مغرب وعشاء کی نماز پڑھتا مراد ہے؛ور ثانی میں سنت فجراور کہا گیا ہے ہی کی نمی زمراد ہے۔

عَجِقِيق ﴿ لَكِنْ لِللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّاللَّا الللَّا

فِيُوْلِكُونَ ؛ دُمْ على تذكير المشركين ، فَذَكِرْ كَيْفير دُمْ عَكركاس بات كاطرف اثاره كردياكه ذَكِرْ آثبتْ ك معنی میں ہے لینی جس طرح آپ اب تک ان کونصیحت کرتے رہے آئندہ بھی اس طرز کو باقی رکھئے ان کی یادہ گوئی کی وجہ ہے تنگ دل ہوکران ہے ہے رخی اور کنار وکشی اختیار نہ سیجئے۔

فِيُولِكُ ؛ بنعمة ربِّكَ اي بفضل ربِّكَ.

فَيُولِكُ } و فَسَمَا أَنْتَ بنعمَةِ ربِّكَ بكاهِنِ و لا مجنون بائتم ك لئ نعمة رَبِّكَ مقسم به جوكه ما كاسم (انت) اور خبر (كا بن) كے درميان واقع ہے، تقدير عبارت بيہ مَا أنْتَ و نِعْمَةِ رُبِّكَ مِكَاهِنِ و لا مجنون، كا بن استخص كو كتِ ہیں جودعویٰ کرے کہ میں بغیر وحی کے غیب جانتا ہوں ،اور بعض حضرات نے کہا ہے کہ ب**ند مدی**ق میں با وسبیہ ہے ،اور جملہ منفیہ كَ صَمُون يَ مُتَعَلَق هِ مُعَن يه بِين إِنْ تَفْى عَنْكَ السَّكَهَانَةُ والجنونُ بِسببِ نعمةِ اللَّه علَيْكَ لِعِن آ ب يفضله تعالی کہانت اور جنون منتقی ہے۔ (فتح القدير شو کانی)

قِوْلَ يَهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ مِن آيات مِن بندره جُكداً ما جرجكداس كي تقدير بل اور بهمز و كس تصب اور بهمز واستفهام انکاری تو بھی کے لئے ہے، لہذامفسرعلام کے لئے مناسب تھا کہ ہر جگہ بل اور ہمزہ کے ساتھ مقدر مانیت ۔ (صاوی)

فِيُولِكُ : قل تربَّصُوا امرتهديد ك لي بهديد فِيوُلْكَ ؛ اخسلامُهُمْ ، حُسلَمٌ اورحِسلَمٌ دونول كى جمع بعلم كمعنى خواب كي بين اورجلم كمعنى برد بارى كي بين اور چونك برد باری عقل کی وجہ ہے ہوتی ہاس لئے علم کے معنی عقل کے بھی لئے جاتے ہیں گویا کہ یہاں مسبب بول کر سبب مرادلیا ہے۔

قِكُولَى : لَمْ يَخْتَلِقَهُ الى التّاره كردياكه ام يقولونَ تَقَوَّلهُ مِن مَرْه اسْتَفْهام انكارى إ-

قِحُولَى : فَإِنْ قَالُوا، إِخْتَلَقَهُ مقدر مان كراثاره كرديا فَلْيَاتُوا بِحَدِيْتٍ شرطِ محذوف كى جزاء بـ

قِيَّوْلَى ﴾ وَلِشِبُهِ هذا الزعم بزَعْمِهم أَدَّ الملائكة بَنَاتُ الله اسَءبارت كاضافكا مقصدايك شبكا (الدب شبه ھ (نِعَزَم ہِبَائِسَ ﴿ ﴾ -

ب كالله تعالى ك قول أم لَهُ البَنَاتُ ولكم البَنُونَ كاما قبل على كُولَى ربط معلوم بين موتار

جَوُلُ بِنِيْ : جواب كاخلاصہ بیہ ہے کہ سابقہ آیت میں مشركین كے اس زعم كو بیان كیا ہے کہ تھے ﷺ بی طرف ہے گھڑ كرقر آن لوگوں كے سامنے بیش كرتے ہیں ، ان كابی خیال باطل اور فاسد ہے دوسری آیت میں مشركین كے اس زعم فاسداور گمان باطل كا ذكر ہے كہ مدائكہ اللہ تعالیٰ كی بیٹیاں ہیں دونوں خیال اور دونوں گمان فاسداور باطل ہونے میں مشترك ہیں اور بہی وجہ اشتر اک ہے ، دونوں آیتوں میں ربط ومناسبت ٹابت ہوگئی۔

فَيْوَلِّنَى : عُوم ، مغوم كي تفيرغم كرك اشاره كردياب كم عرم مصدريمي ب_

فَیْحُولِیْ ؛ فی دَادِ الندوةِ مفسرعلام کے لئے مناسب تھا کہ لفظ دارا اُندوۃ حذف کردیتے ،اس لئے کہ دارائندوۃ میں مشرکین کا اجتماع شب ہجرت میں ہوا تھا جس میں آپ کے لئے کی سازش رہی گئی تھی اور بیسورت کی ہے جو ہجرت سے پہنے نازل ہو پھی تھی لہٰذا سازش کو ندوہ کے ساتھ مقید کرنا مشکل ہے ، بناء ہریں دارالندوہ کی قید کوحذف کرنا ہی بہتر ہے اس لئے کہ مکروسازش کا سلسلہ تو بعثت کے روز اول ہی ہے جاری تھا۔

قِحُولِ ﴾؛ فَاسْفِطْ عَلَينا كِسَفًا بِيآيت قوم شعيب عَلِيَهُ لَا وَاللَّهُ كَ بِارِ هِ مِن نازل بُولَى ہے، جيبا كه سور وَ شعراء مِن مَذكور ہے، مفسر رَقِحَ كُلاللَّهُ تَعَالَىٰ كے لئے مناسب تقااس آيت ہے استدلال كرتے جو قريش كے بارے مِن سور وَ اسراء مِن نازل بولَى ہے، وہ بيہ اوّ تُسْفِطُ السَّماءَ كَمَا زَعَمْتَ عَلَيْنَا مِحَسَفًا.

فَيُولِنَّ ؛ فَذَرْهُمْ يشرط مقدر كى جراء ب،شرط مقدريه إذا بَلَغُوا فِي العِنَادِ الى هذا فَذَرْهُمْ.

<u>ێٙڣڛٚؠؙڒۅؖێۺٛڕٛ</u>

فلذ كوفكما آنت بنعمة ربك بكاهِن (الآية) ان آيات من آپ ياقطان كوسلى دى جارى ہے كه آپ وعظا وتبلغ السيحت وتذكير كاكام كيے جائيے اور بدلوگ آپ كے متعلق جو بكواس اور يا ده كوئى كرتے ميں آپ اس كى طرف كان نه دهريں اس لئے كه آپ الله كے نفسل سے نه كامن اور نه دايوائے ، آپ ہمار سے رسول ميں ، آپ پر ہمارى طرف سے وحى نازل ہوتى ہے جوكا بن پر ہيں ہواكرتى ، آپ جوكلام لوگوں كوستا تے ميں وہ دانش وبصيرت كا آ كمينہ دار ہوتا ہے ايك دايوائے سے اس طرح كى گفتگومكن نہيں ہے۔

کائن، عربی زبان میں جیوتی، غیب گو، اور سیانے کے معنی میں بولا جاتا تھا، زبانہ جاہلیت میں بیا یک مستقل پیشہ تھا، ضعیف الاعتقادلوگ بیہ بیجے تھے کہ ارداح اور شیاطین سے ان کا خاص تعلق ہے جن کے ذریعہ بیغیب کی خبریں معلوم کر سکتے ہیں، کوئی چیز کھو گئی ہوتو چور اور مسروقہ مال کی نشاندہ ہی کر سکتے ہیں اگر کوئی اپنی قسمت ہو چھے تو بتا سکتے ہیں ان محافی ہوتو جور اور مسروقہ مال کی نشاندہ کی کر سکتے ہیں اگر کوئی اپنی قسمت ہو جھے تو بتا سکتے ہیں ان محافر اض ومقاصد کے لئے لوگ ان کے پاس جاتے تھے اور وہ کچھنڈ رانہ لیکر ہر عم خویش غیب کی بات نکال لے۔ مول فقر سے استعمال کرتے تھے جن کے مختلف مطلب ہو سکتے تھے تا کہ ہر شخص اپنے مطلب کی بات نکال لے۔

٠ ه (وَزَمُ پِبَالشَرْ) » ·

رَیْبَ الْمنون، ریْب کے معیٰ حوادث کے بیں مَنُون موت کے نامول بیں سے ایک نام ہے مَنُون بروزن فعولٌ سے مَنْ ہے مشتق ہے اس کے معیٰ حوادث کے بیں مَنُون کے معیٰ بیں بہت زیادہ قطع کرنے والا ،اورموت چونکہ دنیوی تمام علائق کو مقطع کرویتی ہے اس لئے موت کو بھی منون کہتے ہیں، مطلب یہ کے قرایش مکہ اس انتظار بیس بیں کہ حوادثا ہے زمنہ سے شاید محمد بی محود ہوت آ جائے اور بہیں چین نصیب ہوجائے جو اس کی دعوت تو حید نے بہم سے چھین لیا ہے، ما ابنان کا خیال یہ تھا کہ محمد بی بھی ہودوں کی مخالفت اور ان کی کرامات کا اٹکار کرتے ہیں اسلئے یا تو معاذ اللہ ان پر ہمارے کسی معبود کی مار پڑے گیا کوئی منجود وں کی مخالفت اور ان کی کرامات کا اٹکار کرتے ہیں اسلئے یا تو معاذ اللہ ان پر ہمارے کسی معبود کی مار پڑے گیا کوئی منجود وں کی مخالفت سے بے قابو ہوکران کا کام بی ٹمام کردے۔

اُم تَــاْمُـرُهــم اَحْلاَمُهُـمْربهـندا اُم هُـمْرقومٌ طَاعُونَ كياان كَعقليس انبيس اليي بى با تيس كرنے كے لئے كہتى بيں؟ يا در حقیقت بيئناديس صديے گذرے ہوئے لوگ بيں۔

ان دوفقروں نے مخالفین کے سارے پر و پیگنڈے کی ہوا نکال کررکھدی ،اوران کو بالکل بے نقاب کر دیا ،استدلال کا خلاصہ بیہ ہے کہ بیقریش کے پیرومشائخ پڑے نقلند بنے پھرتے ہیں کیا ان کی عقل یہی کہتی ہے کہ جوشخص شاعز نہیں ہے اسے شاعر کہوا ور جسے پوری قوم دانا کی حیثیت سے جانتی ہے اسے مجنون کہوا ور جسے کہا نت سے دور کا بھی تعلق نہیں اسے خواہ مخواہ کو ایک بہن کہو، پھرا گرعقل ہی کی بناء پر بیلوگ تھم لگاتے تو کوئی ایک تھم لگاتے بہت سے متضاد تھم یا تو عقل سے محروم اور بے بسیرت شخص ہی لگا سکتا ہے ہو ہو اور بے بسیرت شخص ہی لگا سکتا ہے یا پھر پر لے درجہ کا معاند اور ضدی ، اور ظاہر ہے کہ بیلوگ عقل سے محروم اور پاگل تو ہیں نہیں تو اب سوائے عنا داور ہٹ دھر می کے دوسرا کوئی سبب نہیں ہوسکتا ، اور آپ پر جیتے بھی بے بنیا دمتضا دالزامات لگائے جار ہے ہیں انہیں کوئی بھی بیجیدہ انسان قابل اعتنا نہیں بحد سکتا۔

فَانِنَكَ بِاَعْيُنِنَا وَثَمَنُول كَ وَثَمَنِ اور خَالَف وَتَكَدْيب سے رسول الله عِنْ عَلَى وین کے لئے پہلے تو یہ رہایا کہ آپ ہاری نظروں میں جی بین ہماری تفاظت میں جی ہم آپ کوان کے شرسے بچا کیں گے، آپ ان کی کسی بات کی پرواہ نہ کریں، جیسا کہ دوسری آیت میں ارشاور بانی ہو اللّه یَعْصِمُكَ مِنَ النّامِ اس کے بعد اللّه عالی نے تبیع وتمید میں لگ جانے کا تھم فر مایا جواصل مقصد زندگی بھی ہے، اور ہر مصیبت سے نیخ کا اصلی علاج بھی، فر مایا وَ سَبِّخ بِحَمْدِ رَبّلَ جِنْ اللّه وَ نَعْ بُورَ اللّه عَلَى اللّه عَلَى اللّه عَلَى اللّه عَلَى اللّه عَلَى اللّه وَ اللّه عَلَى اللّه وَ اللّه اللّه وَ اللّه

اله الله والله اكبرُ وَلاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللَّهِ بِحراس نِهُمَازَيرٌ صِنْ كَااراده كيااوروضوكر كِنماز پرهي تواس كي نماز تيول كي جائے گي۔ (ابن كنير، معارف)

كفارهٔ مجلس:

حفرت مجابداورابوالاحوص وغيره ائم تفسير في فرمايا كه "حين تقوم" سے مراديہ بے كہ جب آدمی اپنی مجلس سے الشح توبيہ سب حانك الله هرو بعد كئے معلوں سے الله وتوت بيج سب حانك الله هرو بعد كئے حضرت عطاء بن الى رباح في اس آيت كي تفسير ميں فرمايا، كہ جب تم اپنی مجلسوں سے الله وتوت بيج وتحميد كروا گرتم في اس مجلس ميں كوئى نيك كام كيا ہے تو اس كى نيكى ميں اضاف اور بركت حاصل ہوگى، اور اگركوكى غلط كام كيا ہے توبيد كل ساس كا كفاره ہوجا كيں گے۔

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ أَشْهَدُ أَن لَّا اللهَ إِلَّا أَنْتَ أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوبُ إِلِيكَ. (رواه الترمذي، معارف)



رَةُ النَّجُولِيَّةِ وَهَا الْمُنْكِانِ الْمُنْكِانِ الْمُنْكِانِ الْمُنْكِانِ الْمُنْكِانِ الْمُنْكِانِ الْمُنْكِيلِ اللَّهِ الللِّهِ الللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الللْهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الللِّهِ الللَّهِ اللَّهِ الللِّهِ الللِّهِ الللِّهِ الللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللِهِ الللِّهِ الللْهِ اللْمِلْمِ اللَّهِ اللْمِلْمِ الللِّهِ الللِهِ الللِّهِ الللْهِ الللِّهِ الللِهِ الللِّهِ الللِهِ الللِهِ الللِهِ الللِهِ الللِهِ اللَّهِ الللِهِ الللِهِ الللِهِ الللِهِ الللِهِ الللِهِ الللِهِ اللَّهِ الللِهِ الللِهِ الللِهِ الللِهِ الللِهِ الللِهِ الللِهِ اللَّهِ الللِهِ الللِهِ الللِهِ الللِهِ الللِهِ الللِهِ الللِهِ اللْمِلْمِ الللِهِ الللِهِ اللللْهِ الللللِهِ اللللْهِ الللْهِ الللِهِ اللللِهِ الللِهِ الللْهِ الللِهِ الللِهِ الللِهِ الللِهِ ال

سُورَةُ النَّجْمِ مَكِّيَّةٌ ثِنْتَانَ وسِتُونَ ايَةً. سورة جُم كَل هِ، باستُهَ بيني بين -

السِّيرِ اللهِ الرَّحْدِ مُن الرَّحِدِ مِن الرَّحِدِ النُّريَّ النُّريَّا إِذَا هَوْي فَابَ مَاضَلٌ صَاحِبُكُم مُدعد عد الصَّلوةُ والسَّلامُ عَن طريقِ الهٰذايَةِ **وَمُاغَوٰى ۚ** مَا لَابَسَ الغَيُّ وهو جَهْلٌ مِنِ اعْتِقَادٍ فاسِدٍ **وَمَا يُنْطِقُ** بِمَا يَ تِيْكُمُ بِهِ عَنِ الْهَوَى ۚ هَوى نَفْسِه إِنْ مِا هُوَالْآوَتَى يُتُولِى اللهِ عَلَمَهُ اِياهُ مَلَكَ شَدِيْدُ الْقُولى الْمُورِيَّةُ قُوةٍ وشِدَّةِ وسَنُظرِ حسَنِ اي جبرئيلُ عليه السَّلامُ فَٱلسَّوٰي ﴿ اِسْتَقَرْ وَهُوَبِالْأَفْقِ الْأَعْلَ ۗ انْفِ الشَّمْسِ اي عِـنُـدَ سَطُلَعها على صُورَتِه التي خُلِقَ عليها فَراهُ النَّبيُّ صلَّى الله عليه وسلم وكانَ بجِرَاءَ قَدْ سَدَّ الأَفْقَ الى المَغُرِب فَخَرَّ مَغُشِيًّا عَلَيْهِ وَكَانِ قَدْسَالَهُ أَنْ يُرِيَهُ نَفْسَهُ عَلَى صُوْرَتِهِ الَّتِي خُلِقَ عَلَيْهَا فَوَاعَدَهُ بِجِزَاءَ فَنَزَلَ جِبرَئِيْلُ عليه السّلامُ في صُورَةِ الأدمِيَيٰنَ تُث**َرَّدُنَى** قَرُبَ مِنه فَ**تَذَلِّي** ﴿ زَادَ فِي القُربِ فَكَالَ مِنه قَالَبَ قَدْرَ قُوْسَيْنِ أَوْ أَدُنِي فَى مِن ذلك حَتْى افاق وَسَكَنَ رَوْعُهُ فَأَوْنَى تعالى اللَّعَيْدِم جِبْرِئِيلَ مَّأَأُونِكُ جِبرَئِيلُ الى النَّبِيّ صبى الله عليه وسلم ولم يَذْكُر الموخي تفجيمًا لِشَانِهِ مَ**الكَذَبُ** بالتَحُفيفِ والتَشديد انكَرَ اللَّهُوَّاكُ فُؤادُ النبي مَارَأَى ﴿ بِبَصْرِه بِن صُورَةِ جِبْرَنيلَ أَفَتُمْرُونَا لَهُ تُجَادِلُوْنَة وتَغْلِبُونِه عَلَىما يَزَى ﴿ خِطابٌ لِلمُشْركينَ المُنكرينَ رؤيةَ النَّبِي لِحبربُيلَ وَلَقَلَدُرَاهُ عَلَىٰ صُورَتِه نَزْلَةً مَرَّةُ أَخْرِي ﴿ عِنْدَسِدُرَةِ الْمُنْتَظِي ۗ لَمَا أُسرى به في السّموتِ وهي شَجَرةُ نَبُقٍ عَن يمِيلِ الْعَرُشِ لَا يَتَجَاوَزُها أَحَدٌ مِنَ المَلْئِكَةِ وَغَيرِهِم عِ**نْدُهَا مِنَّا الْمَأْوَلُ** تاوي اليها المَلَائِكَةُ وَأَرُوَاحُ الشُّهَداءِ او الـمُتَّقِينَ إِنَّ حِيْنَ يَغَشَّى السِّدْرَةَ مَالَيغَتْلَى ﴿ مِنْ طيرِ وغيره وَادْ مَعْمُولَةٌ لرأه مَالَاعَ الْبَصَرُ بنَ النَّبيّ وَمَاطِّعَيٰ اي ساسالَ بَضرُه عَن مَرُئيه المَقُصُود له ولا جَاوَزُهُ تلك الليْلَة لَقَدُراً ي فيها مِنْ الِيتِ رَبِّكِ الكُنْبِرِي® اي العِظام اي بَعْصَها فراي سن عَجَائِب المَلَكُوتِ رفُرَفًا خُضُرًا سَدَ أفقَ السَّمَاءِ وحِبُرسيل عليه السّلامُ له سِنُمِانَةِ جَنَاحِ اَ**فَرَّيَتُهُمُ اللّٰتَ وَالْعُزْى الْوَمَنُوةَ الثَّالِثَةَ** اللَّيْنِ قَبُلَها الْاَثْمَرَى صَفَةُ ذَمِّ لِمثَالِثَةِ

وهي أَصْلَامٌ بِس حِجَازَةٍ كَانَ المُشُركُونَ يَعُبُدُونَها ويَزْعَمُونِ الَّهِ تَشْفَعُ لِهِم عِنْدَاللَّهِ ومَفعُولُ أَرَايُتُمُ الاولُ اللَّاتَ وَمَا عُطِفَ عليه والنَّاسي مُحُذُّوفٌ والمَعني أَخُبِرُوني أَليْذَه الأَصْنَام قُدُرَة على شَيّ ۽ مّا فَتَعُبُدُونَها دُونَ اللَّهِ عَرُّوحَلَّ القَادِرِ على ما تَقدُّم ذِكْرُهُ ولمَّا رَعَمُوا أَيْصًا انَّ الملائكَةُ بنَاتُ النّهِ مَعَ كَرَاهَتِهمُ البَنَاتِ ىرل ٱلكُمُّالِلَّذَكُرُّولُهُ الْأَنْتُنِي ﴿ يَلُكُ إِذَّا لِقِسْمَةُ ضِيْزُي ﴿ حَائِرَةُ بِسِ صَارَةً يَضِيرُهُ اذْ ظَيْمَةُ وحارَ عليه إِنْ هِي مَا المَذُكُوراتُ إِلْاَلْتُمَاءُ سَمَّيْتُمُوْهَا اى سَمَيْتُهُ بِهَا أَنْتُمْ وَأَبَّا قُلُغُر اصْمامًا تَعْمُدُونِها مَّا أَنْزَلُ اللَّهُ بِهَا اي بعِبَادَتِها مِنْ سُلْطِينْ حُجَّةٍ وبُرهَان إِنْ مَا يَتَبِعُونَ في عبَادتِها إِلَّاالْظَنَّ وَمَاتَهُوَى الْأَنْفُسُ مَما زَيَّنَهُ لهم الشّيطَانُ مِن أَنْهَا تَشْفَعُ لهم عِنْدَ اللهِ **وَلَقَدُجَاءُهُمْ مِنْ تَرَبِّهِمُ الْهُدِي** اللهُ عليه وسلم بِالبُرْهار القاطع فلم يَرْجعُوا عمَّاهُمُ عليه أَمُّ لِلْإِنْسَالِ أَي لكُلِّ إِنسان سهم مَاتَمَتَى الله أَن الأصنام تَشْفَعُ لهم ع ليس الامرُ كذلك فَلِلْهِ الْلِجْرَةُ وَالْأَوْلَى أَم الدُنيا فلا ينَعُ فيهما الاما يُريدهُ تعالى.

میں ہے۔ میں میں اللہ کے نام سے جو بڑا مبر بان، نہایت رحم والا ہے، شم ہے ثریا ستارے کی جب گرے لینی غائب ہو تمہارا ساتھی محمد ﷺ راہ ہدایت ہے نہ بہکا اور نہ بھٹکا لیعنی اس نے (اعتقادًا) کمج روی اختیارتہیں کی اوروہ (لیعنی غنی)اعتقاد فاسد سے پیدا ہونے والاجہل ہے،اور جو پچھوہ تم سے بیان کرتے ہیں اپنی خواہش نفس سے بیان نہیں کرتے وہ تو صرف وحی ہے جواس کی طرف نازل کی جاتی ہے اس وحی کی ان کوایک فرشتہ نے تعلیم دی ہے، جو بڑا طاقتور ہے اور ز در آ ورہے لیعنی قوت وشدت والا ہے، یاحسین المنظر ہے بیعنی جبرئیل علیجرنڈوٹٹٹیڈ پھر وہ سیدھا کھڑا ہو کرتھبر گیا حال ہیہ ہے کہ وہ مشرق کی بالائی افق پرتھا یعنی طلوع تنس کی جگدا بی (اصلی) صورت پرجس پراس کو پیدا کیا گیا ہے، آپ پیچھ کا بیان اس کو دیکھا جب كه آپ (غار) حراء ميں تھے، حال بيركه (جانب) مغرب تك اس نے افق كوجرديا، تو آپ بيہوش ہوكر كر پڑے اور آپ النظامة الله المناس الله على الله والبين خودكوا في ال صورت مين دكھا كيں جس براس كو بيدا كيا كيا ہے چنانچہ جبرئيل على التالين التاليزية إلى الما وعده كرايا بهرحضرت جرائيل على التاني انساني شكل ميس نزول قرمايا بهروه آپ ك قریب آیا پھر وہ اتر آیا (لیعنی) زیادہ قریب ہوا، تو وہ آپ سے بقدر دو کمانوں یااس ہے بھی زیادہ قریب ہوگیا ، یہاں تک که آپ کو (بیہوشی ہے) افاقہ ہوااور آپ کا خوف جاتا رہا پھر التد تعالی نے اپنے بندے جبرئیل کی طرف وحی بھیجی جو جبرئیل علیجان والشاد نے نبی میں تا کی طرف پہنچ دی اور موحی بد کا ذکر نبیس کیا (یعنی)عظمت شان کو ظاہر کرنے کے لئے مہم رکھا آپ میں تا ایک کا قلب مبارک نے اس صورت کی تر دیز ہیں کی جو صورت آپ نے اپی نظر سے جبر کیل علاج تفاط کی دیکھی ، ک ذب شخفیف اورتشد بدکے ساتھ ہے سوکیاتم اس (پیغمبر) کی دیکھی ہوئی چیز میں مجادلہ کرتے ہو اوران پر غالب آنے کی کوشش کرتے ہو، میہ خطاب ان مشرکین سے ہے جوآپ کے جرئیل علیجالاوالفاؤ کو دیکھنے ہے منگر تھے، اورائے تواصل صورت میں ایک مرتبہ سدرة ٠ ﴿ (مَرْزُم بِهَاللَّهُ إِنَّا اللَّهُ إِنَّا اللَّهُ إِنَّ اللَّهُ إِنَّا اللَّهُ إِنَّا اللَّهُ اللَّهُ ال

النتهل کے پاس اس کےعلاوہ بھی دیکھاہے، جبکہ آپ کورات کے وقت آسانوں پر لیجایا گیا،اور وہ عرش کی دائیں جانب بیری کا درخت ہے اس ہے آ گے فرشتہ وغیرہ کوئی نہیں بڑھ سکتا ، اس کے پاس جنت الماویٰ ہے جس میں فرشتے اور شہداء کی رومیں یا متقیوں کی رومیں سکونت پذیر رہتی ہیں، جبکہ *سدرہ کو چھیائے لیتی تھیں وہ چیزیں جواس پر چھارہی تھیں،* پرندوغیرہ،اور اذا، رَ ۱۰ کامعمول ہے آپ کی نظر نہ ہٹی اور نہ بڑھی لیعنی آپ کی نظر اس رات سمج نظر سے نہ پھری اور نہ تجاوز کیا ، یقینا آپ نے اس رات میں اپنے رب کی عظیم نشانیول میں سے بعض کو دیکھا آپ نے عالم ملکوت کے عجائبات میں سبز رفرف کو دیکھ جس نے افق آسان کوجردیا ،اور جرئیل علی کالی کال کال کودیکھاان کے جیسوبازوہیں کیاتم نے لات اورعزی کواور پجھلے منت کودیکھا(یعنی ان کے بارے میں غور کیا) جوسابق دوکا تیسراہے اَلاُنھوںی، شَالِئَة کی صفتِ ذم ہے،اوروہ پھر کے بت ہیں،مشرکین ان کی پوج کیا کرتے تھے اور بیدعویٰ کرتے تھے کہ بیاللہ کے حضور جماری شفاعت کریں گے اور آر اینسے کا مفعول اول اللّات اور اس پر جس کا عطف کیا گیا وہ ہے اور دوسرامفعول محذوف ہے اور معنی یہ ہیں کہ مجھے بتاؤ کہ کیاان بنوں کوکسی ہی پر قدرت حاصل ہے جس کی وجہ سے تم اللّٰدعز وجل کو چھوڑ کران کی بندگی کرتے ہو، جو کہ قا در ہے، جبیبا کہ ماقبل میں مذکور ہوا، اور جبکہ ان کا دعویٰ رہیمی (یعنی) کیاتہارے کئے بیٹے اوراس کے لئے بیٹیاں، تب توبیری دھاندلی کی تقیم ہے بینی ظالمانہ ہے، بیرضاز ہ یصیرہ ے ماخوذ ہے کہاس پرظلم وزیادتی کرے یہ مذکور شمحض چندنام ہیں جوتم نے بینی ان کے تم نے بینام رکھ لئے ہیں اور تنہارے آباء نے ان بنوں کے رکھ لئے ہیں جن کی تم یو جا کرتے ہو ان کی عبادت کے بارے میں اللہ نے کوئی دکیل اور جحت نہیں ا تاری ہیلوگ ان کی بندگی کے بارے میں محض ظن اورخواہشات نفس کی پیروی کرتے ہیں بینی ان گمانوں کی جوشیطان نے ان کے لئے آراستہ کردیئے ہیں، یہ کہ بیہ بت اللہ کے حضور میں ان کی شفاعت کریں گے اور یقینا ان کے پاس ان کے رب کی طرف ے نبی علاقتلا کا خالی کی زبانی بر ہان قاطع کے ساتھ ہدایت آ چکی چربھی وہ اپنے اختیار کروہ روش ہے باز نبیس آئے کیا انسان کے لئے بینی ان میں سے ہرانسان کے لئے وہ میسر ہے جس کی وہ آرز وکر ہے؟ بید کہ بیہ بت ان کی شفاعت کریں گے، بات ایس نہیں وہ جہان اور بیہ جہان اسی کے قبضے میں ہے لہٰ ذاد ونوں جہا نوں میں وہی ہوگا جووہ حیا ہے گا۔

عَجِفِيق اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللّلَّا اللَّهُ اللَّالِمُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّا اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ

قِیُولِنَی: وَالنَّهِمِ وَاوُقَمیهِ ہِ،اَلا َجُمُّ سَارہ (جَعِ) نُبِجُومٌ و آنْجُمْ اسم جن ہے،اس پراسمیت غالب آگئ ہے جب مطلق بولا جاتا ہے تو ثریاستارہ مراد ہوتا ہے، السنجم سے بہاں کیام اد ہے؟اس میں چندا قوال ہیں: ① ایک جماعت نے کہا ہے کہ جن نجوم مراد ہے (مفسر علام نے بہی قول اختیار کیا) مجاہدو غیرہ نے بھی بہی مراد یہ کہا ہے کہا نہ وہ ستارہ مراد ہے،عرب کا ایک قبیلہ اس کی پوجا کیا کرتا تھا ۞ بعض حضرات نے بیلدار حرات نے بیلیا کے بیل کرتا تھا کے بیل کرتا تھا کے بیل کرتا تھا کے بیل کرتا تھا کے بیل کیا کہا نے بیل کرتا تھا کے بیل کرتا تھا کے بیلدار کے بیلیا کرتا تھا کے بیل کرتا تھا کے بیلیا کرتا تھا کیا کہا کے بیلیا کرتا تھا کے بیلیا کرتا تھا کے بیلیا کرتا تھا کے بیلیا کرتا تھا کیا کیا کیا کہا کیا کرتا تھا کیا کرتا تھا کے بیلیا کرتا تھا کے بیلیا کرتا تھا کرتا تھا کے بیلیا کرتا تھا کے بیلیا کرتا تھا کرتا

گھاس مراد لی ہے جیسا کہ اللہ تعالی کے قول و المنجہ و المشجو یسجدان میں ، انتفق کا بہی قول ہے ﴿ کہا گیا ہے کہ کھر یکھی گھاس او ہیں ﴿ بعض حفرات نے قرآن مرادلیا ہے ، اس کے نجماً نازل ہونے کی وجہ ہے ، مجاہد و فراء وغیرہ کا بہی قول ہے ، اس کے علاوہ بھی اور بہت ہے اقوال ہیں ، گررائح قول ٹریا ہے۔ (فتح القدیر شوکانی) ٹریاسات ساروں کے مجموعہ کا نام ہے چھان میں سے ظاہر ہیں اورا یک مخفی ہے بعض حضرات نے سات سے بھی زیادہ کا مجموعہ بتایا ہے ، لوگ ٹریا ہے اپنی نظروں کا امتحان کرتے ہیں شفاء میں قاضی عیاض نے لکھا ہے کہ آنخضرت میں ایسان کی اسے ستاروں کود کھیلیا کرتے تھے ، اور مجاہد ہے بھی ایسانی آئول مردی ہے۔ (حسل)

فِيْ فَلِكُمْ ؛ إِذَا هُوى (ض) اى سَقَطَ وغَاب.

قَوْلَى ؛ مَاصَلَّ صَاحَبُكُمْ وَمَا غَوى يعطف خاص على العام كَتبيل سے بصلالت، ہرتم كى گرابى خواہ اعتقادى ہو على اور غواية، اعتقادى گرابى ، اور بعض حضرات نے کہا ہے ضلال علمی گرابى اور غواية على گرابى ، اور بعض نے دونوں کو مترادف کہا ہے۔ (صادی)

قَبِي لَكَمَا: عَن اللهَوى اسم مصدر (سمع) ناجارَ زغبتِ نفس، عن اللهوى، مَا ينطِقُ كِمُتعلق بِيعِيْ آپ كاكولي كلام خواتش نفس سے نہیں ہوتا۔

فِيُولِكُمْ ؛ إِنْ هُوَ كَامِرْعَ نَطْقَ بِجِوينطقُ مِهُمَ مِهُم مِهِ

فَيُولِكُم : يُوحى بيورَ حَي ك صفت إحافهال مجاز كوفتم كرنے كے لئے۔ (صاوى)

عَلَىمَهُ إِنَّاهُ صَمِيرِ منصوب منصل آب عَلَيْنَا أَنْ كَالَم فَ الله عَلَيْمَ الله عَلَى الله عَلَيْنَا عَلَيْنَا الله عَلَيْنَا عَلْمَا عَلَيْنَا عَلَيْنَا عَلَيْنَا عَلَيْنَا عَلَيْنَا عَلَيْنَ

قِوَلْ)؛ شَدِیدُ القُوسی بیموسوف محذوف کی صفت ہے جس کو منسرعلام نے مَلَكُ محذوف مان كراشاره كرديا ہے مراد حريجا بير

قَوْلَ مَنَ الله مَوْقِهِ، مِرَّةُ توت باطنى، جيعزم برعت حركت، اور بعض حضرات في مرّة علم اور بعض في حسن وجمال مراد لي بني، منظر حسن كهدراس معنى كي طرف اشاره كياب، اور منديد القوى ظاهرى قوت، يعنى الله تعالى في حضرت جرئيل كو، توة ظاهرى اور توت باطنى بدرجه اتم عطافر مائى تحيس -

فِيَوْلِكَ ؛ فَاسْتَوى، عَلَّمه شديد القوى پراس كاعطف --

قِيْوُلُّكُى : وهو بالافق الاعلى جمله حاليه بــــ

قِعُولَ آئى، فَتَدَلَى، تَدَلِّى يَ ماضى واحدة كُرعًا بوه الرّايا، وه للك آيا، وه قريب بوا، يددَلَيْتُ الدَلْو في البنوي المؤوذ ب، من نے كنوكين مين دُول الكايا، اتارا۔

میکوان، قربنزول کے بعد ہوتا ہے، البذایہ کہنا کہ قریب ہوااور پھرنازل ہوا، مناسب معلوم ہیں ہوتا۔

--- ﴿ (مَرْزُمْ بِبَاسَوْ) ٢

جِيَى لَبْعِ: مفسر ملام نے زاد فسی القرب كااضافه اى شبه كاجواب دینے کے لئے كيا ہے بعن حضرت جرائيل قريب ہوئ اور پھراورزیادہ قریب ہوئے ،اوربعض حضرات نے مذکورہ شبہ کا بیجواب دیا ہے کہ کلام میں تقذیم و تاخیر ہے، تقذیر عبارت یہ ہے ثُمَّ تَدَلِّى فَدَنِي لِعِنْ جِرِيِّل الرِّاورقريب بوئ

فِيْوُلْكُ ؛ قَابَ قَوسَيْنِ القاب والقيب، والقاد والقيد، المقدار، عرب سي نايخ ادراندازه كرن كم مختلف طريق تصان میں ہے ایک طریقہ توس (کمان) ہے نابی کا بھی تھا، قوس کے علاوہ عرب رمح (نیزہ) سوط کوڑا، ذراع المباع المخطوة (قدم) الشبر (بالشت) فِتُرُّ (الكَتْتِ شهادت اوراتكو مُص كردرميان كاحمه) والإصبع (الكشت) يعجمي نا ہے تھے۔ لیعنی جبرئیل عَالِعَیٰلاَ وَالنَّالِا آپ ہے استے قریب ہو گئے کہ صرف دو کمانوں کی مقدار دوررہ گئے ،بعض حضرات نے کہا ہے کہ قاب اس فاصلہ کو کہتے ہیں جو کمان کے مقبض اور کنارے کے درمیان ہوتا ہے اور دو کمانوں کے دوقاب ہوتے ہیں۔ هِ فَوْلَكُمُ ؛ أَوْ أَذْنَى مِن أَوْ بَمَعَىٰ بِل بِصِيها كه الله تعالى كَوْل أَوْيَزِيْدُوْنَ مِن أَوْ بمعنى بل ب، اورا كرأَوْ الحي اصل ر ہوتو شک رائی (ویکھنے والے) کے اعتبار ہے ہوگا۔

فِيْوَلِكُمْ : حَنَّى أَفَاقَ مِي مَدُوف كَي عَايت بِ تَقْدَرِ عَبَارت بدب اى ضَمَّهُ إِلَيْهِ حَتَّى أَفَاقَ.

فِيْ فَلِينَى: مَا كَذَبَ بالتشديد و التخفيف دونو لقراء تيس سبعيه بي ،تشديد كي صورت من ترجمه موكا، جو يجه آپ كي نظرنے دیکھ قلب نے اس میں شک جہیں کیا۔ (صاوی)

فِيْوَلِكُمْ : مِنْ صورة جبرئيل يه ماكابيان ــــــ

قِيْ وَلَيْنَ : وتعلبونَهُ ، تُمَارونَهُ ك دوسرى تَفيلبُونَهُ ك كرك اشاره كردياك تمارونه ، تعلبونه كم عنى كوتضمن ہے اور اس کا صلی علی لا نا درست ہے۔

فَيُولِينَ؛ المَهَاوى مصدر،اوراسم ظرف ب، قيام كرنا،ر منا، سكونت اختيار كرنا،مقام سكونت، مُحكانه (ض) اگرصله مين الي آئ تو بناولین، اورا گراس کا صله لام بوتو مبر بانی کرنا، جیسے اوی لهٔ اس پرمبر بانی کی، اس پردهم کیا۔

فِيْ فُلْكُمْ ؛ لَقَدْ رَأى لام جواب مرج إدرته ، أَفْسِمُ محدوف ب-

فَيُولِكُم : مِنْ آباتِ رَبِّهِ الكبرى، مِن مُعتِيضيه باور دأى كامفعول بجيا كمفسرعلام في اشاره كياب اور محبوى آیات کی صفت ہے۔

ينيوان، الآبات موصوف جمع إور كبرى صفت واحدب موصوف اورصفت مين مطابقت تبيل ب-

جِيْ لَيْنِ الآيات ايى جمع بكراس كى صفت واحد مؤنث لا نا درست باس كے علاوہ فواصل كى رعايت كى وجہ اس ميس مزيد حسن پيدا ہو گيا۔

اس میں دوسری ترکیب بیجی ہوسکتی ہےالے بعری رأی کامفعول بداور مین آیاتِ ربه حال مقدم ،تقذیر عبارت بدہ لَقَدْ رأى الآياتِ الكبرى حال كونها مِن جملة آيات ربه. هِ فَكُولِكَ ﴾: أَفَسرَ أَيْتُمُ اللَّاتَ وَالْعُنزى استفها وتبي إلى الله السبت كانام ب بوكعبه بين نصب تفا بعض حضرات ني كها ہے کہ یہ بت طائف میں تھااور یہ بنوثقیف کا دیوتا تھا،اس کی تحقیق میں بعض حضرات نے کہا ہے کہ یہ اُسٹ المسویق سے ماخوذ ہے، لات اسم فاعل کا صیغہ ہے گوند ھنے والا ، ملانے والا ، ایک شخص جو کہ حجاج کوستو گھول کر بلایا کرتا تھا، کلبی نے کہا ہے کہ اس کا اصل نام صرمه بن عنم تھا (خلاصة التفاسير) جب اس كا انتقال ہوگيا تو جس پقرير بديثه كروه ستوگھولا اور پلايا كرتا تھا اس پقر كا ايك بر ابت تر اش کرر کھ دیا بعداز اں لوگوں نے اس کی بوجا شروع کردی ، بیدہ ہی لات ہے۔

وَيُولِكُنُّ ؛ عُلِّى يه أَعَوُّ كَى تانيث بي يقبيله غطفان كي بت كانام باور بعض في كهاب كهيدا يك ببول كاور خت تفاءآب ﷺ نے خالد بن ولید کو بھیج کر اس درخت کو کٹو او یا تھا، جب اس درخت کو کا ٹا تو اس میں ہے ایک (جدیہ) بھوتنی سرکے بال بمحيرے ہوئے اور ہاتھ سرپر رکھ ہوئے خرابی خرابی چلاتی ہوئی نگلی، حضرت خالد مَوْجَانْلَدُ تَغَالِثَةٌ نے اس کوتلوار ہے لگل کردیا، حضرت خالد نے آپ اللہ اللہ کواس کی اطلاع دی تو آپ نے فرمایا یہی عزی ہے۔

جَنُولَنَى ؛ مناة بيابك پقرتها، جوبذيل اورخزاعه كاديوتا تها، اورحضرت ابن عباس تفعَالنَّاتُعَالنَّاتُعَا في كديه بن تقيف كاديوتا تھا، یہ منسی یسمنی سے ماخوذ ہے اس کے معنی بہانے کے ہیں، چونکداس کے پاس کٹر ت سے جانور ذرج ہوتے تھے جس کی وجہ ے بہت خون بہتا تھا ،اس وجہ سے اس کا نام منا ق ہوگیا۔

فَيْخُولْكُونَا الْأَحْورى يه ثالثة كي صفت ذم بي العنى رتب كاعتبار ي تيسر يمبركا-

مَنْ وَالْنَ، جب ثالفَةٌ كهدد يا تواس كااخرى مونا خود بخو دمعلوم مؤكّيا ، پھراخرىٰ كہنے كى كياضرورت؟

جَيْ لَيْنِي: الْأحرى صفت ذم باس كُ كهمرا در تبهين تاخير بندكه ذكر وثنارين جيها كه التدتعالي كقول قسالست أخراهم. لاولهُمْرای ضُعَفاؤهُمْ لِرُوسائهم.

عِيَّوْلِكُمُ ؛ النانسي محذوف ، الكَّاتَ احِيْمعطوفات عصل كرأرأيتُمْ بمعنى اَخْبرونسي كامفعول اول إاور اَلِهاذه الاصنام الخجمدات فلماميد مفعول ثانى ب-

فِيَوْلِكَى : تلكَ ، تلك كامثارُ اليه قِسْمَةُ بجوما فبل كجمله استفهاميه ي مفهوم ب-

فِيْكُولْكَى : ضِيْزى بهضِيْز سے ماخوذ ہے بمعن ظلم، یاء، کی رعایت سے ضاد کے ضمہ کو کسرہ سے بدل دیا گیا، جیسا کہ بینظ میں كيا ہے،اس لئے كد في على كاوزن صفت كے لئے مستعمل مبيں ہے۔

سَيُوالَى: مفسرعلام فيسمَّيْتُمُوِّهَا كَافْسِر سَمَّيْتُمْ بِهَا عَيول كَ؟

جِوَلَ بْنِيِّ: اس كامقصدايك اعتراض كادفعيه ب،اعتراض بيب كه اساء كانام بيس ركها جاتا جيها كه بظهر مسمَّيْتُهُ وها ي

مفہوم ہوتا ہے بمکمتی کا نام رکھا جاتا ہے، جواب کا خلاصہ بیہ ہے کہ کلام میں حذف ہے اصل کلام سسمی پیٹے مربھا ہے،اس کا مفعول محذوف ہے اوروہ اصدامًا ہے جبیبا کہ فسرعلام نے ظاہر کردیا ہے۔

تِفَيْدُرُوتِيْنَ مِنْ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ مِنْ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ مِنْ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ مِنْ عَلَى الْم

ربط:

سورہ طور کا اختیا ملفظ السنسجوم پر ہوا تھا، اس سورۃ کی ابتداء دالنجم سے ہو کی ہے دونوں میں منا سبت قریبہ موجود ہے، سورہ عجم مکہ میں نازل ہو لک سوائے الگذین یکٹونڈ او کے کہ بیآیت مدنی ہے،اس میں ٦٢ آیٹیں ہیں،اس کا مرکزی مضمون،عصمت انبیاء،تقیدیق نبوت،مسئد تعلیم جرئیل،رؤیت باری تعالی ادرسیرعلوی مقامات ہیں۔

اس سورت کے اکثر کلمات معانی کثیرہ اور مفاہیم مختلفہ پرمشمنل ہیں ،معانی مجازی اور استعارات پرمحمول ہیں ،اسی وجہ اس کی تفسیر میں اختلاف بہت زیادہ ہے۔

خصوصيات سورهُ مجم :

سورہ مجم پہلی سورت ہے جس کا آپ ﷺ کے مکہ میں اعلان فر مایا ،اور یہی سب سے پہلی سورت ہے جس میں آیت سجدہ نازل ہوئی، جب آپ ﷺ نے آیت بجدہ تلاوت کرنے کے بعد بحدہ تلاوت فرمایا تو حاضرین میں سے مسلمان، کا فرسب نے سجدہ کیا سوائے ایک شخص امیہ بن خلف کے ،اس نے اپنی مٹھی میں مٹی کیکراپی پیشانی سے لگالی ، چنانچہ بیکفر کی حالت میں مارا گیا (صحیح بخاری تفسیرسور و انجم) بعض روایتوں میں اس مخص کا نام عتبہ بن ربیعہ بتلا یا گیا ہے۔

(ابن کئیر)

و النَّجهِ إِذَا هَوٰى لَبَحْضُ مُفْسِرِين نِے النجم ہے ثریاستارہ مرادلیا ہے اوربعض نے زہرہ ستارہ ،اوربعض نے جنس نجوم هوَی اوپرے نیچ گرنا بعنی طلوع فجر کے دفت جب وہ گرتا ہے یا شیاطین کو مارنے کے دفت گرتا ہے۔ مَاضَلَّ صَاحِبُكُمْ يهجوابِ شم ب،صاحبُكم تمهاراساتهي،الكلمهت تبيئي التحاليظ كاصدافت كوواضح اور ٹا بت کرنامقصود ہے، کہ نبوت ہے پہلے جالیس سال اس نے تمہارے ساتھ اور تمہارے درمیان گذارے ہیں،ان کے شب وروز کے تمام معمولات تمہارے سامنے ہیں ،اس کا خلاق وکردارتمہاراجانا پہچانا ہے ،راست بازی اورا مانتداری کے سواتم نے اس کے کردار میں کبھی کچھاور دیکھا؟اب جالیس سال بعد جووہ نبوت کا دعویٰ کرر ہاہے تو ذراسو چو کہ وہ کس طرح حجوث ہوسکتا ہے چنانچہ واقعہ بیہ ہے کہ وہ نہ گمراہ ہوا ہے اور نہ بہکا ہے، اللہ تعالیٰ نے وانستہ اور نا دانستہ دونوں قتم کی ممراہیوں ہےاہے پیغیبر کی تنز بیفر مائی ہے۔

ھ (زَمَزَمُ پِبَاشَ لِيَ

وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَولِى لِعِنْ وه مُراه اور بہک کیے سکتا ہے وہ تو وتی الٰہی کے بغیر لب کشائی ہی نہیں کرتاحتی کہ مزاح طبعی کے موقعوں پر بھی آپ یکھ تھٹا کی زبان مبارک سے حق کے سوا کچھ بیں نکاتا (تر ندی شریف) ای طرح حالت غضب میں آپ کوا ہے جذبات پراتنا کنٹرول تھا کہ زبان سے کوئی بات خلاف واقعہ نہ نگلتی۔ (ابو داود)

خلاصہ بیہ ہوا کہ آپ بین قطان اپن طرف ہے ہا تیں بناکراللہ کی طرف منسوب کردیں ہیں کا قطعا کوئی امکان نہیں بلکہ آپ جو پچوفر ماتے وہ سب اللہ کی طرف ہے وہ کیا ہوا ہوتا ہے، وہی کی بہت ی اقسام بخاری کی احادیث ہے تابت ہیں ان میں ایک شم وہ ہے جس کے معنی اور الفاظ دونوں اللہ تعالیٰ کی طرف ہے ہوتے ہیں جس کا نام قر آن ہے، دوسرے وہ کے صرف معنی اللہ کی طرف ہے ان معانی کو اپنے الفاظ میں ادا فر ماتے ہیں، اس کا نام حدیث اور سنت ہے، پھر حدیث میں جو صفحون حق تعالیٰ کی طرف ہے آتا ہے، بھی وہ کسی معاملہ کا صاف اور واضح فیصلہ اور تھم ہوتا ہے، بھی کوئی قاعدہ کلیے بتلا یا جاتا ہے، اگر کسی مسئلہ میں اللہ تعالیٰ کی طرف ہے صاف اور واضح تھم نہ ہوتو نبی اپنے اجتہ و سے کام لیتا ہے، اجہ کی خصوصیت ہے کہ اگر احکام مستبط میں سے کام لیتا ہے، اجہ اور جانے تو اللہ تعالیٰ بذر ایجہ وہی اس کی اصلاح فرما و ہے ہیں بخلاف علی ہوجائے تو اللہ تعالیٰ بذر ایجہ وہی اس کی اصلاح فرما و ہے ہیں بخلاف علی ہوجائے تو اللہ تعالیٰ بذر ایجہ وہی اس کی اصلاح فرما و ہے ہیں بخلاف علی ہوجائے تو اللہ تعالیٰ بذر ایجہ وہی اس کی اصلاح فرما و ہے ہیں بخلاف علی ہوجائے تو اللہ تعالیٰ بذر ایجہ وہی اس کی اصلاح فرما و ہے ہیں بخلاف علی ہوجائے تیں کے، کہ اگر ان سے غلطی ہوجائے تو اللہ تعالیٰ بذر ایجہ وہی اس کی اصلاح فرما و ہے ہیں بخلاف علی ہوجائے ہیں جوائی پوری تو ان کی صرف معاف ہی تو بیں ان کوا یک گونا ثو اب ملائے ہے۔ (جیسا کہ احادیث صحیحہ سے تابت ہے)۔

(معارف) معادی کونا ثو اب ملائے ہے۔ (جیسا کہ احادیث سے جوئے ہیں جوانی کی پوری تو ان کی صرف کرتے ہیں اس پر بھی ان کوا یک گونا ثو اب ملائے۔ (جیسا کہ احادیث سے جوئے ہیں جوانے کی دوروں کے کہ ان کی سے دوروں کی تو ان کی صورف کر اوروں کیا ہوجائے کی دوروں کی تو ان کی صورف کرتے ہیں اس کی کی کر کے جوئے ہیں کہ کر کرتے ہیں ان کوا یک گونا ثو اب ملائے کر حسا کہ اعاد یہ صحیحہ سے تاب ہے۔ (جیسا کہ اعاد یہ صحیحہ سے تاب ہے ۔ (جیسا کہ اعاد یہ صحیحہ سے تاب ہے۔ (حسان کہ اوروں کی کونا تو اس کی کرتے ہیں اس کرتے ہیں اس کی کرتے ہیں اس کی کرتے ہیں کی کرتے ہیں کی کرتے ہیں کرتے ہیں

خُوْمِوَّةٍ فاستَوی بیاورآئندہ کلمات اکثر مفسرین کے زوید حضرت جرئیل کی صفات ہیں اور بعض دیگر مفسرین کے زویک مذکورہ صفات القد تبارک وتعالیٰ کی ہیں، اور ان تمام آیات کا تعلق واقعہ معراج سے قرار دے کرحق تعالیٰ سے تعلیم بلا واسط اور رویت وقرب حق تعالیٰ پرمحول کرتے ہیں، یہ تفییر صحابہ کرام ہیں سے حضرت انس وَعَنَاتَهُ مَّالِثَ اُورا بن عباس وَعَنَاتُ مَعَالَا اَتَعَالَا اَعْتَالِ اَعْتَالُونَ اَور اَن ہیں بہت سے حضرات صحابہ وتا بعین شامل ہیں ان حضرات کے قول کے رائے ہونے کی کی وجو ہات ہیں تاریخ سے بھی ای تول کی تائید ہوتی ہے، اس لئے کہ سورہ مجم بالکل ابتدائی سورتوں میں سے ہوا ور طاہر یہی ہے کہ واقعہ معراج اس سے مؤخر ہے، دوسری اور اصل وجہ یہ ہے کہ خودرسول اللہ ﷺ سے ان آیات کی تفسیر رویت جبر کیل سے منقول ہے۔

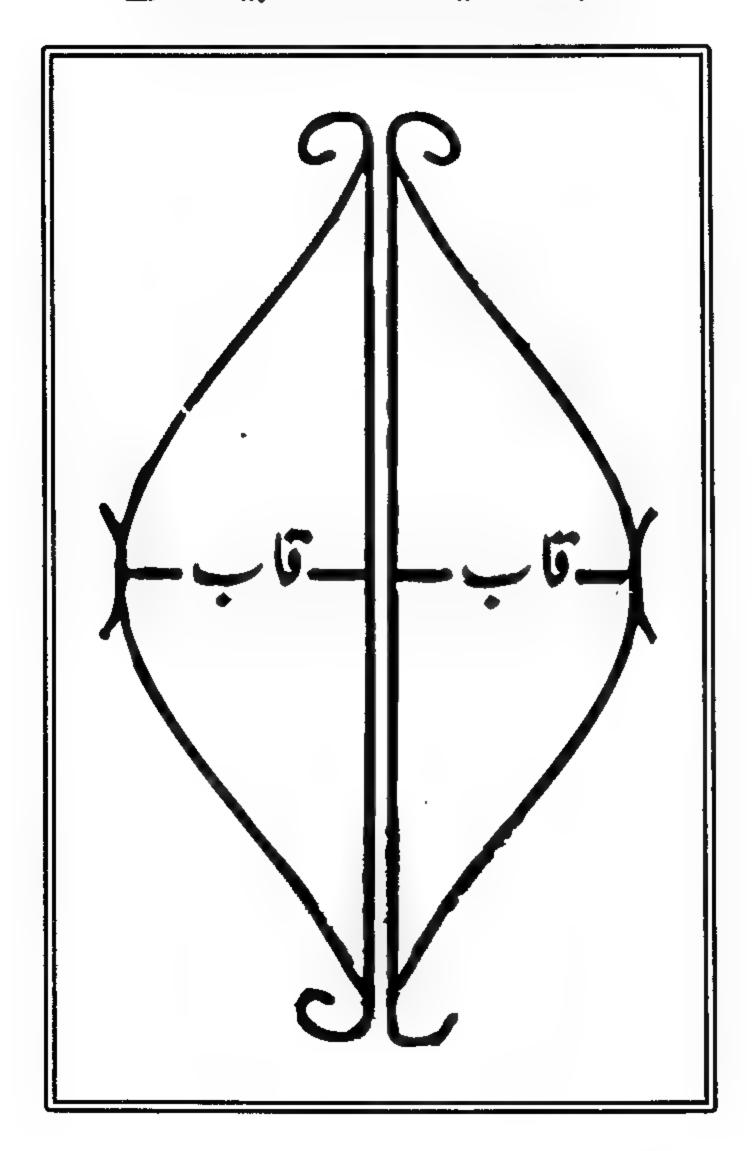
شعمی حضرت مسروق سے نقل کرتے ہیں کہ وہ ایک روز حضرت عائشہ صدیقہ کے پاس تھے۔ (رویت باری تعالی کے مسئلہ

میں گفتگو بور ہی تھی) مسروق کہتے ہیں کہ میں نے کہا اللہ تعالی فرما تاہے وکلقڈ رَاہُ بِالاُفُقِ الْمُبِین، وَلَقَدْ رَاهُ نَوْلَةً اُحوی حضرت صدیقہ نے فرمایا کہ بوری امت میں سب سے پہلے میں نے رسول اللہ ﷺ سے اس آیت کا مطلب دریافت کیا، آپ نے فرمایا کہ جس کے دیکھے آپ نے میں ذکر ہے، وہ جرئیل ہیں جن کورسول اللہ ﷺ نے صرف دومر تبدان کی اصلی صورت میں دیکھا ہے آیت میں جس رویت کا ذکر ہے اس کا مطلب بیہ ہے کہ آپ نے جرئیل امین کو آسمان سے زمین کی طرف اتر تے ہوئے ویکھا کہان کے جسم نے زمین و آسمان کے درمیان کی فضاء کو بھر دیا ہے (منداحد) صحیح مسلم میں بھی تقریبا انہی الفاظ سے منقول ہے، نووی نے شرح مسلم میں اور حافظ نے فتح الباری میں ای تفسیر کو اختیار کیا ہے۔

فکگان قاب فؤسین آؤ آؤنی " قاب " کمان کی کٹری جس میں قبضہ (دستہ) لگا ہوتا ہے اوراس کے بالقابل کئری کے دونوں کناروں میں ڈور (تانت) بندھی ہوتی ہے، دستہ اور ڈور کے درمیانی فاصلہ کوقاب کہتے ہیں، جس کا فاصلہ انداز آ ڈیڑھ ٹٹ ہوتا ہے، قاب قبوسین یعنی دو کمانوں کا قاب جس کا فاصلہ بین فٹ ہے یہ جبیر حضرت جرئیل اور آپ بین ہی گئی گئی کہ کو بیان کرنے کے لئے اختیار کی ہے، عرب کی عادت تھی کہ آپسی اتحاد و یکا نگمت کو فل ہر کرنا یا آگر دو آدمی آپس میں صلح اور دوئتی کا معاہدہ کرنا چاہتے تو جس طرح اس کی ایک علامت ہاتھ پر ہاتھ مارنے کی معروف وشہور ہے اس طرح اس کی ایک علامت ہاتھ پر ہاتھ مارنے کی معروف وشہور ہے اس طرح ایک علامت ہیتھی کہ دونوں اپنی اپنی کمانوں کی کٹری اپنی اپنی طرف کرے ڈور (تانت) کو ڈور سے ملاتے اور جب ڈور سے ڈور ل جاتی تو بہی قرب ومؤدت کا اعلان سمجھا جاتا ، اس قرب کے وقت دونوں شخصوں کے درمیان دوقا بول تقریباً تین فٹ کا فاصلہ رہتا۔



(قابَ قوسین کا نقشه پیش هیے)



ایک علمی اشکال اوراس کا جواب:

آیات مذکورہ میں صفات کا مصداق حضرت جرئیل علیہ کا کھی کو قرار دینے میں جو کہ جمہور مفسرین کا مختار ہے بظاہریہ ا اشکال ہوتا ہے کہ اوپر کی آیات میں جو خمیری جیں وہ جبرائیل کی طرف راجع جیں ،گرصرف فَ اَو حی الی عَبْدِ ہو مَا اَوْ حی میں وونوں خمیری التدتعالی کی طرف راجع ہیں ، جوعبارت کے ظم و نسق کے خلاف ہے اور اس سے اختشار مرجع بھی لازم آتا ہے ، اس کا جواب حضرت مولانا سیدانور شاہ صاحب نے بیدیا ہے۔

جَجُولُ بُنِيَ نہ يبال ُظُم كلام يس كوئى اختلال ہا ورندائنتار ضائر، بلك حقيقت بيہ كسورة جُم كى شروع آيت بيس إن هُو الآو ف بر وَحَى يُنْهُ وَخَى كاؤكر فرماكر جس مضمون كى ابتداء كى كئى ہاىت منضبط بيان اس طرح كيا گيا ہے كہ وحى يقيخ والاتو ف بر ہے كہ اللہ تعالى كے سواكوئى نبيس مگراس وحى كے پنجائے بيس ايك واسط جرئيل كا تعاچند آيات بيس اس واسطى پورى طرح تو ثيق كرنے كے بعد پھر أو حنى إلى عَبْدِهِ مَا أو حنى فرمايا بيابتدائى كلام كا تحمله ہے، اوراس بيس انتظار ضميراس لئے نبيس كہ سكت كرنے كے بعد پھر أو حنى إلى عَبْدِهِ مَا أو حنى فرمايا بيابتدائى كلام كا تحمله ہے، اوراس بيس انتظار ضميراس لئے نبيس كہ سكت كه أو حنى اور عَبْدِه كي ميرجع بيلے ہے متعين ہے اور مَا أوْ حنى بيس مُوحى به كؤم ہم ركھ كراس كي عظمت شان كي طرف اشاره ہے۔

عِلْدَهَا جَلَّهُ الْمَاوِى اسے جنت الماویٰ اس لئے کہتے ہیں کہ حضرت آ دم عَلَیْ اَلْاَفَالِیُّا کَا ماویٰ وَمسکن یہی تھا، بعض کہتے نہیں کہ ، وی اس لئے کہتے ہیں کہ یہاں روحیں آ کرجمع ہوتی ہیں۔

اِذْ یعنسی المسِّدرةَ مَا یَغْشُی بیدسدرة المنتهای کی اس کیفیت کابیان ہے کہ جب شب معراج میں آپ فیلائیکٹانے اس کا مشاہدہ فر مایا تھا، اور رب کی تجابیات کا مظہر اس کا مشاہدہ فر مایا تھا، اور رب کی تجابیات کا مظہر بھی وہی ورخت تھا (ابن کثیر) اس جگد آپ فیلائٹٹا کو تین چیزوں سے نوازا گیا، پانچ وقت کی نمازیں، سورہ بقرہ کی آخری آیات اور ان مسلمانوں کی مغفرت کا وعدہ جو شرک کی آلود گیوں سے پاک ہوں گا۔ (صحیح مسلم کتاب الاہمان)

اَفَورَابَدُسُمُ اللَّاتَ وَالمُعُزِّى اس مِشركِين كَوْتَحْ مقصود ہے بايں طور كداول الله تعالى كى عظمت شان كابيان ہے كدوه جريمل جيسے ظليم فرشتے كا خالق ہے اور محمد بلائين جيسے اس كے رسول جيں جنهيں اس نے آسانوں پر بلا كر برى برى شديوں كا مشاہد دكراي ،اوران پر وحى بھى تازل فرما تا ہے ،كياتم جن معبودوں كى عيادت كرتے ہوان كے الدر بھى يہ ياس تسم كى خوبياں بيں؟ اس ضمن ميں عرب كے بين بنوں كا لبطور مثال ذكر كيا ،ايك ان ميں ہے الات ہے ، يہ لَتَّ يَلِتُ ہے اسم فو على ہے ،اس كے معن بيں گھو لئے والا ، گوند بھنے والا ، يہ ايك نيك شخص تھا جو جے كے موسم ميں حاجيوں كوستو گھولكر پلايا كرتا تھا ، جب اسكا انتقال ہو گيا تو لوگوں نے اس كى قبر كى بوجا شروع كردى ، يہ طائف ميں بى تقيف كا سب لوگوں نے اس كى قبر كى بوجا شروع كردى ، يہ طائف ميں بى تقيف كا سب سے بردابت تھا ،عزی ، بعض نے كہا كہ بيا يك ورخت تھا جس كى بوجا كى جاتى تھى ، بعض كہتے ہيں كہ بيا يك جنيہ (بھوتى) تھى جو بعض درختوں ميں ظاہر ہوتى تھى ، بعض كہتے ہيں كہ بيا يك ورخت تھا ، بين كانه كا خاص ديوتا بعض درختوں ميں ظاہر ہوتى تھى ، بعض كہتے ہيں كہ بيا يك سنگ ابيش تھا جے لوگ بوجے تھے ، يةر يش اور بى كانه كا خاص ديوتا بعض درختوں ميں ظاہر ہوتى تھى ، بعض كيتے ہيں كہ بيا يك سنگ ابيش تھا جے لوگ بوجے تھے ، يةر يش اور بى كانه كا خاص ديوتا

شہ: آپ یکن اللہ کو اللہ کو اللہ کو اللہ ہو ہیں مشورہ کا تھم دیا گیا ہے جس کا مقتضی جواز اصلاح ور میم ہے ای طرح البارہ خر ما (یعن نر مجبور کے شکو فیکو مادہ مجبور ہیں ڈالنا، جس کو تا ہیر کرنا کہتے ہیں) کا تفاضہ بھی ہے ہے کہ آپ کا ہم قول وہی نہیں ہوتا تھا، یعن صحابہ کرام اپنے مجبور کے درختوں ہیں ممل تا ہیر کیا کرتے تھے آپ نے ایک روز اس ممل کے بارے ہیں دریافت فرمایا، صحابہ نے عرض کیا اس طریقہ سے پھل خوب آتا ہے، آپ نے فرمایا کہ اس کو چھوڑ دوتو بہتر ہے، چنانچ صحابہ نے عمل تا ہیر ترک کردیا مگراس سال پھل کم آئے ، صحابہ نے آپ بھی تھا ہے اس صورت حال کا تذکرہ کیا تو آپ بھی تھا گئے فرمایا إنسه آنا بَشَو الله و اذا اَمَو تُکھُ مِیشَیٰ وِ مِنْ رَای فَاِنَّمَا اَنَا بَشُو (رواہ سلم، مشکوٰ ہو می ایک ایک دوسری روایت ہیں ہے آپ نے ارشاد فرمایا ' جو مجھے چرب زبانی سے مغالط دیکر فیصلہ کرالے گا قیامت ہیں اس کا وبال اس کے سر بوگا ، ای طرح آپ بھی تھا سے خطاء اجتہادی کا صدور ہوتا تھا، خدکورہ تمام امورکا مقتصی ہے کہ آپ کے جمیع دبال اس کے سر بوگا ، اس طرح آپ بھی ہے کہ آپ کے بھی جاتے ہے کہ آپ کے بھی اس کا ارشادا ہوتی نہوں ، اس لئے کہ دوئی المی ہر تھ سے یا کہ ہوتی ہے۔

دفع: ارشادات نبوی کی چارتشمیں ہیں () ازواج واطفال کے ساتھ مزاح () معاملات (تجویز و تدبیر کا متبلغ احکام من جانب اللہ فتم رائع تو قطعاوی ہے، باتی اقسام ثلثہ بھی لغود باطل و ہوائے نفس سے پاک اور بری ہیں، جسیا کہ آپ ﷺ احکام من جانب اللہ فتم عورت سے مزاحاً فرمایا" جنت میں بوڑھی عورتیں نہ جا کمیں گی' مطلب بیتھا کہ جوان ہوکر داخل جنت ہوں گی، ان معاملات میں بھی بھی رائے وقیاس کا صائب نہ ہونا، جسیا کہ صدیرے فرما میں گذرایا تبحویز و تدبیر میں خطائے جنت ہوں گی، ان معاملات میں بھی بھی رائے وقیاس کا صائب نہ ہونا، جسیا کہ صدیرے فرما میں گذرایا تبحویز و تدبیر میں خطائے

ح (عَزَم بِبَالقَدِ

اجتہادی کا ہونا ہیںا کہ بدر کے قید یوں کے بارے میں ہوا، بینہ غیر حق ہےاور نہ ہوائے نفس لہٰذاا حادیث میں کوئی تعارض نہیں، ربی آیت ، و ما ینطِق عن الهوی مخصوص بان کلمات اورار شادات سے جواموردین سے مول۔ مَسْتُ لَكُمْنَ اللهِ السَّالِيَةِ اللهِ عَلَى مُوكِهِ مُن سَمِعْصُوم بِن جيها كه عدم خدايت مطلقه سے ظاہر ہے۔ (خلاصة التعاسير) عَلَّمَهُ شَدِيْدُ القُواى.

بحث: شدید القوی سے اکثر مغسرین کے نزویک حضرت جرئیل امین مراد ہیں۔

· شبیه: اس سے شبدلازم آتا ہے کہ جبرئیل آپ بلانظائیا کے علم اوراستاذ ہوں ،اور آپ بلانظائیا متعلم اور شاگر دہوں۔

و قع : حضرت جبرئیل ہین مبلغ تنھے نہ کہاستاذ ومعلم اور فرق ان دونوں میں بیہے ① معلم میں علم مقصود بالذات ہوتا ہے، اور مبلغ میں مقصود بالغیر 🏵 معلم علم سے فائدہ اٹھانے کی مستقل صلاحیت رکھتا ہے اور مبلغ واسطہ اور ناقل ہوتا ہے اس معلم میں علم قائم ہوکر معلم کی طرف منعکس ہوتا ہے اوراس علم کاظل اور مثل معلم میں آجا تا ہے جیسے چراغ کا نور دوسرے چراغ میں ،اورمبلغ میں مقصود انتقال نبین ہوتا ہے اور مبلغ واسطہ جیسے حرارت آئٹی شخیشے ہے پس مبلغ میں اثر رہ سكتا ہے جیسے معلم میں اثر جاسكتا ہے اور معلم میں بین باقی رہتا ہے جس طرح كے مبلغ اليد میں میں قائم ہوتا ہے 🍘 معلم معطی علم ہےاور مبلغ مؤ دی امانت، پس انہی وجوہ ہے معلم کو حتعلم پرشرف وفضل حاصل ہے مبلغ کونہیں ،ای لئے جبرئیل '' رسول امین'' قرار پائے ہیں، گوامین خود قابض اور واسطهٔ قبض صاحب امانت ہو گھر خادم و مامور ہے نہ کہ عظی و مالک، ملا تكه ذرائع موت بي اورانبياء مقاصد وعلاصه النغاسير ملعصا)

أَلَكُ مُراللَّا كُورُ وَلَهُ الْأَنْفِي تِلْكَ إِذًا قِيسَمَةٌ ضِيْزِي مشركين مكه فرشتوں اور مذكوره ديويوں كوالله كى بيٹياں قرار ویتے تھے، بیاس کی تروید ہے، طِیڈزی صَوْرْ یاضیز سے شتق ہے جس کے معی ظلم کرنے اور حق تلفی کرنے نیز جارہ کو ت ہے شنے کے ہیں، ابن عب س تفکیل تفکال عن کے ضیب زای کے معنی طالمان تقلیم کے کئے ہیں،مطلب یہ ہے کہ اناث جن کوتم ٹا پہند کرتے اور حقیر شجھتے ہوان کی نسبت اللہ کی طرف کرتے ہواور ذکور جن کوتم پہند کرتے ہوا ہے حصہ میں رکھتے ہو، یہ ظ لمانداور غير منصفان تقسيم ہے۔

إنْ هِلَى إلّا أَسْمَاءٌ سَمَّيْتُمُوْهَا النح يعنى جن كوتم ديوى ديوتا كيت بواورجن كي تم يوجايات كرت بواورجن ك کئے تم خدائی صفات اورا نقتیارات ٹایت کرتے ہواورتم نے اورتمہارے آباء نے بطورخودان کوخدا کی اولا داور خدائی میں شریک مان کرنام رکھ لئے ان کی حقیقت کچھنہیں ہے اور نہ خدا کی طرف سے کوئی ایسی سند آئی کہ جسے تم اپنے ان مفروضات کے ثبوت میں پیش کرسکو، اور بیسب پچھاس وجہ ہے ہے کہتم اپنی خواہشات نفس کی پیروی اختیار کئے ہوئے ہو، حالا نکہ ہرز مانہ میں اللہ تعالیٰ کے پینمبران گمراہ لوگوں کو حقیقت حال ہے آگاہ کرتے رہے ہیں اور اب اللہ کے آخری نبی محمد التفاقية الناحة كربتاديا بكركائنات مين خدائي كس كى باور حقيقى معبودكون ب؟ وَكُمْضِنَ مَّلَاتِ اى كَثِير مِنَ المَلائِكَةِ فِي السَّمَالِي وَمَا أَكُونَهُمْ عِنْدَاللَّهِ لَاتُّغَنِي شَفَاعَتُهُمُ مَشَيْعًا إِلَّا مِنْ بَعْدِ أَنْ يَّأَذَنَ اللَّهُ لهم فيها لِمَنْ يَشَأَءُ مِنْ عِناده وَيُرْضَى عنه لِقُولِه ولا يشْفعون الَّا لِمن ارْتَضي ومَعُلُومٌ أنّها لا تُنوَحدُ مسهم الانغد الإدر فيها من دا الدي بشنه عنده الابادن إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْاخِرَةِ لَيُسَمُّونَ الْمَلَّلِكَةُ تَشْنِيَةَ الْأُنْتَى حيثُ قَالُوا هُمُ بَنَاتُ اللّهِ وَمَالَهُمْ عِنْ يهدا المنور مِنْ عِلْمِرْ إِنْ ما يَشَعِونَ فيه إلّالظّنّ الدى تخيُّدوه وَإِنَّ الظُّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيًّا أَنَّ اي عن العلم فيما المطلوب فيه العِلمُ فَأَعْرِضُ عَنْ مَّنْ تُولِّي عَنْ ذِكْرِنَا اى التَّران وَلَمْ مُرِدِ الْآالْحَيْوةَ الدُّنْيَا ﴿ وهدا قبل المراحيه ذَلِكَ اى طنب الدُنيا مَبْلَغُهُمْ مِنَ الْعِلْمِر رَأَ اى سِايةُ علمهمُ أَنْ النُرُوا الدُّبِ على الاحرة إلنَّرَتَكِ هُوَاعُلَمُ بِمِنْ ضَلَّعَنْ سَبِيلِهُ وَهُوَاعُلَمُ بِمِن اهْتَلَى ال عَالَمٌ بِهِمَ فَيُحَارِيهِمَا وَيِلْهِمَالِقِ المُوْتِوَمَافِي الْأَرْضِ اي هو ساك لديث ومنه الطَّالُ والمُهْتَدِي يُضِلُّ مَنْ يَّشاءُ ويَهْدِيْ مَنْ يُشاءُ لِيَجُرِيَ الَّذِيْنَ اَسَاءُوا يَمَاعَلُوا سِ الشَرِكِ وعيرِه وَيَجْزِيَ الَّذِيْنُ اَحْسُنُوا عالتَوحيد وغيره سن الطَّاعات بِالْحُسُمٰيُ اي الحَبَّة ونتِيَ المُخسسينَ بِنولِه ٱلَّذِينَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبِّيرًا لِاِتُّعِروَالْفَوَاحِشَ إِلَّااللَّمَمُ هُو صِعارُ الدُّنُوبِ كَالنَّظُرةِ والقُبْلة واللَّمْسةِ فَهُو اسْتَثَنَّهُ مُنْقَطَّعٌ والمغنى لكن اللَّممَ تُعُفرُ باختِنَابِ الكَّبَائِر لِنَّرَيَّكُ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ بِذَلِك وَمِفْبُولِ التَّونَةِ وَنَرَلَ فَيَمَنَ كَانَ يَتُولُ صلائنا صيَاسًا حَجُنا **هُوَأَعْلَمُ** اي عَالِمٌ لَكُمُ إِذْ أَنْشَأَكُمُ مِنْ الْأَرْضِ اى خدى السَّارِ السَّارِ السَّرِ السَّرِ السَّرِ السَّرِيَّةُ الْمَالُمُ مَا السَّرِ السَّارِ السَّرِيِّةُ الْمُعَالِّمُ السَّرِيِّةُ السَّارِ السَّرِيِّةُ السَّارِيِّةُ السَّارِيِّةِ السَّامِيِّةِ السَّامِيِيِّةُ السَّامِيِّةُ السَّامِيِّةُ السَّامِيِّةُ السَّامِ فَلَاتُزَكُّوُا أَنْفُسَكُمْ لاتمدحُوهَا اي على سين الاغحاب اسّاعني سبيل الإغتراف بالنِّعُمَة فحسَنّ يَ هُوَاعَلُمُ اى عَالِمٌ بِمَنِ اتَّقَى ﴿

ترکومی ان کی شفاعت پجھ فاکدہ نہ دے گر بعداس کے کہ اللہ ان کوشفاعت کی اجازت عطافر مادے اپنے بندوں ہیں ای پھربھی ان کی شفاعت پجھ فاکدہ نہ دے گر بعداس کے کہ اللہ ان کوشفاعت کی اجازت عطافر مادے اپنے بندوں میں ہے جس کے لئے چاہاور، اس ہے راضی ہو (اللہ تعالی کے تول) وَ لَا يَشْفَعُونَ اِلَّا لِمَنِ ارْتضٰ کی وجہ ہے، اور یہ بات معلوم ہی ہے کہ فرشتوں کی شفاعت کا وجود شفاعت کی اجازت نے بعد ہی ہوگا، س کی مجال کہ اس کے حضوراس کی اجازت کے بعد ہی ہوگا، س کی مجال کہ اس کے حضوراس کی اجازت کے بغیر شفاعت کرے؟ بلا شہدہ اور ہو شفاعت کی اجازت کے بعد ہی ہوگا، س کی مجال کہ اس کے حضوراس کی اجازت کے بغیر شفاعت کرے؟ بلا شہدہ اور ہو شفاعت کی بیٹیاں جیس حالانکہ ان کو اس مقولہ کے بارے بیٹی چھم تھا ہمیں ہے، اور کہ اس کو اس مقولہ کے بارے بیٹی کہا کہ وہ انہوں نے کرلیا ہے اور یقینا طن علم کی جگہ پچھ بھی فاکدہ نہیں دے سکتا، وہ اس تحق ہیں بالے مطلوب ہو وہاں طن ہے کا منہیں چل سکتا، تو آپ بھی اس شخص سے توجہ بٹا لیجئے جس نے ہمارے ذکر یعنی وی اس سے توجہ بٹا لیجئے جس نے ہمارے ذکر یعنی قرآن سے رخ پھرلیا اور اس کا مقصد محض و نیوی زندگی ہی ہے اور یو کہا دکھ مے پہلے کا ہے، اور یہ یعنی و نیا طلی قرآن سے رخ پھرلیا اور اس کا مقصد محض و نیوی زندگی ہی ہو اور یو کا میاد کے تھم سے پہلے کا ہے، اور یہ یعنی و نیا طلی قرآن سے رخ پھرلیا اور اس کا مقصد محض و نیوی زندگی ہی ہو اور یو کھرا کے تو اور یہ کی ہماد کے تھم سے پہلے کا ہے، اور یہ لیکنی و نیا طلی قرآن سے رخ پھرلیا اور اس کا مقصد محض و نیوی زندگی ہی ہو اور یو کھرا کے تو میں کی ہو اور یہ کھرا کے تو کہ کی ہو کہ کہ اس محصولہ کی ہو کہ کو کھرا کے تو کہ کر بیاد کے تھم سے پہلے کا ہے، اور یہ کینی و نیا طلی کو کھرا کے اس کے توجہ بٹا لیجئی کو کھرا کی اس محصولہ کی کھرا کے اور یہ کینی و نیا طلی کی دیا طلی کینی و نیا طلی کے تو کہ کینی و نیا طلی کی کھرا کی اس محصولہ کی کھرا کے تو کہ کی کی کھرا کے تو کہ کی کر کیا ہو کہ کو کھرا کی کو کھرا کے تو کھرا کی کو کھرا کی کی کو کھرا کے کو کھرا کی کو کھرا کے کو کھرا کی کھرا کی کو کھرا کی کھرا کی کو کھرا کے کھرا کی کو کھرا کی کو کھرا کی کو کھرا کی کھرا کی کو کھرا کی کھرا کی کو کھر

ان کامنتہائے علم ہے بعنی ان کے علم کی آخری منزل ہی ہے کہ دنیا کو آخرت پر آجے دیں بلاشہ آپ کا پروردگاراس کو خوب بات ہے جواس کے راستہ ہے بعثک گیا اور اس ہے بھی بخو فی واقف ہے جس نے راہ ہدایت افتیار کی لیمنی ان دونوں ہے واقف ہے جس نے راہ ہدایت افتیار کی لیمنی ان دونوں ہو تا ہے جوان کہ دونوں کو جزانا وونوں کو جا اور آسانو کی ملک ہے لیمنی میں تھر کہ وہا ہور اور اور اور آسانوں کی اور ان لوگوں کو جنت کا صلہ دے جنہوں نے تو حیدوط عت وغیرہ کے ذر لید نیمنی کر اور وافی اور نیمنی کی اور ان لوگوں کو جنت کا صلہ دے جنہوں نے تو حیدوط عت وغیرہ کے ذر لید نیک اعلی کئی اور ان لوگوں کو جنت کا صلہ دے جنہوں نے تو حیدوط عت وغیرہ کے ذر لید نیک اعلی کے اور بیان فر ایا اپنے تول الگذید من کے جنہ نیک اور ان کے کر در بید نیکو کار دول کو ارکار کی وہ کو جنو کی ہو ہوئے گئا ہوں کے مرتکب ہوجاتے ہیں اور کہتے ہیں جیسا کہ ایک نظر دیکے لیمنا ، اور ایک بور سے کہتا ہوں کو کہتے ہیں جیسا کہ ایک نظر دیکے لیمنا ، اور ایک بور سے میں باز ان ہوئی جو خوض اسٹنا عنقطی ہے اور معنی ہے ہیں باز ہو کہ کو کو بیا ماور ایک ہوئے کا اس کے ذر لید اور تو بہوں کی جنوب عالی کے ذر لید اور تو بہوں کو کہتے ہیں جیسا کہ ایک فوجہ ہو بیا تھا ہماری نماز ، ہمار سے دور نے ، ہمارائ کے حالا تکہ دوئم کو خوب جانتا ہے جب کہ اس نے تو کو کو تھیں کہتے ہیں جیدا کہ کہ کو خوب جانتا ہے جب کہ اس نے تو کو کو تھیں کہتے ہیں جیدا کہا جب کہ اور کیا تھا ہماری نماز ، ہمار سے دور نے ، ہمارائ کے جیٹ ہیں جنیان کی وہ جب کہ اس نے تم کو کو توب جانتا ہے جب کہ اس نے تم کو کو توب جانتا ہے جب کہ اس نے تم کو کو توب جانتا ہے جب کہ اس نے تم کو کو توب جانتا ہے جب کہ اس نے تم کو کو توب جانتا ہے جب کہ اس نے تم کو کو کو توب جانتا ہے جب کہ اس نے تم کو کو توب جانتا ہے جب کہ اس نے تم کو کو کو توب جانتا ہے جب کہ اس نے تم کو کو کو توب جانتا ہے جب کہ اس نے تم کو کو کو توب جانتا ہے ۔

عَجِقِيق تَزَكِيكِ لِيَسَهُ الْحِقَالِينَ الْعَالَمَ الْعَلَيْ الْعَلَيْ الْعَلَيْ الْعَلَيْ الْعَلَيْ الْعَلَيْ الْعَلَيْ الْعِلْ الْعَلَيْ الْعِلْ الْعَلَيْ الْعِلْ الْعَلَيْ الْعِلْ الْعَلَيْ الْعِلْ الْعَلَيْ الْعَلَيْ الْعَلَيْ الْعَلَيْ الْعَلَيْ الْعَلَيْ الْعَلِيمُ الْعَلِيدُ الْعَلَيْ الْعَلَيْ الْعَلَيْ الْعَلَيْ الْعَلِيمُ الْعَلِيدُ الْعَلِيدُ الْعَلِيدُ الْعَلَيْ الْعَلَيْ الْعَلَيْ الْعِلْ الْعَلِيدُ الْعِلْ الْعَلِيدُ الْعَلِيمُ الْعِيلِيْ الْعَلَيْ الْعِلْمُ الْعِلْمُ الْعَلَيْلِي الْعَلَيْلِ الْعِلْمُ الْعَلِيدُ الْعَلِيدُ الْعَلِيدُ الْعِلْمُ الْعَلَيْمُ الْعَلِيدُ الْعَلِيدُ الْعِلْمُ لِلْعُلِمِلْمُ الْعِلْمُ لِلْعُلْمِ لِلْعُلْمِ الْعِلْمُ لِلْعِلْمُ الْعِلْ

قِيْوُلْكَى ؛ اى عن العلمر اس عبارت سے مقسر علام نے اشارہ كرديا كه مِنْ جمعىٰ عن ہے اور تق جمعىٰ علم ہے۔ قِيْوُلْكَى ؛ ومنه الضال و المه تدى النج اس عبارت كاضافه كافا كدہ ايك وال مقدر كا جواب ہے ، سوال بدہ كه آسانوں اور زمين و مافيه ما كى ملكيت اللہ تعالى كے لئے بالذات ثابت ہے اور جو چيز بالذات ثابت ہوتی ہے وہ چيز معلول بالعلة نہيں ہوتی ، حالا نكہ لِيَجْزِى الَّذِيْنَ الْنح كوملكِ سموات و الارض كى علت قرار ديا گيا ہے۔

جَجُولُ بَيْءَ جواب كا عاصل يہ ہے كہ لميجزى اصلال وہدايت كى تعليل ہے جوكہ ملك السماوات والارض و مافيه ما ميں شامل ہے، لہذا تقدير عبارت يہ ہے ئين شامل ہے، لہذا تقدير عبارت يہ ہے ئين فيارت كي اور يہ ہى تيج ہے كہلام عاقبت كا ہو، مطلب يہ كہ خليق كا تنات اس لئے ہے كہ گلوق ميں محن ہم موں كے اور مسى بھى ، يعنى نيكوكار ہمى ہوں كے اور بدكار بھى ، نيكوكاروں كو جزاء حسن دے اور مدكار وہ مادوں كو جزاء حسن دے اور مدكار وہ كا در مدكار ہمى ، نيكوكار وہ كا در مدكار ہمى ، نيكوكار وں كو جزاء حسن دے اور مدكار وہ كا در مدكار ہمى ، نيكوكار وہ كا در مدكار ہمى ، نيكوكار وں كو جزاء حسن دے اور مدكار وہ كا در مدكار ہمى ، نيكوكار وہ كا در مدكار وہ كا در وہ كا در مدكار وہ كا در مدكار وہ كا در مدكار وہ كار وہ

چَوُلْکُ، اَلَّذِیْنَ یَجْتَنِبُونَ النح یہ الَّذِین اَحْسَنُوْ اے بدل ہے یاعطف بیان ہے یا نعت ہے یا اعنی محذوف کا مفعول ہے یا مبتدا ومحذوف کی خبر ہے ای همر الَّذِیْنَ.

فَحُولِ ﴿ اللَّمْمَ حَبُونُ لِنَاهُ لَمُمُ كُونُ وَ الْعَالَاء اللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللّهُ الللّهُ

<u>ێٙڣٚؠؙڔۅؖؾٚۺۘؠؙ</u>

و تکے رہاں مکلٹ فی السمواتِ لَا تُغْنَی شَفَاعَتُهُمْ شَیْلًا لِین فرشے اپنی کش ت اور عندالقد مقرب ترین مخلوق ہونے کے باوجود شفاعت کا اختیار نہیں رکھے ان کو بھی شفاعت کا حق صرف آئیں لوگوں کے لئے ملے گاجن کے لئے اللہ پند کرے گا، جب بیہ بات ہے تو پھر بیا یہ نٹی مور تیاں اور بتاؤٹی معبود کس طرح کسی کی سفارش کر سکیں گے؟ جس ہے تم آس لگائے بیٹھے ہو، نیز اللہ تعالی مشرکوں کے حق بیس کسی کی سفارش کرنے کا حق کیے وے گا؟ جبکہ شرک اس کے نزیک نا قابل معافی جرم ہے؟

إِنَّ اللَّذِيْنَ لَا يُومِنُونَ بِالآخِرَةِ الخ لِين ايكهافت توان كي يهه كهانهول في باختيار فرشتول كوجو بغيرا جازت

— ﴿ [زَمَزَمُ مِنَاشَدُ أَ≥ -

سفارش کرنے کا اختیار نہیں رکھتے معبود بنالیا ہے، اس پر مزید حمافت ہے کہ وہ انہیں عورت بیھتے ہیں اور انہیں خداکی بیٹی ل قرار دیتے ہیں، ان ساری جہالتوں میں ان کے مبتلا ہونے کی بنیا دی وجہ ہے ہے کہ وہ آخرت کونہیں مانتے اور ملائکہ کے متعلق انہوں نے بیعقیدہ کچھال بناء پر اختیار نہیں کیا ہے کہ انہیں کسی ذرایع علم سے بیمعلوم ہوگیا ہے کہ وہ عور تیں ہیں اور خداکی بیٹی ل ہیں، بلکہ انہوں نے محض اپنے قیاس و گمان سے ایک بات فرض کرلی ہے، حالانکہ بیاصول اور عقیدہ کا مسئلہ ہے اس میں تو علم قطعی کی ضرورت ہوتی ہے، گمان غالب مسائل فرعیہ عملیہ میں تو کام آسکتا ہے نہ کہ مسائل اعتقادیہ ہیں۔

فَاعْدِ صُ عَنْ مَنْ تَو لَى النع لِين اليهاوگول كے تمجھانے پراپنا قيمتی وفت صرف نه سيجے كہ جوالي كسى دعوت كوقبول كرنے كے لئے تيار نه بول جس كى بنياد خدا پرتی پر بواور جود نيا كے مادى فائدول سے بلندتر مقاصدا وراقد اركى طرف بلاتى ہو،اس تسم كے مادہ پرست اور خدا بیزار انسان پراپنی محنت صرف كرنے كے بجائے توجہ ان لوگوں كی طرف سيجے جو خدا كا ذكر سننے كے لئے تيار بول اور دنيا پرست كے مرض ميں مبتلانہ ہول، بيلوگ دنيا اور اس كے فوائد ہے آگے نہ كچھ جانے ہيں اور نہ سوچ سكتے ہيں،اس لئے ان پر محنت صرف كرنا لا حاصل ہے۔

اِنَّ رَبَّكَ هُو َ اَعْسَلَمُ بِمَنْ صَلَّ عَنْ سَبِيْلِهُ وَهُو اَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدَىٰ بِهِا وَالْ کَا اللہ ہے، اورای کو بیمعلوم ہے کہ دنیا کے لوگ جن مختلف ہوایت ہونے کا فیصلہ تو اللہ کے راہ کوئی جائے ہیں ہے وہی زمین وآسان کا مالک ہے، اورای کو بیمعلوم ہے کہ دنیا کے لوگ جن مختلف راہوں پرچل رہے جیں ان میں سے ہدایت کی راہ کوئی ہے؟ اور صلالت کی راہ کوئی؟ لہٰذاتم اس بات کی کوئی پرواہ نہ کرو کہ بیہ مشرکین عرب اور بیک ورکہ آپ کو بہکا اور بھٹکا ہوا آ دمی قرار و رہے جیں، اورا پی جالمیت ہی کوئی وہدایت بھورہ جیں بیا گر ایس میں میں رہنا جا ہے جی تو رہان ہے بحث و تکرار میں وقت ضائع کرنے اور سرکھیانے کی کوئی ضرورت نہیں۔ اور لینے خرار میں وقت ضائع کرنے اور سرکھیانے کی کوئی ضرورت نہیں۔ و کِلْیْ مِافِی السَمواتِ وَ مَافِی الکَرْضِ مِی جَمَدُ مُحْرِور لِیکِ خِیْدِی کا تعلق ما قبل سے ہے۔

الگذین یکجتنبلون تکبانو الإثیروالفواجش إلا اللّه مر است من و محسنین بینی او پر مدح فرمالی گ ہے کی علامت اور شاخت بتائی گئی ہے کہ دور ہے اور شاخت بتائی گئی ہے کہ دو کہیرہ گنا ہوں سے عموماً اجتناب کرتے ہیں اور فخش و بے حیائی کے کاموں سے بالخصوص دور ہے ہیں است میں ایک است ایک است مولا ہے بالخصوص دور ہے ہیں اس میں ایک است ایک است میں ایک است کے است کا جو خطاب میں کہان حضرات کو محسن (نیکوکار) ہونے کا جو خطاب دیا گیا ہے ، لَهُ مَّر مِیں ابتلاءان کواس خطاب سے محروم نہیں کرتا۔

لَمَمْ کَانشری میں جاورتا بعین کے دو تول منقول ہیں، ایک یہ کہ اس سے مراو صغیرہ گناہ ہیں جن کوسورہ نساء کی آیت میں سیئات سے تعبیر فرمایا گیا ہے اِنْ قد جُفَ نِبُوا کَبَائِو مَاتُنْهُونَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّمَاتِكُمْ بِيْوَلَ حَسْرت ابن عباس اور ابو سیئات سے تعبیر فرمایا گیا ہے ، دوسرا قول میہ ہے کہ اس سے وہ گناہ مراد ہے جوانسان سے اتفاقی طور پر سرز دہوگی ہو چھراس سے قبہ کرلی ہواور پھراس کے قریب بھی نہ گیا ہو یہ قول بھی ابن کثیر نے بروایت ابن جر برمختلف واسطول سے قبل کی ہے اس کا حاصل بھی یہی ہے کہ اگر کسی تیک آدمی سے بھی اتفاقاً کبیرہ گناہ سرز دہوجائے اور اس نے تو بہ کرلی تو بہ خوس بھی صرفحی ہیں ہے کہ اگر کسی تیک آدمی سے بھی اتفاقاً کبیرہ گناہ سرز دہوجائے اور اس نے تو بہ کرلی تو بہ خوس بھی صرفحی اور تی سے کہ اگر کسی تیک آدمی سے بھی ان کی ایک آیت میں یہی مضمون بہت صراحت کے ساتھ آبی ہے ،

حضرت عبدالقد بن مسعوداورمسروق اورشعمی فرماتے ہیں اور حضرت ابو ہریرہ اور عبدالقد بن عباس ہے بھی معتبر روایات میں یہ قول منقول ہوا ہے کداس سے مراد آ دمی کا کسی ہڑے گناہ کے قریب تک بہنچ جانا اور اس کے ابتدائی مراحل تک طے کر گذرنا گر آخری مرحلہ میں پہنچ کررک جانا ہے مثلاً کوئی شخص چوری کرنے کے لئے جائے گر چوری سے باز رہے یا اجنبیہ سے اختلاط کرے مجرزنا کا اقدام نہ کرے۔

حضرت عبداللہ بن زبیرعکرمہ، قتادہ اورضحاک کہتے ہیں کہ ان سے مراد حجووٹے حجووٹے گن ہیں جن کے لئے و نیا میں بھی کوئی سز امقررنہیں کی گئی ہے،اور آخرت میں بھی جن پرکوئی عذاب کی وعیدنہیں فر ، ئی گئی ہے۔

حضرت سعید بن مستب رَخِمُنُلُاللهٔ مُعَالنَ فر استے ہیں کہ السَصْرِ سے مرادول ہیں گناہ کا خیال آنا مگرعملا اس کاار تکاب نہ کرنا اللہ حضرات سعید بن مستب رَخِمُنُلاللهُ مُعَالنَ فر استے ہیں ، جوروایات ہیں منقول ہوئی ہیں ، بعد کے مفسرین إورائمہ وفقہا ای حضرات صحابہ اور تابعین سے السَسَصْرُ کی مختلف تفسیری ہیں ، جوروایات ہیں منقول ہوئی ہیں ، بعد کے مفسرین إورائمہ وفقہا ایک اکثریت اس بات کی قائل ہے کہ بید آیت اور سور ہوئی آیت اسا صاف طور پر گن ہوں کو دو بردی اقسام پرتقسیم کرتی ہیں ، ایک کہائر اور دومر سے صغائر ، اور بید دونوں آیتیں انسان کو امید دلاتی ہیں کہائر وہ کہائر اور فواحش سے پر بیز کر ہے تو القد تعالیٰ صغائر سے درگذر فرمائے گا ، امام غزالی رَحِمُنُلاللهُ مُعَالنَ نَے فرمایا کہ کہائر اور صغائر کا فرق ایک ایس چیز ہے جس سے انکارنہیں کیا جاسکتا۔

صغيره وكبيره كناه مين فرق:

اب رہا ہیں وال کے صغیرہ اور کمیرہ گناہ میں فرق کیا ہے؟ اور کس قسم کا گناہ صغیرہ اور کسی قسم کا گناہ کمیرہ ہے تو اس میں واضح اور صاف بات رہے کہ ہروہ فعل گناہ کمیرہ ہے جے کتاب وسنت کی کسی نص صریح نے حرام قرار دیا ہے یا اس کے لئے القداوراس کے رسول نے و نیا میں کوئی سزامقر رفرہائی ہو، یا اس پر آخرت میں عذاب کی وعید سنائی ہو یا اس کے مرتکب پرلعنت ہو، یا اس کے رسول کے مرتکب پرلعنت ہو، یا اس کے رسول کے خبر دی ہو، اس نوعیت کے گناہوں کے ماسوا جتنے افعال بھی شریعت کی نگاہ میں تا پسند بدہ ہیں وہ سب صفائر کی تعریف میں آتے ہیں، اس طرح کمیرہ کی محض خواہش یا اس کا ارادہ بھی کمیرہ نہیں، بلکہ صغیرہ ہے، حتی کہ کسی ہوئے گناہ صغیرہ کے ابتدائی مراصل طے کرجانا بھی اس وقت تک گناہ کمیرہ نہیں ہے، جب تک آ دمی اس کا ارتکاب نہ کر گذر ہے، البتہ گناہ صغیرہ بھی الیں حالت میں کمیرہ ہوجا تا ہے، جب وہ دین کے استخفاف اور اللہ کے مقابلہ میں اعتکب رکے جذبہ سے کیا جائے۔

اِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغُفِرَةِ مطلب بیہ کہ صغائر کامعاف کردیا جانا ، کچھال وجہ سے نہیں کہ صغیرہ گناہ نہیں ہے بلکہ اس کی وجہ بیہ ہے کہ اللہ اس کی اختیار کریں اور کہائر ونواحش سے اجتناب کرتے رہیں تو وہ ان کی چھوٹی چھوٹی ہاتوں پر گرفت ندفر مائے گا ، اور اپنی رحمت بے بایاں کی وجہ ہے ان کوویے ہی معاف کردے گا۔

اس کے کہ وہ لوگوں کی نظروں سے مستور ہوتا ہے، ' جیم نون نون' کے مادہ میں سر وخفا کے متی لازم ہیں ، مطلب یہ ہے کہ جب اس سے تہاری کوئی کیفیت وحالت و حرکت تخفی نیس حق کہ جبتی صلب پدراور رحم مادر میں تھے جہاں کوئی دیکھنے پر قادر نہیں تھا وہ وہاں بھی تہاری کوئی کیفیت وحالت و حرکت تخفی نیس حق کہ جبتی صلب پدراور رحم مادر میں تھے جہاں کوئی دیکھنے پر قادر نہیں تھا وہ وہاں بھی تہارے تمام احوال و کیفیات سے واقف تھا تو پھرا تی پاکیزگی بیان کرنے اور اپنے منہ میاں مشو بنے اور فود ستائی کے مض میں بتال ہونے کی کیا ضرورت ہے؟ اس آیت میں اللہ تعالیٰ نے متنب فرمایا ہے کہ وہ خودا پئی جان کا اتناعلم نہیں رکھتا جتنا اس مرض میں بتال ہونے کی کیا ضرورت ہے؟ اس آیت میں اللہ تعالیٰ نے متنب فرمایا ہے کہ وہ خودا پئی جان کا اتناعلم نہیں رکھتا جتنا اس کے خوادر میں گفتہ کہ دورت کے بیں اس وقت وہ کوئی علم وہ جو بھی اس وقت وہ کوئی علم کے خوادر میں گفتی کے خوادر کم علمی پر ستنبر کرکے یہ ہدایت دی گئی ہے کہ وہ جو بھی اچھا اور نیک کا مرکز تا ہو وہ اس کا ذاتی کمال نہیں ہے ضرا کا بخشا ہواانعام ہے، البزاکسی بڑے سے برے نیک صالی اور میں متنا ہو جو بھی اچھا اور نیک کا مرکز تا ہو وہ اس کا ذاتی کمال نہیں ہے ضرا کا بخشا ہواانعام ہے، البزاکسی بڑے تی میں مبتلا ہوج ہے اس کے وہ کوئی تھا ہوا گئی آیت فیلا تک فیل ہونے آئی میں مبتلا ہوج ہے اس کی وہ کوئی نہ کرور وہ کوئی نہ کرور نورت کی میں جاتا ہے کہ کون کیسا اور کسی درجہ کا ہے؟ کیونکہ مدار فضیلت تھو کی پر ہے ظاہری اعمال پر نہیں اور تھو کی ہورہ وہ کہ می وہ معتبر ہے جوموت تک باتی رہے۔

اَفْرَعَيْتَ الّذِى تُوَلَّى عَنِ الايمان اى إِرْنَدُ لها عُيرَبه وقالُ إِنِى جَشِيتُ عِقَابَ الله فَضَينَ له المُعَيِّرُ أَنْ يَحْجِلُ عنه عَذَابَ الله إِنْ رَجَعَ إلى شِرْكِه وأعطاهُ مِن مَّالِه كذا فرجع وَآعظى قَلِيْلاً مِن المالِ المُسَمَّى وَآكُدُى مَّ سَنَعَ البَانِي مَاخُوذ مِنَ الكُذية ومِي أَرْضٌ صلَبَةً كالصَّخُرَةِ تَمْنَعُ حافر البِنُو إِذَا وَصَلَ إليها مِن الحَفْرِ أَعِنْدَهُ وَعِنَا لَكَذية ومِي أَرْضٌ صلَبَةً كالصَّخْرَةِ تَمْنَعُ حافر البِنُو إِذَا وَصَلَ إليها مِن الحَفْرِ أَعِنْدَهُ البَعْقِيمُ فَعُولُ الثَّانِي لِرَأْيتَ بمعنى أَخْبِرُنِي أَمْ بِل لَمَّ يُكَنِّ إِمَا فَي صُعُفِ المُعْمُولُ الثَّانِي لِرَأْيتَ بمعنى أَخْبِرُنِي أَمْ بِل لَمَّ يُكَبِّ إِمَا فَي صُعُفِ مُوسَى أَلْمَانِي المُعْبَرِةِ او غيرهُ وجُملة أَعِنْدَهُ المَفْعُولُ الثَّانِي لِرَأْيتَ بمعنى أَخْبِرُنِي أَمْ بِل لَمَّ يُكَبِّ إِمَا فَي صُعُفِ أَلْمُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللهُ عَنْ المَعْبَلِ اللهُ المُعْمُولُ الثَّانِي لِرَأْيتَ بمعنى أَخْبِرُنِي أَمْ مِن الْمَعْبُ وَإِنْ المَانَعُ فَي اللهِ المُعْمُولُ الثَّانِي الرَّائِيةُ وَلَى الْمُعْبُولُ النَّالِيمِ رَبُّ اللهُ المُعْمُولُ الثَّانِي الْمُعْمُولُ الثَّانِي الْمُعْمُولُ النَّالِيمُ اللهِيمُ وَلَى المُعْبَلِيمُ المَعْبُ وَمِن الْمُعْبُولُ الْمَعْمُ وَيَالُ مَا اللَّهُ المَعْبُولُ المُعْبِى اللَّهُ المَعْبُولُ المَالِيمُ اللْمُعْلِيمُ اللهُ وَلَيْ الْمُعْبُولُ الْمُعْبُولُ اللهُ الْمُعْلِقُ الْمُعْبُولُ الْمُعْبُولُ الْمُعْبُولُ الْمُعْلِيمُ اللهُ عَلَى المَعْبُ وبِسَعْبُ وبِسَعْبُ واللَّهُ المَعْبُ واللهُ المُعْبُولُ اللهُ المُعْبُولُ اللهُ المُعْبُولُولُ اللهُ المُعْبُولُ اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى المُعْبُولُ المُعْبُولُ اللهُ المُعْبُولُ اللهُ المُعْبَعُ والمُعْبُولُ اللهُ المُعْبُولُ المُعْبُولُ المُعْبُولُ المُعْبُولُ المُعْبُولُ المُعْبُولُ المُعْبُولُ المُعْبُولُ المُعْبُلُ المُعْبُولُ المُعْبُولُ المُعْبُولُ اللهُ المُعْبُولُ المُعْبُولُ المُعْبُولُ المُعْبُولُ المُعْبُولُ المُعْبُولُ المُعْبُولُ المُعْبُولُ المُعْبُولُ المُعْبِيمُ المُعْبُولُ المُعْبُولُ المُعْبُولُ المُعْبَعُ المُعْبُولُ المُعْبُولُ المُعْلِقُ المُعْبُولُ المُعْبِعُلُولُ المُعْلِقُ المُعْبَعُلِ

بِالفَتْحِ عَطَفًا وقُرِئَ بِالكَسُرِ اسْتِيُنَافًا وكذا مَا بَعُدَهَا فَلاَ يكُونُ مَضْمُونُ الجُمَلِ في الصُحُفِ على الثّاني إِلَىٰ رَبِّكَ أَلْمُثْتَهَى ﴿ المَوسِرُ بعدَ المَوتِ فَيُجَازِيهِم **وَأَنَّهُ هُوَاضَّعَكَ** مَنْ شَاءَ أَفُرَحَهُ وَأَبَكَلَ ﴿ مَا مَاءَ اخزَنَهُ وَٱلْتَهُ هُوَامَاتَ فِي الدُنيا وَأَحْيَاكُ لِلبَعْتِ وَأَنَّهُ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ الصِنْفَينِ الْآذَكَرُوالْأُنْتَى فَي الدُنيا وَأَخْيَاكُ لِلبَعْتِ وَأَنَّهُ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ الصِنْفَينِ الْآذَكَرُوالْأُنْتَى فَي الدُنيا **إِذَاتُمْنَى ۚ تُصَبُّ في الرَحْمِ وَإِنَّ عَلَيْهِ النَّشُأَةَ** بِالمَدِّ وَالقَصْرِ الْ**لِّخْرَى** ۗ الحَلُقَةَ الأحرى لِنبَعْب بعدَ الحَدَلَقَةِ الأولَى وَأَنَّاهُ هُوَ أَغْنَى السَّاسَ بِالكِفَايَةِ بِالأَسُوَالِ وَأَقْنَى ﴿ اَعْسَطَى السَّالَ المُشْخَذَ قِنْيَةً وَأَنَّهُهُوَرَبُّ الشِّعُرِيُّ هي كُوكَبٌ خَلَفَ الجَوْزَاءِ كَانَتْ تُعْبَدُ فِي الجَاهِلِيَّةِ وَأَنَّهُ أَهْلَكَ عَلَآ الْإِلْوَكُ وَفِي قِراءَةٍ بِإِدْعِامِ التَّنُوينِ فِي اللَّامِ وضيِّها بلا هَمُزَةٍ هي قَوْمُ هود والأخرى قومُ صالح وَثْمُوكا بالصرفِ إسمّ لِلاب وبلاَ صَرْفٍ اِسَمٌ للقَبيْلَةِ وهُو سعطُوتٌ عَلَى عَادٍ فَمَٱأَبْقَيْ ﴿ سنهم أَحَدًا وَقُوْمَزُونَ عَبِلُ أَي قبل عادٍ وشمودٍ أَهُلَكَناهُم إِنَّهُمُّكَانُوا هُمُ الظُّلُووا طَعْيُ سن عادٍ وشمودٍ لِطُولِ لُبُثِ نُوحٍ فيهم اَلْفَ سَنَةٍ الا خَمْسِيْنَ عـاسًا وهُـهُ مَـعَ عـدم إيمَانِهم به يُؤذُونَهُ ويَضَرِبُونه ۖ وَ**الْمُؤْتَقِكَةَ** وهـى قرى قومٍ لُوْطٍ أَهُولى ﴿ اَسْفَطَهَا بَعُدَ رَفْعِها إلى السَّمَاءِ مَقْلُوْبَةً إلَى الأرْض بأَمْرِهِ جَبْرَتُيلَ عليه الصَّلوةُ والسَّلامُ بذلك فَغَشْها مِنَ الحِجَارَة بَعدَ ذلك **مَاغَشَّي** ۚ ٱبْهَـمَ تهـوِيلاً وفِي هُـودٍ فَجَعَـلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَاسْظَرُنَا عَلَيُهَا حِجارَةً بِّنُ سِجِيُلِ **فِيأَيِّ اللَّهِ وَيَاتُ بِالْدُهِ عِلَى اللَّهُ الَّهِ عَلَى وَحُدَانِيَّتِهِ وَقُدرَتِهِ تَتَمَارِي** تَشُلكُ أَيُّها الإنْسَانُ او تُكَذِّبُ هٰذَا مُحمد صلى الله عليه وسلم نَذِيْرُمِّنَ النُّذُرِ الْأُولِيُّ مِن جِنْسِهِمَ اي رَسُولٌ كالرُّسُلِ قَبُلَه أرْسِلَ اِلْيِكُم كَمَا أَرْسِلُوا اِلَى أَقُوَامِهِم أَرْفَتِ الْمَرْفَةُ ﴿ قَرُبَتِ القِيَامَةُ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللهِ نَفُسْ كَالِمُفَةُ ﴿ اى لاَ يَكْشِفُها ويُنظَهرُها الاهُو كَقُول لاَ يُجَلِّيْهَا لِوَقْتِهَا اللَّهُوَ أَفْمِنْ هُذَا الْحَرِلِيثِ اي القُران تَعْجَبُوْنَ ﴾ تَتُذِيبًا وَتَضُحَكُونَ إِسْتِهْ زَاءً وَلَاتَبُكُونَ ﴿ لِسَسَاعِ وَعَدِه ووَعِيْدِه وَأَنْتُمُرْسُمِدُونَ ۞ لاهُونَ ﴾ في غافِلُونَ عَمَّا يُطلَبُ سنكم فَالْمَجُدُوالِلهِ الَّذِي خَلَقَكُمْ وَاعْبُدُواا اللَّاسِنامِ وَلا تَعْبُدُوهَا.

ترکی ایس کے اللہ کے عذاب سے خوف آیا، تو اس کے لئے عار دلانے والا اس بات کا ضامن ہو گیا جب ایمان پراس کو عار دلائی گئی اور کہا بھے ملا اللہ کے عذاب سے خوف آیا، تو اس کے لئے عار دلانے والا اس بات کا ضامن ہو گیا کہ وہ اس کی طرف سے اللہ کے عذاب کو اپنے اوپراٹھ لے گا، اگر وہ اپنے شرک کی طرف لوٹ آئے، اور اسے اپنے مال بیس سے اتنا دیدے، چنانچہ بیخص مرتد ہو گیا اور اس محفور نے مقررہ مال بیس سے قلیل حصہ دیدیا اور باقی مال کو روک لیا آئے دئی، محذیدہ سے ماخوذ ہے، کھذید جن ان کے خوب کے ماندز مین کا وہ تخت حصہ جو کنوال کھود نے والے کو کھود نے سے روک دے جب کھودتا ہوا اس چٹان پر پہنچ کیا اس کے پاس غیب کا مندز مین کا وہ تخت حصہ جو کنوال کھود نے والے کو کھود نے سے روک دے جب کھودتا ہوا اس چٹان پر پہنچ کیا اس کے پاس غیب کا مندز میں کا وروہ مخت سے کہ دومر اختص اس کے آخرت کے عذاب کو اٹھا لے گا نہیں (نہیں) اور وہ مختص سے اس کے اس میں کے دومر اختص اس کے آخرت کے عذاب کو اٹھا لے گا نہیں (نہیں) اور وہ مختص سے اس کے اس کے اس کے اس کے اس کو اس کے اس کو اس کے اس کے اس کے اس کے اس کو اس کے اس کے اس کے اس کو اس کے اس کی اس کے اس کی اس کے اس کی اس کے اس کو اس کے اس کی اس کے اس کی اس کے اس کی اس کے اس کو اس کے اس کی اس کے اس کی اس کے اس کو اس کی اس کی اس کی اس کے اس کی کی کر دے اس کی اس کی اس کی کر دو میا نہ کے اس کی اس کی کر دو میا نہ کی کے دو می اس کے اس کی کر دو میا نہ کی کر دو میا نہ کے دو می کر دو میا نہ کے دو می کر دو میا نہ کی دو می کر دو میا نہ کے دو میا نہ کر دو میا نہ کر دی کر دو میا نہ کر دو میا نہ کر دو میا نہ کر دو میا نہ کو دو میا نہ کر دو میا نہ کے دو می کر دو میا نہ کر دو میا نہ کو دو میا نہ کر دو میانے کی دو می کر دو میا نہ کر دو میان کی کر دو میا نہ ک

وليد بن مغيره ب ياس كے ملاوه دوسراكو كي شخص ب،اور جمله أعِلْدة، رَأيتَ بمعنى أَخْدِر نِي كامفعول ثاني ب، كيااس كواس کی خبرنہیں دی جوموی کے صحیفول میں ہے تو رات کے سفر ناموں میں یاان سے پہلے صحیفوں میں اورابراہیم کے صحیفوں میں جس نے وہ حق پورا کیا جس کا اس کو تھم دیا گیا ،اور جب آ زمایا ابراجیم کو اس کے رب نے چند باتوں کے ذریعہ جن کو اس نے پورا کیا اور اللَّا تَسْوِرُ وَاذِرَةٌ وِزْرَ أُحرى الع ما كابيان ب، يه كه وفي الله عند والا دوسركابوجه شاللهائ كااوران مخففه عن الثقيله ب اَی اَنَّـهٔ لَاتَـحْمِلُ نَفْسٌ ذَنْبَ عَيْرِهَا بِلِيقِين كُولَى فَسَسَى فَسَ كَلَامِون كابِوجِهِ ثَدَاهُ فَ كَاء اوربيك الْمان كُوسرف اس عمل خیر کی سعی کاصلہ ملے گا جس کے لئے اس نے سعی کی ہوگی چنا نچدا س کوغیر کی سعی کا صلہ ندیعے گا ، اور بید کہ اس کی سعی عنقریب دیکھی جائے گی، لیعنی آخرت میں اپنی سعی کود کیھ لے گا اور پھراس کو پوری پوری جزاء دی جائے گی بولا جا تاہے جَسزَیْنُٹ ہُ سَغْيَهُ وبِسَغْيهِ (لِين مِين في اس كى سعى كاصليديديا) اوربيكة تيري يروردگار كي طرف (برشي) كي انتها بي يعني مرف کے بعد تیرے پروردگار کی طرف رجوع کرنا اور وٹنا ہے، سوو وان کوجزاء دےگا،اوراک اگرفتہ کے ساتھ ہےتو (اَلَّا تَسسز رُ وَ اذِر ةٌ وِّذْرُ أُخْرِی) پرعطف ہوگا،اورا گر کسرہ کے ساتھ ہے تو جملہ متا نقہ ہوگا،اور یہی دونوں صورتیں ما بعد میں بھی ہوں گی، (لینی) وَإِنَّهُ هُو أَضْعَكَ سے عَادِنِ الْأُولَى تَكَ مِن ثَاني صورت مِن [آئنده) جملوں كامضمون (مذكوره) صحيفوں ميں سنبیں ہوگااور بیے کہ وہی جس کو چاہتا ہے جنسا تا ہے لیعنی خوش کرتا ہے اور جس کو حیا بتا ہے زُلاتا ہے لیعنی رنجیدہ کرتا ہے اور بید کہ وہی ونیا میں موت دیتا ہے اور زندہ کرتا ہے بعث کے لئے اور یہ کہاں نے مذکر ومؤنث دونو ل صنفیں نطفہ منی ہے بیدا کیں جبکہ رتم میں ٹیکا یا جائے اور بیرکہ اس کے ذمہ میں ہے دوسری مرتبہ پیدا کرنا(نَشاٰۃ) مداور قصر کے ساتھ، یعنی پہلی تخلیق کے بعد دوسری تخلیق فر ہ ئی اور بیرکہ کفیت مال کے ذریعیاس نے ہو گوں کو مستغنی کیااور مال عطا کیا، جس کواس نے جمع کرلیااور وہی شعری کا رب ہے وہ ایک تارا ہے جو جوزا کے بیچھے ہوتا ہے ،جس کی زیانہ جابلیت میں پوجا کی جاتی تھی ،اور اس نے عاد اولیٰ کو ہلاک کر دیا اورایک قراءت میں تنوین کولام میں ادغام کر کے اور لام کے ضمہ کے ساتھ بغیر ہمز ہ کے ہے ، اور بیقوم ہود ہے (عاد) اخری صالح کی قوم ہے اور شمود کو (ہلاک کردیا) (شمود) منصرف ہے باپ کا نام ہونے کی وجہ سے، غیر منصرف ہے قبیلہ کا نام ہونے کی صورت میں اور وہ عاد پرمعطوف ہے تو ان میں ہے کسی کو باقی نہیں چھوڑ ااور اس سے پہلے قوم نوح کو لیعنی عاد وخمود سے پہلے ہم نے ان کو ہلاک کر دیا اور بلاشہ وہ عاد وخمود ہے زیادہ ظالم اور زیادہ سرکش نتھے نوح علیہ کا دائے کان میں ساڑھے نوسوسال کے طویل زمانہ تک قیام کرنے کی وجہ ہے اور وہ ایمان نہ لانے کے ساتھ ساتھ ان کو ایڈ ایمبنچاہے اور ان کو ہارتے اور الٹائی ہوئی بستیوں کو کہ وہ قوم لوط کی بستیاں تھیں پٹنے دیا یعنی ان کواوپر لیجا کر بلیٹ کرزمین پر پٹنے دیا، جبر ئیل علیج لاظاماتی کواس کا تھم دیے کر،ال کے بعدان بستیوں کو پھروں ہے ڈھانپ لیا (ماغشنی کو) ہولنا کی کوظا ہر کرنے کے لئے مہم رکھا ہے،اور سورۂ بود میں ہے کہ ہم نے ان کی بستیوں کو نہ و بالا کر دیا ،اور ہم نے ان پر کنکر کے پتھر برسائے کیس تو انسان اپنے رب کی کون کون سی تعمقوں میں جواس کی وحدانیت اور قدرت پر دلالت کرتی ہیں شک کرتا ہے اور جھٹلا تا ہے (اے شخص) میہ - ھ (مَزَم بِبَالتَهِ عَا-

محر بالترافية ببلوں كى ما نند ڈرانے والا ہے بعنی اس سے بہلے رسولوں جیسار سول ہے تم لوگوں كى طرف بھيجا گيا ہے،جيب ك وہ اپنی قوموں کی طرف بھیجے گئے تھے، قریب آنے والی قریب آئنی یعنی قیامت قریب آگئی، اور اللہ کے سوااس کوکوئی ظاہر كرنے والا نہيں يعنى وى اس كو كھول سكتا ہے اور ظاہر رسكت بے جيبا كدائلدت كى كا تول لا يُسجَد بينها لو قَتِهَا إلَّا هُوَ اس كے وفت کوالقد بی ظاہر کرے گا، کیاتم اس کلام قرآن ہے تعجب کرتے ہواوراستہزاء کرتے ہو اوراس کے وعدول اور وعیرول کومن کر روتے نہیں ہواورتم غفلت میں پڑے ہوئے ہولیتن جوتم ہے مطلوب ہے اس ہے تم لہواورغفلت میں پڑ ہے ہوسؤتم ہو سوتم اس التدکویجده کروجس نے تنہیں پیدا کیااوراس کی بندگی سرواور بتول کویجدہ نہ کرواور ندان کی بندگی کرو۔

عَجِقِيق تَرَكِيكِ لِيَسَبُيكُ لِتَقَيِّمَارِي فَوَالِا

فِيْوُلْكُمْ : أَفَرَ أَيتَ اللَّذِي تَوَلَّى بَمْرَةُ اسْتَفْهَامٌ قَرِيكَ لِيَ جِـ

فَيُولِكُم : رأيتَ بمعنى أَحْبِرْنِي، الَّذِي المم موصول صله على كرمفعول اول ـ

فِيُولِنَى ؛ وَاعْطَى قَلِيلًا وَ أَكَانَى اعْتَظَى تَوَلَّى بِمُعَطُّوفَ بِ،اورقليلًا مصدر محذوف كي صفت ب،اى أغيظى إغطَاءً قلیلا، قلیلا کومفعول برقر اردینا بھی درست ہے۔

فِيْ فَلِنَى ؛ أعِنْدَهُ علم الغيب النع جمزه استقبام انكارى ب، اورجمله بوكرراً يت كامفعول تانى ب-

فِيُولِكُنَى : تَوَكِّى اى السلَمَ تعر إِرْ تَدَّ اكثر كا قول يه بكراس مراد وليد بن مغيره ب، اوربيآيت اس كيار عيس

فِيُولِينَ ؛ أَغْطَاهُ مِن مالِهِ ، أعطاه كَضمير متنتر تَوَلَى كَ فاعل متنتر كَ طرف راجع بهاورة صمير بارز ضبون ك فاعل كي طرف راجع ہے، یعنی ضامن نے الگی نی سو کسی پر دو چیزیں لازم کیں ایک بیا کہ ترک تو حید کر کے شرک کی طرف لوٹ آئے ، دوسرے میہ کہ صنان کے عوض مال کی ایک مخصوص مقدار اس کو دے اور ضامن نے خود ایپنے اوپر صرف ایک چیز لازم کی اور وہ آ خرت میں اللہ کے عذاب کا ضمان ہے۔

فِيُولِكُنَّ ؛ تَسَمَّدَمَا أُمِرَبه حضرت ابراجيم ف ان احكام كو بخوشى بوراكيا جن كان كوتكم ديا كي تفاء مثلاً ذبع ولد، وقوع في النار، خصال فطرت، هجرت وطن وغيرهـ

فِيْخُولَكُنَّ : وَبَيَانُ مَا اَلَّا تَسَوِرُ وَاذِرَةٌ وِّزْرَ أُحرى النح لِينَ الَّاتَسَوِرُ النح بمَا مِن ما سے بدل واقع ہوئے كى وجہ سے محلا مجرور ہے، اور مراد مفسر رَحِمَ الله مُعَالَىٰ كَقُولِ اللي آخوہ، سے فَعِاَيِّ آلَاءِ رَبِّكَ تَتَمَارى تك ہے۔

فِيْوَلِكُ : بالفتح عطفًا وقُرِئَ بالكسر استينافًا لِين أَدَّ الله رَبِّكَ المنتهى ك ادَّ ش دواحمال مين اول بي

کہ اَلَّا تَزِرُ وِاذِرَةٌ وِزْرَ أُحوای پِعطف کیاجائے اوراکن کو منصوب پڑھاجائے، اس صورت بیں فبای آلاءِ رَبِّكَ تَتَمادی تَک ما کابیان ہوگا اورآ خرتک کا پورامضمون صحف موی وصحف ابراہیم بیں ہوگا، اوراگر اِن کوبالکر پڑھاجائے تو اس صورت میں وَاَنَّ اِلٰی رَبِّكَ الْمنتهی ہے آخرتک جملہ متا تف ہوگا، اورآ خرتک مضمون صحب موی اورصحف ابراہیم میں نہ ہوگا، بلکہ صرف پہلے تین یعن () اَلَّا تَزِدُ وَاذِرةٌ وَزُدَ أُحری () اَنْ لَیْسَ لِلانْسَان اِلَّا مَاسعی () اَنَّ سَعْیَهُ سَوْف بُوی اُور بُور اُور فی کامضمون صحف موی وصحف ابراہیم میں ہوگا۔ انگر سَعْیهُ سَوْف بُوی فَرِی شُری ہُوگا۔

فَيُولِكُ ؛ وَكَذَا مَابَعْدَهَا مابعد عمراد وَانَّهُ اَصْحَكَ وَابْكى سے لے كروَانَّهُ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ الدُّكَرَ وَالْانْثَى تك ہے۔

ملحوظہ: بِسَمَافِی صُحُفِ مُوسنی کے ماکے بیان میں اُنَّ گیارہ جگہوا تع ہواہے، بیال صورت میں ہے جبکہ اَنَّ اِلٰی رَبِّكَ الْسُمُنْتَهٰی كا اَلَّا تَزِدُ وَاذِرَ قُ الْنِ پِعطف كرتے ہوئے اَنَّ كومفتوح پڑھا جائے درنہ تو صرف اول تین جگہائن مفتوحہ ہوگا، اور جاتی آٹھ جگہ اِنَّ مکسورہ ہوگا۔

فِخُولُمْ ؛ وَافْنِي اِفْنَاءٌ ہے باض واحد فر کر غائب،اس نے جمع کیا ای اَعْطَی المالَ الَّذِی اتَّعَدَ قُنْیَدٌ، قُنْیَدٌ وومال جس کوذ خیرہ کیا جائے اور شرح کرنے کا ارادہ نہ ہو (اعراب القرآن ، ورویش) اَفْنی کے اہل افت اور مضرین نے مخلف معنی بیان کے جیں قادہ فرماتے ہیں کہ ابن عباس ہے اس کے معنی وراضی کردیا) بتائے ہیں ،عکر مدنے ابن عباس ہے اس کے معنی قَنْعَ بتائے ہیں (مطمئن کردیا) امام رازی فرماتے ہیں انسان کی ضرورت سے زائد جو پچھاس کودیا جائے ووا قناء ہے ، ابو عبیداور ویکر متعدد اہل الخت کا قول ہے کہ آف نئی ، قُنْمَدٌ ہے مشتق ہے ، جس کے معنی ہیں محفوظ اور باقی رہنے والا مال ، مثلاً مکان ، اراضی ، ویکر متعدد اہل الخت کا قول ہے کہ آف نئی ، قُنْمَدٌ ہے مشتق ہے ، جس کے معنی آفقر کے کئے ہیں ، لیمنی اس نے نقیر بنایا ، ابن بنایا ، ابن جب بنایا ، ابن جب ہیں ہیں معنی مراد لئے ہیں ، اور ہمز و افعال کوسلب ما خذ کے لئے لیا ہے جسے استکی سلب شکایت کے معنی میں ہے ، ہیا قبر کے سابق سے ہمی میمنی مراد لئے ہیں ، اور ہمز و افعال کوسلب ما خذ کے لئے لیا ہے جسے استکی سلب شکایت کے معنی میں ہے ، ہیا تھیں کہ اس نے کہ سابق سے متعالی چیز وں کا ذکر چلا آر ہا ہے ، مطلب یہ ہے کہ اس نے جس کو چا ہاغنی کیا اور جس کو چا ہاغنی کیا در جس کو چا ہاغنی کیا ور جس کو چا ہاؤ سیکر کیا ہے ۔

قَوْلِنَى : هو رَبُّ المشعر الله شعری آسان کاروش ترین تارہ ہے، اس کو "کلب اکبر" بھی کہتے ہیں، اس کے اور بھی مختلف نام ہیں انگریزی میں اس کو (Dog Star) کہتے ہیں، عرب میں اس کی پوچا ہوتی تھی، قریش کا قبیلہ بنو خزاعہ خاص طور پر اس کی پوچا کرتا تھا کہتے ہیں کہ بیسورج ہے ۲۳ گنا ذیا وہ روشن ہے گرز مین ہے اس کا فاصلہ آٹھ سال نوری ہے بھی زیادہ ہے اس لئے بیسورج ہے چھوٹا اور کم روشن نظر آتا ہے، روشنی کی رفتار فی سکنڈ ایک لاکھ چھیا ی بزارمیل ہے (فلکیات جدیدہ) اس کی عبادت کی ابتداء ابو کبشہ نے کی تھی جو کہ سادات قریش میں ہے تھا،

< (زَمَزَم بِبَلشَنْ ≥-

ابوكبشه آپ ﷺ كى امهات كى جانب ہے جداعلى ہے، اى وجہ ہے قريش آپ كوابن ابى كبشه كها كرتے تھے، اس مناسبت سے کہ آنخضرت ﷺ نے جب عرب کے دین کے خلاف دعوت دینی شروع کی متولوگوں نے آپ کوابن الی کبیثہ کہنا شروع کردیا تینی جس طرح ابو کبیٹہ نے اپنے زمانہ میں بت پرسی کی مخالفت کر کےستارہ پرسی شروع کی گویا کہ اس طرح آپ نے بت پرستی کی مخالفت کرتے ہوئے خدا پرستی شروع کی ، بیشد بدگرمی کے موسم میں جوزاء کے بعد طلوع ہوتا ہے اس کوشعریٰ بمانی بھی کہتے ہیں ، اس کے مقابل ایک شعریٰ شامی ہے وہ بھی روشن ترین ستاروں میں سے ہے،اس کو' کلب اصغر' کہتے ہیں۔

هِ فَكُولَكُمُ ﴾؛ المؤمَّفِكَةَ إِيِّتِفَاكٌ (اقتعال) _ اسم فاعل واحدموَّ نث (جمَّع) المؤتفكات التي بموتى (بستيال) مراد حضرت لوط عَلَيْهَ لِكَالِمَا لِكَنْ كَانْ مِن اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَيْهِ وَمُوجُودُه بَكِيرةُ مردارك ساحل برآ بالتّحين جن كاسب سے برواشہر سندوم يا سدوم تھا،حضرت لوط عَلَيْهِ اللَّهِ اللَّهِ كَا تَعْمُ منه ما نن اورظلم ولواطت سے بازندآنے كى ياداش ميں اللّٰد تعالىٰ نے الث ديا تھا اور تنكر پھروں كى بارش كر كے نيست ونابودكرد ياتقابه

قِيَّوُلِكُ، وفي هودٍ فَجَعَلْنَا، صَحِح بِيَمَاكُ وَفِي هُودٍ، فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا فرماتِ، يا پُمروفي الحِجر فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا ثرماتــــ

فِيُولِكُونَ وَتُشَكُّ ، تَتَمَارِي كَنْفيرتشك عيركا شاره كرديا كه تفاعل تعدد في الفاعل عي فالى ب-فِيْ وَكُولِ مَنْ اللَّهُ مُعْسِر علام نے نفس محذوف مان كراشاره كرديا كه كاهفه ، موصوف محذوف كي صفت ہے۔ فِيْؤُلِّكُمْ ؛ سَامِدُوْنَ، السُّمُوْد، اللهو (ن) وقيل الاعراض وقيل الاستكبار، وقيل هو الغناء (كانا)_

تِفْسِيْرُوتِشِينَ

شان نزول:

ہوئی،اورضحاک نے کہا ہے کہنضر بن الحارث کے بارے میں نازل ہوئی،اورمحد بن کعب قرظی نے کہا کہ ابوجہل کے بارے میں نا زل ہوئی ،اکثر مفسرین کی رائے رہے کہ میآیت ولیدین مغیرہ کے بارے میں نا زل ہوئی۔

واقعه: واقعه اس طرح بیان کیا گیاہے کہ اس کار جحان اسلام کی طرف ہوگیا تھا اور آنخضرت بین ایک ہے بھی ربط ضبط اور تعلقات رکھتا تھا، مقاتل نے کہا کہ دلید نے قرآن کی تعریف کی تھی، گمراس کے کسی دوست نے اس کو عدر دلائی اور ملامت کرتے ہوئے کہا کہ تونے اپنے باپ دادا کے دین کو کیوں چھوڑ دیا؟ اس نے جواب دیا کہ جھے اللہ کے عذاب سے ڈرلگتا ہے، اس ساتھی نے کہا تو مجھے کچھ دیدے تو میں آخرت کا تیراعذاب اینے سر لیاوں گا، توعذاب سے نی جائے گا، چنانچہ ولیدنے اس کی یہ بات

ح (رَمُزُم بِهَالصَّالِ ≥

بن کی اور خدا کی راہ پر آئے آئے رہ گیا اور اس کو مطے شدہ مال کا کی تھے تھے۔ یہ یہ اس نے مزید مطالبہ کیا تو کشا کئی کے بعد کی تھا وہ بھی اور یہ یہ یہ گرمزید و یہ سے انکار کردیا، ای واقعہ کی طرف آئی رہ کہ کہ اس واقعہ کی طرف آئی رہ کر نے ہے مقصود کھا میک کہ یہ یہ بن تھا کہ آخرت سے بے گئر کی اور دی کن کی تھے ت سے بخبری نے ان کو کسی جہالتو ل اور جمالتوں کی مسابلا کردیو تھا۔

اَعِنْدُهُ علیم الغیبِ فَہُو یُری شان نزول میں جو واقعہ بیان کیا گیا ہے اسے مطابق آجت کا مطلب یہ ہے کہ اس شخص نے اسلام کو اس لئے چھوڑ دیو کہ اس کے کس ماتھی نے اس سے کہ دیا تھا کہ آخرت کا تیراعذاب میں اپنے سر لے کر جھو کہ بیادوں گا، اس ام کو اس لئے جھوڑ دیو کہ اس بیا کہ کس سے وہ دیکھ کے بیادوں گا، اس ام کو اس اس کی تعرف کے کس اس کے کس اس کے کس کے کہ دیا اس کو کہ بیاد کے گا، گا جم ہے کہ وہ جس نظر کر لی جائے تو آجت کے معنی یہ بول گے کہ وہ شخص جو اللہ کی کر دوں گا تو چھر کہ اس سے آئے گا؟ اس اور اگر فہ کورہ واقعہ سے قطع نظر کر لی جائے تو آجت کے معنی یہ بول گے کہ وہ شخص جو اللہ کی کر دوں گا تو چھر کہ اس سے آئے گا؟ اس کی جہوڑ اس کی وجہ یہی ہو جائے گا ور اس کے علی وہ اس خرج کر دوں گا تو چھر کہ اس کے اور اس کے علی وہ اس کی وہ یہی ہو جائے گا اور اس کے علی وہ اس کی وہ یہی ہو جائے گا وار اس کے علی وہ اس کی وہ یہی ہو جائے گا وار اس کے علی وہ اس کی وہ یہی ہو جائے گا اور اس کے علی وہ اس کی خرج کی خرج کی دو تھی کے کی ونکہ تن تعالی شند نے ارشاد فر مایا اس کو منظ سے گا می فیلے گھو کے کیڈو اللہ اذ فین کھی تھی جو پھی خرج کی کر دوں گا تو گا کہ کی ہو کہ کہ میں دیا ہے کہ ہوا للہ تعالی اس کا بدل تہمیں دید سے بہتر رزق دیے والے بیں۔

حدیث میں ہے کہ رسول اللہ ﷺ فی حضرت بلال تفتیانی کے سےفر مایا (آئیفی یَسابِلالُ وَ لاَتَ خُوسَ عَنْ ذِی السَّعَد السعَسو میں اِقسلالاً) بعنی اے بلال اللہ کی راہ میں خرج کرتے رہواور عرش والے اللہ کی طرف سے اس کا خطرہ ندر کھوکہوہ تمہیں مفدس کردیے گا۔

تنين اہم اصول:

اس آیت ہے تین بڑےاصول منتبط ہوتے ہیں: ① ایک رید ہرشخص اپنے فعل کا ذمہ دار ہے ۞ دوسرے یہ کہا یک شخص کے فعل کی ذمہ داری دوسرے کے سرنہیں ڈالی جاسکتی،الا بید کہاس فعل کے صدور میں اس کا اپنا کوئی حصہ ہو ا کے کہ کوئی شخص اگر جاہے بھی تو کسی دوسر ہے خص کے فعل کی ذمہ داری اپنے او پرنہیں لے سکتا اور نہ اصل مجرم کواس بناء پر چھوڑا جا سکتا ہے۔

وَاَنْ لَیْسَ لِلْانْسَانِ اِلَّا مَا سَعٰی جیسا کہ اسبق کی آیت ہے معلوم ہوا کہ کسی کا گناہ دوسرے کو نقصان نہیں پہنچا سکتا ، اس طرح اس آیت سے بیچی معلوم ہوا کہ کسی کی سعی دوسرے کو فائدہ نہیں پہنچا سکتی ، اس آیت سے جو بید حصر مستفاد ہے کہ ہرخص کو اس کے عمل کی جزاء ملے گی دوسرے کے عمل کی نہیں ، تگر یہ مسلک معتز لہ کا ہے ، اہل سنت والجماعت کا بلکہ اہل اسلام میں سے اور کسی کا نہیں۔

تين اہم اصول:

اس آیت ہے بھی تین اہم اصول نکلتے ہیں: ① ایک یہ کہ ہر خنص جو پھی بیائے گا ہے ممل کا ہی پھل بیائے گا © دوسرے یہ کدایک شخص کے ممل کا پھل دوسرانبیں پاسکتاالا یہ کداس عمل میں اس کا کوئی حصہ ہو ﴿ تیسرے یہ کہ کوئی شخص سعی اور عمل کے بغیر پھی بیاسکتا۔

مطلب سے کہ جس طرح کوئی کی دوسرے کے تا و کا ذہر ہوگائی طرح آ فرت میں اجربھی انہی چیزوں کا ملے گاجن میں اس کی اپنی محنت ہوگ (اس جز کا تعلق آ خرت ہے جو نیا نے نہیں) جیس کہ جف لوگ اس آیت کو و نیا کے معاشی معاملات پر خلاطر لیقے ہے منظبی کر کے اس سے یہ نتیجہ نکا لیے جیس کہ کوئی شخص اپنی محنت کی مہ نی کے سواکسی چیز کا جائز ، لک نہیں ہوسکت، خلاطر لیقے ہے منظبی کر کے اس سے یہ نتیجہ نکا لیے جیس کہ کوئی شخص اپنی محنت کی مہ نی کے سوال کہ سوشلسٹ فتم کے لوگ اس کا یہ مفہوم باور کرائے غیر حاضر زمینداری اور کرایے واری کو ناج بز قرار دیتے جیس اس طرح کارخانوں کی بیداوار میں بقدر محنت وسٹی مردور کا حصر قرار دیتے جیس گریہ بات قرآن مجید ہی نے دیتے ہوئے دیگر قوا نین اوراد کام کر ان جیس منظانی تانوں وراخت جس کی روے ایک شخص کے ترکہ میں ہے بہت سے افراو حصہ پاتے جیس اوراس کے جائز وارث قرار پاتے جیس، حالا نکہ یہ میراث ان کی اپنی محنت کی کمائی نہیں ہوتی ، ایک شیر نواروارٹ بچے کے متعمق تو کی طرح کھنچ تان سے بھی میہ بات جن کی مونت کا بھی کا کوئی حصہ تھا ایسے ہی احکام ذکو تا بھی میں موالہ نکہ اس کے بیدا کرنے میں ان کی محنت کا قطعا کوئی حصہ نہیں ہوتا ، اس کے قرآن کی کی ایک آیت کو لے کراس سے جس مالہ نکہ اس کے بیدا کرنے میں ان کی محنت کا قطعا کوئی حصہ نہیں ہوتا ، اس کے ترکہ کی ایک آیت ہے جاگر خلاف ہے۔

مسكه ايصال تواب:

بعض دوسر بےلوگ ان اصولوں کو آخرت ہے متعلق مان کر بیسوالات اٹھاتے ہیں کہ آیا ان اصولوں کی رو ہے ایک شخص کا عمل دوسر ہے شخص کے لئے کسی صورت میں بھی نافع ہوسکتا ہے؟ اور کیاا یک شخص اگر دوسر ہے شخص کے لئے یا

< (مَئِزَم پِبَاشَرِلْ) &

اس کے بدلے کو کی عمل کرے تو وہ اس کی طرف سے قبول کیا جا سکتا ہے؟ اور کیا یہ بھی ممکن ہے کہ ایک شخص اپنے عمل کے اجر کو دوسرے کی طرف منتقل کرسکتا ہے؟ ان سوالات کا جواب اگرنفی میں ہوتو ایصال ثو اب اور حج بدل وغیرہ سب نا جا ئز ہو جاتے ہیں ، بلکہ دوسر ہے کے حق میں دعاءاستغفار بھی بے معنی ہو جاتی ہے کیونکہ بیدد عاء بھی اس مخض کا اپناعمل نہیں ہے جس کے حق میں دعاء کیجائے ،گریدا نتہائی نقطۂ نظرمعتز لہ کے سوااہل اسلام میں ہے کسی کانہیں ہے ،صرف معتزلہ ہی اس آیت کا بیمطلب لیتے ہیں کہ ایک مخص کی سعی دوسرے کے لئے کسی حال میں بھی نافع نہیں ہوسکتی ، بخلاف اہل سنت والجماعت کے کہا یک شخص کے لئے دوسرے کی دعاء کے نافع ہونے کوتو بالا تفاق مانتے ہیں کیونکہ ہیہ قرآن ہے تا بت ہے البتہ ایصال ثواب اور نیابۂ کسی دوسرے کی طرف سے کسی نیک کام کے نافع ہونے میں ان کے درمیان اصولاً نہیں تفصیل میں اختلاف ہے۔

عبادات كى تىن قىتمىيں:

فقہ وحنفیہ کہتے ہیں کہ عبادات کی تین قتمیں ہیں: ① اول خالص بدنی جیسے نماز، روزہ، ایمان ۞ دوسرے خالص ، لی جیسے زکوۃ صدقہ 🏵 مالی اور بدنی سے مرکب، جیسے جج ، پہلی قتم میں نیابت ورست نہیں مثلاً ایک صحف د وسرے کی طرف سے فرض نماز پڑھ لے اور دوسرا شخص اس عمل سے سبکدوش ہوجائے یا دوسرے کی طرف سے فرض روز ہ ر کھ لے اور دوسرااس فرض روز ہے سے سبکدوش ہوجائے ، یا ایک سخص دوسر ہے کی طرف سے ایمان قبول کر لے اور دوسرا اس سے سبکدوش ہوجائے اوراس دوسر کے خص کومومن قرار دیدیا جائے۔

آیت ندکوره کی اس تفسیر برکوئی نقهی اشکال نہیں اور ندشبہ عائد ہوتا ہے ، زیادہ سے زیادہ حج اور ز کو 6 کے مسئد میں بیشبہ ہوسکتا ہے کہ ضرورت کے وقت شرعاً ایک شخص دوسرے کی طرف سے حج بدل سکتا ہے یا دوسرے کی زکو ۃ اس کی اج زت ہے ادا کرسکتا ہے، گرغور کیا جائے تو بیاشکال اس لئے درست نہیں کہ سی کواپنی جگہ جج بدل کے لئے بھیج وینا اوراس کے مص رف خودادا کرنا ، پاکسی مخص کواپی طرف ہے ز کو ۃ اوا کرنے کے لئے مامور کردینا بھی درحقیقت اس مخص کے اپنے ممل اورستی کا جزء ہے،اس کے لیس للانسان الا ما سعی کے منافی نہیں۔

جبکہ او پر بیمعلوم ہو چکا ہے کہ آبت مذکورہ کامفہوم بیہے کہ ایک شخص دوسرے کے فرائض مثلاً ایمان ،نماز ،روز ہ ادا کر کے دوسرے شخص کوسبکدوش نہیں کرسکتا، تو اس ہے میدلازم نہیں آتا کہ ایک شخص کے نفل عمل کا فائدہ اور ثواب دوسرے تتخص کونہ پہنچ سکے،ایک شخص کی دعاءاورصد قد کا ثواب دوسر کے خص کو پہنچنا نصوص شرعیہ سے ثابت ہے اور تمام امت کے نز دیک اجماعی مسئلہ ہے۔ (ابن کثیر، معارف) تفبیر مظہری میں اس جگہ ان تمام احادیث کوجمع کر دیا ہے جن سے ایصال ثواب کا فائدہ دوسرے کو پہنچنا ٹابت ہوتا ہے۔

ايصال ثواب كي حقيقت:

ایسال ثواب میں ہے کہ ایک شخص کوئی نیک عمل کر کے القدسے دہاء کرے کہ اس کا اجروثو اب کسی دوسرے شخص کوعطا فرمادیا جائے ،اس مسئد میں امام مالک اور امام شافعی فرمات ہیں کہ خالص بدنی عبادات مثناً؛ نماز روزہ، تلاوت قرآن وغیرہ کا ثواب دوسرے کو دوسرے کو دوسرے کو بہتی سکتا،البتہ مالی عبادات مثلاً جج کا ثواب دوسرے کو بہتی سکتا ہے،اصول میہ ہے کہ ایک شخص کاعمل دوسرے کے لئے نافع نہ ہو گر چونکدا ہا دین صحیحہ کی روسے صدفتہ کا ثواب بہبی یا جو سکتا ہے،اور جج بدل تھی کی واب کے سکتا ہے اس میں ہم اسی وعیت کی عبادات تک ایسال ثواب کی صحت شامیم کرتے ہیں۔

قرآن خوانی كاایصال ثواب:

اس کے برخلاف حنفیہ کا مسلک میہ ہے کہ انسان اپنے ہر نیک عمل کا ٹواب دوسر کے بہر سکتا ہے خواہ وہ نماز ہویا روزہ یا تلاوت قرآن ، یاذ کروصدقہ یا حج وعمرہ بیہ بات بکشرت احادیث ہے تا بت ہے ،صاحب صاوی نے مالی وبدنی عبادت کے ایسال تُواب کے جوازیرای آیت کے تحت گیارہ دلیلیں ملھی ہیں جن میں قر آن وسنت دونوں کی دلیلیں ہیں ،قر آن میں فر مایا وَاتَّابَ عَنْهُمْر ذرّ يُنْهُمْ بايمان والدين كے ايمان وقمل كى برولت اولا دكوان كے مرتبه ميں كَيْجَادِين بيستى غير كافائدہ ہے صالا تكہ والدين كے قمل وسعی میں اولا د کا کوئی حصہ نبیں ہے ، بینخ تقی الدین ابوالعباس احمد بن تیمیہ نے فرمایا کہ جس نے بیدا عتقا در کھا کہ انسان کوصرف اسی کے مل کا فائدہ اور شمرہ حاصل ہوگا ، اسے خرق اجماع کیا ، امام اعظم دخم کا مذاب کا بھی ہیں مسلک ہے۔ والطنی میں ہے کدایک شخص نے حضور بھوٹ ہیا ہے عرض کیا میں اینے والدین کی خدمت ان کی زندگی میں تو کرتا ہول ان کے انقال کے بعد کیے کروں؟ آپ نے فرمایا یہ بھی ان کی خدمت ہی ہے کہ ان کے مرنے کے بعد تو اپنی نماز کے ساتھ ان کے لئے بھی نمیاز پڑھنے اور اپنے روز ول کے ساتھ ان کیلے بھی روز ہے رکھے، دافطنی کی ایک دوسری روایت میں حضرت علی دَفِحانَنهُ مَعَالیَّجُهُ سے مروی ہے جس میں وہ بیان فرماتے میں کہ حضور نیف اللہ نے فرمایا ''جس شخص کا قبرستان پر گذر ہواور وہ گیارہ مرتبہ قبل ہو الله احد یڑھ کراس کا جرمرنے والول کو بخش دیتو (اس قبرستان میں) جننے مردے ہیں اتنا ہی اجرعطا کردیا جائے گا۔ بني ري مسلم ،مسنداحمد ، ابن ماجه ،طبر اني (في ١ . وسط) مستدرك اور ابن الي شيبه مين حضرت عا نَشه رَضِحَانلهُ تَغَاليَّا خَنَا ، الوهرمية يَضَالْمُنَا لَغَالِكُ ، حصرت جابر يَضَالْمُنَا لَعَالِكُ بن عبدالله ، حضرت ابورا فع يَضَالْمُنَا لَعَالَكُ ، حضرت ابوطلحه الصاري ، اور حذيفه بن اسيد الغفاري کی متفقه روایت ہے کہ رسول اللہ پیخٹی ہے وومینڈ ہے ئے را یک اپنی اور اپنے گھر والوں کی طرف ہے قربان کیااور د دسرااین امت کی طرف ہے۔

منام و بخاری، منداحمہ، ابوداؤداورنسائی میں حضرت عائشہ دَضِحَاللَّافَعَالِظَفَا کی روایت ہے کہ ایک شخص نے رسول اللّہ نیلافافیکا ہے۔ عرض کیا کہ میری والدہ کا اچا تک انتقال ہوگیا ہے، میرا خیال ہے کہ اگر انبیں بات کرنے کا موقع ملتا تو وہ ضرور صدقہ کرنے کے لئے کہتیں، اب اگر میں ان کی طرف سے صدقہ کروں تو کیا ان کے لئے اجرہے؟ فرہ یا ہاں!

< (فِئْزَمُ بِبَلْثَهِ إِ

یہ کثیرروایتیں جوایک دوسرے کی تائید کررہی ہیں اس امر کی تقریح کرتی ہیں کہ ایصال تو اب نہ صرف ممکن ہے بلکہ ہرطرت کی عبادات اورنیکیوں کے تو اب کا ایصال ہوسکتا ہے اور اس ہیں کسی خاص نوعیت کے اعمال کی تخصیص نہیں ہے۔

ايصال عذاب ممكن نهيس:

ایصال تُواب توممکن ہے مگر ایصال عذاب ممکن نہیں ، یعنی بہتو ہوسکتا ہے کہ آ دمی نیکی کرکے سی دوسرے کے لئے اجر بخش و ہے اور وہ اس کو بہنچ جائے مگر رہنیں ہوسکتا کہ آ دمی گناہ کر کے اس کاعذاب کسی کو بخش دے اور وہ اسے بہنچ جائے۔

خالص بدني عبادات ميں نيابت اوران كاايصال تواب:

خالص مالی عبادات یا مالی اور بدنی عبادات سے مرکب عبادات میں نیابت اور ایصال تواب کا واضح شوت ملتاہے، اب ر ہیں خالص مدنی عبادات میں نیابت اور ایصال تُواب کا ثبوت تو بعض احادیث الیم بھی ہیں جن سے اس نوعیت کی عبادات میں نیابت کا جواز ثابت ہوتا ہے،مثلا ابن عماس تَعَمَّلْكُ تَعَالْتَ كُنَّا لَيْتُكُا كَا يدروايت كه قبيله جهينه كى ايك عورت نے حضور فَالْقَاعَةُ الله ا در یافت کیا کہ میری ماں نے روز ہے کی نذر مانی تھی اور وہ بوری کئے بغیر مرگئی ، کیا ہیں اس کی طرف ہے روز ہ رکھ سکتی ہوں ، آپ نے فر مایا اس کی طرف سے روز ہرکھ لے۔ (بعداری ومسلم ، احمد انسائی ، ابو داود)

اور حضرت بریدہ تعُحَالِنْلُمُ تَعَالَتُ کی بیروایت کہ ایک عورت نے اپنی مال کے متعلق ہو چھا کہ اس کے ذمہ ایک مہینے کے روزے (یا دوسری روایت کے مطابق دومہینے) کے روزے تھے، کیا میں بیروزے ادا کردول؟ آپ نے اس کو بھی اس کی اچ زے وی ۔ (مسلم، احمد، ترمذی، ابو داؤد)

اور حضرت عائشكى بيروايت كرآب ينتن الماسي فرمايامن مات وعَلَيْهِ صِيامٌ صَامَ عنه وليه جوفض مرجائ اوراس ك ذ مدروز ہے ہوں تواس کی طرف ہے اس کاولی روز ہے رکھ لے۔ (بخاری مسلم، احمد) ہزار کی روایت میں حضور پین ایک الفاظ بید بين فَلْيَعَسَمْ عَنْهُ وليُّهُ إِنْ شَاءَ لِعِنَ الرَّاسَ كَاولى جايتِ وَاسْ كَى طرف سے روزے ركھ لے النبى احاديث كى بناء يراصحاب الحديث، اورامام اوزاعي اور ظاہر بياس كے قائل بيل كه بدني عبادات ميں بھي نيابت جائز ہے، مگرامام ابوصنيفه، امام مالك، اورامام شانعی اورا ہام زید بن علی کا فتویٰ بہ ہے کہ میت کی طرف ہے دوزہ جمیں رکھا جا سکتا ،اورا ہام احمد ،امام لیث اورا پخق بن را ہو بہ فر ہ تے میں کہ صرف اس صورت میں ایسا کیا جا سکتا ہے جب مرنے والے نے اس کی نذر مائی ہواوروہ اے بورانہ کر سکا ہو۔

مانعتين كااستدلال:

مانعین کا استدلال بیہ ہے کہ جن احادیث ہے اس کے جواز کا ثبوت ملتا ہے ان کے راویوں نے خود اس کے خلاف فتوى ديا ہے، حضرت ابن عباس كافتوى نسائى في ان الفاظ بين تقل كيا ہے لا يصل آحدٌ عَنْ أَحَدٍ وَ لَا يَصُمْ أَحَدٌ عَن روایت کےمطابق بیہ کیا تصومُوّا عَنْ موتاتُکُمْ و اَطعِمُوا عَنْهُمْ اینے مردول کی طرف سےروز ہندر کھو بلکہ ان کی طرف ہے کھانا کھلا ؤ،حضرت عبداللہ بن عمرے بھی عبدالرزاق نے یہی بات بھل کی ہے اس ہےمعلوم ہوتا ہے کہ ابتداءً بدنی عبادات میں نیابت کی اجازت بھی، گلرآ خری تھم یہی قرار پایا کہ ایسا کرنا جائز نہیں ہے، ورنہ کس طرح ممکن تھا کہ جنہوں نے رسول اللہ ﷺ لا تھا ہے ہیا جادیث تقل کی ہوں وہ خودان کے خلاف فتویٰ دیں۔

فَا فَكِناكاً: اس سسلد ميں يه بات سمجھ ليني حامية كريف كريف كى ادائيكى كے قاملين كے زد يك مجى نيابة ادائيكى صرف اى صورت میں مفید ہوسکتی ہے جبکہ وہ خود اوائے فرض کے خواہشمندر ہے ہوں اور معذوری کی دجہ سے قاصر رہ گئے ہوں کیکن اگر کوئی سخص استطاعت کے باوجود قصداً مثلاً حج ہے مجتنب رہااوراس کے ول میں اس فرض کا احساس تک ندتھااس کے لئے خواہ کتنے ہی جج بدل کئے جائیں وہ اس کے حق میں مفید نہیں ہو سکتے ، بیابیا ہی ہے کہ ایک شخص نے کسی کا قرض جان بوجھ کر مارر کھا ہے اور مرتے دم تک اس کا کوئی ارادہ قرض ادا کرنے کا نہ تھا اس کی طرف سے اگر قرض ادا کر دیا جائے ، التد تعالیٰ کی نگاہ میں وہ قرض مار نے والا ہی شار ہوگا ، دوسرے کے ادا کرنے سے سبکدوش صرف وہی شخص ہوسکتا ہے جواین زندگی میں اوائے قرض کا خواہشمند ہوا ورمجوری کی وجہ سے ادائہ کرسکا ہو۔ (والله اعلم بالصواب)

وَاَدَّ سَعْيَهُ سَوْفَ يُرى (الآية) لِين دنيا مِن السين جوبھی احجا يابرا کيا حجب کرکيا ياعلانيد کيا قيامت کے دن سامنے آ جائے گا اس براہے بوری جزاءدی جائے گی۔

وَانَّاهُ هُوَ أَضْحَكَ وَأَبْكُني لِعِنْ خُوشَى اورَغَى دونول كاسباب اسى كى طرف سے بي اچھى اور برى تسمت كامررشته اس کے ہاتھ میں ہے کسی کوا گرراحت اورمسرت نصیب ہوتی ہے تو اس کے دینے سے ہوتی ہے اور اگر کسی کومصائب وآلام ے سابقہ پڑتا ہے تو اس کی مشیعت سے پڑتا ہے، کوئی دوسری ہستی اس کا سنات میں السی تبیس کہ جوقستوں کے بنانے اور بگاڑنے میں کسی تشم کا دخل رکھتی ہو۔

وَأَنُّكُ هُو الشُّعُلْى واقللَى اغناء كمعنى دوسر كوفئ كرنااور الصَّلْى قُنْدَةٌ مَنْ مُسْتَقَ بِ صِل كمعن محفوظ اور ریز روسر ماہیے میں مرادآیت کی بیہ ہے کہ اللہ تعالیٰ ہی لوگوں کو مال داراورغنی بنا تا ہے اور وہی جس کو جا ہے اتنا سر ماید ویتا ہے کہ اس کوذ خیرہ کر سکھے۔

وَأَنَّهُ هُو َ رَبُّ الشِّعْرِي شِعرِي شَعرِي كَسِن كِرَس ه كِهاته ايك ستار كانام بِجوجوزاء ستار ب كي يجهير بهتا بعرب کی بعض قومیں مثلاً بنوخز اعداس کی برستش کرتی تھیں اس لئے خصوصیت ہے اس کا نام لے کر بتلایا گیا ہے کہ اس ستارے کا بھی جس کی تم پرستش کرتے ہو مالک اور پروردگاراللہ تعالیٰ بی ہے۔

وَانَّاهُ أَهْلَكَ عَادَن الْأولني وتُهُودَا فَمَا أَبَقي "عاداولي" عمرادنديم توم عادب بس كاطرف حضرت مود عَلَيْهُ لَا اللَّهُ اللَّهُ اللَّهِ عَلَى مَا وَهُ مِنَا كَي قُوى ترين اور سخت ترين قوم تھي ان كے دو طبقے كے بعد ديگرے عاد اولي اور عاد اخرىٰ كے نام ہے موسوم ہیں بیقوم جب حضرت ہود علیق کا اللہ اللہ کا اس میں طوفان کے عذاب کے ذریعہ ہلاک کردی گئی، قوم

نوح کے بعد ہداک ہونے واٹی میر بہلی قوم ہے ای کو عادِ اولیٰ کہتے ہیں ،صرف وہ لوگ بچے تھے جو حضرت ہود عَلَیْجَلاہُ والنہ کا پرای ن لائے تنے ان کی نسل کو عادِ اخری یا عادِ ثانیہ کہتے ہیں ، عادِ اخریٰ حضرت صالح عَلَیْجَلاہُ وَلِیْتُوں کی قوم تھی ، ان لوگوں نے بھی جب حضرت صالح عَلیٰجُلاہُ وَلِیْتُوں کی نافر مانی کی تو ان کو تخت آواز کے عذاب سے ہلاک کردیا گیا۔

وَالسه وَ مَنْ فِكُةَ اَهُوى ، مُهُو ته فِكَة كِلغوى معنی اوندهی ہونے والی بستیاں ، یہ چند بستیاں متصل متصل تھیں ان کامر کزی مقام سدوم یا سندوم تھا، یہ وہی مقام ہے جہاں اس وقت بحرمیت واقع ہے، ان بستی والوں کی طرف حضرت ابراہیم علاقۃ النظالا والنظالا کی منزامیں ان بستیوں کو حضرت جرئیل نے است دیا تھا، اور اوپر سے ان کے اوپر پھروں کی بارش کردی تھی۔ اسٹ دیا تھا، اور اوپر سے ان کے اوپر پھروں کی بارش کردی تھی۔

فَعَشْهَا مَا غَشْی، لیمٰ وُهانپ لیاان کوجس چیز نے ڈھانپ لیامرادوہ پھراؤے ہوبستیاں اپنے کے بعدان پر کیا گی، یہال تک صحف موکٰ اور صحف ابراہیم کے حوالہ ہے جو تعلیمات بیان کرنی تھیں وہ ختم ہوگئیں۔

هلذَا نَدِیْتُ مِّنَ النَّلُو الْاُولِیٰ هذا کااشارہ محمد رسول اللّہ ﷺ یاقر آن کی طرف ہے، مطلب یہ ہے کہ یہ میں پہلے رسولوں اور کتابوں کی طرح اللّٰہ تعالیٰ کی طرف ہے نذیر بنا کر بھیجے گئے ہیں جودین اور دنیا کے فلاح پرمشتمل ہدایات لے کرآئے ہیں اوران کی می لفت کرنے والوں کواللّٰہ کے عذاب ہے ڈراتے ہیں۔

اَذِفَتِ الآذِفَةُ اَذِف بَمِعَىٰ قَرُبَ لِينِ قريب آنے والى قريب آئينى ،الله كيسوااس كاكوئى ہانے والانہيں ،مراد قيامت بهان آيت ميں قرب قيامت كى فيردى گئي ہتا كہلوگ عمل كر كے قيامت كے لئے تيارى كريں ،مطلب يہ ہے كہ يہ خيال نه كروكہ سوچنے كے لئے ابھى بہت وقت پڑا ہے ،كيا جلدى ہے؟ كہان باتوں پر ہم فورا ہى شجيدگى سے فوركريں اورانہيں ،نے يہ نہ وقت نہ كابل تا خيرفيصلہ كرواليس نہيں ہم ميں ہے كى كوئى يہ معلوم نہيں ہے كہ اس كے لئے زندگى كى تنى مبلت باقى ہے ، ہروقت تم ميں سے كركى كى موت آسكتى ہو اور قيامت بھى اچا تك آسكتى ہے ،اس لئے فيصلہ كى گھڑى كودور نہ جھو ،كوئكہ ہرسانس كے بعد يہ مكن ہے كہ دومراسانس لينا نصيب نہ ہو ، اور جب يہ فيصلے كى گھڑى آجائے گي تو تم اس كوروك نہ سكو گے ، اور نہ تہمارے معدودان باطلہ ميں ہے كہ وروا ان باطلہ ميں ہے كہ ووا ہے تالے ہوا كيس تال سكتا ہے تو اللہ بى تال سكتا ہے ، اور وہ اسے تالے ميں تال سكتا ہے ، اور وہ اسے تالے والانہيں۔ اللہ مورا اللہ ميں ہے كہ ميں يہل ہوتا ہے كہ وہ اس كوران باطلہ ميں ہے مواور بطوراستہزاء كے اللہ ما المي جو خودا كے مجمور ہے تم ہارے سامنے آجا ہے ، كيا اس پر بھى تم تعجب كرتے ہواور بطوراستہزاء كے بيں كہ قر آن كريم جيسا كلام المي جو خودا كے مجمور ہے تم ہارے سامنے آجكا ہے ، كيا اس پر بھى تم تعجب كرتے ہواور بطوراستہزاء كے بيں كہ قر آن كريم جيسا كلام المي جو خودا كے مجمور ہے تم ہارے سامنے آجكا ہے ، كيا اس پر بھى تم تعجب كرتے ہواور بطوراستہزاء كے بيں كہ قر آن كريم جيسا كلام المي جو خودا كے مجمور ہے تم ہار ہے سامنے آجكا ہے ، كيا اس پر بھى تم تعجب كرتے ہواور بطوراستہزاء ك

ح (نَعَزَم پَسَلشَرِنَ)> ---

ہنتے ہواورا پی معصیت یا عمل میں کوتا ہی پررو ہے جبیں۔

وَ أَنْتُمْ سَامِدُونَ ، سمود كم عنى غفلت اور فكرى كي بين سامِدُونَ بمعنى غَافلون إورايك معنى مودك كان کے بھی آتے ہیں وہ بھی اس جگہ مراد ہو سکتے ہیں (معارف)اً سرامدو ں کے دوسرے معنی مراد لئے جائیں تو اشار ہاس طرف ہوگا کہ کفار مکہ قر آن کی آواز کود بانے اورلو گوں کی توجہ دوسری طرف بٹانے کے لئے زورز ورہے گانا شروع کر دیتے تھے۔ فَ الْسَاجُةَ لُوْ اللَّهُ وَاغْبُدُوْ الْبِينَ حِجِيلَ آيات جوغوركرنے والے انسان وعبرت وموعظت كاسبق ديتي ہيں اس كامقتصىٰ بيد ہے کہتم سب اللہ کے سامنے خشوع اور تو اضع کے ساتھ جھکوا ورسجدہ کرواور صرف اس کی عبادت کرو۔

تصحیح بخاری میں حضرت ابن عباس تعکمالنے تکا التی کا سے روایت ہے کہ سور ہو تجم کی اس آیت پررسول اللہ بین خلالے کا نے سجدہ کیا اور آپ کے ساتھ مسلمانوں اور مشرکوں اور تمام جن وانس نے سجدہ کیا، عبداللہ بن مسعود رَصِّفَائلة النَّهُ كى دوسرى روایت میں ہے کہ تمام حاضرین نے تجدہ کیا تگرصرف ایک قریشی بوڑھے نے جس کا نام (امیہ بن خلف) ہے تجدہِ نہ کیا بلکہ زمین ہے مٹی اٹھ کر بیشانی ہے لگالی ،اور کہا مجھے یہی کافی ہے،حضرت عبداللہ بن مسعود نے فر مایا پھر میں نے اس شخص كوحالت كفرمين مقتول يزاهواديكها_

صَيَحَالُمُنَّ: امام ابوصنيف رَيِّمَ كُلاللَّهُ مَعَالَنْ ،امام شافعی رَبِّمَ کُلاللَّهُ مَعَالَنْ اورا كثر ابل علم كز ديك اس آيت پر بجده كرنا لازم ہے،امام ما لک رَیِّمَ کُلاللّٰمُ نَعَالیٰ اگر چیخوداس آیت کی تلاوت کے بعد تجدہ کا التزام فرماتے نتے (جبیبا کہ قامنی ابو بکرابن العربی نے احکام القرآن میں نقل کیا ہے) مگران کا مسلک بیتھا کہ یہاں تجدہ کر تالا زمنہیں ہے ،ان کی اس رائے کی بناء حضرت زیدین ثابت کی بدروایت ہے کہ میں نے رسول القد بلائے ہیں کے سامنے سور ہ مجم پڑھی اور حضور نے سجدہ نہ کیا (بخاری مسلم ،احمد ،تر مذی ،ابودا ؤد ، ن کی کیکن بیصدیث مجدہ لازم ہونے کی کفی نہیں کرتی کیونکہ زیادہ سے زیادہ اس روایت سے بیٹا بت ہوتا ہے کہ آپ بیٹی میں نے اس وقت محدہ تبیں کیالیکن بعد میں بھی محدہ نبیں کیا ہے ثابت نبیں ہوتا ، بیاختیل موجود ہے کہ آپ نے بعد میں محدہ کرلیا ہو، دوسری روایات اس باب میں صرح میں کہ اس آیت پر التز اما سجدہ کیا گیا ہے۔

حضرت عبدالله بن مسعود رَفِحَالْمُنْهُ مَعَالِينَةُ ، ابن عباس حَعَالِنَاتُهُ كَالنَّحِيَةُ اورمطلب بن الى وداعه كى متفق عليه روايات بيه ميس كه آنخضرت ﷺ نے جب پہلی مرتبہ حرم میں بیسورت تلاوت فرمائی تو آپ نے تجدہ کیا اور آپ کے ساتھ مسلم ومشرک سب سجدہ میں گر گئے (بخاری ، احمد ، نسائی) ابن عمر رفع کا نشائظ کی روایت یہ ہے کہ حضور نے نماز میں سور و مجم پڑھ کرسجدہ کیا اور دہر تک سجدہ میں پڑے رہے۔ (بیہ بی ،ابن مردویہ) سبرۃ انجہنی فرماتے ہیں کہ حضرت عمر رُصحانتانکا کے نے فجر کی نماز میں سورہ عجم پڑھی اور مجده کیااور پھراٹھ کرسور و زلزال پڑھی اور رکوع کیا۔ (سعیدیں مصور)

فَاعِكَرَاقَ : كِيلَ مورت جس مِن آيت تجده نازل موئى وهسورهُ تجم بـ (معارى)

مُسْتُعُكُمُ اللَّهُ يت يرتجدهُ تلاوت واجب ب-

مسئلاً ، بدورست نبیل که جس چیز پر تجده کرے اس پر جھکنے کے بجائے اس بنی کو بلند کرے۔

مُرَجُّ الْقِيْرُولِيَّةُ وَكُوْنَ مِنْ فَيَ الْمُنْ ا

سُوْرَةُ القَّمَرِ مَكِّيَّةُ اللَّسَيُهُزَمُ الْجَمِّعُ، (الأية)، وَهِي خَمْسٌ وَخَمْسُوْنَ ايةً.

سورہ قمر کی ہے، سوائے سیھنے کم الجمع پوری آیت کے اوروہ ۵۵ آینیں ہیں۔

على أبى تُبَيس وتُعَيِّقِن الدَّه له صلى الله عليه وسلّم وقد سُبلها فقال الشهدوا، رواه الشيخان وَالْنَيُّوْا على الله عليه وسلّم كَانْشِقَاقِ القَمْر يُّعْرِضُوا وَيَعُوُوُا هذا يَعْمُ صَيْبَعُوْق وَيْ لَا الله عليه وسلّم كَانْشِقاق القَمْر يُّعْرِضُوا وَيَعُوُوُا هذا يَعْمُ صَيْبَعُوْق وَيِّ وَيِّ لَمِ البِرَةِ القَرِّةِ الوَيْهِ وَلَيْهُ مُعْجَزَة له صلى الله عليه وسلم وَالتَّيُّوُالْهُوَاءُهُمْ فَى البَاطِل وَكُلُّ النّبي صلى الله عليه وسلم وَالتَّيُّوُالْهُوَاءُهُمْ فَى البَاطِل وَكُلُّ المَّهِ بِنَ الخَيْرِ وَالشَّمَ عليه وسلم وَالتَّيُّوُالْهُوَاءُهُمْ فَى البَاطِل وَكُلُّ المَّهِ بِنَ الخَيْرِ وَالشَّمُ مَكُن اللّهُ عليه وسلم وَالتَّيُّولَ الْهُوَاءُهُمُ فَى البَاطِل وَكُلُّ المَّيْرِ بِنَ الخَيْرِ وَالشَّمُ مَكُن والدَّالُ بَدَلٌ مِن تَاءِ الإِفْتِعَالِ وَإِدْ حَرَدُهُ وَرَجُرَدُهُ فَهُاتُونَ بَعَلُوهِ وَالمَّالُونَ مَنْ الوس مُؤَدِّ وَرَجُرَدُهُ فَهُاتُونَ تَنْعُمُ مَلَى وَالدَّالُ بَدَلٌ مِن مَا أو مِن مُؤدَجَر بَالْعَهُ تَامُّة فَمَاتُونِ تَنْعُمُ وَاللَّهُ مَا البَعْمُ وَالْمَامُ اللَّهُ مِنْ مَا الله مِن مُؤدَجَر بَالْعَهُ مَا النَّانَ وَلَيْدَة مُنَا وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ مَا اللَّهُ وَاللَّهُ مَا اللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ وَلَا لَامُعُولُ اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَاللَّهُ وَالْمُولُ اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَ

والجُمنَةُ حالٌ من فَاعِلِ يخْرُجُونَ وكذا قولُه مُّهْطِعِينَ اي مُسرعِينَ مادِي أَعْنَاقِهِم إِلَىالدَّاعُ يَقُولُ الْكَلْفِرُونَ سهم هٰذَايُومُّعَيِّ اى صغبٌ على الكَافِرِينَ كما فِي المُدثر يَوُمٌ عَسِيرٌ علَى الْكَافِرِينَ كَذَّبَتُ قَبْلُهُمْ قبلَ قُرَيْشٍ قَوْمُرُنُوجٌ تَانيتُ الفِعْلِ لمَعْنَى قومٍ فَكُذَّبُواعَبُدَنَا نوحًا وَقَالُواْمَجُونُ وَّالْهَادُجُونَ وَالْهَالْمُ الْمُعْنَى الْمُعْنَى ومِ عَكَذَبُواْعَبُدُنَا نوحًا وَقَالُواْمَجُونُونَ وَالْهِرُونَ اللَّهُ اللَّهِ عَلَى الْمُعْنَى ومِ اللَّهِ عَلَى اللَّهُ اللَّهِ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ اللَّهِ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللّ وغيره فَدَعَارِيَّهُ ۚ إِنِّي بِالنَّفَتُ عِلَى بِأَنِي مَغُلُوبٌ فَانْتَصِرْ فَقَتَحْنَا بِالتَخْفِيفِ والَشْدِيدِ أَبُواْبَ التَّمَاءِ مُمَا عِثْنَهُمِيْ سُصَبِ إِنْصِبَانُ شِدِيدًا وَّفَجَّرُنَاالْاَضَ عُيُونًا تَنْبَعُ فَالْتَقَى الْمَاءُ السَّماءِ والارْضِ عَلَى آمَرٍ حالِ قَدُقُدِرَ اللهِ في الأزَلِ وهُ وهَلَا كُهُم عَزُقًا وَتُمَكِّنَهُ اى نوحًا عَلَى سَفِينَةِ ذَاتِ ٱلْوَاحِ وَدُسُرِ وهي ساتُنسَدُب الْالُواحُ مِنَ المَسَاسِيرِ وغيرِها واحِدُها دِسَارٌ كَكِتَابِ مَجَرِي بِأَعَيْنًا لَا بِمَرأَى سِنَا اى مَحْفُوظَة بجفُظِنَا جَرُكُا لَا مَنْسُوبٌ بِفِعلِ مُقَدِّرِ اى أُغُرِقُوا إِنْتِصَارًا لِمُنْكَانَكُمْقِرَ وهُو نـوحٌ عنيه السلام وقُرِئ كَفَرَ بِنَاءً لِلفَاعِلِ اى أُغُرِقُوا عِقَابًا لِهِم وَلَقَدُ تَرَكَّنُهَا اللهِ اللهِ اللهِ عَلَهُ أَيَةً لَمَن يَعْتَبِرُبها اي شاغ خَبَرُهَا واسْتَمَرَ فَهَلُ مِنْ مُكُرُوكُ مُعْتَبِر ومُتَّعِظِ بِها واصلُه مُذُتَكِرٍ أَبُدِلَتِ التَّاءُ دالاً مهمَلَةً وكذا المُعجَمَةُ وأَدْغِمَتُ فيها فَ**كَيْفَكَانَ عَذَا إِنْ وَنُذُرِ** اي إنْـذَارِي إستفهامُ تَقْرِيرٍ وكيفَ خبرُ كانَ وهِيَ لِلسُّوالِ عنِ الحالِ والمدني حَمْلُ المُخَاطَبِينَ على الإقْرَارِ بـوُقُـوع عـذَابِه تعالى بالمُكَذِّبِينَ بنُوحِ مَوْقِعَهُ ۖ وَلَقَدُيكُونَاالَقُرُانَ لِلدِّكْرِ سَهَـلناهُ لِلُحفَظِ او هيَّانَاهُ لَعَّذَكُرِ فَهَلَ مِنْ مُّذَّكِرٍ اللهِ عَلَيْ به وحَافِظ له والإستفهامُ بمعنى الأمرِ اي إحْفَظُوه واتَّعِظُوا ولَيُسَ يُحُفَظُ من كُتُبِ اللَّهِ عن ظَهَرِ القَلْبِ غيرِه كَذَّبَتَّعَادُ نَبِيَّهُم هُودًا فَعُذَّنُدِ ' قَكَيْفَكَانَ عَذَالِي وَثُكْرُهِ اي إِنْذَارِي لهم بِالعَذَابِ قَبُلَ نُزُولِه اي وَقَعَ مَوْقِعَه وبيَّنَه بِقوله إِنَّا آزَيْمَلْنَاعَكِيِّهِمْ الْيَحَّاصُوصَرًا اي شدِيد الصّوتِ فِي يُوْمِرِنَحْسِ شَوْمٍ تُمُسْتَمِرِ فَ دائِمِ الشومِ أو قَوِيَة وكَانَ يومَ الأربعاءِ اخِرَ الشّهرِ تُنْفِعُ النّاسُ تَقْلَعُهم مِن حُفَر الأرْضِ المُندَسِّينَ فيها وتصرَعُهم على رُوَّسهم فتدُقُّ رِقابَهُم فتبينُ الراسُ عنِ الجَسَدِ كَ**أَنْهُمْ** وحَالهِم ماذُكِرَ أَعْجَازُ أَصُولُ نَخْتِلُمُنْقَعِينَ مُنْقَلِع ساقِطٍ على الارضِ وسُبَهُوا بالنَّحُل لِطُولِهِم ذُكِرَهُنَا وأَيْنَ فِي الحَاقَةِ نَتْخُلِ خَاوِيَةٍ شُرَاعَاةً لِلفَوَاصِلِ فِي المَوضِعَينِ فَكَيْفَكَانَ عَذَالِي وَنُذُرِ ® وَلَقَذَيْتُ رَبَّا ع الْقُرْانَ لِلذِكْرِفَهَلُ مِنْ مُذَكِّرِفُهُ

< (مَزَم بِبَلشَهِ

دائم ب(سابق سے چلا آنے والا) اور ان لوگوں نے نبی ایکھیٹ کی تکذیب کی اور باطل میں اپنی خواہشات کی پیروی کی اور ہر کام خواہ خیر ہو یا شراس کے مستحقین پر جنت یا دوزخ میں داقع ہونے والا ہے،اور بقیناً ان کے پاس اینے رسوبوں ک تكذيب كرنے والوں كى خبرين آچكى ہيں جن ميں ان كے لئے جھڑك ہے (ھنز دجو) اسم مصدر بے يااسم مكان ہے اور دال تائے افتعال سے بدلی ہوئی ہے اور از دجو ته، زجو ته کے معنی میں ہے، میں نے اس کو تی سے جھڑک دیا، اور ما موصولہ ہے یا موصوفہ اور قرآن کامل عقل کی بات ہے لیکن ان کو ڈرانے والی باتوں نے بھی کوئی قائدہ ہیں دیا نے ذر نذیر کی جمع ہے معنی كا) مفعول مقدم ہوگا سواے نبی آپ ان ہے اعراض كريں يا ماقبل كا فائدہ ہے اوراس بركلام تام ہوا جس دن ايك يكار نے والداليك نا كوار چيزى طرف يكارے كاوه اسرافيل ب،اور يوم كاناصب بعديس آنے والا يخرجون بنكر كاف كے ضمہ اور سکون کے ساتھ ہے بعنی ناپسند بیرہ فئی جس کو نفوس اس کی شدت کی وجہ سے نا گوار سمجھتے ہوں اور وہ حساب ہے بیلوگ ذلت کے ساتھ نظریں نیچے کئے ہوئے اور ایک قراءت میں ٹھنٹ ٹیا خاء کے ضمہ اورشین مشدد کے ساتھ ہے، قبروں سے تیزی ہےنگل پڑیں گے خُشَعًا، یَنحوجو نَ کی ضمیر فاعل ہے حال ہے گویا کہ وہ پھیلی (منتشر) نڈیاں ہیں وہ خوف اور حیرت کی وجہ سے ریکھی نہ بھھر ہے ہوں گے کہ و وکہاں جارہے ہیں؟ اور جملہ ، بَسْخور جُونَ کے فاعل سے حال ہے اور اس طرح اللد کا قول مُفسطِعِیْنَ ہے یعنی تیزی ہے گردن اٹھائے ہوئے دائی کی طرف نکل پڑی گے،ان میں سے کافر کہیں گے بيخت دن بيعن كافرول پر سخت ب جيها كرسورة مرثر مين يَوْمٌ عَسيرٌ على الكافوينَ بان سے يعن قريش سے پہلے تو م نوح نے بھی ہمارے بندے نوح کوجیٹلا یا تھااورمجنون کہہ کرجیٹرک دیا تھا بیٹن گالی وغیرہ دے کر ڈانٹ دیا تھا، پس اس نے اپنے رب سے دعاء کی آئیں فتحہ کے ساتھ لیعنی ہائیں ہے میں بے بس موں تو میری مدد کرتو ہم نے آسان کے درواز وں کو زوردار (بہنےوالے) پانی کے لئے کھولد یا فَ فَدَ خُول ا تاء کی تخفیف اور تشدید کے ساتھ ہے، پس ہم نے زمین کے چشموں کو جاری کردیا تو زمین ہے چشمے اہل پڑے پھریانی مل گیا بعنی آسان اور زمین کا یانی اس حالت پر ہوگیا کہ جس حالت پر ازل میں مقدر کردیا گیا تھا اور وہ حالت ان کا غرق ہوکر ہلاک ہونا ہے اور ہم نے نوح علیج لاڈوالٹ کئو کو آختوں اور میخوں والی ممشق پر سوار کردیا کُسُر وہ چیز جس کے ذریع تختول کوجوڑ اجائے ، میخیں وغیر «اس کا واحد دِسَارٌ ہے جیسے (ٹُکٹُب) کتاب کی جمع ہے جو ہماری نگرانی ہماری نظروں کےسامنے یعنی ہماری حفاظت میں چل رہی تھی ان کو اس مخص کے انتقام میں غرق کرویا گیا جس كى ناشكرى كى كنى، جزاءً تعلى مقدر كى وجد ي منصوب ب، اى أغر قبوا إنتهارًا (انتقامًا) اورو يَحْصُ نوح تها، كَفَرَ كو معروف بھی پڑھا گیا ہے، یعنی ان کوغرق کر دیا گیا ان کے نافر مانی کرنے کی وجہ سے بے شک ہم نے اس کو یعنی فعل (واقعہ) کونشانی بنا کر باقی رکھا اس شخص کے لئے جواس واقعہ ہے عبرت حاصل کرے، لیعنی اس واقعہ کی خبر شائع ہوگئی اور باقی رہ گئی ، پس کیا کوئی ہے نصیحت حاصل کرنے والا بعنی عبرت ونصیحت حاصل کرنے والا (مُدّ کو) کی اصل مُذْتَکر ہے تا ،کودال مہملہ ہے ح (زَمَزَم بِهَاشَرَ ﴾ -

بدل دیا گیا، ای طرح ذال مجمد کودال سے بدل دیا گیا اور دال کودال میں ادعام کردیا گیا سوکیسار ہامیر اعذاب اور ڈرانا نڈر

معنی انسسندادی ہے، استفہام تقریری ہے، اور کیف کان کی خبر ہے، اور کیف طالت سے سوال کرنے کے بئے ہوا

معنی (آیت کے) می طبین کونوح علائلا اللہ کے مکذبین پر وقوع عذاب کے اقرار پرآمادہ کرتا ہے کہ عذاب برمحل واقع ہوا

،اوراس کواپنو تول اِنَّا اَدْ سَلْمَنَا الله سے بیان فر مایا کہ ہم نے ان پرائیک شخوں دن میں دائی نحوست والی تیز و تند مسلسل چنے

والی یا قوی ہوا جیجی یعنی شخت آواز والی اور وہ صبینے کا آخری چہار شنبہ تھا، جو گڑھوں میں چھیے ہوئے لوگوں کو (بھی) نکال کر

پینی ان کا ندگورہ حال ایسا تھا گویا کہ وہ زمین پر پڑے ہوئے مجمورے کئے ہوئے سے بین اور ان کے دراز قد ہونے کی وجہ

سے ان کو بھوروں کے تنوں سے تشہید دی مے فن کو یہاں ندکر اور سورہ حاقہ میں مونث دونوں جگرفو اصل کی دع بیت کی وجہ سے

ندخول خیاویہ مونث ذکر کیا ہے تو کیسار ہامیر اعذاب اور ڈرانا؟ اور بے شک ہم نے قرآن کو فیصحت کے لئے آس ن کردیا

پی ہے کوئی فیصحت حاصل کرنے والا۔

جَِّقِيقَ فَيَرَكِيكِ لِيَسَهُ الْحَقَيْلِيكِ فَوَائِل

فَيُولِلَى اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ ا

جِهُ الْبُعْ: قرب كَ معنى بين مبالغه ظاہر كرنے كے لئے ،اس لئے كه زيادتى حروف زيادتى معنى پرولالت كرتى ہے۔ چَهُولْتَى ؛ اِنْشَقَّ الْفَصَدُّ تيسرى اور چودھويں شب كے درميانی جائد كوقمر كہتے ہيں ،اس سے پہلے كے جائدكو ہلال اور چودھويں شب كے جاندكو بدر كہتے ہيں۔

قمر ہمارے نظام مشمی کا قریب ترین سیارہ ہے، سابقہ تحقیق کے مطابق قمر زین سے دولا کھ جالیس ہزار میل کی مسافت پر واقع تھا، گراب جدید تحقیق کے مطابق زمین سے جاند کا فاصلہ دولا کھ چھیس ہزار نوسوستر اعشاریہ نومیل ہے، اس سے پہلے اتن سمج پیائش بھی نہیں کی گئی تھی جو کیلی فور نیا (امریکہ) کی یو نیورٹی کی رصدگاہ سے چھوڑے گئے اپالوگیارہ میں نصب کئے گئے مسافت پیا آلے کے ذریعہ کی گئی ہے اپالوگیارہ ۱۹ جولائی بروز چہارشنبہ ۱۹۲۹ء کوخلائی سفر پردوانہ ہوا تھا۔ (ملکہان حدیدہ)

قِحُولَ الله عَن او دائم اس اضافه کامقصد مُستَمِو کے معنی کو بیان کرنا ہے، مضرعلام نے مُستَمِو کے دومعنی بیان کے بیں ، اول بمعنی توی ، اس صورت بیں مِسرَّة سے ماخوذ ہوگا اس لئے کہ مِسرَّة کے معنی توت کے بیں ، جب امر توی اور مشکم بوج تا ہے تو بولا ج تا ہے ، اِسْتَمو الشی ای قوی و اسْتَحکم مطلب بیہ کہ بیر اطاقتور جادو ہے ، دوم بمعنی دائم اس صورت بیں استمرار سے مشتق ہوگا جس کے معنی ہیں دائی یا سابق سے چلا آر ما، مطلب بیہ ہے کہ محمد نے شب وروز کی

- ه (زَمَزُم بِهَالمَهْلِ ﴾

جادوگری کا جوسلسلہ چلار کھاہے ہے بھی اس کی ایک کڑی ہے، نہ کورہ دومعانی کے علاوہ مُستسمِر ﷺ کے دومعنی اور بھی ہیں جن کوبعض مفسرین نے اختیار فرمایا ہے، (اول) گذر جانے والا ،فنا ہوجانے والا ،باتی ندر ہنے والا ،اس صورت میں مسارٌ جمعنی ذاهِب سے مشتق ہوگا ،اس صورت میں مطلب بیہوگا کہ جس طرح اور جادوگذر گئے بیجی گذر جائے گا اس کا اثر بھی در یا نہ ہوگا (دوسرے) معنی بدمزہ ناخوشگوار ،کڑوے کے ہیں ،اس صورت میں مُسسٹ ٹے ہے شنق ہوگا جس کے معنی کڑوے کسیلےاور بدمزہ کے بیں،اس صورت میں مطلب یہ ہوگا کہ جس طرح کڑوی اور بدمزہ چیز طلق سے پنچی ہیں اتر تی ای طرح محمد کی ہاتیں اور معجز ہے بھی ہمارے حلق ہے نہیں اتر تے۔

لَيْكُولُكُ: كَذَّبوا كاعطف يُغْرِطُوا رِب، معطوف عليه مضارع باور معطوف ماضى ،اس ميس كي نكته؟ جِجُولُ بْنِعْ: اس مِين مُلته بيه به كه ماضى كاصيغه لا كراشاره كرديا كه تكذيب اورانباع بوي بيان كى پرانى اورقد يم عادت بے كوئى نئ عادت جیس ہے۔

فِيُولِكُنَّ ؛ وَلَفَدْجَاءَ هُمْ مِنَ الْأَنْبَاءِ مَافِيْهِ مُزَّدَجَرٌ مِن مِن تبعيضيه بيمرادام مكذبك وه خبري بين جوقرآن مين

عِنُولِنَى : مُوْدَجَرٌ مصدر ميمى معنى من إذْ دِجَارٌ كے ب،اسم مكان بعى بوسكتا كيعنى ان كے ياس الي خبري آئي كہ جو مقام إذْ دِجَار میں ہیں، مِنَ الأنباءِ حال ہونے كى وجه كل بین نصب كے به اور ماذوالحال ب ماموصول اور موصوف دونوں ہوسکتا ہے،اور دونوں صورتوں میں ما، جاء کا فاعل ہے اور فیدخبر مقدم اور مُوْ دَجَوٌ مبتدا ومؤخر ہے،اور جملہ ما کا صدہے۔

فِيُولِكُم ؛ فَمَاتُغْنِ النَّذر.

فِيْوُلِكُم : خبرُ مبتداء محذوف اى هو حكمة.

فِيُولِكُما : مُهْطِعِيْنَ إهْطَاعْ عاسم فاعل إوريَخُورُجُونَ كَاتمير عال معن كرون الفاكر تيزى عياا هِ فَكُولِكُ اللَّهُ وَلَا الْكَافِرُونَ يه جمله متانفه ب،ال صورت مين ايك سوال مقدر كاجواب بهوكا، روز قيامت كي شدت اوراس كي ہولن کی کے بیان ہے سوال پیدا ہوا کہ اس وقت کا فروں کا کیا ہوگا؟ جواب دیا: وہ کہیں گے کہ بیدون تو بڑا سخت ہے اور بعض حضرات نے یکنٹ رُجُونَ کی ضمیرے حال قرار دیا ہے لیکن اس صورت میں ایک سوال پیدا ہوگا کہ جملہ جب حال واقع ہوتو اس میں رابطہ کا ہونا ضروری ہے حالا نکہ یہاں کوئی رابطہ ہیں ہے۔

جِي لَيْعِ: مفسرعلام في فيهُمْ مقدر مان كراى سوال كاجواب دياب-

قِوْلَكَى : أُنِّتُ الفعل لمعنى قوم العرارت عيجى ايك وال مقدر كاجواب مقصود بـ

سَيَوْ إِنَّ : سوال يد ب كه قَوْمٌ جوكه مذكر ب كَذّبت كافاعل ب بعل وفاعل مين مطابقت نبيس ب-

جِکُولِ بَیْنِ؛ فیسوم معنی کے اعتبار سے مؤنث ہے یعنی اُمّة کے معنی میں ہے افراد کثیرہ پرمشمل ہونے کی وجہ سے مؤنث معنوی ہے۔

هِ فَكُولَ ﴾ : فَعَدُونَا الْأَرْضَ عُيُونًا، عيُونًا تميز ہونے كى وجہ سے منصوب ہے جو كہ مفعول سے محول ہے، تقدیر عبارت یہ ہے فَجَوْنَا عُيُونَ الْأَرْضِ. فَجَوْنَا عُيُونَ الْأَرْضِ. فَجَوْنَا الْأَرْضِ. فَجَوْنَا عُيُونَ الْأَرْضِ.

لَفْسِيرُ وَلَثِينَ حَيْ

ربط:

گذشته ورت (النجم) أَذِفَ الآزفةِ السنع پرختم ہوئی ہے جس میں تیامت کے قریب آجائے کا ذکر ہے، اس سورت کوائی مضمون سے شروع کیا گیاہے، اِفْغَوبَتِ السَّاعَةُ وَانْشُقَّ الْفَهَرُ آگے قرب تیامت کی دلیل مجز وَشق القمرُ کا ذکر فر مایا گیا۔ (معادف)

ز مانەنزول:

اس سورت میں واقعۂ شق القمر ندکور ہے ، اس ہے اس سورت کا زمانہ نزول متعین ہوجا تا ہے ، محدثین ومفسرین کا اس پر اتفاق ہے کہ بیدواقعہ بجرت سے تقریبا پانچ سال قبل مکہ معظمہ میں منی کے مقام پر چیش آیا۔ بیسورت بھی ان سورتوں میں ہے ہے جن کوآ پنمازعید میں پڑھا کرتے تھے۔

معجز وُشق القمر:

التبهدوا اےفلال وفلال دیکھواورگواہی دو۔

واقعه كي تفصيل:

مشرکین مکہ کے مطالبہ پرخی تعالی نے آپ مین کا گئی کے صدافت کے طور پر معجزہ فلا ہر فر مایا جا ند کے دوکھڑ ہے ہوکرا یک مشرق کی طرف اور دوسرامغرب کی طرف چلا گیا اور دونوں ٹکڑوں کے درمیان پہاڑ حائل نظر آنے لگا، رسول اللہ ﷺ نے حاضرین سے فر مایا کہ دیکھواور شہادت دو جب سب لوگوں نے صاف طور پر بید مجز ود کھے لیا تو یہ دونوں کمکڑ ہے پھر آپس میں مل گئے۔

كفاركا وليل صدافت كومان ين يا نكار:

اس کھلے ہوئے معجزے کا انکارتو کسی آنکھوں والے ہے ممکن نہ ہوسکتا تھا گر برا ہوتعصب اور ہن وھرمی کا کہ مشرکیین کہنے گئے کہ مجمد (القطاقیة اللہ) نے ہم پر جادو کر دیا تھا اس لئے ہماری آنکھوں نے وھوکا کھایا، ووسر بےلوگ بولے کہ مجمد فیلی القطاقی ہم پر جادو کر دیا تھا اس لئے ہماری آنکھوں نے وھوکا کھایا، ووسر بےلوگ بولے کہ مجمد فیلی ہم پر جادو کر سکتے ہیں ہماری آنے ووان سے معلوم کریں گے کہ بیرواقعہ انہوں نے بھی و یکھایا مہیں؟ با ہر سے جب بھیلوگ آئے اوران سے دریا وت کیا تو انہوں نے شہادت دی کہ وہ بھی یہ منظر و کھے جبی ۔

أيك مغالطه:

بعض روایات جوحضرت انس تفعّاننائنگفالی سے مروی بین ان کی بناء پر بیفلط بھی بیدا ہوتی ہے کہ شق القمر کا واقعہ ایک مرتبہ نہیں بلکہ دومرت پیش آیا تھا، کیکن اول تو صحابہ بیں ہے کی اور نے یہ بات بیان نہیں کی، دومری بات یہ کہ خود انس وَفِحَائنائاتُ عَالَا اللہ کی بعض روایات میں هو تدن کے بجائے فِرْ فَعَلَیْن اور شِفَقَدَین کے الفاظ ہیں، تیسرے یہ کہ قرآن مجید صرف ایک بی انشقا ق کا ذکر کرتا ہے، ان شواہد کی روشی میں میچے بات بہی ہے کہ یہ واقعہ صرف ایک ہی مرتبہ پیش آیا تھا۔

جا ند کے دوٹکڑ ہے ہو گئے یا قرب قیامت میں ہوں گے:

بعض لوگوں نے (و انشق القمر) کا مطلب یہ بیا ہے کہ چاند کھٹ جائے گا، لیکن عربی زبان کے لحاظ ہے چاہ یہ مطلب لین ممکن ہوگر عبارت کا سیاق وسباق اس معنی کو مراد لینے ہے صاف انکار کرتا ہے، اول تو یہ معنی مراد لینے ہے بہلا فقرہ ہے مینی ہوجاتا ہے، چاندا گر اس کلام کے بزول کے وقت پھٹ نہیں تھا، بلکہ وہ آئندہ بھی پھٹے والا ہے تو اس کی بناء پر یہ بہنا بالکل مہمل بات ہے کہ قیامت کی گھڑی قریب آگئی ہے، متنقبل میں پیش آئے والا کوئی واقعداس کے قرب کی علامت کھے قرار پاسکتا ہے، کہا ہے کہ جعد کیے جد جمد کیے قرار پاسکتا ہے، کہا ہے جہاوت کے طور پر پیش کرنا ایک معقول طرز استدر ل ہو، دوسر سے بیمطلب لینے کے جعد جب ہم آگے کی عبارت پڑھے میں تو محسوس ہوتا ہے کہ وہ اس کے ساتھ کوئی من سبت نہیں رکھتی، آگے کی عبارت صاف بنار ہی ہے کہا وہ قرار جب کہ تیاری ہے کوئی نٹ نی ویکھی جوامکان قیامت کی صرت کا سامت تھی گرانہوں نے اسے جاووقرار ویکر جبٹلاد یا اور اپ اس خوار پر جب کہ تیا مت کی تا کہ کہن نہیں ہوتا ہے کہ وہ اس کے اس سیاتی وسبات میں اِنشن ق المقمر کو چاند ہونے والی اس کے ساتھ کوئی میں اِنشن ق المقمر کو چاند ہونے اس کے اس میا کہ اس کی وہ جب اس کا مطلب ' چوڑ ہوجاتی ہے، اس سیاتی وسبات میں اس فقر ہے کور کھر د کھر جبجے آپ کو کا کے معنی میں اس فقر ہے کور کھر د کھر جبجے آپ کو خود محسوں ہوجائے گا کہ اس کی وجہ سے ساری عبارت بے جوڑ ہوجاتی ہے، سالہ کلام میں اس فقر ہے کور کھر د کھر جبجے آپ کو خود محسوں ہوجائے گا کہ اس کی وجہ سے ساری عبارت ہے جوڑ ہوجاتی ہیں سیار کلام میں اس فقر ہے کور کھر د کھر جبھے آپ کو خود کھروں ہوجائے گا کہ اس کی وجہ سیاری عبارت ہے جوڑ ہوجاتی ہے، سیار کلام میں اس فقر ہے کور کھر د کھر ہے تھی ہوئی۔

معجز وشق القمر براعتر اضات:

— ﴿ (مَ زَمُ بِبَالشَهِ] ٢

معترضین شق القمر پردوطرح کے اعتراضات کرتے ہیں اول تو ان کے نزد یک ایسا ہوناممکن ہی نہیں ہے کہ چ ندجیے عظیم کرہ کے دوئمز سے بچٹ کرالگ ہو جا نمیں اور سینکڑوں بلکہ ہزاروں میل کے فاصلہ تک ایک دوسر سے ہے دور جانے کے بعد پھردو ہارہ جڑجا نمیں ، دوسرے وہ کہتے ہیں کہا گراہیا ہوا ہوتا تو بید نیا بھر میں مشہور ہو جاتا ، تاریخی کتر بوں میں اس کا ذکر آتا ، لیکن حقیقت ہیں ہے کہ مذکورہ دونوں اعتراضات با مکل بے وزن اور بے حقیقت ہیں۔

جَجُولُ فِيْجَ: اول تو کسی دلیل عقلی ہے اس کا محال ہونا اب تک ثابت نہیں کیا جاسکا ہے، اور محض استبعاد کی بناء پر الیسی قطعی الشوت چیز وں کور ذہیں کیا جاسکتا، بلکه استبعاد تو اعجاز کے لئے لازم ہے جہ ں تک اس کے امکان کی بحث ہے، قدیم زمانہ میں تو شاید وہ چل بھی سکتی تھی، لیکن موجودہ دور میں سیاروں کی ساخت کے متعمق انسان کو جومعلومات حاصل ہوئی ہیں ان میں تو شاید وہ چل بھی سکتی تھی، لیکن موجودہ دور میں سیاروں کی ساخت کے متعمق انسان کو جومعلومات حاصل ہوئی ہیں ان کی بناء پر بیہ بات بالکل ممکن ہے کہ ایک کرہ اپنے اندر آئش فیٹ نی کے باعث بھٹ جائے اور اس زبر دست افتجار سے اس کے دوئکڑے ہوکردور تک چلے جا کمی اور پھر اپنی مرکزی قوت جاذبہ کے سبب وہ آپس میں آملیں ، اور اس کا اور طافتور ہوکہ مرکزی قوت جاذبہ کی گرفت سے باہر ہوجائے تو یہ بھی ممکن ہے کہ وہ نکڑے پھر آپس میں نہلیں ، اور اس کا صرف امکان ہی نہیں بلکہ واقعہ بھی ہے۔

كرةُ ارض ايك زمانه مين متصل ايك كره تها:

انفجارارض کی پہلی دلیل:

اگرتمام براعظموں کو ایک دوسرے سے ملاکر پیوست کردیا جائے تو ان کے ساحل ایک دوسرے سے اس طرح مل جا کیں کے جیسے کسی ٹوٹی ہوئی چیز کے نکڑوں کو ملاکرا یک کردیا جا تا ہے اور وہ اپنی سابقہ حالت پرمعلوم ہونے لگتی ہے۔

د وسری دلیل:

یہ ایک حقیقت ہے کہ طویل وعریض سمندروں کے آر پارمختلف براعظموں کے مقابل ساحلوں پرجو پہاڑ ہیں یوں لگتا ہے جیسے ایک ہی سلسلہ کوہ کے حصے ہوں۔

تىسرى دلىل:

براعظم کے ایک دوسرے ہے کسی زمانہ میں متصل ہونے کے حیاتیاتی شواہد بھی موجود ہیں، جنوبی امریکہ اور افریقہ میں بیسوں اقسام کے جانور منتے ہیں جوایک ہی نسل ہے تعلق رکھتے ہیں، ظاہر ہے کہ بیر مماثمک ومشا بہت بے وجہ بیس، اس سے معلوم ہوتا ہے کہ کسی زمانہ میں بید دونوں براعظم ایک ہی تنھے۔

جب کرہ ارضی میں انفجار وانشقا ق مشاہداتی اور عقلیاتی ولائل سے ثابت ہے تو کیا وجہ ہے کہ کرہ قمر میں یہ انفجار وانشقاق نہیں ہوسکتا؟ ندکورہ دلائل سے ان لوگوں کا نظریہ باطل ہو گیا جو کر ہ قمر میں خرق والتیام کومحال کہہ کرمجز ہ شق القمر کا انکار کرتے ہیں۔

د وسرااعتراض:

خاص لمحه میں دنیا بھر کی نگا ہیں جا ند کی طرف آگی ہوئی ہوں ، نیز اس ہے کوئی زور دار دھا کہ بیس ہواتھ کہ لوگوں کی توجہ اس کی طرف منعطف ہوتی ،اور پہلے ہے اس کی کوئی اطلاع بھی نہیں تھی کہلوگ اس کے منتظر ہوکر آسان کی طرف دیکھے رہے ہوتے ،اس کے علاوہ پوری روئے زمین پراسے دیکھانہیں جاسکتا تھا، بلکہصرف عرب اور اس کےمشرقی جانب کے مم لک ہی میں اس وقت جا ند نکلا ہوا تھا، باقی بہت ہے مما لک میں تو اس وقت دن ہوگا، جہاں رات ہوگی بھی تو کہیں نصف شب اور آخر شب کا وقت ہوگا جس وقت عام دنیا سوتی ہے اور جا گئے والے بھی تو ہر وقت جا ند کونہیں تنکتے رہے اس کے علاوہ زمین پر پھیلی ہوئی جاندنی میں جاند کے دوٹکڑے ہونے سے پچھفر ت بھی نہیں پڑتا جس کی وجہ ہے اس کی طرف کسی کوتوجه ہوتی پھر بیتھوڑی دہر کا قصہ تھا،روز مرہ دیکھا جاتا ہے کہ کسی ملک میں جاند کہن ہوتا ہے اور آج کل تو پہلے ہے اس کے اعلانات بھی ہوجاتے ہیں اس کے باوجود ہزاروں لا کھوں آ دمی اس سے بالکل بے خبرر ہے ہیں ،تو کیا اس بے خبری کواس بات کی دلیل بنایا جاسکتا ہے کہ جا ند کہن ہوا ہی نہیں ہے اس لئے دنیا کی عام تاریخوں میں مذکورنہ ہونے سے اس واقعہ کی تکذیب تہیں ہوسکتی۔

المحرِّفِينِشْلِ بَجِوَّلْشِيْء سابقه آسانی کتابول میں بعض ایسے ہی واقعات کا ذکر ہے مگر کسی تاریخی کتاب میں اس کا تذکرہ نہیں ہے تو کیا بیرمان لیا جائے کہ بیروا قعات ہوئے ہی نہیں ،ہم ان واقعات میں سے صرف دو واقعہ کا تذکر ہ کرتے ہیں۔

يهلا واقعه:

—— ﴿ [مَنْزُمُ يَبُلْثُ إِنَّ اللَّهِ ا

کتاب بیثوع (ترجمه عربی مطبوعه ۱۸۴۷ء کے مطابق) کے باب نمبر • اتا یت نمبر ۲ امیں ہے، '' اوراس دن جب خداوند نے امور یوں کو بنی اسرائیل کے قابو میں کردیا، بیثوع نے خداوند کے حضور بنی اسرائیل کے سامنے بیرکہا اے سورج تو جبعون پراوراے چاندتو وادی ایالون پرکھبرارہ ،سورج کھبر گیا ،اور چاند تھار ہا، جب تک قوم نے اپنے دشمنوں سے اپناانقام نه لے لیا،اورسورج آسانوں کے بیچوں چھم ارہااورتقریباً سارے دن ڈو بنے میں جلدی نہ کی''۔

ادر کتاب شخفیق الدین الحق مطبوعه ۱۸۴۷ء حصه نمبر۱۳ کے باب ۱۳سفحهٔ ۳۱ ۱۳ میں یوں ہے که ' بیشع کی وعاء ہے سورج ۲۴ تھنٹے کھڑار ہا'' ظاہر ہے کہ بیدوا قعہ بڑاعظیم الثان تھااورعیسائی نظریئے کےمطابق سے کی پیدائش ہے ایک ہزار جا رسوسال قبل بیش آیا،اگریددا قعہ بھی ہوتا تو اس کاعلم تمام روئے زمین کے انسانوں کو ہونا ضروری تھا، بڑے ہے بڑا باول بھی اس کے علم سے مانع نہیں ہوسکتا تھا، اور نہاس کا اختلاف اس میں مزاحم ،اس لئے کہ اگر ہم بیجھی تشکیم کرلیں کہ بعض مقامات پر اس وقت رات تھی تب بھی اس کا طاہر ہونااس لئے ضروری تھا کہان کی رات اس دن چوہیں گھنٹے رہی ہو، نیزییز بردست صونہ نہ ہندوستان کی تاریخ میں کہیں موجود ہے نہ اہل چین وائل فارس کی کتابوں میں اس کا تذکرہ ہے، ہم نے خود ہندوستان کےعلماء سے اس کی تکذیب سن ہے، اور ان کواس کے غلط ہونے کا یقین کامل ہے۔

دوسراواقعه:

كتاب الاشعياء باب ١٣٨ أيت ٨ ميل حفرت اشعياء كم مجز رجوع ممس كسلسله مين يون كها كياب، " چنانجية سان جن در جوں ہے وَحل گیا تھاان میں کے دی در جے پھرلوٹ گیا''۔

بدها و شبهی مظیم الشان ہے اور چونکہ ون میں چیش آیا تھا اس لئے ضروری ہے کہ دنیا کے اکثر انسانوں کواس کاعلم ہوسیح ک ولا دت ہے ۱۳ اےسال شمشی قبل واقع ہوا ،گراس کا تذکرہ نہ تو ہندوستان کی تاریخوں میں پایا جاتا ہے اور نہ اہل چین وابل فارس کی کتابوں میں (ملخصاً) مزید تفصیل کے لئے دیکھئے،مولا نارحمت الله مرحوم کی مشہور کتاب اظہارالحق کا ترجمہ بالبل سے قرآن تک۔

تاریخی شهادت:

اس کے علاوہ ہندوستان کی منتندومشہور تاریخ ، تاریخ فرشتہ کے مقالہ نمبراا میں اس کا ذکرموجود ہے کہ ہندوستان میں مهاراجه ملیها رئے بیروا قعیم خود دیکھااورا پیزروزنا مچه میں کھوایا اوریہی واقعداس کے اسلام لانے کا سبب بن ، حافظ مزی نے ابن تیمیدے نقل کیا ہے کہ ایک مسافر کا بیان ہے کہ میں نے ہندوستان کے ایک مشہور شہر میں ایک پرانی عمارت دیکھی جس پرعمارت کی تاریخ تغمیر کے سلسلے میں لکھاتھا کہ بیٹمارت شق قمروالی رات میں بنائی گئی۔

(ترحمه اظهار الحق، بالبل سے قرآن تك ،ص١٣٤)

اِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرْصَوًا فِي يَوْمِ نَحسٍ مُّسْتَمِو قُومِ عادكو وواكوفان كعذاب عالككيا گیا تھا، کہتے ہیں کہ ہدھ کی شام تھی جب اس تیز وتندیخ بسنة اور شاں شاں کرتی ہوئی ہوا کا آغاز ہوا، پھرمسلسل سات را تنیں اور آٹھ دن برابرچنتی رہی ہے ہوا گھر دل اور قلعول میں بنداور گڑھوں میں چھپے ہوئے لوگوں کواٹھاتی اور اس زور ہے انہیں زمین پر پنختی کہان کے سران کے دھڑ ہے الگ ہوجائے ، میدن ان کیلئے عذاب کے اعتبار سے منحوں ثابت ہوا ،اس کا بیمطلب نہیں کہ برھ کے دن یا کسی اور دن میں نحوست ہے جبیسا کہ بعض لوگ کہتے ہیں متمر کا مطلب ہے کہ بیرعذا ب اس وقت تک جاری رہاجب تک کے مب ہلاک تبیں ہو گئے۔

كَأنَّهُمْ أَغْجَازُ نَخْلِ خَاوِيَةٍ بدورازى قد كرماتهان كربي اورلاحارى كابھى اظهار بىك كەعذاب اسى كرم من وه بچهنه كرسكه درانحاليكه انبيس اين توت وطاقت يربرا محمند تها_

كَذَّبَتُ ثُمُّوْدُ بِالنُّذُرِ ﴿ جَمُعُ نَذِيرٍ بِمعنى مُنَذَرِ اي بِالْامُورِ الَّتِي أَنْذَرَهُم بها نَبِيَّهُم صَالِحٌ إِنْ لَم يُؤْمِنُوا م

ويَتَمعُوه فَقَالُوْٓا أَبَشَرًا منصُوبٌ على الاِشْتِغَالِ مِ**تَّا وَاحِدًا** صِفَتَان لِبَشَرِ نَ**تَبَعُ**ةٌ ثُمُصَّر لِلفِعُلِ النَّاصِبِ له والاستِهُهَامُ بمعنى النَّفُي المعنىٰ كَيُفَ نَتَّبِعُه ونَحُنَّ جِمَاعَةٌ كَثِيْرَةٌ وَهُو وَاحِدٌ مِنَّا ولَيُسَ بِمَلَكِ اي لا نتَّبعُه إِنَّآ إِذًا اي إِن اتَّبِعُنَاه لِّقِي صَلِّل ذِهابِ عنِ الصَّوَابِ وَّسُعُرِ جنُون ءَأُلِّقِيَّ بتَحقِيقِ الهَمُزَتيرِ وتَسهِيلِ الثَّانية وإدُخالِ النِّ نَيْنهِ ما على الوَجْهَينِ وتَرَكِّهِ الدِّكْرُ الوَحيُّ عَلَيْهِمِنْ بَيْنِنَا اى لـم يُوحَ اليه بِلَ هُوَّكَذَّابٌ مِي قَولِه إِنَّه أَوْحَى اليه مَا ذَكَرَه أَشِرُ مُتَكَبِّرٌ بَطِرٌ قال تعالىٰ سَيَعْلَمُوْنَ غَدًّا اى فِي الاخِرَةِ مَرْنَ الْكَذَّابُ الْأَشِرُ الْكَالْوَالْ الْمُرْتُونَ وهُـوهُم بأنْ يُعَذُّبُوا علىٰ تكذيبهم لِنَبِيّهم صالح إِنَّامُرْسِلُواالنَّاقَةِ سُخُرِجُوها بِنَ الهَضْبَةِ الصَخرةِ كم سَالُوا فِتْنَنَّةُ سِحِنَةً لِهُمْ لِنَخْتَبِرَ هِم فَارْتَقِيْهُمْ بِا صَالِحُ اى اِنْتَظِرْ مَاهُم صابِعُونَ وسا يُصْنَعُ بهم واصطيرُ البطاءُ بدَلٌ بِن تَاءِ الاقتِعالِ أَي اصْبِرُ علىٰ أَذَاهُم **وَنَيِّئُهُمْ أَنَّ الْمَأَءُ قِسْمَةٌ** مَقْسُومٌ 'بَيْنَهُمُّمٌ وبَيُنَ النَّاقَةِ فيَومٌ لهم ويومٌ لها كَلَّشِرْبٍ نصِيبِ منَ الماءِ مُّحَتَّضَّرُ ۚ يَحْضُرُهُ القَومُ يومَهُم والنَّاقَةُ يومَه فَتَمَادُوا على ذلك شُم مَلُوه فَهَمُّوا بِقَتْلِ النَّاقِةِ فَكَالَا الصَّاحِبَهُمُ قُدَارًا لِيَقْتُلَهَا فَتَعَاظَى تَنَاوَلَ السَّيْفَ فَعَقَرَ ﴿ به النَّاقَةَ اي قَتَنه مُوافِقَةً لهم فَكُنُفَكَانَ عَذَالِي وَنُكُرُدِ اي انْذَارِي لَهم بِالعذَابِ قَبُلَ نُزُولِه اي وقَعَ سَوُقِعَه وبَيَّنَه بِقُولِه إِنَّآ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً وَاحِدَةً فَكَانُوْ الْهَنْ يَرِ الْمُحْتَظِرْ هُ وَ الَّذِي يَهْ عَلُ لِغَنْمِه حَظِيرَةُ مِن يابس الشُّحَر والشُّوكِ يَحُفَظُهُنَّ فيها مِن الدِّيَابِ والسِّباعِ ومَا سَقَطَ مِن ذَلِكِ فذاسَتُهُ هُو الهَشِيهُ وَلْقَدْيَشَرْنَاالْقُوْلَانَ لِلدِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِمِ كَذَّبَتْ قُوْمُ لُوْطِ بِالنَّذَرِ ال الله على المُنذَرَةِ لهم عَدى لِسَانِه **إِنَّآ ٱرْسَلْنَاعَلِيْهِمْ كَاصًّا** ربيحًا تَـرُمِيهـم بـالـحَـصَبَاءِ وهِـيَ صِغَارُ الحِجَارةِ الوَاحدةِ دُوْنَ مَلُ ءِ الكَفِّ فهَنكُوا إِلَّا الْكُوطِ وهُمُ ابْنَتَاهُ مَعَهُ نَجَّيْنُهُمْ اللَّهُ عَيْنُ ولَو السَّحَارِ اي وقُتَ الصُّبُح مِن يومِ غيرِ مُعَيَّنِ ولَو أريـدَ سِن يـومِ شُعَيَّنِ لَـمُنِعَ الصَّرُفُ لانَّه مَعُرِفَةٌ مَعُدُولٌ عنِ السَحَرِ لِأَنَّ حقَّهُ أن يستعمل فيي المَعُرِفَةِ بالُ وهَلُ أَرْسِلَ الحَاصِبُ علىٰ اللهوطِ اولا، قولان وعبر عن الإستثناءِ عَلى الأوَّل بانَّهُ مُتَّصِلٌ وعَلى الثّاني بَنَّه مُنفَطِعٌ وإن كَانَ مِنَ الجِنْسِ تَسَمُّحًا يُعْمَةً سصدرٌ اي إنعاماً مِنْ عِنْدِنَاكُ لِكَ اي مِثلُ ذلك الجَزَاءِ نَجُيزِيُ مَنْ شَكَّرَ النَعْمُنَا وهُو مُؤمِنَ او مَن امن بِالله تعالىٰ ورُسُله وأَطَاعهم وَلَقَدُانَذَرَهُمُ خَوَّفَهم لُوطً بَطْشَتَنَا أَخُذَتَنَا إِيَّاهُم بِالْعَذَابِ فَتَمَارُواْ تَجَادَلُوا وَكَذَّبُوا بِ**النَّذَ**رِ® بِإِنْذَارِهِ وَلَقَدُرَاوَدُوهُ عَنْضَيْفِهِ اى سَالُوهُ أَن يُحَدِينَ بَيْنَهُ وبَيْنَ القَومِ الَّذِينَ أَتَوه في صُورَ ةِ الأَضيَافِ لِيَحْبَثُوا بِهِمِ وكَانُوا ملائِكةُ فَطَمَسْنَا آغَيْنُهُمْ أغميُ الله وجَعَدُنَاهَا بِلَاشَقِ كَبَاقِي الوَجُهِ بان صَفَقَها جِبُرَئِيلُ بِحَنَاجِه فَذُوْقُوا فقُك لهم دُوقُوا عَذَالِي وَنُذُرِ۞ أي الْدَارِي وتَخُوِيفِي اي ثَمُرَتَهُ وفَائِدَتَهُ ۖ وَلَقَدُصَّبَحَهُمُّ لِكُرُةً وقت الصَّح مِن يوم عَيْرِ سُغيّن ﴿ عَذَاكِمُّ سَتَقِرُّ وَائِمٌ سُتَصِلٌ بِعَذَابِ الاخِرَةِ قَلُوقُواعَذَائِي وَنُذُرِ ﴿ وَلَقَدْيَسَرْنَا الْقُرْانَ لِلدِّكِ فَهَلَ مِنَ مُّذَكِرٍ ﴿

سبعتر بن الموركي المو کہ جن کے ذریعہ ان کوان کے نبی صالح نے ڈرایا ،اگروہ ان پرائیمان نہ لائے اور ان کی بیروی نہ کی تو انہوں نے کہا کیا ہم اليے تخص كى اتباع كريں جوہم بى ميں كاايك فرد ہے؟ بىشىرًا، ما أُحْسِمِرَ كے قاعدہ سے مصوب ہے، مِنْا اورواحدًا رونوں بسر کی صفت ہیں،اور نکتیب عُدُ، بَشَرًا کے فعل ناصب کامفسرے،اوراستفہام بمعنی فی ہے معنی ہے ہیں کہ ہم اس ک کیوں اتباع کریں؟ اور ہم بزی جماعت ہیں اوروہ ہم میں کا ایک ہے اور فرشتہ بھی نہیں ہے یعنی ہم اس کی اتباع نہیں کریں ے، اگر ہم نے اس کی اتباع کی تو ہم گراہی میں لیعنی راہ راست ہے بھٹکے ہوئے ہول گے اور (حالت) جنون میں ہول ے، کیا ہم میں سے اس پروحی نازل کی گئی؟ یعنی اس کی طرف وحی نبیں جیجی گئی (اَءُ نیقِی) دونوں ہمزوں کی تحقیق کے ساتھ اور دوسرے کی تشہیل کے ساتھ اور دونوں صورتوں میں دونوں کے درمیان ہمزہ داخل کرکے اور ادخال کو ترک کر کے (نہیں) بلکہوہ اینے اس دعوے میں کہ جو پچھاس نے بیان کیاوہ اس پر بذر بعدوحی بھیجا گیا ہے جھوٹامتنگبر کیخی خورہ ہے اللہ تعالی نے فر مایا ان کوعنقریب کل لیعنی آخرت میں معلوم ہوجائے گا کہ جھوٹاا وریشخی خورہ کون ہے؟ حارا نکہ جھوٹے وہ خود ہیں اس لئے کہ ان کواسینے نبی صالح کی تکذیب پرعذاب دیا جائے گا ، ہم ان کی آ زمائش کے لئے ایک اوٹمنی ان کے مطالبہ کےمطابق پھرسے نکالنےوالے ہیں تا کہ ہم ان کوآ زمائیں ،اےصالح توان کا! بتظارکر کہوہ کیا کرنے والے ہیں؟ اور ان کے ساتھ کیا (معاملہ) کیا جانے والا ہے؟ اور تو ان ایذ ارسانیوں پر صبر کر (احسطبو) کی طاء تا واقتعال سے بدلی ہوئی ہے اوران کو بتادوکہ پانی ان کے اوراؤٹنی کے درمیان تقسیم شدہ ہے ایک دن ان کی باری ہے اورا یک دن اونٹنی کی برایک اپنی اپنی باری پر حاضر ہوگا توم اپنی باری کے دن حاضر ہوگی اور اونٹنی اپنی باری پر ، وہ لوگ اس طریقه پر آیپ ز مانہ تک قائم رہے، پھروہ اس ہے اکتا گئے تو انہوں نے اونٹی کے قتل کا ارادہ کرلیا تو انہوں نے اپنے ساتھی قیدار کو اس اومنی کے تل کے لئے آواز دی تواس نے تلوار لی اور اس تلوار ہے اونٹنی کی کونچیس کاٹ دیں بیعنی ان کی موافقت (اورمشورہ ہے) اس اونمنی کولل کردیا تو کیسار ہامیراعذاب اور ڈرانا؟ لیعنی میراان کوعذاب نازل کرنے سے پہنے عذاب سے ڈرانا (كيمار ما) يعنى وه بركل واقع موا، اوراس عذاب كو (الله تعالى في) اين قول انها ارسل نما عليهم صَيْحة النع بیان فرمایا ہے تو ہم نے ان پرایک چیخ بھیج دی،تو وہ ایسے ہوگئے جیسے باڑھ بنانے والے کی (باڑھ) کی روندی ہو کی گھاس، معتظر وہ تخص جوا پی بکریوں (کی حفاظت) کے لئے سوکھی گھاس اور کا نٹوں (وغیرہ) ہے باڑھ بنا تا ہے،اس میں بمریوں کی بھیٹریوں اور درندوں ہے حفاظت کرتا ہے، اور اس گھاس ہے (جب کچھ) گرجا تا ہے تو بکر 'یاں اس کو رونددیت ہیں یہی ہشیہ ہے، بے ٹنگ ہم نے قرآن کونصیحت کے لئے آسان کردیا ہے، کوئی ہے نصیحت حاصل کرنے والا، قوم لوط نے (بھی) ان چیزوں کو جھٹلایا جن ہے ان کو لوط علیہ کا طابقہ کا خلائے گئا گئا گئا گیا، بے شک ہم نے ان پر پھر < (مَرْمَ بِهَ لِشَرْعٍ) € [وَمَرْمُ بِهَ لِسَّرِنَ] €

برسانے والی ہواجیجی بعنی ایسی ہواجوان بر َنگریاں برساتی تھی اور وہ جیھوٹی کنگریوں ہے ایک تھی نہ کہ تھی بھر کرتو وہ ہلاک ہو گئے سوائے "ل لوط کے اور "ل لوط مع لوط کے ان کی دو بیٹیال تھیں، ہم نے ان کوایک صبح کے وفت نجات دی یعنی غیر متعین دن کی صبح میں اورا گریوم عین (کی صبح) مراد ہوتو غیر منصرف ہوگا ،اس لئے کہ بیمعرفہ ہےاور الشب حس سے معدول ہ،اس کئے کہاس کاحق بدہے کہ معرفہ میں الف لام کے ساتھ استعمال ہو (رہی) یہ بات کہ آل لوط پر پھر برسانے والی ہوا بھیجی گئی یانہیں اس میں دوقول ہیں ، پہلی صورت (یعنی جھیجنے کی صورت) میں تعبیر اشٹناء متصل ہوگی اور دوسری صورت (یعنی نہ بھیجنے کی صورت) میں تعبیر استثناء منقطع ہوگی ، تساھلا (چیٹم پوٹی کرتے ہوئے) اگر مشتنی مشتنی منہ کی جنس سے ہو ہمار ہے خصوصی انع م (احسان) کے طور پر (نسعمةً) مصدر ہے،اسعامًا کے معنی میں ہم الیبی ہی لیعنی اس چیز کے مثل ہر اس شخص کو جزاء دیتے ہیں جو ہماری نعمتوں کا شکرادا کرتا ہے حال بیہ ہے کہ د دمومن ہویا جوشخص اللہ پراوراس کے رسول پر ایمان لایا ہواوراس کی اطاعت کی ہو اوران کو لوط علاظ لان ہاری بکڑے عذاب کے ذریعہ ڈرایا تو وہ جھکڑنے کے ،اوران کے ڈرانے کی تکذیب کی اور حضرت لوط ہےان کے مہمانوں کا مطالبہ کیا لینٹی ان ہےاس ہات کا مطالبہ کیا کہان کے اور ان لوگوں کے درمیان آڑے نہ آئے جواس کے پاس مہمانوں کی شکل میں آئے ہیں تا کہان کے ساتھ وہ عمل ضبیث کریں ،اور وہ مہمان فرشتے تھے تو ہم نے ان کی آنکھیں ملیا میٹ کردیں لیٹنی ان کواندھا کر دیا ،اور آنکھوں کو بدون گڑھوں کے باقی چبرے کے ما نند (ہموار) کر دیا،اس طریقہ سے کہ جبرئیل نے ان کی آنکھوں پراپنا پر مار دیا،اورہم نے ان ہے کہا میراعذاب اور ڈراوا چکھو یعنی میرے عذاب اور ڈرانے کا ثمرہ اور نتیجہ (پیکھو) اور بل شبدان کو ایک دن صبح تڑ کے دائمی عذاب نے پکڑلیا لیعنی آخرت کےعذاب ہے جاملنے والے عذاب نے (ان کو پکڑلیا) پس میرے عذاب اورمیرے ڈرانے کا مزہ چکھواور بلاشبہ ہم نے قرآن کونصیحت کے لئے آسان کردیا، کیا کوئی نصیحت حاصل کرنے والا ہے؟

غَيِقِيق لِيَرِينِ لِيسَهُ الْحِ لَفَيْسِارِي فَوَالِا

قِوَلْنَى: بالامور التي انذرهم بها، منذر كَتْفير الامور المنذر بها حكركا ثاره كردياكه يهال مُنذِرٌ ہے مرادا نبیا تبیس ہیں بلکہ وہ امور مراد ہیں جن ہے ڈرایا گیاہے، دوسری صورت ریکھی ہوستی ہے کہ نُذُر ، مذیر جمعنی رسل کی جمع ہواور نُسنُد سے مرادر سول ہوں ،اور نذیر کے بجائے نُسنُد جمع کا صیغہ لانے میں بینکتہ ہوسکتا ہے کہ ایک رسول کی تکذیب تمام رسولوں کی تکذیب ہے۔

قِيَّوْلَى ؛ منصوبٌ على الاشتغال ليني بشرًا ماأضمِرَ عامِلُه كَاعده عصصوب ب، تقدير عبارت بيب أنتَّبِعُ

چَوَلَیٰ ؛ جُنُونٌ، سُعُو کی تفسیر جنون ہے کر کے اشارہ کردیا کہ سُعُو مفرد ہے، جمع نہیں ہے،اس کے عنی خفت عقل کے

ہیں، بولا جاتا ہے نساقۂ مسبعور ہ مجنون کے مانند چلنے والی اونٹنی، اور مسعیر بہعنی نار کی جمع ہوسکتی ہے (اَءُ لیقیے) میں جار قرار تیں ہیں اور جاروں سبعیہ ہیں۔

قِیَ لَنَهُ، فِنْدَهُ، فِنْدَهُ، مُرسِلُوا كامفعول الدے یعنی ہم ان كی آزمائش كے لئے پھر كی ایک چٹان سے ایک اونمی نكالیں گ۔ قِیمُ لَنَیْ ، و بَیْدَ المناقبة مفسر علام كامقصداس اضافد سے اس شبہ كودور كرنا ہے كاللہ تعالى كے تول السماء قسمة بينَهُ مُر سے معلوم ہوتا ہے كہ پنی كی بارى صالح عليہ كاف كاق م كے درميان تھى ، حالانكہ پانی كی تقسیم توم اور اونمنی كے درميان تھى ، حالانكہ پانی كی تقسیم توم اور اونمنی كے درميان تھى ، اى شبہ كودور كرنے كے لئے و مَيْنَ المناقبة كا اضافه فرمايا۔

چَوَّوَلَیْ، مُسوافِ فَهُ لَهُمْ اس عبارت کاضافہ کامقصداس آیت اور سورہ شعراء کی آیت میں تطبیق وید ہے ہمورہ شعراء میں فی عَفَرُ و ها جمع کے صیغے کے ساتھ ہاور یبال فی عَفَرَ واحد کے صیغہ کے ساتھ ہے ، تطبیق کی صورت یہ ہے کہ قاتل بالمباشرتو قدار ہی تھا، گرفتل کے مشورہ میں سب شریک تھے، اسی وجہ سے یبال بالمباشر قاتل کی طرف قتل کی نسبت کردی اور سورۂ شعراء میں بالواسط قاتلوں کو بھی قتل میں شریک کرتے ہوئے جمع کا صیغہ استعمال کیا۔

فَيْوَلْنَى ؛ هشيم صيغه صفت مشهر بمعنى مَهْشُومٌ اسم مفعول ، ريزه ريزه شده ، روندا جوا-

فَيُولِنَى : مِنَ الْاسْحَارِ اس اضاف كامقصدية بنانا بكه سَحونكره بيعني غيرمين ون كي معلى-

فَيْحُولَ فَكَا وَلَوْ أُوِيْدَ مِنْ يوم معين لمنع مِنَ الصوف النح الله الله الله على مقصدية بنانا ہے كه بِسَحَوِ منصرف ہال يَخْ كَامقصدية بنانا ہے كه بِسَحَو منصرف ہال كَال كُوكره مان كى صورت ميں اسباب منع صرف ميں ہا كيك سبب سرف عدل پايا جار ہا ہے كيونكه سَحَو السَحَو سه معدول ہوكر آيا ہے اور اگر الله سن يوم معين كى شيح مراد لى جائے تو الله ميں على موجود ہوگى ، الله صورت ميں الله ميں دو سبب يعنى عدل اور عميت ہوئے كى وجہ سے غير منصرف ہوگا۔

فَيُولِكُمْ ؛ نعمةً مصدرٌ لين نعمة نَجَيْنَا كامفعول مطلق بغير لفظة تاكيدك لي بالكك نَجَيْنَا، أنْعَمْنَا كم من مين باورنَجَيْنَا كامفعول له بهي بوسكما باور فعل محذوف كامفعول مطلق بلفظ بهي بوسكما باي أنْعَمْنَا نِعْمَةُ.

فَيْوَلَّنَّى ؛ أَوْمَن آمَنَ بِاللَّهِ ورسوله وأطَاعَهَا يه يوراجمله وَهُوَ مؤمِن كاعطف تفيرى -

فَيْ فَلْكَنَى: تُجَادِلُوا و كذّبوا يه فَتَمَارَوُ الْيَاسِيرِ عَاسَ كَامقَصِدا يَكَ شَهِ كُود فَع كُرِنا هِ، شَهِ ربيه عَه نَمَارَوُ الكاصلة باعْبِينَ آتا حالاتكه يهال صله باء داقع هـــ

جِهُ لِنْ بِيَ ابِ كَا خلاصہ بیہ کہ تَسمَارُ وْ اللّٰہ اور كَذّبوا كَمْ عَنْ كُوصْمَن ہے جس كى وجہ سے باء كے ذريعہ تعديد درست ہے۔

- ﴿ (مَ زَمْ بِهَالَثَ فِي) ٢٠

ؾٙڣٚؠؙ<u>ڔۅڗۺٛ</u>ڕؾ

کَڈَبَتُ ثَمُودُ بِالنَّذُرِ سورہَ قَمْر کوقر بِ قیامت کے ذکر ہے شروع کیا گیا تا کہ کفار دمشر کین جودنیا کی ہواوہوں میں ہتلا اور آخرت ہے غافل ہیں وہ ہوش میں آ جا کیں ، پہلے روز قیامت کے مذاب کو بیان کیا گیا ، اس کے بعد دنیا میں اس کے انجام بدکو بتلائے کے لئے پانچ مشہور عالم اقوام کے حالات اور انبیاء پیسلائن کی می لفت پر ان کے انجام بداور دنیا میں بھی طرح طرح کے عذابوں میں ہتلا ہوتا بیان کیا گیا ہے۔ (معادف)

سب سے پہلے تو م نوح کا ذکر کیا گیا، کیونکہ یہی و نیا کی سب سے پہلی تو م ہے جو مذاب الہی میں پکڑی گئی، یہ قصد سابقہ آیات میں گذر چکاہے، مذکورة الصدرآیات میں چارا تو ام کا ذکر ہے، عدہ نمود، تو م لوط، قو م فرعون ، ان کے مفصل واقعات قرآن کے متعدد مقامات میں بیان ہوئے ہیں یہال ان کا اجمالی ذکر ہے، مذکورہ چاروں اقوام میں سے سب سے پہلے قوم خمود کا ذکر ہے جو حضرت صالح علاج لا اوالت کل امت تھی ، اس قوم کو عدا خری بھی کہتے ہیں۔

قوم ثمود کو حضرت صالح علی کا بیروی سے انکارتین وجہ سے تقا، ایک بید کہ وہ بشر ہیں ، دوسر سے یہ کہ وہ اسکیا تنہا ہیں اور عام آ دمی ہیں کوئی بڑے سر دارنہیں ، اور ندان کے ساتھ کوئی جتھا ہے ، تیسر سے یہ کہ وہ ہما ری قوم کے ایک فر دہیں ، ہم پران کوکوئی فضیلت وفو قیت حاصل نہیں ، لہٰذا ایسی صورت میں ہمارا ان کی ہیروی کرنا اور ان کو اپنا بڑا مان لینا خلطی اور یا گل بین کے سوا میجھ نہ ہوگا۔

بَلْ هُو کَذَّابٌ اَشِوْ ایسے برخود فلط اورخود پبند شخص کو کہتے ہیں جس کے دیاغ میں اپنی بڑائی کا سودا ہمایا ہموا ہوا ور اس بناء پر ڈینگیس مارتا ہمو،مطلب میہ ہے کہ جب نہ تو میہ مانوق البشر تو توں کا مالک ہواور نہ میہ جھا بند شخص ہے کہ اس کو عوام کی تائید وہمایت حاصل ہمواور نہ ہی میداو پر سے تازل کیا ہوایا ہا ہمرے آیا ہواشخص ہے کہ اس کی پچھا ہمیت ہمو، تو ایسی صورت میں اس کے نبوت کا دعویٰ کرنے کے دوہ بی مقصد ہمو سکتے ہیں یا تو میہ پر لے درجہ کا جھوٹا شخص ہے یا پھر ہم پر اپنی بڑائی جمانا اور ہمارے مقابلہ میں شیخی گھارنا مقصد ہے، لہذا ہم ایسے کذا ب اور شیخی خور ہے کی ہر گڑ پیروی نہ کریں گے۔

حضرت صالح عَلِيْ الطَّلَا والشَّلَا جَس قوم مِيل بهيرا بوئ اس كوثمود كتبة بين اوراس كوعادا خرى بهي كتبة بين ،قوم ثمود كاذكر قرآن كريم مين نوسورتول مين كيا كيا ب-،اعراف، هود، حجر، نمل، النجمر،القمر،الحاقه، الشمس.

حضرت صالح عَالِيجَ لَاهُ وَالتَّكُو كَانْسِ نامه:

﴿ (نِطَزَم بِسَالتَهِ) ◄

ملامہ بغوی نے بیان کیا ہے واسطوں سے قوم صالح کے جد ابعد شمود تک پہنچتا ہے۔ (مصص الغرآد، سوهاروی)

قوم ثمود کی بستیاں:

قوم ثمود کے بارے میں یہ بات طےشدہ ہے کہ ان کی آبادیاں مقام حجر میں تجاز اور شام کے درمیان وادی قری تک پھیلی ہوئی تھیں ، جوآج کل ' فنج الناقة' کے نام ہے مشہور ہے ، قوم ثمود کی بستیوں کے آثار اور کھنڈرات آج تک موجود میں بعض مصری اہل تحقیق نے ان کواپنی آئکھ سے دیکھا ہے ، ان کا بیان ہے کہ وہ ایک ایسے مکان میں داخل ہوئے جوشا ہی حویلی کہی ج تی اس میں متعدد کمرے ہیں اور اس حویلی کے ساتھ ایک بہت ہڑا حوض ہے اور میہ پورا مکان بہاڑ کا شکر بنایا گیا ہے۔

(قصص القرآن مولانا حفط الرحش سيوهاروي)

واقعه كي تفصيل:

قوم ثمود جب حضرت صالح علی التفاق التفاق کی تبلیغ حق ہے اکتا گئی تواس کے سرخیل اور سرکر دوافراد نے قوم کی موجودگ میں حضرت صالح علی التفاق التفاق ہے مطالبہ کیا کہ اے صالح ! اگر تو واقعی خدا کا فرستادہ ہے تو کوئی نشنی دکھا، تا کہ ہم تیری صدافت پرایمان لے آئیں، حضرت صالح علی التفاق التفاق نے فرمایا کہ ایسا نہ ہو کہ نشانی آنے کے بعدا نکار پرمصراور سرکثی پر قائم رہو، قوم کے ان سرواروں نے بتاکید وعدہ کیا کہ ہم فور انیمان لے آئیں گے، تب حضرت صالح نے ان ہی سے دریافت کیا کہ وہ کست مکا نشان چاہتے ہیں؟ انہوں نے مطالبہ کیا کہ سامنے والے پہاڑیں سے یا فلال پھر سے جوہتی کے کنارہ پرنصب ہے ایک ایسی اونٹی فلا ہر کر کہ جوگا بھی بواور فور آبچہ دے ، حضرت صالح علی التفاق التفاق التفاق التی میں دعاء کی تواسی وقت اس پھر سے ایک حاملہ اونٹی فلا ہر ہوئی ، اور اس نے بچد دیا بید کی کر ان سرداروں میں سے جندع بن عمر و اس وقت ایمان لے آیا ، اور دوسرے سرداروں نے بھی جب اس کی چیروی میں اسلام لانے کا ارادہ کیا تو ان کے ہیکلوں اور مندروں مہنتوں نے ان کو بازر کھا۔

حضرت صالح علی الفائد نے تو م کو تنبیدی کہ دیکھویے نشانی تبہاری طلب پڑھیجی گئی ہے خدا کا یہ فیصلہ ہے کہ پانی کی باری مقرر ہو، ایک دن اس ناقہ کا ہوگا اور ایک دن تو م کے تمام جانوروں کا ، اور خبر داراس کواذیت نہ پہنچ ، اگر اس کوآزار پہنچا تو پھر تبہاری بھی خبر نہیں ، پھی دوز تک اس دستور پر رہے مگر پھی دوز بعد دہ اس طرز عمل سے اکتا گئے ، آپس میں صلاح ومشور ہے ہونے کہ کہ اس ناقہ کا خاتمہ کر دیاجائے تو اس باری کے اس قصد سے نجات ال علی ہے یہ باتی اگر چہ ہوتی رہتی تھیں مگر ناقہ کوئل کرنے کہ کہ کس کی ہمت نہ ہوتی تھی مگر ایک صین وجمیل مال دار عورت صدوق نے خودکوایک شخص مصدع کے سامنے اور ایک مالدار عورت عمیر ہونے اپنی ایک خوبصورت لڑکی قدار (قیدار) کے سامنے یہ کہ کرپیش کی کہ اگر وہ دونوں ناقہ کو ہلاک کردیں تو یہ تبہاری ملک میں ، آخر قیدار بن سالف اور مصدع کو اس کے لئے آمادہ کرلیا گیا ، اور طے پایا کہ دہ درات میں جھپ کر بیٹے جا کیں گاور ناقہ جس جی کہ بیٹے جا گاہ جانے گئے تو اس کے لئے آمادہ کرلیا گیا ، اور طے پایا کہ دہ درات میں جھپ کر بیٹے جا کیں گاور ناقہ جس جی کہ کرپیٹ کی کہ دہ درات میں جھپ کر بیٹے جا کہ اور ناقہ جس جی اس کے اور ناقہ بیل کے اور ناقہ جس جو اس کے گئے آمادہ کرلیا گیا ، اور طے پایا کہ دہ درات میں جھپ کر بیٹے جا کہ دورات میں جھپ کر بیٹے کہ دورات میں جو کہ دورات میں جھپ کر بیٹے کہ دورات میں جھپ کر بیٹے کہ دورات میں حضور کو کی خورات میں جو کہ دورات میں جو کہ کہ دورات کی کہ دورات میں جو کہ دورات میں کر دیں جو کہ دورات کی کہ دورات کی کو کہ دورات کی دورات کو کو کہ دورات کی کو کہ دورات کی کو کی کیا کہ دورات کی کی دورات کی کو کہ دورات کی کو کو کہ دورات کی کو کہ دورات کی کو کہ دورات کی کو کو کہ دورات کی کو کو کو کہ دورات کی کو کو کی کو کر دورات کی کو کو کو کو کر کو کی کو کر کو کر کو کر کو کر کو کر کو کر کو کر

< (فَرَرُمُ بِبَالشَّرُ) >

غرض ایہا ہی ہوااور ناقد کوسمازش کر کے ہلاک کر دیا ،اس کے بعد سب نے قتم کھائی کہ رات کے وقت ہم سب صالح اوراس کے اہل کو بھی مثل کرویں گے اور پھراس کے اولیا ء کو تتمیں کھا کریقین دلائیں گے کہ بیکام جمارانہیں ہے۔

بچه به دیکه کربها گربهاژیر چژه گیا،ادر چنجنا چلاتا هوابهاژی میں غائب هو گیا،صالح علیقالاؤلٹائو کو جب خبر هوئی تو حسرت اورافسوس کے سرتھ قوم ہے مخاطب ہو کرفر مایا کہ آخر وہی ہواجس کا مجھے خوف تھا، اب خدا کے عذاب کا انتظار کرو، جو تین دن کے بعدتم کو تباہ کردے گا، اور پھر بجل کی چیک اور کڑک کا عذاب آیا اور اس نے رات میں سب کو تباہ کردیا، اور آنے والے ان نوں کے لئے تاریخی عبرت کا سبق وے گیا۔ (اختصار ا، قصص القرآن سیوهاروی)

وَ لَمَ قَدْيَسَوْنَا الْقُوآنَ لُلَذِكُو فَهَلْ مِنْ مُنْدَكِر اورجم نِے قُرآن كوفسيحت كے لئے آسان كرديا پس كيا ہے كوئى جو نفیحت قبول کرے،اس آیت کو ہرمعذب قوم کا ذکر کرنے کے بعد دہرایا گیا ہے تا کہ شرکیین مکہان واقعات ہے عبرت ونفيحت حاصل کريں۔

قوم لوط عَلا يَحْتَلا وَالسَّلَا كَا إِيمَا لَى واقعه:

كَـلَّابَتْ قوم لُوطٍ بِاللُّذُرِ يهال تقوم لوط كي ہلاكت كا خضار كے ساتھ ذكر ہے ، اس توم پراليس تيز وتند ہوا كاعذاب بھیجا کہ جوان پر کنگر پھر برساتی تھی اور ان کی بستیوں کوتہہ و بالا کر دیا گیا ،سورۂ ہود میں اس کی تفصیل گذر چکی ہے، آل لوط سے مرادخودحضرت لوط عَلَيْجَنَا وَاللَّهُ الران پرائيان لانے والے لوگ ہيں جن ميں حضرت لوط عَلَيْجَنَا وَالنَّالَة ک مومنہ بیں تھی ،البنة لوط علیقلا فالنظر کی دوبیٹیاں ان کے ساتھ تھیں جن کونجات وی گئی۔

وَلَقَذ رَاوَ دُونَهُ عَنْ ضَيْفِهِ تَفْصِيل توسوره بهود مين گذر چكى إلى كاخلاصه بيه كه جب الله تعالى في ال قوم پرعذاب تهجيخ كا فيصله فرمايا تو چند فرشتوں كوجن ميں جبرئيل وميكائيل بھى شامل تھے نہايت خوبصورت لڑكوں كى شكل ميں حضرت لوط عَلِيقِ لَا وَالنَّاكُةِ كَ يَهِالَ مَهِمَانِ كَيْطُورِ بِرَجْمِيجِ ديا، يه فرشته اول حضرت ابراتيم عَلَيْقِ لَا وَالنَّاسِ كُلِّهِ اوران كوايك فرزندار جمند كي خوتنخبری دی اس کے بعد حضرت لوط علاقالا قالتانا کے پاس مینیے، ان کی قوم کے لوگوں نے جب ویکھا کہ ان کے یہاں ایسے خوبصورت مہمان آئے ہیں، وہ ان کے گھر پر چڑھ دوڑے اوران سے مطالبہ کیا کہ وہ اپنے ان مہمانوں کو بدکاری اور ذوق ضبیث کی تسکین کے لئے ان کے حوالہ کر دیں، حضرت لوط عَلیجَا لاَ اَلْالِیُ اَلْاَ اِلْاَ اِلْاَ اِلْدِی بے حدمنت وساجت کی کہ و واس ذکیل حرکت سے باز آ جائیں ،گر وہ نہ مانے اور گھر میں تھس کرمہمانوں کو زبردی نکال لینے کی کوشش کی ، اس آخری مرحلہ میں حضرت جبرئیل عَلَيْظِلاُ وَالسَّكِلاَ فِي اللَّهِ مِنْ مِنْ مِنْ مِنْ مِنْ مِنْ مُعُولَ كُورُ عِلْمُ وَعِيْمِ مِا مِر كروية ، اور فرشتول في حضرت لوط عَلَيْظَلاُ والسُّكِلاَ سے فر ما يا كدوه اوران کے اہل وعیال صبح ہونے ہے پہلے پہلے ہتے ہے نکل جائیں ،اوران کے نکلتے ہی ان پر ایک ہولنا ک عذاب نازل ہو گیو ، بدواقعه بائبل مين ان الفاظ مين مركور سے

——≤[زمَزَم بِبَئشَرِ]≥

بائبل کے الفاظ:

'' تب وہ اس مرد یعنی لوط علیق لاکھ النظامی پڑے اور نز دیک آئے تا کہ کواڑ تو ڑ ڈالیں لیکن ان مردوں (بعنی فرشتوں) نے اپنے ہاتھ بڑھا کرایئے یال گھر میں تھینج لیا اور دروازہ بند کردیا، اورلوگوں کو جو گھر کے دروازے پر تھے کیا چھوٹے کیا بڑے اندھا کرویا، سووہ دروازہ ڈھونڈتے ڈھونڈتے تھک گئے''۔ (پیدائش ۱۹-۹-۱۱)

وَلَقَدُجَاءَالَ فِرْعَوْنَ قَوْمه مَعَهُ التُّذُّرُ ۚ الإِنْدارُ على لِسَان سُوسَى وهَارُونَ فَلَم يُؤسِنُوا بَل كَذَّبُوا بِالْيِتِنَاكُلِّهَا اى التسع الَّتِي أُوتِيُهَا مُوسَى فَلَخَذْنُهُمْ بالعَذَابِ آخُذَعَزِيْزٍ قَوِيَ مُقْتَدِرٍ ۖ قَادر لا يُعْجِزُه شَيْءٌ ٱلْقَارُكُمْ يا قُرَيشُ خَيْرُمِّنِ أُولَكُمُ المَدْكُورِينَ من قومِ نوحِ الى فِرعَونَ فلم يُعَذَّبُوا أَمْرِلَكُمْ يا كُفَّارَ قُريشِ كَرَّاعَةً مِنَ العذَابِ **فِي الزَّبِيُّ** الكُتُبِ والاستِفهامُ فِي المَوضِعَينِ بمعنى النَّفَي اي لَيْسَ الاَمرُ كذلك أَم**رَيَقُولُونَ** اي كُـفَّارُ قُرَيشِ خَعْنُ مُجْمِيِّعٌ اِي جَمْعٌ مُّنْتَصِرُ على محمدٍ وَلـمَّا قَالَ ابُوجَهَلِ يومَ بدرِ إِنَّا جَمعٌ مُنْتَصِرٌ نزَلَ سَيُهُزُو الْجُمْعُ وَيُولُونَ الْأَبُرُ فَهُ زِسُوا بِبَدْرِ ونُصِرَ رسُولُ اللهِ صلى الله عليه وسلم عليهم بِلِالسَّاعَةُ مَوْعِدُهُمُ بالعذَابِ وَالسَّاعَةُ اى عذَابُها أَدْهِى أَعْظَمُ بَلِيَّةً وَأَمَّرُ اشَدُ سِرَارَةُ سِنَ عذابِ الدُنيا إِنَّ الْمُجْرِهِيْنَ فِي صَالِي هَلَاكِ بِالقَتُلِ فِي الدُّنيا قُسُعُو ۚ نَارِ مُسَعَّرَةٍ بِالتَّشُدِيدِ اي مَهَيَّجَةٍ فِي الاخرَةِ يَوْمَرُسُحُبُونَ فِي التَّارِ عَلَىٰ وُجُوهِهِم اللهِ اللهِ وَيُقَالُ لهم دُوقُو الصَّاسَقُ الصَابَة جهنَّمَ لكم إِنَّاكُلَّ شَيْءٍ مَنْصُوب بفِعر يُفَسِّرُه خَلَقْنَهُ بِقَدَيرِ حال مِن كُلَّ اي مُقَدَّرًا وقُرِئَ كُلِّ بالرَّفع مُبُتَدَأَ خبرُه خَلَقناه وَ**مَآ اَمْرُيَّ**آ لِنتَىيَ نُرِيدُ وُجُودَه إِلَّا اَسُرَةٌ وَالْحِدَةُ كُلَمْعِ بِالْبَصَرِ في السُّرعةِ وهي كُن فيُوجَدُ إِنَّما أَسُرُه إِذَا أَرَادَ شيئًا أَنُ يَّقُولَ له كُن فيكُونُ وَلَقَدُ الْهُلَكُنَّ الشِياعَكُمُ اشْبَاهَكِم فِي الكُفرينَ الْاسَمِ الماضِيَةِ فَهَلَ مِن مُكَوِ الأسُرِ اى اذْكُرُوا واتَّعِظُوا وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوهُ اى العِبَادُ مكتُوبٌ فِي الزُّبِرُ ﴿ كُتُبِ الحَفَظَةِ وَكُلُّ صَغِيْرٍ وَكَبِيرٍ سِنَ الذُّنبِ او العَمَلِ مُستَطَّرُ مُكْنَتَبُ فِي اللَّوحِ المحفُّوظِ إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنْتٍ سِستِينَ قَنَهَرِ أَهُ أُرِيدَ به الجِنسُ وقُرِئُ مَصَمِّ النُّون والهاء جَمَعًا كَاسَدٍ وأُسُدٍ، المعنى أنَّهم يشُربُون بس انُهَارها الماء والمبينَ والعَسْلَ والحَمُرَ فِي مَقْعَدِصِدَقِ مَجْلِسِ حَقِّ لا لَغْوَ فيه ولاَ تاثيم وأريدَ به الجنسُ وقُرِئ مقَاعِد، المعنى أنَّهم في مَجَالِسَ مِنَ الجَنَّاتِ سَالِمَةٍ منَ اللَّغُوِ والتاثيم بِخلافِ مجالِسِ الدنيا فقلّ انُ تَسْدَمَ مِن ذلك وأَعْرِبَ هِذَا خَبَرًا ثانيًا وبدَلًا وهُوَصادِقٌ ببَدَلِ البَعْض وغيره عِنْدَ مَلِيْكٍ مِثلُ سُالغةِ اي غَرِيزِ المُلكِ واسعِم مُّ**قَتَّدِرِ ۚ** قَادِرِ لا يُعجزُهُ شيءٌ وهُو اللَّهُ تعالَى وعِند اشَارُةُ الى الرُّتـة عِ والقُدرة س فصله تعالى.

ت اور فرعو نیوں بعنی فرعون کی قوم کے پاس مع فرعون کے ڈراوے (ڈرنے کی ہاتیں) حضرت موک علیج لاہ والشافیدا ور ہارون علیج لاہ والشافید کی زبانی آئے گروہ ایمان نہ لائے بلکہ تمام نونشا نیوں کو جیٹلا دیا جوموی علیج لاہ والشافید کو عطا کی سی تھیں چنانچیہم نے ان کو عذاب میں بکڑلیا توی اور قادر کے بکڑنے کے مانند کہاس کوکوئی چیز عاجز نہیں کرسکتی ،اے قریشیو! کیاتمہارے کا فران کا فروں ہے جوقوم نوح ہے لے کرقوم فرعون تک مذکور ہوئے کچھ بہتر ہیں ، کہان کوعذاب نہ دیا جائے یا تمہارے لئے اے قریش کے کا فرو! کتابوں میں عذاب سے براءت تھی ہوئی ہے اوراستفہام دونوں جگہ بمعنی نفی ہے لینی ایسی بات نہیں ہے کیا کفار قریش رہے کہتے ہیں کہ ہم محمد پر غالب آنے والی جماعت ہیں اور جبکہ بدر کے دن ابوجہل نے كها كه بم غالب آنے والى جماعت بيل تو آيت سَيُهوَهُ الجمع ويُؤلُونَ الدُّبُو نازل بولَى، عنقريب بيه جماعت تنكست خور دہ ہوکر چیٹھ پھیر کر بھا گے گی چنا نچہ بدر میں ان کوشکست ہوئی اورمحمد نیق نتیجان پر غالب ہوئے بلکہ قیامت ان سے مذاب کے وعدہ کا وفت ہے اور قیامت لیعنی اس کا مذاب بڑی آفت اور ونیا کے عذاب سے سخت نا گوار ہے بلاشبہ مجر بین کمراہی یعنی و نیامیں قتل کے ذریعہ ہلا کت میں میں اور بھڑ کتی ہوئی آگ میں میں مُسَعَّسو ۃ تشدید کے ساتھ ہے لیتنی آخرت میں دہکتی ہوئی آگ جس دن کہان کوآگ میں منہ کے ہل گھسیٹا جائے گا لیمنی آخرت میں اور ان سے کہا جائے گا دوزخ کی آگ سِنے کا مزا چکھو، تمہارے جہنم میں داخل ہونے کی وجہ ہے ہم نے ہر چیز کوانداز ہے پیدا کیا کیا گیا۔ شکی کافعل ناصب و فعل مقدر ہے جس کی تفسیر خَلَقْمهُ کررہاہے بقَدَر کلّ شیء سے حال ہے، ای مقدرًا اور کلّ کومبتدا ہونے کی وجہ سے مرفوع بھی یڑھا گیا ہےاس کی خبر حلَقْنَاهُ ہے اور ہماراتھم اس فن کے لئے جس کے وجود کا ہم ارادہ کرتے ہیں صرف ایک مرتبہ ہوتا ہے سرعت میں بلک جھکنے کے مانند ہوتا ہے،اور وہ تھم کلمہ کن ہے،تو و دچیز (بلاتو تف)موجود ہوجاتی ہے،اوراس کا تھم اس دفت ہوگا جب وہ کسی شی کے لئے کن کہنے کا ارادہ کر لیتا ہے، تو وہ شئ ہوجاتی ہے، اور ہم نے امم ماضیہ میں ہے کفر میں تمہارے ہم مشرب لوگوں کو ہلاک کر دیا ہیں کوئی ہے تھیجت لینے والا ؟استفہا م بمعنی امر ہے یعنی بند وتصیحت حاصل کر و جوا عمال بھی ہے ہو ً کرتے ہیں وہ اعمال ناموں لیعنی حفاظت کے فرشتوں کی تتابوں میں لکھیے ہوئے میں ہر حجھوٹا اور بڑا گنہ ہیا عمل ،لوح محفوظ میں لکھا ہوا ہے یقینا ہمارا ڈرر کھنے والے باغوں اور نہروں (کی فضا) میں ہوں گے نہر ہے جنس کا ارادہ کیا گیا ہے، اور جمع کے طور پرنون اور ہاء کے ضمہ کے ساتھ (بھی) پڑھا گیا ہے، جیسا کہ اَسندٌ اور اُسندٌ میں معنی یہ بیں کہ وہ یانی اور دودھ اور شہد اورشراب کے نہروں ہے پئیں گے ایک عمرہ مقام یعنی مجلس حق میں ہول گے نہ دیاں لغویات ہوں گی اور نہ گناہ کی باتیں اور (مَـقَعَدُ) ہے جنس کا رادہ کیا گیاہے اور مقاعد بھی پڑھا گیاہے معنی یہ بیں کہ دہ جنت میں الیی مجلسوں میں ہول گے جولغویات اور گناہوں کی باتوں ہے محفوظ ہوں گی ، بخلاف دنیا کی مجلسوں کے کہ (دنیا کی مجاسیس)ان باتوں سے بہت کم خالی ہوتی ہیں اور (مَـفْـعَد صدق) کو (اِنَّ) کی خبر ٹانی کے طور بربھی اعراب دیا گیا ہے،اور (جَـنْت) ہے بدل کے طور بربھی،اورو ہبدل < (زَمِزَم بِبَاشَرِزٍ) €</

البعض وغیرہ پرصادق آتا ہے قدرت والے بادشاہ کے پاس لیعنی عِٹْدَ مَلِیْكِ مثال بطورمبالغہ ہے(هیقة عندیت مراد نہیں ہے) لیعنی وہ غالب وسعت والا باوشاہ ایسا قادر ہے کہ کوئی شئ اس کو عاجز نہیں کر سکتی اور وہ اللہ تعالیٰ ہے اور عسع دے قربت رتبی کی طرف اشارہ ہے اور قدرت (قربة) الله کے صل ہے ہے۔

عَجِفِيق الْمِنْ الْمِينَ الْمُ الْمُ الْمُ الْمُ الْمُ الْمُؤْلِلِا الْمُؤْلِمُ الْمُلْكُ الْمُؤْلِمُ الْمُلْ

وَ فَكُلُّنا ؛ الْإِنْدَارُ مفسرعلام ف نُدُّر كُنْفير الانذار عكركا شاره كردياك نُدُرٌ مصدر يجمعن وراوا، وراف وال نثانیاں، یہال نُذُرٌ کی جمع بھی ہوسکتی ہے، ڈرانے والے (الآیات النسع) (المعصاء ﴿ البد البيضاء 🗭 والسنين 🛡 الطمس 🕲 الطوفان 🕥 الجراد (ثدَّى) 🎱 القمل (جول) 🐧 الضفادِع (مينذك) 🍳 الدُّم.

قِبُولِنَى: خيـرٌ من أولنِهُ عُنِي اعِنِي اعتريبُ كياتمهارے كافرسابقة قوموں كے كافروں سے قوت وشدت ميں بزھے ہوئے ہیں، طاہر ہے کہ ہیں۔

فَيُولِنَى : أَذْهِى مِهِ ذَاهِيَةٌ سے استفضيل ہے بمعنی بری آفت جس سے خلاصی ممکن نہو۔

فَيُولِكُمُ ؛ أَمَرٌ سَحْت رَبْكُ رُـ

فِيْوَلِكُ : سُعُر اى نارٌ مُسَعَّرَةٌ رَجَى بولَى آك_

فِيُولِكُنَى: يَوْمَ يُسْحَبُوْنَ ، يَوْمَ فَعَل مقدر كاظرف بِتقريم إرت بيب ويقال لَهُ مريومَ النع فيزسُعُو كابحى ظرف

فَيْكُولِكُن : إِنَّا كُلُّ شَيْءٍ مَنْصُوب بفعل المح كُلُّ كُفب كماته ما اضمر كقاعده يجهورك قراءت إاور يبى رائح ہے،اس لئے كه مُحُلُّ كارفع اعتقادِ فاسد كى طرف موہم ہے،اس طريقه بركه مُحُلُّ كومبتداء قراروي،اور خسكَفْهَاهُ جمله ہوکر منسیء کی صفت ہواور بیقدر اس کی خبر،اب اس کا ترجمہ ہوگا ہروہ چیز جس کواللہ نے بیدا کیا ہے اندازہ سے ہے،اس سے وہم ہوتا ہے کہ بعض چیزیں ایس بھی ہیں جواللہ کی مخلوق نہیں ہیں ، حالا نکہ اہل سنت والجماعت کا بیعقیدہ ہے کہ برشی اللہ کی مخلوق ہے اور انداز وے ہے نصب کی صورت میں ترجمہ ریہ دگا ،ہم نے ہر چیز ایک تفذیر (منصوبہ) کے ساتھ پیدا کی ہے۔

خلاصة كلام:

إِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَفْنَهُ بِفَدَرٍ ، كُلُّ مِين وواحمَّال بِين رفع اورنصب، پھر رفع كى صورت مين وواحمّال بين ايك صحيح اور دوسرافاسد، حَسلَقْذَاهُ كو سُحُلُّ كَي خبر بنايا جائے توبيصورت سيح بوگى معنى يهول كے كه برشى ہم فے انداز و سے بيداكى ہے،

€ (وَكُزُمُ بِبَالثَهِ إِنَّهِ اللهِ

یجی اہل سنت والجماعت کامسلک ہے،لیکن رفع کی صورت میں ایک دوسرااحمال بھی ہے جو کہ فاسد ہے اور وہ یہ ہے کہ خَسلَقَنَاهُ، شيءٍ كى صفت بواور بقدرٍ كُلُّ كى خبر بو توبيعنى اللسنت كنز ديك فاسد بين اس كا مطلب بوگا هروه چيز جوہم نے بیدا کی ہےوہ انداز ہ ہے ہاں ہے میں منہوم ہوتا ہے کہ بعض چیزیں ایس بھی ہیں جوغیراللہ کی پیدا کردہ ہیں، اوروہ انداز ہے تہیں ہیں، بیرند ہب معتز لہ کا ہے، بخلاف ٹے ل پرنصب پڑھنے کے کہاس میں فاسد معنی کا احتمال نہیں ہے اورنصب کی صورت میرموگی که محل عمل محذوف کامفعول ہوگا جس کی تفییر بعدوالانعل (خسلے ناه) کرر ہاہے اس کو باب اشتخال اور مَا اُضحِرَ عامِلُهُ على شويطةِ التفسير كا قاعده كَيْمَ بين بقدرٍ ، بتقديرٍ كَمْعَىٰ بين باورتعل ب متعنق ہے،اس صورت میں خَلَقْنَاهُ كوسُكُلَّ شَيء كى صفت بنانے كااختال نہيں ہے كه فساد معنى كا وہم ہواس لئے كه صفت، موصوف میں عال نبیں ہوا کرتی اور جوعامل نہ ہووہ عامل کی تفسیر بھی نبیس کر سکتی۔ (اعراب القرآن، للدرویش)

يَجُولَكُونَ ؛ وكلُّ شي فعلوهُ في الزبو يبال سابق كرخلاف كلُّ بررفع متعين جاس كئ كرنصب كي صورت ميس معنى كاف وظاهر ب،اس كئ كداكر كلَّ برنصب برُحاجات نو تقدير عبارت بيهوك فَعَلُوا كلَّ شيء في الزُّبُرِ انهول نے برشیٰ کولوح محفوظ میں داخل کیا ہے، حالا نکہ لوح محفوظ میں داخل کرنے کا کام انٹدکا ہے نہ کہ مخلوق کا ، اس کے علاوہ عاملین کے افعال کےعلاوہ لوح محفوظ میں اور بہت سی چیزیں ہیں جن کا عاملین ہے کوئی تعلق نہیں ہے،اور رقع کی قراءت کی صورت میں مطلب بیہ ہوگا کہ جو مل بھی وہ کرتے ہیں وہ لوح محفوظ میں محفوظ ہے۔

فِيُولِكُ ؛ أريد به المجنس، نَهَوْ اگر چروا صرب مرجَنْت چونكه جمع بالبدااس كى مناسبت سے منس مراوب تاكه اس میں جمع کے معنی کالحاظ ہوجائے فواصل کی رعابت کے لئے مفردلایا گیا ہے اور بعض قرارتوں میں نھے۔ جمع کے صیغہ کے

يَجُولَكُ ؛ في مَفْعَدِ صَدق اى مقام حسن ش موصوف كاضافت صفت كاطرف بفى مقعدِ صدقٍ من دوتر کیبیں ہوسکتی ہیں اول میرکہ اِن کی خبر ٹانی ہواور فسسی جنساتِ خبراول ہے، دوسری مید کہ جنات سے بدل انبعض ہواس لے کہ مقعد صدق جنات کا بعض ہے۔

هِ فَكُولِكَى: وغيره بيا شاره بكه في مفعدِ صدقِ بدل الاشتمال بهي بوسكتاب اس كے كه جنات، مقعد صدق برشتل بـ فِيَوْلَنَى ، عند ملِيْكِ الرمقعد صدقِ كوبدل قرار دياجائة وعند مَليكِ إنّ كَ خبر تاني موكَ اوراكر مقعد صدقٍ كو إنّ كى خبر الى قرار دياجائة وعند مليك خبر الث بوكى

فَيُولِكُمْ: عِنْدَ اشارة الى الرتبة، عندمليكِ مِن عندية بطور مبالغة تقرب في المرتبة كي تمثيل باور عند عقرب رتبي كو بیان کرنامقصود ہے اس لئے کہ اللہ تعالی سے قرب مکانی مقصود نہیں ہے چونکہ وہ جسم سے منز ہ اور پاک ہے اور قرب و بعد مكانى جسم وجسميات كاخاصه ہے۔

ح (دَمَزَم پِبَلتَ لِإِ

ێ<u>ٙڣٚؠؗڒۅۘؾۺٛڕؙ</u>ڿٙ

آکُفگار کُفر خَیْرٌ مِّن اُولئِکُفر (الآیة) بیشرکین قریش سے خطاب ہے، مطلب بیہ کہ آخرتم میں کیا خوبی ہے یا تم میں کو نسے سرخاب کے پر گئے ہوئے ہیں یا تمہار لے حل لئے ہوئے ہیں کہ جس کفر و تکذیب اور ہٹ دھری کی روش پر دوسری قوموں کو سزاوی جا چک ہے وہی روش تم اختیار کروتو تمہیں سزاند دی جائے؟ اور یہ کہ طاقت وقوت نیز دولت پر دوسری قوموں کو سزاوی جا چک ہے وہی روش تم اختیار کروتو تمہیں سزاند دی جائے؟ اور یہ کہ طاقت وقوت نیز دولت و شروت میں بھی تم ان سے برجہا کمزور و تا تواں ہو جب ہم نے ان کو ان جرائم کی اور قت میں بھی تم ان سے بر حصے ہوئے نہیں ہو بلکہ ان سے بدر جہا کمزور و تا تواں ہو جب ہم نے ان کو ان جرائم کی پاداش میں ہلاک کرویا تو تمہاری کیا حقیقت و حیثیت اور تمہار او جو د'' چہ پدی چہ پدی کا شور ہا'' تم بلا وجدا ہے منہ میاں مضوبے ہوئے ہو۔

یا آسانی کتابوں میں تمہارے لئے کوئی معافی نامہ لکھا ہوا ہے کہتم جو جا ہوکرتے رہوتم سے کوئی مواخذہ نہ ہوگا ،اور نہ تم پر کوئی غالب آسکتا ہے۔

یا ان کا کہنا ہے ہے کہ تعداد کی کثرت اور وسائل کی قوت کی وجہ سے کسی اور کا ہم پر غالب آنے کا امکان نہیں ہے یا مطلب ہے ہے کہ ہمارامعامد مجتمع ہےاور ہم جتھا بند ہیں ہم دشمن سے انتقام لینے پرقادر ہیں۔

ایک پیشنگو ئی:

سیکھڑ م الجمع ویُو اُلْوْ کَ الَّذُبُرِ اللّٰہ تبارک وتعالی نے شرکین مکہ کے زعم باطل کی تر دیڈر مائی ہے، یہ سرت کوشکو کی ہے جو بھرت سے پاپنج سال پہلے کردی گئی کہ قریش کی جھیت جس کی طافت کا آئیں ہڑا زعم تھا، عظر یہ سلمانوں سے محکست کھاجائے گ، اس وقت کوئی محف پی تصور تک نہیں کرسکتا تھا کہ ستقبل قریب میں بیا انقلاب کیسے ہوگا؟ مسلمانوں کی بے بی کا بیحال تھا کہ ان میں سے ایک گروہ ملک چھوڑ کرجش میں پناہ لینے پر مجبور ہوگیا تھا، اور باتی ماندہ الل ایمان شعب ابی حالیہ اس سے ایک گروہ ملک جھوڑ کرجش میں پناہ لینے پر مجبور ہوگیا تھا، اور باتی ماندہ اللہ ایمان شعب ابی حالیہ ہیں کے مقاطعہ اور محاصرہ نے بھوکوں ماردیا تھا، اس حالت میں کون بیس بھرسکتا تھا کہ ست ابی مرس سے اندرنقشہ بدل جائے گا؟ حضر ست عبداللہ بن عباس کے شاگر دعر مدکی روایت ہے کہ حضر ست می وقت اندیکی تھا کہ فرہ ہوگیا گئی ہم جب میں کہ بردی ہوگی ہوگی کہ بدر میں کہ رشکست کھا جائے گا ، حضر سے بھے اس وقت میں نے ویکھا کہ رسول اللّٰہ یہ بھوٹی ہوگی در ہے بھے اس وقت میں نے ویکھا کہ رسول الله یہ بھوٹی کو رکھ کو کہ اندیکی ہوئے کہ ویکھی کو کہ کو کو کہ اللّٰہ بو کے آگے کی طرف جھیٹ رہے ہیں اور آپ کی ذبان مبارک پر بیالفاظ جاری ہیں سکیھئے کھا کہ رسول الله یکھی گؤ کو کہ اللّٰہ بو کے آگے کی طرف جھیٹ رہے ہیں اور آپ کی ذبان مبارک پر بیالفاظ جاری ہیں سکیھئے کہ المجمع و اُو کُوْنَ اللّٰہُ بو جب میری سمیری سکیل کے کہ یہ تھی وہ ہزیمت جس کی خبردی گئی ۔

(ابن جورہ ابن ابی حاتم)

بل الساعة مَوْعِدُهم والساعةُ اَدُهنی وَاَمَوُّ مطلب بیہ کے دنیا میں غزوۂ بدر کے موقع پر جومشر کین مکہ کوسز اہلی قتل کئے گئے اور قیدی بنائے گئے ، بیان کی آخری سزانہیں بلکہ اس سے بھی زیادہ سخت سزائیں ان کو قیامت والے دن دی

جا کیں گی جن کا ان سے وع**د و کیا جا تا ہے۔**

مسكه تقدير:

اِنَّا كُلُّ شَنَيْء خَلَفْنَاہ بقدہ ایک ایک اللہ سنت نے اس آیت اور اس جیسی دیگر آیات سے استدلال کرتے ہوئے تقدیر النی کا اثبات کیا ہے جس کا فرقہ قدریدا نکار کرتا ہے ، مطلب سے کہ دنیا کی کوئی چیز اللی ثب ہیں پیدا کردی گئی ہے ، بلہ ہر چیز کی ایک تقدیر اور منصوبہ بندی ہے جس کے مطابق وہ ایک مقرر وقت پر بنتی ہے اور خاص شکل وصورت اختیار کرتی ہے ایک خاص مدت تک نشو و نما پاتی ہوجاتی ہے ، اس عالمگیر ضابطہ کے مطابق خوداس تک نشو و نما پاتی ہے اور ایک خاص وقت پر ختم ہوجاتی ہے ، اس عالمگیر ضابطہ کے مطابق خوداس دنیا کی بھی ایک تقدیر ہے جس کے مطابق ایک وقت خاص تک بیچل رہی ہے اور ایک وقت خاص پر اسے ختم ہونا ہے۔

وَمَا اَمْرُنَا إِلَّا وَاحِدَةٌ (الآیة) لینی قیامت برپاکرنے کے لیے جمیں کوئی بڑی تیاری نہیں کرنی ہوگی اور نداسے لانے میں کوئی بڑی میادر ہوتے ہی پلک جھیکتے لانے میں کوئی بڑی مدت صرف ہوگی، جماری طرف سے ایک تھم صادر ہونے کی دہر ہے، تھم صادر ہوتے ہی پلک جھیکتے قیامت بریا ہوجائے گی۔

وَلَقَدْ اَهْلَكُذَا اللّٰیاعَكُم فِهل من مدّ كو لینی اگرتم یہ بحصتے ہوكہ یہ میں خدائے حکیم وعادل کی خدائی نہیں بلكہ سی اند ہے راجا کی چو پٹ نگری ہے جس میں آ دمی جو بچھ جا ہے کرتا پھرے كوئی اس سے باز پُرس كرنے وال نہيں تو تمہاری آ نكھ كھولنے كے لئے انسانی تاریخ موجود ہے جس میں ای روش پر جلنے والی تو میں بے در بے تباہ کی جاتی رہی ہیں۔

و کُیلُ منسی فعلوہ فی الزُبُر (الآیة) یعنی بیاوگ اس غلط بھی میں بھی ندر ہیں کہان کے کئے ہوئے کا لے کرتوت غائب اور مفقود ہو گئے ہیں نہیں ، ہر محض ، ہر گروہ اور ہر قوم کا پورا پورا ریکار ڈمحفوظ ہے اورا پنے وقت پروہ سامنے آجائے گا۔



ڒڒ؆ؙٳٳڮڂٳڝؙڵؾٷڲۿؾؙٵٷڰٷٷٳڮٷٳ ڛ؈ؙٳڸؾ؆ڹڹؾ؆ڿؽۿٲؽڛڹۼ؈ٳؽڗؠڵٷٷ

سُوْرَةُ الرَّحْمٰنِ مَكِّيَّةُ او إِلَّا يَسْأَلُهُ مَن فِي السَّمُوٰتِ وَالْارْضِ (اَلَايَةَ) فَمَدَنِيَّةٌ وهي سِتُّ اوثمَانٌ وَسَبْعُوْنَ ايَةً.

سورة رحمٰن على بريا إلا يسالُهُ الآية مدنى باوروه ٢١٨ مآييس بيل

يَسِّ جِرَاللهِ الرَّحِ مُنِ الرَّحِيْ مِن الرَّحِيْ مِن الرَّحِمْنُ فَعَلَمَ مَنْ شَاءَ الْقُرْانَ فَ تَحَلَقَ الْإِنْسَانَ فَ العِنسَ عَلَمُهُ الْبِيَانُ النُطْقَ النَّمْسُ وَالْقَمُرُكُ مِلَانِي بِحِسَابِ يَحْرِيَان وَالنَّجُرِ مَالَا سَاقَ له مِن النَّبَاتِ وَالشَّجُرُ ماله سَاقٌ يَسْجُلُنِ® يَخْضَعَان بِمَا يُرَادُ منهما وَالتَّمَاءِ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيْزَانَ۞ أَثبَتَ العَدَلَ ٱلْأَنْطُغُوا اي إَجْلِ أَنْ لَا تَجُورُوا **فِي الْمِيْزَانِ®** مَا يُـوزَنُ بِهِ **وَاَقِيْمُواالْوَزَنَ بِالْقِسُطِ** بِالْعَدُلِ **وَلَاتُحُسِرُواالْمِيْزَانَ®** تَـنُفُصُوا الْمَوزُونَ <u>وَالْأَرْضَ وَضَعَهَا</u> آثَبَتَهِ لِلْكَنَاهِ ۗ لِـلُـخَـلُقِ الإنْسِ والجِنَ وغيرِهِم فِيْهَافَاكِهَ أَثَنَّوَالْتَخُلُ الـمَعُهُودُ ذَاتُ الْكَلْمَامِرَ ۗ اَوْعِيَةُ طَلَعِهِ **وَالْحَبُّ** كَالِحِنْطَةِ والشَّعِيرِ ذُو**الْعَصَّفِ** التِّنِنِ **وَالْرَبِّحَانُ** ۚ الوَرَقُ والمَشْمُومُ فَ**بِآيِ الْآءِ** نِعَم مَّ **يَكُ**مُّا يَايُّهَ الإِنْسُ وَالجِنُّ ثُكُلِيَّانٍ فَكِرَت احدى وثلثِينَ مَرَّةً وَالإِسْيَفهامُ فِيهَا لِيتَّقرِيرِ لما روى الخَاكِمُ عَسْ جَابِرٍ قَالَ قَرأَ عَلِينا رَسُولُ اللَّهِ صلى اللَّه عليه وسلم سُورَةَ الرَّحمٰنِ حَتَّى خَتَمها ثُم قالَ مالِي اركُمُ سُكُوتًا لَنُجِنَّ كَانُوا أَحْسَنَ مِنكُم رَدًّا مَا قَرَأْتُ عليهم هذه الآيةَ مِن مَرَّةٍ فَبِأَيّ الآءِ ربّكُمَ تُكذِّبنِ، الا قالُوا ولا مشيئ ، بن بغمِكَ رَبَّنَا نُكَذِّبُ فَلَكَ الحَمُدُ خَلَقَ **الْإِنْسَانَ ا**دَمَ صِنْصَلْطِ الله طين يَابِسِ يُسُمَعُ له صلَضمةً اى صوتْ ادا تُقِرَ كَ**الْفَخَّارِ ۚ وهُو مَا طُبِخَ مِنَ الطِّينِ** و**َخَلَقَ الْجَلَنَّ** ابا الجنِّ وهُو ابليسُ مِ**نْ مَّالِحَ مِّنْ نَّالِ ۚ** هُو هَهُ الْحَابِصُ مِنَ الدُّخارِ فَيَأَيِّ الْأَوْمَرَيِّكُمَا تُكَدِّبِنِ® رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ مَشُرِقِ الشِّنَاءِ ومَشُرِقِ الصَّيْبِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ﴿ كَذَالِكَ فَيَاكِيَّ الْآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبُنِ مَنَحَ ارْسَلَ الْبَحْرَثِنِ العَدْبَ والمِلْحَ يَلْتَقِينِ فَي رَأَي العَيْرِ بَيْنَهُمَا أَبُوْرَجُ حَاجِرٌ سِ قُدْرتِه تعالى لِ**لَيَبْغِينِ ﴿** لايَبْغِي وَاجِدُ سنهما على الاَخَرِ فَيَخْتَلِطُ بِه فَيِهَا كِيَّالُوَا لَكُذَلْنِ ۗ يَخْنَجُ

بلب المنفعولِ والفَاعِلِ مِنْهُمَا من مَجموعِهما الصادق بَاحَدِهما وهُو المِلحُ اللَّوُلُوُوَالْمَرْجَانُ ﴿ حَرِرٌ عَلَى اللَّمُ اللَّهُ وَالْمُؤَوِّ الْمُرْجَانُ ﴿ حَرِرٌ اللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَلَا الْمُؤَالِلْمُ اللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَلِلْهُ اللَّهُ وَلِلْهُ اللَّهُ وَلِلْهُ اللَّهُ وَلِلْهُ اللَّهُ وَلِلْهُ اللَّهُ وَلِلْهُ اللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَلِلْهُ اللَّهُ وَلِلْهُ اللَّهُ وَاللَّهُ وَلِللْهُ اللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَلِللْهُ اللَّهُ وَلِللْهُ اللَّهُ وَلِلْهُ اللَّهُ وَلِللْهُ اللَّهُ وَلِللْهُ اللَّهُ وَلِللْهُ اللَّهُ وَلِللْهُ اللَّهُ وَلِللْهُ اللَّهُ وَلِي اللَّهُ وَلِي اللللْهُ وَاللْهُ وَاللَّهُ وَاللّهُ وَلِي اللّهُ وَاللّهُ وَلِي اللّهُ وَاللّهُ واللّهُ وَاللّهُ واللّهُ والللّهُ واللّهُ واللّهُ واللّهُ الللّهُ واللّهُ ا

ت من علی اللہ کے نامول اللہ کے نام سے جو برا امہر بان نہایت رحم والا ہے، رحمٰن نے جس کو چا ہا قر آن سکھلایا انسان تعیٰ جنس انسان کو پیدافر مایا اس کو گفتگو کرناسکھلایا سورج اور جاند مقررہ حساب سے چلتے ہیں اور بیلیں یعنی وہ کھ س جس کا تنا نہ ہو اور شخر کیعنی ہتنے دار درخت ، جوان ہے مطلوب ہے اس کے تالع ہیں ،اوراس نے آسان کو بلندو بالا کیا اور میزان رکھ دی بعنی انصاف قائم کیا تا کہتم لوگ تول میں تنجاوز نہ کرواور تا کہ انصاف کے ساتھ وزن کوٹھیک رکھواور تول میں کم نہ دو یعنی وزن میں کمی نہ کرو اورمخلوق یعنی جن وائس وغیرہ کے لئے زمین بچھا دی جس میں میوے ہیں اور محجور کے درخت ہیں جومعنوم ہیں جن کے (کھلول) پرغلاف ہوتا ہے (اَکے مام) شکوفہ کا غلاف، اورغلہ جبیہا کہ گندم اور بھو مجوے والے اور پتوں والے (یا) خوشبو والے پھول پیدا کئے تو اے جن اور انسانو! تم اینے رب کی کون کون سی تعمقوں کے منکر ہوجاؤگے؟ (بیآیت) ۳۱ مرتبہ ذکر کی گئی ہے اور استفہام اس میں تقریر کے لئے ہے، جیسا کہ حاکم نے جابر تَعْمَالْمُنَةُ تَعَالِينَةً سے روایت کیا ہے فرمایا کہ رسول اللہ بتان عَلَیْ اللہ ہم کوسور ہ رحمٰن بوری پڑھ کرسنائی ، پھر فرمایا کیا بات ہے کہ میں تم کوخا موش دیکھے رہا ہوں؟ جنات جواب کے اعتبارے یقیناً تم سے بہتر تھے، میں نے جب بھی ان کو بیآیت فیب أيّ الآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَان بِرُ صَرَسَانَى بَصِ ايبانبيس مواكرانبول في وَلَا بِشَيْءٍ مِنْ نِعَمِكَ رَبَّنَا نُكَذِّبُ فَلَكَ الْحَمْدُ نہ کہا ہو(اے ہمارے پروردگار ہم تیری کسی نعمت کی بھی تکذیب (ناشکری) نہیں کرتے ، تیرے ہی لئے سب تعریقیں ہیں)اس نے انسان آ دم کوالیم مٹی ہے جوٹھیکر ہے کی طرح تھنکتی تھی پیدا کیا (لیعنی)الیم خشک مٹی سے جس میں آواز تھی جب بج ما جائے اور وہ البیمٹی ہے جس کو بیکا یا گیا ہو اور جنات کو (یعنی) ابوالجن کواور وہ ابلیس ہے خالص آگ سے پیدا کیا ، اور مسسار ج آگ کا و ہشعلہ جس میں دھواں نہ ہو تم اینے رب کی کون کون ی نعمتوں کے منکر ہوجا ؤ گے؟ وہ دونوں مشرقوں سردیوں کی مشرق اور گرمیوں کی مشرق اور اس طرح دونوں مغربوں کا رب ہے تو تم اپنے رہ کی کون کون سی نعمتوں کے منکر ہوجا وُ گے؟ شور اور شیریں دو دریا وَل کو جاری کیا جو بظاہر ملے ہوئے ہیں،حقیقت میں ان دونوں کے درمیان آڑے لیعنی الندنعی کی قدرت کی آڑے کہ دونوں بڑھیمیں سکتے ،لیعنی ان دونوں میں ہے کوئی دوسرے پر تنجاوز نہیں کرسکتا کہاس سے خلط ملط ہوجائے تو تم اپنے رب کی کون کون ہی نعمتوں کے منکر ہوجا ؤ گے؟ اوران دونوں ہے بینی دونوں کے مجموعہ سے موتی اورمو نگے برآ مہ ہوتے ہیں مجموعہ کا اطلاق ایک پربھی ہوتا ہے اور وہ (دریائے) شور ہے ینحو نج معروف اورمجہول دونوں ہے (**لؤلؤ)** بڑے *سرخ*موتی (میر جان) حچھوٹے موتی تو تم اپیغ رب کی کون کون س نعمتوں کےمنکر ہوجا وَ گے؟ اللہ ہی کی ملک ہیں وہ جہاز (کشتیاں) جو دریا میں پہاڑوں کے مانند ببند ہیں، بلنداو^{عظیم}

ہونے میں بہاڑوں کے مانند ہیں تو تم اپنے رب کی کون کون کا نعمتوں کے منکر ہوجاؤگے؟

جَيِقِيق تَرَكِيكِ لِيَسَهُ الْحَقَقَيْ الْمِحْ فُوالِلا

فَیُوْلَیْ: السَّحمن مبتدا، ابعدال کی خبر، تعدیداورا قامت ججة کے طور پرخبر بغیر عطف کے متعدد بھی ہو سکتی ہے جیسا کہ یہاں بغیر عطف کے خبر متعدد ہیں، السوحمن مبتدا، اور ما بعدال کی خبر، یہان لوگوں کے نزدیک ہے جو المسوَّحمن کو پوری آیت نہیں منے ورجولوگ پوری آیت مانے ہیں، ان کے نزدیک الموحمن مبتدا، محذوف کی خبرہے ای الملُ الموحمن یا الموحمن مبتدا، ہے اور دہنا اس کی خبر محذوف ہے۔

جَوْلِيْ؛ مَنْ مِشَاءَ اسْ عبارت كاضافه سے اشاره كرديا كه عَلَّمَ منتعدى بدومفعول ہے اورمفعول اول اس كامحذوف ہے۔ هَا اَعْ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ عَلَى اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ عَلَيْهِ مِن مَبلهِ مِ

چَوُلِی ؛ النطق کو یا کی ،اظهار مافی الضمیر ، یہ قوت حیوانات میں نہیں ہے۔ چَوَاکِی اللّٰ اللّٰ

فَيْوَلْكَى ؛ بلحسبان یه حَسِبَ کامصدرمفرد ہے بمعنی حساب جیسا کہ عُفو ان و کُفُو ان اور یہ بھی ہوسکتا ہے کہ حِسَابُ کی جمع ہوجیب کہ شِھابٌ کی جمع ، شُھبَان اور دَغِیْفٌ کی جمع دُغْفَانٌ (چپاتی) مطلب یہ ہے کہ شس وقمرمقررہ حساب سے اپنے اپنے برجوں میں جلتے ہیں سرِ موانح اف نہیں کرتے۔

فَا عَلِيْكَا : آفّا بِ كَا قطر ١٩٢٥٠ (الله الله چھياسٹھ ہزار بانچ سوميل) ہے، اور وہ تيرہ لا كھ زمينوں كے مساوى ہے، آفتاب زمين كے مانند ٹھوس نہيں ہے اور نہ بانى كى طرح سيال بلكہ بإنى سے ڈيڑھ گنا كثيف ہے (پتلے شہد كے ، نند)

(فلكيات جديده) _ (والله اعلم بالصواب)

فِيَّوَلِكَى، اى لِاَجْلِ أَنْ لَا تَجُورُوْا بِإِس بات كى طرف اشاره بكه الَّا تَسطُغُوْا شِ أَنْ مصدريه بندكمنا فيهاور أَنْ ب يهيد رم علت مقدر ب-

فِيَوْلِكُمْ : أَكْمَامِ ، اكمام جمع كِمْ بمعن شَكُون كاغلاف جملى

فِيْوُلْكُ : آلاءِ تعتيل واصرالي وألى جيم مِعَى وحَصْى واللَّي الَّي.

فَحُولَ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ مَا وَبُّ كَرَفْعَ كَمَاتُهُ اللَّهُ الْحَبْمِ الْحَبْمِ الْحَبْمِ الْحَبْمِ الْحَبْمِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّلْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللللَّهُ اللَّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ الللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّه

قِوَلْلَهُ ؛ يَنْتَقِيَاد به بَحْرَيْنِ عال -

فَخُولِ آئی : مـجـموعُهُما الصَّادِقُ باَحَدِهِمَا شارح كايفرمانا كه دونوں كے مجموعه پر بھی واحد كااطلاق صحح جميم نہيں ہے اس لئے كه مجموعه سے بعض اسی وقت مرادلینا صحح ہے جبکہ بعض سے متعدد مراد ہوں ورنہ توجع بول كرواحد مرادلینا درست نہيں ہے۔

< (فَكَزَم بِسَالتَهُ إِنَّا كَانَ إِنَّ كَانَ إِنَّ كَانَ إِنَّ كَانَ إِنَّ كَانَ إِن الْعَالِ إِن الْعَالِ إ

<u>ێٙڣٚؠؗڔۘۅؿۺٛڿ</u>

نام:

سيرت ابن بشام كي ايك روايت:

مار نے لگے مگر حضرت عبدالقدنے پرواہ ندکی ، پنتے جاتے تھے اور پڑھتے جاتے تھے، جب تک ان کے دم میں دم رہا قر آ ن سن تے چلے گئے، آخر کار جب وہ اپناسو جا ہوا منہ کیکر ملٹے تو ساتھیوں نے کہا جمیں ای چیز کا ڈرتھا، انہوں نے جواب دیا آج ہے بڑھ کریہ خدا کے وشمن میرے لئے بھی ملکے نہ تھے ہم کہوتو کل پھران کوقر آن سناؤں ،سب نے کہابس اتنا ہی کافی ہے، جو پچھوہ نہیں سنن جیا ہے تھے وہ تم نے انہیں سادیا۔ (سیرتِ ابن عشام: حلد اول ص ٣٣٦)

شان نزول:

كها كيا بك الموحمن علَّمَ القرآن الل مك كاس قول ك جواب من نازل مونى كدوه كها كرتے تھے كه اس كوكوئى بشر سکھلاتا ہے،اوربعض کہتے ہیں کہ بیان کے اس قول کے جواب میں نازل ہوئی وہ کہا کرتے تھے کہ رحمٰن کیا ہے؟ اس سورت میں التدتع لی نے اپنی بہت ک تعتیں شار کرائی ہیں، عَلْمَر المقوآن میں الله تعالیٰ نے نعتوں میں جوسب سے بوی نعمت ہے اس کے ذ کرے ابتداء کی ہےاوروہ نعمت قرم آن ہے اس لئے کہ قر آن پر دارین کی سعادت کا مدار ہے۔ (فتح القد بریشو کا نی) عَلَّمَ القر آن کے فقرے ہے آغاز کرنے کا مقصداس بات کی طرف اشارہ کرنا ہے کہ ندتو بیکلام آپ کا خودطبع زاد ہے اور ندکسی انسان وغیرہ کا سکھلا یا ہوا، بلکہ بیانتدار حمن کاتعلیم قرمودہ ہے۔

خَملَقَ الإنسانَ لِعِني انسان بندروغيره ـــــتر في كرتے كرتے انسان نبيس بن گيا جبيها كه دُارون كافلسفهُ ارتقاء ہے؛ بلكه ان ان کواس شکل وصورت میں اللہ نے پیدا فر مایا ہے جو جانوروں ہے الگ ایک مستقل مخلوق ہے، انسان کا لفظ بطور جنس کے

عَـلَّمَـةُ البيان بيان سكصلان كامطلب إظهار ما في الضمير كاطريقة سكصلايا، برخض إلى ما درى زبان ميس اين ما في الضمير كوبغيرسكصل ئے خود بخو دا دا كرليتا ہے يہي تعليم الني كا نتيجہ ہے جس كا اس آيت ميں ذكر ہے۔

الشهب سُ والنقيم أبحسبان انبان كے لئے جوتعتيں حق تعالى نے زمين وآسان ميں پيدافر مائى بيراس آيت ميں علویات میں ہے تنس وقمر کا ذکر خصوصیت ہے شایداس لئے کیا ہے کہ عالم دنیا کا سارانظام ان دونوں سیاروں کی حرکت اوران کی

فَبِاَيِّ الآءِ ربِكَ ما تُكذِّبنِ بانسان اورجنوں دونوں سے خطاب ہے، الله تعالیٰ ابنی نعتیں گنوا کرانسے یو چور ہاہے، یہ تکراراس مخض کی طرح ہے جوکسی میسکسل احسان کر ہے لیکن وہ اس کے احسان کامنگر ہو، جیسے کہے میں نے تیرا فلال کا م کیا ، کیا توانكاركرتاب، فلال چيز تخفي دى، كيا تخفي يا زنبيس؟ تجمه يرفلال احسان كيا تخفيه بماراذ راخيال تبيس؟ وضع الغدير)

خَلَقَ الإنسانَ مِنْ صَلْصَالِ الْح انسان وَجَيْ بولَى خَتَكُمْ في يهدا كيا-

مَيْنُ إِلْ ؛ يهال انسان كَي كليق كوصلصال ي بتايا كياء اورسورة الحجرين مِن صَلْصَالِ مِن حَمَا مَسنُون كالى مرى مولى سياه منى سے خلیق كرنابيان كيا ما درسورة الصافات ميں من طين لازب ليني چيكتى ہوكى منى سے خليق بيان كى كئ ہے، اورسورة

آل عمر ان میں خلقه من تو اب عام ٹی ہے تخلیق بیان ہوئی، آ دم علیفاتی النائی کی تخلیق جا وسم کی مٹی سے قر آن ہے معلوم ہوتی ہے اور مذکورہ جا رول تشمیں ایک دوسرے سے مختلف ہیں ، بظاہر تعارض و تضا دمعلوم ہوتا ہے۔

جِوَلَثِيْ: چاروں میں کسی تشم کا تضاد و تعارض نہیں ہے اس لئے کہ مذکورہ چاروں حالات مختلف ز ، نوں کے ہیں ، تعارض کے سے زمانہ کا متحد ہونا شرط ہے، اول اللہ تعالیٰ نے زمین ہے تراب (مٹی) کی پھراس مٹی میں یانی ملا کر آمیزہ (گارہ) بنایا جس میں چیکا ہٹ پیدا ہوگئی، پھراس کوایک زمانہ تک ای حالت پر چھوڑ دیا تو حسمَا مسنون سڑی ہوئی سیاہ رنگ کی ہوگئی، پھراللہ تعالیٰ نے اس کی تصویر سازی کی جیسا کہ ٹی کے برتن بنائے جاتے ہیں اور پھراس کوسکھاتے ہیں حتی کہ وہ سو کھ کرنہایت سخت تھیکرے کے مانند بیجنے والی ہوجاتی ہے، یہاں پرآخری مرحلہ کا بیان ہےاس کےعلاوہ میں کہیں ابتدائی مرحلہ کا بیان ہےاور کہیں درمیاتی مرحله کابیان ہے۔

و حَلَقَ الْجَانَّ مِنْ مَارِجٍ مِنْ نَارٍ ، جانُ سے جنس جنات مراد ہے، اور مارج آگ کے شعلہ کو کہتے ہیں، انسان کی طرح جن بھی عناصرار بعہ سے بنا ہوا ہے، مگر جن میں ناری عنصر غالب ہے جبیبا کہ انسان میں خاکی عنصر غالب ہے دَ ہُ المه شرقين وربُّ المه خربين سے سردي گرمي كے مشرق دم غرب مراد بين تمس وقمر كامطلع اور مغرب أكر چه بهت فليل مقدار میں روزانہ ہی بدلتا رہتا ہے اس لئے آسانی ہے اس کا احساس نہیں ہوتا ،گرمی سردی کےمشرق ومغرب میں چونک بین فرق اورنمایاں فاصلہ ہوتا ہے اس لئے صرف ان کا ہی ذکر کر دیا ہے ،اور بعض حضرات نے مشرقین اور مغربین سے شس وقمر کے مشرق ومغرب مراد کئے ہیں۔

كُلُّمُنَّ عَلَيْهَا اى الاَرْضِ مِنَ الحَيْوَانِ فَالْ اللهِ عَلَيْكِ وَعُبَرَ بِمَنْ تَغُلِيبًا لِلعُقَلاءِ وَكَيَبْقَى وَجُهُرَيِّكَ ذَاتُه ذُولُجُلُلٍ العَظْمَةِ وَالْإِكْرَامِ لِيُموسِنِ بَانعُمِه عليهم فَيَاتِي الْآءِنَوَيَكُا تُكَذِّبنِ ۚ يَمْثَلُهُ مَنْ فِي التَّمُوتِ وَالْأَضِ اي بِنطَقِ اوحال ما يحتَاجُونَ اليه من القُوّةِ على العِبَادَةِ والرِزقِ والمَغْفِرَةِ وغير ذلك كُلِّيَوْمِ وَقُتِ هُو**َفَيْ شَالِن**ا أَسْرِ يُسطَهِرُه في العَالَمِ على وَفْقِ ما قَدَّره في الأزلِ مِن احْيَاءٍ وإمانَةٍ وإعْزَازِ وإدُلال وإعُناءٍ وإعْدَامِ وإجابَةِ داع واعطاءِ سائِل وغير ذلك **قَيِأَيّ الْآءِرَتِّكِمَا أَتُكَدِّبْنِ۞ سَنَفُرُغُ لَكُمْ** سَنَقُصِدُ لِحِسَابِكُمُ أَيُّهُ الثَّقَالِنَ۞ الانسُ والجنُ فَيَهَايِّ الْآءَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبُنِ® لِمَعْشَرَالِحِنَّ وَالْإِنْسِ إِنِ اسْتَطَعْتُمُ إَنْ تَنْفُذُوا تَخُرُجُوا مِنْ اَقَطَارِ نَوَاحِي السَّمُوٰتِ وَالْأَرْضِ فَالْفُذُوا اللهِ تعجيزِ لَاتَنْفُذُونَ الْآبِسُلْطِن ﴿ بِقُوَّةِ وَلَا قُوَّةَ لِكُمْ عَلَىٰ ذلك فَبِأَي الْآوَرَتَكِمَا لُكَارَ الْإِسْلُطِن ﴿ بِقُوَّةِ وَلَا قُوَّةَ لِكُمْ عَلَىٰ ذلك فَبِأَي الْآوَرَتَكِمَا لُكَارِي ۗ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا لَثُوَاظُ مِنْ قَارِهُ هُ و لَهَبُها الخَالِصُ مِنَ الدُّخانِ اومَعَهُ وَّرُّحَاسُ اى دُخانٌ لالهَبَ فيه فَلَا تَنْتَصِرُنِ ٥٠ تَـمْتَنِعَان سِ ذلك بل يَسُوقُكم الى المَحشَرِ فَهِ أَيِّ الْآءِكَ بِكُمَاتُكُدِّ بنِ ۖ فَإِذَا النَّقَيِّ السَّمَاءُ انْفَرَجَتُ ابوانًا لنُزونِ المَلائكةِ فَكَانَتُ وَرُدَةً اى مِثلَها مُحمَرَّةً كَالدِّهَانِ ﴿ كَالاَدِيمِ الاَحْمَرِ على خِلافِ العَهُدِ بها

وحوابُ إذا فس أعظم الهول في آي الآء مرتكما تكذيبن في ويكوم في الكور الك

ت رہے ہے۔ پیر جی بھی اس پر یعنی زمین پر ہے سب ننا ہونے والا ہے ذوی العقول کونلبددیتے ہوئے میں سے تعبیر کیا ہے (صرف) تیرے باعظمت مونین پرانے انعاموں کا حسان کرنے والے رب کی ذات باقی رہ جائے گی سوتم اپنے رب کی کون کون ک نعمتوں کے منکر ہوجاؤگ؟ اور سب آسان اور زمین والے ای ہے مانگتے ہیں بعنی زبان قال ہے یا زبان حال ے (طلب کرتے ہیں) جس چیز کی ان کو حاجت ہوتی ہے خواہ عبادت پر قدرت ہو، یارز تی یا مغفرت وغیرہ وغیرہ پر وہ ہر وفت ا یک شان میں رہتا ہے (لیعنی ہمہوفت) ایسے تغل میں رہتا ہے جس کووہ عالم میں اس کےمطابق جواس نے از ل میں مقدر کر دیا ہے مثلاً زندگی دینا اورموت دینا اورعزت دینا اور ذکیل کرنا ، اور مالدار کرنا اور مفلس کرنا اور داعی کی دعاء کوقیول کرنا ، اور سائل کو عطا کرناوغیرہ وغیرہ سوتم اینے رب کی کون کون کون کی نعمتوں کے منگر ہوجا ؤ گے؟ اے انسانو اور جنو! ہم عنقریب تمہارے لئے فارغ ہوں گے لینی تمہارے حساب کی طرف متوجہ ہوں گے تم اینے رب کی کون کون سی تعمتوں کے منکر ہوجاؤ گے؟ اے جن اور انسانوں کی جماعتوا گرتم آسانوں اور زمین کی حدود ہےنکل سکتے ہوتو نکل جاؤام تنجیز کے لئے ہے تم طاقت کے بغیر نہیں لکل سکتے اورتم کواس کی طافت نہیں سوتم اینے رب کی کون کون سی نعمتوں کے منکر ہوجا ؤ گے وہ تمہارے او پر آگ کے شعلے جھوڑے گا (مشبواظ) آگ کاوہ شعلہ جس میں دھواں نہ ہو، یا مع دھو تمیں کے،اور خالص دھواں چھوڑے گالیعنی ایسادھواں کہ جس میں شعلہ نہ ہو پھرتم ان کا مقابلہ نہیں کر یکتے بلکہ وہ تم کومحشر کی طرف تھینج کر لے جائے گا سو تم اپنے رب کی کون کون سی نعمتوں کے منکر ہوجا ؤگے؟ پس جب آسان میھٹ جائے گالیعنی ملائکہ کے نزول کے لئے درواز ہے گھل جائیں گے اور چمڑے کے مانندسرخ ہوجائے گاجیہا کہ مرخ چڑا (لینی) سابقہ حالت کے برخلاف اور إذا كاجواب فسما أغظم الهول (محذوف ہے) لینی س قدر ہولنا کے منظر ہوگا؟ سوتم اینے رب کی کون کون کون کون کنتوں کے منگر ہوجاؤ گے؟ اس دن کسی انسان اور جن کے گنا ہول کی پرسش نہ ہوگی اور دوسرے وقت میں پرسش ہوگی (جیما کہ فرمایا) فَوَرَبِّكَ لَـنَسْللَنَّهُمْ أَجْمَعِيْنَ لِيخْتُم ہے تیرے رب كی جم ضروران ہے باز پُرس کریں گے،اور جاٹ یہاں اور آئندہ جنٹی کے معنی میں ہے،اور انس بھی ندکورہ مقاموں میں انسٹی کے معنی میں ہے سوتم اینے رب کی کون کون کون کون کو نعمتوں کے منکر ہوجاؤ گے؟ مجرم اپنے حلیوں سے بہجانے جائیں گے لیعنی چہروں ٠ ﴿ [(مِكْزُم بِهَالشَّرْدِ] ٢٠

کی سیا ہی اور آنکھوں کی نیلگونی ہے، ان کی پیٹانیوں کے بال اور قدم پکڑے جا کمیں گے ہتم اپنے رب کی کون کون می تعمتوں کے منکر ہوجا ؤ گے؟ لیعنی ان میں سے برایک کی پیشانی پیچھے سے یا آ گے سے قدموں سے ملادی جائے گی اور جہنم میں ڈالدیا جائے گا،اوران سے کہا جائے گا، یہی ہے وہ جہنم جس کی مجرم تکذیب کرتے تھے، جہنم اور شدید گرم پانی کے درمیان چکر لگائیں گے (لینی) دوڑیں گے،آگ کی گرمی ہے جب فریاد کریں گے تو گرم پائی پلائے جائیں گے،(آب) قساص کے مانند منقوص ہے سو تم اینے رب کی کون کون کون کی نعمتوں کے منکر ہو جا ؤ گے ؟

عَجِقِيق اللَّهِ السِّبْيَالُ لَفَسِّيدُ فَوَالِلا

فِيُوْلِكُمْ ؛ اى الارض من المحيوان مفسرعلام نے عَسلَيْهَا كَيْفِير أَى الْأَرْضِ مِن كَركِ الثَّاره كرديا كه جنت ونار، حور وغلمان فنانہیں ہوں گے؛ بلکے زمین کی اشیاء فنا ہوں گی ، نیز سُک لَّ يَو مِ هُوَ فِی شَان ہے يہود پررد ہو گيا، يہود كاعقيدہ ہے كہ الله تعالیٰ نے چیرون میں پوری کا سُنات کو پہیرا فر مایا جمعہ کے دن آخری وفت میں حضرت آ دم کی تخلیق فر مائی اور شنبہ کے دن کوئی کام نہیں کیا، ہمی وجہ ہے کہ یمود ہفتہ کوچھٹی کرتے ہیں۔

فِيُولِكُنَّ ؛ سَنَفَ صِدُّ، سَنفوغ لكم كي تفيرسَنَفْصِدُ ع كرك اثناره مَرديا كفراغت عمرادتوجه اورقصدكرناب،ال کے کہ اللہ تعالی کوالین مصرو فیت نہیں ہوتی کہ دیگرامور میں مشغولیت سے مانع ہو، اس تشم کی مشغولیت مخلوق کا خاصہ ہے۔ قِيُولِكُ ؛ ثقلان جن وانس كو ثقلان اس لئ كہتے ہيں كه بيحياةً و مماةً زين رتقل موتے ہيں۔

فَيْوَلِّي ؛ فانفذُوا امرتنجيز كے لئے بيعن اگرتم بهاري حدود سلطنت سے نكل سكتے بوتو نكل جاؤ، بيابيا بي ب جيبا كه فاتوا

فَيُولِكُ ؛ كالدِّهَان، كانت كى خبر تانى بهى بوعتى باوروردة كوفت بهى نيز كانت كاسم عال بهى، دِهَانْ دُهْنْ کی جمع بھی ہوسکتی ہے، جیسے رُمْے ور مَاحْ اس صورت میں دِھان تلچھٹ کے معنی میں ہوگا، جیسا کہ دوسری آیت میں آسان کو اللحصت كرماته تشبيدوى كى ب كسماقال السلَّه تعالى يومَ مَكُولُ السَّمَاءُ كَالمُهْلِ اورمُهْل تيل كى للجصك كوكت بي، ووسرى صورت بدب كددهان اسم مفرد بوجيها كرز تخترى في كهاب كددهان اسعر لِمَا يُدَّهَنُّ به.

يَجُولَكُم ؛ وَالْجَالُ ههُنا وفيما سياتي بمعنى الجنيّ وَالإنْس فيهِمَا بمعنى الإنْسِيّ اللهِريعارت كاشاف ے مفسر علام کا مقصد ایک سوال کا جواب دینا ہے۔

جِيَّ لَيْنِ السَّالِ كَاجُوابِ دينے كے لئے مفسر علام نے فرما يا جَانُ ، جِنِي كاور إنس، إسسى كمعنى ميں باور مير

دونول جنس کے افراد میں سے بیں، بیدونوں ان الفاظ میں سے بیں کہ جن کی جنس اور فرد میں امتیازیاء کے اضافہ سے ہوتا ہے، جیسے زنج اور زنجی میں ہے۔

> فَوَلْنَى: زرقة العيون نيلكول آئكيس، ال وكربه فيتم بهى كتب بين، ال وكرنجى آئكيس بهى كتب بين ـ فَوَلْنَى: آنِ بد إني سے اسم فاعل كاصيغه بيكھول ابواياني ـ

تَفْسِيرُ وَتَشِينَ حَ

ﷺ کُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانَ ، عَلَيْهَا كَامْمِركامرَع ،ارْض ہِ جس كاذكر وَ الْآرْضَ وَضَعَهَا لِلْآنَام مَا آبل مِيں گذر چكاہِ ،

اس كعلاوه الارض ان عماشياء ميں ہے جن كی طرف غميررا جع كرنے كے لئے پہلے ،مرجع كاذكرلازم نہيں ،مطلب يہ ہے كہ جو جنات اورانسان زمين پر ہيں سب فنا ہونے والے ہيں ،اس ميں جن وانس كے ذكر كي تخصيص اس لئے كي گئ ہے كه اس سورت ميں مخاطب يہى دونوں ہيں ،اس سے بيلازم نہيں آتا كه آسان اور آسان والی مخلوقات فانی نہيں ہيں ، كيونكہ دوسرى آيت سورت ميں مخاطب يہى دونوں ہيں ،اس سے بيلازم نہيں آتا كه آسان اور آسان والی مخلوقات فانی نہيں ہيں ، كيونكہ دوسرى آيت ميں تعالى نے عمال فلوں ميں بورى مخلوقات كافانی ہونا بھى واضح فرماد يا ہے مُحلُّ منسے عِد هالِكُ إلَّا و جھ في ذكوره دوسرى آيت ہے ليكرآ يُت ، اللہ اللہ تعالى نے دو حقيقة ل كو بيان فرما يا ہے۔

ایک میک میں کو دلا فانی ہواور نہ وہ سروسامان لازوال ہے جس سے تم اس دنیا بیس متمتع ہور ہے ہو، لازوال اور لا فائی تو صرف اس خدائے بزرگ و برترکی ذات ہے جس کی عظمت پر بیکا بنات گواہی و بربی ہے اور جس کے کرم سے تم کو بیپ کی نعمتیں نصیب ہوئی ہیں ، اب اگر تم بیس سے کوئی شخص گھمنڈ وغرور ہیں جتلا ہوکر'' ہم چومن ویگر نے نیست' کا نعر و بلند کرتا ہے تو بی محص اس کی ہو وفی اور کم ظرفی ہے، اپنے ذراسے دائر ہ اختیار ہیں کوئی بے وقوف کبریائی کے ڈی بجائے، چند بند ہے جواس کے گرد جمع ہوج کی بی ان کا برعم خویش خدا بن جیٹھے، تو بید دھو کے گئی گئی دیر کھڑی رہ سمتی ہے ، کا کتا ہے کی وسعتوں میں جس زمین کی حقیمت ایک رائی کے دانے کے برابر نہیں ہے ، اس کے ایک کونے ہیں دی جیس سال یا سو پچاس سال جو خدائی اور کبریائی چلے حقیمت ایک رائی کے دانے کے برابر نہیں ہے ، اس کے ایک کونے ہیں دی جیس پر پھولے نہائے۔

دوسری اہم حقیقت جس پران دونوں مخلوقوں کو متنبہ کیا گیا ہے یہ ہے کہ اللہ جل شانہ کے سواد وسری جن ہستیوں کو بھی تم معبود و مشکل کشاا ورج جت روا بنائے ہوئے ہوخواہ وہ فرشتے ہوں یا انبیاء واولیاء یا چا نداور سورج یا و یوی دیوتا یا اور کسی قسم کی مخلوق ، ان میں سے کوئی تمہاری جاجت کو پورانہیں کرسکتا ، وہ بے چار بے قو خودا پٹی ضروریا ت اور جاجات کے سے اللہ کے تناج ہیں ، ان کے ہاتھ تو خوداس کے آگے تھیلے ہوئے ہیں وہ خودا پٹی جاجت روائی نہیں کر سکتے تو تمہاری مشکل کشائی کیا خاک کریں گے ، اس نا پیدا کنار کا تنات میں جو کچھ ہور ہا ہے ، تنہا ایک خدا کے تھم سے ہور ہا ہے ، اس کی کارفر مائی میں کسی کا کوئی دخل نہیں ہے۔ کُلَّ یَوْم هُوَ فِی شَان کی بروقت اس کارگاہ عالم میں اس کی کارفر مائی کا ایک لا متناہی سلسلہ جاری ہے، ظاہر ہے کہ پوری
کا ننات میں ارضی اور سمائی مخلوقات کی بے شار حاجتیں ہیں، جن کو جرگھڑی اور ہر آن سوائے اس عظمت وجلال والے قد در مطلق
کون سکتا ہے، اورکون ان کو پورا کرسکتا ہے، اس لئے گھل یوم ہھو فی شان لیعنی ہر کخط اور ہر لحد حق تعالی کی ایک شان
ہوتی ہو وہ کی کو زندہ کرتا ہے کسی کوموت و بتا ہے کسی کوعزت و بتا ہے تو کسی کو ذلیل گرتا ہے کسی تندرست کو بھار کرتا ہے تو کسی
مریض کو تندرست کرتا ہے، کسی مصیبت زدہ کومصیبت ہے نجات و بتا ہے تو کسی کومصیبت ہیں جتلا کرتا ہے کسی کو الاتا ہے تو کسی
ہناتا ہے، کسی کوعطا کرتا ہے تو کسی سے سلب کرتا ہے، کسی کو بااقتد ار کرتا ہے تو کسی کواقتد ارسے محروم کرتا ہے، کسی کومر بلند کرتا ہے
بیسی کو تعرید ندت میں وقلیل و بتا ہے، بخرضیک اللہ جل شانہ کی ہرآن اور ہر لھے ایک عجیب و ذرایی شان ہوتی ہے۔

سَنَفُوْ عُ لَکُمْ آیکه النَّقَلَان، فَقَلَان، فِقُلُ کا تثنیہ، بُقلُ خاص طور پراس ہو جھ کو کہتے ہیں جو کسی پرلدا ہواہواور قابل قدر
ھی کو بھی کہتے ہیں ایک حدیث میں بہی معنی مراد ہیں ، مراداس سے جنات اورانسان ہیں اس لئے کہ شروع سے روئے خن انہی کی
طرف ہے، مطلب بیہ کہ اے جن اورانسانو! جوز بین پر ہو جو ہے ہوئے ہوئے ہوئے میں عنقر بیہ تہماری خبر لینے کے لئے متوجہ ہونے
والا ہوں ، اس کا بیمطلب ہر گرنہیں کہ اس وقت اللہ تعالی ایسا مشغول ہے کہ اسے ان نافر مانوں سے باز پرس کرنے کی فرصت
نہیں ، بلکہ مطلب یہ ہے کہ اللہ تعالی نے ہر کام کے لئے ایک خاص اوقات نامہ مقرر کرد کھا ہے جس کے مطابق وہ اس کا نات
دور (امتحان) کا سلسلہ چل رہا ہے ، وقت پورا ہوت آ جائے گاتو وہ کام اس وقت پر ہوجائے گا ، فی الوقت اس امتحان گاہ ہی ختم کردی
دور (امتحان) کا سلسلہ چل رہا ہے ، وقت پورا ہوت تی کی کئت امتحان کا سلسلہ ختم کردیا جائے گا اور بیامتحان گاہ بھی ختم کردی
واز سرنوزندہ کرکے جتم کیا جائے گا ، اس اوقات نامہ کے اعتبار سے بیدوسر سے دور کی کارروائی ہوگی ، اس اوقات نامہ کے لحاظ
ج نے گی ، اس کے بعد اس سلسلہ کا دوسرا دور شروع ہوگا ، جس میں جن اور انسانوں کے اعمال کی جائج شروع ہوگی اولین واتو تیا سے کہ انسان قات نامہ کے لئا تا ہے کہ انہی پہلے دور کا کام چل رہا ہے ، دوسر سے دور کی ورک کارروائی ہوگی ، اس اوقات نامہ کے لئا ظ

یسا مَسْعُنَسَرَ السجنِ والانسس (الآیة) اس کامطلب بیہ کہا ہے جن اور انسانو! اگرتہ ہیں بیگان ہوکہ ہم بھاگ جا کیں گے اور موت کے چنگل سے نج جا کیں گے ، یا میدان حشر سے بھاگ کرنگل جا کیں گے ، اور حساب و کتاب سے نج جا کیں گے تو لوا پنی تو ت آز مادیکھو، اگرتم ہیں اس پر قدرت ہے کہ آسان اور زمین کے دائر ہ سے باہرنگل جاؤ، تو نکل کر دکھاؤ، یہ کوئی آسان کا مہیں۔

بُرْسَلُ عَلَیْکُما شُواظ (الآیة) حضرت این عباس اور دیگرائم تفییر نے فرمایا که شُو اظ ضمیشین کے ساتھ ،آگ کا وہ شعلہ جس میں دھوال نہ ہواور نسحاس اس دھو کی کو کہا جا تاہے جس میں آگ نہ ہو، اس آیت میں بھی جن وانس کو مخاطب کر کے ان پرآگ کے شعلے اور دھوال چھوڑنے کا بیان ہے، مطلب رہے کہ ہوسکتا ہے جہنم کے مجر مین کو فذکورہ وونوں قسم کا عذاب دیا جائے ،اور بعض مفسرین نے اس آیت کو پچھلی آیت کا تکملہ قرار دیکر رہ معنی کئے جیں کہاہے جن وانسانو! آسانوں کی حدود ہے نکل جانا تمہارے بس کی بات نہیں ،اگرتم ایساارادہ کربھی لوتو جس طرف تم بھاگ کر جاؤ گےتو آگ کے شعلےاور دھوئیں کے بگوے تمہیں گھیرلیں گے(ابن کثیر)اس وقت تمہاری کوئی مدد نہ کرےگا۔

فَيَوْمَلِذِ لَآيُسْلُ عَنْ ذَنْبِهِ إِنسٌ وَ لَا جَانَ اس كَاتشرَ كَ آكُوالانقره يُغُوفُ المجرمُونَ بسيمهُمْ فيُوْخَدُ بِالنَّواصِي والْاقْدَام كرد باب، كه مجرم اپ چهرول سے پهان لئے جائيں گے، مطلب ہے كداس ظيم الثان مجمع ميں جہال تم اولين اور آخرين جُمع ہول گے، يہ بوچھتے پھرنے كى ضرورت ندہوگى كدكون كون لوگ مجرم بيں؟ مجرموں كے ميں جہال تم اولين اور آخرين جُمع ہول گے، يہ بوقى آئكھيں اور بدن سے چھوٹنا ہوا پيند خود بى يدراز فاش كرديں گے، اگر باز پُرس ہوگى تو اس بات كى كرتم نے يہرم كول كيا انديد كريا يائيں، يعض مقام كابيان ہے۔

نَوَاصِی ، ناصیہ کی جمع ہے، پیٹانی کے بالوں کو کہتے ہیں نَوَاصِی و الاقدام سے پکڑنے کا بیمطلب بھی ہوسکت ہے کہ سی کوسر کے بال پکڑ کر گھسیٹا جائے گا ،اور کسی کوٹائکیں پکڑ کریا بھی اس طرح اور بھی اس طرح ،اور بیمطلب بھی ہوسکتا ہے کہ چیٹانی کے بالوں اور ٹانگوں کوا بک جگہ جکڑ ویا جائے گا اور ڈیڈ اڈولی کر کے جہنم میں پھینک دیا جائے گا۔

(والله اعلم بالصواب)

وَلِمَنْ خَافَ اى لِـكُـلِّ منهما او لِمَجْموعِهم مَقَامَرَ، يَه قَيَامَه بَينَ يَدَيه لِلحسَابِ فَتَرَكَ مَعْصِيتَه جَتَّانِ اللَّهِ **فِيأَيِّ اللَّهُ يَيَّلُهُ الكَّذِينِ ﴿ ذَوَاتِ اللَّهِ عَلَى الْاصلِ ولا مُها ياءٌ الْفَكَالِ ۗ ا** الْحُصلُ وعلى الْمُطلَلِ <u>فَهِا ِيَّ الْإِرْتِكُمَا تُكَذِّبُنِ ۚ فِهِمَا عَيْنِ تَجْرِيْنِ ۚ فَهِا َيَ الْآِرْتِكُمَا تُكَذِّبُنِ ۞ فِيْهِمَا مِنْ كُلِّ فَالِهَةِ فَى الدنيا او كُلِّ سا</u> يُتَفَكُّهُ بِهِ زَوْجُنِ ۚ نَوعَانِ رَطَبٌ ويَابِسُ والمرُ منهما في الدُنيا كالحَنْظَلِ حُلُوً فَيِهَ كِي الْأَرْتِيكُمَا لَكُذِّينِ ٣ مُثْكِيْنَ حالٌ عَاسِلُه مَحْذُوتُ اي يَتَنَعُمُونَ عَلَى قُرُثُرٍ بِكَالِيْهَامِنُ إِسْتَنْبَرُقُو مِا غَلَظ من الدِّيبَاج وخَشِنَ والطَّهَائِرُ مِن السُّدُمِ وَجَنَّ الْجُنَّتِينِ ثَمَرُهُما دَانِ فَويبٌ بِنَالُه القَائِمُ والقَاعِدُ والمُضطَحعُ **فَيِأَيِّ اللَّهُ رَبِّكًا تُكَذِّبنِ ﴿ فِيْهِنَّ فِي الجَنْتَيْنِ ومَا اشْتَمَلَتَا عليه مِنَ العُلاَلِيّ والقُصُور فُصِرَٰتُ الطَّرْفِ العَبنِ على** أَزْوَاجِهِنَّ المُتَّكِئِينَ مِنَ الإِنْسِ والجِنِّ **لَمَّيَّظُمِثُهُنَّ** يَـفُتَضُّهُن وهُنَّ مِن الحُورِ او مِن نساءِ الدُنيا المُنشَاتِ إِنْسُ قَبْلَهُمْ وَلَاجَانٌ ۚ فَيِهَا لِكَا لَوْ مُرَيِّكُمَا لِكُلَابِنِ ﴿ كَانَهُنَ الْيَاقُونَ صَفَاءَ وَالْمَرْجَانُ ﴿ اللَّهِ اللَّهُ اللَّ فَيِلَيْ ٱلْآوَرَيَكُمَا لَكَذِبنِ ﴿ هَلْ مِا جَزَاءُ الْإِحْسَانِ بِالطَّاعَةِ الْكَالْاِحْسَانُ ﴿ بِالنَعِيم فَيَأَيِّ الْآوَرَيَكُمَا لَكَذَبنِ ﴿ وَمِنْ دُونِهِمَا اى الحِنْنَيْ المَدْكُورَتَيْنِ جَنَّاثِنْ أَيْطَالِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ فَهَايِ الْآءِمَ بَيِّكُمَا تُكَدِّبِنِ ﴿ مُدُهَامَّانِ ﴿ سَوْدَاوَان سِن شِدَّة خُصْرَتِهِما فَهِأَيِّ ٱلْآءِ مَرَبِّكُمَا تُكَذِّبْنِ ﴿ فِيْهِمَا عَيْلِن نَظَّا لَحَنْنِ ﴿ فَوَارَتَان بالماءِ لاَ يَنْقَطِعَان فَ**هَاكِيَّ الْآءِ رَبِّيْمَاتُكُدِّ إِنِ فِيهِمَافَالِهَةٌ وَّنَعُلُ وَرُمَّانُ اللَّه**ِ هما سنها وقيلَ س غيرِها ه (زَمُزَم بِبَالثَرِنِ) ≥

فِياَيَّاالَآهُ ٰزَيَّلُمَا ثُكَذِّبنِ ۚ فِيْهِنَّ اى الجَنَتَينِ وقُصورهما خَيْرَتُ ٱحُلاَقًا حِسَانٌ ۚ وُحُوهًا فِياَيَّالَآهُ نَيِّكُمَا تُكَذِّبنِ ۗ حُورٌ شَديدَاتُ سوّاد العُيُون ونيَاضِهَا مُقَصُّوراتُ مستُورات فِي لِلْخِيَامِرْ فِي مُجَوَّفٍ مُضَافة الى الصُور شبيهةَ بالخدُورِ فَيَلَيّ اللَّهِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبنِ ﴿ لَمَرْيُطِيتُهُنَّ إِنْ قَبْلَهُمْ قَبْلِ اروَاجِهِنَ وَلَاجَانًا ﴿ فَيَاكِيٓ اللَّهِ رَبَّلُمَا تُكَذِّبنِ ﴿ مُتَّكِيِنَ اى أَرُوَاجُهُـنَّ واغـرَانُه كَمَا تَقدَم عَلَى رَفْرَفٍ تُحضر خـمْهُ رَفْرَفَةِ اى بُسُطِ او وَسَائِد وَعَبُقَرِي حِسَانٍ فَ يَجُ حَمْعُ عَبِقَرِيَّةِ أَى طَنَافِس فَهَارِي الْأَوْرَتِكُم الْكَذِبِنِ تَبْرَكَ السَّمُرَيِّكِ ذِي الْجَلْلِ وَالْإِكْرَامِ شَا تَعَدَمُ وَلَفْطُ اسْمِ زائد.

ت اوراس محض کے لئے بعنی ان میں سے ہرا یک کے لئے یا دونوں کے مجموعہ کے لئے جواپے رب کے رو برو حساب کے لئے کھڑے ہونے ہے ڈرااوراس نے اس کی نافر مانی ترک کردی دو باغ ہیں سوتم اپنے رب کی کون کون کی نعمتوں کا نکارکر و کے؟ (دونوں باغ) کثیر شاخوں والے (بھٹے) ہوں کے ذَوَ اتّا، ذُوَ اتّ کا تثنیہ ہے اصل کے مطابق اوراس کالام یاء ہے، اَفْ نَان، فَ نَن کی جمع ہے (جیر، که) اَظْلَال، طَلَلِ کی جمع ہے، سوتم اینے رب کی کون کون کی اُنتوں کے منکر ہوجا ؤ گے؟ ان دونوں باغوں میں دو بہتے ہوئے چشمے ہیں،سوتم اپنے رب کی کون کون تی نعمتوں کے منکر ہو جاؤ گے؟ ان دونوں باغوں میں دنیاوی ہرشم کےمیووں کی یا ہراس میوے کی جس سے تفکہ حاصل کیا جائے دوتشمیں ہیں تر اور خشک اوران دونوں شم کے میووں سے دنیا میں جوکڑ واہے، جنت میں وہ ثیریں ہوگا،جیبا کہ خظل (صبر) سوتم اپنے رب کی کون کون سی نعمتوں کے منگر ہوجا ؤ گے؟ جنتی ایسے فرشوں پر تکمیدلگائے ہوئے ہول گے جن کے استر دبیز مبزریٹم کے ہوں گے مقسک ملین حال ہے،اس کا عامل یَنَدَنَعَهُوْ ذَ محذوف ہے،استبرق، رکیم کے اس کیڑے کو کہتے ہیں جود بیزاور کھر دُراہواور اَبرا(او پر کا کیڑا) سندس یعنی باریک ریشم کا ہوگا، اوران دونوں باغول کے پھل بالکل قریب قریب ہوں گے جن کو کھڑے ہونے والا اور ہیٹھنے والا اور کینئے والا (بھی) لےسکتا ہے، سوتم اپنے رب کی کون کون سی تعمقول کے منکر ہو جا ؤ گے؟ ان باغوں میں اور جس پر وہ باغ مشتمل ہوں گے (مثلاً) بالا خانے اورمحلات وغیرہ الییعورتیں ہول گی جواپی نظروں کو جن واٹس میں ہے اپنے شوہروں پر محبوں کئے ہوں گی جو ٹیک لگائے ہوں گے ان ہے پہلے ان میں نہ کسی انسان نے تصرف کیا ہوگا اور نہ جن نے لیعنی ان ہے کسی نے وطی نہ کی ہوگی اور وہ حوروں کے قبیل ہے ہوں گی ، یا دنیا کی عورتوں کے قبیل ہے ہوں گی جن کو(ولا دت کے توسط کے بغیر) پیدا کیا گیا ہوگا، سوتم اپنے رب کی کون کون سی نعمتوں کے منگر ہو جاؤ گے؟ وہ حوریں صفائی میں یا قوت کے اور سفیدی میں موتی کے مانند ہوں گی سوتم اپنے رب کی کون کون سی تعمتوں کے منکر ہوجا ؤ گے؟ بھلا اطاعت کا بدلہ نعمتوں کے احسان کے سوا اور پچھ ہوسکتا ہے؟ سوتم اپنے رب کی کون کون سی تعمقوں کا انکار کر و گے؟ مذکورہ دونوں باغوں کے ملاود دو باغ اور بھی ہیں جو درجے میں ان ہے کم ہول گے، اس کے لئے جواپنے رب کے سامنے کھڑے ہونے سے ڈراسوتم اپنے رب کی کون کون سی تعمتوں کا انکار كروكي؟ دونوں باغ كهر يسبزرنگ كے ہول كے ان كى سبزى كے زيادہ ہونے كى وجہ سے سوتم اپنے رب كى كون كون ك < (زَمَزَم پِدَلشَٰ إِنَّا

نعمتوں کا انکار کرو گے؟ ان دونوں باغوں میں دوجشے ہوں گے جواہیے پانی ہے جوش مارتے ہوں گے جوبھی منقطع نہ ہوگا سوتم ا ہے رب کی کون کون سی نعمتوں کا اٹکار کرو گے؟ اوران دونوں باغوں میں میوے اور تھجوریں اورا نار ہوں گے وہ دونوں (یعنی) تھجور اور انار فوا کہ ہے ہوں گے، اور کہا گیا ہے کہ ان کے علاوہ سے ہوں گے، سوتم اپنے رب کی کون کون ک نعمتوں کا انکار کرو گے؟ اوران باغوں (کے مکانوں میں)خوبصورت عورتیں ہوں گی سوتم اپنے رب کی کون کون ی نعمتوں کاا نکار کرو گے؟ وہ عورتیں گوری گوری رنگت والی اوران کی آنکھوں کی سیاہی نہایت سیاہ اور سفیدی نہایت سفید ہوگی ، وہ ڈرِ مجوف کے خیموں میں مستور ہوں گی ، حال بیر کہ وہ خیمے محلوں پراضا فہ شدہ اوڑھنی کے مشابہ ہوں گے ، سوتم اپنے رب کی کون کون سی تعتوں کا انکار كرو كي؟ ان سے بہلے ان پرنہ توكسى انسان نے تصرف كيا ہوگا، اورنه كسى جن نے، يعنى ان كے شوہروں سے بہلے سوتم اپنے رب کی کون کون سی نعمتوں کا انکار کر و گے؟ ان کے شوہر سبز مسندوں اورعمدہ گددں پر تکبیالگائے ہوں گے، اوراس کا اعراب مالبل میں گذرے ہوئے کے مانندہے ، دفوف، دفوفة کی جمع ہے سبز تکیوں کو کہتے ہیں ، سوتم اپنے رب کی کون کون سے نعمتوں کا انکار کرو گے؟ تیرے پروردگارکا نام ہابر کت ہے جوعزت اور جلال والا ہے اور لفظ اِسٹر زائد ہے۔

عَجِقِيق بَرَكِيبَ لِيسَهُ الْحَالَةِ لَفَيْسَارِي فَوَالِإِنْ

فَيْ وَلَكُونَ ؛ قِيَامَهُ يه مَقَامٌ كَتَفير ب،اس من اسبات كاطرف اشاره بكرمقام معدر بـ قِيُّولِكَ ؛ ذوات على الاصل و لامُهاياءٌ، ذَاتٌ كَ مَثْنِيهِ مِن ولفت بين ، أيك أصل كالمتباري ووسر الفظ كالمتبار ے، ذات كى اصل ذورة بيات ميں عين كلمدواؤ باور لام كلمدياء ب،اس كامفرداصل ميں ذوات ب،اصل كےمطابق اس كاتننيد ذواتان ب،اضافت كى وجد فون تننير ساقط موكيا، جس كى وجد كذواقا روكيا، اورمفرد كوظاف اصل ذَاتْ بى (ترويح الارواح)

قِيُولَكُ ؛ جَمْعُ فَنَنِ جِيها كه أَطْلَال جَعْ طَلَلِ الاصاف وتشريح عصرعلام كامتعدية تاناب كه أَفْنَانُ ، فَنَنْ كى جَعْب ندكه فَنَّ كَ جِيرًا كَهِ أَطْلَالَ، طَلَلٌ كَ جَعْ بِن كَهُ طَلُّ كَلَّ

فِيُولِكُنَى: وجَنَا الْجَنَّتين دَانِ، جَنَا الْجَنَّتَيْنِ مبتداء اور دَان اس كَاثِر جَنَّى بمعنى مجنّى جاور دَان اصل يس

عِيَّوْلَكَى : فِي الْجَنَّتَيْنِ وِمَا اسْتَمَلَقَا الْح يه فِيْهِنَّ كَاتْسِر بالتَّسْير كامقصد أيك والمقدر كاجواب ويناب-مِيكُوالَنَ: فِيلِهِنَّ كامرجع جنتان بجوكة تنتيه بالبذاال كى طرف لوشن والي خمير بهى تنتيه ونى جاسم تا كهميراورمرجع مي مطابقت بوجائ مفسرعلام نے و مااشتملة عليه من العكالي و القصور كااضافه كركے اى سوال مقدر كا جواب ديا ہے۔ ح[زمَزم بِهَائِينَ إ

جَهُولَ بُنِ : جواب كا ضلاصه يه به كه فِيهِ مَنْ كامر جع فقط جَه لنَّتَ ان بَي بَيْن به بالكه وه بهى بين جن كوجتان شال بين مثلاً محلات اور بالاخانے وغيره ..

فَخُولِ ﴾؛ مِن نساءِ الدنيا المنشآت ، اَلمنشآت ، نساء الدنيا کی صفت المنشآت لاکراشاره کرديا که دنيا کی عورتيل بھی اہل جنت کوملیں گرگزان کو نئے سرے سے بنايا جائے گاليخی ووباره ان کی تخلیق ہوگی گرينے گيق ولادت کے واسطہ سے ہیں ہوگی ، بلکہ القد تعالی ان کوایئے وست قدرت سے بنائیں گے۔

چَوَلِیَ ؛ صفاءً و بَیَاصًا جنتی عورتوں کوصفائی میں یا قوت اور سفیدی میں لؤلؤ کے ساتھ تشبید وینامقصود ہے نہ کہ ان کی تمام صفارت میں

فَيُولِكُنَى ؛ هَلَّ مَا جَوَاءُ الإحسان إلَّا الاحسان ، هَلَ كااستعال چارطريقه پرجوتا بِ بمعنى قَدْ جيبا كالله تعالى كا تول فَهَلُ وَجَدْتُهُمْ مَا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًا ﴿ بَمعَى استفهام، جيبا كالله تعالى كا تول فَهَلُ وَجَدْتُهُمْ مَا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًا ﴿ بَمعَى الله الله تعالى كا تول فَهَلُ وَجَدْتُهُمْ مَا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًا ﴿ بَمعَى الله الله كَا يَهُ الله كَا الله كَا الله كَا يَهُ الله كَا الله كَا يَهُ الله عَلَى الرّسُل إلّا الله كَا يَهُ الله عَلَى الله عَلَى الرّسُل إلّا الله كَا يَهُ الله عَلَى الرّسُل الله الله كَا يَهُ الله عَلَى الله عَلَى الرّسُل إلّا الله كَا يَهُ الله عَلَى الله عَلَى الله عَلَى الله عَلَى الله الله عَلَى الله عَلَى الله عَلَى الله عَلْمُ الله عَلَى الله عَلْمُ عَلَى الله الله كَا يَهُ عَلَى الله عَلَى الله عَلَى الله عَلَى الله عَلَى الله عَلْمُ عَلَى الله عَلْمُ الله عَلْمُ الله عَلْمُ عَلَى الله عَلَى الله عَلْمُ عَلْمُ عَلْمُ عَلَى الله عَلْمُ الله عَلْمُ الله عَلَى الله عَلَى الله عَلْمُ عَلَى الله عَلَى الله عَلَى الله عَلْمُ عَلْمُ عَلَى الله عَلْمُ عَلْمُ عَلَى الله عَلْمُ عَلْمُ عَلَى الله عَلَى الله عَلَى الله عَلْمُ عَلْمُ عَلَى الله عَلْمُ عَلْمُ عَلَى الله عَلْمُ عَلْمُ عَلَى الله عَلْمُ عَلْمُ عَلَى الله عَلَى الله عَلْمُ عَلْمُ عَلَى الله عَلْمُ عَلْمُ عَا الله عَلْمُ عَلَى اللهُ عَلَى الله عَلَى الله عَلْمُ عَلْمُ عَلْمُ عَلْمُ عَلْمُ عَلْمُ عَلْمُ عَلَى اللهُ عَلْمُ عَلْمُ عَلَى الله عَلْمُ عَلْمُ عَلَى الله عَلْمُ عَلْمُ عَلَى الله عَلَى الله عَلْمُ عَلَى الله عَلْمُ عَلَى اللهُ عَلْمُ عَلَى الله عَلَمُ عَلَى الله عَلْمُ عَلَى الله عَلْمُ عَلَمُ عَلَى الله عَلَى

فَوْلِلَى، مُدُهَامَّتَانَ يه المدُّهُمَةُ سے اخوذ ہال كمعنى بيل الى الى سے فَسرسُ ادُهم ہے، اور سبرى جبشديد موجاتی ہے تو ووسیابى مائل موتی ہے۔

جَوْلِ كَى ؛ وَهُمَ مَامِنها لِينَ نَحْلُ اور دُمَّان بيدونول امام ابو بوسف رَحِّمَ كُلاللهُ نَعَاكِنَ اور مُحد رَحِّمَ كُلاللهُ تَعَاكَنَ كِزو بيك فوا كه مِن شار مِن اورامام ابوطنيفه رَحِّمَ كُلاللهُ تَعَالَىٰ كِنزو بِكِفوا كه مِن شامل مِن مِن ماس لئے كه عطف مغائزت كوچا متاہے۔

قِیُولِی، مِنْ دُرِّمُجَوْفِ،مُضَافَةُ الى القصور شبیهًا بالخُدُورِ یعیٰ وه خیے درجُوف کے ہول گے یعیٰ اتنابرا اموتی ہوگا کہ جس کواندر سے خالی کر کے خیمہ بنایا جائے گا،اور مصافة الى القصور کا مطلب ہے وہ خیے قصر (محل) کے اندر ہوں گے اور بمز لداوڑھنی کے ہوں گے جیسا کہ گھر کے اندر مورثیں ہوتی ہیں اور ن کے سروں پراوڑھنی بھی ہوتی ہے۔

فَيُولَى ﴾ عَبْقَرِي بِهِ عَبْقَرُ كَ طَرف منسوب بعرب كاخيال بكروه جنوں كى أيك بستى بهذا برعجيب وغريب چيزكواس كى طرف منسوب كر يت جيزكواس كى طرف منسوب كرتے ہيں ، اور قاموس ميں ہے كہ عَبْقر الس مقام كا نام ہے جہال جنات بكثرت ہوتے ہيں ، اور عَبْقَرِى الس كو كہتے ہيں جو برطرح سے كامل ہو۔ (اعراب الغرآن ملعصًا)

تِفَسِّيرُوتَشَيْنُ حَ

ربط:

سابقہ آیتوں میں جن وانس پر دنیوی نعتوں اور مجرمین کی سزاؤں کا ذکرتھا، ان آیات میں اخروی نعتوں اور صالحین کے بہتر صلہ کا ذکر ہے، اور اہل جنت کے دو باغوں کا ذکر اور ان میں جونعتیں ہیں ان کا بیان ہے اس کے بعد دوسر ہے

ۗ ﴿ (مَكَزُمُ بِبَاشَلِ) > -

باغوں کا اوران میں مہیا کی ہوئی نعتوں کا ذکر ہے۔

پہلے دوباغ جن حضرات کے لئے مخصوص ہیں ان کوتو لِسمَن خَافَ مَقَامُ رَبِّه جنَّمَان ہے تعین کر کے ہتلا دیا ہے، لیمی ان ان کوت ہر حال ہیں انڈ کے سما ہنے قیامت کے دوز کی پیشی اور حساب و کتاب اعلی قتم کے دوباغوں کے سیتی وہ لوگ ہوں گے جو ہر وقت ہر حال ہیں انڈ کے سما ہنے قیامت کے دوز کی پیشی اور حساب و کتاب ہے ڈرتے رہتے ہیں جس کے نتیج ہیں وہ کسی گناہ کے پاس نہیں جاتے اور وہ اس بات کا احساس رکھتے ہیں کہ انہیں دنیا ہیں غیر ذمہ دار شتر ہے مہار بنا کر نہیں جھوڑ اگیا بلکہ ایک روز جھے اپنے رب کے سامنے چیش ہونا اور اپنے اعمال کا حساب دینا ہے، ظاہر بات کہ جس شخص کا پی عقیدہ ہوگا وہ لامحالہ خواہشات نفس کی بندگی ہے بچے گا، اور حق وباطل ظلم وانصاف، حلال وحرام، پاک ونا پاک ہیں تمیز کرے گا، فور کے ایسے لوگ ساب تھین اور مقرین خاص ہی ہو سکتے ہیں۔

دوسرے دوباغوں کے ستی کون لوگ ہوں گے؟ اس کی تصریح آیات فدکورہ میں نہیں گی گئی، گریہ بتلادیا گیا ہے کہ یہ دونوں باغ پہلے دوباغوں سے یہ دونوں باغ کمتر ہوں گے، باغ پہلے دوباغوں سے یہ دونوں باغ کمتر ہوں گے، باس سے بقرید مقام معلوم ہوگیا، کہ ان دوباغوں کے ستی عام مونین ہوں گے، جومقر بین خاص سے درجہ میں کم ہیں، روایات صدیث سے بھی بہی تغییر رائج معلوم ہوتی ہے، درمنثور میں منقول ایک مرفوع حدیث بھی ای تغییر کی تائید کرتی ہے کہ آپ فیل تھا تھا نہ کہ کورہ دونوں باغوں کے تقییر کی تائید کرتی ہے کہ آپ فیل تا ندی کے فیاندی کے نہوں گے اور اصحاب الیمین کے لئے دوباغ چاندی کے موں گے اور اصحاب الیمین کے لئے دوباغ چاندی کے مول گے اور دونوں گے اور اصحاب الیمین کے لئے دوباغ چاندی کے مول گے۔ اس سے بھی معلوم ہوتا ہے کہ پہلے دوباغ اگل درجہ کے اور دونر سے دوباغ اس سے کم درجہ کے ہوں گے۔

اور قرطبی وغیرہ بعض مفسرین نے ''قیام رب' کی یقسیر بھی کی ہے کہ جوشی اس بات سے ڈرا کہ ہمارارب ہمارے مرقول وفعل خفیہ وعلانی مگل نفس بیما کسکت مرقول وفعل خفیہ وعلانی مگل نفس بیما کسکت مجاہدا ورفع نفیہ وعلانی مکل نفس بیما کسکت مجاہدا ورخع نے کہا کہ من خاف منفام ربّه ہے وہ شخص مراد ہے جس نے سی معصیت کا ارادہ کیا ہمواور پھروہ فوف خداکی وجہ سے اس معصیت کا ارادہ کیا ہمواور پھروہ فوف خداکی وجہ سے اس معصیت کے ارتکاب سے بازر باہو۔ (ضح الغدید دو کانی)



ح[(مَزَم بِبَالتَهْ إِنَا

مرَيِّهُ الْوَاقِعَ لِمَا يَّا يَهُمُ الْمُؤْمِنِيِّ فَيَالِمُ الْمُؤْمِنِيِّ فَيَالُونِهُمُ الْمُؤْمِنِيِّ فَ سُونَ الْوَاقِعَ لِمَالِيَّةً إِنَّا مِنْ الْمُؤْمِنِيِّ وَيَسِيِّعُوا أِيْمَالِكُ الْوَعِيَّا

سُورَةُ الْوَاقِعَةِ مَكِّيَّةً إِلَّا: اَفَبِهاذَا الْحَدِيْثِ الآية وثُلَّةً مِّنَ الْأُوَّلِيْنَ الآية، وهي سِتُ او سَبْعُ أَوْتِسْعُ وتِسْعُوْنَ آيةً.

سورة واقعم كلى ب، سوائ اَفَعِها ذَا الحَدِيْثِ (الآية) اورثُلَّةٌ مِّنَ الْأُوَّلِيْنَ (الآية) كے اور ۹۷/۹۷/۹۹ آيتي ہيں۔ ابن عباس اور قبادہ سے آیات کی تعداد ۹۹ حجازی اور شامی ہیں،اور ۹۷ بصری، ۹۹ کوفی ہیں۔

إلى يِسْسِمِ اللهِ الرَّحْسِمُنِ الرَّحِسِ مِن الرَّحِسِ وَإِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ أَقَاسِتِ القِيامَةُ لَيْسَ لِوَقَّعَتِهَا كَاذِبَةً ﴾ نَفْسَ تُكَذِّبُ بِأَنْ تَنْفِيَهَا كُمَا نَفَتُهَا في الدُّنيا خَ**افِضَةٌ رَّافِعَةٌ ۚ قَ**هِيَ سُفْلهِرَةٌ لِخَفْضِ أَقُوَام بدُخُولهمُ النار ولِيزَفع احْرِيْنَ بِدُحُولِهِمُ الجَنةَ إِذَّارُجَّتِالْكِمُّضُرَجُّاكُ خُرَكت خَرْكة شديْدة قَرُبُسَّتِالْجِبَالُ بَسَّاكُ فُتِتتَ **فَكَانَتُهُمَا**َةً غُبَارًا **مُّنْبَتَا**كُ مُسْتَشِرًا واذا الشابيةُ بـدَلّ س الأولى وَّلُنْتُمْر مـى القيمَةِ ۚ أَزُولَجَا أَصْــافَ ثَلْتُهُۗ ثُ فَأَصْعِبُ الْمَيْمَنَةِ وَهُمُ الدِينَ يُؤتُونَ كُتُنهِم مايُمَانهم مُنبَداً خبره مَآاَصُمُ الْمَيْمَنَةِ فَ تَعْطيم لشانهم بِدُخُولِهِمِ الحَنَّةَ وَأَصِّعُكُ الْمُشَّتِّمَةِ ۗ الشِمالِ بان يُوتِي كُلِّ سهم كتابه بشمَاله مَا أَصُّعُبُ الْمُشَّتُمَةُ تحقيرٌ لشانهم بدُخُولهم النَارَ وَالسِّيقُونَ الى الحيرِ وهُمُ الأنبياءُ مُبتدأً السِّيقُونَ ﴿ تَاكِيدُ لِتَعطِيم شانهم والحَبَرُ ٱولَٰلِكَ الْمُقَرَّبُونَ ﴿ فِي جَنْتِ النَّعِيْمِ ﴿ ثُلَّةً مِنَ الْاَوَلِينَ ﴿ مُبَدَدَا اى جِمَاعَةُ بَنَ الاُمَمِ المَاضِيَةِ وَقَلِيْلُ مِنَ الْكِجْرِيْنَ ﴿ مِن أُمَّةِ سحمد صلى الله عليه وسلم وهُم السَّابِقُونَ مِن الْأَمْمِ الماضِيّةِ وهذه الأمّةِ والخَبْرُ عَلَى سُرَى مَّوْضُونَاتِهِ فِي مَنْسُوجَةٍ بِقَضبَانِ الذَهَبِ والحَوَاهِرِ مُّتَّكِبِينَ عَلَيْهَا امْتَقْبِلِيْنَ® حالان مِنَ الضَمير في الخَبَر يُطُونُ عَلَيْهِمُولِلَا أَنَّ تَخَلَّدُونَ ﴿ اي عَلى شَكْلِ الأولادِ لَا يَهْرِمُونَ بِالْوَاكِ اقْدَاحِ لاعُرى لها

الأوَّلينَ) مبتداء ہے یعنی گذشتہ امتول میں ہے ایک بہت بڑی جماعت اور بعد والول میں ہے ایک چھوٹا کروہ امت محمد میلانکٹیل سے بیامم ماضیہ میں سے اور اس امت میں سے سبقت کرنے والے بین الی مسہریوں پر ہوں گے جوسونے اور جواہرات کے تارول ہے بنی ہوئی ہول گی ان پر ٹیک لگائے آ منے سامنے بیٹھے ہوں گے خبر کی ضمیر سے دونوں حال ہیں ان کے پاس ایسے لڑ کے جو ہمیشہ لڑ کے بی رہیں گے لیعنی لڑکوں ہی کی شکل میں رہیں گے، بوڑھے نہ ہوں گے، ایسے آبخو رے لئے کہ جن میں وستنہیں ہوگا اور اوٹے لئے کہ جن میں وستہ اور ٹونٹی (نائزہ) ہوگی آمد درفت کریں گے اور بہتی شراب ہے بھرے ہوئے جام شراب لے کر (آمدورفٹ کریں گے) محاس شراب پینے کے برتن کو کہتے ہیں بعنی ایسے چیٹمے کی شراب کہ جوبھی منقطع نہ ہوگا نہ ال سے سر میں در دہوگااور نہ تقل میں فتورا ئے گا (یُلنزِ فون) زاء کے فتہ اور کسرہ کے ساتھ ، یہ نَازَف المشارِ بُ و اُنزِف سے مشتق ہے، یعنی ندان کو در دسر لاحق ہوگا اور نہ نقل زائل ہوگی بخلاف دینوی شراب کے اورایسے میوے لئے ہوئے جوان کو پہند ہوں اور پرندوں کا گوشت لئے ہوئے جوان کومرغوب ہواور ان کے استفادے کے لئے بڑی بڑی آتھوں والی حوریں ہیں لیعنی الیعورتیں کہ جن کی آنکھول کی سیابی نہایت سیاہ اوران کی سفیدی نہایت سفید ہوگی (عُیٹے وٹٹ) میں عین کوضمہ کے عوض کسرہ دیا گیا، یا ،کی موافقت کی وجہ سے ،اس کا واحد عَنِیْنَاءُ ہے،جیس کہ خُمُو کا واحد خَمْوَاءُ ہے،اورایک قراءت میں حورِ عین جر كے ساتھ ہے، جو محفوظ موتى كى طرح بيں بيصلہ ہان كے اعمال كاجسے أءً مفعول له ہے، يا مصدر ہے اور عامل محذوف ے (تقدیر عبارت میرے) جَعَلْنَا لَهُمْ مَا ذُکِرَ للجَزاء (یا)جَزَیْنَاهُمْ نه وہاں (لیعنی جنت میں) بکواس لیعن فحش كلام سنيل ك، اورند كمنا بول كى بات سنيل ك، صرف سلام بى سلام كى آواز سنيل ك، (سلاماً سلاماً) قيلا سے بدل ب یعنی وہ اس آ واز کوسنیں گے اور داہنے ہاتھ والے کیا ہی خوب ہیں واہنے ہاتھ والے وہ بغیر خار کے بیروں میں ہوں گے سِلد ["] بیر کے درخت کو کہتے ہیں اور تہ بہتد کیلوں میں ہول کے طلقے سکیلے کے درخت کو کہتے ہیں جو پنچے ہے او پر تک لدے ہوئے ہوں کے اور دراز دراز ہمیشہ رہنے والے سابول میں ہول گے اور ہمیشہ جاری یانی میں ہول کے اور بکثر ت کھلول میں ہول گے ،نہ وہ کسی وفت ختم ہوں گےاور نہ ادا لیکی ثمن کے لئے رو کے جا کیں گے اورمسبر یوں پر او نچے او نیچے غالیجوں پر ہوں گے ہم نے ان حوروں کوخاص طور پر بغیر ولا دت کے بنایا ہے اور ہم نے ان کو با کرہ بنایا ہے بعنی ایسی دوشیز ہ کہ جب بھی ان کے پاس ان کے شوہر آئیں گے توان کودوشیزہ ہی یا ئیں گے اور کوئی تکلیف بھی نہ ہوگی ، محبت کرنے والیاں ہم عمر ہوں گی (عُدُ بَا) راء كے ضمداور سكون كے ساتھ عورتيں وائيں باتھ والوں كے لئے (لِأَصْحَب الْيَمِيْنِ) أنشاناهُنَّ ہے متعنق ہے، ياجَ عَلْغَاهُنَّ ہے متعلق ہے، (لیعنی بیسب چیزیں اصحاب الیمین کے لئے ہوں گی)۔

جَِّقِيق الْرِكْبِ لِسِبِهُ الْحَالَةِ الْفَيْلِيرِي فَوَالِلْ

ہے یعنی اس میں شرط کے معنی نہیں ہیں اور اس کا عامل لَیْه سَ ہے، اس کے معنی فعی پر منتصمین ہونے کی وجہ ہے گویا کہ کہا گیا ے اِنتَفَى التكذيبُ وقتَ وُقُوعِهَا يا شرطيه جاس كا جواب محذوف ہے ، تقدير عمارت بير إذَا وَقَعَتِ الواقِعَة کان کیت و کیت اوریس اس می عامل ہے۔

فِيَوْلَنَى : لَيْسَ لِوَقَعَتِهَا الم ، بمعنى في بمضاف محدوف ب، تقدر عبارت بيب لَيْسَ نَفْسٌ كَاذِبَة تُوْجَدُ فِي وَفْتِ وُ قُوْعِهَا، كَاذِبَةٌ كاموصوف نفسٌ محذوف بـ

قِعُولِينَ ؛ حافِضةٌ رافِعَةٌ ، هِيَ مبتداء محذوف كي خبر ب جبيها كيمفسرعلام فيهي كالضافه كركا شاره كردياب مُظهرَةٌ ك لفظ ہے اشارہ کردیا کہ خفض ورفع توعلم ازلی کے اعتبار سے مقدر ہو چکا ہے قیامت اس کو ظاہر کردے گی۔

هِوَلِكَمْ ؛ إِذَا رُجَّتِ الْأَرْضُ بِالواول إِذَا يبل بجبيها كمفسر رَيِّمَ كُلْمَلْمُ تَعَالَىٰ كامخنار بها بجرثاني إذَا اولى كى تاكيد ب یا پھرشرطیہ ہے اور اس کا عامل مقدر ہے اور ریکھی ہوسکتا ہے کہ اس کے بعد دالافعل (رُجَّتْ) عامل ہو۔

هِ وَلَكُ ؛ فَأَصْحَبُ المَيْمَنَةِ مَا أَصْحَبُ المَيْمَنَةِ ، أَصْحَبُ الميمنة مبتداءاول اور مااستفهام يمبتداء ثاني أصحبُ المديمنة جمله موكرمبتداء ثاني كي خبر مبتداء ثاني اين خبر سيل كرمبتداءاول كي خبر _

میر این : خبر جب جمعہ ہوتی ہے تو اس میں عائد ہونا ضروری ہوتا ہے یہاں عائد ہیں ہے۔

جِينَ اللهِ اللهِ اللهِ على مقام ضمير كے ہے، لبذا عائد كى ضرورت نہيں بعد والے جمله كى بھى يہى تركيب ہوگى ، مااگر چەشى كى حقیقت ہے سوال کے بئے آتا ہے مگر بھی اس کے ذریعہ صفت اور حالت کا سوال بھی مطلوب ہوتا ہے جیسا کہ تو کیے مسازیہ ہ فيقال عالم أور طبيب. (روح المعاني)

فِيُوْلِكُنِّ : ثُلَّةٌ ضمه كے ساتھ انسانوں كى برى جماعت اور فتح كے ساتھ كريوں كار بوڑ۔

هِ وَلَكُنَّ ؛ مَوْضُونَة ، الوصْنُ بَمَعَىٰ نَصْنُ الدّرْع زره بنانا ، يهال مطلق بَنْ كَمْ عَن مِن بـــ

يَجُولِكُ ؛ عَلَى سُرُدٍ مَوْضُوْنَةِ بِهِ ثُلَّةٌ مِن الأوَّلِيْنَ مستقرين كَمتعلق موكر مبتداء كي خبر باور مُتكِنيْنَ عَلَيْهَا مُتَقْبِلِيْن بیددونوں مستقرین کی صمیر سے حال ہیں۔

فَيْوَلْكُ، بطوف عَلَيْهم يهجملهمتانفه إوريكى جائز بكه مُقَرَّبُوْنَ عال موالعنى يَدُوْدُ حَولَهُمْ لِلْخِدْمَةِ عِلْمَادٌ لا يَهْرُمُونَ وَلَا يَتَغَيَّرُونَ.

قِوَّوْلَكُ، لَا يَهْرُمُوْنَ بِيمِحْلدُونِ كَيْقْسِرَ ہِـــ

فَيْخُولْنَى : اَبَارِيْقُ، اِبريق كَ جَمْعَ بَ أَنَّابِ (لوتًا) يه بَرُقُ عَ شَتَقَ مِ، أَفَا لِهِ جَوَنَك بهت زياده جَهَكدار هول كاس كَ اس کوابر لیں کہتے ہیں۔

قِوَلَى : حُورٌ عِنْ مبتداء باس ك خرم وف ب، حس ك طرف مفسرعلام في البياقول لَهُ مُر للاستمتاع ساشاره کردیاہے۔

قِحُولَیْ: منحضو ڈی، نحصٰدَ الشجَر خَصْدًا ہے اخوذے (ض) کانٹے تو ڑنا۔ قِحُولِیْ : بِنَسَمَنِ اگرمفسرعلام بشی فرماتے تو زیادہ بہتر ہوتا ،اس لئے کہ صرف تمن اور قیت ہی کی وجہ سے نہیں ہلکہ سی بھی وجہ سے نہیں کیا جائے گا۔

ڹ<u>ٙڣٚؠؗڔۘۅڷۺ</u>ٛڽ

ربط:

سورہ رحمٰن اوراس سورت کے مضمون میں بکسا نیت ہے اس لئے کہ دونوں سورتوں میں قیامت، دوزخ اور جنت کے حالات واوصاف بیان کئے گئے ہیں، اور بحر میں کہا ہے کہ دونوں میں مناسبت یہ ہے کہ دونوں سورتوں میں مجرمین کی سز ااور مطیعین کی جزاء کا ذکر ہے۔

سورهٔ واقعه کی خصوصی فضیلت:

الشعب بين ابن مسعود عدم وى به كفر ما يارسول الله فيظ النافظة النه من قراً سُورَة المواقِعة محل كذلة لم تُصِبة ف فسسساقة جوفض روز اندرات كوسورة واقعة تلاوت كرے كاس كوفاقه كي نوبت نبين آئے گي، اور ابن عساكر نے ابن عباس تعَمَّا اللهُ فَعَالَاتُهُ اللهُ ا

عبدالله بن مسعود کے مرض الوفات کاسبق آموز واقعہ:

 فکر ہے کہ وہ فقرو فہ قدمیں مبتلا ہوجا تیں گی مگر مجھے بیفکراس کئے نہیں کہ میں نے اپنی لڑکیوں کوتا کیدکرر تھی ہے کہ ہررات سورة واقعه يرُ هاكري، كونكه بين في رسول الله يَنْ الله عَنْ الله عَنْ اللهُ عَنْ اللهُ عَلَى اللهُ الله عَنْ اللهُ عَنْ اللهُ عَافَةٌ عَالَمَ اللهُ عَنْ اللهُ اللهُ عَنْ اللهُ عَلَيْ اللهُ عَلْ اللهُ عَنْ اللهُ عَلَيْ اللهُ عَنْ اللهُ عَنْ اللهُ عَلَيْ اللهُ عَلَا اللهُ عَنْ اللهُ عَلَيْ اللهُ عَنْ اللهُ عَلَا اللهُ عَنْ اللهُ عَلَا اللهُ عَنْ اللهُ عَلَا اللهُ عَلَيْ اللهُ عَنْ اللهُ عَلَيْ اللهُ عَلَيْ اللهُ عَنْ اللهُ عَلَيْ اللهُ عَنْ اللهُ عَنْ اللهُ اللهُ عَلَيْ اللهُ عَلَيْ اللهُ عَنْ اللهُ عَنْ اللهُ عَلَيْ اللهُ عَلَيْ اللهُ عَلَيْ اللهُ عَلَيْ اللهُ عَلْمُ عَلَيْ اللهُ عَلَيْ اللهُ عَلَيْ اللهُ عَاللّهُ عَلْمُ عَلَيْ اللّهُ عَلَيْ اللّهُ عَلْمُ عَلَيْ اللّهُ عَلْمُ عَلَا عَلْمُ عَلَّا عَلَا عَلْمُ عَلَا عَلَا عَلْمُ عَلَيْ اللّهُ عَلَيْ اللّهُ عَلَّ اللهُ عَلَيْ الللهُ عَلَيْ اللّهُ عَلِي اللّهُ عَلَيْ الللهُ عَلَا عَلَيْ اللّهُ عَلَّ الللهُ عَلّمُ عَلّمُ اللّهُ عَلَيْ الللهُ عَلَيْ اللللهُ عَلَيْ اللّهُ عَلّمُ اَبَدًا (ابّن كثير،معارف) (ترَجمه) جَوَّحُصْ هررات سورهُ داقعه يرُّ هے گاوه بھی فاقیہ میں مبتلانہ ہوگا۔

لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةُ اسَ آيت كرومطلب موسكتے بين ① اول بيه ہے كردنيا ميں تو وقوع قيامت كى تكذيب کرنے والے ہے شمر لوگ ہیں مگر جب قیامت ہریا ہوگی اور روز روشن کی طرح سامنے آ کھڑی ہوگی تو کوئی متنفس یہ کہنے والانہ ہوگا کہ بیروا قعہ پیش نہیں آیا ہے مفسر ملام نے بھی اسی مطلب کواختیار کیا ہے 🏵 دوسرایہ کہاس کے وقوع کائل جانا ممكن نه جوگااورخدا كے سوااس كوكوئي تال بھي نہيں سكتا مگروہ نالے گانبيں۔

خَسافِهُ مَّافِعَةٌ رَّافِعَةٌ اس كاليك مطلب توييه كوه سب كوالث بليث اور تندو بالاكركر كادكاد يركن اور دوسرا مطلب بيه بھی ہوسکتا ہے کہ وہ اٹھانے والی اور گرانے والی ہوگی ،مطلب بید کہ دنیا میں جو بلند مرتبہ اور عالی مقام سمجھے جاتے ہیں وہ قیامت کےروز ذلیل وخوار ہوں گے،اور دنیا میں جولوگ حقیر اور بے حیثیت سمجھے جاتے ہیں وہ عالی مقام اور سرخ روہوں گے بعنی قیامت کے روز عزت وذلت کا فیصلہ ایک دوسری بنیاد پر ہوگا جود نیامیں بڑی عزت والے بنے پھرتے ہیں وہ ذکیل ہوجا تیں گےاور جوذکیل شمجھے جاتے ہیں وہ عزت یا نعیں گے۔

میدان حشر میں حاضرین کی تنین قسمیں ہوں گی:

ا لیک جماعت تو وہ ہوگی جن کے اعمال نا ہے ان کے دائے ہاتھ میں دیئے جائیں گے بیاصحاب الیمین ہول گے اور بیعرش کے دائیں جانب ہوں گے بیسب لوگ جنتی ہوں گے،اورایک جماعت وہ ہوگی جن کے اعمال مامے ہائیں ہاتھ میں دیتے جائیں گے، بیاسحاب الشمال ہوں گے،اوران کا مقام عرش کے بائیں جانب ہوگا،اور بیسب لوگ جہنمی ہوں گے، تیسری جماعت ایک اور ہوگی ہیسا بقین ومقربین کی ہوگی ،اوران لوگوں کا مقام عرش کے سامنے خصوصی امتیاز اور قرب کے مقام میں ہوگا ۔ (ابن کئیر ملعصا)

سابق سے قیامت کے احوال اور اہوال کا ذکر چل رہا ہے ای سلسلہ میں فرمایا گیا کہ زمین کو زنز لے کے شدید جھکنے ے دوجار کردیا جائے گا،اور میہ جھٹکا مقامی یا ملا قائی نہ ہوگا بلکہ عالمی ہوگا،اس جھٹکے کے نتیجے میں پہاڑ جیسی مضبوط اور یا ئیدار مخلوق ریزه ریزه موکرر یک روان اور پراگنده غبار موجائے گی۔

و كُنْتُمْ أَزْوَاجًا ثلثة ، كُنْتُمْ كاخطاب أكرج بظاهران لوكول عيه جن كويكلام سنايا جار باب ياس كخاطب وہ لوگ ہیں جواس کو پڑھاورس رہے ہیں، مگر مراد اس سے تمام مکلفین ہیں خواہ جن ہوں یا انس، جوروز آ فرینش ہے قیامت تک پیدا ہوئے ہیں ، بیسب کے سب تین گرو ہوں میں تقلیم کردیئے جا تیں گے۔

فَاصْحَبُ السَمَيْمَذَةِ الْحَ اس جُلَه ميسمنة كالفظ استعال بواب، مَيْسَمنة يبين عيجى بوسك بجس كمعنى

دا بنے ہاتھ کے ہیں اور یمن سے بھی ہوسکنا ہے جس کے معنی نیک فال کے اور نیک شگون کے ہیں، اگر اس کو یمین سے مشتق مانا جائے تو اصحاب المیمنة کے معنی ہول گے، دائے ہاتھ والے اس کا ایک مطلب تو وہ ہے جو ظاہر ہے کہ اصحاب الیمین سے وہ لوگ مراد ہیں جن کا اعمالنامہ دائے ہاتھ میں دیا جائے گا، یا خوش نصیب اور سعید لوگ مراد ہوں گے، اور دوسرا مطلب یہ بھی ہوسکتا ہے کہ اصحاب الیمین سے مراد عالی مرتبہ لوگ ہوں، اہل عرب سید ھے ہاتھ کو قوت اور عزت کا نشان سمجھتے تھے، جس کا احترام مصود ہوتا تھا اس کو جلس میں دائے ہاتھ کی طرف بٹھاتے تھے، اگر عرب سی کے متعنق عزت واحترام کا کلمہ کہنا جا ہے تو کہتے فلائ میں بالیمین.

آپ نے فر مایا بیدہ ہلوگ ہیں کہ جب ان کوئن کی طرف دعوت دیجائے تو اس کوقبول کرلیں ،اور جب ان سے ثن ما نگاجائے تو ادا کر دیں ،اورلوگوں کےمعاملات میں وہ فیصلہ کریں جواپیے ثن میں کرتے ہیں۔

مجاہد تعظم کا دلکہ تھاتات نے فرمایا سابقین سے مرادانہیا ، ہیں ، ابن سیرین نے فرمایا کہ جن لوگوں نے دوقبوں یعنی بیت المقدی اور بیت اللہ کی طرف نماز پڑھی ہے دہ سابقین ہیں ہیں ، اور حضرت حسن رَحِمَ کا دللہ تَعَالَیٰ نے فرمایا کہ ہرامت ہیں سابقین ہوں گے ابن کثیر نے ان تمام اقوال کو نقل کرنے کے بعد فرمایا ہیں بول اپنی اپنی اپنی جگھیے ہیں ان میں کوئی اختلاف و تصادفیوں ہے کیونکہ سابقین سے وہی لوگ مراد ہیں جنہوں نے دنیا ہیں نیک اعمال کی طرف سبقت کی ہو، اور دوسروں سے آگے نکل گئے ہوں ، خواہ جہاد کا معاملہ ہویا انفاق فی سبیل اللہ کا ، یا ضدمت خلق کا معاملہ ہویا دعوت الی الحق کا ، غرض دنیا ہیں خیر پھیلانے اور برائی منانے کے لئے ایثار وقر بائی اور محنت و جانفشائی ہیں پیش پیش رہے ہوں ، اس وجہ سے آخرت میں بھی میں لوگ سب سے آگے ہرگاہ موں گئے وار برائی موں گے ، گویا وہاں اللہ کے در بار کا نقشہ میہ ہوگا کہ دائیں طرف صالحین اور بائیں جانب فاسقین ، اور سب سے آگے ہرگاہ خداوندی کے قریب سابقین ہوں گے ، جیسا کہ حضرت عائش صدیقہ کی حدیث سے ظاہر ہے۔

تُلگَةٌ مِّنَ الأوِّلِينَ وقَلِيدِلُ مِنَ الآخوينَ ، ثُلَّةٌ الماء كَضمه كَماته، بماعت كُوكتِ بِي، زَكْثري نِ كها ہے كہ بری بری عنت كو كہتے ہيں، زكثري نے كہا ہے كہ بری بری عنت كو كہتے ہيں (روح المعانی) يہاں اولين وآخرين سے كيا مراد ہے؟ اولين وآخرين كے مصداق كي تعيين ميں مفسرين كا اختلاف ہے، ايك جماعت كا خيال ہے كه آوم عَلِيْقَلَقَالِكَ كے وقت ہے نبی ﷺ كی بعثت تک جتنی امتیں گذری ہیں وہ اولین ہیں، اور آپ كی بعثت كے بعد ہے قيامت تک كے لوگ آخرين ہیں، اس اعتبار ہے آیت كا مطلب به ہوگا كہ بعثت محمدی ہے ہیں، اور آپ كی بعثت كے بعد ہے قيامت تک كے لوگ آخرين ہیں، اس اعتبار ہے آیت كا مطلب به ہوگا كہ بعثت محمدی ہے

- ﴿ (مِئزَمُ بِهَالْضَوْرَ) »

پہلے ہزار ہابرس کے دوران جتنے انسان گذرے ہیں ان کے سابقین کی تعداد زیادہ ہوگی اور آپ کی بعثت کے بعد ہے تی مت تک آنے والے انسانوں میں جولوگ سابقین کا مرتبہ یا ئیں گے ان کی تعداد کم ہوگی۔

دوسری جماعت کا کہنا ہے کہ یہاں اولین وآخرین ہے آپ ﷺ کی امت کے اولین وآخرین مراد ہیں، یعنی آپ ﷺ کے ابتدائی دور کے بوگ اولین ہیں جن میں سابقین کی تعداد زیادہ ہوگی، اور بعد کے لوگ آخرین ہیں جن میں سابقین کی تعداد کم ہوگی۔

تنیسری جماعت کہتی ہے کداس سے ہر نبی کی امت کے اولین وآخرین مراد ہیں لینی ہر نبی کے ابتدائی پیروؤں میں سابقین زیادہ ہول گے اور بعد کے آنے والے لوگوں میں کم ہوں گے، آیت کے الفاظ ان تنیوں مفہوموں کے حال ہیں اور بعید نہیں کہ یہ تنیوں ہی شیحے ہول کیونکہ ان تنیوں میں کوئی تضاد نہیں ہے۔

یک کے گذیہے کے والدان مُحَلِّدُونَ اسے مراوا سے لڑکے ہیں جو بمیشائر کے بی رہیں گے،ان کی عمر بمیشدا یک بی حالت پررہے گی،ان جنت بی ہیں پیدا ہوئے ہوں گے،اور یہ سب اہل جنت کے خادم ہوں گے، حفرت علی توَحَلَّفَائَةُ اور حضرت حسن بھری رَحِمَّنَالْلَهُ تَعَالَىٰ فَر ماتے ہیں کہ بیابال و نیا کے وہ سب اہل جنت کے خادم ہوں گے، حفرت علی توحَلَّفَائَةُ اور حضرت حسن بھری رَحِمَّنَالْلَهُ تَعَالَىٰ فَر ماتے ہیں کہ بیابال و نیا کے وہ بیجے ہوں گے جو بولئے ہوں گے، چونکہ ان کی نیکی بدی پچھند ہوگی جس کی وجہ سے وہ نہ جزاء کے مستحق ہوں گے اور اور ند ہزا کے مستحق بھوں گے اور اور ند ہزا کے مناب ندہوئی ہو، ور نہ تو موثین صلحی بیوں گے اور اور ند ہزا کے مناب ندہوئی ہو، ور نہ تو موثین صلحی بیوں گے المحقد المحقد المحقد المحقد المحقد بی جن کو جنت میں ہوں گے آلمحقد المحقد المحت المحت المحدد المحدد المحت المحدد الم

اِنَّا اَنْشَانَاهُنَّ اِنْشَاءً ، اِنشاء کے عنی پیداکر نے کے بین ، آیت کے معنی یہ بین کہ ہم نے جنت کی عورتوں کی تخلیق ایک فاص انداز حوران جنت کے لئے تو اس طرح ہے کہ وہ جنت ہی بین بغیر واسط ولا دت کے پیدا کی تن بیں اور دنیا کی عورتیں جو جنت میں جن جن جا کی ان کی خاص تخلیق ہے مطلب یہ ہوگا کہ جود نیا میں بدشکل سیاہ رنگ یا بوڑھی تھی اب کو حسین شکل دصورت میں جو ان رعنا کر دیا جائے گا، جیسا کہ ترخہ کی اور بی تی میں حضرت انس فئو کا نشکتا فلائے کہ کی روایت ہے کہ رسول النہ یہ فلائی بین اور نو جو ان بناد ہے گا ، اور بین کی نفیر میں فر مایا کہ جو توریش دنیا میں بوڑھی چندھی سفید بال بدشکل تھیں انھیں بینی تخلیق سے حسین اور نو جو ان بناد ہے گا ، اور بینی ہوئی تھیں ، آپ نے دریافت فر مایا یہ کون ہے کہ ایک روز آپ بینی کی بین شکل در اور آپ کی کہ میری رشت میں تشریف لا سے میرے بر صیابی ہوئی تھیں ، آپ نے دریافت فر مایا یہ کون ہے ؟ میں نے عرض کیا کہ میری رشت کی خالہ ہے ، آنحضرت نے بطور مزاح فر مایا لا کہ تھی جنت میں کوئی بر ھیا نہیں جائے گا ، یہ بیچاری بہت مگلین ہوئیں ، بعض روایات میں ہے کہ رونے لگیں تو رسول اللہ بیٹ بینی جنت میں کوئی بوسے کی بیات کی حقیقت بیان فر مائی ، کہ جس وقت یہ جنت میں جا میں گی تو پوڑھی نہ ہوں گی بلکہ جوان ہو کر داخل ہوں گی اور بی بات کی حقیقت بیان فر مائی ، کہ جس وقت یہ جنت میں جا میں گی تو پوڑھی نہ ہوں گی بلکہ جوان ہو کر داخل ہوں گی اور بی آ یت تلاوت فر مائی ۔

عَ وهم ثُلَةً ثُمِّنَ الْأَوَّلِيْنَ ﴿ وَثُلَّةً ثُمِّنَ الْالْخِرِيْنَ أَهُو اَصْعِبُ الشِّمَالِ ۚ مَا اَضَعَبُ الشِّمَالِ اللهِ مَا اللهِ عَالَمُ اللهِ مَا اللهِ عَالَمُ اللهِ عَالَمُ اللهِ عَالَمُ اللهِ عَالَمُ اللهِ عَالَمُ اللهِ عَالَمُ اللهِ عَالَهُ عَلَيْهِ اللهِ عَالَمُ اللهِ عَالَمُ اللهِ عَالَمُ اللهِ عَنْهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللّهُ ال في المُسَامِّ وَّحَمِيمٍ فَ مَاءِ شدِيدِ الحرَارةِ وَظِلِّلِمِّنَ يَحَمُّومِ فَدَخَانِ شديد السَوَادِ لَابَارِدٍ كَغَيره سَ الظِلال وَلَاكَرِيْمِ حسَنِ المُنظَرِ إِنَّهُمُّكَانُوْا قَبْلَ ذَٰلِكَ فِي الدُّنيا مُثَرَّفِيْنَ ۖ مُنْعَمِينَ لا يَتُعبُونَ في الطاعةِ وَكَانُوْايُصِرُّوْنَ عَلَى الْجِنْثِ الذنبِ الْعَظِيْمِ ﴿ اي الشِّرِكِ وَكَانُوا يَقُولُونَ الْإِذَامِتُنَا وَكُنَّا ثُرَابًا وَعِظَامًا عَانَا لَمُبْعُوثُونَ ﴾ في الهَمْزَتَيْنِ في المَوْصِعَيْنِ التَخقِيقُ وتسهيلُ الثّانِيَةِ وإدْخَالُ ألِفِ بينَهما علىٰ الوَجْهَينِ أَ**وَابَاؤُنَا الْاَوْلُونَ ۖ** بفَتح الواوِ لِنعَطُفِ والهَمُزَةِ للإستِفهام وهو في ذلك وفيما قبله لِلإِسْتِبْعَادِ وفي قِراءَ ةٍ بسُكون الوادِ عطْفًا بَأَوْ والمَعْصُوفُ عليه مَحَلُّ إنَّ وإسُمها قُلَانَّ الْاَوَّلِيْنَ وَالْاِخِرِيْنَ الْمُلَمَّمُوعُونَ إِلَى مِيْقَاتِ لِوَقْتِ يَوْمِرَمَّعْلُوْمِ اى يوم القيمَةِ ثُمَّ إِنَّكُم اليُّهَا الطَّمَّ الْوُنَ الْمُكَلِّذِبُوْنَ ۚ لَاكِلُوْنَ مِنْ شَجَرِمِنْ زَقُّوْمِ ۗ بَيانَ للشّجر فَمْلِئُوْنَ مِنْهَا سن الشّجرِ الْبُطُونَ ۗ فَشرِبُونَ عَلَيْهِ اي الـزَّقُومِ المَاكُولِ مِنَ الْحَمِيِّمِ ﴿ فَتَلْرِبُونَ شُرَّبَ بِفتح الشِّينِ وضبِّها مَصْدَرٌ الْهِيِّمِ ﴿ الابِ العَطَّاشِ جمعُ هَيْمَان لِلذَكْرِ وهَيْمَى لِلْانشَى كَعَطْشَانَ وعَطْشَى **هٰذَانُزُلُهُمْ** سَا أُعِدَّلَهِم بِيُومُ الْلِيَّيْنِ فَي يَومَ القِيْمةِ غَحُنُ خَلَقُنَكُمُ اوجدناكم عَن عدم فَلُولًا هَلًا تُصَدِّقُونَ@بالبَعْثِ إذ القَادِرُ على الإنشاءِ قَادرٌ على الإعادَةِ **اَفَرَءَيْتُمْرِمَّالَكُمْنُوْنَ ۚ** تُرِيقُونَ المَنِيُّ فِي أَرْحامِ النِّسَاءِ عَ**اَنْتُكُمْ** بِتَحْقِيْقِ الهَمْزَتَيْنِ واِبُدَالِ الثَّانِيَةِ اَلِفًا وتَسْهِيُلِهِ وإدُخال العَبِ بَينَ المُسهَّلة والأخرى وتركب في المَوَاضع الأربَعَةِ ثَخُلُقُونَةُ اي المَنِيَّ بَشَرًا أَمْنَحُنُ الْخَلِقُونَ ۗ نَحُنُ قَدَّرُنَا بالتَشديدِ والتَخفيفِ بَيْنَكُمُ الْمَوْتَ وَمَانَحُنُ بِمَسْبُوقِينَ ﴿ بِعَاجِزِينَ عَلَى عن أَنَّ لَٰبُدِلَ نَجْعَلَ اَمْثَالُكُمُّ مَكَانَكُم وَنُنْشِئَكُمُ يُخَلِقَكُمْ فَيُمَالُانَعْلَمُونَ® من الصُور كالقِرَدَةِ والخَنَازِير وَلَقَدُّعَلِمْتُمُ النَّشَاةَ الْأُولِل وفِي قِرَاءَ ةٍ بِسُكُونِ الشينِ **فَلُوْلَاتَذُكُرُونَ**۞ فيهِ إدغامُ التَاءِ الثانيةِ في الاصل في الذال أَفَرَءَيْتُمْمِمَّالَّ**تَحُرُثُونَ**ۗ ﴿ تُثِيرونَ الاَرضَ وتُنقُونَ البَذْرَ فيها عَالْنَتُمْ تَزُرُكُونَكُ تُنبِتُونَه أَمْرُنَحُنُ الزَّرِعُونَ ﴿ لَوَنَشَا أَوْلَجَعَلْنَاهُ كُطَامًا نَباتَ يَابِسُ لا حَبَّ فِيه فَظُلْتُمْ أَصُلُه ظَلِلْتُمْ بِكُسِرِ اللامِ فَحُذِفَت تَحْفِيفًا أَي أَقَمْتُمْ نَهَارًا تَقَكَّهُونَ ﴿ خُذِفَ مِنه إحدى التائين في الاصل تُعَجَّبُونَ مِن ذلك وتَقُولُونَ إِل**َّالْمُغُرَّمُونَ** فَيُقَة زرعِنا بَ**لْ نَحُنُ مُحُرُّمُونَ اللَّهُ مَا اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى الْمُعْلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى الْعَلَى اللَّهُ عَلَى الْعَلَى الْمُعْلَى اللَّهُ عَلَى الْمُعْلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَى الْمُعْلِمُ عَلَى اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى ال** <u>اَفُرَءَيْتُمُ اِلْمَاءَ الَّذِي تَشْرَبُونَ ﴿ عَانَتُمُ اَنْزَلْتُمُوهُ مِنَ الْمُزْنِ السَحابِ جِمعُ مُزْنَةٍ اَمْزَنَحْنُ الْمُنْزِلُونَ ﴿ لَوْنَشَاءُ ا</u> جَعَلْنَهُ أَجَلَجًا سِلْحًا لايُمكِنْ شرُبُه فَلَوْلا فَهَلا تَشَكُرُونَ۞ أَفَرَءَيْتُمُ النَّالَ الَّتِي تُوْرُونَ۞ تُحرجُون سن الشهر الاحصر عَ النَّتُمْ أَنْشَأْتُمْ شَجَرَتُهَا كالمَرخ والعَفَارِ والكَلخ أَمْ نَعَنْ الْمُنْشِئُونَ " نَعَنُ جَعَلْنَهَا تَذَكَّرَةً لِمار جَهَتُم **وَّمَتَاعًا** بُلُعَةً لِللمُقْوِيْنَ ﴿ لِلمُسافِرِينَ مِن اقوى القوم اي صارُوا بالقِويْ بالقَصر والمَدِّ اي القَفرُ وهو عَالَى اللَّهُ اللَّهُ

- ﴿ [مَئِزَمُ بِبَالشَّرْمِ] ٢

ت ایک بڑی جماعت اولین میں ہے ہوگی اور ایک بڑی جماعت آخرین میں ہے ہوگی اور اصحاب الشمال کیا ۔ میر میں میں میں میں میں ہے ہوگی اور ایک بڑی جماعت آخرین میں ہے ہوگی اور اصحاب الشمال کیا ۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ بی بُرے میں تیعنی بائیں ہاتھ والے بیلوگ آگ کی گرم ہوا (اُسو) میں ہوں گے جومسامات میں نفوذ کر جائے گی اور کھو لتے ہوئے پانی میں ہوں گے جونہایت ہی گرم ہوگاا ورسیاہ دھوئیں کے سامیر میں ہوں گے یک حکموم وہ دُھواں جونہا بہت سیاہ ہو، جونہ ٹھنڈا ہوگا،جبیبا کہ دیگرسائے ٹھنڈے ہوتے میں اور نہ فرحت بخش لیعنی خوش منظر بیلوگ اس سے پہلے دنیامیں بڑی خوشحالی میں رہتے تھے طاعت کے لئے مشقت نہیں اٹھاتے تھے بڑے بھاری گناہ پراصرار کرتے تھے لیمنی شرک پر ادر یوں کہا کرتے تھے کہ جب ہم مرجا کیں گے اورمٹی اور بڈیاں رہ جا کیں گے تو کیا ہم دوبارہ زندہ کئے جا کیں گے ؟ (اَقِ) واؤمفتوح کے ساتھ عطف کے لئے ہے اور ہمزہ استفہام کے لئے ہے، اور بیاستفہام یہاں اور اس سے پہلے استبعاد کے لئے ہے اور ایک قراءت میں واؤ کے سکون کے ساتھ ہے عطف کے طور پر ، اور معطوف علیہ اِن اور اس کے اسم کا تحل ہے آپ کہدد بیجئے اسکے پیچھلے سب جمع کئے جائیں گےایک معین وقت پر لینی قیامت کے دن پھرتم کوائے گمراہو! حبطلانے دالو! تھوہڑ کے درخت سے کھانا ہوگا (مِن زَفُومِ) شجو ° کابیان ہے پھراس سے بیٹ بھرنا ہوگا پھراس پر تینی زقوم کے کھانے کے بعد تھولتا ہوا یانی پینا ہوگا اور پھر پینا بھی پیاسے اونوں کے مانند شوٹ شین کے ضمداور فتر کے ساتھ مصدر ہے الھیمر پیاسے اونٹ کو کہتے ہیں، یہ هندمان کی جمع ہے هندمی اس کی مؤنث ہے پیاسی اونمنی ، جیسے عطشان و عَظْمُنی (غرض بیکہ) بیان کی ضیافت ہوگی جوان کے لئے تیامت میں تیار کی عن ہے ہم نے تم کو پیدا کیا لینی عدم ہے وجود میں لائے پھرتم کس لئے بعث بعد الموت کی (موت کے بعد زندہ ہونے کی) تعبد لیں نہیں کرتے؟ اس سئے کہ جوذات ابتداء پیدا کرنے پر قادر ہے وہ اعادہ پر بھی قادر ہے کیاتم نے بھی اس بات پرغور کیا کرمنی کا جونطفہ تم عورتوں کے رحم میں پہنچاتے ہوئیاتم اس منی کو انسان بناتے ہو؟ (أأنْدُ منی) میں دونوں ہمزوں کی تحقیق اور و وسرے کوالف سے بدل کراوراس کی تسہیل کے ساتھ اور مسہلہ اور دوسرے ہمزہ کے درمیان الف داخل کر کے اور ترک ادخال كر كے جاروں جگہ پر اور ہم نے تم میں سے ہرا يك كى موت كا وفت مقرر كيا ہے (فَلَوْ مَا) میں وال كى تشد يداور تخفيف كے ساتھ اورہم اس ہے عاجز نہیں ہیں، کہ ہم تمہاری جگہ تمہارے جیسے پیدا کردیں اورتمہاری الیی صورت بنادیں کہتم جانتے بھی نہیں ہو جیسا کہ بندراورخزیر اورتم کواول ہیدائش کاعلم ہے اورایک قراءت میں (منشأة) میں شین کے سکون کے ساتھ ہے بھرتم کیوں نہیں بچھتے ؟ (مَاذَكُرُوْنَ) میں تائے ثانیه كااصل میں ذال میں ادعام ہے كیاتم نے بھی اس بات پرغور كیا؟ جوتم كاشت كرت (پیداوار) کوچورہ چورہ کردیں بعنی خشک گھاس کردیں کہاس میں ایک بھی دانہ نہ ہو تو تم دن بھر تعجب کرتے رہ جاؤ (ظَلْتُنْهُ) کی اصل ظَلِلْلُتُمْرِ لام کے کسرہ کے ساتھ ہےلام کو تحقیفاً حذف کردیا گیاہے، لیعنی تم دن بھر حیرت زوہ رہ جا وَ (تَسفَکّهُونَ) میں اصل میں ایک تا ءحذف کردی گئی ہے بیخی تم اس ہے تعجب میں رہ جا وَاور کہنے لگو ہم پرتو کھیتی کی لاگت کا بھی تاوان پڑ گیا، ملکہ ہم تو ه (زَمَزُم بِهَالمَهُ إِنَّا

رزق ہے بالکل بی محروم رہ گئے یاتم نے بھی اس پانی میں خور کیا؟ جس کوتم پیتے ہوکیا اس کو بادل ہے تم برماتے ہو یا ہم برماتے ہیں؟ (مُسٹر نَّ) مُسؤنَةً کی بَتع ہے بمعنی بادل آگر ہم چاہیں تو اس کوتمکین کردیں کداس کا بینا بی مکن ندر ہے تو تم شکر کیوں نہیں کرتے؟ کیاتم نے بھی اس آگ پر خور کیا جس کوتم روش کرتے ہو؟ (یعنی) میز درخت ہے نکا لئے ہو کیاتم نے اس درخت کو بیدا کیا جسیا کہ مَوَنَے بعضاد اور حکلنے یا ہم بیدا کرنے والے ہیں ہم نے اس کو یعنی ان درختوں کو نارِجہم کے لئے یا دو بانی کی بیدا کیا؟ جسیا کہ مَوَنَے بعنی چشل میدان میں پہنچ گئے چیز اور مسافر وں کے لئے کامل فائدہ کی چیز بنایا ہے (مُسقّو بِنَی) اَفْوَی المَقَوْمُ ہے ماخوذ ہے یعنی چشل میدان میں پہنچ گئے (المُسقّوی) تاف کے سر داور یاء کے مدکساتھ یعنی قَفْر (چشل میدان) ایسا جنگل کہ جس ہیں آ ب دگیاہ پچھرنہ ہو سوا پے عظیم الشان رب کی لین اللہ کی پان سیجئے اسم کالفظ ذائد ہے۔

ﷺ مُمَرِنُكُةُ مِنَ الْأَوَّلِيْنَ النح به هُمَرِمِتِداء محذوف كَ خَبر بِجِيها كَهْمُسرِعلام نِي اشاره كرديا ب فَيْخُولْنَهُ ؛ سَمُوهٌ ، لُو ، تيز بها پ، وه كرم بواجوز برك ما نندا ثركر بي مؤنث ما كل ب (ج) سَمائمُ ، سموم كوسموم اس لئے كہتے ہیں كدوه جسم كے مسامات میں واخل بوجاتی ہاى ہے السّد مرجمعنی زہر ماخوذ ہے ، اس لئے كه زبر بھی مسامات میں واخل بوكر ہلاك كرديتا ہے۔

قِیُولِیْ؛ اِنَّهُ مُر کَانُو فَبْلَ ذَلِكَ مُنْوَفِیْنَ بِی جمله ماقبل کی علت بونے کی وجہ سے تعلیلیہ ہے، لیعن اصحاب ثال ذکورہ عذاب کے مستحق اس کئے ہوں کے کہ وہ اپنی خوشحالی ہیں مگن اور مست ہونے کے ساتھ ساتھ شرک وکفر پر جو کہ سب سے بڑا گناہ ہے مصر شخصا وربعث بعد الموت کے منکر۔

فَيْخُولِنَى ؛ إِذْ خَسَالُ الفِ بَيْنَهِما على الوَجْهَيْنِ مفسرعلام كے لئے مناسب تقا كه وَتَوْ كِه كااصَا فه فرماتے تا كه چارقراء تيں ، موجاتيں ، مفسرعلام كى عبارت سے صرف دوقراء تيں مفہوم ہوتی ہیں۔

قِيَّوْلِيْ، والمعطوف عليه محل إنَّ واسمها إنَّ واسمها بن واوَ بمعنى مع اللهُ عَلَى اللَّوَّ لُوْنَ كَاعِطَفُ إِنَّ كَالْ الْكُوَّ لُوْنَ كَالْ الْكُوَّ لُوْنَ مِرْفُوعَ بِ سِيال صورت مِن بِ جَبَدِ معطوف كو إِنّا كَي فَبِر لَسَمَبْ عُوْثُوْنَ بِ بِ مِعَ اللهَ كَالْمُ اللَّوَ لُونَ مِرْفُوعَ بِ سِيال صورت مِن بِ جَبَدِ معطوف كو إِنّا كَي فَبِر لَسَمَبْ عُوْثُونَ بِ بِ مِعْدِم ، ناجائ ، تقدر برعبارت بيه و أَإِنّا وَابَاوْنَا لَمَنْ عُوْثُونَ وَرندتو عطف لَمَنْ عُوْثُونَ كَا مُعْير مرفوع متنتر ير بوگا .

سَيَخُوالَ ، ضمير مرفوع مُسترمت لي عطف كے لئے ضروری ہے كہمير مرفوع منفصل كذريعة اكيدا ألى جائے جو يہال موجود نہيں ہے ، تقدير عبارت لَمَنعُونُونَ مَحْنُ ہونی جائے۔

جِی اُنٹے: صمیر منفصل کے ذریعہ تا کیداس ونت ضروری ہے جب معطوف اور معطوف علیہ کے درمیان فصل نہ ہوور نہ تو ضروری نہیں ہے، یہاں اَوَ آباؤ نَا میں ہمز ہ استفہام کافصل موجود ہے۔

— ﴿ (مَرْزَم بِهَاللَّهُ إِنَّا

فَيْخُولْكُمْ: لِوَقْتِ أَى فِي وَقْت ميقات بمعنى ونت إوراام بمعنى في بـ

سَيُواكَ: لَمَجْمُوعُونَ كاصلافي آتا إلى حالاتك يهال الى لاياكيا إ

قِيُّولِ مَنَّى: مَالِئُونَ مِنْهَا، مِنْهَا كَامْمِيرَ ثِيرِ كَاطرف لوث ربى ہے اسم عِنس ہونے كى وجہ ہے اس لئے كه اسم عِنس مِين مُركراور مرب و سائن كائٹ ا

مؤنث دونول کی تنجائش ہوتی ہے۔ (معمل)

فَخُولُكَى ؛ اَلْهِيْمُ شَديدِيا فَ اون كوكتم إلى ، هَيَامٌ مرض استقاء جس ميں بياس زياده لگتی ہے يائی بينے سيرالي انہيں ہوتی ہے، اس مرض كوجلنده بھی كہتے ہيں ، هنسرعلام كے كہنے كا مقصديہ ہے كہ هيم هيمان ندكراور هيمنى مؤث ونوں كى جمع ہے، اس مرض كوجلنده كو هيم كو شان كى جمع لكھنا سبقت قلم ہے، درست بيہ كہ أهيم كى جمع ہے، اس لئے كه هيم اصل ميں هيم تقارض كا جمع ہے ساتھ ہے بروزن حُمَّ باء كے ساتھ ہے بروزن حُمَّر باء كے ضمدكوياء كى موافقت كے لئے كسره سے بدل ديا، اور فعل أفعل كا فعل أفعل كى جمع ہے جمن أخمر كى جمع ہے۔

فِيُولِكُمْ: لَوْنَشَاءُ جَعَلْناه أَجَاجًا.

سَيْخُوالَى ، لو كجواب مين لام لا ناضرورى ہوتا ہے لبذا لَجَعَلْنَاهُ ہونا چاہئے ، لام تاكيدكوكس صفحت كے لئے حذف كيا كيا؟ جَوَلَ بْنِيْ ، لو كر حارب مين لام لا ناضرورى ہوتا ہے لبذا لَجَعَلْنَاهُ ہونا چاہئے ، لام تاكيدكوكس مناكيدك حارب نا يكى بشركى قدرت ميں نبيل ہے يہاں رم تاكيدكى حارب العالمين ہى كا ہے ، بخلاف كيت اور زين كے ، اس ميں مِسلك كاشائه ہے اس وجہ سے مابق ميں لام تاكيدلا يا كيا ہے۔

تَفَيِّ أَرُوتِيْ ثَنَيْ لُ حَ

اور اگر دوسری تفسیر مراد کی جائے کہ اولین وآخرین دونوں اس امت کے مراد ہیں، جبیا کہ حضرت ابن عبس تضحَالِقَائِظَا الْعَیٰنَا النِّیْنَا اللہ عِنْ اور ابن مردوبیا نے روایت کیا ہے کہ رسول اللہ ﷺ کا اس آیت کی تفسیر میں فر مایا کھے ما مِن

اُمَّتِ یعنی بیاولین و آخرین میری امت ہی کے دو طبقے ہیں ،اس معنی کے لحاظ سے ٹابت ہوتا ہے کہ سابقین اولین صحب و تا بعین وغیرہ جیسے حضرات ہے بھی بیامت آخر تک محروم نہ ہوگی اگر چہ آخری دور میں ایسے لوگ بہت کم ہوں گے ،اور مومنین ومتقین اولیا اللہ تو اس پوری امت کے اول وآخر میں بھاری تعداد میں رہیں گے ،اس کی تا ئیداس حدیث ہے بھی ہو تی ہے جو بھے بخاری ومسلم میں حضرت معاویہ ہے منقول ہے کہ رسول الله ﷺ نے فرمایا کہ میری امت میں ایک جماعت ہمیشدق پر قائم رہے گی اور ہزاروں مخالفوں کے نریجے میں بھی وہ اپنارشد وہدایت کا کام کرتی رہے گی ،اس کوکسی کی مخالفت نقصان نہ پہنچا سکے گی جتی کہ بیرجماعت تا قیام قیامت اینے کام میں لکی رہے گی۔ (معارف الفرآن)

نَـحْنُ خَـلَفْ نَكُمْ فَلَوْ لَا تُصَدِّقُونَ النع شروع سورت سے يبال تكمحشر مين انسانوں كى تين قسموں كا ذكر تھا، ندکورۃ الصدرآیات میں ان ممراہ لوگوں کو تنبیہ ہے جوسرے سے قیامت قائم ہونے اور دوبارہ زندہ ہونے کے قائل تہیں اور اس کی تو حید کے قائل ہونے کے بجائے مختلف مظاہر قدرت کوشر کیک تھہراتے ہیں۔

ندکور و مختفر فقرے میں ایک بڑا اہم سوال انسان کے سامنے پیش کیا گیا ہے ، دنیا کی تمام چیز وں کوچھوڑ کرانسان صرف اس ایک بات پرغور کرے کہ وہ خود کس طرح پیدا ہواہے ، تو اسے نہ قر آن کی تعلیم تو حید میں کوئی شک رہ سکتا ہے نہ اس کی تعلیم آخرت میں ،انسان آخراس طرح تو پیدا ہوتا ہے کہ مردا پنانطفہ عورت کے رحم تک پہنچادیتا ہے مگر کیا اس نطفہ میں بجیہ پیدا کرنے کی صلاحیت خود بخو د پیدا ہوگئی ہے؟ یا انسان نے خود پیدا کی ہے یا خدا کےسوائسی اور نے پیدا کردی ہے؟ پھر استفتر ارحمل ہے وضع حمل تک ماں کے پہیٹ میں بیچے کی درجہ بدرجہ تخلیق و پرورش اور ہربچہ کی الگ الگ صورت گری اور ہر بچہ کے اندر مختلف وہنی صلاحیتوں اور جسمانی قوتوں کو ایک خاص تناسب کے ساتھ رکھنا جس سے وہ ایک خاص شخصیت کا انسان بن کرا تھے کیا بیسب کچھا بیک خدا کے سواکسی اور کا کام ہے؟ اگر کوئی صحف ضداور ہٹ دھرمی میں مبتلا نہ ہوتو وہ خود محسوس كرے گا كەشرك باد ہريت كى بنياد بران سوالات كاكوئى معقول جواب نبيس ديا جاسكتا۔

ظاہر ہیں نظریں ظاہری اسباب میں الجھ کررہ جاتی ہیں اور تخلیق کا ئتات کوان ہی اسباب کی طرف منسوب کرنے لگتی ہیں ، اصل قد رست اور حقیقی قوت فاعله جوان اسباب ومسببات کوگردش دینے والی ہے اس کی طرف التفات نہیں کرتی۔

نعن قَدَّرِنَا بَيْنَكُمُ الموتَ ومَا نحن بمَسْبُوقِينَ لِينْ جسطرة بمانانى زندگى كے فالق اور مالك بين اس میں ہمارا نہ کوئی شریک ہےاور نہ مدد گار ، اسی طرح ہم ہرتشفس کی موت کے بھی تنہا ما لک ہیں اور برشخص کی موت کا وفت مقرر کر دیاہے جس ہے کوئی تجاوز نہیں کرسکتا چنانچہ کوئی رحم مادر میں تو کوئی بچین میں تو کوئی جوانی میں تو کوئی برو صابے میں

علی أن تُبَدِّلَ أَمْشَالْكُم لِعِن الرجم جا بین توتمهاری صورتین من كركے بندراور خزیر بنادی اور تمهاری جگه كوئی دوسری مخبوق پیدا کردیں۔

ح (خَزَمُ بِبَالضَّلِيَ

وَلَـقَذَ عَلِمْتُهُ النَّسْأَةِ الأولى لِيحَنْتُم بِهِ يُونْ بِينَ تَبِينِ مِيمِطِيّ جَسِطِرِح ال نِيْتَهِ بِينِ كِيلِ مِن تَبْهِ بِيرا كيا جس كاتبهِ بِينَ عَم ہِ وہ دوبار وبھی پیدا کرسکتا ہے۔

آ اَنْدُ مُونَهُ اَمْ نحنُ الزَّارِ عُونَهُ آمَ نحنُ الزَّارِ عُونَ آ پہلا وال اول کول کواس حقیقت کی طرف توجہ ولا تا رہاتھ کہ م از فود پیدائیس ہوگے بلکہ اللہ کے ساختہ پر داختہ ہو، اور ای کی تخلیق ہے وجود ہیں آئے ہو، اب بید وسرا سوال ایک دوسری اہم حقیقت کی طرف توجہ ولا رہا ہے، کہ جس طرح تبہاری پیدائش ہیں انسانی کوشش کا دفل اس ہے زاکد پی تھی انسانی کوشش کا دفل اس ہے زاکد پی تھی انسانی کوشش کا دفل اس ہے زاکد پی تھی انسانی کوشش کا دفل اس ہے بڑھ کر پی تھی ہوں وہ کی سان ذہین میں نظفہ والدے، زمین جس میں کسان نی وہ النہ ہی انسانی ہوئی تبیس ہے بیا کوشش کا دفل اس ہی بڑھ اللہ ہوئی تبیس ہے بیا کوئٹ ہیں کہ کسان زمین میں نظفہ والدے، زمین جس میں کسان نیج والی ہوئی ہیں ہی ہی انسانی ہوئی تبیس ہے بیا کہ وہ ہور تشکل اس کے اندرجو نیج تم والے ہواس کونٹو و قمائے قابل تم ہے اس کے اندرجو نیج تم والے اور وہ وہ اس کے مقابلہ تو موجود شرائی ہوئی ہیں تبیس ہی ہوئی ہوں ہوں کا نظام ہی ہوا داری کی پر وردگاری کا کرشہ ہے، جب ہو ہود شرائی اور کی بندگی کرنے کا تن آخر کسے پہنچ ہے؟

الْکُورُ اَیْدُ مُلْ اللّٰمَاءَ الّٰذِی تَشُورُ ہُونَ تَمُ ہم اللّٰمِ اللّٰمِ اللّٰمِ ہم کیا اور وہ وہ وہ وہ وہ وہ وہ کی انتظام ہی ہم ادائی کیا ہوا ہو، بیا نی جو تبیل کی مقابلہ کی کہنے ہوں کہنے کہنے ہوئی کی مقابلہ کی کہنے میں کہنے ہوئی کے انتظام ہی ہم ادائی کیا ہوم اور اس کے مقول کے معنی نہر کرانے کھانے کیا تنظام میں لگا ہوم اور آئے وہ معرائی فرونٹ ہونے والا ، مراداس ہے وہ مسافر ہے جو جنگل میں کہیں شم کرانے کھانے کیا تظام میں لگا ہوم اور آئے کہنے میں کی بیہ کے کسب تخیق ہو ۔ دال ، مراداس ہے وہ مسافر ہے جو جنگل میں کہیں شم کرانے کھانے کیا تظام میں لگا ہوم اور آئے کی میہ کی سے کہ سب تخیق ہو ۔ والا ، مراداس ہے وہ مسافر ہے جو جنگل میں کہیں شم کرانے کھانے کیا تظام میں لگا ہوم اور آئے۔ کی سبتی میں میں کو میں ۔ کسب تخیق ہو ۔ کسب تخیق ہو ۔ کسب تو میں اور کی کے دیکھ کی تنظام میں لگا ہوم اور آئے۔

فَسَيِّے بِاسْمِرَ بِلَكَ الْعَظِيْمِ اس كالازى اور عقلى بتيجہ يہ ہونا جائے كدانسان حق تعالى كى قدرت كاملہ اور تو حير پرايمان لائے اور اپنے ربعظيم كى تبيع پڑھا كرے كہ يبى اس كى نعمتوں كاشكر ہے۔

فَلْ الْفِيمُ لا رَائِدَة بِمَوقِع النَّجُوهِ بَمَسَاقِطِها لِغُرُوبِها وَإِنَّهُ اى الفَسَمَ بِها لَقَسَمُ لَوْ الْفَسَمُ اللَّهُ الْمُعَلِّمُ الْفَلْمُ الْمُعَلِّمُ الْمُعَلِّمُ الْفَلْمُ الْمُعَلِّمُ اللَّهُ ال

فيمه زَعَمتُه فلو لا الثانية تاكيدُ للأولى واذا ظرفٌ لِتَرجِعُونَ المُتَعلِّق به الشَّرُطَان والمعنى هَلَّا ترجِعُونَها ان نَعَبتُم البعْثَ صادِقِينَ فِي نَفيه اي لِيُنتَفي عن مَحَلِها المَوتُ فَأَمَّا إِنْ كَانَ المَيتُ مِنَ المُقرَّرِينَ فَفَرُوحَ اي فه اسْتِرَاحَةً وَرَيْحَانَ أَهُ رِزِيّ حَسنُ وَّجَنَّتُ نَعِيْمٍ وهَلِ الجَوَابُ لِاَمَّا اولِانِ اَولَهُمَا أَقُوالٌ وَاَمَّا اَنْكَانَ مِنْ اَصْحِبِ الْمِينِينَ فَسَلَمُ لَكَ اى له السلامة مِن العَذَابِ مِنْ اَصَّحِبِ الْيَمِيْنِ ﴿ مِن جِهَةِ اَنَّه منهم وَاَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ الْفَلَذِينِ الضَّا لِيْنَ ﴿ فَنُزُلُصِّنُ حَمِيْمِ ﴿ فَتَصْلِيَةُ جَمِيْمِ ﴿ إِنَّ هٰذَالَهُ وَحَقَّ اللَّيَقِيْنِ ﴿ بِن إِضَافَةِ المَوصُوبِ الى صِفَتِه فَسَرِّحَ بِالسَور يُجُ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿ تَقَدَّمَ.

میں ہے۔ میں میں اس میں اس میں اس کھا تا ہوں غروب ہونے کے لئے چھپنے والے ستاروں کی اگرتم سمجھوتو یہ یعنی ان کوشم ایک بڑی تتم ہے بیعنی اگرتم اہل علم میں سے ہونو اس تتم کی عظمت کوجان او کے بیہ لیعنی جوتم کوسٹایا جار ہاہے مکر مقر آن ہے جوایک محفوظ کتاب میں ہے اور وہ صحف ہے اس کو پاک (لوگ) ہی چھوتے ہیں (لا یَسمَسُّهُ) نہی بمعنی خبر ہے یعنی وہ جنہوں نے خود کوا صداث سے یاک کرلیارب العالمین کی جانب سے نازل کردہ ہےتو کیا اس کلام لیعنی قر آن کو سرسری کلام سمجھتے ہو اہمیت نہیں ویتے ہوتکذیب کرتے ہو کیاتم نے اس کی تکذیب ہی کوغذا (دھندا) بنالیا ہے؟ اورتم بارش کے ذریعہ اس کے رزق ے شکر کے بجائے ناشکری کرتے ہو بعنی اللہ کی سیرانی کی مطونا بنوءِ گذا کہہ کرناشکری کرتے ہو (بعنی فلا ب ستارے کے طلوع یا غروب کی وجہ سے بارش ہوئی ہے) پس جب روح نزع کے وقت نزخرے تک پہنچ جائے اور وہ کھانے کی نلی ہے ، اور اے میت کے پاس حاضر لوگو! تم اس مرنے والے کو دیکھ رہے ہواور ہم مرنے والے سے تمہاری بنسبت علم کے اعتبار سے زیادہ قریب ہوتے ہیں لیکن تم دیکے ہیں سکتے (تبصرون) بصیرت سے ماخوذ ہے، یعنی تم کو ہماری موجودگی کاعلم ہیں ہوتا، پس اگر تم کوزندہ کرکے تمہاراحساب کتاب ہونے والانہیں ہے بعنی تمہارے اعتقاد کے مطابق تم کوزندہ کیا جانے والانہیں ہے توکس لئےتم روح کو حلق میں پہنچنے کے بعدجهم کی طرف نہیں لوٹا لیتے اگرتم اپنے دعوے میں سیچ ہو ٹانی لَو لا پہلے لَو لَا کی تا کید ہے،اور اِذا مِلَغَتْ میں اِذَا، توجعون کاظرف ہے،اور توجعون سے دوشرطیں متعلق ہیں یعنی اگر بعث کی فعی میں تم سے ہوتو اس کو کیوں نہیں لوٹا لیتے ہو، تا کہ موت نفس کے ل سے منتقی ہوجائے پس اگر میت مقربین میں ہے ہے تو اس کے کے راحت ہے اوررز ق حسن ہے اور آرام والی جنت ہے (فَرَوحٌ) یا تو اِمّا کا جواب ہے یااِن کا یادونوں کا (اس میں) تین قول بیں اور جو تخص اصحاب الیمین میں سے ہے تو تیرے لئے بعنی اصحاب الیمین کے لئے عذاب سے سلامتی ہے اس وجہ سے کہوہ اصحاب المیمنین میں سے ہے لیکن اگر کوئی جھٹلانے والول گمراہوں میں سے ہوتو کھو لتے ہوئے گرم پانی کی ضیافت ہے اور دوزخ میں جانا ہے رینجر سراسر حق قطعاً تقینی ہے ، موصوف کی اپنی صفت کی طرف اضافت کے قبیل ہے ہے، پس توا ہے عظیم الشان رب کی تبیج بیان کر جیسا کہ سابق میں گذر چکا ہے۔ —— ﴿ (مَكْزُمُ بِبَالشَّلْ) ≥ -

جَّقِيق تَزِكِي لِيَسَهُ أَنْ تَفْسِّلُ ثَفْسِّلُ مُوالِلًا

فِيُولِكُنى : فَلَا أَفْسِمُ بِمَوَاقِع النَّجُوم، لَا جَهورمفسرين كنزديك تاكيد كيك زائده معنى من فَأَفْسِمُ كي بي لًا وَالسَّلَةِ اوربعض حضرات نے بیتو جید کی ہے کہ لَا مخاطب کے گمان کی فی کرنے کے لئے اور منفی محذوف ہے اوروہ کفار کا کلام ے اور بدلیس کما تقول کے عن ش ے، فرّاء فرّاء فراء کے ایر النّی کے لئے ہاور لَیْسَ الْاَمْرُ کمَا تَقُولُونَ کے معنی میں ہے بعض حضرات نے اس کوضعیف کہا ہے۔ (فتح القدیر شو کامی)

فَيُولِكُمْ ؛ مَوَاقِع، موقعٌ كَ جَمْع بِي جَس كِمعنى بين ستارون كغروب بون كي جكه ياونت بعض مضرات في مَواقع ہے مراد نبوم کی منزلیں اور بعض نے نزول قرآن مرادلیا ہے،اس لئے کہ قرآن کریم بھی بندر تنج آپ پر نازل ہوا ہے۔

فِيُولِكَى: وَإِنَّهُ لَقَسَمٌ لَّوْ تعلمونَ عظيمٌ، لَا أُفْسِمُ فَتُم جَاور لقرآنٌ كريمٌ جوابِ مَم جاور إنَّهُ لقسمٌ لو تسعسلسمو ن عسطيعًر، فتهم اور جواب فتهم كه درميان جمله معترضه ب، اور جمله معترضه بين بھي موصوف وصفت كه درميان جملم عترضداوروه لو تعلمون بـ

فِيُولِكُمُ : لَعَلِمْتُمْ عَظم هذا القسم اس كاضافه عصم علام في جواب لو كحذف كي ظرف اشاره كرديا.

قِوْلَى، وَهُوَ المصحَفُ بَصْ حضرات في كتاب مكنون ساوح محفوظ مرادلى ب،اس صورت ميس لا يسمسة ك معن بول ك لا يطلع عليه إلا الملائكة المُطَهِّرُونَ اس صورت من بيآيت بغيرطهارت قرآن كوجهون كعدم جواز کی ولیل نه ہوگی۔

فِيُولِكُ : حبر بمعنى النهى الناماف كامتصدايك والكاجواب يـ

مَيْنُولِكَ، قرآن من كما كياب لا يسمسه إلا المطهرون يفلاف واقعه الكاكر بهت علوك قرآن بغيرطهارت کے جھوتے ہیں ، اور قرآن خلاف واقعہ کی خبر نہیں دے سکتا۔

جَوَلُهُ عَنْ خَبر معنى نبى ہے۔

فَيْكُولْكُنَّ ؛ مُنَزَّلُ اس الساء الثارة كردياك تنفزيل مصدر بمعنى مُفَزَّلُ المم مفعول بــــ

قِوْلَ ﴾ اَفَبِهذَا الحديث مِن استفهام توجي بي يعن تمبار _ لئے بيمنا سبتبين بـ

فَوْلَنَى : مُدْهِنُوْنَ مِهِ إِدْهَانٌ سے بِادْهَان اور تدهِين كَ عَنْ بِن كَى چيز يرتبل لكاكر چكااور زم كرنا، مُداهنت في المدین اس ہے ہے دین میں مدامنت اختیار کرنا اور اس کے لازم معنی نفاق کے بھی ہیں، جس چیز پر تیل وغیرہ نگا کرزم اور چکنا کیا ج تا ہے اس کا باطن **طاہر کے خلاف ہوتا ہے اوپر سے نرم اور چ**کنی معلوم ہوتی ہے حالا نکداندر اس کے عکس ہوتا ہے نفاق میں بھی ابیا ہی ہوتا ہے، یہاں مرادمطلقاً کفر ہے اور قر آن کوسرسری معمولی مجھتا اور حیثیت نددیتا بھی إ**دھان کامصداق ہے۔**

قِوْلَنَى : مِنَ المعطر ال شي الثاره ب كدرزق سيم اوسبب رزق ب اور أى شكرة سي الثاره كرويا كرعبارت حذف

مضاف کے ساتھ ہے، تقدیر عبارت ہے، تکھُوُون شکو المعطَر لیعنی ضدا کی نعمتوں کی ناشکری کرناتم نے اپنا مشغلہ اوراپی غذا بنالیا ہے، حتی کہ خدا داد بارش کو بعض ستاروں کے طلوع وغروب کی طرف منسوب کرتے ہو۔

فِيَوْلِكَ : بِسُفْيَا اللّهِ يهمدرانِ قاعل كى طرف مضاف باصل من سَفَى اللّهُ بـ

قِعُولَكَ، إِذَا ظوفٌ لِنَوْجِعُونَ ، إِذَا بَلَغَتِ الحُلْقوم، تُوْجِعُونَ كَاظُرفُ مَقدم بَ تَوْجِعُونَ بِدوشطيم تعلق بي اوروه إِنْ كُنتم غيرَ مَدِينِينَ اور ان كنتم صَادِقينَ بين مُتعلَق بوئِ كامطلب بيب كدوه دونوں كى جزاء بين۔

فَالِكُاكَ : كَام مِن قلب مِعنى يه بين هَلَا ترجِعُونَها إِنَّ نَفَيتُمُ الْبَعْثَ صَادِقين في نفيه.

فَيُولِكُنَّ ؛ فَلَهُ رَوْحٌ اس مِن اشاره بكروحٌ مبتداء باور فَلَهُ خرمقدم بـ

فَيُولِكُنَّ ؛ أَى لَهُ السَّلَامة مِنَ العَذَابِ اس مِن اثاره بكرسلام بمعنى سلامت ب-

عِوْلَنَى ؛ مِنْ جهةِ انَّهُ مِنْهُمْ اس مِن اشاره ہے کہ مِن اصحب اليمين من تعليليه ہای مِن اجل انَّهُ مِنْهُمْ. عِوْلَكَى ؛ فَنُوْلِ مِبْدَاء ہے اس كی خبرلد محذوف ہے اى لهٔ نُوُلُ.

فَيُولِكُما : تَقَدُّمُ لِعِن سبِّح نزِّه اورافظ اسم زائده بـ

تَفَيْدُوتَشِي عَ

سربقہ آیات میں عقلی اور مشاہراتی دلائل سے دوبارہ زندہ ہونے کا ثبوت تن تعالیٰ کی قدرت کا ملہ اور اس دنیا کی تخلیق کے ذریعہ دیا گیا تھا، آ گے حق تعالیٰ کی طرف ہے تم کے ساتھ نقلی دلیل پیش کی گئی ہے۔

فَلَاّ أُفْسِمُ بَمَوَاقِعِ النَّهِ وَمِ الرَّلاَ كُوْرَ آن كَ بارے مِيں مزعوم اورظن باطل كى نفى كے لئے لياجائے جيسا كہ بعض مفسرين كاليمي خيال ہے تو مطلب بيہوگا كه بي قرآن شاعرى يا كہانت نہيں ہے جيسا كه تمہارا خيال ہے بكه ستاروں كے كرنے بو ان كے مطلع ومغرب كی مشم كھا كر كہتا ہوں كه بي قرآن برا اباعظمت ہے۔

ستاروں اور تاروں کے مواقع سے مرادان کے مقامات ،ان کے مدار ،اور منزلیں ہیں اور قر آن کے بلندپایہ کتاب ہونے پر ان کی قتم کھانے کا مطلب یہ ہے کہ عالم بالا میں اَجرام فلکی کا نظام جبیما محکم اور مضبوط ہے ویسا ہی مضبوط اور محکم بید کلام بھی ہے جس خدانے وہ نظام بنایا ہے اس خدانے بیدکلام نازل فرمایا ہے۔

بعض حضرات نے بیتر جمہ کیا ہے، میں تشم کھا تاہوں آیتوں کے پیغیروں کے دلوں پر اترنے کی ،نجوم سے مراد آیات لی ہیں اور مواقع النجوم سے پیغیبروں کے قلوب (موضح القرآن)اور بعض حضرات نے قیامت کے دن ستاروں کا گرنااور جھڑنامرادلیا ہے۔

﴿ (مَرْمُ يُسَاسِّرٍ ﴾ •

فی کتاب مَّکُنُون کے معنی ہیں چھی ہوئی کتاب،مراداس سے اور محفوظ ہے۔

دوسراا خال اس جملہ کی ترکیب نحوی میں بیہے کہ اس کوقر آن کی صفت بنایا جائے جواوپر اِنَّے کَفُر انْ سحریٹر میں مذکور ہے، اس صورت میں لَا یَسمَشُهٔ کی شمیر قرآن کی طرف راجع ہوگی اوراس سے مرادوہ صحیفہ ہوگا جس میں قرآن لکھ ہوا ہو،اورلفظ مَسسّ سے ہاتھ سے چھوٹے کے حقیقی معنی مفہوم ہول گے۔

قرآن بے طہارت جھونے کے مسئلہ میں فقہاء کے مسالک:

🛈 مسلك حنفي:

مسلک حنفی کی تشریح امام علاؤالدین کا شانی نے بدائع والصنائع میں یوں کی ہے، جس طرح بے وضونماز پڑھنا جائز نہیں اسی طرح قرآن کریم کوبھی ہاتھ لگانا جائز نہیں ، البتہ اگر غلاف کے اندر ہوتو ہاتھ لگایا جاسکتا ہے ، غلاف سے بعض فقہاء کے نزدیک جبداور بعض کے نزدیک وہ جزدان مراد ہے جس میں قرآن لیسٹ کررکھا جاتا ہے ، رہا قرآن کو بے وضو حفظ پڑھنا تو یہ درست ہے ، فقاوی عالمگیری میں اس تھم سے بچول کوششیٰ قرار دیا گیا ہے ، تعلیم کے سے بچول کوقرآن مجید حفظ پڑھنا تو یہ درست ہے ، فقاوی عالمگیری میں اس تھم سے بچول کوششیٰ قرار دیا گیا ہے ، تعلیم سے بچول کوقرآن مجید سے وضو ہاتھ میں دیا جاسکتا ہے۔

🕜 مسلك شافعي:

ا مام نووی رئیمنگارندهٔ نقعالی نے المنهاج میں مسلک شافعی کو بول بیان فرمایا ہے نماز اور طواف کی طرح مصحف کو ہاتھ لگان اور اس کے کسی ورق کو ہے وضو چھونا ممنوع ہے ، حتی کہ قر آن کریم جزوان یا لفافے وغیرہ میں ہوتب بھی جائز نہیں ابت قرآن کسی کے سامان میں رکھا ہوا ہو یا سکہ پرکوئی آیت لکھی ہوتو اس کو ہاتھ لگانا جائز ہے ، بچہا گر بے وضو ہوتو وہ بھی قرآن کو ہاتھ لگا سکتا ہے۔ (ملعضا)

🕝 مالكى مسلك:

جمہور فقہاء کے ساتھ وہ اس امر بیں تنفق ہیں کہ قر آن کو ہاتھ لگانے کے لئے وضوشرط ہے لیکن قر آن کی تعلیم کے لئے وہ است ذاور شائر دوونوں کے لئے ہاتھ لگانا جائز قرار دیتے ہیں ، ابن قد امدنے مغنی میں امام مالک کا بیقول نقل کیا ہے کہ جنابت کی حالت میں قرآن پڑھنا ممنوع ہے مگر عورت حالت جیض میں قرآن پڑھ کتی ہے ، کیونکہ ایک عرصہ تک اگر ہم اس کوقرآن کی تلاوت ہے روکیس کے تواس کے بھول جانے کا امکان ہے۔

(الفقہ علی المداعب الادمة)

🕜 مسلک حنبلی:

ندہب ضبل کے مسائل جوابن قد امد نے نقل کے بیں وہ یہ بیں، حالت جنا بت ویش ونفاس بیں قرآن یا اس کی پوری آیت

کا پڑھنا ہو بُڑنہیں ہے، البتہ بہم انخد اور الحمد لغد وغیرہ کہ یکتی ہے، رہا بلا وضوقر آن کو ہا تھ لگا نا تو یک حالت میں درست نہیں۔

لَا اَسْمَشُهُ اِلَّا الْمُطَهَّرُ وَ فَ اَکْر چہ جملہ خبر ہیہ ہم گرمعتی ہیں نہی کے جہ یقسیر حضرت عطاء طاوس سالم اور حضرت محمد

ہو تر رہ خالجاتی تھا اللہ علی ہونا صروری ہے، قرطبی نے ای تغییر کواظہر کہا ہے، تفسیر مظہری میں اس کی ترجے پر دور دیا ہے۔

نجاست سے بھی ہاتھ کا پاک بونا ضروری ہے، قرطبی نے ای تغییر کواظہر کہا ہے، تفسیر مظہری میں اس کی ترجے پر دور دیا ہے۔

اورات کو دیکھنا چاہا، ان کی بہن نے کہن آیت پڑھ کر اوراق حضرت عمر وضحاً نشاقی ایک ہاتھ میں دینے سے انکار کر دیا کہ اس کو اوراق کو دیکھنا چاہا، ان کی بہن چوسکنا، فاردق اعظم نے مجبور بوکر اول خسل کیا، پھریا واداق ان کے ہاتھ میں دینے گئے ،اس واقعہ ہو کے باتھ میں دینے گئے ،اس واقعہ ہے بھی اس تھی کی ترجے کا بات ہوتی ہیں دینے گئے ،اس واقعہ ہمی بعض اس تعظیر کی ترجے کا بات ہوتی ہے ان روایا ہے کہ بھی بعض حضرات نے اس آخری تفسیر کی ترجے کے لئے چیش کیا ہے۔

سر چونکہ اس مسئلہ میں حضرت ابن عباس تفتحالگ تفالگ اور حضرت انس دیفوکا فنڈ کھٹا گئے وغیرہ کا اختلاف ہے اس کئے بہت سے حضرات نے بے وضوقر آن کو ہاتھ لگانے کی مما نعت کے مسئلہ میں آیت مذکورہ سے استدلال جھوڑ کرصرف روایات حدیث کو چیش کیا ہے وہ احادیث بہ ہیں:

امام مالک نے مؤط میں رسول اللہ بلاتھ تا کا وہ مکتوب گرامی نقل کیا ہے جو خط آپ نے حضرت عمر و بن حزم کو لکھا تھا جس میں ایک جملہ یہ بھی ہے لایک مستق المقر آئ اِلّا المطّاهو (ابّن کثیر) یعنی قرآن کو وہ تحض نہ چھوئے جوطا ہر نہ ہواور روح المعانی میں بیردایت مسند عبدالرزاق ،ابن ائی واؤداور ابن المنذ رہے بھی نقل کی ہے، اور طبر انی میں ابن مردویہ نے حضرت عبداللہ بن عمرے روایت کیا ہے کہ رسول اللہ بھی تھی نے فرمایا لایک مستق القرآن اِلّا طَاهِرٌ.

مذکورہ روایت کی بناء پر جمہور امت اور ائمہ اربعہ کا اس پر اتفاق ہے کہ قر آن کریم کو ہاتھ لگانے کے لئے طہارت

- ﴿ (مَرْزُم پِرَكُ فَيْرُ ﴾ •

ضروری ہے، اور ظاہری نجاست ہے ہاتھ کا پاک صاف ہونا بھی ضروری ہے، حضرت علی ، ابن مسعود ، سعد بن ابی وقاص ،
سعید بن زید رضی النظامی اور زہری بختی ، حکم ، حماد ، امام مالک ، شافعی ، ابوحنیفه کری النظامی اور زہری بختی ، حکم ، حماد ، امام مالک ، شافعی ، ابوحنیفه کری النظامی سب کا یہی مسلک ہے او برجو اختلاف نقل کیا گیا ہے وہ صرف اس بات میں ہے کہ بیم سئلہ جوا حادیث فدکورہ سے ٹابت ہے اور جمہور امت کے زویک مسم معیے ، کیا یہ بات قرآن کی آیت فدکورہ سے بھی ٹابت ہے یا نہیں ، بعض حضرات نے ان احادیث اور آیت فدکورہ کا مفہوم ایک قرار ویا ہے ، دوسر سے حضرات نے آیت کو استعمال میں پیش کرنے سے بوجہ اختلاف صحابہ احتیاط کی ہے ، اس سے کہ اختلاف مسئلہ میں نہیں بلکہ اس کی دلیل میں ہے۔

مَنْ مَنْ كُنْ مُنْ قَرْ آن كا غد ف جس كو چولى كيتے ہيں جوقر آن كے ساتھ كلى ہوتى ہے وہ بھى قر آن كے تم ميں ہے اس كے ساتھ بھى قر آن كو بے وضو ہاتھ لگانا درست نہيں، البتہ جز وان جس ميں قر آن كور كھتے ہيں اگر قر آن اس ميں ركھا ہوتو اس كو بلا وضوچيونا جائز ہے، مگر امام مالك دَعِمَ كُلاللهُ تَعَالَىٰ اور امام شافعى رَئِمَ كُلاللهُ تَعَالَىٰ كے نز ديك يہ بھى جائز ہيں ہے۔ (مضدى) منتقل كي اللہ تا اللہ تعليمہ البتہ عليمہ و موال يا جو دريا منتقل ميں الله اللہ تعليمہ و اللہ اللہ تا جو كي اللہ اللہ تعليمہ و موال يا جو دريا

و اَنْدُ مَر حب نفذ تنظرون لین روح نظتے ہوئے تم بیسی اور لا چاری کے ساتھ ویکھتے ہوئیکن اس کوٹال سکنے کی یا اے کوئی فی ندہ پہنچ نے کی قدرت نہیں رکھتے ،اس وقت تمہاری برنسبت علم کے اعتبار سے ہم اس سے زیادہ قریب ہوتے ہیں گرتم کونظر نہیں آئے۔

فَلَوْ لَاإِنْ كَنْتَمِ غَيْرً مَدِيْنِيْنَ، مَدِينِينَ، دان يدِينُ ہے ہے،اس كايك من بيں اتحت ہونا، دوسرے من بيں بدلہ دين ليخي اگرتم اس بات بيں ہے ہوكہ كوئى تمہارا آقا اور مالك نہيں جس عے تم ذير فرمان اور ماتحت ہويا كوئى جزاسزا كا دن نہيں آئے گاتو اس قبض كى بوئى روح كوا ئى تراب لوٹا كرد كھا وَاورا گرتم ايسانہيں كر سكتے تو اس كا صاف مطلب يہ ہے كہ تمہارا گرن بطل ہے، يقينا تمہارا ايك آقا ہے اور يقينا ايك دن آئے گاجس بيں وو آقا ہرا يك كواس كھل كى جزاد ہے گا۔ من بطل ہے، يقينا تمہارا ايك آقا ہے اور يقينا ايك دن آئے گاجس بيں وو آقا ہرا يك كواس كھل كى جزاد ہے گا۔ فَامَنَ إِنْ كَانَ هِنَ المقربينَ سورت كثر وع بيں اعمال كے لاظ ہے انسانوں كى جو تين قسميں بيان كى تي تقين ان كا يجر ذكر كيا جارا ہے بيان كى پہل تم ہے جنہيں مقربين كے علاوہ سابقين بھى كہا جاتا ہے، كيونك وو يكى كے ہركام بيں ان كا يجر ذكر كيا جارا ہے بيان كى بيل قسم ہے جنہيں مقربين كے علاوہ سابقين بھى كہا جاتا ہے، كيونك وو يكى وجہ ہے وہ مقربين آگے آگے ہوتے ہيں، اور اپنى اس خو فى كى وجہ ہے وہ مقربين بارگا والمي قراريا ہے ہيں، اور قبول ايمان بيں بھى دوسروں ہے سبقت كرتے ہيں، اور اپنى اس خو فى كى وجہ ہے وہ مقربين بارگا والمي قراريا ہے ہيں۔

و اَمّا اِن کان من اَصدخبِ المیمین بیدومری شم ہے، بیعام مونین ہیں بیجی جہنم سے نیج جا کیں گے،اور جنت میں جا کیں گے تا ہم درجات میں سابقین ہے کم ہوں گے ہموت کے وقت ان کو بھی سلامتی کی خوشخبری دیتے ہیں۔ میں نہیں دیکھی کی سے میں میں میں میں میں میں سے میں دونیں ہے ہیں دونیں میں میں میں میں میں ہے ہیں۔

وَاعَا إِنْ شَكَانَ مِنَ المحكَّدِينَ الضالينَ بيتيسرى تتم ہے جن كوآغاز سورت ميں اصحاب المصنعة كها كيا تھ، باكيل باتھ والے يا حاملين نحوست بيائي كفرى مزاعذاب جہنم كى صورت ميں بھنگتيں گے۔

ڔٙڠؙٳڔ۫ڹڵڒڹۼٙؿڋؙڔۺڿۘٷۜۼؿ۫ڔڮٳؽٵؽٵۜڟؘٳؘڹۼۯڰۊٵ ڛڣڂؽؚڡؙڬۊۿؽڴٷۼۺۯؽٳؽڗڰٳڵڿۯڰۅؖٵ

سُوْرَةُ الْحَدِيْدِ مَكِيَّةُ أو مَدَنِيَّةٌ تِسْعٌ وَعِشْرُونَ آيةً. سورة حديد كل مع يامدنى مع، ٢٩ آيتي بين م

بِسَــِ عِرَالِلُهِ الرَّحِـ مِن الرَّحِبِ مِن الرَّحِبِ مِن الرَّحِبِ مِن الرَّحِبِ مِن الرَّحِب اللهِ مَا فِي السَّمَا فِي السَّمَا فِي السَّمَا فِي اللهِ مَا فَي اللهِ مُ سرِيدةٌ وجئ بما، دُونَ مَن تغلِيبًا لِلاكْثرِ **وَهُوَالْعَزِيزُ** في مُلكِهِ الْعَكِيثِ في صُنْعِه **لَهُ مُلْكُ التَّمَاوِتِ وَالْأَرْضُ يُخَيّ** ساً لانشاءِ وَيُمِيِّتُ مِعدَه وَهُوَكَالَ كُلِّ شَيْءِ قَدِيْرُ ۖ هُوَالْأَوْلُ قَسُلَ كُلِ شَيْءٍ بِلا بِدَايَةٍ وَالْخِرُ بَعَدَ كُلِّ شَــىء بِلَانِهَــايةِ وَالطَّاهِرُ بِــالاَدِلَّةِ عــليــه وَالْبَاطِنُ عَـن إدراكِ السحَـوَاسَ وَهُوَ يَكُلِ شَّيْءَ عَلِيْكُ هُوَالَّذِي خَلَقَ السَّمَاوِتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامِر مِن أَيَّام الدُّنيا أَوَّلُها الاَحَدُ واخِرُها الجُمعة تُثَمَّ اسْتَوَى عَلَى الْعَرْشِ الكُرُسِيّ إِسْتِوَاءٌ يَدِينُ بِهِ يَعْلَمُمَايَلِجُ يَدِخُلُ فِي الْأَضِ كَالْمَطَرِ وَالْاسُواتِ وَمَايَخُحُ مِنْهَا كَالنّبَتِ والمُعَادِن وَمَايَنْزِلُ مِنَ التَّمَاءَ كَارَّحْمَةِ والعَذَابِ وَمَايَعْنَحُ يَصْعَدُ فِيهَا كَالاعْمالِ الصَّالحَةِ والسَّيئةِ وَهُوَمَعْكُمْ بعِيمِه <u>اَيْنَ مَاكُنْتُهُ وَاللَّهُ بِمَاتَعْمَلُونَ بَصِيْرُ لَهُمُلْكُ التَّمْوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالْى اللهِ تُرْجَعُ الْأُمُوْنَ السَّوجُ و الله جميعُ ها</u> يُوْلِجُ الَّيْلَ يُدخِلُه فِي النَّهَارِ فيرِيدُ ويَنْقُصُ اللَّيلُ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الْيَلْ فيرِيدُ وَيَنْقُصُ النَّهَارُ وَهُوَعَلِيْمُ بِذَاتِ الصُّدُولِ بِما فيها مِنَ الاسرارِ والمُعْتَقَدَاتِ أَمِنُوا دوسُوا على الايمان بِاللّٰهِ وَرَسُولِهِ وَالنَّفِقُوا في سبيل اللهِ **مِمَّالَحَلَلُمْوُّسَتَخْطُفِيْنَ فِيْهُ** مِنَ سَّالِ مَنُ تَقَدَّمَكُم ويَسْتَخْلِفُكُم فيه مَنُ نَعْدَكُم نَزَلَ فِي غَزُوةِ الْعُسَرَةِ وهي غَزُوَةُ تبوكِ فَالْذِيْنَ الْمَنُوْامِنَكُمْ وَانْفَقُوْا إِشَارَةٌ الى عُثمان رضِي اللهُ تعالى عبه لَهُمُّ أَجُرُّكِيْرُ اللهُ وَمَالَكُمُّ لِاثْوُمِنُونَ حِطابٌ لِلكُفَّارِ اى لا مَانِعَ لكم مِن الايمان بِاللَّهَ وَالْرَّسُولُ يَذَّعُولُمُ لِتُومِنُوا بِرَبَّكُمْ وَقَدْ آخَذَ مضمِّ الهمزَةِ وكسرِ الخاءِ وبفَتُحِهما ونصبِ ما بَعْده ويَت**َاقَكُمْ** عليه اي أَخَذَهُ اللَّهُ فِي غَالَم الذَّرّ، حينَ أَشُهَ دَهُمُ على أَنفُسهم ألَسُتُ بِرَبِّكُمُ؟ قَالُوا بلي الْأَكْنُتُمُ أُفُّوبِينٌ ۞ اي سريدين الإيمان به فبَادِرُوا اليه هُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ عَلَى عَبْدِمَ أَيْتِ بَيِّنْتٍ آياتِ القُراد لِيُخْرِجَكُمُ مِنَ الظُّلُماتِ السُحُفر إلى النُّورْ الايساد

وَانَّ اللهَ بِكُمْ فَى إحراحكُم مِنَ الكُفر الى الايمان لَرَّوُفَ تَحِيثُمْ وَمَالكُمْ بعد ايمانكُمْ الله الموالكُم مِن ان فِي لام لا تُنْفِقُوا فَي سِيْلِ اللهِ وَيَلْهِ مِيْرَاتُ السَّمُوتِ وَ الْرَضِ بهما فيه ما فيه الموالكُم مِن ان فِي لام لا تُنْفِقُوا فِي سِيْلِ اللهِ وَيَلْهِ مِيْرَاتُ السَّمُوتِ وَ الْرَضِ بهما فيهما فيصلُ اليه الموالكُم مِن المُوالكُم مِن المُوالكُم مَن المُقَلِّ اللهُ تَعْمَلُوا اللهُ اللهُ وَقَاتَلُ وَ اللهُ اللهُ وَقَاتَلُ وَاللّهُ مِن اللهُ مِن قَرْا، فِي الرّفِع مُبتداً وَعَدَ اللهُ ا

سیم بھی جو بیر استہ کے نام سے جو بڑا مہر بان نہایت رقم والا ہے، زیبن اور آسان میں جو پچھ ہے وہ میں جو پچھ ہے وہ الله كى يوكى بيان كرتى بياين مرييات مرتى بيان مرتى بركالم السيام زائده بمن كريائ ما كااستعمال اكثر كو نلبدد ہے کے اعتبار ہے ہے وہ اپنے ملک میں زبر دست اور اپنی صنعت میں حکمت والا ہے زمین اور آسان کی بادشاہت اسی کی ے بیدا کر کے زندگی دیتا ہے اس کے بعد موت دیتا ہے وہ ہر چیز پر قادر ہے، وہی اول ہے بغیرا بنداء کے ہر چیز سے پہلے اور و ہی آخر ہے لیعنی بلانہایت کے ہر چیز کے بعدر ہے گاہ ہی ظاہر ہے اس پر دائل موجود ہونے کی وجہ سے اوروہ حواس کےادراک ے مخفی ہے اور ہرشیٰ کوج سے وال ہے وہی ہے جس نے آسان اور زمین کودنیا کے ایام کے مطابق چھ دنوں میں پیدا فرہ یا ان میں پہلا دن میشنبہ(اتوار) کا ہےاورآ خری دن جمعہ کا، پھروہ عرش کری پرمستوی ہوگیاایسااستوا، جواس کی شان کے لائق ہے وہ اس چیز کوبھی جانتا ہے جوز مین میں داخل ہوتی ہے جیب کہ بارش کا پانی اور مردے، اور اس کوبھی جوز مین سے نگلتی ہے جیسا کہ نبا تات اورمعد نیات اورجوآ سان سے نازل ہو، جیسا کہ رحمت اور عذاب اور جواس کی طرف چڑھے، جبیبا کہ اعمال صالحہ اور ا ممال سیئہ اورتم جہاں کہیں ہوہ وظم کے امتیار ہے تمہارے ساتھ ہے اورتم جو کچھ کرر ہے ہوالقداس کود کیھیر ہاہے، آسان اور زمین کی بادشاہت ای کی ہے اور اس کی طرف تمام امور لوٹائے جائیں گے یعنی تمام موجودات، وہ رات کو دن میں داخل کرتا ہے تو دن بڑھ جاتا ہے اور رات گھٹ جاتی ہے اور دن کورات میں داخل کر دیتا ہے تو رات بڑھ جاتی ہے اور دن گھٹ جاتا ہے اور وہ سینوں کے رازوں کا پوراعالم ہے لیعنی سینوں میں جوراز اور معتقدات ہیں ان کو بخو بی جانتا ہے القداور اس کے رسول پرایمان لے آؤیعنی ایمان پر دائم رہو، اللہ کے راستہ میں اس مال میں سے خرج کر کروجس میں تم کونا ئب بنایا ہے ان لوگوں کے مال میں جو تم ہے پہلے گذر چکے اور اس میں تمہار ہے بعد والوں کوتمہارا خلیفہ بنائے گا، بیآیت غزوہ عسرہ کے بارے میں نازل ہوئی اور وہ غزوۂ تبوک ہے بس تم میں ہے جولوگ ایمان الائے اورخرج کیا ان کے لئے بڑا اجر ہے (اس میں) حضرت عثمان غنی رَضَى اللهُ كَاللَّهُ كَا طرف اشاره ہے، تم الله برائمان كيول نہيں لائے؟ يه كفار كوخطاب ہے ليمنى الله برائمان لانے ہے كوئى چيزتم کو ما نع نہیں ہے حالا نکہ خو درسول تمہیں اپنے رب پر ایمان لانے کی دعوت دے رہاہے، اور خو د خدانے تم ہے اس پر عہد لیا تھ، ا گرتم کوایمان لا ناہو تینی اگراس پرایمان لانے کاارادہ ہوتو اس کی طرف سبقت کرو (أُجِسِذً) ہمز ہَ کےضمہ اور خاء کے کسرہ کے ﴿ وَمُؤْمُ بِهَالِشَالَ ﴾ -

ساتھ اور دونوں کے فتح کے ساتھ اور اس کے مابعد فتح کے ساتھ ہے، لینی اللہ نے انسان سے عالم ذر (تمل) میں جبدان کو خود ان

کا و پر اکشٹ ہو بیٹ کھٹم کے ذریعہ شاہد بنایا تھا تو سب نے جواب دیا تھا بلنی وہی ہے جواب نید ہے پر قرآن کی واضح آ بیش نازل کرتا ہے۔ تا کہ تم کو کفر کی ظلمت سے ایمان کے نور کی طرف نکا نے یقینا اللہ تعالی تم کو کفر سے ایمان کی طرف نکال کر تم پر برانری کرنے والا رحم کرنے والا ہے تم بہیں کیا ہوگیا ہے کہ ایمان کے بعد اللہ کے راستہ میں خرج نہیں کرتے؟ آسانوں اور زمین کی میراث مع تمام ان چیزوں کے جوان میں بین اللہ کے لئے ہے تمہار ہے اموال بغیر اجر انفاق کے اس کے پر سی بین اللہ کے لئے ہے تمہار ہے اموال بغیر اجر انفاق کے اس کی پر سی بین جواب کیا ہوگیا جا کیا جا کیا جا کیا گا ، تم میں سے جوابوگ فتح کہ سے پہلے (فی سیمیل اللہ) خرج کر چکے اور (فی سیمیل اللہ) کو چکے مرابر تبین سیمی لوگ ہیں بڑے در ہے والے ان لوگوں سے جنہوں نے (فی سیمیل اللہ) خرج کر چکے اور (فی سیمیل اللہ) کو چواب سے جرایک سے اللہ کا جنت کا وعدہ ہے اور ایک قراءت میں (شک لُی رفع کے میں تھو مبتداء ہے جو پھھٹم کرتے ہواللہ اس سے باخبر ہے سووہ اس کی تم کو جزاء دے گا۔

124

جَِّفِيقَ الْأَرْبِ لِيَسْمَيُ الْحَقْفِيلِيرِي الْحَالِمِينَ الْحَلَمَ الْحَلَمَ الْحَلَمُ الْحَلْمُ الْحَلِمُ الْحَلْمُ الْحَلِمُ الْحَلْمُ الْمُعْلِمُ الْحَلْمُ الْحَلْمُ الْمُعْلِمُ الْحَلْمُ الْمُعْلِمُ الْحَلْمُ الْمُعْلِمُ الْحَلْمُ الْمُعْلِمُ الْمُلْمُ الْمُعْلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعْلِمُ الْم

فَيْخُواْكَ، سَبَّحَ لِلْلَهُ مِن سَبَّحَ كومتعدى بالام لايا گيا ہے حالانكہ سبح متعدى بنفسہ استعال ہوتا ہے۔ جَجُولُ ثَيْنَ: لام زائدہ تاكيد كے لئے ہے جيے نصبحتُ لهُ وشكوْتُ له ياتغليل كے لئے ہے ، مفسر علام نے سَبَّحَ لِلْهِ كى تفسر نَزَّهَهُ سے كركے اور فاللّام مزيدة كا اضافه كركے اى اعتراض كا جواب دیا ہے۔

بیکی آئی؛ بالانشاء اس لفظ سے اشارہ کردیا کہ یُخینی سے مرادزندہ چھوڑ نائبیں ہے جیسا کہ تمرود بعض کول کردیتا تھا اور استان اس لفظ سے اشارہ کردیا تھا اور دوآ دمیوں بعض کوزندہ چھوڑ دیتا تھا ہنمرود نے حضرت ابراہیم علی کھی تھا تھا تھا ہنمرود نے حضرت ابراہیم علی کھی تھا تھا تھا ہے کہ اور دوسرے کوچھوڑ ویا اور کہا انسا اُحیسی و اُمیٹ بعض کول نہ کرنا زندہ کرنائبیں ہے بلکہ یُنھیٹی سے مرادانشاء حیات ہے۔

فَيْ وَلَيْ ؛ الكرسي من سبتها كه العوش كالفيركرى بكرف كبائ ابى عالت پرد بنه وية-

فَيْوَلِّي ؛ استواء يليق به يسلف كي تفسير ب، خلف ال كى تاويل قبراورغلبت كرتي بين -

قِوْلَى ؛ والسَّيِسنة بهتر ہوتا كه ال كوحذف كردية ال لئے كه آسان كى طرف كلمات طيبات صعود كرتے ہيں نه كه كل سه ت

> فِيَوْلِنَى : دُوْمُوْا على الايمان ال عبارت كاضافه كامقصدا يكسوال كاجواب ب-يَسِيُواكَ: خطاب مومنين كوب لبنداان سه آمنو اكبنا تخصيل حاصل ب-

> جَوْلَتْ عَن آمِنوا عراد دوام وقرار على الايمان عجوكم مونين سي بعى مطلوب م-

فِيَّوْلِكُمَ ؛ والرسول يدعو كمريه لا تُؤمنُونَ كَاسْمِير ـــــال بـــ

قِوَلَى ؛ وَقَدْاَحذَ مِيثَاقَكُمْ يه يَدْعو كم ك كُمْمِر عال ٢-

فِيْ لَكُن : اى مُويدِينَ الإيمَانَ بيعبارت بهي ايك والمقدر كاجواب ٢-

سَيَخُواكَ: اول فَرَ ما يام السكم الاتو منُون بالله جس كامتقت كرا طب مؤمن بيس باس كے بعدار شادفر مايا إن تُحننتُ م مومنينَ جس كامقتعى ہے كرا طب مؤمن ہے۔

فَيُولِنَى ؛ فَبَادِرُوا اللهِ السيس الماره بكرجواب شرط محذوف باوروه فَبَادِرُوا النع ب-

بھِوُلِ آئی، مَنْ اَنْفَقَ من قبل مید لایستوی کافاعل ہے اور اِسْتَوای ووچیزوں سے کم میں نہیں ہوتا معلوم ہوااس کامقابل اس کے واضح ہوئے کی وجہ سے حدف کر دیا گیا ہے اوروہ مَنْ اَنْفَقَ مِن بَعْدِ الفتح ہے۔

قِيُولِ آئَى: كُلًا، وَعَدَاللَّهُ كَامِفُعُولَ مِقْدَم ہے، اور ابن عامر نے کُلُّ مبتداء ہونے کی وجہ سے رفع کے ساتھ پڑھا ہے اور ہا بعد اس کی خبر ہے۔

ؾٙڣٚؠؙڒ<u>ۅۘڷۺٛ</u>ڽ

ربط:

سورة واقعدكو فَسَبِّح بالسَّمِرَبِّكَ الْعَظِيْم بِرِثَمَّ فرمايا بِ،اس مِن تَبِيَّ كَاتَكُم ويا كيا بِاورسورة حديدكو سَبَّحَ لِلْهِ مَافِي السَّمُوتِ وَالْارْضِ حِيْرُونَ الْعَظِيْم بِرُثَمَّ فرمايا كيمورة حديدكا ابتداء عليت بسورة واقعدكا نتتا مي مضمون كي ، كويا كفره يا كسَّمُوتِ والْارْضِ والْارْضِ . كيا فَسَبِّح بِالسَّمِرَ بِكَ العظيم لِإِنَّة سَبَّحَ لَةً مَا فِي السَّمُواتِ والْارْضِ .

سورهٔ حدید کے فضائل:

سُور مُسَبِّحات پانچ سورتول كوحديث بين مسحات سي تبيركيا گيا ہے جن كے شروع بين سے يا سے آيان مين پہل

سورت سورۂ حدید ہے، دوسری حشر، تیسری صف، چوتھی جمعہ، پانچویں تغابین، ان پانچوں سورتوں میں سے تین لیعنی حدید، حشر، صف میں، سببّے بصیغهٔ ماضی آیا ہے، اور آخری دوسورتوں لینی جمعہ اور تغابین میں یُسَبِّے بصیغهٔ مضارع آیا ہے، اس میں اشارہ اس میں اشارہ اس مستقبل وحال، جاری رہن چاہے، اور اس طرف ہوسکتا ہے کہ القد تعالیٰ کی تبیج اور اس کا ذکر ہرز مانے اور ہر دفت خواہ ماضی ہو یا مستقبل وحال، جاری رہن چاہیے، اور کا بُنات کا ذرہ ذرہ ہمیشہ اپنے خالق کی بیان کرتار ہتا ہے آج بھی کرر باہے اور ہمیشہ کرتارہے گا۔

ھُنوَ الْعَذِیزُ العحکیمُ حصر کے ساتھ فر ہیا، وہی عزیز اور تھیم ہے، عزیز کے معنی بیں توی طاقتور، اور تھیم کے معنی بیں حکمت کے ساتھ کام کرنے والا لیمنی وہ جو کچھ بھی کرتا ہے حکمت اور دانائی کے ساتھ کرتا ہے، اس کی تذبیر، اس کی فر ہانروائی، اس کے احکام، اس کی مدبیر، اس کی فر ہانروائی، اس کے احکام، اس کی مدایات کا شائبہ تک نہیں ہے، اور وہ ایس عزیز وطاقتور ہے کہ وہ کا کنات میں جس طرت چا ہتا ہے تصرف کرتا ہے۔

لطيف نكته:

اس مقام پرایک لطیف نکته یا در کھنے کے لائق ہے، جے اچھی طرت مجھ لینا دیا ہے ،قرآن مجید میں کم ہی مقامات ایسے میں جہاں اللہ تع کی کی صفت عزیز کے ساتھ قبوی، مقتدِرٌ، جبّارٌ، ذو النقام جیے اغاظ استعمال ہوئے ہیں، جن سے تحض اس کے اقتد ارمطلق کا اظہار ہوتا ہے، اور وہ بھی صرف ان مواقع پر استعال ہوا ہے، جہاں سسلۂ کلام اس بات کا متقاضی تھا کہ ف کمول اور نافر مانول کوالند کی پکڑ ہے ڈرایا جائے ،اس طرح کے چندمقامات کوجھوڑ کر باقی جہاں بھی امتدنتی کی کے لئے عزیز کا لفظ استنعال مواج، وبال اس كساته حكيم، عليم، غفور، وهاب اور حميد مي يه كوئي افظ ضروراستعال مواج، اس کی وجہ بیے ہے کدا گر کوئی ہستی الیمی ہو جسے ہے پناہ طاقت حاصل ہو مگراس کے ساتھ وہ نا دان ہو، جابل ہو، بےرخم ہو،معاف اور درگذر کرنا جانتی ہی نہ ہو، بخیل ہواور بدسیرت اور تندخو ہو، ضدی اور ہث دھرم ہوتو اس کے اقتدار کا نتیجہ ظلم کے سوالیجھ نہیں ہوسکتا دنیامیں جہاں کہیں بھی ظلم ہور ہاہے اس کا بنیا دی سبب یہی ہے کہ جس شخص یا جماعت کو دوسروں پر ہالا دستی حاصل ہے، وہ ا پی طافت کو یا تو نا دائی اور جہالت کے ساتھ استعمال کرر ہاہے ، یا وہ بےرحم اور سنگ دل ہے ، طافت کے ساتھ ان بُری صفات کا اجتماع جہاں کہیں بھی ہوو ہاں کسی خیر کی تو قع نہیں کی جا سکتی ،ای لئے اللہ تدائی کے لئے اس کی صفت عزیز کے ساتھ اس کے علیم وعلیم ،اوررحیم وغفوراورحمیدوو ہاب ہونے کاؤ کرلا زما کیا گیا ہے اور بیتمام صفات کمال اس کی ذات میں شامل ہیں۔ هُوَ الْأُوَّلُ وَالآخِرُ وَالمَظَاهِرُ وَالْبَاطِنُ وَبِي اول بِيعِنْ اس مِنْ يَهِلَي بَهِينَةُ اس لئے كه تمام موجودات اى كى بيدا کر دہ ہیں اور آ خِسر ُ کے معنی بعض حضرات نے یہ کئے ہیں تمام موجودات کے فنا ہونے کے بعد بھی وہ موجودر ہیگا جیس کہ مکٹ شنیءِ هالِكَ إلّا وجههٔ میں اس کی تصریح موجود ہے، مطلب یہ ہے کہ جب پھھ نہ تھا تو وہ تھا اور جب پچھ نہر ہے گا تو وہ رہے گا، اور سب ظاہروں سے بڑھ کر ظاہر ہے کیونکہ دنیا میں جو پچھ بھی ظہور ہے اس کی صفات اس کے افعال اور اس کے نور کا ظہور ہے،اور وہ ہر تحفی ہے بڑھ کر تحفی ہے، کیونکہ حواس ہے اس کی ذات اور اس کی سنہ کومحسوس کرتا تو در کنارعقل وفکر و خیال تک - ﴿ (فَرَمُ بِبَاشَرِ) ٢٠

اس کی کنداور حقیقت کونبیں پاسکتے ،اوروہ اپنی ذات اور کنہ کے اعتبار ہے ایسا باطن اور مخفی ہے کہ اس کی حقیقت تک کسی عقل وخیال کی رسانگ نبیس ہوسکتی۔

اے برتر از قیاس و گمان و خیال و وہم واز برچه ديده ايم و شنيد يم و خوانده ايم اس کی بہترین تفسیر نبی ﷺ کی وعاء کے وہ الفاظ ہیں، جو آپ نے اپنی صاحبزادی حضرت فاطمہ رَضِحَالِمَا الْعُصَا کو سکھ ئے تھے اور بڑھنے کی تاکید فرمائی تھی۔

اللُّهُ مَّربَّ السمنواتِ السَّبْعِ ورَبَّ الْعَرْشِ العظيم، رَبَّنَا ورَبَّ كُلُّ شيءٍ مُنْزِلَ التَّورَاتِ والانجيل وَالْفُرِقَانَ، فَالِقَ الْمَحَبِّ والنُّونِي، أَغُوْذُبِكَ مِن شَرِّكُلِّ شَيْءٍ أَنْتَ آخِذٌ بِنَاصِينَهِ، اللَّهُمَّ انت الاوَّلُ فلَيسَ قَبْلُكَ شَيُّءٌ وَٱنْتَ الْآخِرِ فَلَيْسِ بَعْدَكَ شَيْءٌ وَٱنْتَ الظَّاهِرِ فَلَيْسَ فوقَكَ شَيْءٌ وَٱنْتَ الباطِن فَلَيسَ دونَكَ شيَّ اقضِ عنَّا الله ينَ وَأَغْنِنَا مِنَ الْفَقْرِ. (بحارى، مسلم كتاب الذكر والدعاء)

اس دعاء میں جوادا کیکی قرض کے لئے مسنون ہے اوراول وآخر وظاہر و باطن کی بہترین تغییر ہے۔

يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخُورُجُ مِنْها (الآية) لِيني زهن هن إرش كجوقطرات اورغله جات وميوه جات إن اورجو بیج داخل ہوئے ہیں ان کی کمیت و کیفیت کووہ جانتا ہے وَ هُوَ مَعَكُمْ اَیّنَما مُحْنَتُمْ لِعِنی اللّهُ ام کے اعتبار ہے تہارے ساتھ ہےتم جہاں کہیں بھی ہواس معیت کی حقیقت اور کیفیت کسی مخلوق کے احاطہ علم میں نہیں آسکتی تکراس کا وجودیقینی ہے اس کے بغیر انسان کا نہ وجود قائم رہ سکتا ہے اور نہ کوئی کام اس سے ہوسکتا ہے اس کی مشیبت اور قدرت ہی سے سب کچھ ہوتا ہے جو ہر حال اور برجگدمیں برانسان کے ساتھ رہتی ہے۔

امِنُوْا بِاللَّهِ ورَسُولِهِ و أَنْفِقُوا مِمَّا جَعَلَكُمْ مُسْتَخْلَفِيْنَ فِيلهِ بِيآيت عُرُوهَ تَوك ك بار عين نازل مولى ب، روح المعاني مين بيو اللايَّةُ عبلني مَنا رُويَ عن النصبحاك نَوْلَتْ في تَبُوك فَلَا تَغْفُلْ. اس يمعلوم بوتا بك خطاب کاروئے سخن مسلمانوں کی طرف ہےاس لئے کہ جن حالات میں انفاق فی سبیل اللّٰہ کی بڑے زور داراور نئے انداز ہے ا بیل کی جارہی ہےاس ہے معلوم ہوتا ہے کہ ریا بیل اور ترغیب غیر معمولی حالات کے چیش نظر کی جارہی ہے جس میں حضرت ابو بمرصدیق نے اپناکل مال اور حضرت عمر رَفِحَانَهٔ مُعَالِينَ ﴿ نَهِ نَصف مال اس ہنگا می فوجی اور قومی ضرورت کے لئے خدمت میں پیش کیا اور حضرت عثمان عنی نفعکانندُ تَعَالِمَنَّهُ نے اس غز وہ میں ایک ہزار دینار اور نبین سواونٹ مع ساز وسامان کے پیش کئے ، اور ا یک دوسری روایت کی رو ہے اس ہنگامی اور فوری ضرورت کے لئے حضرت عثمان مَفِحَلَاثَتُهُ مَفَالِثَةٌ نِے ایک ہزاراونٹ اورستر گھوزے مع ان کے ساز وسامان کے پیش کئے ،ای موقع پر آپ بیٹیٹٹٹیا نے حضرت عثمان عمٰی دَشِحَانْلَمَائٹٹالٹ کے حق میں فر مایا صا على عشمان رَفِيَ اللهُ تَعَالَيُ بعد هذه اوراكيروايت من به آپ فرمايا: غَفَرَ اللَّهُ لَكَ يا عُشمانُ مَا أَسُر رَتَ ومَا اَخْلَنْتَ وَمَا هُوَ كَائِنٌ اللَّي يَوْمِ القِيامَةِ مَا يُبَالِي مَا عَمِلَ بَغْدَهَا. (صاوى)

- ﴿ (مَرْمُ بِهَ الشَّرْزِ) ◄

ان قرائن سے معلوم ہوتا ہے کہ بیرخطاب غیرمسلموں سے نہیں ہے بلکہ بعد کی بوری تقریریبی ظاہر کررہی ہے کہ مخاطب وہ مسمان ہیں جوکلمہ ٔ اسلام کا اقرار کر کےمسلمانوں کے گروہ میں بظاہر شامل ہو چکے تھے گرایمان کے تقاضے پورا کرنے ہے پہلو تبی کررہے تھے، ظاہر ہے کہ غیرمسلموں کوائیمان کی دعوت دینے کے ساتھ فوراً ہی ان سے پیہیں کہا جاسکتا ہے کہ جہ دفی سبیل الله کے مصارف میں دل کھول کرا پنا حصہ اوا کرواور نہ ریے کہا جا سکتا ہے کہتم میں سے جوفتح مکہ سے پہلے جہاداورا نفاق فی سبیل اللہ کرے گااس کا درجہان لوگوں ہے بلندتر ہوگا جو بعد میں بیے خدمت انجام دیں گے غیرمسلم کو دعوت ایمان دینے کی صورت میں تو يهياس كس منايمان كابتدائى تقاضي شي كتاجاتي بين ندكه انتهائى ،اگرچه آمِنُوا بالله ورسُولِه النع كعموم ك کاظ ہے اس بات کی گنجائش ہے کہ مخاطبین میں غیر مسلمین بھی شامل ہوں گر سیاق دسباق ادر فحوائے کلام کے لحاظ ہے یہ ں آمنوا باللهِ ورسوله كَيْخِكامطلب بيب كه أے وہ لوگوجوا يمان كادعوىٰ كركے مسلمانوں كے كروہ ميں شامل ہو گئے ہو، اللہ اوراس کے رسول کو سیے دل سے مانواور وہ طریز عمل اختیار کروجوا خلاص کے ساتھ ایمان لانے والوں کوا ختیار کرنا جا ہے۔

سیات وسباق اور آیت کے شانِ نزول اور موقع نزول سے معلوم ہوتا ہے کہ اس مقام پرخرچ کرنے سے مرادعام بھلائی کے کا موں میں خرج کرنائبیں ہے بلکہ آبیت نمبر•ا کے الفاظ صاف بتارہے ہیں کہ یہاں اس جدوجہد کے مصارف میں حصہ لیٹا مراو ہے جواس وفتت کفر کے مقابلہ میں اسلام کوسر بلند کرنے کے لئے رسول اللہ ﷺ کی قیاوت میں جاری تھی، خاص طور پراس وفت دوضرورتیں تھیں جن کے لئے فراہمی مالیات کی طرف نوری توجہ کرنے کی سخت ضرورت تھی، ایک جنگی ضروریات اور دوسرے ان مظلوم مسلمانوں کی باز آباد کاری جو کفار کے ظلم وستم ہے تنگ آ کرعرب کے ہرحصہ سے بھرت کر کے مدینہ آئے تنھے اور آرہے تھے ،مخلص اہل ایمان ان مصارف کو بورا کرنے کے لئے اپنے اوپر اتنا بوجھ برداشت کررہے تھے جوان کی طاقت ووسعت سے بہت زیادہ تھا بھین مسلمانوں کے گروہ میں بکٹرت اجھے خاصے کھاتے پینے لوگ ایسے موجود تھے جو كفرواسلام كی اس کشکش کو محض تماشائی بن کرد مکیورہ سے متھا دراس بات کا انہیں کوئی احساس نہ تھا کہ جس چیزیروہ ایمان لانے کا دعویٰ کررہے ہیں اس کے پچھےحقو ت بھی ان کی جان و مال پر عائد ہوتے ہیں ، یہی دوسر ہے تھم کے لوگ اس آیت کے مخاطب ہیں ، ان سے کہا ج رہاہے کہ سیچمومن بنواوراللہ کی راہ میں مال خرج کرو۔

راه خدامین خرج کرنے کی ترغیب وفضیلت:

وَ انْ عَقُوا مِمَّا جَعَلَكُمْ مُسْتَخْلَفِيْنَ فِيلِهِ روح المعانى مِن اس آيت كرومطلب بيان كئے گئے مِن ايك بيك جومال تمہارے یاس ہے بیددراصل تمہارا ذاتی مال نہیں بلکہ اللہ کا بخشا ہوا مال ہے اصل ما لک اللہ تعالیٰ ہے، اللہ نے اپنے خدیفہ کی حیثیت ہے بہتمہار *ےتصرف میں دیا ہے،الہٰدااصل ما* لک کی خدمت میں اےصرف کرنے ہے درینے نہ کرو، نا ئب کا پیکا م^{نہیں} کہ ، لک کے مال کو ما لک ہی ہے کام میں خرچ کرنے ہے جی چرائے۔

وور المطلب وَقِيلَ جُمعَلَكُمْ خُلَفَاءَ مَنْ كَانَ قَبلَكُمْ مِمَّنْ تَرِثُونَهُ وَسَيَنْتَقِلُ الى غَيرِ كُمْ مِمَّنْ يَرِثُكُمْ

اک مضمون کوحضور بین فی ایک حدیث میں بیان فر مایا ہے، ترفری میں حضرت عائشہ دفیحالی ندائی النظامی اسے روایت ہے کہ
ایک روز ہم نے ایک بحری ذرح کی جس کا اکثر حصہ تقلیم کردیا، ایک وست گھر کے لئے رکھ لیا، آنخضرت بین فی ایک شانے بھے سے
وریافت فر مایا کہ اس بحری میں سے تقلیم کے بعد کیا باقی رہا؟ حضرت عائشہ نے عرض کیا مسا بھی الا تحقیق ایک شانے کے
سوا پھی بیں بی، آپ فیل فی ایک شانے فر مایا ہو ہے کہ کہ اللہ تحقیق کے لگھا اللہ تعقیق کے لگھا اللہ شانے کے سوالوری بحری باتی روگئی بعنی خداکی راہ میں جو
کھودیدیا وراصل وہی باقی روگیا۔

بخارى اورسلم كى أيكروايت ين بكر حضور يَنْ فَيَنَ اللهِ عَلَمْ مَا لِي مَقُولُ ابنُ آدم مَالِي مَالِي، وَهَلْ لَكَ مِنْ مَالِك اِلَّا مَا اكَلْتَ فَافْنَيْتَ، أَوْ لَبِسْتَ فَأَبْلَيْتَ أَوْ تَصَدَّقْتَ فَأَمْضَيْتَ وَمَا سِوَا ذَلِكَ فَذَاهِبٌ وَتَارِثُكُ لِلنَّاسِ.

آ دمی کہن ہے کہ میرا مال میرا مال ، حالا نکہ تیرے مال میں تیرا حصداس کے سواکیا ہے جونونے کھا کرختم کردیا یا پہن کر پُرانا کردیا یا صدقہ کرکے آگے بھیج دیا ، اور اس کے ملاوہ جو بچھ ہے وہ تیرے ہاتھ سے جانے والا ہے ، اور اسے دوسرول کے لئے چھوڑ جانے والا ہے۔ (مسلم)

گذشتہ آیات میں اللہ کی راہ میں خرج کرنے کی تاکید بیان فرمانے کے بعداگلی آیت میں بیہ بتلایا گیا ہے کہ اللہ کی راہ میں جوخرج کیا جائے تو اب تو ہرایک کو ہر حال میں ملے گا،کیکن تو اب کے درجات میں ایمان واخلاص اور مسابقت کے انتہ رہے فرق ہوگا ،اس کے لئے فرمایا۔

لَا يَسْتُونَى مِنْ كُمْ مَنْ أَنْفَقَ مِنْ فَبْلِ الْفَتْحِ وَقَاتَلَ لِين اجر عَ مَشْقَ تَودونوں بی بین کین ایک گروہ کارتبہ دوسرے گروہ کورٹیش کروہ سے لاز فابلند ترہے کیونکہ اس نے زیادہ تخت حالات میں اللہ تعالی کی خاطر وہ خطرات مول لئے جودوسرے گروہ کو در پیش نہ سے ، اس نے ایسی حالت میں مال خرج کیا کہ جب دور دور کہیں بیام کان نظر نہ آتا تھا کہ بھی فتو حات ہے اس خرج کی تلائی بوجائے گی اور اس نے ایسی خانرک دور میں کفار سے جنگ مول لی جب ہروقت بیا تدیشہ تھا کہ دشمن غالب آ کراسلام کانام لینے والوں کو پیس ڈالیس گے۔

مجاہد وقیارہ وغیرہ کہتے ہیں کہ یہاں فتح ہے مراد فتح مکہ ہےاور عامر وشعبی وغیرہ کہتے ہیں کھلے حدید بیمراد ہے پہلے قول کو اکثر مفسرین نے اختیار کیا ہے۔ اُولِلِكَ اَعْظَمُّرُ دَرَجَةً مِنَ الْكَذِينَ اَنْفَقُواْ مِنْ بَعْدُ وَقَاتَلُوا اَس ہے واضح طور پرمعلوم ہوتا ہے کہ صحابہ کرام نصحات کا مطلب یہ بین کہ بعد میں مسلمان ہوئے والے صحابہ کرام نصحات کے درمی ن شرف وفضل میں تفاوت تو ضرور ہے لیکن تفاوت و رجو ت کا مطلب یہ بین کہ بعد میں مسلمان ہوئے والے صحابہ کرام نصحات کا مطلب یہ بین محاویہ نفحانی اُنگا اوران کے والد حضرت ابوسفیان نفحانی نماز اور دیگر بعض ایسے ہی جلیل القدر صحابہ نفحانی کھا تھا گئے کہ اس میں ہرزہ سرائی یا نہیں طلقاء کہدکر ان کی تفقیق وابات کرتے ہیں، نی بلی تفقیق نے تمام صحابہ کرام نفونی کے اور ہیں فیرے اور وابات کرتے ہیں، نی بلی تفقیق نے تمام صحابہ کرام نفونی کے اور ہیں میں فیر اور اس میں فیرے اس میں میں میں اس ذات کی جس کے قبضہ میں میں جا کہ اور کی برابر اللہ کی رابر اللہ کی رابر اللہ کی رابر اللہ کی رابر اللہ کی برابر بھی نہیں ہو سکتا۔

میں خرج کرے وہ میرے صی بی کے خرج کئے ہوئے ایک مد بلکہ نصف مد کے برابر بھی نہیں ہو سکتا۔

(صحيح بخارى، صحيح مسلم كتاب قضائل الصحابة)

مَنَ ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ بِانْفَاقِ مِالَه في سبيل النَّهِ **قَرْضًا حَسَنًا** بِيار يُسبِقهُ لَلهُ تعالى فَيُضْعِفَهُ لَهُ وهي قراء ةٍ فيُضَعَفَهُ بالتّشديدِ مِن عشَرِ الى اكثر مِن سبع مائةٍ كما ذُكرَ فِي النّرة **وَلَهُ** مَع المُصَاعِنة ٱجْزُّكُرِنْكُ مُقتَرِدٌ به رضَى وإقْبَالَ، أذكر يَوْمَرَتَرَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنِينَ يَسْلَى نُوْرُهُمْ بَيْنَ أَيْدِيْهِمْ اسمَهِم وَ يكون بِأَيْمَا نِهِمْ ويُــــقــــــالُ لَهِــم كُشِّرِيكُمُ الْيَوْمَ جَنْتُ اى دُخــولهـــا تَجْرِى مِنْ تَخْتِهَا الْأَنْهُ رُخْلِدِيْنَ فِيْهَا ذَٰلِكَ هُوَا لَفَوْنُرُ الْعَظِيْمُ ۗ يَوْمَ نَقُولُ الْمُنْفِقُونَ وَالْمُنْفِقْتُ لِلَّذِينَ أَمَنُوا انْظُرُونَا الْمصرُونِ وَي قراء ةِ بعَثُ الهمرَ ة وكسر العَاء اي اسهمونا نَقْتَهِسْ نَاخُدُ النَّبْسُ والإضاء ة مِنْ تُوْرِكُمْ قِيْلَ لهم اسْتِهراءً لهم ارْجِعُوْاوَرَاءً كُمْ فَالْتَمِسُوانُوْرًا فَرَجَعُوا فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ المُؤْمِنِينَ السُّورِ قِيلَ هُو سُورُ الاعرابِ لَهُ بَالْ بَاطِئُهُ فِيْهِ الرَّحْمَةُ مِن حِية السمُ وَسِينَ وَظَاهِرُهُ مِن جِهِةِ السمُ سَامِقِينِ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ مُنَادُونَهُمْ اَلْمُزَكُنُ مُعَكُمْ عسى السَاعة قَالُوْابَلِي وَلَاِنَكُنْ مُؤَتِّنْتُمُ أَنْفُسَكُمْ بِالبِّفَاقِ وَتَرَبَّضُتُمْ سَالِمُؤسِينِ الدَوائر وَارْتَبْتُمْ شككتم في دين الاسلام وَغَرَّتُكُمُ الْأَمَالِيُّ الاطماعُ حَتَّى جَاءً أَمْرُاللهِ الموتُ وَغَرَّكُمْ بِاللهِ الْغَرُورُ الشيطانُ فَالْيَوْمَ لَالْيُؤْخَذُ بالب، والناء مِنْكُمْ فِذْيَةٌ وَلَامِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْاْ مَا وَلَكُمُّ التَّارُّ هِي مَوْلَلَكُمْ أولى حَد وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ هي اَلَمْرَيَانِ بِحَن لِلَّذِيْنَ امَنُوَا نـزلت مي شار الصّحَابَةِ لما اكثرُوا المزاحَ أَنْ تَخَشَّعَ قُلُوبُهُمْ لِلْإِكْرِاللّهِ وَمَانَزَلَ بالنّخفيفِ والتشديد مِنَ الْحِقّ القُران وَلَاتِكُونُوا سعطُوف على تَحشَم كَالَّذِينَ أُوتُوا الْكِتْبَصِنْ قَبْلُ هُمُ اليهُودُ وَالنَّصَاري فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْلَمَدُ الرَّمَنُ بينهم وبينَ انبيائهم قُ**قَسَتُ قُلُوبُهُمُ اللهِ تِب**َ لذِكرِ اللهِ **وَلَبْيُرُمِنُهُمْ فِيقُونَ ® إَعْلَمُوٓا** خِيطَابُ لِلمُؤسنينَ المَذُكُورِينَ أَنَّ اللَّهَ يُحِي الْكُرْضَ بَعْدَمَوْتِهَا "بالنِّباتِ فكذلك يَفْعَلُ بِقُلُوبِكُم بردها الى الخُشُوع قَدْبَيَّنَالَكُمُّالِلالِيَّ الدَالَة على قُدُرَيْنَا لهذا وغيره لَعَلَكُمْرَتَعْقِلُوْنَ ﴿ إِنَّ الْمُصَّدِّقِينَ سنَ التَّصَدُق وأدغمتِ التَّهُ

في النساد اى الدين تصدقُوا وَالْمُصَّدِقْتِ اللّانِي تَصَدَقُن وفي قراء قِ سَخُفِيفِ الصّادِ فيهما من التَصديق الايمان وَاقَرْضُوا اللّهُ قُرْضًا حَسَّا راحة الى الدُّور والابات بالتَعديب وعطفُ الفعل على الاسم في صدة الله لا عنه فيها حسّ محل النفعي ودكر الغرص موصعه معد التصدُّق تقبيدُ له يُضْعَفُ وفي قراء قِ يُصعَف سالنَسديد اى قرصه له لَهُمُ وَلَهُ وَلَهُمُ الْحَرُقُ وَلَا اللّهُ وَاللّهُ وَاللللّهُ وَاللّهُ وَاللللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَالللللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ واللّهُ وَاللّهُ وَالللللّهُ وَاللّهُ وَالللّهُ وَالللللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ و

ت بھی جو ہے۔ پر جی بی اللہ کے راستہ میں خرج اپنامال اللہ کو قرض حسن کے طور بردیے لینی اللہ کے راستہ میں خرج کرے؟ اس طریقتہ پر کہ (خالص) املنہ کے لئے خرچ کر نے بھراللہ تع لی اس قرض کو اس شخص کے لئے بڑھا تا چلا جائے ، اور ایب قراءت میں فیٹے بیے فیٹہ تشدید کے ساتھ ہے اس گئے ہے سات سو کئے تک زیادہ جیسا کہ سورۂ بقرہ میں مذکور ہوا، اور اس کے لئے (اجر) بڑھانے کے ساتھ پہند ہیر گی کا اجر بھی ہے (یعنی)اس اجر کے ساتھ رضامندی اور قبولیت ہے، اس ون کا ذکر سیجئے کے جس دن آپ مومنین اور مومنات کو دیکھیں گے ، کدان کا جران کے سامنے ہے اور نوران کے داہنی جانب دوڑتا ہوگا اور ان ہے کہا جائے گا آج تمہارے سئے ایسی جنت کی بعنی اس میں داخل ہونے کی خوشخبری ہے کہ جس ک نیجے نہریں جاری ہوں گی جن میں وہ ہمیشہ رہیں کے بیری کامیا بی ہے،جس دن منافق مرداورمنافق عورتیں ایمان والوں ہے کہیں کے (ذرا) ہماری طرف (بھی) دیکھاو اورا یک قراءت میں ہمز ہ کے فتہ اور ظاء کے سر ہ کے ساتھ ہے (لیعنی ذرا ہ، رابھی) انتظار کراو کہ ہم بھی تمہار نے وریت کی دوشنی حاصل کرلیں ان سے استہزاء کے طور پر کہا جائے گاتم اپنے پیجھے لوٹ جا ؤاور روشنی تلاش کرو تو و ولوٹ جائمیں کے ، تو ان کے اور موشین کے درمیان ایک دیوار حائل کردی جائے گی کہا سیاہے کہ و داعراف کی دیوار ہوگی اس کا ایک درواز ہ ہوگا اس کے اندور نی حصہ میں مونین کی جانب رحمت ہوگی اوراس کے باہر منافقین کی جانب عذا ب ہوگا بیلوگ چلا کران ہے کہیں گئے کیا طاعت میں ہم تمہار ہے ساتھ نہیں تھے؟ وہ کہیں کے ہاں تھے تو سہی کیکن تم نے خود کو نفاق کے فتنہ میں پھنسار کھا تھا اور موشین پرحواد ثات کے منتظرر ہا کرتے تھے اور وین اسلام میں شبہ کرتے ہتھے اور تہہیں تمہاری (فضول) تمناؤل نے دھوکے میں رکھا یہاں تک کہ القد کا تھم لیعنی موت آ جپنجی ، اور تہہیں انتد کے بارے میں ایک دھوکہ باز شیطان نے دھو کے ہی میں رکھا ،الغرض! آئے تم سے نہ فعد ریقبول کیا جائے گایا ، اورتاء کے ساتھ اور نہ کا فروں ہے ہتم سب کا ٹھ کا نہ دوز ت ہے اور وہی تمہارے لائق ہے (لیعنی) تمہارے لیے اولی ہے اوروہ بُراٹھ کا نہ ہے کیا ایمان والوں کے بئے اب تک وہ وفت نبیس آیا؟ بیآیت صحابہ کرام کی شان میں اس وفت نازل ہونی کہ جب وہ مٰداق ، دل تکی زیادہ کرنے گئے کہ ان کے قلوب ذکر البی ہے اور اس حق لیعنی قر آن سے نرم ہوجا نمیں جو . ≤ [زَمَزَم پِبَلشَرِز] ≥ -

نازل ہو چکا ہے (مَنزَّلَ) شخفیف اورتشدید کے ساتھ ہے ان لوگوں کے ما تند کہ جن کوان سے پہلے کتاب دی کنی اور وہ یہود ونصاریٰ ہیں بھر جب ان پرایک طویل زمانہ گذر گیا یعنی ان کے اور ان کے انبیاء کے درمیان (زمانہ دراز گذر گیا) تو ان کے قلوب بخت ہو گئے اللہ کے ذکر کے لئے زم نہ رہے اور ان میں بہت ہے فاسق ہیں یقین ما تو مومنین مذکورین کو خطاب ہے کہ اللہ بی زمین کو گھاس اگا کر اس کی موت کے بعداس کوزندہ کر دیتا ہے چنانچے تمہارے قلوب کے ساتھ بھی ایسا ہی کرے گا ان کوخشوع کی جانب لوتا کر ہم نے تمہارے لئے اپنی آیتیں بیان کرویں جو ہرطریقہ ہے ہماری قدرت پر دلالت كرتى مين تاكيم مجھو، بلاشبەصدقە دينے والے مردبية تسصيد في سے ماخوذ ہے تا ء كوصا دميں ادغ م كردي كيا ہے ليمن وہ لوگ جنہوں نے صدقہ کیا اور وہ عورتیں جنہوں نے صدقہ کیا اور ایک قراءت میں صاد کی تخفیف کے ساتھ ہے، تضدیق سے ماخوذ ہے،اورمرادایمان ہے اور جوخلوص کے ساتھ قرض حسن دے رہے ہیں بیا تغلیبا ذکوراورا ناٹ دونول کی طرف راجع ہے،اورتعل کاعطف اس اسم پرہے جوالف لام کےصلہ میں ہے اس سے (جائز ہے) کہ اسم یبال تعل کے معنی میں واقع ہو،تقدق کے ذکر کے بعد قرض کواس کی صفت کے ساتھ ذکر کرنا تقید قل کو مقید کرنے کے لئے ہے ان کا قرض ان کے لئے بڑھادیا جائے گااورا یک قراءت میں یُسصَعَفُ تشدید کے ساتھ ہے، اوران کے لئے پہندید داجر ہے اور جووگ الله يراوراس كے رسول يرايمان ركھتے ہيں ايسے ہى لوگ اينے رب كے نزد يك صديق ليعنى تقىديق ميں مباخه كرنے والے ہیں اور تکذیب کرنے والی امم سابقہ پر گواہ ہیں ان کے لئے ان کا اجراوران کا نور ہےاور جن لوگوں نے کفر کیا اور ہماری وحدا نبیت پر دلالت کرنے والی آیتوں کو جیٹلا یاان کے لئے جہنم کی اس ہے۔

عَجِفِيق الْرِيْدِ لِيَسْهُمُ الْحِنْفِيلِيةِ الْفِيلِيةِ الْفِلْسِلِيةِ الْفِلْسِيدِةِ الْفِلْسِيدِةِ الْفِلْ

قِحُولِی، مَنْ ذَا الَّذِی یُفُوطُ اللَّهُ قرصًا حسَنًا اس میں ترکیب کے اعتبارے چندصور تیں میں ① مَنْ استفہامیہ مبتداء ذَا اس کی خبر، اور الَّذِی اس کی خبر الله اس سے بدل یاصفت ۞ مَنْ ذَا مبتداء اور الَّذِی اس کی خبر ۞ ذَا مبتداء موصوف اور الَّذِی یُستفہام ہوئے کی وجہ سے مقدم موصوف اور الَّذِی یُستفہام ہوئے کی وجہ سے مقدم کردیا۔

فِيُولِكَى : يُسطاعِفَهُ فاء كے بعد أن مقدرہ ك ذريعہ جواب استفہام ہونے كى وجہ سے منصوب ، استيناف يا يسقو حسُ برعطف جونے كى وجہ سے مرفوع -

فِيَوْلِينَ : رِضًا واِقبالٌ معطوف عليه معطوف على كرمُقْتَوِدٌ كانعل

— ∈ [رمَزَم پِبَاشَرِد] ≥ -

قَوْلَ ﴾؛ اُذكر مفسرعلام نے اُذكر محذوف مان كراشارہ كرديا كه يَوْمَ فعل محذوف كاظرف ہے، لينى اس دن كوياد كرو المخ اور يہ بھی ہوسكتا ہے كه أجب و كريت كاظرف ہولينى اس دن ميں اجر كريم ہے اور تيسري صورت يہ بھی جائز ہے كه يَسْعى كا ظرف ہولیعنی تو دیکھے گا کہ موشین ومومنات کا نوراس دن میں ان کے سامنے دوڑے گا۔

فَيْوُلْكُ : يَسْعَى نُورُهم جمله ماليه عِمَرياس صورت من عديسعى ويومَ من عالى نقر ارديا جائه

فِيْوَلْنَى: ويكونُ، يكون كومقدر مان كراس اخمال وقم كردياكه وبايمانيهم، يسعلي كم اتحت بواور معنى يهول كوران

كى دا بنى جانب ان ئەدور بوگا،اى كئے كه ايمانى كجيج جهات مراديس-

فِيُولِكُ : دُخولُهَا ال كومحذوف مان كراشاره كرويا كه جنّت حذف مضاف كما تهد بنشر كمر مبتداء كي خبر ب تقدير عبارت بيب بُسُر كمراليوم بدخول الجنة.

فِيُوْلِكُمُ : ذلك اي دخول الجنة.

فِجُولِكُ ، يَوْمَ يَقُولُ المنافِقُونَ بِي يومَ ترى سے بدل ہـ

يَجُولَكُ ؛ لَهُ بَابُ بَاطِنهُ فِيهِ الرَّحمَة، له بابٌ جمله بوكرنورٌ كاصفت اول إاوربَاطِنُهُ فيه الرحمة صفت ثانى بـ

فِيُولِنُّ ؛ الغَرُور بالفتح بمعنى شيئان كما قال المفسر وبالضمر شذوذًا مصدر بمعنى اغتراء بالباطل .

فِيْ فَلْكُ ؛ مَا وَاكُمُ النَّارُ ما واكم خبر مقدم النَّارُ مبتداء مؤخراس كاعكس بحى جائز بـ

الله الله على مولا كمر، مولا مصدر بهي بوسكتاب اى و لايتكمراى ذاتُ و لايتكمر يا بمعنى مكان بو اى مكان وِ لَا يَنْكُمُ يَا بَمُعَنَى اولَى بُوسَكَّا بِجِيناك هو مَولاهُ اى أولى هِي ناصِرُ كمروه آك ان كى ناصرومددگار جاوري استهزاءً ہے۔

فَيْخُولِنَى ؛ اَلْتَم يَأْنُ لِللَّذِينَ آمِنُوا جَهِور كِنزُ ويك يأن سكون بمزه اورنون كرم كراته انسى يسانى (رَمنى يرمى) كا مضارع واحد مذكر غائب ہے، پھر يا ، كوجو كەنتىن كلى بالتقاء ساكنين كى وجەسے حذف كرويا۔

فِيْخُولَكُمُّ؛ رَاجِعٌ الى الذكور والاناث اسعمارت كاضافه كامقصدا لبات كى طرف اشاره كرتاب كه واقرضُوا الله كاعطف دونول فعلون يعنى المصدقيين والمصدقات بريب صرف اول برمائ كي صورت مين صلا كتام موسة بغير عطف لا زم آئے گاجو کہ جا ترجیس ہے۔

سَكُواكَ: أَفْرَصُوا الله كاعطف المصدِقينَ برب، جوكهاسم ب، لبذا فعل كاعطف اسم برلازم آتا ب جوكه درست

جَيْنَ أَنْبُعْ: جس اسم برالف لام بمعنى الَّذِي واخل بوتو وه اسم بهى فعل كَ عَلَم مين بوجا تا بالبذاعطف ورست ب-

فِيُولِكَى: وذكر القرص بوصفه العرارت كاضافه كامتصدايك اعتراض كاجواب -اعتراض : المصَّدّقين تشديد كماته بمعنى صدقه وين واليه، بهراس كيعدفر ما ياو الله وأفَّو ضُوا اللَّه فَوْضًا

حسنًا اس كامطب بحى صدقة كرنا بإقالمصدّفين كزَكر في كابعدواقوضوا اللَّه قوضًا حسنًا كذَكركي كيا ----- = [زمَزَم پبَاشَهٰ ا

ضرورت رہتی ہے بیتو تکرارہے۔

جَجُولَ بِنِيَّ: جواب كا خلاصہ بیہ ہے كہ اس اضافه كا مقصد صدقه كوصفت حسن كے ساتھ متصف كرنا ہے يعنى صدقه اخلاص اور للّه يت كے ساتھ ديا جائے ، لہٰذا يہ تكرار بے فائدہ نہيں۔

فَخُولْكَ ؛ وَالَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ أُولئِكَ هُمُّ الصِّدِيقُونَ ، والَّذِينَ آمنوا مبتداء اولِئكَ مبتداء ثانى اورهُمْ مِن يه مِن جائز ہے كه مبتداء ثالث بواور السعد يقون اس كى خبر مبتداء خبر سے لى كرخبر مبتداء ثانى كى اور مبتداء ثانى اپن خبر سے لى كرخبر مبتداء ثانى كى اور مبتداء ثانى اپن خبر سے لى كرخبر مبتداء اول كى اور يہ مِن جائز ہے كہ هُم مبر فصل ہواور اولئكَ اور اس كى خبر مل كرمبتداء اول كى خبر ہو۔

تَفَسِّلُاوَتَشَيْحُ عَيَّ

مَن ذَا الَّذِی یُقْوِضُ اللَّهُ قَرُضًا حَسَنًا النع یہ وہ بجیب وغریب، پُرتا ہیر، دردا گیز الفاظ ہیں کہ جو کفر کے مقابلہ میں اسلام کی جانی اور مانی نفرت کی اپیل کے لئے استعال کئے گئے ہیں، خدا کی بیشان کر بی ہی تو ہے کہ آ دمی اگراس کے عطا کئے ہوئے مال کواسی کی راہ میں صرف کر ہے تو اسے وہ اپنے ذمہ قرض قرار دے بشر طیکہ وہ قرض حسن ہولیہ و جُدہِ اللہ خوص نبیت کے ساتھ ہو، اس قرض کے متعلق اللہ کے دووعدے ہیں ایک یہ کہ وہ اس کوئی گنا بڑھا کروا پس کر دے گا دوسرے یہ کہ وہ اس کوئی گنا بڑھا کروا پس کر دے گا دوسرے یہ کہ وہ اس پراپنی طرف سے بہترین اجر بھی عطا کرے گا۔

انفاق في سبيل الله كاعجيب واقعه:

----- ﴿ [وَمَزَمُ سَائِفَ إِنَّ] ﴾

حضرت عبداللہ بن مسعود کی روایت ہے کہ جب بیآیت نازل ہوئی اور آپ بیٹی تا گئی کی زبان مہارک سے موگوں نے اسے ساتو حضرت ابوالد حداح انصاری تفخیان المکنیا تھے۔ آپ نے اپنا ہا تھان کی طرف بڑھادیا، انہوں نے آپ کا ہاتھا ہے ہا آپ اسلامیا اللہ تعالیٰ ہم سے قرض چا بتا ہے؟ حضور نے فرہ یا ہالہ اسلامی اللہ علی طرف بڑھادیا، انہوں نے آپ کا ہاتھا ہے ہاتھ میں لے کرکہا، میں نے اپنا ہاتھ وکھا ہے ، آپ نے اپنا ہاتھان کی طرف بڑھادیا، انہوں نے آپ کا ہاتھا ہے ہاتھ میں لے کرکہا، میں نے اپنا ہائے قرض ویدیا، حضرت عبداللہ بن مسعود فرماتے ہیں کہ اس باغ میں کھور کے چھسو درخت تھے، اس میں ان کا گھر تھا وہیں ان کے بال بچے رہے تھے، رسول اللہ بھی تھی سے یہ بات کر کے وہ سید ھے گھر پہنچا اور بیوی کو پکار کر کہا دحداح کی ماں باہر نکل آؤمل نے یہ باغ اپنے رہ کوقرض دیدیا ہے، وہ بولیں تم نے فع کا سودا کیا، دحداح کے بپ اور اس وقت اپنا سامان اور اپنے بچے لے کر باغ سے نکل گئیں (ابن ابی حاتم) اس واقعہ سے اندازہ ہوتا ہے کہ تعلم اہل بیان کا طرز عمل اس وقت کیا تھا؟ اور اس سے یہ بات بھی ہم جھی اس آتی ہے کہ وہ کیسا قرض حسن ہے جے کئی گن بڑھا کر واپس دینے اور کیس دیا تا بھی ہم جھی اس آتی ہے کہ وہ کیسا قرض حسن ہے جے کئی گن بڑھا کر واپس دینے اور کیس کے میا ترکی کیا اللہ تعالی نے وعدہ فرمایا ہے۔ اور اور سے اجرکر یم عطا کر نیکا اللہ تعالی نے وعدہ فرمایا ہے۔

يَوْمَ تَرَى المُوْمِنِيْنَ وَالْمُومِنْتِ (الآية) "الدن" ہےمراد قیامت کادن ہے اور بینورعطا ہونے کامعامہ بل صراط پر چلنے سے پچھ پہلے پیش آئے گا،میدان حشر سے جس وقت بل صراط پر جائیں گے، کھلے کا فرتو پل صراط تک تینیخ

ے پہلے ہی جہنم میں وحکیل دیئے جائیں گے،البتہ کسی بھی نی کے سیچیا کیچامتوں کو بل صراط پر چینے سے پہلے روشنی عطا کی جائے گی، و باں روشن جو کچھ بھی ہوگی صالح عقیدے اور صالح عمل کی ہوگی، ایمان کی صدافت اور کر دار کی یا کیزگی ہی نور میں تبدیل ہو جائے گی،جس شخص کاعمل جتنا تا بندہ ہوگااس کی روشنی اتن ہی زیادہ تیز ہوگی اور جب وہمحشر سے جنت کی طرف چلیں گے تو ان کی روشنی ان کے سامنے اور داہنی جانب ہوگی ،اس کی بہترین تشریح قن دہ نفِحَانندُ مَعَالِثَةَ ^ہ کی ایک مرسل روایت میں ہے،جس میں وہ کہتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا کسی کا نورا تنا تیز ہوگا کہ جتنی مدینہ ہے عدن تک کی مها فنت ہے اور سی کا نور مدینہ ہے صنعاء کی مسافت کی مقدار ہوگا ،اور کسی کا اس سے کم یہاں تک کہ کوئی مومن ایس بھی ہوگا جس کا نوراس کے قدموں ہے آگے نہ بڑھے گا۔ (ابن حریر ملخضا)

حضرت ابوامامه بابلی کی روایت ہے معلوم ہوتا ہے کہ جب ظلمت شدیدہ کے وقت مومنین اورمومنات کونورتقسیم کیا جائے گا تو منافقین اس سے بالکل محروم رہیں گے۔

مرطرانی نے حضرت ابن عباس تفحلظا متعالی تفال التا تا ہے۔ ایک مرفوع روایت نقل کی ہے کہ رسول الله بین تفای نے فرمایا'' مل صراط کے پاس التدتع کی ہرمومن ومن فق کونورعطا کرے گاجب یہ بل صراط پر پہنچ جائیں گے تو منافقین کا نورسلب کرلیا جائے گا''۔ بہر حال خواہ ابتداء ہی ہے منافقین کونور نہ ملا ہو یامل کر بچھ گیا ہو،اس وفت وہ مومنین سے درخواست کریں گے کہ ذرا تضبر وہم بھی تنہب رے نور سے پچھے فائدہ اٹھالیں ، کیونکہ ہم دنیا میں بھی نماز ، زکلو ۃ ، حج ، جہادسب چیزوں میں تنہارے شریک ر با کرتے ہتے ، تو ان کوان درخواست کا جواب نامنظوری کی شکل میں دیا جائے گا ، اور ان سے کہا جائے گا کہ روشنی پیجھے تلاش کرو چیجھے تقسیم ہور ہی ہے، وہ لوگ روشنی حاصل کرنے کے لئے چیجھے کی طرف پلنیں گے تو ان کے اور جنتیوں کے درمیان ایک دیوارجائل کردی جائے گی۔

يَنِيَحُواكَ: حضرت ابن عباس تَعْطَلْنَا تَعَنَّا اور حضرت ابوامامه بابلی کی روایتوں میں بظاہر تعارض معلوم ہوتا ہے ان میں تطبیق کی کیاصورت ہے؟

کے زیانہ میں تھےان کوتو شروع ہی ہے کفار کی طرح کوئی نور نہ ملے گا ،گروہ منافقین جواس امت میں رسول اللہ بایق کا کا بعد ہوں گے جن کومنا فتن کا نام تونہیں دیا جاسکتا اس لئے کہ وحی کا سلسلہ منقطع ہو چکا ہے لہٰذا کسی کے لئے قطعی طور پر منافق کہنا جائز تنبیں ہے، بال البت اللہ تعالی دلوں کے حال ہے داقف ہے ہے معلوم ہے کہ کون منافق ہے اور کون مومن؟ لہذا سلب نور کا میہ معاملہ ایسے بی لوگوں کے ساتھ ہوگا جوائند تعالی کے علم میں منافق ہوں گے۔ (ملعقا)

الَهْ يَأْنَ لِلَّذِيْنَ آمَنُوْا أَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللَّهِ (الآية) القاظ الرجِدعام بي جن علوم بوتا ب كه خطاب ں مومنین کو ہے،مگرتمام مسممان مرادنہیں ہیں بلکہ مسلمانوں کا وہ خاص گروہ مراد ہے کہ جوز بانی ایمان کا اقرار کر کے رسول التد ملی این کے ماننے والوں میں شامل ہو گیا تھا اس کے باوجوداسلام کے دردے اس کا دل خالی تھا، آتکھوں سے دیکیر ہاتھ کہ کفر ک

———≤[زمَزَم بِبَاشَنِ]>

تمام طاقتیں اسلام کوصفحہ ہستی ہے مثانے پرتلی ہوئی ہیں، جاروں طرف سے انہوں نے اہل ایمان پرنرغہ کر رکھا ہے عرب کی سرزمین میں جگہ جگہ مسلمانوں کو تختهٔ مشق بنایا جار ہاہے، گوشے گوشے سے مظلوم مسلمان سخت بے سروسا مانی کی حالت میں پناہ لینے کے لئے مدینے کی طرف بھا گے چلے آ رہے ہیں پخلص مسلمانوں کی کمران مظلوموں کوسہارا دیتے دیتے ٹو ٹی جارہی ہے، اور دہمن کے مقابلہ میں بھی یہی مخلص مومن سر بکف ہیں مگر بیسب پچھاد مکھے کربھی ایمان کا دعویٰ کرنے والا بیگر ووٹس ہے مس نہیں ہور ہاتھ ،اس بران لوگوں کونٹرم دلائی جارہی ہے کہتم کیسےائیان والے ہو؟ اسلام کے لئے حالات نزاکت کی اس حد کو پہنچ جکے ہیں، کیا اب بھی وہ وفتت نہیں آیا کہ اللہ کا ذکر س کرتمہارے دل پیھلیں اور اس کے دین کے لئے تمہارے دلوں میں ایثار وقر ہانی اورسر فروشی کا جذبہ پیدا ہو؟ کیاا بمان لانے والے ایسے ہی ہوتے ہیں کہ اللہ کے دین پر بُرا وفت آئے اور وہ اس کی ذراسی نیس بھی اینے دل میں محسوں نہ کریں ،انٹد کے نام پر انبیں ایکارا جائے اور وہ اپنی جگہ ہے جلیں تک نہیں ،انٹداین نا زل کر وہ کتاب میں خود چندے کی انہیں کرےاوراہے اپنے ذمہ قرض قر اردے اور صاف صاف بیسنادے کہان صالات میں جواپنے وال کومیرے دین ہے عزیز تر رکھے گا وہ مومن نہیں بلکہ منافق ہوگا، اس پر بھی ان کے دل نہ خدا کے خوف سے کا نہیں اور نہاس کے آگے جھکیں، لیعنی ایمان وہی ہے کہ دل زم ہوتصیحت اور خدا کی یاد کا اثر جلد قبول کرے شروع میں اٹل کتاب بیہ باتیں اپنے پیغمبروں ہے پاتے تھے، مدت کے بعدان پرغفلت چھاگئ، دل سخت ہو گئے، وہ بات نہر ہی ،اکثر وں نے نہایت سرکتی اور نا فر مائی شروع کردی،ابمسیمانوں کی ہاری آئی ہے کہ وہ اپنے بیغیبر کی صحبت میں رہ کر نرم دلی،انفنیا د کامل اورخشوع لذکرالقد کی صفات سے متصف ہوں اور مقام بلندیر پہنچیں جہاں کوئی امت نہیں پیجی۔

اِعلمُوا اَنَّ اللَّهُ یُحیِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا قَر آن مجید شی متعدد مقامات پر نبوت کے زول کو بارش کی برکات سے تثبیہ دی گئی ہے کیونکہ انسانیت پراس کے وہی اثرات مرتب ہوتے ہیں جوز بین پر بارش کے ہوتے ہیں جس طرح مردہ پڑی ہوئی ز بین بارانِ رحمت کا ایک چھیٹٹا پڑتے ہی لہلمااٹھتی ہے، ای طرح جس ملک ہیں اللہ کی رحمت سے ایک نبی مبعوث ہوتا ہے اور دی کتا ہے کا نزول نثر دع ہوتا ہے وہاں مری ہوئی انسانیت یکا کیک جی اٹھتی ہے۔

میں ہے۔ پیرٹر میں بیرٹر میں کا خوب جان لود نیا کی زندگی صرف تھیل تما شازینت اور آپس میں فخر (غرور) اور مال واولا دکوایک دوسرے ے بڑھ پڑھ کر جتلا ناہے کینی ان میں مشغول ہوجا ناہے، کیکن طاعت اور وہ چیزیں جواس میں معاون ہوں (مثلاً) تو بہ، امور آخرت سے ہیں (ندکورہ چیزوں کی مثال)ان چیزوں کی مثال تیرے لئے تعجب خیز ہونے میں اور (جلدی) مصمحل ہونے میں ا سے ہے جیسے بارش سے پیدا ہونے والی تھیتی کسانوں کوخوش کرتی ہے پھر جب وہ خشک ہوجاتی ہے تو تم اس کوزرد و مکھتے ہو پھروہ چورہ چورہ ہوجاتی ہے پھر ہوا کے ذریعہ نیست ونابود ہوجاتی ہے اور آخرت میں اس کے لئے سخت عذاب ہے جوآخرت پر د نیا کوتر جیح دیتا ہے اوراللّہ کی طرف ہے نصرت اورخوشنو دی ہے اس مخص کے لئے جس نے د نیا کوآخرت پرتر جیح نہیں دی اور د نیا ک زندگی لیخی اس ہے تتع حاصل کرنا محض دھو کے کا سامان ہے تم اینے رب کی مغفرت کی طرف اور جنت کی طرف دوڑ وجس کی وسعت آسان اورزمین کے برابرہے اگرایک کو دوسرے کے ساتھ ملالیا جائے اور عرض سے مراد وسعت ہے (نہ کہ چوڑ ائی) یہ ان کے لئے بنائی گئی ہے جواللہ پراوراس کے رسول پرائیمان رکھتے ہیں بیاللہ کافضل ہے وہ جسے جیا ہے عطا کرے اور اللہ بزے قضل والاہے نہ دنیا میں کوئی مصیبت آتی ہے خشک سالی وغیرہ اور نہ خاص تمہارے نفس میں جبیبا کہ مرض اور بیچے (وغیرہ) کا فوت ہوجانا، مگریہ کہ وہ کتاب لیعنی لوح محفوظ میں الکھی ہوتی ہے ان نفوس کو پیدا کرنے سے پہلے اور نعمت میں بھی ایسا ہی کہ جے گا (جیبہ کہ صیبت کے بارے میں کہا گیا) یہ کام اللہ کے لئے بالکل آسان ہے (لِکَیْلَا) میں تکی تعل کا ناصب ہے اُن کے معنی میں بعنی اللہ تعالیٰ نے اس کی خبر دی تا کہتم فوت شدہ چیز پر رنجیدہ نہ ہواور نہتم اس نعمت پر جوتم کوعطا کی گئی ہے ٠ ﴿ (مِنْزَمُ بِبَالشَّرْزُ) ◄ —

اترائے کے طور پر خوشی کا اظہار کرو بلکہ فعمت پرشکر رہے طور پر اظہار مسرت کرو (انسکُفر) مدکے ساتھ اَغبط انکفر کے معنی میں ہے اور قصر کے ساتھ جَساءَ مُکمِّر مِنه کے معنی میں ہے اور اللّٰہ تعالیٰ عطا کروہ فعمت پر کسی اثر انے والے اور اس فعمت کی وجہ ہے لوگوں پر فخر کرنے والے کو پسندنہیں کرتا اور جولوگ خود (بھی) اینے او پر واجہات میں بخل کرتے ہیں اور اس میں لوگوں کو (بھی) بخل کی تعلیم دیتے ہیں تو ان کے لئے بخت وعید ہے (سنو) جو تخص بھی اپنے او پر واجبات ہے منہ پھیرے بلاشبہ اللہ کھو ضمیرتصل ہےاورایک قراءت کھیے کے سقوط کے ساتھ ہے، بے نیاز ہےاورا پنے اولیاء کی حمد کا سز اوار ہے یقینا ہم نے اپنے رسول ملائکہ کواپنے انبیاء کی طرف بچے قاطعہ دیکر بھیج اور ہم نے ان کے ساتھ کتاب جمعنی کتب اور تراز و (بعنی)عدل کونازل کیا تا کہلوگ عدل پر قائم رہیں اور ہم نے لو ہے کو اتارا لیعنی معاون سے نکالہ جس میں شدید ہیبت ہے اس کے ذریعہ قبال کیا جاتا ہے، اورلوگوں کے لئے (اوربھی) بہت ہے فوائد ہیں اوراس لئے بھی تا کہ اللہ مشاہرہ کے طور پر جان لے (لِیَسْفُ لَمْ مَا) کا عطف لِيَقُوْمَ المناسُ يرب كهون اس كي اوراس كے رسول كي بغير ديجھ مد دكرتا ہے؟ (ليعني) كون اس كے دين كي لوہے كے آلات وغيره كي ذر بعدمد دكرتا م ؟ (بالغيب) يَنْصُرُهُ كَياء عن صال م يعنى دنيا مين ان عنائبانه طورير، مصرت ابن اس کونصرت کی حاجت تبین کیکن جونصرت کرے گااس کوفائدہ دے گی۔

عَيِقِيق تِزَكِيكِ لِسَبَيلُ لَقَيْمِ يُولِدِن

فَيْخُولْنَى ؛ أَى الاشتِها أَلُ فِيْهَا ال مِن البات كي طرف اشاره بكر مال اوراولا وفي نفسه برى چيز تبيس بي بلكهان ميس انہاک داشتغال ناپسندیدہ اورممنوع ہے۔

فِيْوَلِينَ اي هِيَ السِّس اشاره بكه فِي إعجابِهَا، هِيَ مبتداء محذوف كُ خبر بـ

فِيُولِكُونَ ؛ الزُّرَّاعَ اس ميس اس بات كى طرف اشاره بى كەكفار كافرىمىنى زادع (كسان) كى جمع بى دىنرت ابن مسعود تَفِعَانَهُ مَعَالِيَةً فِي فَرِمايا السهواد بالكفار الزرّاع زبرى في كباب كرم بزارع وكافر كبته بين اس لئے كدوہ فيج كوشي مين چھا تا ہے لیمنی منگفر جمعنی یستو ہے۔

فِيُولِكُم : التمتع فيهَا كاضافه كامقصدا لبات كي طرف اثاره كرنا بكه ما الحيوة الدنيا حذف مضاف كما تحد مبتداء بتاكه متاع الغرور كاحمل حيوة الدنيا بربوك-

جَوْلِكَى: والعرض، السعَةُ ياسوال كاجواب بكرجنت يعرض يعني چورُ الى كاذكركيا كياب مرطول (لمبائي) كاذكر

جَجُولُ شِعْ: جواب كاماحسل يه ب كه يهال السعوض عمراد چورُ الى نبيس ب جوكه طول كامقابل ب بلكه مطلقاً وسعت مراد

ہے جس میں طول وعرض دونوں شامل ہیں۔

فَحُولَ مَنى: ويسقسالُ في النِعْمَةِ كذالك يعنى جس طرح نفس ومال مين مصيبتين اور بلائين منجانب الله آتى بين اس طرح نعمتين اور راحتين بهي اس كي نقد مراور علم سي آتى بين بين بين المورد حتى المورد على المورد المورد على المورد المورد على المورد المورد على المورد ال

فِيَوْلِكُنَّ ؛ مِنْهُ اى من فضل الله.

قِوْلَى ؛ لَـهُ وَعِيدٌ شديدٌ اللها الله على الله ين يَبْخَلُونَ الخ مبتداء عالى فر لَهُ مْ وَعِيدٌ شديدٌ معذوف ...

فِيَوْلِكُ : وَمَنْ يَنَوَلَ ، من شرطيه باس كاجواب محذوف باوروه فَالْو بَالُ عليهِ بـ

تَفْسِيرُ وَتَشِينَ عَيْ

اغلم الموال و الآولاد سابقة المدال المعبودة المدالة المعبود والمؤلود والمؤلود الموال و الآولاد سابقة المات المعلود المحدود ال

او پرکی آیت میں اللہ تعالیٰ نے عقلت کے اسباب کو واقعاتی ترتیب کے ساتھ نہایت پُرتا ثیر طریقہ پر مشاہداتی مثال کے ساتھ بیان فر مایا ہے۔

ابتدائے عمرے آخر عمر تک جو بچھ دنیا ہیں ہوتا ہے اور جن میں دنیا دار منہمک اور مشغول اور اس پرخوش رہتے ہیں اس کا بیان تر تیب کے ساتھ یہ ہے کہ دنیا کی زندگی کا خلاصہ بہتر تیب چند چیزیں اور چند حالات ہیں ان حالات کی قر آنی اور واقعاتی تر تیب یہ ہے، مہلے کعب تھرلہو، تھرزینت، تھر مال دادلا دکی کثرت پرفخر۔

تعب وه کھیل ہے کہ جس میں فائدہ مطلق پیش نظر نہ ہو، جیسے بہت جیموٹے بچوں کی حرکتیں کہ ان میں سوائے تعب ومشقت کے کوئی فائدہ نہ ہوتا ہے جس کا اصل مقصد تو تقریح اور دل بہلا نا اور وفت گذاری کا مشغلہ ہوتا ہے خمنی طور پر کوئی ورزش یا دوسرا فائدہ بھی اس میں حاصل ہوجاتا ہے جیسے بڑے بچوں کے کھیل مثلاً گیند، بلا، تیراکی یا نشانہ بازی وغیرہ، صدیث میں نش نہ بازی اور تیرنے کی مشن کواچھا کھیل فر مایا ہے، زینت، بدن اور لباس وغیرہ کی ظاہری شیپ ٹا ہا اور بنا ؤسنگار، اس سے کوئی شرف ذاتی حصل نہیں ہوتا اور نداس میں اضافہ ہوتا، ہرانسان اس دورے گذرتا ہے۔

مطلب بیر کہ عمر کا بالکل ابتدائی حصہ تو خالص کھیل یعنی لعب میں گذرا، اس کے بعد لہوشروع ہوتا ہے، اس دور میں

انسان لا لیعنی اور غیرا ہم کامول میں وفت کو ضا لُع کردیتا ہے،اس کے بعداس کواپنے تن بدن اورلباس کی زینت کی فکر ہوئے لگتی ہےاں کے بعد تفاخر کا دور شروع ہوتا ہے ہر شخص میں اپنے ہمعصروں اور ہم عمروں ہے آ گے بڑھنے اور ان پرفخر جتل نے کا داعیہ پیدا ہوتا ہے،اور وہ بزعم خود اپنے نسب اور خاندان اور ظاہری و جاہت پرفخر کرنے لگتا ہے جو پارینہ قصوں اور بوسیده مثر بول برفخر اور پدرم سلطان بود کے سوا کچھ بیس ہوتا۔

انسان پر جتنے دوراس ترتیب ہے آتے ہیں غور کروتو ہر دور میں دواسی حال پر قانع اوراسی کوسب ہے بہتر سمجھتا ہے، جب ایک دورے دوسرے دور کی طرف منتقل ہو جاتا ہے تو سابقہ دور کی کمزوری اوراغویت سامنے آجاتی ہے، بیچا بتدائی د ور میں جن کھیلول کواپناسر ماریز ندگی اورسب ہے بڑی دولت جانتے ہیں ،اگر کوئی ان ہے چھین لیے تو ان کواہیا ہی صدمہ ہوتا ہے جیسے کسی بڑے آ دمی کا مال واسباب اور کوئٹمی بنگلہ چھین میا جائے ،لیکن اس دور ہے آ گے بڑھنے کے بعد اس کوحقیقت معلوم ہو جاتی ہے کہ جن چیز وں کوہم نے اس وقت مقصود زندگی بنایا تھا وہ کچھ نہ تھیں ، بجین میں لعب پھرلہو میں مشغولیت ر بی جوانی میں زینت اور تفاخر کا مشغله ایک مقصد بنار ما، بڑھا یا آیا، اب مشغله تکاثر فی اماموال والا ولا د کا ہوگیا که اینے مال ودولت کے اعداد وشار اور اولا دونسل کی زیاد تی پرخوش ہوتا رہے ان کو گنتا گنا تا رہے ،مگر جیسے جوانی کے زمانہ میں بچپین کی حرکتیں اغومعلوم ہونے لگی تھیں بڑھا ہے میں پہنچ کر جوانی کی حرکتیں اغواور نا قابل النفات نظراً نے لگیں اب بڑے میاں کی آخری منزل بڑھایا ہے،اس میں مال کی بہتا ت،اولاد کی کثر تاوران کے جاہ ومنصب پرفخرسر مابیزندگی کامقصو واعظم بناہ وا ہے ،قر آن کریم کہتا ہے کہ بیدد وربھی گذر جانے والا ہےا گلا دور برزخ بھر قیامت ہےاس کی فکر کرو کہ وہی اصل ہے قر آن کریم نے اس تر تبیب کے ساتھ ان سب مشاغل اور مقاصد دنیویہ کا زوال پیڈیر، ناقص ، نا قابل اعتماد ہونا بیان فرمادیا اورآ گےاس کو کھیتی کی ایک مثال ہے واضح فر مادیا۔

ونیا کی نایا ئیداری کی ایک مشاہداتی مثال:

كَمَثلِ غيثٍ أَعْجَبَ الكُفَّارَ نَباتُهُ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَراهُ مُصْفرًّا ثُمَّ يكُونُ خُطَامًا اس آيت يس وياكى ب ثباتی اور نا یا ئیداری کوسرعت زوال میں تھیتی کی مثال ہے سمجھایا ہے اس مثال سے جو بات ذہن نشین کرانے کی کوشش ک گئی وہ بہ ہے کہ بیدد نیا کی زندگی دراصل ایک عارضی زندگی ہے یہاں کی بہاربھی عارضی اورخز ال بھی عارضی ، دل بہلانے کا سامان یہاں بہت بچھ ہے گروہ در حقیقت نہایت حقیر اور چھوٹی چھوٹی چیزیں ہیں،جنہیں آ دمی کم عقلی کی وجہ ہے بڑی چیز سمجھتا ہے حالانکہ یہاں بڑے ہے بڑے اور لطف ولذت کے سامان جو حاصل ہونے ممکن ہیں وہ نہایت حقیراور چندسال کی حیات مستعار تک محدود میں اوران کا بھی حال رہے کہ تقدیر کی ایک ہی گروش خوداس د نیامیں ان سب ہر جھاڑ و پھیرو ہے کے لئے کا فی ہے۔

مثال كاخلاصه:

اس مثال کا خلاصہ یہ ہے کہ جب بارانِ رحمت کے چھینے مردہ اور خٹک ذیبن پر پڑتے ہیں تو بیمردہ زیبن گل بوٹوں سے لالہ
زار بن جاتی ہے، اور نباتات کی روئیدگی ہے ایسی ہری بھری ہوجاتی ہے کہ معلوم ہوتا ہے قدرت نے ذمر دہ بز کا فرش بجھادیا ہے،
کا شتکارا پنی سر بز اور شاواب لہلہاتی بھیتی کود کھے کر مست ویکن نظر آنے لگتا ہے، گر آخر کاروہ پیلی اور ذرد پڑنی شروع ہوجاتی ہے اور
مرجھا کر خٹک ہوجاتی ہے، آخرا یک ون وہ آتا ہے کہ بالکل چورا چورا ساہوجاتی ہے، یہی مثال انسان کی ہے کہ شروع میں تروتا زہ
حسین خوبصورت ہوتا ہے بچپن سے جوانی تک کے مراحل اسی طرح طے کرتا ہے، گر آخر کار بڑھا پا آجاتا ہے جو آہت آہت بدن
کی تازگی اور حسن و جمال سب ختم کردیتا ہے اور بالآخر مرکزمٹی ہوجاتا ہے، ونیا کی ہے ثباتی اور زوال پذریہو نے کا بیان فرمانے
کے بعد پھراصل مقصود، آخر ہے گو کی طرف توجہ دلانے کے لئے آخر ت کے حال کا ذکر فرمایا۔

وَفِي الآخرةِ عَذَابٌ شَدَيدٌ ومَغْفِرَةٌ مِنَ اللّهِ ورِضُواكٌ لِينَآخرت مِين ان دوحالوں مِين ہے ايک حال ميں ضرور پنچ گا، ايک حال کفار کا ہے ان کے لئے عذا ہے شد يد ہے اور دومرا حال موسين کا ہان کے لئے اللہ تعالی کی طرف ہے مغفرت اور رحمت ہے، عذا ہے شديد کے مقابلہ مِين دو چيزين ارشاد فرما کميں، مغفرت اور رضوان جس ميں اشارہ ہے کہ گنا ہوں اور خط کو کی کم ما فی ایک فعمت ہے جس کے نتیج میں آ دمی عذا ہے سے نتیج جاتا ہے گريہاں صرف اتنا ہی نہيں بلکہ عذا ہے نتیج کی کہ پھر جنت کی دائمی فعمتوں ہے بھی سرفراز ہونا ہے جس کا سبب رضوان لیعنی حق تعالی کی خوشنودی ہے۔

سَابِقُوْ اللّی مَغْفِرَ فِی مِنْ رَّیِکُمْ ، سَابِقُوْ ا، مُسَابَقَهُ ہے اخوذ ہے لین اپنے ہمعصروں سے مغفرت لین اسباب مغفرت کی جانب آئے بڑھنے کی کوشش کرو، لینی جس طرح تم دنیا کی دولت ولڈ تیں اور فائدے میٹنے میں ایک دوسرے سے بڑھ جانے کی جو کوشش کررہے ہوا ہے چھوڑ کریا اس کے ساتھ ساتھ اس چیز کو ہدف اور تقصود بناؤادراس طرف دوڑنے میں بازی لیجائے کی کوشش کرو۔

؛ ممال جنت کی لاز وال نعمتوں کی قیمت نہیں بن سکتے ، جنت میں جو بھی داخل ہوگا دہ محض اللہ کے فضل وکرم ہے ہی داخل ہوگا، جیسا کہ صحیحین میں حضرت ابو ہر ریرہ و تفتی النہ کے کی مرفوع حدیث میں ہے کہ رسول اللہ بین اللہ میں خرمایا: کہتم میں ے کسی کو صرف اس کاعمل نجات نہیں ولاسکتا ، صحابہ رہے گانگا گھٹا النظافان نے عرض کیا ، کیا آپ کو بھی ، آپ بلان عقبال نے جواب ویا ، ہاں! میں بھی ، بجزال کے کہ اللہ تعالیٰ کافضل ورحمت ہوجائے۔ (مظہری، معادف)

الله كى يادي عاقل كرنے والى دو چيزيں:

دوچیزیں انسان کواللّہ کی یاد ہے عافل کرنے والی ہیں ایک راحت ونیش جس میں منہک ہوکرانسان اللّہ کو بھلا ہیٹھتا ہےاس ے بیچنے کی مدایت سربقدآیات میں آچکی ہے دوسری چیزمصیبت اورغم ہےاس میں مبتلا ہوکربھی بعض اوقات انسان ما یوس اور خدا كياد عناقل موجاتا بجس كومَا أصَابَكُمْ مِنْ مُصِيْبَةٍ في الآرْضِ وَلَا فِي انْفُسِكُمْ اللَّا فِي كِتَابِ مِنْ قبل أن نَبْ وأهَا مِين بيان فرمايا ہے، يعنى جومصيبت تم كوزمين ميں ياتمهارى جانوں ميں پہنچتى ہے وہ سب ہم نے كتاب يعنى لوح محفوظ میں مخلوقات کے پیدا کرنے سے بھی پہلے لکھ دیا تھا، زمین کی مصیبت سے مراد زمینی آفات مثلاً قحط زلز لے کھیت وہاغ وغیرہ میں کمی اوراینی جان و مال واولا دہیں نقصان ہونا وغیرہ ہیں۔

لِكَيْلًا تَاسَوُ اعَلَى مَافَاتَكُمْ (الآية) يهال جس تزن وفرح سے روكا كيا ہے، وہ، وه م اور خوش ہے جوانسانوں كونا جائز کا موں تک پہنچادیتی ہے، ورنہ تکلیف پر رنجیدہ اور راحت پرخوش ہونا بدایک فطری عمل ہے، اور اسلام وین فطرت ہے اس میں خالق فطرت نے انسانی قطرت کا بورا بورا لی ظ رکھا ہے، کیکن مومن تکلیف پرصبر کرتا ہے کہ یہی اللہ کی مشیعت اور تقدیر ہے جزع فزع کرنے سے اس میں تبدیلی نہیں ہوعتی ،اور راحت پر اتر اتانہیں ہے بلکہ اللہ کاشکر اوا کرتا ہے کہ بیصرف اس کی اپنی سعی کا متیجہ بیں ہے بلکہ اللہ کا فضل وکرم ہے اور اس کا احسان ہے۔

كَفَدُ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنَاتِ (الآية) ميزان عمرادانصاف مِطلب بديكم في لوكول كواف، ف كرف كا تھم دیا ہے،بعض نے اس کےمعنی تر از و کئے ہیں ،تر از و کے اتار نے کا مطلب سے سے کہ ہم نے تر از و کی طرف لوگوں کی رہنما کی كى ، تاكهاس كور ربيه لوگول كو بورا بورا ان كاخل و ين و أنسزَ لْغَا الْمَحَدِيْدَ يهال بَحِي أَنْسَرُ لْغَا خَلَقْفَاه اوراس كى صنعت سكها في کے معنی میں ہے لو ہے ہے بے شاراشیاء تیار ہوتی ہیں، جنگی ضرورت کی بھی اور غیر جنگی ضرورت کی بھی۔

وَلَقَدُ أَرْسَلْنَانُوْحًاقَ إِبْرِهِيْمَ وَجَعَلْنَافِي دُرِيَّتِهِمَاالنَّبُوَّةَ وَالْكِتْبَ يَـعُـنِيُ الكُتُبَ الأَرْبَعَةَ التوراةَ والإنحيل والربورَ <u>مَرْيَمَوَ</u> اليَّنْهُ الْإِنْجِيْلَ وَجَعَلْنَافِي قُلُوبِ الَّذِينَ النَّبِعُوهُ رَأْفَةً وَرَحْمَةً وَيَهْ النِيَّةَ هي رَفَعَشُ السِّسَاءِ وانْدَخَادُ الصَوامِع إِبْتَكَكُّوْهَا مِنْ قَبَلِ اَنفُسِهِم مَاكَتَبْنُهَاعَلَيْهِمْ سا اَمَزْنَاهِم بِها اللَّ لَكِن فَعَلُوهِ ابْيَغَآعُرِضُوَانِ مَرْضاة 100

اللهِ فَمَارَعُوهَا حَقَّرَعَايَتِهَا أَذَ تَرَكُها كَثِيرٌ سهم وَكُورُوا بِدِين عِيسَى عليه الصَّلُوةُ والسَّلامُ ودخَلُوا وي ديس سكهم وتقِي على دين عيسى كثيرٌ سهم فاستواسيّا فَاتَيْنَاالَّذِيْنَامَنُوا به مِنْهُمُ آجَرَهُمُ وَكَثِيرٌ مِنْهُمُ فَيُولِي سُحَدِ صلى الله عليه وسلم وعلى عيسى مِنْهُمُ فَيْ اللهُ عَلَيْ وسلم وعلى عيسى يُولِيَكُمْ لَهُ لَكُمُ لِي اللهُ عَلَيْهِ وسلم وعلى عيسى يُولِيكُمْ لَهُ لَكُمُ لِي اللهُ عَلَيْ وَمِنْ المَرْاطُ وَيَغْفِرُ لَكُنُ لَا يُولِي اللهُ وَاللهُ عَلَيْهِ اللهُ وَاللهُ وَاللهُ وَاللهُ وَاللهُ وَاللهُ وَلَا اللهُ وَاللهُ وَلَا اللهُ وَاللهُ وَالْمُوا اللهُ وَالْمُوا اللهُ وَاللهُ وَال

ر بین اور این اور این این اور ابرا ہیم جیبلانیا آ کو پیٹیبر بنا کر بھیجا اور ہم نے ان دونوں کی ذرّیت میں نبوت اور كتاب جارى ركھى ليعنى جاروں كتابيس،تورات، انجيس اور زبوراور قر آن، پيسب ابرانيم عَليَظِ الطَّالِ كَي ذرّيت مِيس بين ان میں سے پچھتو ،راہ یا فتہ ہوئے اوران میں اکثر نافر مان رہے پھربھی ان کے پیچھے بے دریے ہم رسولوں کو بھیجتے رہے اوران کے یجھے عیسی علی اللہ این مریم کو بھیجا اور انہیں انجیل عطا کی ،اور ان کے ماننے والول کے دلول میں شفقت ورحمت پیدا کی اور ر بہانیت: وہ عورتوں کوتڑک کر دینا ہے ،اورخلوت خانے بنانا ہے توانہوں نے ازخود ایجاد کر لی ہم نے اسے ان پر واجب نہیں کیا تھا بعنی ہم نے ان کواس کا تھم نہیں دیا تھا لیکن ان لوگوں نے رہا نیت کواللہ کی رضا جو ٹی کے لئے اختیار کیا سوانہوں نے اس کی بوری رعایت نبیس کی جب کدان میں ہے اکثر نے اس کوترک کردیا ، اور عیسیٰ علیجکلاً والدہ کا سے دین کے منکر ہو گئے اور ا ہے بادشاہوں کے دین کوا نقلیار کرلیا اور بہت ہے حضرت نتیسی کے دین پر قائم رہے، پھر ہمارے ٹبی پین پین پر ایمان لا ک، سوان میں جو آپ یکھنٹی پر ایمان لائے ہم نے ان کواجر عطا کیا اور زیادہ تر ان میں نافر مان رہے اے وہ لوگو! جو عیسی رحمت ہے تمہارے دونبیوں پرائیان لانے کی وجہ ہے دوجھے (اجر) مط فرمائے گا،اوراللہ تعالی تم کواہیا نورعطا کرے گا کہ جس کو سیکرتم بل صراط پر چیو گےاور وہ تم کو بخش دے گا اور وہ غفور رحیم ہے تا کہ ب ن لیس بیعنی تم کواس کے ذریعہ بتا دیا کہ اہل تهاب لیعنی تورات والے جو محمد القائلة برایمان نہیں اونے ، أن مخففہ عن التقیلہ ہے اور اس کا اسم ضمیر شان ہے اور معنی ہے ہیں کہ وہ اللہ کے فضل میں ہے کسی شئ پر بھی قادر نہیں ہیں ان کے من کے برخلاف کہ وہ اللہ کے مجبوب ہیں اور اس کی رضا مندی والے ہیں اور بلاشبہ فضل ، اللہ کے قبضہ میں ہے جس کو جاہے عطاء کرے ان(اہل کتاب) میں ہے ایمان لانے والوں کو ؤو ہراا جرعطا کیا،جیسا کہ ماقبل میں گذر چکاہے اللہ بڑے فضل والاہے۔

جَِّقِيقُ تَزِكِيكِ لِيَسَهُ الْحُ تَفْسِّلُونَ فَيْسِلُ لَوْ الْمِلْ

قَیُولِی، وَلَقَدُ اَرْسَلْنَا نُوحًا وَّابِرَاهِبْمَ (الآیة) واؤعاطفہ بِ معطوف علیہ لَقَدُ اَرْسَلْنَا رُسُلْنَا بُورُاهِبْمَ وَالبَّمِ کَا اِللَّهِ وَاؤَعاطفہ بِ معطوف علیہ لَقَدُ اَرْسَلْنَا رُسُلْنَا بُورُاهِ اِللَّهِ وَالبَّمِ کَا اِللَّهِ وَاللَّهِ عَلَيْهِ وَاللَّهِ عَلَيْهِ وَاللَّهِ عَلَيْهِ وَاللَّهِ عَلَيْهِ وَاللَّهِ عَلَيْهِ وَاللَّهُ عَلَيْهُ وَاللَّهُ عَلَيْهِ عَلَيْهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ عَلَيْهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ عَلَيْهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ عَلَيْهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ عَلَيْهُ وَاللَّهُ وَاللْهُ وَاللَّهُ وَالَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّ

جِجُولَ شِیعَ: مذکورہ دونوں حضرات کا بطور خاص اس نے ذَیر کیا گیا ہے کہ تمام انبیاءان بی کی ذریت میں سے ہیں،حضرت نوح علیجان النظافی ابوالثانی میں اور حضرت ابراہیم ابوالعرب والروم و بنی اسرائیل ہیں۔ (صادی)

قِوَلَى : وَجَعَلْنَا فِي ذُرِّيتهما مَفْعُولَ الْيُ مَقْدُم كُلِّ مِن بِالنَّنُوةَ مَفْعُولَ اول بـ قَوَلَ اللهُ اللهُ

فَخُولَ اللّهِ الكن فَعَلُوها ، إلّا كَانْسِرلكن ت كرك اثاره كرديا كديه تتى منقطع باوركها كياب كدستنى متصل ب، تقذير عبارت بذب ما تحدّ بناه مرفعا عادي الله الله على المنظم الموال المنشاء عبارت بذب مَا تحدّ بناهم الموال عاشتناء موكاء اور كذب بمعن قطنى ب-

قِوُلْنَ ، رَهْبَانية ، رَهْبَانية كَ مَعَى عَبادت ورياضت مِن حدے زياده مبالغة رتااورلوگول ي كناره كُثى كرك گوشئة تنها كى افتياركر لينا ب، راء كضمه كرس ته بهم پڑھا گيا ہاس صورت ميں دهبان كي طرف نبست ، وگى جوكه داهِ ب كى جمع ب جيسا كه دُنخبان دَا كِبُ كَ جمع ب -

تَفْيِيرُوتَشِينَ

ربطآ مات:

سابقہ آیات میں اس عالم کی ہدایت اور اس میں عدل وانصاف قائم کرنے کے لئے انبیاء ورسل اور ان کے ساتھ کتاب ومیزان نازل کرنے کاعمومی ذکر تھا، مذکورۃ الصدر آیات میں ان میں سے خاص خاص انبیا ،ورسل کا ذکر ہے پہلے حضرت نوح

< (مَنزَم بِسَاشَرِنَ) ≥

عَلَيْ الشَّالَةُ وَالشَّكَةُ كَا كَهُ وهِ آوم ثانى بين اورطوقان كے بعد كانسان ان كي سل ہے ہيں ، دومرے حضرت ابراہيم عليف كا وكر ب جوابوال نبیاء بیں اس کے بعد ایک مختصر جملے وَ قَدَقَیْ مَا عَلَی آثَادِ هِمْرِبِو سُلِغَا مِن بورے سلسلہ انبیاءورسل کا ذکر فر مایا، آخر میں خصوصیت کے ساتھ بی اسرائیل کے آخری نبی حضرت نمیسی علیہ اللہ اللہ کا ذکر کے حضرت خاتم الانبیاء بلا اللہ اور آپ کی شريعت كاذكر فروي ،حضرت عيسى عَلا يقالة الشكاري إيمان لانے والول كى خاص صفت بيه بيان فروائي كئي ہے وَ جَعَلْفَ افِي فَلُوبِ الكبديس اتَّبعُوهُ رَأفَةً وَّرَحْمَةً ليعن جن لوكول في معرت عيلى عَلَيْكَ وَالشَّالَة بالجيل كا اتباع كياجم في ان كردول ميس رأفت اوررحمت پیدا کردی لینی بیلوگ آپس میں مہر بان اور رحیم ہیں ، یا پوری خلق خدا کے ساتھ ان کوشفقت ورحمت کا تعلق ہے ، رافت اوررحمت قریب قریب ہم معنی ہیں مگر جب ایک ساتھ ہو لے جاتے ہیں تو رافت سے مرادر قبق انقلبی ہوتی ہے جو کسی کو تکلیف ومصیبت میں دیکھے کرایک شخص کے ول میں پیدا ہو،اور رحمت سے مرادوہ جذبہ وتا ہے جس کے تحت وہ اس کی مدد کی کوشش کرے، حضرت عیسی چونکہ نہایت رقیق القلب اورخلقِ خدا کے لئے رحیم وشفیق تضاس لئے ان کی سیرت کا بیا ثر ان کے بیروؤں میں سرایت کر گیاوہ املہ کے بندول پرترس کھاتے تھے اور بمدر دی کے ساتھ ان کی خدمت کرتے تھے۔

نبى كريم وللفائقة الكصحابة كرام وضفالقة تعاليفني كاصفات جوسورة فتعين بيان فرمائي جي جن مين ايك صفت دُ حَمَاء منالهُ هُد بھی ہے، مگروہاں اس صفت سے پہلے سی ابر کرام رَضِ کا انگفاؤ کی ایک اور خاص صفت اَشِد دُاء علی النُکفّادِ بھی بیان فرمائی ہے، فرق کی دجہ بیمعلوم ہوتی ہے کہ حضرت عیسی ﷺ لا وَلا تَعَالِي کی شریعت میں کفار ہے جہاد وقتال کے احکام نہ تھے، اس لئے کفار کے مقابله من شدت ظا بركرنے كا و بال كوئى كل ندتھا۔ معادف ملعشا،

ر بهیا نبیت کامفهوم:

اس کا تلفظ راء کے فتحہ اور ضمہ دونوں کے ساتھ ہے ،اس کا مادہ رکھ سے ہٹ ہے ،جس کے معنی خوف کے ہیں ،حضرت نیسنی عَلَيْقِ لِلْهُ لِلسِّلْ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى مِنْ تَسَقُّ وفِحُورِ عام بوكيا، خصوصاً بادشا بول اور رؤساء نے ، انجیل میں ترمیم كرے اس ے کھلی بغادت شروع کردی ،ان میں جوعلما ،وسلحاء تھے انہوں نے اس برملی ہےروکا تو ان کولل کردیا گیا، جو پچھڑ گئے انہوں و یکھا کہا ب ندمقا بلہ کی طاقت ہےاور ند بیخے کی کوئی صورت ،الہٰذاان لوگوں نے اپنے دین کی حفاظت کی خاطریہ صورت نکا ں کہ اینے اوپر بیابات لازم کر لی کہ اب دنیا کی سب جائز لذتیں اور آ رام بھی چھوڑ دیں ، نکاح نہ کریں ، کھانے پینے کی چیزیں جمع کرنے کی فکر نہ کریں اور رہنے کے لئے مکان کا انتظام نہ کریں ،لوگوں سے دور کسی جنگل یا پہاڑ میں زندگی بسر کریں ، تا کہ دین کے احکام پر آزادی کے ساتھ ممل کر تکیس ان کا بیمل چونکہ خدا کے خوف سے تھا اس لئے ایسے لوگوں کورا ہب یا رہبان كهاجانے لگا،ان كى طرف نسبت كركان كي طريقه كور بهانيت ع تعير كرنے لگے۔

ان کا پیطریقة کوئی شری طریقه نہیں تھا بلکہ بیطریقہ حالات ہے مجبور ہو کراینے دین کی حفاظت کے لئے اختیار کیا گیا تھا اس لئے اصالۃ کوئی ندموم چیز نہتھی ،مگر جب ایک چیز کواپنے او پر لازم کرلیا تو اس کو نبھا تا جا ہے تھا،مگر ان لوگوں نے اس کی رعایت

نہیں کی بلکہ اس میں کوتا ہی اور اس کی خلاف ورزی شروع کر دی قر آن مجید میں اس آیت میں ان کی اس بات پرنگیر فرمائی ہے۔ حضرت عبدالله بن مسعود وَ وَعَمَالِنَانُهُ مَنَا لَكُ عَلَى الكِ طويل حديث اس يرشام يه ابن كثير نے بروايت ابن الي حاتم اور ا بن جریر، ایک طویل حدیث تقل کی ہے، جس میں ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے فر مایا: کہ بنی اسرائیل بہتر فرقوں میں تقسیم ہو گئے تھے، جن میں ہے صرف تین فرقوں کوعذاب ہے نجات ملی جنہوں نے حضرت عیسیٰ علیقہ کا والنظریٰ کے بعد طالم و جابر با دشاہوں اور دولت وقوت والے فاسقوں وفاجروں کوان کے قسق وفجور سے روکا ، ان کے مقابلہ میں حق کا کلمہ بند کیا اور دین عیسیٰ عَلیٰ کھا کھا کھا کی طرف دعوت دی،ان میں سے پہلے فرقے نے قوت کے ساتھ ان کا مقابلہ کیا تگران کے مقابلہ میں مغلوب ہوئے اور قبل کردیئے گئے ، پھران کی جگہ ایک دوسری جماعت کھڑی ہوئی جن کومقہ بلہ کی اتنی بھنی طافت نہیں تھی ، مرکلہ جن پہنچانے کے لئے اپنی جانوں کی پرواہ کئے بغیران کوجن کی دعوت دی ،ان سب کوبھی قبل کرویا گیا ،بعض کو آ رول سے چیرا گیا،بعض کوزندہ آگ میں جلایا گیا، گرانہوں نے اللہ کی رضا کے لئے ان سب مصائب پرصبر کیا، بیجی نجات یا گئے، پھرایک تیسری جماعت ان کی جگہ کھڑی ہوئی جن میں نہ مقابلہ کرنے کی قوت تھی نہان کے ساتھ رہ کرخود ا ہے دین برعمل کرنے کی صورت بنتی تھی اس لئے ان لوگوں نے جنگلوں اور بہاڑوں کاراستہ لیا، اور راہب بن سے یہی وہ لوك بين جن كاذكراللد في اس آيت بين كيا بورَ هُمَانِيَّةَ وِ ابْتَدَعُوْهَا مَا كَتَبْنَاهَا عَلَيْهِمْ

إلَّا الْمِيْهَاءَ وضْوَانِ اللَّهِ السِّكِوومطلب، وسَكَّة بن: ايك ميكة بم نيان يراس ربها نبيت كوفرض نبيس كياتها بلكه جو چیزان برفرض کی تھی وہ بیھی کہوہ اللہ کی خوشنو دی حاصل کرنے کی کوشش کریں اور دوسرا مطلب بید کہ رہبا نیت ہماری فرض کی مولی ندھی بلکہ اللہ کی رضا جوئی کے لئے خود انہوں نے اے اسے اور فرض کرایا تھا۔

د ونول صورتوں میں بیآیت اس بات کی صراحت کرتی ہے کہ رہبانیت ایک غیراسلامی چیز ہے اور بیابھی وین حق میں شامل منيس ربى، يهى وجه بي كرآب ينت التي التي الأرهب الله و هب الإنساكم اسلام من كونى ربها نيت نبيس (منداحمه) ايك اور صديث يس ب رَهبَانِيَّة هذه الْأَمَة السجهادُ في سَبيلِ الله اسامت كربيانية جباوفي سيل الله بداحد، مندابویعلیٰ) لیعنی اس امت کی روحانی ترقی کا راسته جهاد فی سبیل الله ہے ترک دنیائبیں ، بیامت فتنوں ہے ڈرکرجنگلوں اور یباز وں کی طرف نبیں بھا گتی بلکہ راہِ خدامیں جہاد کر کے ان کا مقابلہ کرتی ہے، بخاری اورمسلم کی متفق عدیہ روایت ہے کہ صی بہ نصَحَكَ مَعَالَظَنَهُ مِن سے ایک صاحب نے کہا میں بھی شادی نہ کروں گا، اور عورت سے کوئی واسط نہیں رکھوں گا، رسول الله میلانکھیا نان كي به الله الله أما والله اتى لاخشاك مرلك واتفاكم لكني أصُوم وافطر وأصلى وارفك و اَتَهٰزَوَّ جُ السنساء فيمن رَغِبَ عَن سُنَّتِني فَلَيْسَ مِنِّي خدا كُتَّم مِينٌمْ ہے زیادہ خداہے ڈرتاہوں اوراس ہے تقویٰ کرتا ہوں مگر میراطریقہ بیہ ہے کہ روز ہ بھی رکھتا ہوں اورنبیں بھی رکھتا، را تو ل کونماز بھی پڑھتا ہوں اورسوتا بھی ہوں اورعورتوں ہے کاے بھی کرتا ہوں جس کومیراطریفتہ پسندنہ ہواس ہے میرا کوئی واسط نبیں۔

•ھ[زمَزُم پہناشن[]≥۔

ر ہبانیت مطلقا مذموم ونا جائز ہے یااس میں پچھ تفصیل ہے؟

صیح بات بیہ بے کدر بہانیت کا عام اطلاق ترک لذات، ترک مباحات کے لئے بوتا ہے، اس کے چند درجے میں ایک بیاکہ کسی مباح وحلال چیز کوا موقادا یا عملاً حرام قرار دے، یہ تو دین کرتح بیف وتغییر ہے، اس معنی کے امتبار سے رببانیت قطعاً حرام ہے اور قرآنی آیت بائی آلیا اللہ بن آمکو الله تُحرِّمُوا طیباتِ مَا احَلَّ اللّٰهُ لَکُمْ مِیں اس کی ممانعت ہے۔

یہا اٹھیا السدیں آمنوا یہانظ مطور پرصر ف مسلمانوں کے لئے بولا جاتا ہے گریہاں اہل کتاب مراو ہیں ، شایداس میں حکمت میہ ہو کہ آ گان کو حکم دیا گیا ہے کہ میسی عظیم اور شاہد پر سی ایمان لائے کا بقاضہ میہ ہے کہ خاتم الانبیاء یکن کا بھیا ایمان لاؤ اور جب وہ ایسا کرلیں تو اللذین آمنوا کے خطاب ہے سیحق ہوں گے۔

لِنلاً بِعلَمُ اهْلُ الْكِتَابِ اس مِيلِ لازانده بِ معنى لِيَغلم أهْلُ الْكِتَابِ كے بِي اور مطلب آيت كابيہ كه ندكورة الصدراحكام اس لئے بیان کئے گئے تا كه اہل تناب بجھ لیس كه وہ اپنی موجود و حالت میں كه صرف حضرت میسی علاق الشالا پرتو ایمان ہے، رسول القد والق علی برنہیں ، اس حالت میں وہ اللہ کے مقل کے متحق نہیں جب تک حضرت خاتم النہیں برایمان شہلے آئیں۔ (معارف)





مرة المحالية منته والمنتاعة والمنتاعة والمرادة والمنتاعة والمناعة والمنتاعة والمناعة والمنتاعة و

سُورَةُ الْمُجَادَلَةِ مَدَنِيَّةٌ ثِنْتَان وعِشْرُونَ ايَةً.

سورة مجادله مدنی ہے، بائیس آینیں ہیں۔

يَّةُ بِسُــِ مِاللَّهِ الرَّحِٰ مِن الرَّحِيِّ مِ قَلْسَمِعُ اللَّهُ قَوْلَ الَّذِي تُجَادِلُكَ نُـرَاجِعُك ايُهَ النُّبِيُّ فِي مَنَّ وَجِهَا المُظَاهِرِ منها وكانَ قالَ لَهَا أَنْتِ عَلَىَّ كَظَهْرِ أُمِّي وَقَدْ سَالَتِ النَّبِيَّ صلَّى اللَّهُ عليه وسلَّمَ عَن ذلك فَاجَابَهَا بِأَنَّها حُرَّمَتُ عليه على مَا بُو المَعْبُودُ عِندَبُم مِن أَنَّ الظِّهَارَ سُوجِبُ فُرُقَةٍ سُؤَبَّدَةٍ وسِي خَوُلَةُ بِنْتُ ثَعلَبَةَ وسِو اوسُ بنُ الصَّاسِتِ وَلَشَّتَكِنَّ إِلَى اللَّهُ وَحُدَتَمها وَفَقَتَهَا وصبيةً صِغَارًا إِنْ ضَمَّتِهِ إِلِيهِ ضَاعُوا او إليها جَاعُوا وَاللَّهُ يَمْعُ تَعَاوُرَكُمُا * تَرَاجُعَكُمَا إِنَّ اللَّهُ **سَمِيْعُ بَصِيْرُ** عَالِمٌ **الَّذِيْنَ يُظْهِرُونَ** اَصُلُهُ يَتَظَمَّرُونَ أَدْغِمَتِ التاءُ فِي الظاء وفي قِرَاءَ ةِ بِاَلْفِ بَيْنَ الظَّاءِ والهَاءِ الخفِيفةِ وفِي أخرى كَيْفَاتِلُونَ والمَوضِعُ النَّاني كَذَٰلِكَ مِنْكُمُرِينَ لِسَابِهِمُوالْهُنَّ أُمَّهُتِهِمُ إِنْ أَمُّهُ مُهُمْ إِلَّا إِنَّى بِهَ مَزَةٍ وِياءٍ وِبِلَا ياءٍ وَلَدُنَهُمْ وَإِنَّهُمْ بِالظِّهَارِ لَيَقُولُونَ مُنْكُرَّامِنَ الْقُولِ وَزُورًا كَذِبًا وَإِنَّ اللَّهَ لَعَفْقُ عَفُورٌ لَهُ لِمُظاهِرِ بِالكَفَّارَةِ وَالَّذِينَ يُظْهِرُونَ مِنْ نِسَايِهِمُ رَثُمَّ يَعُودُونَ لِمَا قَالُوا اى فيه بأن يُّحَ الِهُوْهِ بِإِمْسَاكِ المُظَامَرِ مِنها الَّذي بِو خِلاف مقصُود الظّهار مِن وصُفِ المَرُأةِ بالتَّحريم فَتَحْرِيُورَقَبَةٍ اى اِعْتَاقُهَا عليه مِنْ قَبْلِ أَنْ يَتَمَالْنَا لَا بِالوَطِئ ذَٰلِكُمْ تُوْعَظُونَ بِهُ وَاللَّهُ بِمَاتَعْمَلُونَ خَيِيرٌ فَمَنْ لَمْ يَجِدْ رَفَهُ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَنَابِعَيْنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَتَمَالَنَا أَضَنْ لَمْ يَسِكُ اللهَ الصَيامَ فَاطْعَامُ سِتِّيْنَ مِسْكِينًا الْ عيه اى مِنْ قَبُلِ أَنْ يَّتَماسًا حَمُلاً للمُطْلَقِ على المُقَيَّدِ لِكُلِّ مِسْكِينٍ مُدُّ مِن عَالِبِ قُوتِ السد ذَلِكَ اى التَخفِيثُ فِي الكَفَّارَةِ لِتُومِنُوا بِاللهِ وَرَسُولِم وَيَلْكَ اى الاَحْكَامُ المَذْ كُورَةُ حُدُودُ اللَّهُ وَ لِلْكَفِرِينَ ب عَذَابُ الِيُمْ مُؤلِمُ إِنَّ الَّذِينَ يُعَادُّونَ يُخَالِفُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ كُبِيُّوا الْذِنُوا كَمَاكُبِتَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِي مُحالفَتِهم رُسُلَهم وَقَدُ أَنْزَلْنَا اللَّهِ بَيِّنْتٍ ثَالَةٍ على صِدْقِ الرَّسُولِ وَلِلكَفِرِينَ الايت عَذَابُ

مُّهِينَ ﴿ وَ إِلَّهُ يَوْمُرِيبُعَتُهُ مُ اللَّهُ جَمِيعًا فَيُنَبِّنُهُمْ بِمَاعَمِلُوا لَحْصهُ اللهُ وَنَسُوهُ وَاللَّهُ عَلَيْ لِلَّهُ عَلَيْ اللَّهُ عَلَيْ عَلَيْ اللَّهُ عَلَيْ عَلَيْ اللَّهُ عَلَيْ اللَّهُ عَلَيْ اللَّهُ عَلَيْ اللَّهُ عَلَيْ اللَّهُ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ اللَّهُ عَلَيْ عَلْ عَلَيْ عَلْ عَلَيْ عَلَيْكُمْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلِي عَلَيْ عَلَيْ عَلَى عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَى عَلَيْ عَلَى عَلَيْ عَلَيْ عَلَى عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَّا عَلَيْ عَلَى عَلَيْكُمْ عَلَى عَلَيْ عَلَيْكُوا عَلَيْ عَل

ت مروع كرتا بول الله ك نام مع جو برا مبر بان اور نهايت رحم والاب ،ا بني يقيينا الله في اسعورت كي ہات من لی ، جوآپ ہے اپنے ظہار کرنے وائے شوم کے بارے میں تکمرار کررہی تھی اوراس کے شوم نے اس سے کہاتھا اُنستِ على كظهر أمِّي توميرے لئے ميرى مال كا پيۋے كا اند (حرام) به اور آپ يتفظينا سے اس عورت نے اس بارے ميں دریافت کیاتھ ،تو آپ نے اس کوعرف کے مطابق جواب دیا کہ وہ (تو) اس برحرام ہوگئی جیسا کہ ان کے بیہاں بیددستورتھا کہ ظبهار دائمی فرفت کاموجب مانا جاتا تھا، اور وہ خولہ بنت تغلبہ تھی اوراس کے شوہر اوس بن صامت تھے، اوراللہ سے اپنی تنہائی کی اوراینے فاقہ کی اور چھوٹے بچول کی شکایت کررہی تھی اً سران بچول کواپنے شوہر کودیتی ہے تو ضائع ہونے کا خطرہ ہے اورا گراپنے س تھ رکھتی ہے تو بھو کے مرنے کا اندیشہ ہے اور اللہ تعالی تم دونوں کے سوال وجواب من رباتھا ، بے شک اللہ سننے دیکھنے والا ہے ، تم میں سے جولوگ اپنی ہیو یوں سے ظہار کرتے ہیں (ینطُهَرُونَ) کی اصل یَنفَظَهرُونَ تھی، تا کوظاء میں ادبام کرویا گیا ، اور ایک قراءت میں طااور ہاء خفیفہ کے درمیان الف کے ساتھ ہے اور دوسری قراءت میں (یُسطَاهِرُوْنَ) یُفَاتِلُوْنَ کے وزن پر ہے اور دیگر جگہ بھی ایسا ہی ہے، وہ دراصل ان کی مائیمی تنہیں بن جاتیں ،ان کی مائیمی تو دہی ہیں جن کے بطن ہے وہ پیدا ہوئے ہیں (اُللَانی) ہمزہ اور یا ءاور بغیریا ء کے ہے اور وہ لوگ ظہار کر کے ایک نامعقول اور جھوٹی بات کہتے ہیں اور بلا شبرا متدتع کی مظ ہر کو کفارہ کے ذراجہ بخشنے والا اورمعاف کرنے والا ہے اور وولوگ جواپنی بیو یوں سے ظہار کرتے ہیں پھرظہار میں اپنے قول سے رجوع کرنا جاہتے ہیں لیعنی ظہار کے بارے میں ہی ہوئی بات ہے رجوع کرنا جاہتے ہیں، بایں طور کداپی کہی ہوئی بات کا خلاف کرنا جاہتے ہیں مظاہر منہا ہو یوں کوروک کر جوظہار کے مقصد کے خلاف ہے اور وہ (مقصد) ہوی کو وصف حرمت سے متصف نرنا ہے تو اس پر بیوی کو ہاتھ لگانے (جمائ) ہے پہیے ایک نلام آزاد کرنا ہے اس (تھکم کفارہ) ہے تم کونصیحت کی جاتی ہے اور ابتد تعالی تمہارے اعمال سے باخبر ہے ہاں جو تخفس نلام نہ یائے تو اختلاط کرنے سے پہلے لگا تاروومہینے کے روزے رکھتا رہے اور جو تخص روز ہمی ندر کا سکے تو اس پر اختلاط ہے پہلے سانھ مسکینوں کو کھا ناہے مطلق کو مقید پرمحمول کرتے ہوئے ، ہر مسکین کوایک مُدشہر کی غالب خوراک کے اعتبار ہے اور کفارہ میں یہ سہولت اس لئے ہے کہتم القداور رسول پر ایمان لے آؤاور یہ لیعنی مذکورہ احکام اللہ کی بیان کر دہ حدود ہیں اور ان احکام کے منسر کے لئے ور دنا ک عذاب ہے بلا شبہ جولوگ اللہ اور اس کے رسول کی مخالفت کرتے ہیں ذکیل کئے جا تھیں گے جیسے ان سے پہلے کے لوگ اپنے رسولوں کی مخالفت کی وجہ سے ذکیل کئے گئے تحے اور بے شک ہم واضح آیتیں نازل کر کیے ہیں جورسول کی صدافت پر دلالت کرتی ہیں اوران آیتوں کے انکار کرنے والوں کے لئے ابانت والا عذاب ہے جس ون القد تعالی ان سب کواٹھائے گا پھر ان کوان کے کئے ہوئے اعمال ہے آگاہ کر دے گا جنہیں اللہ نے شار کررکھا ہے اورجنہیں یہ بھول کئے تھے اور اللہ تعالیٰ ہر چیز سے واقف ہے۔

عَجِفِيق اللَّهِ اللَّلَّمِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ اللللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللللَّمِلْمُلِ

سورہ مجاولہ تعدادسورت کے اعتبار سے نصف ٹانی کی پہلی سورت ہے، قرآن میں کل ۱۳ اسور تیں ہیں، بیا ٹھاؤنویں سورت ہے، اس سورت کی بیخصوصیت ہے کہ اس کی کوئی سطراس بات سے خالی ہیں کہ اس میں اللّٰد کا لفظ ، ایک یا دویا تین مرتبہ نہ کورنہ ہوا بکہ ۳۵ مرتبہ لفظ اللّٰداس سورت میں مُدکور ہواہے۔

فَيُولِكُ ؛ قد سَمِعَ الله اى أَجَابَ الله، قَدْ تَحْقِق ك ليّ بهد

هِجُولُكُمْ ؛ فِي زُوجِهَا اى في شان زوجِهَا.

فِيَوْلِكُ ؛ لِمَا قَالُوا اى لِقُولِهِمْ مامصدريه بـ

قَوْلَنَى ؛ فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ اى اِغْمَافُهَا عَلَيْهِ اى اِغْمَافُهَا ، تخرِيرُ رَقَبَةٍ كَافْسِر، بإن مَنْ كَلِي بَهُ تحويرُ رَفَبَةٍ به وَكَانِهُ مِنْ مَنْداء ب، اور عليهِ الل كُفر ب، بهتر ہوتا كه فسرعلام عَلَيْهِ كَ بجائے عَلَيْهِمْ فرمات ، الل بنت كه يہ جمله ہوكر وَاللّهِيْنَ يَظُهّرُ وُنَ كَ فَرِ ب، مبتداء جمع به ابْذا فبر كا بھى جمع ہونا ضرورى ہے، فتحرير وَقَبَةٍ برفاء ، اللّهِ واضل به كرم بتداء عليه من بمعنى شرط ہے۔

فَحُولِلَنَى ؛ بالوطى أن يَّتَمَاسًا كَ تَفْسِر، وطى عام شافعى رَحِمَ للنَّهُ عَالَىٰ كَ مسلك كِمطابق ب، امام ابوصنيفه رَحِمَ المُلْكُ تَعَالَىٰ كَ مسلك كِمطابق ب، امام ابوصنيفه رَحِمَ المُلْكُ تَعَالَىٰ كَ مسلك كِمطابق ب، امام ابوصنيفه رَحِمَ المُلْكُ تَعَالَىٰ اللهُ عَمَالِكُ عَلَىٰ اللهُ عَلَىٰ اللهُ عَمَالِ اللهُ عَلَىٰ اللهُ عَل

قِی کُرِی اور روزے رکھا جماع سے پہلے ضروری ہیں، ای طرح اطعام بھی جماع سے پہلے ہی ہونا چاہئے، اطعام ہیں اگر چہ فلام آزاد کرنا اور روزے رکھنا جماع سے پہلے ضروری ہیں، ای طرح اطعام بھی جماع سے پہلے ہی ہونا چاہئے، اطعام ہیں اگر چہ قبل ان یتماسا کی قید بین ہے گراس کو بھی تحویو دقبة اور صیام شهرین پر قیاس کرتے ہوئے قبل آن یَتَمَاسًا کی قید کے ساتھ مقید کریں گے۔

فَیُولِی ؛ لکل مسکین مُذّ من غالب قوت البلد یفیربھی امام ثافعی رَحِمَ الله کیمسک کے مطابق ہاسکے کہ ان کے یہاں ہر مسکین کوایک مددینا ضروری ہے،خواہ گذم ہویا جویا تمروغیرہ ،امام صاحب کنزویک گندم اگر ہوتو نصف صاع ہے اور جووغیرہ ایک صاع ہے۔

قِحُولِ الله المتحفیفُ فی الکفّارةِ کفارهٔ ظهار میں جو تین چیزوں کے درمیان اختیار دیا گیا ہے یہ بھی ایک تنم کی تخفیف اور سہولت ہے اس سے کہ اگرا یک بی چیز متعین کردی جاتی تو زحمت کا باعث ہوسکتی تھی۔

فِيَوْلَكُمْ: كُبِنُوا يَقِين الوقوع بونى كا وجدت ماضى كاصيغداستعال بواب-

ح (مَكَزُمُ بِبُلِشَهُ عَ

ێ<u>ٙڣٚؠؗڔۘۅؘؿؿۘۘ</u>ڽؗ

شان نزول:

اس سورت کی ابتدائی آیات کے نزول کا سبب ایک واقعہ ہے، احادیث کی روشنی میں واقعہ کی تفصیل اس طرح ہے، پیافاتون جن کے معامد میں اس سورت کی ابتدائی آیتی تازل ہوئیں ہیں قبیلہ خزرج کی خولہ بنت نظابہ تھیں ، اور ان کے شوہراً وس بن ص مت انصاری قبیداوس کے سروارعبادہ بن صامت کے بھائی تھے،اس واقعہ کی تفصیل میں اگر چیفروی اختد ف بہت ہیں مگر ت نونی وراصوی باتوں ہیں اتفی ہے،خلاصدان روایات کابیہ کرحضرت اُدی بن صامت بڑھاہے ہیں کچھ چڑ چڑے ہے ہو گئے تتھے،اور بعض روایات کی روسے معلوم ہوتا ہے کہ ان کے اندر کچھ جنون کی سی لٹک پیدا ہوگئ تھی ،جس کے لئے راویوں نے كان به لَمَدٌ كَ الفاظ استعمل كي بير، لَمَدٌ كمعنى ديواتكى كيبين بلكهاى طرح كى كيفيت كوكت بيرجس كواردوزبان میں غصہ میں یا گل ہوجانا کہتے ہیں،حضرت ابن عباس تضحَلقَاتُ تَعَاللَا تَنْ کَا روایت کےمطابق اسلام میں ظہار کا بیہ پہلا واقعہ ہے، اس واقعہ کی وجہصا حب جمل اور صاوی نے بچھا س طرح بیان کی ہے ، ایک روز اوس بن صامت گھر میں داخل ہوئے ان کی بیوی نمازیرٌ ھر ہی تھیں اورتھیں تنکیل وجمیل اورمنناسب الاعضاء،حضرت أوس نے جب ان کوسجدہ میں دیکھا اوران کے پچھونڈے پرنظر یڑی تو ان کواس صورت حال نے تعجب میں ڈال دیا، جب حضرت خولہ نماز سے فارغ ہو کنکیں تو ان سے حضرت اوس نے جماع کی خواہش ظاہر کی حضرت خولہ نے انکار کر دیاجس پر حضرت اوس کوغصہ آگیا، اور غصہ کی حالت میں ان کے منہ سے انستِ علی كَ طَلْهُو أُمِّى كَ الفاظ لُكُل كَ ، اس مسلك كاتفكم معلوم كرنے كے لئے حضرت خولد آتخضرت يُلظ الله الله كى خدمت ميں حاضر ہوئيں ، اورس را قصد آپ سے بین کیا اس وقت تک اس خاص مسئلہ کے متعلق آنخضرت پڑھی گا پر کوئی وحی نازل نہیں ہوئی تھی اس سے تب نے قول مشہوراور سابق دستور کے موافق ان سے فرمایا ما اراك إلا قَدْ حومت عليه ليمني ميري رائے مين تم اسپخشو مر پر حرام ہوگئیں، وہ بین کر واویلا کرنے لگیں کہ میری پوری جوانی اس شوہر کی خدمت میں فتم ہوگئی ،اب بڑھا ہے میں انہوں نے مجھ ہے بیہ معاملہ کیا، اب میں کہاں جاؤں میرا اور میرے بچوں کا گذارا کیے ہوگا؟ بار بارانہوں نے حضور سے عرض کیا کہ انہوں نے طدق کے الفہ ظانونہیں کہے ہیں،تو پھرطلاق کیسے پڑگئی،آپ کوئی صورت ایسی بتا نمیں جس ہے میں اور میرے بچے اور وڑھے شوہر کی زندگی تباہ ہونے سے نج جائے ،گر ہر مرتبہ حضوراس کو دہی جواب دیتے تھے، ایک روایت میں ہے کہ خولہ ب كه آب ن خوله وفيحالفائه تعَالي هَا أَمِرْتُ فِي شَانِكِ بِشَيْءٍ حَتَّى الآنَ ان تمام روايتول ميس كو كَي تعاض بيس، سب ہی اقوال صحیح ہو سکتے ہیں،حضرت خولہ نے بار بارا پنی بات دہرائی اور کوئی صورت نکالنے پراصرار کیا ،اسی کوقر آن کریم میں تُحادلُ کے لفظ تے تعبیر کیا گیاہے حضرت خولہ اصرار کرتی رہیں اور آپ ﷺ ایک ہی جواب دیتے رہے، حضرت ع کشفر ماتی ٠ ﴿ (مُزَمُ بِبَالثَهِ إِنَّ ﴾ -

بیں کہ میں اس وقت آپ یکھٹی کا سرمبارک وهور بی تھی اور خولہ دضی لفائق کھٹا اپنی بات و ہرار بی تھیں ، آخر جھے کہن پڑا کہ کلام کو خضر کرو، استے میں آپ یکٹیٹی پروٹی کے بزول کی کیفیت طاری ہوگئی اور سورت کی ابتدائی آیات نازل ہو کیں ، اس کے بعد آپ بین فیٹیٹ نے ان سے فر مایا اور ایک روایت میں ہے کہ ان کے شوم کو بلا کر فر مایا ، کہ ایک غلام آزاد کرنا ہوگا ، انہوں نے اس سے معذوری ظاہری ، تو فر مایا دو مہینے کے لگا تارروز ہے رکھو، انہوں نے عرض کیا اول کا صل تو یہ ہے کہ دن میں اگر دو تین مرتبہ کھائے ہے نہیں تو اس کی بینائی جواب دینے کہ تی ہے ، آپ نے فر مایا پھر ساٹھ مسینوں کو کھا تا کھلا تا ہوگا ، انہوں نے کہاوہ اتنی فقد رہ نہیں رکھتے اللہ یہ کہ آپ مدوفر ما کیں ، آپ نے ان کو بچھ فعد عول فر مایا اور ، وسر بوگوں نے بھی پچھ جمع کردیا ، ایک روایت میں ہے کہ آپ مدوفر ما کیں ، آپ نے ان کو بچھ فعد عول کی مقد ارد کر کھارہ اوا کیا گیا۔

(مطهري، معارف، فتح القدير، شوكاني)

مسكه ظهار ي تين اصولي بنيادي مستنبط ہوتی ہيں:

ا ایک بید کہ ظہارے نکان نہیں تو نتا ، بکد عورت بدستور شو ہر کی بیوی رئت ہے۔ اور مرے بید کہ بیوی شو ہر کے لئے وقتی طور پر حرام ہوتی ہے۔ اس تیسرے بید کہ بیعر مت اس وقت تک ہاتی رہتی ہے جب تک کہ شوم کارواند کر دے اور بیا کہ صرف کفارہ ہی اس حرمت کور فع کرسکتا ہے۔

ظبهار كي تعريف اوراس كاشرعي حكم:

روزے رکھے اگر کسی عذر شرعی کی وجہ سے اتنے روزے رکھنے پر قدرت نہ ہوتو ساٹھ مسکینوں کو دونوں ونت پیٹ بھر کر کھا ن کھلائے ، کھانا کھلانے کے قائم مقام بیجی ہوسکتاہے کہ ساٹھ سکینوں کوفی س ایک فطرہ کی مقدار گندم یا اس کی قیمت دیدے، فطرہ کے گندم کی مقدارنصف صاع ہے،جس کا سیجے سیجے وزن ایک کلوچے سوتینتیس گرام ہوتا ہے۔

مسائل:

مستحمل الله عنبر ركرنے والے كے بارے ميں ميام متفق عليہ ہے كەظبارا الى شخص كامعتبر ہے جو عاقل بالغ ہو،اور بحالت ہوش و

حواس ظہار کے الفاظ زبان سے ادا کرے ، لہٰذانیجے اور پاگل اور سونے والے کا ظہار معتبر نہیں۔ مسئماً المربية: حالت نشه مين ظهار كرنے والے كے متعلق ائمة اربعة سميت فقهاء كى ايك برى اكثريت بيكہتى ہے كه اگر سى مخص نے کوئی نشہ آور چیز جان بوجھ کراستعال کی ہوتو اس کا ظہاراس کی طلاق کی طرح قانو ناتیجے مانا جائے گا، کیونکہ اس نے بیرحالت اپنے او پرخود طاری کی ہے،البندا گرمرض کی وجہ ہے اس نے کو کی دوا بی ہواوراس ہے نشہ لاحق ہوگیا ہواورنشہ کی حالت میں اس کے منہ ے ظہار یا طلاق کے الفاظ نکل گئے ہوں تو ان الفاظ کونا فذنہیں کیا جائے گا ،احناف ادر شوافع اور حنابلہ کی رائے بہی ہے اور صیب كرام كا مسلك بھى يہى تھا،حضرت عثان ئۇئىڭ ئىندۇ تىندۇنىڭ كى رائے اس كےخلاف تھى ان كےنز دىك حالت نشد كى طول ق وظهارمعتبر تہیں ، احناف میں ہے امام طحاوی رَیِّمَ مُلامِثْاً مُنْعَالیٰ اور امام کرخی رَیِّمَ مُلامِثْاً کَا اس قول کوتر جیجے دیے ہیں ، امام شافعی رَیِّمَ مُلامِثُانَ کَا مجھی ایک قول اس کی تا ئید میں ہے، مالکیہ کے نز و یک ایسے نشد کی حالت میں ظہمار معتبر ہوگا جس میں آ ومی بالکل بہک نہ گیا ہو میکہ وهمر بوطاورمرتب كلام كرر ما ہواورات بياحساس ہوكدوه كيا كہدر ماہ؟

منت کھٹن؛ امام ابوصنیفداورا، م مالک کے نز دیک ظہاراس شوہر کامعتبر ہے جومسلمان ہو، ذمیوں پران احکام کا اطلاق نہیں ہوتا اس سے كقر آن كريم ميں الَّذِيْنَ يُظَاهِرُونَ مِنْكُمْ كِالفاظ ارشاد موئ بيں، جن بيں خطاب مسلمانوں سے ہاور تين قسم کے کفاروں میں سے ایک کفارہ قرآن میں روزہ بھی تجویز کیا گیا ہے، طاہر ہے کہ بیر ذمیوں کے لئے نہیں ہوسکتا، اہ م شافعی رَیِّعَمُ کلدتارہ تا ما اللہ کے نز دیک بیا حکام ذمی اورمسلمان دونوں کے ظہار پر نافذ ہوں گے البتہ ذمی کے لئے روز وہبیں ہے وہ یاغلام آزاد کرے یامسکینوں کو کھانا کھلائے۔

کیامرد کی طرح عورت بھی ظہار کرسکتی ہے؟

مثلُ اگر بیوی شوہر سے کہے تو میرے لئے میرے باپ کی طرح ہے یا میں تیرے لئے تیری مال کی طرح ہوں تو کیا یہ بھی ظہار ہوگا، ائمہ اربعہ فرماتے ہیں کہ بیظہار نہیں ہے، اس لئے کہ قرآن مجید نے صرح الفاظ میں بیاحکام صرف اس صورت کیلئے بیان کئے ہیں، جبکہ شوہر ہیوی ہے ظہار کرے الگیڈیٹ یُسظاہ رُوْنَ مِنْکُمْ مِن نِسَائِهم اورظہار کرنے کے اختیارات ای کو حاصل ہو سکتے ہیں جسے طلاق دینے کا اختیار ہے، یہی رائے سفیان تو ری اور آبخق بن راہو بیوغیرہ کی ہے۔

﴿ (لِمُزَمُ بِهَاشَهُ إِ

كفارة ظهاراداكرنے سے بہلے علق قائم كرنے كا حكم:

کفارہ اداکرنے سے پہلے اگر شوہرنے زن وشوہر کے تعلقات قائم کر لئے تو ائمہ اربعہ کنز دیک اگر چہ بیگناہ ہے اور آدمی کواس پر استغفار کرنا چاہئے اور پھراس کا اعادہ نہ کرنا چاہئے گر کفارہ اے ایک ہی ادا کرنا ہوگا، رسول اللہ ظافیات کے زمانہ میں جن لوگوں نے ایسا کیا تھاان ہے آپ نے بیتو فر مایا تھا کہ استغفار کر واور اس وفت تک بیوی ہے الگ رہو جب تک کہ کفارہ اوا نہ کر وگر آپ ظیفی تھیں نے انہیں بیتھ منہیں دیا تھا کہ کفارہ ظہار کے علاوہ کوئی اور کفارہ و بنا ہوگا۔

بیوی کوکس کے ساتھ تشبید دینا ظہارہے؟

اس مسئلہ میں فقہاء کرام کے درمیان اختلاف ہے، عام شعبی کہتے ہیں کہ صرف مال سے تشبیہ دینا ظہار ہے، اور ظاہر یہ کہتے ہیں کہ مرف مال سے تشبیہ دینا ظہار ہے، گرفقہاء امت میں سے کی نے بھی ان کی اس رائے سے اتفاق نہیں کیا،

مین کہ مال کی بھی صرف بیٹے کے ساتھ تشبیہ دینا ظہار ہے، گرفقہاء امت میں سے کسے بیودہ اور جھوٹی بات ہے، اب بین ظاہر ہے کہ

جن عورتوں کی حرمت مال جیسی ہے ان کے ساتھ تشبیہ دینا بہودگی اور جھوٹ میں اس سے بچھ مختلف نہیں ہے اس لئے کوئی وجہ بیں

کہ اس کا تھم وہ می نہ ہوجو مال سے تشبیہ دینے کا ہے۔

- ﴿ فِيزَمُ بِيَالِشِ ﴾ -

ظہار کے صریح اور غیرصری کالفاظ کیا ہیں؟

حنفیہ کے نزد کی ظہار کے صرف افاظ وہ ہیں جن میں صاف طور پر ہیوی کومحر مات ابدیہ میں ہے کے ساتھ شہید دی گئی ہو، یا شہیدا سے حضو کے ساتھ وی گئی ہو، یا شہیدا سے حضو کے ساتھ وی گئی ہو کہ اس انظام ہم النا حلال نہیں ہے، مثلاً بیکہا ہو کہ تو میرے سے میری ماں نے ہیں ہے۔ بیٹ یاران کے جیسی ہے۔

مذکورہ مسائل کے مراجع اور مصاور:

(فقه منفی) مداید، فنخ القدیر، بدائع الصن نئے ،ادکام القر"ن للجصاص (فقد ما کل) حاشیہ وسوقی علی الشرخ الکہیر ، بدایة المجتهد ، احکام القر"ن للجصاص (فقد منبیل) منفی لا بن قد امد (فقد خل جری) محتمد ، احکام القرآن ابن قد امد (فقد خل جری) محتمد المجتهد ، احکام القرآن ابن قد امد (فقد خل جری) محتمد لا بن حزم ،الفقد علی المذاجب الاربعد۔

خوله بنت تعلبه رَضِيَا للهُ تَعَالِيَّا هَا النَّا صَابِهُ رَضِي الظّر مين:

ان صی بیدی فریا دکابارگاہ البی میں مسموع ہونااہ رفوراہی ان کی فریا دری کے لئے فرہان مہارک نازل ہوناایہ واقعہ تھا کہ جس کی مجد ہے صحابہ سرام میں ان کی ایک خاص قد رومنزات تھی ، ابن عبدالبر نے استیعاب میں قدوہ کی روایت نقل کی ہے کہ بیٹ تو نو ناراستہ میں ایک روز حضر ت عمر تفخانفل تعلاق کومیں ، تو آپ نے ان کوملام کیا بیسلام کا جواب و بینے کے بعد کہنے کیس اوہ ہو، اب عمر! ایک وقت تھا جب میں نے تم کو بازار موکاظ میں ویکو تھی ، اس وقت تم عمیر کبلاتے تھے، انٹھی باتھ میں لئے بکریاں چرات بھر تہ تھے، پھر پچھر نیوہ مدت نہ گذری تھی ہے تم عمر کبلانے لئے پھر ایک وقت آیا کہتم امیر المونین کے جانے لئے، فررار حیت کے معاملہ میں اللہ ہے فررتے رہو، یا ور کھو جو المدکی وعید ہے فررتا ہاں کے لئے دور کا آد کی بھی رشتہ دار کی طرح ہوتا ہا اور جو موت ہے فررتا ہاں کے حق وہ بچانا چا ہتا ہے، اس پر جارود عبد کی چو حضرت عمر کے ساتھ سے فررتا ہاں کے جارو کہ میں اندیشہ ہے کہ وہ اس تھ بہت باتیں کرلیں ، حضرت عمر نے فر ویا آئیں کئے دو، جانے بھی ہو بیکون جیں؟ ان کی بات تو سات آسانوں کے اوپر بن گئی تھی ، عمر کوتو بدرجہ اولی سنی چا ہے ، ایا مسم بخاری نے بھی اپنی تاریخ میں ارخ میں ایک کیا ہے۔

اَلَمْ رَوْ نَعْدَهُ اَنَّاللَّهُ مَعْلَمُوا فِي النَّمُوتِ وَمَ افِي الْرَضِ مَا يَكُونُ فِنَ بَعُوى ثَلْتَةِ الْاَهُورَا بِعُهُمْ بعلمه وَالْخَصْدَةِ الْاَهُوسَادِهُ هُمُولَا الْمُورَا بِعُهُمْ بعلمه وَالْخَصَدَةِ الْاَهُوسَادِهُ هُمُولَا اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ الللللْمُ الللللْمُ الللللَ

حسبه وسمتم عمّا كَنُوا يَفْعِنُونَ مِن تَنْحِيمِهُ اي تَحِثُثِهم مِرًّا ناظِرينَ الى المؤمنِينَ ليُوقِعُوا فِي قُلُوبِهم الريبة وَإِذَاجَآءُوْكَ حَيُوكَ ايُّهَا اللَّهِ يُعَيِّكُ بِعِاللَّهُ وبُو قُولُهِ اللَّهُ على الموت وَيُقُولُونَ فِي أَنْفُسِهِمْلُولًا بِلاَ يُعَذِّبُنَا اللَّهُ بِمَانَقُولٌ مِن النَّحِمَ وأَنَّه لِبس مِنيَ، أن كَنْ مَنْ خَسُبُهُمْ بَهُ نَوْلُونَهَا فَيِشُ الْمَصِيْرَ؟ مِي ؖێٙٲؿؖۿٵڷۧۮؚؽؽٵٚڡٮؙؙٷۧٳٳۮؘٳؾؘٵڿؽۺؙڡ۫ڣؘۘڒؾؾؘٵڿۅٳۑؚٲڵٳؿٚۄۣۅٲڵۼۮۅٳڹۅڡۼڝؽؾؚٵڷڗۜڛؙۅٝڮۅۜؾٵڿۅٝٳؠڵؠ؞ؚۣۅؘٳڶؾٞڡۨۅؗؿۅٳؿؘڠۜۅٵۺٙڡٵڷۮۣؽۧٳڵؽڡؚؾؖڂۺٙۯۏڹ[؞] إِنَّهَااللَّيْجُوى بِالاتِم ويَخُوه مِنَ الشِّيطُنِ مَعرُوره لِيَحْزُنَ الَّذِيْنَ امُّنُوا وَلَيْسَ سِو بِضَآرِهِمُرشَيْتًا إِلَّا بِإِذْ نِائِلْتُمْ اى ارادَته وَعَلَى اللهِ فَلْيَتَوَكِّلِ الْمُؤْمِنُونَ " يَاكِيُّهَا الَّذِينَ امَنُوَّا إِذَا قِيْلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوا توسَعُوا فِي الْمَجْلِسِ . حس السي صبى الله عمليه وسمدم او المَركوحتّي ينجس من حاء كُمْ وفي قراء وِ المحالس فَافْسَحُوْايَفْسَحِ اللّهُ لَكُمْ في الحمّة وَإِذَاقِيْلَ الْشُرُوا قُوسُوا الى الصّدوة وغيسرب من احيرات فَالنَّثُرُوا وهي قراء و عسمَ الشِّيس فيهما يَرْفع اللهُ الَّذِيْنَ امَنُوْامِنَكُمْ لِلهَ عَدِي دَلْتَ وَ لَوْ إِلَّذِيْنَ أَوْتُواالْعِلْمَدَرَجْتِ في الحِمَة وَاللَّهُ بِمَاتَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿ يَآيُهُا الَّذِيْنَ امَنُوٓ الدَّانَاجَيْتُمُ الرَّسُولَ اللَهُ عَلَى اللهِ عَنْ اللَّهُ عَلَيْكُمْ وَاللَّهُ عَلَيْكُمْ وَاطْهَرُّ الدُنُوكِم فَالنَّ لَمْ يَجِدُوا ما تنسد فور - فَإِنَّ اللهُ غَفُورٌ الساحاله رَّحِيْمٌ حكم يعسى فلا عليكم في الماجات من عير صدقةٍ ثُمَّ لُسح دلك بتوله عَالَتُهَقَّتُمُ بتخقيق الهمرنين والدال الثَّانية اللَّه وتسميمها وادحال العب بين المُسمِّنة والأحرى وتـركـ اي احنت س أنْ تُقَدِّمُوالبَيْنَ يُدَّى بَحُولكُمْ صَدَقَتٍ ليعقر فَإِذْ لَمْ تَفْعَلُوا السَّدَة وَتَابَاللَّهُ عَلَيْكُمْ رح حَمَّ عَلَى ذُومُوا الصَّلُوةَ وَالزَّلُوةَ وَأَطِيْعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ أَى دُومُوا الله وَاللَّهُ خَبِيرٌ الْمُعَمَّاتُعُمَّا وَاللَّهُ خَبِيرٌ المَّعْمَالُونَ اللَّهُ عَبِيرٌ المَّعْمَالُونَ ا

من المراق المرا سر گوشی تین آ دمیوں میں ایسی نہیں ہوتی کہ چوتھ اپنے علم کے امتبار ہے اللہ نہ ہوا ور نہ پانچ کی سر گوشی مگر ہے کہ چھٹاان میں اللہ ہوتا ہےاور نداس ہے کم اور نداس ہے زیادہ گمریہ کہ اللہ ان کے ساتھ ہوتا ہے جہاں کہیں بھی وہ ہول پھران سب کو قیامت میں ان کے کئے ہوئے اعمال بتلا دے گا ،القد تعالی ہر چیز ہے واقف ہے، کیا آپ نے ان لوگوں کوئمیں دیکھ کہ جن کوکا نا پھوسی ہے منع کر دیا گیا تھا ، پھر بھی وہ اس منع کئے ہوئے کام کوکر نے بیں اور آپس میں گناہ کی اورظلم وزیادتی کی اور پیغیبر کی نا فر مانی کی سرگوشیاں کرتے ہیں (اور) وہ یہود ہیں رسول اللہ ﷺ کے ان کواس کا نا پھوسی ہے منع فر مادیا تھا جو کہ وہ کیا کرتے تھے، یعنی مومنین کی طرف و کھے کر چیکے جاتیں کرتے تھے، تا کہ مومنین کے ول میں شک ڈالیس ، اورا ہے نبی جب وہ آپ کے پاس آتے ہیں تو آپ کوان لفظوں میں سلام کرتے ہیں جن لفظوں میں التدين بين كياءاوران كاوه افظ السَّامُ عبلَيكَ ہے بعني آپ پرموت ہو اوروہ آپس ميں كہتے ہيں كه الله تعالیٰ جميں

اس سلام پر جوہم کرتے ہیں سزا کیوں نہیں دیتا؟ اور بیر کہوہ نبی نہیں ہے،اگروہ نبی ہوتا تو (املات ی ضرورہم کو ًرن ر عذاب کردیتا)ان کے لئے جہنم کافی ہے جِس میں بیرجا نمیں گے سووہ بُراٹھ کا نہ ہے اے ایمان والو! جب تم سرگوشیاں کروتو بیہ سر گوشیال گناہ اور ظلم وزیادتی اور پیٹمبر کی نافر مانی کی نہ ہوں بلکہ نیکی اور پر ہیز گاری کی سر گوشیاں کرواوراس اللہ ہے ڈرتے رہو جس کے پاستم سب جمع کئے جاؤگے گناہ وغیرہ کی سرگوشیاں شیطانی کام ہیں اس کے فریب کی وجہ ہے، جس ہے اہل ایمان کو رخ پنچ گووه الله کی اجازت اوراراده کے بغیران کو کچھ بھی نقصان نہیں پہنچا سکتا اورا بیمان دالوں کو جا ہے کہ الله ہی پر بھروسہ رکھیں اے ایمان والو! جب تم سے کہا جائے کے مجلس میں جگہ کشادہ کرلو آپ بیٹھ لاتیا کی مجلس میں یا ذکر کی مجلس میں تا کہ تمہارے یا س (بعد میں) آئے والابھی بیٹھ جائے ،اورایک قراءت میں مجلس کے بجائے مجالس ہے، تو کشاد گی کرنیا کروتو اللہ تعالی تمہارے لئے جنت میں کشادگی فر ما کمیں گے اور جبتم ہے بیکہا جائے کہ نماز وغیرہ پاکسی بھلے کام کے لئے کھڑے ہوجاؤتو کھڑے ہوجایا کرواورا یک قراءت میں (ف انشُزُوا) میں دونوں (بعنی شین اورزا کے ضمہ کے ساتھ ہے) اور التدتع لی تم میں ہے ایمان والوں کے اس حکم قیام کی اطاعت کی وجہ ہے اوران لوگوں کے جن کوعلم عطا کیا گیا ہے جنت میں درجات بلندفر مائے گا اور جو کیجھتم کرتے ہواللہ اس سے پوری طرح باخبر ہے، اے ایمان والو! جب تم رسول سے سر گوشی (تنہائی میں مشورہ) کرنا جا ہوتو اپنی سر گوشی ہے پہلے فقراء کو سیجھ صدقہ دیدیا کرو بہتمہارے حق میں بہتر اور تمہارے گناہوں کے لئے یا کیزوتر ہے، ہاں اگر صدقہ کرنے کی چیز نہ یا وَ تو اللّٰہ تعالیٰ تمہاری سر گوشی کو بخشے والا اور مبربان ہے بعنی بغیرصدقہ کے تمہارے سر گوشی کرنے میں کوئی حرج نہیں ہے پھریتھم اللہ تعالیٰ کے تھم أأشف فَتُنفر ہے منسوخ ہو گیا ، دونوں ہمزوں کی شخفیق اور د دسر ہے کوالف سے بدل کر اور دوسر ہے کی تشہیل کے ساتھ اور مسہلہ اور غیر مسہلہ کے درمیان الف داخل کر کے اور ترک اد خال کر کے کیاتم اپنی سرگوشی ہے پہلے فقراء کے لئے صدقہ نکا لئے ہے ڈر گئے، پس جبتم نے بیند کیا لیعنی صدقہ نہ دیا اور اللہ نے بھی تمہیں معاف کردیا اور تم پراس کے وجوب سے رجوع کرے ، تو اب نماز دں کو قائم رکھو، اور زکو ۃ ادا کرتے رہواور اللہ اور اس کے رسول کی اطاعت کرتے رہو ، یعنی اس کی یا بندی رکھو، جو کچھتم کرتے ہواللداس سے باخبر ہے۔

عَجِقِيق ﴿ لَيْهِ اللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّا

ب، النَجوى، اَلتَّحدُّتُ سِرًّا چَيكِ چِيكِ باتيس كرنا، كانا يهوى كرنا، نَجوى ثَلَيْةٍ مِن اضافة المعدر الى الفاعل ب، يها ل إلاً كے بعدوا تع ہونے والے جملے متنی متصل ہونے كى وجہ سے كل ميں نصب كے ہيں ، اور عموم حال ہے متنی ہيں ، اى مَا يُوْجَدُ مِن هَذِهِ الْاَشْيَاءَ إِلَّا فِي حَالٍ مِنْ هَذِهِ الْاحْوَالِ.

فِيْ وَكُنَّ وَاللَّهُ اللَّهِ اللَّذِينَ نُهُوا اللَّح مِيآيت يهوداور متالقين كي بار على نازل مولى ـ

چُوُلِی : ومعصیت الرسول یهان اورآئنده تاء مجروره (لمی) تاء کے ساتھ لکھا گیا ہے حالت وقف میں بعض قراء هاء پر وقف کرتے ہیں اور بعض تاء پر الیمن وصل کی صورت میں تاء پر متفق ہیں۔ فِيُولِكُمْ : أَنْشُورُوا تُمَ اتُح كَفِر _ بو(ض،ن) امرجع مُذكرها ضر_

تَفَيْايُرُولَاثِينَ

شان نزول:

اسباب نزول ان آیات کے چندوا قعات ہیں:

🛈 اول واقعه:

آپ ﷺ نے مدین چھنچ کرسب ہے بہلا جو سیاسی قدم اٹھایا وہ بیٹھا کہ بہود اورمسلمانوں کے درمیان معاہدہ صلح فر مایا تا کہ مدینہ کے یہود کی طرف سے اطمینان ہوجائے کیونکہ مشرکین مکہ کی جانب سے ریشہ دوانیاں رہتی تھیں اور ہمہ وقت خطرہ رہتا تھا، کہیں ایسا نہ ہو کہ دوطرفہ پریشانی میں مبتلا ہوجائیں ،گرصلح کے باوجود یہوداپنی نازیباحرکتوں سے بازنبیں آتے تھے، یہود جب سی مسمان کود کیھے تو اس کو دہنی طور پر پریشان کرنے کے لئے آپس میں سر جوڑ کر کھسر پھسر کرنے لگتے اوراس کی طرف د مکھتے جاتے اوربعض ادقات آنکھ دغیرہ ہے اشارہ بھی کرتے تا کہ سلمان پیسمجھے کہ ان کے خلاف یا اسلام کے خلاف کوئی سازش ہور ہی ہے، آنخضرت ﷺ انے یہودکواس نازیباح کت ہے منع فرمایا مگروہ بازندآئے ،اس پر بیآیت اَلَمْ تَوَ اِلَى الَّذِيْنَ نُهُوًّا عَنِ النَّجُواى الخِ تازل بولَّى۔

🕜 دوسراواقعه:

اس طرح منافقین بھی اسلام اورمسلمانوں کونقصان پہنچانے کے لئے باہم کانا پھوی اور سرگوشی کرتے تھے، اس پر بیآیت إِذَا تَنَاجَيْتُمْ فَلَا تَتَنَاجَوْا الْحِ اور إِنَّمَا النَّجُواى الْح تارَل ، ولَّ _

٠٥ (مَزَم بِهَاشَرَ) ٢٠

🕝 تيسراواقعه:

یبودآپ ﷺ کی خدمت میں حاضر ہوتے تواز راہ شرارت بجائے السسلام علیکھر کہنے کے السسام علیکھر کہتے . سرم کے معنی موت کے بیں۔

🕜 چوتھاوا قعہ:

من نقین بھی ای طرح کہتے تھے،ان دونوں واقعوں پر وَإِذَا جَاءُ وْكَ حَبَّوْكَ نازل ہوئی،اورا، ماہن کثیر نے ا، ماحمد کی روایت سے یہ کی نقل کیا ہے کہ یہوداس طرح کر کے نفیہ طور پر کہتے گو لا یُعَذِّبُنَا اللّٰه بِمَا نقُولُ لِیمُ اَرْبَمُ نے یہ گزوی ہے تو ہم پرعذاب کیوں نہیں آتا؟

🙆 پانچوال داقعه:

ایک مرتبہ آپ مجد کے صفہ میں تشریف رکھتے تھے اور مجلس میں مجمع زیادہ تھا چند صحابہ جوغ وہ بدر کے شرکاء میں سے تھے آئے تو ان کو کہیں جگہ نہیں میں اور ضابل مجلس نے جگہ میں گنجائش نکالی کہ ال الربیٹے جاتے جس سے جگہ نکل آئی، جب آپ نے بید صورت حال دیکھی تو بعض آ دمیوں کو مجلس سے اٹھنے کے لئے فر مایا، اس پر منافقین نے طعن کیا کہ بیکوئی انساف کی بات ہے؟ اور آپ نے بیکی فر مایا: اللہ تع لی اس شخص پر رحم کرے جو اپنے بھائی کے لئے جگہ کھولدے، سولوگوں نے جگہ کھول دی، اس پر آیت یک انٹیکا الّذین آمنی افاد الذات کی انگر تفس سے وا النے نازل ہوئی۔ (معادہ ملعث)

🕥 جيھڻاواقعه:

بعض اغنیاء آپ کی خدمت میں حاضر ہوکر بڑی دیر تک آپ ہے سرگوشی کیا کرتے تھے اور فقراء کو استف دہ کا موقع کم ملتا تھا، آپ کوان لوگوں کا دیر تک بیٹھنا اور دیر تک سرگوشی کرنانا گوار گذرتا تھا، اس پر بیآیت اِذَا نَاجَیْدُتُمُ الْرَّسُوْلَ ، زل ہوئی۔

🗗 ساتوال داقعه:

جب آتخضرت فیق این کے ستھ سرگوشی کرنے ہے پہلے صدقہ دینے کا تھم ہوا تو بہت ہے آدمی ضروری بات کرنے ہے بھی رک گئے ،اس پر بیآ بت اُاشفَقَنْ مُر نازل ہوئی۔ (معادف ملعصًا)

آیات ندکورہ اگر چہ خاص واقعات کی بناء پر نازل ہوئی ہیں جن کا ذکر اوپر شانِ نزول میں آچکا ہے، کیکن میہ بات طے شدہ ہے کہ آیت کا شانِ نزول کھی ہو، ہدایا ہے قر آنی عام ہوتی ہیں،اعتبار معنی کے عموم کا ہوتا ہے نہ کہ الفاظ کے خصوص کا۔

﴿ (اَمَّزَمُ بِهَالثَّلَ] >

خفیه مشوروں کے متعلق مدایات:

خفیہ مشورہ عموہ بخصوص اور راز دار دوستوں سے ہوتا ہے، جن پراطمین ان کیا جائے کہ اس راز کوکسی پر ظاہر نہ کریں گ،

اس لئے ایسے موقع پرایسے منصوبے بھی بنائے جات ہیں جن ہیں کسی پرظام کرنا ہے یا کسی کو آل کرنا ہے یا کسی کی امد ک پر قبضہ کرنا ہے وغیرہ وغیرہ جی تعالی نے ان آیات ہیں ارشاو فر ہ یا کہ اللہ تعالی اپنے علم اور سمج وبھر کے اعتبار سے تمہار سے باس موجود ہوتا ہے اور تمہاری ہر بات کو سنتا اور ہر حرکت کو و کچھ اور جانتا ہے آ رتم کوئی مجر ہانہ حرکت کرو گے تو اس کی سزا سے نہ نے سکو گے، آیت کا مقصد تو یہ ہے کہ تم کتنے ہی زیادہ یا کم سر وقی میں شریک ہو تی تعالی موجود ہوتا ہے، یہاں مثال سے نہ نے آدمی مشورہ کررہے ہوتا جو تعالی موجود ہوتا ہے میں اس میں اور پانچے آدمی مشورہ کررہے ہوتا جو تعالی موجود ہوتا ہے اور اگر پانچے آدمی مشورہ کررہے ہوتا ہے میں شایداس طرف اور اگر پانچے آدمی مشورہ کررہے ہوتا ہے اللہ کے نزد کے خال تا عدد پہند ہے۔

مسلمانوں کے لئے سرگوشی سے متعلق ہدایت:

بخاری اور مسلم وغیرہ میں حضرت عبد اللہ بن مسعود افغ قائفاً مَنائِ ہے دوایت ہے کہ رسول اللہ بلاق علیا نے فر مایا إذا کُ نُنُتُ مُر فَسَلتٰ فَلَا یَغَفَا ہَے رَجُلان دو نَ الآحر حَتْی یختلِطُوا بِالنَّاسِ فَاِنَّ ذَلِكَ یَخُونُ فَا لِیْنَ جَس جَگرَتُم تَیْنَ آ دمی بَدُ بَعْنَ آ دمی ہوتو دو آ دمی تیسرے کوچھوڑ کر باہم سر گوشی اور خفیہ با تیس نہ کروجب تک کہ دوسرے (تیسرے) آ دمی نہ آ جا تیس کیونکہ اس سے اس کی دل تھنی ہوگی۔

یا اُلّٰیہَا الّٰدِیْنَ آمَنُوْ الِذَا تَمَاحَیْتُمْ فَلَا تَنَاجَوْ اللّٰهِ فَم وَالْعُدُو اَنَ النح سابقة آیات میں کفارکونا جائز سرگوشی پرتنبید کی گئی میں اس آیت سے مسلمانوں کے لئے بھی ہدایت نکل آئی کہ وہ بھی اپنی سرگوشیوں اور خفیہ مشوروں میں اس کا دھیان رکھیں کہ اللّٰہ تعالی کو ہمارے سب حالات معلوم ہیں اور ہماری ہرگفتگو کا علم ہا ساتھ ارکے ساتھ میں کوئی بات فی نفسہ گناہ کی یا دوسروں پرظلم کی یا خلاف شرع کام کی نہ ہو بلکہ جب بھی آپسی مشورہ ہونیک کام کا ہو۔

یَا آیُکھا اللّذِیْنَ آمَنُوا إِذَا فِیْلَ لَکُمْرِ تَفَسَّحُوْا فِی الْمَجلِسِ اسے پہلی آیت میں اس چیز کو بیان فر مایا کہ جولوگوں کے درمیان تباخض اور تنافر کا سبب ہوتی ہے وہ تسناحی بالاثھرو العدو ان و المعصیة ہے، اور اس آیت میں اس چیز کو بیان فر مایا جو آئیں میں مودّت اور محبت کا سبب بنتی ہے مثلاً مجلس میں کشادگی بیدا کرتا، دوسروں کو جگہ دینا فل فل کر بیٹھنا، بیسب وہ با تمیں ہیں جن سے آئیں میں محبت اور مودّت بیدا ہوتی ہے۔

— ﴿ (مَ زُم بِسَالتَ إِنَ

ندكوره آيت كاشانِ نزول:

ابن الب حاتم نے مقاتل سے نقل کیا ہے کہ ایک جو کوآپ نظافی صفیص تشریف فرما تھے، جگہ تنگ تھی، آپ نظافی ابدر بین ک بہت اکرام فرماتے تھے، بجلس بحری ہوئی تھی، الل بدر میں سے چندلوگ آئے جن میں ثابت بن قیس بن ثناس بھی تھالوگ اپنی اپنی جگہ لے چکے تھے، یہ بدر بین حضرات آپ میں تھا المنبی ورحمهٔ السلّه و بسر کاته السلام علیات آپ میں مام کا جواب دیا پھران بدر بین حضرات نے قوم کو ملام کیا، قوم نے بھی جواب دیا، یہ حضرات اس امید پرکھڑ سے رہے کہ ان کے سل مکا جو اب دیا پھران بدر بین حضرات نے قوم کو ملام کیا، قوم نے بھی جواب دیا، یہ گراں گذری، چنا نچ آپ نے اپنے آس پاس والوں میں سے بعض سے فرمایا قُدریا فلان و با فلان چنا نچہ چندلوگ اٹھ گئے گر یہ بات ان کو ثناق گذری اور تا گواری کے آثار ان کے چہروں سے نمایاں ہونے لگے، منافقین بھی کہنے لگے کہ بیٹھے ہوؤں کو
اٹھا کر بعد میں آئے والوں کو بٹھا نا یہ کیسا انصاف ہے؟ اس واقعہ کے سلسلہ میں انڈرتھا ٹی نے ذکورہ آیت تازل فرمائی۔

(روح المعاني)

اس آیت میں دوسراتھم آ داب مجلس سے متعلق یہ ہے کہ اِذَا قِیْسلَ لَکُھُر انْشُزُوْا فَانْشُرُوْا لِیمَی جب تم میں سے کی اِذَا قِیْسلَ لَکُھُر انْشُرُوْا فَانْشُرُوْا لِیمَی جب تم میں سے کہا جائے کہ جہا جائے گئے ہاں آیت میں لفظ قبل مجہول استعال ہوا ہے ،اس کا ذکر نہیں کہ یہ کہنے والاکون ہو؟ مگرا حادیث صحیحہ سے معلوم ہوتا ہے کہ خود آنے والے خص کواسیخے گئے جگہ کرنے کے واسطے کسی کواس کی جگہ سے اٹھانا جائز نہیں ہے۔

صحیحین اور مسندا حمد میں حضرت عبدالله بن عمر کی روایت ہے کہ رسول الله بین افر مایا لا یہ قید میں السر بحل الر جُلَ مِن مَدِ مِن مَدِ الله مِن الله من الله الله من ا

اس سے معلوم ہوا کہ کسی کواس کی جگہ سے اٹھ جانے کے لئے کہنا، آنے والے شخص کے لئے تو جائز نہیں، اس لئے فل ہر بیہ ہے کہاں کا کہنے والا امیر مجلس یا جملس کا ہنتظم ہوسکتا ہے، تو مطلب آیت کا یہوا کہا گرامیر مجلس یا اس کی طرف سے کوئی ہنتظم کسی کو اس کی جگہ سے اٹھ جائے، اس کے کہلے مسلمت اور مضرورت کا نقاضہ بھی بہی ہوتا ہے۔

ینا نُنها الگذین امَنُوْ الذَا نَساجَیْتُ مُرالسَّ سُولَ فَقَدِّمُوْ ا بَیْنَ یَدَیْ نَجُو اکُمْرِ صَدَفَةً حفرت عبدالله بن عباس تفعَالْنَاتُهٔ النَّفِیُّ استَحَام کی وجہ یہ بیان کرتے ہیں کہ کچھ سلمان آپ ﷺ شائے کیے لیے تعلیم کی وجہ یہ بیان کرتے ہیں کہ کچھ سلمان آپ ﷺ شائے کیے تھے جس کی وجہ سے عام سلمانوں کو وقت ہوتی تھی ،اورعمومی مجلس کاحرج بھی ہوتا تھا ہر محض بیکوشش کرتا تھا کہ ہیں آپ

اس بوجھ کو بلکا کرنے کے لئے اللہ تعالیٰ نے بیشکل نکالی کہ جولوگ آپ بیٹھٹا سے تخلیہ میں باتیں کرنا جا ہیں وہ پہلے بچھ صدقہ کریں،حضرت علی تفعیانند کم النے ہیں کہ جب سے تھم نازل ہوا تو حضور بلاتا تھا نے مجھے ہے ہو چھا کہ کتنا صدقہ مقرر کیا جائے ، کیا ایک وینار؟ میں نے عرض کیا بیلوگوں کی قدرت سے زیادہ ہے، آپ بیٹھی نے فر مایا نصف وینار۔ میں نے عرض کیالوگ اس کی قدرت بھی نہیں رکھتے ،فر مایا پھر کتنا؟ میں نے عرض کیابس ایک جو، برابرسونا ،آپ نے فر مایا ہے علی انت زھید حضرت علی فرماتے ہیں کے قرآن کی اس آیت پرمیرے سوائسی نے ممل نہیں کیا ،اس تھم کے آتے ہی میں نے صدقہ پیش کیا اور ایک مسئلہ آپ ہے دریا فت کرلیا۔ (ابن حربر، حاکم، ابن المنذر، عبد ہیں حمید)

اس کے علاوہ کچھے منافقین کی شرارت بھی اس میں شامل ہوگئی کہ مخلص مسلمانوں کو ایڈ ایبنجانے کے لئے آپ بیٹی عالیہ سے علیحدہ سرگوشی کا وقت ما تنگتے تھے اور اس طرح مجلس کوطویل کردیتے تھے، زیدین اسلم نے فر ، با کہ بیآیت منافقین اور یہود کے بارے میں نازل ہوئی ہے، منافقین اور یہو دخلیہ کے بہانے آپ کا بہت ساونت ضائع کردیتے تھے، اور کہتے تھے کہ محمد تو کان کے کیچے ہیں، ہرا یک کی بات س لیتے ہیں،اس ہے مسلمانوں کو تکلیف ہوتی تھی،ان ہی وجوہ سے اللہ تعالی نے یا بندی لگاوی۔ (فتح القدیر شو کانی)

جب قرآن كريم ميں آپ ينتي الله الله على كرنے سے يہلے صدقہ كرنے كا تكم نازل ہوا تو حضرت على تَفِعَانَانُهُ تَعَالِينَ فرمات جي كدميرے ياس ايك دينار تفايس في اس كے دس درجم كر لئے اور ايك درجم صدقه كر كے آپ سے سر گوشی کر کے سب سے پہلے میں نے اس آیت پر عمل کیا ، حضرت علی تؤخانندُ تَغَالنَ اُن فر مایا کرتے تھے کہ قر آن كريم ميں ايك آيت اليي ہے كداس برند جھ سے پہلے سى نے عمل كيا اور ند بعد ميں عمل كرے كا ، اسلے كه بيآيت بہت جلدمنسوخ ہوگئی، قما دہ فرماتے ہیں کہ بیتھم ایک دن ہے بھی کم مدت باقی رہا، مقاتل بن حیان کہتے ہیں کہ دس دن تک ر ہا پھرمنسوخ ہو گیا ، ندکورہ تھم اگر چیمنسوخ ہو گیا گرجس مصلحت کے لئے بیتھم جاری کیا گیا تھا وہ حاصل ہوگئی مسلمان تواین دلی محبت کے نقاضے ہے ایسی مجلس طویل کرنے ہے اجتناب کرنے لگے اور منافقین اس لئے رک گئے کدان کے کئے مال خرچ کرنا گران گذرتا تھااوران کو یہ بھی خوف لاحق ہوا کہ اگر ہم مسلمانوں کے خلاف طرز اختیار کریں گے تو كبيس ايبانه موكه بهارا نفاق ظاهر موجائي

ٱلْمُرْتَرَ تَمْنَظُرُ إِلَى الْدِيْنَ تُوَلِّقًا شِمُ الـمُنَافِقُونَ قَوْمًا شِم اليَهُودُ غَضِبَ اللَّهُ كَالِيَهُمُ مَا هُمَ ال مُمافِقُونَ مِّنْكُمُّرُ سِنَ المُوسنِينَ وَلَامِنْهُمُ مِن اليَهُودِ بل سِم مُذَبُذَبُونَ وَيُحَلِفُونَ كَلَ الكَذِبِ اي قُولِهم أنهم سؤسنون وَهُمْ يَعَلَمُونَ ﴿ اللَّهِ مَا اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّ ---- = (نَظَزُم بِهَ الشَّالِيَّةِ عِلَى السَّالِيَّةِ عِلَى السَّالِيَّةِ السَّالِيَّةِ عِلَى السَّالِيّ

و ال

میں میں ہے۔ پیر جی بھی کا آپ نے ان لوگوں من فقوں کودیکھا؟ جنہوں نے اس قوم سے دوئی کی جن پراللہ کا غضب ، نازل ہو چکا ہے ،اور وہ یہود ہیں ، بیہ منافق نہتم میں سے ہیں یعنی موشین میں سے اور نہان میں سے لیعنی یہود میں ے بلکہ مذیذب بین جھوٹی فشم کھاتے ہیں بیٹی اس بات پر کہ وہ مومن ہیں حالا نکہ وہ (خود بھی) جانتے ہیں کہ وہ (اینی)اک شم میں جھوٹے ہیں اللہ نے ان کے لئے سخت عذاب تیار کررکھا ہے بلاشبہ جو بیہ نافر مانی کررہے ہیں بُرا کرر ہے ہیں ،ان لوگوں نے اپنی قسموں کوڈ حیال بنار کھا ہے لیعنی اپنی جان اور اپنے مال کے لئے ڈ ھال بنار کھا ہے سو تسموں کے ذریعہ موسین کوا ہے ساتھ جب دکرنے ہے لیعنی خود کوئل ہونے اورا بے مالوں کو لینے ہے بچائے ہوئے میں سوان کے لئے رسوا کر نے والا عذا ہے ہاان کے مال اور ان کی اولا داللہ کے عذا ہے بچانے میں پجھ کا م نہ آئیں گے (بُعصنی) اِغْلَاء ہے ہے بیتو جہنمی ہیں اس میں ہمیشہر میں گےاس دن کو یا دکرو جس دن اللّٰہ اٹھا کھڑا کرے گا تو اس کے سامنے بھی قشمیں کھائے ملیں گ کہ وہ موس میں جبیبا کہ تمہارے سامنے قشمیں کھاتے ہیں اور تستمجھیں گے کہ دنیا کے مانند ہم خزت میں ان کی شم ہے ان کو یجھ فائدہ ہو گا یقین مانو کہ وہی جھوٹے ہیں ان کے شیطان کی اتباع کرنے کی وجہ سے شیطان نے ان پر نامیہ حاصل کرلیا ہے اورانہیں اللّہ کا ذکر بھلا دیا ہے یہ شیطانی نشکر ہے اس ﴿ (زَمَزُمُ بِبَاشَ ﴿] > -

ے تبعین ہیں اس میں کوئی شک نہیں کہ شیطانی نشکر ہی خمارہ میں ہے ہے شک جولوگ اللہ اور اس کے رسول کی مختلفت کرتے ہیں کہی لوگ مختو ہیں بین ہیں اللہ تعالی لوٹ مخفوظ ہیں لکھ چکا ہے یا فیصلہ کر چکا ہے کہ بے شک میں اور میر سے رسول دلیل کے ذریعہ یا تلوار کے ذریعہ غالب رہیں گے، بے شک اللہ تعالی ہوازور آوراور غالب ہے اللہ پر اور قیامت کے دن پر ایمان رکھنے والول کوآ ہا اللہ اور اس کے رسول کی مخالفت کرنے والول ہے مجبت رکھنے والو (یعنی) تجی دوئی کرنے والو ہر گزنہ پائیں گے گوہ مخالفت کرنے والے ان کے لیعنی مومنین کے ب ہ دادے یا میٹ ہیں کہ بی ہوئی میان کے خاندان والے ہی کیوں نہ ہول بلکہ ان کو ضرر پہنچانے اور ایکان کی بابت ان سے قال کرنے کا مصاد کی ایک ہی ہے ہی گی یا ہی ہے بہی لوگ جوان سے تجی دوئی نہیں کرتے ہیں ، جیسا کہ صحابہ کی ایک جماعت کے لئے ایسا واقعہ چیش آیا بھی ہے بہی لوگ جوان سے تجی دوئی نہیں کر میے ہیں دوئی سے اللہ تعالی کرنے کا اور اللہ ان خور سے کی ہا ورجنہیں ایس جن کے قلوب میں اللہ تعالی نے ایمان کا بت کردیا ہا ورجنہیں ایس جن کی جاور اللہ ان کی طاعت کی وجہ سے راضی ہا وروہ اللہ کے تو اب سے خوش ہیں ، بین خدائی کشکر ہے جواس کے تعم کی ابتاع کو سے ان کی طاعت کی وجہ سے راضی ہا وروہ اللہ کی تو اب سے خوش ہیں ، بین خدائی کشکر ہے جواس کے تعم کی ابتاع کے ان کی طاعت کی وجہ سے راضی ہا وروہ اللہ کی تو اب سے خوش ہیں ، بین خدائی کشکر ہے جواس کے تعم کی ابتاع کی دوراس کی منع کردہ چیزوں سے اجتمال کرتا ہے آگاہ رہواللہ کی جماعت ہی کا میاب لوگ ہیں ۔

عَيِقِيق الرَّيْ لِيَسَهُ الْ الْفَيْسَارِي فَوَالِلْ

چَوُلِنَى ؛ اَلَسْمُرَ تَسَوَ اِلَى الَّذِيْنَ تَوَكُّوْ ا فَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ يَهُامِ مِتَانْف ہِمنافْقِين كَى حالت پراظهار تعجب كے لئے لا يا گيا ہے جو كہ يہود ہے دوتى ركھتے اور ان كى خير خواى كرتے تھے ، اور مسمانوں كے رازيہود يوں كو پہنچاد يا كرتے تھے بينہ خالص مسلمان تھے، اور نه كافر بلكه ان كا ايك سرا اسلام سے ملاہوا تھا اور دوسرا كفر ہے، اس لئے كه من فق بظاہر مسلمان تھے اور باطن كا فر، كو يا كه دوكشتيوں كے سوار تھے جس ميں ہلاكت يقينى ہوتى ہے۔

فَيْخُولِكُنَّ : تُولُّوا، تَولِّي عِيمِضارع جَمْعَ مُركَر مَا رَب وه لوك دوي كرت بيل-

فِيُولِكُ ؛ مَا هُمْ مِنْكُمْ وَلا مِنْهُمْ يهجمله ياتومتانقه عمايجر تَوَلَّوْا كَفاعل عال عدال عد

قِوَلَنْ ؛ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ يِجِلْهُ يَحْلِفُوْنَ كَامْمِر عَال إِ

فِيُولِكُ ؛ اَيْسَانَهُمْ جُنَّةً بِدونُولِ اِتَّخَذُوا كَمْفعول بِن ، مطلب بيه كدان منافقول نے اپن قسمول كواپے اوراپے مالول كى حفاظت كے لئے ڈھال اور وقابيہ بنار كھا ہے۔

فِيْوَلِنَى : مِنْ عَذَابِهِ يومذف مضاف كى طرف اشاره بـ

- ≤ [زَمَزَم بِبَلشَرْز] ≥

فِيْ فَلْنَ ؛ مِنَ الإغْنَاء ، شَيْنًا كِ بعد مِنَ الإغناء مُحذوف ان كراشاره كرديا كديد لَنْ تُغْنِي كامفعول مطلق ب أيْ لَنْ

تُغْنِيَ اغْنَاءً شيئًا.

قِوَلَى ؛ ويَحْسَبُونَ ، يَحْلِفُونَ كَاتْمِيرِفَاعُل عال عدال عد

فَيُولِنَى : اِسْتَحُودُ يامل كِمطابِق تعل ماضى ب، اى غَلَبَ واِسْتَوْلَى وه مسلط بوگيا، اس في قابوكرايه اِسْتِحُوادُّ عديم ، بروزن اِسْتِصْوَابٌ يوفلاف قياس باس لئے كرقياس استحاد ب، جيها كه اِسْتَعَادَ اور اِسْتَقَامَ واؤكوانف سے مدل كر

فَیُولِنَ ؛ لأَعْلِبَنَّ یه اُقسِمُ وَسَم محذوف کاجواب بھی ہوسکتا ہے اس کے اوپر لام شم داخل کیا گیا ہے ، اور بیھی ہوسکتا ہے کہ سکتب اللّٰہ قسم کے عنی میں ہواور لاغلِبَنَّ جواب قسم ہو۔

تَفَيْارُوتَشَيْحُ بَيْ

آلَسَمْ تَسَرَ إِلَى اللَّهَ بِينَ تَوَلَّوْ اقومًا غضِبَ الْلَهُ عَلَيْهِمْ إِن آیات پی اللّٰه تعالیٰ نے ان لوگوں کی بدھا کی اور انجام کارعذاب شدید کا ذکر فر مایا: جواللہ کے دشمنوں سے دوئی رکھیں گے، مَغْضُوْب عَلَیْهِمْ جن پر خدا کاغضب نازل ہوا وہ قرآن کریم کی صراحت کے مطابق یہود ہیں ، اور ان سے دوئی کرنے والے منافقین ہیں ، بیآیات اس وقت نازل ہو کورج پر شیس ، یہود کو در بیات اور ای سازشیں بھی عروج پر تھیں ، یہود کو در بید سے جلا وطن نہیں کیا گیا تھا۔

کفارخواہ مشرکین ہوں یا بہود ونصاری ، یا دوسرے اقسام کے کفار ، کسی مسلمان کے لئے ان سے دلی دوسی جائز نہیں ،
اس لئے کہ قرآن کریم کی بہت ہی آیات میں موالات کفار کی شدید مما نعت و غدمت وار دہوئی ہے اور جومسمان کسی غیرمسلم
سے دلی دوسی رکھے تو اس کو کفار ہی کے زمرے میں رکھنے کی وعید آئی ہے گرید بات یا در ہے کہ بیسب احکام دلی اور قبسی
دوستی کے متعلق ہیں۔

کفار کے ساتھ حسن سلوک، ہمدردی، خیرخواہی، ان پر احسان، حسن اخلاق سے پیش آٹا، یا اقتصادی اور تجارتی مع ملات ان سے کرنا دوئتی کے مفہوم میں داخل نہیں، رسول اللہ ﷺ اور صحابہ کرام کا تعامل اس پر شاہد ہے، البتہ ان سب چیز ول کی رعابیت ضروری ہے کہ ان کے ساتھ ایسے معاملات رکھنا جائز ہیں جوا ہے دین کے لئے مفٹر نہ ہوں اور نہ اسلام اور دیگر مسلمانوں کے لئے مفٹر نہ ہوں اور نہ اسلام اور دیگر مسلمانوں کے لئے مفٹر ہوں۔

اِنَّے خَدُوْ الیّمَانَهُمْ جُنَّةً ، أیسمانهم کوجمہور نے ہمزہ کے فتہ کے ساتھ پڑھا ہے یہ بین کی جمع ہے بمعنی سم لوگ قسمیں کھا کھا کر کہ وہ مسلمان ہیں مسلمانوں کی گرفت سے بچے ہوئے ہیں اور حسن رَسِّمَ کُلاللَّهُ مَعَالَیٰ اور ابوالعالیہ ریِحَمُ کُلاللَّهُ مَعَالَیٰ نے ہمزہ کے کسرہ کے ساتھ پڑھا ہے ، یعنی ان منافقوں نے اپنے ظاہری ایمان کوا پنے اور اپنے اموال کے لئے ڈھال اور وقاید بنار کھا ہے۔ یَوْمَ یَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِیْعًا فَیَحْلِفُوْنَ لَهٔ کَمَا یَحْلِفُوْنَ لَکُمْرَ مطلب بیے کہ بیمنافقین صرف دنیا بی میں اورصرف انسانوں بی کے سامنے جمو ٹی قسمیں نہیں کھاتے بلکہ آخرت میں خود اللہ جل شانۂ کے سامنے جمو ٹی قسمیں کھانے سے بازندر ہیں گے ، جھوٹ اور فریب ان کی رگ رگ اورنس میں اس طرح ہوست ہو چکا ہے کہ مرکز بھی بیان سے نہ جھوٹے گا۔

یدان سے نہ جھوٹے گا۔

لَا تَسْجِمُ أَفُومًا يُؤمِنُونَ مِاللَّهِ وَالْمَوْمُ الْآخِرِ يُوَادُّونَ مَنْ حَادَّ اللَّهُ ورَسُولَهُ ولَوْ سَكَانُوا آبانهم بهلي آيت ميں كفارومشركين سے دوئ كرنے والوں يعنی غير تلصين (منافق) مسلمانوں كاذكرتھا جن كے لئے غضب البي اور عذاب شديد كا ذكرتھا ،اس آيت ميں مونين تحلصين كا ان كے مقابل ذكر فرمايا كدوه كسى ايسے خص سے دوئى اور دلى تعلق نہيں ركھتے جواللہ كا فالف يعنى كا فرہے اگر چدوه ان كا باب يا بيٹايا بھائى يا اور قربى عزيز ہى كول ندہو۔

اس آیت میں دوباتیں ارشاد ہوئی ہیں ، ایک بات اصولی ہا ور دوسری امر واقعی ، اصولی بات بیفر مائی گئی ہے کہ
دین جن پر ایمان اور اعدائے جن کی محبت ، دو بالکل متضاد چیز ہیں ہیں جن کا ایک جگہ اجتاع کسی طرح قابل تصور نہیں
ہے ، یہ بات قطعی ناممکن ہے کہ ایمان اور دشمنان خدا اور رسول کی محبت ایک دل ہیں جمع ہوجا نہیں ، اسی طرح جن لوگوں
نے اسلام اور مخالفین اسلام سے بیک وقت رشتہ جوڑ رکھا ہے ان کو اپنے بارے ہیں اچھی طرح غور کر لینا چا ہے کہ وہ
فی الواقع کیا ہیں مومن ہیں یا منافق ؟ اگر ان کے اندر پھے بھی راستہازی موجود ہے اور وہ پھے بھی بیا حساس اپنے اندر
رکھتے ہیں کہ اخلاتی حیثیت سے منافقت انسان کے لئے ذکیل ترین رویہ ہے تو انہیں بیک وقت دو کشتیوں میں سوار
ہونے کی کوشش چھوڑ دینی چا ہے ، ایمان تو ان سے دوٹوک فیصلہ چا ہتا ہے مومن ر بتا چا ہتے ہیں تو ہر اس رشتہ اور تعلق کو تریز تر
قربان کردیں جو اسلام کے ساتھ ان کے تعلق سے متصادم ہوتا ہو ، اور اگر اسلام کے رشتے سے کسی اور رشتے کو عزیز تر

یہ تو ہے اصولی ہات ہگر اللہ تعالیٰ نے یہاں صرف اصول بیان کرنے پراکتفانہیں فرمایا بلکہ اس امر واقعی کوبھی مدعیان ایمان کے لئے نمونے کے طور پر چیش فرمادیا ہے کہ جولوگ ہے مومن تھے انہوں نے فی الواقع سب کی آنکھوں کے سامنے تمام ان رشتول کوکاٹ کر پھینک دیا جواللہ کے دین کے ساتھ ان کے تعلق میں حائل ہوئے۔

تمام صحابہ کرام کا بہی حال تھا، اس جگہ مفسرین نے بہت سے صحابہ کرام کے ایسے واقعات بیان کئے ہیں، اس کی نظیریں بدرواُ حد کے معرکوں میں ساراعرب و کیے چکا تھا، مکہ سے جو صحابہ کرام ہجرت کر کے آئے تھے وہ صرف خدا اور اس کے دین کی خاطرا پنے قبیلے اور اپنے قریب ترین رشتہ واروں سے لڑگئے تھے، حضرت ابوعبیدہ نے اپنے والدعبد اللہ بن جراح کوفل کیا، حضرت مصعب بن عمیر نے اپنے بھائی عبید بن عمیر کوفل کیا، حضرت عمر تفکلنا کہ اُلگائی نے اپنے مان موں عاص بن ہشام کوفل کیا عبد اللہ بن ابی منافق کے جیٹے عبد اللہ کے سامنے اس کے منافق باپ نے حضور کی شان مان خانہ کلمہ بولا تو انہوں نے آئخضرت میں اپنے باپ کوفل میں گنا خانہ کلمہ بولا تو انہوں نے آئخضرت میں جا جازت طلب کی کہ آپ اجازت ویں تو میں اپنے باپ کوفل

﴿ (مَرَمُ بِسَالِثَهِ إِنَّهُ الْمَالِيَةِ إِنَّهُ الْمَالِيَةِ إِنَّهُ الْمَالِيَةِ إِنَّهُ الْمَالِيَةِ إِنَّ

کر دوں ، آپ نے منع فر مایا حضرت ابو بمر کے سامنے ان کے والد ابوقحا فیہ نے حضور کی شان میں تیجھ گت خانہ کلمہ کہد دیا تو ارتم امت صدیق اکبرکوا تناغصه آیا که زور ہے طمانچہ رسید کیا جس ہے ابوقیا فیگر پڑے، جب آپ بیٹونٹیٹر کواس کی اطلاح ہوئی تو فرمایا آئندہ ایسانہ کرنا ،اس نتم کے بہت ہے واقعات صحابہ کرام کے ساتھ پیش آئے ان پرآیات نہ کورہ ناز پهوکس په

و ایسکه که مربسروح منفهٔ بیمان روح کی تفسیر بعض حضرات نے نورے کی ہے جومنجانب الله مومن کوملتا ہے اور وہی اس کے عمل صالح کا اور قلب کے سکون کا ذریعہ ہوتا ہے اور بعض حضرات نے روح کی تفسیر قر آن اور دلائل قر آن سے کی ہے کہ وہی مومن کی اصل طافت اور قوت ہے۔ (فرطبی، معارف ملعضا)



مرافع الخيرين المرافع المرافع

سُورة الْحَشْرِ مَدَنِيَّةُ ارْبَعُ وَعِشْرُونَ ايةً. سورة حشر مدنى ہے، چوبیس آیتیں ہیں۔

لِسْ عِرَاللَّهِ الرَّحْ مِن الرَّحِتْ عِرْسَبَّحَ لِلَّهِ مَافِي التَّمَوْتِ وَمَافِي الْأَرْضَ ال رَحْد و للأم مربدة وفي الأنيار سما ، تعليت بلاكثر وَهُوَالْعَزِيْزُالْكَلِيمُ بي سُمَة وصُعه هُوَالَّذِيْنَ ٱخْرَجَ الَّذِينَ كَفُرُوامِنُ أَهْلِ الْكِتْبِ هِم مُو النَّصِيرِ مِن النِّهِ و مِنْ دِيَارِهُمْ مس كبه المدينة لِأَوَّلِ الْحَشْرُ هُو حَشْرُهُمْ التي الشام والخِرُه أنْ خَلَاهُمْ عُمر رضي اللَّهُ تعالى عنه في سلافته التي حييزَ مَاظَّنَتْكُمْ أَبُّها المُؤمنُونَ <u>اُنْ يَخْرُجُواْ وَظُنُّوْاَ اَنَّهُمُ مَّالِعَتَهُمْ حَمُرُ انَّ حُصُونَهُمْ</u> وعَنَهُ به تَمَ الحرر مِّنَ اللهِ من عدابه فَاتَنْهُمُ اللهُ امره وعذابه مِنْ حَيْثُ لَمْرِيَّحْتَسِبُولُ لَم بَحُعْنُو سالهم س حهة الله سس وَقَذَفَ الله في فِي قُلُوبِهِمُ الرُّغَبُ سُلكون العيس وضمّه الخوف غنّل سيّدهم كغب بن الاشرف يُخْرِبُونَ بالتشديد والمحقيف بن أحربَ بُيُوتَهُمْ لِيسْقُنُوا مَا اسْتحسَنُوه سِه س حشب وغيره بِأَيْدِيْهِمْ وَأَيْدِي الْمُؤْمِنِيْنَ فَاعْتَبِرُوا يَأُولِي الْأَبْصَارِ، وَلُولَا أَنْ كَتَبَ اللَّهُ قصى عَلَيْهُمُ الْجَالُاءُ الحُرُوحِ مِنَ الوصْ لَعَذَّبُهُمْ فِي الدُّنْيَا ۚ عَافَتُلِ والسَّسَى كما فُعِل سَفُرَيطة بِن اليَهُ ودِ وَلَهُمْ فِي الْاِحْرَةِ عَذَابُ النَّالِ ﴿ ذَٰ إِلَى بِالنَّهُمْ شَاقُول حساسُوا اللهَ وَرَسُولَهُ * وَمَنْ يُشَاقِي اللَّهَ فَإِنَّاللَّهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ٩ لِهِ مَاقَطَعْتُمُ يَا سُنسمين مِّنْ لِيْنَةٍ حِدةٍ أَوْتَرَكْتُمُوهَا قَآيِمَةً عَلَى أُصُولِهَا فَبِإِذْنِ اللَّهِ اي حيَّر كُم مي ذلك وَ**لِيُخْرِي** بِالْإِدُن في القَطْعِ الْفُسِقِيِّنَ البِيهُ وذ مي اعْتَرَاضِهم بانَّ قطعَ الشَّحر المُثُمِر فسَادٌ وَمَا أَفَالَ رَدُ اللَّهُ عَلَى رَسُولِم مِنْهُمْ فَمَا أَوْجَفْتُمْ اسْرَعْتُمْ بِاسْسِمِينَ عَلَيْهِمِنْ رَائِدَة خَيْلٍ قَلَارِكَابِ ابل اى لم تُقَاسُوا فيه مشقَّة قَالَانَ الله يُسَلِّطُ رُسُلَهُ عَلَى مَنْ يَشَاءُ وَاللهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرُ وَالله عَلَى عَنْ الله عَنْ اللهُ عَلَى عَنْ اللهُ عَنْ اللهُ عَنْ اللهُ عَنْ الله عَنْ اللهُ عَنْ الله عَنْ اللهُ عَنْ اللّهُ عَنْ اللهُ عَنْ اللّهُ عَنْ اللهُ عَنْ اللهُ عَنْ اللهُ عَنْ اللّهُ عَنْ اللهُ عَنْ اللّه ويُحْتَصُّ به النبيُّ صلى اللهُ عليه وسلم ومَن ذكرَ معه في الايةِ الثانيّة بس الأصْنافِ الارْبَعَةِ على مَا كَانَ يُقْسِّمُه مِن أَنَّ لِكُلِّ متهم خُمْسَ الْحُمُس وله صلى الله عليه وسلم النَّاقي يَفْعَلُ فِيه ما يشاءُ

ف غيصى سنه المهاجرينَ وثَلَاثةً مِنَ الأنصارِ لفقرِهم مَّ**الْفَاءَّاللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ مِنْ اَهْلِ**الْقُراى كالصّفراء ووادى الفُرى وينبُع فَلِلْهِ يَاسُرُ فيه بِما يَشاءُ وَلِلرَّسُولِ فَلِذِى صاحب الْقُرْبِي قرَابَةِ السَّى صدى اللهُ عليه وسلم من سي هاشِم وبني المُطلبِ وَالْيَتْلَى اطْفَالِ المُسْلِمينَ الَّذينَ عَلَكَتْ ابْاؤُهُم فُقَراءُ وَالْمُسْكِيْنِ دوى الحاجة منَ المُسلِمينَ وَالْيِ السَّيِيلِ المُنْقَطِع فِي سَفرِه منَ المُسْلِمينَ اي يَسْتَجِقُه النبي والأربعةُ عَلى سَ كَانَ يُقَسِّمه سِ أَنَ لَكُلِّ مِن الأربعةِ خُمُسَ الحُمُس وله البَاقِي كُ**نُلًا** كي بمعنى اللَّام وأن مُقَدِّرَةٌ بعذها لِكُوْنَ الذي عنهُ القِسمةِ كذلك كُولَةً مُتَذا ولا لِينَ الْكُوْنِيَاءِ مِنَكُمْ وَمَا الْتُكُمُ اعْطاكم الرَّسُولُ بن الذي وغيره فَخُذُوهُ وَمَا لَهَا كُمُ عَنْهُ فَانْتَهُواْ وَاتَّقُوا اللهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ شَدِيْدُ الْحِقَالِ®َ لِلْفُقَرَّاءِ مُسْعَلِقُ بِمحدُوبِ اى اعْجَبُوا الْمُهْجِرِيْنَ الْذِيْنَ أَخْرِجُوْامِنْ دِيَارِهِمْ وَأَمْوَالِهِمْ يَنْبَغُوْنَ فَضْلَامِنَ اللهِ وَرِضُوانًا قَيَنْصُرُوْنَ اللهَ وَرَسُولُهُ أُولَيْكَ هُمُالِطْدِقُوْنَ ٩٠٠ الْمُهُجِرِيْنَ اللَّهِ وَرِضُوانًا قَيَنْصُرُوْنَ اللَّهَ وَرَسُولُهُ أُولَيْكَ هُمُالِطْدِقُوْنَ فسى ايسمسنهم وَالَّذِيْنَ تَبُوَّةُ الدَّارَ السمدِينَةَ وَالْإِيْمَانَ اى السفوه وهسم الأنسنسارُ مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّونَ مَنْ <u>هَاجَرَالِيُهِمْ وَلَايَجِدُونَ فِي صُدُوبِهِمْ حَاجَةً حسدًا مِّمَّا أُوتُولًا اى انْي النَّبِيُّ صلى الله عبيه وسبم المُه جرينَ</u> من أسُوال بني النَّضِير المُخْتَصَّةِ به وَيُؤْتِرُونَ عَلَى أَنْفُسِهِمْ وَلَوْكَانَ بِهِمْ خَضَاصَةٌ " خاجَة الى مَا يُؤثرُونَ به وَمَنْ يُوْقَ شَنْحُ لَفْسِهِ حَرْصَها على المال فَأُولِإِكَ هُمُّالِمُفَلِكُونَ ۞وَالْذِيْنَ جَآءُوْمِنَ أَبَعْدِهِمْ بِن بعدِ المُهاجِرِينَ والانتصار التي يوم القِيمة يَقُولُونَ رَبَّنَا اغْفِرَلْنَا وَلِإِخْوَانِنَا الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ وَلَاتَجْعَلْ فِي قُلُوبِنَا غِلًّا حَقْدَا لِلَّذِيْنَ امَنُوْارِيَّبَأَ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ۞

سے جو ہے۔ اس کی تعبی ہیں اس کی بیان کرتی ہے، الم اللہ کے نام ہے جو ہڑا مہر بان نہایت رحم والا ہے، آسان اور زمین میں جو ہی ہی ہے وہ اس کی تعبی ہیاں کرتی ہے اس کی تعبی ہیاں کرتی ہے، الم ذاکدہ ہے، اور من کے بجائے ما لا نا اکثر (یعنی غیر ذوی العقول) کو غلبہ دینے کی بناء پر ہے، وہ اپنے ملک انتظام میں عالب اور حکمت والا ہے، اور وہی ہے جس نے اہل کتاب کا فروں کو کہ وہ بولفیر کے یہودی تھے، مدید میں ان کے گھروں ہے پہلے ہی حشر میں نکالا ، ان کا بداخراج (مدید) سے خیبر کی جانب تھا، اور وہمراحشروہ تھا کہ جب حضرت عمر تفتی تفکی تفکی ان کوا ہے دور خلافت میں خیبر سے شام کی طرف نکالا تھا۔ آئے تابے وہ مراحشروہ تھی میں تیا م کی طرف نکالا تھا۔ آئے تابی کی اس کے گئی ہے۔

اے مومنو! تہہارے وہم وگمان میں بھی نہیں تھا کہ وہ نگلیں گے اور وہ بھی یہ سمجھے ہوئے تھے کہ ان کے قلع اللہ کے عذاب سے ان کی حف ان کی حف اور اس کے مانے عدال ہے اس سے خبرتا م عذاب سے ان کی حف ان کی خبر ہے اور حُس صُون اُللہ مَان کی حفاظت کریں گے مانے عداب ایس جگہ ہے آپڑا کہ ان کو (وہم) وگمان بھی نہ تھا، یعنی مومنوں کی جانب سے ، ہوگی ، مگر اللہ یعنی اس کا عذاب ایس جگہ ہے آپڑا کہ ان کو دول میں رعب ڈالدیا (رُعب) عین کے سکون اور اللہ نے ان کے دلوں میں رعب ڈالدیا (رُعب) عین کے سکون اور ضمہ کے ان کے دل میں بھی یہ بات آئی بھی نہ تھی اور اللہ نے ان کے دلوں میں رعب ڈالدیا (رُعب) عین کے سکون اور ضمہ کے اس کے دلوں میں رعب ڈالدیا (رُعب) عین کے سکون اور ضمہ کے اس کے دلوں میں رعب ڈالدیا (رُعب) میں کے سکون اور ضمہ کے اس کے دلوں میں رعب ڈالدیا (رُعب) میں کے سکون اور ضمہ کے اس کے دلوں میں رعب ڈالدیا (رُعب) میں کے سکون اور ضمہ کے اس کے دلوں میں رعب ڈالدیا (رُعب) میں کے سکون اور ضمہ کے اس کے دلوں میں رعب ڈالدیا (رُعب) میں کے سکون اور سے کے دلوں میں رعب ڈالدیا (رُعب) میں کے سکون اور ضمہ کے دلوں میں رعب ڈالدیا (رُعب) میں کے دلوں میں رعب ڈالدیا (رُعب) میں کے دلوں میں کے دلوں میں رعب ڈالدیا (رُعب) میں کے دلوں میں کے دلوں میں رعب ڈالدیا (رُعب) میں کے دلوں میں رعب ڈالدیا (رُعب) میں کے دلوں میں رعب ڈالدیا (رُعب) میں کے دلوں میں کے دلوں میں رعب ڈالدیا (رُعب) میں کے دلوں میں

س تھ ہان کے سر دار کعب بن اشرف کوئل کر کے اور وہ اپنے گھر ول کواپنے ہاتھوں سے اجاڑر ہے تھے (یُسحَسرِّ بُنوْ فَ) اَ حُورَبَ سے تشدیداور تخفیف کے ساتھ ہے، تا کہ وہ اپنی پسندیدہ چیز وں ہکٹزی وغیرہ کونتقل کرعیس ، اورمومنین کے ہاتھوں ہے اُجڑ وار ہے تھے،سواے دانشمندو! عبرت حاصل کروا گر القد تع لیٰ نے ان کے لئے جا، وطنی (یعنی وطن ہے نگلنا) مقدر نہ کردی ہوتی تو دنیا ہی میں اللہ ان کو تحل وقید کی سزادیتا جیس کہ قریظہ کے یہود کے ساتھ کیا گیا ،اور آخرت میں تو ان کے لئے آتا گ کا عذاب ہے ہی بیاس لئے ہوا کہ انہوں نے اللہ کی اور اس کے رسول کی مخالفت کی اور جو بھی اللہ کی مخالفت کرے گا امتداس کوشد بدعذاب دے گا ہے مسلمانوا تم نے جو تھجور کے درخت کاٹ ڈالے یا جنہیں تم نے کھڑے رہے دیا بیسب اللہ کے تھم سے تھا لیعنی اللہ تعالی نے تم کواس کا اختیار دیدیا تھا، اوراس لئے بھی کہ کا شنے کی اجازت دیکر فاسقوں (بیعنی بیہود) کوانقدرسوا کرے، ان کے اس اعتراض کے جواب میں کہ بچلدار در بنتوں کو کا ثنافساد ہے، اوران کا جو مال اللہ نے اپنے رسول کے ہاتھ لگا دیا ہے اے مسلمانو! ندتم نے اس پر گھوڑے دوڑا کے اور نداونٹ لیعنی تم نے اس مال کے لئے کوئی مشقت نہیں اٹھائی کیکن اللہ جس پر جا ہے اپنے رسول کوغالب کر دیتا ہے اور اللہ ہر چیز پر قادر ہے لہٰڈااس مال میں تمہاراحق نہیں اور وہ مال آپ بھی تھے اور ان لوگوں کے ہے خاص کیا گیا ہے جن حیار قسموں کا دوسری آیت میں آپ کے ساتھ ذکر کیا گیا ہے، جس کے مطابق آپ اس مال کو تقسیم فر مات تھے ، اس طریقہ پر کدان میں ہرایک کے لئے دمواں حصہ اور باقی آپ میلفائنتا کے لئے ہے اس میں آپ جو جا ہیں کریں جن نجہ اس میں ہے آپ نے مہا جرین کوعطا فر مایا اور فقراءانصار میں ہے تمین (آ دمیوں) کوسطا فر مایا ستی والوں جبیہا کےصفراءاور دادی القری اور پنتی کا جو مال اللہ تعالیٰ نے تمہارے لڑے بھڑے بغیرائیے رسول کے ہاتھ رگایا وہ اللہ کا ہے اس میں جس کے لئے جائے تھم فرمائے اور رسول کا ہے اور قرابت والوں کا ہے لیعنی بنی ہاشم و بنی مطلب میں سے نبی مینونتیج کی قرابت والوں کا ،اور تیبیموں لیعنی مسلمانوں کے ان بچوں کا جن نے آباء ہلاک ہو گئے ،اور و دفتا تی جیں ، اور مسکینوں کا یعنی مسلم نوں میں ہے۔ جتمندوں کا اور مسافروں کا لیعنی ان مسهمان مسافروں کا جواہیۓ سفر کو جاری نہ رکھ عمیس ، یعنی اس مال کے مستحق نبی بیٹی نظامتی ہیں اور جا رفریق ہیں جیسا کہ آپ تقسیم فرماتے تھے،اس طریقہ پر کہ جاروں کے مجموعہ کے دسوال حصداور باقی آپ بین ٹائیز کے لئے ہے تا کہ تمہارے و ولتمندوں کے ہاتھوں میں ہی مال گروش کرتا ندرہ جائے (تکیلا) کئی جمعتی لام ہاورلام کے بعد أن مقدر ہے (تکیلا) ے مذکورہ طریقہ برتقتیم کرنے کی علت کا بیان ہے اور رسول جو چھتہیں مال فی وغیرہ سے دیاس کو لےلواور جس سے رو کے رک جا وَاوراللّٰہ ہے ڈرتے رہوالقد تعالی سخت عذاب والا ہے!ان فقراء مہاجرین کے سئے (شاباشی ہے)جوان کے گھروں ہے اوران کے مالوں سے نکالدیئے گئے ہیں وہ اللہ کے فضل اور اس کی رضامندی کے طالب ہیں اور وہ اللہ کی اوراس کے رسول کی مدد کرتے ہیں (درحقیقت) یہی ہیں ہے لوگ اپنے ایمان میں اوران کے لئے جنہوں نے اپنے گھر (یعنی مدینه) میں اور ایمان میں ان ہے پہلے جگہ بنالی یعنی ایمان ہے الفت کر لی اور وہ انصار میں اپی طرف ہجرت کر کے

آ نے والول ہے محبت کرتے ہیں اور ان مہاجرین کو جو کچھ دیا جائے اس سے وہ اپنے دلوں میں بیٹی محسوس نہیں کرتے یعنی نبی میں نظامین نے مہر جرین کو بن نفسیر سے حاصل شدہ مال میں ہے جو کہ آپ بیٹھ نظامات کے لئے خاص تھا بہجھ دیدیا تھا، بلکہ اپنے او پران کوتر جیح و ہیتے ہیں گوخو د کواس مال کی نتنی ہی حاجت کیول نہ ہواور جو مخص اپنے تفس کے بخل ہے بیجایا گیا یعنی ہاں کی حرص سے وہی ہیں کا میاب لوگ اور وولوگ جوان کے تعنی مہاجرین وانصار کے بعد قیامت تک آئیں گے کہیں ہے کہ اے ہورے پرورد گارہمیں بخش دے اور ہمارے ان بھائیوں کو جوہم ہے پہلے ایمان لا بھے ہیں اور ایمان والوں کی طرف ے ہمارے ول میں کینہ نہ ڈال اے ہمارے پر وردگار بے شک تو شفقت اور مبر بانی کرنے والا ہے۔

جَِّفِيق ﴿ كِيْبُ لِيَبَ اللَّهِ لَا يَا اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللّلِهُ اللَّهُ اللَّالِمُ اللَّا اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ

مورة حشر انسھویں سورت ہے،اس کا دوسرانا م سورة النفیر ہے، یہ بالا تفاق مدنی سورت ہے۔

فِيْوَلِكُ ؛ بنو نضير بيقبيله حضرت بارون عَلَيْظَلافَوالنَّالَة كَى ذريت مِن عَنْقَال

قِيْوُلْكُ ؛ لِأُوَّلِ الْحَشْرِ لام بمعنى في ب اى في اول الحشر اوراام بمعنى عنديهي بوسكنا بجيراك لِدُلوكِ الشمس بين ا الله وقت لام توقیت کے لئے ہوگا، أوّل الحشر باضافت صفت الى الموصوف كيل سے ب، اى المحشر الاول. فِيُوْلِكُنُّ ؛ الى خَيْبَرَ سَجِي مِنْ خَيْبَرَ ہے۔

فَيُولِكُن : تَعَرِبهِ الْحَبُو ، النَّهُمْ ، مِن هُمْ أَذُ كااسم إمايعة اسم فاعل هُم اس كامفعول حصو نُهُمْ اسكافاعل ،اسم فاعل اسين فاعل اورمفعول في كرأت ك خرجي أن زيدًا قائم ابوه اوريكى بوسكتاب كد حصو نُهُمْ مبتداء مؤخراور مانِعَتْهُمْ خبرمقدم ،مبتداءا بی خبرمقدم سے ل کر اڈ کی خبر ہو۔

فِيُوْلِكُ : خُصُوْلُ، حِصْنُ كَجْمَع بِجَمَعَى قَلْعِـ

فِيْكُولْكُنَّ ؛ مِنْ أَخْرَبَ اس كالْعَلَق تخفيف سے ب،مطلب بيكه يُسخوبُون كوتخفيف كي ساتھ پر هيس تو أخرَبَ سے :وگا ،اور ا كرتشديد كے ساتھ پڑھيں يُخرِبُونَ تو (الفعيل) ہے ہوگا۔

هِ فَوْلَكُمْ ؛ لَوْ لَا أَن كَتُبَ اللَّهُ عَلَيْهِم ، أَن مصدريه ٢٠ أَن مع اليِّي ابعدكم معدركى تاويل مين بوكر مبتدا ومحلام فوع ہاس کی خبر وجو ہامحذوف ہے اور وہ مَوْجُوْدٌ ہے ای لو لاکتاب الله علیهم موجود لَعَذَبهم لعذبهم لولا كا

هِ وَأَلَّىٰ : الجلاءُ اى الحروج من الوطن مع الاهل و الولد، جلاولمني كہتے ہيں مع الل وعيال كے وطن چھوڑكر فيلے جانا، بخلاف خروج کے کہ وہ تنہا اور مع اہل وعیال دونوں طریقوں ہے ہوسکتا ہے۔

فِيُولِكُنَّ ؛ اللِّينَةُ يه لِيْنُ عَيْمُتُنْ عِيمَه مَجُور كَتِي بِين (اى النَّخْلَةُ الكَرِيْمَةُ) اس كَ بَعَ الْيانُ آتَى عِد

ھ[نوئزم پتبلشرز] ہ-

قِحُولَكُمْ : ولِيُحْزِى الْمُفَاسِقِينَ واوَعاطف بِمعطوف عديه محذوف بِ تَقدريم إرت بدب أدِنَ فِي قَطْعِها لِيُعجر المؤمنين ويُحَزى المُنَافِقِيْنَ.

فِحُولَ إِنْ اللَّهُ فَوَاءِ الْمُهَاحِرِيْنَ الدِّنَوية بَدَرِيلًا لَمُقَرَّاء كَاتَعَالَ تَعَالَ أَعَالَ عَامِهُ وَفِي مِنَا لِدِها مُحَلِّي كَراسة ب علامة كلى في اعْجَلُو العلى محذوف ما ناج، تقدريم رت بيبوكي اعْمحنوا لللْفقواء الله هَاحويْنَ الْدِيْنِ أَحُوجُوا (الآية) اور بیاظہہ رتعجب علی سبیل المدح ہے، یعنی تعجب ہے کہ مہاجرین نے حیرت آئلینہ کا رنامہانجام دیا کہا بنا گھریارعزیز وا قارب ، مال ودولت ،غرضیکہ ابتداوراس کے رسول کی محبت میں اپنا سب سیجھ تیا گ دیا اور ب یارو مدد گارغریب الوطن ہوکر دیار فیرمیں مقیم ہو گئے، لِلْفُقَرَاء كُوعل محذوف مت متعلق كرنے كافائدويه ببوگاكه دى الفّريبي ئے كُنْ تَقْرَشُرط نه ببوگا، بلكه مال نتيمت (فَيُّي) میں ذوی القربی کاحق ہوگا خواہ و دمختاج اور حاجبتند ہوں یا نہ ہوں ، یہی مسلک اہام شاقعی رحماًلماندائی تعالیٰ کا ہے مفسر مدام چونکہ شافعی المسلك بين اس لئے ای کے پیش نظر اغم حکو افعل محذوف ما تاہے تا كه لسلفقر اء كو ذى السقو مى سے بدل قرار شددينا يز ہے، د وسری صورت بید که للفقر ا ، کوذی القرلی سے بدل قرار دیا جا ہے جیسا کہ امام اعظم اوحنینیہ للفقو اء کوذی القرلی اوراس کے ما جعد سے بدل الکل قرار دیتے ہیں جس کا مطلب ہیہ ہے کہ فقر اور جاجت مع دو القوسی تمام ندکورین کے لئے شرط ہے اس کا مطلب بيه ہوگا كەذ والقرنى ميں جونا داراورغريب ہوں گ تو و دمال فني (نتيمت) ميں حصہ دار ہوں گ ورند ہيں۔ فِيُولِكُني: وَاللَّذِيْنَ تَبَوَّه و الدّار مدح انسارك ليَّ كلام من نف ب ياس كاعطف للفقراء يربهي كريخ بين ، الَّذين مذكوره دونول صورتول ميں يا تو مبتداء ہوگا يا پھراس كا مطف لملفُقراء ير ہوگا۔ اس صورت ميں المذين تحل جرميں ہوگا كه المذين مبتداء بوتويُجبُونَ مَن هَاخَوَ الميهم جمله بوَراس كَ فَهِ بولَّ لـ

فَيُولِكُني : ألفُوه بداش روي كه ألايمان على محذوف كي وجد مصوب بد

تِفَسِّيرُوتِشِ حَ

ربط:

سابقد سورت میں من فقین کی بیبود کے ساتھ دوتی کی مذمت کا بیان تھا، اس سورت میں بیبود ہر دنیا میں جلاوطنی کی سز ااور آ خرت می*ں شدیدعذ*اب کا ذکرہے۔

شاك نزول:

آنخضرت التفاقظ جب مدینه طیبه تشریف لائے تو آپ نے سیاس اقد ام کے طور پرسب سے پہلا کام بیرکیا کہ قبائل بمہود کے س تھے جن میں بنونضیراور بنوقر یظہ اور بنوقینقاع بھی شامل تھے تحریری معاہدہ ُ صلح فر مایا جس کی روہے یہود اورمسممان آپس میں

ایک دوسرے کے حدیف ہو گئے، یہ معاہدہ مندرجہ ذیل چودہ دفعات پر مشتمل تھا، جو بھرت مدینہ کے پونچ ماہ بعد ہوا تھا 🛈 قصاص اورخون بہا کے جوطریقے قدیم زمانہ ہے جلے آ رہے ہیں وہ عدل اور انصاف کے ساتھ بدستور قائم رہیں گے۔ 🕑 ہرً ً ہروہ کواینی جماعت کا عدل وانصاف کے ساتھ فیدیہ دیتا ہوگا۔ 🍘 تللم اوراثم اور عددان اور فساد کے مقابلہ میں سب متفق رہیں گے۔ 🏵 کوئی مسلمان کسی مسلمان کوکسی کا فر کے مقابلہ میں قبل کرنے کا مجاز نہ ہوگا اور نہ کسی مسلمان کے مقابلہ میں کسی کا فرکے سی قتم کی مد د کی اجازت ہوگی۔ ﴿ ایک ادنیٰ مسلمان کو بناہ دینے کا دبی حق ہوگا جوایک بڑے رتبہ کے مسلمان کو ہوگا۔ 🛈 جو یہودمسمانوں کے تابع ہوکرر ہیں گےان کی حفاظت مسلمانوں کے ذمہ ہوگی 🎱 تحسی کا فرا درمشرک کو بیات نہ ہوگا کہ مسلمانوں کے مقابلہ میں قریش کے نسی کی جان یا مال کو پناہ دے سکے یا قریش اور مسلمانوں کے درمیان حائل ہو۔ 🕜 بونت جنگ یہودکومسمانوں کاساتھ جان و مال ہے ساتھ دینا ہوگا ہمسلمانوں کے خلاف مدد کی اجازت نہ ہوگی۔ 🍳 نبی يَعْنَانِيَةً كَاكُونَى وَثَمَنِ الرَّمِدِينَةِ بِرَحَمَلُهُ كَرِيتَ وَيَهُوهِ بِرَآبِ مِنْفَقِقَةً كَي مِدولا زم بولَّي. 🕑 جوقبائل اس عبد ميں شريك بيں اً ران میں ہے کوئی قبیلہ عبیحد گی اختیار کرنا جا ہے تو آپ میلانی تا کی اجازت ضروری ہوگی۔ 🕕 تسی فتنہ پرداز کی مددیا اس کوٹھ کا نہ د ہے کی اجازت نہ ہوگی اور جو محض کسی بدعتی کی مدد کرے گا اس پر اللّٰہ کی لعنت اورغضب ہے، تیا مت تک اس کا کوئی عمل قبول نہ ہوگا۔ 🛈 مسلمان اگر کسی ہے صلح کریں گے تو یبود کو بھی اس صلح میں شریک ہونا ضروری ہوگا۔ 🕑 جو کسی مسلمان کونگ کرےاورشہا دیت موجود ہوتو قصاص لیا جائے گا، اللہ یہ کہ مقتول کا ولی دیت وغیرہ پرراضی ہوجائے۔ 🕝 جب بھی نزاع یا كسى بين اختلاف رونما بوكاتواس مين آپ يَوْنَ عَبِي عاج عرجوع كياجائكا - (البدايه والمهايه ملعضا) قبیلہ بنونضیرمدینه طبیبہ سے دومیل کے فاصلہ پر رہتا تھا ، ای دوران عمر و بن امیضمری کے ہاتھ سے قبیلہ بنی عامر کے دو كافرول كِ قُلْ كاليك واقعه پيش آيا، بنوعامرے آنخضرت ﷺ كامعامدہ تھا۔

بيرمعو نداورعمروبن امية صمري كاواقعه:

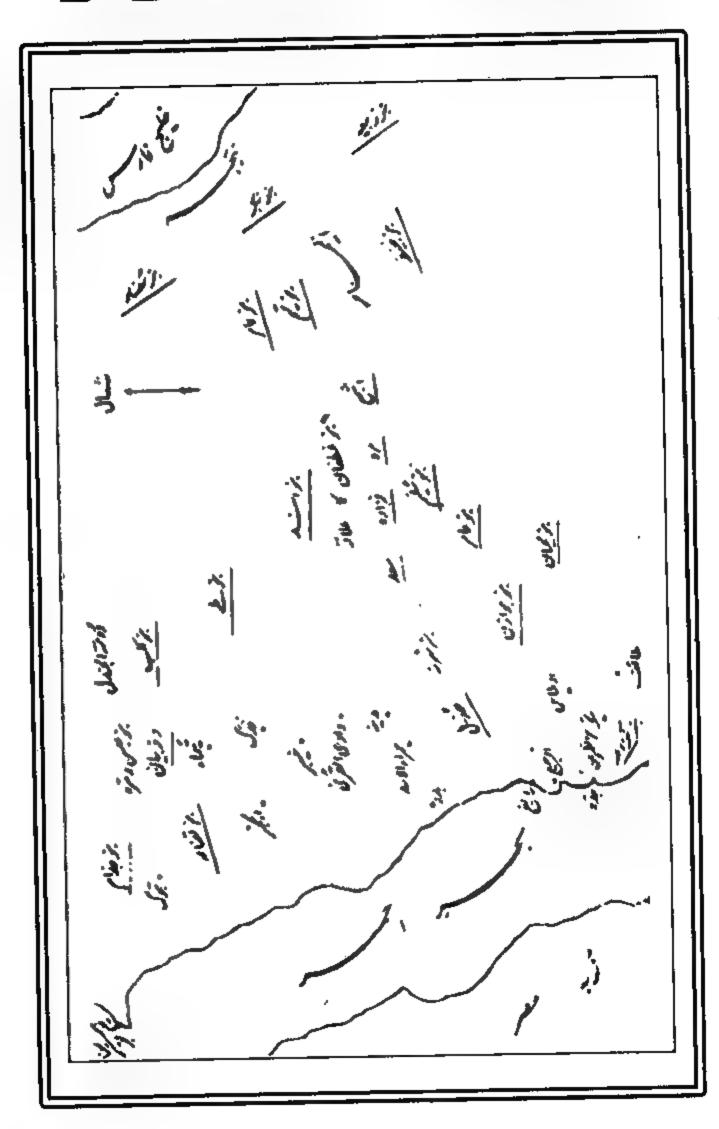
بیرمعو نہ کا واقعہ جو کہ تاریخ اسلام میں بڑا در دنا ک واقعہ ہے اس کامختصر حال اس طرح ہے کہ حادثہ رجیج کے چندروز بعد ہی ماوصفر میں ابوالبراء عامر بن مالک بن جعفر نے رسول اللہ ینفی کا بیات میں تبلیغ اسلام کے لئے صحابہ کرام رَصَوْلِنَهُ مَعَالِطَنَهُمْ كَى ایک جماعت بھیجنے كى درخواست كى ،آتخضرت مَلِقَ عَلَيْهُا نے ستر صحابہ كرام رَضِوَلِنَهُ مَعَالْطِنْهُمْ كَى ایک جماعت ان کے ساتھ کردی بعد میں معلوم ہوا کہ بیچض ایک سازش تھی جو کہ مسلمانوں کونٹل کرنے کے لئے تیار کی گئی تھی ، چنانچہوہ اس میں کامیاب ہو گئے، ان قراء کی جماعت میں ہے صرف عمرو بن امیضمری کسی طرح نیج نکلنے میں کامیاب ہوئے، ا تفال ہیے ہوا کہ مدینہ طبیبہ آنے کے وقت راستہ میں ان کو دوکا فر ملے عمرو بن امیہ ضمری رَحِعَاٰنَانُدُتَعَاٰلِحَةُ چونکہ اپنے انہتر ساتھیوں کا بےرحمانہ آل پی آئکھوں ہے دیکھ چکے تھےان کاغم وغصہ کتنا ہوگا ہر شخص سمجھ سکتا ہے،اس لئے انہوں نے یہ نھان لیا کہان ہےا ہے انہترمقتول ساتھیوں کابدلہ لینا چاہئے ، چنانچے عمرو بن امیہضمری نے موقع یا کران دونوں کافروں کولل - ﴿ [وَمَزَمُ بِهَ الشَّرِنَ] 5کر دیا بعد میں معلوم ہوا کہ بید دونوں آ دمی قبیلہ بنی عامر کے تنے جن سے رسول ابقد بلاق فیٹی کا معاہد ہُ صلح تھا، جب آنخضرت پر تنظیلا کواس کی تعطی کاعلم ہواتو آپ نے معاہد ہ اوراصول شرعیہ کے مطابق ان دونوں کی ویت (خونبہا) ادا کرنے کا فیصلہ فر مایا اوراس کے لئے مسلمانوں سے چندہ کیا اس سلسد میں بنونفیر کے پاس بھی جانا ہوا۔ (اس کٹیر، معارف)

يېود کا تاریخی پس منظر:

عرب کے یہود یوں کی کوئی مستند تا ریخ د نیامیں موجو زنبیں ہے ، جو پہھی ہے تھ ان ہی کی زبانی روایات ہیں ، درحقیقت جو سی کھ ثابت ہے وہ بیہ ہے کہ جب + ے میں رومیوں نے قلسطین میں یہود یوں کا قبل عام کیا اور ۱۳۲ میں ان کوسرز مین فلسطین سے نکالدیا،اس دور میں بہت ہے یہودی قبائل بھا گ کر حجاز میں پناہ گزیں ہو گئے، یہاں آ کرانہوں نے جہاں جہاں چھنے اورسرسبز مقامات و کھے وہاں آباد ہو گئے اور پھر رفتہ رفتہ اپنے جوڑ قرڑ اور سازشی فطیت کے ذیر بعیدان مقامات پر بیورا قبصنہ جمالیا،ایلہ،مقنا، تبوك، تيمااوروادي القري،فدك،اورخيبريران كاتسلط اى دور مين قائم بهوا،اور بن قريظه، بن نضيراور بن قبيقاع بهي اي دورمين آ کریٹر ب برقابض ہو گئے ، بیلوگ جب مدینہ میں آ کرآ باد ہوئے تو اس دفت دوسر ہے سرب قبائل بھی آ باد تھے جن کوانہوں نے د بالیا،اورعملاً اس علاقہ کے مالک بن بیٹھے،اس کے تقریباً تین صدی بعد ۴۵ء میں یمن کے اس سیلا بعظیم کا واقعہ پیش آیا جس کا ذ کرسورۂ سباکے دوسرے رکوع میں گذر چکا ہے اس سیاا ب کی وجہ ہے تو م سبا کے مختلف قبیعے یمن سے نکل کرعرب کے اطراف میں پھیل گئے ان میں سے غسانی شام میں اور بی خزاعہ مکہ اور جدہ کے درمیان اور اوس اور خزرج بیٹر ب میں جا کرآ با دہو گئے، یٹر ب پر چونکہ یہودی چھائے ہوئے تھےان ہی کامکمل کنز ول تھا ،اس لئے انہوں نے اول اول اوس وخزرج کی دال نہ گلنے دی ، جس کی وجہ سے بیدوونوں قبیلے جارولا جار بنجر اور سنگلاخ زمینوں بربس گئے ، آخر کاران کے سرداروں میں ہے ایک شخص اپنے غسانی بھائیوں سے مدد لینے کے لئے شام گیا اور وہاں ہے ایک نشکر لا کران یمبودیوں کا زورتو ژدیا،اس طرح اوس اورخزرج نے یٹر ب پر پورا تسلط حاصل کرلیں، یہود یوں کے دوبڑے قبیلے ہونضیراور ہنوقر بظہ یٹر ب کے باہر جاکر بسنے پرمجبور ہوگئے، تیسر ہے قبیے بنوقینقاع سے چونکہ مذکورہ دونوں بیبودی قبیلوں کی ان بن تھی ،اس لئے وہ شہر کے اندر بی مقیم رہا، مگریبال رہنے کے لئے ان کوقبیلہ خزرج کی پناہ لینی پڑی، اور اس کے مقابلہ میں بی نضیر اور بی قریظہ نے قبیلہ اوس کی پناہ لی، ذیل کے نقشے سے ظاہر ہوجائے گا کہ بہود ہوں کی بستیاں کہاں کہاں تھیں؟



(عہد نبوی میں قبائل عرب کے علاقے کے نقشے)



بېبوداوران كى عېدشكنى:

غز وہ احد تک توبیلوگ بظاہرا س سے ہوئی کہ بنونضیہ کا ایک سر دار کعب بن اشرف غز وۂ احد کے بعدا ہے ساتھ چالیس اس غداری اور خیانت کی ابتداءا س سے ہوئی کہ بنونضیہ کا ایک سر دار کعب بن اشرف غز وۂ احد کے بعدا پنے ساتھ چالیس یہودیوں کا ایک قافعہ لے کر مکہ معظمہ پہنچا،ادھرا بوسفیان اپنے چالیس آ دمیوں کولیکر حرم بیت ابتد میں داخل ہوااور بیت اللہ کا پر دہ پکڑ کریہ معاہدہ کیا، کہ ہم ایک دوسرے کا ساتھ دیں گا ورمسلمانوں کے خلاف جنگ سریں گ

کعب بن اشرف اس معاہدہ کے بعد جب مدینه طیبہ وانی آیا قرجرائیل امین نے آنخطوت بیون کا کوسارا واقعہ اور معاہدہ کی تفصیل بتادی، آپ بیون کا تعب بن اشرف سے آل کا حکم جاری فرمادیا، چنا نچیر مسلمہ انصاری نے اس کے آل کا خمہ جاری فرمادی ایٹ خرمہ بن مسلمہ انصاری نے اس کے آل کی ذمہ داری اینے ذمہ لی۔

کعب بن اشرف کالل اوراس کے اسباب:

مدینه منورہ میں جب فتح بدر کی بشارت بہنجی تو کعب بن اشرف یہودی کو بے حدصد مد بہوا، اور بیکبا کہا گریز جسمجے ہے، کہ مکہ کے بڑے سرداراوراشراف مارے گئے ، تو پھر زمین کاطن اس کی ظہر ہے بہتر ہے یعنی جینے سے مرجانا بہتر ہے تا کہ آئکھیں اس ذلت اور رسوائی کوند دیکھیں۔

لیکن جب خبر کی تصدیق ہوگئ تو مقتولین بدر کی تعزیت کے سے ایک و فدلیکر مکہ روانہ ہوا اور مقتولین بدر کے م ہے کے ایک و فدلیکر مکہ روانہ ہوا اور مقتولین بدر کے م ہے کہ سے جن کو پڑھ پڑھ کرخود بھی روتا تھا اور دوسرول کو بھی رلاتا تھا، اور رسول اللہ بھی فقت کے مقابلہ میں لوگوں کو جوش دلاکر آباد ہ قال کرتا تھا، آخرا یک روز قریش کو حرسم مکہ میں لے جاکر اور خلاف کعبہ بچر کرمسمانوں سے قبال کرنے کا حلف اٹھا یہ اس کے بعد جب مدینہ والیس آیا تو مسلمان عور توں کے متعلق عشقیہ اشعار کہنے شروع کئے، کعب بن اشرف بڑا شاعرتھ، آپ بھی تھی جو میں اشعار کہن تھا اور کفار مکہ کو آپ بھی تھی ہو تھی مقابلہ کے سے ہمیشہ بھڑ کا تا ربتا تھا اور مسلمانوں کو بھی طرح طرح کی ایڈا کیس ویتار بہتا تھا، جب صبر وحمل کی حد ہو تی اور بین نہ صبر مبریز ہوگی اور وہ سی طرح بازنہ آیا تو آخر کار مجبور ہو کر آپ بلاگئی نے اس کو تل کر سے کا تھی اس کو تل کر نے کا تھی دیا۔ (ابوداؤد، ترمدی، متع الباری)

ایک روایت میں ہے کہ ایک مرتبہ کعب بن اشرف نے آپ کو دعوت کے بہانے سے بلایا اور پھھ آدمی متعین کردیئے کہ جب آپ تشریف لائیں ہوتے کہ جب آپ تشریف لائیں ہوتے کہ جبرائیل امین نے آ کر آپ کوان کے اراد و سے مطلع کردیا آپ فورا وہاں سے جبرائیل امین کے پروں کے سامیمیں با ہرتشریف لے آئے ،اوروائی کے بعداس کے تل کا تھکم دیا۔

(فتح الباري: ح٧ ص٩٥٧)

صیح بخاری میں حصرت جاہر نصی تعدُ تُعالیجۂ ہے مروی ہے کہ رسول اللہ میں نتیجہ نے فر مایا تم میں سے کعب بن اشرف کولل

- ≤ (صَّزَم بِبَاشَ لِيَ

کرنے کے لئے کون تیار ہے؟ اس نے اللہ اور اس کے رسول کو بہت ایذا پہنچائی ہے، یہ سنتے ہی محمد بن مسلمہ وَحَفَائَندُنَعَائِیَّ کھڑ ہے ہو گئے اور عرض کیا یارسول اللّٰہ کیا آپ اس کا قتل جا ہے ہیں؟ آپ نے فرمایا: ہاں! محمد بن مسلمہ نے عرض کیا یارسول اللّٰہ پھر مجھے بچھ کہنے کی اجازت دیجئے جن کوئ کر بظاہروہ خوش ہوجائے، آپ نے فرمایا اجازت ہے۔

محد بن مسلمہ ایک روز کعب بن اشرف سے ملنے گئے اور اثناء گفتگویں سے کہدویا کہ بیٹخی رسول القد بیق بھی ہے ہے سے صدقہ اور زکو قامانگیا ہے اور اس تخص نے ہم کو مشقت میں ڈالدیا ہے ، میں اس وقت آپ کے پاس قرض بینے کے بے آ ہوں ، کعب بن اشرف نے کہا ہمی کیا ہے؟ آ ہے چل کر ویکھنا ، خدا کی قسم تم ان سے اُ کتا جاؤگے ، حمد بن مسلمہ نے کہا ہوت ہم اس کے بیرو ہو چکے ہیں ان کا چھوڑ نا ہم پہند نہیں کرتے انجام کے نتظر ہیں ، اس وقت ہم بیر چاہتے ہیں کہ آپ کچی نلہ ہم کو بطور قرض وید ہیں ، کعب نے کہا ہمی کے بیرو ہو جکے ہیں ان کا چھوڑ نا ہم پہند نہیں کرتے انجام کے نتظر ہیں ، اس وقت ہم بیرو ہو ہے ہیں اول تو آپ کی چیز د بن رکھ دو ، انہوں نے کہا پی عور تو لکور بن کعب نے کہا پی عور تو لکور بن رکھ دو ، انہوں میں رکھوڑ نا ہم کی بیرت وحمیت گوار و نہیں کرتی ، پھر بید کہ آپ بیا ہی حکم ہیں ، کعب نے کہا آپ اپنے لڑکوں کور بن رکھ دو ، انہوں نے کہا ہوت سے بیراور شین سر غلہ کے عوض رہن رکھ گئے ہیں ۔ نے کہا ہوت ساری عمر کی عدر ہے اوگ ہماری اولا وکو طعند ویں گئے کہم وہی ہوجود و سیر اور شین سیر غلہ کے عوض رہن رکھ گئے ہیں ۔ نے کہا ہیتو ساری عمر کی عدر ہے ، لوگ ہماری اولا وکو طعند ویں گئے گئے وہی ہوجود و سیر اور شین سیر غلہ کے عوض رہن رکھ گئے ہیں ۔ نے کہا بیا ہم سابہ بیا ہم اپنا ہم میں اینا ہم سے بیا سی بین ہم کے بیاس رہی میں رہیں رکھ کئے ہیں ۔

حسب وعدہ بہلوگ رات کوہتھیارلیکر پہنچ اور جاکر کعب کو آواز دی، کعب نے اپنے قلعہ ہے اتر نے کا ارادہ کیا، ہوی نے کہا اس وقت کہاں جاتے ہو؟ کعب نے کہا تھر بن مسلمہ ابونا کلہ میرا دودھ شریک بھائی ہے کوئی فیر نہیں تم فکر نہ کرہ، ہوی نے کہا جھے اس آواز سے خون نہیتا ہوا نظر آتا ہے، کعب نے کہا اگر شریف آدمی رات کے وقت نیزہ مار نے کے لئے بھی بلایا جائے تو اس کو ضرور جانا چاہئے ، اس دوران تھر بن مسلمہ نے اپنے ساتھیوں کو بیہ مجھادیا کہ جب کعب آئے گانو ہیں اس کے بال سوتھوں گا، جب دیکھو کہ ہیں نے اس کے بالوں کو مضبوط پڑلیا ہے تو فوران کا سراتار لین، چنا نچہ جب کعب نیچ جب کعب نے کہا میرے پاس تو سرتا پا خوشہو سے معطر تھی مجمد بن مسلمہ نے کہا، آج جیسی خوشبونو ہیں نے بھی سوتھی ہی نہیں ، کعب نے کہا میرے پاس عرب کی سب سے زیادہ حسین دجمیل اور سب سے زیادہ معطر تورت ہے، جمد بن مسلمہ نے آگے بڑھ کر نودہ تھی سرکھوں گا اب دوبارہ اپنا مرسو تھے کی اجازت دیں گے؟ کعب نے کہا شوق سے ، جمد بن مسلمہ نے آئے بردہ کو اشارہ کیا ، فوران بی شوق سے ، جمد بن مسلمہ نے اور سرسو تھے میں مشغول ہو گئے جب سرے بال مضبوط پکڑ لئے تو ساتھیوں کو اشارہ کیا ، فوران بی شوق سے ، جمد بن مسلمہ نے اور آنا فانان کا کام تمام کردیا۔

اورا خیرشب میں رسول اللہ کی خدمت میں پنچے، آپ نے ویکھتے ہی بیار شادفر مایا آف کے تب السو مجوہ " یہ چبر کے کامیاب ہوئے "ان لوگوں نے جواباً عرض کیا، وَ وَ جُھُكَ یا رصولَ اللّٰهِ "اے اللّٰہ کے رسول آپ کا چبرہ مبارک بھی " اس کے بعد کعب بن اشرف کا سرآپ کے سامنے ڈالدیا، آپ نے اللّٰہ کا شکر اوا کیا، جب یہودکواس کاعلم ہوا تو لیکافت مرعوب اور خوف زوہ ہوگئے، اور جب مجوئی تو یہودگی اور عرض ک کہ ی را سر داراس طرح مارا گیا،آپ نے فر مایا وہ مسلمانوں کوطرح طرح سے ایذائیں پہنچ تا تھا،اورلوگوں کو ہمارے قبال برآ مادہ کرتا تھا، یہود وم بخو درہ گئے اور کوئی جواب نہ دے سکے، بعداز ال آپ نے ان سے ایک عہد نامہ کھوایا کہ یہود میں ہے آئندہ کوئی اس قتم کی حرکت نہ کرے گا۔ (طبقات ابن سعد)

کعب بن اشرف اوراس کی در بده دنی اور تل کے اسباب:

🛈 نبی کریم بلون کان کان افتدس میں دریدہ دنی اور سب وشتم اور گستا خانہ کلمات کا زبان ہے نکالنا۔ 🏵 آپ کی ہجو میں اشعار کہن۔ 🏵 غزلیات اور عشقیہ اشعار میں مسلمان عورتوں کا بطور تشہیب ذکر کرنا۔ 🏵 غدراور نقض عہد۔ 🕲 لوگوں کو آپ کے مقابلہ کے لئے ابھارنا۔ 🛈 وعوت کے بہانہ ہے آپ کے آل کی سازش کرنا۔ 🕒 دین اسلام پرطعن کرنا۔

بنونضیر کی جلاوطنی کے وفت مسلمانوں کی رواداری:

آج کے بڑے تھراں اور بڑی حکومتیں جوانسانی حقوق کے تحفظ پر بڑے بڑے تکچرو ہے ہیں اور حقوق انسانی کے تتحفظ کے نام سے بڑی بڑی عالمی اورملکی اور علاقائی انجمنیں بنار کھی ہیں اور تحفظ حقوق انسانی کے چودھری کہلاتے ہیں ، ذرا اس واقعہ پرنظر ڈالیں کہ بنونضیر کی مسلسل سازشیں ، خیانتیں ، قبل رسول کے منصوبے جوآب ﷺ کے سامنے آتے رہے ، اگرآج کل کے کسی حکمراں اور کسی سر براہ مملکت کے سامنے آئے ہوتے تو ذرا دل پر ہاتھ رکھ کرسو چنے کہ وہ ان لوگوں کے ساتھ کیا معاملہ کرتا؟ آج کل تو زندہ لوگوں پر پیڑول جھڑک کرمیدان صاف کردینائسی بڑےا قتدار وحکومت کا بھی محتاج نہیں ، کچھ غنڈ ےشریر جمع ہوجاتے ہیں اور پیمب کچھ کرڈ التے ہیں۔

آپ ﷺ کے بدترین دشمن کے ساتھ بے مثال رواداری:

یہ حکومت خدا کی اور اس کے رسول کی ہے جب غداریاں اور سازشیں انتہا کو پہنچے کئیں تو اس وقت بھی ان کے لگ عام کاارادہ نہیں فر مایا ، ان کے مال واسباب چھین لینے کا کوئی تصور نہیں تھا بلکہ ابناسب مال لے کرصرف شہر خالی کر دینے کا فیصلہ فر مایا ، اور اس کے لئے بھی ان کودس روز کی مہلت دی تا کہ آسانی کے ساتھ اپناسامان کیکر اطمینان ہے کسی دوسرے مقام پرنتقل ہوجا نمیں ، جب اس حكم كى بھى خلاف ورزى كى تو فوجى اقدام كى ضرورت بيش آئى۔

یبود کی شرارت اور بدعهدی:

بنی عامر کے دوآ دمیوں کی دیت کے سلسلہ میں آپ اپنے چندر فقاء کے ہمراہ یہود کی بستی بنونضیر تشریف لے گئے ، بنونضیر نے آپ کے تشریف لے جانے پر بظاہر دیت میں شرکت کے بارے میں آمادگی کا اظہار کیا ،اور آپ کوایک قلعہ کی دیوار کے س میہ

میں بٹھا دیا اور و اول کوجمع کرنے کے بہانے ادھرادھر چلے گئے اور جدا ہو کرآپس میں بیمشورہ کیا کہ بیہ بہت اچھا موقع ہے کہ کو کی شخص قلع پر چڑھ کراو پرسے پھر دھکیل دے تا کہ محمد ﷺاوران کے نتیوں ساتھی کچل جا کیں۔

چنا نچدا یک شخص عمر بن محاسن بن کعب فوراً او پر چڑھا کہ پھر آپ پر گرادے ابھی وہ گرانے نہ پایا تھا کہ آپ کوخدانے بذریعہ وحی بہودیوں کے اس منصوبے کی اطلاع دے دی، آپ بیٹھنٹی فورا وہاں سے اٹھ کھڑے ہوئے اور سی ابرکرام رہے کا نظامی کا ہمراہ کیکر مدینہ کے لئے روانہ ہو گئے ، یہودیوں نے آپ کوواپس بلانا جا ہا، آپ نے فرمایا کہتم نے ہمارے قبل کامنصوبہ تیار کیااب ہم کوتمہا رااعتبار نہیں رہا،اور بنوغیراس الزام کاا نکار بھی نہ کر سکے،اب ان کے ساتھ کسی شم کی رعابیت کا سوال ہی نہیں رہا،آپ عَلَىٰ الله الله الله ميم ميم و يا كهتم يهال سه دس ون كا ندرجلا وطن موجا و، دس دن ك بعد ا كرتمهارى بستى ميس كوني شخص يا يا سمیا تواس کی گرون ماردی جائے گی ، بنونضیر نے تحکم ماننے سے انکار کردیا اورلژ ائی کے لئے مستعد ہو گئے ، دوسری طرف عبدامتد بن الی من فق نے بہودیوں کو پیغام بھیج دیا کہ میں ووہزارآ دمیوں سے تمہاری مدد کروں گا ،اور بنی قریظہ اور بنی غطف ن بھی تمہاری مدد کے سئے آئیں گے،اسی جھوٹے بھروسے اوراعتاد پرانہوں نے آپ میلانٹیٹا کے الٹی میٹم کا بیہ جواب دیا کہ ہم یہاں سے نہیں لکلیں گے، آپ سے جو پچھ ہوسکے کر بیجئے ، اس پر آپ بیٹن تا نے رہی الاول م صیل ان کا محاصرہ کرلیا جو پندرہ دن جاری رہا، اس می صرہ کا بینتیجہ ہوا کہ بنونضیر نے عبداللہ بن ابی کے ذرابعہ آپ کو پیغام بھیجا کہ اگر ہماری جان بخشی کی جائے تو ہم جدا وطنی کو تیار ہیں ،آپ نے تھم دیا کہ سوائے ہتھیا روں کے دیگر تمام مال واسباب جواونٹوں پر بارہوسکتا ہولیکریہاں ہے نکل جاؤ، چذنجے بنونضیر ہتھیا روں کےعلاوہ دیگر ول اونٹوں پر لا دکر لے گئے حتی کہ دراور مکان کی کڑیاں اورالماریاں وغیرہ سب لے گئے اور مکانوں کو ویران ومسار کر گئے ،غرضیکہ کوئی چیز قابل استعمال نہیں جھوڑی حتی کہ منکے تک تو ڑ گئے ، یہاں سے روانہ ہوکر کچھاتو خیبر میں مقیم ہو گئے اور پچھشام میں جا کرآ با وہو گئے، یہود بول میں یامین بن عمیر اور سعید بن وہب دو مخص مسلمان ہوئے اس لئے ان کے ول واسب اوراسلحہ وغیرہ ہے کوئی تعرض ہیں کیا گیا،اسی غزوہ کے بارے میں سورۂ حشر نازل ہوئی۔

(تاريخ الاسلام، اكبر شاه خان نحيب آبادي منحصًا)

مَاقَطَعُتُمْ مِن لِيْنَةٍ أَوْتَرَكُتُمُوْهَا قائمَةً الْح مسلمانول نے جبمحاصرہ شروع کیانو بی نضیر کی ستی کے اطراف میں

لِا وَ المحشو ''حمنی منتشر افراد کوجی کرنایا منتشر افراد کوجی کرے نکالدینا، اور لاول المحشو کے معنی ہیں پہلے حشر کے ساتھ یا پہلے حشر کے موقع پر، اب رہا ہیں وال کہ یہاں اول حشر سے کیا مراد ہے؟ تواس میں مفسرین کے درمیان اختلاف ہے ایک گروہ کے نزدیک اس سے بنی نفیر کا مدینہ سے اخراج مراد ہے، اوراس کو پہلاحشراس اعتبار سے کہ گیا ہے کہ دوسراحشر حضرت عمر تفخیان میں تھا جب کہ دوسراحشر حضرت عمر تفخیان کا تھا گئے گئے مانہ میں ہواجب یہود ونصار کی کو جزیر ق العرب سے کالا گیا، دوسر سے گلاگ ہوں وہ کی خوج کا اجتماع مراد ہے جو بنی نفیر سے جنگ کرنے کے لئے جمع ہوا تھا، اس صورت سے مسلمانوں کی فوج کا اجتماع مراد ہے جو بنی نفیر سے جنگ کرنے کے لئے جمع ہوا تھا، اس صورت میں لاول المحشور کے بیمنی ہیں کہ ابھی مسلمان ان سے لائے کے لئے جمع بی ہوئے تھے، اور کشت وخون کی نوبت نہ میں لاول المحشور کے بیمنی ہیں کہ ابھی مسلمان ان سے لائے کے لئے جمع بی ہوئے تھے، اور کشت وخون کی نوبت نہ میں کہ الند کی قدرت سے وہ جلاوطنی کے لئے تیار ہو گئے۔

نخستان واقع تتھےان کے بہت ہے درختوں کو کاٹ ڈالا یا جلا ڈالا کیے تھا، تا کہمی صرہ بآسانی کیا جاسکے اور درخت فو جی نقل وحركت مين حاكل ندبهول چنانجه جو درخت حاكل نبيس يتحيانبيس كھڑار ہنے ديا گيا تھا ،اس پر مدينه كےمنافقول اور بنوقر يظه اورخو د بنونفيير نے شورمي ديا كەمجمد ﷺ توفسا د في الارض ہے منع كرتے ہيں مگرخود ہرے اور بجلدار درختوں كو كائے جارہے ہيں ، بيآخر ف و فی ار رض نہیں تو اور کیا ہے؟ اس پر اللہ تعالی نے بیتھم نازل فر مایا کہتم ہو گوں نے جو درخت کا نے اور جن کو کھڑ ارہنے دیا ان میں ہے کوئی فعل بھی نا جا ئزنبیں ہے جکہ دونو ل کوالند کا اذ ن حاصل ہے ،اس ہے شرعی مسئلہ بیڈکلٹا ہے کہ جوجنگی ضروریات کے کئے تخ ہی کارروائی نا گزیر ہووہ فساد فی الارض کی تعریف میں نہیں آتی ، چنانچہ حضرت عبدالقد بن مسعود نضّائفۂ عَالیجۂ نے اس آیت کی شریج کرتے ہوئے بیوضاحت قرمادی ہے، قَطَعُوا منها مَا تَکانَ موضع القدّالِ مسلمانوں نے ہوُضیر کے درختوں میں سے صرف وہ درخت کائے تھے جو جنگ کے مقام پر واقع تھے۔ (تعسیر نیشا ہوری)

منسکنگنی: بحالت جنگ کفار کے گھروں کومنہدم کرنا یا جلاتا ،ای طرح درختوں اور کھیتوں کو ہر باد کرنا جائز ہے پانہیں؟اس میں ائمَه فقبهاء کے مختلف اقوال ہیں ، امام ابوصنیفہ رَجِّمَ کُلامَامُ تَعَالَیٰ نے بحالت جنگ ان سب کاموں کو جائز قرار دیا ہے، مگر شیخ این ہم م

نے فر مایا کہ پیرجوازاں وقت ہے جبکہاں کے بغیر کفار پر ندبہ یا نامشکل ہو۔

ما أفَآءَ اللَّهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ مِنْهُمْ (الآية) أفآء، في عَيْمَتُنَّ عِنْ الحَعْنَ لوشْخ كي بين، الى ليّ زوال ك وفت کے سامیہ کوفی کہتے ہیں، اس کئے کہ زوال ہے پہلے جو سامیہ مغرب کی طرف تھا زوال کے بعد وہ سامیہ مشرق کی طرف انونتا ہے ، جواموال غنیمت کفارے حاصل ہوتے ہیں ان کی حقیقت رہے کہ غارے یاغی ہوجائے کی وجہ ہے ان کے اموال بحق سر کار صنبط ہوجاتے ہیں ، اور ان کی هکیت ہے تکل کر پھر ہا لک حقیقی کی طرف لوث آتے ہیں ، اس لئے ان کے حاصل ہونے کو اَفَ آءَ كَلفظ يَ تَعِيرِ فرمايا ہے ،اس كا تقاضد بيتھا كەكفارے حاصل ہونے والے تمام تتم كے اموال كوفئ كهر جائے ،مگر جو مال جب دوقبال کے ذریعہ حاصل ہواس میں انسانی عمل اور جدوجبد کوبھی ایک قتم کا دخل ہوتا ہے اس کئے اس کولفظ غنیمت ہے تعبیر فرمایا وَاغْلَهُ وَا أَنَّهَاغُذِهْ تُعْرِمِنْ شَيْءِ اسْ كامطلب بيه ہے كہ جو مال بغير جہاو دقبال كے صل ہوا ہے وہ مي ہرين اور غانمين ميں مال ننیمت کے قانون کے مطابق تقسیم نہیں ہوگا بلکہ اس کا کلی اختیار رسول اللہ پین کھٹیا کے ہاتھ میں ہوگا، جس کو جتنا جا ہیں عطا فر ، دیں، یا اپنے لئے رکھیں، البتہ یہ پابندی عائد کر دی گئی اور چندا قسام مستحقین کی متعین کر دی کئیں کہ اس مال کی تقسیم ان ہی اقسام مين وائرَ رَيْن جائية ، ال كابيان آئنده آيت مين اس طرح فرمايا صَا اَفَاءَ اللّهُ على رَسُوله مِنْ اَهْلِ القُواى السمين ابل قمری سے مراد بنونفییراوران جیسے دوسرے قبائل بنوقر یظہ وغیرہ میں جن کے اموال بغیر قبال کے حاصل ہوئے ،آ گےمصارف ومستحقین کی یا کچ قسمیں بیان فرمائی گئی ہیں جن کا بیان آئے آتا ہے۔ (معارف)

آیات مذکورہ میں فن کے احکام اس کے مستحقین اوران میں تقسیم کا طریقہ کا ربیان فرہ یا ہے ، اوپر مال غنیمت اور مال فی میں فرق کا بیان ہو چکا ہے، جس کا خلاصہ بیہ کے گفیمت اس مال کو کہاج تا ہے جو کفارے جہاد وقبال کے نتیج میں حاصل ہوتا ہے اور فی وہ مال جوبغیر جہاد وقبال کے حاصل ہوا خواہ ا*س طرح ک*ہ دہ اپنامال جھوڑ کر بھاگ گئے ہوں یارضا مندی ہے بصورت **جزی**ہ

وخراج یا تج رتی ڈیوٹی وغیرہ کے ذریعہ ان سے حاصل ہوا ہو، مذکورہ فرق کو فَسَمَا أَوْجَهُ فُتُسَمَّ عَلَيْهِ مِنْ حَيْلِ وَ لَا رِكَابِ سے ض ہر کیا گیا ہے، اونٹ اور گھوڑے دوڑانے سے مراد جنگی کارروائی ہے ،لہذا جو مال براہِ راست اس کارروائی ہے ہاتھ آئے وہ غنیمت ہے،اورجس مال کے حصول کا اصل سبب بیکارروائی نہ ہووہ مال فی ہے۔

ندکوره مسکله کی مزید وضاحت:

ہ ال غنیمت اور مال فی کے درمیان او پر فرق بیان کیا گیا ہے اس کو اور زیادہ کھول کر فقہائے اسلام نے اس طرح بیان کیا ہے، کہ مال غنیمت صرف اموال منقولہ ہیں جو جنگی کارروائیوں کے دوران دشمن کے کشکروں سے حاصل ہوں، اوراس کے ماسوا وثمن کے ملک کی زمینیں مکا نات اور دیگر اموال منقولہ وغیر منقولہ غنیمت کی تعریف سے خارج ہیں ،اس تشریح کا ما خذ حضرت عمر تَظِمَانَهُ مُتَعَالِمَانَ كَاوه خط ہے جوانہوں نے سعد بن ابی وقاص کو فتح عراق کے بعد لکھاتھا،اس میں وہ فرماتے ہیں ف انظر مَا اَجْلَبُو ا به عَلَيك في العسكر مِن كراع أو مال فَاقسِمَهُ بين مَن حَضَرَ مِنَ المُسلمينَ وَاتُّرُك الاَرْضين والآنهار لِعُمَّالِهَا ليكونَ ذلك في اَعْطيَاتِ المسلمين.

'' جو مال ومتاع فوج کےلوگ تمہار کے لشکر میں سمیٹ لائے ہیں اس کوان مسلمانوں میں تقسیم کردو جو جنگ میں شریک ہتھے، اور زمینیں اور نہریں ان لوگوں کے پاس حجھوڑ وو جوان پر کام کرتے ہیں تا کہ ان کی آمدنی مسلمانوں کی تنخوا ہوں کے کام آئے''۔ (کتاب الخراج لا بی بوسف رَیِّمَ کُلدنُدُهُ تَعَالیٰ ص۲۴) اس بنیا دیرِ حضرت حسن بصری رَیِّمَ کُلدنُدُهُ تَعَالیٰ کہتے ہیں کہ جو پچھ دشمن کے بھپ سے ہاتھ آئے وہ ان کاحق ہے جنہوں نے اس پر فتح یا کی ، اور زمین مسلمانوں کے سئے ہے، مال غنیمت میں یا نچواں حصہ نکال کر باقی جار حصے توج میں تقلیم کئے جائیں گے، بیرائے بخی بن آ دم کی ہے جوانہوں نے اپنی کتاب'' الخراج'' میں بیان فر مائی ہے اس ہے بھی زیادہ جو چیز غنیمت اور فی کے فرق کو واضح کرتی ہے وہ یہ ہے کہ جنگ نہاوند کے بعد جب مال غنیمت نقسیم ہو چکا تھا اورمفتو حدعلا قد اسلامی حکومت میں داخل ہو گیا تھا ایک صاحب سائب بن اقرع کوقلعہ میں جواہر کی دوتھیلیاں ملیں ،ان کے دل میں بیالجھن پیدا ہوئی کہ آیا بید مال غنیمت ہے جھے فوج میں تقسیم کیا ج نے یا اس کا شاراب فی میں ہے، جسے بیت المال میں جمع ہونا جا ہے؟ آخر کارانہوں نے مدینہ حاضر ہوکر معامد حضرت عمر رَفِحَانِثُانَةُ تَغَالِظَةً كَے سامنے پیش كيا ، اور انہوں نے فیصلہ فر مایا كہ اسے فروخت كرے اس كى قیمت بیت المال میں داخل كردى جائے ،اس سے معلوم ہوا كەغنىمت صرف وہ اموال منقولہ بيں جو دورانِ جنگ فوج كے ہاتھ آئيں، جنگ حتم ہونے کے بعداموال غیر منقولہ کی طرح اموال منقولہ بھی فی کے حکم میں داخل ہوجاتے ہیں۔

مذكوره آيت ميں مستحقين كى تعداد چھے بتائى گئى ہے، جن ميں ايك اللہ ہے، ظاہر ہے كەاللەتعالى تو پورى كا ئنات كا، لك ہےاہے جھے کی کیا ضرورت؟ مطلب ہیہے کہ اللہ تعالیٰ نے جن لوگوں کو بیرمال ملک تصرف کے طور پر دے رکھا تھ جب انہوں نے غداری کی اور ما لک حقیقی کےخلاف علم بغاوت بلند کردیا تو اللہ نے اپنے وفا دار بندوں کے ذریعہ بیرمال واپس

ا پی ملیت میں لےلیا،ای وجہ ہےاں کو مال فی کہتے ہیں،اباس میں ہے جس کو گا،وہ کی انسان کی جانب ہے خیرات یا صدقہ نبیں ہوگا بلکہ وہ انتدر ب العالمین کی جانب ہے نہایت پا کیزہ عطیہ ہوگا، یہی وجہ ہے کہ مال فی میں ہے بنی باشم اور بني عبدالمطلب كوجهي دياجاتا تقابه

اب محق اورمصارف كل يائخ ره سُئة ① رسول ⑥ ذوى القربيٰ ۞ يتيم ۞ مسكين ۞ مسافر _ يهي يانج مصارف مال غنیمت کے جس کے ہیں، جس کا بیان سورہُ انفال میں آیا ہے، اور یہی مصارف مال فی کے ہیں، مال فی کے بارے میں ریہ بات پہنے مذکور ہوچکی ہے کہآپ بلق لائٹا کی وفات کے بعد انتہاء ذوی القربی کا حصہ سما قط ہوگی ،فقراء ذوی القربی کا حصہ آئی بھی باتی ہے، بیرمسلک امام ابوصنیفہ ریخمنگلدنٹائنٹھائی کا ہے،امام شاقعی رخمنگدنٹائنٹا نفٹیاء ذوی القربی کے حصہ کوآپ کی وفات ك بعد ساقط نبيس كرت بلاجس طرح آب بلواتك كريات مباركه بين ان كاحصه تق آج بهي حصه بامام شافعي ونهم للدند تعالى کی دیمل ہے بیان کی گئی کہ ذوی القرنی کوحصہ ان کے احترام واکرام کے طور پر دیا جاتا تھا اس میں اغنیاءاور فقراء سب شامل ہیں مشوا حصرت عباس تفحیلف مخالف کا التفیقا مالدارآ دمی تنظیم ان کوبھی مال فی میں ہے دیا جات تھا۔

ا، م ابوحنیفه رَیِّهمُلْدُنْمُنْعَالَنَ فر ماتے ہیں کہ ذوی القربی کو مال فن سے وینے کی دووجہ ، ایک نصرت رسول پین ایسی ایعنی اسلامی کاموں میں رسول اللہ ﷺ کی مدد کرتا ،اس لحاظ ہے انتہاءؤ وی القرنی کوبھی حصہ دیہ جاتا تھا، ووسرے یہ کہ رسول الله بنظامات و وی القربی پر مال صدقه حرام کردیا گیاہے ، تو ان کے فقرا ، ومسا کین کوصد قد کے بدلہ میں مال فی ہے حصہ دیا جاتا تھا، رسول القد بلتھ لاکھ وفات کے بعد نصرت وامداد کا سلسلہ حتم ہوگیا ،تو بیہ وجہ باقی ندر ہی اس لئے انتنیاء ذوی القرنیٰ کا حصہ بھی رسول کے حصہ کی طرح جمتم ہو گیا البتہ فقراء ذوی القربی کا حصہ بحثیبت فقروا حتیاج کے اس مال میں باقی ر ہا،البت وہ اس مال میں دوسر ہے ققراءومسا کین کے مقابلہ میں مقدم رکھے جائیں گے۔ (کدانی الهدایه)

كَيْلَايَكُوْنَ دُوْلَةً بَيْنَ الْأَغْنِيَاءِ مِنْكُمْ ، دُولَةً وال كضمه كماتها ورايك افت فتي كماته بهي بوست ا كردال (چرخد) ذالَ بَسلُولُ دَوْلًا (ن) مُروشُ كرنا، دولت بحى چونكهُ روش كرتى هـ، آج اس كے ياس توكل أس كے ياس، اس لئے اس کودونت کہتے ہیں(لغات القرآن) آیت کا مطلب یہ ہے کہ مال فی کے مستحقین اس لئے متعین کردیئے گئے ہیں تا کہ بیر مال مالداروں ہی کے درمیان گردش کرنے والی چیز ندبن جائے۔

بیآیت قرآن مجید کی اہم ترین اصولی آیات میں ہے ہے،جس میں اسلامی معاشرہ اور حکومت کی معاشی یالیسی کا پیبنیا دی تاعدہ بیان کیا گیا ہے کہ دولت کی گردش پورے معاشرے میں عام ہوئی جاہئے ،ایبانہ ہو کہ مال صرف مالداروں ہی میں گھومتار ہے،جس کے نتیج میں امیر روز بروز امیر تر اورغریب روز بروزغریب تر ہوتے جیے جائیں،قر آن مجید میں اس یالیسی کوصرف بیان کرنے ہی پراکتفانبیں کیا گیا، بلکہ ای مقصد کے لئے سود، سٹہ، جوا، جواکتهاب مال کے ایسے ذرائع ہیں کہ ان کے ذرایعہ دولت چندافراد کے ہاتھوں میں سمٹ کررہ جاتی ہے، ان سب کو شخت حرام قر ار دیا ہے،اور ز کو ق فرض کی گئی ہے،اموال غنیمت میں سے حس نکا لنے کا حکم دیا گیا ہے جن ہے وات کی معاشرے کے غریب طبقات تک رسائی ہوسکے ، اخلاقی حیثیت ہے بھی

——∈[زمَزَم پتباشَن ﴾ -

جنل کو پخت قابل مذمت اور فیاضی کو بهترین صفت قرار دیا گیا ہے،خوشحال طبقوں کو بیہ مجھایا گیا ہے کہ ان کے ول میں سائل اور محروم کاحق ہے جسے خیرات سمجھ کرا دا کرنا جا ہئے۔

یہ بات یاد رکھنے کے قابل ہے کہ اسلامی حکومت کے ذرائع آمدنی کی اہم ترین مدات دوہیں، ایک زکو ۃ اور دوسر نے کی ز کو ة صاحب نصاب مسم، نول کے سر ماریہ مولیتی ،اموال تجارت اور زرعی پیداوار ہے وصول کی جاتی ہے اور وہ زیادہ ترغریوں بی کے لئے مخصوص ہے،اور فی میں جزیداور خراج سمیت وہ تمام آمد نیاں شامل ہیں جو غیرمسلموں ہے حاصل ہوتی ہیں،اورا کا بھی بڑا حصہ غریبوں ہی کے لئے مخصوص کیا گیا ہے، بیال طرف کھلا ہوااشارہ ہے کہ اسلامی حکومت کواپنی آید وخرج کا نظام اور تم م مالی اورمعاشی معاملات کا انتظام اس طرح کرنا جاہئے کہ دولت کے ذرائع پر مالداراور بااثر لوگوں کی اج رہ داری قائم نہ ہو اور نہ دوست مندوں کے درمیان گردش کرتی رہ جائے ، کیسے بے بصیرت ہیں وہ لوگ جواسلام جیسے منصفانہ اور عا د ، نہ اور حکیم نہ نظام کوچھوڑ کرنے نے ازموں کوا ختیار کر کے امن عالم کو ہر با دکرتے ہیں؟

مَا تَكُمُ الرَّسُولُ فَحَذُوهُ ومَا نَهَاكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا وَاتَّقُوا اللَّهَ (الآية) بيآيت الرحِ مال في كسلمين آكى ب اوراس سلسلہ کے من سب اس کامفہوم یہ ہے کہ مال فئ میں اگر چہ مستحقین کے طبقات بیان کردیئے ہیں گران میں کس کوکٹنا دیں اس کی تعیمین رسول القد بین فضافیتین کی صوابدید برر تھی ہے اس لئے مسلمانوں کواس آیت میں ہدایت دی گئی ہے کہ جس کو جتنا آپ مطا فر، نیں ای کوراضی ہوکر لے نیں ،اور جونہ دیں اس کی فکر میں نہ پڑیں ،آ گے اس کو اتسقو ا انللہ کے تھم سے مؤ کد کر دیا کہ اگر اس معامله میں کچھ غلط حیدے بہانے بنا کرز اندوصول کربھی لیا تو اللہ تعالیٰ کوسب خبر ہے وہ اس کی سزادے گا۔

لِلْفُقَرَاءِ المهاجرِينَ تركيب توى كاعتبارت لِلْفُقَرَاءِ كولِذِي القُرْبِي كابدل قرارديا كير جواس عيبي آیت میں مذکور ہے۔ (مظہری) اور مطلب آیت کا بدہے کہ پچھلی آیت میں جوعام بیبیوں مسکینوں اور مسافروں کوان ک نقروا حتیاج کی بناء پر مال فئ کے مستحقین میں شار کیا گیا ہے ان آیات میں اس کی مزید تشریح اس طرح کی گئی ہے اگر چہ حقداراس مال میں تمام فقراء ومساکین ہیں لیکن پھر بھی ان میں بےحضرات اور سب لوگوں ہے مقدم ہیں، جن کی دینی خد، ت اور ذاتی اوصاف کمالات دیدید معروف بین ، امام شافعی رَیِّمَ کُلدلله مَتَعَالیّ نے لملمها جوین کو وَلِسلِّ ی السَّفُوبی سے بدل قرار دینے کے بجائے فعل محذ دف ہے متعلق ما ناہے ،ای کے پیش نظر مفسر علام نے اس کو اغ جبُو افعل مقدر کے متعلق کیا ،اس کی مزید وضاحت محقیق وتر کیب کے زیرعنوان گذر چکی ہے، ملاحظ فر مالی جائے۔

ندکورہ آیت میں مال فئی کا سیح ترین مصرف بیان کیا گیا ہے،اور ساتھ ہی مہاجرین کی فضیلت ان کے اخلاص اور ان کی راست بازی کی وضاحت ہے، جس کے بعدان کے ایمان میں شک کرنا گویا قرآن کا اٹکار ہے،معاذ الله روافض جوا ن حضرات کومنافق کہتے ہیں بیاس آیت کی تھلی تکذیب ہےاللہ تعالیٰ نے ان کے قلوب کوتقویٰ کے لئے آ زمائے جانے ک گوہ ہی دی ہے،ان حضرات مہاجرین کا اللہ اوراس کے رسول کے نز دیک بیمقام تھا کہایٹی دعا وَں میں اللہ تعالی ہے ان فقراءمهاجرین کاوسیلہ دیے کردعافر ماتے تھے۔ (بغوی، مظهری) وَ الْحَدِيْسَ تَبَوَّءُ وِ الْدَّارَ وَ الْإِيْمَانَ مِنْ فَعْلَهِمَ ، تَكُوَّءٌ كَ مِحْنُ تُهِنَاكُ بِنَاكُ كِيمِ ، اور دارے مراد دار بجرت یا دارایمان لیمنی مدینه طیبه به مدینه طیبه کو دارایمان کہنے کی وجہ بیہ دوسکتی ہے کہ عرب سے تمام علاقہ جہا داور فوج کشی کے ذریعہ فتح ہوئے مگرمدینه طیبه ایمان کے ذریعہ فتح ہوا۔ (فرصی)

اس آیت میں ایمان کا دار پرعطف نیا گیا ہے اس کا مطاب ہے ہوکا کہ افسار نے دار بھرت میں ٹھکانہ بنایا اور ایمان میں شھانہ بنایا جاسکے، اس لئے بعض خوانہ بنایا حالانکہ ٹھکانہ بنایا جاسکے، اس لئے بعض حفرات نے کہ کہ یہ ہیں ایک لفظ محذوف ہے بینی اُحد کے صُولا الإیمان یعنی یہی ہیں وہ لوگ جنہوں نے دار بھرت کوٹھکانہ بنایا اور ایمان کے میں تھو دار بھرت کوٹھکا نہ بنایا، جس قالم لھو کا مطلب یہ ہوگا کہ انہوں نے ایمان کے میں تھو دار بھرت کوٹھکا نہ بنایا، جس قالم لھو کا مطلب ہے مہم جرین کے جمرت کوٹھ آنے سے پہلے ایمان ان کے دول میں راسخ ہوکر چنت ہو چکا تھا، انصار کی ایک صفت یہ بھی بیان فرمانی کہ مہم جرین کوٹھ اردیا گرانسار نے برانبیں ہو۔

(صحيح بحاري تفسير سورة الحشر)

وَمَنْ يُوقَ شُحَّ نَفْسِهِ فَاُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ اس آیت میں ایک مضابطہ بیان فر مایا گیا ہے کہ جولوگ اپنے نفس کے بخل سے نیج گئے تو اللہ کے نزدیک وہ بی فلاح اور کامیا بی پانے والے جی الفظ شی اور بخل تقریبا ہم معنی ہیں ، البتہ لفظ شی میں خوب رہ بی ہیں کر بختہ ہوگئی ہو، لفظ شی میں خوب رہ بی ہیں کر بختہ ہوگئی ہو، الفظ شی میں خوب رہ بی ہیں کر بختہ ہوگئی ہو، حدیث شریف میں ہے کہ شی ہے بچو، اس حرص نفس نے بی پہلے لوگوں کو ہلاک کیا ، اس نے انہیں خونریزی پر آمادہ کیا اور انہوں کو خوال کیا ۔ (صحبے مسلم کتاب البر)

وَاللَّذِينَ جَاءُ وْ مِنْ سِعِدِهم بِقُولُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْلْنَا (الآية) بِهِ الْ فَيُ كَمُستَحْقِين كي تيسري فتم ہے يعنی صحابہ کرام رصحَ اللَّهُ مُعَالَظُنُهُ كے بعد آنے والے اور صحابہ کرام رَصَحَ النَّهُ مُعَالَظُنُهُ كَ لَعْتُ لَدَم پر چلنے والے ،اس مِس تابعین اور تبع تابعین اور قیامت

تک ہونے والے اہل ایمان وتقوی سب آ گئے ، لیکن شرط مبی ہے کہ وہ انصار ومہاجرین کومومن مانتے ہوں ، اور ان کے حق میں دی کے مغفرت کرنے والے ہوں نہ کہ ان کے ایمان میں شک کرنے والے اور ان پرسب وشتم کرنے والے اور ان کے خلاف ا ہے دلوں میں بغض وعن و رکھنے والے، امام مالک رَسِّمَ کُلدنلهُ مَعَالیٰ نے اس آیت سے استنباط کرتے ہوئے یہی بات فرمائی ات الرافضِي الَّذِي يَسُبُّ الصَّحابَةَ لَيْسَ لَهُ فِي مالِ النَّيِّ نصيبٌ لِعَدمِ إتصافِهِ بِمَا مَدَحَ اللَّهُ به هؤلاءِ فِي قولهم رافضى وجوصحابه رَصِحَالِينَاهُ عَالِينَاهُ رِسب وشتم كرتے بيں مال في ہے حصہ بيس ملے گا، كيونكه الله تعالى نے صحابہ كرام رَضِحَالِينَاهُ عَالَيْنَاهُ كَ مدت کی ہے اور رافضی ان کی ہی مذمت کرتے ہیں۔ (ابن کشی)

ٱلْمُرْتَرَ تَنظُرُ لِلْيَ الَّذِيْنَ نَافَقُوْ ايَقُولُونَ لِإِخْوَانِهِمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْامِنْ أَهْلِ الْكِثْبِ وهم بَنُو النَّنسير وإخوانهم في الكفر لَهِنْ لَامُ قَسَم في الاربَعَةِ أُخْرِجْتُمْ مِنَ المَدِينةِ لَنَحْرُجَنَّمَعَكُمْوَلَانْطِيْعُ فِيَكُمْ فِي خُذُلائِكم لَحَدَّا اَبَدًا ۚ قَالَ قُوْتِلْتُمْر حُدِفَت سن الله الله وطَنَهُ لَنَتْصُرَكَكُمْ وَاللهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لِكُلْإِبُونَ ۞ لَمِنَ أَخْرِجُوا لَا يَخْرُجُونَ مَعَهُمْ وَلَبِنْ قُوْتِكُوا لَا يُنْصُرُونَهُمُ وَلَبِنْ نَصَرُوهُمْ جاء وَالبَصْرِهِ لَيُوكَنَّ الْأَدْبَالُ واستَعنى بجوابِ القَسَمِ المُقَدَر عن جواب الشَّرطِ فِي المَوَاضِع الخَمْسَةِ ثُمَّ لَايُنْصُرُونَ۞ اى اليَهُودُ لَاأَنْتُمْ أَشَدُّ مَ هَبَةً خَوْف فِي صُدُورِهِمْ أَيِ السُنافِقِينَ شِنَ اللَّهِ لَسَاخِيرِ عَذَابِهِ ذَٰلِكَ بِأَنْهُمُ وَقُومُ لَا يَفَقُونَ ﴿ لَا يُقَارِّلُونَكُمْ اى ايهُو دُ جَمِيْعًا لَـجْتَمعينَ إِلَافِي قُرَى مُحَصَّنَةٍ أَوْمِنْ قَرَاءً جُدُرٍ لَـورِ وفي قِراءَ ةِ جُدر بِأَسُهُمْ حَرُبُهِ بَيْنَهُمْ شَدِيْدُ تَحْسَبُهُمْ جَمِيْعًا مُحِبَمِعِينَ قَقُلُوبُهُمْ شَتَى مُنفرِقَةً خِلاف الحِسبانَ ذَٰلِكَ بِأَنْهُمْ قَوْمُرُلا يَعْقِلُونَ ﴿ مَثْنُهِم في تَركِ الإيمان كَمَثَلِ الَّذِينَ مِنْ قَبْرُلِهِمْ قَرِنْيًّا بِزَمَس قريبٍ وهم اهلُ بدرِ مِن المُشركِين **ذَاقُوْاوَبَالَامُرِهِمْ عَتُوبَتُهُ فِي الدُّنيا مِنَ ا**لقَتلِ وغيره **وَلَهُمْ عَذَابُ الْيُمُونُ مُولِمٌ فِي الا**خِرَةِ مِثَلُهُم ايسنَا فِي سَمَاعِهِ مِنَ المُافقِينَ وتَخَلُفهِ عَنهِم كَمَثَلِ الشَّيْظِنِ إِذْقَالَ لِلْإِنْسَانِ آَكُفُرْ فَلَمَّا كَفَرَقَالَ إِنَّ بَرَيْنَ عُمِنْكَ إِنْيَ أَخَافُ اللهُ مَ بَ الْعَلَمِيْنَ ® كَذْبًا مِنه وريَاءً فَكَانَ عَاقِبَتَهُمُّا أَى الغَوى والمَعْوِي وقُرئُ الرَّفِعِ السمُ كَانِ أَنَّهُمَا فِي النَّارِخَالِدَيْنِ فِيْهَا ۗ وَذُٰلِكَ جَزَّؤُ الظَّلِمِيْنَ ﴿ الكَامِرِيلَ

سبعمر بن کیا آپ نے منافقوں کوند دیکھا؟ کہا ہے اہل کتاب بھائیوں سے کہتے ہیں اور وہ بونضیراوران کے کفر پیرنسینٹ میں اور کا تاب نے منافقوں کوند دیکھا؟ کہا ہے اہل کتاب بھائیوں سے کہتے ہیں اور وہ بونضیراوران کے کفر کے بھائی ہیں، اگرتم کو مدینہ سے نکالا گیا جا روں جگہلام قتم کا ہے تو یقیناً ہم بھی تمہار ہے ساتھ نکل کھڑے ہوں گے اور تمہاری وات کے بارے میں ہم بھی بھی کسی کی بات نہ مانیں گے اور اگرتم ہے قال کیا گیا (فُوٹِلْکُٹر) ہے لام قسم حذف کرویا گیا ہے ق بخدا ہم تمہاری مدوکریں گے اور اللہ گواہی دیتا ہے کہ بیقطعاً جھوٹے ہیں اگروہ جلاوطن کئے گئے توبیان کے ساتھ نہ جا کیں گے اور ھ (زمَزُم بِبَلقَنِ ع-

اگران ہے جنگ کی گئی تو بیان کی مدونہ کریں گے اور اگر بالفرض ان کی مدد پر آبھی گئے تو پیٹیے پھیر کر بھا ک کھڑے ہول گے پانچوں جگہشم مقدر کے جواب کی وجہ ہے جواب شرط ہے استغناء ہے پھریہود کی مدد نہ کی جائے گی (مسممانو!یقین مانو)تمہاری ہیبت ان منافقوں کے دل میں بہنسبت اللہ کی ہیبت کے بہت زیادہ ہے اس کے مذاب کے مؤخر ہونے کی وجہ سے ریاس لئے ہے کہ یہ ناسمجھ لوگ میں ، پیلینی بہود سب ل کربھی لڑنہیں سکتے ، ہاں بیاور بات ہے کہ قلعہ بندمقا ہات میں ہوں یا دیوار کی آٹر میں ہوں اور ایک قراءت میں جہ ذار کے بجائے جُہدُرٌ ہے، ان کی لڑائی تو ان کے آپس میں ہی بڑی سخت ہے گوآپ انہیں متحد سمجھ رہے ہیں لیکن . مگمان کے برخلاف ان کے دل ایک دوسرے سے جدا ہیں اس کئے کہ یہ بے عقل لوگ ہیں ترک ایمان میں ان لوگوں کی مثال ان بوگوں جیسی ہے جوان ہے کچھ ہی پہلے گذرے ہیں، قریبی زمانہ میں اور وہ مشرکین اہل بدر ہیں، جنہوں نے ا پنے کا م کا و بال چکھ لیا اس کا انجام قمل وغیرہ دنیا میں اور ان کے لئے آخرت میں در دناک عذاب تیار ہے نیز ان کی مثال منافقوں کی بات سننے میں اوران سے تخلف اختیار کرنے میں شیطان کے مانند ہے کہ اس نے انسان سے کہ کفر کر چذنجے جب وہ کفر کر چکا تو (شیطان) کہنے نگامیں تجھے ہے بری ہوں، میں تو اللہ رب العالمین ہے ڈرتا ہوں اوراس کا بیقول ریا اور کذب پر پنی ہے پس ان دونوں کا انجام یہ ہوا کہ آتش (۱ وزخ) میں ہمیشہ کے لئے رہیں گے لیجن گمراہ کرنے والہ اور گمراہ ہونے والا اور (عاقِبَتُهُمَا) کواسم سکان کے طور پر مرفوع بھی پڑھا گیاہے، اور ظالموں کا فروں کی بہی سزاہے۔

عَجِقِيق اللَّهِ اللَّهُ اللّلْمُ اللَّهُ اللّ

هِ فَكُولِكُمْ ؛ إِخْهِ وَانْهُ هِ فِي السُّحُفُو اسْ عبارت كاضافه كامقصدية بتانا ہے كه قرآن ميں جومنا فقول كو بنونفير (يهود) کا بھائی کہا گیا ہے بیہ باعتبار کفر میں ہم ند ہب ہونے کے ہے، نہ کہ باعتبار ہم نسب ہونے کے اس کئے کہ بنونضيروغيرہ يمبود يتھے،اورمنافقين كاتعلق اوس وخزرج سے تھا۔ .

فَيْحُولَكُى؛ لامُ قسم في اربعة مواقع جارموا قع من لامتم كاب جوتتم محذوف يردلالت كرتاب اوروه جارمقام يه إل لَئِنْ ٱخْرِجْتُمْ ۞ لَإِنْ أَخِرجُوْ ١ ۞ وَلَـئِنْ قُوْتِلُوْ ١ ۞ وَلَـئِن نَصَرُوْ هُمرايك پانچوي جَداور ده وَإِنْ قُوْتِلْدُتُمُ الْخِ بِيهِالِ لامْتُم مقدربٍ-

فَيْ وَاسْتَغُلْى بجوابِ القسمِ يعنى جواب منكوره يانچون جگه جواب مكى وجه يجواب شرط يمستغنى إلى کئے کہ قاعدہ معروف ہے کہ جب قشم اورشرط دونوں جمع ہوجائیں تو مؤخر کا جواب محذوف ہوتا ہے (ابن ما لک نے کہا ہے)۔ وَاحْدِذِ لَدَىٰ اِجْتِهَاعِ شُرطٍ وقَسْمِ جَوَابَ مَسا أُجِّ رَثَ فَهُ وَمُلْتَزَم تَنْجُعِكُمْ : جب تتم اورشرط جمع بهوجائيں توان ميں ہے مؤخر کی جز اکولاز می طور پر حذف کردے۔

—— ﴿ [نَعَزَمُ بِبَلِثَهُ إِ

وہ پانچ مقامات جو تشم محذوف کا جواب واقع ہورہے ہیں اور جن کی دلالت کی وجہ سے جواب شرط کو حذف کردیا گیا ہے ہیں [] لَنَحْوُجَنَّ ﴿ لَنَنْصُونَكُمْ ﴿ لَا يَغْورُجُونَ ﴿ لَا يَنْصُرُونَهُمْ ﴿ لَيُولُنَّ الْأَذْبَارَ.

قِوَلَى : مُجتمِعِينَ اس سراشاره م كه جمِيْعًا. لَا يُقَاتِلُوْ نَكُمْ كَامْمِيرِ فَاعَل عال م

قِوْلَنَ ؛ مَثَلُهُ مُوفِى تُوْكِ الإيْمَانَ اس عيارت كومحذوف مان كراشاره كروياكه كَمَثُلُ الَّذِيْنَ النّ مَثُلُهُمْ مبتدا.

محذوف کی خبرہے۔

فَيُولَنَّهُ: وَقُونَ بِالرَّفْعِ السَّمُ كَانَ ، عَاقِبَتَهُمَا مِين اء برنصب اور رفع دونوں جائز ہيں، نصب كى وجديہ ب كه كان كى خبر مقدم ب اور أنَّهُ مَا فَى النَّارِ ، أنَّ البِيّا الم وخبر سل كر كَانَ كاسم مؤخر ب، اور تا ، كر فَنْ كى صورت ميں عَاقِبهُ لَهُ مَا كان كاسم ب اور أنَّهُ ما فِي النَّارِ جمله بولر كان كي خبر۔

تَفَسِّيرُوتِشَ حَى

آگے تو الی الّذِیْنَ فَافَقُوا (الآیة) جیسا کہ پہلے گذر چکا ہے کہ جب رسول اللہ بیق تا نے بونضیر کورس دن کے اندر
مدینہ سے نکل جانے کا نوٹس بھیجا تو عبداللہ بن الی اور مدینہ کے دوسرے منافق لیڈروں نے بونضیر کے یہود یوں کو یہ پیغام
بھیج تھا کہ ہم دو ہزار جنگ جو بہا دروں کے ساتھ تہاری مدد کو آئیں گے اور بنو غطفان اور بنو قریظ بھی تمہاری حمدیت میں
میر کھڑے ہوں گے ،الہذاتم مسلمانوں کے مقابلہ میں ڈٹ جاؤاور ہر گڑان کے آگے بتھیارٹ ڈالوا گرتمہارے ساتھ جنگ
کی تی تو ہم تمہارے ساتھ ل کرمسلمانوں سے لڑیں گے اور اگرتم کو مدینہ سے نکالدیا گیا تو ہم بھی تمہارے سرتھ نکل کھڑے
بول گے ،اس پر اللہ تعالی نے یہ آیت نازل فر مائی ،اس مے معلوم ہوتا ہے کہ تر تیب نزولی کے اعتبار سے دوسرارکو کا پہلے
مظمون ہونے اور پہلارکو کا س کے بعد نازل ہوا ہے جبکہ بنونشیر مدینہ سے نکالے جاچکے تھے ،دوسرے رکو کا میں اہم ترین

وَالْمَدَّةُ بَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكَذِبُونَ چِنانِچِمناڤنین کاجھوٹ واضح ہوکرسائے آگیا، کہ بوٹفیرجلاوطن کردیئے گئے لیکن بیان ک مددکونہ پنجے،اور ندان کی حمایت میں مدینہ چھوڑئے ہرآ مادہ ہوئے،

وَلَئِنْ نَصَرُوْهُمْ أَى جَاءُوْ لِنَصْوِهِمْ الله الله كامقصدا يكاعتراض كودفع كرنا --

اعتراض: اعتراض یے کہ اللہ تعالی نے پہلے فقرے میں فرمایا لَا یَنْصُورُوْ نَهُمْ اس کا مطلب ہے کہ من فقین یہود کی مدو کوئیں آئیں گے۔ کوئیں آئیں گے ، دوسر نقرے فقرے فقرے فایا وَلَئِنْ نَصَورُوْ هُمْ اس کا مطلب یہ ہے کہ وہ یہود کی مدد کوآئیں گے۔ جواب کا ماصل یہ ہے کہ فسر علام نے لمئن نصور و هم کی فییر جاءً و لمنصر هم ہے کرے جواب دیدیا کہ یہ بطور فرض کے ہین بالفرض والتقد مرید دکے لئے نکا بھی تو ان کی مدونہ کریں گے، ورنہ تو جس چیز کی فی القد تعالی فرمادیں اس

< (مَزَم ہبکاشرز)≥

کا وجود کیونگرممکن ہے ،مطلب میہ ہے کہ اگر میہ یمبود کی مدد کا ارادہ کریں بھی قوان کی مدد نہ کرشیس گے۔

لَانْتُكُمْ اَشَدُّ رَهْبَةً فِي صُدُورِهِمْ مِنَ اللَّهِ ذلِكَ بِالَهُمْ فَوْمٌ لَا يَفْقَهُوْ لَ (مسلمانو! يقين مانو) كرتمهارى هيبت ان كے دلول هيں برنسبت الله كى جيبت كے بهت زيادہ ہے بياس لئے كہ بينا تجھلوگ جي يعني تمهارا خوف ان كى ناتيجى كى وجہ ہے ہے ورندا اگر بيتيجھ دار ہوتے توسمجھ وائے كہ مسلمانوں كا خيب وتسلط الله تعالى كى طرف سے ہے البذا ورنا الله ہے وائے نه كہ مسلمانوں ہے۔

لَا يُتَفَاتِلُو مَكُمْرِ جمعِعًا (الآبة) لِعِنى يدِمن نَفَيْن اور يبودى ل كربهى كظِميدان مِين تم سے لڑنے كاحوصل نبيس ركھے ،البتہ قلعوں ميں محصور بوكرياد يوارول ك يجھے جيب كرتم پر واركر سكتے ہيں ،جس سے يدوائن ہے كديہ نبايت بزول ہيں ،اورتمہارى ہيت ہے كرزال وترسال ہيں ۔

تخسئه کُه خرجمیعاً و فَکُو بَهُ کُر سَنَی یَم نَ نَتَین کَ دوس کَ مَز ورک کابیا ن ب ، پینی مَز ورک بیتی کدو وبرول سخے خدات در نے بجائے اللہ نول سے ڈرتے سخے ، دوسر سے ہو ہے کہ جن کوتم متحد و شنق بجھ رہے ہو ہے آپ میں ایک دوسر سے کہ خت خلاف میں ، جس بات نے ان کوجمع کر دیا ہے و وسر ف یہ بات ہے کہ اپنے شہول میں باہر سے آئے ہوے (محمد میلائٹیلا) کی چیشوائی اور فر مانزوائی چلتے و کیھ کر ان سب کے دل جس رہے ہیں اور اپنے ہی ہم وطن انصار کو مہاجرین کی پذیرائی کرتے و کیھ کر ان کے سینول پرس نب لوٹ رہے ہیں ، اس کے ملاوہ اور کوئی چیز ایک نہ تھی جو ان کو معاسکے ، ہر ایک اپنی چودھراہے جا جاتاتھا کوئی کسی کا مخلص دوست نہ تھا۔

اس طرح القد تعالی نے غزوہ بنونسیر ہے پہلے ہی من فقین کی اندور ٹی جائے گرج بیئر کے مسلمانوں کو بتادیا کہ ان کی طرف ہے فی الحقیقت کوئی خطرہ نہیں ہے ، البذائمہیں بینہ بیس کر طبرانے کی کوئی ضرورت نہیں کہ جبتم بنونفیر کامی صرہ کرنے کے لئے نکلو گئے تو بیمن فق سرداردو بزار کا نشکر لئے رہجے ہے تم پر جملہ مردی گئے اور مہاتھ ہی ساتھ بنی قریظ اور بنی خطفان کو بھی تم پر چڑھانا کیوں گئے دھانا کیس کے میسب لاف زنیاں ہیں جن کی جوا آن مائش کی پہلی گھڑئی ہی نکالد گئی۔

﴿ سَكَمَشُلِ اللّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِم قَرِيْبًا (الآية) يه بنونسير كامثال كابيان ہادر اللّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ كَافسير ميں حضرت مي اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ الل

غزوهُ بني قبيقاع:

غز و ہُ بنی قینقاع ۱۵ شوال بروز شنبہ ۱ ھ میں واقع ہوا ، بنی قینتاع عبدالقد بن سلام کی برادری کےلوگ تھے جو کہ نہایت شجاع اور بہادر تھے ، زرگری کا کام کرتے تھے مدینہ کے جو ہری بازار پران کا قبضہ تھا،مسلمان مردوں اورعورتوں کی بھی بازار میں

(مَزَم پِبَلشَٰ إِنَّ عَالَمُ إِنَّ الشَّرِيَّ عَالَمُ إِنَّ الشَّرِيَّ عَالَمُ الْعَالَمُ عَالَمُ الْمَالِقُ عَالَمُ الْمَالِقُ إِلَيْنَ الْمَالِقُ إِلَيْنِ الْمُؤْلِقِ إِلْمُؤْلِقِ إِلَيْنِ الْمُؤْلِقِ الْمِينِ الْمُؤْلِقِ الْمُؤْلِقِيقِ الْمُؤْلِقِ الْمُؤْلِقِيلِقِ الْمُؤْلِقِيلِقِيلِقِ الْمُؤْلِقِيلِقِيلِي الْمُؤْلِقِيلِقِيلِقِيلِي الْمُؤْلِقِيلِقِيلِي الْمُؤْلِقِيلِقِيلِيلِي الْمُؤْلِقِيلِقِيلِقِيلِقِيلِقِيلِقِيلِي الْمُؤْلِقِيلِي الْمُؤْلِقِلْمِ لِلْمُؤْلِقِيلِقِيلِقِيلِقِيلِيقِيلِقِيلِقِيلِيقِيل

آمد ورفت تھی،آپ بھن کا بنی نفسیراور بنی قریظہ کے ساتھ بنی قدیقاع ہے بھی معاہدہ فرمایا تھا،سب سے یہیے بنی قدیقاع نے مع مدہ کی خلاف ورزی کی جس کے نتیج میں آپ ﷺ نے با قاعدہ ان سے معامدہ سے کرنے کا اعلان فرہ دیا، اس دوران بنوقینقاع کے ایک یہودی نے ایک مسلمان عورت کو چھیڑااوراس کو برسرِ بازار برہند کر دیا جس کی دجہ ہے مسلمانوں اور یہود میں تکرارشروع ہوگئی اور بیتو تو میں میں بڑھ جانے کی وجہ ہے آل وقتال کی نوبت آگئی ،جس میں ایک مسلمان اور ایک یہودی ارا گیا، ای دوران آپ بین علیان کے بازار میں تشریف لے گئے اور سب کوجمع کر کے وعظ وقعیحت فرمائی ،آپ نے فرمایا:

'' اے گروہ یہوداللہ سے ڈروجیسے بدر میں قریش پر خدا کا عذاب نازل ہوا کہیں اسی طرح تمہارے او پر بھی نازل نہ ہوجائے ،اسلام ہے آؤاس لئے کہتم بھینی طور پرخوب بہجانتے ہو کہ میں بالیقین اللّٰد کا نبی ہوں جس کوتم اپنی کتر بوں میں لکھ ہوا یاتے ہواوراللدے تم سےاس کاعبدلیاہے "۔

يهود بدسنتے بي مستعل ہو گئے، اور بيجواب ديا كه آپ اس غره ميں ہرگز ندر ہنا جس كى وجد سے ايك ناواقف اور ناتجر بدكار قوم بعنی قریش ہے مقابلہ میں آپ غالب آ گئے ، وائڈ اگر ہم ہے مقابلہ ہوا تو خوب معلوم ہوجائے گا کہ ہم مرد ہیں ، اس پرحق جَلَ شَدْ فِي فِنَتَيْنِ الْتَقَتَا (الآية).

بنوقینقاع مضاف ت مدینه میں رہتے تھے، آپ شین کھیائے نی قینقاع کا محاصرہ فرمایا بنوقینقاع قلعہ بند ہو گئے بیمحاصرہ پندرہ شوال سے بیکر ذی قعدہ کی ابتدائی تاریخوں تک جاری رہا، ہا آنا خرمجبور ہوکر سولہویں روز بیلوگ قلعے سے اتر آئے ،آپ القلاقاتیا نے ان کی مشکیس با ندھنے کا حکم فرمایا۔

راُس الهنافقين عبدالله بن الي كى الحاح وزارى اور بے حداصرار كى وجہ سے تق ورگذر فر مايا مگران كوجلا وطن كرديا گیاءاوران کا تمام ماں بطور مال غنیمت کیکریدینه داپس تشریف لائے اس مال میں ہے ایک ٹمس خودلیا اور بقیہ جارٹمس غانمين برنقسيم فرماديية - (سيرت مصطفى ملعصًا)

كَمَنَ لِ الشَّيْطَان إذْ قَالَ لِلإنسَان الخَفُر (الآية) بديهوداور منافقين كى ايك اور مثال بيان فر ما كى ب كهمن فقين في یبود یوں کواس طرح بے یارومد دگارچھوڑ دیا جس طرح شیطان انسان کے ساتھ معاملہ کرتا ہے، پہلے وہ انسان کو گمراہ کرتا ہے اور جب انسان شیطان کے پیچھے لگ کر کفر کا ارتکاب کر لیتا ہے تو شیطان اس ہے براءت کا اعلان کر دیتا ہے ، اور جھوٹے ہی کہد دیتا ہے کہ میں تو اللہ رب اسالمین سے ڈرتا ہول إذف ال للانسان میں انسان سے اسم جنس مراد ہے، اور کہ گیا ہے کہ شیطان نے جس انسان ہے اُنکے فیسے ' کہاتھا وہ برصیصا تام کا ایک راہب تھا،اس کے پاس ایک عورت آئی شیطان نے راہب کے دل میں وسوسہ ڈ الا اس راہب نے اس عورت کوایتے ہاس بلایا شیطان نے اس کوزنا میں مبتلا کردیا، جس کی وجہ ہے وہ عورت حاملہ ہوگئی، راہب نے بدنامی کے خوف ہے اس کوٹل کر کے دقن کر دیا ، ادھر شیطان نے قوم کوسارا واقعہ بتا دیا اور دفن کی جگہ کی بھی نشاند ہی َ ردی لوگوں نے عورت کی لاش کو برآ مد کرلیا اور راہب کوئل کرنے کے لئے صومعہ سے بنیچا تارلائے ،اس وفت شیطان حاضر ہوا اور اس راہب ہے دعدہ کیا کہ اگروہ اسے مجدہ کرے تو وہ اسے ان کے ہاتھ سے بچاسکتا ہے، چنانچہ راہب نے اس کو مجدہ ﴿ (مَرْمُ إِبَالِثَهُ إِنَّا

کردیا،اس کے بعد شیطان نے اس سے براءت ظاہر کردی۔

يَّا يَّهُا الَّذِيْنَ امْنُوااتَّقُوااللَّهَ وَلِتَنْظُرْنَفْسُ مَّاقَدَّمَتْ لِغَدِ ۚ لِيوم الفِينَّة وَاتَّقُوااللَّهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ خَمِي يَرُّ بِمَاتَعُمَلُوْنَ[®] وَلَاتَكُوْنُوْاكَالَّذِيْنَ نَسُوااللهَ تَرَكُوا طَعَنَهُ فَأَنْسُهُمْ أَنْفُسُهُمْ أَنْفُسُهُمْ أَن يُتَدَسُوا لَيَ حِيْرًا أُولَيِّكَ هُمُ الْفُسِقُونَ ® لَايَسْتَوِيَّ أَصْحُبُ النَّارِ وَاصَّحْبُ الْجَنَّةِ أَصْعُبُ ٱلْجَنَّةِ هُمُ الْفَآيِزُونَ ﴿ لَوْ أَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْانَ عَلَى جَبَلِ وَحُعِل ويه تميير كالانسار لرَايْتَهُ خَاشِعًامُتَصَدِعًا مُتشنَّفُ مِنْ خَشْيَةِ اللَّهِ وَيَلْكَ الْأَمْثَالُ المَدْكُورَةُ نَضْرِيُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ * مِنو منو منون هُوَاللهُ الَّذِي لَآالهُ اللَّهُوَ عَلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادُوَّ البَسرَ وَالعَلانِيةِ هُوَالْرَحْمُنُ الرَّحِيْمُ ﴿ هُوَ اللهُ الَّذِي لَا إِلٰهَ إِلَّاهُ الْكَافُ الْقُدُّوسُ الطَّهِرُ عَمَا لَا يبيقُ به السَّلَمُ ذُو السّلامةِ مِن النّقائص الْمُؤْمِنُ المُصدَقُ رُسُلهُ بحَنقِ المُعحرة لهم الْمُهَيّونُ مِن هيْمَنَ يُهيمنُ إذا كانَ رقيمًا على الشَّيْءِ أي الشَّهيدُ على عباده باعمالهم الْعَزِيْزُ القويُّ الْجَبَّارُ حِبرَ حلقه على ما ارادَ الْمُتَّكِّيِّرٌ عمَّا لا يديقُ به سُبُحُنَ اللهِ نرَهُ نفسه عَمَّا يُشْرِكُونَ ؟ يه هُوَاللهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ المسمى من العدم الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَاءُ الْحُسْنَى التَسْعَةُ والتَّسعُون الوَاردُ بها الحديثُ والحُسني مُؤنث الاَحسن غُ يُسَبِّحُ لَهُ مَا فِي السَّمُوتِ وَالْكُرْضِ وَهُوَالْعَزِيْزُ الْحَكِيمُ فَ تَقَدَّم اوله.

ت جبيب ؛ اے ايمان والو! اللہ ہے ڈرتے ربواور ہر شخص غور کرلے که کل (قيامت کے دن) کے واسطے (اعمال) كاكيا (ذخيره) بهيجامي؟ اور (بروقت) الله ہے ڈرتے ربوالته تمہارے اعمال سے باخبر ہے اورتم ان لوگول کے ، نندمت ہوجانا جنہوں نے اللہ (کے احکام) کو بھلادیا یعنی اس کی اطاعت کوترک کردیا تو اللہ نے بھی انہیں ان کی جانوں ہے غافل کردیا اس بات ہے کہ وہ اپنی ذات کے لئے نیکی آ گے جیجیں ،ایسے ہی لوگ فاسق ہوتے ہیں ،اہل ناراور اہل جنت باہم برابرنبیں، جواہل جنت ہیں وہی کامیاب ہیں ،اورا گرہم اس قر آن کوکسی بہاڑ پر تازل کرتے اوراس کے اندرانیان کے مانندشعور پیدا کردیا جاتا تو تو دیکھتا اس کو کہ خشیت الٰہی ہے وہ پست ہوکر پھٹا جاتا ہے ہم ان مذکورہ مثالوں کولوگوں کے لئے بیان کرتے ہیں تا کہ وہ غور کریں ، پھرایمان لے آئیں ، وہی اللہ ہے اس کے سواکوئی معبود نہیں غائب اور حاضر لیعنی پوشیدہ اور ظاہر کا جانبے والا ہے وہ مہر بان اور رحم کرنے والا ہے وہی املہ ہے اس کے سواکوئی معبود نہیں ، بادشاہ ہے سب ہاتوں ہے جواس کی شایان شان تہیں یا ک صاف ہے، تمام نقائض ہے سالم ہے اپنے رسولوں کی ان کے لئے مجزات کی تخییل کرے نفرت کرنے والا ہے نگہان ہے یہ هندمن بُهَدِمِن سے مشتق ہے یعنی جب سی شئ پرنگہان ہولیعنی اپنے بندوں کے اعمال کامشاہرہ کرنے والا ہے قوی ہے جبار ہے اس نے اپنی مخلوق کو بنایا جبیہ جوہا، بڑائی ذالا ہے (برتر ہے) اس شی ہے جواس کے لائق نہیں اللہ پاک ہے اس نے اپنی خود ہی پاکی بیان کی ہے ان چیزوں ہے جن کو اس

کے ساتھ شریک کرتے ہیں وہی اللہ ہے ہیدا کرنے والا عدم سے وجود بخشنے والا صورت بنانے والا اس کے ننا نو ہے نہایت ا بچھام میں جن کے بارے میں حدیث وار و ہونی ہےاور حسنی اَحْسَنُ کامؤنث ہے، آسانوں اور زمین میں جو پیجھ ہے سب اس کی پاکی بیان کرتی ہے وہی غالب حکمت والا ہے ایساہی اس سورت کے شروع میں گذر چکا ہے۔

عَجِقِيق تِرَكِي لِيَسَهُ اللَّهِ تَفْسِّا يُرَحُ فُوالِلا

قِيقُ لَنَى : تَوَكُوا طَاعَنَهُ اسْ عبارت كانسافه سي اثاره كرديا كه يبال نسيان كان معنى مرادي جوكه ترك بين ،اس لئے کہنسیان کے لئے ترک لازم ہے، نہ کہ عدم حفظ والذکو.

فِيَوْلِكُنَّ ؛ أَذْ يُقَدِّمُوا لَهَا حَيْرًا اس مِن أَس بات كَى طرف اشاره ب كه عبارت حذف مضاف كه ما تحصب تقدر عبارت به بَ فَأَنْسَاهُمْ تقدمَ حَيْرٍ لِلْأَنْفُسِهُمْ.

ؾٙڣٚؠؙڔۅؖ<u>ڎۺۣۻ</u>

يَّالِيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ ابل ايمان كو مُاطب مركانبين نصيحت كي جاري باوركها جار باب كتفوي افتتيار كرو، اور ہرنفس اس بوت برغور کرلے کہ اس نے آخرت کے لئے کیا سامان بھیجا ہے۔

اس آیت میں چند با تمی غورطلب ہیں ،اول یہ کہاس آیت میں قیامت کولفظ غدے تعبیر کیا ہے جس کے عنی ہیں آئے والی کل، اورکل ہے مراد ہے آخرت، گویا کہ دنیا کی پوری زندگی آج ہے، اورکل وہ قیامت کا دن ہے جواس آج کے بعد آنے والا ہے،غد کے لفظ میں اس بات کی طرف بھی اشارہ ہے کہ جس طرح آج کے بعد کل کا آنا بھینی ہے،ای طرح دنیا کے بعد آخرے کا آنا ضروری اور بھینی ہے،جس طرح آج کے بعد کل کے آنے میں کسی کوشبہبیں ہوتا ،اسی طرح قیامت کا آ نا بھی ہے ریب ہے ، دوسری بات ہے کہ اس میں قرب قیامت کی طرف اشارہ ہے جس طرح آج کے بعد کل جلدی ہی آ باتی ہے، اس طرح قیامت جلدی آنے والی ہے، ایک قیامت تو پورے عالم کی ہے جس دن زمین آسان سب فن ہوجا تھیں گے وہ بھی آگر چہ ہزاروں لاکھوں سال بعد ہوگر بمقابلہ ہ خرت کی مدت کے بالکل قریب ہی ہے، دوسری قیامت برانسان کی ہے جواس کی اپنی ہے جواس کی موت کے وقت آ جاتی ہے جیسا کہ مقولہ مشہور ہے مسن مَساتَ فَـفَـدُ فَامَتْ فِيَامَتُهُ لِعِنْ جَوْحُصُ مركيا اس كى قيامت قائم بوكنى، كيونكه عالم برزخ بى سے قيامت كے آثار شروع بوج تے بير، کیونکہ عالم قبر جس کوع لم برزخ بھی کہتے ہیں اس کی مثال دنیا کی انتظارگاہ (ویڈنگ روم) کی سی ہے، جوفرسٹ کلاس سے کیبرتھر ذکلاس تک کےلوگوں کے لئے مختلف قسم کے ہوتے ہیں اور مجرموں کا ویٹنگ روم ،حوالات یا جیل خانہ ہوتا ہے اس ا تظارگاہ ہے ہر خص اپنا پنا درجہ متعین کرسکتا ہے ،اس لئے مرنے کے ساتھ ہی ہر مخص کی قیامت آج تی ہے۔

- ﴿ (زَمَزَمُ بِبَاتَ لِهِ) ◄ -

د وسری بات جوغورطلب ہے وہ میہ ہے کہ حق تعالیٰ نے اس میں انسان کواس پرغور دفکر کرنے کی دعوت دی ہے کہ قی مت جس کا آنا یقینی بھی ہے اور قریب بھی ،اس کے لئے تم نے کیا سامان بھیجا ہے؟ اس سے معلوم ہوا کہ انسان کا اصلی وطن آخرت ہے دنیامیں تو یہ چند دن کے لئے و ہزے پر آیا ہوا ہے، اس کی نیشنکٹی تو آخرت کی ہے یعنی یہ حقیق طور پر آخرت کا با شندہ ہے، جس طرح دنیا ہیں اپنے ملک ہے ویز الے کر دوسرے ملک جاتے ہیں اور وہاں جا کر سیچھ کما کرا ہے وطن کو نہ بھیجے اورسر اسر بھول جائے ،اور میہ بات طاہر ہے کہ یہاں سے دنیا کا سامان ہال ود ولت کوئی تشخص و ہاں ساتھ نہیں لئے جا سکتا تو سجیجنے کی ایک ہی صورت ہے کہا یک ملک سے دوسرے ملک مال متفل کرنے کا جو طریقہ ہے کہ یہاں کی حکومت کے بینک میں جمع کر کے دوسرے ملک کی کرنسی حاصل کرے جو وہاں چلتی ہے ، یہی صورت آخرت کے معاملہ میں بھی ہے کہ جو پچھ یہاں اللّٰد کی راہ میں اور اللّٰہ کے احکام کی تعمیل میں خرچ کیا جاتا ہے وہ آسانی حکومت کے بینک میں جمع ہوجاتا ہے اور وہاں کی کرنسی تواب کی صورت میں اس کے لئے لکھ دی جاتی ہے اور و ہاں پہنچ کر بغیر کسی دعوے اور مطالبہ کے اس کے حوالہ کر دی جاتی ہے ،کس قدر ٹا دان ہے وہ صحف جو آج کے لطف ولذت میں اپناسب کچھالٹار ہاہے اور نہیں سوچتا کہ کل اس کے پاس کھانے کوروٹی اور سرچھیانے کو جگہ بھی باقی رہے گی بانہیں؟ اسی طرح وہ مخص بھی اپنے یا وَل پر کلہا ڑی مارر ہاہے جوا پنی دنیا بنانے کی فکر میں ایسا منہمک ہے کہ ا پن آخرت ہے بالکل غافل ہو چکا ہے۔

<u>َ فَانْسِهُمْ ٱنْفُسَهُمْ لِينَ ان لوگوں نے اللّٰہ کو بھول اور نسیان میں کیا ڈالا در حقیقت خودا پنے آپ کو بھول میں ڈالدیا کہا پنے</u> تفع نقصان کی خبر نه رہی ، یعنی خدا فراموثی کالا زمی نتیجہ خود فراموثی ہے ، جب آ دمی به بھول جا تا ہے کہ وہ کسی کا بندہ ہے تو لا زماوہ د نیامیں اپنی ایک غدط حیثیت متعین کر بیٹھتا ہے،ای طرح جب وہ بیکھول جاتا ہے، کہ وہ ایک خدا کے سواکسی کا بندہ نہیں ہے تو وہ اس ایک خدا کی بندگی تونبیس کرتا جس کا وہ درحقیقت بندہ ہے اور ان بہت سوں کی بندگی کرتا رہنا ہے جن کا وہ فی الواقع بندہ نہیں ہے جوسراسر قانون دنیا کی بھی خلاف ہے۔

لَوُ ٱلْوَلْنَا هذا الْقُر آنَ عَلَىٰ جَبَلِ لَرَأَيَنَهُ خَاشِعًا مُتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللّه اس آيت كامطلب بيب كقر آن جس طرح خدا کی کبریائی اوراس کےحضور بندے کی ذمہ داری اور جواب دہی کوصاف صاف بیان کررہاہے ،اس کافہم اگر پہاڑجیسی عظیم مخلوق کونصیب ہوتا اور اےمعلوم ہوجا تا کہ اس کورب قدیر کے سامنے جواب دہی کرئی ہے تو وہ بھی خوف ہے کا نپ اٹھۃ کیکن جیرت کے لائق ہے اس انسان کی بے حسی اور بے فکری کہ جس انسان کے دل پر قر آن کا سیجھ اثر نہ ہو حالا تکہ قر آن کی تا نیراس قدرز بردست ہے کہاگروہ بہاڑجیسی مضبوط اور سخت چیز پر اتاراجا تا اوراس میں سمجھ کا مادہ موجود ہوتا تو وہ بھی مشکلم کی عظمت کے سامنے دب جاتا اور مارے خوف کے پارہ پارہ ہوجا تا،حضرت مولا ناشبیر احمد عثانی رَئِحَمُ کاللّٰہُ تَعَالَیٰ کے وابد محتر م کی ایک طویل ظم کے نین شعر جو کل اور موقع کے لحاظ سے موزول ہیں نقل کئے جاتے ہیں۔ ۔ (مواقد عنمانی)

--- ﴿ (زَمَزَم پِبَلْثَهُ إِنَّ ﴾ >---

کان بہرے ہوگئے دل برمزہ ہونے کو ہے پارہ جس کے لحن سے طور بدی ہونے کو ہے کوہ جس سے خاشعا مصدی ہونے کو ہے سنتے سنتے نغمہ بائے محفل بدعات کو آو سنوائیں تمہیں وہ نغمہ مشروع بھی حیف کر تا ثیر اس کی تیرے دل پر سچھ نہ ہو

حضرت شاہ صاحب وَ عَمَّلُاللَهُ مَعَالِنَ فَر ماتے ہیں کہ یعنی کا فروں کے دل ہڑے بخت ہیں کہ بیکلام س کر بھی ایمان نہیں لاتے اگر پہاڑسنیں تو وہ بھی وب جا کیں، یو کلام کی عظمت کا ذکر تھا اگلی آیت کھو المنّا ہُ الَّذِی لآ اِلْسَا وَ اللّا ہُو اللّا ہُو اللّا اللّه اللّه علی مشکلم کی عظمت کا ذکر ہے، قر آن مجید میں اگر چہ جگہ جگہ اللّٰہ تعالیٰ کی صفات بے نظیر طریقہ سے بیان کی گئی ہیں، جن سے ذات اللّٰہ کا نہایت واضح تصور حاصل ہوتا ہے لیکن دومقامات ایسے ہیں جن میں صفات باری کا جامع ترین بیان پایا جاتا ہے، ایک سورہ بقرہ میں آیت انگری دوسر سے سورہ حشر کی بیآیات۔

روایات میں سورۂ حشر کی ان تین آینوں کھو اللّٰهُ الَّذِی لا اِللهَ اِلّٰهِ هَو ہے آخرتک کی بہت فضیلت آئی ہے مومن کو چ ہے کہ صبح وشام ان آیات کی تلاوت کی پابندی رکھے۔



مِلَوَّةُ الْمُتَعِنِّمُ مِنْ مُثَلِّينًا مُنْ الْمُتَعِنِّمُ الْمُتَعِيلُ الْمُتَعِنِّمُ الْمُتَعِنِّمُ الْمُتَعِنِّمُ الْمُتَعِلِّمُ الْمُتَعِنِّمُ الْمُتَعِلِّمُ الْمُتَعِلِّمُ الْمُتَعِلِّمُ الْمُتَعِلِّمُ الْمُتَعِلِّمُ الْمُتَعِلِّمُ الْمُتَعِلِّمُ الْمُتَعِلِمُ الْمُتَعِلِّمُ الْمُتَعِلِّمُ الْمُتَعِلِّمُ الْمُتَعِلِّمِ الْمُتَعِلِّمُ الْمُتَعِلِّمُ الْمُتَعِلِّمُ الْمُتَعِلِّمُ الْمُتَعِلِّمُ الْمُتَعِلِّمُ الْمُتَعِلِّمُ الْمُتَعِلِّمُ الْمُتَعِلِمُ الْمُتَعِلِّمُ الْمُتَعِلِّمُ الْمُتَعِلِمُ الْمُتَعِلِمِ الْمُتَعِلِمُ الْمُعِلَّمِ الْمُتَعِلِمُ الْمُتَعِلِمُ الْمُعِلَّمِ الْمُعِلِمِ الْمُعِلِمُ الْمُتَعِلِمُ الْمُتَعِلِمُ الْمُعِلَّمِ الْمُعِلَّمِ الْمُعِلَّمِ الْمُعِلَّمِ الْمُعِلِمُ الْمُعِلَّمِ الْمُعِلِمُ الْمُعِلَّمِ الْمُعِلَّمِ الْمُعِلَّمِ الْمُعِلَّمِ الْمُعِلَّمِ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلَّمِ الْمُعِلَّمِ الْمُعِلَّمِ الْمُعِلَّمِ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلَّمِ الْمُعِلَّمِ الْمُعِلَّمِ الْمُعِلِمِ الْمُعِلِمِ الْمُعِلِمِ الْمُعِلَّمِ الْمُعِلَّمِ الْمُعِلِمِ الْمُعِلِمِ الْمُعِلِمِي مِلْمِل

سُوْرَةُ الْمُمتَحِنَةِ مَدَنِيَّةٌ ثَلَاثَ عَشَرَةَ ايَةً. سورة ممتحنه مدنی ہے ، تیرہ آبیتیں ہیں۔

بِسْ حِراللهِ الرَّحْ لِمِن الرَّحِيِّ مِن الرَّحِيِّ مِن الرَّحِيِّ مِن الرَّحِيِّ مِن الرَّحِيِّ المُنُوّ الْمَنْوَالْائتَّخِذُ وَاعَدُوْقَ وَعَدُوَّكُمُ الْمُ الرَّحِيِّ المُنَوَّ الْمُنَالِ الْمُنَوَّ الْمُنْوَالْوَئَتَّ خِذُوْاعَدُوْقَ وَعَدُوَّكُمُ الْمُ الرَّحِيْ الْمُنُوّ الْمُنْوَالْوَئِيِّ الْمُنُوّ الْمُنْوَالْوَئِيِّ الْمُنُوّ الْمُنْوَالْوَئِيِّ وَاللّهُ الْمُنْوَالْوَئِيِّ الْمُنْوَالْوَئِيِّ وَاللّهُ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّه اللَّهُ عَلَيْهُ وَسَلُونَ اللَّهُ عَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ غَزُوهُمُ الَّذِي اَسَرَّهُ النَّكُمُ ووَرَى بِحُنَينِ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ غَزُوهُمُ الَّذِي اَسَرَّهُ النَّكُمُ ووَرَى بِحُنَينِ **بِٱلْمُودَّةِ** بَيْنَكُمْ وبَينَهم كَتَبَ حَاطِب بنُ أَبِي بَلْتَعَة اِلْيَهِمُ كِتَابًا بِذَلِكَ لِمَالَةُ عِنْدَهُمْ مِنَ الْأَوْلَادِ وَالْآهُلِ الْمُشْرِكِيْنَ فَاسَتَرَدُّه النَّبيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِمَّنْ أَرْسَلَهُ بِإِعْلامِ اللَّهِ تعالى لَهُ بِذلِكَ وقَبِلَ عُذُرّ حَاطِبِ فِيْهِ وَقَلْكَفُرُوْا بِمَاجَآءَكُمُ مِنَ الْحِقَ أَى دِيْنِ الإسَلَامِ وَالقُوان يُخْرِجُونَ الرَّوُلُ وَإِيَّاكُمْ سِنُ سَكَّةَ بِتَضْيِيقِهِمُ عَنيُكُمُ ٱلْآتُوْمِنُوْآ اى لِاجْلِ أَنْ امَنتُمُ بِاللَّهِ لَيَكُمْ الْكُنْتُمْ خَرَجْتُمْ هِلَاًّا لِلْجِهادِ فِي سَبِيْلِي وَالْبَيْغَاءُمُوصَالِيٌّ وَجَواب الشرط دَلُّ عليه سَا قَبُلَهُ أَى فَلَا تَتَّخِذُوهُمْ أُولِيَاءَ تُسِرُّونَ إِلَيْهِمْ بِالْمُودَّةِ ۗ وَأَنَاكُمُ مِمَا أَخَفَيْتُمْ وَمَا أَعْلَنْتُمْ <u>وَمَنْ يَنْعَلْهُ مِنْكُمْ</u> اى إِسْرَارَ خَبَرِ النَّبِي صَلَّى الله عليه وسلم اِلْيهِم فَقَدُ ضَلَّسُوَاءَ السَّبِيلِ[©] الخطأ طريق الهُدى والسَّوَاءُ في الأصل الوَبِسُطُ إِنْ يَّنْقَفُوكُمُ يَخَفُرُوا بِكِم مَكُّوْنُوالكُمْ أَعُدَّاءً وَيَدِسُطُوا الْيَكُمُ الدِيهُم بِالْقَسُ لَهِ إِنَّا وَالضَّرُبِ وَٱلْمِنَتَهُمْ بِالسَّوِءِ بِالسَّبِ وَالشَّتُم وَوَدُّوا تَمَنَّوُا لَوْتَكُفُرُونَ اللَّا ثَنَفَعَكُمُ الْرُحَامُكُمْ قَرَابَتُكم وَلَا أَوْلَاكُكُمْ المُشْرِكُونَ الَّذِينَ لَاجُلِهِمُ أَسْرَرُتُمُ الخَبَرَ مِنَ الْعَذَابِ فِي الاَخِرةِ يَوْمَ الْقِيمَةِ تَيَفُّولَ بِالبن، لِلمَفْعُول الله والعَساعِل بَيْتَكُمُّ وبَيسنَهم فتكُونُونَ فسى الحَبَّةِ وهُم فِسى جُملةِ الكُفَّر في النَّر <u>وَاللَّهُ بِمَاتَعُمَلُوْنَ بَصِيرٌ ۖ قَدْكَانَتُ لَكُمْ أُسُوَةً بِكسرِ الهمزةِ وضمِّهَا فِي المَوضِعَينِ قُدُوةٌ حَسَنَةً فِي الْرهِيمَ اي به</u> قَــولاً وقِـغلا وَالَّذِيْنَ مَعَةٌ مِسنَ الـمُــؤمِـنيـنَ إِذْقَالُوَالِقُومِهِمْ إِنَّالْبُرَا أَوُا جَـمُـعُ بَــرى وَكَـظـرِيفِ مِنْكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُونَ مِنْ دُوْنِ اللَّهِ كَفَرْنَا لِكُمْ اَسْكَرُنَا كُمْ وَبِكَ ابْيَنْنَا وَبَيْكُمُ الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَاءُ أَبَدًا بِسَحِقِيقِ الهَمُزَسَين والدَالِ النَّانِيةِ واوِّا حَتَى تُوَمِّنُوابِاللهِ وَيَحْدَ فَالْأَقُولِ إِبْرِهِ يَعَرِلاً بِيغِلاَسْتَغْفِرُنَّ لَكَ مُستَشَنَى مِنَ أَسْوةِ أَى فَلَيْسَ لَكُم

السَّأَسِّى يِهِ فِي ذَٰلِكَ بِأَنْ تَسْتَغَفِرُوا لِلْكُفَارِ وَقُولُه وَمَا أَمْلِكُ لَكُونَ اللَّهِ اى س عدا ه و ثواله مِن شَنَي عَلَيه مُسْتَثَمَى بِس حيث المُراد سنه وال كان س حيث طاهره سمّا يُناسَى فيه فُل فمن يملك كم س الله شيئا واستغفاره قبل ال يتبيّل له آنه عدُو لله كمه ذكر في راء في رَبّناعَلَيْكَ تَوْكُلْنا وَالْيَكَ أَنَبْنَا وَالْيُكَ أَمْصِينَ سَ سَفُولِ الحقيق فيله ال يتبيّل له آنه عدُو لله كمه ذكر في راء في رَبّناعَلَيْكَ تَوْكُلْنا وَالْيُكَ أَنَبْنَا وَالْيُكَ أَنْبَنَا وَالْيُعَمِّلُونَ اللَّهُ وَلَا لِمُ عَلَى الله على وقائوا وَيُنْ الله عَلَى الله عنه الله والله و

ایٹے دشمنوں کفار مکہ کو دوست نہ بناؤ ہتم تو ان نے پاس آلیسی دوتی کی وجہ ہے نبی بیٹی چیز کے ان سے جہاد کرنے کے ارادہ کا پیغ م بھیجتے ہو، جس کوانہوں نے راز دارانہ طور پرتم کو بتادیا ہے اورارادہ حثین کا ظاہر فرمایا۔ لَمِنُ سَنِ المِعْ السَّوْرِ مِينَ وَرَى بِلَحَيْبَرَ ہِ جَو کہ سبقت قلم ہے بچے وَرَی بِمُحنین ہے۔ ہ طب بن الی ہلتعہ نے اہل مکہ کے پاس اس معاملہ میں ایک خط جینے دیا تھا، اس سے کدان (اہل مکہ) کے پاس ان (حاطب بن الی بلتعه) کی مشرک اواد واورابل خانه شیره، چنانچیحضور بین نکتابنے وہ خط اس مخص ہے،القدتع کی کے (بذریعه) ہی اطلاع وینے کی وجہ سے واپس مزگا ایا تھا،جس کے ذراعہ وہ بھیجا تھ اور حاطب دضائفار تعالمے کا اس معاملہ میں عذرقبول فرما ہے تھا اوراس حق لینی دین اسلام اورقر آن کے ساتھ جوتم ہورے پاس آ چکا ہے غفر کرتے ہیں وہ پیٹیبر کواور (خود) حمہ ہیں بھی مکہ ہے ان کوئٹٹ کر کے تحض اس وجہ ہے نکالے ہیں کہ تم اپنے رب اللہ پر ایمان رکھتے ہوا کرتم میری راہ میں جہاد کے بئے اورمیری رضاجو لَى كے لئے نظلے ہو جواب شرط جس پراس كا، قبل ولالت كرتا ہے "فلا مَنَّ جِذُوْ هُمْ اوْ لِيَاءً" ہے لينى ان كواپنا دوست نه بناؤ، توتم ان کے پاس دوسی کی وجہ سے خفیہ طور پر بیغام بھیجتے ہو مجھے خوب معلوم ہے جوتم نے چھپایا ادر جوتم نے خام کرکیا ہے،تم میں ہے جو بھی آپ کے پیغام کو خفیہ طور پر پہنچانے کا کام کرے گا وہ یقینا راہ راست سے بہک جائے گا یعنی راہ ہرایت سے بھٹک گیا ،سکو اء، کےاصل معنی وسط کے بیں ،اگر وہتم پر قدیو پالیس لیعنی کامیاب بوجا تمیں ، تو تمہارے (کھلے)وتمن بوجا تمیں ک اورتل اور مار پیٹ کے لئے تم پر دست درازی اور گالی گلوچ کے نئے زبان درازی کرنے لکیس اور دل ہے جا ہے تکیس کہتم بھی َ غرکر نے لَکُوہ تنہاری قرابت داری اور تمہاری مشرک اولا دجن کے لئے تم نے خفیہ پیغام رسائی کی ہے آخرت میں عذاب ہے (بچانے) میں کچھ کام نہ آئیں گی ، اللہ تعالی قیامت کے دن تمہارے اور ان کے درمیان فیصد کر دے گا

(<u>یہ ف</u>صصل) مجہول اورمعروف دونوں میں توتم جنت میں ہوؤ گئاورو ہنجملہ کفارے دوزخ میں ہوں گے اور جو پہچیم كرر ب بوات الله خوب و كيور ما ب (مسلمانو!) تمبارك نئه حضرت ابراتيم عليه الله الله (ك طرزعمل) ميس (أُسُوة) ہمزہ کے کسرہ اورضمہ کے ساتھ ہے، اوران کے مومن ساتھیوں ہیں قولاً وفعلاً بہترین نمونہ ہے جب کہ ان سب نے ا پی توم ہے کہا کہ ہمتم سے اور جن کی تم اللہ کے سوابندگی کرتے ہوان سب سے بیزار ہیں (بُوء اء) بوی ع کی جمع ہے،جیس کہ ظریف کی جمع ظُوفَاءُ آتی ہے، ہم تمہارے (عقائد) کے باکل مسر بیں کی فوا ایکھ بمعنی آنگونا ہے، اور جارے اور تمہارے درمیان جمیشہ کے لئے بغض وعداوت ظاہر ہوگئی اَلْبَعْضَاءُ اَبِدًا حَمِّى دونوں ہمزوں کی تحقیق اور ثانی کوواؤے بدل کر، جب تک کہالقدوحدہ پرایمان نہ لا وَ،مگراہیے باپ ہے ابراہیم علیجنلادالطین کے قول کہ میں آپ کے لئے ضروراستغفار کروں گاہیہ اُسْوَة ہے مشتیٰ ہے، یعنی تمہارے لئے ابراہیم علیجی والشاکا کے اس قول لاستَغفر ک، میں اسوہ حسنہ بیں ہے، ہایں طور کہتم کفار کے لئے استغفار کرنے لگو، اور مجھے خدا کے سامنے اس کے عذاب اور ثواب میں سے سی چیز کا اختیار نہیں حضرت ابراہیم على المنظمة في التي التول (مسا الملك) ساس بات كي طرف كنابيكيا ب كدوه اس كي ليح سوات استغفار عن چيز كا ما لك نهيس، (مَاأَمْلِكُ) لَأَسْتَغْفِرَ تَلَ يرمعطوف إاور باعتبار مراد كَ مُسَتَّنَى جاوراً مرجه، مَا أَمْلِكُ، اينے ظاہر يعني معني وضعي كا عتبار ان من عرب من كا فتداء كي جائز (جيها كه التدتع الى فروي) قل فَمَنْ يملكُ لكم من الله شيئًا، اور حضرت ابراہیم علی والد کے لئے استغفار حضرت ابراہیم علی والد کے اللہ و نے ہے ہملے تھ ،جیسا کہ سورہ براءت میں ذکر کیا گیا ،اے ہمارے پروردگارہم تجھ پرتو کل کرتے ہیں اور تیری طرف رجوع کرتے ہیں اور تیری ہی طرف لوٹنا ہے، بید حضرت ابراہیم علیج کناوالٹ کے ساتھیوں کا مقولہ ہے، بیعنی انہوں نے کہااے ہمارے پرور دگارا تو ہم کو کا فروں کی آ ز مائش میں نہ ڈال یعنی تو ان کوہم پر غالب نہ فر ما کہ وہ سیجھنے نگیس کہ وہ حق پر ہیں اور فتنہ پر دازی کرنے مگیس ، یعنی ہی رے بارے میں ان کے د ماغ خراب ہوجا ^نمیں ، اور اے ہی رے پرور د گار! تو ہی ری خطا وَں کومعاف کر دے ، ہے شک تو بی این ملک میں اور اپنی صنعت میں غالب حکمت والا ہے اے امت محمد بیا! یقیناً تمہارے لئے ان میں احجھانمونہ ہے بیشم مقدر كاجواب ب، الشخص كے لئے (لِمَن مُحُمر، سے اعادة جاركے ساتھ بدل الاشتمال بك كفارسے (دلى) دوئى ركھ، توالتد تعالی اپنی مخلوق ہے بالک بے نیاز ہے اور اپنے اطاعت ًیز اربندوں کی حمدو (ثن) کاسز اوار ہے۔

عَجِفِيق الْمِرْكِ لِيَسِهُ الْحَالَةُ لَفَيْسَارِي فَوَالِلا

قِحُولَ مَنَ ؛ فَصَدَ المنهِ مَنِي المَنِينَ الرئين الرئين الربات كي طرف اشاره ہے كه تُلْقُوْنَ ، كامفعول محذوف ہے۔ قِحُولَ مَنَ ؛ وَدَىٰ مِنهِ تَوْدِيَةً كافعل ماضى ہے، تَوْدِيه كہتے ہيں ، مقصد كو پوشيده ركھنا اور خلاف مقصد كوظا ہر كرنا ، يا ايب لفظ بولنا جو ذو معنى يبين ہو، ايك معنى قريب مراد لے، جيسا كه حضرت ذو معنى يبين ہو، ايك معنى قريب مراد لے، جيسا كه حضرت

ابوبكرصد بن رضي فالفين في تعاقب كرن والع وتمن كسوال كرجواب من فرماياتها: رَجُلٌ يَهْدِيني السَّبيل مرايت کے معنی رہبری کرنے کے بیں، رہبری دنیا کے راستہ کی بھی ہوتی ہے یہ معنی قریب بیں اس لیے اوالا ذہن اس معنی ک طرف سبقت کرتاہے اور دوسرے معنی آخرت کی رہنمائی ورہبری کرنے کے ہیں بداس کے معنی بعید ہیں، حضرت ابو بمرصد بق وضَالْنَهُ مَعَالِينَ أَنْ يَهِم معنى مراولي تقيد

فَيْوَلْنَى : بِخَيْبَرَ، يدناقلين كَ تَعَيف بِحَيْدِ بِحُنَيْنِ ب،اس لِي كَوْرُوهُ خير ماه مرم عهي نتح مد ايك سال ساخ واتع ہوا ہے اور فتح مکہ ماہ رمضان ۸ھیں پیش آیا ہے، یہ آیات فتح مکہ کے دفت نازل ہوئی ہیں اور خیبراس ہے پہلے ہی فتح ہو چکا تھا ہٰذا خیبر کی طرف توریہ کی کوئی صورت نہیں بن علی۔

فِيُوْلِكُنَّ ؛ بالمودة، يس باءسييه بـ

فِيُولِكُنَّ : باعلام الله تعالى، يه فاستَرَدَّهُ، كَ تعلل ب

فَيْكُولْنَى ؛ لِأَجْلِ أَنْ امَنْنُتُمْ، يواشاره باس باس كاطرف كه أَنْ تُوْمِنُوا، بناويل مصدر موكر يُخوِجُون كامفعول ادب-فِيْ وَلَيْ ؛ لِلْجِهَاد، اس مين اس بات كى طرف اشاره بكرجِهَادًا مفعول لا مونى كى وجد منصوب إوران كُنتُم، كا جواب شرط محذوف ہے، جس پر"لا تتخذوا" ولالت كرتا ہے، اوروہ فكا تتخذوهم اولياء ہے۔

فِيُوْلِكُمْ: تُسرّون، به تلقون ہے برل ہے۔

فَيُولِكُ : سَوَاءَ السَبيْل، بياضافت صفت الى الموصوف ب، اى السبيل السواء.

فِيْوَلِّكُ ؛ لوتكفرون، لو بمعنى أنْ مصدرياى تمنوا كفركم.

فِيْوَلِكُنَّ ؛ مِنَ الْعَذَابِ، لَنْ يَنْفَعَكُمْ مَنْ كَمْ عَلَى جِـ

فَيْوَلِّنَى ؛ يَوْمَ الْقِينَمَةِ ، أَربيلَن تَنْفَعَكُمْ يَ مُتَعَلِّق بُوتُواسُ وقت يَوْمَ الْقِيَامَةِ يروقف بوگااور يَفْصِلُ ع جمد متالفه موگا اور يہ من درست ہے كما ين ما بعد يكف حيل عص تعلق موراس صورت من أوْ لَا دُكُمْ يرونف موگا ، اور يَوْمَ القِيمَةِ سے جملہ منت نفہ ہوگا۔

فَيُولِكُ ؛ إِنَّا بُرَء اوًّا حمع بَرِيءٍ كَظَرِيْفٍ لِينْ جس طرح ظريف كى جَعْ ظُرَفَاءُ آتى ہے اس طرح بَرى ، كى جمع سُرء اوًا آتى ہے۔

فِيْ وَإِبْدَالِ النَّانِيةِ وَاوًا لِينَ آبِدًا كُو وَبَدًا بَكَى يِرْهَ عَلَمْ بِيلِ

هِؤُلِكُمْ: مستثنى مِنْ أَسْوَةٍ لِيمْ إِلَّا قُـولَ إِبْـرَاهِيْمَ الخ قَدْ كَانَتْ لَكُمْرُأَسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِي اِبْرَاهِيْم عَيْمَ الْخ ے، مطلب ریہ ہے کہ تمہارے لئے ابراہیم علیقہ لاکھ اللہ اللہ کے ہر تول وقعل میں اچھا نموندہے مگر کفار کے لئے استعفار کرنے میں ہیں ہے۔

ھ (نِمَزَم بِدَاشَ إِنَّ

قَوْلُ الله وَنُولَ آیَول عَلَی الله مِن الله م

قِحُولَیْ ؛ کُنی بِهِ عَنْ اَنَّهُ لَا یَمْلِكُ لَهُ غَیْرَ الإسْتِفْفَاد ، ئِدُوره اعتراض کاجواب دیا گیا ہے ، جواب کا خلاصہ یہ ہے کہ مَااَمْ لِكُ لَكَ مِنَ اللّٰه مِنْ شَیْءِ کے دوعتی ہیں ایک عنی مرادی جو کہ یہال مقصود ہیں ، جس کو کئی بِهِ ہے تعبیر کیا ہے اور دوسرے معنی وضعی جو کہ تقصود ہیں ، جس کو کنی بِهِ ہے تعبیر کیا ہے اور دوسرے معنی وضعی جو کہ تقصود ہیں ہیں اور وہ ہیے کہ مَا اَمْ لِكُ لَكَ مِنَ اللّٰهِ اللّٰح کو معطوف علیہ یعنی لاَسْتَغْفِر لَنَّ لَكَ اللّٰح سے خارج کردیا جائے بعنی نہ تو کا فر کے لئے استعفار کرنا قابل اقتداء اور نہ یہ کہنا قابل اقتداء ہے کہ میں آ ہے کے لئے اللہ کی جانب سے کی نفع ونقصال کا مالک نہیں ، حالا نکہ دوسری بات آ یہ فتح کی روشنی میں قابل اقتداء ہے۔

خلاصة كلام:

نداسہ کلام یہ کہ ابرائیم عَلیظِ لاطائے کا قول مَا اَمْسِلِكُ لَكَ المنع معنی مرادی كے اعتبار سے قابلِ اقتداء بِ اُمَر معنی وضی كے اعتبار سے قابلِ اقتداء بِ اُمَر معنی وضی كے اعتبار سے قابلِ اقتداء بِ مِفسر علام كے قول منتقیٰ مِن حَیثُ المواد منه وَ إِن كان من حیث ظاهره مسا بُدَأَشِّی فیه کا یہی مطلب ہے۔

مذكوره اعتراض كاد وسراجواب:

فَيْوُلْ اللهُ ال

فَيْخُولِكُ : مَنْ يَتُولَى شَرط إورجواب شرط محذوف إلى كاتفير فوساله على نفسه، الدّنعالى كاقول فيان الله النخ جواب كي علت بد

ؿٙڣٚؠؙڔۅؖؿؿۘ*ڽؙ*ڿ

شان نزول:

یآ بینا الگذین امکوا کا تکیو کوا عدوی و عدو گراگیاء ای سورت کے مضمون ہے معلوم ہوتا ہے کہ ای سورت کے مضمون ہے معلوم ہوتا ہے کہ ای سورت کے منظم اللہ بینا ورفتح کے درمیان کا ہے جمہور مغسرین نے ای کواختیار کیا ہے، اور ابن عمباس ، مجاہد، قیا دہ ، اور عروہ بن زول کا زمانہ کیا گئی ہے کہ ان آیات کا نزول ای وقت ہوا جس وقت کہ شرکین مکہ کے نام مصرت ما طب بن الی بلتعہ کا خط پکڑا گیا تھا۔

ھ (مَرْزَم بِهُلتَّرِنِ) ≥

واقعه كي تفصيل:

مشرکین مکہ اور نبی بین فیٹی کے درمیان حدید ہیں جو معاہدہ ہوا تھا، اہل مکہ نے اس کی خلاف ورزی کی اس لئے رسول اللہ میں کا نہ پر جملہ کرنے کی خفیہ طور پر تیاری شروع فر مادی ، اس پر قررام کوصیعت راز میں رکھا گیا اور چند مخصوص صحابہ کے ملاوہ آپ بینی کی گئی ہے کہ کو نہ بتایا کہ آپ بینی جال کے طور پر کیا گیا تا کہ دشمن کو قبل از وقت مسلمانوں کی مر ترمیوں اور ان کے منصوبوں کا بہتا نہ چل سے منظر مدے جم مت اور عند بین ابی بلتعہ دینی افتایا کر لی تھی ، مکہ والوں جو کہ مدر بین میں اور و باش افتایا کر لی تھی ، مکہ والوں کے مدر کر مدے جم مت کر مدے جم میں کو کہ دو باش افتایا کر لی تھی ، مکہ والوں کے اور کہ بین تھی۔ میں منتقد داری نہیں تھی کیکن ان کے بیوی ہے اور کے اور کا گیا گئی ان کا دیگر کی میں منتقد میں کوئی رشتہ داری نہیں تھی۔

انہوں نے سوچ کہ میں قریش مکہ وآپ ہو تھیا۔ کی ملہ پر جمعہ کی تیار کی کی اطلاح ، نے مرا کید احسان کے بدل ان کے بیوی بچوں کا خیال رحیس، اتفاق ہے ان زمانہ میں مکہ موقفہ ہے ایک عورت آئی جو پہلے بنی عبد المصلب کی لونڈی تھی ،اس نے از اور تو کرگانے ، بجانے کا کا مشروع کی مرد یا تھا،اس بارو تھا اس نے مدید آگر آپ بلاتیں ہے اپنی تنگ وہی کی فیکلیت کی اور پچھے الی مدو کی طالب بھوئی ،رسول اللہ طون بھی نے اس ہوئی میں دیا، تو آپ بلاتیں نے ہو ان کہ ہو؟ تو اس نے کہ بعد دریا وقت فر مایا کہ ہم مسلمان ہو کر آئی بو ؟اس کا جواب بھی نی میں دیا، تو آپ بلاتیں نے ہو چھ کہ پھرتم یہاں کس فرض ہے آئی بو ؟ تو اس نے کہ کر آپ بلاتیں میں ندان کے لوگ ہے آپ بلاتیں لوگوں بی بو چھ کہ پھرتم یہاں کو گو اس بھر آگذ اور آپ لوگ یہاں آئی بول ، آپ بلاتیں لوگ ہو آپ بلاتیں ہو کہ ان میں دیا ہو کہ ہو گا ہو کہ اس میرا گذارہ مشکل ہو گئی ہو جو ان کہ ہو جو ان کیا ہو کر آپ بھر کر در کے بعد ان کر مرک کی بیٹر ورمغنے بودہ کہ ہو چی ہیں ،اس وقعہ بدر کے بعد ان کی مرد کی بعد ان کر بیان طرب ختم ہو چی ہیں ،اس وقت ہے جھے کی بارش کر تے تھے کا اس نے کہ واقعہ بدر کے بعد ان کی مرد کی مدد کی نظر بہات بھرن طرب ختم ہو چی ہیں ،اس وقت ہے جھے کی بارش کر تے تھے کا اس نے کہ واقعہ بدر کے بعد ان کی قربی انہوں نے اس کو فقر اور کیڑ ہے و غیرہ و دے کر رخصت کیاں سے درائی مدد کیا کہ کو کر کر انہوں نے اس کو فقر اور کیڑ ہے و غیرہ و دے کر رخصت کیاں سے درائی مدد کیا

جب وہ مکہ جانے لگی و حضرت حاطب بن انی بلتعہ رکھا نفانگا گائی اس سے ملے اور چیئے سے اس کو بعض سر داران مکہ کے نام
ایک خط دے دیا اور دس دینار دیئے ، تا کہ وہ راز فیش نہ کرے اور یہ خط مکہ تے سر داروں کو پہنچ دیے بعض روا تیوں میں دس
دیناروں کے ستھ ایک چ دردیئے کا بھی ذکر ہے (اعراب القرآن بحوالہ قشیری واٹعلمی) ابھی وہ مدینہ سے روانہ بی بولی تھی کہ
المتہ تعالی نے بذریعہ وحی اس واقعہ کی اطلاع آپ بھی تھی کو دے دی ، آپ بھی تیج نے فورا ہی حضرت علی تفتی افغائی ، حضرت
زبیر تفتی افغائن الفقائی اور حضرت مقداد بن اسود تفتی افغائن الفائی کو اس کے پیچھے روانہ کیا (بعض روایات میں دوسرے نامول کا ذکر
ہے) اور حکم دیا کہ تیزی سے جاؤ ، روضۂ خاخ کے مقام پر ایک عورت سے گی جس کے پاس مشرکیین کے نام حاطب تفتی افغائنگ کا ایک خط ہے جس طرح بھی ہواس سے وہ خط حاصل کر واگر وہ دید ہے تواسے جھوڑ دینا اگر نہ دیتواس کو تی کر دیتا۔

خط كامتن:

اَمّا بعد! فِانّ رسول الله قَدُ تَوَجَّهَ اِلْيُكم بجيشٍ كالليل يَسِير كالسَّيْل، واقسم بِالله لَوْلَمْ يسِر اليكم اِلّا وَحْدَهُ لَاظُفَرَهُ الله بكم، وَلَآنُجَزَلَهُ مَوْعِدَهُ فِيْكم، فِانَّ الله وَلِيَّةُ وَنَاصِرُهُ.

ت رہے ہے۔ جمد وصلوق کے بعد، بے شک اللہ کے رسول تمہاری طرف متوجہ ہوئے ہیں ایبالشکر لے کر جو (کثرت میں) رات کی ما نند ہے اور چلنے میں سیلا ب کی ما نند ہے ، اور میں اللہ کی شم کھاتا ہوں اگر ، وتمہاری طرف صرف اسکیے ہی متوجہ ہوتے تو بھی اللہ تعالیٰ یقینان کوتم پر فتح عطافر ماتا اور ان سے تمہار ہے بارے ہیں اپنے وعدے کی ضرور بھیل فرماتا ، بلاشبہ اللہ اس کا والی اور ناصر ہے۔

حضرت علی تفکاندائی تغلیج فرماتے ہیں کہ ہم نے تعلم کے مطابق جیزی سے اس کا تعاقب کیا، اور ٹھیک اس جگہ جہاں کے لئے

رسول استہ علی تفکاندائی تغلیج نے فردی تھی اس عورت کو اونٹ پر سوار جاتے ہوئے پکڑلیا، ہم نے اس سے کہا وہ خط نکالو جو تہہار سے پاس

ہے، اس نے کہ میر سے پر سکسی کا کوئی خطر نہیں ہے، ہم نے اس کے اونٹ کو بٹھا دیا، اس کی تلاثی کی مگر خط ہمار سے ہا ہم تک تکن ہم نے دل میں کہا کہ رسول اللہ قیق تھی کی فر غلط نہیں ہو سکتی ضرور خط اس نے کہیں چھیایا ہے، پھر ہم نے اس سے کہ، تو

خط لکال کردید سے ورنہ ہم نگا کر کے تیری جامہ تلاثی لیس گے، جب اس نے دیکھا کہ ہم سے نجات مشکل ہے، تو اس نے اپنی خوئی سے خط لکال کردید، حضرت علی تفکیلات فرماتے ہیں کہ ہم پید خط نے کر رسول اللہ قیق تھی کی خدمت میں حاضر ہوگئے،

حضرت عمر بن انتظاب تفکیلائی تھی تھی تھی رسول اللہ تھی تھی کہ اس کی گردن ماردوں، آپ قیلی تھی اور سے خین نت کی ہے، ہماراراز کفار کولکے دیا، مجھے اجاز ہ دیجے کہ میں اس کی گردن ماردوں، آپ قیلی تھی ان کے اضام سے مسلمانوں سے خین نت کی ہے، ہماراراز کفار کولکے دیا، مجھے اجاز ہ دیجے کہ میں اس کی گردن ماردوں، آپ قیلی تھی ان کے اضام میں اس کی گردن ماردوں، آپ قیلی تھی ان کے اضام والیہ ن کو جانے ہے اور فر مایا ہے: اعملوا ما شائل قلہ خفوت لکھ جوچا ہو ہو کرد میں نے تہبار ہے گن وہ بخش و ہے وہ سے کہ اللہ تعالی کا اعلان ساتو عمر تھی تھی گی آئیکھوں میں آنسو ہم آگے اور میں کا سے میں اس کی اللہ اور اس کارسول ہی بہتر جانی ہے۔

ان کھی

عاطب بن الى بلتعه رَفِيَا للهُ تَعَالِينَ أَبِ مِلْقِلْظَةً كَي خدمت مين:

آپ ﷺ نے حاطب وَ وَاَنْهُ مَنَا اَنْهُ مَنَا اَنْهُ مَنَا اَنْهُ مَنَا اَنْهُ مَنَا اَنْهُ مِنْ مِنْ مِنْ اِلْم کی وجہ سے نہیں کیا بلکہ اس کی وجہ صرف رہے کہ دیگر مہاجرین کے دشتہ دار مکہ میں موجود میں جوان کے بال بچول کی حفاطت کرتے ہیں ،میراوہاں کوئی رشتہ دارنہیں ہے تو میں نے میسوچا کہ میں اہل مکہ کو پچھا طلاع کر دوں تا کہ وہ میرے احسان مندر ہیں

اورمیرے بچوں کی حفاظت کریں ،آپ شوائی نے ان کی سپونی کی وجہ سے انہیں کی جذبیں کہا تا ہم اللہ نے تنہیہ کے طور پر بیآیات نا ز ں فر ہا دیں ، تا کہ آئندہ کوئی مومن کسی کا فر کے ساتھ اس طرح کا تعلق مودت قائم نہ کرے ، سورہ ممتحنہ کی ابتدائی سیتیں اس واقعه كسسله مل نازل بموتى بيل- (صحيح بحارى تفسير سورة الممتحه، صحيح مسلم كتاب فصالل الصحابة)

تُلْفُوْنَ اِلْيُهِمْ مِالْمُوَدّةِ (الآية) مطاب بيه بيك أني مِنْ فيه باليس ان تَك يَبني كران سے دوستان تعلق قائم ركھنا جا ہے ہو،حالانکہتم کومیرےاوراپنے دشمنوں کے ساتھ دوئی کے تعلقات قائم نہیں کرنے جاہئیں کفارکواس قشم کے خطالکھنا بیان کودوئ کا پیغام دینا ہے،اپنے اور خدا کے دشمنول سے دوئی کی قوقع رکھنا تخت دینوکا ہے اس سے بچنا چاہئے ،اور پیر بات یا در کھو، کہ کا فرجب تک کا فرنے وہ کسی مسلمان کا اورمسلمان جب تک کہ وہ مسلمان ہے بہتی کا فر کا دوست نبیس ہوسکتا ،شرک اور کفر کی وجہ ت تههارااوران کا کو کی تعلق نہیں ہوسکتہ ،امند کے پرستاروں کا بھلا غیرامند کے بیجاریوں ہے کیا تعلق؟

يُعْسِي بُونَ الوَّسُولَ وَإِيَّاكُمْ (الآية) يعني بَغِيم إلين تا اورتم يُونين يسي ايذا تمين ويكرترك وطن برمجبور كياتنش اس قسور بركتم ايك الذكوجوكة تبهارا اورسب كارب بي يوان، ت بو؟ ان تُكنتُ مْر خرختُمْ حهادًا فِي سَعيْلِي (الآية) لینی تمہر را گھر بارکو چھوڑ کر بھانا گرمیہ ہی خوشنو دی اور میہ ہی را ہ میں جہرہ کر نے کے بے اور فیالص میہ ہی رضا کے واسطے تم نے سب کوا پنادشمن بنایا ہے ،تو پھرانبیں دشمنوں ہے دوئتی گا نتصنہ کا کی مصب ہے؟ کیا جنہیں ناراض کر کے اللہ کوراضی كيا تقاب أنبيس رامني كرك المتدكونا راض كرنا جائة : و؟ وَأَنَا أَعْلَمُ بِهَا احْقَيْتُهُمْ (الآية) لِعِنَ الركوئي انسان كوئي كام و تیا ہے چھپا کر کرتا ہے،تو کیا اس کوالقد ہے بھی چھپا ہائے گا ، ویکھو جا طب زمین ننڈ نعائے نے کس قدر کوشش کی کہ قط کی اطلاع نسی کونہ ہو مگرالٹدنے اپنے رسول کو طلع فر مادیا۔

إِنْ يَشْقَفُوْ تُحَمْرِيَكُوْنُوْا لِكُمْ أغداءً لِعِنْ ان كافروں ہے بحالت موجود وَسَى بھلائى كى اميدمت رَھو،خواوتم نَتْنَى بى روا داری اور دوستی کا اظہار کرلو گے وہ بھی تمہار ہے خیرخواہ بیں ہو کتے ،انتہ ئی روا داری کے باوجوداً سرتم پران کا قابو چڑھ جائے ق ئسی قتم کی برائی اور دختمنی ہے درگذر نہ کریں گے، زبان ہے ہاتھ ہے، غرنسیکہ ہہ طرح سے ایڈ اء پہنچ نئیں گے، اور ان کی میہ خواہش ہوگی کہتم کفر میں واپس ملیث آؤ، کیاا ہے شریراور بد باطن اس لائق بیں کہ ان کود وستانہ پیغام بھیجا جائے۔

رَتُهُا لا تَجْعَلْنَا فِتُنَدَّةً لِلَّذِيْنَ كَفُرُوا (الآية) تعنى كافرول وجم يرندباورتسلط عطانه فرما،اس طرت وهم بحصيل كه كه و وحق پر ہیں ، یوں ہم ان کے لئے فتنہ کا باعث بن جا تھیں گے۔

عَسَى اللَّهُ أَنْ يَجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِينَ عَادَيْتُمْ مِنْ أَهُمْ مِن كُمَّار مكة طاعةُ لله تعالى مُّودَّةً باذ يَهْدِيهُمُ للايْمَان في صيرُوا لَكُمْ اولباءَ **وَاللَّهُ قَدِيْرٌ** على دلك وقد فعله عد فتح مَكَة **وَاللَّهُ غَفُوْرٌ** لهم مَا سلَفَ **رَّجِيُمُ**۞ بهِمْ لَايَنْهَاكُمُّ اللَّهُ عَنِ الَّذِيْنَ لَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ سِن الحُسَرِ فِي الدِّيْنِ وَلَمْ يُخْرِجُوكُ وَمِنْ دِيَارِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْهُمْ سِدَلُ اشْتِمالِ س

﴿ (مَرْزَم بِسَبُلِثَ مِنْ) ◄

الدبر وَتُقْسِطُوا تَنْصُوا إِلَيْهِمْ بِالنِّسَطِ أَيْ العَدْلِ وهذَا قَبْلِ الأسرِ بِالْجِهَادِ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ العدلي إِنَّمَا يَنْهَكُمُ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ قَاتُلُوْكُمْ فِي الدِّينِ وَأَخْرُ وَكُمُ مِنْ دِيَارِكُمْ وَظَاهَرُوْا عَاوَنُوا عَلَى إِنْحَرَاجِكُمُ أَنْ تَوَلَّوْهُمْ مَدِلُ اشتمال من المديسَ تَتَحدُوْهُمُ اولِياء وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ فَأُولَإِكَ هُمُ الظُّلِمُونَ۞ يَأْتُهَا الَّذِينَ الْمُنْوَآ إِذَا جَآءَكُمُ الْمُؤْمِنَّ بالسستين مُهْجِراتٍ سنَ الكُهَّار بَعْد التَّملح مَعْهُمْ فِي الْحُديبِيّةِ عَلَى أنَّ مَن جَاءَ سهم إلى المؤسس لرد **﴾ التَّكِنُوكُنَّ** بالمخس انهن ساخَرَجُنَ الَّا رغْمَةً في الاسلام لا بُغضًا لِأَرْوَاجِهِنَ الكُفَّارِ وَلَا عشْفًا لرحالِ س المُسبِمِينَ كَدَا كَانَ النبيُّ صلى الله عليه وسلم يُخلِفْهُنَّ ٱللهُ أَعْلَمُ بِأَيْمَانِهِنَّ ۚ فَاكْ عَلِمُتُمُوهُنَّ فَلَنْتُنُوهُنَّ فَلَنْتُنُوهُنَّ فَلَنْتُنُوهُنَّ فَلَنْتُنُوهُنَّ فَلَنْتُنُوهُنَّ بِالحَسِ مُؤْمِنٰتٍ فَلَاتَرْجِعُوْهُنَّ تَـرُدُوهُنَ إِلَى الْكُفَارِ لَاهُنَّ حِلُّ لَهُمْ وَلَاهُمْ يَجِلُوْنَ لَهُنَّ وَالْتُوهُم اي اغـطـوا الكُفر ا(واجَهُنَّ مَّآ اَنْفَقُوْ عَـٰ لَيْنِينَ مَـنَ الـمُهُورِ وَلَاجُنَاحَ عَلَيْكُمْ اَنْ تَنْكِحُوكُنَّ بِشَـرُطِـهِ اِنَّ ٓ الْتَنْتُمُوكُنَّ أَجُورُكُنَّ مُهُــورِ نُمَّ وَلَاتُمْسِكُوا بِالتَشديدِ والتَخفِيفِ بِعِصَمِ الكَوَافِرِ زَوْجَاتكم لِقَطْعِ اسْلَامكم لها مشرطه او اللاحقت المُشْرِكِين سُرْتَدَاتٍ لِقَطْع إرتدادِهن بِكَاحِكم بشرطه وَسَّئَلُوا أَطْلُبُوا مَّأَأَنَفَقْتُم عَلَيْهِنَ مِنَ المُهُور في صُورةِ الإرْتِدادِ سَمِّنْ تَزَوِّجِهُنَّ مِنَ الكُفَّارِ **وَلْيَنْكُلُوْالْمَآالْفَقُوْل**ُ عَلَى السُّهَاحِرَاتِ كَمَا تَقَدُّمُ انَهِم يُؤتونه ذَلِكُمْ كِتَلَمُ اللَّهِ يَعَلَمُ بَيْنَكُمْ بِهِ وَاللَّهُ عَلِيْمٌ كَلِيْمٌ ۞ وَإِنْ فَاتَكُمْ شَى مَّمِنَ أَزْوَاجِكُمْ اى وَاجِدَةً فَ كَثَرُ سِنهُنِ او شَيْءٌ من مُهُورِهنَ بالذِّهابِ إِلَى الْكُفَّارِ مُرتَدَاتِ فَعَاقَبْتُمْ فَعَرَوتُمْ وغَيْمتُم فَاتُّواالَّذِيْنَ ذَهَبَتْ أَزْوَاجُهُمْ من الغسمة مِّتْلُمَّا أَنْفَقُوْلُ لِفَوَاتِه عِنِيهِم مِن جِهِةِ الكُفَارِ وَاتَّقُوااللَّهَ الَّذِي أَنْتُمْرِهِ مُؤْمِنُونَ® وقَد فعَلَ المُؤسنُونَ مَا أُسرُوا ب من الإيشاء لِسكُفَارِ والمُومِنِين ثُمِّ ارْتَفَعَ هذا الحُكُمُ لَيَايُّهَا النَّبِيُّ اِذَاجَاءُكُ الْمُؤْمِنْتُ يُبَايِعُنَكَ عَلَى اَنْ لَأَ يُشْرِكُنَ بِاللَّهِ شَيْئًاوَّ لَا يَسْرِقْنَ وَلَا يُزْنِينَ وَلَا يَقْتُلُنَ أَفْلَادُهُنَّ كَمَا كَان يُفْعَلُ في الجَاهِلِيّةِ مِن وَأَد البَنَاتِ اي دَفَ نَهِ نَ أَخَبَ مُ خَوِفَ الْعَارِ وَالنَّقْرِ وَلَا يَأْتِيْنَ بِبُهِّتَانِ يَفْتَرِينَهُ بَيْنَ أَيْدِيْهِنَّ وَأَرْجُلِهِنَّ اى وَلَهِ مَنْفُوطٍ يَنْسِبُنَـهُ إِلَى الرَّوْجِ وَوَصَفَ سِصِفَة الْـوَلَـدِ الْمَحَقِيْقِيّ فَإِنَّ الْأُمّ إِذَا وَضَعَنْهُ سقطَ بَيْنَ يَديها ورجُديها **وَلَايَعْصِيْنَكَ فِي مُعْرُوفٍ هُ و سا وَافَقَ طَاءَةَ اللَّهِ تعالىٰ كَتركِ النِّيَاحَةِ وَتَمْزِيقِ النِّيب وجزِّ الشُّعْرِ و شقّ** الحيب وحمش الوَجْهِ فَبَايِعُكُنَّ فَعَلَ صلَّى اللَّه عليه وسلم ذلك بِالقُول ولَم يُصافح واحدةً سهس وَالْسَتَغَفِرْ لَهُنَّ اللَّهُ ۚ إِنَّ اللَّهُ عَفُورً رَّحِيِّمُ ۗ يَأَيُّهَا الَّذِينَ امَنُوٓ إِلاَّتَتَوَلُوْا قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ هُــــهُ اليهُـــودُ قَدْيَدِيسُوْاهِنَ الْإِحْرَةِ اي سِن ثَوَابِها مَعَ ايْقانهم بها لِعِنادِهم النّبيّ صلى الله عليه وسلم مع عِلمهم بصدقه كَمَا يَبِسَ الكُفَّالُ الكائِنُونَ مِنْ أَصْحِبِ الْقُبُورِ في المقبُورين مِن خير الاحرة ادتُعرض عديهم مَقَاعِدُهُم مِن الحَنَّةِ لُو كَانُوا الْمَنُوا وَمَايَصِيرُونَ اليهِ مِنَ النَّارِ.

سیبلا ہے ۔ میں جی ایک کیا عجب کہ اللہ تعالیٰ عنقریب ہی تم میں اور تمہارے دشمنوں میں محبت بیدا کردے جن کفار مکہ سے تم نے خدا کی طاعت میں دشنی کی ہے،اس طریقتہ سے کہوہ ان کوائیمان کی ہدایت دیدے،نو وہ تمہارے دوست ہوجا نمیں ، اللہ تعالی اس ہوت پر قادر ہے ،اور بلاشبہاللّٰہ تعالیٰ نے فتح مکہ کے بعداییا کربھی دیا ، اوراللّٰہ تعالیٰ ان کے سابقہ (گنا ہوں) کو معاف کرنے والا ان پر رحم کرنے والا ہےاللہ تعالیٰ تم کوان کفار کے ساتھ جنہوں نے تم ہے دین کے بارے میں لڑ ائی نہیں کی اور نہ انہوں نے تم کوتمہارے گھروں ہے نکالا ہے حسن سلوک کرنے ہے الَّذِيْنَ ہے بدل الاشتمال ہے، اور انصاف کا برتا ؤ کرنے ہے منع نہیں کرتا اور پیچکم ، جہاد کا تھم نازل ہونے ہے پہلے کا ہے ، بلکہ اللّٰہ تعالیٰ تو انصاف کرنے والوں سے محبت کرتا ہے ، اللّٰہ تعالی تمہیں صرف ان لوگوں کی محبت ہے رو کتا ہے جنہوں نے تم ہے دین کے بارے میں لڑا کیاں لڑیں اور تمہیں جرا وطن کیا، اورتم کوجلاوطن کرنے میں مدد کی الکسندیٹ سے بدل الاشتمال ہے، یعنی میہ کہتم ان کودوست نہ بناؤ، جولوگ ایسے کا فرول سے محبت کریں وہ (قطعا) ظالم ہیں،ا سے ایمان والو! جب تمہارے یاس اقرار کرنے والی مومن عورتیں کفار سے ہجرت کر کے آئیں ان کے ساتھ صدیبیہ میں اس بات پر سکے کرنے کے بعد کہ جوان میں سے مومنین کے یاس آئے گا اس کونوٹا دیا جائے گا، تو ان کوصف کے ذریعہ جانچ کرلیا کریں کہ وہ صرف اسلام میں رغبت کی وجہ سے بجرت کر کے آئی ہیں ، نہ کہا ہے کا فر شو ہروں ہے بغض کی وجہ ہے ،اور نہ کسی مسلمان ہے عشق کی وجہ ہے ،آپ میلین کی گیان ہے ایسی ہی قشم لیو کرتے تھے ، ان کے حقیقی ایمان کوتو اللہ بی خوب جانتا ہے کیکن اگر وہ تہ ہیں قشم کی وجہ ہے مومند معلوم ہوں ،تو تم ان کو کا فروں کی طرف مت لوٹا ؤ بیان کے لئے حلال نہیں اور نہ وہ ان کے لئے حلال ہیں اور ان کے کافر شوہروں کا جو مہر ان پرخرچ ہوا ہووہ ان کو دیدواور جب تم ان عورتوں کا مہرا دا کر دوتو تم پران ہے نکاح کرنے میں نکاح کی شرط کے ساتھ کوئی گناہ نبیں ہے اور اپنی ہیو یوں میں ہے کا فرعورتوں کی ناموں اینے قبضے میں ندر کھو تمہارے اسلام کے ان کو (تم ہے) منقطع کرنے کی وجہ ہے اس کی شرط کے س تھو، یا ان بیو یوں کے مرتد ہوکرمشرکین سے جاملنے کے سبب ان کے ارتد اد کے سبب،تمہارے نکاح منقطع کرنے کی وجہ ے اس کی شرط کے سرتھ ، اور جو کچھتم نے ان پر مبرخر چ کیا ہو ان کے ارتد اد کی صورت میں ان کے کا فرشو ہروں سے طلب کربو،اوروہ بھی مہا جزات پرخرچ کیا ہوامال طلب کرلیں جیسا کہ سابق میں گذر چکا، کہان کو دیا جائے گا، بیاللہ کا فیصلہ ہے جو تمہارے درمیان کررہا ہے،اللہ تعالی بڑاعلم وحکمت والا ہے اور اگرتمہاری کوئی بیوی تمہارے ہاتھ ہے نکل جائے ایک یا اس سے زیادہ یا ان کا پچھ مہر فوت ہوجائے اور مرتد ہوکر ان کفار سے جاسلنے کی وجہ سے ، پھر جبتم ان سے جہا د کرو اورتم کو مال غنیمت حاصل ہو تو جن کی بیویاں چکی گئی ہیں تو انہیں ان کے اخراجات کے برابران کو مال غنیمت سے دبیرو کفار کی طرف ہے ان کے نفقہ کے نوت ہوجانے کی وجہ ہے اور اس اللہ ہے ڈرتے رہوجس برتم ایمان رکھتے ہو اور بلا شبہ مومنین نے اس پر عمل کیا جس کا ان کو حکم دیا گیا تھا، لینی کا فروں اور مومنین کو دیکر ، پھر رہے حکم منسوخ ہو گیا، اے پیغمبر! جب مسلمان عورتیں آپ

میں نظر سے ان باتوں پر بیعت کرنے آئیس کہوہ اللہ کے ساتھ کسی کوشریک نہ کریں گی اور نہ چوری کریں گی اور زنا، نہ کریں گ اورا پی اولا د کونگ نه کریں گی جیسا کہ وہ زمانۂ جابلیت میں بیٹیوں کوزندہ دِنن کیا کرتی تھیں لیعنی شرم یا نقر کےخوف ہے ان کو زندہ دفن کیا کرتی تھیں، اور نہ کوئی بہتان کی اولا د لائنیں گی جس کواپنے ہاتھوں اور پیروں کے درمیان بنالیویں لیعنی اٹھ 🚅 ہوئے بچکوا پے شوہر کی طرف منسوب نہ کریں گی (بیس ایّبدیفِینَّ) ہے ولد حقیقی کاوصف بیان کیا ہے،اس لئے کہ مال جب اس کوجئتی ہےتو وہ اس کے ہاتھوں اور بیروں کے درمیان گرتا ہے، اور کسی نیک کام میں تیری تکم عدو نی ندکریں گی اور نیک کام وہ ہے جوامتد کی طاعت کے مطابق ہو،جبیہا کہ نوحہ کرنے کو اور کیڑے کھاڑنے کو، اور پال نوچنے کو اور ًمریبان کھاڑنے کو اور چہرہ نو چنے کوڑک کر ہے، تو آپ میلائٹ ان سے بیعت فرمالیا کریں آپ بیلائٹ نے بیعت کا بیمل قولا فرمایا ،اور کسی عورت ے مصافی نہیں فرمایا، اور ان کے لئے اللہ ہے مغفرت طلب کریں، بے شک اللہ تعالیٰ بخشنے والا معاف کرئے والا ہے ا ۔ مسمانو!تم اس قوم ہے دوستی ندر کھوجن پراللّٰہ کاغضب نازل ہو چکا ہے وہ یہود ہیں جوآ خرت ہے اس طرح ، یوس ہو چکے ہیں لعنی اس کے ثواب ہے آخرت پرائیان رکھنے کے باوجود آنخضرت بنون کھٹا سے عناد کی وجہ سے ان کے برحق ہونے کاملم رکھنے کے باوجود جیسا کہ کفار جوقبروں میں آخرت کی خیرے ناامید ہو چکے ہیں جب کدان کے روبروان کا جنت کا ٹھکانہ پیش ئیاجائے گااگرا بمان لائے ہوتے اورجہنم کا وہ ٹھکا نہجس کی طرف وہ جارہے ہوں گے۔

عَجِفِيق تَرَكِيكِ لِيَسَهُ بِيكَ لَقَالِمُ لَقَالِمُ الْعَالِمِي فَالِلاَ

فِيَوْلِلْ ؛ طاعَةً للهِ تعالى، أَيْ عَادَيْتُمْ لِآخِلِ طَاعَةِ الله ، طَاعَةً للهِ ، يعَادَيَتُمْ كامفول له بـ

فِيُولِكُ ، تَفْضُوا ، تُفْسِطُو ا كَنْفير تَفْضُوا حَرَك به بتادياك تُفْسِطُوا ، تَفْضُوا كَ عَيْ يُعْتَمَن ب الاكاس إلى لا ناسيح ہوج ئے، تسقيسطُوٰ ا كاعطف تَبَرُّوْهُمْ يرعطف خاص على العام كے قبيل سے ہے، بہتر ہوتا كه تسقسطو اكتفسير تعطوهم قِسْطًا مِنْ أَمْوَ النُّحر ب كرت يعنى ان كساته حسن سلوك كرواوران كوابية اموال ميس بي وريديا كروواس لئے کہ صرف نہاڑنے والے کا فروں کے ساتھ انصاف کرنے کا کوئی مطلب ہی نہیں ،عدل وانصاف تو ہرایک کے ساتھ ضروری ہے خواہ وہ محارب ہویا نہ ہو،الہٰداعدل کی تخصیص صرف غیرمہاجرین کے ساتھ مناسب نہیں ہے۔

فَيْ وَلَيْنَ : بشرطب بعنى نكاح كيشرا لطكو يوراكر كيم ان عنكاح كريكتي بومثلًا بيكه حالت إسلام من اس كي عدت گذرج ئے اگروہ مدخول بہا ہو، اور پہ کہ گواہوں کی موجودگی میں نکاح ہو۔

فَيُولِنَى ؛ عِصَمْ، عِصْمَةٌ كَ جَمْع بِمَعْن ثكاح، نامون، كُو افر، جَمْ كافِرةٍ، جيها كه صَوارِب، جَمْع صَارِبةٍ.

قِوْلَهُ: لقطع اسلامكم لَها بشرطه، اى بشرط القطع.

ێٙڣٚؠؗڒ<u>ۅؖڗۺۘ</u>ؙڽؗ

سابقہ آیات میں مسلمانوں کو اپنے کا فررشتہ داروں سے قطع تعلق کی جو تلقین کی ٹنی تھی ، اس پر سپے ابل ایمان اگر چہ

بڑے صبر وضبط کے ساتھ ممل کرر ہے تھے ، گراللہ کو معلوم تھا کہ اپنے ماں ، باپ ، بھائی ، بہنوں اور قریب ترین عزیز دوں سے
تعلق تو ڑلینا کیسا سخت اور مشکل کا م ہے ، اس لئے اللہ تعالی نے ان کوسٹی دی کہ وہ وقت دور نہیں ہے جب تہبار ہے یہی کا فر
رشتہ دار ، مسلمان ہوجا کمیں گے ، اور آج کی دشمنی کا پھر محبت میں تبدیل ہوجائے گی ، جن حامات میں سے بات کہی گئی تھی
کوئی نہیں سمجھ سکتا تھا کہ بینہ تیجہ کیسے رونما ہوگا اس لئے کہ بظاہر دور دور ور تک بھی اس کی کوئی صورت نظر نہیں آر ہی تھی ، ان
آیات کے نزول کے چند ہی ہفتہ بعد مکہ فتح ہوگیا اور مکہ کے لوگ جوق در جوق اسلام میں واضل ہونے گے ، اور مسلمانوں
نے اپنی آئھوں سے دیکھ میں کہ جس چیز کی انہیں امید دلائی گئی وہ کیسے پوری ہوئی۔

آ یک نبی کی مراقی الکیفین کر گفاتی کو گفر فی الدین (الآیة) اس مقد میرییشه بیدا ہوسکتا ہے کہ وشمنی نہ کرنے والے کافروں سے حسن سبوک کرنا تو اچھی بات ہے مگر کیا انصاف بھی ان ہی کے لئے مخصوص ہے ،اور کیا وشمن کافروں کے ساتھ ناانصافی کرنا چو ہے جو اب یہ ہوایت ہے کہ چو ہے ؟ جواب یہ ہے کہ عدل وانصاف تو ہر مخص کے ساتھ ضروری ہے ،خواہ کافر ہویا نیم کافر ہویا نیم کافر وغیر کافر اور حربی و غیر حربی سب ہرا ہر ہیں ، بلکہ اسلام میں تو انصاف میں تو انصاف کیا جائے اس میں کافر وغیر کافر اور حربی و غیر حربی سب ہرا ہر ہیں ، بلکہ اسلام میں تو انصاف کیا جائے اس میں کافر وغیر کافر اور حربی و غیر حربی سب ہرا ہر ہیں ، بلکہ اسلام میں تو انصاف کیا جائے ہے ہوا ہے میں بھایا کی اور احسان کرنے کی بدایت ہے ، ان ہی معنی کی رعایت کے سئے گفر سطوا کو تعطوا کے معنی میں اور مقسطین بمعنی مُغطینین کیا ہے۔

میری کارتی اس آیت ہے معلوم ہوا کہ تا صدقات ذکی اور مصالح کافر کود نے جائے ہیں، صرف کافر حربی کودینا ممنوع ہے۔

مذکورہ آیت میں ان کذر کے بارے میں بتایا گیا کہ جو مسلمانوں کے مقابلہ میں جنگ مررہے ہوں اور مسلمانوں کوان کے گھروں ہے تکا لئے میں حصہ لے رہے ہوں ، ان کے بارے میں القدت کی نے بیٹر ویا کہ القدت کی ان کے سرتھ موالات اور دلی گھروں ہے منع فرما تاہے ، اس میں برواحس ن کا معاملہ کرنے ہے میں نعت نہیں، بلکہ صرف برسر پیکار دشمنوں کے سرتھ بی خاص نہیں ، بلکہ اہل ذمہ اور اہل صلح کا فروں کے ساتھ بھی قلبی موالات اور دو تی جا تر نہیں۔

مرف برسر پیکار شمنوں کے سرتھ بی خاص نہیں ، بلکہ اہل ذمہ اور اہل صلح کا فروں کے ساتھ بھی قلبی موالات اور دو تی جا تر نہیں۔

سربی آیات میں کفار ہے جس تر کے تعلق کی ہوایت کی گئی تھی اس کے متعلق کی کو بینہ طفتی لاحق ہو تکی تھی کہ بیان کی افر موسل وجہ ان کی کافر موسل وجہ ان کی کافر موسل وجہ ان کی کافر میں بلکہ اسلام اور انہ اسلام کے سرتھ اور ان کی عداوت اور ان کی ظالم نہ روش ہے ، ابدا اسلام اور انہ اسلام کے سرتھ اصال وجہ ان کی عداوت اور ان کی ظالم نہ روش ہو بہ نہ بابدا مسلمانوں کو دشمن کا فر اور غیر و شمن کا فر موں کے بہت میں ہیں ہوگئی کو فر والدہ کے درمیان چیش آیا تھی ، حضرت اس کی بہترین تشریح وہ وہ واقعہ ہے جو حضرت اساء بنت الی بکر دیجی کا نفر کا فراد ان کی فر والدہ کے درمیان چیش آیا تھی ، حضرت اس کی بہترین تشریح وہ وہ واقعہ ہے جو حضرت اساء بنت الی بکر دیجی کا نفر کا فر والدہ کے درمیان چیش آیا تھی ، حضرت اس کی بہترین تشریح وہ وہ واقعہ ہے جو حضرت اساء بنت میں اور بھرت کے بعد مکہ بی میں روگئی تھیں حضرت اساء بنت الی بکر دو کا نفر کا فر وافح کے درمیان چیش آیا تھی وہ بنت الی بر

ھ (فِئزم پِبَلشَرِز) €

رضافتاً مناقعاً النابي كيطن مي تحيين ملح حديد كے بعد جب مكه اور مدينه كے درميان آمد ورفت كاراسته كهل كي تو وواين جين (اس ، رَصِلْ مَنْ مُنْ عَالَىٰ عَلَىٰ عَلَىٰ عَلَىٰ مِنْ عَلِيبِهِ آئْمِينِ ، اور يَجِهِ تَحَفَّهُ تَعَالَفُهُا كَلَ مِي مِنْ وَحَفِّرتِ اسماء رَضِحُالِمَانُ مَعَالَحُهُا كَلَ مِي روایت ہے کہ میں نے رسول اللہ ﷺ ہے معلوم کیا کہ کیا اپنی مال ہے مل لول؟ اور کیا میں ان کے ساتھ صلہ رحی بھی کر عکتی ہوں؟ آپ نے فر مایاان سے صلد حمی کرو، (منداحمہ بخاری مسلم)اس ہے خود بخو دید تیجہ نکاتا ہے کہ ایک مسلمان کے لئے اپ کا فرماں ہا ہے کی خدمت کرنا بھائی ، بہنوں اور رشتہ داروں کی مد دکرنا جائز ہے ، جب کہ وہ دشمن اسلام نہ ہوں۔

(احكام القرآن للحصاص، روح المعاني)

شان نزول:

ياليُّهَا اللَّذِيْنَ امْنُوْا إِذَا جَاءَ كُمُر الْمُؤمِنْتُ مُهَاجِرَاتٍ (الآية) بيآيتي صلح عديبير كموقع رِايك فاص واقعه ك متعلق نازل ہوئیں ہیں ،اس واقعہ کا بیان سور ہ فتح کے آغاز میں گذر چکا ہے۔

معامدهٔ ملح حدیبه یی بعض شرا بط کی تحقیق:

واقعهٔ حدیبیدی تفصیل سورهٔ فتح میں گذر چکی ہے،جس میں قریش مکہ اور آنخضرت ﷺ کے درمیان ایک معاہدہُ صلح دس سال کے سئے لکھا تھا، اس معامدہ کی بعض شرائط البی تھیں جن میں وب کرصلے کرنے اورمسلمانوں کی بظ ہرمغلوبیت محسوں ہوتی تھی، اس لئے صحابہ کرام رہے کا گئے گئے ہیں اس برغم وغصہ کا اظہار ہوا مگر رسول اللّٰد ﷺ باشارات ربانی میمسوس فرمار ہے تھے کہ اس وقت کی چندروز ومغلوبیت با لآخر ہمیشہ کے لئے فتح مبین کا چیش خیمہ بننے والی ہے، اس لئے قبول فر مالیا اور پھرسب صى بهكرام كضَّ النَّهُ مُعَالِمُنَّا النَّهُ الْمُعْمِدُ الْمُعْمِدُ اللَّهُ النَّهُ النَّهُ المُّعْمِدُ اللّ

اس صلح نامه کی ایک شرط میر بھی تھی کدا گر مکہ مکرمہ ہے کوئی آ دمی مدینہ جائے گاتو آپ ڈیٹٹٹ چیٹیاس کوواپس کردیں گے اگر چہوہ مسلمان ہی کیوں نہ ہو، ادرا گر مدینه طبیبہ ہے کوئی مکہ تکر مہ چلا جائے گا تو قریش اس کو واپس نہ کریں گے، اس معاہرہ کے الفاظ عام تھے جس میں بظاہر مرد وعورت دونوں داخل تھے لیعنی کوئی مسلمان مرد یا عورت، جوبھی مکہ ہے آتحضرت بنون کا کیا ک ج ئے اس کوآپ الفاق اللہ والیس کریں گے۔

جس وقت یہ معاہد و ممل ہو چکا اور آپ ﷺ ابھی مقام حدیدیہ بی میں تشریف فر ماتھے کہ کئی ایسے واقعات جیش آئ جومسها نوں کے لئے بہت صبر آ زمانتھ، جن میں ایک واقعہ ابوجندل وَقِحَافَنَهُ مَعَالِحَةٌ کا ہے جس کوقریش مکہ نے قید میں ڈال رکھا تھ وہ کسی طرح ان کی قید ہے فرار ہوکرآپ میں ناتھ کے پاس پہنچ گئے صحابہ کرام نضِّ فلٹ نُعَمَّا النِسُنَامُ میں ان کودیکھ کر بہت تشویش ہوئی کہ معاہد ہ کی روسے ان کو واپس کیا جانا جا ہے 'لیکن ہم اپنے مظلوم بھائی کو پھر ظالموں کے ہاتھ میں دیدیں یہ کیسے ہوگا؟ مگر رسول الله بالفائلة معامدة تحرير فرما چکے تھے، ايک فرد کی خاطر اس معاہدہ کونز کنہيں کيا جاسکتا تھ ، جس کی وجہ ہے آپ - ﴿ (مُؤَمَّ بِهَاللَّهُ إِنَّهِ) ٢٠-

والفيائلة البوجندل والحباللة تعاليقة كوسمجها بجها كروايس كرويا

اس کے ساتھ ایک دوسرا واقعہ بیپیش آیا جس کو ابن ابی حاتم نے روایت کیا ہے کہ سبیعہ بنت الحارث الاسلمیہ جومسلمان تھیں ہینی بن الراہب کے نکاح میں تھیں جو کا فرتھا بعض روایات میں اس کے شوہر کا نام مسافر انکز ومی بتلایا گیا ہے (اس وقت تک مسلمانوں اور کا فروں کے درمیان رہیئۃ منا کحت طرفین ہے حرام نہیں ہواتھا) بیمسلمان عورتیں مکہ ہے بھا گ کرآ پ بیٹونٹیلیڈ کی ضدمت میں حاضر ہوگئیں(روح المعانی) آپ ﷺ نے ان کو واپس نہیں کیا البتۃ اس پر جو پچھ مہر وغیرہ خرج ہوا تھا وہ دیدیا اس کے بعد حضرت عمر نفخ النا الله منظالی نے اس سے نکاح کرلیا۔ (دوح المعامی)

ندكوره آيات كايس منظر:

اس علم کا پس منظر رہے ہے کہ صلح حدیبہہ کے بعداول اول تو مسلمان مرد مکہ ہے بھاگ بھاگ کر مدینہ آتے رہے اور انہیں معامدہ کی شرا کط کےمطابق واپس کیا جا تار ہا، پھرمسلمان عورتوں کے آنے کا سلسلہ شروع ہو گیا سب سے پہلے اتم کلثوم بنت عقبہ بن ابی معیط ججرت کر کے مدینہ پہنچیں ، کفار نے معاہدہ کا حوالہ دے کران کی دالیسی کا بھی مطالبہ کیا ،ام کلثوم کے دو بھائی ولید بن عقبہ اور عمرہ بن عقبہ اتبیں واپس لے جانے کے لئے آئے ، اور آپ میلین کتا ہے اپنی مہمن ام مکثوم کی واپس کا مطالبہ کیا ،اس کے ہارے میں مذکورہ آیت نازل ہوئی ،جس کی وجہ ہے آپ مِنْ اِنْ اِنْ اِس کووا پس تبیس کیا۔

ا ورایک روایت میں ہے کہ مذکورہ آیت اُمیمہ بنت بشر جو کہ بن عمر دین عون کی عورت بھی اور افی حسان بن الدحدا حہ کے نکاح میں تھی مسلمان ہوکر بجرت کر کے آپ بلغی نیتیا کی خدمت میں حاضر ہوئی تھی اس کے اہل خانہ نے واپسی کا مطالبہ کیا تو مذکورہ آیت نازل ہوئی،جس کی وجہ ہے آپ مُلِقَنْ کُلَیْلا نے انگور دفر ماویا ،اس کے بعد سہیل بن صیف نے اس سے نکاح کرنیا عبداللہ بن سلمبيل ان سے پيدا ہوئے۔ (دوح المعاني)

ندکورہ روایات ہے معلوم ہوتا ہے کہ مذکورہ آیت کے اسباب نزول متعدد ہیں بہرحال شان نزول کا واقعہ جوبھی ہوگر آیت عبد نامہ مسلح کی اس دفعہ کی وضاحت کے لئے نازل ہوئی جس کےالفاظ کےعموم کی رو ہے ہرمسلمان کوخوا ومرد ہو باعورت واپس کرنا ضروری تھا، چنانجیہ آیت نے وضاحت فرمادی کہ عہدنامہ کے الفاظ اگر چہ عام ہیں مگر اس میں عورتیں واخل تہیں ہیں، مطلب به که عورتوں کو داپس نه کرنانقض عهد کا مسئلهٔ بیس تھا؛ بلکہ عہد ٹامہ کی ایک دفعہ کی تشریح کا مسئلہ تھ ، کفار مکہ اس دفعہ کی تشریح اس کے برخلاف کرتے تھے جومسلمان کرتے تھے کہ عورتیں اس عموم میں داخل نہیں چنانچہ آیت شریفہ نے اس دفعہ کی یہی تشریح ووضاحت فرمائی، ہاںعورتوں کے معاملہ میں صرف اتنا کہا جاسکتا ہے کہ جوعورت مسلمان ہوکر بجرت کر کے آئے اس کے کا فر شو ہرنے جو کچھاس پرمہر کی صورت میں خرج کیا ہے وہ خرج اس کوواپس کر دیا جائے۔

ياًيُّهَا الَّذِيْنَ امَنُوْا إِذَا جَاءَ كُمُ الْمُؤمِنَاتُ مُهَاجِرَاتٍ فَامْتَحِنُوْهُنَّ، اَللَّه اَعْلَمُ بِإِيْمَانِهِنَّ (الآية) عورتول كي مع میرہ ہے مشتنی ہونے کی وجہ،ان کامسلمان ہوتا ہے، مکہ ہے مہینہ آنے والی عورتوں میں میا حمّال تھا کہ وہ ایمان اور اسلام کی

— ∈[زمَزَم بِبَئلشَرِن] ≥٠

غاهر نه " کی ہوں ' بلکہ کو کی اور غرض ہومثلاً اپنے شوہر ہے ناراضی کے سبب یا مدینہ کے کسی شخص کی محبت کے سبب آئی ہو یا کسی اور د نیوی غرض ہے ہجرت کر کے آگئی ہو، وہ عنداللہ اس شرط ہے مشتنی نہیں اس لئے مسلمانوں کو حکم دیا گیا کہ ہجرت کر کے تہنے والی عورتول كالمتحان لوب (معادف)

"مہاجرات" کے امتحان کینے کاطریقہ:

حضرت ابن عبس تَضَعَلْكُ تَعَالِمُ عَنِي السِّينِي عنه وايت ہے كەمها جرات كے امتخان كاطريقه بيتھا كەمها جرات سے حلف لياج تا تھا کہ وہ اسپے شو ہرسے بغض ونفرت یا مدینہ کے کسی آ دمی کی محبت کی وجہ سے یا کسی اور د نیوی غرض ہے نہیں آئی ہیں، ہلدان كا آنا خالص القداوراس كےرسول ويقتي في كى محبت اوررضا جوئى كے لئے ہے، جب وہ بيحلف اٹھا ليتيں تو رسول القد ميقالية ا اس کو مدینہ میں رہنے کی اجازت دیدیتے ،اور اس کا مہر وغیرہ جواس نے اپنے کا فرشو ہر سے وصول کیا تھا وہ اس کے کا فر شو ہر کو واپس دے دیتے تھے۔ (فرطبی)

رووہ ہیں دھے سے۔ حضرت عائشہ صدیقہ رضحاندہ تعالیجا کی تر ہذی میں روایت ہے جس کوتر ندی نے حسن صحیح کہا ہے، آپ ظافیکا تیا نے فر مایا كهان كے امتخان كى صورت وہ بيعت تھى جس كا ذكر اگلى آيت ميں تفصيل سے آيا ہے" إِذَا جَساءَ كَ الْسَمْوَمِ لَساتُ يُبَايِعْنَكَ" (الآية) حوياآنے والے مہاجرعورتوں كے امتحان كاطريقة بى يہ تقاكہ وہ رسول الله عظامی كے وست مبارك یران چیزوں کا عہد کریں جواس بیعت کے بیان میں آ گے آئی ہیں اور میجھی پچھ بعید نہیں کہ ابتدائی طور پریہلے وہ کلمات، مہر جرات سے کہنوائے جاتے ہوں جو بروایت ابن عماس تفحیٰ لفائفٹا اور ذکر کئے گئے ہیں اوراس کی متحیل اس بیعت ہے ہوتی ہوجس کا ذکر آ گے آر ہاہے۔

ابن منذراورطبرانی نے کبیر میں اور ابن مردویہ نے سندحسن کے ساتھ اور ایک جماعت نے ابن عبس تفحالف تکا اُنتیجا سے مہاجرات کے امتحان کی کیفیت اس طرح تقل کی ہے کہ جب کوئی مہا جرعورت آب بین اللہ اللہ کی خدمت میں حاضر ہوتی تو حضرت عمر لَفِعَالِٰهُ لَهُ اللَّهُ اس طرح حلف لینتے کہ داللہ! نہ تو میں گھو منے پھرنے کی غرض ہے آئی ہوں اور نہ میں شو ہر سے نا رائسکی کی وجہ ہے آئی ہوں اور ندمیں کسی دنیوی غرض ہے آئی ہوں واللہ! میں تو صرف اللہ اور اس کے رسول کی محبت میں آئی ہوں۔

فَإِنْ عَلِمْتُمُوْ هُنَّ مُوْمِنَاتٍ فَلَا تَرِّجِعُوْهُنَّ إِلَى الْكُفَّارِ لِينْ جب بِطرِ زِندَ كوران مهاجرات كايمان كامتحان كر تم ان کومومن قر اردیدوتو پھران کو کفار کی طرف واپس کرنا جا ئزنہیں اور نہ ریچورتیں کا فرمردوں کے لئے حلال ہیں اور نہ کا فرشو ہر ان کے لئے حلال ہیں کہان سے دوبارہ نکاح کرعیں۔

م منتئلٹن، اس آیت نے بیدواضح کر دیا کہ جوعورت کسی کا فرکے نکاح میں تھی اور پھروہ مسلمان ہوگئی تو کا فریے اس کا نکاح خود بخو دفتنج ہو گیا اور یہی وجہ عورتو ل کوشر طاملے میں واپسی ہے مشتنی کرنے کی ہے۔

واتُسوُّ هُسمٌ مَسا الْفَقُوْا اسَ آيت بيس مال كي واپسي كے سلسلے بيس خطاب مهرا جرعورتوں كؤبيس كيا كيتم واپس كرو، بلكه عام، مسلمانوں کو تھم دیا گیا ہے کہ وہ واپس کریں کیونکہ بہت ممکن جکہ نالب بیاہے کہ جو مال ان کوان کے شوہروں نے دیا تھ وہ ختم ہو چکا ہوگا اب ان ہے واپس دلانے کی صورت ہی نہیں ہو عتی ، اس لئے بیفریضہ عام مسلمانوں پر ڈال دیا گیا ،اگر بیت المال ے دیا جاسکتا ہوتو و ہال ہے ، ورنہ عام مسلمان چندہ کرکے دیں۔ (فرطی ، معارف ملحقہ)

وَلَا جُمَاحَ عَلَيْكُمْ أَنْ تَمْكِحُوهُمَّ إِذَا اتَّيْتُمُوهُمَّ أَجُوْرَهُمَّ كَدْشَةً بِت سے يمعلوم بو چكا كه بجرت كرك آنے والی مسلمان عورت کا نکاح اس کے کا فرشو ہر ہے سنخ ہو چکا ہے اور بیاس برحرام ہو چکی ہے، بیآیت سابقہ آیت کا تکمید ہے کہا ہے مسلمان مرداس ہے نکاح کرسکتا ہے اگر چیسابق کا فرشو ہربھی زندہ ہے اوراس نے طلاق بھی نہیں دی مگر شرى حكم سے نكاح سنخ ہو چكا۔

کا فرمر د کی بیوی مسلمان ہوجائے تو نکاح کا فٹنج ہوجا نا آیت مذکورہ ہے معلوم ہو چکا الیکن دوسرے کسی مسلمان مرد ہے اس کا نکاح کس وقت جائز ہوگا ، اس کے متعلق امام ابوحنیفہ رَیخمَنْلانلهُ مَّعَالیٰ کے نز دیک اصل ضابطہ تو یہ ہے کہ جس کا فرمر د کی عورت مسلم ن ہوجائے تو حاکم اسلام اس کے شوہر کو بلا کر ہے کہ اً سرتم بھی مسلمان ہوجا ؤتو نکاتے برقر ارر ہے گاور نہ نکاح کئے ہوجائے گا اً سروہ اس پر بھی اسلام لانے ہے انکار کرے تو اب ان دونوں کے درمیان فرفت کی تحمیل ہوگئی ،اس وقت وہ کسی مسلمان مرو ہے نکاح کر علتی ہے، مگریہ ظاہر ہے کہ حاکم اسلام کا شوہر کو حاضر کرنا وہیں ہوسکتا ہے جہاں حکومت اسلامی ہو دارالکفریا دارالحرب میں بیصورت ممکن نہیں ہے،البتۃ اگر وہ عورت دارالکفر ہے دارالاسلام میں آ جائے تو اس کا نکاح خود بخو دفتنج ہوجائے گا، دوسرا مسلمان مردا کر جا ہے تو مہر دے کراس سے نکات کرسکتا ہے۔

إِذَا اتَيْتُمُوْهُنَّ أَجُوْرَهُنَّ كُوبِطُورشرط كِفر مايا كهتم ان ہے نكائ كرسكتے ہوبشرطيكدان كےمبرادا كردوبيدرحقيقت نکاح کی شرطنہیں ،اس لئے کہ باتفاق امت نکاح کاانعقادادائے مہریرموقوف نہیں ہے،البتہ مہر کی ادائیگی لازم اور واجب ہ، یہاں اس کو بطور شرط کے شایداس نئے ذکر کیا گیا ہے کہ ہوسکتا ہے اس مخض کو بید خیال ہو کہ ابھی ایک مہرتو اس کے کا فر شو ہر کو واپس کرایا جاچکا ہے اب جدیدمہر کی ضرورت نہیں ،اس لئے فر مادیا کہ اس مہر کاتعلق پچھلے نکاح سے تھا لہٰذا یہ دوسرا نکاح جدیدمبر کے ساتھ ہوگا۔

وَلَا تُمْسِكُوا بِعِصَمِ الكُوَافِرِ وَسْنَلُوا مَا أَنْفَقْتُمْ (الآية) عِصَمَّ، عَصْمَة كَجْع ب، يهال السمرادعصمت عقد نکاح ہے،مطلب یہ ہے کہا گرشو ہرمسلمان ہوجائے اور بیوی بدستور کا فراورمشرک رہےتو ایسی مشرک عورت کواینے نکاح میں رکھنا جائز نہیں ، اے فورا طلاق دے کر علیحدہ کر دیا جائے ، طلاق دینے کا مطلب سے ہے کہ اس سے قطع تعلق کرلیا جائے ، چنا نجہ اس حکم کے بعد حضرت عمر ریفتحانیند مُنظافی کے اپنی دومشرک ہیو بول کواور حضرت طلحہ بن عبداللّہ ریفتحانی کا اپنی ہیوی کو طرق وے دی،روایت کیا گیا ہے کہ عمر رَفِحَالمُندُنْعالِجَةُ نے اسی وجہ ہے اپنی ہوں فاطمہ بنت ابوا میدمخز ومید کوطلاق دیدی اورمعاویہ بن الجی سفیان نے اس ہے نکاح کرلیا ، اور دوسری بیوی کلثوم بنت جرول الخز اعی کوبھی اسی وجہ سے طلاق دے دی۔ اسی طرح

——∈[زمَزَم پِبَلشَرِز]≥ —

حضرت طلحه ناحیکافند تعالی نے اپنی مشرکہ بیوی اروی بنت رہیعہ کوطلاق دے دی۔ (روح المعانی) البتدا کر بیوی کتا ہیہ ہوتو ات طواق وین ضروری نبیس ؛ کیونکه ان سے نکاح جائز ہے۔

ا گرکسی کا فرکی بیوی مسممان ہوکرمسلمان کے باس جلی گئی ہو،تو اس عورت کوتو واپس نہیں کیا جائے گا؛ البتہ کا فرشو ہر کو بیت ت ہے کہ وہ مہر وغیر وصرف کیا ہوا مال مسلمانوں سے طلب کر لے ،ای طرح اگر کوئی مسلمان عورت مرتد ہو کر کا فرول کے پاس جبلی سنی ہو، تو مسلمان شو ہر بھی مہر وغیر دمیں خرچ کیا ہوا مال کا فروں ہے طلب کرلیں ہسلمانوں نے اس تھم ہر بطیب خاطر تمل کیا تمر

وَإِنْ فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِنْ أَزْوَا حِكُمْ إِلَى الكُفَّارِ فَعَاقَبْتُمْ (الآية) المعالمة كي دوصور تين تفير الكيصورت يقي کہ جن کفار ہے مسلمانوں کے معاہدانہ تعلقات تنھان ہے مسلمانوں نے بیمعاملہ طے کرنا جا ہا کہ جوعور تیں ہجرت کر کے ہری طرف آئٹی ہیں ان کے مہر ہم واپس کردیں گے،اور ہمارے آ دمیوں کی جو کا فربیویاں اُدھررہ گئی ہیں ان کے مہرتم واپس کردو، کیکن انبوں نے اس بات کو قبول نہ کیا، چنانجہ امام زہری بیان کرتے ہیں کہ اللہ تعالیٰ کے حکم کی بیروی کرتے ہوئے مسلمان ان عورتوں کا مبر اوا کرنے کے لئے تیار ہو گئے جومشر کین کے باس مکہ میں رہ گئی تھیں ، مگرمشر کول نے ان کے مبردینے سے انکار کر دیا اس پرالٹدنعالی نے تھم دیا کہ مہا جرعورتوں کے جومبر شہیں مشرکبن کوواپس کرنے ہیں وہ ان کو تجھیجے کے بجائے مدینہ ہی میں جمع کر لئے جائیں اور جن لوگوں کومشر کین سے اپنے دیئے ہوئے مہرواپس لینے ہیں ان میں ے ہرایک کواتن رقم وے دی جائے جوائے کفارے ادا ہوئی جا ہے تھی۔

دوسری صورت بہ ہے کہتم کا فرول سے جہاد کرواور جو مال غنیمت حاصل ہواس میں سے تقتیم سے پہلے ان مسلمانوں کوجن کی ہویاں دارالکفر چلی گئی ہیں ان کے خرچ کے بقدرادا کردو۔(ایسرالتفاسیروا بن کثیر)اگر مال نمنیمت ہے بھی تلافی کی صورت ند موتو بیت المال سے تعاون کیا جائے۔ (ایسرالتفاسین

كيامسلمانوں كى پچھ ورتيں مرتد ہوكر مكہ جلى گئے تھيں؟

ابیا دا تعد بعض حضرات کے نز دیک صرف ایک ہی چیش آیا تھا،حضرت عیاض بن عمنم دَفِحَانْنَدُمُ تَعَالِیَجُ ُ قریش کی بیوی ام الحکم بنت ابی سفیان مرتد ہوکر مکہ مکر مد چکی گئی تھی اور پھریہ بھی اسلام کی طرف لوٹ آئی۔ (معارف)

حضرت ابن عباس تفحَّاتُ النَّفِيُّ نِے كل جيم عورتوں كا اسلام ہے انحراف اور كفار كے ساتھ ل جانا ذكر كيا ہے ، جن ميس ہے ایک تو یہی ام افکم بنت الی سفیان تھی ، ہاتی یا نچ عور تیں جو بجرت کے وقت ہی مکہ میں رک گئی تھیں اور پہلے ہی ہے کا فر چھیں ، جب قرآن کی ہے آبت نازل ہوئی جس نے مسلم و کا فرہ کے نکاح کوتو ژ دیا ،اس وقت بھی وہ مسمہ ان ہونے کے لئے تیار نہ ہوئیں ،اس کے نتیجے میں ریجھی ان عورتوں میں شار کی گنئیں جن کا مہران کے مسلمان شو ہروں کو کفار مکہ کی طرف ے واپس ملنا جا ہے تھا، جب انہوں نے نبیس دیا تو رسول اللّٰہ ﷺ نے مال ننیمت سے ان کاحق ادا کیا، (قرطبی) اور

——∈[دمَزَم بِبَلثَ لاَ)≈-

بغوی رَحِمَنْ لللهُ مَعَالِیٰ نے بروایت ابن عباس حَعَوٰلیّهُ مُعَالطَیْجًا نقل کیا ہے کہ باقی یا نیج عورتیں جواس میں شار کی گئے تھیں وہ بھی بعديين مسلمان بوكتين - (مظهرى)

عورتول کی بیعت:

جب مکہ فتح ہوا تو قریش کے لوگ جوق درجوق حضور بیٹھیا ہے بیعت کرنے کے لئے آنے لگے آپ بیٹھیا نے مر دوں ہے کوہ صفہ پرخود بیعت کی ، اور حضرت عمر دَوْحَالْفَائَةَ کَا اِنْ طرف ہے مامور فر مایا کہ دہ عورتوں ہے بیعت کیس اور ان بالوں کا اقرار کرائیں جواس آیت میں بیان ہوئی ہیں (ابن جرمر بروایت ابن عباس تفَحَلَقَاتُ تَعَالَطَتُهُا) پھر مدینہ واپس لے جا کر آپ والقائلة الله مكان ميں انصار كى خواتين كوجمع كرنے كا حكم دياء اور حضرت عمر تف كانده تعالي كوان سے بيعت لينے كے لئے بھیجا۔(ابن جربر) ان مواقع کے علاوہ بھی مختلف اوقات میں عورتیں فرداً فرداً بھی اورا جنماعی طور پر بھی آپ یٹیٹٹٹٹٹا کی خدمت میں حاضر ہوکر بیعت کرتی رہیں جن کا ذکر متعددا حادیث میں ہے۔

ابوسفيان رَفِيَ اللَّهُ مَن اللَّهُ كَلَّ بيوى مند بنت عنبه كى بيعت:

مكه معظمه میں جب عورتوں ہے بیعت کی جارہی تھی اس وقت حضرت ابوسفیان تعُخانْنُهُ تَعَالِيَّةٌ کی بیوی ہند بنت عتبہ نے اس تعلم کی تشریح در یافت کرتے ہوئے حضور ہے عرض کیا ، یارسول اللہ! ابوسفیان ذراجیل آ دمی ہیں ؛ کیا میرے او براس میں کوئی گن ہ ہے کہ میں اپنی اور اپنے بچوں کی ضرور بات کے لئے ان سے بو چھے بغیر ان کے مال میں سے پچھے لے لیو کروں؟ آپ ﷺ نے فرہ یا تہیں ہمربس معروف حد تک یعنی بس اتنا مال لے ایا کروجو فی الواقع جائز ضروریات کے لئے کافی ہو۔

(احكام القرآن لابن العربي)

دواہم قانونی تکتے:

وَلَا يَعْصِيْنَكَ فِيْ مَعْرُوفٍ لِينى وه كسى (معروف) نيك كام مين آبِ النظامة المساحظم كى خلاف ورزى ندكري كى، اس مختصر فقرے میں دواہم قانونی تکتے بیان کئے گئے ہیں،

یہ کہ نبی ﷺ کی اطاعت پر بھی اطاعت فی المعروف کی قیدلگائی گئی ہے، حالا تکہ آپ ﷺ کے بارے میں اس امر کے کسی ادنی شبد کی تنجائش بھی نہ تھی کہ آپ بھی مشکر کا تھم بھی دے سکتے ہیں ،اس سے خود بخو دید بات واضح ہوگئی کہ دنیا میں سس مخلوق کی اط عت قانون خداوندی کی حدود ہے باہر جا کرنہیں کی جاسکتی؛ کیونکہ جب خدا کے رسول ﷺ تک کی اطاعت معروف کی شرط ہے مشروط ہے تو پھرکسی دوسرے کا بیہ مقام کہاں ہوسکتا ہے کہ اسے غیرمشر وط اطاعت کاحق پہنچے ، استاعده كورسول الله عَلَىٰ الله الفاظ على بيان قرمايا " لَاطَاعَة لِهَ خُلُوقِ في معصية الله انها الطاعة في المعروف، الله كي نافر ماني مين كوئي اطاعت نہيں ہے،اطاعت تو صرف معروف اوراجھي چيزوں ميں ہے۔

(مسلم، ابو داؤ د،بسالی)

د وسراا جم نکته:

دوسری وت جوقانونی حیثیت سے بڑی اہمیت رکھتی ہے ہیہے کہ اس آیت میں یا نچ منفی احکام دینے کے بعد شبت تھم صرف ایک ہی دیا گیا ہے، اور وہ یہ کہ تمام نیک کامول بیل نبی ظافی کے احکام کی اطاعت کی جائے گی، جہال تک برائیوں کاتعلق ہے،تو وہ بڑی بڑی برائیاں گنا دی گئیں جن میں زمانۂ جاہلیت کی عورتیں مبتلا تھیں ،اوران سے بازر ہنے کا عہد لے لیا گیا ، مگر جہاں تک بھلائیوں کا تعلق تھا ان کی کوئی فہرست و ہے کراس پرعہد نہیں لیا گیا کہتم فلاں اعمال كروگ؛ بلكەصرف بەيجىدلىيا گىيە كەجس نىك كام كائجىي حضور ئىلىقىڭ تىم فرمائىيں گےاس كى پىروى تىمېيى كرنى ہوگى ،اب بە ظاہر ہے کہ اگروہ نیک اعمال صرف وہی ہوں جن کا تھم اللہ تعالیٰ نے قرآن مجید میں دیا ہے تو عہدان الفاظ میں سر جان جا ہے تھا کہتم اللہ کی نافر مانی نذکروگی ، یا بیہ کہتم قر آن کے احکام کی تا فرمانی نہ کروگی بھین جب عہدان الفاظ میں لیا گیا کہ معاشرے کی اصلاح کے لئے حضور بیٹھٹٹ کووسیج ترین اختیارات دیئے گئے ہیں اور آپ بیٹھٹٹا کے تمام احکام واجب الاطاعت ہیںخواہ و ہقر آن میںموجود ہوں یا نہ ہوں۔

اسی آئینی اختیار کی بناء پررسول الله ﷺ نے بیعت لیتے ہوئے ان بہت می برائیوں کے چھوڑنے کا بھی عہد سے جو اس وقت عرب معاشرہ میںعورتوں میں پھیلی ہوئی تھیں اور متعدد ایسے احکام دیئے جوقر آن میں مذکور نہیں ہیں ، اس کے سے حسب ذیل احادیث ملاحظہ فرمائیں۔

التفاقية نے عورتوں سے بیعت لیتے وقت بیعہدلیا کہ وہ مرنے والوں پرنوحہٰ بیں کریں گی، بیروایات بخاری مسلم، نسائی وغیرہ میں ہیں، ابن عباس تعَحَالنَا کُتَا الْتَعَنَّا کی ایک روایت میں یہ تفصیل بھی ہے کہ حضور بیلن عَیَّا نے حضرت عمر نَضَالْانکَ مَا الْتَعَالَیْ کُو کورتوں ہے بیعت لینے کے لئے مامور کیاا در حکم دیا کہ ان کونو حہ کرنے ہے منع کریں ، کیونکہ زمانہ جاہلیت میں عورتیں مرنے وا بول پرنو حہ کرتے ہوئے کپڑے بھاڑتی تھیں،منہ نوچتی تھیں،بال کاٹتی تھیں اور بخت واویلا مجاتی تھیں۔ زید بن اسلم رضَّ فَاللَّهُ مَا وایت کرتے ہیں کہ آپ میں گئے نے بیعت لیتے وقت عورتوں کو اس ہے منع فر ما یا کہ وہ مر نے

. ﴿ [زَمَزُمُ بِبَالثَهِ إِنَّ ﴾ -

وابول پرنو حد کرتے ہوئے مندنو چیس، گریبان پھاڑیں۔ (ملعضا اس حریر)

ق دہ رہم کلند کہ تعانی اور حسن بھری رہم کہ کہ کہ نا کہ تعانی روایت کرتے ہیں کہ جو عبد آپ بیتی ہے گئے بیعت لیتے وقت عور توں سے لئے سے النے سے الن میں سے ایک سے بھی تھا کہ وہ غیر محرم مردول سے بات نہ کریں گی، ابن عباس تعکی النظاف کی روایت میں اس کی بید وضاحت کے کہ فیم مردول سے تخلیہ میں بات نہ کریں گی، حضرت قدہ دو تعکی کہ کا بید ارشاد من کر حضرت عبدالرحمن بن عوف دعی کہ کہ نفائی نے عرض کیا یارسول اللہ! بھی ایسا ہوتا ہے کہ بہم گھر پرنہیں ہوتے اور بہارے بیبال کوئی صاحب مینے آجاتے ہیں، آپ بیری فیل میں موجود نہیں ہیں۔ (بیدوایت ابن عورت کا سی آنے والے سے آئی بات کہد ینا ممنوع نہیں ہے کہ صاحب فینہ گھر میں موجود نہیں ہیں۔ (بیدوایت ابن عجر میراور ابن ابی حاحم نے لفل کی ہے)۔

حضرت فی طمہ دَفِحَانَدُفْتُعَالَیْهَا کی فی الم امیمہ بنت رقیقہ ہے عبداللہ بن عمر و بن ماس دَفِحانَدُنْتُعَافِ نے روایت نقل کی ہے کہ حضور فِی لائٹ نے ان سے بی عبدالیا کہ نو حد نہ کرنا اور جا بلیت کے بن وَسنگھار کر کا اِن بُرانش نہ کرنا۔
حضور فِی لائٹ کی خالہ بنت قیس کہتی ہیں کہ میں انسار کی چند عور توں کے ساتھ ہی ۔ کے لئے حاضر ہوئی تو آپ فِی لائٹ لائٹ نے آئی اس آئی ہے مطابق ہم سے عبدالیا ، پھر فر رہ یا "و لا تعشیق از و احد کی" ایپ شوہروں سے دھو کے بازی نہ کرنا، جب ہم واپس ہونے گیس تو ایک عورت نے مجھ سے ہم کہ جاکر حضور فِی لائٹ سے لوچھو، شوہروں سے دھو کے بازی نہ کرنا، جب ہم واپس ہونے گیس تو ایک عورت نے مجھ سے ہم کہ جاکر حضور فِی لائٹ فقحابی غیر ہوں ہے دھو کے بازی کرنے کا کیا مطلب ہے؟ میں نے جاکر و چیا تو آپ فی لائٹ نے فر مایا "تساخذ ماللہ فقحابی غیر ہو" ہے کہ تو شوہر کا اللہ اور دوسر سے پر لائا و سے ۔

مال لے اور دوسر سے پر لٹا و سے ۔ (مسندا حمد)

جولوگ حضور پیونٹی کے آپ بین اختیار کوآپ پیونٹی کی حیثیت رسالت کے بجائے حیثیت امارت سے متعمق قرار دیتہ ہیں اور کہتے ہیں کہ آپ بین اختیار کو اختیار کو این اللہ کا محت تھے، وہ ہڑی جہ لت کی بات کرتے ہیں، او پر کے احکام دیئے ہیں وہ صرف آپ بین ان پر آپ ایک نظر ڈال لیجئے، ان میں عورتوں کی اصلاح کے لئے جو ہدایات آپ سطور میں جواحکام نقل کئے گئے ہیں ان پر آپ ایک نظر ڈال لیجئے، ان میں عورتوں کی اصلاح کے لئے جو ہدایات آپ مین مواثر سے کی مواثر سے کی حیثیت سے ہوتیں تو ہمیشہ ہمیشہ کے لئے پوری دنیا کے مسلم معاشر سے کی عورتوں میں میا صلاح ت کیسے دائی ہو کئی تھیں؟ آخر دنیا کا وہ کونسا حاتم ہے جس کو بیم مرتبہ صل ہو کہ ایک مرتبہ اس کی زبان سے ایک تھم صادر ہواور روئے زمین پر جہ ل جب ل جب بھی مسلمان آباد ہیں وہ اس کے مسلم معاشر سے میں ہمیشہ کے لئے وہ اصلاحات رائے ہوجو نمیں ،جس کا تھم اس نے دیا ہے؟



سُوْرَةُ الصَّفِّ مَكِينة أَوْ مَدَنِيَّةٌ أَرْبَعَ عَشَرَةَ ايَةً. سورة صف عَى (يا) مدنى ہے، چودہ (۱۲) آبيت ہيں۔

لِسَّحِراللهِ الرَّحِطْ لِمِن الرَّحِسِةِ مِن سَبَحَ لِلهِ مَا فِي التَّمَاوُتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ اى نَزَبه فاللام سريدة وجئ بمه، دُونَ مَنْ تَغُلِيبًا لِلاَ كُثُرِ ۗ وَهُوَالْعَزِيَرُ فِي مُلْكِهِ الْكَلِيُمُ ۖ فِي صُنْعِه لِلْآيُهَا الَّذِيْنَ امَنُوا لِمَرَّقُولُونَ فِي طُنب الجهادِ مَالَّاتَفُعَلُوْنَ® إِذَا انْهِزَمتُم بأُحُدٍ كَبُرَ عَظُمَ مَقْتًا تمييزٌ عِنْدَاللَّهِ أَنْ تَقُولُوْا فعن كبر مَالَاتَفُعَلُوْنَ[®] إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ يَــنُــعُـــرُو يُــخــرِمُ الَّذِيْنَيُقَاتِلُوْنَ فِي سَمِيلِهِ صَقًّا حَــــالِّ اى صَــــفِــ كَانَهُمْ بُنْيَانُ مُّرْصُوصٌ مُ لَزَقٌ بَعْضُهُ إلى بَعْضِ ثَانِتُ ۚ وَ اذْكُرْ لِذْقَالَمُوسِى لِقَوْمِه لِقَوْمِ لِمَرَّتُونَيْنَ قَالِهِ انُّهُ أدرُ أي مُنْتَفَخُ الخُصْيَةِ ولَيْسَ كَذَالِكَ وكَذَّبُوهُ وَقَدَّ لِلتَحْقِيقِ تُعَلَّمُونَ أَنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلْكُمْرُ الجُمْلَةُ حالُ والرَّسُولُ يُحْتَرَمُ قَلَمَّازَاغُوا عَدلُوا عَنِ الحَقِّ بِإِيذَائِهِ ۖ أَزَاعُ اللَّهُ فَأُونِهُمْ أَمَالَهَا عَنِ الهُدى غمى وفق ما قدَّرَهُ في الأزَلِ وَاللَّهُ لَايَهُ إِن الْقُومَ الْفَسِقِيْنَ[©] الكَافِرِيْنَ فِي عِلْمِهِ وَ اذْكُرَ الْذُقَالَ عِيْسَى ابْنُ مَوْمَ الْفَسِقِيْنَ[©] الكَافِرِيْنَ فِي عِلْمِهِ وَ اذْكُرَ الْذُقَالَ عِيْسَى ابْنُ مَوْمَ الْفَسِقِيْنَ[©] الكَافِرِيْنَ فِي عِلْمِهِ وَ اذْكُرَ الْذُقَالَ عِيْسَى ابْنُ مَوْمَ الْفَسِقِيْنَ[©] الكَافِرِيْنَ فِي عِلْمِهِ وَ اذْكُرَ الْذُقَالَ عِيْسَى ابْنُ مَوْمَ الْفَسِقِيْنَ وَالْعَالِمِيْنَ الْعَلَامِ الْعَلَى الْعَلَامِ الْعَلَى عِلْمِهِ وَ اذْكُرَ الْذُقَالَ عِيْسَى ابْنُ مَوْمَ الْفَسِقِيْنَ وَالْعَلَى الْعَلَامِ اللَّهِ اللَّهِ عِلْمُ اللَّهُ الْعَلَى الْعَلْمَ الْعَلْمَ الْعَلْمِ الْعَلْمَ الْعَلْمَ الْعَلْمَ الْعَلْمَ الْعَلْمَ الْعَلْمِ اللَّهِ عَلَى اللَّهُ الْعَلْمَ الْعَلْمَ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ الْعَلْمَ الْعَلْمَ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ الْعَلْمَ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ الْعَلَى الْعَلَامِ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْعَلَامِ اللَّهُ الْعَلْمُ الْعَلَّالِي اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْعَلْمُ اللَّهُ اللَّلْعِلْمُ الللْعَالِمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ كَ يَقُلُ بَ قَوْم لِآنَه لَم يَكُنْ لَه فيهِمْ قَرَابَةٌ الْ نَسُولُ اللهِ الْيَكُمُ مُّصَدِّقًا لِمَابِيُنَ يَكَنَّ قَبْدِي مِنَ التَّوْرَبَةِ وَمُبَشِّرًا بِرَسُولِ يَالْيَ مِنْ بَعْدِى المُمَّةَ أَحْمَدُ قَالَ اللهُ تعَالَى فَلَمَّا لِجَانَهُمْ جَآءَ أَحْمَدُ الكُفّارَ بِالْبَيِنْتِ الايَتِ و العلاماتِ قَالُوَاهَذَا اى المَجْئُ بِهِ سِحُرُّ وفي قِرَاء ةِ سَاحِرٌ اى الجَائِيُ بِهِ مُّبِينٌ ۞ بَيَنٌ وَمَنَ لا أَخذ أَظْلَمُ أَشَدُ طُلْمًا مِمَّنِ افْتَرَلَى عَلَى اللهِ الكَّذِبَ مِنسُبَةِ الشَّسريُكِ والوَلَدِ النِّهِ ووَضْعَبِ ايَساتِه بِالسِّحُر وَهُوَيُدُ عَلَى الْإِسْلَامِرُ وَاللّٰهُ لَايَهَدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِينَ۞ السَحَافِرِينَ يُرِنِّدُونَ النَّظْفِؤُا مَنْحُسُوبٌ بِأَنْ مُقَدَّرَة واللَّامُ مَريدةٌ نُؤَرَاللّٰهِ شرعه ورابيه بِأَفْوَاهِهِمْ مَاقُوالِهِمُ إِنَّهُ سِخرٌ وشِغرٌ وكَهَانَةٌ وَاللَّهُمْتِمْ مُظُهُرُ ثُورِمٍ وفِي قراءة بالاصافة وَلُوْكُرِهُ الْكَلْفِرُوْنَ ٥ وَلِكَ هُوَالَّذِيْ أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَى وَدِينِ أَلْمَقِي لِيُظْهِرَهُ يَخِيبٍ عَلَى الْإِذِينِ وَكُوْكُرِهُ الْكَلْفِرُوْنَ ٥ وَلِكَ الْمِدَى وَلِينِ أَلْمَوْنَ الْمُوالِمُ فِي الْمُدَى وَلِينِ الْمُدَى المحالِفة له وَلَوْكُرِهُ الْمُشْرِكُونَ ٥

ڐ(*ڝٛ*ڒؘ٩ڽ۪ڛۜڶۺٙڵ

ترجيب في شروع كرتا بول القدك نام ي جو برا مبر بان نهايت رحم والاب، زيين وآسان يس مر چيز الله كي پاكي بیان کرتی ہے بینی اس کی تنزید کرتی ہے (لله) میں لام زائدہ ہاور مَنْ کے بجائے ، مَا اکثر کوغلبہ دینے کے اعتبارے لایا گیا ہے، وہ اپنے ملک میں نا مب ہے اور اپنی صنعت میں تحکیم ہے ا۔ ایمان والوا طلب جہ دمیں تم وہ بات کیول کہتے ہو جو ر تنبیس ہو؟ جب كتم أحد ميں فنكست كھا كئ اس كاكبنا القد تعالى كنز ويك بخت نايسند به مَفْتًا تميز ب (أَنْ تَقُوْلُوْا) تُحبُسو كافاعل ہے، كەتم وە بات كبوجوتم كرتے نبيس ہو، بےشك الله تعالى ان لوگول ہے محبت كرتا ہے (ليعني) مدداورا كرام كرتا. ہے جواس کی راہ میں صف بستہ جہاد کرتے ہیں (صَفّا) حال ہے بمعنی صافیس ً ویا کہ وہ سیسہ پلائی ہوئی ہاہم پیوستہ ایک عمارت ہیں اوراس وقت کو یا دکر و جب مویٰ نے کہاا ہے میری قوم کے لوگو! تم مجھے کیوں ستار ہے ہو؟ انہوں نے کہا کہ موی آ دز ہے یعنی چھولے ہوے خصیوں وال ہے، حالا نکدایسی ہوت نہیں تھی اور ان کی تکذیب ک حالا نکدتم کو (بخو بی) معلوم ہے کہ میں تمہاری طرف اللہ کا رسول ہوں قیدڈ محقیق کے لئے ہے جملہ جالیہ ہے ، رسول محترم: متاہے چنانچے جب وہ ان کوایڈ اپہنچا کر ب دہ حق ہے ہٹ گئے قو اللہ نے ان کے قلوب کو ہدایت ہے بھیر دیا اس کے مطابق میں مقدر کر دیا تھا اور اللہ تعالیٰ نافر مان قوم کو جواس کے علم میں کافر ہے مدایت نہیں ویتا اس وقت کو یاد کر ، جب میسی این مریم نے فر مایا اے بنی اسرائیل! (بیہاں) یساقوم نہیں فرمایا اس لئے کہ حضرت میسی کی ان میں قر ابت داری نہیں تھی میں تمہاری طرف اللہ کارسول ہوں مجھ سے ہلے کی کتاب تو رات کی میں تصدیق کرنے والا ہوں اور اپنے بعد آنے والے ایک رسول کی خوشخبر کی سنانے والا ہوں جن کا نام احمد ہے ،امتد تعالی نے فرمایا پھر جب احمدان کا فروں کے پاس تھلی دلیلیں اور نشانیاں نے مرآئے تو کہنے نگے یہ چیزجس کو پہیکر آئے ہیں کھلا جادو ہے اور ایک قراءت میں ساحبر ہے لینی اس کالانے والد جادوً سرے اس محض ہے زیادہ خالم کون ہوگا؟ جس نے اللہ کی طرف شرک کی اور ولد کی نسبت کر کے بہتان لگایا وراس کی آیات کوسحر ہے متصف کیا حالا نکہ وہ اسلام کی جانب بلایا جا تا ہے التد ظالم کا فرلوگوں کو ہدایت نبیں دیتا وہ جا ہے ہیں کہ اللہ کے نور کو یعنی اس کی شریعت اور براہین کو اپنے مونہوں باتوں ہے بجعادیں کہ پیوسحر ہےاورشعر ہےاور کہانت ہے، (لِیُسطفؤ و ۱) اُں مقدرہ کی وجہ ہےمنصوب ہےاورلام زائدہ ہے اورالتدتع لي اپنورکوظام کرنے والا ہے اورا یک قراءت میں (مُنسمُ نُسورہ) اضافت کے ساتھ ہے اگر چہ کافراس کونا پسند کریں وہ وہی ہے جس نے اپنے رسول کو ہدایت دی اور وین حق ویکر بھیجا؛ تا کہ دیگیرتمام نداہب پر لیعنی تمام می لف دینوں پر غالب کرے اگر چەشرك اس كوناپىند كريں۔

جَِّقِيق تَرَكِي فِي لِيَسَهُ مِي الْحَقْفِيلِيةِ فَوَالِدِلْ

قِوَلَ ﴾؛ مَكِيةٌ او مَدَنية عَرَمْهُ وَتِمَنَّلُاللَّهُ مَعَاكَ، قَيَاهِ وَرَحِمَنُلِللْهُ مَعَاكَ اور حسن رَحِمَنُلِاللَّهُ عَالَىٰ کے مطابق کم ہے، جمہور کے قول کے مطابق کم ہے، جمہور کے قول کے مطابق کم ہے۔ قول کے مطابق میں ہے۔

٤ (مَنْزَم بِسَالَسَّرِزَ) ع

فَوَلْنَى: مَفَّتُنا تمييز يَعِي فاعل مِيمِ مَقول بوكر تميز بيعنى مَفْتًا اصل مِين فاعل بِهِ تقدير عبارت بيب كَبُرَثَ مَفْتُ قولكم ، اَلمَقْتُ: اشدالبغض، تاينديه هـ

چَوَلَنَىٰ ؛ مَسْرَصُوصٌ، رَصٌ ہے اسم مفعول مضبوط سیسہ پلائی ہوئی، رَصٌّ، دوچیز وں کوملا کرجوڑنا، چمنانا، رَصَاص، رائے سیسہ

قِينَ لَنَهُ وَيُكُومُ مِهِ يُجِبُّ كَاازَمُ عَنْ كابيان بِ، مقصدا ل تفيير الكاعتراض كاجواب دينا ب الم

اعتر اص : مَحَدَّة كَ معنى ميلانِ قلب كے بيں يہ معنى اللّه تعالىٰ كے قلّ ميں محال بيں اس سُے كہ ميلان قلب كے لئے قلب و زم ہے اور قلب كے لئے جسم لا زم ہے حالا تكہ اللّه تعالیٰ جسم ہے منز ہ اور یاک ہیں۔

جَجُولَ بِيْ عَوَابِ كَا مَصْلَ بِهِ بِكُدُ مَسْحَدَّة كَالزَمْ عَنْ مِرادَ بِينَ لِعِنْ مِيا إِنْ قلب اور رفت قلب كے لئے نصرت اور اكرام لازم بے جو يہال مراد ب، لنبذا يہال لازم عنی مراد بين -

فَيْوَلْكُونَ ؛ صَفًّا يه يقاتِلُوْ ذَكُ مُمير عال ب، صَافِين كامفول، أَنْفُسَهُمْ مُدُوف ب،اى صَافَيْنَ أَنْفُسَهُمْ.

چَوُلِی ؛ لِانَّهُ لَمْرِیکُنَ لَهُ فِیلِهِمْ قَرَابة قرابت نه ہونے کی وجہ یہ ہے کہ قرابت اورنسب کاتعلق اَبْ (والد) ہے ہوتا ہے اور حضرت میسی علیفتلا ولئے لکا کوئی اَبْ نہیں تھا۔

فَيْ وَلَنَّى: مُصَدِّقًا يه رسولٌ بمعنى موسلٌ كضمير عال باوراى طرح مبشراً بهى-

فِيُولِكُنَّ ؛ يَاتِي مِنْ بَعْدِي جَمله بوكررسول كَ صفت بـ

فِی وَلَیْ ؛ اَلْمَجِی بیجاء سے اسم مفعول ہے مَجِی ، دراصل مَجْیُوء تھابروزن مَضُرُون یا ، کاضمہ جیم کودے دیا، دوس کن یا ، اور وا کا جمع ہوئے ، دوا کا کوحذف کردیا اور جیم کویا ، کی مناسبت سے کسر دو سے دیا، مَجِیء ، دوا کا کوحذف کردیا اور جیم کویا ، کی مناسبت سے کسر دو سے دیا، مَجِیء ، دوگیا۔

فَيْ وَلَيْنَ ؛ لَا أَحَدَ اس إشاره بكدو مَنْ أَظْلَمُ مِن استفهام الكارى بمعنى فَي ب-

فَيْ وَلَنَّى : وَوَصفِ آياتِهِ وصف كاعطف نِسْبَةِ الشِوْك ير مون كى وجد عجرور ب-

فِيُولِكُ ؛ وَهُوَ يُدْعني إلَى الْإسْلام جمله حاليه إ

تَفَيْدُيُوتِشِيْنَ فَيَّالُهُ فَيَّالُونِيْنَ فَيَّالُونِيْنَ فَيَّالُونِيْنَ فَيَّالُونِيْنَ فَيَ

شان نزول:

یَا اَیُنَهَا الَّذِیْنَ آمَنُوْ الِمَ تَقُولُوْ فَ مَا لَا تَفْعَلُوْ فَ يَهِال مُدااكر چِه عام ہے کیکن مخاطب وہ مومنین ہیں جو کہدرہے تھے کہ اگر جمیں احب الاعمال بتلائے گئے تو ست ہو گئے ، کہ اگر جمیں احب الاعمال بتلائے گئے تو ست ہو گئے ، اس لئے اس آیت میں ان کوتو بیخ کی گئی ہے ، ترفیدی دَحِمَ کُلافُلَهُ مَالِیْ نے حضرت عبدالله بن سلام دَحَمَانِیْ ہے دوایت کی اس کئے اس آیت میں ان کوتو بیخ کی گئی ہے ، ترفیدی دَحِمَ کُلافُلَهُ مَالِیْ نے حضرت عبدالله بن سلام دَحَمَانِیْ ہے دوایت کی اس کئے اس آیت میں ان کوتو بیخ کی گئی ہے ، ترفیدی دَحِمَ کُلافُلُهُ مَالِیْ نے حضرت عبدالله بن سلام دَحَمَانِیْ ہے دوایت کی

ے کہ صحابہ نکرام نضح کتے گئے اللہ جماعت نے آپس میں ایک روز بید ذاکرہ کیا کہ اگر جمیں بیہ معلوم ہو جائے کہ القد تع کی کے نزویک سب سے زیادہ پیند بیرہ عمل کونسا ہے تو ہم اس پڑھل کریں؟ بغوی دَیِّمَ کُلاندُانْ تعالیٰ نے اس میں بیجی نقل کیا ہے کہ ان حصرات میں ہے بعض نے کچھا سے الفاظ ہمی کہے کہ اگر ہمیں احب الاندال عندالقد معلوم ہو جائے تو ہم اپنی جان ومال سب اس کے لئے قربان کرویں۔ (مطهری)

ابن کثیر نے منداحمہ کے حوالہ سے روایت کیا ہے کہ چند حضرات نے جمع بوکر ندا کرہ کیا اور چاہا کہ کوئی صاحب جا کررسول اللہ بنون فلیلا سے اس کا سوال کرے، مگر کسی کو جمت نہ بوئی ، ابھی بیلوگ اس حالت پر ہتھے کہ رسول اللہ بنون فلیلا نے ان سب لوگوں کو نام بنام اپنے پاس بلا پر (جس سے معلوم ہوا کہ آپ بنون فلیلا کو بذر بعید وتی ان کا اجتماع اور ان کی فلیکوم ہوگئی تھی) جب بیسب لوگ حاضر خدمت ہوگئے تو رسول اللہ بیکھ فلیلا نے بوری سورہ صف پڑھ کرسن کی جو اس وقت آپ بنون فلیلا پر نازل ہوئی تھی اس سورت میں یہی بتایا گیا ہے کہ احب الاعمال کہ جس کی تلاش میں بید حضرات تھے وہ جہاد فی سبیل ابقد ہے اور ساتھ ہی ان حضرات نے جو ایسے کلی ت کہے تھے کہ اگر جمیں معلوم ہو جائے تو ہم اس پڑھل کرنے میں ایسی ایسی جانبازی دکھا کیں وغیرہ وغیرہ ، جن میں ایک ایسی جانبازی دکھا کیں وغیرہ وغیرہ ، جن میں ایک ایسی جانبازی دکھا کی وغیرہ وغیرہ ، جن میں ایک ایسی جانبازی دکھا کی وغیرہ و کی کہ سی مومن کے بنے ایسے دعوے کرنا درست نہیں اسے کیا معلوم ہے کہ دونت پر دہ اینے ارادہ کو بورا کر بھی سے گایا نہیں۔

كُبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللَّهِ أَنْ تَقُولُوا مَالَا تَفْعَلُونَ بِمَابِقَهُ آيت كُمْ يِتَاكِيدِ بِ-

مسئنگائیں: اس ہے معلوم ہوا کہا ہے کام کا دعویٰ کرنا جس کے کرنے کا ارادہ ہی نہ ہواوراس کو کرنا ہی نہ ہوتو ہے گناہ کہیرہ ہاور القد کی بخت نارانسکی کا سبب ہے تحکبُو مَفْقًا عِنْدَ اللّٰهِ کا مصداق بہی ہے اور جہاں بیصورت نہ ہو' بلکہ کرنے کا ارادہ ہو وہاں بھی اپنی قوت وقدرت پر بھروسہ کر کے دعوی کرناممنوع ومکروہ ہے۔

فَلَمَ مَا ذَاغُوا اَذَا عَ اللّٰهُ قُلُو بَهُمْ لِينِ اللّٰدِتَعَالَى كابيطر يقتنبيل كه جولوگ خود ٹيڑھی راہ چلنا چاہيں انہيں وہ خواہ تخواہ سيدھی راہ چلائے اور جولوگ اس كی نافر مانی پر تلے ہوئے ہوں ان كوز بردئ ہدایت سے سرفراز فر مائے ،اس سے بیات خود بخو دواضح ہوگئ كه كر شخص یا قوم كی گرا ہی كا آغاز اللہ كی طرف سے نہيں ہوتا ' بلكہ خوداس شخص یا قوم كی طرف سے ہوتا ہے ،البتہ اللہ كا قانون بیے ہے كہ جو گمرا ہی كو پہند كرے وہ اس كے لئے راست روى كے نہيں بلكہ گمرا ہی كے اسباب ہی

- ه (زَمَزَم بِهَاشَنِ ﴾

فراہم کرتا ہے، تا کہ جن راہوں میں وہ بھٹکنا جا ہے بھٹکتا جلا جائے اللہ تعالیٰ نے تواسے انتخاب کی آ زادی عطافر ہ دی ہے اس انتیٰ ب میں کوئی جبراللہ کی طرف ہے ہیں ہے۔

فره یا که بنی اسرائیل نے جس طرح موی علیج لاہ طالتان کی نافر مانی کی اس طرح انہوں نے حضرت تبیسی علیج لاہ طالتا کو کا مجمی انکار کیا ، اس میں نبی کریم بین بین کوشکی دی جاری ہے کہ یہ یہودآ پ پین تھی کے ساتھ ایسائیس کررہے ہیں ؛ بلکہ ان کی تو ساری تاریخ بی انبیاء پہلانا کی تکذیب سے بھری پڑی ہے۔ تورات کی تصدیق کا مطلب یہ ہے کہ میں جودعوت دے مہا ہوں یہ و بی ہے جو تورات کی بھی دعوت ہے جواس بات کی دلیل ہے کہ جو پیٹیبر مجھ سے پہلے تو رات لے کرآئے اوراب میں انجیل لے کرآ یا ہول، ہم دونوں کا اصل ہ خذ ایک ہی ہے؛ اس لئے جس طرح تم موکٰ وہارون ، دا ؤ دوسلیمان پیبلزبنا کرایمان لائے مجھ پرجھی ایمان لاؤراس سے کہ میں تو رات کی تصدیق کرتا ہوں ، ند کداس کی تر دیدو تکذیب۔

وَمُبَشِّرًا بِوَسُول يَأْتِني مِنْ بَعْدِى اسْمُهُ أَحْمَدُ بِرِحْرَت مِسِنَى عَلَيْهِ لَا فَالْتُكُلُا فِي اعِدا ٓ فِي واللهِ أَخْرَى بَيْمِبر حضرت محمد بالفائلة لله كي فوتخرى سنائى، چنانچه بى بيختاللائة فرمايا أنّا دَغُوةُ إنسرَ اهِيْسَمَرُوبَشَارَةُ عيسنى (ايسرالتفاسيرِ) میں اپنے باپ حضرت ابراہیم عَلاجِ لَا اُللتٰ کی دعاء اور نعیسی عَلاجِ لاہُ وَلائنا کِ عَلامِ اللهُ اللهٰ الله آپ منظامتان كا صاف صاف نام لے كرخوشخرى دى ہے، آپ منطقانا كے دومشہور نام بي احمد اور محمد يها ساحمد نام سوكي ہے،احمد اگرید فاعل سے مبالغہ کا صیغہ ہوتو معنی ہوں گے، دوسرے تمام لوگوں سے اللہ کی زیادہ حمد بیان کرنے والا ،اوراگر یہ مفعول سے ہوتو معنی ہوں گے آپ بھو نیں اور کھالات کی وجہ سے جتنی تعریف آپ بیٹن کا تی گئی اتنی کسی کی بھی نہیں کی گئی۔ (فتح القدیر) آپ نیکٹنٹیلا کے اساء کرامی میں احمد بھی صحابہ کرام نضحَالینٹی میں مشہور ومعروف تھا ، آپ عَلِينَ الله عَبِد المطب في المن المعلم المعلم المعلم المعلم المعلم المعلم المعرى المعرى المعلم المع كرآب بالالالكار فرمايا "انا محمد وانا احمد والحاشو".

" محمد"نام رکھنے کی وجہ:

ولادت کے ساتویں دن عبدالمطلب نے آپ بیٹھٹٹیز کاعقیقہ کیا اور اس تقریب میں تمام قریش کو دعوت دی اور محمد بیٹھٹیز آپ کا نام تجویز کیا، قریش نے کہاا ہے ابوالحارث! (ابوالحارث عبدالمطلب کی کنیت ہے) آپ نے ایسا نام کیوں تجویز کیا؟ جو آپ کے آبا واجداداورآپ کی قوم میں اب تک کسی نے نہیں رکھا؟ عبدالمطلب نے کہامیں نے بینام اس لئے رکھ ہے کہ اللہ آسان میں اور اللہ کی مخلوق دنیا میں اس مولود کی حمد وثنا کرے، اور آپ ﷺ کی والدہ نے آپ یکھنٹیٹا کا نام احمد رکھا۔

(سيرة المصطمئ منحصًا)

آپ بلین ایک کا داداعبدالمطلب نے آپ بلی ایک کا ولادت باسعادت سے پہلے ایک خواب دیکھا تھا، جواس نام کے رکھنے کا <(وَمَزَمُ بِسَائِسَ إِنَا اللَّهِ إِلَيْهِ إِلَيْهِ إِلَيْهِ إِلَيْهِ إِلَيْهِ إِلَيْهِ إِلَيْهِ إِلَيْهِ إِل

باعث ہوا، وہ یوں ہے کہ عبدالمطلب کی پشت ہے ایک زنجیر ظاہر ، وئی کہ جس کی ایک جانب آسان میں ہے اور دوسری جانب ز مین میں اورایک جانب مشرق میں اور دوسری جانب مغرب میں ، کچھ دریے بعد وہ زنجیر درخت بن کئی جس کے ہرپیۃ پراہیا نور ہے کہ جوآ سان کے نورے سنز درجہ زائد ہے مشرق ومغرب کے لوّے اس کی شاخوں سے کیٹے ہوئے ہیں ،قریش میں ہے بھی پچھ لوگ اس کی شاخوں کو بکڑے ہوئے ہیں ،اور قریش میں ہے کچھ وگ اس کو کائے کا ارادہ کرتے ہیں ، بیلوگ جب اس ارادے ے اس درخت کے قریب آنا جائے میں تو ایک نہایت حسین وجمیل نوجوان ان کو آسر ہٹا دیتا ہے۔ (سیرہ المصطعی)

عبدالمطلب كے خواب كى تعبير:

مُغتِر ین نے عبدالمطلب کے اس خواب کی رتب وی کہتمہاری سل سے ایک ایسا ٹر کا پیدا ہوگا کہ مشرق سے لیکر مغرب تک ، اوگ اس کی اتباع کریں گے اور آسان وزمین والے اس کی حمد و ثنا کریں گے، اس وجہ سے عبدالمطلب نے آپ بلی نتایج کا نام محمد رکھاا دھرآ ہے بیکی نتایج کی والیدہ ما جدہ کورویا ہے صالحہ کے ذریعہ سے یہ بتلایا گیا کہتم برگزیدہ خلائق سیدالامم ے حاملہ ہواس کا ٹام محمر رکھنا اور ایک روایت میں ہے احمد رکھنا ،حصرت برید و رضیٰ ننڈ تعدیج و اور این عباس تفخیلنگ تَعَالَاعِنْهُا کی روایت میں بیرے کے محمد اور احمد نام رکھنا۔ (حصائص الکری، سیرة المصعمی)

انجیل میں محمد کے بجائے احمد نام سے بشارت کی مصلحت:

مُبَشِّرًا بِرَسُولِ يَأْتِي مِنْ مَعْدِى اسْمُهُ الْحَمَد حضرت مِن عَالِينَ النَّالِ عَلَيْ النَّالِ عَلَيْ ا یلافاتین کا نام بھی احمد تھا اور محمد بھی اور دیگر نام بھی ،گر انجیل میں احمد کے نام سے بشارت دی گئی ہے اور پیدونوں ہی نام ایسے تھے کہ اس سے پہلے کسی کے نہیں رکھے گئے ، حافظ ابن سیدا مناس عیون الاثر میں فرمات بیں کہ حق جل شانہ نے عرب اور عجم کے ولوں اور زبانوں برایسی مہرلگائی کہ کسی کومحمد اور احمد نام رکھنے کا خیال ہی نہ آیا ، اسی وجہ ہے قریش نے متعجب ہو کرعبد المطلب ہے بیسوال کیا کہ آپ نے بینانام کیوں تجویز کیا؟ جو آپ کی قوم میں کسی بنہیں رکھا ،لیکن ول دت سے پچھ عرصہ پہلے لوگوں نے جب علماء بنی اسرائیل کی زبانی بیرسنا که عنقریب محمد اوراحمد نام ہے ایک نبی پیدا ہونے والا ہے تو چندلوگوں نے اس امید پراپنی اولا دکا نام محدر کھا مگر خدا کی مشینت کدان میں ہے کسی نے بھی ثبوت کا دعوی نبیس کیا۔ (سبر ہ المصمعی)

الجيل مين محدر سول الله عَلِينَ عَلَيْنَا كَيْ بِثارت:

انجیل برنا ہاس جس کے متعلق ہم مضمون کے آخر میں تفصیلی گفتگو کریں گے، اس کے باب کارمیں آپ پیلین کا المد کی خوشخری دی گئی ہے، ہم ان میں سے حیار بشار تیں علی کرتے ہیں۔

_____ ∈ (زَمَزَم بِسَاشَ لِنَا ﴾ ____

ىپىلى بىثارت:

تمام انبیاء جن کوخدا نے دنیا میں بھیجا جن کی تعداد ایک لا کھ چوہیں ہزارتھی انہوں نے ابہام کے ساتھ ہات کی مگر میر ہے بعد تمام انبیاء اور مقدس ہستیوں کا نور آئے گا جوانبیاء کی کہی ہوئی باتوں کے اندھیرے پر روشنی ڈال دے گا کیوں کہ وہ خدا کا رسول ہے۔

فریسیوں اور انا و ایول نے کہا اگر نہ تو مسیح ہے اور نہ الیاں اور نہ کوئی اور نہی ہو کیوں تو نی تعلیم دیتا ہے؟ اور اپنے آپ کو مسیح ہے بھی زیاوہ بنا کر پیش کرتا ہے؟ یہوع نے جواب دیا ، جو مجرزے خدامیر ہے ہاتھ ہے دکھا تا ہے وہ بی ظا ہر کرتے ہیں کہ میں وہ بی پچھ کہت ہوں جو خدا چا ہتا ہے ، ور نہ در حقیقت میں اپنے آپ کواس (مسیح) ہے ہزا شار کئے جانے کے ق ہل نہیں قر اردیتا ، جس کا تم ذکر کررہے ہو ، میں تو خدا کے اس رسول کے موزے کے بند ، یا اس کے جوتی کے تسے کھولنے کے لائی بھی نہیں ہوں جس کو تم مسیح کہتے ہو ، جو مجھ سے پہلے بنایا گیا تھا اور میرے بعد آئے گا اور صدافت کی ہا تیں لیکر آئے گا ؛ تاکہ اس کے دین کی کوئی انتہا نہ ہو۔ (باب ٤٧)

دوسری بشارت:

بالیقین میں تم ہے کہتا ہوں کہ ہرنی جوآیا ہے وہ صرف ایک قوم کے لئے خداکی رحمت کا نشان بن کر پیدا ہوا ہے ، ای وجہ
ہے ان انبیاء کی باتیں ان لوگوں کے سوااور کہیں نہیں پھیلیں جن کے لئے وہ بھیجے گئے تھے، مگر خداکا رسول جب آئے گا خدا کو یا
اس کوا پنے ہاتھ ہی مہر دے دیگا ، یہاں تک کہ وہ دنیا کی تمام قو موں کو جواس کی تعلیم پائیں گی ، نجات اور رحمت پہنچا دے گا ، وہ ب
خدالوگوں پر افتد ار لے کر آئے گا ، اور بت پرتی کا ایسا قلع قمع کرے گا کہ شیطان پریٹان ہوجائے گا ، اس کے آگے ایک طویل
مکالمہ میں شاگر دوں کے ساتھ حضرت بھیلی غلیج لاکھ ایسا تھری کرتے ہیں کہ وہ بنی اسامیل میں سے ہوگا۔
(اب ۲)

میرے جانے سے تہارادل پریٹان نہ ہو، نہم خوف کرو، کیونکہ میں نے تم کو پیدائیں کیا ہے، بلکہ ضدا ہمارا خالق ہے،
جس نے تہہیں پیدا کیا ہے، وہی تہاری حفاظت کر ہے گا، رہا ہیں! تو اس وقت ہیں و نیا ہیں اس رسول خدا کے لئے راستہ
تیار کرنے آیا ہوں جو دنیا کے لئے نجات نے کر آئے گا، اندریاس نے کہا، استاذ ہمیں اس کی نش نی بتاوے، تا کہ ہم اس
پیچان لیس، یبوع نے جواب دیا، وہ تمہارے زمانہ میں نہیں آئے گا، بلکہ تمہارے پچھسال بعد آئے گا جب کہ میری انجیل
ایک منح ہو چکی ہوگی کہ مشکل ہے کوئی میں آ دی موس باتی رہ جا کی ، اس وقت اللہ دنیا پر رحم فرمائے گا، اور اپنے رسول کو
بیسے گا، جس کے سر پر بادل کا سامیہ کا، جس سے وہ خدا کا ہر گزیدہ جاتا جائے گا، اور اس کی تقدیس ہوگی، اور میری صدافت
دنیا کو معلوم ہوگی اور وہ ان لوگوں سے انتقام لے گا جو مجھے انسان سے ہڑ می کر پچھ قرار دیں گے، وہ ایک ایس صدافت کے
ساتھ آئے گا جو تمام انبیاء کی لائی ہوئی صدافت سے زیادہ واضح ہوگی۔

(باب ۲۷)

تىسرى بشارت:

خدا کا عبد بروشلم میں معبدسلیمان کے اغد کیا گیا تھا نہ کہ نہیں اور ، گرمیری بات کا بقین کر و کہ ایک وقت آئے گا جب خدا اپنی رحمت ایک اور اللہ اپنی رحمت سے ہر جگہ تجی نمی زقبول فرمائے گا ، چھر ہر جگہ اس کی صحیح عبادت ہو سکے گی ، اور اللہ اپنی رحمت سے ہر جگہ تجی نمی زقبول فرمائے گا ، جس در اصل اسرائیل کے گھر انے کی طرف تجات کا نبی بنا کر بھیجا گیا ہوں ، گرمیر ہے بعد کتے آئے گا خدا کا بھیجا ہوا تمام دنیا گی میں در اصل اسرائیل کے گھر انے کی طرف تجات کا نبی بنا کر بھیجا گیا ہوں ، گرمیر ہے بعد کتے آئے گا خدا کا بھیجا ہوا تمام دنیا کی طرف ، جس کے لئے خدا نے بیسماری دنیا بنائی ہے اس وقت سماری دنیا بیس اللہ کی عبادت ہوگی اور اس کی رحمت ناز ل ہوگ ۔ کی طرف ، جس کے لئے خدا نے بیسماری دنیا بنائی ہے اس وقت سماری دنیا بیس اللہ کی عبادت ہوگی اور اس کی رحمت ناز ل ہوگ ۔ (اب ۸۳)

چوهی بشارت:

(یسوع نے سردارکا ہن ہے کہا) زندہ خدا کی تھے جس کے حضور میری جان حاضر ہے، ہیں وہ سے نہیں ہوں جس کی آمد کا دنیا
کی تمام تو ہیں انظار کررہ تی ہیں، جس کا وعدہ خدا نے ہمارے باپ ابراہیم علیفٹ ڈالٹے تھا کہ کرکیا تھا کہ تیری نسل کے وسلے
ہے زمین کی سب تو میں برکت پائیس گی، (پیدائش ۱۸:۲۲) گر خدا جب ججھے دنیا ہے لے جائے گا تو شیطان پھر یہ بغاوت بر پا
کرے گا کہ نا پر ہیز گارلوگ جھے خدا اور خدا کا ہیٹا ما نمیں، اس کی وجہ سے میری باتوں اور میری تعلیمات کوسٹے کر دیا جائے گا، یہاں
تک کہ بشکل ۲۰ موجب ایمان باقی رہ جائیں گے، اس وقت خداد نیا پر دیم فرمائے گا اور اپنارسول بھیجے گا، جس کے لئے اس نے
دنیا کی ہیس ری چیزیں بنائی ہیں، جو تو ت کے ساتھ جنوب ہے آئے گا، اور بتوں کو بت پرستوں کے ساتھ بر با دکر دے گا، جو
شیطان سے وہ اقتد ارچھین لے گا جو اس نے انسانوں پر حاصل کر لیا ہے، وہ خدا کی رحمت ان لوگوں کی نجات کے لئے اپنے
ستھلان ہے وہ اقتد ارچھین لے گا جو اس نے انسانوں پر حاصل کر لیا ہے، وہ خدا کی رحمت ان لوگوں کی نجات کے لئے اپنے
ستھلان ہے وہ اقتد ارچھین لے گا جو اس نے انسانوں پر حاصل کر لیا ہے، وہ خدا کی رحمت ان لوگوں کی نجات کے لئے اپنے
ستھلان نے گا جو اس پر ایمان لا کمیں گے، اور مبارک ہے وہ جو اس کی باتوں کو مائے دیں جو اس جو دیں ہوں کو اس نے ساتھ بر باد کر دے کا اس تھ کیا ہوائی کی باتوں کو مائے کی سے دو اسے کا دیاں لا کمی گا دور مبارک ہے وہ جو اس کی باتوں کو مائے کا سے دور کیا ہو اس کی باتوں کو مائے کا دور مبارک ہو دیا کی کا دور کیا ہو کیا توں کو مائے کا دور کیا کہ کا دور مبارک ہو دور جو اس کی باتوں کو مائے کا دور کو دیا کی دور کیا کہ کو باتوں کو مائے کا دور کو دیا کیا کی دور کیا گا دور کیا توں کو دیا کی دیم کیا توں کو دور کیا کو دیا کیا کیا کیا کہ کیا توں کیا کیا کیا کی دیر کیا کیا کی دور کو دیا کی کیا توں کو دیا کی کیا توں کو کو دیر کی کو دی کیا کیا کیا کر دیا کیا کیا کیا کیا کو دیر کیا کیا کو دیر کیا کیا کہ کو دیر کیا کر کیا کیا کو دیر کیا کر دیا کیا کو دیر کیا کیا کے دیر کیا کو دیر کیا کہ کو دیر کیا کر دیر کیا کہ کو دیر کیا کر کیا کیا کر کیا کو دیر کیا کیا کر کیا کو کر کیا کے دیر کیا کر کر کیا ک

سردار کائن نے پوچھا کیا خدا کے اس رسول کے بعد دوسرے نی بھی آئیں گے؟ یبوع نے جواب دیا،اس کے بعد خداکے بصح ہوئے ہوئے ہی بہت ہے جھوٹے نی آجا کیں گے جس کا بھے بڑائم ہے، کیونکہ شیطان خدا کے عادلانہ فیصلے ہوئے ہے بی نہیں آئیں گے۔ سرائوا ٹھائے گا اور میری انجیل کے پردے میں اینے آپ کوچھیا کیں گے۔ سراہ ۱۷)

سردار کائن نے پوچھادہ نی کسنام سے پکاراجائے گااور کیا نشانیاں اس کی آمد کوظاہر کریں گی؟ لیوع نے جواب ویں اس مستح کانام قابل تعریف ہے کیونکہ ضدائے جب اس کی روح پیدا کی تھی اس وقت اس کا بینام خودر کھا تھااور وہاں اسے ایک ملکوتی شان میں رکھا گیا تھا، خدانے کہا، اے مجمہ انتظار کر، کیونکہ تیری ہی خاطر میں جنت، دنیا، اور بہت می مخلوق پیدا کروں گا، اور اس کو تحقے سے طور پر دوں گا، یہاں تک کہ جو تیری تعریف کرے گا اسے بر کت دی جائے گی اور جو تجھ پر لعنت کرے گا اس پر لعنت کی جائے گی اور جو تجھ پر لعنت کرے گا اس پر لعنت کی جائے گی ہور جو تجھ پر لعنت کرے گا اس پر لعنت کی جائے گی ہور جو تیری بات ہی ہوگ کی جائے گی ہور کے اس کھیے و نیا کی طرف جیجوں گا تو میں تجھ کو اپنے پیغا مبر نجات کی حیثیت سے جیجوں گا، تیری بات ہی ہوگ یہاں تک کہ ذمین وا سان مل جائیں گے گر تیراد تین نہیں شلے گا، سواس کا مبارک نام مجمہ ہے۔

ریاں تک کہ ذمین وا سان مل جائیں گے گر تیراد تین نہیں شلے گا، سواس کا مبارک نام مجمہ ہے۔

ریاں تک کہ ذمین وا سان مل جائیں گے گر تیراد تین نہیں شلے گا، سواس کا مبارک نام مجمہ ہے۔

- ﴿ (مَرَّرُم بِبَائِثَ إِنَّ ﴾ -

برناباس مکھتا ہے کہ ایک موقع پر شاگر دوں کے سامنے حصرت عیسی ﷺ فاٹھلاڈ کاٹھا کہ میرے ہی شاگر دوں میں ت ایک (جو بعد میں یہوداہ اسکریوتی نکلا) مجھے ہے سسکول کے موض دشمنوں کے ہاتھ نے دےگا، پھرفر مایا:

اس کے بعد مجھے یقین ہے کہ جو مجھے بیچے گا وہی میرے نام ہے مارا جائے گا، کیونکہ خدا مجھے زمین ہے او پر اٹھ لے گا، اور
اس غدار کی صورت ایک بدل دے گا کہ ہر شخص ہے سمجھے گا کہ وہ ہیں ہی ہوں، مگر جب وہ ایک برگ موت مرے گا تو ایک مدت تک
میری ہی تذیبل ہوتی رہے گی، مگر جب محمد بین ہوئی نفدا کا مقدس رسول آئے گا تو میری وہ بدنا می دور کر دی جائے گی، اور خدا بیاس
سے کرے گا کہ میں نے اس میسے کی صدافت کا اقر ارکیا ہے، وہ مجھے اس کا بیانعام دے گا تا کہ لوگ بیرجان لیس سے کہ میں زندہ
ہوں اور اس ذلت کی موت سے میراکوئی واسط نہیں ہے۔
(باب ۱۱۳)

حواری برناباس کا تعارف:

انجیل برنابا (یا) برناباس، کا تعارف کرانے سے پہلے مناسب معلوم ہوتا ہے کہ برناباس کے حالات زندگی پرروشی ڈائی جائے تا کہ معلوم ہوجائے کہ برناباس کون ہے؟ اور حوار یوں میں اس کا مقام کیا تھا؟ اور ان کے عقائد ونظریات کیا تھے؟ برناباس حضرت میسی علاقہ کا فالفیلا کے حوار یوں میں سے ایک جلیل القدر حواری بیں، انجیل برناباس ان بی کی طرف منسوب ہے، دوسر سے حواریوں کی طرح انہوں نے بھی حضرت سے علاقہ کا فالفیلا کی سوائح حیات اور آپ کے اشادات کوجمع کمیا تھا، کیکن میائی کر اتا تھا، برناباس حواری کے تعارف کے سلسلہ میں ایک جملہ پولوس کے دراز سے نا ئردلوقائی کی سالم میں ایک جملہ پولوس کے شاردلوقائی کی سالم ایس ملتا ہے وہ لکھتے ہیں۔

اور یوسف نام کا ایک لاوی تھا جس کالقب رسولوں نے برنا ہاس لیعنی نصیحت کا بیٹا رکھا تھا ،اور جس کی پیدائش کپرس کی تھی ، اس کا ایک کھیت تھا جسے اس نے پیچا اور قیمت لا کر (حوار بوں) رسولوں کے یا وُس پرر کھوی۔

(اعمال ٤: و ٣٧٠،٣٦ بحواله بالبل سي قرآن تك، حاشيه، ص: ٣٦١)

اس سے ایک بات تو بیمعلوم ہوئی کہ برناہاس حواریوں میں بلند مقام کے حامل تھے، ای وجہ سے حواریوں نے ان کا نام نصیحت کا بیٹا رکھ دیا تھا، دومری بات بیمعلوم ہوئی کہ انہوں نے خدا کی رضا جوئی کی خاطرا پی ساری و نیوی پونجی بیفی مقاصد کے لئے صرف کردی تھی۔

اس کے علاوہ برناباس کا ایک امتیاز یہ بھی ہے کہ انہوں نے بی تمام حواریوں سے پولس کا تعارف کرایا تھا، حواریوں میں سے
کونی یہ یقین کرنے کے لئے تیار نہ تھا کہ وہ ساؤل (پولس) جوکل تک ہم لوگوں کوستا تا اور تکلیف پہنچا تا رہا ہے آئے اخلاص ک
ستھ ہمارا دوست اور ہم مذہب ہوسکتا ہے، لیکن یہ برناباس ہی تھے جنہوں نے تمام حواریوں کے سامنے پولس کی تصدیق کی اور
انہیں بتایا کہ یہ فی الواقع تمہارا ہم مذہب ہو چکا ہے، چٹانچ لوقا، پولس کے بارے میں لکھتا ہے۔

اس نے بروشتم میں پہنچ کرش گردوں (حوار یوں) میں ال جانے کی کوشش کی اورسب اس ہے ڈرتے تھے کیونکہان کویفین

تہیں آتا تھ کہ بیش گرد ہے مگر برنا ہاس نے اے اپنے ساتھ رسولوں کے پاس لے جا کران سے بیان کیا کہ اس نے اس اس طرح راہ خداکود یکھااور اس نے اُس سے یا تیں کیس اور اس نے دمشق میں یسی دلیری کے ساتھ یسوع کے نام سے منادی کی۔ (اعمال ٩: ٢٦، ٢٧ بحواله مذكور)

اس کے بعد کتاب الاعمال ہی ہے میمعلوم ہوتا ہے کہ پولس اور برنا ہاس عرصۂ دراز تک ایک دوسرے کے ہم سفر رہے اور انہوں نے ایک ساتھ تبلیغ عیسائیت کا فریضہ انجام دیا، یہاں تک کہ دوسرے حواریوں نے ان دونوں کے بارے میں پیشہادت دی کہ بید دونوں ایسے آ دمی میں کہ جنہوں نے اپنی جانیں ہمارے خداوندیسو عملے کے نام پرٹن رکررتھی میں۔ (اعمال ۱۰: ۲۶) کتاب الانلمال کے بیندرھویں باب تک برنا ہاس اور پولس ہرمعاملہ میں شیر وشکر نظراً تے میں ہیکن اس کے بعدا جا تک ایک ابیا واقعہ پیش آتا ہے جوبطور خاص توجہ کامسحق ہے،اتنے عرصہ ساتھ رہنے اور بہینے و دعوت میں اشتراک کے بعدا جا تک دونو ل میں اس قدر سخت اختلاف پیدا ہوتا ہے کہ ایک دوسرے کے ساتھ رہنے کے روا دارنبیں تھے، بیروا قعہ کتاب الاعمال کے بیان کے مطابق کچھاس قدرنا گہانی اور ڈرامائی اندازے پیش آیا کہ قاری پہلے ہے اس کامطعق انداز ہبیں لگا سکتہ لوقا لکھتے ہیں۔ ا یک روز پولس نے برنا ہاس ہے کہا جن جن شہروں میں ہم نے خدا کا کلام سنایا تھا آؤ کھران میں چل کر بھائیوں کودیکھیں کہ کسے ہیں ، اور برناباس کا مشورہ تھا کہ یوختا (جومرقس کہلاتا ہے) کوجھی نے چیس، اس میں دونوں میں ایس تکرار ہوئی کہایک وومرے سے جدا ہوگئے۔ (کتاب الاعمال: ١٥، ٣٥ تا ٤١، بعواله مذکوره)

کیا تناشد بداختلاف صرف اس بن پر ہوسکتا ہے کہ ایک شخص یو دنا کور فیق سفر بنا نا جا بتا ہے اور دوسرا سیلاس کو؟ بھر لطف کی بات رہے کہ بعد میں پولس بوخن (مرتس) کی رف قت کو ًوارا کر لیت ہے، چنانچے میں کے نام دوسرے قط میں وہ لکھتا ہے: مرتس کوساتھ لے کرآ جا، کیونکہ خدمت کے لئے وہ میرے کا م کا ہے۔

اس ہے معلوم ہوا کہ مرٹس سے پولس کا اختلاف بہت زیادہ اہمیت کا حامل نہ تھ اس لئے اس نے بعد میں اس کی رفاقت کو گوارا کرلیا الیکن پورے عہد نامیہ جدیدیا تاریخ کی سی اور کتاب میں بیکہیں نہیں ماتا کہ بعد میں برنا ہاس کے ساتھ بھی پولس کے تعلقات استوار ہو گئے ، اگر جھٹرے کی وجہ مرس ہی تھا تو اس کے ساتھ پولس کی رضا مندی کے بعد برن باس اور پولس کے تعلقات کیوں استوار نہیں ہوئے؟

جب ہم خود پولس کے خطوط میں برنا ہاس ہے اس کی نا راضی کے اسباب تلاش کرتے ہیں تو ہمیں ریم ہیں ملتا کہ برنا ہاس ہے اس کی ناراضی کا سبب بیوخ (مرقس) تھا ،اس کے برخلاف جمیں ایک جملہ ایسا مانا ہے جس سے دونوں کے اختلاف کے اصل سبب پرنسی قدرروشن پڑتی ہے گلتیوں کے نام اپنے خط میں پولس لکھتا ہے۔

کیکن جب کیفا (لیعنی پطرس)انطا کیہ میں آیا تو میں نے رو برو ہوکراس کی می افت کی کیونکہ وہ مدمت کے لائق تھ ،اس کئے کہ بعقوب کی طرف ہے چند شخصوں کے آئے ہے سہے تو وہ غیر قوم والول کے ساتھ کھایا کرتا تھا، مگر جب وہ آ گئے تو مختو نول ہے ڈرکر بازر ہا،اور کنارہ کش ہو گیااور باقی یہود یوں نے بھی اس کے ساتھ ہو کرریا کاری کی ، یہال تک کہ برنایا س بھی ان کے

س تھریا کاری میں پڑ گیا۔ (گلتبون ۲: نا ۱۳، حاشیه بائبل سے قرآن تك، ص: ۳٦٥ ملعصا)

اس خطیس پوس وراصل اس اختلاف کو ذکر کر رہا ہے جو حضرت سے کے عروج آسانی کے پچھ عرصہ بعد پروشلم اورانطا کیہ کے عیسائیوں میں پیش آیا تھا، پروشلم کے اکثر لوگ پہلے بہودی تصاورانہوں نے بعد میں عیسائی ندہب قبول کیا تھا، اورانط کیہ کے اکثر لوگ پہلے بت پرست یا آتش پرست تھا در حواریوں کی تعلیم و تبلیغ ہوئے تھے، پہلی قسم کو بائبل میں بہودی مسیحی اور دوسری قشم کو غیر قوم کے لوگ کہا گیا ہے، بہودی سیحیوں کا کہنا یہ تھا کہ ختنہ کرانا اور موی علیقی الله فیکر قاطری کی شریعت کی تن م رسموں پڑس کرنا ضروری سے اس لئے انہیں مختون بھی کہا جاتا ہے اور غیر قوموں کا کہنا یہ تھا کہ ختنہ ضروری نہیں، اس لئے انہیں نا مختون کہا ج تا ہے، اس کے علاوہ یہودی سیحیوں میں چھوت چھات کی رسم بھی جاری تھی، اور وہ غیر قوموں کے ساتھ کھانا بین اور انھنا بین مند نہ کرتے تھے، پولس اس معاملہ میں سوفیصد غیر قوموں کا حامی تھا، اور ختنہ اور دوسری شریعت کی رسوم کی منسوخی اس انھنا بہند نظریات میں سے ایک نظریہ ہے، جے ثابت کرنے کے لئے اس نے اپنے خطوط میں جابجا مختلف دلائل پیش کے انقلاب انگیز نظریات میں سے ایک نظریہ ہے، جے ثابت کرنے کے لئے اس نے اپنے خطوط میں جابجا مختلف دلائل پیش کے ایس نے اپنے خطوط میں جابجا محتلف دلائل پیش کے ایس نے اپنے خطوط میں جابجا محتلف دلائل پیش

او پر ہم نے گلتیون کے نام کی جوعبارت پیش کی ہے اس میں پولس نے جناب بطرس اور برناباس پراس لئے ملامت کی کہ انہوں نے انطا کیہ میں رہتے ہوئے مختو نوں (بینی یہودنی سیحیوں) کاساتھ دیا اور پولس کے ان نئے مریدوں سے عیحدگی افتیار کی جوختنہ اور دوسری شریعت کے قائل نہ تھے، چٹانچہ اس واقعہ کو بیان کرتے ہوئے یا دری ہے پیٹیرس اسمتھ لکھتے ہیں:

پطرس اسی اجنبی شہر (انطاکیہ) میں زیادہ تر ان لوگوں کے ساتھ انتخابین شاہ جورو شلم سے آئے تھے، اور جواس کے پرانے ملاقاتی تھے، لہٰذاوہ بہت جلدان کا ہم خیال ہونے لگتاہے، دوسر ہے سیحی یہودی پطرس سے متاثر ہوتے ہیں یہاں تک کہ برناہاس بھی غیرتو م مریدوں کے دفتی ہوتی ہے، ہماں تک ممکن ہوتی ہے، جہاں تک ممکن ہے پولس اس ہات کو برداشت کرتا ہے، اس تعملہ وہ اس کا مقابلہ کرتا ہے، گوالیا کرنے سے اسے اپنے ساتھیوں کی مخاطفت کرنا پڑتی ہے۔ (حاشیہ ہائیل سے فرآن تك من ۲۶۱)

واضح رہے کہ بیدواقعہ برناباس اور پولس رسول کی جدائی ہے چند ہی دن پہلے کا ہے، اس لئے کہ انطا کیہ میں بطرس کی آمد بروشتم میں حوار بوں کے اجتماع کے بعد ہوئی تھی، اور بروشلم کے اجتماع اور برناباس کی جدائی میں زیادہ فاصلہ ہیں ہے، لوقانے دونوں واقعات کتاب الاعمال کے باب ۱۵ میں بیان کئے ہیں۔

اس کئے یہ بات انتہائی قرین قیاس ہے کہ پولس اور برناباس کی وہ جدائی جس کا ذکر لوقانے غیر معمولی طور پر بخت الفظ میں کیا ہے، یوخت (مرقس) کی ہمسفری سے زیادہ اس بنیادی اور نظریاتی اختلاف کا متیجہ تھی، پولس اپنے نئے مریدوں کے لئے ختنہ اور دوسری شریعت کے احکام کو ضروری نہیں سمجھتا تھا، اور اس نے چار چیزوں کے سواہر گوشت حلال کر دیا تھ، اور برناباس ان احکام کو پس پشت ڈالنے کے لئے تیار نہ تھا جو بائبل میں انتہائی تاکید کے ساتھ ذکر کئے گئے ہیں۔ (مشل) حضرت ابراہیم علیج لا کا لئے سے خطاب ہے: ''اور میر اعہد جو میرے اور تیرے در میان اور تیرے بعد تیری نسل کے در میان سے حضرت ابراہیم علیج لا کا لئے تیاں نہ کہا ہے۔ ''اور میر اعہد جو میرے اور تیرے در میان اور تیرے بعد تیری نسل کے در میان

ہاور جسےتم مانو گےسو بدہے کہتم میں سے ہرا یک فرزند نرینہ کا ختنہ کیا جائے ،اورتم اپنے بدن کی گھلڑی کا ختنہ کیا کرنا ،اور بیاس عہد کا نشان ہوگا جومیرے اور تمہارے درمیان ہے بتمہارے بیبال پشت در پشت ہرلڑ کے کا ختنہ جب وہ آٹھ روز کا ہوکیا جائے ،خواہ وہ گھر میں پیرا ہوخواہ اے کسی پر دیسی ہے خربیرا ہو، جو تیری کسل ہے نہیں ، لازم ہے کہ تیرے خانہ زاداور تیرے زرخربید کا ختنہ کیا جائے ،اور میراع پرتمہارے جسم پرابدی عہد ہوگا اور وہ فرزند نرینہ جس کا ختنہ نہ ہوا ہوا ہے لوگوں میں کا ٹ ڈالا جائے کیونکہ اس نے میراع ہدتو ڑا''۔ (پیدائش ۱:۱۷ تا ۱۶)

حضرت موی علیقالا والتفالات خطاب کرتے ہوئے کہا گیاہے کہ:

"اورآ محوي دن ارك كاختندكيا جائے" - (احداء ٢:١٦ بحواله مذكور)

اورخود حضرت عیسیٰ علیقلافالطاق کی بھی ختند کی گئی تھی ، چنانچہ انجیل لوقا میں ہے'' اور جب آٹھ دن پورے ہوئے اوران کی ختنه کا وقت آیا تواس کا نام یسوع رکھا گیا"۔ (لوفا ۲: ۲۱)

اس کے بعد حضرت سے علی کا کا کوئی ارشاد ایسامنقول نبیں ہے کہ جس سے بیٹا بت ہوتا ہو کہ ختنہ کا تھم منسوخ ہوگیا ہے۔ لہٰدا ہیا یہ تعین قرین قباس ہے کہ وہ برناباس جس نے حضرت عیسیٰ علیقالاً والشائلاً سے براہ راست ملا قات کا شرف حاصل کیا تھا، پوکس سے اس بنا پر برگشتہ ہوا ہو کہ وہ ایک عرصۂ وراز تک اپنے آپ کوسچا عیسائی ظاہر کرنے کے بعد مذہب عیسوی کے بنیا دی عقا ئدوا حکام میں تحریف کا مرتکب ہور ہاتھا،شروع میں برناباس نے پوکس کا ساتھداس لئے دیا تھا کہوہ اسے مخلص عیسا کی سمجھتے تنے ہیکن جب اس نے غیرا توام کواپنامرید بنانے کے لئے ندہب کی بنیادوں کومنہدم کرنے اورایک نئے ندہب کی بنیاد ڈانے کا سلسله شروع کیا تو وہ اس ہے جدا ہو گئے ، اور اس بنا پر گلتیوں کے تام خطیس برنا ہاس کو ملامت کرتے ہوئے ریکھتا ہے:

'''حمر جب وہ آ مسئے تو مختو نوں ہے ڈرکر بازر ہااور کنارہ کیااور باقی یہود یوں نے بھی اس کی طرح ریا کاری کی ، یہال تک کہ برنایا سمجی ان کے ساتھ ریا کاری میں پڑھیا''۔ (محلیود ۲:۱۳)

اس ہات کو پادری ہے پیٹرین اسمتھ بھی محسوں کرتے ہیں کہ پولس اور برناباس کی جدائی کا سبب صرف مرس (بوحنا) نہ تھا بكداس كے پس پشت مينظرياتى اختلاف بھى كام كرر باتھا، چنانچدوه لكھتے ہيں:

'' برنا ہاس اور پطرس نے جو کہ بڑے عالی حوصلہ مخص تھے ضرورا پی غلطی کا اعتراف کر لیا ہوگا اور یوں وہ دفت دور ہو جاتی ہے، کیکن با وجوداس کے بیاحتمال ضرور گذرتا ہے کہ ان کے درمیان کیجھ نہ بچھر مجش رہ جاتی ہے، جو بعد میں طاہر ہوتی ہے'۔ (حيات وخطوط، پولس ١٨٩ ، ٩)

الجيل برناباس كانعارف:

مندرجہ بالا بحث کوذ بن میں رکھ کراب انجیل برنا ہاس پر آجائے ہمیں اس انجیل کے بالک شروع میں جوعبارت ملتی ہے وہ ہے: اے عزیز و! اللہ نے جوعظیم اور عجیب ہے، اور آخری زمانہ میں ہمیں اپنے نبی یسوع سیج کے ذریعہ ایک عظیم رحمت سے

آ ز مایا، اس تعلیم اور آیتوں کے ذریعے جنہیں شیطان نے بہت سےلوگوں کو گمراہ کرنے کا ذریعہ بنایا، جوتقوے کا دعوی کرتے ہیں اور سخت َ غرکی تبدیغ َ سرتے ہیں، مسیح کواللہ کا بیٹا کہتے ہیں ختنہ کا انکار کرتے ہیں جس کا اللہ نے ہمیشہ کے لئے تھم دیا ہے اور ہر تجس گوشت کو جا نز کہتے ہیں انہی کے زمرے میں پولس بھی گمراہ ہو گیا جس کے بارے میں میں پچھنہیں کہ سکتا گرافسوں کے ساتھ ، اور وبی سبب ہے جس کی وجہ ہے وہ حق بات لکھ رہا ہوں جو میں نے بسوع کے ساتھ رہنے کے دوران سی اور دیکھی ہے تا کہتم نجات یا وَاورْتهبیں شیطان گمراہ نہ کرے ،اورتم اللہ کے حق میں ملاک نہ ہو جاؤ ، اوراس بنا پر ہراس محص ہے بچو جوتمہیں کسی نی تعلیم کی تبلیغ کرتاہے جومیرے لکھنے کے خلاف ہو، تا کہم ابدی نجات یاؤ۔ (برناہاس: ۲ تا ۹)

ئی بیٹین قرین قیاس نہیں ہے کہ پولس سے نظریاتی اختلاف کی بنا پر جدا ہونے کے بعد برنا ہاس نے جوعرصۂ وراز تک حضرت میں علیجلافی والنامی کے ساتھ رہے تھے، حضرت میں علیجالافرالیا کا کا یک سوائے لکھی ہوا وراس میں پولس کے نظریات پر تنقید کر کے بچے عقا ندونظریات بیان کئے ہوں؟ خلاصة كلام يہ ہے كہ خود بائبل ميں برنا باس كا جوكردار چيش كيا گيا ہے اس ميں پولس كے س تھوان کے جن اختلاف ت کا ذکر ہے ان کے چیش نظریہ بات چنداں بعید نہیں ہے کہ برنا ہاس نے ایک ایسی انجیل مکھی ہوجس میں پولس کے عقائد ونظریات پر تنقید کی گئی ہواور وہ مروجہ عیسائی عقائد کے خلاف ہو، اگرید بات ذہن نشین ہو جائے تو انجیل برنا ہاس کو برنا ہاس کی تصنیف سمجھنے کے راستہ ہے ایک بہت بڑی رکاوٹ دور ہوگئی، اس لئے کہ عام لوگوں، بالخصوص عیسائی حضرات کے دل میں اس کتا ہے کی طرف ہے ایک بہت ہڑا بلکہ سب سے بڑا شبہائ وجہ سے پیدا ہوتا ہے کہ انہیں اس میں بہت سی با تیں ان نظریات کے خلاف نظرآتی ہیں جو پولس کے واسطے سے پینچی ہیں وہ و کھتے ہیں کہاس کتاب کی بہت می با تیں انا جیل ار بعدا ورمر وجد میسائی نظریات کےخلاف ہیں تو و دسی طرح یہ باور کرنے پرآ ماوہ نہیں ہوتے کہ بیواتعی برنا باس کی تصنیف ہے۔ کیکن اوپر جو گذارشات ہم نے پیش کی جیں ان کی روشنی میں بیہ بات واضح ہو جاتی ہے کہ اگر برناباس کی کسی تصنیف میں یوس کے عقائد ونظریات کے خلاف کوئی عقید دیا واقعہ بیان کیا گیا ہوتو وہ کسی طرح تعجب خیز نہیں ہوسکتا اور محض اس بنا پر اس تصنیف کوجعلی نہیں قرار دیا جاسکتا کہ وہ پولس کے نظریات کے خلاف ہے ؛ اس لئے کہ مذکورہ بالا بحث سے بیہ بات واضح ہوگئی کہ پولس اور برنا ہاس میں کچھنظریاتی اختلاف تھاجس کی بنا پروہ ایک دوسرے سے الگ ہوگئے تھے۔

اس بنیادی منکتے کوقدر ہے تفصیل اور وضاحت ہے ہم نے اس لئے بیان کیا ہے تا کدانجیل برناباس کی اصلیت کی تحقیق کرتے ہوئے وہ ملط تصور ذہن ہے دور ہوجائے جو عام طور سے شعوری یا غیر شعوری طور پر ذہن میں آئی جاتا ہے ،اس کے بعد آئے دیکھیں کہ کیا واقعی برناباس نے کوئی انجیل لکھی تھی؟ جہاں تک ہم نے اس موضوع پر مطالعہ کیا ہے اس بات میں دورا میں نہیں ہیں کہ برنایاس نے ایک انجیل کھی میسائیوں کے قدیم مآخذ میں برنایاس کی انجیل کا تذکرہ ملتا ہے اظہار الحق میں (مس. ۳۳۳، ج ۱) پراکیہو مو کے حوالہ ہے جن گم شدہ کتابوں کی فہرست نقل کی گئی ہے اس میں انجیل برناباس کا نام بھی موجود ہے امریکانا، (ص۲۲۳، ج:۳) کے مقالہ برناباس میں بھی اس کااعتراف کیا گیا ہے، چونکہ انجیل برناباس دوسری انجیلوں کی طرت روای نہیں یاسکی ،اس لئے کسی غیرجا نبدار کتاب ہے یہ بیتہیں چلنا کہ اس کےمضامین کیا تھے،لیکن کلیسا کی تاریخ میں یہیں ایک

واقعداییا ملتا ہے جس سے اس کے مندر جات پر ہلکی می روشنی پڑتی ہے ، اور جس سے اتنامعلوم ہوتا ہے کہ بر ناباس کی انجیل میں عیس ئیوں کے عام عقا کد ونظریات کے خلاف مجھے با تیں موجود تھیں ، وہ دا قعہ رہے کہ یانچویں صدی عیسوی میں یعنی آتخ ضرت جَلِقَ عَلَيْهِ كَ تَشْرِيفَ وَرَى سے بہت مِهلے ایک پوپ جیلا همیں اول کے نام ہے گذرا ہے اس نے اپنے دور میں ایک فر مان جاری کیا تھا جوفر مانِ'' جیلاشیس'' کے نام ہے مشہور ہے اس فرمان میں اس نے چند کتابوں کے پڑھنے کوممنوع قرار دیا تھا ان کتابوں میں سے ایک کتاب الجیل برنا باس بھی ہے۔

(دیکھئے انسائیکلوپیڈیا امریکانا، ص ۲٦۲، ج۳، مقاله برناباس، اور مقدمهٔ انحیل برناباس از ڈاکٹر خلیل سعادت مسبحی)

الجيل برناباس كى مخالفت كى اصل وجه:

عیس کی جس وجہ ہے انجیل برنا ہاس کے مخالف ہیں وہ دراصل بینبیں کہاس میں رسول اللہ ﷺ کے متعمل جگہ جگہ صاف اور واضح بشارتیں ہیں، کیونکہ وہ تو حضور ظفائلی کی پیدائش ہے بہت پہلے اس انجیل کورد کر چکے تنے ،ان کی نارافسکی کی اصل وجہ کو سمجھنے کے لئے تھوڑی سی تفصیلی بحث در کار ہے۔

حضرت عیسی کے ابتدائی پیروآپ کوصرف نبی مانتے تھے، دومری شریعت کا انتاع کرتے تھے،عقا کداورا حکام اور عبادات کے معاملہ میں اپنے آپ کو دوسرے بنی اسرائیل سے قطعاً الگ نہ بھتے تتھے اور بیبود بوں سے ان کا اختلاف صرف اس امر میں تھا کہ بیرحضرت عیسی کوسیج تشکیم کر کےان پر ایمان لائے تھے،اور وہ ان کوسیج ماننے ہےا نکار کرتے تھے، بعد میں جب سینٹ یال (پولس) اس جماعت میں داخل ہوا تو اس نے رومیوں ، بونا نیوں اور دوسر ے غیریہودی اور غیرا سرائیلی لوگوں میں بھی اس دین کی تبدیغے واشاعت شروع کر دی اوراس غرض کے لئے ایک نیا دین بنا ڈالا جس کے عقائد واصول اوراحکام اس دین ہے بالکل کے زمانہ میں وہ ان کاسخت مخالف تھا،اوران کے بعد بھی گئی سال تک ان کے بیروؤں کا دشمن رہا، پھر جب اس جماعت نے ان ہے ایک نیا وین بنا نا شروع کیا اس دفت بھی اس نے حضرت عیسیٰ علیظ کا طاقتا کا کے کسی قول کی سند پیش نہیں کی بلکہ اپنے کشف و الهام کو بنیاد بنایا اس نئے دین کی تشکیل میں اس کے پیش نظر بس بیمقصد تھا کہ دین ایسا ہو جسے عام غیریہودی دنیا قبول کر ہے، اس نے اعلان کر دیا کہ ایک عیسائی شریعت یہود کی تمام یا بندیوں ہے آ زاد ہے اس نے کھانے پینے میں حرام وحلال کی تمام قیود ختم کردیں،اس نے ختنہ کے حکم کوبھی منسوخ کر دیا جوغیریہودی دنیا کوخاص طور سے نا گوارتھ حتی کہاس نے مسیح کی الوہیت اور اس کے ابن خداہونے کا اورصلیب برجان دیکراولا وآ دم کے بیدائتی گناہ کا کفارہ بن جانے کاعقیدہ بھی تصنیف کرڈ الا کیونکہ ی م مشرکین کے مزاج سے یہ بہت مناسبت رکھتا تھا، سے کے ابتدائی بیروؤں نے اس کی مزاحمت کی مگرسینٹ یال (پولس) نے جوجو درواز ہ کھولا تھااس سے یہودی عیسائیوں کا ایک ایباز ہردست سیلا ب اس ندہب میں داخل ہو گیا جس کے مقابلے میں وہ تھی بھر لوً کسی طرح ندگھبر سکے تاہم تیسری صدی عیسوی کے اختیام تک بکثرت ایسے لوگ موجود تھے جومسیح کی الوہیت کے عقیدے - ﴿ (مِكْزُمُ بِيَئِكُ شَرْ) ≥ -

ے انکار کرتے تھے، مگر چوتھی صدی کے آغاز ۳۲۵ء میں نیقیہ (Nicaea) کوسل نے پولسی عقائد کوقطعی طور پرمیسجیت کامسلم مذہب قرار دیدیا، پھررومی سلطنت خودعیسائی ہوگئی اور قیصرتھیوڈ ورشیئس کے زمانہ میں بہی ندہب سلطنت کا سرکاری مذہب بن گیا،اس کے بعد قدرتی بات تھی کہ وہ تمام کتابیں جواس عقیدے کےخلاف ہوں،مردود قرارد میری جائیں اورصرف وہی کتربیں معتبر کھیرائی جا ئیں جواس عقیدے ہے مطابقت رکھتی ہوں، ۳۲۷ء میں پہلی مرتبہ اٹھانا سیوس (Athana sius) کے ایک خط کے ذریعہ معتبر ومسلم کتابوں کے ایک مجموعہ کا اعلان کیا گیا پھر اس کی توثیق ۳۸۲ء میں بوپ ڈیمیسیئس (Damasius) کے زیر صدارت ایک مجلس نے کی ، اور یا نچویں صدی کے آخر میں پوپ گلاسیس (Galasius) نے اس مجہوعہ کومسلم قرار دینے کے ساتھ ساتھ ان کتابوں کی ایک فہرست مرتب کر دی جو غیرمسلم تھیں ، حالہ نکہ جن پولسی عقا ئد کو بنیہ و بنا کر مذہبی کتابوں کے معتبر اور غیرمعتبر ہونے کا فیصلہ کیا گیا تفا ان کے متعلق بھی کوئی عیسائی عالم بید دعویٰ نہیں کر سکا کہان میں ہے کسی عقیدے کی تعلیم خودحضرت عیسی علیہ کا اللہ کا اللہ کا اللہ کا اللہ معتبر کتابوں کے مجموعہ میں جوانجیلیں شامل ہیں خودان میں بھی حضرت عیسیٰ علاقة لَاَ اَنْ اللَّهُ اللّ گئی کہوہ مسحیت کے اس سر کا ری عقیدہ کے بالکل خلاف تھی۔

آب بلق الما تركا ثبوت الل كتاب سے:

اس بشارت کاعیسی علیق کافیلی سے منقول ہونا خود اہل کتاب کے بیان سے حدیثوں میں ثابت ہے؛ چنانچہ خازن میں بروایت ابودا و رہنجاشی با دشاہ حبشہ کا جو کہ نصاریٰ کے عالم بھی تھے بیقول آیا ہے کہ واقعی آپ میلانی ایک ہیں جن کی بشارت عیسیٰ رسول الله فالقلطيني كي صفت للهي بهاوريد كميسى عليه كالله كالتلك آب في التلافيني كالميلا الله والتلافين المالية تورات کے مبلغ تھے اس کئے تورات میں اس بشارت کا ہوناعیسیٰ علیہ کا طابعہ کا سے منقول کہا جائے گا، اور مولا نا رحمت اللہ رَيِّمَ كَاللَّهُ مَعَالاً فِي الْطِهِ راكِق مِين خودتورات كےموجود نسخوں ہے متعدد بشارتیں نقل کی ہیں (جلد دوم صفحہ ۲ امطبوء قسطنطنیہ) اور ان مضامین کا انجیل موجودہ میں نہ ہونا اس لئے مصر نہیں کہ حسب شخقیق علماء مختفقین ، انا جیل کے نشخ محفوظ نہیں رہے مگر پھر بھی جو سچھ موجود ہیں ان میں بھی اس قتم کامضمون موجود ہے چنانچہ بوحثا کی انجیل ترجمہ عربی مطبوعہ لندن ۱۸۲۱ء و۱۸۳۳ء کے چودھویں ہاب میں ہے کہ''تمہارے لئے میراجاتا ہی بہتر ہے کیونکہ اگر میں نہ جاؤں تو فارقلیط تمہارے پاس نہ آوے، پس اگر میں جاؤل تو اس کوتمہارے پاس بھیج دول گا''، فارقلیط احمد کا ترجمہ ہے، اہل کتاب کی عادت ہے کہ وہ ناموں کا ترجمہ کردیتے ہیں علیہ کا الطاق نے عبرانی میں احمد فر مایا تھا جب یونانی میں ترجمہ ہوا تو بیر کلوطوں لکھ دیا جس کے معنی میں احمد، یعنی بہت سراہا گیا بہت حمد کرنے والا ، پھر جب بونالی سے عبر انی میں ترجمہ کیا گیا تو فارقلیط کر دیا۔

فَسَلَمَهَا جَاءَهُمُ بِالْبَيِّنَاتِ قَالُولَا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِين كِير جب معرت سيلى عَلَيْقَالَةُ النَّالَةُ مَا مِضامين اور مجزات

پیش فره کراپی ثبوت کااثبات فرمایا، تو وہ لوگ کہنے لگے بیتو صریح جاد و ہے بعض نے اس سے نبی ﷺ مراد لئے ہیں اور قَالُو ا كافي على كفار مكه كو بنايا ب لِيُسطِّ فِي وَ اللُّه نور سے مرادقر آن يا اسلام يامحمد ﷺ يادلائل و براين بين منه سے بجھانے كا مطلب وهطعن وسنتیع اور وه شکوک وشبهات پیدا کرنے کی باتیں ہیں جووہ کہا کرتے تھے۔

ۗ يَايَّهُا الَّذِيْنَ امُنُوْاهَلَ الْكُلُوعَلَى تِجَارَةٍ تَغِينَكُمْرِ بِالتَحْفِيْفِ والتَشْدِيدِ مِ**نْعَذَابٍ الْيُو**ِ۞ مُوْلِمٍ فَكَانَّهُمْ قَالُوا نَعَمْ فَقَالَ تُوَمِّنُونَ تَدُوسُونَ عَمَى الإِيمَان بِاللهِ وَرَسُّولِهِ وَتُجَاهِدُونَ فِي سَبِيّلِ اللهِ بِالْمُوالِكُمْ وَانْفُسِكُمْ ذَٰلِكُمْ زَلْكُمُ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ[©] أَنَّهُ خَيْرٌ لَّكُمْ فَفُعَلُوهُ يَغْفِرُ جَوَابُ شَرَطٍ مُقَدَّرِ اى إِنْ تَفْعَلُوهُ يَغْفِرُ لَكُمْ **ذُنُونَكُمْ وَيُذُخِلُكُمْ جَنَّتٍ** تَجْرِيْ مِنْ تَعْتِهَا الْاَنْهُارُومَسْكِنَ طَلِيّبَةً فِي جَنّْتِ عَدْنِ ۚ اِقَامَةٍ ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۚ وَيُـوَتِـكُمْ نِعْمَةً وَأَخْرَى تُجِتُّونَهَا ۖ نَصْرً مِّنَ اللهِ وَفَتْحٌ قَرِيْتٌ وَكَبَشِرِ الْمُؤْمِنِينَ® بِالنَّصْرِ والفَتْح يَالَيُهَا الَّذِينَ الْمُثُوّا كُونُوَ الْصَالَالْيُولِدِيْنِهِ وفِي قِرَاءَ وَبِالإِضَافَةِ كَمَا كَانَ الحَوَارِيُّونَ كَذَٰلِكَ الدَّالُ عَلَيْهِ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَنْ كَمَا لِمُحْرِبِ بِنَ مَنْ أَضَادِكَ إِلَى اللَّهُ اى مَنِ الاَنصَار الَّـذِيـنَ يَـكُونُونَ مَعِي مُتَوَجِبَهَا إِلَى نُصُرَةِ اللَّهِ قَالَ الْحَوْرِيُّوْنَ أَعْنُ ٱلْصَارُاللَّهِ والحَوَارِيُّونَ أَصْفِيَاءُ عِيْسى عَــلَيْهِ السسلام وبُسمُ أوَّلُ مَـنُ امَّنَ به وكَانُوا إِثْنَيْ عَشَرَ رَجُلاً مِنَ الحَوْرِ وبُوَ البَيّاشُ الحَالِصُ وقِيلَ كُنُوا قَصَّارِينَ يَحُورُونَ الدِّيَابَ يُبَيِّضُونَهَا ۖ فَأَمَّنَّتُ ظُلَّإِفَةٌ مِّنْ بَنِيَّ السَّرَآءَيْلُ بِعِيَسْي وقَالُوا إِنَّهُ عَبُدُ اللَّهِ رُفِعَ إلى السَّمَاءِ وَكَفَرَتُ طَّأَيِفَةٌ لِقَولِهِم إنَّهُ ابْنُ اللَّهِ رَفَعَهُ إِلَيْهِ فَاقْتَتَلَتِ الطَّابُفَتَانِ فَأَيَّذُنَا قَوْيُنَا ﴾ الَّذِيْنَ أُمَّنُوْا مِنَ الطَّائِفَتَيُنِ عَلَى عَكُرُوهِ مِ الطَّائِفَةِ الكَافِرَةِ فَأَصَبَحُوا ظُهِرِيْنَ أَ غَالِبِينَ.

تخفیف اورتشدید کے ساتھ ہے، گویا کہ انہوں نے کہاہاں، تم اللہ پراوراس کے رسول پیٹھیٹی پرایمان لاؤیعنی ایمان پر قائم رہو اورا پی جان سے اورا پنے مالوں سے اللہ کے راستہ میں جہاد کرویہ تہمارے تن میں بہتر ہے اگر تم سمجھ سکتے ہو کہ یہ بہتر ہے تو اس کا م کوکر و التد تعالیٰ تمہارے گنا ہوں کومعاف فرمادے گا اور تمہیں ان جنتوں میں داخل کرے گا جن کے نیچے نہریں جاری ہوں گی اورصاف ستھرے گھروں میں جو جسنت عدن (قابل ِ ہائش) جنت میں ہوں گے یہ بڑی کامیابی ہے اورتم کوایک ووسری نعمت بھی عطا کرے گاجس کوتم پسند کرتے ہووہ اللہ کی مدواور جلد فتح یا بی ہے (آپ پھٹھٹا) موشین کو فتح ونصرت کی خوشخبری سنائے! اےا بمان والو!اللہ کے لینی اس کے دین کے مددگار بن جا وَاورا یک قراءت میں (انصاراللہ) اضافت کے ساتھ ہے جیسا کہ (حضرت عيسىٰ عَلَيْهِ لِلأَفَلِينَا وَالسَّارِ اللَّهِ مُوكِ ، اس يرحضرت عيسىٰ عَلَيْهِ للأَفَلِينَا لا الله كرتا ہے عيسیٰ عَلَيْهِ لاَفَلَا اللَّهُ اللَّهُ لاَ وَلا اللَّهُ كُرتا ہے عيسیٰ عَلَيْهِ لاَفَلا اللَّهُ اللَّهُ لاَ وَلا اللَّهُ مَا اللَّهِ اللَّهُ لاَ وَلا اللَّهُ اللَّهُ لاَ وَلا اللَّهُ مِنْ اللَّهِ اللَّهُ لاَ وَلا اللَّهُ مِنْ اللَّهُ لا وَلا اللَّهُ مِنْ اللَّهُ لاَ وَلا اللَّهُ لاَ وَلا اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ لا وَلا اللَّهُ مِنْ اللَّهُ لاَ وَلا اللَّهُ اللَّهُ لا وَلا اللَّهُ مِنْ اللَّهُ لا وَلا اللَّهُ مِنْ اللَّهُ لا وَلا اللَّهُ مِنْ اللَّهُ لا وَلا اللَّهُ لا اللَّهُ لا وَلا اللَّهُ لا اللَّهُ لا اللّهُ لا اللَّهُ لا اللّهُ لا اللّهُ لا أَنْ اللّهُ لا اللّهُ لا اللّهُ لا اللّهُ اللّهُ لا اللّهُ لا اللّهُ لا اللّهُ لا اللّهُ لا اللّهُ لا اللّهُ اللّهُ لا اللّهُ اللّهُ لا اللّهُ للللّهُ لا اللّهُ لا اللّهُ اللّهُ لا اللّهُ لا اللّهُ لا اللّهُ لا اللّهُ لا اللّهُ لا اللّهُ اللّهُ لا اللّهُ اللّهُ لا اللّهُ اللّهُ لا اللّهُ لا اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ لا اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الل ابن مریم نے حوار بوں سے فرمایا کون ہے جواللہ کی راہ میں میرا مددگار ہو؟ لیتنی ان مددگاروں میں ہے جومیرے ساتھ اللہ کی نفرت ک ج نب متوجہ ہوں؟ حوار یوں نے کہا ہم القد کی راہ میں مددگار ہیں ،اور حواری حضرت میسی علیج الافلائلائے متن کر دہ تھے ،

یہ دہ وگ تھے جوئر دع ہی میں حضرت میسی علیج الافلائلا پر ایمان لائے تھے ،اور وہ بارہ اشخاص تھے ، یہ حَسورٌ سے مشتق ہے ،

حسورٌ فی انعی سفیدی کو کہتے ہیں اور کہا گیا ہے کہ وہ دھو بی تھے جو کپڑوں کو دھوتے یعنی سفید کیا کرتے تھے ، لیس بی اسرائیل میں سے ایک ہیں عت میسی علیج الافلائل کی اور انہوں نے کہاوہ (نیسی علیج الافلائل کی اندے ہیں جن کو آئان کی اور انہوں نے کہاوہ (نیسی علیج الافلائل کی اندے ہیں جن کو آئان کی اس قول کی جہ سے میسی علیج الافلائل کا اندے جیئے ہیں ان کو آئانوں پر انصابی طرف انھالی گیا اور ایک جماعت نے کفر کیا ان کے اس قول کی جہ سے میسی علیج الافلائل کے دشمنوں کے مقابلہ میں مدد کی جو دولوں کی ، یعنی ان کے دشمنوں کے مقابلہ میں مدد کی جو دولوں فریقوں میں سے ایمان لائے ، یعنی کا فرجماعت پر ، پس وہ عالب آگئے یعنی فتح یا ہوگئے۔

جَِّفِيق الْرِيْبُ لِيَسْمَيُ لَ الْعَشِارِي فَوْلَالِهُ

فَيْحُولْنَى ؛ هَلْ أَذُكُكُمْ عَلَى تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِنْ عَذَابٍ أَلِيْمٍ استنهام بمعنی خبر بخبر كولفظ استفهام ب ذكركرنے كا مقصد تشويل ور غيب ب، اس لئے كداستفهام اوقع في النفس ہوتا ہے ، جہا دكوتجارت كہنے كی وجہ بہب كداللہ تعالى نے فرمايا "إِنَّ اللهٰ الشّنَدى مِنَ الْمُوْمِنِيْنَ أَنْفُسَهُمْ وَ آمْوَ اللّهُمْ" (الآية) يعنی مجاہد كی جان ومال جس كووه راو خدا میں صرف كرتا ہاس خرج الشّنَدى مِنَ الْمُوْمِنِيْنَ أَنْفُسَهُمْ وَ آمْوَ اللّهُمْ" (الآية) يعنی مجاہد كی جان ومال جس كووه راو خدا میں صرف كرتا ہاس خرج كرنے كو الشّدى ہے تعبير فرمايا ہے جوكر تجارت میں ہوتا ہے۔

هِ وَكُولَ مَا يَوْمِنُونَ يَهِ مِتْدِهُ وَمُدُوف كَ خِرْب، اى هِلَى تُوْمِنُونَ بِإجمله مِتَانفه بِ جُوكه موال مقدر كرواب بين واقع ب، اى مَا هِيَ النّجارة؟ اس كاجواب ويا كياهِي تُوْمِنُونَ النح.

قِوْلَى : ذِالكمر حير لكم الخ، ذلكم مبتداء عَيْرٌ خر

يَقِوُلْكُ ؛ أَنَّهُ خَيْرٌ لَكُمْ سے اشاره كردياكه تَعْلَمُونَ كامفعول محذوف باور فَافْعَلُوْ اسے اشاره كردياكه إنْ كُنْتُمْ تَعَلَمُونَ كاجوابِ شرط محذوف ہے۔

فَيْكُولْنَى : يَغْفِرْلَكُمْ يَشْرُطِ مُدُوف كَاجُواب ب اى إِنْ تَفْعَلُوهُ.

يَّخُولَكُنَّ : يَغْفِرْ لَكُمْ مِيشْرِ طَ مَقَدر كاجواب ب اى إِنْ تَفْعَلُوا ، يَغْفِرْ لَكُمْ اورييكى بوسكنا ب كراس امر كاجواب بون كَ بجد ي جزوم بوجو تُوْمِنُونْ مِن مِفهوم باس لِي كه تُوْمِنُونَ ، آمَنُوا كَ مِنْ مِن بـــ

فَيْوَلْكَنْ: يُسُونِكُمْ نِعْمَة مَفْسرعلام نَے يُونِيكُمْ عامل كومقدر مان كرا شاره كرديا كه أُخُونى موصوف محذوف كى صفت ہے اور موصوف صفت سے ل كريونِيكُمْ مقدر كامفعول ہے اوراس عامل مقدر كاعطف مذكور يعنى يُذْ خِلْكُمْر پر ہے۔

قِولَى : تُجِبُّوْنَهَا، أُخْرِى كَاصَفت مـ

قِوَلْنَى : نَصْرٌ مِّنَ اللَّه الح يمبتدا ومحذوف كَ ثبرت اى تلك النعمة الأحرى نصر من الله.

تَفْيِيرُوتَشِينَ

شان نزول:

اس آیت میں ایمان اور مجاہدہ بالمال واسفس کو تجارت فرمایا ہے کیونکہ جس طرح تجارت میں پچھ مال خرج کرنے اور محنت کرنے کے صلامیں من فع حاصل ہوتے ہیں ایمان کے ساتھ اللہ کی راہ میں جان و مال خرج کرنے کے بدلے میں اللہ کی رضا اور آخرت کی وائی نعمتیں حاصل ہوتی ہیں جن کا ذکر اگلی آیت میں ہے کہ جس نے بیتجارت اختیار کی اللہ تعالیٰ اس کے گناہ معاف فرمائے گا جن میں ہر طرح کے آرام و کے گناہ معاف فرمائے گا جن میں ہر طرح کے آرام و میش کے سامان ہوں گے، جیسا کہ حدیث میں ''مساکن طیب'' کی تفسیر میں اس کا بیان آیا ہے، آگے آخرت کی نعمتوں کے ساتھ کچھو نیا کی نعمتوں کا جمعنوں کا کہے وعد و فرمائے میں۔ (معادم)

و اُخری تُحِبُوْنَهَا نَصْوُ مِنَ اللّهِ (الآیة) عُظ اُخوی، نعمة کی صفت ہے معنی یہ بیں کہ آخرت کی نعمتیں اور جنت کے مکانات تو ملیں گے بی جیسا کہ وعدہ کیا گی ہے، ایک نعمت نفتہ دنیا میں بھی ملنے والی ہے وہ ہے اللّٰہ کی مدداوراس کے ذریعہ فتح میں، یعنی دشمنوں کے مما لک کا فتح ہوتا '' نعمت اخریٰ' ہے مرادیا تو آخرت کی نعمتیں ہیں ان کود نیا کے اعتبار ہے قریب کہا گیا ہے یا پھراس ہے مراد خیبراور مکہ کی فتح ہے اور بیتو ظاہر ہے قریبی فتح ہوتا ہے، الله تعالی نے انسان کے بارے میں فرمایا '' نعمت اسلامی کے دریا ہے۔ الله نصور پر نفتہ نامی کو جو ہے اس کو مجبوب اور پہندیدہ اس کئے کہا گیا کہ انسان فطری طور پر افتہ فا کہ وہ ہے اس کو مجبوب ہوتا ہے، اللہ تعالی نے انسان کے بارے میں فرمایا '' نعمیا کے انسان کے بارے میں فرمایا '' نوانسان کے خوالا'' و نیا میں فتح وکا مرانی بھی اگر چاللہ کی ایک بڑی نعمت ہے لیکن مومن کے لئے اصل اجمیت کی چیز مینہیں ہے۔ الانسساں عُد مُحود لا'' و نیا میں فتح وکا مرانی بھی اگر چاللہ کی ایک بڑی نعمت ہے لیکن مومن کے لئے اصل اجمیت کی چیز مینہیں ہے۔

- ﴿ (مَنزُم بِبَاشَرِ] ٢

بکہ آخرت کی کامیا بی ہے اس لئے جونتیجہ دنیا کی اس زندگی میں حاصل ہونے والا ہے اس کا ذکر بعد میں کیا گیا ہے اور جونتیجہ آخرت میں رونما ہونے والا ہے اس کے ذکر کومقدم رکھا گیا۔

عیسائیوں کے تین فرقے:

فَاهَنَتْ طَائِفَةٌ مِّنْ بَنِيْ إِسْرَائِبِيلَ وَكَفَر تَ طَائفَةٌ بِغُوى رَحْمُ لُلْمُلُمُ كَالْ فِي النّ النّ الله وَ فَوَ فَوَ النّهِ الله وَ عَلَيْهِ الله وَ فَوَ فَوَا الله وَ عَلَيْهِ الله وَ فَوَ فَوَا الله وَ فَوَ فَوَا الله وَ فَوَ فَوَا الله وَ الله وَالله وَ الله وَالله وَ الله وَ ا



مرية المعَدِّية وَهَ الْحَدِيثِ وَهِ الْحَدِيثِ فَي الْحُوعِ الْمُعَيِّرِةِ الْمُتَّةِ وَفِي الْحُوعِ الْمُوعِ

سُوِّرَةُ الجُمُعَةِ مَدَنِيَّةٌ إحداى عَشَرَةَ ايَةً.

سورہ جمعہ مدنی ہے، گیارہ آبیتیں ہیں۔

ين برالله الرّح من الرّح في يُسَبّح بِله يُسرّبُ ونه مرائدة مَا في السّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مي د ني من تنعليات اللاكنار المُعلِّلُ الْقُدُوسِ السُمارة عند لاسلف ما الْعَزِيْزِ الْعَلِيْرِ في سُلك وسُلعه هُوَالْذِيْ بَعَتَ فِي الْأَمِيِّينَ العرب والانسَى من لا يَكْتُتُ ولا يَعْرَأُ كَنْ أَرَسُولًا مِنْهُمْمُ بُو مُحمَّدُ صَلَّى اللَّهُ عليه وسَمَم تَتْلُوْاعَلَيْهِ مُرايِّتِهِ النَّرَانِ وَمُزَكِيْهِمْ يُمِنْ إِنْهِ سِ الشرَّبُ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتْبَ الْفَرَانِ وَالْحِلْمَةُ "س فيه س الاَحْكُم وَإِنَّ مُحَقِّقَةٌ مِن الثقيلة والسَّمُها مَحْدُوتَ اي والَّهُمْ كَانُوْامِنْقَبْلُ قنْل سَحيتُه لَفِي ضَلِّل مُّبِيِّنِ ۗ بَيْن وَّاخَرِيْنَ عَـطَفُ عَنِي الاُبِّيِّينِ أَي المؤخودين والانين مِنْهُمْ بغدلِهِ لَمَّا لَمْ يَلْحَقُواْبِهِمْ في الساغة والعطس وبُمُ التاسِعُونَ والاقتضارُ عليهم كافٍ في بيان فعُسل التسحنة المنعُوث فبُهمُ انتبيُّ صلى الله عليه وسلم غلى من غذائبه ستن تُعث اليُمهم واستواله من حمه الأسن والحلّ الي يؤم الفيمة لانّ كُلّ قون حَيْرٌ سَمَنُ بِبِيهِ وَهُوَ الْعَزِيْزُلْلَكِيْمُ؟ فِي مُلْكَهُ وَخُلِيعَهُ ذَٰلِكَفَضْلُاللَّهِ يُؤْتِينِهِ مَنْ يَشَاءُ ۗ السَبَى وس دُكر سعه وَاللَّهُ <u>ذُوالْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۞ مَتَلُ الَّذِينَ حُمِّلُوا التَّوْرِيةَ كَيْمُوا العمل بِهِ تُمَّرِلُمْ يَحْمِلُوْهَا لِم بغمنُوا بما فيه من بغتِه</u> صلى الله عبيه وسلم علم يُؤمنُوا . كَمَثَلِ الْجِمَارِيَحُولُ أَسْفَالًا أَى كُتُ عِي عَدْم الْتِفاعِه سها بِشُرَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِينَكَذَّ بُوَا بِالْتِ اللَّهِ المُصَدِّقة لِمُسَى صمى اللَّه حمد وسمه مُحمّد والمَحُصُوصُ بالدّمَ ؞ڂ؞ؙۅڡٞ تَنْقُديرُهُ بدا الْمِسُ وَاللَّهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظَّلِمِينَ ۗ الكورِي قُلْ يَأَيُّهَا الَّذِيْنَ هَادُوۤ الْنَوْمَ الظَّلِمِينَ ۗ الكورِي قُلْ يَأَيُّهُ اللَّهِ الْمَالُوَ الْمَالُونِينَ هَادُوَ الْمَالُونِينَ هَادُوْ الْمَالُونِينَ هَادُوْ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ الللَّهُ الللللَّهُ اللّهُ اللَّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ الللّهُ الللّهُو مِنْ كُونِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُ الْمَوْتِ إِنْ كُنْتُمُ طِدِقِيْنَ ﴿ تَعَلَقَ بَتَمَنَّيْهِ الشَّرَطُانِ عَلَى انَّ الأوّل قيدٌ في الثَّانِي اي انْ صَدَقُتُم في زَعْمَكُم انْكُمُ اوْلَيَاءُ الله والولِيُّ يُؤِبُرُ الأَخِرَةَ ومَبْدَوُّبَا المَوتُ فتمنَّوه وَلَايِتَمَنَّوْنَكَ اَبُمَاقَكُمَتْ الدِّيْهِمْ مِنْ كُفُرِمِهِ بِالسَّى المُسْتِنُومُ لِكَدِّمِهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالطَّلِمِينَ ۗ الكورِي قُلُ إِنَّ الْمُوْتَ الَّذِي تَفِرُّونَ مِنْهُ فَإِلَّهُ عُ والعاءُ رَائِدةً مُلْقِيَّكُمْ تُكُرِّدُونَ إِلَى عَلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ السِرَ والعلابية فَيُنَيِّنُكُمْ بِهِ الْمُعَلِّمِ الْمُعَلِمِ الْعَلْمِ الْعَلْمِ الْعَلْمِ الْمُعَلِمِ الْعَلْمِ الْمُعَلِمِ الْعَلْمِ الْمُعَلِمِ الْعَلْمِ الْمُعَلِمِ الْعَلْمِ الْمُعَلِمِ الْعَلْمِ الْمُعَلِمِ الْمُعَلِمِ الْمُعَلِمِ الْعَلْمِ الْمُعَلِمِ الْمُعَلِمُ اللَّهِ الْمُعَلِمِ الْمُعَلِمُ الْمُعَلِمِ الْمُعِلِمِ الْمُعَلِمِ الْمُعَلِمِ الْمُعَلِمِ الْمُعَلِمِ الْمُعَلِمِ الْمُعَلِمِ الْمُعَلِمِ الْمُعَلِمِ الْمُعَلِمِ الْمُعِلَمِ الْمُعَلِمِ الْمُعَلِمِ الْمُعَلِمِ الْمُعِلَمِ الْمُعَلِمِ الْمُعَلِمِ الْمُعِلَمِ الْمُعِلَمِ الْمُعَلِمِ الْمُعِلْمِ الْمُعِلْمِ الْمُعِلَمِ الْمُعِلْمِ الْمُعِلْمِ الْمُعِلْمِ الْمُعِلْمِ الْمُعِلَمِ الْمُعِلَمِ الْمُعِلْمِ الْمُعِلَمِ الْمُعِلَمِ الْمُعِلَمِ الْمُعِلَمِ الْمُعِلَمِ الْمُعِلَمِ الْمُعِلَمِ اللْمُعِلَمِ الْمُعِلَمِ الْمُعِلَمِ الْمُعِلَمِ الْمُعِلَمِ الْمُعِلَمُ الْمُعِلَمِ الْمُعِلَمُ الْمُعِلَمِ الْمُعِلِمِ الْمُعِلَمِ الْمُعِلِمِ الْمُعِلِمِ الْمُعِلِمِ الْمُعِلِمِ الْمُعِلِمِ الْمُعِلِمِ الْمُعِلِمِ الْمُعِلِمِ الْمُعِلِمِ الْمُعِلَمِ الْمُعِلِمِ الْمُعِلِم

میں ہیں وہ اللہ کی پاکی بیان کرتی ہیں ،لام زائد و ہے من کے بج کے ما ذکر کرنے میں اکثر کونلہ دینا ہے جو بادشاہ ہے ، ان چیزوں سے پاک ہے جواس کی شایان شان نہیں ، و دانے ملک میں نالب اورا پنی صنعت میں ہائست ہے وہی ہے جس نے ناخواندہ و گول میں (لیمن) عرب میں ان ہی میں سے ایک رسول مبعوث فر مایا کمنی وہ صحف ہے جو پڑھنا مکھنانہ پ نتا ہو، اور وہ محمد خلائلتا؛ ہیں، جوانبیں اس قرآن کی آیتیں پڑھ پڑھ کرے تا ہے اور ان کو شرک ہے یا کہ کرتا ہے ، اور ان کو تهاب قرآن اور حکمت (لیمنی) جس میں ایکام بین ان مخففه عن التقیله ہے اور اس کا اسم محذوف ہے ای اللہ مر سلحا تا ہے ایقینا یہ اس کی آمد (بعثت) ہے اس حلی سرای میں تھے اور بعدوالوں میں (مبعوث فرمایا)اور آحسویسن کا عطف اَلْاَهِ بِينِيسِ بِهِ بِيعِنَى ان اميوں ميں ہے موجودين ميں اور (آئندو)ان کے بعد آئے والے اميوں ميں انيكن سبقت اورلفنل میں ان کے برابرنیس مہنچے ،اور وو (نہ پہنچنے والے) تا بعین میں ،اور تا بعین ہر ، تا بعین کے بعد تا قیامت آ نے والے جن واس جو کہ آپ میلائٹیل پر انیمان اوے ، سی به رسولیل تعالی کی فضیلت ثابت کرئے کے شئے تا بعین پر ا ثبات فضيت پراقتصاركر ، كافي ب، و دصحابه رصلي عالفي بين كه جن مين سپ ملينتي مبعوث فرهائ سنّه ،اس ك كه م زمانها سپنے مابعد متصل زمانہ ہے بہتر ہوتا ہے ،ا ہپنے ملک وصنعت میں وہی مالب یا خلمت ہے بیرخدا کافضل ہے وہ جس کو ج ہتا ہے دیتا ہے یعنی نبی کواوران کوجن کا نبی کے ساتھ ذکر کیا گیا ، اورالقد بڑے نفل والا ہے جن لوً ول کوتو رات پر ممل کرے کا حکم دیا گیا یعنی جن او گول کوتو رات پڑلمل کرے کا ملکف بنایا کیا گھر انہوں نے اس پڑلمل نہیں کیاان صفات پر جو آپ ملائند کی (صفات) اس (تورات) میں تھیں جس کی وجہ ہے ووآپ ملائند پرایمان نبیس مائے ،ان کی مثال فائدہ عاصل ندکر نے میں اس گدھے کی ہے جو بہت ہی کہ بین لاوے ہوئے ہے ،غرضیکدان ہو گوں کا براحال ہے جنہوں نے خدا کی ان آینوں کو جبٹلا یا جو محمد یکھنٹیٹیز کی نبوت کی تضدیق کرنے والی میں ،اور مخصوص بالذم محذوف ہے ،اوراس کی تقدیر بذائش ہے، اوراند فالم لیعنی کافر کو ہدایت نہیں دیتا ،آپ کہدو ہجنے کہا ہے یہود بو! اگر تمہارا بیدو توی ہے کہتم بلاشر کت غیرے، لقد کے مقبول (محبوب) ہوتو تم موت کی تمنا کرو (تسم توا) سے دوشرطیں متعلق ہیں اس طریقہ پر کہاول ٹائی میں قید ہے، یعنی اگرتم اپنے گمان میں اس بات میں سیجے ہو کہتم اللہ کے مجبوب ہواور محبوب آخرت کوتر ہی دیتا ہے اور اس کا مبدا ،موت ہے لہٰذاتم اس کی تمنا کرو، وہ بھی اس موت کی تمنانہیں کریں گے، بوجدان اعمال کفرید کے جن کووہ اختیار کر یکے ہیں ، لینی بوجہ آپ بیٹی تاہیں کے انکار کے جوان کی تکمندیب کومستلزم ہے القد تعالیٰ ان ظالموں کا فروں کو خوب جانتا ہے آپ کہدو بیجئے کہتم جس موت سے بھا گئے ہووہ تم کوآ بکڑے گی فیانَّهٔ میں فاءزا کدہ ہے، پھرتم پوشیدہ اور ظاہر کے جاننے والے کے بیاس لے جائے جاؤگے بھرودتم کوتمہارے سب کئے ہوئے کام بتادے گااورتم کواس کی جزاءدے گا۔ ﴿ (مَرْزُم بِبَاتَ لِإِ] ≥ -

عَيِقِيق اللَّهِ اللَّلَّمِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ اللللللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّلَّمِ اللللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ اللللللَّمِ الللَّهِ الللللَّمِلْمِ

فِيُوَلِنَى: اَلْفُدُّوْسُ مِبِعَهُ كَاصِيغِهِ ہِمِيتِ بِإِك، بِرِكت والا، بروزن فُعُولٌ بضم فَاء عربی میں اس وزن برصرف چِ رالفاظ آئے ہیں، فَسُدُّوْسٌ، سُبُوحٌ ، فُرُّوحٌ ، فُرُوحٌ ، فُرُوحٌ ، ان كوبھی بفتح الفاء پڑھناجا ئزہے باقی اس دزن پر جینے بھی الفاظ آئے ہیں سی فتی فی ء کے ساتھ آئے ہیں۔

فِيُولِكُمْ : فِي الْأُمِّيِّينَ اى إلى أُمِّيينَ وَآخَرِيْنَ، اى إلى آخَرِيْنَ في جَمَعَى اللي بـ-

فِيْكُولِكُ : يَتْلُوا عَلَيْهِمْ يه رَسوْلًا كَصفت بِياس عال ب-

فِيْخُولْتُمْ ؛ منع فَفَة من التقيلة وَإِنْ كَانُوا مِن إِنْ مُنْفَهُ عَن النَّقيلة بِاصل مِن إِنَّهُمْ تَق اوردليل اس كى العدميل لام كا واقع ہون ہے، اى لَفِي صَلالِ مُعِين اس مُم كالام مُنْفَهُ عن النَّقيلة كے ساتھ مخصوص ہے۔

فَيْخُولْكَمَى ؛ عَطَفَ عَلَى الْأُمِّينِيْنَ لَيْنَ آخرين كَاعراب شن دووجه بين اول بيكه أَخَوِيْنَ ، أُمِّينِيْنَ پرعطف بونے كى وجه سے مجرور ہو، اى بَعَثَةُ في الْأُمِّينِيْنَ وفي الآخوِيْنَ مِنَ الْأَمِّينِيْنَ اور۔

چَوَلْکَ، لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ يَ آخَوِيْنَ كَصَفَتَ ہِ، دوسرى َ وَجَدِيهِ كَدِهِ آخَوِيْنَ، يُعَلِّمُهُمْ كَضَمِر پرعطف بونے كى وجه سے منصوب ہو، اى يُعَلِّمُ الآ خَوِيْنَ لَمْ يَلَحَقُوْا بِهِمْ.

قِيُّولِكَى ؛ الْمَوْجُوْدِيْنَ مِنْهُمْرَي ٱلْأُمِّيِيْنَ معطوفَ عليه كَاتَفير بِاورمراد أُمِّيِيْنَ ہے وہ عرب بیں جوآپ نِلِظَالِمَا كَانَ مانہ معرب مستق

قِيُوْلَى ؛ كَمْرِيَكْحَقُوْ البِهِمْ فِي السَّابِقَةِ ، لَمّا كَانْسِر كَمْرَكَ اشَاره كرديا كه يعدم سابقية تا قيامت ب، يمطلب نهيل كراب تك سابقية من مسادى نهيس بوئ مرائده اميد ب، جيسا كه كسما ئه مفهوم بوتا بال لئے كه كسمًا كامفهوم ب تا بنوز ، اور كمْر كذر يعينى عام بوتى بخواه متوقع الحصول بويانه بو بخلاف كسمًا كداس كا استعال السنفي ميں بوتا ب جو متوقع الحصول بويانه بو بخلاف كسمًا كداس كا استعال السنفي ميں بوتا ب جو متوقع الحصول بويانه بو بخلاف كسمًا كداس كا استعال السنفي ميں بوتا ب جو متوقع الحصول بويانه بوي الله بيانه بويانه بويانه بويانه بيانه بويانه بيانه بيانه بيانه بويانه بيانه بي

قِوُلْنَى ؛ وَالإِفْتِصَادِ عَلَيْهِمْ لِينَ آخِوِيْنَ كَنْفَيرِ مِينَ الْعِينَ بِاقْضَادَكُمَّا كَافَى ہے، دراصل ميفسر علام كى جانب سے ديگر مفسرين كى تفيير سے عدول كرنے كا اعتذار ہے، يعنی ديگر مفسرين حضرات نے صحابہ دَوَوَلَقَافَعَا اللهُ كَى فَضَياتِ تا قيامت آن والے مسلم نوں پربيان فرمائی ہے، اور مفسر علام محلّی دَئِعَمُ كُلالله الله كا كى عبارت سے صرف تا بعین پرفضیات معوم ہوتی ہے، حق ديگر مفسرين كے ماتھ ہے، اعتذار كا حاصل يہ ہے كہ جب تا بعین پرصحابہ رَصَوَاللهُ تَعَالَیٰ كَى فضیات تا بت ہوگی تو تا بعین کے بعد والے حضرات پرتو بطريق اولی فضیات ثابت ہوگی، اور دلیل اس كی بہتے كہ برقرن اپنے مابعد مصل قرن سے بہتر ہوتا ہے۔ وَقَوَلَلْنَ : مِمّن بُعِثَ إِلَيْهِمْ، مَنْ عَدَاهُمْ كابيان ہے۔

فِوَلَكُ : مِنْ جَمِيْعِ يه يان كابيان إ-

___ هِ (زَمَزَمُ بِبَالشَرِزَ)»

فِيُولِكُمْ : لأَنْ تُحُلُّ فَرْد مِنْ مُصْرَكِتُولَ كَافِ كَى عَلَيْ جِـ

فِيُولِلْنَى : النَّسِي وَمَنْ ذُكِرَ مَعَهُ مِهِ مِنْ يَشَاء كَاتَسْير جاور مَنْ ذُكِرَ عراد اميون اور آحرون سير

فِيَوْلِلْ : سرطان، اى إِنْ زَعَمْ تُمْ اور إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِيْنَ.

فِحُولِكُم ؛ الأول قيد في الثاني.

اعتراض: یعن اول تانی کی شرط ہاں کا مقتضی ہے کہ اصل شرط تانی ہے اور اول اس کی قید ہے، اور بیہ شہور قاعدہ کے خلاف ہے، اور قاعدہ مشہورہ بیہ کہ جب ایک جزاء دوشرطوں سے متعلق ہوتو در حقیقت اول ہی شرط ہوتی ہے اور ثانی اول کی شرط ہوتی ہے اور ثانی اول کی شرط ہوتی ہے گویا کہ شرط اول اور شرط تانی مل کرمعنی میں اِن صَدَفَعُنَمْ فِی زَعْمِکُمْ کے ہیں۔ جب کے شاعدہ مشہورہ اس وقت ہے جب کہ جزاء دونوں شرطوں کے بعد یا پہلے واقع ہو، یہاں جزاء دونوں شرطوں کے بعد یا پہلے واقع ہو، یہاں جزاء دونوں شرطوں کے درمیان واقع ہے، لہذا یہ قاعدہ مشہورہ کے خلاف نہیں ہے۔

ؾٙڣێؠؙڔۅٙؾؿ*ٛڽ*ڿ

نام:

الجمعة آيت نمبر اكترب، إذا نُودِي لِلصَّالُوةِ مِنْ يَّوْم الْجُمُعَةِ عا وَوَ بـ

ز مانهٔ نزول:

پہلے رکوع کا زہن نزول کے ہے، اور غالبًا یہ رکوع فتح خیبر کے موقع پریااس کے قریبی زمانہ میں نازل ہوا ہے،
بخاری مسلم، ترفدی، نسائی ، اور ابن جربر نے حضرت ابو ہر برہ کی بیروایت نقل کی ہے کہ ہم حضور بلا پھٹھ کی خدمت میں
بیٹھے ہوئے تھے جب بیآ بیت نازل ہو نمیں ، اور حضرت ابو ہر برہ وَ وَعَمَالَةُ اللّهِ کَا مَتَعَلَق بیہ بات تاریخ سے ثابت ہے کہ وہ
صلح حدیبیہ اور کے بعد اور فتح خیبر سے پہلے ایمان لائے تھے، اور خیبر کی فتح ابن ہشام کے بقول محرتم میں اور ابن سعد کے
بقول جمادی الاولیٰ ہے میں ہوئی ہے۔

دوسرارکوع بجرت کے بعد قربی زماند میں نازل ہوا ہے، کیونکہ حضور بیٹی تھٹانے مدینہ طیبہ وینچنے ہی یا نچویں روز جمعہ قائم کر
دیا، اوراس رکوع کی آخری آیت میں جس واقعہ کی طرف اشارہ کیا گیا ہے وہ صاف بتار ہا ہے کہ وہ اقامت جمعہ کا سسید شروع
ہونے کے بعد لاز ناکسی ایسے زمانہ میں پیش آیا ہوگا جب لوگوں کو دینی اجتماعات کے آواب کی پوری تربیت ابھی نہیں می تھی۔

مونے کے بعد لاز ناکسی ایسے زمانہ میں پیش آیا ہوگا جب لوگوں کو دینی اجتماعات کے آواب کی پوری تربیت ابھی نہیں می تھی۔

میری کے بعد لاز ناکسی کے دورو کی تعدید کی تعدید کی خواب کی بیار کی تعدید کی میں کی جمہ میں میں نواز میں میں کا میں کا میں کا میں کی دوروں کی تعدید کی تعدید کی تعدید کی تعدید کی میں کی جمہ کے دوروں کو میں کی میں کی دوروں کی تعدید کیا کے تعدید کی تعدید کے تعدید کی تعدید کی تعدید کی تعدید کی تعدید کی تعدید کی تعدید کی

يُسَبِّحُ لِلْهِ مَا فِي السَّمُوَاتِ وَمَا فِي الْآرْضِ بِي ﷺ بَي ﷺ مِدكَى نَماز شِن سورةَ جمعه اورسورةَ مِن فقون برُها كرتے تھے، (مسلم شریف کتاب الجمعہ) قرآن کریم کی جوسور تیں سَبَّحَ، یُسَبِّحُ ہے شروع ہوئی ہیں ان کومُسَحَات کہ ج تاہے، ان تمام سورتول میں زمین وآ سان اور جو پچھان میں ہیں سب کے لئے اللہ کی سبیح خوانی ثابت کی گئی ہے، اگر اس سبیح ہے مراوشبیج حالی ہے یعنی بزبان حال تو ہر مخص سمجھ سکتا ہے کہ القد تعالی کی مخلوق کا ذرہ ذرہ اپنے صافع تحکیم کی تنمت وقد رت پر گواہی دیتا ہے ، یہی اس کی تبیج ہے اور سی بات میرے کہ ہر چیز اپنے اپنے شعوراہ رطر زےمطابق حقیقی تنبیج کرتی ہے ،اس لئے کہ شعور وادراک اللہ تع لی نے برشجر وحجر بلکہ برشی میں رکھا ہے،اس مقل وشعور کالا زمی بتیجہ اور ۔ زمی تقاضہ سبیج ہے،مگر ان چیز وں کی سبیج کولوگ سنتے تبين إن الى لئة قرآن كريم من فرمايا وَلَكِنْ لَا تَفْقَهُوْنَ تَسْبِيحُهُمْ

اس تنہبید کو آگے کے مضمون سے بڑی گہری مناسبت ہے، عرب کے یہودی رسول ابتد بلقی ہیں کی ذات وصفات اور کارنا مول میں رسالت کی صرح کش نیاں بچشم سر د کھے لینے کے باوجود اور اس کے باوجود کہ تو رات میں حضرت موک علاقة لا الثاقات نے آپ کے آنے کی صرح کے بشارت دی تھی جو آپ میلی تھیں کے سواسی اور پر صادق نہیں آتی تھی ،صرف اس بناء بر آپ بلی تھیں کا ا نکار کرتے تھے کداپنی قوم وسل ہے ہاہر کے کسی تخص کی رسالت مان لین سخت نا بینند کرتے تھے، آگے کی آیتوں میں ان کے اس رویے پرانبیں ملامت کی جارہی ہے،اس لئے کلام کا آغ زاس تمہیدی فقرے ہے کیا گیا ہے اس میں پہلی بات بیفر مائی گئی ہے کہ کا نات کی ہر چیز اللہ کی تبیج کرر ہی ہے بینی یہ پوری کا نات اس بات پرش ہد ہے کہ اللہ ان تمام فائص اور کمز ور بول ہے پاک ہے جن کی بناء پر یہود بول نے اپنی سلی برتری کا تصور قائم کر رکھا ہے ، ووکسی کا رشتہ دارنبیں ، نہ جا نب داری کا اس کے بیباں کوئی کام ، اپنی ساری مخلوق کے ساتھ اس کا معاملہ یکساں عدل ورحمت اور ربو بیت کا ہے ، کوئی خاص نسل یا قوم اس کی چہیتی نہیں ہے کہ وہ خواہ پچھ بھی کرتی رہے ہرحال میں اس کی نوازشیں اس کے لئے مخصوص رہیں اورکسی دوسری نسل یا قوم ہے اس کوعداوت نہیں ہے کہ وہ اپنے اندرخو بیاں بھی رکھتی ہوتو بھی وہ اس کی عزیتوں ہے محروم رہے، پھر فر مایا گیا کہ وہ بادشاہ ہے لیعنی دنیا کی کوئی ج قت اس کے اختیارات کومحدود کرنے والی نبیل ہے تم بندے اور رعیت ہو، تمہارا بیہ منصب کب سے ہو گیا کہ تم یہ طے کرو کہ وہ تمہاری ہدایت کے لئے اپنا پیغمبر کے بنائے؟ اور کے نہ بنائے اس کے بعد ارش دہوا کہ وہ قند وس ہے بینی وہ اس ہے بدر جہا منز ّہ اور یاک ہے کہاس کے فیصلہ میں کسی خطااور ملطی کا امکان ہو، آخر میں ابتد کی دومز پیر صفتیں بیان فر مائی گئی ہیں ایک بیہ کہ وہ ز بر دست ہے،اس ہے لڑکر کوئی جیت نہیں سکتا ، دوسری میہ کہ وہ تھیم ہے بیعنی جو پچھوہ کرتا ہے وہ عین تحکمت کے مطابق ہوتا ہے، اوراس کی تدبیریں ایسی محکم ہوتی ہیں کہ دنیا میں کوئی ان کوتو رہیں سکتا۔

هُ وَ اللَّذِي بَعَثَ فِي الْأُمِّينِينَ المنح أُمِّينِين، أُمِّي كَجْمَع ب، ناخواند وتَحْفُس كوكباج تاب، عرب كوسَّال لقب ي معردف ہیں، کیونکہان میں نوشت وخوا ند کارواج نہیں تھا، بہت کم لوگ پڑھے مکھے ہوتے تھے،اور یہ کہ جورسول بھیجا گیا ہے وہ بھی انہیں میں سے ہے بعبیٰ اتنی ہے،اس لئے بیہ معاملہ بڑا جیرت انگیز ہے کہ قومس ری امی اور جورسول بھیجا گیا وہ بھی اُتی اور جو فرائض اس رسول کے سپر دیئے گئے ہیں جن کا ذکر اگلی آیت میں آر باہے، وہ سب علمی تعلیمی اور اصلاحی ایسے ہیں کہ نہ کوئی امی ان کوسکھا سکتا ہے اور نہامی قوم ان کوسکھنے کے قبل ہے۔

بيصرف حق تعالى شانه كى قدرت كامدے رسول الله يتقافين كا اعجاز بى بوسكتا ہے كه آپ يتفافين نے جب تعليم و

اصلاح کا کام کیا تو انہی امین میں وہ علما ءاور حکما ء ببیرا ہو گئے کہ جن کے علم وحکمت ،عقل ودانش اور ہر کام کی عمد وصلاحیت ٹ سارٹ جہان ہے اینالو ہامنوالیا۔

بعثت نبوی کے نتین مقاصد:

مقا صدصفت نعمت الهبيه كے سمن ميں بيان سئے گئے جيں ،ايك تلاوت قر آن ، يعنی قر آن پڑھ كرامت كوسنانا ،اور دوسرے ان كو ظاہر و باطن غرضیکہ برقسم کی نجاست ہے یا ک کرنا ،جس میں بدن ،لباس وغیر ہ کی ظاہری گندگی بھی شامل ہے اور عقا ندواعمال اور اخلاق وعاوات کی یا ئیزگ بھی، تیسرے کتاب و حکست کی تعلیم ہے، یہ تینول چیزیں حق تعالیٰ کے انعامات بھی ہیں اور آپ بلا اللہ کی بعثت کے مقاصد بھی۔

وَ آخَـرِيْسَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوا بِهِمْ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمِ آخرين كَلْفَظَيْمُعَيْ، وومركوك، لَمَّا يَلْحَقُوا بِهِمْ کے معنی ، جوابھی تک ان لوگوں یعنی امیین کے ساتھ تہیں ملے ، مرادان ہے وہ تمام مسلمان ہیں جو قیامت تک اسلام میں داخل

اس میں اشارہ ہے کہ قیامت تک آنے والے مسلمان سب کے سب موتین اولین بعن صحابۂ کرام رضِّ فالنظافی ہی کے س تھ مجھے جو تھیں گے ، یہ بعد کے مسلمانوں کے لئے بڑی بشارت ہے۔ (روح، معارف)

لفظ آخس بن کےعطف میں دوتول ہیں ،بعض حضرات نے اس کاامپین برعطف قرار دیا ہے جس کا حاصل بیہوتا ہے کہ بھیج امتد نے اپنا رسوں ﷺ امہین میں اور ان لوگوں میں جوابھی ان ہے نہیں ملے ، اس پریہ شبہ ہوسکتا ہے کہ اُمہین لیعنی موجودین میں رسول بیلی علیہ کا بھیجنا تو طاہر ہے گر جولوگ ابھی آئے ہی تبیس ان میں رسول بیلی عقیمہ کا کیا مطلب جوگا؟ اس كاجواب بيان القرآن مين بيديا كيا بكران مين بينج سے مرادان كے لئے بھيجنا ب، كيونكدلفظ "فيسى"عربي زبان میں "كيليك" كمعنى ميں بھى آتا ہے۔

اور بعض مضرات نے فرمایا کہ آخرین کاعطف یُسعَیا مُنهُ مَر کی ضمیر منصوب پر ہے، جس کا بیمطلب ہوا کہ پمخضرت پہن کھیا۔ عليم دية بي امين كواوران لوگول كوچى جواجهي ان كے ساتھ قبيل طے۔ (احتارهٔ مي المظهري، معارف) اس کی مزید تفعیل ہمہیل و حقیق کے زیرعنوان گذر چکی ہے ملاحظہ کر لی جائے۔

مجیح مسم و بخاری میں حضرت ابو ہر میرہ دیؤیکڈٹڈ تغالیجہ کی روایت ہے کہ ہم رسول اللہ بیٹیٹٹٹا کے پاس جیٹھے ہوئے تھے کہ سور ہُ مدآب القائلة برنازل بولى ، اورآب القائلة في مين سنالى جب آب القائلة في آيت "و آخرين مِنْهُمْ" (الآية) برهى وجم نے مرض کیا، یارسول القد! بیکون لوگ میں؟ جن کا ذکر آخرین کے لفظ سے کیا گیا ہے، آپ یکٹنٹٹٹٹ نے اس وقت سکوت فرمایا ،مکرر کمررسوال کیا گیا تو رسول القد بیلفتانگذانی اپناوست مبارک حضرت سلمان فاری دَفِحَانْهُانَهُ عَلَافِیْ بیرر کھودیا (جواس وقت مجس میں موجود

ح[نفَزَم پتلشن]≥٠

تھے)اور فرہ یا:اگرایم ان ٹریا ستارے کی بیندی پر بھی ہوگا تو ان کی قوم کے بچھ لوگ و ہاں ہے بھی ایمان کو لے آئیس گے۔

مَتلُ الَّدِيْنِ حُمَّلُوا النُّوْرَاة (الآية) اسْفَار، سفْرٌ كَ جَنَّ ٢٠٠٠ وَكَتَّ بِين، كَنَّ بِكُو سفر كَنْح ك وجديدي كدكتاب جب براهي جانى بياق كويا قارى اس كمعانى يس فركرتا باس ف سب و سعو كت ين- (التع الفدين اس آیت میں بے حمل بیہود یوں کی مثال بیان کی کئی ہےاور حمل نہ کرنے کا مصب بیہ ہے کہ تو رات میں صاف صاف آپ مَنْ عَلَيْهِ كَ آمد كَى بِشارت وَى كُنْ تَقِي آبِ بِنُونِيَةِ فِي الْهِي علامات بيان كَ تَنْ تَعْيِس كه جوصرف آبِ بيلونتيج بي پر چسپال ہوتی تھیں جس کا تفاضہ تھا کہ بیلوگ سب سے بہتے آ ہے مین پہلے برائیمان لائے مگر حسداہ رفتمنی کی وجہ سے بیلوگ ایمان نہیں مائے ، یہود کی اس ہے ملی کی مثال دی گئی ہے کہ جس طرح گدھے ومعلوم تہیں : و تا کہا س کی سمر پر جو کتا ہیں رکھی ہوئی ہیں ان میں کیا کھا ہوا ہے؟اس کوتو ہے بھی معلوم نہیں ہوتا کہاں پر کتا ہیں مدی ہوئی ہیں یا کوڑا کرکٹ؟

التدتغالي نے يہودکوتوارت کا حامل بنايا تھا تكريہود نے اس كى ذ مددارى نە جھى اور ندادا كى ،ان كى مثال اس گدھے كى سى ب جس کی چیٹھ پر کتا بیں لدی ہوں اور اسے چھ علوم نہ ہو کہ وہ کس چیز کا ہارا تھا ہے ہوئے ہے، بلکہ بیبود کی حالت گدھے ہے بھی ہدتر ہے اس لئے کہ وہ تو سمجھ ہو جھنہیں رکھتا مکر یہود سمجھ ہو جھ رکھتے ہیں اور پھر بھی کتاب ابتد کے حامل ہونے کی ذمہ داری ہے سرفرازی افتتیار نہیں کرتے ، بلکہ دانستہ ایند کی آیات کو حجٹلاتے ہیں ،اس کے باد جود ان کا زغم پیاہے کہ وہ ایند کے جہیتے ہیں اور رس الت کی نعمت ہمیشہ کینئے ان کے نام لکھ دی تنی ہے ًو یا یہود کی رائے ہے ہے کہ خوادہ دانند کے پیغے م کاحق ادا سریں یا نہ کریں ، مہر حال القداس كا يابند ہے كەددائىية بىغ م كاحال ان ئے سوالس كوند. نائے۔

یہودا پنے کفروشرک اور ساری بداخلا قیوں کے باوجودیہ دعوی بھی رکتے تھے، نسخس ایس نباءُ اللّه وَاحِبَّانُه لَعِني ہم تو اللَّه كى اورا داوراس كے محبوب ہيں ،اورا پيئے سوانسى كو جنت كالشخص تنبيس تمجيحتے ، بلكہ يوں كہا كرتے ہتھے، كَ ن يَذْ خُولَ الْجَالَةُ إِلَّا مَنْ كَانَ هُوْدًا أَوْ نَصَارِي كُوياوه آخرت كَ عذاب يخودكو بالكلم محفوظ اور ، مون بمجينة بنجياور جنت كي نعمتول كو این حاکیر جھتے تھے۔

جب يهوداييز آپ كوخدا كامحبوب اور جبين تجهيز بين ،اَ رآخرت في تمام نمتون كواپني جا كير بجهيز بين ،اوربيجي ان كاايمان ہے کہ آخرت کی تعتیں دنیا کی تعمقوں ہے ہزار ہا درجہ اعلی اور بہتر ہیں ،تو اس کا مقتضا یہ ہے کہ ان کے دل میں موت کی تمنا پیدا ہو، تا کہ دنیا کی مکدراورر بج وقم ہے بھری ہوئی زندگی ہے نکل کرخالص آ رام وراحت اور دائمی زندگی میں پہنچ جا نمیں۔

اس کئے آیت مذکورہ میں رسول القد بلائتیں کو ہدایت کی گئی کہ آپ بلائتیں یہود سے قر ، نمیں کہ جب تم خدا کے محبوب اور لا ۋىلے ہواور ئىمہیں پەخطرە بالكل نہیں كە آخرت میں ئىمہیں كوئى مذاب ہوسكتات ۋېچرتم ۋراموت كى تمنا كرو_

وَ لَا يُتَسَمِّنَّهُ أَبِدًا مِهَا فَكُفْتُ ايْدِيْهِمْ قُرآن نَهِ خُودِ بِي ان كاجوابِ دِيدِيا، يَعِيْ بِيلوَّب هِرَّرْموت كَي تمنانَهِيلَ مَري گے ، اس بے کہان کا موت سے فرار ہے سبب نہیں ہے ، ووز بان ہے خوا و کیسے لیمے چوڑ ہے دعوے کریں ،مگران کے ضمیر خوب

ج نتے ہیں کہ خدااوراس کے دین کے ساتھ ان کا معاملہ کیا ہے اور آخرت میں ان حرکتوں کے کیا نتائج نکلنے کی تو قع کی جاستی ہے جووہ دنیا میں کررہے ہیں ،اس کئے ان کانفس خدا کا سامنا کرنے ہے جی چرا تاہے، یہی وجہ ہے کہ وہ کسی راہ میں بھی جان دینے کے لئے تیارنہ تھے، نہ خدا کی راہ میں اور نہ قوم کی راہ میں اور نہ خودا پنی جان ومال وعزت کی راہ میں ، انہیں صرف زندگی در کا رکھی خواہ کیسی ہی زندگی ہو،ای چیز نے ان کو ہز ول بنادیا تھا۔

قُلْ إِنَّ الْمَوْتَ اللَّذِي تَفِرُّونَ مِنْهُ فَإِنَّهُ مُلَاقِيَكُمْ يَهِود خدا كَيْ مَجو بيت اور جنت كي تُفيكو داري يروعو ي کے ہو جود ، موت سے بھا گتے ہیں ، آپ ﷺ ان سے فر ماد یجئے کہ جس موت سے تم بھا گتے ہووہ آکرر ہے گی ، اب حبين تو استنده -

يَّأَيُّهُا الَّذِيْنَ امَنُوَّا إِذَا نُوْدِى لِلصَّلْوَةِمِنْ مِنْ مِنْ يَوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا فَاسْضُوا الْكَذِّلُواللَّهِ وَذَرُوا الْبَيْعُ أَى اتَرُكُوا عَقْدَهُ ذَلِكُمْزَحْيُرُلِكُمُّرِانَ كُنْتُمُرِّعَلَمُونَ ۚ أنه خَيْرٌ فَافَعَلُوه فَإِذَا قُضِيَتِ الصَّلُوةُ فَانْتَشِرُوْا فِي أَلَارْضِ أَسْرُ اِبَاحَةٍ وَالْبَتَغُوَّا أَي اطُنبُوا الرِّزْقَ مِ**نْ فَضْلِ اللهِ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ** ذِكْرًا كَ**تِنْيَرًا لَعَلَكُمْرَتُفُلِحُونَ** تَفُوزُونَ كَانَ النَّبِيُّ صَلى الله عليه وسلَّمَ يَخُطُبُ يَومَ الْجُمُعَةِ فَقَدِمَتْ عِيْرٌ وضُربَ لِقُدُوسِهَا الطِّبُلُ عَلَى العَادَةِ فَخَرَجَ لها النَّاسُ مِنَ المَسْجِدِ غَيرَ اثْنَىٰ عَشَرَ رَجُلا فَنَزَلَ وَلِذَارَا وَالْمَارَا وَالْمَارَا وَالْمَارَا وَالْمَعْ وَاللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ وَلَا اللَّالُّولُولُولُولُولُكُولُولُولُولُكُمُ وَاللَّهُ وَالَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ واللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ واللَّهُ واللَّهُ واللَّالِ اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ واللَّهُ اللَّهُ واللَّهُ واللَّهُ واللَّهُ واللَّهُ واللَّهُ واللَّهُ واللَّهُ واللَّهُ واللَّهُ اللَّهُ واللَّهُ واللَّهُ واللَّهُ اللّهُ واللَّهُ اللَّهُ الل في الخُطَبَةِ قَالِمًا ۚ قُلْمَاعِنْدَاللَّهِ مِنَ النَّوَابِ خَيْرٌ لِلَّذِينَ المَنْوَا مِنَ اللَّهُورَمِنَ البَّجَارَةِ وَاللَّهُ خَيْرُ الرِّي قِيْنَ ﴿ يَا لَذِينَ المَنُوا مِنَ اللَّهُورَمِنَ البَّجَارَةِ وَاللَّهُ خَيْرُ الرِّي قِيْنَ ﴿ يَا يُقَالُ كُلُّ إِنْسَانِ يَرْزُقُ عَائِلَتَهُ اي مِنْ رِّرُقِ اللَّهِ تَعَالَى.

میں ہے۔ میر جی بی اے ایمان والو جب جمعہ کے روز جمعہ (کی نماز) کے لئے اذان کہی جائے تو تم اللہ کی یاد (نماز) ک طرف (فوراً) چل پڑا کرو، مین جمعنی فسی ہے اورخرید وفروخت ترک کردیا کرویۃ بہارے لئے بہتر ہےا گرتم کچھ بچھتے ہو کہ بیہ بہتر ہے، پھرتم اس پڑمل کرو، پھر جب نماز ہو چکے تو تم زمین میں پھیل جاؤامراباحت کے لئے ہے، اورخدا کا فضل (روزی) طلب کرواورانتدکو بکثرت یا دکرتے رہا کروتا کہتم کامیاب ہو آپ ﷺ جمعہ کے روز خطبہ وے رہے ہتھے کہ ایک قافلہ آیا ،اور دستور کے مطابق اس کی آمد پر ڈھول بجایا گیا تو لوگ اس کے لئے متجد سے نکل گئے ،سوائے بارہ آ دمیوں کے توبیآ یت نازل ہوئی ، وہ لوگ جب کسی تجارت کو دیکھیں یا کوئی تماشہ نظر آ جائے تو اس کی طرف دوڑ جاتے ہیں ، لیعنی تجارت کی طرف ،اس سے کہ وہ ان کامطلوب ہےنہ کہ تماشہ اور آپ کوخطبہ میں کھڑا جھوڑ جاتے ہیں آپ فرماد یجئے کہ جواللہ کے پاس تو اب ہے وہ ایمان وابول کے سئے تھیل اور تنجارت سے بہتر ہے،اور اللہ تعالیٰ بہترین روزی رساں ہے کہا جاتا ہے ہر تحص اپنے اہل وعیال کو روزی دینا ہے بعنی اللہ کے رزق میں سے روزی دیتا ہے۔

≤[زمَزُم بِبَلشَنِ]>-

جَعِيق تَرَكِيبُ لِيسَهُ يُلِ تَفْسِلُ لَفْسِلُ كُولِيل

قِيُّولِكُ : مِنْ بمعنى فِي يَال بات كَ طرف الثاره بكه مِنْ يَوْمِ الْجُمُعَةِ مِن بَعْن فِي به ، دوسرى وجديب كه مِنْ بيانيه واور إذا نُوْدِي كابيان مو-

قِیُوَلِیْ : یَوْمَ الْجُمُعَةِ، الْجِمعة میں دوقراء تیں ہیں، اول دونوں لینی جیم اور میم کے ضمدکے ساتھ ہے جہور کی قراءت ہے اور دوسری جُمْعَةِ کے میم کے سکون کے ساتھ ہے شاذ ہے۔ دوسری جُمْعَةِ کے میاتھ بھی ہے مگریہ بھی شاذ ہے۔ فی فی خُمِعَةِ کے ماتھ بھی ہے مگریہ بھی شاذ ہے۔ فی فی فی فی اسْعَوا کی تفسیر فامْطُوْ ا ہے کر کے اشارہ کردیا کہ یہاں سمی کے معروف معنی لیمنی دوڑنا مراد نہیں ہے اس کے کہنی ذکے کئے دوڑنا ممنوع ہے بلکہ مرادم توجہ ہونا اور یا بیادہ چانا ہے۔

قِیُّوَلِیْ ؛ اَنَّهٔ خَیْرٌ یه جمله محذوف مان کراشاره کردیا که تعلمُونَ کامفعول به محذوف ہاور فَافْعَلُو ہ ، محذوف مان کراشاره کردیا که اِنْ تُحَنْتُهُمْ شرط کی جزا ومحذوف ہے۔

فِيُولِكُ : لِأَيُّهَا مطلوبُهُمْ العبارة كاضافه كامقصد بهي ايك والمقدر كاجواب --

جِحُولُ بُنِيَ: جواب كاما حصل يہ ہے كہ يہاں خير كاصيفہ متعددى ميں استعال ہوا ہے، اس لئے كه كہاجا تا ہے كہ مُحلُّ إِنْسَانِ
يَـرِّ ذُقْ عَـاللَّنَـهُ، تومعلوم ہوا كہ ہرانسان اپنے اہل وعيال كاراز ق ہے اگر جہالتہ تعالی رازق حقیق ہے اور انسان رازق مجازی
كيوں كه انسان اللہ كے عطا كردورزق ہى ميں ہے ويتا ہے لہٰذا اسم غضيل كا استعال سيح ہے۔

- ه (مِنْزَم بِبَالتَهِ إِ

تَفَسِّيُرُوتَشِينَ عَ

ينوم النجمعة وم الجمعة كويوم الجمعة اس لئے كہاجاتا ہے كہ يەسلمانوں كے اجتماع كادن ہے، كائنات كى تخليق كا بھى تخرى دن ہے ، حضرت آدم عليق كاولائلا اى روز بيدا ہوئے ، اى دن قيامت آئے گی۔

''جعنہ' دراصل ایک اسلامی اصطلاح ہے زمانہ جا بلیت میں اس کو یوم عروبہ کہا کرتے تھے، جب اسلام میں اس دن کو مسمی نوں کے اجتماع کا دن متعین کیا گیا تو اس کو یوم الجمعہ کہا جانے لگا ،سب سے پہلے عرب میں کعب بن لوی نے اس کا مسمی نوں کے اجتماع کا دن متعین کیا گیا تھا گیا گیا ہے۔ اور کعب بن لوی خطبہ دیتے ، بیدوا قعد آپ فیلون گیا گیا گی پیدائش سے پانچ سوسا ٹھ ساں پہلے کا ہے ، کعب بن لوی حضور میلون گیا گئی کے جدا بعد میں سے جیں۔

اسلام ہے پہنے ہفتہ میں ایک دن عبادت کے لئے مخصوص کرنے اور اس کو شعار ملت قرار دینے کا طریقہ اہل سے سمام جود تھا، یہودیوں کے یہاں اس غرض کے لئے سبت (ہفتہ) کا دن مقرر تھا، یونکہ اس دن القد تعالی نے اسرائیل کوفرعوں کی غلامی سے نجات دی تھی، عیسائیوں نے اپنے آپ کو یہودیوں سے متاز کرنے کے لئے اپنا شعار ملت اتو ارکوقر اردی، اگر چہاس کا کوئی تھم نہ تو حضرت عیسی غلاظ تلاظ نے دیا تھ اور نہ انجیل میں اس کا کوئی ذکر ہے، لیکن عیس نیوں کا عقیدہ یہ ہے کہ صلیب پر جان دینے کے بعد حضرت عیسی غلاظ تلاظ اس دوز قبر سے نکل کرآ ہان کی طرف گئے تھے، اس وجہ ہے بعد کے میسائیوں نے اس دن کو اپنی عبادت کے لئے مقرر کر لیا، اور پھر ا ۲۳ میں روئی سلطنت نے ایک تھے ان مامہ کے ذریعہ اس کو عام تعطیل کا دن قرار دیدیا، اسلام نے امتیاز کے سے ان مامتوں کے شعار کوچھوڑ کر جعد کوشعار ملت قرار دیا ہے۔

شان نزول:

وَاِدَا رَاوَا تِجَارَةً (الآیة) بیآیت ال وقت نازل بوئی جب کرایک روزآپ بیس بین بیجه جعد کی نمازے فارغ بو کر جعد کا خطبه دے رہے ہے کہ ایک ایک ایک ایک ایک بیادتی کا فلانک کے دیا تھا کہ ایک بیادتی کا فلانک کے دیا تھا کہ ایک بیت بڑے تاجر دحیہ کبی کا فلانا مام کے لئے وقعول وغیرہ بجوا کر عام مناوی کرادی گئی، مدینہ میں ان دنوں خشک سائتی مجم شخص کو خورد ووش کے سامان کی اشد ضرورت تھی جن میں صحابہ نفو فلائی بھی شامل ہے، اس اندیشہ کے چیش ظرکہ میں قافلہ کا سامان ختم ہوجائے جس کی وجہ ہے ہم نہ پاکسیس آپ بیس بیان فرمائی کو خطبہ پڑھتا چھوڑ کر سوائے بارہ آدمیوں کے سب بازار میں چلے سے ابادار میں چلے کے میدوایت ابودا ورنے مراسل میں بیان فرمائی ہے، یا در ہے کہ اس وقت خطبہ جعد کے بعد ہوا کرتا تھا، جیسا کہ آج بھی عیدین کے بعد خطبہ ہوتا ہے، اس پر ندکورہ آیت نازل ہوئی، اس وقت تک میں معلوم نہ تھا کہ خطبہ جمعہ لاڑی اور ضروری ہے اس کے بعد جمعہ کا خطبہ جمعہ کی ٹمازے پہلے ہوئے لگا۔



ڔ؋ؙٞٵڵڹڣؙۊۏڡڔٚۯڹؾۜؠ۫ۜ؋ۘڿڮؠؽۺٙڗۊٚٳؽؖؠ؋ڣۿٳڒٷۼٵ

سُورَةُ الْمُنَافِقُونَ مَدَنِيَّةً إحداى عَشَرَةَ ايَةً. سورة منافقون مدنى ہے، گیارہ آیتیں ہیں۔

بِنَــِ مِ اللَّهِ الرَّحْـِ مِنِ الرَّحِبِ فِي إِذَاجَاءَكُ الْمُنْفِقُونَ قَالُوا بِالسِّبَهِ مُ عَدى حلاف ما في فُلُوسِهِ نَشْهَدُ إِنَاكُ لُرُسُولُ اللَّهُ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّاكَ لَرَسُولُهُ وَاللَّهُ يَشْهَدُ يغدمُ إِنَّ الْمُنْفِقِيْنَ لَكَذِبُونَ فَ عيسا اضمرُوه سُحِ اللهُ مَا قَالُوهُ إِنَّكُذُو ٓ اللَّهُمُجُنَّةُ مِنْرَةً عن السوالمِمْ ودسائمِم فَصَّدُّوۤ الله عَنْسَبِيلِ اللَّهُ اي عن الْجِهاد فَيْهِمْ إِنَّهُمْسِاءُمَاكَانُوْ الْعِمَلُونَ ﴿ ذَٰلِكَ الْيَ سَوْءُ عَلَيْهِمْ بِأَنْهُمُ الْمُنُوّا الْسَارِ ثُمَّكُفُرُوا الْسَارِ ثُمَّكُفُرُوا الْسَارِ تُمَّكُفُرُوا الْسَارِ تُمَّكُفُرُوا الْسَارِ الْمُكُورُ اللَّهُ الْمُعَالِمُ الْمُ است مرُّوا عدى كفريه به فَطْبِعَ حُنه عَلَى قُلُوبِهِمْ مِا كُفر فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ ؟ الايمان وَلذَارَأَيْتَهُمْ تُعِجبُكَ أَجْمَامُهُمْ لحمالها وَإِنْ يَقُولُوا شَمَعُ لِقَوْلِهِمْ لِعصاحِه كَأَنَّهُمْ مِس غَفْم اخساسهم في تزك التَعبُّم نُحشُبُ سُلكُور الشَيْن وصمه تُسَنَّدَةً شماءُ الى الحدار يَحَبُونَ كُلُّعِيدَةٍ تُصاحُ كنداءٍ في العَسْكر والنشاد ضالَّةِ عَلَيْهِمْ لِما مِي قُلُومِهُمُ مِنَ الرُغُبِ أَنْ يَمِلُ فَيْمِهُمُ مَا بُمِحُ دِمَائِهُمْ هُمُّ الْعَدُوثُالْمَذُرُكُمُ وَيَهُمُ يُفَشُونِ سِرّك مِلكُفَّار قَاتَكُهُمُ اللَّهُ أَسُلَكُهُم الْذَيْزُفَكُونَ * كَيْفَ يُنصُرفُون عَن الإيْمَان بعُد قِيام اسْرَبان وَإِذَا فَيْلَ لَهُمْ نَعَالُوا مُعَدِد رنِي يَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَسُولُ اللهِ لَوَوا الناف ديد والناف عيدا عيدا وأوسهم ورَايْتِهم وَرَايْتِهم وَرايْتِهم وَرَايْتِهم وَرَايْتِهم وَرَايْتِهم وَرَايْتِهم وَرَايْتِهم وَرَايْتِهم وَرَايْتِهم وَرَايْتِهم وَرَايْتِهم وَرَايْتُهم وَرَايْتِهم وَالْتُرْتِيمُ وَرَايْتِهم وَرَايْتِيم وَرَايْتِهم وَالْتُعْرِيم وَرَايْتُ وَيْتُولِيم وَالْتُعْرِقِيم وَالْتِيم وَالْتُعْرِقِيم وَالْتِيم وَالْتِيم وَالْتِيمُ وَالْتُعْرِقِيم وَالْتِيم وَالْتُعْرِقِيم وَالْتِيم وَالْتِيم وَالْتِيم وَالْتُعْرِق وَالْتُعْرِقِيم وَالْتِيم وَالْتِيمُ وَالْتِيمُ وَالْتِيم وَالْتِيم و يْغْرِضُون عن دلك وَهُمِ مُّسَتَّكِ بِرُونَ سُوَاءُ عَلَيْهِمُ السَّغْفَرَتُ لَهُمُ المُنغُني بِهِمُرة الاسْتَفْهَام غن سِمُرة الانتسار لَا تُنْفِقُوا عَلَى مَنْ عِنْدَرُسُولِ اللهِ من المُهاحرين حَتَى يَنْفَضُوا ينفرَ قُوا عنه وَلِلْهِ خَزَا بِنَ التَمَاوِتِ وَالْأَرْضِ المرزَ في فيهو الرّازِقُ لِلمُهاحرِس وعيرِبِم وَلَكِنَّ الْمُنْفِقِيْنَ لَايَفْقَهُوْنَ®يَقُولُوْنَ لَيِنْ مَّ جَعْنَا أي بن عَرُوة سي المُسَمِينِ إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَ الْأَعَزُ عِلْهِ انفُسهُم مِنْهَا الْأَذَلُ عِلْهِ المُؤسِينِ وَيَلْهِ الْعِنَّةُ العِلَّةِ وَلْرُسُولِهِ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَلَكِنَّ الْمُنْفِقِينَ لَا يَعْلَمُونَ الْمُنْفِقِينَ لَا يَعْلَمُونَ الْمُن

٥ (وَرَوْمُ بِهَالِثَرِزِ) »

— ﴿ ﴿ وَمُزَمُ بِهَالِثَهِ إِ

عرجيم المراع كرتا مول القدك ما مع جوبرا مهر بان نهايت رحم واللب، آپ الفظيظ كياس جب من فق آتے ہیں تواپنے دل کی بات کے برخلاف زبان ہے کہتے ہیں کہ ہم اس بات کی گوائی دیتے ہیں کہ آپ میں اللہ کے رسول ہیں اور الله جانتا ہے کہ آپ پیلی فلٹ پینیا اللہ کے رسول میں ،اور اللہ جانتا ہے کہ بیرمنافق قطعہ جھوٹے میں ،اس بات میں جو بیا پنے قول کے برخلاف (دل) میں چھپائے ہوئے ہیں ان لوگوں نے اپنی قسمول کوڑ ھال بنار کھا ہے (لیعنی) اپنی جان و مال کے لئے وقامیہ بنار کھا ہے کہل ان قسموں کے ذریعہ اللہ کے راستہ ہے لیمنی اس میں جہا و کرنے سے محفوظ ہو گئے ہیں بلاشبہوہ کام جو پیرکر ہے میں بُراہے یہ لیعنی ان کی برحملی میہ ہے کہ وہ زبانی ایمان لائے پھر دل ہے کا فر ہوئے لیعنی اپنے کفر پر بدستور قائم رہے پس ان كقلوب ير كفركي وجدے مبر كروي عنى باب يه ايمان كو سمجھ نبيس بيس جب آپ عنوي انبيس ديكھيل تو آپ بالقائلة كوان كجسم ان كى خوبصورتى كى وجد سے خوشما معلوم جول اور جب يه باتيں كريں تو آب يون ان كے كلام لى طرف اس كى فصاحت کی وجہ ہے (اپنا) کان نگا کیں '' ویا کہ وہ جسموں کے قطیم ہونے اور نا جھے ہوں میں لکڑیاں ہیں ویوار کے سہارے لگائی ہوئی (خُٹٹٹ) شیمن کے سکون اورضمہ کے ساتھ ہراس واز کوجو کا ٹی جانبے ملاف سیجھتے ہیں لیعنی ہرندا کومثلا اشکر کے کوچ کے نداءاور کمشدہ کا اعلان ،اس کئے کہ ان کے قلوب میں اس بات کی جیبت ہے کہ بیں ان کے بارے میں کوئی ایسا حکم نازل ندہوگیا ہوجوان کےخوان کوحلال کردے، یہی تقیقی وشن بیں ان ہے بچر بیآ ہے میں پیراز کا فروں پر ظاہر کردیتے ہیں، القدانبيس غارت كرے كہال پھرے جارہے ہيں ؟ (ليعني) ہر بان قائم ہوئے كے بعدا يمان ہے كہال پھرے جارہے ہيں ، جب ان ہے کہا جاتا ہے معدرت کرتے ہوئے کہ وتہارے نئے اللہ کے رسول میں تا استغفار کریں ، تو اپنے سر معکات ہیں (للوّوا) تشدید و تخفیف کے ساتھ ، لیعنی و وسرول کو گھماتے ہیں ، اورآ پ نیونیٹر ان کور کیٹھیں کے کہ دواس ہے اعراض کرتے ہیں حال ہے کہ وہ تکبر کررہے ہوتے ہیں ،ان کے حق میں آپ بلق علیٰ کا استغفار کرنا اور نہ کرنا دونوں برابر ہیں ہمزہ استفہام کی وجہ ہے ہمزہ وصل ہے مستغنی ہو گیا، اللہ ان کو ہر ً مز معاف نہ کرے گا اللہ تعالی ایسے نا فر مانوں کو ہدایت نہیں دیتا، یہی وہ لوگ بیں جواہینے انصاری بھا ئیول سے کہتے ہیں کدرسول اللہ بلق فیٹر کے پاس جومہا جرین جمع ہیں ان پر کچھ خرج مت کرو یہاں تک کدوہ آپ بیٹھ لیٹا کے باس ہے منتشر ہو جائیں ،اور آسانوں اور زمین کے رزق کے سب خزانے اللہ ہی کی ملک ہیں مہاجرین وغیرہ کا وہی رازق ہے کیکن بیمنافق سمجھتے نہیں ہیں ، یہ کہتے ہیں کہا گرہم غزو وَ بنی مصطلق ہےلوٹ کر مدینہ پہنچ گئے تو عزت والا مراداس سے انہوں نے خود کولیا ہے ذلت والے کو مراداس سے مومنین کولیا، مدینہ سے نکال دے گا (سنو) عزت غلبہ تو صرف اللہ کے لئے ہے اور اس کے رسول بنتی ہے گئے ہے اور مومنین کے لئے ہے لیکن ہے منافقین اس کو جائتے نہیں ہیں۔

عَجِفِيق تَرَكِيكِ لَيَسَهُ أَنْ تَفْسِيلُ لَفَسِّيلُ كَفْسِيلُ فَوَائِلُ

فِيَوْلَى : سورةُ المنافِقُونَ بعض فعن من من مورة المنافقين ياء كماته ب-

فَیُوَلِیْ ؛ نَشْهَدُ إِنَّكَ لَوَسُولُ اللّه به جملاتم كائم مقام بي يبي وجه ب كداس كے مابعد برلام داخل ب، گووه جواب فتم به اور نَشْهَدُ اللّه بمعن تحلف نها وربيجي ممكن ب كه نَشْهَدُ الله معنى بى بواور مقصدا بي او برسائه آل كی تنهمت كود فع كرنا بور

قِوَلَنَى ؛ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّكَ لَوَسُولُهُ ، نَشْهَدُ إِنَّكَ لَوَسُولُ الله اور وَاللَّهُ يَشْهَدُ الخ كورميان جمد معترضه ب - قَوَلْنَى ؛ جُنَّةُ جيم كرميان جمد عن وهال ، وقايه ، جَعْ جُنَنٌ .

فِيُولِينَ ، بِاللِّسان، بِأَنَّهُمْ آمَنُوا كِ بعد باللِّسان كاضافه كامقصدايك موال كاجواب ب-

سَيُخُوالْنَ ؛ مَن فَقين كَ بارے مِيں فر مايا گيا ہے كہ وہ ايمان لائے اس كے بعد كفراختيار كيا حالا نكہ وہ سرے سے ايمان ہی نہيں لائے تو پھر نُقَر كَفَرُو الْكِنے كا كيا مقصد ہے؟

جِيَّ لَيْنِ، جواب كا خلاصہ بہ ہے كہ فُسمَّ ترتب اخبارى كے لئے ہے نہ كدتر تيب ايجاوى كے لئے مطلب بہ ہے كدلس في طور پر ايمان لائے اور تعوب سے كفراختيار كيا، للبذااب كوئى اشكال باتی نہيں رہا۔

فِيُولِلْ ؛ تسمع لِقر لِهِمْ

سَيْوان، تسمع كاصلدلام بين تامالانك يبال تسمع كاصلدلام استعال بواب-

جِولَاثِع: تَسْمَعُ، تَصْغى كَمْعَىٰ كُوصْمَن بِسُلَى وجدت تسمع كاصلدلام لا نادرست ب-

فِيُولِكَمْ ؛ تَكَانَّهُمْ خُشُبٌ مُسَلَّلَةٌ اس مِين دووجه بِين اول ميد كمية جمله مستانف هيه دوسري ميد كدمبتداء محذوف كر خبر هيه ، اوروه هُمْ هِهِ اى هُمْرِ كَانَّهُمْ.

- ﴿ (مَرْزُمُ بِبَكُ لِشَرْ) ≥ -

كَائِنَةً عَلَيْهِمْ.

فَيْكُولَ إِنَّ الْوَوْ ارْءُ وْسَهُمْ الدا كاجواب --

فَخُولِ ؛ لوُّوا صيغة جَنَّ مُذَكِرَ عَا مُب مَعْلِ ماضى معروف بالتفعيل ت،مسدر علوية. ليٌ ماده بَّصَم نا،مثكانا وغيره وغيره-

تَفَيْدُوتَشِينَ عَ

سورهٔ منافقون کے نزول کامفصل واقعہ:

- ∈ (زمَزَم پتبلشرز) >

جودا قعداس سورت کے زول کا سبب بن ، و و فر و کوم یسیع جس کوفر و و کن مصطبق جی کیتے ہیں کے موقع پر چیش آیا تھا ، جوگھ بن اس ق کی روایت کے مطابق شعبان ۲ ھیں اور قبادہ و و کی روایت کے مطابق عبان من ۵ ھیں چیش آیا علا ، حافظ عسقل نی فرماتے ہیں کہ یہی قول زیادہ سیح ہے ، اور دلیل اس کی بہ ہے کہ سعد بن معاذ دصافته مُنفائے کا اس فروہ میں شریک ہونا سیح بخاری میں فہ کور ہوایات سیح ہداور احد دیث معتبر و سے بہ گا بت ہے کہ سعد بن معاذ دصافته معالی کے خود و کہ خود کو خند ق سے فارغ ہو کر فود و کئی قریظہ کے زمانہ میں و ف ت پائی جوس دھیں ہوا ہے جس اً برغرو و کا مریسیق من ۲ ھیں معاذ دصافت کی جس مواہم ہوتا ہے کہ سال بعد مانا جائے تو سعد بن معاذ دصافت کی اس میں شرکت کیے ممکن ہو سکتی ہے ، اس سے معلوم ہوتا ہے کہ من ۵ و کے دوایت سیح ہے۔

غزوهٔ مریسیع کاسب

رسول القد بین نقید کو یخبر پینی کد قبیلهٔ بنی مصطول کے سردار حارث بن ابی ضرار نے مسمانوں برحملہ کرنے کے لئے بہت می فوج جمع کر رکھی ہے اور حمد آور بوئے کی تیاری میں ہے آپ بین فقیل نے اس خبر کی تعدیق کیدے بریدہ بن حصیب اسلمی مؤخل ندائن نعالے کوروانہ فرمایو، بریدہ نوفیان ندائن نعالے کوروانہ فرمایو، بریدہ نوفیان ندائن نعالے کے اس مرجبہ مالی صلح بہ نصولیا نقالے نام فور کی تیار ہوگئے تھے، اس مرجبہ مالی صلح بہ نصولیا نقالے فور کئی رہوگئے تھیں گھوڑ ہے ہمراہ لئے جن میں ہے دس مباجرین کے اور بیس انصار کے تھے، اس مرجبہ مالی غذیمت کی طمع میں من فقین کی بھی ایک بڑی تعداد ہمراہ ہوگئی آپ بین نام المونین ام سلمہ دفعاً لذائن تعالی کھا کو ساتھ لیا اور ۱۲ راداج مطہرات میں ہے ام المونین حضرت عاکشہ صدیقہ دفعاً لذائن تعالی کھا کو ساتھ لیا اور ۱۲ راداج مطہرات میں سے ام المونین حضرت عاکشہ صدیقہ دفعاً لذائن تعالی کا اور اسلمہ دفعاً لذائن تعالی کھا کو ساتھ لیا اور ۱۲ راداج مطہرات میں میں میں میں کے طرف دوانہ ہوئے۔

م سن ایک بشد یا تالاب کا نام ہے، ای مقام پر بنی مصطلق ہے مقابلہ ہوا آپ اللہ نے تیز رق ری کے ساتھ چل کر اور بدت ان پر تملد کر دیا اس وقت وہ لوگ اپنے جانوروں کو پانی پلارہے تھے، اُن کے دس آدمی مقتول ہوئے اور باقی مردعورت، نبیس بی وڑھے سب گرفت رکر لئے گئے ، دو ہزاراونٹ اور پانچ ہزار بکر یال مال نفیمت میں ہاتھ آئیں دوسوگھر انے تید ہوئے ، انہیں قید یوں میں بن مصطلق کے سردار حادث بن انی ضرار کی بیٹی جو پر یہ بھی تھیں ، مال نفیمت کی تقسیم کے نتیج میں جو پر اُنہ بابت بن قیس دھی آئی تھیں کا تنہ بنادیا۔

آپ ﷺ نے ارشادفر مایا میں تم کواس سے بہتر چیز بتلا تا ہوں اگرتم پسند کرو، وہ بید کہتمہاری طرف سے بدل کت بت کی قم میں ادا کر دوں اور آزاد کر کے تم کواپئ زوجیت میں لے لوں ،حضرت جو بریہ دَضِحَاللّائِ مَعَالَیْظُفَائے فِر مایا میں اس پرراضی ہوں۔ (سیرت المصطعی، رواہ ابو داؤد)

ادهر جویرید و کفتان النافظ کے والد جارث بن ابی ضرار ،عبداللہ بن زیاد کی روایت کے مطابق بہت سے اونٹ لے کرمدید حاضہ ہوئے تاکہ زید دید دے کراپی بٹی جویرید و کفتاندہ مقاطفا کو آزاد کرالا کیں ، نہایت عمدہ متم کے دواون جو نہایت پندید و عضا کی ایک کھوٹ میں چھپاد ہے مدید بنتی کر آپ بنتی کا تھا کہ کہ خدمت میں جاضر ہوئے ، اور وہ اونٹ آپ بنتی کی خدمت میں اپنی بندی کھوٹ کی مدمت میں اپنی بندی کے مرت میں اپنی کے درف میں چھپا آئے ہو؟ جارث بنی کے دواون کے مارٹ کہاں جی جوتم فلال کھ ٹی میں چھپا آئے ہو؟ جارث کہا؟ "اَشْدَ کَا رَسُولِ اللّٰه " میں گواہی دیتا ہوں بے شک آپ بنتی کی تا اللہ کے رسول جی ، اللہ کے سوااس کا کی کو عم نہ تقد اللہ کی دیا ہے مطلع کردیا۔

قد اللہ بی نے آپ بنتی کی بھوٹی کو اس مے مطلع کردیا۔

ایک ناخوشگوار داقعه:

ابھی مسلمانوں کالشکر چشمہ مریسی پر ہی تھا کہ ایک ناخوشگوار واقعہ پیش آگیا، جو کہ پانی کے جشمے پر ایک مہا جرجن کا نام جبی ہو تھا اور ایک انصاری جن کا نام جن کا نام جبی ہوئی کہ جبیا ہ حضر ت عمر رہے گاندائی تھا اور ایک انصاری جن کا نام سنان بن و ہرہ تھا کے درمیان چیش آیا تھا، صورت واقعہ کی یہ جو کی کہ جبیا ہ حضر ت عمر رہے گاندائی تھا ایک کے ایک انصاری جن کا نام سنان بن و ہرہ تھا کے درمیان چیش آیا تھا، صورت واقعہ کی یہ جو کی کہ جبیا ہ حضر ت عمر رہے گاندائی تھا ایک کے جب

ح (زَمَّزُم پِبَلشَرِنِ)≥

ملازم تھے جوان کے گھوڑے کی تلہداشت کرت تھے، ان کے اور سنان کے درمیان پانی کے سلسے میں چدمی گوئیال ہوگئیں اور بات زیادہ بڑھ گئی حتی کہ ہاتھ پائی کی نوب آئی جوہ مہاجری نے انساری کے ایک طمانچ یالات ماردی، مہاجر نے اپنی مدد کے لئے مہاجری نے انسار کو آواز دی، دونوں طرف سے پھلوگ جمع ہو گئے قریب تھ کہ باہم مسلمانوں میں ایک فتند کھڑا ہو جائے جب آپ بنوٹینٹ کو اس کی اطلاع ہوئی تو آپ بنوٹینٹ فوراموقع پر پہنچ اور تخت ناراضی کے مسلمانوں میں ایک فتند کھڑا ہو جائے جب آپ بنوٹینٹ کو اس کی اطلاع ہوئی تو آپ بنوٹینٹ فرمایا ''دَعُوْ ھا فَاسَّھا مُمْدِمَةُ'' اس نعرہ کو جھوڑ دویہ بد بودار نعرہ ہے، اور آپ بنوٹینٹ نے فرمایا کہ جرمسلمان کو اپ مسلمان بھی کی مدد کرنی چاہئے خواہ ظالم ہو یا مظلوم، مظلوم کی مدد کرنی چاہئے خواہ ظالم ہو یا مظلوم، مظلوم کی مدد کرنی تو ظاہر ہے، اور آپ بنوٹینٹ کا بیار شاد سنتے ہی جھڑا ختم ہو گیا جھیں سے کہ اس کو ظلم سے روئے کیونکہ اس کی حقیق مدد بہی ہے۔ آپ بنوٹینٹ کا بیار شاد سنتے ہی جھڑا ختم ہو گیا جھیں سے نیادتی جب کہ اس کو جو نے دولی میں بھی کی بھائی بن گئے۔

عبدالله بن أبي كي شرارت:

جیسا کہ آپ پڑھ پے جیں کہ اس غزوہ میں مال نتیمت کی طبع میں بہت ہے من فق اور خود عبداللہ بن اُبی ابن سلول بھی شریک ہوگیا تھی،عبداللہ بن اُبی نے موقع کو نتیمت سمجھ اور مسمانوں میں نا آتہ تی پیدا کرنے اور فقتہ بر پاکرنے کی پوری کوشش کی ، اورا پی مجل میں جس میں منافقین جمع سے اور مومین میں ہے صرف زید بن ارقم فضائن کھائے موجود سے اس وقت معظرت زید کم عمر سے عبداللہ بن اُبی نے جہل میں انصار کو مہاجرین کے خلاف بحرکایا ، اور کہنے لگاتم نے ان کو اپنے وطن میں بلا کرا پنے سرول پر مسلط کیا اپنے اموال اور جا کہ اور ان کو قتیم کرکے دے دیے ، پہتمہاری بی روٹیوں پر لیے بوئے اب تمہار ہے بی مقابلہ پرآگئے ہیں اس کی مثال: سمن سکل بلک یا کلک ہے' اگر تم نے اب بھی اپنے انبی م کو نہ سمجھ تو آگ بیتمہار اجینا مشکل کر دیں گے' اس کے تمہیں چاہئے کہ آئندہ ان کی مالی مدانہ کروجس سے بیخو ومنتشر ہوجا کیں گے ، اور ابتہمیں چاہئے کہ جب تم مدید بینی جاوت والی ذکال دے ، اس نے عز ت والے سے خود کوم ادلیا اور ابتہمیں چاہئے کہ جب تم مدید بینی جاوت والی ذکال دے ، اس نے عز ت والے سے خود کوم ادلیا اور ذکت والوں سے مراد مسلمانوں کولیا، حضرت زید بن ارقم فضائند تھائے نے جب اس کا بیکام ساتو فور آبول پڑے کہ واللہ تو بی ذکت والوں و خوار ومبغوض ہے ، عبداللہ بن اُبی کو جب محسوس ہوا کہ میرا نی ق فی ہر ہو جائے گاتو با تیں بنانے لگا اور حضرت زید فول نظائند کی انگر تھائے کے جب اس کا بیکام ساتو فور آبول پڑے کہ واللہ تو بی نوخاند منہ نوٹ کو باتھ ہوں بوا کہ میرا نی ق بی بن مذاتی ہیں بنانے لگا اور حضرت زید

حضرت زید بن ارقم عبدالقدمن فتی کی مجلس سے اٹھ کرآنخضرت یکھٹی کی خدمت میں حاضر ہوئے اور پوراوا قعہ سنایا ،رسول القد یکھٹٹٹٹا پر مینجرشاق گذری ، زید بن ارقم تف کا نفائٹ کم عمر صحابی ہتے ، آپ یکھٹٹٹٹٹ نے فرمایا اے لڑے تم جھوٹ تو نہیں بول رہے ہو؟ زید بن ارقم نے قتم کھا کر کہا کہ میں نے میدالفاظ خود اپنے کا نول سے سنے ہیں ، آپ بیکٹٹٹٹٹٹ نے پھر فرمایا کہیں تم کوشہ تو نہیں ہوگیا ؟ مگر زید نے پھروی جواب دیا ، پھراس بات کا پور لے شکر میں جے جا ہونے لگا۔

ه (مَزَم بِسَالتَهُ إِ

جب حضرت ممر رَصِحَانَهُ مَعَالِحَةٌ كوعبدالله بن أَبِي كَ سَتَاخي اور فتنه بردازي كاعلم بواتو آنخضرت بلقائفة بركي خدمت ميس ما ضر مِوَرِعُ طَنْ مَيايا رسول الله! اجازت و بنجئے كەملى السرمنافق كى گردن ماردول_

آبِ الله المالية المارية المانجام كيابوكا؟ لوكول من بيشرت دى جائے كى كەمىن اپنے اصحاب تصحف معالي كا فَلْ كرويتا بول؟ اس لئے آپ بِالقَالِيَّةُ فِي عِبدالله منافق كُولُ عِنْ مَعْلَقَةُ مَعْلَقَةُ كوروك ديا، اس واقعه كي خبر جب عبدالله ين ألي من فق كے صاحبر اوے عبداللہ بن غبداللہ مومن كو ہو كى تو آپ ينتي تاتا كى خدمت ميں حاضر ہوئے اور عرض كيا اگر آپ ينتي تاجي كا اراده السُّنفتگوك نتيج ميں ميرے والد كونل كرنے كا ہے؟ تو آپ ﷺ اجازت و تبحيّے ميں اپنے باپ كا سرقبل اس كه " پ بلق علی اپنی مجلس ہے اٹھیں آ پ کی خدمت میں پیش کر دوں ، آ پ بلق علی اے فر مایا میر اارادہ اس کولل کرنے کانبیس ہے اور ندمیں نے سی کواس کا حکم ویا۔

اس واقعہ کے بعدرسول اللہ ﷺ قافی عام عادت کے خلاف بے وفت سفر کرنے کا اعلان عام فرہ دیا اورآپ ﷺ بھی اپنی اومکی قصوی پرسوار ہو گئے، جب عام سحابہ رَضَالِ تَعَالْتُنَافِقَ رواند ہو گئے تو آپ نیٹون کا بیا اور دریا فت فره یا که کیاتم نے ایس کہا ہے؟ عبدالله منافق قسم کھا گیا کہ میں نے ایسانہیں کہا بیاڑ کا زید بن ارقم فی کافلاً تُعَالِئ حجونا ہے،جس کی وجہ سے آپ بلات کا اللہ منافق کا مذرقیول فرمالیا اور زید بن ارقم رہے کا نام اللے اس کے سبب لوگول ہے <u>خصے رہنے لگے۔</u>

آپ بلق مین اور پوری رات این عادت کے برخلاف مفرکرتے رہے، جب دھوپ تیز ہوگئ تو آپ بلق میں نے ا یک جگہ قافلہ کو تھم نے کا تھم فرمایا ، قافلہ سلسل شب وروز چلنے کی وجہ سے چونکہ تھ کا ہوا تھا فوراً منزل پراتر تے ہی محوِخوا ب ہوگیا۔ ا دهرزید بن ارقم مَعْ عَالِمَنْهُ مَعَالِحَةً بار بار آتخضرت بِعِنْ عَلَيْ كَ قريب آتے تنے كيونكه ان كو بورايقين تھا كه اس مخص عبدالله منافق نے مجھے بوری قوم میں جھوٹا ٹابت کر کے رسوا کیا ہے اللہ تعالی ضرور میری تصدیق اوراس مخض کی تکیر میں قرآن ، زل فرمائے گا، ا جا تک زید بن ارقم رَفِعَانْنَدُ تَعَالِنَهُ نَے ویکھا کہ آپ نیٹھ لیکٹے پروہ کیفیت طاری ہوئی جووجی کے وقت ہوتی تھی تو زید بجھ گئے کہ اس ہارے میں ضرور کوئی وحی نازل ہوئی ہوگی ، جب آپ ﷺ کی یہ کیفیت رفع ہوئی تو زید بن ارقم ریختانندُ مُنظِیّا ہے جی کہ میری سواری چونکہ آپ ینون بھتا کی سواری کے قریب تھی آپ ینون تھی نے اپنی سواری بی پر سے میرا کان پکر ااور فر مایا ،یا علام! صَدَّقَ اللَّه حَدِيثَكَ اور بورى سورة المنافقون عبدالله بن أليّ كے بارے من نازل جوئى۔ (معارف)

يَاأَيُّهَا الَّذِينَ امَنُوْ الْاتُلْهَكُمْ تَشْعِلُكُم الْمَوَالْكُمُّوَلِا ٱلْوَلَادُكُمْ عَنْ ذَلْرِاللَّهُ الصَلَوَاتِ الحَمْسِ وَمَنْ يَفْعَلُ ذَلِكَ فَالُولَاكُ <u>هُمُرالْخُنِيدُونَ©وَاَنْفِقُوا</u> في الزَكَاةِ مِنْمَارُزُقُنْكُمُونَ قَبْلِاَنْيَّالِيَاكَطَكُمُوالْمَوْتُ فَيَقُوْلَ رَبِّالُوْلًا سمغنى بلاً اوْ لا رائدةٌ ولؤ للتَّمنِي **أَخَرْتَينَيَ إِلَى آجَهِ لِ قُرِيْبٍ فَأَصَّدَقَ** بِإِدْغَامِ التَّاءِ فِي الْاَصْلِ فِي الصّادِ اتصدَقُ بالركوة وَٱكُنْ مِّنَ الصَّلِحِيُنَ® بِـَنْ أَحُـجَّ قَـالَ ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنه مَا قَصَرَ أَحَدُ فِي الزَّكةِ والحجَ الآ ا (مَكَزَم بِهَ كَشَرْ) ₹

غُ سأل الرَجْعَة عِمد المَوتَ وَلَنْ يُتُوخِرَاللهُ نَفْسُ الزَاجَاءَ اَجَلْهَا وَاللهُ خَبِيرٌ بِمَاتَعْمَلُونَ فَ بِالتَاءِ واليَاءِ،

تر الرجم الرجم المسلمانو! تمہارے مال اور تمہاری اولا دیم کو اللہ کے ذکر کی وقتہ نمی زے عافل نہ کردیں اور جو الیا کریں وہ بڑے نیاں کا رول میں بین اور جو چھ بم نے تم کو دے رکھا ہے اس میں سے زکو ہیں خریج کرواس سے پہلے کہ تم میں سے کسی کو موت آجائے تو کہنے نگے اے بھرے پر وردگار! تو کس سے جھے تھوڑی دیر کے کی مہلت نہیں ویت ؟ (کسولاً) بمعنی ہلاً یا لا زائدہ ہے، اور کسو تمنی کے لئے ہے کہ میں صدقہ کروں اور نیک لوگوں میں ہے ہو وی کروں، رف سے اصدقہ کروں اور نیک لوگوں میں ہے ہو گئی ، کہ جج کروں، رف سے اصدقہ کروں، این عباس جو گئی ، کہ جج کروں، رف سے اصدقہ کی تا بہواصل میں صاد میں او نیا مرکزے، لینی زکو قادا کروں، ابن عباس حکوالٹ تعکال میں او نیا مرکزے، لینی زکو قادا کروں، ابن عباس حکوالٹ تعکال میں اور جب کی کا وقت مقرر آج تا ہے پھر اس کو اللہ تعی برگز مبلت نہیں دیتا اور جو پھر کرتے ہواللہ تعالی اس سے بخو بی واقف ہے یا واور تاء کے ساتھ ۔

عَجِفِيق الْرِيْبِ لِيسَمِّينَ الْ تَفْسِّيرِي فُوالِلْ

قِغُولَ ﴾؛ أَنْ يَاتِيَ أَحَدَّكُمُ الْمَوْتُ ، اى أَمارَ اتُهُ ، وُمقَدَماتُهُ منه ف محذوف ہاس لئے كی موت كے بعد كوئی پچھ نہیں کہ سکتا۔

قَوْلَنَىٰ ؛ لَوْلا ، بسمعنی هَلَا لِینی لوا آن تصفیه ہے جو کہ وہنی کے ساتھ فاص ہے گرمعنی میں مضارع کے ہے جیسا کہ یہاں من سب بیہ ہے کہ کسولا التم س، دعا ، عرض ، گذارش کے معنی میں ہو، اس سے کہ کسولا تحضیفیہ کا یہاں کوئی موقع نہیں ہ دوسری صورت یہ کہ کو لامیں کا زائدہ ہواور کو جمعنی تمناہو، ای کیننگ انگو تندی.

قِوَّولَ مَا الْمَالِ قَرِيْب، اى زماد قليل.

فَیْوَلْکُنَّ : واکُنَّ (ن) ہے،اصل میں اکُون تھ مصحف عن نی کے رسم اخط کے مطابق بغیر واؤکلکھا گیا ہے ورنہ اکُون ہو چاہئے، تفظ میں دونوں صورتیں جائز ہیں واؤاور حذف واؤکے ساتھ اوراس کو فساَصَّدُق پرعطف کرتے ہوئے نصب ہوگااو محل فَاصَّدُق برعطف ہونے کی وجہ سے حذف واؤاور جزم ہوگا، فَاصَّدَقَ اصل میں فَاتَصَدَّقَ تھا جمہور نے تاء کوصاد میں ادغام کرکے پڑھا ہے اور یہ جوابی تمنی ہونے کی وجہ سے منصوب ہے۔

قِيَّوُلِكُنَى ؛ وَلَنْ يُوخِرَ اللَّه لَفْسًا يه جمله متانف بجوكه والمقدر كاجواب بِ تقدير عبارت بيب هَلْ يُوخَّرُ هذَ لِلتَّمنِّي، فَقَال، وَلَنْ يُوجِرَ اللَّه نَفْسًا الخ.

---- = [نظر م بستان ا

ێٙڣڛٚڔؙۅؾۺ*ٙڿ*

سَلَیْهَا اللَّذِیْنَ آمَنُوْ آیبان تمام ان لوگوں سے خطاب ہے جودائر واسلام میں داخل ہوں قطع نظراس سے کہ سپے مومن بوں یہ محض زبانی اقرار کرنے والے، اس عام خطاب کے ذریعہ ایک کلم نصیحت ارشاد فرمایا جارہا ہے یہ بات تو آپ کومعلوم ہی ہوت ہوت تر آن مجید میں اللّذِیْنَ آمَنُوْ آ کے ذریعہ بھی تو سپے اہل ایمان کو خطاب کیا جا اور بھی اس کے خطب منافقین ہوت ہیں ؛ کیونکہ وہ زبانی اقرار کرنے والے ہوتے ہیں اور بھی بالعموم ہر طرح کے مسلمان اس سے مراد ہوتے ہیں، کلام کا موقع وص بین ؛ کیونکہ وہ زبانی اقرار کرنے والے ہوتے ہیں اور بھی بالعموم ہر طرح کے مسلمان اس سے مراد ہوتے ہیں، کلام کا موقع وص بین ویتا ہے کہ کہال کوئسا گروہ مراد ہے؟

اس سورت کے پہلے رکوع میں منافقین کی جھوٹی قسمول اور ان کی ساز شوں کا ذکر تھا اور ان سب کا مقصد و نیا کی محبت سے مغلوب ہونا تھا، اس وجہ سے فلے ہر میں اسلام کا وعویٰ کرتے ہتھے کے مسلمانوں کی زوسے بچے رہیں اور ، ل غنیمت سے حصہ بھی سلے ، اس دوسر سے رکوع میں خطاب مخلص مونیوں کو ہے جس میں ان کوڈ رایا گیا ہے کہ دنیا کی محبت میں ایسے مدہوش اور عافل نہ ہو جا نمیں جیسے منافقین ہوگئے ، و نیا کی سب سے بڑی و و چیزیں جیس جو انسان کو اللہ سے غافل کرتی ہیں ، مال اور اولا و ، اس لئے خاص صور پر ان کا نام لیا گیا ہے ور نہ مراداس سے پوری متاع دنیا ہے۔

خلاصہ یہ کہ ہ ل واولا دکی محبت تم پر اتنی غالب نہ آجائے کہ تم اللہ کے بتلائے ہوئے احکام وفر اکف سے غافل ہوجا وَاوراللہ کی قائم کردہ حدود کی پروانہ کروہ منافقین کے ذکر کے فور آبعداس تنبیہ کا مقصد یہ ہے کہ بیمنافقین کا شیوہ اور کردار ہے جوانسان کو قائم کردہ حدود کی پروانہ کروہ اراس کے برنکس ہوتا ہے، وہ یہ کہوہ ہروفت اللہ کو یا در کھتے ہیں بعنی اس کے احکام کی پابندی اور حلال وحرام کے درمیان تمیز کرتے ہیں۔

فَیفُوْلَ رَبِّ لَوْلَا اَخُوْنَینی اِلْی اَجَلِ فَرِیْبِ ابن مردویه نے حضرت ابن عباس حَکَالْتُکُا ہے اس آیت کی تغییر کے بارے میں فر مایا کہ جس شخص کے ذمہ ذکو ہ واجب تھی اورا دائیں کی یا جج فرض تھا گرنیس کیا، وہ موت سامنے آجائے کے بعد اللہ تعالیٰ ہے اس کی تمنا کرے گا کہ میں پھر دنیا کی طرف لوث جا وَل یعنی موت میں بچھ مہلت مل جائے تا کہ میں صدقہ فیرات کرلوں اور فرائض سے سبکہ وش ہوجا وَں، گرحی تعالیٰ شانۂ نے اگلی آیت لَنْ یُو خِسوَ اللّه (الآیة) میں بتلا دیا کہ موت کے بعد کی کومہدت نہیں دی جاتی ہیں تعالیٰ شانۂ نے اگلی آیت لَنْ یُو خِسوَ اللّه (الآیة) میں بتلا دیا کہ موت کے بعد کی کومہدت نہیں دی جاتی ہے تمنا کی افواور فضول ہیں۔ (معارف)



مَلَ فَيْ النَّا إِمَلَ مَنْ مَنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ اللَّا اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللَّا اللَّهُ اللَّا اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ ا

سُورَةُ التَغَابُنِ مَكِيّةٌ اَوْمَدَنِيَّةٌ ثَمَانِيَ عَشَرَةَ ايَةً. سورہُ تغابن مکی ہے یامدنی ہے، اٹھارہ آ بیتیں ہیں۔

بِنَصِيهِ اللهِ الرَّحْدِ لَمِنَ الرَّحِدِ فِي لِيَسِبْحُ لِلهِ مَا فِي السَّمُوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ فِي سرَّهُ فَ اللامُ رائدة وأتبى بما، دُورَ من تعدينا للا كَثر لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوعَلَى كُلِّ شَيْءَ قَدِيْرٌ هُوَالَّذِي خَلَقَكُمْ فَمِنَكُمْرِكَافِرٌ وَمِنْكُمْرُمُونِ في اصل الجِلقة ثم يُميننهم ويُعيدُهم على دلك وَاللَّهُ بِمَاتَعْمَلُونَ بَصِيْرُ®خَلَقٍ. التَّمُوٰتِ وَالْأَرْضَ بِالْعَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُوَرَكُمْ الْ حَعِل شَكِل الادسَى الْحَسن الاشكال وَالَيْهِ الْمَصِيْرُ السَّمُواتِ وَالْيَهِ الْمَصِيْرُ يَعْلَمُومَافِي السَّمَاوِتِ وَالْرَضِ وَيَعْلَمُ مَا تُسِرُّونَ وَمَاتُعْلِنُونَ وَاللَّهُ عَلِيْمُ بِذَاتِ الصُّدُومِ ٩٠ سِهَا من الانسزار والمُعتقداتِ المُرْيَاتِكُمُ بِا كُمَّارَ مِنَهُ نَبُوُّا حِمِ الَّذِيْنَ كَفُرُوا مِنْ قَبْلُ فَذَاقُوا وَبَالَ امْرِهِ مَ عُنُونة كُفرهم مي الذُنيا وَلَهُمْ فِي الاحِرةِ عَذَاكِ اللَّهُ فَالِمَ ذَلِكَ اي عداتُ الدِّي بِأَنَّهُ صميرُ الشَّار كَانَّتْ تَأْتِيهِمُرُسُلُهُمْ بِالْبِيِّنْتِ الحُجَمِ الطَّاهِرَاتِ عَنِي الايْمانِ فَقَالُوْ آابَشَرُ أُريد له الحنسُ يَهْدُوْنَنَا فَكَفَرُوْاوَتُولُوْا عَنِ الايمان وَّاسْتَغْنَى اللَّهُ عَس المانهم وَاللَّهُ غَيْنُ عس منه حَمِيْدُ ٥ سخمُودُ من أفعاله زَعَمَ الَّذِيْنَ كَفَرُوٓا أَنْ مُحقَّفة والسَمْهَا محذُوف اي انَهُم لَنْ يُنْعَثُوا قُلْ بَلْ وَرَبِيْ لَتُنْعَثُنَ تُعَرِّلَتُ نَتَو لَتُنتَوَقِ فِي إِمَاعَهِ لَتُمْرُو ذَٰ لِكَ عَلَى اللهِ يَسِيرُ ﴿ فَأُمِنُوا بِاللهِ وَرَسُولِهِ وَالنُّورِ النَّوال اللَّذِينَ انْزَلْنَا وَاللهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿ اد كُر يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لْيُوْمِرْلْكِمْعَ يوم القيامة ذَٰلِكَ يَوْمُرُالْتَعَابُنُ بِعِسُ المؤسُور الكفرين بأحد سارِلهم والهبهم في الجنّة لو السنوا وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ وَبَعْمَلْ صَالِكًا يُكُفِّرُ عَنْهُ سَيِّناتِهِ وَنُكِّخِلْهُ وهي قراء قِالْمُون في السعنين جَنْتٍ تَجْرِي مِنْ تَخْتِهَاالْاَنْهُرُخُلِدِيْنَ فِيْهَا اَبَدًا ذٰلِكَ الْفَوْزُالْعَظِيْمُ ۗ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِالْيَيْنَا القرار أُولَٰإِكَ آصَّعٰبُ النَّارِخُلِدِيْنَ فِيهَا * إِنَّ وَبِئُسَ الْمَصِيْرُةُ هِيَ.

ت المجمل ، شروع كرتا بول الله كے نام ہے جو برا امہر بان نہایت رحم وال ہے ، آسانوں اور زبین میں جو بھی چیزیں ہیں

وہ اللہ کی تشہیج پاکی بیان کرتی ہیں لما کما ہمیں لام زائدہ ہے اور من کے بجائے منا کولایا گیا ہے اکثر کوخلیدو یئے کے لئے ، ای ک سلطنت ہے اس کی تعریف ہے اور وہ ہر چیز پر قادر ہے ، اس نے تم کو پیدا کیا ، سوتم میں ہے بعضے تو اصل خلقت ہیں کا فر بیں اور بعضے مومن پھروہ اس کے مطابق تم کوموت دے گا،اورلوٹائے گا،اور جو بچھتم کررہے ہو،القد تعیلی اس کوخوب د مکیے رہاہے،اسی نے آ تانوں اور زمین کو حکمت کے ساتھ بیدا فر مایا اور ای نے تمہاری صورتیں بنائی ،اور بہت اچھی بنا نمیں ،اس کئے کہ اس نے ا نسانی شکل کوسب شکلوں میں بہتر بنایا ،اوراس کی طرف لوٹنا ہے ،وہ آسان اور زمین کی ہر ہر چیز کاملم رکھتا ہےاور جوتم چھپا ؤاور جو تم ظاہر َ مرو، وہ اس کو جانتا ہے اور القد تو ولول کے راز ول لیعنی اسرار ومعتقدات کو بھی جانتا ہے اے کفار مکد! کیا تمہارے پاس پہلے کا فروں کی خبریں نہیں پہنچیں؟ جنہوں نے اپنے اٹمال کا وبال یعنی کفر کا انجام دنیا میں چکھ لیا اور آخرت میں ان کے لئے ور دناک مذاب ہے یا یعنی و نیا کا عذاب اس کئے ہے کدان کے پاس (بَسانَدۂ) میں تنمیر شان ہے ان کے رسول ایمان پر دالالت کرنے والی واضح دلیلیں لے کرآئے ، تو انہوں نے کہددیا کہ کیا انسان ہوری رہنمائی کرے گا؟ بشرے جنس بشر مراد ہے سوانکار ئر دیااور ایمان سے منہ پھیرلیااور اللہ نے بھی ان کے ایمان سے بے نیازی کی ، اللہ اپنی مخبوق سے بے نیاز ہے ، وہ اپنے افعال میں محمود ہے ان کا فروں نے خیال کیا کہ دوبارہ ہ تر نہ اٹھائے جا تمیں گے ، ان مسخففہ من الثقیلہ ہے اس کا اسم محذوف ہے ای اُلھے، آپ کہدد بیجئے کہ کیول نہیں؟ میرے رب کی تھم اہم دوبارہ ضروراٹھ نے جاؤگے، پھرتمہیں تمہارے سے ہوئے اعمال کی خبر دی جائے گی اور اللہ کے لئے بیہ بالکل آسان ہے سوتم اللہ پراور اس کے رسول ﷺ پراورنور یعنی قرآن پر جس کوہم نے نازل کیا ہےا یمان لے آؤجو کچھتم کرتے ہوالقداس ہے باخبر ہےاس دن کو یاد کروجس دن تم کوجمع کرنے کے دن لیعنی قیامت کے دن جمع کر بگاو ہی دن ہے بار جیت کا مومنین کا فروں کو ہرادیں گے جنت میں ان کے گھروں کواوران کے اہل کو لے کر،اً سر وہ ایمان لاتے اور جو محض اللہ پر ایمان لا یا اور نیک اعمال کئے اللہ اس کی برا نیاں دور کریگا اور اس کوالی جنت میں داخل کرے گا جس میں نہریں جاری ہوں گی اس میں ہمیشہ رہیں گے، یہی بہت بڑی کامیا لی ہےاورجنہوں نے کفر کیا اور ہماری آیتوں قر آن کو حجمثلہ یا یہی لوگ جہنمی ہیں ،جہنم میں ہمیشہ ہمیشہ رہیں گے اور بیہ ان کا ہُر اٹھ کا نہ ہے۔

جَيِقِيق تَرْكَيْ لِيَهُ الْمِينَ الْمُ لَفْسِيلُ لَفْسِيلُ فَوْلِلِ

سورۂ تنی بن کی ہے سوائے یٹاٹیھا الگیڈیس آمنگوا اِنَّ مِنْ اَذْوَاجِکُمْ وَاَوْ لَادِکُمْ الْحَ کے بیآیت مدینہ میں عوف بن مالک کے بارے میں نازل ہوئی۔

قِوَلَ إِنَّى اللهُ الْمُهُلُكُ وَلَهُ الْحُمْدُ وونول مِين جارمِح وركوهم كائتُ مقدم كياً ميا جاس لئے كه قيق ملك اور قيقى حمد الله بى كى ہے، اگر چەمجازى طور پرغير الله كى بھى ملك وحمد ہوتى ہے۔

فِيَوْلِكُ ؛ وهُوَعَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ بِمِاقِبِلَ كَ وَيَلَ كَ طُورِ بِ بِ-

فِيْوَلِينَ ؛ فَذَاقُواْ اس كاعطف كَفَرُوا برب، يعطف مسبب على السبب كيبيل سے به اس سے كه كفر، ذوق وبال كا

فِيُولِكُ : وَبَالَ ثُقِلَ ، شدت ، اعمال كَ ختر ا (كُورُه) __

فَيُولِنَى ؛ أُرِيْدَبِه الجنس ال عبارت كاضافه كامقصد بَشَو اور يَهْدُوننا بين مط بقت تابت كرنا بي كهاج سكتاب كه ايك سوال مقدر كاجواب ب-

فَيُولِكُنَّى : رَعَمَر متعدى بدومفعول إور لَنْ يُبْعَثُوا تائم مقام دومفعواول كرجه

يولى، رصرو مدن براك ورَسُولِه يمك كافرول عضطاب ما وروا عبوا براقع ما وروا تع ما ورشر طائحذوف م أى الحَمْرُ كذالك فَآمنوا. إذَا كَانَ الْأَمْرُ كذالك فَآمنوا.

تفسيروتشئ

یُسَبِّے لِلْہِ مَا فِی السَّمٰوَاتِ وَمَا فِی الْاَدْضِ آسان اورزمین کی ہرمخلوق اللہ تعالی کی ہرتقص وعیب سے تنزیداور تقدیس بیان کرتی ہے،زبان حال ہے بھی اورزبان قال ہے بھی۔

لَهُ الملكُ ولهُ الْحمد (الآیة) یہ پوری کا ننات ای کی سلطنت میں ہے اً سرک کوکوئی اختیار حاصل بھی ہے تو وہ ای کاعطا کردہ ہے جو عارضی ہے ،اگر کسی کے باس کچھ حسن و کمال ہے تو ای کے مبدأ فیض کی سرم گستری کا بتیجہ ہے جب جا ہے۔ سلب کرسکتا ہے اس لئے اصل تعریف کا مستحق بھی صرف وہی ہے۔

بھی اللہ ہی ہے کیکن ایمان اس مومن کا کسب وعمل ہے جس نے اسے اختیار کیا ہے اوراس کسب وعمل پر دونوں کو ان کے عملوں کےمطابق جزاوسزا ملے گی کیونکہ وہ سب کے مل کود کیچر ہاہے۔

انسانوں کی صرف دوہی قشمیں ہیں:

قر آن حکیم نے انسانوں کو دوگر وہوں میں تقلیم کیاہے، کا فراورمومن ،جس سے معلوم ہوا کہ اولا دآ دم سب ایک برادری ہے اور دنیا کے پورے انسان اس براوری کے افراد ہیں ،اس برادری کو دوگر وہوں میں تقتیم کرنے والی چیز صرف کفر ہے جو مخص کا فر ہوگیا اس نے انسانی براوری کا رشتہ توڑویا، اس طرح بوری ونیا میں انسانوں میں تحزب اور گروہ بندی صرف ایرن و کفر کی بنایر ہوسکتی ہے، رنگ اور زبان ، نسب وخاندان ؛ وطن اور ملک میں ہے کوئی چیز ایسی نہیں کہ جوانسانی برادری کومختنف گروہوں میں بانث دے، ایک باپ کی اولا دا گرمختلف شہروں اور علاقوں میں بسنے لگے یامختلف زبانیں بولنے لگے یاان کے رنگ میں تفاوت ہوتو وہ ایگ الگ گروہ نہیں ہوجائے ، اختلاف رنگ وزبان وطن وملک کے باوجود بیسب آپس میں بھائی ہی ہوتے ہیں ، کوئی شمجهدارانسان ان کومختلف گروه قرارنبیس دے سکتا۔ (معادف)

بد بودارگعره:

ایک مرتبہ پانی کے معاملہ میں ایک انصاری اور مہاجر کے درمیان جھگڑا ہوگیا ،نوبت زبانی تکرارہے بڑھ کر، ہاتھا پائی تک پہنچا گئی انصاری نے انصار کواور مہاجر نے مہاجرین کو مدد کے لئے یکارا، دونوں طرف سے لوگ جمع ہو گئے مسلمانوں میں فتنہ بر یا ہونے کا خطرہ پیدا ہوگیا، جب آپ بین علیہ کواس کی اطلاع ہوئی تو آپ بین میں موقع پرتشریف لے گئے اور سخت ناراضی کے ساتھ فرمایا'' مَا بَالُ دعوی الجاهلية'' بيجابليت كانعره كيها ہے؟ اورآب بَلِين الله الله عنوها فَإِنَّهَا مُنْتِنَةً" السنعرة كوچهور ووبيبد بودار ___

وَ صَوَّدَ كُمْهِ فَأَحْسَنَ صُوَدَ كُمْهِ الله في تنهاري صورتيس بنائيس اور بهترين صورتيس بنائيس ،صورت كرى در حقيقت خالق كا كنات كى ايك مخصوص صفت ب، اى لئے اساء البيرين الله تعالى كانام مُصَوِّدُ آيا ہے، غور كرونو كا كنات ميں كتني اجناس مختلف ہیں اور برجنس میں کننی انواع مختلفہ ہیں کسی کی شکل صورت کسی ہے ہیں ملتی ،ایک انسان ہی کو لے کیجئے کہ انسانی چہرہ جو چھسات مربع الحج ہے زیادہ کانہیں ،اربوں انسانوں کا ایک ہی تھم کا چبرہ ہونے کے باوجودا کیک کی صورت بالکلید دوسرے ہے نہیں تتی کہ بہنچاننا دشوار ہوج ئے، مذکورہ آیت میں انسان کی بہترین صورت گری کوبطور احسان ذکر فرمایا ہے یعنی شکل انسانی کوہم نے تمام کا سنت میں سب صورتوں سے زیادہ حسین بنایا ہے ،کوئی انسان اپنی جماعت میں خواہ کتنا ہی بدشکل اور بدصورت کیوں نہ مجھ ج تا ہو گر باتی تمام حیوانات کی اشکال کے اعتبار سے وہ بھی حسین ہے "فَعَبَار کَ اللَّهُ اَحْسَن المحالقين".

يَوْهَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذَلِكَ يَوْمُ التغابن قيامت كُوْ يوم الجُمْعُ "اس لِحَكَها كياب كماس ون اولين و "خرين ايك

بی میدان میں جمع کئے جا کمیں گے،اوراس دن کو بوم التغابی، خسارہ کا یابار جیت کا دن، اس لئے کہا گیا ہے کہ اس دن ایک گروہ نقصان میں اورایک گروہ فا کدے میں رہے گا یا ایک گروہ جیت جائے گا اور دوسرا گروہ ہارجائے گا ،اہل حق باطل پر ،اہل ایمان اہل کفر پر اور اہل طاعت اہل معصیت پر سبقت لے جا کمیں گے ، سب سے بڑی جیت اہل ایمان کو بیر حاصل ہوگی کہ وہ جنت میں داخل ہوجا کمیں گے اور وہاں ان گھروں کے بھی ما لک بن جا کمیں گے جو جہنمیوں کے لئے ہتے اگروہ ایمان لاتے ، اور سب سے بڑی ہار جہنمیوں کے گئے ہتے اگروہ ایمان لاتے ، اور سب سے بڑی ہار جہنمیوں کی ہوگی میر کو ہوجا کمیں گے جنت میں جو نعتیں رکھی تھیں (اگروہ ایمان لاتے) ان سے محروم ہوجا کمیں گے جاتی بھی این ہایں معنی نقصان محسوں کریں گے کہا گروہ دنیا میں اور زیادہ نیک ممل کرتے تو ان کی نعتوں میں اور زیادہ اضا فہ ہوتا۔

مفلس کون ہے؟

صحیح مسلم اور تر ذی وغیرہ میں حضرت ابو ہر یرہ وقع کا نشان تھا گئے ہے دوایت ہے کہ رسول القد یکھ کا نے محابہ وفع کا نشان تھا کھنے ہے سوال کیا کہ تم جانے ہو مفلس کون ہے؟ صحابہ وفع کا نظام کے خاص کیا جس شخص کے پاس مال ومتاع نہ ہوتو ہم اس کو مفلس سجھتے ہیں، آپ یکھ کے خاص الے انداز ، روزہ، زکو ہ وغیرہ وغیرہ سجھتے ہیں، آپ یکھ کے خاص کے درنا یا میری امت کا مفلس وہ تحص ہے جو قیامت ہیں اپنے اعمال صالح نماز ، روزہ، زکو ہ وغیرہ لیکر آئے گا مگر اس کا حال یہ ہوگا کہ و نیا ہیں کسی کو گائی دی ہوگا ، کسی کو ہرایا قتل کیا ہوگا ، کسی کا مال غصب کیا ہوگا ، کسی کا مال غصب کیا ہوگا ، کسی کا مال غصب کیا ہوگا ، کسی کا دونہ ہوگا کہ و نیا ہیں کسی کہ کہ کہ اور کوئی روزہ لے جائے گا تو کوئی اس کی نماز لے جائے گا اور کوئی روزہ لے جائے گا تو کوئی اس کی نماز سے جائے گا جب اس کی تمام نیکیاں ختم ہوجا نمیں گی تو مظلوموں کے گناہ اس ظالم پر ڈال دیئے جائیں گئی تو مظلوموں کے گناہ اس ظالم پر ڈال دیئے جائیں گئی تو مظلوموں کے گناہ اس ظالم پر ڈال دیئے جائیں گئی اور ان کا بدلہ چکا دیا جائے گا جب اس کی تمام نیکیاں ختم ہوجائیں گئی تو مظلوموں کے گناہ اس ظالم پر ڈال دیئے جائیں گئی اس کی نماز کے جائے گا۔

مَا اَصَابَ مِنْ مُصِيْبَةِ الْآبِاذِنِ اللّهِ بقضائه وَمَنْ يُوْمِنْ بِاللّهِ في قوله ان المُصِينة بقضائه يَهُ وَلَيْهُ اللّهُ اللّهُ وَاللّهُ بِكُلّ مَنْ وَعَلِيْهُ وَاللّهُ بِكُلّ اللّهُ اللّهُ وَاللّهُ بِكُلّ اللّهُ اللّهُ وَاللّهُ بِكُلّ اللّهُ اللّهُ وَعَلَيْهُ وَاللّهُ بِكُلّ اللّهُ اللّهُ وَاللّهُ بِكُلُ اللّهُ اللّهُ وَاللّهُ وَعَلَيْهُ اللّهُ وَاللّهُ اللّهُ وَاللّهُ اللّهُ وَاللّهُ اللّهُ وَاللّهُ اللّهُ وَاللّهُ اللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ اللّهُ وَاللّهُ اللّهُ وَاللّهُ اللّهُ وَاللّهُ وَا اللّهُ وَاللّهُ وَا اللّهُ وَاللّهُ وَا

وَيَغْفِرْلَكُمْ مَا يِشَاءُ وَاللَّهُ شَكُورٌ بُحِرِ مِنِي الصَّامَةِ حَلِيْمٌ فِي العِمَابِ مِنِي المغتسيه غِلْمُ الْغَيْبِ السر وَالشُّهَادَةِ العلانية الْعَزِيْزُ في سُلكه الْحَكِيْمُ في سُلعه

ترجيم ؛ كونى مصيبت قضاء البي ك بغير نبيل بينج عتى جوالله پر اس بات پر ايمان ركھتا ہے كه مصيبت تقدير البي بي ے آتی ہے تو القد تعالی اس کے دل کو اس مصیبت برصبر کی بدایت دیتا ہے اور القد ہر شن کا جانبے والا ہے (اے لوگو!) القد ک اطاعت کرواوررسول پین کلیا کا طاعت کرواورا گرتم روگردانی کرو گئو جمارے رسولوں پرتو صرف صاف پینچادینا ہے، التدمعبود برحق ہے،اس کے سواکوئی معبود تبیں اور مومنوں کو جائے کہ القدیر بھمروسہ کریں ،اے ایمان والو!تمبیاری بعض بیویاں اور بعض بچے دشمن ہیں پس ان ہے ہوشیار رہو کہ خیرے چھپے رہنے ہیں ان کی بات نہ مانو ،مثلاً جہاد و بجرت (وغیر ہ میں) آیت کے نزول کا سبب ان باتوں میں اطاعت کرتا ہے اورا ً رتم ان کو اس خیر ہے تم کورو کئے کو معاف کروو حال یہ ہے کہ وہ تمہاری جدائی کی مست جدائی کی مشقت بیان کریں، اور درگذر کردو، اور معاف کردونو القد تعالی غفور رحیم ہے، تمبارے مال اور تمباری اولا دسرا سرتمهاری آزمائش ہیں اورانٹد کے پاس بڑا اجر ہے الہذا مال واولا وہیں مشغول ہوکراس کوفوت نہ کروجس قدر ہوسکے امتد ے ڈرتے رہو بیآیت اتَّفُوا اللّٰه حَقَّ تُفَاتِه کے لئے نائے ہے،اورجس بات کاتم کو تکم کیاجائے اس کوشیم کرنے کے طور پر سنواورا طاعت کرواوراس کی اطاعت میں خرج کرو، جوتمہارے لئے بہتر ہے (حَیْسرًا) یے شکسن مقدر کی خبر (اور جملہ ہوکر) ا سفِی قُدوْ ۱ امر کا جواب ہے اور جو تخص اپنے نفس کی حرص ہے محفوظ رکھا جائے وہی کا میاب ہے ،ا اً مرتم القد کوا چھا قرض دو گے اس طریقہ پر کہ طبیب خاطر سے خرج کرو گے تو وہ اس کوتمہارے لئے بڑھا تارہ گااورایک قراءت میں (یُسطَ عَفُ اُہ) تشدید ک ساتھ صیغة افراد کے ساتھ ہے دل ہے سات سواوراس ہے بھی زیادہ اور جوجا ہے گا (تمہارے گذہ بھی) معاف فرمادے گا،اللہ بر اقد ردان ہے لیعنی طاعت پر اجر دینے والا برد بار ہے معصیت پر سز اوینے میں ، غائب اور حاضر کا جاننے والا ہے اپنے ملک میں غالب ہے اورا پی صنعت میں باحکمت ہے۔

عَجِفِيق الرَّدِي لِيَسَهُ الْحَاقِظَ الْفَيْسَارِي فَوَالِدٍلْ

فِيْكُولِكُنَّى ؛ مَا أَصَابَ مِنْ مُصِيْبَةٍ ، أَصَابَ كَا أَحَدًا مفعول برمحذوف إور مِنْ مُصِيْبةٍ ، مِنْ كَ زيادتى كرماته أَصَابَ كافاعل ب، تقرّر عبارت بيب مَا أصَابَ أَحَدًا مُصِيْبَةٌ.

فِيُولِكُم ؛ في قوله اي في قول القائل.

فِيُولِكُنُّ ؛ فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ اس كى جزاء محذوف بي تقدير عبارت يه بوكى فإنْ تَولَّيْتُمْ فَلَا ضَيْرَ وَلَا بَأْسَ عَلَى رَسُولْنَا فِيْوُلِكُ ؛ فإنَّما عَلَى رَسُولِنَا جِزاء كدوف كَ علت بـــ فِيُولِكُ : الله لا إله إلا هُوَ، الله مبتداء إور لا إله إلا هُوَ اس كَ خرب-

فِيُولِكُ ؛ أَنْ تُسطِيْهُ هُوهُ مَرْ السَّمَارة كَامْقَصْدال بات كَاطرف اشاره كرنا ب كهمضاف محذوف ب يعني الر تہماری از واج اوراولا دکار خیر میں آڑے آئیں تو ان کی احاعت ہے اجتناب کرو، بیآیت کہا گیا ہے کہ عوف بن مالک انجعی کے بارے میں تازل ہوتی ہے۔

فِيَوْلِكُنَّ : حَبْرُ يَكُنْ مُقَدَّرَةٍ لِين حَيْرًا، يكن مقدركى خبرب، اوربعض حضرات ني كها ب كفعل محذوف كامفعول بهب، تقدر عبارت میہ در کی یو تِکُفر حَنیرًا اور یہی اُولی ہے اس کئے کہ تکانَ اور اس کے اسم کا حذف مع بقاء الخبر ، إن اور أو كے بعد اکثر ہوتا ہے، بین اپنے اسم وخبر ہل کر آنفقو ا امر کا جواب ہے۔

فِيْوَلِينَ اللَّهُ كُلُّ الرَّص الله باب عَلِمَ وضَرَبَ كامصدرب شُعَّ خاص طورت اليي بخيلي كوكت بين جوعادت بن كني مور

تَفَسِّيرُوتِشِّنَ عَ

شان نزول:

كها كيا بي الماسة يت كي نزول كاسب كافرول كاليقول تفاكه "لكو كلانَ مَا عَلَيهِ المسلمون حَقَّ لصَانهُم الله من السه حسانيب في المدنيا" اگرمسلمانون كاند هب حق بهوتا،تو دنيا مين ان كومصيبت اورتنگي نه پنچق، (فتح القدير) قلب كومصيبت کے وقت ہدایت دینے کا بیمطلب ہے کہ قلب میں مجھ جاتا ہے کہ بیمصیبت القدہی کی طرف سے ہے، جس کی وجہ سے اس پر صبركرنايآ سان ہوجا تا ہےاور ہے ساختذال كے منہ سے "إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا اِلْمَيْهِ رَاجِعُونَ" نَكُل جاتا ہے۔

وَ أَطِيْعُوا اللَّهِ وَاطِيْعُوا الرَّسُولَ فَانْ تَوَلَّيْتُمْ فَانَّمَا عَلَى رَسُولِنَا الْبَلَاعُ الْمُبِيْنُ لِيحَى أَرْتُم التداوراسَ كرسول کی اطاعت ہے روگردانی کرو گے تو ہمارے رسول بیتی تاہ کا اس ہے پچھ نبیس بگڑے گا، کیونکہ اس کا کام تو صرف تبکیغ ہے، امام ز ہری رَجْمَ کُلدنلهُ مَعَالیٰ فرماتے میں اللہ کا کام رسول بھیجنا ہے، رسول کا کام بلیغ ہے، اور لوگوں کا کام تسلیم کرنا ہے۔

(متح القدير)

شان نزول:

يَـٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوْ الِنَّامِنْ أَزْوَا جَكُمْ وَأَوْلَا دِكُمْ عَدُوّ الكمر فاخْذَرُ وْهُمْ ترتدى، حاكم اورابن جريرنے ابن عباس تَعْمَالِنَا لَهُ النَّالِيَا اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللّ مدینہ جمرت کا ارادہ کیا تو ان کے بیوی بیچے آ ڑے آ ہے اور روکنے کی کوشش کی ،مگروہ پھربھی ہجرت کر کے مدینہ آپ بیلنظیم کی خدمت میں پہنچ گئے وہاں جا کرلوگوں کو دیکھا کہ انہوں نے وین میں کافی تفقہ حاصل کرلیا ہے اس سے ان کو کار خیر میں پیچھے رو جانے کی وجہ سے رنج ہوا تو انہوں نے اپنے بچوں کو جو کہ اس کار خیر میں حارج ہوئے تھے سزاویے کا ارادہ کیا تو القد تعالیٰ نے مذکورہ آیت نازل فرمائی۔ (دوح المعانی)

اورعطاء بن الی رہاح نفخ انتفاقی ہے مروی ہے کہ عوف بن مالک اشجعی نے نبی یکی تاتی کے ساتھ نفز وہ کرنے کا ارادہ کیا ،ان کے بیوی بچوں نے مل کران کوغز وہ میں جانے سے روک لیا اور جدائی کواپنے لئے شاق اور نا قابل برداشت بتایا ،
بعد میں جب عوف بن مالک کو تنب اور ندامت :وئی تو اپنے بیوی بچول کوسز او بے کا ارادہ کیا ،اس سلسلہ میں فدکورہ آیت نازل ہوئی۔ (دوح المعانی)

وَاِنْ مَنْعَفُوا و مَصْفَحُوا وَمَغْفِرُوا فَاِنَّ اللَّه عَفُورٌ رَّجِيْمٌ سابقة آیت میں جن کے بیوی بچول کودشمن قرار دیاہے،ان کو جب اپنانطی پر تنبہ بواتھ تو ارادہ کیاتھا کہ آئندہ اپنائل وعیال کے ساتھ بختی اورتشد دکا معاملہ کریں گاس پر آیت کا ساحہ میں بیارشاد نازل ہوا کہ اگر چان کے بیوی بچول نے تمہارے لئے دشمن کا ساکام کیا ہے کہ تمہارے لئے فرض ہے مانع ہوئے مگراس کے باوجودان کے ساتھ تشد داور ہے رحی کا معاملہ نہ کر و بلکہ عفود درگذراور معافی کا برتاؤ کر ویہ تمہارے لئے بہتر ہے کیونکہ التدتی کی ک وت بھی مغفرت اور جمت ک ہے۔ (معارف)

اِنَّمَا اَمُوَ الْکُمْرُواَوْ لَا دُکُمْرُواَوْ لِاَدُ اَلَالِهُ اِللَّهُ عَلَیْمُهارے اموال اور اولا دجوتہ ہیں کسب حرام پراکساتے اور اللہ کے حقوق آ اوا کرنے ہے۔ روکتے ہیں تنہاری آ زمائش ہیں ، پس اس آ زمائش ہیں تم اس وقت سرخ روہو کتے ہو جب کہ تم اللہ کی معصیت ہیں ان کی اطاعت نہ کرومطلب ریہ ہے کہ مال واولا وانسان کی آ زمائش کا ذریعہ ہوتے ہیں ، بید دونوں چیزیں جہاں اللہ تعالیٰ کی نعمت ہیں وہیں انسان کی آ زمائش کا ذریعہ بھی ہیں۔



اللَّهُ الْكَلْفِ مِنْ وَهِي الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ وَفِي الْمُوعِالِيَّةُ وَفِي الْمُؤْعِا

سُورة الطَّلَاقِ مَدنِيَّة ثَلَاثَ عَشرَة اية. سورة طلاق مدنى ہے، تیره آبیتی ہیں۔ •

بِسْ حِرَاللَّهِ الرَّحْ لِمُن الرَّحِيْ مِن الرَّحِيْ مِن الرَّحِيْ مِن الرَّحِيْ المُما اللَّهِي المُمرَادُ أُمَّتُ مَا مُعَدَهُ أَوْقُلَ لَهُمُ <u>إِذَاطَلَقْتُمُ النِّسَاءُ</u> اَرَدْتُـمُ الطَّلاقِ **فَطَلِقُوهُنَّ لِعِدَّتِهِنَ** لِاوَلِها بِأَنْ يِكُونَ الطلاقُ في طُهْرِ لم تَمُسَّ فِيْهِ لِنفسيره صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وسلَّم بدلِك رواهُ النِّينِحان وَأَخُواالْعِدَّةُ احْمِطُوْهَا لِتُراجِعُوا قَبُلَ فَرَاغِهَا <u>وَاتَّقُوااللَّهَ رَتَّكُمُّ الطِيعُوهِ فِي امْرِهِ وَنَهْبِهِ لَاتَّخْرِجُوهُنَّ مِنْ بُيُوتِهِنَّ وَلَايَخْرُجُنَّ سِنُهَا حَتَّى تَنْقَضِيَ عِدَّتُهُنَّ وَاللَّهُ وَلَا يَخْرُجُونَ سِنُهَا حَتَّى تَنْقَضِيَ عِدَّتُهُنَّ</u> **اِلْآآنْيَانَىٰيَالِيْنَىٰ بِفَالْحِشَةِ** رَنَّ **شُبَيِّنَةٍ ۚ** بِفَتْحِ الْيَاءِ وكَسُرِهَا اى بُيّنتُ او بَيّنةٍ فيَخْرُجُنَ لِاقَامَةِ الحَدِّ عَلَيْهِنَّ **وَيَلْكَ** المَذْكُورَاتُ حُدُودُاللَّهِ وَمَنْ يَتَعَدَّحُدُودَاللَّهِ فَقَدْظَلَمَ نَفْسَةٌ لَاتَدْرِي لَعَلَ اللَّهَ يُعْدِثُ بَعْدَذَٰ لِكَ آمْرًا ۞ مُرَاجَعَةً فِيما إذَا كَانَ وَاحِدَةً أُوثِنَتَيُنَ فَإِلَالِلَغُنَاجَلَهُنَّ قَارَئِنِ انْقِصَاءَ عَدَّنَهِنَّ فَأَمْسِكُوهُنَّ مَنُ تُزَاحِعُوهُنَّ بِمَعْرُونِ مِنْ غَيُر صرار ا**َوْفَارِقُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفِ ا**ُتُسرُ كُــوُهُــن حَنَّــى تـــُـقصى عِـدَتُهُنَّ وَلا تُنضَارُّوُهُنَّ بِـالْـمُواجَعَةِ وَّأْشِهِكُوْاذَوَى عَدْلِ مِنْكُمْ عَدى الرَّحْعةِ او الفرَاقِ وَاقِيمُواالنَّهَاكَةُ لِلْهِ لَـ لَـمُشْهُودِ عَلَيه اولَه وَلِكُمْ يُوعَظُيهِمَن كَانَ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وْوَمَنَ يَّـتَقِ اللهَ يَجْعَلَ لَا يَغْرَجًا ۚ سِن كَـرُب الـدُّسَـا وَالاخِرَةِ وَيَزُزُقُهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ يَخُطُرُ بِبَالِهِ وَمَنْ يَتُوكَلُ عَلَى اللهِ فَي أَمُورِهِ فَهُوَحَسُهُ ۚ كَافِيهِ إِنَّ اللَّهَ بَالِغُ أَمْرِمُ مُرَادِهِ وفِي قِرَاءَ وَبِالْإِضَافَةِ قُدُجَعَلَ اللهُ لِكُلِّ شَيْء كَرُخَاءِ وَشِدَّةٍ قَ**دُرُك** سِقَاتًا وَالْئِ بِهَـمْزَةٍ وِيَاءٍ وِبَلايَاءٍ في المَوْضِعَيْنِ يَيِّسْنَ مِنَ الْمَجِيْضِ معنى الخيص مِنْ نِسَايِكُمُ إِنِ التَبْتُمُ شَكَكُتُم فِي عِدْتِهِنَّ فَعِدَّتُهُ مَنَ ثَلَثَةُ ٱشْهُرِ وَالْيُ لَمُحِيضَنَّ لِصِعُرهِنَّ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلْثَةُ أَشُهُرِ والمَسْئَلَتَان فِي عَير المُتَوَفِّي عَنُهُنَّ أَرْوَاحُهُنَّ اما هُنَّ فَعِدَّتُهُنَّ ما في ايّةِ البَقَرَةِ يتَربَّصُنَ بِأَنْفُسِهِنَّ ا رُيْعَةَ اَشُهُر وعَشرًا وَأُولَاثُ الْأَمَالِ أَجَلُهُنَّ انْقِصاءُ عِدْتِهِنَّ مُطَلَّقَاتٍ او مُتَوَقِّى عَمُهُنَّ أَزُوَاجُهُنَّ أَنْ يَضَعِنَ حَمَّاهُنَّ وَمَنْ يَتَقِي اللهُ يَجْعَلْ لَذُمِنْ آمَرِهِ يُسُواْ فِي الدُّنْيَا وَالْاخِرَةِ فَلِكَ السَمَدُ كُورُ فِي العِدَّة أَمْرُ اللَّهِ حُكُمُهُ ۚ أَنْزَلُهُ الْيَكُمُّ وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهُ يَكُفِّرُ عَنْهُ سَيِّاتِهِ وَيُغْظِمُ لِلْهَ آجُرًا * ٱلْكِنُوفُنَّ اي السُمسَت مِنْ حَيْثُ سَكُنْتُمْ اى بغص مساكِنكُمُ مِّنْ قُجْلِكُمُ اى سعتكُمْ عطنتُ بيان او نذلُ سما قَبْلهُ باعادةِ الْحارَ ونقُدير مُصافِ اي اسْكَمة سَعَتِكُم لَا مَا دُونَها وَلَاتُضَاّرُوهُنَّ لِتُضَيِّقُواعَلَيْهِنَّ المسساكِم فيختخن الى الْخُرُوحِ أو المعقه مَهُ تَديْل مِنْكُمْ وَإِنْ كُنَّ أُولِاتِ مَنْ فَانْفِقُو اعَلَيْهِنَّ حَتَّى يَضَعْنَ مَلْكُنَّ فَإِنْ أَرْضَعْنَ لَكُمْ اولاد كُمْ مِنْهُنَ فَأَنُّوهُنَّ أَجُورُهُنَّ ا على الإرْصاع وَأَتْقِرُوْالْبَيْنَكُمُ وَلَيْلَقُنُ لِمُعْرُوْفِ لَهُ مَيْل في حَقّ الاوَلَاد بالنّوافق على الحر معلوم على الازضاع وَا**نْ تَعَاسُرُتُمْ تَ**صَالِيقُتُم في الارضاع فاستنع الابُ مِن الأخرة والأمَّ مِنْ فَعْدِه فَي**ُتُرْضِعُ لَهُ** للاب أُخْرِيَ^{هُ} وَلَاتُكُرَهُ الْأُمُّ عَلَى ارْضَاعِه لِيُنْفِقُ عِلَى الْمُظَنَّقَاتِ وَالْمُرْضِعِتِ **ذُوْسَعَةٍ فِرَّنَ سَعَتِهُ وَمَنَّ قُدِرَ** مُمبَق عَلَيْهِ رِزْقُهُ فَلَيُنْفِقُ مِمَّا اللَّهُ اللَّهُ اى عـــى قدره لايُكِلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّامَا اللّهَأَ سَجَعَلُ اللّهُ بَعْدَعُ بِرِيُّسُوّا أَ وقد حـــــه

ت رقیم است نی اوع کرتا ہوں اللہ کے نام سے جو بڑا مہر بان نہایت رحم والا ہے،اے نبی اوبعد کے قرینہ ہے مراد آپ ک امت ہے، یاس کے بعد قبل لَهُ هُر محذوف ہے(اے نبی! آپ این علیہ مسلمانوں سے کہنے) جب تم اپنی ہیو یوں کوطلاق دینے لگو تعنی طلاق وینا جا ہو تو تم ان کوطلاق عدت کے شروع وقت میں دو اس طریقہ سے کہ طلاق ایسے طہر میں ہو کہ جس میں قربت (وطی) نہ کی ہو، آنخضرت بین فیلی کے بیٹنسیر کرنے کی وجہ ہے، (رواہ الشیخان) اورتم عدت کو یا در کھو تا کہ عدت پوری ہونے سے مہلےتم رجوع کرسکو، اوراللہ ہے ڈرتے رہوجوتہ ہارا رب ہے اس کے امرونہی میں اس کی احاعت کرو ان عور تو ل کو ان کے مسکن سے نہ نکالواور نہ وہ خود اس سے تکلیس بیبال تک کہان کی عدت بوری ہوجائے ، الا بیاکہ وہ کوئی تھلی بے حیاتی کریں (زنا وغیرہ) یاء کے فتح اور کسرہ کے ساتھ بعنی ظاہریا ظاہر کرنے والی ہوں تو ان پرحدود قائم کرنے کے لئے ان کو نکالا جائے ، میہ ندکورہ سب اللہ کےمقرر کر دہ احکام بیں ، جو تخص احکام خداوندی ہے تنجاوز کرے گااس نے خود اپنے او پرطلم کیا تخجے کیا معلوم کہ شاید الله تعالی اس طلاق کے بعد مراجعت کی صورت نکال دے اس صورت میں جب که طلاق ایک یا دو ہوں پھر جب وہ (مطلقہ) عورتیں اپنی عدت گذارنے کے قریب پہنچ جائمیں لیعنی ان کی عدت گذرنے کے قریب ہوجائے تو ان کو قاعدہ کے مطابق بغیرضرر پہنچائے (رجعت کرکے) نکاتے میں رہنے دویا تا عدہ کےمطابق ان کور ہائی دولیعنی ان کوچھوڑ دو کہان کی مدت پوری ہو جائے ،اور(باربار) رجعت کر کے ان کوضرر نہ پہنچا ؤ،رجعت یا فرفت پر آپس میں ہے دومعتبر شخصوں کو گواہ بنا واورتم ٹھیکٹھیک بلا رورعایت کےاللّٰد کے لئے گوا ہی دو اورتمہاراارادہ کسی کونہ فائدہ پہنچانے کا ہواور نہ نقصان پہنچانے کا ، اس مضمون ے اس شخص کونصیحت کی جاتی ہے جواللہ پر اور روز قیامت پر یقین رکھتا ہواور جوشخص اللہ ہے ڈرتا ہے اللہ اس کے نجات کی شکل نکال دیتا ہے بعنی دنیا وآخرت کی تکلیف ہے، اور اس کوالیم جگہ ہے رزق پہنچا دیتا ہے جہاں ہے اس کا گمان بھی نہیں ہو گالیعنی

اس کے دل میں خیال بھی نہیں آتا، جو تخص اپنے کا مول میں القد پر بھروسہ کر ۔۔ گا تو وہ اس کے لئے کافی ہے اللہ تعالی اپنا کا م یعنی مراد پوری کر کے رہتا ہے اور ایک قراءت میں اضافت کے ساتھ ہے اللہ تعالی نے ہرشی مثلاً فراخی اور شدت (شکلی) کا ایک وقت مقرر کرر کھا ہے اور تہماری وہ بیویاں جو حیض ہے ناامید ہوگئی ہیں (وَ الْسلآئِسی) میں ہمز ہ اور یا ءاور بلایا ء کے دونوں جگہ، اگرتم کوان کی عدت کے بارے میں شک ہوتو ان کی عدت تین مہینے ہے (اوراس طرح) وہ عورتیں کہ جن کو صغرتی کی وجہ ہے حیض نہیں آیا تو ان کی عدت بھی تنین ماہ ہے مذکورہ دونو ل مسئلے ان عورتوں کے ہیں کہ جن عورتوں کے شوہروں کی وفات نہ ہوئی ہو،ابرہی وہ عورتیں کہ جن کے شوہرول کی وفات ہوئی ہے تو ان عورتوں کی عدت وہ ہے جس کا ذکر ''یَعَسرَ بِسَّسْطُ ان سأنْ فُسِهِنَّ أَرْبَعَةَ أَشْهُرِ وَعَشْرًا" مِن بِ اور حامله ورتول كى عدت خواه مطلق ت بول يا"مُتَوقى عَنْهُنَّ أَزُو الجُهُنّ ہوں ان کے اس حمل کا پیدا ہوجانا ہے اور جو تخص القدہے ڈرے گا القد تعالیٰ اس کے ہر کام میں دنیا وآخرت میں آسانی فرہ دے گا عدت کے بارے میں جو مذکور ہوا بیالقد کا تھم ہے جو تنہارے یا س بھیجا ہے جو تخص امتد ہے ڈرے گا اللہ تعالی اس کے گنا ہوں کو دور فر ، د ہے گا اور اس کو اجرعظیم عطا فر مائے گاتم ان مطلقہ عورتوں کو اپنی وسعت کے مطابق رہنے کا مکان دو جہال تم رہتے ہو یعنی اپنی گنجائش کےمطابق نہ کہ اس سے کم اور گھر میں ان پر تنگی کر کے ان کو تکایف مت ، ب_و و کہ وہ <mark>نکلنے یا</mark> نفقہ پرمجبور ہوجا کمیں کہ وہ تمہارے پاس سے چل جائیں اور اگروہ (مطلقہ) عورتیں حاملہ ہوں تو بچہ کی ولادت ہونے تک ان کوخر ج دو پھروہ عورتیں (مدت کے بعد)ان ہے تمہاری اول دکو دودھ پلائیں تو تم ان کو دوھ پلائی کی اجرت دواور آپس میں اولا دے حق میں من سب طور پر مشورہ کرلیا کرو دودھ بلائی کی اجرت معرد فیہ پراتفاق کر کے اور اگرتم دووھ بلانے کے معاملہ میں یا ہم کشکش (تنفی) کرو گے تو ہاپ اجرت دینے ہے اور مال دودھ پلانے ہے رک جائیں گےتو باپ کے لئے کوئی دوسری عورت دودھ بلائے گی اور مطلقات اور مرضعات پر وسعت والے کواپنی وسعت کے موافق خرج کرنا جاہئے ، اور جس کو (اللہ نے) تنگ روزی بنایا ہوتو اس کو جاہئے کہ القدنے جتنا اس کوعطا کیا ہے اس میں ہے خرج کرے ، القد تع کی کسی کو اس ہے زیادہ مکلّف نہیں بنا تاجتناس کودیا ہے خداتعالی جلدی ہی تنگی کے بعد فراغت عطافر مائے گا، اور بل شبہ فتو حات کے بعداس نے ایسا کردیا۔

عَجِقِيق تَرْكِيكِ لِيَسَهُ الْ تَفْيِلَا يُحْوُالِل

قِوَلْنَى: بِقرِيْنَةِ ما بَعدَهُ. مابعد عمرادإذا طَلَقْتُمُ النِّسَاءَ إلى لَحَ كداس مين صيعة بجمع استعال مواج سيمراد امت ہے اور یہ بھی ہوسکتا ہے کہ خطاب آپ مان علیہ ہی کو ہواور حکیک فیڈم جمع کا صیغہ بطور تعظیم لایا گیا ہو، اَوْ قُسل لَهُمْرِ ہے احتمال ٹائی کا بیان ہے۔

فِيَوْلِكَى: اَدَدْتُهُ الطَّلَاقَ اسْعبارت كاضافه كامقعدا يك شبه كاازاله ب، شبه بوتا ب كه إذَا طَه لَفُتُهُ البِّسَاءَ فَطَلِّقُو هُنَّ مِين ترتب شي على نفسه لازم آر ہا ہاور پخصیل عاصل ہے جومحال ہاس لئے کھی کاحمل خودا پنے اوپردرست نہیں ہوتا ،اس شبہ کودفع کرنے کے لئے مفسرعلام نے اردتم الطلاق کااضافہ فرمایا، تاکہ تو تب شئ علی نفسه کاشبہ تم ہوجائے۔

فَيْوَلْكَى: لِأَوَّلِهَا، أَى فِيهِ أَوَّلِ الْمِدَّةِ لِعِنْ عدت كاول وقت مِن اورعدت كاوقت امام شافعى رَيِّمَ كاللهُ اَعَاكَ اورا، مما لك رَيِّمَ كُلْللهُ اَعَاكَ كَ نزد يك طهر كا وقت مِ مطلب بيه به كه اول طهر مين جس مين قربت نه كى بوطلاق دو، بيتفيرا، م ش فعى رَيِّمَ كاللهُ اَعَاكَ كِمسك كِمطابِق مِ

قِيَّوْلِيَّى: بُيِّنَتْ او بَيِّنَةٍ يه مُبَيَّنَهُ بفتح الياء اور بكسر الياء كي قراءت كي تشريح بهيِّنَتْ فتى كي صورت مين اور بيَّنَةٍ كره كي صورت مين اور بيَّنَةٍ كره كي صورت مين _

فَيُولِن ، احفظوها، اى إحفظوا وقت عِدَّتِهَا لِين اس وثت كويا در كموجس بس طلاق واتع مولى بـــ

فِيُولِكُ ؛ ذَلِكُمْ يُوعَظُ بِهِ ، اى المذكور من اول السورة إلى هُذَا.

فِيُولِلْ ؛ وَمَنْ يَتَقِ اللَّهُ يَجْعَلُ لَهُ مَحْرَجًا بيادكام ناء كدرميان جملة معترضه -

قِيُولِكُ ؛ وَاللَّائي مبتداء إور فَعِدَّ تُهُنَّ اس كَ خبر -

فَيُولِكُنَى ؛ إِنِ ارْتَبُنُمْ شرطَ إِدراس كاجواب محذوف ب اى فاغلَمُوا انَّهَا ثلثة اَشْهو شرطاورجواب شرط جمله معترضه بي ،اوري بي بوسكتا ب كه فعِدَّ تُهُنَّ جواب شرط بو

فِيُولِكُ ؛ أُولَاتُ الْاحْمَالَ مبتداء بِ أَجَلَهُنَّ مبتداء ثانى بـ

فِيُولِينَى ؛ أَنْ يَصَعَنَ الله مبتداء ك خبر إور مبتداء الى الى خبر الى كرمبتداء اول كى خبر بـ

تِفَيِّدُرُوتِشِيْنَ فَيَ

نام:

اس سورت کانا م الطلاق ہے، بلکہ بیاس سورت کے مضمون کاعنوان بھی ہے حضرت عبداللّٰہ بن مسعود رَافِقَالْنَهُ عَالَیْ ہے۔ اس کا دوسرانا م، سورۃ النساءالقصر کی، چھوٹی سورۂ نساء بھی منقول ہے، مضمون سے معلوم ہوتا ہے کہ اس سورت کا نزول سورۂ بقرہ کی ان سیات کے بعد ہوا ہے جن ہیں طلاق کے احکام پہلی مرتبہ دیئے گئے تھے۔

۔ اس سورت کے احکام کو بیجھنے سے پہلے ضروری ہے کہ ان مدایات کو ذہن شین کرلیا جائے جوطلاق اور عدت سے متعلق اس سے پہنے قرآن میں بیان ہو چکی ہیں۔

المَوْزَم بِهَالسَّرن ﴾

طلاق دوبارہ، پھریا توسید ھی طرح عورت کوروک لیاجائے یا پھر بھلے طریقے سے رخصت کردیا جے۔

🕜 اورمطلقة عورتیں (طلاق کے بعد)اپنے آپ کوتین حیض تک رو کے رکھیں اوران کے شوہراس مدت میں ان کو (اپنی ز و جیت میں) واپس لے لینے کے حقد ار ہیں اگروہ اصلاح پر آمادہ ہوں۔ (البقرہ، ۲۷۸)

پھراگروہ (تیسری ہار)ان کوطلاق دیدیں تو اس کے بعدوہ اس کے لئے حلال نہ ہوں گی جب تک کہ اس عورت کا نکاح کسی اوريت شهوجائے ۔ (البقرہ، ۲۳۰)

🗃 جبتم مومن عورتوں سے نکاح کر دپھرانہیں ہاتھ لگانے سے پہلے طلاق دید دتو تمہارے لئے ان پر کوئی عدت لازم تہیں ہے جس کے بورا کرنے کاتم مطالبہ کرو۔ (الاحزاب ٤٩)

🕜 اورتم میں سے جو ہوگ مرجا ئیں اور پیچھے ہیویاں چھوڑ جا ئیں تو وہ عورتیں جار ماہ دس ون اسپینے آپ کورو کے رکھیں۔

ان آیات میں جوتو اعدمقرر کئے گئے منصے وہ مندرجہ ذیل ہیں۔

- 🛈 مرداینی بیوی کوزیادہ سے زیادہ تین طلاق دے سکتا ہے۔
- ایک یا دوطلاق کی صورت میں مرد کوعدت کے اندر رجوع کرنے کاحق رہتا ہے، اور عدت گذر ج نے کے بعد اگروہی شوبراس عورت سے نکاح کرنا جا ہے تو کرسکتا ہے اس کے لئے تحکیل کی کوئی شرط ہیں ہے۔
- 🗗۔ مدخولہ عورت جس کوحیض آتا ہواس کی عدت رہے کہا ہے طلاق کے بعد تین حیض آج نے تک چھوڑے رکھے ، ایک یا دوصری کا طلاق کی صورت میں شو ہر کو مدت کے اندرر جوع کاحق حاصل ہوگا، تین طلاق کے بعدر جعت کاحق باقی تہیں رہتا۔
- 🕜 غیر مدخولہ عورت جسے ہاتھ لگانے ہے پہلے ہی طلاق دیدی جائے اس کے لئے کوئی عدت نہیں وہ چاہے تو طلاق کے فوراً بعد نکاح کرشتی ہے۔
 - 🙆 جسعورت کاشو ہر مرجائے تواس کی عدت جار ماہ دس دن ہے۔

سورهٔ طلاق کے نزول کا مقصد:

سورہ طلاق کے نزول کے دومقاصد ہیں:

🕕 ایک بیکہ مرد کو جوطلاق کا اختیار دیا گیا ہے اس کو استعمال کرنے کے حکیمانہ طریقے بتائے جو نمیں ،جن ہے حتی ار مکا ن جدائی کی نوبت ہی نہآنے یائے اور اگر جدائی ناگز مرہوتو ایس صورت میں ہو کہ باہمی موافقت کے سارے امکا نات ختم ہو چکے ہوں، کیونکہ خدائی شریعت میں طلاق ایک ناگز برضرورت کے طور پر رکھی گئی ہے، ور نہ اللہ تعالیٰ اس بات کو سخت نا پسند فر ما تا ہے،

وسرامقصدیہ ہے کہ سورہ بقرہ کے بعد جومزید مسائل جواب طلب باتی رہ گئے تصان کا جواب دیکراسلام کے مائی تھا نون کے اس شعبہ کی تکمیل کردی جائے ، اس سلسلہ میں یہ بتایا گیا ہے کہ جن مدخولہ عورتوں کوچش آنا بند ہو گیا ہو یا جنہیں انہی حیض آنا شروع بی نہ ہوا ہو، طلاق کی صورت میں ان کی عدت کیا ہوگی ، اور جوعورت حامل ہوا ہے اگر طلاق دیدی جسے یا اس کا شوہر مرب کے تو اس کی عدت کیا ہے؟ اور محتلف شم کی مطلقہ عورتوں کی نفقہ اور سکونت کا انتظام کس طرح بوگا ، اور جس بیج کے والدین طلاق کے ذریعہ الگ ہوگئ ، اور جس بیج کے والدین طلاق کے ذریعہ الگ ہوگئ ، اور جس بیج کے والدین طلاق کے ذریعہ الگ ہوگئ ، اور جس بیج کے والدین طلاق کے ذریعہ الگ ہوگئ ، اور جس الکی رضاعت کا انتظام کس طرح کیا جائے ؟

یا آیگها النّبی اِذَا طَلَقْتُمُ النّبَسَاءَ فَطَلِقُوْهُنَ لِعِدَّتِهِنَ يَهال خطاب اگر چد بظاہر آپ بنوائن ہی کومعلوم ہوتا ہے گرمرادامت ہے،اس کی تائید طَلَقْتُمْ کے جمع کے صیغہ ہے تھی ہوتی ہے اگر چہدیمی درست ہے کہ طَلَقْتُمْ جمع کا صیغہ آپ یا اُنٹیلا ہی کے لئے تعظیم کے طور پر ہولا گیا ہو،امت کے مراد ہوئے کا ایک قرینہ یہ بھی ہے کہ جہ ل خاص طور پر آپ یا بنوائن الله مسول فرایا جاتا ہے اور جہال امت کو خطاب مقصود ہوتا ہے تو ہال اکثر یا اُنٹیکا الوّ مسول فرمایا جاتا ہے اور جہال امت کو خطاب مقصود ہوتا ہے وہ ب

اسلامی عائلی قانون کی روح:

اسل می کی تی تونول کی دوج بیہ کہ جن مردول اور عورتول میں از دوائی تعلق قائم ہودہ پائیدار اور عمر بھر کارشتہ ہوجی کے ان دونول کی دنیا اور آخرے دونول درست ہول، اور ان سے پیدا ہونے والی اولاد کے انمال وا خلاق بھی درست ہول، ای ان اس لئے نکاح کے معد ملہ میں شروع سے آخرتک اسلام کی ہدایات بدیلی کہ اس تعلق تو تلخیول اور رنجشوں سے پاک اولا ان کئا کہ کوششوں کے باوجود بعض وصافی رکھنے کی اور اگر بھی پیدا ہوجائے تو ان کے از الدکی پوری کوشش کی گئی ہے، کیکن ان تمام کوششوں کے باوجود بعض اوقات طرفین کی زندگی کی فلاح اس میں مخصر ہوجاتی ہے کہ بیتعلق ختم کردیا جائے، جن فداہب میں طلاق کا اصول نہیں ہوات سے ان میں ایسے دافعات میں خت مشکلات کا ساما ہوتا ہوار بعض اوقات انتہائی ہرے تائی سامے تے ہیں، اس کے اسلام نے نکاح کی طرح طرح طرح طرح کا ساما ہوتا ہوار بعض اوقات انتہائی ہرے تھی دیدی کہ طلاق التہ تعلی کے اسلام نے نکاح کی طرح طرح طرح کا ہے جہاں تک کمکن ہواں سے پر بیز کرنا جا ہے، حضرت عبداللہ بن مر وضح انتہ تعلی کن ذرد یک نبایت میں ویک کہ طلاق انتہائی تعلی کے اور حضن میں انسام کے تروک کہ طلاق ان کی تو اور حضن ان اللہ کے فرمایا کہ:" طال چیزوں میں سب سے زیادہ مبغوض اللہ کے زو کی طلاق ان الطکاف کھ فیک کو اور حضن اللہ ویکن کاح کروطلاق شدو کیونکہ طلاق سے عرش دیمن ملی جاتا ہے، حضرت معاذبین جمل وضح انتہ کے درسول اللہ بین نکاح کروطلاق شدو کیونکہ طلاق سے عرش دیمن ملی جاتا ہے، حضرت معاذبین جمل وضح انتہ سے دروایت سے کہ درسول اللہ بین نکاح کروطلاق شدو کیونکہ طلاق سے عرش دیمن بیل جاتا ہے، حضرت معاذبین جمل وضح انتہ سے دروایت سے کہ درسول اللہ بین نکاح کروطلاق کے ذری مین پر جو بچھ پیدا فرمایا ہے ان میں سب سے زیادہ مجوب انتہ سے دروایت سے کہ درسول اللہ بین نکاح کر دروایا کہ '' اللہ نے زیمن پر جو بچھ پیدا فرمایا ہے ان میں سب سے زیادہ مجوب انتہ سے دروایت سے کہ درسول اللہ بین میں ان کروطلاق کے ذری میں کروسے کی میں کروسے کی ان کروسے کو میں کروسے کی کروسے کر

تع لی کے نز دیک غلاموں کا آزاد کرتا ہے اور سب ہے زیادہ مبغوض ومکروہ طلاق ہے'۔ معدف موطبی بہر حال اسلام نے اگر چہ طلاق کی حوصلہ افز ائی نہیں کی بلکہ حتی الامکان اس کورو کنے کی کوشش کی ہے لیکن بعض نا گزیر موقعوں پرشرا کط کے ساتھ اجازت دی تو اس کے لئے کچھاصول اور قواعد بنا کراجازت دی جن کا حصل میہ ہے کہ اگر اس رہتۂ اُز دواج کوختم کرنا ہی ضروری ہو جائے تو وہ بھی خوبصورتی اورحسن معاملہ کے ساتھ انجام پائے ہجھن غصہ اتار نے اور انتقام لينے كى صورت نديئے۔

فَيطَلَّهُ وَهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ "عدت" كِلغوى معنى شاركرنے كے بيں اورشرعی اصطلاح میں اس عدت كوكہا جا تاہے جس میں عورت ایک شوہر کے نکاح سے نکلنے کے بعد دوسرے سے ممنوع ہوجاتی ہے، اس مدت انتظار کو عدت کہتے ہیں،اور زکاح سے نکلنے کی دوصور تمیں ہیں، 🛈 ایک ہے کہ شوہر کا انتقال ہوجائے اس عدت کوعدت و ف ت کہا جاتا ہے جو غیرہ ملہ کے سئے حیار ماہ دس ون مقرر ہے، 🏵 ووسری صورت طلاق ہے،عدت طلاق غیرحامد کے سئے امام ابوحنیفہ رَحِّمَ ُللالمُتَعَالَىٰ اوربعض دیگر ائمیہ زیجِلانِ کان کے نز دیک تین حیض مکمل ہیں اور امام شافعی رَیِّمَ کُلانگانِعَاتْ اور دوسر ہے بعض ائمیہ رَیِجَلالِکائِعَاتَ کے نز دیک طہرعدت طلاق ہے یعنی بچھایا م یا مہینے مقررتہیں ، جتنے مہینوں میں تین حیض اور تین طہر پورے ہوجا تیں وہی عدت طلاق ہوگی ،اور جن عور توں کو ابھی کم عمری کی وجہ ہے حیض نہ آیا ہو یا عمر زیادہ ہوجانے کی وجہ سے حیض منقطع ہو چکا ہے ان کا تھکم آئندہ مستقلا آر ہاہے،اوراسی طرح حمل والی عورتوں کا تھکم بھی آ گے آر ہاہے اس میں عدت و فات اور عدت طلاق رونوں مکس میں، فَ طَلِقُوْهُنَّ لِعِدَّتِهِن اور سيح مسلم كى حديث ہے آپ اللائظائ فَ طَلِقُوْا لِقَبْلِ عدّتِهِن الاوت فر ما یا ،آبیت مذکوره کی د ونول قراءنو ل اورا یک روایت سے آبیت مذکوره کا بیمفهوم متعین ہو گیا کہ جب کسی عورت کوطراق وینا ہوتو عدت شروع ہونے سے قبل طلاق دی جائے اورامام شافعی رَیِّمَ ٹائٹائنَّعَاكَ وغیرہ کے نز دیک چونکہ عدت طہر سے شروع ہوتی ہے اس لئے لِقَبْلِ عِدَّتِهِن كامفہوم بيقر ارديا كه بالكل شروع طهر ميں طلاق و ، وى جائے۔

طَلِقُو هُنَّ لِعدَّتِهِنَّ حضرت ابن عباس تَعَكَّكُ مُتَعَالِينَكَاسَ آيت كي تفسير ميں فرماتے ہيں كه طواق حيف كي حالت ميں نه دے اور نہاس طہر میں دے جس میں شوہر مباشرت کر چکا ہو، جب عورت حیض سے فارغ ہوجائے تو اس کوایک طرق دیدے، اس صورت میں اگر شو ہر رجوع نہ کرے اور عدت گذر جائے تو وہ صرف ایک ہی طلاق سے جدا ہو جائے گی۔ (ابن حربر)

حضرت عبداللد بن مسعود وَفَعَالِننُهُ مَعَالِينَ فَر مات بين عدت كے لئے طلاق بيہ ہے كہ طہر كى حالت ميں مباشرت كئے بغير طلاق دی جائے ، یہی تنسیر عبداللہ بن عمر ، عطاء ، مجاہد ، میمون بن مبران ، مقاتل وغیر ہم سے مروی ہے۔ (اس کنیر)

اس آیت کے منث کو بہترین طریقہ سے خو درسول اللہ ﷺ نے اس موقع پر واضح فر مایا تھ جب حضرت عبداللہ بن عمر

رص الندُ تعالى ني بيوى كو حالت حيض ميس طلاق ويدى تقى ، اس واقعه كى تفصيلات قريب قريب حديث كى هر سَاب ميس نقل ہوئى بين _

قصدا س کا میہ ہے کہ جب حضرت عبداللہ بن عمر تفیقاً اللہ نے اپنی بیوی کو صالت حیض میں طلاق دیدی تو حضرت عمر فیکا فند تفاق اللہ نے اپنی بیوی کو صالت حیض میں طلاق دیدی تو حضرت عمر فیکا فند ناد نام نام ہوئے ، اور فر مایا کہ اس ہے کہو کہ بیوی سے مرجوع کر جو میں کہ وہ طرح میں اسے بیور آئے اور اس سے فارغ ہو کروہ طاہر ہموجائے اس کے بعدا کروہ طلاق و بناج ہے تو طہر کی صالت میں مہاشرت کئے بغیر طلاق دے۔

اس حدیث سے چند ہاتیں ٹابت ہوئیں ، اول بیاکہ حالت حیض میں طلاق دینا حرام ہے ، دوسری بیاکہ اگر کسی نے ایسا کرلیا تو اس طلاق سے رجعت کرلینا واجب ہے (بشر طیکہ طلاق قابل رجعت ہوجیسا کہ این عمر نفخانڈ کُنٹ کے واقعہ میں تھی) تیسری بید کہ جس طہر میں طدق دینی ہواس میں مہاشرت نہ ہو، چوتھی بیاکہ بیآیت فَطَلِقُو هُنَّ لِعِدِّتِهِنَّ کی بی تفسیر ہے۔

دوسراتكم:

وَاخْصُوا الْعِدَّةَ بِمطلب بِهِ كه مندت كايام كواجتمام سے يا در كھنا جائے ، يا در كھنے كى ذمه دارى اگر چه دونوں كى بِمَّر چونكه ايسے معاملات ميں جن كى ذمه دارى مرداور عورت دونوں كى بوتى ہے اكثر خطاب مردكو بوتا ہے۔

تيسراڪم:

آلات خور جُوهُ الله من الله وقيل و لا يَحوُجن الله يه الله الله وقيل الله والله وال

چوتھاتھم:

اللّا اَنْ بِّاتِیْنَ بِفَاحِشَةٍ مُّنَبِّغَةٍ یہ اقبل کی آیت کے ضمون ہے مثنیٰ ہے مطلب یہ ہے کہ بیت عنی ہے نہ تو مرد کا معتدہ کو کا کا نہ اُن بِّاتِیْنَ بِفَاحِشَةٍ مُّنَبِّغَةٍ یہ اقبل کی آیت کے ضمون ہے مثنیٰ ہے مطلب یہ ہے کہ بیت عنی ہے نہ تو مراد مثلًا خود ہی کا لنا جا کڑے اور نہ اس کا خود نکل نا حود نکل ہو ہے دیائی ہو ہے گئی ہے مراد مثلًا خود ہی گھر ہے نکل ہوئے یازنا کا ارتکاب کرے یازبان درازی ہے سب کونگ کردے۔

جو خص ان مقررہ حدود ہے تجاوز کرے گا ،تواس نے گویا خودا سے او پر ظلم کیا۔

مطاقہ مدخولہ کی عدت تین حیض ہے، اگر رجوٹ کرنا ہوتو عدت نتم ہونے ہے پہلے رہوع کرو، بصورت دیگر انہیں معروف طریقہ کے مطابق اینے ہے جدا کردو۔

اس رجعت یا طلاق پر گواہ بنالویدام استحباب کے لئے ہے، بعض حضرات کے نز دیک وجوب کے لئے ہے، نیز گواہوں کو تا کید کی گئی ہے کہ کسی کی رور عایت کے بغیر ً بواہی دیں نہ سی کوف ئدہ پہنچا نامقصد ہواور نہ نقصان پہنچا نا۔

جن عورتوں کاحیض کبرسی پاکسی اور وجہ ہے منقطع ہو گیا ہو یا صغرسیٰ کی وجہ ہے ابھی شروع نہ ہوا ہوتو الیبی عورتوں کی عدت تنین ماہ ہے۔

مصقه اگر حاملہ ہوتو اس کی عدت وضع حمل ہے خواہ دوسرے ہی دن وضع حمل ہوجائے ، حاملہ متو فمی عنھ زوجھا کی عدت وضع حمل ہے اور غیر حاملہ کی حیار ماہ دیں دن ، نیز مطاقہ رجعیہ اور بائنہ کے لیے عنی ہے۔

وَكَأَيِّنُ هِي كَافِ الحرد خلت على اي سعلي كم مِّنْقُرْيَةٍ اي وكثيرٌ من الْقُرى عَتَتْ غصتُ يَعْلَى الهُلُها عَنْ أَمْرِرَبِّهَا وَرُسُلِهِ فَعَالَسَهُمَا مِي الاحرة والله تحيء لتحنَّق وْقُوْعَهَا حِمَابًا شَدِيدًا وَعَذَابُنْهَا عَذَا بَالْنَكُرُا® مسكُون الكاب وضمه فظيعًا وهُو عدابُ المار فَذَاقَتُ وَبَالَ أَمْرِهَا غَنْوَمَهُ وَكَانَ عَاقِبَةُ أَمْرِهَا خُسُرُك خسارًا وهلاكا اَعَدَّاللهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا مَن مَرِيرُ الوعند تَاكنة فَاتَّقُوااللهَ يَأْولِي الْأَلْبَابِ أَهُ النحب الْغُنُولِ الَّذِينَ الْمُنُوالْ عُتَ معمادي او نيارٌ له قَدُأَنْزَلَ اللهُ إِلْكُمُ ذِيْلًا في في والقُزالُ رَّسُولًا اي سُخمة اسْمُولُ معفل مُقدر اي وازسس يَتُلُواْعَلَيْكُمُ اليِّ اللَّهِ مُبَيِّنتٍ فَتَحِ الياء وكسُره كما تقدّم لِيُغْيِجَ الَّذِيْنَ امَنُواْ وَعَلُواالصَّلِخِيَّ بَعَدَ سَجِي الدكر والرَّسُول مِنَ الظُّلُطِ الْكُفر الَّذِي كَا وَاعْدَهِ إِلَى النُّورِ الايْسَانِ الَّذِي قَام بِهِمْ بغد الْكُفر وَمَنْ يُؤُمِّنُ بِاللَّهِوَيَعْمَلْ صَالِعًا لِيُذَخِلُهُ وَمِي قَرَاءَ وَبِالْمُونِ جَنَّتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْإَنْفُرُخُلِدِينَ فِيهَآابُدًا ۚ قَدَآ خَسَنَ اللَّهُ لَهُ رِزْقًا ۗ هُوَ رِزْقُ البحدة التي لا يُنفَعل بعيمُها الله اللَّذِي خَلَق سَبْعَ سَمُوتٍ وَمِنَ الْأَرْضِ مِثْلَهُنَّ بِغَيى سَنْع ارْصِين يَتَنَزَّلُ الْأَمْرُ الوَحْيُ **بَيْنَهُنَّ بِينَ ا**لسَّموتِ والْارُض يسرلُ جَبُرِئْلُ مِن السِّماء السَّاعة الى الارْض السَّاعَةِ لِلتَّعْلَمُوَّا مُتَعَبِّقٌ ع المحذوب أي اعْدَمَكُمْ مدلِك الحلق والسُريل أَنَّ اللهَ عَلَيْكُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ وَّأَنَّ اللهَ قَدْ لَحَاظَ بِكُلِّ شَيْءِعِلْمًا اللهُ

ترجيم اوربهت ي ستيان (كَايِنْ) مين كاف جرب، جوائ پرداخل ب كفر ك معنى مين ب، جس كرب والول نے اپنے رب کے حکم کی اور اس کے رسول کی نافر مانی کی تو ہم نے آخرت میں ان کا سخت محاسبہ کیا اور سخت عذاب دیا اً کر چیآ خرت کا وقوع ابھی نہیں ہوا گر بیتنی الوقوع ہونے کی وجہ ہے ماضی ہے تعبیر کیا گیا ہے، نُسکٹرا کا ف کے سکون اورضمہ کے ساتھ بمعنی شدید ہے، اور وہ آگ کا عذاب ہے، ہی انہوں نے اپنی کر و توں کا مزاچھ کیا (ایسی ان کا انہ مبھت لیا) انہ مہار ان کا شمارہ زیال اور ہلا کت ہی ہوئی، اللہ نے ان کے لئے شدید عذاب تیار کر رکھا ہے وعید کی تکرار تاکید کے لئے ہے ہی اللہ نے ڈرو، ان تھیندواورایمان والو! (الکذین آھینوا) مناوی کی صفت یا اس کا بیان ہے، یقینا اللہ نے تمباری طرف و کر قرآن فرامایا ہے رسول اللہ تھی جمدیلے تھیں کو مبعوث فرایا کہ رسول اللہ تھی جمدیلے تھیں کو مبعوث فرایا کہ رسولاً فعل مقدر لینی اُر رسال کی وجہ سے منصوب ہے، وہ تم کواللہ کو واقعی کو اس کو ایسی کو مبعوث فرایا ہے۔ اس کو ایسی کی در چکا تاکہ ان لوگوں کو جوابیمان لا کو اور نیک عمل کئے ذکر اور رسول آنے کے بعداس کفری ظلمت ہے جس پروہ تھے نور یعنی اس ایمان جس پروہ کو جن میں اور نیک کی در وہ کو ایمان لا کے فاور کی خوابی اللہ کی اور ایک قراءت میں نوان کے سات کی منتظے ہوئے وان نہیں، اللہ وہ ذات ہے جس نے سات آسان بنا کی در کی سات زمینیں و تی ان کو در میان ایسی کی اور ایک قراءت میں وتی ان کو در میان اور کی سے اور وہ جنت کی دوزی ہے جس کی فعین ہی تعظے ہوئے وان نہیں، اللہ وہ ذات ہے جس نے سات آسان بنا کو اور ایک کو در میان اور تی ہی سات تا بی بنا کے مات زمینیں و تی ان کے درمیان اور کی سات تا بی کو اس کو کہ اللہ ایک کو در میان اور تی کے مثل زمینیں ہی تھی سے میں نور کے درمیان اور کی اس کے درمیان اور تی ہی سات تا کہ میں اللہ اللہ کو کہ وہ میان اور تی ہی سے کہ کو اللہ کا کہ کہ اللہ در جاور اللہ تو کی اس کے سات تا کہ کہ جن لوکہ اللہ ہوچڑ پر قو در ہا ور اللہ تو کی سے درکو تا ہے کہ کو کہ کو کہ کو کہ کو درمیان اور کی کو می کی در ہے کہ کو کہ

عَجِفِيق تِزَكِيكِ لِيسَبِيلُ تَفْسِيلُ فَفِيلِيرِي فَوَائِلا

فِی وَلَیْنَ ، و کَایِنَ مِنْ قَرْیَةِ عَنَّنَ عَنْ أَمْرِ رَبَهَا ورُسُلِهِ بِیکام مِتْ نَف ہے وعدوَ فَتْ کی تصدیق کے لئے لایا گیا ہے، کَایَنْ خبر بیہ معنی کفر ہے مِنْ قَرْیَةِ ، کَایَنْ کی تمیز ہے تَحایِن مبتدا ، بونے کی وجہ سے کل میں رفع کے ہے اور عَدَّتْ اس کی خبر ہے۔

فِيُولِلْنَى : عَنَتْ، أغرضَتْ كَ عَنْ كُوتَضْمَن بونْ كَ وجد عمتعدى بِعَنْ بد

قِعُولِ آئی ؛ یعنی اهلها قریة بول کرابل قریه مرادلیا گیاہے،اس میں حذف مضاف کی طرف اشارہ ہے اور مجاز مرسل کے قبیل سے ہے،علاقہ حال وکل کا ہے یعنی کل بول کر حال مرادلیا گیا ہے۔

فِيُولِكُني: لتحقق وقوعها العبارت كان فدة مقسدايد اعتراض كود فع رنا -

اعتراض: جزاء مزااور حماب و کتاب آخرت میں بوگا، پھر حَاسَبْنَاهَا مائنی کے صیغہ نے تعبیر کرنے کا کیا مقصد ہے؟ جیک اُٹیع: حساب کا وقوع چونکہ یقین ہے اس لئے ، نئی کے صیغہ سے تعبیر کر دیا یعنی اس کا وقوع ایسا ہی قیمی ہے جبیبا کہ اضی کا وقوع بینی ہوتا ہے، یواس لئے کہ اللہ کے علم از لی میں اس کا فیصلہ ہو چکا ہے۔ (بالاصامه صاوی)

قِوْلَنَى: تسكريس الموعيد توكيد لين ندكوره چارجملول مين وعيدكوتا كيدك ليح مررة كركيا ب،وه چارجمايين،

 المَعْ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّ اللَّهُ اللَّا اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّا اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللّلْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّا اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللّه فِحُولِكُمْ : أَوْلَيْنَانُ بِينَ مِهِ الْمُطَفَّ بِيانَ هِـــ

قِيْوَلِينَ ؛ مُبَيِّنَاتٍ بيآيات سے حال ہے، فتح كى صورت ميں اللہ نے اس كووائن أمر ديا، سر وكى صورت ميں و وخودوائن ہے۔

تَفَيْهُوتَشِيْ

فَحَاسَبْنَاهَا حِسَابًا شَدِيْدًا وَّعَذَّبْهَاها عَذَابًا تُكُرًّا اس آيت بين ان قومول كراب وعذاب كاذكر يجو سخرت میں ہونے والا ہے، مگریبال اس کو ماضی کے صینے خساسند منا اور عبد بندا سے تعبیر کرنا اس کے بیتی الوقوع ہونے کے امتبار سے ہے (کمافی روح) اور رہیجھی ہوسکتا ہے کہ یہاں سوالات اور باز پرس مراد نہ ہو بلکہ سزا کی تعیمین ہواسی کو حساب کرنے ہے تعبیر فرماویا۔

فَدْ أَنْوَلَ اللَّهُ اِلْمُكُمْ ذِكُواً رَّسُولًا الرآيت كَى آسان توجيديه بكريبال غظ أرْسِلَ محذوف ما ناج ئة معنى مدجول گ کہ نازل کیا ذکر لیعنی قر آن کو اور بھیجار سول کو، دیگیرمفسرین حضرات نے اور توجیہات بھی ملھی ہیں مثلاً بید کہ ذکر ہے مرادخود رسول ہوں کثر ت ذکر کی وجہ ہے رسول گو یا خود ذ کر ہو گیا تو پید زیلڈ علد ل کے قبیل ہے ہو گا۔

لِيُحْرِجَ الَّذِيْنَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّلِحتِ مِنَ الظُّلُمتِ إِلَى النُّورِ لِعِنْ جِهِالتَّكَ تاريكي علم كيروشي كي طرف نکال لائے ، اس ارشاد کی بیوری اہمیت اس وقت سمجھ میں آتی ہے جب انسان طلاق ، عدت اور نفقات کے متعلق د نیا کے دوسرے قندیم اور جدید عائلی قوانین کا مطالعہ کرتا ہے،اوراس تقابلی مطالعہ ہے معلوم ہوتا ہے کہ بار بار کی تبدیلیوں اورنٹی نئ قانون سازیوں کے باوجود آج تک نسی قوم کواپیامعقول اورفطری اور معاشرہ کے لئے مفید قانون میسرنہیں آ سکا جیساا*س کیا*باوراس کےلانے والےرسول پیچھٹیوئے تقریبا ڈیزھ بزارسال پہلے ہم کودیا تھا،اورجس پرکسی نظر ثانی کی ضرورت نه بھی چیش آئی اور نہ چیش آعتی ہے۔

اَللُّهُ الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمُواتٍ وَّمِنَ الْأَرْضِ مِثْلَهُنَّ ، مِثْلَهُنَّ مِينَ تَبْيدا جمالي بيكرس چيز مين أمثل ساوات ہے اس آیت ہے اتنی بات تو واضح طور پر ثابت ہے کہ جس طرح آسان سات ہیں اسی طرح زمینیں بھی سات بیں، پھر بیسات زمینیں کہاں کہاں ہیں اور کس وضع وصورت میں ہیں؟ تنه برنة طبقات کی شکل میں ہیں یاہر زمین کا مقام الگ الگ ہے؟ اگرا دیرینچے طبقات ہیں تو کیا جس طرح سات آ سانوں میں ہر دوآ سانوں کے درمیان فاصلہ ہے اور برآ سان میں فرشتے آباد ہیں اس طرح ایک زمین اور دوسری زمین کے درمیان بھی فاصلہ ہے اور اس میں کوئی مخلوق آباد ہے یا پیطبقات زمین ایک دوسرے سے متصل اور پیوستہ ہیں؟ قر آن مجیداس سے ساکت ہے اور روایات حدیث جواس

سلسد میں آئی ہیں ان میں اکثر ائمہ حدیث کا اختلاف ہے بعض نے ان کو بیچے اور ثابت قرار دیا ہے اور بعض نے موضوع اور منگھروت تک کہدویا ہے، مگر عقلا بیسب صورتیں ممکن ہیں۔ (معادف)

مِثْلَهُنَّ كَتْفْسِراحاد بيث كى روشنى ميں:

اس کی تفسیر صحیح میں یوں آئی ہے، بخاری اور مسلم میں ہے، جس نے کسی کی زمین ظلماً غصب کر ٹی تو قیامت میں وہ زمین ا بنے ساتوں طبقوں سمیت اس سے ملے میں ڈال دی جائے گی "طوقة مِنْ أَرْضِ سَبْعیْنَ" اور بنی ری بیں ہے "خوسف به إلى سَبْع أَرْضِيْنَ "ان اه ويث من سات زمينول كاثبوت اطمينان بخش طريقه يرثابت بوكيا بـــ

اورابن عماس تعَمَالِكَ مُعَالِبَ عَلَى الرّبيس مرزيين برخلوق اورنبي كامونا بهي منقول ہے۔ دعلاصة النفاسين

قدیم مفسرین میں صرف ابن عباس تضحَفظ تفالت تفاقی ایسے مفسر ہیں جنہوں نے اس دور میں اس حقیقت کو بیان کیا تھا جب آ دمی اس کا تصور بھی کرنے کے لئے تیار نہیں تھا کہ کا نئات میں اس زمین کے علادہ کہیں اور بھی ذی عقل مخلوق بستی ہے؟ موجودہ زمانہ کے سکنس دانوں تک کواس کے امروا قعہ ونے میں شک ہے، کجا کہ سواچود ہسوسال پہلے کے لوگ اسے بآس نی باور کر سکتے ،اس کئے ابن عباس تضحَالَتُكَا تَعَالُا عَنْهُا عام لوگوں كے سامنے ہيہ بات كہتے ہوئے ڈرتے تنے كەلمبیں اس سے لوگوں كے ايمان متزلزل نه ہو جا نمیں ، چذنجیری مدریج مکلانلہ تعالیٰ کہتے ہیں کہ ان ہے جب اس آیت کا مطلب یو جیما گیا تو انہوں نے فر مایا اگر ہیں اس کی تفسیر تم لوگوں ہے بیان کردوں تو تم کافرہوجاؤگے اورتمہارا کفریہ ہوگا کہاہے جھٹلاؤگے،قریب قریب یہی بات سعید بن جبیر رَفِقَ اللَّهُ مَّا لِللَّهُ مَا صَالِحَ مِن عَبِي مَعْ اللَّهُ مُعَالِقًا فَعَالَمُ اللَّهُ اللَّ بتادوں تو تم کافر نہ ہوجا دکئے؟ (ابن جریر،عبد بن حمید) تا ہم ابن جریر، ابن ابی حاتم اور حاکم نے اور بہلی نے ابواضحیٰ کے واسطے ے باختلاف الفظ ابن عباس تَعَمَّلَكُ مُعَالِقَتُهُ كَا يَقْصِيلُ أَقَلَى هِ "في كل أرْضِ نبِي كنبِيكم و آدم كآدمكم، وَنُوْ حُ كَنُو حِكُم وابراهيم كابراهيمكم وعيسلى كعيسلكم" ان ش عيم رُمِين ش ني بتهار ي ني جيهااور آ دم ہے تمہارے آ دم جیسا ، اورنوح ہے تمہارے نوح جیسا ، اورابراہیم ہے تمہارے ابراہیم جیسا اورعیسی ہے تمہارے میسی جیس ، اس روایت کوابن جرنے نتح الباری میں اور ابن کثیرنے اپنی تفسیر میں بھی نقل کیا ہے اور امام ذہبی نے کہا ہے کہ اس کی سند سجے ہے، البتة ميرے علم ميں ابوانصحیٰ کے علاوہ کسی نے اے روايت نہيں کيا ہے، اس لئے يہ بالکل شاذ روايت ہے، بعض دوسرے معاء نے اس کو کذب اور موضوع قرار دیاہے، اور ملاعلی قاری رَحِّمَ کُلاللهُ مَعَالیٰ نے اس کوموضوعات کبیر میں (ص ۱۹) میں موضوع کہتے ہوئے لکھ ہے کہ اگر میدا بن عباس تع کالنظاف کا النظافی کی روایت ہے تب بھی اسرائیلیات میں سے ہے، کیکن حقیقت میہ ہے کہ اسے رد کرنے کی اصل وجہلوگوں کا اسے بعیدازعقل ونہم سمجھنا ہے، ورنہ بجائے خود اس میں کوئی بات بھی خلاف عقل نہیں ہے چنانچہ ح [زمَزم بِهَاشَن]≥

یہ بات قابل ذکر ہے کہ حال ہی میں امریکہ کے رائڈ کار پریشن نے فلکی مشاہدات سے اندازہ لگایا ہے کہ زمین جس کبکشاں (Galaxy) میں واقع ہے صرف اس کے اندرتقریباً ۲۰ کروڑ ایسے سیارے پائے جاتے ہیں جن کے طبعی حالات زمین سے بہت کچھ مشاہداور معتے جیتے ہیں اورامکان ہے کہ ان کے اندربھی جاندارمخلوق آباد ہوں۔

(اكانومست، لندن، مورحه ۲۳ جولالي ۱۹۶۹،

حضرت ابن عباس تعنی الفی الفی التی کے اثر میں ہرزمین پر مخلوق اور نبی کا ہونا منقول ہے، اس کی تفصیل اور تقریر میں ہرزمین پر مخلوق اور نبی کا ہونا منقول ہے، اس کی تفصیل اور تقریر میں جناب مولا نا ابوالحسنات مولا نا محمد عبد الحجی رضم کا گذشتان نے رسائل تصنیف کئے ہیں، اور بعض لوگوں کو جو بیشہ ہوا ہے کہ ہر زمین میں مثل ان انبیاء کا ہونا مستوجب ہے مما ثلث نبی کریم فیلی فیلی اس بات کو کہ آپ فیلی فیلی نام الانبیاء نہ ہوں، اس نے غور نبیں کیا، معانی اور مفارِ تشبیہ میں، بلکہ وہ حضرت نبی کریم فیلی فیلی کی علوشان کونہ سمجھا ور نہ میں جرات نہ ہوتی نہ مما ثلث موجب مساوات ہے اور نہ حضور فیلی فیلی فاتمیت کا معارض۔

(حاشيه خلاصة التماسير للنائب لكهنوي ملحصًا)



مِلَوَةُ النَّجِرُلُ فِي بِيتَ وَهِلُ نَنتَ لَعِيْدِيُّ النَّهُ وَمِهُ الْوَعَا

سُورَةُ التَّحْرِيْمِ مَدَنِيَّةٌ اِثْنَتَا عَشَرَةَ ايَةً. سورة تحريم مدنى ہے، بارة آيتيں بيں۔

بِسَـــِ حِرَاللَّهِ ٱلْرَّحِ لَيْ الرَّحِ لَيْ مَن الرَّحِ لَيْ الْمُؤْمِنَ الْمُعَالَحُلُ اللهُ لَكُ مِن امَنِكَ مَارِيَةَ الْقِبْطِلَةِ لَـمَـا واقَـعَهَـا فِـي بَيْتِ حَفْضةً وَكَانَتُ عَابُبةً فَجاء تُ وشَقَّ عَلَيْها كُوْنُ دلِكَ فِي بَيْتِهَا وعلى فِرَاشِهَا حَيْثُ قُنْتِ هِيَ حَرامٌ عَلَىٰ تَنْبَتَغِي بِتَخرِيْمِهِا مَرْضَاتَ أَزْوَاجِكُ أَى رِضَاهُنَّ وَاللَّهُ عَفُورُسُّ حِيْمُ ۖ غَفَرَلُك هذا التّخريْم قَلْأُفُوضَ اللَّهُ شَرَعَ لَكُمُّ تَجَلَّةَ أَيْمَانِكُمُ تَحُلِيلَهَا بِالْكَفَارَةِ المَذْكُورَةِ فِي سُؤرَةِ الْمَاثِدَة وَسِنَ الْأَيْمَان تُخرينُمُ الامةِ وهَلُ كَفُرَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ مُقَاتِلٌ أَعْتَقِ رَقَبَةٌ فِي تَحْرِيْمِ مَارِية وقَالَ الحَسَنُ لم يُكَفِّرُ لاَنَهُ مَعْفُورٌ لَهُ وَاللَّهُ مَوْلِكُمْ فَاصِرْكُمْ وَهُوَالْعَلِيمُ لِلْكَيْمُ وَ اذْكُرْ إِذْ أَسَرَّ النَّبِي إِلَى بَعْضِ أَزْوَاجِهِ هي حفضة <u>حَدِيثًا ۚ هُ و تَحْرِيْهُ مَارِيَةً وقَالَ لَهَا لَاتُفُشِيْهِ فَكُمَّانَبَّأَتْهِ عَائِشَةَ ظَنَّا مِنْهَا أَنْ لَا خَرَجَ فِي ذَلِكَ ۖ وَأَظُّهُرُواللَّهُ </u> اصُّنعَهُ عَلَيْهِ على المُنبَابِ عَرَّفَ بَعْضَةُ لِحَفْصَةَ وَأَعْرَضَ عَنْ لَبَعْضٍ تَكُرُّمًا سنه فَلَمَّانَبَّاهَابِهِ قَالَتْ مَنْ أَنْبَاكُ هٰذَا قَالَ نَبَّالِيَ الْعَلِيمُ لِلْخَيِيرُ ۞ اى الله إِنْ تَتَوُبَا اى حفصة وغائِشة إلى اللهِ فَقَدُ صَغَتُ قُلُوبُكُما أَ سَالَتَ إلى تَحْرِيْم سَارِيَةُ اي سَرَّكُمَا ذلكَ مَعَ كُراهَةِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلِيهِ وَسَلَّمَ لَهُ ذَلِكَ ذَنُبٌ وجَوَاتُ الشَّرُطِ مَحُذُوتُ اي تُتَفَلَا وأَصْدِقَ قُدُوتُ عِلَى قَلْبَيْنِ ولَمْ يُعَبَرُبِهِ لِاسْتِثْقَالِ الخَمْعِ تَثْبَيْتَنِنِ فِيما هُوَ كَالكُلمةِ الوَاحِدَةِ وَإِنْ تَظْهَرًا سَدْعَامِ النَّاءَ النَّانِيَةِ فِي الأَصْلِ فِي الظَّاءِ وفي قِرَاءَ ةِ بِدُوْنِهَا فَتَعَاوَنَا عَكَيْكِو اي السَّبِيّ فِيما يَكُرَهُهُ <u>فَإِنَّ اللَّهَ هُوَّ مِنْ لِ مَوْلِلَهُ</u> نَاصِرُهُ وَجِبْرِيُلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِينَ أَبُونِكُر وعُمَرُ سَعْطُوتُ على محَلَ اسْم إنّ فيكُولُون اصريهِ وَ**الْكَلْيِكَةُ بَعُدَذَٰاكِ** بَعْد نَصُر اللّهِ والْمَذْكُورِين ظِّهِيْنِ ظَهِراءُ أغوان له في نصره عنيكما عَسَى رَبُّهُ إِنْ طَلَقَكُنَّ اى طَنَق النَبِيُّ ازْواجَهُ أَنْ يُبَدِلُهُ بِالنَشِديْدِ والتَخْفِيُفِ أَزُواجًا خَيْرًا مِّنَكُنَّ خَبرُ عسى والحُمْلةُ جَوَابُ الشرَّط ولَم يَقع التَّبُديلُ لِعَدْم وُقُوع الشَّرُطِ مُسْلِمْتِ مُقِرَّاتٍ بِالْإِسْلَام تُمُومِلْتِ مُخْسَب ع (مَرْمُ بِهَالَّمْ إِلَا اللهِ

قَيْتُتِ مُطَيْعَتِ تَهِبِبِ عِيدَتِ سَبِعَتِ صَائِمَاتِ او مُهاجِزاتِ تَيْبَتِ وَآبَكَارًا ﴿ يَأَيُّهَا الَّذِينَ امَنُواقُوَا أَنْفُسَكُمْ وَأَهْلِيَكُمْ الخمل على ماعة الله تعالى تَأَزَّا وَقُودُهَا النَّاسُ الكُفَارُ وَللْحِجَارَةُ كَاصْنامِهِمْ سُهَا يعْني انْهَا مُفرطَةُ الحَرَارَة لُنَقِدُ بِما ذُكُرُ لا كُنارِ الدُّنيَا تُتَقَدُ بِالحطبِ ونحوه عَلَيْهَامَلَلِكَةٌ حربتها عدَتُهُمُ تسعة عشر كما سياتي عي المُدَثِر غِلَاظٌ من غَلَظِ القلب شِكَالُ في البَطْش لِلْيَعْصُونَ الله مَا آمَرَهُم بَدرٌ بن الخَلالَة اي لا بِغَيْسُونَ مَا أَمِرِ اللَّهُ **وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ**۞ تَاكَيُدُ والابةُ تَحْوِيْتُ لِلمُؤْمِنِيْنَ عَنِ الْإِرْتِدَادِ ولِلمُنَافِقِيْنَ الـمُؤْمِنِينَ بِٱلْسَبَيْهِمْ دُوْنَ قُنُونِهِمْ لِمَا يُهَاللِّذِينَ كَفُرُوالْاتَعْتَذِرُواالْيَوْمُ يُنَالُ لَهُمْ ذَلِك عَنْدَ دُخُولِهِمُ النَّارَ اي ﴾ لانه لا يُسْفَعُكُمْ إِنَّمَا أَجُّزُونَ مَا كُنْتُمْرَقَعْمَلُونَ۞ اى جَرَاء هُ

سبع ہے۔ پر جب ایس اللہ کے تام سے جو برامبر بان نہایت رحم والا ہے،اے نبی! آپ کیوں حرام کرتے ہیں اس کوجس کوالندنے آپ کے لئے حلال کیا ہے؟ لیمنی اپنی باندی ماریہ قبطیہ رضحًا لفائقاً کو جب کہ آپ الفائلی نے اس سے حفصہ دُضِحًا لِمَانُ تَعَالَىٰ فَا كَ كُفر مِينِ جميسترى قرمانى ، اور حفصہ دَضِحًا لَهُ لَنَا فَاعَفَا موجود نبيس تحييں ، اچ نک آ كسيس اور بير بات ان كے تھر میں ان کے بستر پران کوکرال گذری،اس وقت آپ بیٹھٹا نے بھی خو اٹھ غلتی وہ میرےاو پرحرام ہے فر مادیا،اس کوحرام كركے اپنى بيوبوں كى خوشنودى حاصل كرنے كے لئے ، اللہ بخشنے والا مبربان بے آپ اللہ اللہ كاس حرام كرنے كومعاف فر ما دیا، تحقیق کداللہ تعالیٰ نے تمہاری قسموں کو کفارہ دیے کرجس کا سورہ مائدہ میں ذکر ہے کھول ڈالنا فرض مشروع کیا ہے اور باندی کوحرام کرلین بھی قشم میں داخل ہے! کیا آپ ایٹھٹیانے کفارہ اوا فرمایا (یاادانبیں فرمایا) مقاتل نے کہا ہے کہ آپ يَالْوَكُنْ أَنْ مِن مِن وَضَالِمَانُ مُعَالِحُهَا كَيْحُرِيم كِسلسله مِن ايك غلام آزادفر مايا ، اورحسن نے كہا ہے كه آپ بِلَقَائِلَةُ نے كفارہ اوانہيں فر ما یا ، اس کئے کہ آپ پیٹھ کھٹا تو بخشے بخشائے ہیں ، القدتم ہارا کارساز ہے اور وہی حکمت والہے اور یا دکرواس وقت کو جب آپ ينتخفظ نے اپنی بعض از واج ہے اور وہ حفصہ رضّی تنادُ تَغَاليَّ فَعَامِين راز دارانه طور پرایک بات کہی اور وہ ماری قبطیہ رَضِیَا لَنامُ تَعَالَیْ فَعَا ی کشہ دَضِحًا لَمُلْاُلَتُعَالِظُفًا کوخبر کردی ہے سمجھتے ہوئے کہ اس میں کوئی حرج نبیں ہے اور القدنے اپنے نبی کواس بات ہے آگاہ کر دیا تھا تو نبی نے حفصہ کوتھوڑی کی بات تو بتا دی اور تھوڑی ٹال گئے آپ بھی تھٹا کے کرم (حسن خلق کی وجہ ہے) سو پیغمبر نے اس بیوی کووہ بات جالادی تو کہنے لگی آپ یہ بھی تا کواس کی خبر کس نے دی؟ آپ یکی تا یا جھے جانے والے برا نے خبرر کھنے والے (اللہ)نے خبر دی اے حفصہ اور عائشہ!اگرتم دونوں القدیے تو بہ کرلوتو بہتر ہے، یقیناً تم دونوں کے دل ماریہ دَضِحَالمَلْانُاتَافَافَا ک تحریم کی طرف مائل ہو گئے ہیں بعنی ان کو (اس تحریم) نے خوش کیا حالا نکہ آنخضرت ﷺ کو یہ بات نا گوار گذری، اور بیہ بات گناہ ہےاور جواب شرط محذوف ہے (ای تسقب لا) اورفلہین پرقلوب کا اطلاق کیا ، دونول کو تثنیہ سے تعبیر نہیں کیا ، دو تثنیو ل

کے کلمہ ' واحد کے ما نند میں جمع ہونے کے قتل ہونے کی وجہ ہے ، اورا گرتم دونوں نبی کے خلاف اس چیز میں جس کو نبی نا پسند کرتا ہے مدد کروگی قوالتداس کامد دگارہے کھے و ضمیر تصل ہے اور جبرائیل اور نیک اعمال والے ابو بکر رفع کاند تنفاف وعمر رفع کاند کنفاف و جبر نيل و صالح المؤمنون كاإنَّ كاسم كِل يرعطف جنوبيس آپ يَتَقَافَتُنا كَهُ دَمَّار بين اورالتداور مذكورين كي مدد کے علاوہ فرشتے اس کے مددگار ہیں لیعنی تمہارے مقابلہ میں اس کی نصرت کے معادن (ومددگار ہیں) اگر نبی تم کوطلا ق دید _ بعنی نبی این از واج کوطلاق ویدے، تو بہت جلدانہیں ان کاربتمہارے عوض میں تم سے بہتر بیویاں عنایت فر ، ئے گا، (یُبدِلَهٔ) دال کی تشدیدو تخفیف کے ساتھ ہے (اَزْ وَ اجاً) عَسنی کی خبراور جملہ جواب تمرط ہے اور شرط کے واقع نہونے کی وجہ ہے تبدیلی واقع نبیں ہوئی، جو اسلام لانے والیاں ہول گی توبہ کرنے والیال عبادت کرنے والیاں روزے رکھنے والیال؛ بجرت کرنے واپ ں ہوں گی ہیوہ اور کنواریاں ہوں گی اےایمان والو! اپنے آپ کواوراپنے اہل کو انتد کی طاعت پر آمادہ کرکے نارجہنم سے بیجاؤجس کا ایندھن کافر انسان ہیں اور پھر ہیں جیسا کہ پھر کے بت لیعنی جہنم شدیدحرارت والی ہے جس کو ندکورہ چیز وں سے جلایا گیا ہے نہ کہ دنیا کی آگ کے ما نندجس کولکڑی وغیرہ سے جلایا جا تا ہے جس کے نگراں سخت د لفر شنتے ہیں جن کی تعدادا نیس ہے جیسا کہ سورہ مدار میں آئے گا غلاظ، غلظ القلب سے ماخوذ ہے اور پکڑ کرنے کے اعتبارے شدید ہیں جن کوجو تھم اللہ تعالی ویتے ہیں اس کی نافر مانی نہیں کرتے (مَسا اَمَسَ اللَّهُ) لفظ اللہ سے بدل ہے مطلب بیر کہ وہ اللہ کے حکم کی نافر مانی نہیں کرتے (بلکہ) جس بات کا حکم دیا جاتا ہے وہی کرتے ہیں بیتا کید ہے اور آیت میں مومنین کے لئے ارتداد سے اور زبان سے نہ کہ دل سے ایمان لانے والے منافقین کے لئے ڈراوا ہے، اے کا فروا تم آج عذر بہاندمت کروان سے بیربات دوزخ میں داخلے کے وفت کہی جائے گی ، بیاس کئے کہ عذر ومعذرت ان کوکوئی نفع نددے گی، حمہیں صرف تمہارے کرتو توں کا بدلددیا جارہا ہے۔

جَيِقِيق تَرَكِيكِ لِيسَهُ الْحَاقَةِ ثَقِيلًا يُرَى فَوَالِالْ

سورہ تحریم کا دوسرانا مسورۃ النبی بھی ہے۔ (فرطبی) فِيْ لَيْ ؛ مارية القبطية يوه باندى تھيں جنہيں مصركے بادشاه مقوس نے آپ يھي كا خدمت ميں بطور مريو پيش كيا تھا، يو واقعہ کے میں پیش آیا اوران کے طن ہے ذی الحجہ ۸ ھیں آپ ﷺ کے فرزند حضرت ابراہیم نَفِحَالِننهُ تَعَالَحَةُ بِيدا ہوئے تھے۔ فَخُولَكَ ؛ تَجِلَّةَ كُولنا، طال كرناحَلَّلَ كامعدر ــــــ

هِوَلَنْ ؛ جواب الشرط محذوف، إِنْ تَتُوْبَا شرط بِ اور فَقَدْ صَغَتْ قُلُوْبُكُمَا عَلَتَ شُرط بِ يَعِيْتُم توبال ت کروکہ تمہارے قلوب حق سے غیرحق کی طرف ماکل ہو گئے ہیں ،جواب شرط تُسَقّٰبَلا محذوف ہے لیعنی اگرتم تو بہ کروگی تو قبول کر لی ج ئ كى كما صرَّحَ بَه المفسر العلام، اور بعض حضرات في يكن حيرًا لكم جزاء كذوف الى ب-

ھ (مِكَزَم بِسَاخَ ﴿] ≥-

فِيُولِكُن ؛ أَطْلِق قُلُوبٌ عَلَى قَلْمَيْنِ الْحَ

سَيُوْلِكَ: فَلُوبُكُمَا مِن سَنْدِي جَلَوْكِ جَمْعُ لا يا مَا يَا الله عَلَا الله عَلَا الله الله الله الله ال قلب ہوتے ہیں۔

جِيَّةُ لَبِّعِ: مَثْلُ كَلّمه واحده مِين ووَتَنْهُول كااجته عَثْقِيل بهونے كى وجه ہے قلوب جمع لا يا گيا ہے۔

مَيْكُواك، مص كلمه واحده كيول فرمايانه كه كلمه واحده؟

قَوْلَ الله عَمَالُتُ اسم مِنس بِ حَس كااطلاق واحد، تثنيه ، جمع سب پر بوتا ب اس كَ صفت المهو منون لا ناسيح به ، كتاب مين مذكورتر كيب كے ملاوه ايك صورت به بھى جائز ب كه جبريكل اوراس كے معطوفات مبتداء ہوں اور ظهيسو بمعنی ظهراء مبتداء کی خبر۔

مَيْكُوالُ: ظهيو خبرمفرد إدرمبتداء جمع عبيب رَنبيس ع

جَوْلَثِيْ: ظهير فعيل كے وزن پر ہے اس وزن ميں واحد، تثنيه، جمع سب برابر ہوتے ہيں۔

فَيْحُولِنَىٰ ؛ خَبْرُ عَسٰى ، أَنْ يَبْدِلَهُ أَذْ وَاجًا خَيْرًا مِنْكُنَّ ، عَسٰى كَ فَبِر ہِاور دَنَّهُ ، عَسَى كاسم ہے عَسى الے اسم وفجر ہے لکے اسم وفجر ہے لکے اسم وفیل کے اور جب جملہ ہے کہ جواب شرط ہے اور جب جملہ اس موقا کہ اس جملہ کافعل جامد ہے اور جب جملہ اس من کا ہوتو اس پر فاء لازم ہوتی ہے حالا نکمہ یہاں فاء نبیل ہے ، لہذا بہتر یہ ہے کہ جزاء محذوف مانی جائے اور اس جملہ کودلیل

جزاءقر اردياجائے۔ (صاوى)

قِيَّوْلَنَى : قُوْا بروزن عُوْا امرجَع مُدَرجاضر بياصل مِن إوْ قِيُوا تِحاـ

٠ ﴿ (فَرَوْمُ بِدَالَثَمِنِ) ٢٠

تَفَسِّيرُوتِشِينَ تِفَسِّيرُوتِشِينَ

شانِ نزول:

(فتح القدير، شوكاني)

ہے جس نے خود کو آپ میں انگانی کو بہد کر دیا تھا۔

کاؤیک : ۲ ہے ہیں سے حدید ہے فارغ ہونے کے بعدر سول اللہ التفظیمات نے جو خطوط اطراف ونواح ہیں باد شاہوں کو بھیج سے ان میں سے ایک اسکندر ہے کے روی بطریق کے نام بھی تھا جے عرب میں مقوقس کہتے ہتے، حضرت حاطب بن ابی بلاتعہ کو فائدہ کھلائے ہیں اس بہتے تو اس نے اسلام تو قبوں نہ کہ گر محاف اللہ تفلائے ہیں اس بہتے تو اس نے اسلام تو قبوں نہ کہ گر حاطب وضائدہ تفلائے کے ساتھ خوش اخلاقی اور حسن سلوک کے ساتھ پیش آیا اور جواب میں کلھا کہ جھے یہ معلوم ہے کہ ابھی ایک نی حاست میں اس بیتے تو اس نے اسلام تو قبوں اور آپ کی سن بازی ہے کہ میں آپ کے قاصد کے ساتھ احترام سے پیش آیا ہوں اور آپ کی خدمت میں دولو کیاں لیہ بیچے رہا ہوں جو قبطوں میں بوار شہر کھی ہیں (ابن سعد) ان لڑکوں میں سے ایک میر کن تھیں اور و در مرک مارید وقبوں کے سرمنے اور دوسری مارید وقبوں کے مسلم اور و دوسری مارید وقبوں کے سرمنے اور دوسری مارید وقبوں مشرف باسلام ہو گئیں، جب دونوں آپ بیٹھی کی خدمت میں پیش ہو کی تو آپ کو تو تھیں نے سیر تین اور حضرت مارید کو میں آپ کے صدحت میں پیش ہو کی تو آپ کو تو تھیں ہو ایک کے صدح برا در ابراہ بی مو کا لئی تھی کہ کو عطافر مادی کو دوسرت مارید کو ایک کی خدمت میں پیش ہو کی تو تو بھی تو تو تو تو تھیں ، حافظ ابن مجر نے مسلم میں تو تو تھیں تھیں باز آبی کو تو تھیں اس کے میں تو تھیں ان کے بارے میں متعدد طرید وارید کو تو تھیں تو تھیں ان کے بارے میں متعدد طریقوں ان صدید میں ان کے بارے میں متعدد طریقوں سے بی توقعہ احاد یہ میں تھی ہو اے دو مختفرانہ ہے۔

حضرت ماريه رَضِحَالْتَالُاتَغَالِثَاهُمَا كاوا قعه:

حضرت زينب رَضِيَا مُلاُهُ تَعَالِيَكُهَا كَا واقعه:

ا کابراہل ملم نے ان دونوں قصوں میں ہے ای دوسر ہے قصے توسی قرار دیا ہے، اہ من کی فرہاتے ہیں کہ شہر کے معاملہ میں حضرت ما کنٹر کی حدیث نہایت سے جے ، اور حضرت مارید دَسِی اُنٹانھالی غفا کوجرام کر لینے کا قصہ سی عمدہ طریق ہے نقل نہیں ہوا ، قاضی عیاض فرماتے ہیں یہ آیت حضرت مارید کے معاملہ میں نبیس ہوا ، قاضی عیاض فرماتے ہیں یہ آیت حضرت مارید کے معاملہ میں نبیس ہکہ شہد کے معاملہ میں نازل ہوئی ہے ، قاضی ابو بجرائن عربی شہدی کے قصے کو تھے قرار ویتے ہیں ، اور یہی رائے اہامنو وی اور حافظ بدرالدین نینی کی ہے ، ابن کشر فرماتے ہیں کہ سے تاریخ ہوئے القدر نے بھی التی کہ دیا آیت شہد کو این اور پرحرام کر لینے کے بارے میں نازل ہوئی ، ابن ہمام صاحب فتح القدر یہ نجھی اسی کوران ح قرار دیا ہے۔

کسی کوبھی نہیں ہے حتی کہ خود نبی بیٹھ نیٹیا کو بھی نہیں ہے،اگر چہ حضور بیٹھ کیانے اس چیز کونہ عقیدہ خرام سمجھا تھا اور نہاہے شرعاً حرام قرار دیاتھ ، بلکہ صرف اپنی ذات پراس کے استعمال کوممنوع کرلیاتھا،کیکن چونکہ آپ فیلٹٹٹٹا کی حیثیت ایک ، م ت دمی کنبیں بلکہ اللہ کے رسول بلقائق کی تھی ،اور آپ بلقائل کے کسی چیز کوایے اوپر حرام کر لینے سے یہ خطرہ پیدا ہوسکت تھ کہ امت بھی اس شی کوحرام یا کم از کم مکروہ سمجھنے لگے، یا امت کے افرادیہ خیال کرنے لگیں کہ اللہ کی حل س کی ہوئی چیز کواپنے او پرحرام کرینے میں کوئی مضا کے نہیں ہے،اس لئے اللہ تعالیٰ نے آپ ﷺ کے اس فعل پر مشفقانہ کر دفت فر ، کی اور آپ واستحريم سے بازر منے كا حكم ديا۔

کسی حلال چیز کواپنے او پرحرام کرنے کی تین صورتیں ہیں ، 🛈 اگر کوئی شخص کسی حلال قطعی کوعقید 🕯 حرام قرار دیے توبیہ نفر اور گناہ عظیم ہے 🏵 اورا گرعقید ۃٔ حرام نہ سمجھے مگر بلاکسی ضرورت ومصلحت کے تئم کھا کرا پنے او پرحرام کر لے توبیہ گناہ ہے ،اس فتتم کوتو ژناور کفارہ ادا کرنا واجب ہے اورا گرکسی ضرورت ومصلحت سے ہوتو جائز ہے گرخلاف اولی ہے 🏵 تیسری صورت بیہ کہ نہ عقید قاحرام سمجھے نہ قتم کھا کراپنے اوپر حرام کرے مگرعملاً اس کوترک کرنے کا دل میں عزم کرئے، بیعزم اگراس نبیت سے کرے کہاس کا دائمی ترک باعث تو اب ہے تب تو یہ بدعت اور رہبا نبیت ہے جوشر عا گناہ اور مذموم ہے اور ترک دائمی کوثو اب سمجھ کرنبیں بلکہا ہے کسی جسمانی یاروحانی مرض کے علاج کے طور پر کرتا ہے تو بلا کراہت جائز ہے جبیہا کہ کوئی شوگر (منسسگ ک مریض (مشکن) کا استعال ترک کردے۔ (معادف)

واقعہ مذکورہ میں آپ میں گئے گئے نے تشم کھالی تھی نزول آیت کے بعداس تشم کوتو ڑااور کفارہ ادا کیا،جیب کہ درمنثور کی روایت میں ے کہ آپ مِلْنَا فِي اللَّهِ عَلَام كَفَارَة مَنْم مِن آزادكيا۔ (ازبيان الغرآن)

قَدْ فَرَضَ اللَّهُ لَكُمْ تَبِعِلَّةَ أَيِّمَانِكُمْ لَين البيصورت مِن جِهال قَتْم كاتو رُناضروري إستحسن موتبهاري تسمول يصحلال ہونے یعن شم تو ژکر کفارہ ادا کردینے کا راستہ نکال دیا ہے، شم کا بیر کفارہ سورہ کا ئدہ آیت ۸۹ بیں بیان کیا گیا ہے چذنجے شخصور

وَإِذْ أَسَدُّ النَّبِيُّ (الآبة) وهراز كي بات كياتهي جوآب يُقطَّقَ في اين كسي بيوي سے كهي تشجيح اورا كثر روايات كي روسے شہدکوحرام کرنے کی بات تھی،اور مخفی رکھنے کا تھم اس لئے دیا تھا کہ زینب دَضِحَالنّائلَغَالْے تھا کواس سے تکلیف ورنج نہ ہو، مگراس ہیوی نے بیراز دوسری بیوی برظا ہر کردیا ،اس راز کی بات کے بارے میں اگر چداورا قوال بھی منقول میں مگررا جے یہ قول ہے۔ فَكُمَّا نَبَّأَتْ بِهِ (الآية) جب اس بيوى نے وہ رازى بات دوسرى بيوى سے كہدى اور الله نے اپنے رسول القائلين كورس افت ئے راز کی خبر کر دی تو آپ بیٹی کا گئی ہے اس بیوی ہے افتائے راز کاشکوہ کیا مگر پوری بات نہیں کھولی کچھ بات کہی اور پچھکوٹال کئے تا کہاس بیوی کوزیادہ خجالت اورشرمندگی نہ ہو، بیآنخضرت یکھٹیٹا کا کرم اورحسن سلوک تھا،جس بیوی ہے راز کی بات بی تھی وہ کون تھی؟ اور جس پر راز ظاہر کیا وہ کون؟ قر آن کریم نے اس کو بیان نہیں کیاءا کثر روایات سے معلوم ہوتا ہے کہ راز کی بات حضرت حفصه رَضِعَالِمَا كُنَّ عَالِيَعُفَا ہے كِي كُنِّي تَقَى انہوں نے حضرت عا كشه دَضِعَالِمَتَعَالِيَعْفَا ہے ذكر كر ديا ـ

بعض روایات حدیث میں ہے کہ حضرت حفصہ رضی لندُنعا نعضا کے راز فیش کرنے پر رسول اللہ بناؤ فیتیا نے ان کوطلاق دینے کا ارادہ فرمایا بگر الند تعالی نے جبرئیل امین کو بھیجی کر آپ ہے فی چھپر کو جات کے روک دیا اور فرمایا کہ وہ بہت نماز گذاراور بکثر ت روزے رکھنے والی ہیں اوران کا نام جنت میں آپ نیوٹیٹیز کی ہو یوں میں نہھا ہوائے۔(مظہری ،معارف) جھش روایات میں ہے کہ آپ بھٹ ٹندیسے ایک طواق ویدی تھی مگر جبر نیل کے کہنے ہے آپ سوئنٹیز نے رجوع فرمانیا۔

إِنْ تَكُولُهَا إِلَى الْمُلَّهُ فَلَقَدْ صَعَتْ قُلُولُكُما ، إِنْ تَنْتُولِها "شَيْهُ اللَّهِ مِن ستمراه دويويال بين وه دوكون بين؟ حضرت ابن عبس تفعَّاللهُ تفالله تفعَّالله تفعَّالله تفعَّالله تفعله على الكي طويل روايت من معلوم : و تا ب كيه وحضرت هفيه وطفارة تفالغ تفاا ورحضرت عائشه رَضَىٰ اللّٰهُ تعالىٰ عَمَا مِن عَبِّ صَعَمَٰ لَكُ مُعَالِمُ عَمَالِكُ تَعَالَمُ عَمَالِكُ عَمَالِهُ اللّٰهِ ا مين دريافت فرمايا توحفترت مم رضي كنذتعات أفي ماياه وحفصه رصي كنابعا كاعاله رباء نشر رصي بدانيا على من مان تأثيبو بسامين دونوں از واج کوخطاب کر کے فر مایا کہتمہارے قلوب حق ہے ماکل ہوئے جیں اس کا تقاضہ ہے کہتم تو بہ کرو، کیونکہ آپ میلاثلاثیا کی محبت اور رضا جوئی ہرمومن کے لئےضہ وری ہے، بھرتم وونو ں نے باہم مشورہ سے ایک صورت افتایا رکی جس ہے آپ ملافقاتا کو تکلیف پیچی لہذااس ہے تو برکر ناضروری ہے۔

عِلَيْهَا الَّذِيْنَ آمَنُوْا قُوْا أَنْفُسَكُمْ والْهَلَيْكُمْ مارا اسْ يَت بين الله ان وَ يَدِينُها يت بي الم دل فی گئی ہے، اور وہ ہےا ہے ساتھ اپنے گھر والوں کی بھی اصابات اور ان کی اسلامی علیم وتر بیت کا اہتمام، تا کہ بیرسب جہنم کا ایند حمن بننے سے نئی جا تھیں ،اس لئے رسول اللہ میونتیجائے فر مایا ہے کہ جب بچے سات سال کی عمر کوئیٹنی جائے تواسے نماز کی تلقین

كَالَيْهَا الَّذِيْنَ الْمُنُواتُوبُوْ الْكَاللَّهِ تَوْبَةً نُصُوْحًا مِعْتِ النَّوْنِ وصمَها صادفةُ من لَا يُعاد الى الدنب ولا يُرادَ العوْدُ الله عَسَى رَبُّكُمْ تَرِحْهِ مِنْ مَعُ أَنْ يُكَفِّرُ عَنْكُمْ رَسِيّا لِكُمْ وَنُذِخِلَكُمْ جَنْتٍ مِستى تَجْرِي مِنْ تَعْتِهَا الْأَنْهُ رُبُومَ لِايُغْزِي الله ادخال الدر النَّبِيُّ وَالَّذِيْنَ أُمُنُوا مُعَهُ أَنُورُهُمْ لَيْعَلَى بَيْنَ أَيْدِيْهِمْ السَّهِ وَ بَحْوَلُ بِأَيْمَانِهِمْ بَقُولُونَ مُسْتَاعَتَ رَبَّبَآ أَتُومُ لِلْمَانُورَيَّا الى العجنة والمسافقُون يُطفى يُؤرُهُمْ وَانْحَفِرْلَنَا مُسَا إِنَّكَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۚ يَأَيُّهَا النَّبِيُّ جَلِهِدِ النَّلْقَارَ عالمتنف وَالْمُنْفِقِيْنَ بِالسِسِ وَالْحُحَة وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ لِالْتَهِارِ وَالْمُنْفِقِيْنَ وَمَأُولِهُمْ مَجَهَنَّمُ وَيَأْسَ الْمَصِيّرُ هي ضَرَبَاللَّهُ مَثَلًا لِلَّذِيْنَ كَفَرُواامْرَاتَ نُوحَ وَامْرَأْتَ نُوطٍ كَانَتَاتَعْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَاصَالِحَيْنِ فَغَانَتُهُمَا مي الدني إد كمفرتنا وكست إنسرأةُ نُوح وَاسْمُها واهنةُ تَقُولُ لقوْمِ اللهُ مخنُونٌ واسْرأَةُ لُوطٍ واسْمُهَا وَاعلَةُ تذُلُّ على اصُيَافه إذَا نَرَلُوا بِهِ لَيْلاً بِيُقَادِ النَّارِ وَنَهَارًا بِالنَّذِحِينِ فَلَمْ يُغَنِيًّا اي نُوحٌ ولُؤطٌ عَنْهُمَا مِنَ اللَّهِ سن عدَابِه شَيْئًا وَقِيلًا ﴾ لهم أَنْخَلَاالنَّارُ مَعَ اللَّهٰ ِلِينَ© سن كَفَار فَوْء غُوح وقَوْء أُوْطٍ وَضَرَّبَ اللَّهُ مَثَلًا لِلَّذِينَ امْنُوا امْرَاتَ فِرْعُونَ ٱلسن بِمُوْسْي وَاسْمُهَا السِيَةُ فَعَذَّبَهَا فِرُعُونُ مِنَ اوْتِد يدينها ورحُنيْها والْقِي على صدرِها رَحي عطيمةً

والمستنبل عنا المشمس مكانت ادا تعزق عليه من و كليه صليه الملاكة (فَالَتْ مي حال النغديد ويَهُ الْبِينِ فَي عَنْدُكُ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ فكشف عنه وأنه فسهل عليها النغديث وَلَيْحِيْنُ مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِه و تغديد وَيَجْرِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّلِمِينَ أَن الْهَلَ ويَنه عند الله وُ وَحها وقال الله كيسلان وُفِعَتُ إلى الجَنَّةِ حَيَّةً فَهِي تَاكُلُ ونشرت وَمَرْيَمَ عظف على المراة ورعول البنت عمران التي المَا عند في فَن عند المواة ورعول المنت عند الواجس الى فرحه فحملت عند الى حسرنيل حيث نعن في حيث وزحه حديق الله فعده الواجس الى فرحه فحملت عند عند وصد وصد المنافعة وصد المنافعة وكَانتُ مِن الفَرْنِيةُ مِن المُعليمين.

سبر بسری است کا استان والوائم الله کے سامنے تجی تو به کرو (نسط و سوال میں نون کے فتہ اور ضمہ کے ساتھ اس طریقه پر که نندوو پاره گناه کرے گا اور نداس کا اراده کرے گا امید ہے که تمہارا رب تمہارے گنا ہوں کو دور کردے گا اور بیا ا یک تو قع ہے کہ جس کا وقوع (یقینا) ہوگا ، تم کوا ہے باغول میں داخل کرے گا جن کے پنچے نہریں جاری ہوں گی جس دان القدنبي كواوراس كے ساتھ ايمان لانے والوں كو آگ ميں داخل كر كے رسوا ندكر ہے گا ان كا نوران كے سامنے اوران ك وائیں دوڑتا ہوگا اللہ ہے دعاءکرتے ہول کے (یقو لون) جملہ متاتفہ ہے،اے ہمارے پروردگار! تو ہمارے اس نورکو جنت میں پہنینے تک باقی رکھئے اور منافقوں کا نور بچھ جائے گا، اور اے بھارے پر ور دگار! تو بھ ری مغفرت فر ما بے شک تو ہ شی پر قاور ہےا ہے نبی! کفار ہے تکوار ہے اور منافقین ہے زبان اور دلیل ہے جہاد کیجئے اور ڈانٹ ڈیٹ اور جھڑک ے ان پر بختی سیجئے ،ان کا ٹھے کا نہ جہنم ہے اور و دئر اٹھ کا ناہے اور اللہ تع لی نے نو آ اور لوط کی بیو یوں کی مثال بیان فر مانی ہے اور بیدونول ہمارے بندوں میں ہے دونیک بندوں کے نکائے میں تھیں ان دونوں نے ان کے دین میں جب کہ تفر کیا خیانت کی نوح علیجلافظیلا کی بیوی جس کا نام وابلہ تھا،اپنی قوم ہے کہا کرتی تھی کہ بیر(میرا شوہر) پاگل ہے اور لوط عَالِيْفِلْا وَالنَّالِا كَي بِيوى جس كانام واعله تقااين قوم كولوط عالِيْفِرا والنَّالِا كِي مهما نوس كي نشاند بي كردين تحقي ، جب رات كوآت تي تقي تو " گ جلا كراوردن ميں دھواں كر كے ،نوح عليجة لأولا شيخة لاورلوط عليجة لاولا ان سے اللہ كے عذاب كورو كئے ميں يتحه كام نہ آئے ان کو حکم دیا جائے گا کہ قوم نوٹ اور قوم لوط میں ہے داخل ہونے والے کا فروں کے ساتھ دوز خ میں داخل ہوجہ ؤ اوراللہ نے ایمان والوں کے لئے فرعون کی بیوی کی مثال بیان فر مائی جو کہ موی عَلَیْقِ الشَّالِا بِرایمان لا فَی تھی اوراس کا نام آ سیدتھ ،اورفرعون اس کے ہاتھ اور پیروں میں میننے گاڑ کر سزادیتا تھا ،اوراس کے بینے پر بھاری پھرر کھ دیتا تھا ،اوراس کوسورج کے رخ کردیتا تھا، اور جب وہ لوگ جن کے اس کوحوالہ کیا تھا الگ ہوجاتے تو فرشتے اس پر سایڈکن ہوجاتے، جب کہ اس نے حالت تعذیب میں دعاء کی اے میرے پروردگار! تو میرے لئے اپنے پاس جنت میں مكان بنادے چنانچەاللەتغالى نے اس كے لئے (پردے)اٹھاد ہے،جس سے اس نے اپنا مكان دېكچاليا،اورسزا كو ح[زعَزَم بِهَلتَه إِ

بر داشت کرنااس کے لئے آسان ہو گیا، اور مجھے فرعون اور اس کے مل سے (یعنی اس کی سزا سے) ہیااور مجھے اس کی ظالم توم یعنی اس کے ہم مذہب لوگوں ہے بچاتو اللہ نے اس کی روٹ کوقبض کرلیا ، اور ابن کیسان نے کہا ہے کہ ان کو زندہ جنت کی طرف اٹھالیا گیا،تو وہ کھاتی ہےاور پیتی ہے، (اورمثال بیان فرمائی) مریم بنت عمران کی اس کاعطف اِمْوَأَقَ فِ وَعُونَ بِہے، جس نے اپنی ناموس کی حفاظت کی پھرہم نے اپنی طرف ہے اس میں روٹ پھونک دی، لیعنی جبرائیل نے اس طریقتہ پر کہاس نے اس کی قبیص کے گریبان میں بھونک مار دی ،اللہ نے جبرئیل کے فعل کو کئیق کر کے چنا نچہوہ میسی ہے حامد ہوکئیں ، اور اس نے اپنے رب کی باتوں کی شریعت کی اور اس کی نازل کردہ کتابوں کی تصدیق کی ،اور و ہ عبا دیت گذارلوگوں میں ہے تھی ۔

عَجِفِيق الْمِنْ الْمِنْ الْمُ الْمُ الْمُولِينَ الْمُ الْمُولِينَ الْمُولِينَ الْمُؤْلِدِنَ الْمُؤْلِدِنِ الْمُؤْلِدِنَ الْمُؤْلِدِنِ اللَّهِ الْمُؤْلِدِنِ اللَّهِ الْمُؤْلِدِنِ اللَّهِ الْمُؤْلِدِنِ اللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ اللللَّهِلْمِلْ اللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللل

فِيُولِنَى ؛ نَصُوحًا نون كِفت كماته ، مباغه كاصيغه ب، بروزان شَكُورٌ ، تومةٌ كه صفت بيعن انتبائي خالص توبه، اورنون کے ضمہ کے ساتھ ،مصدر ہے جیسے نصّع کُصْعُنا و کُصُو خُنا اس صورت میں توبیة کی صفت مبالغة بهوگی اور زید ا عدل کے قبیل ہے ہوگی ، ورنہ تو مصدر کاحمل ذات پرلازم آئے گا ، نُصُوحًا ، تُوبَهُ کی صفت اسنادمی زی کے طور پر ہوگی ورند حقیقت میں نصوحًا تائب کی صغت ہے۔

فِيُولِكُ اللَّهُ اللَّهِ مَنْ جِيدُةٌ مُفَعُ ال عبارت كاضافه كامقصدا يك وال مقدر كاجواب ب-

مِینِوان ؛ بیہ بیک عسلی تر جی اور تو قع کے لئے استعمال ہوتا ہے حال نکدائند تعالی کے کلام میں تر جی اور تو قع نبیس ہوتی بلکہ یقینی الوقوع ہوتی ہے۔

جِينَ البِيعَ: جواب كا خلاصہ يہ ہے كہ عَسْسى اگر چہتو قع وتر جى ،اميد وطمع كے لئے آتا ہے مگر قر آن ميں يقينى الوقوع كے لئے استعال ہوتا ہے،جیسا کہ یہاں ہے۔

فَيَوْلِكُ ؛ يَوْمَ لَا يُنْعَزِى اللَّهُ النَّبِيُّ ، يَوْمَ ياتو، يُدْجِلَكُمْ كُودِت منصوب إِ أَذ كو تَعل محذوف ك وجهت منصوب

فِيُولِكُ ؛ وَالَّذِيْنَ آمَنُوا ياتواس كاعطف المدبي يرب الصورت مين وقف مَعَهُ يربوكا اور نورهم يسعى كلام متانف ہوگااس صورت میں نور همر مبتداء ہوگااور یکسعنی بینهُمُراس کی خبراور بیھی ہوسکتاہے نُورُهُمْریَسْعی جملہ حال ہونے کی وجه بي محلاً منصوب مويه

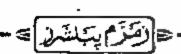
فَيُولِنَى : صَورَب اللَّهُ مَثَلًا، صَرَبَ بمعى جَعَلَ متعدى بدومقعول ب مَثَلًا مفعول بدتانى مقدم إمراة نوح مفعول بداول

ج مفعول بداول کومو فرکر نے گی وید بیہ کہ کانقا تعت عَبْدَیْنِ النے ہے مفعول اول یعنی اِصراۃ دو ہے، امراۃ لوط کا حال بین نی جار با ہے ابندامفعول اول کومو فرکر دیا تا کہ حال اور صاحب حال متصل ہوجا نیں۔
فِحُولُ بَیْ : اَمْرَاْتَ نُوْ ہِ وَهُمُواْتَ لُوطٍ مصحف امام کے رسم الخط کے مطابق اِمْر اُۃ کو لیمی تاء کے ساتھ لکھ کی ہے۔
فَحُولُ بَیْ : شیئاً بین فرق موصوف کے ساتھ لمریُغنیا کا مفعول طلق ہے ای لمریُغنیا اِغْنَاءً شَیْئًا
فِحُولُ بَیْ : قِیْلَ نِیْنِی الوقوع بوئے کی وجہ سے ماضی سے تعبیر کیا ہے، اور قائل المائک یہ س۔
فِحُولُ بَیْ : وَتَعْذِیْبِهِ نِی عَمَلِهِ کا عطف تفیری ہے۔
فَحُولُ بَیْ : ای جبر نیل ، چرکیل ، رُوحنا کی تغییر ہے۔
فَحُولُ بَیْ : ای جبر نیل ، چرکیل ، رُوحنا کی تغییر ہے۔

<u>ؠٚٙڣٚؠؗڔؙۅؘڷۺٛؖڕٛ</u>

تُونُونَ اللّهِ تَوْبَةُ نَصُوحا " توب ' کِفْظُلُ مِتَى لوٹے ، رجوا کرنے کے ہیں ، مرادگنا ہوں ہے رجو کرتا ہے، قرّ سندی اصطلاح ہیں توبہ اس کا نام ہے کہ آدی اپنے بچھا گناہ پرنادم وشرمندہ ہواور آئندہ اس کے ارتکاب ندکر نکی پختہ عزم کرے، نصوح ، نصوح ، نصوح کے معنی عرفی زبان میں خلوص اور خیر خوابی کے ہیں، خالص شہدکو غسل ناصح کہ ہیں اس نے کہ وہ موم اور دیگر آلائشوں ہے پاک صاف ہوتا ہے، پھٹے ہوئے کپڑوں کی مرمت کرنے کو بھی ضاحتہ کہ بیں اس نے کہ وہ موم اور دیگر آلائشوں سے پاک صاف ہوتا ہے، پھٹے ہوئے کپڑوں کی مرمت کرنے کو بھی ضاحتہ کہ بیں ، تسویہ اور گئر قوابی کرے اور گن ہے ہوگا اس کے ارتکاب نام ہوتا کہ میں ہوتے کہ خوابی کرے اور گن ہے ہوئی کو بیا ہے، پالے کہ گناہ کی وجہ ہے اس دین میں جوشگاف پڑئی سے جو بیہ کہ گناہ کی وجہ ہے اس دین میں جوشگاف پڑئی سے جو بیہ کہ توبہ المنصوح ہیے کہ آدی اپنی گرشتہ کل سے ہوتا ہو، اور گئری نے کہا کہ توبہ المنصوح ہیے کہ آدی اپنی گذشتہ کس کہ بیادہ مواوراس کی طرف ندلو شخ کا پختہ عزم مرکھا ہو، اور گئری نے کہا کہ توبہ المنصوح ہیے کہ آدی اپنی ہو کوجد کی بیدی توبہ ایک ہو اور اپنی ہو ایک ہو توبہ ایک ہو جو بیا ہو جو کہ بیا ہو کر بیا ہیں ہو اور اس کی طرف ندلو شخ کا پختہ عزم مرکھا ہو، اور گئری نے کہا کہ توبہ المنصوح ہیے کہ آدیاں ہو اور اس کے ساتھ جو بعدی توبہ کرتے ہوئے دیا ہو کہ بیا ہی ہو تھا پھر بھی توبہ کی اس کے موبہ ایک ہو بہ کیا ہو جو کہ ہو بہ کیا ہی توبہ کی ہوئی ہو اس کے ساتھ جو بعدی توبہ کو اس کی ساتھ کہ توبہ کی اس کو ایک ہو اس کی اور اس کی اطاعت میں گھلا دے، جس طرح تو نے اب تک اے معصیت کا خوگر بندے رکھا ہوراس کو اطاعت کی کی کا عزا پچھا، جس طرح اب تک تو اے معصیت کا خوگر بندے رکھا ہوراس کو اطاعت کی کی کا عزا بھو کھا، جس طرح اب تک تو اے معصیت کا خوگر بندے رکھا ہوراس کو اطاعت کی کو کا عزا بھو کہا عزا پہلے کا میا ہوا ہوں کی کو کا عزا بھو کھا، جس طرح اب تک تو اے معصیت کا خوگر بندے رکھا ہوراس کو الماعت کی کی کا عزا ہو کھا، جس طرح اب تک تو اب معصیت کا خوگر بندے رکھا ہو اور اس کو الموراس کو ال

کشاف، مطهری)



فَا فَكُوكُ ؛ تو بہ کے سلیط میں مندرجہ ذیل امور کو قائن میں رکھنا ضروری ہے ، اول یہ کہ تو بددر حقیقت کی معصیت پراس کے ناوم ہوتا ہے کہ وہ اللہ کی نافر مانی ہے ، ورنہ کسی گناہ سے اس لئے پر ہیز کا عہد کر لینا کہ مثل وہ صحت کے سئے نقصان دہ ہے یا کسی بدنا می یا ، کی نقصان کا موجب ہے ، یہ تو بہ کی تعریف میں نہیں آتا ، دوسرے یہ کہ جس وقت یہ احساس ہوجائے کہ اس سے اللہ کی نافر مانی ہوئی ہے تو تو بہ کرنے میں جلدی کرے اور بلاتا خیر اس کی تلائی کرنی چاہئے ، تیسر ہے یہ کہ تو بہ کہ جو جو جائا اور تو بہ کو کھیل بنالینا اور اس گناہ کا باربارا مادہ کرنے جس سے تو بہ کی گئا ہو کہ پھر اس گناہ کا اعادہ ہوجائے تو پچھلا گناہ تازہ نہ ہوگا ، البتد اس بعدوالے گن ہ پھر تو بہ کرنے چاہئے ، پانچویں بہ کہ جرم جہ جب معصیت یاد آئے تو بہ کی تجد یہ کرنا لازم نہیں ہے لیکن اگر اس کا نفر میں بایتہ گئی یا دے لطف لے رہا ہوتو بار بار تو بہ کرنی چاہئے بہاں تک کہ گن ہوں کی یو و اس کے لئے لذت کے بجائے شرم ساری کی موجب بن جائے۔

عَسى رَبُّكُمْ اَنْ يُسَكَفِّو عَنْكُمْ آيت بين لفظ عَسَى استعال ہوا ہاں کے معنی اميداورتو قع کے ہيں گريہاں اس
ہمراد وعدہ ہاں لئے کہ ہوے لوگوں مثلاً بادشاہوں کا اميد ولا تا وعدہ سجھا جا تا ہے اللہ تعالی تو با وشاہوں کے بادشاہ ان کی توقع اور اميد ولا ناوعدہ ہی سجھا جائے گا، گر لفظ عَسنے استعال کر کے اس بات کی طرف اشارہ کرديا کہ انس ن کا کوئی بھی عمل يا تمام اعمال صلح ہے بدلے میں ضرور منام اعمال صلح کے بدلے میں ضرور جنت میں واخل کرے بیض اللہ کے فقال وکرم پر موقوف ہے، جیسا کہ حدیث میں ہے کہ درسول اللہ ایسی فقی تنہیں ولاسکتا ، صحابہ وضوفائنگا نے فرمایا یا رسول اللہ ایسی کوسرف اس کا عمل نوج ہے نہوں والسکتا ، صحابہ وضوفائنگا نے فرمایا یا رسول اللہ ایسی کوسرف اس کا عمل نوج ہے نہوں ولاسکتا ، صحابہ وضوفائنگا نے فرمایا یا رسول اللہ ایسی کوسرف اس کا عمل نوج ہے نہوں ولاسکتا ، صحابہ وضوفائنگا نے عرض کیا یا رسول اللہ ! آپ فیکھی آپ بیٹی کا کھی آپ بیٹی کا کھی آپ بیٹی کھی آپ بیٹی کھی آپ بیٹی کھی کے فرمایا ہی ورسون اس محصر کی ایک انتدا ہے فضل ورحمت کا معاملہ نہ کرے۔

اس محصر بھی جب تک انتدا ہے فضل ورحمت کا معاملہ نہ کرے۔

(بعدادی منظودی)

لا یُسٹونی اللّٰه النَّبِی وَ الَّذِیْنَ آمَنُوْ ا مَعَهُ مطلب بیرکدالله پرواجب اور لازم نبیس کی صفح کمل کے عوض کسی کو جنت میں داخس کر ہے گر بھی ہم کہ متحق کی آپ بیلی کا موقع ہر گزندد ہے داخس کر ہے گر بھی المتدت کی آپ بیلی کھی تو ان کو کیا صلد ملا؟ رسوائی باغیوں اور نافر مانوں کے حصہ میں آئے گی نہ کہ وفا داروں اور فرمانبرداروں کے حصہ میں آئے گی نہ کہ وفا داروں اور فرمانبرداروں کے حصہ میں۔

صَّرَبَ المُلُهُ مَثَلًا لِللَّذِيْنَ كَفَرُوا المرَأْتَ نوحٍ (الآية) سورت كَآخرى ركوع ميں امتدعالی نے چار عورتوں کی مثالیں بیان فرمائی ہیں، پہلی دوعورتیں دو پیغیبروں کی بیویاں ہیں جنہوں نے دین کے معاملہ میں اپنے شوہروں کی مخالفت کی جس کے نتیجے میں جہنم میں گئیں،اللّہ کے برگزیدہ پیغیبروں کی زوجیت بھی ان کوعذاب سے نہ

__ ∈ (مَنزَم بِبَئشَ ﴿

بی سکی، ان سے میں ایک حضرت نوح علی الفاق الفاق کی بیوی جس کا نام واہلہ بیان کیا گیا ہے، دوسری حضرت بوط ملی ان سے میں اور بھی مختلف اقوال ہیں تیسری وہ علیہ الفاق الفاق کی بیوی جس کا نام واعلہ بیان کیا گیا ہے (قرطبی) ان کے ناموں میں اور بھی مختلف اقوال ہیں تیسری وہ عورت جوسب سے بڑے کا فرضدائی کے مدعی فرعون کی بیوی آسی تھی مگر موٹ علیف الفاق کی بان کے آئی، اس کواللہ عن نہ درجہ دیا کہ وزیرہ کی میں اس کو جنت کا مقام دکھلا دیا، شوہرکی فرعونیت اس کی راہ میں کچھ ھائل نہیں ہوسکی، چوت حضرت مریم ہیں جو کسی کی بیوی نہیں مگر ایمان اور اعمال صالحہ کی وجہ سے اللہ تعالیٰ نے ان کو بیدرجہ دیا کہ ان کو نبوت کے کمالا ت عطا کے آگر چہ جمہورامت کے نزد یک وہ نہیں۔ (معارف)

وَصَدَّفَتْ بِكُلْمَاتِ رَبِّهَا وَكُنِّبِهِ كُمَات عمرادا سانى صحفے بين اوركت عمرادمشهورة سانى كتابين بين ـ



مُؤُوِّةُ لَلْمُ الْبُ مِكْتِدَةً وَهُوَ لَلْهُ وَلَا يُرْدُونَا لِيُدُونِ اللَّهُ وَلَا يُحْدُونَا الْمُؤْنِ

سُورَةُ الْمُلْكِ مَكِّيةٌ تَلاثُونَ ايَةً.

سورہ ملک مکی ہے، تمیں آبیتیں ہیں۔

يُ يِسْسِمِ اللهِ الرَّحْسِمُنِ الرَّحِسِيْمِ تَبْرَكَ مَا مَا صَعَاتِ المُحَدِثِينَ الْذِي بِيَدِهِ فِي تَصَرُّفِهِ الْمُلُكُ أَلْسُسُطُنُ والتَّذَرَةُ وَهُوَعَلَى كُلِّ شَيْءً قَدِيْرُ ۚ إِلَّذِي خَلَقَ الْمَوْتَ مِي الدُّنَهِ وَالْخَيُوةَ فِي الاجرةِ اوهُمَا فِي الدُّنْيَا فالنُّطُعةُ تُعُرضُ لَهَا الخيوةُ وهي مَا له الاحْساسُ والمؤتُّ ضِدُها اوْعَدْمُهَا قَـوْلان والخلقُ عَلَى الثَّانِي بِمَعْنِي التَّقُديرِ لِلبِّلْوَكُمُّرِ ليختبر كُم في الحيوة ٱلْكُلُّرُٱحْسَنُ عَمَلًا أَطُوعُ لِلَّهِ وَهُوَالْعَزِيْرُ مِي اِنتِقامه مِمَّن عَصَاه الْغَقُورُ ۖ لِم دَب اليه الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمُوتٍ طِبَاقًا مِعْصِها فوق بغص بِن غيرِ سُمَاسَّةٍ مَاتَّرِي فِي خَلْقِ الرَّحْمَٰنِ لَهِن ولا لِعيرهِنَ مِنْ تَفُوْتٍ تبايْنِ وعدم تناسُبِ فَالْرَجِعِ الْبَصَرُّةُ أعِده إلى السَّماءِ هَلَ تَرَى ميها مِن فُطُورٍ صُدُوع ومُنفُون ثُمَّالَجِع الْبَصَرَّكَرْتَيْنِ كرَّةُ نعُد كرَّةٍ يَنْقَلِبُ نِهِ خِعُ اِ**لَيْكَ الْبَصَرُخَاسِمًا** ذَلِيْلا لِعِدَم اذراك حَسِل وَّهُوَحَسِيْرُ السَّنْفَطِعُ عَس رُؤْيَةِ خَسَل وَلَقَدُ زَيَّيَّنَا السَّمَاءُ الدُّنْيَا التُّوى الى الازض بِمَصَابِيْحَ بنخوم وَجَعَلَنْهَارُجُومًا سرَاحِم لِلشَّيطِيْنِ إذَا اسْترَقُوْا السَّمْع بِان يَنْفُصلُ شِهابٌ عَن الكؤكب كالفُنسِ يُوحذُ مِن النَّارِ فيقُنْلُ الْحِيِّيِّ أو يَحْلُه لا أنّ الكُؤكبُ يَزُولُ عِن مَكَانِهِ وَأَعْتَدْنَالُهُ مُعَذَابَ السَّعِيْرِ السَّارُ السُوقِدة وَلِلَّذِينَ لَفُرُوا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمَصِيْنُ هِي إِذَّا ٱلْقُوْافِيْهَاسَمِعُوْالْهَاشَهِيقًا صَوْتًا مُنكرًا كَصَوْتِ الجِمَارِ وَهِي تَقُوْرُ ثَوْ تَعَلَىٰ تَكَادُتُمَيَّزُ وَقُرى تَتْمِيَّزُ عِلَى الْأَصْلِ تَنْقَطِعُ مِنَ الْغَيْظِ غَصَبًا على الكُمَّار كُلَّمَّا ٱلْقِيَفِهَافُوجٌ جماعَةُ سنهم سَالَهُمُ خَزَنَتُهَا سُـوال تَـوْبِيح ٱلْمُمَّالِيَكُمُّ لَذِيْنِ رسُـولٌ يُـنُـدرُ كُـم عداب الـنَـه تعدلي قَالُوْلِيَلَ قَذْجَاءَنَانَذِيْنُ فَكَذَبْنَا وَقُلْنَامَانَزَّكُ اللَّهُ مِنْ شَيْءَ إِنْ ما أَنْتُمُ إِلَّافِي ضَلْلِكِيدِ في خِنْ مِنْ أَنْ يَكُون مِن كَلَام الملائِكَةِ لِمكفّار جينَ الْحَبِرُوا بِالتَكَذِيبِ وَأَنْ يَكُونِ مِن كَلامِ الْكُمَّارِ لِمُدُرِ **وَقَالُواْ لُوَكُنَّا لَسُمَّخُ** اى سماع تعيُّم ا**وَنَعُوَّلُ** اى عقُل

(مخلوق) کی صفات سے پاک ہے،جس کے قبلتہ تھ ف میں بادشاہی اور قدرت ہے جس نے و نیامیں موت کو پیدا فر مایا اور حیات کو آخرت میں پیدافر مایا، یا دونوال کورٹیامیں پیدافر مایا چنانچے نطفہ میں حیات ڈالی جاتی ہے،اور حیات وہ ہے کہ جس سے احساس ہوتا ہے،اورموت اس کی ضد ہے یا مدم حیات کا نام موت ہے، بیدووٹوں قول میں ،اور ٹانی صورت میں حسلنی جمعنی تقدیم ہوگا، تا کہ حیات میں تمہاری آ ز مائش کرے کہتم میں کون شخص عمل میں زیاد واحچھاہے؟ لیعنی زیاد وفر مانبر دارہے، و واپنی نافر مانی كرنے والے سے انتقام لينے ميں زبر دست ہے اور جواس كى طرف رجوع كرتا ہے اس كومعاف كرنے والا ہے اس نے سات آ سان نہ بہ نہ بیدا کئے بعض بعض کے او پر اتصال کے بغیر ، تو خدا کی اس صنعت میں یااس کے ملاوہ (کسی اورصنعت) میں كونى خلل مثلاً تباين اورعدم تناسب نبيس و تجھے گا ٻير انظر آيان كى طرف يونا كہيں تجھے كوئى خلل يعنى شرگاف اور تشكى نظر آتى ہے؟ پھر نظر مکرر بار ہار ڈال نقص کا ادراک نہ کرنے ک مجہ ہے ذکیل ودر ماند ہ ہوکر تیری طرف لوئے گی حال ہید کہ وہ نقص کے ادراک سے عاجز ہوگی ہے شک ہم نے آسان دنیا کو بعنی زمین ہے قریبی آسان کو چراغول ستاروں ہے آ راستہ کیا ہے اور ہم نے انہیں شیاطین کو مارنے کا آلہ (ذریعہ) بنایا ہے جب کہ وہ چوری چھپے سننے کے لئے کان لگاتے ہیں اس طریقہ سے کہ ستارہ ے شعلہ جدا ہوتا ہے، جس طرح کہ چنگاری آ گ ہے جدا ہوتی ہے تو وہ جنی ولک سردیتا ہے، یااس کو پاگل بنادیتا ہے، نہ ریہ کہ ستارہ اپنی جگہ سے ہٹ جاتا ہے اور ہم نے شیطا نول کے لئے دوزخ کا جلانے والاعذاب لیعنی جلانے والی ہ گ تیار کرر کھا ہے اوراپنے رب کے ساتھ کفر کرنے والوں کے لئے جہنم کا مذاب ہے اور وہ کیا ہی بری جگہ ہے اور جب وہ اس میں ڈالے جا نمیں ئے تو وہ اس کی گدھے کی آواز کے مانند ناخوشگوار آواز سنیں کے اور وہ جوش مار رہی ہوگی قریب ہے کہ کافروں ہرغصہ ک مارے پھٹ جائے اوراصل کے مطابق تقسمیّز بھی پڑھا گیا ہے جمعنی تسنقطعُ جب بھی اس میں ان میں کی کوئی جماعت جہنم میں ڈالی جائے گی تو جہنم کے تگرال بطور تو بھٹان ہے سوال کریں گے کیا تمہارے پاس ڈرانے والا رسول کہ جس نے تم کوالقد کے عذاب ہے ڈیرایا ہو نہیں آیا تھا؟ تو وہ جواب دیں گئے ہے شک آیا تھالیکن ہم نے اسے تجٹلا دیا اور ہم نے کہددیا کہ القدنے کچھ

بھی نازل نہیں کیاتم بہت بڑی گمرای میں ہواخہال ہے ہے کہ بینبیوں کو کفار کا جواب ہو، اور وہ فرشتوں ہے(بیکھی) کہیں گے ا ً رہم سمجھنے کے لئے سنتے یا غور کرنے کے لئے سمجھتے تو ہم جہنمیوں میں ہے نہ ہوتے غرض وہ اپنے جرم کا اقرار کریں گے جب کہ ان کا اعتر اف جرم ان کوکوئی فائد و تبیس دے گا ، اور وہ جرم رسولوں کی تکندیب ہے سواہل دوز خے پرلعنت ہے بیعنی ان کے لئے اللّه کی رحمت ہے دوری ہے، (سُمحنصًا) جاء کے سکون اور ضمہ کے ساتھ بیشک وہ لوّب جوایئے پر ور دگارہے یا ئباندڈ رتے ہیں (لینیٰ) جب کہ وہ لوگوں کی نظروں سے غائب ہوتے ہیں تو وہ حجیب کراس کی اطاعت کرتے ہیں تو وہ طاہر میں بطریق اولی اطاعت کرنے والے ہوں گے، ان کے سے مغفرت اور بڑا اجرے لیعنی جنت ،اوراے لوگو! تم خواہ حیجے کر بات كرويا ظا ہركر كے بے شك القدتع الى سينول كے رازوں كا جانے والا ہے تو پھر جوتم بولتے ہواس كا كيا حال ہوگا؟اس آيت كنزول كاسبب بيهوا كمشركين في آپل ميل كها كهم خفيه طورير باتيس كيا كرو، ايب ند بوكه محر (الماق الله على كا خداس له، کیاوہ نہ جانے گا جس نے اس چیز کو پیدا کیا جس کوتم چھیاتے ہو یعنی کیا اس کاعلم اس ہے متفی ہوجائے گا ؟ نہیں ، وہ اپنے علم کے اعتبار سے بار یک بین اوراس سے باخبر ہے۔

عَجِقِيق الْرَكِي لِيسَهُ مَا الْحِقْفِيلِينَ الْحَالِمَ الْمِنْ الْحَالِمَ الْمِنْ الْحَالِمَ الْمِنْ الْمُؤْلِمِينَ الْحَالِمُ الْمُؤْلِمِينَ الْحَالِمُ الْمُؤْلِمِينَ الْحَالِمُ الْمُؤْلِمِينَ الْحَالِمُ الْمُؤْلِمِينَ الْحَالِمُ الْمُؤْلِمِينَ الْحَالَةِ الْمُؤْلِمِينَ الْحَلْقِينَ الْمُؤْلِمِينَ الْمُؤْلِمِينَا الْمُؤْلِمِينَ الْمُؤْلِمِينَا الْمُؤْلِمِينَ الْمُؤْلِمِينَا الْمُؤْلِمِينَ الْمُؤْلِمِينَ الْمُؤْلِمِينَا لِلْمُؤْلِمِينَا الْمُؤْلِمِينَا الْمُؤْلِمِينَا الْمُؤْلِمِينَا الْمُؤْلِمِينَا الْمُؤْلِمِينَا الْمُؤْلِمِينَ الْمُؤْلِمِينَا الْمِينَالِمِينَالِمِينَا الْمُؤْلِمِينَا الْمُؤْلِمِينَا الْمُؤْلِمِينَا الْمُؤْلِمِينَالِمِينَا الْمُؤْلِمِينَالِمِينَا الْمُؤْلِمِينَالِمِينَا الْمُؤْلِمِينَا الْمُؤْلِمِينَالِمِينَا الْمُؤْلِم

يَجُولُكُن ؛ خَلَقَ الْمَوْتَ في الدنيا، والحَيَاةَ فِي الآخرة، اوْهُمَا فِي الدُّنْيا، موت اور حيات كي إر يس اختلاف ہے ابن عباس تفتحالت کا العظم کا بی اور مقاتل ہے منقول ہے کہ موت اور حیات دونوں جسم ہیں ،اس صورت ہیں موت اور حیات د ونول، وجودی ہوں گےاور بحلق اپنے اصلی معنی ہیں ہوگا، دونوں کے درمیان تقابل تضاد ہوگا،اوربعض حضرات نے کہاہے کہ موت عدم حیات کا نام ہے اس صورت میں حیات وجودی اور موت عدمی ہوگی ، اس صورت میں تقابل عدم والملک کا ہوگا، جبیہ کہ عدم الہصر میں ،موت کی دوسری تفسیر کی صورت میں خَعلَقَ مجمعنی قَدّ ہوگا ،اس لئے کہ تقدیر کا تعلق عدمی اور وجودی دونو ل ے جائز ہے، بخلا نے خلق کے کہاس کا تعلق وجودی ہی ہے تو درست ہے مگر عدمی ہے درست نہیں ہے۔

حق بات:

حق بات سے ہے کہ اہل سنت والجماعت کے نز دیک موت وجودی ہے تگر حیات کی ضد ہے جیسا کہ حرارت اور برودت، د ونوں آپس میں متضا دہونے کے باوجود وجودی ہیں بہدا قول ابل سنت والجماعت اور دوسرامعتز لہ کا ہے۔

(حاشيه جلالين ملحصًا)

بہتر ہوتا كمفسرعلام (بيده) كتفسير بقدرتِ الله عكرت اس كئے كه استيلاء تصرف كوكتے بي ،لهذامطلب ہوگا فی تصرفه التصرف جس کا کوئی مطلب بیس ہے۔

عِينُ إِنَّى ؛ وَالْحَياة فِي الآخرة لِعِني موت ونيا من بيدا كي اور حيات آخرت من مراس تول كي مساعدت الله تعالى كا تول لِيَبْسِلُ وَ كُسِمْ نبيس كرتا،اس لئے كدامتحان اور آزمائش كاتعلق و نيوى حيات ہے ہے نہ كدأ خروى حيات ہے معلوم ہوا موت وحیات کالعلق و نیا ہے ہے۔ (صاوی)

فيولكى: الفريني يقريب كالم تفضيل بيعن وه آسان جوزين سقريب ترب، ونيا كودنيااى وجد كتي بي سي آخرت

کے ساتھ بھی پڑھا ہے یا تو جملہ متانفہ ہونے کی وجہ سے یا حال مقدرہ ہونے کی وجہ سے اور فاءکو حذف کردیا گیا ہے اصل میں

فَيُولِنَى : رُجُومًا، رُجُومٌ، رَجْمٌ كَ جَعْبَ رَجْمٌ مصدر إلى كااطلاق مرجوم به يركيا كياب الى ليَ مفسرعلام ف رجوم كي تفير مَوَاجِمَ على ب أي يُرْجَعُر به.

فَيُولِكُونَ ؛ بانْ يَنْفَصِلَ شِهَابُ المن اسافاف كامقصدايك والكاجواب --

وَجَعَلْنَهَا رُجُومًا لِلشَّيطِيْنِ كَامْنَقْضَى بِكُروه الني جُكرت بث جائين دونون باتون من تضادوتعارض بي؟

آگ يس سايك چنگارى

فَيُولِكُم : يَخْعِلْهُ يه خَبْلُ بِسكون باء عصتنق بجس كمعى فسادفي العقل كي بي -

فِيَوْلِكُنَّى اللَّذِيْنَ كَفَرُوا الح، وَلِلَّذِيْنَ كَفَرُوا خَرِمْقدم إورعذاب جهنم مبتداء مؤخر إ

قِوْلُكُم ؛ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ جَمْدُهَالِيهِ عِـ

فِي إِنْ الله لا السيس اشاره بكراستفهام الكارى ب، البذائق الفي بوكرا ثبات بوكرا بمقصد الله تعالى كا حاطه على كا ا ثبات ہے۔

ێٙڣٚؠؗڔؗۅ<u>ڗۺٛ</u>ڕؙڿ

سورة ملك كفضائل:

اس سورت کی فضیلت میں متعدد روایات آئی ہیں، جن میں چند روایات سیح یاحس ہیں، ایک میں رسول الله بين الله الله الله فر مایا" الله کی کتاب میں ایک سورت ہے جس میں صرف ۳۰ آیات میں بیآ دمی کی سفارش کرے گی یہاں تک کہ اس کو بخش

ح[الِمَزَم بِهَالشَّرْد]≥

ويوج كان - (ترمذى، ابوداؤد، ابن ماجه، مسنداحمد)

د وسری روایت میں ہے'' قر آن مجید میں ایک سورت ہے جوابیے پڑھنے والے کی طرف سے لڑے گی تی کہاہے جنت میں داخل کروائے گی''۔ (محمع الزوالد)

تر مذى كى ايك روايت ميں ہے كدرسول الله ﷺ ارات كوسونے سے پہلے سورة الآمر السجدہ اور سورة ملك ضرور يرا ھے تھے۔

سورة ملك كے ديگرنام:

اس سورت كوحديث مين واقيداور منجيه بھي فرمايا گياہے،''واقيہ' كے معنى بين بچانے والى اور''منجيه'' كے معنى بين نجات

تَبَارَكَ الَّذِيْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيءٍ قَدِيْرٌ ، تَبَارَكَ، بركَةٌ عَمْسَنْ بِصِ كَمَعَىٰ برعے اور زیادتی کے ہیں، جب بیلفظ اللہ تعالیٰ کی شان میں بولا جاتا ہے تو اس کے معن ''سب سے بالا دبرتر'' ہونے کے ہوتے ہیں، بِيَسسدِ هِ المسملك ملك الله كاته مين ب، باته سه مراديه عروف باته مين به بلكه باته سه مراد قدرت اورا ختيار بي لين مرهى اس کے شاہاندا ختیار میں ہے یکڈ وغیرہ جیسے الفاظ کا اطلاق اللہ تعالیٰ کے لئے متشابہات میں سے ہیں،جس کے حق ہونے پرایمان لا نا واجب ہے مگراس کی کیفیت وحقیقت کسی کومعلوم نہیں ہے اس کئے کہ اللہ تعالیٰ جسم وجوارح ہے بالاتر اور پاک ہے ہفسیر مظہری میں ہے کہ موت اگر چہ عدمی چیز ہے گرعدم تھن تہیں، بلکہ ایسی چیز کا عدم ہے جس کو وجود میں کسی وفت آنا ہے، اور ایسی تمام معدومات کی شکلیس عالم مثال میں ناسوتی وجود ہے جبل موجود ہوتی ہیں جن کواعیان ٹابتہ کہا جاتا ہے ان اشکال کی وجہ ہے ان کوبل الوجود بھی ایک شم کا وجود حاصل ہے اور عالم مثال کے موجود ہونے پر بہت ی روایات حدیث سے استدلال فرمایا ہے۔

موت وحیات کے درجات مختلفہ:

. ﴿ [زَمَزَمُ بِبَاشَرِهُ] ≥

التدجل شاندنے اپنی قدرت اور حکمت بالغدے گاو قات وممکنات کی مختلف اقسام میں تقسیم فر ماکر ہرایک کوحیات کی ایک تشم عطا فر ما ئی ہے سب سے زیادہ کامل اور تکمل حیات انسان کوعطا فر مائی ہے، جس میں پیصلاحیت بھی رکھوی کہوہ جق تعالیٰ کی ذات وصفات کی معردنت ایک خاص حد تک حاصل کر سکے ، اور بیمعرفت ہی احکام شرعیہ کی تکلیف کا مدار ہے اور وہ بارا مانت ہے کہ جس کے اٹھانے سے آسیان اور نمین اور پہاڑ ڈر گئے تھے، اور انسان نے اُسے اپنی اس غداداد صلاحیت کے سبب اٹھالیا اس حیات کے مقابل وہ موت ہے جس کا ذکر قر آن کریم کی آیت اَفَ مَنْ سَکَانَ مَیْتًا فَاَحْیَیْنَاهُ مِیں ذکر فر مایا ہے کہ کا فرکومر دہ اور مومن کو زندہ قرار دیا گیا ہے، کیونکہ کا فرنے اپنی اس معرفت کو ضائع کر دیا جوانسان کی مخصوص حیات تھی اور مخلوقات کی بعض اصناف واقسام حیات کا بیددرجہ تونہیں رکھتیں گران میں حس وحر کت موجود ہے اس کے مقابل وہ موت ہے جس کا ذکر قر آن کریم کی آیت كُنْتُمْ أَمْوَاتًا فَأَخْيَاكُمْ ثُمَّرُ يُمِينَتُكُمْ ثُمَّريُحْيِيْكُمْ مِن آيابِ كماس جَكه حيات سے مرادس وحركت اور موت سے مراداس كا

ختم ہو جا نا ہےاور مکنات کی بعض اقسام میں می^{س وحر}کت بھی نہیں صرف نمو (بڑھنے کی صلاحیت) ہے جبیں کہ درخت اور عام نباتات میں اس کے بالقابل وہ موت ہے جس کا أسرقر آن کی آیت یُسحنی الْلارْ صَ سَعْدُ مَوْتِهَا میں آیا ہے، حیات کی پیتین فسمیں انسان ،حیوان ،نبات ، میں منحصر ہیں ،ان کے ملاوہ اور سی میں بیا قسام حیات نہیں ہیں اس لئے تق تعالی نے پھرول سے ہے بتوں کے لئے فرمایا "اُلْمُواتُ غیر احیاء" کین اس کے باوجود بھی جمادات میں ایک تتم کی حیات موجود ہے جووجود ک ساتھ، زم ہے،ای حیات کا اثر ہے جس کا ذکر قرآئ ن کریم میں وَ إِنْ مِنْ شی اِلَا یُسَبِّعُ بِعَصْدِه لِیمْ کُولَی چیزالی نبیں جواللہ کی حمد کی تنبیج ندیز تنتی ہو،اور آیت میں موت کا ذکر مقدم کرنے کی وجہ بھی اس بیان سے واقعی ہوگئی کہ اصل کے امتبارے موت ہی مقدم ہے ہر چیز وجود میں سنے سے پہلے موت کے مالم میں تھی ، بعد میں اس کوحیات عطا ہوئی ہے۔

إِنَّ الَّـذِيْنِ يَخْشُونَ رِبَّهُمْ بِالغَيْبِ لَهُمْ مَعْفِرَةٌ وَاخْرٌ كَبِيْرٌ بِيابِلَ عَرَى تَندُيب كمقابِه مِن الجب المان كااوران کی فہتوں کا ذکر ہے جوانبیں قیامت دالے دن اللہ کے بیبال مہیں گی ، بالغیب کا ایک مطلب تو پیہے کہ انہوں نے اللہ کو دیکھا تو تنبیں کیکن پیغیبر دں کی تصدیق کرتے ہوئے و دامند کے مذاب ہے ذرتے ہیں ، دوسرامطاب پیجی ہوسکتا ہے کہلوگوں کی نظروں سے غایب بعنی خلوقوں میں اللہ ہے ڈرتے ہیں۔ (مطهری ملحث)

هُوَالَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَمْضَ ذَلُولًا سَيْدَ لِمِسْمَ فِيهَا فَامْشُوا فِي مَنَاكِبِهَا حَسُوانِهِ وَكُلُوا مِنْ رِّنَ قِهُ المخلوق لاختكم **وَ إِلَيْهِ النُّشُوْرُ** مِن التُّلُورِ للحراء عَ**أَمِنْتُمْ** متحقيق الهمَرنين وتشهيل الثالية واذحال التب بينها ولين الأحرى وتركها والدالها النَّا قُنْ فِي التَّكَاءُ شَلْطَالُهُ وقُدْرِنُهُ أَنَّ يَنْحسِفَ لدلُ من من يَكُمُ الْأَرْضَ فَإِذَا هِيَ تَمُوْرُهُ مِحْزِكَ حَمْ وَنَزِعَهُ فَوَقَكُمْ أَمُرَامِنْتُمْ مَّنَ فِي السَّمَاءِ اَنْ يُنْرُسِلُ مِنْ س من عَلَيْكُمْ حَاصِيًا للهِ يَحَا تَرْمِيكُم الحِمْمَاء فَسَتَعْلَمُوْنَ عَنْد مُعالِمَ العِداب كَيْفَ نَذِيْرِ الداري العداب اى الله حقّ وَلَقَدُ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِن الْسِهِ فَكَيْفَكَانَ نَكِيْرِهِ الْحارى عديه المُ التَّكُديب عبد إغلاكهم أي أنه حق أولَمْ يَرُوا لِمَارُوا إِلَى الطَّيْرِفُوْقَهُمْ في الهواء صَفَّتٍ باسف الحسمتين وَيَقْبِضُنَ مُ الحسمتين عد المستدان وصصاب مَايُمُسِكُمُنَّ عن النُوقُوع في خال المشط المِلَهُ والفنص إلكَّ الرَّحْنُ عَدُرت اِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ بَصِيرُكُ المغنى لم سنندلُوا سُنُوت الطير في الهواء غني فُذرت انَ نَفْعِيلِ لِهِمْ مَا تَقَدُم وعيره مِن العدابِ أَمَّنُ مُنتِداً هٰذَا حِيرُهُ الَّذِي عِدلُ مِنْ هدا هُوَجُنْدُ أَخُوانُ لَّكُمْ مِسَةُ الَّذِي يَنْصُرُكُمْ صِفَةً خُمْدِ مِنْ دُونِ الرَّحْمَنِ أي عيره يذفع عبكم عدامة أي لاناسر كم اِن ، الكَّفِرُونَ اِلَّافِيْ عُرُورٍ ۚ عـرَهُـهُ الشيف لـ ن العداب لا بنرلُ هـ أَعَنْ هٰذَا الَّذِي يَرْمُ أَقَكُمُ اِنْ أَمْسَكَ البرخملُ يِثْمُقُلاً أي السطر عسكم وحواتُ الشرط سحدُوفُ دلَّ عليه ما قبُلةُ اي فمل يُزرُ قُكُم اي - ≤ (زَمَّزُم پِبَئشَرِزٍ ﴾ --

اطراف وجوانب میں چلو پھرو اور خداکی روزی میں ہے جس کواس نے تہمارے لئے پیدا کیا، کھاؤ، اور قبروں میں ہے جزاء کے لئے اس کے پیدا کیا، کھاؤ، اور قبروں میں ہے جزاء کے لئے اس کی طرف اٹھ کھڑا ہونا ہے، کیاتم اس بات ہے بخوف ہوگئے؟ (أأمِنْ نُتُمْ) میں دونوں ہمزوں کی تحقیق کے ساتھ اور دوسر ہے کی شہیل کے ساتھ ، اور مسبلہ اور غیر مسبلہ کے درمیان الف داخل کر کے اور ترک او خال کر کے، اور اس کوالف ہے بدل کر، کہ آسان واللہ یعنی آسان میں جس کی سلطنت اور قدرت ہے تم کو زمین میں دھنساد ہے (اُنْ یَسْخُوسِفُ) مَنْ سے بدل ہے اوراچا تک زمین لرز نے گئے، یعنی تم کو لے کر تقر تھرانے گئے اور تہ ہر ہے اور پر بیٹ جائے، کیاتم آسان واللہ بھی جائے، اس بات سے کہ وہ الی آنہ تھی جھیجے وے کہ جو تمہارے او پر سنگ ریز ہے کہ وہ الی آنہ تھی جھیجے وے کہ جو تمہارے او پر سنگ ریز ہے برسائے، عنقریب معانیہ عذاب کے وقت ، تم کو معلوم ہوجائے گا کہ عذاب سے میراڈرانا کیسار ہا!!اس سے پہنے جو برسائے، عنقریب معانیہ عذاب کے وقت ، تم کو معلوم ہوجائے گا کہ عذاب سے میراڈرانا کیسار ہا!!اس سے پہنے جو

﴿ (مَرْزَمُ بِسَائِسَ إِنَّا الشَّرِلَ]

امتیں گذرچکی ہیں انہوں نے بھی (وین حق کو) حجثلایا (سود مکھاو!)موت کے دفت میراعذاب ان کے حجثلانے کی وجہ _____ ے کیسار ہا!! یعنی وہ عذا ب مقتضی کے مطابق رہا، کیاان لوگوں نے اپنے اوپر ہوامیں پر پھیلائے اور پروں کوسمیٹے ہوئے پر پھیلانے کے بعد پرندوں پرنظر نہیں کی حالت بسط وقبض میں رحمٰن ہی (ان کو) اپنی قدرت سے تھ ہےر ہتا ہے، بے شک وہ ہر چیز کود مکھر ہاہے (آیت کا)مطلب ہے ہے کہ کیا بیلوگ پر ندوں کے ہوا میں تقم رے دہنے سے ہماری قدرت پر استدلال نہیں کرتے، کہ ہم ان کے ساتھ ماقبل میں ندکوروغیرہ عذاب کا معاملہ کرسکتے ہیں خدا کے سواتمہارا وہ کونسالشکر ہے جوتمهاری مدوکر سکے؟ یعنی تم سے اس کے عذاب کو وقع کر سکے (اُمَّنَّ) مبتداء ہے (هاذا) اس کی خبر ہے (الَّذِیْ) هذا ہے برل ہے (جند) بمعنی اَعْوان ہے (لکم) الگذی کاصلہ ہاور یَنْصُرُ کُمْرِ جند کی صفت ہے، یعنی اس کے سواتمہارےعذاب کود فع کرسکے،مطلب بیہ ہے کہتمہارا کوئی مددگارنہیں ، بیکا فرمحض دھو کے میں پڑے ہوئے ہیں ، شیطا ن نے بیہ کہہ کران کو دھو کے میں ڈال دیا ہے کہان پرعذاب ہونے والانبیں ہے، وہ کون ہے؟ جوتم کو روزی پہنچا سکے اگر رحمن اپنی روزی یعنی بارش کوتم سے روک لے اور جواب شرط محذوف ہے،جس پراس کا ماقبل دلالت کررہاہے، (اوروہ) فَسمَن يَـرِّ ذَقِعُكُمْرِ ہے، يعنی اس كےعلاوہ تنهارا كوئی راز ق نہيں، بلكه بيلوگ سرکشی اورنفرت ميں حق سے دوری پراڑے ہوئے ہيں (احچھا بتا ؤ!) وہ مخفس جواوندھا، منہ کے بل چلے منزل مقصود پر پہلے پہنچنے والا ہوگا یا وہ مخف جوسیدھا کھڑے ہوکر ہموار سر ک پر جیے ثانی مَنْ کی خبر محذوف ہے جس پر پہلے مَنْ کی خبر یعنی اَهْدَیٰ دلالت کررہی ہے اور (مذکورہ) مثال مومن اور کا فرک ہے، یعنی ان میں سے کونسا ہدایت پر ہے؟ آپ ان سے کہئے وہی ہے جس نے تم کو پیدا کیا اور جس نے تمہارے کان اورآ ٹکھیں اور دل بنائے ہتم میں بہت کم لوگ ہیں جوشکر گذار ہیں (مَا) زائدہ ہےاور جملہ متانفہ ہے،ان نعمتوں پر ان کی بہت کم شکر کی خبر دے رہاہے آپ (بیبھی) کہئے کہ وہی ہے جس نے تم کوروئے زمین پر پھیلایا (پیدا کیا) اور حساب کے لئے ، اس کے پاس جمع کئے جاؤگے ، اور بیلوگ موشین سے کہتے ہیں بیرحشر کا وعدہ کب (پورا ہوگا؟) اگرتم اس وعدہ میں سیچے ہو (نوبتلا وُ!) آپ کہتے کہ اس کی آمد کے وفتت کا علم تو اللہ بی کو ہے اور میں تو تھلم کھلا ڈرانے والا ہوں یعنی واضح طور پرڈرانے والا ہوں، جب بیلوگ حشر کے بعدعذاب کو قریب تر دیکھیں گےتو ان کا فروں کے چ_{ار}ے بگڑ ڈ رانے کے سبب تم دعویٰ کرتے تھے کہتم کومرنے کے بعد نہیں اٹھایا جائے گا، یہ آنے والی حالت کا بیان ہے جس کو حقق ا ہوقوع ہونے کی وجہ سے ماضی ہے تعبیر کردیا گیاہے ، آپ ان سے کہئے کہا چھاتم بتاؤاگر اللہ مجھے اور میرے ساتھیوں کو جومومن ہیں اپنے عذاب سے ہلاک کر دے جیسا کہتم چاہتے ہو بیاہارے اوپر رحم فرمائے کہ ہم کو عذاب نہ دے، تو کا فرول کوعذاب الیم سے کوئی بچائے گا؟ لیعنی ان کوعذاب ہے کوئی بچانے والانہیں ، آپ فرماد بیجئے کہ وہی رحمان ہے جم تو اسی پر ایمان لا کے بیں اور اس پر ہمارا بھروسہ ہے ، عذاب ویکھنے کے وقت تم کوعنقریب معلوم ہوجائے گا، ﴿ (صَرَم بِهَ لَشَهُ لِهَ) > •

فستعلمون تاءاوریاء کے ساتھ کھ کھی گمراہی میں کون ہے؟ ہم یاتم یاوہ؟ آپان سے کہتے کہ اچھابہ بتاؤا گرتمہارا یانی گہرائی میں اتر جائے بعنی زمین میں نیچے چلا جائے تو کون ہے جوتمہارے لئے چشمہ کا یانی لائے ؟ جس کوتم ہاتھوں اور ڈ ویوں سے حاصل کرسکوجیسا کہ تمہارا (موجودہ) پانی ، یعنی اللہ کے سوااس کوکوئی نہیں لاسکتا پھرتم تمہار ہے زندہ ہوا مجھنے کا كيول انكاركرتے ہو؟ اورمستحب بے كه تلاوت كرنے والا (معين) كے بعد كے اللّه رب المعالمين جيها كه حديث میں وارد ہوا ہے، بعض جبارین کے سامنے اس آیت کی تلاوت کی گئی تو اس نے کہا بھی وڑے اور کدال لے آئیں گے، چنانچداس کی آنکھ کا پانی خشک ہوگیا اور اندھا ہوگیا ،ہم اللہ کی پناہ جا ہے ہیں اللہ اوراس کی آیتوں پر نے باکی کرنے ہے۔

عَجِفِيق بَرَكِيكِ لِيَسَهُ يُلِ الْفَيْسَارِي فَوَالِال

فِيَوْلِكُونَا: مَنَاكِبِهَا جَع منتهى الجموع ب، واحد مَنْكِبْ بمعنى جانب، طرف، الى نسبت سے آ دمى كے موند هوں كومنكب

فِيُولِكُونَ ؛ بِتحقيق الهمزتين النع ال من كل يائج قراءتين مين، يبلا بمز محقق بي موتاب، دوسرا بهي محقق اور بهي مسهل، دونول صورتوں میں دونوں کے درمیان الف داخل کرے اور ترک اوخال کرے، یہ جارصورتیں ہوگئیں، اور ایک صورت دوسرے ہمزہ کوالف ہے بدل کرکل پانچ صورتیں ہو کئیں۔

فِيْ فُلِكُ ؛ أَذْ يَخْسِفَ بِي مَنْ عَبِرِلِ الاستمال إ

فِيْفُولْكُونَا: حَاصِبُ بادِسِنْ كُرسُكُ ريزه بردارد (صراح) حَاصِبًا، بادسَّكبار ، سخت أندهي ، حَصِّبَاء كنكريون كو كهتم بين ـ

يَجُولُكُ ؛ أَوَلَمْ بَرَوًا وا وَعاطفه إور بمزه محذوف برداخل إلى القدر عبارت بيه أغَفلُوا وَلَمْ بَرُوا.

فِيْوُلْكُ ؛ صَنْفَتٍ وَيَقْبِضْنَ يَهِال الكِسوال بِيدا مُوتا بـــ

سَيْخُواكَ: يَقْبِضْنَ كاعطف صافات برب، كياوجه المعطوف عليداتم باورمعطوف تعلى؟

جَجُولَتِيْ : برندول میں اصل بہے کہ ان کے بر کھلے ہوئے اور تھلے ہوئے ہوں اس کئے کہ طائر کو طائر یا پرندہ کو پرندہ ای لئے کہتے ہیں کہاس میں صفتِ طیرا درصفت پر داز اصل ہے اور قبض یعنی پر دل کو سکیٹر نامیہ طاری (خلاف اصل) ہے لہٰذا اصلی صفت کو اسم ہے تعبیر کیا اس لئے کہاسم استمرار اور دوام پر دلالت کرتا ہے ، اور قبض (نیعنی سکیٹر نے) کوفعل ہے تعبیر کیا کیونکہ وہ ط ری اور حادث ہے اور معل صدوث پر دلالت کرتا ہے۔

هِ وَلَكُنَّ : قَابِضَاتٍ أَس مِن الثاره بِ كَه يَقْبِضْنَ ، قابِضات كى تاويل مِن بِ تاكه عطف ورست موجائ ، دونو ل جكه أجسنِ عَقِينٌ ظامر كرك اشاره كرديا كدونول كدونول مفعول محذوف بي، دوسرے مَنْ مبتداء كى خبر يہلے مَنْ مبتداء كى خبر ير قی س کرتے ہوئے صدف کردی گئے ہے ای اُٹھائی اور اُٹھائی اسم تفضیل اسم فاعل کے معنی میں ہے ،مفسر علام نے اپنے قول آیّهٔ مَا علی هُدی عالی کی طرف اشاره کیا ہے۔

قِعِولَكَى : مسا مَزيدة ، قَليْلاً مَّا مِين مَا تاكيرقلت كي لئة زائده باور قَلِيْلاً موصوف محذوف كي صفت به اى

قِوَلَنَى: اَنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ يرشرط إلى كى جزاء محذوف بالقريع إرت بيب إنْ كُنْتُمْ صادِقيْنَ فَبَيَّنُوا وفَتَةَ

فِيُولِكُ : بمَحِيْنه اى بوقت مجينه مضاف محدوف ٢-

فِيْوَلِكُنَّ ؛ زُلْفَةً يه إزلاف كاسم مصدرب، بمعنى قريب

فِيَوْلِكُمُ : أَنَّكُمْ لَا تُبْعَثُونَ أَس مِن اشاره بك تدّعون كامفعول محذوف بـ

فَيُوْلِكُمُ ؛ وهذه حكاية حال تاتي بياكي والمقدر كاجواب بـــ

میکوالی، فرشتے روز قیامت کا فروں ہے کہیں گے کہ بیوہی عذاب ہے جس سے تہمیں ڈرایا جاتا تھ اور تم اس کی تر دیدو تكذيب كرتے تھے، يوال وجواب سبزمانة مستقبل (قيامت) ميں ہوں گےاس كا تقاضاتھ كه قِيْسل كے بجائے يقولون كتعبيركرتي؟

جِينَ لَبْعِ: جواب كا حاصل بيب كدوقوع بقيني كي وجدس دكايت حال آتنيكو ماضي ت تعبير كرديا ب، فدكوره عبارت سے اس سوال كاجواب دياہے۔

هِ وَكُولَكُ ؛ أَرَأَيْنُمُ ، أَرَأَيْنُمُ بَمَعَنَ أَحبروني بِجودومفعولول كونصب ديتاب، إنْ أَهْلَكَنِيَ اللّه الخ جمله شرعيه ق تم مقام دو

فَيْ وَلَيْنَ : لا مُجِيْرِ لَهُمْ السمين اشاره على فَمَنْ يُجِيْرُكُمْ مِن استفهام الكارى عد

فِيَوْلِكُى؛ أَمْ أَنْتُمْ كُلَّعَالَ فَسَتَعُلمون مِن تاء كقراءت كي صورت من جاور الله هُمْ كَاتَعَلَق فَسَيَعْلَمُونَ ياء كقراءت

قِيَوْلِينَى؛ مَعينٌ بياصل مين مَعْيُونٌ بروزن مفعول بي جيها كه مبيعٌ اصل مين مَنْيُونٌ عُ تفاياء كاضمه ما قبل عين كوديديايا اورو و میں التق ءس کنین ہوا وا وَحذف ہو گیا عین کوی کی مناسبت سے کسرہ دیدیا گیا۔

فَيُولِكُ : وعَمِى مِه ذَهَبَ مَاءُ عينه كاعطف تفيرى --

هُوَ اللَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرضَ ذَلُولًا (الآية) ذَلُول كَ عَنْ مُطِّيعٌ ومنقادكي بين ،اس جانوركوذلول كباجا تا بجو سواری دینے میں سرتالی اور شوخی نہ کرے، زمین کو سخر کرنے کا مطلب ریہ ہے کہ زمین کا قوام اللہ تعالیٰ نے ایسا بنایا کہ نہ تو پوئی کی طرح سیال در قیق اور ندرونی اور کیچڑ کی طرح د ہے والہ ، کیونکداً سرز مین ایسی ہوتی تو اس پر چینا اور کھبر نامشکل ہوجا تا ، اسی طرح زمین کولو ہے اور پتھر کی طرح سخت بھی نہیں بنایا اً سراہیا ہوتا تو اس میں نے کھیتی کی کا شت کی جاتی اور ند درخت لگائے جاتے اور نہ اس میں کئویں اور نہریں کھودی جاسکتیں۔

زمین کا اپنی ہے حدوصاب مختلف النوع آبادی کے لئے جائے آ اربون بھی کوئی معمولی یا سرسری بات نہیں ہے، اس کرہ خاک کو جن حکیمانہ من سبتوں کے ساتھ قائم کیا گیا ہے، ان کی تفصیلات پرانسان فور کر ہے تو اس کی مقل دنگ رہ جاتی ہے اوراسے محسوس ہوتا ہے کہ ریمن سبتیں ایک حکیم ودانا تا در مصلی کی تدبیر کے بغیر تا نم نم نیس بوسکتی تھیں۔

یہ کر ہ ارضی فضائے بسیط میں معلق ہے کئی چیز پر نکا ہوائییں ہے باہ جود کید زمین مغرب ہے مشرق کی جانب ۲۵۱۰ ۳۵ میل برابرتقر یہ ندہ اکا کومیٹر فی گفتہ محوری حرکت کرتی ہے (فکسیات جدیدہ) اس میں کوئی اضطراب وا جنز از نہیں ہے اگر اس میں ذراس بھی اجتزاز (جھٹکا) ہوتا جس کے خطر نا کے نتائج کا ہم بھی زلزلد آئے ہے باس فی لگا ہیں تو کرہ ارض پر کوئی آبادی ممکن نہ ہوتی یہ کرہ ارضی با قاعد گی ہے سورتی ہے سامنے آتا اور جاتا ہے جس ہے دات اور دان بیدا ہوت ہیں، آراس کا ایک ہی دخ ہوفت سورج کے سامنے رہتا اور دوسرارخ بمیشہ پوشیدہ رہتا تو یبال کی ذبی حیت کا وجود کمکن نہ ہوتا، کیونکہ پوشیدہ رخ کی سردی اور بیاتا ہے اور حیوانات کو بیدائش کے قابل نہ رکھتی اور دوسر ہے راث کی سری کی شدت روئ زمین کو ہا آب مردی اور غیر آباد بنادی تی ، اس کرہ ارضی پر یہ بی سوئیل تقریبا مان کے کیومیٹ بلندی تک جو اکا ایک کٹیف ندا ف چڑھا ہوا ہے جو شہ بوال کی خوف کے بمباری ہے اے بچائے ہوئے کہ دیدروز انہ دو کروڑ شباب جو ہوا ہیں فی سکنڈ میں میں برابر کی رفتار سے زمین کی طرف گرتے ہیں کرہ ارض پر وہ جا بی کے کہ میں دی حیاے اور نباتات کی بقاممکن نہ ہوتی۔

و کُلُوا مِنْ دِزْقِهِ وَاللّهِ النُّشُور پہلے زمین میں چلنے پھرنے کی ہدایت فر مائی تھی ،اس میں اشارہ ہوسکت ہے کہ تجارت کے لئے سفر اور مال کی درآ مد برآ مدالقد کے رزق کا دروازہ ہے النُّن ور میں بتا اویا کے صافے پیٹے رہے ہے کہ فوا کد زمین سے حاصل کرنے کی اجازت ہے مگر موت اور آخرت ہے ہے قکر ہو کرنیس ،انبی مکارائ کی طرف لوٹ کرج ناہے ،زمین پر دہتے ہوئے آخرت کی تیاری میں گے رہو۔

آامِنْ نُتُمْ مَنْ فِي السَّمَاءِ أَنْ يَحْسِفَ بِكُمُّ الْأَرْضَ فَاذَا هِي تَمُوْرُ اَنَ آيت مِينَ مُرْكُول، كَافْرون اور نافر مانوں كو ڈرایا گیا ہے كہ وہ ذات جو عرش پرجلوہ گرہے جب چاہے تہہیں زمین میں دھنساد ہے لیعن وہی زمین جو تہباری قرارگاہ اور آرام گاہ ہاور تہباری روزی كامخزن ومنع ہے ، اللہ تعالی ای زمین کو جونہ یت ہی پرسکون ہے حركت وجنبش میں لا كرتم ہاری ہلاكت كا باعث بناسكتا ہے۔

جس طرح وہ زمین کوجنبش اور حرکت دیکرتم کو ہلاک کرسکتا ہے اس طرح وہ آسان سے تنگراور پھر برسا کربھی تم کو نیست و نابود کرسکتا ہے جبیبا کہ وہ اس سے پہیلے تو م لوط اور اصحاب فیل کے ساتھ کر چکا ہے، لیکن اس وقت سمجھ میں تنا بےسود ہوگا۔

(مَنْزَم بِبَالشَرِزَ) ≥

اگل آیت میں عبرت ونصیحت کے لئے ان قوموں کی طرف اشارہ ہے جواپنے زمانہ میں اللہ کے نبیوں کو جھٹل کر مبتلائے عذاب ہو چکی تھیں، اس کے بعد چند آیات میں اللہ تعالی نے اپنی قدرت کا ملہ اور حکمت بالغہ کے نمونوں کو بیان فرمایہ جواس کی اور صرف اس کی قدرت و حکمت سے ممکن ہے، وہی ہر چیز کا تگہبان اور ہر شی اس کی زیر قدرت ہے اگر وہ تمہاری روزی اور اس کے اسب بوروک لے تو تمہارے پاس کونسالشکر ہے جور حمان کے مقابلہ میں مدد کر کے تمہارے رزق کو جوری اس کے اسب بوروک ہوئے اس جوری اور اس کے مقابلہ میں مدد کر کے تمہارے رزق کو جوری کو اس کے اسب کوروک لے تو تمہارے پاس کونسالشکر ہے جور حمان کے مقابلہ میں مدد کر کے تمہارے بوری جوری جوری کو بیس، اور جانوروں کی طرح مند نیچا کئے ہوئے اس جگہ پر جب جورہ ہے ہیں، اور جانوروں کی طرح مند نیچا کئے ہوئے اس جگہ پر جب جورہ ہے ہیں جس پر انہیں کسی نے ڈال دیا ہے۔

فُلْ اَدَانِیَتُ مُراِنُ اَصٰبَحَ مَاءُ تُحُمْ غَوْرًا (الآیة) لیمی آپ ظِیق کان ان لوگوں کو بتلاد بیخے کہ اس بات پرغور کریں کہ اگر القد تعی کی پائی نکا لئے میں اگر القد تعی کی پوختک فرمادیں کہ اس کا وجود بی ختم ہوجائے یا اتن گہرائی میں کردیں کہ ساری مشینیں پانی نکا لئے میں نہ کام ہوجا تیں تو بتلاؤ! پھرکون ہے جو تہمیں پانی مہیا کردے؟ بیالقد کی مہر بانی ہی ہے کہ تہماری معصیتوں کے بوجود تہمیں یانی سے بھی محروم نہیں فرمایا۔



مِرَوُةُ الْهَالَةُ مِلِّتَةً وَهِلْ نَنتَ افِ خَمْسِوْالِيَّةَ وَفِيْهِ الْفِعَا سُوُّةُ الْهَالَةُ مِلِّتَةً وَهِلْ نَنتَ افِ خَمْسِوْالِيَّةِ وَفِيْهِ الْفِعَا

سُوْرَةُ النُّوْنَ مَكَيَةٌ اثنَتَان و خَمْسُونَ ايَةً.

سورہ نون کی ہے، باون آبیتیں ہیں۔

ينسب هِ اللهِ الرَّحْب مِن الرَّحِب في أن احدُ خُرُوف بها اللهُ اغلهُ مُراده به وَالْقَلْمِر الَّذِي كُنت به الكانباتُ في النَّوْج المخبوط **وَمَالِيَمْظُرُ**وْنَ لا أي الملائكةُ من الحنير والصّلاح م**َّاأَنْتَ** يا سُحمَدُ بِنِعْمَةِمَ يِّكَ بِمَجْنُونِ عَ الله السي الحُنولُ علك مست العام رتك عليك بالنَّبُوة وغيرها وهذا ردُ لقولهم أنَّه لمخمُورٌ وَإِنَّ لَكَ لَأَجُرًا غَيْرَمَمْنُونٍ ﴿ مَفْطَوعٍ وَإِنَّاكَ لَعَلَّى خُلُقٍ دي عَظِيْمٍ فَكَتَّبِصِرُونَ ﴿ لَقُولِهِم انَّهُ لِمَحْمُونَ اللَّهِ لَا يَعْلَمُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللّ بِآيِيكُمُ الْمَفْتُونُ ﴾ سينسدرُ كالسمعنول اي المنورُ سمعني الخنور اي المد ام لهم إنَّ رَبَّكَ هُوَأَعُلُمُ يمن ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهُ وَهُوَاعُلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿ لِهِ وَاعْدَلُمُ مِعْنَى عَالَمُ فَلَا تُطِحِ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿ وَقُوْلَ مِنَوا لَوْ مصدرية تُذْهِنُ تُبِينُ لِهِم فَيُذْهِنُونَ ؟ يُلِينُون لك وهُو مغضُوف حتى نُذهنُ وان جُعن حواب التمني المفهُوم من ودُوا قُـدِر قبينهُ مغد الفاء ، عُمُ وَلَا تُطِعُكُلُ حَلَافٍ كثير الحنف بالماطل تَمَهِيْنِ ﴿ حتير هَمَّاإِر عيّاب اي مُعتاب **مَّشَآءِ بِنَمِيْمِ** عالى ساع سالكلام نين النّاس على وخه الافساد سِيم مَّنَّاع لِلْخَيْرِ حيل بالمان عن الحُنُونِ مُعَلَّدٍ طَالِم ٱلْثِيْرِ أَلَه مُحُلُلُ عليطِ حاتِ بَعْدَذُلِكَ زَيْنِمِ أَدحى في قُريش وهو الوليدُ بنُ المُغيرة ادَّعِهُ الْمُوهُ بَعُدَ ثُمَانِي غَشْرَة سَمَّةً قال ابلُ عَمَّاسِ رضِي اللَّهُ تَعالَى حَمَّهُ لا بغيمُ أنّ اللَّهُ شَبْحانةً وتعالى وصف احدًا بما وصفة من العُيوبِ فالحق به عارًا لا يُفارقُهُ الدّا وتعنّق مربيم الطّرُفُ قَلْمَ أَنْ **كَانَ ذَا مَالِ قَرّبَنِينَ** ﴿ اى لاز وهُو مُتعلَقُ مَمَ دلَ عليه [**ذَا تُتَلَى عَلَيْهِ النَّمَا** التُرانُ قَالَ هي اَسَاطِيْرُ الْأَوَّلِيْنَ ﴿ اي كذَب بها لِانعذاب عليه بِمَا ذُكِر وفِي قِرَاءَ قِهَ أَنْ بِهِمُرَتِّينِ مِعُتُوحَتِّينِ سَلِّيمُهُ عَلَى الْخُرْطُومِ " سَنَحعلُ على انْفه علامةٌ يُعيّرُ بها م عَاشَ فَخُطِهُ أَنُهُ بِالسِّيفِ يَوْمَ بِذُرِ إِنَّالِكُونِهُمْ إِمْتَحَدَ اهْلِ مِكَةَ القَحطِ والحُفْعِ كَمَا بَكُونَا أَصْحَبَ الْجُنَّةِ المُسَتَن إِذَّ أَقْسَمُوا لَيُصِّرِمُنَهَا يقُطعُونَ ثَمْرَتُها مُصِّحِينً فَ وقيت التَساح كيلا يَشعُرلهم المَسَاكِيلُ فَلا

يغضونهم سه ساكان الوغم يتسدق عديم سه ولايشتنون عديمه به ولايشتنون عديمه بمشية الده تعاي والخمنة است عد اي وشائهم دلك فطاف عَيْقَاطاً عَيْقَاطاً عَنْ المرافق المَوْرِيْنِ المَالِمُ وَنَا الْمَرْوَالَّمُ وَالْمُوْرِيْنَ الْمَالُولُ وَالْمُصِحِيْنَ الْمَالُولُ وَالْمُولِيْنَ الْمَالُولُ وَالْمَالُولُولُ وَالْمَالُولُ وَاللَّمُ وَاللَّهُ وَاللَّمَالُولُ وَاللَّمَالُولُولُ اللَّمَالُولُولُ اللَّمَالُولُ اللَّمَالُولُولُ اللَّمَالُولُولُ اللَّمَالُولُولُ اللَّمَالُولُولُ اللَّمَالُولُولُ اللَّمَالُولُولُ اللَّمَالُولُولُ اللَّمَالُولُولُ اللَّهُ اللَّمَالُولُولُ اللَّمَالُولُولُ اللَّمَالُولُ اللَّمَالُولُولُ اللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ

ت کی جی ہے۔ آب ہے اللہ علی ال

rar

اعتدال ہے گزرنے والا ظالم ہو، گناہ کاارتکاب کرنے والا ہو، تندخو ہخت مزان ہو پھراس کے ساتھ ہے نسب بھی ہو (یعنی) قریش کےنسب میں داخل کیا گیا ہو، اور وہ ولید بن مغیر و ہےاس کے والد نے اس کواٹھارہ سال بعد متنبی بنایا تھا، ابن عباس تفع کالنے تعالی کے خرمایا کہ ہمارے علم میں نہیں کہ القد تزرک وتعالی نے اس کے ملاوہ کسی کے ایسے اوصاف بیان کئے ہول، اور اس کے ساتھ ایسے شرم (کے اوصاف) لاحق کردیئے ہول کہ جواس ہے بھی جدانہ ہوں ، زید ہے سے اس کے وقبل کاظرف (یعنی دالك) متعلق ہے (اور یہ سر کشی محض اس لئے ہے) کہ وہ ال اور اور ووالا سے اَدَّ معنی میں لِأَدَّ کے ہے ،اور لِأَدَّ اس ے متعلق بے جس پر إِذَا تُنْقِلي عَلَيْه ولالت كرتا ہے، اوروہ كذّب مها النع ب، جب اس كو بهارى آيتن يعنى قر آن يرُهر سائی جاتی ہیں تو وہ کہددیتا ہے کہ بیتو گذشتہ لو گول کے قصے ہیں یعنی اس نے ہم ری آیتوں کو جھٹلادیا ، ہمارے اس کے اوپر مذکورہ انعام (مال واولاد) کی وجہ ہے، اور ایک قراءت میں أن كائ كے بجائے أأن كان وومفتوحہ بمزوں كے ساتھ ہے جماس كى ناک پرعنقریب داغ لگادیں گے لیمنی عنقریب ہم اس کی ناک پرایک ملامت نگادیں گئے کہ زندگی بھراس کے ذر بعداس کو عار دلائی جائے گی ، چنانچہ یوم بدر میں اس کی ناک پرتلوار کا زخم لگادیا گیا ، ہے شک ہم نے ان اہل مکہ کو قحط اور بھوک کے ساتھ ا ہے ہی آز مایا جیسا کہ ہم نے باغ والول کو آز مایا تھا جب کہ انہوں نے تشمیس کھائیں کہ وہ باغ کے پچلول کو مبح تڑ کے ضرور تو زلیں گے ،تا کہمساکین کوان کے پھل تو ڑنے کاملم نہ ہو سکے اور وہ مساکین کو پھلوں میں سے وہ حصہ نہ دیں گے جو حصہ ان کے والدان پرصدقہ کیا کرتے تھے، تکرانہوں نے اپنی تھم میں اشٹنا نہیں کیا (بعنی) انث ءالتہ نہیں کہا، اور جمعہ مستانفہ ہے ای شانهم لَا يَسْتَنْنُوْنَ ذلك، لِس اس باغ برتير برب كي جانب ساليك كلو منه والي (بلا) كلوم كني، ليعني الي آك كهاس نے باغ کوراتوں رات جلادیا،اوروہ پڑے ہوتے ہی رہےاوروہ باغ نہایت تاریک رات کے مانند ہوگیا کیعنی خاک سیاہ ہوگیا، اب سبح ہوتے ہی انہوں نے ایک دوسرے کوآ وازیں دیں کہا گرتم کو پھل تو ڑے ہیں تو صبح تڑکے پی کیسی پرچلو، اُن اغے ڈوا، ته نَادَوْا کُتفسیر ہے (لیمنی أن جمعنی ای ہے) یا أن مصدر بیہ ہے ای باَنْ اور جواب شرط (محذوف ہے) جس پراس کا ماقبل لیمنی أن اغه أو الالت كرر ہاہ، پھروہ چيكے جيكے ہاتيں كرتے ہوئے جيكة آئے كەن كوئى مسكين تمہارے ياس آنے نہ يائے بيد ما قبل کی تفسیر ہے (اور اُن جمعنی ای ہے) یا اُن مصدر یہ ہے اور معنی میں بسائٹ کے ہے اور وہ برعم خویش فقراء کو نہ دیے پر خود کو قا در بمجھ کر چلے، جب انہوں نے اس باغ کوجلا ہوا ساہ دیکھا تو کہنے لگے ہم یقیناً باغ کا راستہ بھول گئے ہیں لیعنی یہ ہمارا باغ نہیں ہے پھر جب ان کومعلوم ہوا تو کہنے لگے ہم تو فقراء کو پھلوں ہے رو کنے کی وجہ ہے ، کچپیول ہے محروم ہوگئے ، ان میں ہے جو بہترتھ اس نے کہا کہ کیا ہیں تم سے نہ کہتا تھا کہ تم اللّٰہ کی طرف رجوع ہوکر اس کی بیان کیو نہیں کرتے؟ تو سب کہنے نگے بمارارب پاک ہے فقراء سے ان کاحق روک کر ہم ہی ظالم تھے پھروہ آپس میں ایک دوسرے کی طرف متوجہ ہوکر ملامت کرنے لگے، کہنے لگے: ہائے افسوس! ہماری بدسمتی مدیقینا سرکش تھے کیا عجب کہ ہمارارب اس سے بہتر بدلددے (یُبد بدل ف) تشدید وتخفیف کے ساتھ ہے، ہم تو اپنے رب کی طرف رجوع کرتے ہیں تا کدوہ بھاری فو بہ قبول فرمائے ،اور جمیں ہمارے باغ سے

- ھ (نَصَزَم ہِبَائِشَ لِ) ≥ -

بہتر باغ عطافر مادے، روایت کیا گیاہے کہ ان کواس سے بہتر باغ بدلے میں عطا کردیا گیا، ای طرح نذاب بواکر تاہے لین ان لوگوں کے عذاب کے مانندابل مکہ میں سے جنبول نے ہمارے تکم کی خلاف ورزی کی، اور آخرت کا عذاب اس سے بڑھ کر ہے اگریہ آخرت کے عذاب کو جان لیتے تو ہمارے تکم کی خلاف ورزی نہ کرتے۔

عَيِقِيق الْزِكْدِ اللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّاللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّاللَّالِيلِيلَّا الللَّاللَّهِ اللللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الللل

فَيُولِنَى : سورة ن أس كادوسرانام سورة القلم بهى جـ

چولی احد خروف الهجاء العبارت کامقصدان لوگول پردوکرناہ جوید کتے ہیں کد(ن) رحمن کا آخری حرف ب یا نصر، نور، کا پہلاح ف ہے۔

فِيُولِكَ ؛ وَإِنَّ لَكَ لَآجُرًا النع بداوراس كاما بعد جواب متم يرمعطوف ب، كويا كمقسم عليه دو بين ايك مَا أَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ بِمَجْنُوْن اوردوسرا وَاذَّ لَكَ لَاجْرًا عَيَرَ مَمْنُوْن.

فَيُولِكُ ؛ بِأَيْكُمْ خَرِمقدم إوراكمفتون مبتداء وزرب-

قید الیموں یں وج اس کر باہا ہیں۔ جو گائیے: یہ ہے کہ نون کے ماقط ہونے کے لئے فا کا سبیہ ہونا ضروری ہے اور یہاں فاعا طفہ ہے نہ کہ سبیہ۔ محکومینیٹ کی جی گائیے: مفسر علام نے قُبدِّر قَبْلَه بعد الفاء ہے دیا ہے، اس جواب کلحاصل بیہ ہے کہ فیکڈ ہوئو ک کی ف ء ک بعد کھٹر مبتداء مقدر مان لیا جائے اور یُکڈ ہِنُونَ مبتداء کی خبر ہوگی ، مبتداء خبر سے ل کر جملہ اسمیہ ہو کر جواب تمنی ہوگا ، البندا

بھی ہے اس صورت میں فَیُدْ هِنُوّ اجواب تمنی ہوگا اور فاء سبیہ ہوگی جس کی وجہ سے نون اعرابی ساقط ہوگیا۔

(فتح القدير)

قِوَلَى ؛ اى مُغْمَّابُ ، اى حرف تفير ہاس معلوم ہوتا ہے کہ مُغْمَّابُ ، عَيَّابُ کَ تفير ہے حالانکہ مُغمَّابُ ، عيّابُ کَ تفير ہوج تی ۔ رصاوی کی تفیر ہیں ہے لہٰذامفسر علام کے لئے مناسب تھا کہ اَیْ کے بجائے اَوْ کہتے تا کہ هَمَّاز کی دوسری تفییر ہوج تی ۔ رصاوی فَیْ اَوْ کُھُنِی ہِ اِللّٰہِ اللّٰہِ اللّٰہُ اللّٰہُ اللّٰہِ اللّٰہِ اللّٰہِ اللّٰمِ اللّٰہِ اللّٰہُ اللّٰہِ اللّٰہُ اللّٰمِ اللّٰہُ اللّٰمِ اللّٰہِ اللّٰہِ اللّٰمِ اللّٰہِ اللّٰہِ اللّٰہِ اللّٰہِ اللّٰمِ اللّٰہِ اللّٰمِ اللّٰہِ اللّٰہِ اللّٰہِ اللّٰمَ اللّٰمَ اللّٰہِ اللّٰمِ اللّٰہِ اللّٰمِ اللّٰہِ اللّٰمِ اللّٰہِ اللّٰمِ اللّٰمِل

فِيَوْلِنَى اللَّهُ مَا مُنْهُ اللَّهُ مُن اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ ال

قِيْقُولْ ﴾؛ بعد ذلك لينى مُدُكوره تمام عيوب مين سب سے برواعيب بيہ كدوه غير ثابت النسب ہے۔ قِيْقُولْ ﴾؛ زَنِيْهُ، السزنمةُ سے ماخوذ ہے وہ چھلا جو بھيڑ بكرى وغيره كے كان مين ڈال ديا جا تا ہے ، مې زأاس مخص كوكها جانے لگا

جس کونسب میں شامل کرلیا گیا ہو،حقیقت میں وہ نسب میں داخل نہ ہو،عربی میں اس کو سلحق سکہتے ہیں ، ولید بن مغیرہ ایسا ہی تھ۔ میر بہتر است

نے ظاہر کردیا ہے۔

قِينَ لَنَى اللهُ وَاللهُ وَوَهِمْ وَل كَيساته يَهِلا هِمْ وَاستَفْهَامُ تَوْ يَكِي بِاوردوسُ الله مصدريكا باس يهله الممقدر بيكا بهم مقدر بيكا بهم واستفهام تو يني بالم مقدر بيكا بهم والله والمعنى المحذَب بِهَا لِأَنْ ذَا مَالِ وَبَنِيْنَ.

قِینُولِیَّ ؛ السخسر طبوم درندوں گی تقوتھ ٹری کو کہتے ہیں خاص طور پر ہاتھی اور خنزیر کی سونڈ اور تھوتھ ٹری کو، ولید بن مغیرہ کی ناک کو ستار مضاری بھی

استہزاءخرطوم کہا گیاہے۔

فَيُولِلْكَ ؛ وجواب الشوط ذَلَّ عَلَيْهِ مَاقبله لِينَ إِنْ كُنْتُمْ شُرط كاجواب شُرط كذوف ب، حس پر ما قبل لينى أن اغدوا ولالت كرد ما به عقد برعبارت بدب ان كُنْتم صَادِ ميْن اغدوا.

ێٙڣٚؠؙڔۅ<u>ڗۺٛ</u>ڕؙڿٙ

ن والفلم وما بسطُرُونَ نون ای طرح حروف مقطعات میں ہے ہجیے اسے قبل ص، ق وغیرہ گذر چکے میں ،اس میں قم کی قسم کھا کریہ بات کہی گئی ہے کہ آپ شکھی اپنے رب کے فعل سے مجنون نہیں میں ،اور آپ بلا گھٹا کے لئے ختم نہ ہونے والا اجر ہے قلم کی اس لحاظ ہے ایک ایمیت ہے کہ اس سے تبیین اور تو شیح ہوتی ہے ، بعض مفسرین کا کہن ہے کہ قسم سے خاص قلم مراد ہے جے اللہ نے سب سے پہلے پیدا فرمایا ،اور اسے تقدیر لکھنے کا تھم دیا ، چنا نچہ اس نے قیامت تک ہونے والی ساری چیزیں لکھ دیں۔ (سنن ترفدی) مَا یَسْطُرُونَ میں مَا مصدریہ ہے مطلب یہ کہ قلم کی قسم اور جو پھو نرشتے ہوئے والی ساری چیزیں لکھ دیں۔ (سنن ترفدی) مَا یَسْطُرُونَ میں مَا مصدریہ ہے مطلب یہ کہ قلم کی قسم اور جو پھو نرشتے

﴿ (مِنْزَم پِبَاشَرِ عَ

مکھتے ہیں ان کے لکھنے کا شم مقسم بہ کی اہمیت کوا جا گر کرنے کے لئے اس کے مناسب کسی چیز کی شم کھائی ہاتی ہے اور وہشم مضمون پرایک شہادت ہوتی ہے، یہاں مَسا یَسْطُسرُونَ ہے دنیا کی تاریخ میں جو کچھ کنھا گیاا در لکھا جار ہاہے اس کو بطور شہر دت پیش کیا جار ہاہے کہ دنیا کی تاریخ کو دیکھو، ایسےاعلیٰ اخلاق واعمال والے کہیں مجنون ہوتے ہیں؟ وہ تو ُ دوسروں کی عقل درست کرنے والے ہوتے ہیں نہ کہ خودمجنون۔

مَا أَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ بِمَجْنُون بِيجوابِ فَتُم بِيسِ مِن كَفَار كَقُولَ كُورِدَكِيا كَيَابٍ كِيون كهوه آبِ فَلِينَ عَلَيْهِ كُومِجنون اور د یوانه کہتے تھے، آپ بلونظی نے فریصنهٔ نبوت کی ادائیگی میں جنتی زیادہ تکلیفیں برداشت کیں اور دشمنوں کی طعن وشنیع سنیں ہیں اس پراللہ تعالیٰ کی طرف سے نہ ختم ہونے والا اجرہے، مَنَّ کے معنی ختم ہونے اور قطع کرنے کے ہیں۔

وَإِنَّكَ لَعَلَى خُلُقٍ عَظِيْمِ. حلق عظيم عراداسلام، دين ياقرآن ٢، مطلب بدب كرآب المنظمة الواس ضل پر ہیں کہ جس کا تھم اللہ نے قرآن میں دیا ہے، یا اس سے مراد تہذیب وشائشگی نرمی وشفقت، امانت وصدافت ،حلم وکرم اور دیگراخلاقی خوبیاں ہیں، جن میں آپ یکٹاٹٹا نبوت سے پہلے بھی متاز ہتے اور نبوت کے بعدان میں مزیداور وسعت آئی، ای لئے جب حضرت عا کشەصد بفته دَوْمَالْلللهُ مَغَالطُغَا ہے آپ نظرِ اللهُ اللهُ عَالَيْ مِي اللهِ الله قرماياكان خُلقُة القرآن. (صحيح مسلم)

بلنداخلاتی اس بات کاصریح ثبوت ہے کہ کفارآ پ ﷺ پر دیوانگی اور جنون کی جوتہمت رکھ رہے ہیں وہ سراسر جھونی ہے کیونکہا خلاق کی بلندی اور دیوانگی دونوں ایک جگہ جمع نہیں ہو شکتیں ، دیوانہ و شخص ہوتا ہے جس کا ذہنی تو از ن گرزا ہوا ہو، اس کے برعکس آ دمی کے بلندا خلاق اس بات کی شہادت دیتے ہیں کہوہ نہایت سیجے الد ماغ اور سلیم الفطرت ہے،رسول الله مکہ کا ہرمعقول آ دمی میسوچنے پرمجبور ہوجائے کہ وہ لوگ کس قدر بے شرم ہیں جوایسے بلندا خلاق آ دمی کومجنون کہدرہے ہیں ، ان کی بیہ ہے ہودگی اس بات کا ثبوت ہے کہ د ماغی تو ازن آپ ﷺ کانبیس بلکہ ان لوگوں کا خراب ہے جومی لفت کے جوش میں یا گل ہوکر یا گلوں وانی باتیں کرتے ہیں ، یہی معاملہان مرعیان علم و محقیق کا بھی ہے جواس ز مانہ میں رسول اللہ التفايقة برمركي اورجنون كاتبهت ركهت بي-

آ پ التفاقة الحال كسلسله من حضزت عائشة صديقة وضِّعَاه التفقا كاريول "كان خُلَفَة القرآن" قرآن آپ بن كر دكھا يا تھا،ايك اور روايت ميں معترت عائشہ دخخانلائة تغَاليَّظَا فرماتی ہيں كه رسول الله ﷺ نے بھی كسی خاوم كونہيں مارااور نہ مجھی عورت پر ہاتھ اٹھایا، جہاد فی سبیل اللہ کے سوانجھی آپ ﷺ نے کسی کواپنے ہاتھ سے نبیس مارا، اپنی ذات کے لئے بھی کسی نے بھی میری کسی بات پراُف تک نہ کی بھی میرے کام پر بینہ فرمایا کہ تونے میہ کیوں کیا؟ اور بھی کسی کام کے نہ کرنے پر پہیس

فرمایا کرتونے بیکول ندکیا؟ (بعاری مسلم)

فَسِنُّنِہ صِبِّرُ وَیُبِیْ صِبِرُونَ کَا مَدے بیہ بدباطن مشرکین عداوت کے جوش میں پاگل ہوکر جوحقیقت کو چھپانے اور نور حق کو گھانے کی کوشش کررہے ہیں جب عنقریب قیامت کے دن حق واضح ہوجائے گااور سارے پردے اٹھ جا کمیں گے تو ساری دنیا دکھے لئے گی کوشش کررہے ہیں جب عنقریب قیامت نے دن جائے ہوجائے گااور سارے پردمرادلیا ہے دکھیے گئے گئے کہ کون دیوانہ تھا اور کون فرزانہ؟ لبعض مفسرین نے ظہور حقیقت کے دن ہے یوم بدر مرادلیا ہے

علی کھنزم پڑجا نمیں ،تو یہ بھی نرم پڑجا کمیں کہ آپ بیٹونٹیٹی پرطعن وشنیخ اورایڈ ارسانی ترک کردیں۔ میں کھنزم پڑجا نمیں ،تو یہ بھی نرم پڑجا کمیں کہ آپ بیٹونٹیٹی پرطعن وشنیخ اورایڈ ارسانی ترک کردیں۔ میں کھنزم پڑجا نمیں ،تو یہ بھی نرم پڑجا کمیں کہ آپ بیٹونٹیٹی پرطعن وشنیخ اورایڈ ارسانی ترک کردیں۔

مستئل کی: اس آیت ہے معلوم ہوا کہ کفار و فجار کے ساتھ بیسودا کرلینا کہ ہم تمہیں کچھ نبیس کہتے تم بھی ہمیں کچھ نہ کہو، بیر مسئل کی : اس آیت ہے معلوم ہوا کہ کفار و فجار کے ساتھ بیسودا کرلینا کہ ہم تمہیں کچھ نبیس کہتے تم بھی ہمیں کچھ نہ کہو، بیر

مداہنت فی المدین اور حرام ہے (معارف، مظہری) یعنی بلاسی اضطراب اور مجبوری کے ایسام عامدہ جائز نہیں۔
و لَا تَسْطِع شَیلَ حَلَافِ مَیفِیْنِ (الآیة) پہلی آیت میں عام کفاری بات نہ مانے اور دین کے معاملہ میں ان کی وجہ کوئی مداہنت نہ کرنے کا عام محم تھا، اس آیت میں ایک خاص شریر کا فرولید بن مغیرہ کی صفات رفیلہ بیان کر کے اس سے کوئی مداہنت ، حکمت بہلیغ کے لئے شخت افراض کرنے اور اس کی بات نہ مانے کا خصوص تھم دیا گیا ہے، اس لئے کہتی بات میں مداہنت ، حکمت بہلیغ کے لئے شخت نقصان وہ ہے، نہ کورہ آیت میں جونواوصاف رفیلہ بیان کئے گئے جیں ان کے بارے میں رائح تول تو بہی ہے کہ یہ وسید بن مغیرہ کے اوصاف جیں اس کے ملاوہ بھی کئی اقوال جیں، کس نے ان اوصاف کا مصداتی اسود بن عبد یغو شکو اور کس نے اس مغیرہ کی توامل کا بوا تو مغیرہ نے دووک کی کہ نیس اس کا باپ بول، جب نہ کورہ آیت نازل جوئی تو ولید نے اپنی مال سے کہا کہ تھر گئی تھیں جانیا، اگر تو جھے بھے جھے بحق بین نہیں میں اس میں سے سوائے نویں (زیم) کے سب کو جانیا بھول اور صرف اس کونیس جانیا، اگر تو جھے بھے جھے بحق بین ہیں اس کا جواتو میں نے دیا تا اور کی اور اس کی مال نے کہا جورا اور مرف اس کے بارے میں تیرے پچاز او بھا کیوں سے انہ بیشہ جبری گردن اڑا ووں گاتو اس کی مال نے کہا جورا اپ نام و تھا جھے مال کے بارے میں تیرے پچاز او بھا کیوں سے انہ بیشہ بواتو میں نے فلال نفلام کوائے اور تو اور ور بیا ہواتوں سے ہے۔ دوامیں ملحف ا

ياغ والول كاقصه:

انّا مَلُوْنَهُمْ كُمَا بَلُوْنَا اَصْحُبَ الْجِنَّةِ (الآیة) یہ باغ حضرت ابن عباس تَضَوَّتُ الْتُنْ اَکْ اَکْ اَکْ الْجَنَّةِ (الآیة) یہ باغ حضرت ابن عباس تَضَوَّتُ الْتُنْ اَکْ اَکْ اَکْ الْجَنَّةُ اللَّهُ اللَّهُ الْکَالِیُ الْکَالِیُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّ

پھل قرنا قو پھل تو ڑنے کے دوران جو پھل نیچ گرجاتے وہ نقیروں اور سکینوں کے لئے چھوڑ دیتا، ای طرح کھیتی کا منے وقت جو خوشہ گرجا تا اور کھلیان میں جو وانہ بھو سے کے ساتھ چلا جاتا وہ بھی نقیروں کے لئے چھوڑ دیتا (یہی وجہ تھی کہ جب بھل تو ڑ نے اور کھیتی کا منے کا وقت میں تا تو بہت سے فقراء و مساکین جمع ہوجاتے تھے) اس مرد صالح کا انقال ہو گی اس کے تین بیٹے باغ اور کھیتی کا منے کا وقت میں تاتو بہت سے فقراء و مساکین جمع ہوجاتے تھے) اس مرد صالح کا انقال ہو گی اس کے تین بیٹے باغ اور بیدا وار ضرورت سے کم ہے اس زیمن کے وارث ہوئے ، انہوں نے آپس میں مشورہ کیا کہ اب ہماری عیالداری بڑھائی ہے اور بیدا وار ضرورت سے کم ہے اس کے اب ان فقراء کے لئے اتنا غلہ اور پھل جھوڑ تا ہمارے بس کی بات نہیں ہے ، ہمیں پیسلسلہ بند کرتا چاہئے ، آگے ان کا قصہ خود قرآن کریم حسب ڈیل الفاظ میں بیان کرتا ہے۔

اِذْ اَفْسَسُوْ الْمَيْتُ مُنَّفَ الْمُصْبِحِيْنَ وَلَا مَسْتَنْفُوْنَ لِيمَانَهُوں فِيْمَ كَمَاتِه يَعَهِدُرُ لِي كَابِ كَامْرَتِهِ بَمُ صَحِيَّ الْهِوں فِيْمَ كَمَاتِه يَعَهُدُرُ لِي كَالْهِ الْعَيْنِ فَاكَهُ مُورِيَّ كَا كَفْقُراءُ ومساكين كُوفِر نه جواور ساتھ نہ لگ ليں ،ان كواپ اس منصوب پراتنا يقين فاكه الله على الله الله على الل

فَطَافَ عَلَيْهَا طَانِفٌ مِنْ رَّبِكَ ادهرتوبيلوگ بيمشوره كرر بي تضادرادهرآ مانی بلان باغ كوجلا كرخاك سيه كرديا، جب صبح تزكے پھل تو رُئے كے جانے جانے گئوا كي دوسرے كوآ ہتدآ ہتد پكار نے گئے، تا كه فقير وسكين لوگ سن نه ليل اوروه اس بات پرخوش تھے كه آج باغ ميں آكر ہم سے كوئى كچھ نه مانگے گا، اوروه اپنے آپ كواپنے اس منصوبہ ميں كاميا ب سجھ رہے تھے۔

فَلَمَّا رَأَوْهَا قَالُوْ الِنَّا لَصَّالُوْنَ مَرجب اس جَدبائ دکھیت کچھ نہ پایا ہو اول تو یہ کہنے گئے کہ ہم اپنے ہاغ کاراستہ ہمول کرکسی دوسری طرف نکل آئے ہیں ، یہاں نہ تو باغ ہاور نہ کھیت ، مگر جب دیگر نشانیوں پرغور کیا تو معلوم ہوا کہ جگہ تو یہ ہم کہ ہوگہ ہوگیا ہے تو کہنے گئے ''بَالْ نَحْنُ مَحْدُ وَمُوْن' یعنی تباہ شدہ باغ ہمارا ہی بہی ہے ، مگر کھیت اور باغ وغیرہ سب جل کرفتم ہوگیا ہے تو کہنے گئے ''بَالْ نَحْنُ مَحْدُ وَمُوْن' یعنی تباہ شدہ باغ ہمارا ہی باغ ہے جس کوالقد نے ہمارے طرز ممل کی پاداش میں ایسا کردیا ، واقعی ہم اس نعمت سے بلکہ لاگت سے بھی محروم کرد سے گئے ، یہ واقعی حرون نصیبی ہے۔

فَالَ اَوْسَطُهُمْ اَلَمْ اَقُلْ لَكُمْ (الآیة) اس کامطلب بیہ ہان میں جونسبۂ بہتر تفااس نے اس وقت بھی جب وہ فقیروں کونہ دینے کی قشم کھار ہے متھے کہا تھا کہتم خدا کو بھول گئے؟ انشاءاللّہ کیوں نہیں کہتے؟ مگرانہوں نے اس کی پروانہ کی ۔

قَالُوْ ا سُبحنَ رَبِّنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِيْنَ لِينَ ابِ أَبِينَ احْماسَ ہوا كہم نے اپنے باپ كے طرز ممل كے خلاف قدم اٹھا كر منطق كارتكاب كيا ہے جس كى سز اللہ نے ہميں دى ہے ، اور اس بنا ہى وہر بادى كا الزام آپس ميں ايک دوسرے كوديئے لگے۔ عسنسى دَبُّنَا اَنْ يُبْلِدِ لَنَا حَيْرًا مِنْهَا كَتِمَ بِينَ كَها نَهُول فِي آپس ميں عہد كيا كها بِ اگرائلہ نے ہميں مال ويا تو اپنے پاپ كى طرح اس ميں ہے قرياء ومساكين كا حق بھى اواكريں گے۔ ا مام بغوی رَحْمُهُ لِللَّهُ لَيْعَالِكَ فِي حَضِرت عبداللَّه بن مسعود وَفِي لَهُ أَنْهُ لَعَالَكَ عِن اللَّهِ یہ خبر پہنچی ہے کہ جب ان سب لوگوں نے ہے دل ہے تو بہ کرلی توانلہ تعالی نے ان کواس سے بہتر باغ عطا فر مادیا جس کے انگوروں کے خوشے استے بڑے ہوئے کہ ایک خوشہ ایک نیجریر لا داجا تا تھا۔ (مطهري، معارف، والله اعدم بالصواب)

إِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ عِنْدَكَرَيْهِمْ جَنَّتِ النَّعِيْمِ ۚ أَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِيْنَ كَالْمُجْرِمِيْنَ ۚ اى تابِعِين لهم مى اعطاء مَالَكُنُورُ كَيْفَ تَعَكِّمُونَ ﴿ هـدا الـخــكــ الـعـاسِـد أَمْرَ سِ لَكُمْرِكِتُ مُـــــزَلَ فِيهِ تَذَرُسُونَ ﴿ تَــفُـر ، وَن إِنَّ لَكُثْرُ فِيْهِ لَمَاتَخَتَّرُوْنَ ۚ فَحَدَرُونَ آمَرَ لَكُمْ ٱيْمَانُّ عُهُودٌ عَلَيْنَا بَالِغَةٌ واتنهُ إِلَّى يَوْمِ ٱلْقِيلَمَةُ لَا مُتَعَـدُقُ معنى بِعَلْبِ وَفِي هَذَا الكَلام مَعْنِي الْقَلْمِ أَي أَقْسَمُ الكَم وَخُوالُهُ إِنَّ لَكُمْ لَمَاتَكُمُ مُونَ اللَّهِ لانفسكم سَلُّهُمْ إِنَّهُمْ مِذْ لِكَ الحُكْمِ الَّذِي يِحْكُمُون له لِانْتُسِيهُ مِن الَّهِمِ يُعْطُون فِي الاحرة افْعَسل مِن المُؤمنين نَعْيُمُ عَيلٌ عِهم أَمْلَهُم اي عِندهم شُرَكًا أَوْنُ وافتُون لهم في هذا القَوْل يكُفُلُون لهم مه عَ عَالَ كَانَ كَدَيْكَ فَلْيَأْتُوا بِشُرَكَا إِنْهِمُ السَّ عَنِينَ الله مِهِ إِنْ كَانُوا طَدِقِينَ أَ ادْكُرْ يَوْمَرُ يُكُنَّفُ عَنْ سَاقٍ هُو عِمارةٌ عن شدّة الأبُريومُ القيمَةِ للحسابِ والجَراء يُقالُ كَشَفتِ الحرُبُ عَن ساقِ اذا اشْدَ الاسُرُ ويه وَّ يُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ إِمْتِحَانًا لايمانهم فَلَايَسْتَطِيْعُوْنَ أَ يَسْبِرْ طُهُورُهُم طِنْقًا واحدًا خَاشِعَةً حالٌ س صمير يُدعون اي دبينة اَبْصَارُهُم لا يزفعُونها تَرْهَقُهُمْ تَعْشاهُم ذِلَّةٌ وَقَدْكَانُوْايُدْعُونَ في الدُني إِلَى السُّكُبُودِ وَهُمْ سِلِمُوْنَ ؟ ولا يساندون مه سان لا يُصَنُوا فَذَرُنْ دغسى وَمَن يُكَذِّبُ بِهُذَالْكَدِيْنُ النُّوان سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مَاحِذُهُم قليلاً مِنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ ﴿ وَأُمْلِى لَهُمْ أَنْهِدُهُمْ اِنَّ كَيْدِي مَتِيُنُ ﴿ شَدِيدٌ لا يُطَاقُ أَمْرِ مِن لِّشَيَّالُهُمْ عَلَى تبُليه الرِّسالة أَجْرًافَهُمْ مِينَ مَغْرَمِ سِمَا يُغطُونِكه مُّتُقَلُّونَ فَالا يُؤمِنُون لذلك اَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ اي السَّوحُ المَحْمُوطُ الَّذِي فيه الغَيْثُ فَهُمْ لَكُنُّبُوْنَ ﴿ سَمَهُ مَا يَقُولُونِ فَاصْبِرَلِكُكُمْ مَرَيِّكَ ع فيهم ما يشَاءُ وَلاَتُكُنُ كَصَاحِبِ الْحُوتِ في الصَحِر والعُحُنة وهُو يُونُسُ عليه الصَلوةُ والسَّلامُ إِذْنَالاي دعارية وَهُوَمَلَّظُوْمُ ﴿ مَـمُدُوءٌ عَمَّا في على الحُوت لَوْلَاآنَ تَلاَلَهُ اذركه لِيُعَمَّةٌ رَحْمة لِيَنْ رَبِيْ لَشِذَ مِن مِطْنِ الحُوْتِ بِالْعُرَاءِ بِالْارْضِ الفَصَاءِ وَهُوَمَنْمُوْمُ لَكِتْ رُحِم فُسِد عَيْزَ سَذْمُوْم فَاجْتَبِلَهُ مَرَّبُهُ بِالنَّبُوّةِ فَجَعَلَهُ مِنَ الْصَلِحِيْنَ ﴿ الاَنْسِاءِ وَإِنْ يَكَادُ الَّذِينَ كَفَرُوْ الْيُزْلِقُونَكَ سِمِهِ الياء وفنجه بِأَبْصَارِهِم اي يُنظُرُون إِيْكَ نَظُرًا شَدِيْدًا يَكَادُ أَنَ يُصْرِعَكَ ويُسْقِطَكَ عَنُ مَكَمَكَ لَمَّاسَمِعُواالْذِكْرُ القُرُانَ وَيَقُولُونَ حَسَدًا ﴿ إِنَّهُ لِمَجْنُونَ ﴾ بسبب القُرار الذي جاء به وَمَاهُو أي الْفَرَارُ اللَّاذِكُرُ مؤعِمة لِلْعَلَمِينَ ﴿ الإنس والْجَنَّ لَا يَحُدُثُ بِسَبِّبِهِ جُنُونٌ.

- ﴿ (فِئزُم بِبَاشَهُ إِ

ت بہتر ہے ہے ؟ (آئندہ آیت)اں وقت نازل ہوئی جب مشرکین نے کہا،اگر ہم کودوبارہ زندہ کیا گیا تو تم ہے بہتر ہم کوعطا کیا جائے گا ، پر ہیز گاروں کے لئے ان کے رب کے پاس نعمتوں والی جنتیں ہیں ، کیا ہم مسلمین اور مجر مین کو برابر کردیں گے؟ یعنی گنہگاروں کومسلمانوں کے برابر کردیں گے؟ حمہیں کیا ہوگیا؟ تم یہ فاسد فیصلے کیسے کررہے ہو؟ بلکہ کیا تمہارے پاس نازل کروہ کوئی کتاب ہے جس میں تم پڑھتے ہو کہ اس میں تمہارے لئے وہ چیزیں (مکھی) ہوں جن کوتم پندكرتے ہوياتمهارے كئے ہم پر پچھ پختات ميں ہيں؟ (الى يوم القيامه) معنی كاعتبارے عَلَيْنَا عَيْمَالَ إِدار اس کلام میں قسم کے معنی میں الیعنی اَفْسَمْ فَالَكُمْر اور جواب قسم (إِنَّ لَكُمْر لَمَا تَحْتُكُمُوْنَ) ہے كہ تمہارے لئے وہ سب کھے ہے جے تم اپنی طرف سے اپنے لئے مقرر کرلوآپ بیق اللہ ان سے دریافت فرمائیں کہ اس تھم کا کہ جس کاتم اپنے کئے فیصلہ کررہے ہووہ بیر کہتم کوآ خرت میں مسلمانوں سے بمہتر عطا کیا جائے گا ، کوئی ذمہ دارہے؟ کیاان کے یاس شرکاء ہیں؟ جواس بات میں ان کےموافق اور اس سلسلے میں ان کے لئے تفیل ہیں ،اگرابیا ہے تواہیخ کفالت کرنے والے شرکاءکو لے آئیں ،اگروہ سیجے ہیں ،اس دن کو یا دکرو جس دن ساق کی ججلی ظاہر ہوجائے گی ، بیعبارت ہے قیامت کے دن حساب اورجزاء کی شدت سے، جب شدت کارن پڑ جائے تو بولا جاتا ہے، تکشف یہ السَّاقی عَن الْحَرْب، حرب نے ا پنی پنڈ لیاں کھول دیں ، اوران کو ان کے ایمان کی آ زمائش کے لئے سجدہ کے لئے بلایا جائے گا ،تو وہ سجدہ نہ کرسکیس گے ان کی کمریں ایک تختہ ہوجا ئیں گی حال بیہ ہے کہ ان کی نگاہیں نیجی ہوں گی خیاہیے تھ، یدعون کی شمیر سے حال ہے، حال ب کہ ذکیل ہوں گی ،نظروں کواوپر نہاٹھا تیں گے ان پر ذکت چھائی ہوئی ہوگی ، بیر بجدہ کے لئے و نیامیں بلائے جاتے تھے حاں میہ کہ وہ سی سالم نتھے تو میں مجدہ نہ کر سکیں گے ،اس لئے کہ انہوں نے (دنیا) میں نمازنہیں پڑھی تھی مجھ کواوراس شخص کو جو حجثلار ہا ہے اس حال میں رہنے دے، ہم ان کو بتدریج اس طرح کھینچیں گے کہان کومعلوم بھی نہ ہوگا کینی ہم ان کو آ ہستہ آ ہستہ گرفت میں کیں گے، اور میں ان کوڈھیل دوں گا، بے شک میری تدبیر بردی مضبوط شدید ہے کوئی اس کا مقابلہ کرنے ک طاقت نہیں رکھتا کیا آپ ﷺ ان ہے تبلیغ رسالت پر پچھا جرت طلب کرتے ہیں کہ بیاس کے بوجھ سے کہ جو سے آپ النظامی کوریتے ہیں دہے جارہے ہیں ؟ جس کی وجہ سے بیلوگ ایمان نہیں لاتے ؟ یاان کے پاس علم غیب ہے لیتنی لوح محفوظ ہے کہ جس میں غیب (کی ہاتمیں) ہیں کہ جو کہتے ہیں اس سے لکھ لیتے ہیں پس تو ان کے ہارے میں جووہ چاہتا ے اپنے رب کے علم کا صبر سے انتظار کر اور ننگ دلی اور عجلت میں مجھکی والے کے ما نند نہ ہو جا ، اور وہ یونس علیہ لاہ طالعہ ا ہیں،اس نے اپنے رب سے غم کی حالت میں دعاء کی (یعنی)مغموم ہوکر مچھلی کے پیٹے میں وعاء کی ،اگر اسے اس کے رب کی نعمت رحمت نہ پالیتی تو مچھلی کی پیٹ سے بری حالت میں چینیل میدان میں پھینک دیاج تا، کیکن اس پر رحم فر ، یا گیا،اوراس کو بری حالت میں نہیں ڈالا گیا، پھراس کے رب نے اس کو نبوت سے نوازاتواس کوصالحین انبیاء میں شام کر < (وَمُزَمُ بِسَالتَ إِنَّا

دیا اور قریب ہے کہ کا فرآپ بلائھ تاہ کو تیز نگا ہول سے پھسلا دیں، یا ، کے فتہ اور ضمہ کے ہم تھو، بعنی وہ لوگ آپ بلاٹھ کا گھور کو دیکھتے ہیں ایسا معلوم ہوتا ہے کہ وہ آپ بلاٹھ کا گھور کر دیکھتے ہیں ایسا معلوم ہوتا ہے کہ وہ آپ بلاٹھ کا گھور کر دیکھتے ہیں ایسا معلوم ہوتا ہے کہ وہ سے گرادیں گے جب وہ قرآن سنتے ہیں اور حسد کی وجہ سے کہدو ہے ہیں بیتو اس قرآن کی وجہ سے جس کو بیانا یا ہے دیوانہ ہوگی ہے، در حقیقت بیقرآن جہان والول کے لئے لیعنی جن وائس کے لئے نصیحت ہے اس کی وجہ سے جنون بید انہیں ہوسکت۔

عَجِفِيق الرِّكْيةِ لِسِّبَيلُ لَفَيْسِيرُ فَوَالِلًا

فِيُوْلِكُنَى: اى تابعين من سبتها كيفسر ملام تابعين كربجائ مساوين لهمر فى العطافر مات ـ في فَيُولِكُنَى: اى تابعين من سبتها كيفسر ملام تابعين كربجائ مساوين لهمر فى العطافر مات ـ في فَيْ مَنْ اللهم في من المنظم من المنافعة عن المنواب. الاحكام البعيدة عن المنواب.

قِوْلَى : كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ بِيدوسراجله إ

فَخُولِ فَيْ اللّهُ اللّهُ مُلَكُمْ لَهُمَا تَنْحَيْرُوْنَ ، إِذَّ لَكُمْ وراصل ان لكم فق كما تفقال لن كنه تدرُسُوْنَ كامفعول بهلكن فبر مين لَهَا تَحَيِّرُون مِين لام يه تاكيدلا يا كي وَإِنَّ كوكسره و حديا كيه جبيه كه علمتُ إِنَّكَ لَعَاقِلٌ مِين اورطلحه بن مصرف اور نسى ك في ان جمزه كفته كيماته ميرُ ها مي المكوز الدبرائة تاكيد قرار و يكر -

فَخُولِ الله متعلق مَعْنَى بِعَلَيْنَا ، اى متصل به ، لين إلى يوم القيامة ، علَيْنا كَمْتُصل بي يبال متعلق عمراو نحوى تعلق نبين بي كروة تعلق فعل ياس كرساته فاص بوجوفعل كمعنى بين بو أم لك فرايسما لا علينا العضم كمعنى مين بياور إنّ لَكُمْ لَمَا تَحْكُمُوْن جواب تتم بي ب

قَوْلَ ؛ مِنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ ، لَا يَعْلَمُونَ كَامْعُولَ كَامْعُولَ كَامْعُولَ كَانْ اللهِ السِّيْدُواج

فِيُولِينَ : وَأَمْلِي لَهُمْ بِيعَطفَ فَسِرى إلى كاعظف سَنْسَتَذْرِ جُهُمْ يرب-

تَفَيِّيُرُوتِشِينَ

شان نزول:

صناد بدقریش نے جب آپ میلی گئی زبانی سنا کہ مسلمانوں کو آخرت میں ایسی ایسی ملیس گی، تو کہنے گئے کہ اگر بالفرض قیر مت قائم ہوگئی تو ہم وہاں بھی مسلمانوں ہے بہتر ہی ہوں گے، جیسے دنیا میں ہم مسلمانوں ہے بہتر اور آسودہ حال ہیں ، بالفرض قیر مت قائم ہوگئی تو ہم وہاں بھی مسلمانوں ہے بہتر ہی جواب میں فر وہا "اَفَ فَ جُدِ عَلُ الْمُسْلِمِيْنَ كَالْمُجْدِ مِيْنَ؟ به سرطرح ممكن یا کم از کم مساوی ہوں گے، امتد تعالی نے اس کے جواب میں فر وہا "اَفَ فَ جُدِ عَلُ الْمُسْلِمِيْنَ كَالْمُجْدِ مِيْنَ؟ به سرطرح ممكن

ہے کہ ہم مسلمانوں لیعنی اپنے فر مانبر داروں کو مجرموں لیعنی نافر مانوں کی طرح کردیں؟ مطلب بید کہ ایب بھی نہیں ہوسکتا کہ امد تعالى مدل والصاف كے خلاف دونوں كو يكسال كردے ، أَفَانَجْعَلُ ميں جمز ه استفيام الكاري ہے اور فا عاطفہ ہے معطوف محذ وف ے تقدر عبرت برجوگ أنسحيف في الحكم فَنجعَل المسلمين كالمجرمين النع ليحن بربات عقل كفالف شك ابتد تعالی فرما نبر داروں اور نا فرمانوں میں تمیزنہ کرے، آخرتمہاری عقل میں بیہ بات کیے آئی کہ کا ئنات کا خالق کوئی اندھا راجا ہے؟ جس کے بیباں جو پٹ گمری کاراج ہے کہ جہاں''سب دھان ستائیس سیر''اور'' نکاسیر بھا جی'' اور'' نکاسیر کھا جا'' کا قانون ج رک ہے، جو یہ نہ دیکھے گا کہ کن لوگوں نے دنیا میں اس کے احکام کی اطاعت کی اور برے کاموں سے پر ہیز کیا اور کون لوگ تھے جنہوں نے ہے خوف ہوکر ہرطرح کے گناہ اور جرائم اور تخلم وستم کاار تکاب کیا؟ اگراہیا ہوتو اس سے بڑاظلم اور نا انصافی کیا ہوشتی ہے، تیا مت کا آنا اور حساب و کتائب کا ہونا اور نیک و بدگی سز ایہ سب تو عقلاً بھی ضروری ہے، کیونکہ اس کا دنیا میں ہر تخص مشاہرہ ئرتا ہے اور کوئی انکار نبیں کرسکتا کہ دنیامیں جوعمو ما فساق، فجار، بدکار، ظالم، چوراور ڈاکو ہیں نفع میں رہتے ہیں ، بسااو قات ایب چوراورڈ اکوا یک رات میں اتنامال جمع کرلیتا ہے کہ شریف آ دمی عمر بھر میں بھی حاصل نہیں کرسکتا واس کے ملاوہ نہ خوف کو جا نتا ہے اورنہ آخرے کواور نہ کسی شرم وحیا کا یابند ہوتا ہے،اپنی خواہشات کوجس طرح حابتا ہے پورا کرتا ہے، نیک اورشریف آ دمی اول ق خدا ہے ڈرتا ہے آخرت کی جواب وہی کا خوف وامن گیرر بتا ہے،اس کے علاوہ شرم وحیا کا بھی پاس ولحاظ کرتا ہے،خلاصہ یہ کہ و نیا کے کارخ نہ میں بدکار و بدمعاش کا میاب اورشریف آ دمی نا کا م نظر آتا ہے،اب اگر آگے بھی کوئی ایسا وفت نہ آئے جس میں حق و ناحق کانتیج فیصله ہوا وربد کارکوسز اونیکو کارکو جز الطے تو پھرتو کسی برائی کو برائی اور گناہ کو گناہ کہنا لغولا حاصل ہوجا تا ہے کہ وہ ا یک انسان کو بلا وجداس کی خواہشات ہے رو کتا ہے اور ووسراشتر بے مہار ہو کراپنی خواہشات کے پیچھے ہے روک نوک سرپث دوڑر باہے، انجام کار نتیج میں دونوں برابر ہوں یہ توعقل دانصاف کے بالکل خلاف ہے، قر آن کریم کے اس فظ" اَفَ نَجَعَل الْسُمْسَلِمِيْنَ كَالْمُجْرِمِيْن " في ال حقيقت كود الشّح كرديا كه عقلاً بيضر درى ہے كه كوئى ايسا وقت ضرورا ك كه جس ميس سب كاحساب ہواور مجرموں كے لئے دنیا كى طرح كوئى چور درواز و ندہو، جہاں انصاف ہى انصاف ہو،اگر بينبيں ہے تو دنیا میں كوئى برا کام برانبیں اور کوئی جرم جرم نبیں اور پھرخدائی عدل وانصاف کے کوئی معنی نبیس رہتے۔

آم لَکُ فَرِ کِنَابٌ فِیهِ تَذَرُسُونَ لینی تم جویدوی کررے ہوکہ بمیں وہاں بھی وہ سب کھے طے گاجو یہاں ملا ہوا ہے ، کیہ تمہارے پاس کوئی آسانی کتاب ہے کہ جس میں یہ بات کھی ہوئی ہے اورتم اس میں پڑھ کریہ تھم لگاتے ہو، یا ہم نے تم سے پختہ مہد کررکھا ہے جو قیامت تک باتی رہنے والا ہے کہ تمہارے لئے وہی پچھ ہوگا جوتم پسند کروگے؟

آپﷺ ان سے پوچھئے تو کہان ہیں ہے کون اس بات کا ذمہ دار ہے کہ قیامت کے دن ان کے لئے وہی فیصلے کر دائے گا جو اللہ تعالی مسلمانوں کے لئے قرمائے گا؟ یا جن کو انہوں نے اس کا نثر یک تھیرار کھا ہے وہ ان کی مدد کر کے ان کو اچھ مقام دوادیں گے؟ اگر ان کے نثر یک ایسے بیں تو ان کوسامنے لائیں تا کہ ان کی صدافت واضح ہو۔ یک فرم کے سنگ فرن کے بیان مرادلی ہیں ہے ۔ '' کھٹ ساق' سے تیا مت کے شدا کداوراس کی ہولن کیاں مرادلی ہیں ، صحابہ الصحافۃ اور تا بعین رہ فلنظ کھٹا تھا گئا ہوگئے ہیں ، عربی عاورہ کے مطابق خوت وقت آ پڑنے کو شف ساق سے تعبیر کیا جاتا ہے ، حضرت عبداللہ بن عباس تعنی کا کھٹا گئا گئا گئا ہے کہ بیان کئے مطابق سخت وقت آ پڑنے کو شف ساق سے تعبیر کیا جاتا ہے ، حضرت عبداللہ بن عباس تعنی کا اور تربیع بن انس تعنی ایک اور قول جو حضرت ابن عباس تعنی کا اور رہ بیع بن انس تعنی اللہ تعالی کا اور تربیع بن انس تعنی اللہ تعالی کا اور تربیع بن انس تعنی اللہ تعالی کا سے منقول ہے اس میں کشف ساق سے مرادحہ کئی ہے ہو واٹھ تالیا گیا ہے ، اس کا مطلب بیہ ہوگا کہ جس روز تمام حقیقتیں بے منقول ہے اس میں کشف ساق سے مرادحہ کئی ہے۔ نہ وجا کیں گا اور لوگوں کے اعمال کھل مرسا منے آ جا کھیں گے۔

خسانشعهٔ انسطارُهُمْ لینی و نویمی توان کَ مُرونیں اَ مَرَی رہتی تھیں اور سینے تنے رہتے تھے، آخرت میں و نیا کے برمکس معاملہ ہوگا کہ ندامت وشرمندگی کی وجہ سے ان کی آئیھیں جنگی ہوئی ہوں گی اوران پر ذلت وخواری جیھائی ہوگی۔

فَلْوَنِنَى وَمَنْ يُسْكُونِ بِهِذَا الْحَدِيْتَ مَطَلَب بِيهِ كُونَ بِيهِ فَيْتِهِ اللّهِ عَلَىٰ مُعِرَا الْحَدِیْتَ مَطَلَب بِیهِ کَدَا بِیهِ فِیْتِهِ اللّهِ عَلَیْ وَمَنْ بُیْرِی بَیْنَ بِیال کِھوڑ وین ایک کام ہے بعنی آپ بوقعہ قیامت کو جھٹانے والول کو اور جھے چھوڑ ویں، پیم دیکھی غاری بات ہے جو بیمطالبہ باربار پیش ہوتا محاورہ کے طور پر استعمال ہوا ہو اس سے اللہ پر بجر وسداور تو کل کرنا ہے، بینی غاری بات ہے جو بیمطالبہ باربار پیش ہوتا رہت ہو گئا ہو ایک اللہ کے بڑو کل کرنا ہے، بینی غاری بات کے بول بین میں اور اللہ جمیس عذاب و بینے پر قاور ہے و پھر جمیس عذاب کیوں نہیں ویتا؟ ایسے ول آزار مطالبوں کی وجہ ہے بھی بھی خودر سول اللہ بین فیل میارک میں بھی یہ خیال بیدا ہوتا ہوگا کہ ان لوگوں پر اسی وقت مذاب آب ہے نے بین ، ایک مدت تک ان مذاب آب ہے نو باقی ماندہ لوگوں کی اصلاح کی تو قع ہے ، اس بر فر ویا گیا کہ این کو تھمت کو جم خوب جانے ہیں ، ایک مدت تک ان کومہلت دیے ہیں فورا مذاب نہیں بھیجے ، اس میں ان کی آز ، نش بھی ہو اور ایمان ایا نے کی مہلت بھی ہے۔

وَاِنْ يَكَادُ اللَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَيُزْلِقُوْنَكَ بِأَبْصَادِ هِمْ الَيُزْلِقُونَكَ اِرْ لَاقَ ہے مشتق ہے جس كے معنى پھالانے اور گراد ہے كے بیں، مطلب مید کہ گفار مکہ آپ بلاگات کو غضبنا کے اور ترجی نگاہوں ہے دیکھتے ہیں اور جا ہے ہیں کہ آپ بلاگات کی اور کراد ہے کہ اور مقام سے لغزش دیدیں لیعنی کاررسمالت سے روک دیں، چنا نچہ جب وہ اللہ کا کلام سفتے ہیں تو کہنے بیت تو کہنے

٤ (مِنزَم بِسَالتَرِدَ عِن

سنت بیں کہ بیو محنون ہے ۔ (معادف)

اس کا ایک مطلب یہ بھی بیان کیا ہے کہ ایعنی اگر تھے اللہ کی جمایت اور حفاظت حاصل نہ ہوتی تو ان کفار کی حاسدانہ نظروں سے تو نظر بدکا شکار ہوجا تا یعنی ان کی نظر تھے لگ جاتی ،امام ابن کثیر نے اس کا یہی مطلب لیا ہے ، مزید لکھتے ہیں کہ بیاس بات کی دیل ہے کہ نظر کا لگ جا نا اور اس کا اللہ کے حکم ہے اثر انداز ہوتا حق ہے، جبیبا کہ متعدد احادیث ہے بھی ثابت ہے ، چذ نچہ احدیث ہیں اور یہ بھی تا کید کی گئی ہیں ، اور یہ بھی تا کید کی گئی ہے کہ جب تمہیں کوئی چیز اچھی سکے قو اور دیث میں اس سے نیچنے کے لئے دعا کی بیان کی گئی ہیں ، اور یہ بھی تا کید کی گئی ہے کہ جب تمہیں کوئی چیز اچھی سکے قو ان مارات اللہ اس کے نظر بند نہ لگے ، اس طرح اگر کسی کوکسی کی نظر لگ جائے تو فر مایہ: اسے قسل کروا سر اس کا پونی اس محف پرڈالا جائے جس کواس کی نظر تی ہے ۔

و کُفتک المعاور دی اُنَّ العَیْنَ کَانَتْ فِی بنی اسد من العوب، ماوردی نے ذکر کیا ہے کہ نظر بدبی اسد میں زیادہ تھی ، اوران میں کا جب کو کی شخص کسی کو یا کسی کے مال کو نظر لگاٹا جا بتا تو تین روز تک خود کو بھوکا رکھتا پھروہ اس شخص یا اس مال کے پاس باتا جس کو نظر لگائی مقصود ہوتی اور اس کے بارے میں بہند بدہ الفاظ کبتا ، اور تعریف فرق صیف کرتا تو اس شخص یا مال کونظر لگ جاتی اور بلاک و ہریاد ہوجاتا۔ (صاوی، حسل)

وَإِنْ يَكَادُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَيُزْلِقُوْنَكَ بِأَبْصَادِهِمْ لَمَّا سَمِعُو الذكر وَيَقُولُوْنَ إِنَّهُ لَمَحْنُوْنَ الرَّمْدَلُوره آيت كو پِنَى يَكُولُونَ إِنَّهُ لَمَحْنُوْنَ الرَّمْدُلُوره آيت كو پِنَى يَرِمُ كَرِبَ عِيدِمُ كَرِبَ عِيدِمُ كَرِبَ عِيدِمُ كَرِبَ عِيدِمُ كَرِبُ عِيدِمُ كَرِبُ عِيدِمُ كَمْ عِيدِهِ عَيْدُوا لِلمُ تَظْرَبُدَ كَ لِمُحْرَبِ عِيدٍ (صاوى)

ا، م بغوی وغیره مفسرین نے ان آیات کا ایک خاص واقعہ بھی نقل کیا ہے کہ انسان کی نظر بدلگ ج نا اور اس سے کسی کو نقصان اور یہ ری بلکہ بلاکت تک پہنچ جانا جیسا کہ حقیقت ہے اور احادیث سیحے بیں اس کا حق ہونا وارد ہے، مکہ میں ایک شخص نظر لگا نے میں بڑا مشہور ومعروف تھا، اونٹوں اور جانوروں کو نظر لگادیتا تو وہ (اللہ کے حکم ہے) فورا مرجاتے، کفار مکہ کو آپ خیاتی فیٹین سے عداوت تو تھی ہی اور ہرطر ن کی کوشش آپ بین کو لیا گار نے اور ایڈ ایم بین کے کہ کیا کرتے ہے، ان کو بیسو بھی کہ اس شخص سے مرسول اللہ میں فاور اس شخص کو بلایا، اس نے نظر لگانے کی پوری کوشش کرنی مگر اللہ تعالی نے آپ فیلی تھیں کی خوا میں اور اس شخص کو بلایا، اس نے نظر لگانے کی پوری کوشش کرنی مگر اللہ تعالی نے آپ فیلی تھیں کی خوا میں اور اس شخص کو بلایا، اس نے نظر لگانے کی پوری کوشش کرنی مگر اللہ تعالی نے آپ فیلی تھیں۔

حضرت حسن بھری رَیِّمَنُ کلندُارُتَعَالیٰ ہے منقول ہے کہ جس شخص کو نظر بد کسی شخص کی لگ گئی ہوتو اس پران آیات کو پڑھ کر دم کر دینااس کے اثر کوز ائل کر دیتا ہے لیعنی وَ اِنْ یَکادُ الَّذِیْنَ ہے آخر تک۔ (معارف الفراد سطھری)



مَرُونُوالْكَاقَّةُ مِكِيدً وَفَاتُنِيَا خَوْمِنَ ايْبَةُ وَفَيْ الْوَعِالَ الْوَعِالَ الْوَعِالَ الْوَعِالْ

سُوْرَةُ الحاقَّةِ مَكِّيَّةٌ إِحْدَى أَوْ اثْنَتَانِ وَخَمْسُونَ آيةً.

سورهٔ حاقه مکی ہے،ا کیاون یا باون آ بیتیں ہیں۔

بِسْ حِراللهِ الرَّحْ لَمِن الرَّحِسْ حِرْ الْحَاقَّةُ أَاليقيمةُ النِّي يُحقُّ فِيْهَا مَا أَنْكِرَ مِنَ النَّعْثِ والحسّب والخزّاء او المُظهرةُ لِدلك مَاالُحَاقَةُ * نغصيْهُ لشانها وهُما مُبْنداً وَحبُرٌ حبَرُ الخاقّة وَمَّأَأُدُرُهِكَ اي اعْلَمَكَ مَا الْحَاقَةُ أَرْ ريادة تغطيم لشانها فما الأولى مُنتداً ومَا بغده حنره وما الثّانِية وحنرُها مِي مَحَلَ المَفْعُولِ التَّالِي لادري كَلَّبَتْ تَمُودُ وَعَادٌ بِالْقَارِعَةِ ۚ التَيامةِ لِانَها تَقْعُ الْغُلُوبُ الله الله الله الله المُورِي المُلكِولِ الطّاغِيةِ المناعِيةِ المُحاوزةِ للحدّ فِي الشَّدِّةِ وَالمَّاعَادُ فَالْفَلِكُولُ بِرِيْجِ صَّرِصَرٍ شدِيْدةِ الصَوْتِ عَلِيَيَةٍ ۚ قويّةِ شديْدةِ على عادٍ مع قُوْتِهِمْ وشدّتهمْ سَ**خَّـرَهَا** ارْسَلهَا بالقَهْر عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالِ وَتَمْرِنِيَّةَ أَيَّاهِرُ اوَلَهَا مِنْ صُنح يَـوْم الازبعاء لِثمان بَنْين منْ شُوالِ وكانتْ فِي عَخز الشتاء حُسُومًا لا مُتتابِعَاتٍ شُمِّهِتُ مِتَالُعِ فعُلِ الحَاسِمِ في اعادة الكيِّ على االدّاءِ كرّةً نعُذَ أُخْرَى خَتّى يُنخسم فَتَرَى الْقُومَ فِيْهَاصَرَعَىٰ سَطَرُو حيْس هالكِنِي كَأَنَّهُمْ اَعْجَازُ أَصُولُ تَخْيِلَ حَاوِيَةٍ ﴿ سَاقِيطَةٍ فَارِغَةٍ فَهَلْ تَرْى لَهُمْ مِنْ بَاقِيَةٍ @ صِفَة نَفُسِ مُقَدّرةٍ والنّاءُ لِلمُبالعَةِ اي مِنِ، لا، وَجَآءُ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهُ اتْباعُهُ وفِي قِرَاءَ وَبِفَتُحِ القَافِ وسُكُونِ البَاء أي مَنْ تَقَدَّمَهُ مِنَ الْأَمَمِ الكافرة **وَالْمُؤْتَفِكُتُ** أي أَهْلُها وَهِي قُرى قَوْم لُوْطٍ بِالْخَاطِئَةِ ۚ بِالفِعْلَاتِ دَاتِ الخَطَأُ فَعَصَوْا مَ أَسُولَ مَ يِنْهِمُ اى نُوْطًا وغَيْرَهُ فَأَخَذَهُمْ الْجَذَةُ رَّابِيَةً ۗ رائِدَةً بي الشِّدّةِ عَلى غَيْرِهَا إِنَّ**الْمَاطَغَاالْمَاءُ** عَلا فَوْق كُلِّ شَيْءِ سِ الْحِبَالِ وغَيْرِهَا زَمَنَ الطُوْفَانِ حَمَلْنَكُمُ يَـعۡنِي ابَائَكُمُ إِذَ انْتُمُ فِي أَصُلاَبِهِمْ فِي **الْجَارِيَةِ** السَيفِيلَةِ الَّتِي عَمِلَها نُوْحٌ صَلَوَاتُ اللهِ وسَلاَمُهُ عَلَيْهِ ونَنحَا هُوَ ومَن كَانَ مَعَهُ فيها وغَرَق البَاقُونَ لِنَجْعَلَهَا اي هذه الفِعْدة وهي إنتَحَاءُ المُؤْسِينَ واهلاك الكافرين لَكُمُ تِذَكِرَةٌ عِظَة وَتَعِيهَا لِتَحفَظَهَا أَذُنَّ وَاعِيَةٌ ﴿ خَافَظَةٌ لِمَا تَسْمَهُ فَإِذَا لَفِحَ فِي الصُّودِ

<u>ب</u>

نَفُخَةً وَّاحِدَةً ۚ عَمْسَ بِينِ الخَلائِقِ وهِي الثَانِيةُ وَ**جُمِلَتِ** رُفِعْتِ ا**لْآمُصُوَ الْجِبَالُ فَدُكُتَا**دَقَت دَكَّةً وَّاحِدَةً فَ فَيُوْمَ إِذِوَّقَعَتِ الْوَافِعَةُ ۞ قَامَتِ القِيامَةُ وَانْتُقَتِ الْتَمَاءُ فَهِي يَوْمَ إِذِوَّا هِيَةٌ ۞ ضعيفةٌ وَّالْمَاكُ عَنِي الملاكة عَلَى أَرْجَأَيِهَا حواس السَّمَاء وَيَخْمِلُ عَرْشَ مَ بِكَ فَوْقَهُمْ أَى المَلاَئِكَةِ المَدُكُورِينَ يَوْمَبِإِذْ تُمَنِيَّةٌ ﴿ مَ الملائكه او من صُفُوفهم يَوْمَهِ لِيَتَعُرَضُونَ لِلجِسَابِ لاَتَحْقَلَى بالتّاءِ واليّاءِ مِنْكُمْ خَافِيَة ﴿ بِنَ السرائر فَأَمَّا مَنْ أُوْلِى كِتْبَهُ بِيَمِينِهِ فَيُقُولُ خِطَابًا لِجَمَاعَتِهِ لِمَا سُرِّبِهِ هَكَاؤُمُ خُذُوا اقْرَءُ وَاكْتُبِيَهُ ﴿ تَمَارَعَ بِنُهُ هَدوْمُ وافْرَءُ وَا إِلْى ظَنَنْتُ مَيغَنْتُ أَنِي مُالِي حِسَابِيكُ فَهُوَ فِي عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ﴿ مَرْصِيَّةٍ فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ﴿ قُطُوفُهَا ثِمَارُهَ كَالِئِيَةٌ ﴾ قريُبَةً يَتَنَاوَلُ منها القَائِمُ والقَاعِدُ والمُضْطَجِعُ فَيُقَالُ لَهُمُ كُلُوا وَاشْرَبُواهَنِيْكًا حَدُّ اى مُتَهَنِّينَ أَيِمَا السُّلَفَتُمْ فِي الْأَيَّامِ الْخَالِيَةِ ۞ المَاضِيَةِ في الدُّنيَا ۖ وَاَمَّامَنُ أُوْلِيَ كِتْبَهُ بِشِمَالِهِ ۗ فَيَقُوْلُ يَا لِسَنْنِيهِ لَيْتَنِي لَمْ أَوْتَ كِتَلِيكَهُ ﴿ وَلَمْ أَدْرِ مَا حِسَالِيكُ ﴿ لِلْيَتُهَا آى الدَّوْنَةَ فِي الدُنْهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةُ ﴿ النَّهَ طِعْهَ بِحَيْدِي بَانَ لَا أَبُعَثَ مَمَّا أَغْنَى عَنِّي مَالِيَهُ ﴿ هَاكَ عَنِّي سُلِّطِينَيَّهُ ۚ قُوتِي وحُعَّتِي وهَاءُ كِتَابِيه وجسسيه وساليه وسنطانيه للسكت تُثبتُ وَقُفًا ووَصْلاً إِنَّباعًا لِمُصَحَفِ الإسَام والنَقُلِ ومِنْهُمْ سَ حَذَفِهَ وَصُلا خُكُونُهُ خِطَابٌ لِحِزَنَةِ حَهَنَّمَ فَعُلُوهُ ۚ أَجْمِعُوا يَدَيُهِ إِلَى عُنُقِه في الغلِّ ثُمَّ الْجَحِيْمَ السَسَارَ السُحُرِقَةَ صَلُّوْهُ الْمُحَدِلَةُ تُمَرَّفُ سِلْسِلَةٍ ذَرَّعُهَاسَبْعُوْنَ ذِرَاعًا سِذِرَاع الْسَلَةِ الْمُعَاسَبْعُونَ ذِرَاعًا سِذِرَاعِ الْسَلَةِ فَالسَّلُحَكُوهُ ۚ أَى أَدُخِلُوه فيها بَعْدَ إِذْ خَالِهِ النَارَ ولم تَمْعِ الفَاءُ مِن تَعَلَّقِ الفِعُلِ بِالظَرُفِ المُقَدَّمِ إِلَّهُ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللهِ الْعَظِيْمِ ﴿ وَلَا يَحُضُ عَلَى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ﴿ فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هُهُنَا حَمِيْمٌ ﴿ قَرِيْبٌ يَنْتَفِعُ به وَالْطَعَامُ اللَّامِنَ غَسْلِيْنِ ﴿ صَدِيْدِ أَهْنِ النَارِ او شَجَرِ فِيْهَا لَا يَأْكُلُهُ ٓ اللَّالَخُطِئُونَ ﴿ الكَافِرُونَ.

سیک کی از از از از از از از الله کی اور سال الله کی اور الله اور جزاء یا ان (فدکوره) چیز وال کو ظاہر کرنے والی، کیسی کچھ ہے وہ جیز ثابت ہوگی جس کا افکارکی گیا ہے، یعنی بعث اور صاب اور جزاء یا ان (فدکوره) چیز وال کو ظاہر کرنے والی، کیسی کچھ ہے وہ بر پاہونے والی جی سیال کی عظمت شان کا بیان ہے وہ کہر ہے اور آپ نہا کی عظمت شان کا بیان ہے منا اُولسی (یعنی منا نہوں کے اور آپ کی خور کے اور آپ کی اور آپ کی خور کی کا بیان ہے منا اُولسی (یعنی منا اُولسی کی خور کے خور اور عاد نے کھڑ کھڑ او بے والی قیامت کو جھڑ یا و جھڑ یا منا کی خور ہے کھڑ کھڑ او بے والی ہے سوٹھور ووالی کی خور ہے کھڑ کھڑ او بے والی ہے سوٹھور ووالی کے دور دار آ واز سے جو اس کے کہتے ہیں کہ وہ قلوب کو اپنی ہولئا کیوں کی وجہ سے کھڑ کھڑ او بے والی ہے ہو تو می دیر چلی اور اس کی خور سے کھڑ کو وہ ایک شدید آ واز والی ہیز وشکہ ہوا ہے جو تو می دیر چلی اور اس کی خور سے کھڑ کر ایک کردیئے گئے ، یعنی ایک آ واز سے جو بے حد شدید تھی ، اور عادتو وہ ایک شدید آ واز والی ہیز وشکہ ہوا ہے جو تو میں کہ خور کو ان پر اللہ نے مسلسل سات داتوں اور آٹھ ونوں تک قہر کے ساتھ ان کی خورت وشدت کے باوجود ہلاک کردیئے گئے ، جس کو ان پر اللہ نے مسلسل سات داتوں اور آٹھ ونوں تک قہر کے ساتھ ان کی خورت وشدت کے باوجود ہلاک کردیئے گئے ، جس کو ان پر اللہ نے مسلسل سات داتوں اور آٹھ ونوں تک قہر کے ساتھ سے اس کی خورت کو ساتھ کی کو سے کھڑ کی کو سے دینی کی کو سے کھڑ کو سے کھڑ کی کو سے کو کھڑ کی کے کہ کی کو سے کھڑ کھڑ کی کھڑ کی کو سے کھڑ کھڑ کو سے کو کھڑ کی کو سے کو کھڑ کی کھڑ کی کو سے کھڑ کی کو سے کھڑ کے کہ کو کھڑ کی کو سے کھڑ کی کو کھڑ کی کھڑ کی کو کھڑ کی کو کھڑ کو کو کو کو کر کو کھڑ کے کو کھڑ کی کو کھڑ کو کھڑ کو کھڑ کو کھڑ کی کو کھڑ کی کو کھڑ کی کو کو کھڑ کو کھڑ کو کھڑ کو کھڑ کی کو کھڑ کو کھڑ کو کھڑ کو کھڑ کو کھڑ کی کو کھڑ کے کھڑ کو کھڑ کو کھڑ کے کھڑ کو کھڑ کے کھڑ کی کھڑ کی کو کھڑ کی کھڑ کو کھڑ کو کھڑ کو کھڑ کو کھڑ کے کھڑ کو کھڑ کو کو کھڑ کو کھڑ کے کھڑ کے کو کھڑ کو کو کو کھڑ کو کھڑ کی کو کھڑ کے

مسط کر دیا اس کی ابتداء چېارشنبه کی صبح ہے ہوئی جب کہ ماہ شوال کے نتم ہونے میں آٹھ روز ہ تی تھے،اور بیہ واقعہ موسم سر ہ کے آخر میں پیش آیا (نشلسل میں) داغنے والے کے فعل کے ساتھ تشبید دی گئے ہے، مرض پڑمل تکتی (داغنے کاممل) کے باربار کرنے کی وجہ ہے تا آئکہ مادؤ مرض ختم ہو جائے توتم ،لوگول کود مکھتے کہووز مین پر ہلاک ہوکر گری ہوئی کھوکھی تھجور کے تنے بیں سوکیا تم کوان میں سے کوئی ہی ہوانظر آتا ہے؟ باقیدٍ، نَفْسٌ مقدر کی صفت ہے یا، تا، مبالغہ کے لئے ہے بینی باقیدہٍ مجمعنی باق نہیں ، اور فرعون نے اوراس کے تبعین نے ، اورایک قراءت میں قَبِلَهٔ کے بجائے قَبْلَهٔ ہے قاف کے فتحہ اور ہوء کے سکون کے ساتھ ، یعنی وہ لوگ جو کا فرامتوں میں سے پہلے گزر چکے ہیں ، اوراکٹی ہوئی کہتی کے خطا کاروں نے اور وہ قوم بوط کی ہتی والے تھے تبھی خط تمیں کیں اور اسپنے رب کے رسول کی نافر مانی کی تعنی لوط عَالطِحَلاَ وَالنَّاکِلاَ وغیرہ کی ، تو ہم نے انہیں (بھی) زبر دست گرفت میں ے بیا رَابِیَةٌ شدت میں دوسروں ہے بڑھی ہوئی، جب یانی میں طغیانی آگئی لینی طوفان کے زوندمیں جب یانی ہر چیز پر چڑھ گی، تو ہم نے تم کو یعنی تمہارے آباء کو، جب تم ان کی پشتوں میں تھے، ششتی میں جس کونوح علاقتلائے نایا تھ ، چڑھالیا اور اور کا فروں کو ہلاک کرنا ہے تنہارے لئے نصیحت بنادیں اور تا کہ یا در کھنے والے کان جب اس کوسنیں توی در تھیں کہل جب صور میں مخلوق کے درمیان فیصلے کے لئے ایک پھونک پھونک جائے گی اور مینظئہ ٹانیہ ہوگا اور زمین اور پہاڑ اٹھا لئے ہو کیں گے اور ایک ہی جائے میں ریز ہ ریز ہ کردیئے جائیں گے پس اس دن واقع ہونے والی واقع ہوجائے گی (لیعنی) قیامت ہریا ہوجائے گ ، اور آسان مچھٹ پڑے گا اور اس دن وہ بالکل یودا ہوجائے گا ، اور فرشتے اس کے کناروں پر ہوں گے (یعنی) آسان کے کن روں پر اوراس دن تیرے رب کے عرش کوآٹھ فرشتے اٹھائے ہوں گے لینی ملائکہ ندکورین (آٹھ ہوں گے) یامہ نکہ کی آٹھ صفیں ہوں گی اس دنتم سب صاب کے لئے بیش کئے جاؤگے اورتمہاراکوئی راز پوشیدہ نہیں رہے گا یس خصصی تااور یاء کے س تھ ہے سوجس تخف کا اعمال نامہاس کے داہنے ہاتھ میں دیا جائے گا تو وہ اس سے خوش ہوکرا پینے اہل سے مخاطب ہوکر کہے گا نومیرااعمال نامه پڑھو هَاؤه اور اِقرَءُ وَا نے حِکَابِيَهُ مِين تنازع کيا، جَھے تو يقين تھا كه جھے ميراحسب ملناہے پس وہ ايك پندیدہ عیش میں اور بلند دبالا جنت میں ہوگا،جس کے پھل قریب ہوں گے جن کو کھڑے ہونے والا اور بینے والا اور لیننے والا ے صل کر سکے گا ، اور اس سے کہا جائے گا ، مزے سے کھاؤ ، ہیوا پنے ان اعمال کے بدلے میں جوتم نے گذشتہ زیانہ میں و نیامیں کئے ، کیکن جسے اس کے اعمال کی کتاب اس کے بائیں ہاتھ میں دی جائے گی تو وہ کھے گا: کاش مجھے میری کتاب دی جی نہ جاتی ! یا تنبیہ کے لئے ہے اور کاش میں نہ جانتا کہ میراحساب کیسا ہے کاش دنیا ہی میں موت میرا کا متمام کردیتی یعنی موت میری حیات کو(اس طرح)منقطع کردیتی که دوباره نها تھایا جاتا، میرے مال نے بھی مجھے کچھ فائدہ نه دیا اور میرا جاہ لیعنی قوت اور ججت بھی نقل کے اتباع میں باقی رہتی ہے اور ان میں ہے بعض نے حالت وصل میں حذف کیا ہے (حکم ہوگا) اسے پکڑلو یہ جہنم کے

- ﴿ (مَزَمُ بِبَلِشَهِ) ٢

گرانوں کو خطاب ہے چھراس کوطوق بیبناوو لینی اس کے دونوں ہاتھ گردن کے ساتھ طوق میں جکڑ دو <u>چھر دوزخ</u> کی جنتی ہوئی آ گ میں اس کو داخل کردو؛ پھراہے الی زنجیروں میں کہ جس کی درازی فرشتوں کے ہاتھ سے ستر ہاتھ ہے لیعنی آ گ میں واخل کرنے کے بعداس کوجکڑ ووءاور ف اء ظرف مقدم سے تعل کے تعلق کو ما تع ہے، بے شک بداللہ عظمت والے پرایمان ندر کھتا تھا ورمسکین کوکھانا کھلانے کی ترغیب نہیں ویتا تھا، پس آج اس کا نہ کوئی عزیز ہے کہ بیاس سے فائدہ اٹھائے اور نہ بیپ کے سوا کوئی کھانا، یعنی اہل دوزخ کا پیپ یا جہنم کا درخت (تھوہڑ) جسے گنہگاروں کا فروں کے سواکوئی نہیں کھائے گا۔

جَعِيق تَرَكِيكِ لِيسَهُ الْحِقَالِينَ الْعَالَمَ الْعَالَمَ الْعَلَيْمِ الْعِلْمُ الْعَلَيْمِ الْعِلْمُ الْعَلَيْمِ الْعِلْمُ الْعِلْمُ الْعِلْمُ الْعِلْمُ الْعِلْمُ الْعِلْمُ الْعِلْمِ الْعِلْمُ الْعِلْمُ الْعِلْمُ الْعِلْمُ الْعِلْمُ الْعِلْمُ الْعِلْمُ الْعِلْمُ الْعَلِيمِ الْعِلْمُ الْعِلْمُ الْعَلَيْمِ الْعِلْمُ لِلْعِلْمُ الْعِلْ

فَيْكُولْكُنى: أَلْحَافَاتُهُ، القيامة ووساعت جس كاوتوع واجب ولازم ب، يدحق الشيّ ساسم فاعل بـ فَيْكُولْنَى : أَلْحَاقَاةً، أَلْقيامَة موصوف محذوف كي صفت بجبيها كمفسر علام في اشاره كياب-فَيْوَلِّي ؛ مَا الْحَاقَةُ استفهم كِطريقه بربيان كرن عكامقصداس كي عظمت شان كوظام ركرنا ج فَيْكُولَنَّى: ٱلْمَحَاقَّلَةُ مَا الْمَحَاقَّلَةُ ، ٱلْحَاقَّلَةُ مبتداء اول إور مَا مبتداء الى الْمَالَقَةُ مبتدا عانى كَ خبر مِ مبتداء الى ا بی خبرے مل کر مبتدا واول کی خبر ہے۔

سَيْخُواك، خبر جب جمله موتى بيتوعا ئدكامونا ضروري موتاب؟

جَوْلُ بْنِعْ: الرمبتداء كابلفظه اعاده كردياجات توبيعائد كقائم مقام موجاتا --

فِيُولِكُ ؛ وَمَا أَذْرَاكَ ، مَا مبتداء بِ اوراس كاما بعد يعنى أَذْرَاك اليخ مفعول كَ اور مَا الْحَاقَة باءمبتداء خبر جمله بوكر مفعول

وَيُولِن ؛ لِأَنَّهَا تَفْرَعُ القلوب يقامت كوالقارع كني وجرتهميد كابيان ب-

فَيُولِنَى ؛ حُسُومًا اس كردومعنى بين (جزيكاف ذالنا ﴿ لَكَا تَارَ مُسْلَسَلَ ، مِعنى واغني كُسْسَلَ كاعتبارت ہوں گئے، بعنی جس طرح داغنے والا ماد ہُ مرض ختم ہوئے تک داغٹار ہتاہے،ای طرح وہ ہوامسلسل چکتی رہی ، سَحامیٹ واغنے والا۔ فِيُولِكُ ؛ الكيّ ، كوى يَكُوى (ض) كِيّاء واغنا ألْمِكُواةُ واغنى آلد، الكوارووين كايال كتب بير-

فِيُولِكَى: المورَ تَفِكَاتُ اسم فاعل جعم مؤنث، واحد مُؤتفِكة (التعال) إيْتِفَاك مصدرب ماده إفَّكُ الني بون والى، يلت والی،مرادحضرت لوط عَلا ﷺ کَا الله کی بستیال ہیں جو بحرمر دار کے ساحل پرآ بادتھیں،اوران کی تخت گاہ (پایہ تخت) سذ وم یا سندوم

ياسدوم تحمار (لغات الفرآن)

قِوْلَى ؛ ذات المخطاء ال اضافه كامقصدية تانا بك المخاطئة اسم فاعل نبعت ك لئ بصياك لابن (دوده يحي والا) تامرٌ (تمریجینے وال) اس لئے کہ فعل خطا کارنہیں ہوتا بلکہ صاحب فعل خطا کار ہوتا ہے۔

قِعُولِ آنَى ؛ رَامِيَةً واصدموَنت بمعنى زائده، رُبُولٌ سے ماخوذ ہے جس کے معنی بڑھنے اور زائد ہونے کے بیں ای سے رَبُولُ ہے نیے کو کہتے ہیں۔

قِيَّوُلِيَّ : هذه الفِعْلَة بِهِ نَسْجِعَلَهَا كَامْمِير كَمرْحَ كابيان ہے فعلة اى صَنْعَةُ اوربِّتَصْ حَفرات نے هَا صَمِير كامر جَع سفينة كوقرارد ياہے۔

فَيْ وَلَهَى : كَتَابِيَةُ يِواصل مِين كِتَابِي بِواس برهاءِ سَتَدواظ موكن ، تاكدياء كافته ظامر موجائد

فَيُولِنَّهُ ؛ تسنازَع فيه هَاؤُمُ اور وَاقرَءُ وْ١، كتابِية من دونو ل نعلوس نے نزاع كيا بعل نانى كومل دے ديااوراول كے لئے ضمير لے آئے ، مگر فضلہ ہونے كى وجہ سے حذف كرديا۔

فَيْوَلْكُونَ ؛ مَوْضيَّةً ، واضيَّة كَنْفير موضية ع كركاشاره كرديا كداسم فاعل بمعنى اسم مفعول إلى الماسم فاعل بمعنى اسم مفعول إلى الماسم فاعل بمعنى الم

ێٙڣؠٚڔؙۅؘؿؿ*ڹ*ڿ

الارض كہا گياہے، دومرے نفخہ کو نفحہ ابعث كها كياہے، بعض رواتيوں ميں جود انفخوں سے پہلے ایک تيسر في نفحہ كاؤ كرہے جس كونفيہ فزع کہا گیا ہے ،تو مجموعہ روایات ونصوص میں غور کرنے ہے معلوم ہوتا ہے کہ ویبلوافخہ ہی ہے اس کوابتدا وافخہ فزع کہا گیا ہے اور ا نتها میں وہی تنخد صعق ہوجائے گا۔ (معارف، مظہری)

وَيهْ حِمِلُ عَرْشُ رَبِّكَ فَوْ فَهُمْ يَوْمَندٍ تُمبية الركونُ كَا أَثْرًا إِن كَالْتُرَنَّ الله التَّيْلُ وتين كَ زير عنوان كذر يكن ب، ز برنظر آیت متشابهات میں ہے ہے جس کے معنی متعین کرنا مشکل ہیں ہم نہ بیابان سکتے ہیں کہ عرش کی حقیقت کیا ہے اور نہ بیا جان سکتے ہیں کہ قیامت کے روزعرش کوآٹھ فیرشتوں کا ٹھانے کی کیا کیفیت ہوگی؟ کیکن یہ بات بہرحال قابل تصورنہیں، کہامند تعالیٰ عرش پر بیٹھے ہوئے ہوئے ،اور ذات ہاری کا جو تسور قرآن چیش کرتا ہے وہ بھی اس خیال کے سرنے سے مانع ہے کہ وہ جسم ، جہت اور مقام ہے منز وہستی کسی جگہ متمکن ہواور کوئی مخلوق اے اٹھائے ،اس لئے کھوج کرید کر کے اس کے معنی متعین کرنے ک کوشش کرنااینے آپ کو گمراہی کے خطرہ میں بہتنہ کرنا ہے،البتہ یہ بھے لین جاہئے کہ قرآن مجید میں ابتد کی حکومت اور فر مانروائی اور اس کے معاملات کا تصور دلائے کے لئے لوگوں کے سامنے وہی نقشہ پیش کیا گیا ہے جو دنیا میں باوشاہی کا نقشہ ہوتا ہے اور اس کے لئے وہی اصطاباصیں استعمال کی گئی ہیں جوانس نی زبانوں میں سلطنت اور اس کے مظام ولوازم کے لئے مستعمل ہیں ، کیونکمہ ان نی ذہن ای نقشہ اور انہیں اصطلاحات کی مدد ہے کسی حد تک کا نئات کی سلطانی کے معاملات کو مجھ سکتا ہے ، یہ سب کچھاصل حقیقت کوان نی فہم سے قریب ترکرنے کے ت ہے، اس کو بالکالفظی معنوں میں لین ورست نہیں ہے۔

فَلَا لا رائدةً **اُقْسِمُرِمَاتُبْصِرُونَ ﴾ س** المحلوقات و**مَالَاتُبْصِرُونَ ﴾ سنيا اي كُلّ سخلوق إنّهُ اي التّرا**ل لَقُولُ مَ سُولٍ كَرِيْمٍ أَهُ اى قالم رسانة عن الله شنخالة وتعالى وَمَاهُوبِقُولِ شَاعِرٌ قَلِيلًا مَّا تُؤْمِنُونَ ﴿ وَلَابِقُولِكَاهِنْ قَلِيْلًامَّاتَذُكُّرُونَ ﴾ سان، والياء في الصفيين وما رائدةً سُؤكدةٌ والمعلى انَّهُم اسْنُوا باشياءٍ يسيرة وتبدكُرُوها وسمّا اتي به النبي صدى الله عنيه وسلم مِن التحيّر والصنة والعفاف فلمُ تُغُن عبه شيئا م هو تَنْزِيْكُ مِنْ رَبِّ الْعَلَمِيْنَ * وَلُوتَقَوَّلَ اى اللَيْ عَلَيْنَا بَعْضَ الْأَقَاوِيْلِ أَبان قال عن مَالهُ سُلَهُ لَا خَذَنَا لَسَلَمَا مِنْهُ عَنَانَا بِالْيَمِينِ ﴿ مِنْهُ مِنْهُ مِنْهُ الْوَبِيْنَ اللَّهِ مِنْهُ عَنَا مِنْهُ عَنَا مِنْهُ عَنَا المُعْلَمِ وَهُو عَرَقَ مُنْصِلٌ به إذا القصع مات صاحِبُهُ فَمَا مِنْكُوْمِنْ أَحَدِ بُو اسُمُ ما ومن زائدةٌ لِتا كِيد النَّفي ومسكم خالٌ مِن احدِ عَنْهُ حَجِزِيْنَ ® سامعيُن حبرُ ما وحُمّه إن احدًا في سياق النفي سمعني الحمَّة وصميرُ عنه لنسي صدى الله عليه وسدم اي لا سَالِع له عنه من حيْثُ العناب **وَإِنَّهُ** اي الغُرار لَ**تَذَكِرَةٌ لِلْمُتَّقِيْنَ**؟ وَانَّالَنَعْلَمُ إِنَّ مِنْكُثَرِ اتِيهِ السَاسُ مُّكَذِّبِينَ ﴿ سَالَتُوانَ ومُصدَقِيلَ وَإِنَّهُ اي النَّوار لَحَسْرَةٌ عَلَى الكَفِرِينَ ﴿ إِذَا رَاوَا شواب المُصدِّفِين وعِفاب المُكدّبين ، وَإِنَّهُ اي الغُران لَحَقُّ الْيَقِينِ " اي لِمدنين حتى اليقين فُسَيِّحُ نرَّهُ باسم رائد كَيْكَ أَلْعَظِيْمِ ﴿

• ﴿ (فَرَمُ بِبُلْتَهِ] ≥ -

ترجيني على المحصم إن چزول كي جنهيل تم مخلوقات مين و يجية بوء فلا مين ألا زائده باور مخلوقات مين ہے جن کوتم نہیں و یکھتے ہو یعنی تمام مخلوقات کی کہ جینک ہیر (قر آن) بزر ً۔رسول کا قول ہے لیعنی اس نے اللہ کی جانب ے ایک پیغام رسال کی حیثیت ہے نقل کیا اور پیسی کا قول نہیں (افسوس) تمہیں بہت کم یقین ہے اور نہ کسی کا ہن کا قول ہے(افسوس) تم بہت کم نصیحت لےرہے ہو دونو الفعلوں میں تااور یا کے ساتھ ہے،اور، مُسا زائدہ ہےاورمعنی سے ہیں کہوہ باتوں پر بہت کم یقین رکھتے ہیں ،اوران کا آپ میں بھتا کی لائی ہوئی چیز وں میں ہے بعض پرایمان لا نامثلاً صدقہ وخیرات پراورصلەرتمی پراورز ناوغیرو ہے ہازر ہنے پر ،تو اس ہےان کوکوئی فائد دینہ ہوگا (بلکہ بیتو) رب العالمین کا اتارا ہوا کلام ہے اورا گرنبی ہم پرکوئی بھی بات گھڑ لیتا ہایں طور کہ جو بات ہم نے نہیں کبی ، بھاری طرف منسوب کر کے کہہ دیتا تو البیتہ ہم یقینا قوت اور قدرت کے ساتھ سزامیں پکڑ لیتے بھرہم اس کی شہدرگ کا ن دیتے لیعنی قلب کی رکیس کا ٹ دیتے ،اور وہ تین رکیس ہیں جو قلب ہے متصل ہیں، جب وہ رکیس کٹ جاتی ہیں تو وہ شخص مرجا تا ہے، پھرتم میں ہے کوئی بھی مجھے اس سے رو کنے والا نہ ہوگا آخد، مَا كااسم ہاور من تاكيدنى كے تئة زائدہ ہ، اور منكور، آخد سے حال سے اور حاجزين معنی مانعین، مَا کی خبر ہے اور ما نعیں کوجمع لایا گیاہے،اس نے کہ احدٌ نفی کے بخت داخل ہونے کی وجہ ہے جمع کے معنی میں ہےاور عَـنْـهُ کی ضمیر آپ میں نے نات کے طرف راجع ہے یعنی ہم کوا ہے مذاب دینے ہے کوئی چیز نہیں روک عمق ، یقینہ بیقر آن پر ہیز گاروں کے لئے نصیحت ہے ہم کو پوری طرح معلوم ہے کہتم میں ہےا لوگو! بعض لوگ قرآن کی تکنذیب کرنے والے ہیں اور بعض تضدیق کرنے والے اور ہے شک ہیہ قرآن (لیعنی اس کی تکندیب) کا فروں کے لئے حسرت ہے جب کہ بہلوگ تضدیق کرنے والوں کے اجر کواور تکمذیب کرنے والوں کے مذاب کو دیکھیں گے اور بے شک میہ قرآن لینی حق ہے، پس آپ اینے رب عظیم کی یا کی بیان کریں ، لفظ اسم زائد ہے۔

اس کلام کی نسبت آپ ﷺ کی اور جبرئیل کی طرف کرنا درست ہے۔

فَيُولِنَى : فَلِيْلًا، فَلِيْلًا دونوں مِكْمُ وصوف محذوف كى صفت ب اى ايمانًا فليلًا و ذِكرًا فليلًا.

قِوَلَيْنَ: نِيَاط القلب وه رگ جوقلب ي مصل موتى ب ال كوشه رك اور رك جان بهى كتب بين ال ك كنف ي يقينا موت واقع بوجاتى ب

فِيُولِكُمْ : وَجُمِعَ النَّ بِيالِكَ اللَّهِ عَلَيْ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ

مِينُوالَى، مِسنَ أَحَدِ، مَا كاسم إور حساجزين الى كن فريها مع وفر مين مطابقت فهين إلى التي كداسم واحد جبكه فر جع مر

جَوَّلُ فَيْ اَحَدُ نَكره تحت الله بونى وجه معنى من جمع ك بالبدااب وفى اعتراض بين رباد في المحت الله المحت معنى من جمع ك بالبدااب كوفى اعتراض بين رباد في المحتف مكذبين في وكن الله ك المعلف مكذبين

قَرِبُ ، حَق اليقين اس كَ تَفْير لِلْيَقِيْنِ عَرَكِ اشاره كرديا كه بياضافت صفت الى الموصوف ب-

تَفَيْهُ رُوتَثِينَ عُ

فَلا الْفَسِمُ بِمَا تُبْصِرُونَ وَمَا لَا تُبْصِرُونَ لِعَنْتُم إِن تَمَام چيزول ك جن كوتم دي عظي بوادرجن كوتم نه دي هي بوادرندد كيد سكت بريعن تمام چيزول ك تتم خواه ده مرئى بول ياغيرمرئى -

وَلَوْ تَفَوَّلَ عَلَيْنَا بَغُضَ الْآفَادِ فِلِ مُطلب بِيكُ بِي فِيْقِيْنَا كُوا بِي طرف ہے وہی میں کسی کی بیشی کا افتیار نہیں ہے،اور اگر وہ ایسا کر ہے تو ہم اس کو خت سزادی، بعض لوگوں نے اس آیت ہے بیہ فلط استدلال کیا ہے کہ جو محف بھی نبوت کا دعویٰ کر ہے، وہ کر ہے اس کی شدرگ فورا ندکا ف ڈالی جائے تو بیاس کے نبی ہونے کا ثبوت ہے؛ حالانکہ اس آیت میں جو بات کہی گئی ہے، وہ سے نبی فین فائدہ ہوں گئے نہ کہ جھوٹے مدعی نبوت کے بارے میں جو کہ مراسر فالم و گنا ہگارہیں۔

﴿ مُقَاتًا ﴾

مرعة المعالي ملية والنع والبرة وفيها لوعا

سُوْرَةُ الْمَعَارِجِ مَكِّيَّةٌ اربعٌ وَّارْبَعُوْنَ ايَةً.

سورہ معارج کی ہے، چوالیس آیتیں ہیں۔

بِسْ حِراللهِ الرَّحِ مُن الرَّحِ مِن الرَ لَهُ ذَافِعٌ ﴾ بُسو السَف رُبنُ الحَارِثِ قَالَ اللَّهُمِّ إِنْ كَانَ بِذَا بُو الْحِقِّ ، الاية ، قِبْنَ اللهِ مُتَصِلٌ بَوَاقع ذِي الْمَعَامِينَ ﴾ مَضَاعِدِ الملائِكَةِ وسي السّموَاتُ تَعْنَى إلنّاءِ واليّاء الْمَلْلِكَةُ وَالرُّوحُ حبريل اللّهِ الى مُهُلط المره مِنَ السَمَاءِ فِي يَوْمِ مُتعَلِقٌ بِمَحْذُوبِ أَى يَقَعُ العَذَابُ بِهِمْ فِي يَوْمِ القِيمَةِ كَانَ مِقْدَارُهُ خَمْسِيْنَ ٱلْفَ سَنَةٍ ﴿ بالسَّسَبَةِ الِّي الْكَافِر لِما يُلْقِي فِيْه مِنَ الشَّدائِدِ وامَّا المُؤمنُ فيكُوْنُ عليه أَحْفَ منْ صَلُوةٍ مَكْتُوبَةٍ يُصلِّيها في الدُّنْي كَما حَاءَ فِي الْحَدِيْثِ فَاصْلِرُ سِذَا قَبْلِ أَنْ يُؤْسِر بِالقَتَالِ صَ**بْرًاجَمِيْلُا**۞ اى لاَ فَزَع فِيهِ إِنَّهُ مُرْيَرُونَهُ اى العَدَابَ بَعِيْدًا ﴿ غَيْرَ وَاقِع قُرُنُولُهُ قُرِنُيًّا ﴿ وَاقِعًا لا سُحَالَةَ يَوْمَ تَكُونُ السَّمَاءُ سُتَعَلِق بِمَحَذُوبِ اى يَفَع كَ**الْمُهْلِ** ۚ كَذَائِب الفِطَّةِ وَلَكُونَ الْجِبَالُ كَالْحِهْنِ ۚ كَالصَّوْنِ فِي الجِفَّةِ والطَّيْرَان بِالرِّيُح وَلاَيْسَالُ حَمِيْمُ حَمِيْمًا أَنَّ قَريْبَ لَو شَيْعَالَ كُلُّ بِحَالِه يُبَصِّرُونَهُمْ يَبُصُرُ الاجمَّاءُ نَعُضُهُمْ بَعْضًا ويَتَعَارَفُونَ وَلا يَتَكَدُّمُونَ والبُّمُلَةُ مُسُتَانِعَةٌ يُوَدُّ الْمُجْرِمُ يَتَمَدُّى الكَاهِرُ لَوْ بمغسى أن يَفْتَدِي مِنْ عَذَابِ يَوْمِبِدْ مِنْسُر المِيم وفَتَحمَ بِبَنِيْهِ ﴿ وَصَاحِبَتِهِ زَوْجَتِه وَأَخِيْهِ ﴿ وَفَصِيلَتِهِ عَشِيرَتِه لِفَصْلِه مِنْهَا الَّٰتِيُّ تُكُونِيهِ ﴿ نَصْمُهُ وَكُنَّ فِي الْإَرْضِ جَمِيَّعًا ۚ تُكُوِّينِهِ ﴾ ذلك الإفتداءُ عَطْفٌ عَلَى يَفْتَدِي كَلَّا رَدُعٌ لِمَا يَوَدُه إِنَّهَا اى النَارَ لَظَى ﴿ اِسْمُ لِجَهَنَّمَ لِانَّهَا تَتَلَظَّى اى تَتَلَبَّبُ عَلى الكُفَّارِ فَتَوَّاعَةُ لِلشَّوٰى ۗ اللَّهُ وَيُ اللَّهُ وَيُوا اللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ وَيُ اللَّهُ وَيُ اللَّهُ وَيُ اللَّهُ وَيُ اللَّهُ وَيُ اللّ جَـمْهُ شَوَاةٍ وهِي جِلْدَةُ الرَّأْسِ تَ**ذُعُوَامَنَ أَذُبُرُوتُولِي** عَنِ الإيْمَانِ بِانُ تَقُولَ اِلَىّ اِلَى اِلَّيَ اَلَمَالَ فَالْوَعَى الْ اسُسَكَـة فِي وِعَـائِـهِ ولَم يُؤَدِّ حَقَّ اللَّهِ تَعَالَى مِنه الكَّالِّلْسَانَ خُولَقَ هَلُوْعًا ﴿ حَالٌ سُقَدْرَةٌ وَ تَفْسِيرُهُ إِذَامَسَّهُ الشَّرْجُزُوعَا ۚ وَقَٰتَ مَسَ الشَّرَ قَالَا مَسَّهُ الْخَيْرِمَنُوعَانَ وقَنت مَسَ الحير اي المال بحق اللهِ تَعالى

سنه الآالُمُصَلِيْنَ أَى المؤسن الَّذِيْنَ هُمْ عَلَى صَلَاتِهِ مُ وَالِّذِيْنَ فَي اَمُوالِهِ مُحَقَّ مَعْ لُومُ وَالَّذِيْنَ فَي اَمُوالِهِ مُحَقَّ مَعْ لُومُ وَالَّذِيْنَ فَي السُوال وَبُحَرُمُ وَالَّذِيْنَ يُصَدِّقُونَ بِيَوْمِ الدِيْنِ وَالسُوال وَبُحَرُمُ وَالْذِيْنَ يُصَدِّقُونَ بِيَوْمِ الدِيْنِ وَالسُوال وَبُحَرُمُ وَالْمَذِيْنَ وَالْمَالِيَةِ فَي السُوال وَبُحَرُمُ وَاللَّذِيْنَ هُمُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهُ وَالْمَعْ وَالْمَا اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ وَالْمَا اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَاللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَاللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَاللَّهُ وَالْ اللَّهُ وَاللَّهُ وَا الللَّهُ وَالَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَال

ت المجامي في شروع كرتابول القدك من جوبز امبر بان نهايت رهم والاب ايك سوال كرنے والے ليني ايك ما نگنے والے نے کا فرل پر ایسےاںند کی طرف سے واقع ہوئے والا عذاب مانگا جس کواںند کی طرف سے کوئی وقع کرنے والانہیں وہ نضر بن حارث ہاں نے کہااے اللہ!اً مربیق ہے (الآیة) مِنَ اللّٰه، واقع ہے متعلق ہے کہ جوملا نکہ کے لئے میر حیول والا ہے اوروہ آسان ہے جس کی طرف فرشنے اورروح لیعنی جرئیل پڑھتے ہیں (تُسفَسرٌ کے) تااور یا کے ساتھ لیعنی اس کے تکم کے نازل ہونے کی جگہ کہ وہ آسان ہے ایسے دن میں (فسی یوم) محذ وف کے متعلق ہے یعنی ان پر قیامت کے دن میں عذاب واقع ہو کا اوراس دن کی مقدار کافر کی نسبت ہے تکالیف کے اس دن میں لاحق ہونے کی وجہ ہے بچیاس بزارسال کے برابر ہوگی رہامومن تو اس کے لئے ایک فرض نماز کے دفت ہے بھی تم مدت ہوگی جس کو وہ دنیا میں پڑھا کرتا تھا، جیسا کہ حدیث میں آیا ہے، سوآپ بلون کاری سر کیجئے ریچکم جہاد کے تکم کے نازل ہونے سے پہلے کا ہے، یعنی جس میں جزئ فزئ (شکوہ وشکایت نہ ہو) ب شک پیلوگ اس عذاب کو بعید بعنی ناممکن الوقوع مجھ رہے ہیں ، اور ہم اس کوقریب بعنی لامحالہ عنقریب واقع ہونے والا سمجھ رہے ہیں (بیمذاب اس دن) واقع ہوگا جس دن آسان پلھلی ہوئی جاندی کے مانند ہوجائے گااور پباڑ ملکے اور ہوا کے ذریعہ اڑنے میں اون کے مانند ہو جائیں گے اور ہر شخص کے اپنے حالات میں مبتل ہونے کی وجہ سے دوست دوست کی (بھی) ہات نہ پو چھے گا یعنی قرابت دارقر ابت دار کی بات نہ پو چھے گا جا۔ نکہ ایک دوسرے کو دکھا دیئے جا نمیں گے یعنی دوست آپس میں ایک دوسرے کود کھے لیں گے اور ایک دوسرے کو پہیان بھی لیں گے ، گربات نہ کریں گے (یُبَطُّو وَ نَهُمْ) جمله مستانف ہے مجرم جات گایعنی کا فرتمنا کرے گا کہ اس کے مذاب کے بدلے فدیہ میں (یکٹو مبلند) میم کے فتحہ اور کسرہ کے ساتھ اپنے بیٹول کواورا پنی بیوی کواورا پنے بھائی کواورا پنے کنے کو، کنے کوفصیلہ اس لئے کہا جاتا ہے کہ فرد کنے بی سے جدا ہوتا ہے جواس کو بناہ دیتے ہیں یعنی اپنے ساتھ مدلیتا ہے اور روے زمین کےسب لوگول کو دینا جا ہے گا تا کہ بیہ فیدید دینا اس کونجات دلا دے اس کا عطف ≤ (مَنَزُم بِسَلشَ لِيَ

یفندی پر ہے مگر ہر انسانہ ہوگا بیاس کی تمنا کارد ہے یقیناً وہ شعلہ والی آگ ہے لَطنی جہنم کا نام ہے اس لئے کہ وہ شعلہ زن ہوگی ، یعنی کفار پر شعلہ زن ہوگی جوسر کی کھال کو کھنچنے والی جو گی شبوی ، شبو اقا کی جمع ہے اور وہ سرکی کھال ہے ، وہ ہراس مخص کو یکارے گی جوائیان سے پیٹے پھیرتا ہے اور سرتالی کرتا ہے وہ کہے گی (اِلَسیّ اِلَمیّ) میری طرف آؤ!میری طرف آؤ!،اور مال جمع َر کے سنجال کررکھتا ہے (ذخیرہ کرتا ہے) لیعنی اس کوتجوری میں بند کر کے رکھتا ہےاوراس میں ہے ایند کاحق اوانہیں کرتا انسان مُ ہمت پیدا کیا گیاہے بیرحال مقدرہ ہاور (هلوع) کی تغییر (إذا مَسَّهُ النَّسُّ جَرُوعًا) ہے جباس کو تکلیف تجتی ہے ق تکلیف احق ہونے کے وقت جزع فزع (واویلا) کرنے لگتا ہے اور جب اس کو فارغ البالی حاصل ہوتی ہے یعنی مال حاصل ہوتا ہے تو اس مال میں حقوق القدہے بخیلی کرنے مگتا ہے مگر وہ نمازی لیعنی مومن جوا بنی نماز وں کی پابندی کرتے ہیں اور ان کے مالول میں سوالی اورغیر سوالی کے لئے حق ہے اور وہ زکو ۃ ہے جمروم وہ تخف ہے جوسوال سے اجتناب کرے اور وہ جوجزاء کے دن کا عقادر کھتے ہیں اورائے پر وردگار کے عذاب ہے ڈرنے والے ہیں واقعی ان کے رب کا عذاب بے خوف ہونے کی چیز نہیں اور جوا بنی شرمگا ہوں کی حفاظت کرنے والے ہیں ، مگر ہیو یوں ہے اور باند بوں سے کیونکہ ان پر کوئی ملامت نہیں ، ہال جوان کے علاوہ کا طلبگار ہوا لیے ہی حلال ہے حرام کی طرف تنج وز کرنے والے ہیں اور جواپنی اما نتوں کا اور اپنے قول وقر ار کا پاس رکھتے ہیں جس میں ان ہے مؤاخذہ ہواورا کی قراءت میں (اَمَامَتُهُمْ) مفرد ہے یعنی جس چیز پران کوامین بنایا جائے خواہ وہ امرِ دین ہے ہو یا امر دنیا ہے اور وہ لوگ جواپنی شہا دتوں کو تھیک تھیک ادا کرنے والے ہیں اور ایک قراءت میں شھا دات جمع کے صیغہ کے ساتھ ہے بیعنی گوا ہی ٹھیک ٹھیک ادا کرتے ہیں اور وہ لوگ جواپنی نماز وں کی ان کے اوقات میں ادا کرکے حفاظت ئرتے میں ایسے ہی لوگ جنت میں باعزت داخل ہوں گے۔

عَجِفِيق لِيَكِي لِيسَهُ الْحِلْقَالِينَ الْعَالَمُ الْعَالَمُ الْعَلَىٰ الْعَالَمُ الْعَلَىٰ الْعِلَىٰ الْعَلَىٰ الْعِلَىٰ الْعِلِيْ الْعَلَىٰ الْعِلَىٰ الْعِلَىٰ الْعِلَىٰ الْعِلَىٰ الْعِلَىٰ الْعَلَىٰ الْعِلَىٰ الْعِلْمِ الْعِلْمُ الْعِلْمُ الْعِلَىٰ الْعِلَىٰ الْعِلَىٰ الْعِلْمُ عَلَىٰ الْعِلَىٰ الْعِلَىٰ الْعِلَىٰ الْعِلَىٰ الْعِلَىٰ الْعِلْمُ الْعِلْمُ الْعِلَىٰ الْعِلْمُ الْعِلْمُ الْعِلَىٰ الْعِلْمُ الْعِلْمُ عَلَىٰ الْعِلْمُ الْعِلَىٰ الْعِلَىٰ الْعِلَىٰ الْعِلْعِلَىٰ الْعِلْمُ الْع

فِيُولَكُنَّ ؛ لِلْكَافِرِينَ لامْتَعْلِيلَ كَابِحِي بُوسَلَّابِ اى نازِلٌ مِنْ اجل الكافرين يابَمَعْي عَلَى بِ اى واقع على

فِيُولِكَ ؛ لَيْسَ لَهُ دَافِعٌ باتويه عذاب كي صفت الى باعذاب سه حال به ياجمله متانفه به الرجمله متانفه بو كاتوعامل و معمول کے درمیان جملہ معتر ضہ ہوگا۔

فِوْلِكَ ؛ مَعَارِح، معرج كَ جَع بِمعنى سُرحى-

فِيَوْلِنَى : جبرنيل اس من اشاره بكه والمروح يعطف فاص على العام كتبيل عبدال لئ كدجريل عليقلافظ التاك ملا تکہ میں شامل ہیں۔

قِوْلَ : إلى مَهْبَط أَمْرِه بِالْكِ سوال مقدر كاجواب --

• ﴿ الْمُؤْمُ بِبُلْشَهُ }

مین وال ؛ آیت ہے تفہوم ہوتا ہے کہ اللہ تعالیٰ ایک خاص مقام میں ہیں اور ملائکہ اس کی طرف صعود کرتے ہیں حال نکہ اللہ تعالیٰ جسم ومکان سے بری اور یاک ہے۔

جَوُّلَ بَيْنَ الله كام مذف مضاف كے ساتھ ہو اى إلى مَحَلِ هُبُوطِ امر ، يعنى الله كامر كار نے كى جُك كلم ف ج سے بين نه كه الله كي طرف .

قِوَلْكُ : إِنَّهُمْ يَرَوْنَهُ بَعِيْدُا، اي يعتقدونه محالًا.

شَوْلَ الله الله الله مقصد مير كم جع كالعين ب

سَيُوالْ: هَا صَمِيرِكَا مرجع مفسرعلام نے الغار كوقر ارديا بوالانك الغار سابق مل كبيل فدكور بيس بهد جي الغار الغذاب الغار كالفظ اگر چرسابق ميں صراحة فذكور بيس بر كر الْعَذَاب سے مفہوم ہے۔

فَيْوَلِّنَى ، لَظنى ، إِنَّ كَخِراول اور نَزًّاعَةٌ خِرثاني بـ-

فِيُولِكُما ؛ لَظنى عليت اورتانيك كى وجدس غير منصرف ب-

فَيْوَلِّنَى : خُلِقَ هَلُوعًا بيحال مقدره باسك كما نسان بوقت بيدائش اس صفت سے متصف بيس موتا۔

لِفَيْ أَرُولَاثَ اللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ الل

شانِ نزول:

فِی يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ خَمْسِیْنَ اَلْفَ سَلَةٍ به جمله على محدوف ہے متعلق ہے ای يَقَعُ فِي يَوْمِ كَانَ مطلب به ہے کہ بیعذاب جس کا ذکراو پر آیا ہے کا فرول پرضر دروا قع ہوکررہے گا،اس کا وقوع اس روز ہوگا کہ جس کی مدت بچیاس بزارسال ہو کی حضرت ابوسعید خدری دَفِحَانتهٔ تَعَاليَّ ہے روایت ہے کہ صحابہ کرام دَفِحَالِیْکَ اَلْطَنْکَا نِے رسول الله بِالْقَالِیْنَا ہے اس ون کے متعلق سوال کیا جس کی مقدار پچاس ہزار سال ہوگی کہ بیدون کتنا دراز ہوگا؟ تو آنخضرت بیلین کا ایک فقیم ہے اس ذات کی جس کے قبضے میں میری جان ہے کہ بیدن مومن پرایک فرض نماز ادا کرنے کے وقت ہے بھی کم ہوگا، بیلطور تمثیل کے مومنین پراس وقت کے ملاہونے کا بیان ہے حضرت ابو ہر ریرہ دُفِعَالْنَدُهُ تَعَالَیٰ کی ایک روایت میں ہے کہ قیامت کا دن ظہراورعصر کے درمیانی وقت ہے بھی کم ہوگا۔

قيامت كادن ايك ہزارسال كاہوگايا پچياس ہزارسال:

مِيْهُ وَالْنَ ؛ ال آيت ميں روز قيامت كى مقدار بچياس بزار سال بنائي كئي ہے اور سور وَ تنزيل السجد و كي آيت ميں ايك بزار سال كا ذ کرہے، بظاہران دونوں آپتوں کے مضمون میں تعارض اور تضاد ہے؟

جَوُّلُنِيْ: جوابِ كا حاصل يہ ہے كہ يہ مدت مختلف لوگوں كے اعتبارے ہے كئى كے لئے بچاس بزارسال كى اوركسى كے لئے ا یک بزارسال کی اورکسی کے لئے ایک فرض نماز کے وقت کی مقدار ہوگی ،اور وفت کی درازی عذاب کی شدت وخفت کے اعتبار

إِنَّ الْإِنْسَانَ خُلِقَ هَلُوعًا، هَلُوعٌ كَلِفَظَى معنى بين حريص، بيصراء كم بمت، حضرت ابن عباس تَعْمَلْكُ تَعَالَكُ كُا نے فرمایا هَلُوع وه چھس ہے جو کہ مال حرام کی حرص میں مبتلا ہو، یہاں پیشبہ نہ ہونا جا ہے کہ جب انسان کو پیدا ہی اس حال میں کیا گیا ہے تو پھراس کا کیا قصور؟ وہ مجرم کیوں قرار دیا گیا؟ وجہ رہے کہ مراداس سے انسانی فطرت اور جبلت میں رکھی ہوئی استعدا داور ماد ہ ہےتو حق تعالٰی نے انسان میں ہرخیر وشر کاماد ہ اوراستعدا دبھی رکھی ہےاورشر وفساد کی بھی اوراس کوعقل وہوش بھی عطا فر مائے ہیں اوراپنی کتابوں اور رسولوں کے ذریعیہ ہرا یک کا انجام بھی بتادیا ،اب انسان کواختیار ہے کہ دونو ل قسم کی صلاحیتوں میں ہے جس کو جا ہے بروئے کار لائے اور جس کو جا ہے نہ لائے ؛ لہٰذا ہیے جو پچھ بھی کرے گا اپنے اختیار ے کرے گااوراس اختیار کی بناء پراس کو جزایا سزا ملے گی۔

فَمَالِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْ إِقِبَلَكَ نَحُوكَ مُهْطِعِيْنَ ﴿ خَالْ اى مُديمِي النَّطْرِ عَنِ الْيَمِيْنِ وَعَنِ الشِّمَالِ مِنكَ عِرْيَيْنَ ®خَالَ أَيْضًا اي جَمَاعَاتٍ حَلَقًا حَلَقًا يَقُولُونَ اِسْبَهُزاءٌ بالمُؤْمِنِيُنَ لَئِنُ دَحَلَ سِوُلاءِ الجَنَةَ لَنَدُحُلْنَهَا قَبُلَهُمْ قَالَ تَعالَى أَيُطْمَعُكُلُ امْرِئُ مِّنْهُمْ اَنْ يُذَخَلَجَنَّةَ نَعِيمٍ ﴿ كَلَّا ۚ رَدُعٌ لَهُمْ عَنْ طَمْعِهِمْ فِي الْجَنَّةِ <u> إِنَّا خَلَقَنْهُمْ</u> كَغَيرِهِمُ مِ**مَّايَعُلَمُوْنَ** وَسِنْ نُطَعِ فلا يُطْمَعُ بدلِكَ فِي الحَنَّةِ وإِنَّمَا يُطْمَعُ فيها بالتَّقُوي فَلَآ کوروں کو کیا ہوا کہ تباری طرف واکی اور باکس اور باکس طرف سے گھور تہوئے ہوئے ہمائتیں ہن ہن آر ہے ہیں ، مُف طعین ، کَفروں سے حال ہے عزین بھی کفروں سے حال ہے ، لینی ہماعت اور طلتے بن بنا کرموشین سے استہدا ، کرتے ہوئے کہتے ہیں کہ اگر بیہ ہنتے ہیں ، اغل ہوں ئے وہم یقینان سے پہلے ہنت ہیں واغل ہوں کے ، کیاان ہی کا بہر نہر موگا ہواں کی دخول جنت کی روید ہے ہم بہر نہر موگا ہواں کی دخول جنت کی کر دید ہم ہم بہر نہر موگا ہواں کی دخول جنت کی کر دید ہم ہم بہر نہر موگا ہواں کی دخول جنت کی کر دید ہم ہم بہر ان اور دیل کی دنداس چیز سے پیدا کی ہے جوان کو معلوم ہے لیکن نظفوں سے ، ابداراس بنا پر جنت کی طبع نہیں کر ہیں تھر میں جوان کو معلوم ہے لیکن نظفوں سے ، ابداراس بنا پر جنت کی طبع نہیں کر ہیں ہوں اور ہم اس پر قادر ہیں کہ ان کی گھر این جگر ہیں قبم کھا تا ہوں لا زاکدہ ہے شمل وقر اور ہم اس کا م سے ما ہز نہیں ہیں تو رہ بیل کہ ان کو ای شخص بیا گیا ہم الی ہوں ہے کہ پر سی کہ کہ ان کے کہ ان کو ای شخص کی پر سی کہ کہ ان کو ای شخص کی پر سی کہ کہ ان کو ای سی کہ کہ کونصب کیا گی ہو گھر ہوں گی راور کا ان پر ذات چھائی ہوگی ہوں گی راور کا ان پر ذات چھائی ہوگی ہوں گی راور کا ان ہو دور کی گیا تھی (ذلک) مبتدا ہے ہواراس کا مورد خبر ہے ، اور ہم اور مراداس سے قیامت کا دن ہے ۔ ان کا وہ دن جس کا ان سے وعدہ کی گیا تھی (ذلک) مبتدا ہے ہواراس کا مورد خبر ہو ، اور مراداس سے قیامت کا دن ہے۔

عَجِفِيق تَرْكِيكِ لِيسَهُيلُ تَفْسِيلُ لَفْسِيلُ فَوْالِل

فَيُولِ ﴾ فَمَالِ اللَّذِيْنَ كَفَرُوا لام جاره ، صحف امام كرسم الخط كى اتباع مين اللَّلَكَ ها أَياب، مَا مبتداء ب اور اللَّذِين كَفَرُوْا اسْ كَرْبُر بِ اى فَأَيُّ شَى حَمَلَهُ مْ عَلَى نظرهم إلَيْكَ.

فِيُولِلَنَى : مهطعين اى مسرعين. الهطَاع عاسم فاعل جمع مذكر سرجهاك نظر جمائة تيزى دور في والي-فِيُولِلَنَى : عِزِيْنَ بِهِ عزّة كى جمع إور عِزَّةٌ بمعنى جماعت ب-

< (مَزَم پِبَلشَرنِ > •

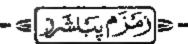
قِكُولَى : إِنَّا لَقَادِرُوْنَ بِمُسْمُوقِيْنَ بِيهِم عليه الإلهِ . قِكُولَى : وَمَا نَحْنُ بِمَسْمُوقِيْنَ بِيهُم عليه كاجزہ۔ قِكُولَى : يَلْقَوْا، يُلاَقُوا كَافْسِر يَلْقَوْا كركا شاره كرديا كه باب مفاعله اپى اصل برنہيں ہے۔ قِكُولَى : يَوْمَ يَحْرُجُونَ بِي يَوْمَهُمُ الَّذِي سے بدل البحض ہے۔ قِكُولِي : ذلك اليوم مبتداء اور الَّذِيْن الح خبرہے۔

تَفْسِيرُ وَتَشِينَ عَيْ

فَ مَالِ اللَّذِينَ كُفَرُوْ الْفِلِكَ مُفْطِعِبْنَ يَآبِ عِنْ الْمَالَ الْمَالِدِنَ كُوهُ الْمِينَ كُولُ الْمَالِقُ الْمَالِقُ الْمَالِقُ الْمَالِقُ الْمَالِقُ الْمَالِقُ الْمَالِقُ الْمَالِقُ الْمُلِكِمِ اللَّهِ عَلَى الْمَالِقُ الْمَالِقُ الْمَالِقُ الْمُلْكِمِ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى الللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى الللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى الللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى الللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى الْمُعْلِمُ اللْمُعْلِمُ اللَّهُ عَلَى الْمُعْلِمُ اللَّهُ عَلَى الْمُعْلِمُ اللَّهُ عَلَى الْمُعْلَى الْمُعْلِمُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللْمُعْلِمُ اللْمُعْلِمُ الْمُعْلِمُ الْمُعْلِمُ اللَّهُ عَلَى الْمُعْلِمُ الْمُعْلِمُ الْمُعْلِمُ اللَّهُ الْمُعْلِمُ الْمُعْلِمُ الْمُعْلِمُ الْمُعْلِمُ الْمُعْلِمُ الْمُعْلِمُ الْمُعْلِمُ اللْمُعْلِمُ الْمُعْلِمُ الْمُعْ

کلّا اِنّا خَلَقُلَاهِمِ مِمَّا یَعلَمُونَ مطلب بیرکہ جس مادہ سے بیہ بین اس لحاظ سے توسب انسان برابر ہیں اگروہ مادہ ہی انسان کے جنت میں جانا چاہئے ؛ لیکن معمولی عقل بھی بی فیصلہ انسان کے جنت میں جانا چاہئے ؛ لیکن معمولی عقل بھی بی فیصلہ کرنے کے لئے کا فی ہے کہ جنت کا استحقاق انسان کے مادہ تخلیق کی بناء پرنہیں ؛ بلکہ اس کے اوصاف کی بناء پر ہوتا ہے۔





مِرَةُ أُونِ مِلْتِدًا وَكُنَّا لِي عُشِرُكُ اللَّهِ وَاللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّا اللَّهُ اللَّهُ اللَّا اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ ا

سُورَةُ نُوحٍ مَكِيَّةُ ثَمَانِ أَوْ تِسْعُ وَعِشْرُونَ ايَةً. سورة نوح مَى ہے، اٹھائيس يانتيس آيتيں ہيں۔

يسمرانلوالرَّحْ مِن الْرَحِيْ مِن الْرَحِيْ مِن الْرَحِيْ مِن الْرَحِيْ مِن الْمُؤْمِّلِ اللهِ الْمُؤْمِّلِ اللهِ الْمُؤْمِّلِ اللهِ الْمُؤْمِّلِ اللهِ الْمُؤْمِّلِ اللهِ إنَ لَم يُؤمِنُوا عَكَابُ الْيُعُلِ مُؤلِمٌ في الدُّنيا والاخرةِ قَالَ لِفَوْمِ إِنِّ لَكُمُّ نَذِينٌ ثُنَ الْإِنْذَار آنِ اي بَنُ اَقُـوُلَ لَكُمْ ا**عْبُدُوااللَّهَ وَالنَّقُونَ ۗ وَالطِّيعُونِ ۚ يَخْفِي لَكُمُ مِنْ ذَانُونِكُمْ** سِنُ زَائِدَةٌ فَإِن الْإِسُلَامَ يُخْفَرُبه مَا قَبُله او تَبْعِيُضِيَّةٌ لِإِخْرَاجِ حُقُونِ الْعِبَادِ وَيُؤَيِّضِرُكُمْ بلا عَذَابِ إِلَى آجَلِ أَضَاحَيُّ أَجَلِ المَوْتِ إِنَّ آجَلَ اللهِ بِعَذَابِكُمُ إِنْ لِم تُؤْمِنُوا إِذَا جَاءَ لَا يُؤَكُّنْ لُوكُنْ تُمُونَ الْمَانَةُمُ قَالَ رَبِّ إِنَّ دَعَوْتُ قَوْمُ لَيُلَّا قَنَهَ اللَّهِ وَائِمُ سُتَصِلاً فَلَمْيَرِدُهُمْرِدُعَاءَكَ الْآفِرَالَا® عَنِ الإيْمَانِ وَالِنْكُلُمَادَعُونَّهُمُّ الْتُغْفِرَلَهُمْرَجَعَلُوَّا أَصَابِعَهُمْ فِي الْأَيْمَانِ وَالِنْكُلُمَادَعُونَّهُمُّ الْتُغُفِّرِلَهُمْرَجَعَلُوَّا أَصَابِعَهُمْ فِي الْإِيمَانِ وَالنِّكُلُمَادَعُونَّهُمُّ الْمُأْتِكُمُ الْمُأْسِدِةِ فَاللَّهُمْرِ لِعَلَّا يَسْمَعُوا كَلَامِى وَالسَّنَّخُشُوا يَبَيَابَهُمْ غَطُوا رُوْسَهُمْ بِهِ الِنَلَّا يَنظُرُونِي وَأَصَرُّواً عَلَى كُفُرِهِم وَاسْتَكَلَّرُوا عَنِ الإيْمَانِ الْسَيْكُبَارُاقَ ثُمَّ إِنْ دَعَوْتُهُمْ جِهَارًاقَ أَى بِاعْلاَءِ صَوْتِي ثُمَّ النَّكَ أَعْلَنْتُ لَهُمْ صَوْتِي وَ اَسْرَمْ ثُلَهُمْ الكَلاَمَ السَرَارَانَ فَقُلُتُ الْسَتَغَفِرُوارَيَّكُمْ مِنَ الشِرُكِ إِنَّهُ كَانَ غَفَّارًا فَ يُرْسِلِ السَّمَاءُ المَصَرَ وكُانُوا فَدْ مُنِعُوه عَلَيْكُمْ مِّذْ رَأَمَّا أَنَّ كَثِيرَ الدُّرُور قَيْمُدِدُكُمْ بِأَمْوَا لِي قَبَنِيْنَ وَيَجْعَلُ لَكُمْ جَنْتٍ بَسَاتِيْنَ وَيَجْعَلُ لَكُمُ إَنْهِرًا ﴿ جَارِيَةً مَالَكُمُ لَا تَرْجُونَ لِلْهِ وَقَامَ اللَّهِ إِيَّا كُمْ بِان تُؤسُوا <u>وَقَدْ خَلَقَكُمْ ٱطُوارًا® جَمْعُ طَوْرٍ وهو الحَالُ فَطَوْرًا نُطْفَةً وطَوْرًا عَلَقَةً اللي تَمامِ خَلْقِ الانسان والنَضُرُ في </u> حَـلْقِه يُوْجِبُ الْإِيْمَانَ بِخَالِقِهِ ٱلْمُرْتَرُوّا تَنْظُرُوا كَيْفَ حَلَقَ اللَّهُ سَبْعَ سَمَوْتٍ طِبَاقًا الله بعَضْهَ فَوَقَ بعُص وَّجَعَلَ الْقَمَرَفِيْهِنَّ اى في مَجْمُوْعِمِنَ الصَادِقِ بِالسَّمَاءِ الدُنيا ثُ**وْرًا وَّجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجَا** ﴿ مِصْبَاحًا مُضِيْئًا وهُو اقْوى مِنْ نُورِ القَمَرِ وَاللّٰهُ أَنْبُتَكُمْ خَلَقَكُمُ مِنْ الْأَرْضِ مَبَاتًا ﴿ إِذْ خَلَقَ آبَاكُمُ ادْم مِسُهَا ثُمَّرُيُعِينَكُكُمْ فِيْهَا مَقُهُورِينَ وَيُخْرِجُكُمُ لِلبَعْثِ اِنْحَرَاجًا ﴿ وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ بِسَاطًا ﴿ مَبُسُوطَةً لِتَسْلُكُواْ مِنْهَا سُبُلًا طُرُقَ • ﴿ الْمُنْزَمُ بِسَلِشَهُ إِ

عُ فِجَاجًا فَي وَاسِعَةً.

المعرفي المروع كرا بول القدك المست جو برامبر بان نهايت رهم و الاب، يقين بهم في نوح منظرا والنابي كوان كي قوم کی طرف پیٹیبر بنا کر بھیب کہاپی قوم کو ڈر ؤقبل اس کے کہ ان ہر و نیا وآخرت میں درد ناک ملذاب آئے اگر وہ ایمان شہ ، ب ، نو ل عليه النظر في ما يا المامير كي قوم البين تمهين صاف صاف قد رائه المروب باين طور كه بين تم سه كبن جوس كدامتد کی بندگ کر داورای ہے ڈرواورمیری بات مانو ووٹہ ہارے کنا ہوا کومعاف سرد ہے قامتن از اندو ہے بااشیدا سدم کے ذراجہ گناہ معاف ہوجات ہیں یا مسل سبعینے یہ ہے حقوق العباءُ وخارج کرنے کے لئے اورتم کو بار مذاب مہات دے گاموت کے مقررہ وفت تک یقیناتم پر اللہ کے مذاب کا معروجہ آب کا اُرتم یون ند ، نے قوموخر ند ہوکا اُرتم ای بات کوجون سے قوامیان ے آئے وہ الصاف الطلائے کہا اے میرے یہ روکار امیں نے اپنی تو مرکورات دن جمیشہ مسلس تیری طرف بادیا مکر میرے یوں کے سے بیاؤٹ ایمان سے اورزیاو دیما گئے گئے، میں کے آئیس دہب بھی تیمی کی بھٹی کے لئے باری و انہوں کے ایمی انگلیا ب ہے کا وں میں ڈال میں تا کہ میری بات نہ میں اورانہوں نے ہیٹر ہاوڑھ کے لیعنی کیٹروں ہے انہوں نے اپنے سروں كوچيني ميا تاكه فيحك نه ويلهجين، ورووا پيئه غريزا ث رجاورايون ك متاجه بين بزائليم مين خ انين بأواز بلند باويا ور پھر میں نے ان کواعلانے پھی تمجھا یا اور چیکے ہے بھی تہجی اور میں نے ان ہے کہا تھ اپنے رب سے شرک ہے معافی طاب مرو وه يقينا بزا انتشاء الاستاكم من سات بهاري بالسائد وروار بورش نتيج ها ورواه ك بارش سامح ومرور بياسكا القرامياري مال واواد و میں ضافہ رے گا ورتمہا رے نے بامات کا دے گا اور تمہارے ہے نہ یں جاری سردے تا مہیں کیا ہو کیا کہتم مقد کی مفلمت کے معتقد نہیں ہو، لیعنی ابتدے اپنے وقار کی امیر نہیں رکتے کہ ایمان ہے آ ورو انکہ اس بیمہیں طرح طرح سے بنایا اظوار، طور کی جمع ہارے معنی حال کے بین چہ نجا کیا جات نظے کی ہے، اور ایک حاص مست کی ہا اسان کی تختیق کے مکمل ہوئے تک اورانسان کی تختیق میں غور َ مرنا اس کے فاق پر ایمان کو واجب مرتا ہے ، کیاتم نہیں و لیکھتے کہ اللہ نے ﷺ سرطرح نته به ندس ت آسان پیرائئے ، لیعن بعض کو بعض کے اوپر رکھا اور جیا ندکو ان میں لیعنی ان کے مجموعہ میں جوسا وو نیا پر بھی صا ہ ق ہے نور بنایا اور سورتی کوروشن چراغ بنایا اور ہ و جاند کے اور ہے تو کی مزے اور تم کوزمین ہے ، بیک خاص طریقہ ہے پیدا کیا نچم ہ وہم کواسی میں لے جائے گا جا ں یہ کہتم قبر میں مدفو ن ہوگ اور وہتم کو بحث کے ہے 'کا ہے کا اور اللہ نے زمین کو تہمارے لئے فرش بنایا تا کہتم اس کے کشادہ راستوں میں چلو۔

عَيِقِيقُ الْرَبِي لِسَهِ أَنْ الْحِقَالِينَ الْحَالِينَ الْحَلِينَ الْحَالِينَ الْحَالِينَ الْحَلْمَ الْحَلْمَ الْحَلْمَ الْحَلْمُ الْحَلِينَ الْحَلْمُ الْحَلِينَ الْحَلْمُ الْحَلْمُ الْحَلْمُ الْحَلْمِ الْحَلْمُ الْحَلْمُ الْحَلْمُ الْحَلْمُ الْحَلْمُ الْحَلْمُ الْحِلْمُ الْحَلِينَ الْحَلِينَ الْحَلِيلَ الْحَلْمُ الْحَلْمُ الْحَلْمُ الْحَلْمُ الْحَلِيلِ الْحَلِيلِ الْحَلْمُ الْحَلْمُ الْحَلْمُ الْحَلْمُ الْحَلْمُ الْحَلِيلِ الْحَلْمُ الْحَلِيلِ الْحَلْمُ الْحَلْمُ الْحَلْمُ الْحَلْمُ الْحَلِيلِ الْحَلْمُ الْحَلْمُ الْحَلْمُ الْمُعِلِيلِ الْحَلْمُ الْمُعِلِيلِ الْمُل

فَخُولَ ﴾ : ثماد او نسْعٌ وعشرود آيةً، تُساد، ثاء كِضماه رَسه كساته و ترسي مذف ، وكن قاض كاعده ے یا ید و دُم کے قاعرہ سے اصل میں شمانی تھا۔

- ﴿ [رَضَرُم پِبَلْسَهُ إِ

جَمَّالُیْن فَیْحِ جَلَالَین (جَدَیْسُم) ۲۹۳ سروه ۱۹ بر ۱۹

قَوْلِكُنْ ؛ يَانَ أَقُولِ لَكُمْ كَمُ إِنَّ اغْتُدُوا اللَّهُ مِنْ أَنْ تَنْ مِيتِ الْمُسَارِيهِ وَاللَّهُ مَ قَوْلِكُنْ ؛ يَعْفُولُكُمْ مِيهِ قَبِل مِن مُرُورِتَيْنِ المِ مَن هُ رُو بِينَا مِن المِن مَن وَ بِينَا مِن ا

جَوْلَىٰ وبلا عَذَابِ ال كَاصَ فَدَكَا مَقْصَد يَدَ وَالْ كَا يَوَابِ إِلَى

ئَيْنُوْالَى، الله قول في وَيُسوحُوكُمْ الى احل مُسمّى في ما ما يندام من منتيل "ولس سوحر الله رسسا ادا سا أَجَلُهَا" فرمايا گياہے دونوں ميں تعارض ہے "

جَوْلَيْنَ: يُوحو كم عمراد ويائل مذاك ن أي عدم تاك أروت كم ترروو قت يراد والت يراد أ

تفسيروتشري

نام:

(الصص القران، حلاصةالتعاسم)

- ≤ (فَرَم پيئسرن) > -

حضرت نوح علي للقوالة على بهار سول بن :

حضرت نوح ملافی لاولانده حضرت آوم ملافیه و مینانده به به بیانی بین بین مین کورسالت به نوازا کیا تین هم بین م به شفاعت میل حضرت ابوم برولفحافد و این سے ایک نوال روایت ہے اس میں اول رسول ہوئے کی صراحت ہے. ما نوئے انت اوّل الرُسُلِ الى الآرْض اے فرن! تم وزين پر پہلار ول بنایا کیا ہے۔

وله ي أو ل المنظرة الطبية كاوا قعدا جمالاً:

ال اغتنادو الله و المفواه و طنطون النه سنة في مسلم على بي بي في المنازات تين وقول عن المعلام الدور المناز و ال

الن رقم نے بیتی و تیں مان میں قرائی کی اس مت بد و سلام بھینے و موجود و ای جائی ہو اللہ اللہ و اللہ

' سی ہونی ہے کیونکہ غذر مِعتق میں جوشر طاکھی کئی ہےا بقد کو پہلے ہی ہے یہ معلوم ہے کہ وہ ڈخص بیزشر ط چوری کرے گایا نہیں ان لئے تقدیرِ مبرم میں قطعی فیصلۂ کھا جاتا ہے۔ (معارف)

(قصص القرآن، حضرت مولاما حفظ الرحمن سيو هاروي تعظم الله ال

ال نُوحُ رَبِّ إِنْهُمْ عَصَوْلِي وَاتَبَعُوْا اى اسسند و المدرا، مَن لَمْ يَزِدُهُ مَاللهُ وَوَلَدُهُ وَبِهِ الرُوسَ المسفه المعاه عليه المنافعة الواو وسُكُون اللام ويفتحهما والاوَلُ قِبْلَ جَمْعُ وَلَهِ يِفَتَجِهِمَا كَحُشَبِ مَسَسَد وقلس سفده كلف وَلاتَذَرُنَّ الْخَسَارًا فَ ضف و خَلْرا وَمَكُونًا اى الزؤس، مَكُوا كُبَّارًا فَ السف حدا مِن لَمُنوا فَو وا وَ وَ وَ وَ العَالَةُ ضَعَالًا فَا سَعَد مَدا مِن لَمُنوا فَو وَ اوَ وَ وَ وَ وَ العَالَةُ وَالْمُولَةُ وَلاَ يَعُونُ وَيَعُوقَ وَلَسُوا فَ مِن اللهِ مَعَادَمُ وَلا تَذَرُقُ وَلَا تَرْوالظّلِمِينَ الْآضَلاهُ مَعند مِن عَد السَّواعُ اللهُ وَلا يَعُونُ وَيَعُوقَ وَلَسُوا فَعَلَلُهُ مِعند مِن المَنوا وَ عَدَا وَ وَ عَنْ وَلَا اللهُ وَلِي لَا لَهُ وَلَا اللهُ وَلَو اللهُ وَلَا اللهُ وَلِي لَا لَهُ وَلِي اللهُ وَلِي اللهُ وَلَا اللهُ وَلَو اللهُ وَلِو اللهُ وَلِهُ اللهُ وَلِي لَا اللهُ وَلِي اللهُ وَلِي اللهُ وَلِي اللهُ وَلِي لَا وَلَا اللهُ وَلِمُ اللهُ وَلِمَا اللهُ وَلِي لَهُ وَلِي اللهُ وَلِمَا اللهُ وَلِي لَا اللهُ وَلِي اللهُ وَلِي اللهُ وَلِولُو اللهُ اللهُ وَلِكُ اللهُ وَلِمَا اللهُ وَلِي اللهُ وَلِمَا اللهُ وَلِي اللهُ وَلِي اللهُ وَلِمَا اللهُ وَلِي اللهُ وَلِمَا اللهُ وَلِمَا اللهُ وَلِي اللهُ وَلِمَا اللهُ وَلِمَا اللهُ وَلِي اللهُ وَلِمَا اللهُ وَلِمُ اللهُ وَلِمُ اللهُ وَلِمُ اللهُ وَلِي اللهُ وَلِهُ اللهُ وَلِمُ اللهُ وَلِمُ اللهُ وَلِهُ وَلِهُ اللهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَلِهُ اللهُ وَلِهُ اللهُ وَلِهُ اللهُ وَلِهُ اللهُ وَلِهُ الللهُ وَاللّهُ و اللهُ وَلِهُ اللهُ وَلِهُ اللهُ وَلِهُ اللهُ وَلِهُ اللهُ وَلِهُ

کہ نحشب، حشب کی جن ہے،اور کہا کی کہتے کے معنی میں ہے جیہا کہ مُحلُ اور بحلُ اوران و گول نے بڑا تکبر کیا آ طریقتہ پر کہانہوں نے نوح علیج فادٹے کئی تکندیب کی ،اوران کواوران کے ہیں و کاروں کوایڈ ایمبنیا لی انہوں نے کمزور طبقے کے لو ًوں ہے کہاتم اپنے معبود ول کومت جھوڑ نا اور ؤ ڈ کونہ جھوڑ نا وا ؤ کے فتنہ اور نشمہ کے ساتھ اور نہ سواع کواور نہ بغوث کواور نہ نس جھوڑ نا ، بیان کے بتو ں کے ، م بیں اوران لو کول نے ان بتو ں کے ذریعہ بہت ہے او کول کو گمراہ کر دیاای طریقہ پر کہان لوگو کوان بتول کی بندگی کرنے کا تھم دیا (الہی ا) توان لو گول کی مراہی اور بز صادی پیعطف ہے قسد اُطَسلُو ایراور حضرت و علا الطلانے ان کے بئے میہ بردعاءاس وقت کی کہ جب بذریعہ 'وتی ان کو میہ عموم ہو گیا کہ تیری قوم میں ہے جولوگ ایمان کے بیں ان کے ملاوہ اور کوئی ایمان لائے والانہیں ، ان لو گوں کوان کے منہوں کی وجہ ہے طوف ن میں غرق کر دیا کیا میا زائر ے، ایک قرا وت میں محطیف اتھے ہے ہم وک ساتھ ، اور جہنم میں پہنچہ یا کیا اور اللہ کے سواانہوں نے اپنا کولی مدد گارند کہ جوان سے عذاب کوروک سکے اور نوح یا پیچھناہ شاہد نے کہا ہے میرے پر ورد گار! تو روے زمین پر کوئی بسنے والا نہ چھوڑ یعنی گ میں آنے والا مطلب یہ کہ کسی کو نہ جچھوڑ اً کر تو ان کو جچھوڑ وے گا تو یقینا یہ تیرے (دیگیر) بندوں کو بھی گمراہ کر دیں گے اور ف جروں اور کا فروں ہی کوجنم دیں گے لیعنی ان لوگوں کو جو کفر فسق ہی کریں گے ،اور آپ نے بید ہدی و سے پیاس وحی آپ کے بعد کی۔ اے میر ہے پرورد گار! تو میر ہے والدین کو کے دونول مومن تنجے اور ہرات تخص کو جومومن ہو کرمیر ہے گھر بیل میری مسجد میں داخل ہو اور قیامت تک آئے واے مومنین ومومنات کو بخش دے اور کا فرول کوسوانے ہلا کت کے اور کسی ? میں نہ بڑھا چنا نجہ وہ سب لوگ ہلاک کر دیتے گئے۔

عَجِفِيق اللَّهِ اللَّلَّمِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللللَّمِ الللَّهِ الللللّ

قِولَ ؛ بذلك، اى بالمال والولد.

قَوْلَ أَنَّى ؛ والاول ای وُلْدٌ کے بارے میں کہا گیا ہے کہ ولڈ کی تن ہے ہیں کہ حُشْت، حَشْبُ کی جُنع اور کہا گیا ہے کہ نہیں ہے۔ البتہ معنی میں جمع کے ہجیں کہ بنحل کے معنی میں ہے۔ فَقَوْلَ کَی البتہ معنی میں جو کے ہجیں کہ بنحل ، سُواع عورت کَ شَل کے با ایک بت کانام ہے، یعنوٹ شیر کی شکل کے با کانام ہے، یعنوٹ شیر کی شکل کے با کانام ہے، یعنوٹ شیر کی شکل کے با کانام ہے، یعنوٹ شیر کی شکل کے بات کانام ہے۔ کان

تَفْسُرُ وَتَشَرُحَ

قسالَ نُسوحٌ رَّبِّ إِنَّهُ مَرْ عَصَوْمِتِي (الآية) لِينى ميرى نافر مانى پراڑے، ہے ميرى ايک من مرنددى؛ در مالداروں سر داروں کی پيروی کی کہ جن کوان کے مال داولا دینے سوائے تنصان کے کوئی فائدہ نیں دیا بکسہ سرا سرنقصان میں رہے۔

ڍ (زمَزَم پنکسَرز) » ·

و مکرو منحرو منحرا کمتاراً بیکرشد بدکیاتها؟ کرے مرادان مرداروں اور پیشواؤں کے وہ کر وفریب ہیں ہس ۔ وبی تو وہ کے وہ منو دسترت نول ملافظ النظر کی تعلیمات کے خلاف بہا ہے تھے اور بہان نے کے طریقے تقریبا تمام وہی تھے ہو " یہ ن ب آپ میں نظر کا بات ہے دور کئے کے لئے کرتے تھے، اور بعض حصرات نے کہا ہے کہ منز دسترت نول میں منزو کو منزو کی ان کے بڑوں کا جھوٹوں سے بیکہنا تھا کہ تم اور بعض کے زو کی ان کے بڑوں کا جھوٹوں سے بیکہنا تھا کہ تم اور بعض کے زو کی ان کے بڑوں کا جھوٹوں سے بیکہنا تھا کہ تم اور بعض کے زو کی ان کے بڑوں کا جھوٹوں سے بیکہنا تھا کہ تم اپ معبود و ک میاہ ت پاکھنا نے وہر بر مت جھوڑ نا۔

ولا نسڈون وَ ڈَا المسع یہ پانچوں ، قوم نوح عظی اللہ ان کی تصاور یہ انہیں کے نام ہیں جہان کا نقل ہو یہ ولا نسڈون و ڈا المسع یہ پانچوں ، قوم نوح عظی اللہ ان کی تصویریں ، نا کرتم اپنے گھرول اور عباوت ڈانول ہیں رکھاہ ، نا کہ ان کی یو د اور ان کے عقیدت مندوں سے کہا کہ ان کی تصویرین ، نا کرتم اپنے گھرول اور عباد کرتے ہوئے تا تو شیطان ۔ نے نام اور ان کے تصویر بنا کرر کھنے والے فوت ہو گئے تو شیطان ۔ نے کی کو سور کو تیکہ کر شرک میں ہتا ہو گئے تو شیطان کر بے جان کی تصویرین تمہار ہے تھے وں میں شک ۔ ناک کی تی جانہوں نے ن کی پوجا شروع کردی۔ (معادی نصیر ، سورہ نوج)

قوم نوح علیه لائدالشکلا کے ان پانچوں بزرگوں کی اتی شہرت ہوئی کہ ترب میں بھی ان کی پوجا ہونے گئی، چنانچہ'' و ذ' دومة مدل میں قبیلہ مکلب کا معبود تھا اور'' سُو اع''، ساحل بحر کے قبیلہ بذیل کی دیوی تھی،'' یینوٹ' سیا ، کے قریب قبیلہ سے کی بعض خوں کا بت تھا اور'' یعوق'' بمدان کے علاقہ میں قبیلہ بمدان کی شاخ خیوان کا بت تھا ، اور بیگھوڑ ہے کی شکل کا تھ، و '' نسر'' لرح پیر کا بت تھ جس کی شکل گدرہ کی تی تھی۔

قَدْ اَصَلُوا کیٹیرًا، اَصَلُوا کا فاعل قوم نوٹ کے رؤساء میں جنہوں نے مذکورہ یا نچوں بزرگوں کے ناموں ہے وگوں اُمہ وک

مُر ہ سیا۔ قَالَ نُوْحٌ رَّبِ لَا تَلَدُرٌ عَلَى الْآرْضِ مِنَ الْكَافِرِيْنَ دَيَّارًا حضرت نوح عَلَيْ لاَفْتُلاَ فَيْ يه بدوعا ماس وفت فرما فَي قَالَ نُوْحٌ رَّبِ لَا تَلَدُرُ عَلَى الْآرْضِ مِنَ الْكَافِرِيْنَ دَيَّارًا حضرت نوح عَلَيْ لاَفْتُلاَ اللهُ عَلَى اللهُ وَعَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلْهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَ



الله المنظمة ا

سُورة الْد، مَكْينة نمان وعَشْرُون يدّ.

و المحمل المحمل المراسي المراسي المراسية المراسي المنابة وأن الما والمنابة وأن المدادة الله المالة والموسعين ، نعلى در أن عسره د . . . م تحذَصَاحِبَةُ و .. وَلاوَلَدُا الْا "المدهل بعول أسفيهنا مربي على الدستطيف المرب المستطيف المرب المرب والمرب وَأَنَّا ظُنَتُ آَنَ ٠ لى تَقَوْلُ لِالْسُ وَ لَحِيْ عَلَى لِللهِ كَذِبِ مُ ١٠٠٠ تدريد مانك فال عالى وَّ أَنَّهُ كَانَ رَحَالُ مِنَ الْإِنْسِ يَعُودُونَ ... برجَالٍ مِنَ الجِنَّ على مدرج معه على منظول من من قُانَهُم الله أحل ظَنُو لَما صَلَمْهُ من الله عدم من أَن يَبِعِثُ الله أَحَدًا في عدمه من د وانالمسنالتَمَاهُ إلى من من من فَيَجَدُنْهَا مُسْتُ حَرَسًا من من مَسْدِيدًا وْشْلِينَا أَرْجَهُ: مُنْفِرِهُ وَ لَا مُنْ رَاء وَ مِنْ مَا مِنْ مِنْ اللَّهُ وَأَنَّا لَيْنَا وَمِع وَمِنْ اللَّه . . نَقُعُدُ مِنْهَا مُقَاعِدَ اسْمُعُ . فَمَنْ يَسْتَمِعِ إِنَّ يَجِدُلُهُ شِهَابًا رَّصَدًا أَيْ ي وَّانَ لَانَدَرِيْ الشَّرُّ لِيدِ وَانَ لَانَدَرِيْ أَوْلَ مَرَّ الْكَ بِهِمْ مَرَ بَلْهُ مُرْرَشَدًا " ران من الصَّلِحُون ـ مداسر و من دول ذات و مد مد مد مد كُنَّا طَرَّ إِنَّ وَدُدًّا

موف محتمد من منسمين و كافرس قَالَتَاظَنَتَاآنُ مُحمَدُ اي الدِ **لَنْ تُعُجِزَاللّهَ فِي الْأَرْضِ وَلَنْ تُعْجِزَهُ هَرَبًا** اللهِ لاَ نَفُوتُهُ كَاتِبَيْنَ فِي الْأَرْضِ أَوْ سَارِئِي مِنْ الى المنماء قَاأَتَا لَمَّا السَّمِعْنَا الْهُلَكَي الْمُرال أَمَنَّا بِهِ فَمَنْ يُؤْمِنَ بِرَيِّهِ فَلَائِجَافُ سَفَدِسِ بُو بَعُدَاعَاء بَجْعُمًّا سَعْنَا مِن حَسَنَه وَّلَارَهَقَّا ﴿ صَنَمَ سَرَبَادَ فِي سَبَئَتَ وَّ أَنَّا مِنَّا الْمُسْلِمُونَ وَمِثَا الْفُسِطُونَ ۚ السُحِ نَاوِهِ سَعُمُونِ الْمُعَالَمُ الْمُولَاكِ يَعَرَّوُالسَّلَا وَسِعَا الْمُسْلِمُونَ وَمِثَا الْفُسِطُونَ ۚ السُحِ نَاوِهِ سِداءِ وَالْمَاالْقُسِطُونَ قَكَانُوالِجَهَنَّمُ حَطَبًا ﴿ وَتُؤَدُّا وَانَّا وَانَّهُ وَانَّا فِي انْتَى عَشَرَ مَوْضَعًا مِي وانَّهُ تَعالَى الى قَوْل. واكَ مِنَا الْمُسْتِمُونِ وَمَا شِيئُهُمَا كَيْسُرِ الْمُشْرِهِ الْمُتَيَّافُ وَعَنْحَمُ مِا يُوجَهُ به قال عالى في كُفَارِ مِكَّة وَّأَنْ سُخَفَفَة مِنَ الثَّلِية والسَّمْهِ محدُوفَ أَيُ وَأَنَّهُمْ وَهُوَ مَعْطُوفٌ عَلَى أَنَّهُ السِّنَمَ لِوالسَّقَامُواعَلَى الطِّريُّقَةِ أَي سرنية الانبلام لَاسْقَيْنَهُمُ مِثَّاءً عَدَقًا في كشرًا من الشيماء ودلك مغيد منا رُفع المصرُ عبيهُم سنع سيس لِنَفْتِنَهُمْ لِيَحْسَرِبُهُ فِيْدُ مِنْ مِنْ كَنِفَ شَكْرُ بُهُ مِنْهُ مِنْهُ وَمَنْ يَعْرِضُ عَنْ ذِكْرِ مَ إِنَّهُ الْعُوْالِ يَسْلُكُهُ المُور والباء تُذَحِنُهُ عَذَابًاصَعَدًا ﴿ مَاتَّ قَالَ الْمُلجِدَ لِيواسِعَ الشِّلاَةِ لِلْهِفَلَاتَدُعُوا فنِها صَعَاللهِ لَحَدَّاهُ ىن تُشركُوا كما كانت الْيَمُوْدُ والنِّصاري ادا دخلُوا كَانْنَسَهُمْ وَنِيعِهِمَ اشْرَكُوْا **وَانَّهُ** بالنبخ وبالكشر استساق والعَسميز لدشُّال لَمَّاقَامُ عَبْدُ اللَّهِ مُنحمَّدُ اللَّهِ صِنَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم يَدُّعُوهُ يعْلَدُه بِنفُس يَحْن كَادُوْاً أَى الْحِلُّ المُسْتَمِعُونَ لِترَاءَ تِهِ يَكُونُونَ عَلَيْهِ لِبَدُّا أَفَّ كَسْرِ اللَّامِ وضَمَّهَا حَمُهُ لِنَدَةِ كَاللَّمِ في الْحُ رُكُوب بَعْضِهِمُ إِرْدِحَامًا حِرْصًا عَلَى سَمَاعِ الْقُرْالِ.

﴿ (فَكُزُمُ بِسَالِشَرِنِ] 5-

انس اور جن اس کوان چیز ول ہے متصف کر کے اس پر ہرگز افتر اء پر دازی نہ کریں گے حتی کہ ہمار ہے او پر اس ہارے میں ان کا کذب ظاہر ہو گیا بات بیہ ہے کہ بعض لوگ جب کہ وہ اپنے سفر کے دوران کسی خطر ناک مقام پر فروکش ہوتے تھے تو بعض وگ جنت کی پناہ طلب کیا کرتے تھے اور ہر شخص کہتا تھا کہ میں اس مقام کے سردار کی اس مقام کے بے وقوف (جنول) ہے پناہ جا ہتا ہوں جس کی وجہ ہے جنات اپنی *سرکشی مین* اور چڑھ گئے اور کہنے مگے ہم جنوں اور انسانوں کے سردار ہو گئے ،اے انسانو! جنات نے بھی تہاری طرح گمان کرلیا کہ اللہ تعالیٰ کسی کو موت کے بعد دوبارہ زندہ نہ کرے گا، (أَنْ) مخفف عن التقيله ہے، اور ہم نے چوری سے سننے کے لئے آسان کا قصد کیا تو ہم نے اس کو دیکھ کہ پہرہ دار فرشتوں اور سخت جلا دینے والے شہابوں سے بھرا پڑا ہے اور بیاس وقت ہوا جب آپ ﷺ کومبعوث کیا گیا اور ہم آب ﷺ کی بعثت سے پہلے ہاتیں سننے کے لئے (آسانوں پر) جگہ بیٹے جایا کرتے تھے اب جوبھی کان لگا تا ہے ا بک شعلہ کواپنی تاک میں یا تاہے بیعنی اس کوتاک میں لگا دیا گیا ہے تا کہ دہ اس کے ذریعہ ان کو مارے اور ہم نہیں جانتے کہ سننے کی ممانعت ہے۔ آیاز مین والول کے ساتھ کسی شرکا ارادہ کیا گیا ہے یا ان کے رب نے ان کے ساتھ خیر کا ارادہ کیا ہے؟ اور بیاکہ قرآن سننے کے بعد بعض ہم میں ہے نیک بھی ہیں اور بعض اس کے برعکس بھی بعنی بعض لوگ غیرصا کے بھی ہیں ، اور ہم مختلف طریقوں میں ہے ہوئے ہیں بعنی مختلف فرقے ہو گئے ہیں ، کہ بعض مسلمان اور بعض کا فرہیں ، اور ہم نے سمجھ لیا کہ ہم اللّٰد کی زمین میں اللّٰد کو ہر گز عاجز نہیں کر سکتے ، آن مخففہ ہے آئ آنا ، اور ند بھا گ کرہم اسے ہراسکتے ہیں ، بعنی نہ ہم اس کوزمین میں رہتے ہوئے عاجز کر سکتے ہیں اور نہ زمین ہے آسان کی طرف بھا گ کراہے ہرا سکتے ہیں ، ہم تو ہدایت. کی بات (قرآن) سنتے ہی اس پرائیان لا بھے، اور جو بھی اپنے رب پرائیان لائے گا، اسے اس کی نیکیوں میں نقصان کا ندیشه نه هوگا اور نه ظلم وزیاد تی کا بعنی اس کی بدیوں میں زیاد تی کا ، ہاں ہم میں بعض تو مسممان ہیں اور بعض ایپنے کفر کی وجہ سے ظالم ہیں پس جوفر مانبردار ہو گئے انہوں نے تو راہِ راست کا قصد کیا لیمنی اس کی بدایت کا قصد کیا اور جو خالم ہیں جہنم کا ایندھن بن گئے اور اِنَّ اور اِنَّهُ مُراور اِنَّهُ مِیْل بارہ جگہ ہیں اور اَنَّهُ تعالیٰ اور اَنَّا مِنَّا المسلمون اوران کے ورمیان ہمزہ کے کسرہ کے ساتھ بطور استیناف کے اور ہمزہ کے فتحہ کے ساتھ تا ویل کر کے اور اللہ تعالیٰ نے کفار مکہ سے بارے میں فرمایا (اوراے نبی! یہ بھی کہدوو) اَنْ تَقْیلہ ہے تخفقہ ہے اوراس کا اسم محذوف ہے، اَیْ اَنَّهُمْر اوراس کا عطف اَنَّــةُ اسْتَــمَعَ برے كه اگرلوگ راوراست طريقة اسلام پرسيد ھےرے تو يقيينا ہم انبيس برى وافر مقدار ميں آسان سے یانی پارئیں گے اور بیر لیعنی آیت کا نزول) اس کے بعد ہوا کہ سات سالوں تک (اہل مکہ) ہے بارش روک لی، گئی تھی تا کہاں میں ہم انہیں آ زمائیں اور تا کہ ہم ان کے شکر کی کیفیت کوا پنے علم کے مطابق ظاہر کریں اور جوا پنے پرور دگار کے ذکر (قرآن) ہے روگر دانی کرے گا تو اللہ تعالیٰ اس کو تخت عذاب میں مبتلا کرے گا، یَسلک نون اور یاء کے ساتھ ہے اور بیا کہ مسجدیں نماز کے مقامات صرف اللہ ہی کے لئے خاص ہیں پس ان میں اللہ تعالیٰ کے ساتھ دوسروں کو نہ پکارو ہویں

مر من من من المسلم المراجع ال

وَ وَ وَ الْمِنْ الْمِنْ الْمِنْ الْمِنْ الْمُولِينَ اللَّهُ الْمُسْلِيرِ كِي اللَّهِ اللَّهُ اللَّا الللَّا الللَّا اللَّالِي اللَّا اللَّهُ اللَّاللَّالِمُ اللَّاللَّا الللَّهُ الل

هوله ، يه ، يس شي در المناع من المناقرين العاد ألى ب الصيبين عربيم إلى المام من الم

هولتر و تناه مرط مُوا كاما طنفنان الله الله احدا بيهنا بيركامنول بياني المانوانس م تشرران مدر مرسيس مدر المروش المدر المراكب و الله احدا بيهنا الله أخدًا وطنفند كالله أخدًا وطنفند كروم حود المدرود المدرود

و مولي رواد مسلم ها مدور عدا من و المن مول اول باور صلفت يماني و و المن المنظر حوار المولا على الدور حواسًا تميز حوار

the first and in

عود المراجة من المراجعة عن المراجعة المراجعة المراجعة المراجعة المراجعة المراجعة المراجعة المراجعة المراجعة ال المراجعة الم

اسد سد سروانفزم بيلسن عد مد م

تفسيروتشرج

ش نازول:

" یات با ، ق تنبیر وسی طریقہ ہے جھنے کیلئے پہلے چندوافعات وذیمن بیل رکھنا شروری ہے۔

بهبلا واقعد:

رسوں اللہ فیقطیم کی بعثت سے پہلے شیاطین آ مانول تنگ بھٹے کرفرشنوں کی ہاتنیں نئے تھے، آپ بیٹی علیم کی بعثت کے بعد شہر با ان قب کے ذریعیاں کوروک دیو کیوان عام فائی کی تنظیمان میں برناست آپ جوٹائیٹی تنگ پہنچے جسیما کہ سور فالے فائی میں گذرا۔ احقاف میں گذرا۔

د وسراوا قعه:

ز مانہ جا ہمیت میں سید سنورتھا کہ جب کسی جنگل یا دادی میں افر نے دوران قیام لی نشرہ رہت بیش آتی تو اس اعتقادے کہ جن بنت کے سردار ہماری حفاظت کردیں گے، میدالفاظ کہا کرتے ہتنے اعوالہ بعزیو ھذا الواقدی میں منسق شُفَهاء قوجہ مین اس جنگل کے سرداروں کی پٹاہ لیتنا ہوں اس کی قوم کے بے وقوف شریر ٹوگوں ہے۔

تيسراواقعه:

مَا يَهُر مه مين آپ مِلْفُنْ عَلَيْهِ كَي مِدوعاء عن قط بِرُالقااور كُلُّ سأل تك ربايه

چوتھا واقعہ:

جب آپ فیلی فاز بنائے کے دعوت اسلام شروع کی تو کفار مخالفین کا آپ نے نااف جھوم اور زند جوا۔

جب آپ فیلی فاز بنے عبدالقد بن عباس فضلفی کے لائے گئے کا روایت ہے کہ رسول اللہ بلائے بیٹر اسی ب رسول سلم میں حضرت عبدالقد بن عباس فضلفی کے لائے گئے کہ دوایت ہے کہ رسول اللہ بلائے بیٹر اسی ب رسول سلے لوئے کی میں اور میں گئے اور سے تھے اوا من شرف کے مان میں آپ شاہ بلوئے کی نماز پڑھائی اس وفقت نوب کا آپ کروہ اوھرے گذر ربا تھا، تلاوت کی آواز من کروہ تھم کیا اور نور سے قرآن سنتار باای واقعہ کا ذکر اس مور ہے ہے۔

جر ہے تیں ہے۔

ا کنژمفسرین نے اس روایت کی بناء پریہ مجھا ہے کہ بیرحضور بلاتی پیٹا کے مشہورسفر طا کف کا داقعہ ہے جو بجرت سے تین ساں سے والے نبوی میں بیش آیا تھا مگریہ قیاس متعدد وجوہ ہے جی نہیں ہے؛ اس لئے کہ طائف کے اس سفر میں جنوں کے قرآن سننے کا جو واقعہ بیش آیا تھا اس کا قصہ سور ہُ احقاف میں بیان کیا گیا ہے، سور ہُ احقاف کی ان آیات پرنظر ڈ النے بی ہے معلوم ہوتا ہے کہ اس موقع پر جوجن قر آن مجیدین کرایمان لائے تھے وہ حضرت موی علیقیلاً قالے کا اور تورات برایمان رکھتے تھے،اس کے برمکس اس سورت کی آیات سے صاف ظاہر ہوتا ہے کہ اس موقع پرقر آن سننے والے جن مشرکین اور منکرین آخرت ورسمالت تھے پھر میہ ہات تارتؓ ہے ثابت ہے کہ طائف کے اس فرمیں حضرت زیدین حارثہ لائٹ کے اوا اور کوئی آپ پیلیٹنٹیڈ کے ساتھ تہیں تھ بخلانی اس سفرے،حضرت ابن عباس کی روایت ہے معلوم ہوتا ہے کہ چنذاصحاب آپ کے ہمراہ تھے۔

مزید برال روایات اس پربھی متفق ہیں کہ اُس سفر میں جنوں نے قر آن کی روایت کے مطابق جنوں کے قر آن سننے کا واقعہ اس ونت پیش آیا جب آپ مکه مکرمہ ہے عکا ظائشریف لے جارہے تھے،ان وجوہ سے میہ بات معلوم ہوئی ہے کہ سورہُ احقاف اور سور و جن کے واقعے دوا لگ الگ ہیں۔

إنَّا سَمِعْنَا قُوْ آنًا عَجَبًا، عَحَبًا مصدر بِ يطور مبالقه ياحذف مضاف كما ته به اى ذا عجب، معجب كمعنى میں یکے بیاں السونشد بیقر آن کی دوسری صفت ہے کہ و دراہِ راست حق وصواب کو واضح کرتا ہے جَدُّ کے معنی عظمت اور جلال کے بیں بعنی ہمارے رب کی شان اس سے بہت بلند ہے کہ اس کے اولا دیا بیوی ہو۔

قُلْ لَمْجِيْبُ لِلْكُفَارِ فِي قَوْلِمِهِمِ ارْجِعُ عمّا انْتَ فِيهِ وفِي قِرَاءٍ وَقُلْ إِنَّمَ**اَأَدْتُحُوْلِرَبِّنَ** اِلْهَا وَكُلَّ أَشْرِلْتُ بِهَاكُدُا® قُلْ إِنْ لَا آمُلِكُ لَكُمُ ضَمًّا غَبُّ وَلَامَ شَدَّاهَ حَبْرًا قُلْ إِنَّ لَنْ يُجِيرُ فِي مِنَ اللهِ مِنْ عَذَابِ إِنْ عَضَيْتُ أَحَدُّهُ وَّلَنَّ أَجِدَمِنْ دُونِهِ أَيْ عَيْرِهِ مُلْتَحَدًّا ﴿ مُلْتَجِنَّا إِلَّالِكُفَّا إِسْتِثْنَاءٌ من مَفْعُولِ أَمْنكُ لَكُمْ الا البَلاَغُ المِنكُم مِّنَ اللَّهِ أَيْ عَنْهُ وَمِيسُلْيَةٌ غَطْتُ غَنِي بَلاغًا ومَا بَيْنِ المُسْتَثْنِي مِنْهُ والاسْتثَنَاءِ إغتِرَاصٌ لِتَاكِيْد نَفَي الاستبطاعة وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَمَسُولَهُ في التَوْجِيْدِ فَلَمْ يُؤْسِ فَإِنَّ لَهُ فَالْمَجَهَنَّمَ خُلِدِيْنَ حَالٌ سِنْ ضعِيْر سَن مى له رغايَةُ لِمعْنَابًا وَسِي خَالٌ مُقَدَّرةُ والمَعْنَى يَدْخُلُوْنَهَا مُقَدَّرًا خُلُودُسُهُ فِيْهَا آلَكُا ﴿ حَتَّى إِذَا مَا أَوْا حَتَّى ابُندَائِيَةٌ بِيُهِ لِمُقدَّرٍ قَبُلَهِا أَيْ لاَ يَزَالُونَ عَلَى كُفْرِسِمُ إلى أَنْ يَرَوُا **مَا يُوْعَدُونَ** من العَذَابِ فَسَيَعَكُمُونَ عَلَى حُدُولِه بِهِمْ يَوْمُ بَدْرِ أَوْيَوْمُ الْقِيَامَةِ مَنْ أَضْعَفُ نَاصِرًا قَالَاً عَدَدًا اللهِ أَعْوَانًا أَشِمُ أَمَ المُؤْسِنُونَ عَلَى القَوْلِ الأوْر او أَا أَمْ بُهُ عَلَى الدَّنِي فَقَالَ بَعُضَهُم مَتَى بِذَا الوَعْدُ فَنَزَلَ قُلُ إِنَّ أَيْ مَا أَدْرِي أَقَرِبْي مَّا تُوْعَدُونَ س ا عذاب أمْريَجْعَلُ لَهُمَ إِنَّ أَمَدًا ﴿ غَايَةً وَأَجَلًا لَا يَعْلَمُهِ الَّا سِو عَلِمُ الْغَيْبِ ساعب ب عس العدد فَلَا يُظْهِرُ بِطَنَّ عَلَى عَنْهِ مَ أَحَدًّا أَهُ مِنَ الناسِ اِلَّا مَنِ الْهُ تَصَى مِنْ مَنْ مُسُولٍ فَانَّهُ مِ اطِّلاعه على سىد، سنه منعمرة له يَسْلُكُ يَجْعَلُ ويُسَيّرُ مِنْ بَيْنِ يَدّيهِ أي الرّسُولِ وَمِنْ خَلَفِهِ رَصَدًا ﴿ ١٨٠٤ - ﴿ [وَمَرْمُ بِهَاللَّهُ إِنَّ اللَّهُ إِنَّ اللَّهُ إِنَّ اللَّهُ إِنَّ اللَّهُ إِنَّ اللَّهُ إِن

يَخفَطُونَهُ حتَى يُبَيِّعَهُ في جُمُلَةِ الوَحِي لِيَعَلَمَ اللهُ عِلَمَ ظُهُور أَنْ سُخَفَّفَةٌ مِنَ التَّقِيُلَةِ أَى انه قَدْ أَبْلَعُوا آي يَخفُوا آي سُخفَفَةٌ مِنَ التَّقِيلَةِ آيَ انه قَدْ آيُلُعُوا آي اللهُ عِلَمَ طُهُور أَنْ سُخفَة مِنَ التَّعِيمَ دَبِكَ الرَّسُلُ رَسُلَتِ رَبِّهِمْ رُوعِينَ بِجَمِعِ الضَّمِيرِ مَعَنَى مَنَ قَاكَا كَاكُومُ الدَّيْهِمُ عَطف عَلى مُقَدَّر آئَ فَعبِمَ دَبِكَ الرَّسُلُ رَسُلَتِ رَبِّهِمْ رُوعِينَ بِجَمِعِ الضَّمِيرِ مَعنى مَن قَاكَا كُومُ الدَّمُ الدَّيْهِمُ عَطف عَلَى مُقَدَّر آئَ فَعبِمَ دَبِكَ فَعبِمَ وَلِي المَفْعُولِ والأَصْلُ أَحْصَى عَدَدَ كُلِّ شَيءً وَاللهُ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ

فَ اللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الللللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ اللَّ میں قبل ہے، میں تواپنے رب بی کو معبود ہونے کے اعتبارے پکارتا ہوں اوراس کے ساتھ کسی کوشر یک نہیں کرتا آپ کہد دیجئے میں تنہارے نفع نقصان کا ما مک نبیں آپ کہ دیجئے کہ مجھے ہرگز کوئی اللہ سے (لیعنی) اس کے عذاب ہے اگر میں اس کی نافر مانی کروں نہیں بچا سکتا اور میں اس کے علاوہ ہر گز کوئی جائے پناہ نہیں یا تا گرمیرا کام اللّٰد کی بات ادراس کے پیغا ہات پہنچا دینا ہے اِلّا بسلاعًا، الملك كمفعول سے استناء بے بعن ميں تمهارے لئے سوائے الله كى طرف سے پيغام پہنچانے كے سى چيز كاما لك نہیں وَرِسَالَاتِه كاعطف بلاغًا پرہاور مشتنی منداور استناء كے درمیان استطاعت كی فی كی تاكيد كے لئے جمله معترضه ب اور جو بھی التداوراس کے رسول کی تو حید میں نافر مانی کرے گا کہ ایمان نہ لائے گا، اس کے لئے جہنم کی آگ ہے جس میں وہ ہمیشہرے کا خالدین مَنْ کی طرف لوٹے والی لَهٔ کی تمیرے معنی کے اعتبارے حال ہے اور بیرحال مقدرہ ہے معنی بیہ ہیں کہ اس میں داخل ہوں گے حال ہد کدان کے لئے جہنم میں داخلہ ہمیشہ کے لےمقدر ہو چکا ہے، بدلوگ اپنے کفر پر قائم رہیں گے حتی کہ اس عذاب کو دیکھے کیں جس کا ان سے وعدہ کیا جاتا ہے حتّی ابتدائیہ ہے اس میں (متعیا) مقدر کی غایت کے معنی ہیں تقدیم عبرت بہے لا یَسزَ السونَ عبلنی محفوهم الی انْ یَرَوْ اسوبدرے دن یا قیامت کے دن جب بیان میں داخل ہوں گے تو عنقریب سب معلوم ہوجائے گا کہ کس کامد دگار کمزوراور کس کی جماعت کم ہے ، وہ یامسلمان ،اول قول (بدر) کی صورت میں یا میں یاوہ، ثانی قول (قیامت) کی صورت میں توان میں ہے بعض نے کہا میروعدہ کب پورا ہوگا؟ تو (قُلْ إِنَّ اَهْدِی) نازل ہوئی (آپ) کہدد بیجئے مجھے معلوم نہیں کہ جس عذاب کاتم ہے وعدہ کیاجا تاہے وہ قریب ہے یااس کے سئے میرارب مدت بعید مقرر کرے گا جس کواس کے سوا کوئی نہیں جا نتا غیب (بینی) جو بندوں ہے غائب ہے کا جانبے والا ہے اوروہ اپنے غیب پرکسی شخص کو مطلع نہیں کرتا مگراس رسول کو جس کو وہ پیند کرے ، مگر جس رسول کو جا ہے بطور معجز ہ مطلع کر دیتا ہے اس کو اطلاع کرنے کے باوجوداس قاصد کے آگے پیچھے محافظ فرشتے بھیج ویتا ہے کہوہ اس کی حفاظت کرتے ہیں یہاں تک کہ وہ فرشتہ اس وحی کو منجملہ وحی کے پہنچ دیتا ہے تا کہ امتدعکم ظہور کے طور پر جان لے کہان فرشتوں نے اپنے پروردگار کے پیغام (رسول تک بحفاظت) پہنچ دیا اُن مخففہ عن التقیلہ ہے آئ اُنَّا تا صمیر کے جمع لانے میں مَنْ کے معنی کی رعابیت کی گئی ہے اور القدان (پہرہ واروں) کے احوال کا اہ طہ کئے ہوئے ہے (واَحَاطَ) کاعطف مقدر پرہ ای فَعَلِمَ ذلك وَاَحَاطَ اوراس کو ہر چیز کی گنتی معموم ہے (عددًا) تميز ہاور يه فعول مے منقول ہاور اصل أخصلي عدد تُكلِّ شي ہے۔ ﴿ (مَرْزُم بِهَالثَّرِيَ ﴾

تعقبو فيتركب بسيال تفسيري فوائل

قول الاعالية الاست عادول الراب الراب الراب وعليها من ما در ال کی لئے مہدو سی ایسے استی اور مشتقی منے کے درمیان میں جملہ معتہ خدافی استطاعت کی تاکید کے ہے۔ قَوْلَىٰ ؛ ورسالاته مع أن ما عن من الله أملكُ لكم الله التبليغ والرسالة. قولی: علی لیوں بازی را سر ای ای ایاں یہ ، طعال ای ان نے فی عدد فول دنيال معتب ، د ن ، د د ا قۇلى: عىدلىسى درى سىدى دەندى دەندى جُولِلَ ؛ ماغابُ به عن العباد، به كون رنه يا بات ومناسب ب

تفسيروتشري

فُ لِي إِنِي لا مُدِيثُ بِهَ . يه مر الله الله الله الله الله الفطح ونقصان كالفتيارنيس بيت بيس توصرف اس كارنده

ہوں شے اللہ نے وقی رسالت کے ۔ ن م ۔ ۔ ولّا بلاغًا اللح یہ لاَ امْدِلُكُ لكم ہے "تنی ہے یہی ممکن ہے كہ لَنْ حنوبی ہے منتنی ہو یعنی مجھے اللہ (كے مذب المنافية بالتقالية المحال المستعلق الماليجة الماليجان الماليجي كالمنتقى الله في الماليج المراوي or a fee although a blanch

فَلْ نَا الْوَرِي الْوِيسَ مَا وَعَدَوْ اللَّهِ مِنْ مَا مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ مَ اللَّهِ مِنْ اللَّذِي اللَّهِ مِنْ اللَّلِّي مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ أَلَّمِ مِنْ اللَّهِ مِنْ الللَّهِ مِنْ الللَّهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ الللَّهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّا لِمِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّمِي قبي مت ه آناه رسن من من ترسن سن سن سن سن من من الشخ تاريخ الريخ اور وفت كوالقد تعالى نه كي كونييس تادير ماس بالمائن المالية المالية المائم المالية ں میں اتر ہ میں عدارہ العدال و مسلم علی غیبه الحدا العی قیامت کوقت میں سے بیری میں اس نے ہے -- ه اورم بنشل الا ---

ر في عليه الله وي في العالمين و وي العالمين

المراجع في ولي والمالي الألياء المالية الله المنظمة ا t+ . الله المستمارين الله المستمارين الله المستمال والمستمال والمستم والمستمال والمستمال والمستم والمستمال والمستمال والمستمال والمستمال والمستمال والمستمال والم 4.5 VB. Clar & 15 Log Classes Will to every in the every the with a place of the first of the state of the second o Little of the grant was a second

المراجع العراق المراجع المراجع

I AND THE THE SECRETARY TO SECOND AND A SECOND ASSESSMENT OF THE SECOND ASSESSMENT OF THE PROPERTY OF THE PROP and the state of 6 person

البعش به فزيه بالنبية الوالم النبية النبية النبية في عن أي أن أن أن أن أن أن أن أن أن المرافع وسائد المرابع أن مذرجه ووالمتزاو خاام وعائم الغبب تنكيب عاوتيانه

و و شري و المدين مي الدين و المواد المنظم الله القيالي الماد المنظم المي المناس المنظم رسيد في النام بيدرون بيدروان الدريادان كي الله والحل كي المالي أن المالي المناسبة the entire the control of the contro

الله المادية المادية المادية المستواد المستواد المستواد المستواد المستواد المستواد المستواد المستواد المستواد ا

سُوْفُ الْمِزَّةِ الْمُؤْمِّرُ الْمُؤْمِّرُ الْمُؤْمِّرُ الْمُؤْمِّرُ الْمُؤْمِّ الْمُؤْمِّينَ الْمُؤْمِنِينَ اللَّهِ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينَ اللَّهِ الْمُؤْمِنِينَ اللَّهِ الْمُؤْمِنِينَ اللَّهِ الْمُؤْمِنِينَ اللَّهِ اللَّهِ الْمُؤْمِنِينَ اللَّهِ اللَّهِ لِللَّهِ لَلْمُ لِللِّينَ اللَّهِ لِللَّهِ لِللَّهِ لِللَّهِ لِللَّهِ لِللَّهِ لِللِّلْمِينَ اللَّهِ لِللَّهِ لِللَّهِ لِللِّلْمُ لِللِّلْمِينَ اللَّهِ لَلْمُ لِلِّلْمُ لِللِّلْمِينَ اللَّهِ لِلْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينَ اللّلِيلِينَ اللَّهِ لِلْمُ لِللَّهِ لِلْمُ لِلْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينَ اللَّهِ لِلْمُ لِلْمُؤْمِنِينَ اللَّهِ لِلْمُلْمِينَ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينَ اللَّهِ لِلْمُؤْمِنِينَ اللَّهِ لِلْمُلْمِينَ اللَّهِ لِلِمِلْمِينَ اللَّهِ لِلْمُلْمِينَ اللَّهِ لِلْمُؤْمِنِينَ اللَّهِينَ اللَّهِ لِلْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينَ اللَّهِ لِلْمُؤْمِنِينَ اللَّهِ لِلْمُؤْمِنِينَ اللَّهِينَا لِلْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينَ اللَّهِ لِلْمُؤْمِينِينَ اللَّهِ لِلْمُؤْمِنِينَ اللَّهِ لِلْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينَ اللَّهِ لِلْمُؤْمِنِينَ اللَّهِ لِلْمُؤْمِنِينَ اللَّهِ لِلْمُؤْمِنِينَ اللَّهِ لِلْمُؤْمِنِينَ اللَّهِ لِلْمُؤْمِنِينَ اللَّهِ لِلْمُؤْمِنِينَ اللَّهِينِينَ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينَ اللَّهِ لِلْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينَ اللَّهِ لِلْمُؤْمِنِينَ اللَّهِ لِلْمُؤْمِنِينَ اللَّهِ لِلْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينَ اللَّالِينَ لِلْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِي اللَّمْمِينِ اللْمُؤْمِنِينِ الْمُؤْمِ

سُورَةُ الْمُزَّمِّلِ مَكِّيَةٌ او اِلَّا قَوْلَهُ اِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ اللَى اخِرِهَا فَمَدَنِيُّ تِسْعَ عَشَرَةَ او عِشْرُوْنَ ايَةً.

سور وَ زَمِلَ کَی ہے، یا ،سوائے اِنَّ رَبَکَ یَعْلَمُ اَ خَرَتک مدنی ہے، انیس یا بیس آبیتیں ہیں۔

يِسْ وَاللّهُ الرّحِ مُولِلّهُ الرّحِ مُولِلّهُ المُورِي آيَتُهَا الْمُرْوَّلُ النّبَى وَاصْلُهُ الْمُتَوَبِلُ الْوَعْمَتِ التَّهُ الْمُتَوَاقِعُ بِثِيَابِيْنَ مَحِيءِ الْوَحْيِ لَهُ حَوْفًا مِنهُ لِمَهْ بَهَ بَهْ اللّهُ اللهُ اللّهُ الللهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللللللّهُ الللللهُ الللللّهُ الللللّهُ الللللهُ الللللللهُ اللللهُ الللهُ الللهُ الللهُ اللّهُ اللهُ الللهُ الللللهُ اللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ اللللهُ الللهُ اللللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ اللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ اللهُ الللهُ الللهُ اللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ اللللهُ الللهُ الللهُ الللهُ اللللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللللهُ اللللهُ الللللهُ الللهُ الللهُ اللهُ الللهُ الللهُ اللللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ اللللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ اللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ اللللهُ الللهُ اللهُ الللهُ الللهُ الللهُ اللللهُ اللهُ الللهُ اللهُ الللهُ الللهُ ا

بِكُنِ كَنُسُرِ النُّونِ وَيَجِجُمِّكُ إِنَّ الْمُخْرِقَةُ قَطَعَامًا ذَاعُصَّةٍ بُنعِيشَ بِهِ فِي الْحِنْقِ وَبُو الرَّقُومُ او المسركُ اوالىعىسىنينُ او شۇك سى تار لا يتحرُخ ولا يترنُ **وَعَذَ**البَّالْلِيمُّالْ^{فِي} نُسؤَسمَ ربادةٌ على ما دُكر سن كمّت ا ـ بَيِي صِلَى اللهُ عِنْهِ وَسِلَم بِيُوْمَرُتُوجُفُ عِرْدِلُ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيبًا رِسَلَا مُخْسِعًا مَّهِيلًا سَائِلاً بَعْدَ اجْتِمَاعِه وَسُوَ مِنْ سَالَ يَمِيْلُ وأَصْلُهُ مَمْيُولُ أَسْتُثْقِلتِ الضَمَّةُ عَلَى الْيَاءِ فَلَقِلَتُ اِلِّي الْهَاءِ وحددث الواؤ ثاني المساكنيل لرددنها وفُسب الصَمَّةُ كَنْسِرةُ مُحانَسَةِ الْيَاءِ إِلَّآالْسِلْنَآالِلْكُمُ يَ اَبُلَ مكه رَسُولُاهُ ' بُو مُحمّدُ صَلّى اللهُ علله وسلّم شَاهِدًاعَلَيْكُمْ لَوْم الْنياس لما يَصْدُرُ لِنُكُمْ مِنَ الْعِصْيَان كَمَّ ٱرْسَلْنَا إِلَى فِرْعَوْنَ رَسُولَاقُ وبُو مُنوسى عند اعتسوه والشارم فَعَصَى فِرْعَوْنُ الرَّسُولَ فَاحَذْنهُ أَخَذًا وَّبِيْلًا ﴾ شَدَبُدًا فَكَيْفَ تَتَقُونَ إِنْ كَفَرْتُ مِي الدُّبِ يَوْمًا مِلْعُولَ سَنُول الله عدالة اي باي حنس معضَمُون من عداب بؤم يَجْعَلُ الْيُولْدَانَ شِيبَاكُ حَمْعُ اشْبِ مَسْدَة بؤله ولمِوْ يؤمُ الْعَمِه والاضن فني شلن شلب التعلمُ وكُسرت لمُحالسه ألب، ولندلُ في المؤم الشدلد لؤمُّ يُشتَبُ لواضي الأَطْفَالِ وَسُوَ مَجَازٌ وَيَجُورُ أَنْ يُكُونِ المُرادُ في الاب احسه إِللسَّمَآءُ مُنْفَطِّلٌ دات العطارِ اي الشعاب بِعُ لَمُنْكُ الْيَوْمُ لِنشِدَّنَهُ كَانَ وَعُدُهُ لِعَالَى للمحي، دلك البرء مَفْعُولًا، اي بُمو كانلُ لا للحالہ إِنَّ هٰذِم في الاباب المُحوِّمه تَذَكِرَةً علم لنحلي فَصَنْ شَاءُ اتَّخَذَ إلى رَبِّهِ سَبِيلًا أَمْ سُرنُما بالانِمان والعامة

ت و الله عن ال رمُسرّمّل کی اصل متنومل تھی ، تباء کو زاء میں اونا مرکردیا گیا ، یعنی س پروتی کے ناز ں ہونے کے وقت وتی کی جیبت کے خوف ہے کپڑول میں کیٹنے والے! رات کو قیام َسر نماز پڑھ گھرکم ، آوھی رات (مصفاۂ) فلیلاً سے بدل ہےاور نصف کا قلیل ہونا یوری رات کے اعتبارے ہے، یااس سے بعنی نصف ہے، بھی بھی کرے شلٹ رات تک یااس پر (دوتہائی تک) زیادہ َرے، اُو تخییر کے نے ہے، اور قر آن خوب صاف صاف اور گفیر کفیر کفیر مریز ھے ہم تم پر ایک بھاری کلام قر آن نازل کرنے وا ہے ہیں بعنی بارعب کلام یا شدید، اس لیے کہ اس میں احکام تکلیفیہ ہیں ، بله شبہ سونے کے بعد (رات) کواٹھنا قرآن فنہی کے سئے دل ورکان کی موافقت کی وجہ سے نہایت موثر ہےاور بات کوخوب والنے ورصاف کرنے والا ہے یقینا آپ کودن میں بہت تنغل رہتا ہے جس کی وجہ ہے آپ پیوٹیٹیز کو تلاوت قر آن کی فرصت نہیں ہوتی ، تواپنے رب کا نام لے ، یعنی اپنی قراءت ك شروع مين مسمر الله الوحمن الوحيم بيره اورسب تعلق منقطع كرئ عبادت مين اس كي طرف يوري طرح متوجه ہوج، تبتیلاً، بَتَیْلَ کامصدرہاں کوفواصل کی رمایت سے لایا گیا ہے، یہ تعتبل کا مزوم ہے، وہ مشرق ومغرب کا پروردگار ہے اس کے سواکوئی معبود نبیں اس کواپنا کارس زینا تو بینی اپنے تمام امورائی کوسپر دئر دو اور جو کیچھ کفار مکدایڈ ارسانی کی باتیس

کرتے ہیں آپ بھٹائیٹیوان پرصبر کریں اوروشنع داری کے ساتھا اسے الگ ہوجا ؤ کہ جس میں جزع وفزع شہو، میں تھم جہاد کا عَم نازل ہوئے سے سے کا ہے اور مجھے اور جھٹلانے والے آسودہ حال لوگوں کو چھوڑ دے (والمکذبین) کا عطف (فرنی) کے مفعوں پر ہے یا بیمفعول معنہ ہے،اورمعنی سے ہیں کہ میں ان کے لئے تمہاری طرف سے کافی ہوں اور وہ سر داران قریش ہیں ، اورانہیں تھوڑ ۔ دن اورمہلت دو ، چنانچہ کچھ بی مدت کے بعد بدر میں وقتل کئے گئے بلا شبہ بمارے پاس بھاری ہیڑیاں ہیں ، انسکسال، بسکل نون کے سرو کے ساتھ، کی جمتے ہے، اور دہجتی ہوئی آگ ہے،اور گلے میں تھنٹے والا کھانا ہے لیعنی وہ گلے میں انک جاتا ہے، اور وہ زقوم ہے یا ضریع ہے یا بہپ ہے یا آگ کے کانٹے، ند (باہر) تکلیں گے اور ند (بنچے) اتریں گے، اور وردناک عذاب ہے جومذاب نبی کریم مین تاہ کی تکذیب کرنے والے کے لئے ذکر کیا گیا ہے، بیاس سے زیادہ ہے جس روز ز مین اور بہاڑ ملنے مکیں گےاور پہاڑریت کے ٹیلوں کی ما نند ان کے جمع ہونے کے بعد اڑتے ہوئے غیار کے ما نند ہوجا نیس ئے (مھیللا) ھال میھیل ہے ہار کی اصل مھینول ہے، یاء پرضمہ قیل ہوئے کی مجدے ھاکی طرف منتقل کردیااورواؤ ٹانی،التقاءس کنین کی وجہ سے حذف ہو گیا،اس کے زائدہ ہونے کی وجہ سے اور شمہ کو یساء کی مناسبت کی وجہ سے سروسے بدل دیا گیا ،اے اہل مکہ! ہم نے تمہارے پاس ایک ایہ رسول بھیجا ہے اور ووقحد شاؤنتہا میں جو قیامت کے ون تمہارے خلاف ء و ای و ہے گاان گنا ہوں پر جوتم سے صاور ہوتے ہیں ، جبیہا ہم نے فرعون کے پاس ایک رسول بھیجا تھا اور و وموی علیجبراہ والعلا ہیں، پھر فرعون نے اس رسول کی بات نہ مانی تو ہم نے اس کی شخت بکڑ کی سواً سرتم و نیا میں کفر کرو گے قواس ون (کی مصیبت) ہے کیے بچو گے؟ جو بچوں کو اپنی ہونا کی کی وجہ ہے بوڑ ھا کرد ہے گااوروہ قیامت کادن ہے، شِیْبُ ا، اَشْیَبُ کی جمع ہےاور اصل میں میٹیٹ کے تین پرضمہ ہے باء کی می نست کی وجہ ہے سرود ۔ دیا ہے اور یوم شدید کے بار ۔ میں کہا جا تا ہے "یوم یشیب نواصی الأطفال" ایباون کہ جس میں بچوں کے بال سفید ہوجا کمیں گاور بیمجاز ہےاور بیجی جائز ہے کہ آیت میں حقیقت مراد ہو(اورجس دن میں) آسان کھٹ جائے گالیتنی اس میں اس دن شگاف ہوجا نمیں گے بےشک اس دن کے آنے کااس کا دعد ہ ضرور پورا ہونے والا ہے بلاشبہ بیدڑ رانے والی آپتیں مخلوق کے بئے نصیحت میں پس جو حیا ہے اپ رب کی طرف راہ اختیار کرے۔

عَيِقِيق الرِّكْ فِي لِيسَبِيلُ لَفِيسًارُ فَوْلِلِهُ وَالِّلْ

قَوْلَ إِنَّ اللَّهُ وَاللَّهُ مِنْ مِنْ اللَّهُ وَعَلَابِ مِ اللَّهُ وَطَابِ مِ اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّ

آب الفلائقة كيلئة قرآن مين منزمل كالفظ استعمال بوائي لبذاآب ير منزمل كالطواق يحيح بسبيلي رخم فالله تعكال في اس مين اختلاف کرتے ہوئے کہا ہے کہ مزال کا اطلاق آپ بلق فیج پر ابطور اسم درست نہیں ہے ' اس لئے کہ بیآ پ بلق فیج کی ایک وقتی حالت ہے مشتق ہے، تگریدی نہیں ہے اس لئے کہ وقتی حالت ہے بھی اسم کا احد ق درست ہے، آپ بیٹی علیہ نے حضرت علی وضحالته تعالظه كى ايك وفتى حالت ہے اسم كا اطلاق فر مايا ہے حضرت مى رضحاً كنهُ تعالظ أيك روز زمين پر لينے ہوئے تھے اور آپ

فِيْ وَلِينَ اللَّهُ بِاللَّظِرِ إلى الكُلِّ اسعبارت سَاف فيها مقصدا يكسوال كاجواب بـ

نَيِهُوْإِلَىٰ: نصف، نصف کے مساوی ہوتا ہے، ایک نصف کو دوسر نصف ہے قبیل کہن درست نہیں ہے، حال نکہ بیہاں "الّا قَليلًا يُصفَهُ " كَهَا كِيابِ-

جِنُ لَبْنِ: جواب كا محصل يد ب كه نصف كوليل ،كل ك التباري كها "يد ب العني بورى رات قيام كرنے كے مقاجمه ميں نصف شب، تیام لیل ہے۔

فَوْلِكُ ؛ نِصْفَهُ يه قليلًا عبرل عندكه لَيلًا عصطب يدكة بين عن وتين با ولي من اختياده يا كيا، نصف من نصف ہے کم میں انصف سے زیادہ میں۔

> فِيْ وَلِنَّ وَإِنَّا سَلُلْقَى عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيلًا يهجمدام بالقيام اوراس كاملت كورمين جمد معترض ي-جُولَ ؛ إِنَّ مَاشِئَةَ اللَّيْلِ امر والقيام والتي ت-

قِعُولَ ﴾ : وَطَا بَمَعَىٰ كَايِف، مِشْقَت، دشواري، ايك قراءت من وطَاءٌ، مُواطاةٌ (مفاعلة) مصدر بِ بمعني موافقت ليعني سننے کی مجھنے ہے موافقت ، کا نوں کی دل کے ساتھ موافقت ۔

> فِيْوُلِكُ ؛ جي به رعايةً لِلْفُواصِل العبارة كان في كامقصد ايك وال كاجواب ي-سَنُواكُ: تَنْتِيْلًا، تَبَتَّلَ كامصدر بلفظ مُبين ب، جَبَد مصدر بلفظ تبتّل، تَعَتَّل بونا جا ٢٠ جَجُولُتِ : جواب كاه حصل مدے كەفواصل كى رەيت كى دجەسے مصدر دوسرے باب كالايا "ما ب

فِيْ إِنْ وَهُ وَ مَلْزُومُ النَّمَتُلُ اس كامقصد بحى سوال مُدكور كاجواب ب المريبا اجواب باعتبار فظ كے باوريد باعتبار معنى ك، اس كا خلاصه يه ب تَبْتِيل جوكه بَتَّلَ كامصدر ب، بول كرمراواس ب تَبَتُّل ب، تَبَتَّلْ بَتَّلَ كا مزوم بيعي لازم بول كر مزوم مرادلي كي إوراس من كوكى قبحت بيس بي تكوّم تكريمًا، وتَعَلَّمَ تعليمًا.

فِيْوَلِكَ ؛ هُوَ رَبُّ المشوقِ والمغرب ، هُوَ كااضافهُ ركاشارهَ روياكه ربُّ المشوق مبتداء محذوف كي فبرجوني كي وجہ سے مرفوع ہے اور رکلک سے بدل ہونے کی وجہ سے مجرور بھی جائز ہے۔

فِيُوَلِكُمْ : ضريع، نـوعٌ من المشوك لا تَرْعَاهُ ذَابَّة لِحبيَّهِ الكِيتُم نَ كَانْتُ وَارْكُمَا سَ جِحْهُ وَرُبْيِل كَمَا تَا ، سوائ

——∈[زمَّزَم پِبَلتْرِدٍ]» ——

واك الدراه الشائل كل وقت تك ها تاج جب تدوي في وكل به روويش ال واوت كن را بها باتا بهاد

(ترويح الأدواح)

غَوْلَ مَن وَبِادَةً على ما دُرِكُو لِمِنْ كَذَب اللّهَ مُؤْنَدَ مِن اللّهَ الدَيْنَا الْكَالَا الْح تَك بَهُم كَ بَسَ مِذَابِكَا مُرِقَ ما يَبْ إِبِ عَدَاسًا اللّهِ مِن اللّهِ عَلَيْهِ مِن اللّهُ عَلَيْهِ مِن اللّهُ عَلَيْهِ اللّهُ عَلَيْ اللّهُ اللّهُ عَلَيْهِ اللّهُ اللّهُ عَلَيْهِ اللّهُ عَلَيْهِ اللّهُ عَلَيْهِ اللّهُ عَلَيْهِ اللّهُ عَلَيْهِ اللّهُ اللّهُ عَلَيْهِ اللّهُ عَلَيْهِ اللّهُ عَلَيْهِ اللّهُ عَلَيْهِ اللّهُ اللّهُ عَلَيْهِ اللّهُ اللّهُ عَلَيْهِ اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَلَيْهِ اللّهُ اللّهُ عَلَيْهِ اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَلَيْ اللّهُ اللّ اللّهُ الل

غُولَ ؛ يَوْهُ تَوْخُفُ يَعْ مُعَدُّوفَ مُاظِّرِفَ : وَكَ لَ وَبِهِ تَ مُسُوبِ بَ اَى الْسَفَقَّ بِهِمْ عِنْدِما مَا دُكُو يَوْمِ تَوْخُفُ غُولَ ؛ مفعول تَنَفُّوْن ، يؤما حدُف مضاف ب اتح تنفون الامنعوال بي تنفون عداب بؤم ياحدُف جاري اجهاب على معمول تنفون عداب بؤم ياحدُف جاري اجهاب الموقد المعارف الموقد الموق

غُولِيْ ؛ و سَخُورُ انْ يَكُون السُّر اذُ في الآية الحملقة "نَ مَوْمًا ينخعلُ الولْدان سَيْمًا تُهُورُ الرَّيَ وعَى بِ اور حَقِقَ مَعَى بَعِي مراوبو كَتَ بِن يَعِنْ مِنْ يَتِهَ كِي بورْ عِي بورْ عِي عِيهِ إلى عَلَيْ

تَفَيْرُوتَشِنَ

بنا أنها اللَّورَمُلُ ، جس وقت يآيت ناز ب وهِن تب يونده عاد راه رُهُ مريغ ہوئ سخه الله قال نے آپ يلوندي في الكورَمُلُ ويا اللّهِ مَا اللّهُ وَاللّهُ اللّهُ وَاللّهُ وَ اللّهُ عَلَى اللّهُ وَ اللّهُ اللّهُ وَ اللّهُ اللّهُ وَ اللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ اللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ اللّهُ وَاللّهُ اللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ اللّهُ وَاللّهُ اللّهُ وَاللّهُ اللّهُ وَاللّهُ اللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ اللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ اللّهُ وَاللّهُ الللّهُ وَاللّهُ اللّهُ وَاللّهُ اللّهُ وَ

اس آیت میں قیام کیل بعنی تبجد کی نماز کونسرف فرنش ہی نہیں کیا گیا۔ بلداس میں کم از کم ایک چوتھا بی رات مشغول رہنا بھج فرنس قرار دیا گیاہے،امام بغوی زخمگاندنمة عالیٰ روایات حدیث کی بنایر فرمات بین کهاس تکم کانفیس میں رسول امتد بیلان کانا اور صحا َ رام رصی کیا تا گئے اور است کے اکٹر حصہ کونما زنتجد میں صرف فرمات تھے حتی کہ ان کے قدم ورم کر جاتے ، ایک سال بعد ال سورت کا آخری حصہ **فاقرءُ وَا ما تیسًر** منه نازل ہواجس ہے اس طویل قیام کی یا بندی منسوخ کر دی تنی ،اورافتیا روے د ا کے گئی دری کے لئے آسان ہو سے اتناوقت صرف کرنا کافی ہے۔ (معادف)

إِنَّا سِنُكُ لِقِبِي عَلَيْكَ قَوْلًا تَقِيلًا، مطاب يدي كَيْمَ ورات ن مارُه تَعْماس لئے وياجار باہے كدايك بھارى كام؟ آپ مین تازل کرنے والے ہیں جس کا بارا ٹھانے کے لئے آپ میں کھل کی صلاحیت بیدا ہونی ضروری ہے اور ے قت ای طرح حاصل ہو شتی ہے کہ راتوں کواپنہ '' رام حجھوڑ مرنیا زے لئے انھواور آ دھی آ دھی رات یا کچھ کم وہیش عبادت میر گذاراً سرو،قر آن کو بھاری کام اس بنا پر بھی کہا گیا کہاں کے احکام پڑھلی کرنا ،اس کی علیم کانمونہ بن سردکھانا ،اس کی دعوت لے کر ساری دنیا کے متنا بلہ میں اٹھنا اور اس کے مطابق حتا کد وافکار ، اخاباق وآ داب اور تہذیب وتعدن کے یورے نظام میں انقلاب بریا کردینا،ایک ایسا کام به جس سه بزه رک بی ری کام کا تصور مجمی تبیس کیا جاسکت

إِنَّ مِناشِيعَةِ السَّلِيلِ هِنَي أَشِدُّ ، إِسْ كَالْمِيهِ مطلب توليدَ بَهُ كَدِراتُ وَعَبِادِتَ سَ تَ أَضْنَااه رومِيرَتَك أَحرُ سارِ مِنا يُولِكُا طبیعت پر بارہوتا ہے کیوں کٹفس اس وقت آ رام کا طالب ہوتا ہے اس کے بیمل ایک ایسا مجاہدہ ہے جونس کود بائے اور اس تی ہو یا نے کی بروی زبر دست تا تیم رکھتا ہے اس مجاہرہ کے بعد جوا کیٹ روحانی قوت پیدا ہو ک اور وہ اس طاقت کوخدا کا احکام میم استعمال کرے گا تو زیادہ مضبوطی کے ساتھ دین حق کی دعوت کود نیامیں نا ب کرنے کے لئے کام کرسکتا ہے۔

ووسرا مطلب پیاکہ ول وزبان کے ورمین ناموافقت پیدا کرنے کا بیہ بڑا مؤثر ذیر بید ہے کیونکہ رات کے ان اوق ت میں بندے اور خدا کے درمیان کوئی دوسرا حائل تبیں ہوتا۔

تیسر ا مطلب بیا که بیآ دمی کے ظاہر و باطن میں مطابقت پیدا کرنے کا بڑا کار مرذ راجہ ہے کیونکہ رات کی تنہا کی میں شخص اپٹا آ رام حجبوڑ کر عبادت کے نئے اٹھے گا وہ لامحالہ اخلا^{نس} بی کی بنا پرایسا کر ے گا ،اس میں ریا کاری کا سر *ے* ہ کوئی موقع ہی تہیں ہے۔

إِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَنِيخًا طويْلًا، يَهِالِ سَنِحُ عَلَى النَّهِ كَ شَلْ مِرَا بَيْنَ جِن مِن تَعْيَم تَبِيغُ اصال تَ فَعَلَ إِلَه معاشی مصالح کے لئے چین پھرنا داخل ہے، ندکور ومشاعل کی مجہ ہے دن میں خبادت کے لئے وقت نکا ناوشوار ہوتا ہے، اس ۔ ملا وہ شور وشغب کی وجہ ہے میکسوئی میں خلل پڑنے کا اندیشہ بھی رہتا ہے، رات کا وقت اس کام کے سے نہایت موز و ں ومناسر ہے الہٰذا بقدرضرورت آ رام کے ساتھ قیام ٹیل کی عبادت بھی یکسونی اوراظمینی نیبس کے ساتھ ہوجائے گی۔ فَيَا يَكِيكُا ؛ حضرات فقهاء نے فرود کارات آیت ہے تابت ہوتا ہے کہ مور ومشائ جو علیم وتربیت اور اصلاح ختل کی خدمتو میں گے رہتے ہیں ان کوبھی جیا ہے کہ بیاکا مون ہی تک محدود رھیں ، ریت کا وقت ایندیق ہے جھنبور یا ضری اور عباوت کے۔

---- ≤ المَرَم بِبَسَرَ ﴾

ف رغ رکھنے بہتر ہے،جیب کہ ملاء سلف کامعمول رہاہے،اتفاقی اہم ضرورت اس ہے متنتیٰ ہے۔

وَاذْكُر السَمَرَبِلَكَ وَتَبَتَّلُ إِلَيْهِ تَبْتِيلًا، ون كاوقات كى مصروفيتول كة كركرنے كے بعديدار شاد ب كدا ب رب کے نام کا ذکر کیا کرو،اس سے بیمفہوم خود بخو د ظاہر ہوتا ہے کہ دن میں ہر طرح کے کاموں میں مشغول رہنے کے بعد بھی اینے رب کی یاد ہے بھی غافل نہ ہوئے اور کسی نہ کسی شکل میں اس کا ذکر کرتے رہے ، ذکر لسانی کا کسی کا م میں مخل نہ ہو، صاف ظاہر ہے نہاس کے لئے کسی مخصوص وقت کی ضرورت، نہ طہارت کی اور نہ کسی مخصوص ہیئت کی اور اگر بعض او قات ذکرلسانی ممنوع ہومثلاً بیت الخلاء وغیرہ کی حالت میں تو ذکر خیالی یعنی خدا کی کا ئنات اوراس کی قندرت میں غور وفکر کر ناکسی وفت بھی ممنوع نہیں۔

و تَبَتَّلْ إليه تَبْتِيلًا، تَبَتُّلْ كَمْ عَن انقطاع اورعليحد كى كے بير، يعنى الله كى عبادت اور دعاء دمنا جات كے سے يكسو اور ہمہ تن اس کی طرف متوجہ ہو جاؤ، بیر بہانیت ہے بالکل الگ اور مختلف چیز ہے رہبانیت تو تجردا در ترک و نیا کا نام ہے جواسلام میں ناپسندیدہ چیز ہے، تبلتُ ل کامطلب ہےامورد نیا کی ادا نیکی کے ساتھ ساتھ عبادت اورخشوع وخضوع اورالتد ک طرف کیسوئی جومحموداورمطلوب ہے۔

وَاهْاجُوهُ الْمُعْمُولًا جَمِيلًا ، الله موجاة ،اس كامطلب ينبيس كدان عدمقاطعه كرك؛ يِنْ بليغ بندكر دو بلكداس كا مطلب بیہ ہے کہان کے مندنہ لگو،ان کی بے ہود گیوں کو بالکل نظرا نداز کر دواوران کی سی بدتمیزی کا جواب نددو پھر بیاحتر از بھی کسی غم اور غصےاور جھنجھلا ہٹ کے ساتھ نہ ہو بلکہا س طرح ہوجس طرح کہا بیک شریف انسان کسی بازاری آ دمی کی گالی س کرا ہے نظرانداز کر دیتا ہے اور دل پرمیل تک نبیں آئے دیتا اور سمجھ لیتا ہے کہ وہ گالی مجھے نبیں کسی اور کو دے رہا ہے، اگر چەتاپ يىختىنىنىڭ نەكورەتمام بەتون پرېيلے ئے ممل بىرائىھ پىرىجى تىكىم دىنے كامطلب بەيەپ كەتا ئىندەنجى تاپ يىختىنىلاسى طرزعمل برقائم رہیں اورادھرمشرکوں کو بیہ پیغام دینامقصود ہے کہ آپ ڈینٹٹٹٹا کا نظرانداز کرنا کچھ مجبوری یابز دلی کی وجہ ہے نہیں ہے بلکہ شرافت کی دجہ ہے ہم اس شرافت کو ہز دلی نہ مجھو۔

وَ ذَرْنِي وَالْـمُكَلِّدِينَ أُولِي النَّعْمَةِ الن الفاظين صاف اشاره الربات كي طرف هي كه مكه مين وراصل جولوگ ر سول الله يتفاعلنا كو مجتلار ب يتضاور طرح مرح كفريب و يكر بتعضبات كوابها ركر ، عوام كوآب بتفاعلنا كي مخالفت برآماده كر رے تھے، وہ توم کے کھاتے پیتے اور خوشحال لوگ تھے کیونکہ اسلام کی اس وعوت اصلاح کی براہ راست زو، ان کے مفاوات پر پڑ ر ہی تھی ، قرآن جمیں بتا تا ہے کہ بیرمعاملہ صرف رسول اللہ ﷺ بی کے ساتھ خاص نہ تھا بلکہ جمیشہ یہی گروہ ، اصلاح کی راہ رو کئے کے لئے سنگ گراں بن کرحائل ہوتار ہاہے۔

إِنَّ رَّبُّكَ يَعْلَمُ أَنَّكَ تَقُوْمُ أَدُلَى اَقَلَ مِنْ ثُلُثُي الَّيْلِ وَنِصْفَة وَثُلْتُهُ بِالْحِرِ عَطَفٌ عَلَى ثُنثي وباستسب - ﴿ (مَّزُم ہِبَاشَرُ ﴾ -

عطف على أدُني وقِيَامُهُ كَذَلِكَ يَحَوُم أَسِرَ لِهِ أَوْلَ السُورةِ. وَطَأَيِفَةٌ مِّنَ الَّذِينَ مَعَكُ عَطُف على ضَمِير تَغُوُّهُ وَحَازَ مِنْ غَيْرِ تَاكَيْدِ لِلْفَصْلِ وقِيامُ طَائِعةٍ مِنْ اصْحَامَ كَدَلْكَ لِشَمْنِي بِهِ وَمُسْهُمْ مِنْ كَانَ لاَ يَذُرِي كم صلى من اللِّيلِ وَكُمْ لَتَى مِنْهُ فَكَانِ نَغُوْمُ اللَّيْلِ كُنَّهُ الْحَتِياتُ فِقَامُوْا حَتَّى الْتَفحتُ اقْدَامُهُمْ سَنَّةُ او اكثر وحقت عنهُمْ قال اللهُ تعالى وَاللَّهُ يُقَدِّرُ يُخصى الَّيْلَوَالنَّهَارُ عَلِمَ أَنْ مُحقَّةٌ من الثَّقيُلةِ وَاسْمُها مخذُوف اي انَهُ لَأَنْ تُحْصُوهُ أي الدين لِتقُوله في اليما يحتُ النباءُ فنه الا بقيام حمِيْعه ودلك يَشُقُ عَليْكُمُ فَتَابَ عَلَيْكُمْ رَحْعَ سَكُمْ إلى التَحْمَيْفِ فَاقْرَءُ وَامَاتَيَسَّرَمِنَ الْقُرْانِ في الصّلاة مَانُ تُصَلُّوا ساتَيسَ عَلِمَ أَنْ سُحِمَ فَةٌ مِن الثَنْفِيهِ ايْ اللهِ سَيَكُونُ مِنْكُمْ شَرْضَى وَاخْرُوْنَ يَضْرِبُوْنَ فِي الْاَرْضِ يُسامرُوْن يَبْتَغُونَ مِنُ فَضْلِ اللَّهِ يَصُنُبُون مِنْ رَرُقَهُ بِالنِّجَارِةِ وَعَيْرِهِا وَالْخَرُونَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۗ وَكُلِّ مِن العرق الثلاث يشقُّ عليهم ما ذكر في قبم اللِّين فحقَف عَمْهُمْ بِقَيَامٍ مَا تَيسُر مِنْهُ ثُمَّ نُسِح ذلك الصَّلُوةَ الْمَعْرُونَ فَاقْرَءُوا مَاتَيَسَرَمِنْهُ كم عَدَم وَاقِيْمُوا الصَّلُوةَ المَعْرُوسَة وَاتُوا الزَّكُوةَ وَاقْرِضُوا اللَّهُ بِ لَ يُسْفِقُوا مِ سِوى المِفْرُوضِ مِن الْمَالِ في سَيْلِ الْحَيْرِ قُرْضًا حَسَنًا عَنُ طَيْبِ قَلْب وَمَا تُقَدِّمُوا لِأَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرِتَجِدُوهُ عِنْدَاللهِ هُوَخَيْرًا مِمَا حَسْنَهُ وَسُو عَنْسُ وس نغده واز لَمْ يكس ع مَعْرِفَةُ يِشْسُهُمَ لانْمَسَاعِهُ مِن التَغْرِيْمِ وَآعُظُمَ آجُرًا وَاسْتَغْفِرُوااللَّهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَفُورٌ رَّحِبْ مُرَّا

میں میں ہے۔ پر جی بھی ایس میں ارب بخو نی جانتا ہے کہ آپ بلق فیٹیز اور آپ بلق فیٹیز کے ساتھیوں کی ایک جماعت قریب دو تہانی رات کے اور آ دھی رات کے اور ایک تہائی رات کے قیام لیل کرتی ہے (ٹُلٹہ) جرکی صورت میں ٹُلُٹی پرعطف ہوگا اور نصب كي صورت مين أذيني برعطف بو كااورآب كا قيام ليل اول سورت مين مذكور كيم طابق بي تفا، طبائفةٌ كاعطف تَسقُومُ كالتمير يرب، اورتصل واقع بونے كى وجه ہے بغيرتا كيد كے بھى (عطف) درست ب، اورآب الفائقة الحاج الصحاب لصحالت العالم میں ہے ایک جماعت کا قیام آپ یکھنٹیو کی اقتداء کے طور پرای طریقہ پرتھا،سی بہ نصفی میکالٹیٹی میں ہے بعض حضرات ایسے بھی تھے کہان کواس بات کاعلم نہیں ہوتا تھا کہ نتنی رات نماز میں گذر کنی اور متنی باقی رہی جس کی وجہ ہےا حتیاط پوری رات تہجد کے کئے گھڑے رہتے تھے،وہ ای طریقہ پرایک سال تک یا اس سے زیادہ عمل ہیں ارہے حتی کہان کے قدم متورم ہو گئے ،تو اللہ تعالیٰ نے ان کے لئے شخفیف فر ما دی اللّٰہ تع کی نے فر مایا اور رات کا بوراا نداز واللّہ ہی کو ہے رہیمی وہ جانتا ہے کہتم (مقدار وقت) کو ضبط نہ کرسکو گے کہاں میں بقدروا جب قیام کرسکو، مگراس صورت میں کہ بوری رات کھڑے رہو، اور بیتمہارے لئے وشوار ہوگا. تواس ہے تمہارے حال پرعنایت کی لیعنی تم کوسہولت کی طرف لوٹا دیاسو (اب) تم سے جتنا قر آن نماز میں آسانی سے پڑھاج

ئے پڑھ یا کرو بیٹنی جس قدرا کہان ہونماز پڑھ یا کرو، اس کو پہلی معلوم ہے کہتم میں ہے بعض آ دمی یکار ہواں کے (اٹ) مخففہ من الثقیلہ ہے بینی امّاہ اور جیضے تلاش معاش کے ہے ملک میں سنر کریں گے لینی تجارت و نیم ہ کے ذراعیدرزق طاب کریں گے، •ر بعضے المد کی راہ میں جہاد کریں گے مذکورہ تینوں فریقوں میں ہے ہرائیب ہر، مذکورہ طریقتہ پر قیام کیل دشوار ہوگا،تو متدتعا ہی نے جندر سبوات قیام کے ذریعیان پر تخفیف فر مادی ک^{یر} اس کو بھی نٹی وقت نماز کے ذریعیمنسوخ فرمادیا سوآ سانی ہے جتنا قر آن (نماز میں) تم ہے پڑھا جا سے پڑھانیا کرو جیسا کہ او پر کذرا ، اورفونس نما زئی یا بندی رکھواورز کو قادیتے رہواورالقد کواکیجی طرح خوش و بی سے قرنش دواس طریقنہ پر کے فرنش مقدار کے علہ وہ مال میں سے خیر کے راستوں میں خریج کرو، اور جو نکیب تمل اپنے سے آ ک 'جيجو بَاسَ واللّذِي _عِي سَ^{يَجْنِي} كراس سے جوتم نے جيجھے مجھوڑا ہے احجااورثواب ميں بڑا پاؤ ڪَ ، هُسو صمير تصل ہے اوراس ٥ ما بعداً برچەمعرفەنبىل ہے مگرمث بەمعرفە ہے اس كے كەرەتعرىف ہے متنع ہے اورانقد ہے ً من دمعاف كراتے ربوب شك الله تع الی مونین کیلئے غفورورجیم ہے۔

عَجِفِيق بَرَكَدِ فِي لِيَسْبَيُ لَ لَقَالِيَا يُوْتَفِينِا يُرَى فُوَالِلٌ

فِيْوَلْنُ ؛ أَنَّ رَبِّكَ يَعْلَمُ أَنَكَ نَفُوْمُ أَذْنِي أَلْحَ بِيَابِتَدَاءَ وَرَتَ مِنْ مِيانَ مَرَوَةً م "قُمِ اللَّيْلِ اللَّا قَلْيُلاً " كَنَا تَكُ أَنْ تَهِيم ہ،اصل ناتخ "فَتَابَ عَلَيْكُمْ" ہے۔

قِحُولِ مَنْ اللَّهِ عِنْ ثُلَثِي اللَّهْ إِلَى وَعَضَعَةُ الرَّاهِ مَطَابِ بَرُكَتِي اربِ آبِ مِهِ المَّيْنِ ف تُاٹ رات ہے آم قیام کیل کو جانتا ہے ، ابتدا مورت میں آپ کودونگٹ شب ہے کم اور نصف شب ہے آم قیام بیل میں اختیار ا ك تقده اوريبان و أفسى من ثلثه مست معنوم: ورباب كـ ثاث مه مم شب مين بهى اختيارتفاه الأندايك وت نيس باوريه صورت نِصْفِه جرك قراءت كي صورت ميں ہوگ ۔

جَيِّنِ النِّنِيِّ: جواب كا حاصل يد ب كداد في ستر تقريب مراو ب يعني و ديانتا ہے آپ جين نتر ب روتها في اور نصف كاور قات شب کے قریب قیام لیں کو، اس کواونی ہے تعبیر کر دیا ہے اس نئے کہ مذکورہ مقداریں امورظانیہ تخمینیہ میں ہے میں اور صحابہ رصوافية نعالى اور تب وليونية باس كملكف تتعاور نداس زمانه مين ايها كوكى نظام تها كه تُصيك تُعيك اوقات ك عيين كى جاسك اسك کہ بینہایت دشوار اورمشکل کام ہے جو کہاس ترقی یافتہ دور میں بھی بہت^{مشک}ل اور دفت طلب ہے جب کہاس زمانہ میں آمزی ، نیبر و بھی نہیں تھیں صرف ستاروں کی رفق رے وقت کا قیمین کرتے تھے۔

فِحُولَ يَهِ وَمَا لَعَصِبَ مِهِ مِنْ صَفَّهُ كَيْ وَمِهِ يُ قُرِاءَتَ كَابِيانَ بَيْصِبِ كَيْصُورت مِينَ الدبي برعطف بوگااور تقوم كامفعول جوگا ، عنی : ول گ تقو a نصفه تارةً وَ ثُلُنهُ تارةً اُحری نصب کی صورت ابتداء سورت میں ویئے گئے تھم کے مطابق جوگا۔

فِيُولِنَى ؛ وقيامُهُ كدالك محوما أمر به آپ مونية كائه لرح قيم اوب ورت بيل بيان مرده تلم كمطابق بوگا، قيامُهُ كذالك مبتدا باور مَا أُمِرَ بِهِ اول السورة فبرب_

فَيُولِنَّى : وَطَائِفةً مِن الَّذِينَ مَعَكَ أَسَ كَا تَقُوْمُ كَانْمِيرِمر فُونَ مُتَعَمِل يرعطف ب-

میکوان کے ضمیر مرفوع متصل پر عطف کے نے قامد ہ ہے کہ ضمیر مذکور بر عطف درست ہونے کے لئے ضمیر منفصل کے ذریعہ تاکید ضروری ہوتی ہے حالانکہ یہاں ایسانہیں ہے۔

جَجُولَ بِنِي: جواب كا عاصل يہ ہے كه تعمير مرفوع متصل پر مطف كرنے كے لئے دو باتوں بيں سے ايك كا ہونا ضرورى ہے ا الصمير مرفوع متصل كى تاكيد تعمير مرفوع منفصل ك ذريد الى تى ہو الله عاموف اور معطوف مديد كے درميان فصل ہو يہال دوسرى صورت يعن فصل موجود ہے ، اوروہ اذہبى مِن تُلْني اللّذِل و مصفه و ثلنه ہے، ہذا عطف درست ہے۔ يہال دوسرى صورت يعن فصل موجود ہے ، اوروہ اذہبى مِن تُلْني اللّذِل و مصفه و ثلنه ہے ، ہذا عطف درست ہے۔ فَجُولَ مَن مُن فَصَلَ ، اى صفعير فَصَلِ .

قِخُولَنَى : وما بغدَهُ وإِنْ لَم يكُن معرفة يُشْبِهُها المح يَرْسَى أيد والم تقدركا جواب بـ

نَیْهُوْاِلَّ: سَمیرفسل دومعرفول کے درمیان اولی جاتی ہے نہ کہ ایک معرفہ اور ایک تکرہ کے درمیان اور یہاں ایسا ہی ہے اس کئے کہ اللّٰه معرفہ ہے اور خَیْرًا ککرہ؟

جِجُولَ شِيِّ: خَيدًا خُالصَ نَكرونبيں ہے بلدمثا ہمعرفہ ہاں لئے کداس پرحرف تعریف الف ادم داخل نہیں ہوتا اگر خالص فکر د ہوتا تو حرف تعریف کا داخل ہونا تھے : وتا الہٰدا دونوں کے درمیان تنمیر فصل اد ناجا سز ہے۔

لِّفَسِّلُولِيْشِ الْحَالِقِينَ الْحَالِقِينَ الْحَالِقِينَ الْحَالِقِينَ الْحَالِقِينَ الْحَالِقِينَ الْحَالَ

ان رنگ یغلم انگ تفوم آذنی، جب سورت کے آناز میں نسف شب یاس ہے کم یازیادہ قیام کا حکم دیا گیاتو نبی پیشنا اور آپ اور آپ بین فیق کے ساتھ صحابہ بصوف نعافی نعی کا کید جماعت رات کو قیام کرتی تھی ، بھی دو تہائی ہے کم بھی نصف رات اور بھی ایک تہائی، جیسا کہ یہاں ذکر ہے، لیکن ایک تو رات کا بیستقل قیام نب یت گرال تی دو سرے نصف یا ثعث یا دو ثعث شب کے قیام کا تعین اس ہے بھی زیادہ مشکل تھا، اس لئے ابند تو لی نے اس آیت میں شخصے کا تھم نازل فرمادیا جس کا مطلب بعض کے نزد کیکٹرک قیام کی اجازت ہے اور بعض کے نزد کی مطلب ہے ہے کہ فرض کو استی بیس تبدیل کردیا گیا، اب بیندامت کے لئے فرض ہے اور زنبی کے لئے اور بعض کہتے تیں کہ پیخفیف صف امت کے لئے ہے نبی بین تبدیل کردیا گیا، اب بیندامت کے لئے فرض ہے اور زنبی کے لئے اور بعض کہتے تیں کہ پیخفیف صف امت کے لئے ہے نبی بین تبدیل کردیا گیا، اب بیندامت کے لئے ہے نبی بین تبدیل کردیا گیا، اب بیندامت کے لئے وض ہے اور زنبی کے لئے اور بعض کہتے تیں کہ پیخفیف صف امت کے لئے ہے نبی بین تبدیل کردیا گیا، اب بیندام تھا۔



مَنْ لَا لَا يُرْبِيكُ مِنْ الْمُنْ اللَّهُ اللَّهُ الْمُنْ اللَّهُ ال

سُورَةُ الْمُدَّتِرِ مَكِّيَةٌ خَمَسٌ وَّخَمَسُونَ آيَةً.

سورہ مدشر کی ہے ، پین آیتیں ہیں۔

بِسُ حِراللَّهِ الرَّحْ مُن الرَّحِبَ حِر آياً يُهَا الْمُدَّثِّرُ النَّبِيُّ وَاصْلُهُ المُتَدَثِّرُ أَدْغِمَتِ التَاءُ فِي الـدَّالِ أَىُ الْـمُتَلَفِّفُ بِثِيَابِهِ عِنْدَ نُزُولِ الوَحْي عَلَيْهِ **قُمُوفَانَذِر** ۚ خَوِفُ اَهَلَ مَكَّةَ بِالنَّارِ إِنْ لَمْ يُؤْمِنُوا **وَرَبَّكَ فَكَيِّرُهُ عَظِمْ عَن اِشْرَاكِ المُشْرِكِيْنَ وَثِيَابَكَ فَطَهِّرَهُ عَنِ النَجَاسَةِ او قَصِرُهَا خِلَافَ جَرِّ العَرَبِ ثِيَابَهُمْ** خُيَلَاءَ فَرُبَمَا أَصَابِهَا نَجَاسَةً وَالرُّجُولُ فَسَّرَهُ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم بالاوثان فَاهْجُرُكُ أَيُ دُمُ عَلَى هَجُرِهِ **وَلَاتَمْأُنُ تَسْتَكُثِّرُكُ** بِالرَّفُع حَالٌ أَى لا تُعْطِ شَيْئًا لِتَطُلُبَ أَكْثَرَبِنُهُ وَهذَا خَاصٌّ بِه صلى الله عليه وسسسم لِانَّسة مَا مُسورٌ بِأَجْمَلِ الْاخْلَاقِ وأَشُرَفِ الْأَدَابِ **وَلِرَبِّكَ فَاصْبِيرُ ۚ** عَسلى الْأَوَاسِرِ والسُّوَاهِى <u>فَإِذَا نُقِرَفُ النَّاقُورِ ﴿</u> نُفِخَ فِي الصُّورِ وهُوَ القَرُنُ النَفَخَةُ الثَانِيَة فَكَالِكَ أَيْ وَقُتُ النَقُرِ لَيُعَمِينٍ بَدَلٌ مِمَّا قَبُلَهُ المُبُتَدَأُ وبُنِيَ لِإضَافَتِه إلى غَيْرِ مُتَمَكِّنِ وخَبَرُ المُبتَدَأِ يَتَوْجُرَعُسِيْرُ ۖ والعامِلُ فِي إِذَامَا دَلَّتُ عَلَيْهِ الجُمُلَةُ آيِ اشْتَدُّ الاَسُرُ عَلَى الْكُفِرِيِّنَ غَيْرُيِسِيْرِ® فِيْهِ دَلَالَةٌ عَلَى أَنَّهُ يَسِيْرٌ عَلَى المُؤْمِنِيْنَ اى فِي عُسْرِه ذَلَالَةٌ عَلَى أَنَّهُ يَسِيْرٌ عَلَى المُؤْمِنِيْنَ اى فِي عُسْرِه ذَلَالَةٌ عَلَى أَنَّهُ يَسِيْرٌ عَلَى المُؤْمِنِيْنَ اى فِي عُسْرِه ذَلَالَةً أَتُرُكُنِي **وَمَنْ خَلَقْتُ** عَطْفٌ عَلَى المَفْعُولِ او مفْعُولٌ مَعَهُ **وَجِيْدًا ۚ ۚ** حَالٌ مِنْ منْ او مِن ضَمِيْرِه المَحُذُوب سَنْ خَلَقُتُ اى مُنْفَرِدًا بِلا أَهُلِ ولَا مَالِ وهُوَ الوَلِيَدُ بَنُ المُغِيْرَةِ وَ**َّجَعَلُتُ لَهُ مَالَاهُمَّمُ دُوَدًا** ۚ وَاسِعًا مُتَّصِلًا سِنَ الـزّرُوعِ والـضُرُوعِ والبِّجَارَةِ **قُبُرُانٌ** عَشَـرَةً اواَكُثَرَ شُكُّودًاكُ يَشُهَـدُونَ الـمَحَافِلَ وتُسْمَعُ شَهَادَتُهُمُ وَّمَهَّدُتُّ بَسطَتُ لَهُ فِي العَيْشِ والعُمُرِ والوَلَد تَمْهِيدًا اللَّهُ تُكَرِّطُمَعُ أَنْ أَزِيْدَ أَكُلًا لا أَرِيدُه عَلى ذلِكَ إِنَّهُ كَانَ لِإِيٰتِنَا أَى القُرْآنِ عَنِيْدًا ﴿ مُعَانِدًا سَأَرْهِفُهُ أَكَلِفُهُ صَعُودًا ﴿ مَشَقَّةُ مِن العدابِ أَو جَبَلًا مِن بَار يَضْعَدُ فِيهِ ثُم يَهُوى أَبَدًا لِ**أَنَّهُ فَكُرُّ** فِي ما يَقُولُ فِي القُرُانِ الَّذِي سَمِعَهُ مِن النّبِي صلَّى اللهُ عليهِ وَسَلّم **وَ قَدَّرَ** ﴿ وَ عَنْسِهِ ذَلِكَ فَ**فَيْرَل**َ لُعِنَ وَعُذِبَ كَ**كُنْكُ قَدَّرَ** ۚ عَلْى أَي حَسَارِ كَانَ تَفْدِيُـرُهُ

تُنُمَّرُقُتِلَكَيْفَ قَدَّمَ الثُّمَّرِنَظُرَا في وحوه قوله او فيما يفدخ له تُنَمَّرَعَكِسَ فَسَمَ وَخيهَ و كَمَعه مسَا مَمَ يَنُولُ **وَبُسَرَ** ﴾ راد في الفلص والتُلوح **تُحَرَّادُبَرَ** عن الايمان وَ**الْسَتَكُلُبُرَ** ۗ نكتر عن الناع اللَّبي مملّى الله عنيه وسلم فقال بيماحه - إن م للأالسِحرُ يُؤْثُرُهُ لِلمل عن السحره إن م هُذَا إِلَّاقُولُ الْبَسْرِ ﴿ كَمَا قَالُوا أَمَا يُعَلَّمُهُ مِسْرٌ سَأُصُلِيْهِ أَدْحِنُهُ سَقَرَ ﴿ حَهَمَ وَمَا أَدْرُوكَ مَا سَقَرُ ﴿ نغصية لشابها لَاثُنْقِي وَلَاتَذَرُا شبئاسل لحم ولاحضب الالفلكنبه ثمة بغؤه كما ال لَوَّاحَةُ لِلْبَشِينَ ۚ بُحْرِقَهُ لِطاهِرِ الحلد عَلَيْهَا رِّسُعَةً عَشَى اللهِ مِن مَا حَرِيْهِا قال مُعَثُو الكُفارِ وكال قوت شَدِيْدِ الباس أَنَا أَكْفِيْكُمْ سَبْعَةَ عَشَرَ وَاكْفُوبِي اللَّهُ أَيْنِي قَالِ تَعَالَى وَمَاجَعَلْنَآ أَصْحَبَ النَّارِ الْأَمَلَيْكَةُ ۗ ال ولا يُنِفُ قُنُونَ كَمَا يَتُوعَمُونَ وَمُّمَاجِعَلْنَاعِدُّتَهُمْ دَلَكَ الْكَفِتْنَةُ صَلاًّ لِلْلَّذِيْنَ كَفُرُوا إِن يَفُولُوا لَم اللَّهِ اللَّهِ مسعة عشر النَسْتَيْقِنَ لِيستني الَّذِيْنَ أُوْتُوا الْكِتْبَ اي اليهادِدُ مسدق النّسي هي كؤلهم نسعه عشر المُوافق لما في كتنهم وَيُزْدَادَالَّذِيْنَ امَنُوًّا سِن اغر الكناب إِيْمَانًا تصدينًا لمُوافِعه ما التي له السي سمى الله عميه وسلم لما في كتابيم قُلاَيُرْتَابَ الَّذِيْنَ أُوْتُواالْكِيْبُ وَالْمُؤْمِنُونَ مِن عَبْرِهِمْ في عدد السلائكة وَلِيَقُولُ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ منتُ مالمدينة قَالْكَفِرُونَ مند مَاذَآ ارَادَ اللهُ بِهذَا العدد مَنَ الله ستمؤة لعبرات بديك وأغيرب حالا كلألك اي مثل اضلال لمبكبر هذا البعدد وهُدي لمتناف يُضِلُّ اللهُ مَنْ يَتَمَاءُ وَيَهُدِّ فُ مَنْ يَتَمَاءً وَمَايَعَلَمُ جُنُودَ رَبِكَ السلائِ في فَوَجِه واحواجه إلَّاهُوَ وَمَاهِيَ اي سنز اللَّاذِكُرٰي لِلْبَشِّرِ الْ

مشمکن کی طرف اس کی اضافت کی وجہ ہے تی ہے ، اور مبتداء کی خبریہ و تھ عسیسر ہے اور إِذَا میں عامل وہ ہے جس پر جملہ (جزائيه) ولالت كرربام، اور (مدلول) إشتد الآمرُ ہے جوكافروں ير آسان ند ہوگا أن ميں اس بات پر ولالت ہے كه وہ مومن کے لئے آسان ہے لیعنی وہ دن اپنی عسرت کے باوجود مومنین کے لئے عسیر نہ ہوگا، مجھے اور اسے جس کو میں نے اً بیا بیدا کیا ہے جیموڑ دے (وَمَنْ خَلَقْتُ) کا مطنب دریتی ئے مفعول پر ہے یا مفعول معذ ہے، (وَ حَیْدًا) مَنْ سے یا من كى طرف اوئة والى شمير تحذوف سے حال ب (اى حلقتة) و نجيدا معنى يس منفر دائے بيعنى بلا اہل اور بلا مال کے پیدا کیا ،اوروہ وسید بن مغیر ہمخز ومی ہے ،اورا ہے میں نے بہت سامال دے رکھا ہے جو کہ بھیتی اور جانو راور ماں تجارت پر مشتماں ہے اور جانس ہاش ہیں یا اس ہے زیادہ فرزند بھی دیتے جومحفیوں میں جانسر رہتے ہیں اوران کی شہادے سی جاتی ہے اور میں نے اسے میش میں اور تمریمیں اور أولا دہیں بہت آجھ شاد کی دے رحمی ہے پیمر بھی اس کی جا ہت ہے کہ میں ، سے اور زیادہ دول، ہر کزنہیں! میں اس سے زیادہ نہیں دول گاوہ ہوری آیتوں قرآن کا دنتمن ہے میں اسے عنقریب مذاب کی ایک بڑی مشقت میں ڈالوں گایا آ گ کے بہاڑ پر چڑھا ؤل کا جس پروہ ہمیشہ جمیش چڑھتااتر تارہے گا،اس کو غو روفعر کرنے کے بعد تبجویز سوجھی اس کے لئے ہوا کت جو ملعوان اور معذب ہو ، میسی تبجویز سوجھی ۱۱ ایعنی کس طر ٹ کی تبجویز سونیمی ، وہ بچر غارت ہوئیسی تبحویز سوچھی ؟ ۱۱ پچر اس نے اپنی قوم کی طرف ویکھی یاسو دیا کیاس طریقہ ہے اس میں عیب کا لے! پھر اس نے مند بنایا اور بات کہنے کے منه سَیمْ ا، (پھر) اور زیاد ہ مند بنایا اور بگاڑا، پھروہ ایمان سے چھپے ہٹ یا ، اور 'بی بلان تنایج کے اتباع سے تکمیر کیا کھراس نے بات کبی تواس نے کہا بیتو سے سے چد آتا جادو ہے اور بیتو تحض انسانی کا م ہے جبیبا کہانہوں نے کہا کہاس کو کوئی بشر سکیں تا ہے میں اس کو نقریب جہنم میں داخل کروں گااور تحجیے کیا خبر کہ جہنم کیا چیز ہے؟ ابہا مرجہنم کی تعظیم شان کے لئے ہے، "پوشت اور رگ پیٹول ہے نہ آچھ باقی رہنے ویں ہے اور نہ جھوڑتی ہے تگر بیا کہاس کوسو خنة کردیتی ہے چھروہ سابقہ صات پر ہوجا تاہے اوروہ کھال کو تجسسادیتی ہے بیخی ظام جید کوجا! کرر کھو یتی ہے اور اس پرانیس تُمران فرشتے مقرر ہیں بعض کفار نے جو کہ طاقتو راور ہنت ً سرفت والا تھا کہا ستر ہ کے لئے میں (اکیلا) کا فی ہوں گا، اور دو ہےتم میری مدد کرنا، اور ہم نے دوزخ کے تگران سرف فر شنتے رکھے ہیں لیعنی بیان کے مقابلہ کی طاقت نبیل رکھتے جبیبا کہ ان کا خیال ہے اور ہم نے فرشتوں کی ندکورہ تعداد کا فروں کی آز ہائش کے لئے رکھی ہے ، ہایں طور کے انہوں نے کہا کے فرشتے انیس ہی کیوں ہیں؟ تا کہ اہل کتاب پر جو کہ یہود ہیں فرشتوں کی تعداد کے انیس ہونے میں آپ ملائلتین کی صدافت فل ہر ہوجائے اس لئے بیتعداداس تعداد کے مطابق ہے کہ جوان کی کتاب میں ہے اور تا کہ اہل ۔ تباب میں سے مومنین کا ایمان اس تعداد ہے کہ جوآ پ جھھٹی نے بیان فر مانی اس تعداد کے مطابق ہونے کی وجہ ہے جو ا ن کی کتاب میں ہےاور زیاوہ ہوجائے ،اور مومنین اور اہل کتاب ونیہ وشک نہ کریں ، اور مدینہ کے وہ لوگ جن کے واوں میں مرض شک ہےاور مکہ کے کا فر تہیں کہاس تعداد کے بیان کرئے میں انتد کا کیا مقصد ہے؟ (اس بیان تعداد کو) اس کی غرابت کی وجہ ہے اس کا نام ثل رکھا ہے اور مثلاً حال ہونے کی وجہ ہے منصوب ہے اور اس ظرح یعنی اس عدد کے منکراور اس کی تقیدین کرنے والے کے مثل ، اللہ تعالیٰ جس کوچا ہتا ہے گراہ کرتا ہے اور جس کوچا ہتا ہے ہدایت ویتا ہے اور اس کی تقید اور اس کے علاوہ کوئی نہیں جانتا ان کی قوت میں اور تعداد میں اور بیہ دوز نے تو بی آدم کے لئے سراسر نصیحت ہے۔

عَجِقِيق الرِّكِ لِيسَهُ اللَّهِ الْفَيْسِينَ اللَّهُ اللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ اللَّلْمِلْمِلْمِلْمُلْمِلْمِلْمِلْمُلْمِلْمُلْمِلْمُلْمِلْمُلْمِلْمُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ ال

قِیُولِ آنَیٰ: فَمْر، فَمْرِ کَمْعَیٰ خُوابِ گاہ وغیرہ سے اٹھنے کے بھی ہیں اور کسی کام کوشروع کرنے کے بھی ہیں یقال فُمٹ بکذا میں نے فلال کام شروع کردیا۔

قَوْلَى ؛ وَالرَجْزَ، راء كَضمه اوركسره كَساتَه زَاء، سين عبدلى بونى ب، اصل مين رجسٌ بِمعنى ناپاكى، كندگ، بت، كنه وغيره، جيباكه اللدتن لي كِتُول "فَاجْتَنِبُوا الرِجْسَ مِنَ الْأَوْثَانِ.

فِيُولِكُ ، بَدَلٌ مما فَبْلَهُ يعنى يَوْمَنِذِ ، ذلك اسم اشاره عبدل عد

فَيْ وَلَكُ ؛ المبتداء يه مِمَّا قبلة من مَا كابيان بين يَوْمَنِذِ، ذلك يبرل بجوكمتبداء ب-

فَيُولِكُمُ ، بَيْنَ لِإَضَافَتِهِ الَى غير مَعْمَنِ لِينَ يَوْمَ مِنْ ہے غير تَمَكَن لِينَ إِذْ كَاطر ف مضاف ہونے كى وجہ ہے ، يَوْمَنِذٍ كَ تَوْيَن جَمَلَهُ مَحْدُوف كَ يُوْسُ مِيْسَ ہِ اى يَوْمَ إِذْ نُقِرَ في الغاقور .

قِحُولَى ؛ والعامل فى إذا، ماذكَتْ عليه الجملة ، لين إذا نُقِرَ فى الغاقور بل إذا كاعال والعلى مذوف ب في إذا يُقِرَ في الغاقور بل إذا كاعال والعلى مخذوف ب بس يرجمد جزا تيدين فَدالِك يَوْم عَسِيرٌ دلالت كرر با باوروه عال اشتَدَّ الْامُو ب، تقديم ارت بيب اشتَدَّ الامر اذا نُقِرَ فى الغاقود .

قِحُولَ الله على المفعول يعنى ذَرْنِيْ كَا يَاء بِرَا يَكُرَ مُفعول معة بَ يَعِيْ وَمَنْ خَلَقْتُ مِن وَاوْ بَمعَنَ مَعْ بِ-قِحُولَ الله على المفعول يعنى وَحِيْدًا يا تومَنْ عالى الحلقتُ كَاهمِيرِهِ المحذوف يعنى وَحِيْدًا يا تومَنْ عال بالله يا خلقتُ كَاهمير محذوف ساحال بالله كالله الله على الله عنه الله ع

قِوَلَى : لا تُنقِى ولا تَذَر وونول جملول كامنهوم ايك بى بي عطف تاكيد كے لئے بـ وقول مَن عَيْرِهِمُ اس كاضا فه كامقصد، اعتراض تكراركود فع كرتا ہـ

اعتراض : وَيَدْدَادَ الَّذِيْنَ امَنُوا شِ اللَّ كَابِ مِن عَمُونِين مرادين اور وَلَا يَوْقَابَ الَّذِيْنَ أوتوا لكتاب

﴿ (مُكْزَمُ بِبَكِلشَ ﴿] >-

ے مرادوہ اہل کتاب ہیں جوالیمان ہیں لائے اور والمحقومنون سے پھروہ اہل کتاب مراد ہیں جن کا بیان شروع میں ہوا ہذا بیہ تکرارے، مسن غیسو هسر کہدکراس اعتراض کو دفع کر دیا، دفع کا خلاصہ بیہے کہ اول سے مونین اہل کتاب مراد ہیں اور ثانی الممقومنون سے غیرابل کتاب مراد ہیں۔ المقومنون سے غیرابل کتاب مراد ہیں۔

هِ وَلَهُ : بِالمَدِينَةِ، أَيْ كَانَـنَا بِالمَدِينَة بِيَ اللهِ مِنْ مِنْ مُنْ فَصِيمَ كَاوِدِيهِ مِ كَهُ فَق نفاق نَهِي تَعَاد

فَيْحُولْنَى ؛ وَهَدْيَ، هَا كافت اوردال كاسكون نيزها كاضمهاوردال كافتح دونول جائزين - (صادى)

ؾٙڣؚٚڽؙڒۅ<u>ؚ</u>ڒۺۣٛڕؙڿ

نشانِ نزول:

بنائیگا المستدید (الآیة) سورهٔ در قرآن کریم کی ان سورتوں میں ہے ہوزول قرآن کے بالکل ابتدائی دور میں نازل ہوئی ہیں ،ای لئے بعض حضرات نے اس سورت کوسب ہے پہلے نازل ہونے والی سورت بھی کہا ہے گرروایات صحور معروف کی رو ہے سورهٔ اقراکی مسالم و بعد میں ،ابتدائی آیات کا سب ہے پہلے نزول ہوا ہے، فتر ہو وی کے تین سالم ذور اندے بعد سب ہے پہلے نازل ہونے والی سورة المدرثر کی فاہ جو تک ، کی آیات میں ،فتر ہو وی کی وجہ ہے آپ بی ان کی اور کہ بیدہ فاطر رہتے ہے بہلے نازل ہونے والی سورة المدرثر کی فاہ جو تک ، کی آیات میں ،فتر ہو وی کی وجہ ہے آپ بی ان کی چوٹی ہے گر کر اپنی جان قربان سے ،بعض اوقات میں ہیا ڈکی چوٹی سے گر کر اپنی جان قربان کردیں گر جرئیل امین ظاہر ہوتے اور فرماتے آپ بی بی اللہ کے رسول میں ، اس ہے آپ بی بی اور اضطرافی کیفیت دور ہوجاتی۔ (این جوری)

ای زمانہ فترت کے آخریں امام زہری کی روایت کے مطابق یہ واقعہ پیش آیا کہ ایک روز آپ یفتی ہیں کمی جگہ تشریف نے جارہ ہے تھا آپ بھوں ایک آواز ٹی تو ادھراُدھر دیکھا گر پھونظر نہ آیا جب آسان کی طرف و یکھ تو وہی فرشتہ جو غار جراء میں سور وَ اقر اُکی آیات لے کر آیا تھا وہی آسان کے نیچ فضاء میں ایک معلق کری پر ہمیضا ہوا ہے، اس کو اس حال میں دیکھ کر وہی رعب و ہیبت کی کیفیت طاری ہوگئ جو غار جراء میں سور وَ اقر اُکی آیات نازل ہونے کے وقت ہوئی تھی ہخت سر دی اور آپ کی گئی کے احس سے، آپ فیل کھی ، خت سر دی اور آپ کی گئی کے احس سے، آپ فیل کھی گھر واپس تشریف لے آئے اور آپ فیل کھی گئی نے فر مایا زملونی ، زملونی اور آپ کی گئی گئی کے احس سے، آپ فیل کھی اور آپ کی گئی نے فر مایا ذیفر و نبی بچھے کیٹر اار ماو، دونوں کلموں کی تر اور میں بھے کیٹر اار ماو، دونوں کلموں کے تقریب کی بین کر لیٹ گئے ، اور بعض روایات میں آپ بھی کھی گئی گئی گئی گئی گئی نازل ہوئے اور فر مایا:

"باليها المدار" السك بعدات بالكاتاروى كنزول كاسلمارش وع بواتواس سورت كى ابتدائى سات آيتي از له بوكس باليها المدار الرياية الموالي بيطرز خطاب، عام خطاب بنا اليها النّبي ، يَا يُها الرّسُولُ كخطاب سے

٤ (زَمَزُم پِيَالشَّرْدِ) ≥

مختلف ہے اس خطاب میں شفقت ہمجبوبیت اور قربت نمایاں ہے اس طرز خطاب سے مقد کا مقصد آپ معالمیں ہے۔ اس خوف کو اور رناتھ جو جہ کیل علیجردہ لیضد کو و کیچے برطبعی طور پر آپ سعالیں پرصاری ہو گیا تھا فرامایا آپ اور حدید ہیں کریت کہاں کے ااٹھے ا اب لیٹنے کا وقت ختم ہوا ، آپ ویونٹیں پر تو ایک کا رفتے ہم کا وجودا الا گیا ہے جے اب موسیعے کے لئے آپ ویونٹیں کو پورے موسم کے ساتھ اٹھ کھڑ اہونا ہے۔

سور و کد شریس سے پہلاتھ جو آپ بیونیٹ کودیا کیا ہے، وہ فضر ف الکار ہے لین کھڑ ہے، ہوجہ ہے، اس کے معنی اس کے بھی میں ہو سکتے ہیں کہ آپ بلونیٹ جو کیٹر میں بہت کر ایٹ کے جی اس کو جیور کر کھڑ ہے، ہوجہ کا اور یہ بھتی ہیں کہ تی میں ہوگئے ہیں کہ آپ بلونیٹ جو کیٹر میں بہت کر کے خاتی خدا کی جمی بعید نہیں کہ تی میں ہوگئے ہیں کہ کے ہے مستعدہ و کر مر سنا ہوا وہ مصب بین ہوکہ آپ بھونائٹ ہمت کر کے خاتی خدا کی اصواح کی فرمدداری سنجا ہے، ف اللہ ریا نذارے شنتی ہے جس کے معنی شفقت اور محبت سے ڈرانے کے ہیں جس میں شفقت کی فرمدداری سنجا ہے، ف اللہ ریا نذارے شنتی ہے جس کے معنی شفقت اور محبت سے ڈرانے کے ہیں جس میں شفقت کے ساتھ معنزت سے بھی بچانا ہوجیت باپ ہے بچے کوسانپ بچتو سے و نیم وسے ڈرانا ہے ، انہیں می بچی نا ہوجیت باپ ہے بچے کوسانپ بچتو سے و نیم وسے ڈرانا ہے ، انہیں می بچی نا ہوجیت باپ ہے بچے کوسانپ بچتو سے اس کے ان کا لقب نذیم اور بھیر ہوتا ہے۔

آیت کا مطلب میرے کہا ہے اوڑھ لپیٹ کر لیٹنے والے! اٹھواور آپ بلانٹیٹائے گردو پٹیش خدا کے جو بندے خواب غفلت میں پڑے ہوئے ہیں ان کوخبر وار کر دوانبیں اس انجام ہے ڈراؤ جس ہے وہ یقینا دو چار ہوں کا آرای حالت میں بیٹورے اورانبیں میتھی بتا دو کہوہ کی اند تیر تمری میں نہیں رہتے جس میں وواپی مرشی ہے جو بچھ چاہیں کرتے رہیں اوران کے کسی عمل کی کوئی بازیرس شہوں

و ربّك فكبّر ، ايك نبى كاسب سے پہلا اور بزا كام يہ بوتا ہے كہ جائل انسان جن جن كى بڑائى مان رہے ہيں ، ان كَ نَع مِن بِرا اَنَى الله الكبر كار ہے و نيا بجر بيں بيا ملان كرو ہے كہ اس كائن ت مِن برائى ايك خدا ك سواكى كن نيس ہے يہى وجہ ہے كہ اسلام ميں كلمة الله الكبر كوبرى اجميت حاصل ہے ، اذ ان وا قامت كى ابتداء الله الكبر كاملان سے بوتى ہے ، فرز ميں بھى مسلمان الله الكبر كہدكر واخل ہوتا ہے ، اور بار بارائىلله الكبر كبدراً مُتا اور بيٹوتنا ہے اور جب ذرئى كرتا ہے قامت كى ابتداء الله الكبر كوبرى الله الكبر كرائے ہوتى ہے ، اور بار بارائىلله الكبر كه يُرا مُتا اور جب ذرئى كرتا ہے قامت كى الله الكبر كہدكر وافل ہوتا ہے ، اور بار بارائىلله الكبر كهدراً مُتا اور بيٹوتنا ہے اور جب ذرئى كرتا ہے قامت كى الله الكبر كہدكر ، اور نعر فاتنا ہيں مسلمانوں كاسب سے زیاد و فرایاں المیازی شعار ہے ، يونكه اس المت كے نبی نے اپنا كام بى الله الكبر كى تكبير ہے شروئ كيا ہے۔

وَ بَيْالِكَ فَطَهِّرْ ، ثِيَا بَ، ثُوبٌ كَ جَنْ ہِاسَ كَيْتِي مِينَ كَمِيْ سِ كَيْنِ اور مِارْ كَيْ طور بِرَمْل كوبھى توبوس

کہا جا تا ہے، قلب ونفس کو جلق ودین کواورا نسانی جسم وکھی تو ب ہے تعبیر کیا جا تا ہے، جس کے شوامد قرآن مجیداورمحاورات عرب میں بکثرت موجود ہیں ،اس آیت میں بھی حضرات مفسمین ہے یہ سب ہی معنی منقول ہیں اور فاہر بیا ہے کہ ان تمام معنی میں کوئی تینا دو تن قض نبیس ، بطورعموم مجاز کے آمر ہیسب ہی معنی مرا است یا میں ،تو اس میں کوئی بعد نبیس ،اورمعنی اس صم کے بیہوں کے کہا ہے کپٹر وں اورجسم کو ظام ک نا پا کیوں سے پاک رکھے قلب وٹنس کو باطل حقالد و خیالات سے اور اخلاق رذیدے پاک رکھنے ، پاج مدیا تہبند کو نخوں سے نیچے رکھنے کی ممہ نعت بھی ای سے مستفاد ہے 'اس کئے کہ پیج النكي ہوئے كيٹروں كامجاست سے آلودہ ہوجا تا بعيدتبيں۔

المدتق لي طبارت كويبند فرما تا ہے "انّ السلّبة يُسجتُ النّوَاللِّي وبُحتُ الْمُتطَهِّرِيْن" اور حديث ميں طبارت كو فعنف ایمان کها نیا ہے،اس سے مسلمان کو ہر حال میں اپنے جسم،مطان اور اباس کی ظاہری طہارت کا بھی اہتما مرکھنا ضروری ہے اور قلب کی باطنی طہارت کامجھی۔

والمؤخو فالفائحر، ندك بيام او بهشم ل مُدك بي بخواوه ومنا مدو نيالات كَ مُدك بويا خلق واعمال كي ياجسم و ے اور رہین بہن کی مطلب میہ ہے کہ آپ معانمتانا کے سردو چیش میا رے معاشرے میں طرح طرح کی جو َندائیواں پھیلی ہوئی ہیں ان سب سے اپنا دامن ہی کررکھو ،کولی تنتیس آپ بیلونٹیٹی پر اٹھی ندا ٹھا سے کہ جس برائیوں سے آپ بیلونٹیٹالو کول کو روك رب بهول ان ميں سے سى كا بھى كوئى شائبة بسي بنقشين كى زندكى ميں بايا جائے۔

وُلا تسمُّ عَنْ تَسْتَكُثِرْ ، اس كاليك مطلب توبيه به كيرس براحسان كروب فرضانه كرو، آپ بيونته بي عطاو بخشش، جود وسخا ،حسن سبوک و بهمدردی محض امتد کے بنے ہواس میں کوئی شا ہاس خو ہش کا نہ ہو کہا حسان کے بدلے آپ ملاقاتیج کو سی قشم کے دیزوی فوائد حاصل ہوں ،اس ہے معلوم ہوا کہ کسی شخص کو ہدید و تحفداس نیت سے دینا کہ وہ اس کے عوض اس ہے زیاد و دے گا ، پیرند موم اور مکروہ ہے ،قر آن کریم کی دوسری آیات ہے آ سرچہ عام او گوں کے لئے اس کا جواز معلوم ہوتا ے مگروہ بھی کرا بت ہے خالی نبیس اور شریفا ندا خلاق کے بھی منافی ہے۔

وَلِوبِلَكَ فَسَاصَبِوْ ، لَعِنْ جَوْكَام آبِ مَعْنَدَيْ كَتِي وَيَا جِدْ باب يُرْسَاجِ ن جُوتُول كا كام هي اس ميس تخت مص نب اور صبر آ ز ، مشکلات اورتکامیفوں ہے آپ میکن نہیج کو سرابقہ پڑے کا ، آپ کی اپنی قوم آپ میں میچیج کی دعمن ہوجائے گی ، پورا عرب آپ مۇلانلايىك خالاف صف "راجوجات كامكر جوڭ بائداس راەملىل چېش آسەاپ رې ف طراس پرصبر كرنا اوراپ فرض كو پورى ٹابت قدمی اورمستنقل مزابق ہے انبی موینا ،اس ہے باز رکھنے کے نے نوف بھٹی ، یہ بی ، دوستی ، دشنی محبت ،غرنسیکسد ہم چیز آپ جَوْنِ عَلِيْهِ کے راستہ میں مائل ہوگی ان سب کے مقابلہ میں مضبوطی ہے اپنے موقف پر قائم رہنا ہوگا۔

فادا نُفِر فِي النَّاقُور، فذلِكَ يَوْمَند بَوْمُ عَسِيْرٌ ، اس ورت كاير صد سورت كا ابتدائي آيات ك چنده و العداك

وفت نازل ہوا، جب رسول اللہ بین نظر ف سے ماہ ایہ بین اسمام شرہ بی جو جائے کے بعد بھی مرتبہ بی کا زمانہ آیا، تو سرواران قریش کو بیا ندیشہ ہو کہ اس موقع پر بورے عرب کے لوگ آئی گئی گے ایسانہ ہو کہ محمد فیلون نظری کے بینے وین سے موگ متاثر ہوج کی جس سے اس وین کو تقویت حاصل ہوجا کے بہذا اس سے سد ہاب نے نے ولی متفقہ لائحہ تمل تیار کی جائے۔

متفقہ لائحہ مل کے لئے مشرکین مکہ کی کا نفرنس:

فُهُ هُ قَالَمُهُ وَ أَنْ فَيْمِلُ مِن جَهِ آ بِ سَوْئِعَةُ فَ عَلام نَ بِينَ شُرُونَ أَن جُيدًى بِ مَ بِهِ أَل بُوفُ والى سورتول ا و آپ مان الله من ناشره على ايا تو ماريل الله بلي اي اوراي انه توان كا ايك طوف ن اثبير حتر اووا، پيند مهينية ال حال پر گذرے تھے ك في كا زماندآ كيا تو مكه ك لوكول كومية ككروامن أيه جوني كه ال موقع بيرتمام عرب بين حاجيون ك قاطل آكيل ك، أمر مم علائد عن ان قافلوں کی قلیم گاہوں پر جا سرآئے و کے دیوں سے ملا قائمیں میں اور کی کے انتہا جات میں جَار جَار کے ق آن جدیرا ب نظیم اور پرتاثیم کلام مناتا شروع مردیا، تو عرب ئے ہر و ثاوتک ان کی دعوت بھی جائے کی، اس کے قریق ر داروں نے ایک کا فخرس کی وجس میں ہے ہے یہ یو کے دواروں کے آتے ہی ان سے اندر رسول اللہ معونی کے طلاف ہو، پیکنڈہ شروع کر دویا جات اس پراتفاق ہوجائے کے بعد ولید ان منیے والے حاضرین سے کہا اسرانے لوٹوں نے محمد ملطق م تعلق مخلف باللي أو رسے جي قوجم سب كا متبارجا تارہ كا ان ئے كولى اليد بات منظم النجيجة جے سب بالا تفاق ا ہیں، بہیواو وں نے کہا ہم محمد میون ہیں کو کا بین میں ہے، مرید نے کہا کہیں خدا ان مسلم وہ کا بین کبیں ہے، ہم نے کا بیول وو یک ے ان کے کارم نے قرآن کو دور کی بھی سبت نہیں ہے ، پڑھ اوراوگ ہوٹ انہیں مجنون کہا جائے ، ملید نے کہاوہ مجنون بھی نہیں ہے ہم نے دیوائے اور یا گل بہت و کیھے میں مجنون جیس بہتی بائی پیرسی ہوتی ہتیں رہاہے وو ک سے جیسی ہوئی تہیں ہیں ، کون باہ رکز کے گا کے محمد سوناتیج جو کلام پیش کرتے ہیں ہور یوائے کی بڑے اوگوں نے کہا انہما تو ہم شاع میں گے ہوسید نے کہا ہوشاع بھی نہیں ہے ہم شعر کی ساری اقسام سے واقف ہیں ،اس کے کلام پیشا مری کی نسی قشم فاطعا ق بھی نہیں ہوسکتا ، کیچھ ہوگ ہولے ق ہم انہیں ساحر آہیں گ، ولیدنے کہاوہ ساحر بھی تعین ہے، جاوہ کروں کوہم جانتے ہیں، جادو کراپنے جاہو کیلئے جوطریقہ افتیار کرتے ہیں ان ہے بھی ہم واقف ہیں ، یہ یا تیں بھی محمہ طاقتیا ہر جسیاں نہیں ، وتیں ، پھر ولیدے کہان یا تول میں سے جو ہات بھی تم کبو گےلوگ اس کو نارواانرام ہمجھیں گے ،خدا کی تھم!اس کارم میں بڑی حلاوت ہےاس کی جڑبڑی گبری اوراس کی ڈالیال بن کٹمر دار میں ،اس پر ابوجهل ولید کے سر ہو گیا اور اس نے کہا تہا ری قومتم سے رافنی نہ ہو گی جب تک کیتم محمد ملاکھیں کے ہار ہے میں کوئی ہات ند کہو،اس نے کہا جھا مجھے سونتی بینے وہ ، پھر سونتی کر بولا قریب ترین جو ہات کبی جاسکتی ہے وہ پیا کہتم عرب ک و کوں ہے بہو، میٹننس جادو کر ہے، بیا بیا کلام بیش کرتا ہے جوآ دمی کواس کے باپ، بھائی، بیوی، بچوں اور سارے خانمران ہے جدا َ رویتا ہے، ولیدکن اس بوت کوسب نے قبول مریا تھر ایک مصوبہ کے مطابق کچ کے زمانہ میں قریش کے وفود، حاجیوں کے ورمیان بھیل گئے اور انہوں نے آنے والےزائرین کوفتر دار سرنا شروع کردیا کہ یہاں ایک ایسائٹنس ہے جو بڑا جادو سرے اور

- ﴿ (زَمُزُمْ بِبَاشَرٍ ﴾ -

اس کا جاووخا ندانوں میں تفریق ڈال دیتا ہے اس ہے ہوشیار رہنا ہگراس کا نتیجہ بیہوا کے قریش نے رسول القد بلائین کا نام خود ہی سارے عرب میں مشہور کردیا۔ (سیرت ابن هشام)

ذَرْ بسی وَمَنْ خَلَقْتُ وَجِيدًا يَكُمْ وعيداورتبديد كے لئے ہے، يُخص جے ميں نے مال كے بيث سے اكيلا پيدا كيا ت س کے بیس ندہال تھا اور نداول و، بیرو بید بن مغیر و کی طرف اشار و ہے، ایند نے اے اول و ذکور ہے نواز انتہا اس کے وس ہارہ لڑے تھے جو ہر وفت اس کے پاس رہتے تھے، مجلسوں اور محضوں میں بلانے جاتے تھے، گھر میں دولت کی فراوا تی تھی ،اس نے بیٹول کو کارو ہاراور تجارت کے لئے باہم جانیکی ضرورت نبیس تھی ، ہار ہبیٹوں میں سے نین مسلمہان ہو گئے تھے، فالذ، بشام اور وليدين وليد - (انت القدير)

وما خعلنا أصحب النَّار الا ملانكة، جب جبتم كَثِّرانُول كانَ رف ما ياه ران كي تحداد بيان قر ما في توايوجبل ف جما تحت قریش کوخطاب کرتے ہوئے کہا کہ کیا تھ میں ہے ہوئ آدمی کا کروپ کید ایک فرشتہ کے لئے کافی نہیں ہوگا ^{ہ بع}ض الوک کتے ہیں کہ کلد و نامی ایک شخص نے جے اپنی جافت پر بزا تھمنٹریتی کہا،تم سب صرف دوفر شنے سنہال لیز، سة وفر شنول کے بیٹے میں اکیا ہی کافی ہوں ، کہتے ہیں کہ ای نے آپ میں فتیج کوئی م ہید سنتی کا بھی چینٹی دیا اور ہے مرتبہ فقاست کھالی طرایمان نہیں لایا کہتے ہیں کداس کے ملاوہ رکانہ بن عبد بزید کے ساتھ بھی آپ ملائیتیائے شتی لڑی تھی مکروہ شکست کھا کر مسلمان ہو گئے تنجے، (ابن کیش) مطلب میہ ہے کہ پیقعداد بھی ان کے استہزاءاور آز ماکش کا سبب بن کی۔

كَلَّا استنساحٌ معنى الا وَالْقَمَرِ ﴿ وَالْيُلِ إِذْ مِنتَ الدَّالِ أَدْبَرُ ۗ حاء عَد اللَّهَارِ وفي قراء ة اذ اذمر سُسُكُونِ الدَّالِ غِدِهَا عِمْرِهُ أَي مِصِي وَالصُّبِحِ إِذَّا أَسْفَرُهُ سُيرِ إِنَّهَا أَيْ سِنْرِ لِإِحْدَى الكَّبَرِ ۗ السلاب الجعلم نَذِيْرًا حالّ من إخدى وذكر لآب مغنى العداب لِلْبَشَرِ لِمَنْ شَاءُ مِنْكُمْر عدلُ من المشر <u>اَنْ يَّتَقَدَّمَ اللي السخير والمحمّة سالانيمان أَوْيَتَأَخَّرَهُ اللي المُسرّ او السّار سالتُفر كُلُّ نُفْسٍنُ</u> بِمَاكَسَبَتُرَهِيْنَةً ﴾ سرُهُـوْبة ساخـوْدة عمليا في الدر الله أصْحَبَالْيَمِيْنِ ﴿ وَهُمُ الْمُؤْسُونِ فلخور منها كانتور في جَنْتُ تَنَسَاءُ لُونَ لِمُنْ يَهِمَ عَنِ الْمُجْرِمِينَ لَوْ حَالِمَ وينُولُون الله عد الحراح المُوحَديْنَ سِ النَّارِ مَاسَلَّكُكُمْ أَدْحِدَى فِي سَقَرَ ۚ قَالُوا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّينَ ﴿ وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِيْنَ ﴿ وَّكُنَانَعُوْضُ في الْساطِ لِ مَعَ الْمُنَايِّضِيْنَ ﴿ وَكُنَانُكَذِّ بُسِيَوْمِ الدِّيْنِ ﴿ السِعَد والحراء حَتَّى اَتْمَنَاالْلَقِيْنُ ﴿ المؤلِّ فَمَالَنَفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشَّفِعِينَ ﴾ من الملائكة والأسياء والتسالحين والمغمى لاشفاعة لهم فَمَا مُنتداً لَهُمْر حسرُهُ سُنعَتَى مُخذُوب والنس صميرُهُ الله عَنِ التَّذَيْرَةِ مُغْرِضِيْنَ فَحَالٌ بِنَ الضّمِير والسمغسي ايُّ شنيء حصل لهم في اغراصهم من النَّعام كَانَهُمْ حُمُوتُسْتَنْفِرَةٌ ﴿ وَحَشِيَّةٌ

فَرَتْ مِنْ قَسُورَةٍ أَسدِ اى هَرَبَتُ مِنُهُ اشَدُ الهَرُبِ بَلَ يُرِيدُكُلُ الْمِرِى مِنْهُ مَانَيُونَ مُعُقَالَمُنَقَرَةً أَن اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ كَمَا قَالُوا لَن تُؤمِن لَكَ حَتَى تُمول عنب كن عَرْهُ وَكُلُّ الْمِن تُعَالَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ كَمَا قَالُوا لَن تُؤمِن لَكَ حَتَى تُمول عنب كن عَرْهُ وَكُلُ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ كَمَا قَالُوا لَن تُؤمِن لَكَ حَتَى تُمول عنب كن عَرْهُ وَكُلُ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ كَمَا قَالُوا لَن تُؤمِن لَكَ حَتَى تُمول عنب كن عَرْهُ وَكُلُ اللهُ عَلَيْهُ وَاللهُ اللهُ عَلَيْهُ وَسَلَمَ كَمَا قَالُوا لَن تُومِن لَكَ حَتَى تُمول عنب كن عَنْهُ وَلَمُ اللهُ عَلَيْهُ وَلَا اللهُ عَلَيْهُ وَلَا اللهُ عَلَيْهُ وَلَا اللهُ عَلَيْهُ وَلَهُ اللهُ عَلَيْهُ وَلَا اللهُ اللهُ عَلَيْهُ وَلَا اللهُ اللهُ عَلَيْهُ وَلَوْقَ اللهُ اللهُ عَلَيْهُ وَلَا اللهُ عَلَيْهُ وَلَا اللهُ عَلَيْهُ وَلَا اللهُ عَلَيْهُ وَلَا اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ عَلَيْهُ وَلَا اللهُ عَلَيْهُ وَلَا اللهُ عَلَيْهُ وَلَا اللهُ عَلَيْهُ وَلَا اللهُ اللهُ عَلَيْهُ وَلَوْقًا فِي اللهُ اللهُ عَلَيْهُ وَلَهُ اللهُ اللهُ وَلَا اللهُ اللهُ عَلْمُ وَلَقُ اللهُ اللهُ عَلْمُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ عَلَول اللهُ اللهُ عَلَاللهُ اللهُ اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ عَلَول اللهُ اللهُ عَلَول اللهُ الله

میر بین استفتاح کیلئے بمعنی اَلا ہے رافیا) وال استفتاح کیلئے بمعنی اَلا ہے رافیا) وال کے گئے کے ساتھ (ذَبَوَ) جمعیٰ جاءَ بعد النهارِ اورایک قراءت میں إذْ أَذْبَوَ ذال کے سکون کے ساتھ،اس کے بعد ہمزہ جمعنی مضی لینی گیا ، اور قشم ہے صبح کی جب کہ روش ہوجائے کہ یقییناً جہنم بڑی بھاری چیز وں میں سے ایک ہے یعنی بڑی مصیبتوں میں سے ایک ہے، بن آ دم کوڈرانے والی ہے (نسفیرا) اِخدای سے حال ہے (نسفیرا) کو فدکر لایا گیا ہے اس سے که (سسفر) مذاب كے معنی میں ہے، ہراس مخص كے لئے جوتم میں سے ايمان ك ذريعة خيريا جنت كى طرف آ كے برسے يا (لِسمَنْ شاءً) اللَهَ اللَهِ عَلَى اللَّهِ اللَّ ___ سے دوزخ میں مرہون و ماخوذ ہے، مگر دائیں ہاتھ والے اور وہمونین ہیں کہ وہ جہنم سے نجات پانے والے ہیں کہ وہ جنتوں میں ہول گے اور آپس میں مجرموں کے اور ان کے حال کے بارے میں پوچھتے ہوں گے اورموحدین ، دوزخ سے نکلنے کے بعد مجرمین سے سوال کریں گے کہ تم کو دوزخ میں کس چیز نے داخل کر دیا؟ وہ جواب دیں گے، نہ تو ہم نماز پڑھا کرتے تھے اور نہ مسكينوں كوكھ ، كھلا يا كرتے تھے اور ہم بھی (باطل) كے مثغلوں ميں رہنے والوں كے ساتھ باطل كے مشغد ميں رہا كرتے تھے، اور ہم یوم بعث اورروز جزا ءکو جھٹل یا کرتے تھے، یہاں تک کہ تمیں موت آگئجتی کہان کوشفاعت کرنے والوں یعنی فرشتوں اور نبیوں اور صالحین کی شفاعت کچھنٹ نہ دے گی مطلب میہ ہے کہ ان کے لئے شفاعت نہ ہوگی ، تو انہیں کیا ہوا؟ مُسا مبتداء ہے ور لَهُ مَر اس کی خبر ہے ،محذوف (حَسصَل) کے متعلق ہے ،جس کی طرف خبر کی ضمیرراجع ہے کہ تقییحت ہے مندموڑتے ہیں ، مُعَسرِ صِیْن (لَهُمْر) کی شمیرے حال ہے،مطلب بیہ ہے کہ تھیجت سے اعراض کرنے سے ان کو کیا حاصل ہو ؟ ''گویا کہ ووحشی اً مدھے میں جوشیر سے تیزی کے ساتھ بھا گے جارہے میں بلکهان میں سے برخض جا ہتا ہے کداسے اتباع نبی کے سسمہ میں اللہ کے طرف ہے تھی ہوئی کتابیں دی جائیں جیسا کہ وہ کہا کرتے تھے کہ ہم برگز آپ پھٹاٹھ پرائیان نہ لائیں گے، تا آپ کہ ہم پر کتاب نازل نه کی جائے جس کوہم پڑھیں ایسا ہر گزنہیں، تکلا حرف روع ہے اس چیز کا اٹکار کرنے کے ہے جس کا انہوں نے ر دہ کیا ہے بیکہ حقیقت رہے کہ بیلوگ آخرت لیمنی اس کےعذاب سے تنہیں ڈرتے ، ہر گزنہیں! کیلا برائے استفتاح ہے، یہ قرآن ہی نفیحت ہے اب جو جا ہے اس ہے نفیحت حاصل کرے کہ اس کو پڑھے اور اس سے نفیحت حاصل کرے اور بیلوگ < (مَنْزُم بِبَلشَٰلِ ≥ <

ندا کی مثبت کے بغیرنفیسحت حاصل نبیں سریئتے وہ سی ایک ہے کداس ہے ڈریں اور وہ اس ایک ہے کہ بخٹے لیمنی جواس سے ڈرےاےمعا**ف** کرے۔

عَجِفِيق الرَّدِي لِسَبْ الْ الْفَيْسِلِينَ الْحُوالِلُ

فَيُولِكُ: كَلَّا إستفتاحُ بمعنى ألا، كَلا حرف رَدَع بياسَ تَنْسُ بِينَ زَجْرُوهُ فَيْ بِجُوسقو (ووزنُ) كوبرى مصيبتوں بيں ہے تشهيم ندكر ہے، وافر قسميد بارويت اور المقدم مجرورت دونوں أفسهُ محذوف كم تعكن بين اللها لإخماري التُكبو مقسم مديدية اورتُكورَ، تُكوري كَ جَنْ بِ (عراب القرآن مدرويشُ) ١٠٠ يَشَبُ بُرُ عَها به مه حايال الدين كلي وحملانلانفائي في جوية مايا بي كه كلا استفتاح معنى ألا ب،اس الأول من السب

فَيُوْلِكُنَى: إِذَا ذَسَرُ أَسَ مِينَ وَقَرَ أَرْتَمِنَ مِينَ ﴿ إِذَا دَسَرِ ، ذَالَ مَنْ فَتَدَ مُسَاتِهِ ﴿ اذْ أَذْبَسَرَ ، ذَالَ مَسَكُونَ كَ ساتھ بعض نے کہا ہے کہ دونوں کے معنی ایک ہی میں ، بعض نے کہا ہے دَمُو جمعنی حاءَ اور اڈبَو جمعنی مضبی ، مفسر علام اسی

قِوْلَ إِنَّ وَكُو لِأَنَّهَا مُعْنَى الْعَدَابِ بِإِينَ مُوالَ مُتَدركا رُوابِ بِ-

مَيْهُوْ إِلَّ: سوال يه ہے كه الحدى الكُعر، زوالول مؤلث ہے اور مذہر الحال مذكر ہے ما تكه حال ذوالحال ميں مطابقت

جِهُ لَيْعِ: جواب كاحاصل يه ب كه الحداى الْمُحكّر به م ادعد اب به جوك مُدكر به البدااب كوتى اعتراض ليس فِيْوَلِنَىٰ ؛ كَانِنُون، كَانِيون مُحَدُوف، ل كُرِمْ أَسْمَ عَالِم فِي اشْرَارَهَ مِرُويا كَهِ فِي حَنْتِ يَنْسَاء لُوْن، مُحَدُوف كَمْ تَعْلَق ہے اور وہ جملہ ہو کر گھی۔۔۔۔۔مرمبتدا ہ محذوف کی خبر ہے اور مبتدا پنبر ہے ان کر جمد متانفہ ہے جو کہ سوال مقدر کا جواب ہے ماشالهم و خالهم سوال باورهم في حكت جواب ب-

فِخُولَ ؛ عن المحرمين اي عن حال المحرمين مضاف محذ أف بـ

فِيُولِكُن ؛ والمعنى لا شفاعة لهُمْ يَكِم وراصل أيد سوال كاجواب --

بَيْهُ وَإِلْ ؛ سوال بيه بي "فسما تنفعُهُمْ شَفاعةُ الشَّافِعيْن" من عنوم زوتا بُ مان كَ مَنْ شَفاعت مَر في واليتوجور كَ مَر شفاعت ان كوكوني فا كده نبيس پهنچائے كى حال تكه القيقت بيا ب كدان كے شفاعت بى ند بوكى؟

جِي**َ ا**ثبِع: جواب كا خلاصه به ب كه في قيدا ورمقيد دونول برداخل ب يعني نه شفاعت بهوگي اور نه شفاعت كا نفع ـ

فَخُولَنَى : معرضين بيلَهُمْ كَامْمِر عال ب، اور مَالهُمْ عن الله كرةِ معرضين كامطاب ب اي شيءِ خَصَل للُهُ هِ فِي اغْرِاصِهِهُ عِن الْإِتِّعاط؟. ان كُونْصِيت ـــة الراشَ بركَ ما حاصل بمعنى مبتدا ، ب للهُ هُر، خصل منذوف

ئے متعلق ہو کرمیتدا ، کی فیر ،اور حَصَلَ محذوف کی شمیر متنتر ،فیرلیعنی جار مجرور لَهُمْ کی جانب راجع ہے۔ فی کُولِ آئی : و خشیکۂ یہ مستنفر ہ کی تغییر نہیں ہے بلکہ "حمادِ و حشی" ایک فاص قتم کے حمار کانام ہے ہذا مناسب :وتا آء اے خُمرٌ کے بعد متصلاً ،الاتے ،اور حُمُرٌ و حشیہ مستنفرہ فرماتے۔

تِفَيِّيُرُوتِشَ*ن*َ

اِنّهَا لَاحْدَى الْكُبَر ، هَا صمير صقو كَ طرف راجع ب س كاذكراو يركى آيت مين آيا ب مُحَبَر ، كُبُرى كى جمع باور مصيبة يا دَاهِيَة كَ صفت ب-

ہیں اسروں میں سے بیپ ہا ہے۔ وَهِینَانَةُ، بَمعنی مو هو نة ہے بعنی ہر مخص اپنے اعمال کا گروی ہے، یعنی وہمل اگر نیک ہے تو اس کوئنداب سے چھڑالے گااور اگر ہُرے ہیں توہلاک کرادے گا۔ (بقید آیات کی تنسیر واضح ہے)۔



مَرَةُ الْقِيمَ مِنْ الْمِحْوِنَ الْمُحْوِنِينَ الْمُؤْعِدُ الْمُؤْعِدُ الْمُحْوِنِينَ الْمُؤْعِدُ الْمُحْوِنِينَ الْمُؤْعِدُ الْمُؤْعِدُ الْمُؤْعِدُ الْمُحْوِنِينَ الْمُؤْعِدُ الْمُحْوِنِينَ الْمُؤْعِدُ الْمُؤْعِدُ الْمُؤْعِدُ الْمُؤْعِدُ الْمُحْوِنِينَ الْمُؤْعِدُ الْمُحْوِنِينَ الْمُؤْعِدُ الْمُؤْعِدُ الْمُحْوِنِينَ الْمُؤْعِدُ الْمُؤْعِدُ الْمُحْوِنِينَ الْمُؤْعِدُ الْمُؤْعِدُ الْمُؤْعِدُ الْمُؤْعِدُ الْمُؤْعِدُ الْمُؤْعِدُ الْمُؤْعِدُ الْمُؤْعِدُ الْمُحْوِنِينَ الْمُؤْعِدُ الْمُؤْعِدُ الْمُؤْعِدُ الْمُؤْعِدُ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْعِدُ الْمُؤْمِنِينَ اللَّهِ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينَ اللَّهِ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينَ اللَّهِ اللَّهِ الْمُؤْمِنِينَ اللَّهِ اللَّهِ الْمُؤْمِنِينَ اللَّهِ اللَّهِ الْمُؤْمِنِينَ اللّهِ الْمُؤْمِنِينَ اللَّهِ الْمُؤْمِنِينَ اللَّهِ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينَ اللَّهِ الْمُؤْمِنِينَ اللَّهِ الْمُؤْمِنِينَ اللَّهِ الْمُؤْمِنِينَ اللَّهِ لَلْمُ لِلْمُؤْمِنِينَ اللَّهِ لَلْمِينَ الْمُؤْمِنِينَ اللَّهِ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينَ اللَّهِ الْمُؤْمِنِينَ الْمِلْمِ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينِ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينِ الْمُؤْمِنِينِ الْمُؤْمِنِينِينَ الْ

سُوْرَةُ القِيامَةِ مَكِّيَّةٌ اَرْبَعُوْنَ آيةً.

سورہُ قیامہ کی ہے، جالیس آیتیں ہیں۔

بِسُـــِ حِرَائِلُهِ الرَّحِـ مِن الرَّحِبُ حِر ٥ لَآراندة في السوسعين ٱفْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيمَةِ أَوَلَآ ٱفْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ﴾ التي نلوم غسم وال الحسمات في الاحسال وحوابُ القسم مخذوت اي لتُنعشَ دن عبيه أيَحْسَبُ الإنْسَانُ اي الكامرُ النَّن نَجْمَعَ عِظَامَة عَلَى المعن والدَّفياء بَلَى قُلِدِيْنَ مع حمعها عَلَى أَنْ لُسَوِّى بَنَانَةُ @ وبُو الاصال اي عيدُ معاسب كس كن مَع صِغْرِبَا فكيف بالكنيرة بَلُ يُرِينِدُ الْإِنْسَانُ لِيَفْجُرَ اللام رائدة وستنب إن شندرواي ال تحدد أَمَامَهُ أَ اي سؤم النقسة دلَ عليه يَسْتَكُ أَيَّانَ مِنْ يَهُومُ الْقِيْمَةِ ﴾ شوال انسنبرا؛ وتخدنب فَإِذَابَرِقَ الْبُصَرُ ﴿ كَنْسِرِ الرّاء وفتحب دېمش وتبحيّر لمّا راي ممّا كن بكدت به وَخَسَفَ الْقُمَرُ ۚ اصده و دېب صوَّةُ وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقُمَرُ ۗ فعلمعا من المغرب او دسب صوئهُم ودلك في يوم الميمة يُقُولُ الْإِنْسَانُ يَوْمَبِدِ آيْنَ الْمَفَرُّ، الفراز كَلّ ردُعٌ عن طلب العرار لَا وَمَرَارُ * لا منحاً يتحصَل به اللَّارَيِّكَ يَوْمَهِذِ إِلْمُسْتَقَرُّةٌ مُنسَمَرُ الْحلائق فليحاسمُون ويُجازُون يُنَتَّقُوا الْإِلْسَانُ يَوْمَهِ ذِهِمَاقَدَّمَ وَانَّحَرَ إِلَى عَمِيهِ وَاحْرِهُ بَلِي الْإِنْسَانُ عَلَىٰ نَفْسِهِ بَصِيْرَةٌ الْ شابدٌ تَنْطَقُ حوارحُهُ عمله والساءُ لنمالعه فلا نُدَ من حراتُه وَلَوْ القَي مَعَاذِيْرَةُ فَي حمُهُ مغذرةِ على عير قىاس اى لىۇ حاء بكل مغدرة ما قىنت مىلە قال تعالى سىيە لائتكرلڭ يە مالفرال قالى قراع حارئيل مىلە حزيلة عَلَى لَسَابِكَ فَالْأَلَّوُ أَنْهُ عَلَيْكَ غَرَاءَة حَلَرَتَيْنَ فَاتَّبِعُ قُرَانَهُ ﴿ الْمُتَسَعُ فِرَانَةُ فَكُنَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْ وسلَم يَسْتَمهُ ثُمَّ يَقُرُأُ تُمَّرِانَّ عَلَيْ مَابِيَانَهُ في التنسيم لك والمُدسة بني بده الاية وما قندم الدُّ نلك منسقست الاغراض من ايات الله نعالي وبده مسقست المدد د اليها بحقيه كلّ المنفاع مغمي أنه - ﴿ (مَرْزُم بِبَلْفَ إِنَا

بَلْ تُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ أَلَا مَا لَمُ المَا وَالمَا وَالمَا فَي المَعْلَقِ وَتُلَافُونَ الْإِخْرَةَ أَ ولا مَعْلَو لَهِ وَجُوْهُ يُوْمَعِلْ مَ في بؤم السامة تَاضِرَةُ أَوْ حَسَدُ مُصَيِدَ إِلَى مَ يَهَانَاظِرَةُ وَ وُجُوهُ يَوْمَعٍ ذِرِ بَايِسَرَةُ وَ كَعَدُ شدره العنوس تَظُنُّ لَوْمِنَ أَنْ يُفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةً ﴿ دَاسِهُ عَصْمَةً نَكَسَرُ فِدَرِ الْعِنْهِ كُلَّا سِمِي الا إذَا بَلَغَتِ السَسَل اللُّكَا فِي أَنْ عندام الحلق وَقِيلُ قال من حوله مَنْ كَاقٍ ﴿ عَزِينَه عِيشَتَى وَّظُنَّ النِّس من معت له لمه دنك أنَّهُ الَّفِرَاقُ ﴿ صِرَاقُ الدِّنِيا وَالْتَفَّتِ السَّاقُ بِالْسَّاقِ ﴿ اى احْدَى سَاقِلَهُ كَا لَاحْرَى عَلَّهِ السَّوْبِ اوالتنفيت شدة دراه الدُما مشدة افعال الاحرة إلى مَربِّكَ يَوْمَهِذِ الْمُسَاقُ عَلَي السوق وبدا مذلُّ على عَج العامان في إذا المغنى إذا للعلت النُفسُ الخُلفُوم للساقُ إلى خُكُم رَبُّها

عَنْ وَعَ مِنْ وَعَ مَرَا مُول الله كَنام عن جويز ميريان نبايت رهم والا أفسيل الدراندوج، ميل الشم کھا تا ہوں قیامت کے دن کی اور تھم کھا تا ہوں بہت ملامت کرنے واسے نئس کی کہ جوخود کو ملامت کرے، باوجود یکہ وہ نیکی ر نے میں جدوجبد برتاہے،اورجواب تھم محذوف ہے، لیحن تم کونسرورزندہ کیاجا۔ گا، (س حدف پر) ایک خسٹ الانسان المع ويه مت كرتام، كيابيكا فرانسان بيه جهتات كه بعث اور حيات ك كي جماس كي بنري لوث نه كري ك! كيول جيس اجم ان کوفنہ ہر جمع کریں کے جمع ان کے جمع کرنے ہے قاہ رہوئے کے ساتھ ساتھ اس پر بھی قاہ رہیں کہ اس کی پور پورد رست کر دیں (مسلانًا) الگایاں، یعنی ہماس کی بٹریوں کو چھوٹا ہوئے کے باوجوہ اس جانت پراوی دیں کے جس جانت پر دو تھیں، تو بڑی بٹریول كَ بارك مين أبيا خيال ٢٠٠ بلكه انسان ميه جي بتنائب كه "منت أو الى قيامت كوجيند د منه المرار الكروب اوراس كانصب أنّ مقدره كى وجهت ها الربي ينسالُ أيّان يومُ القيامة ورحت مرتاه، وواستهزا واورتكذيب كطورير، موال كرتاه كه قيامت ٥ دن كب ك كا ؟ پس جب كه كاني خيره بوج نيل ك (چندهياجا كيل ك) بسر في را مت سره اورفتد كس تحد بيلني مد بوش و متحیر ہو ب^ہ نمیں کی جب کہوہ ان چیزوں کود تکھے کا جن کی ووٹئمذیب کیا ^امرتا تھا، اور جیا مدیبے نور ہو جا ہے گا (لیعنیٰ) تاریک ہو ب نے گا ، اور س کی روشنی فتم ہو جا ہے گی ، اہ رسورٹی اہ رحایا ندجمتا کر دینے جا کیں گئے بایں طور کے دونو ل مغرب سے طلوع ہوں ے، یا دونوں کی روشی فتم ہو جائے گی ،اوراییا تیامت کے دن ہوگا ،اس دن اٹسان کے کا آخ بھا گئے کی جَد کہاں ہے؟ ہرگز تنہیں! یے فرار کی تر دید ہے، کو کی بناہ کا ونہیں، یعنی ایسا کو کی ٹھٹا نہیں کے جس میں و د بناہ ہے ہے، آئی تو تیم ہے پر وروگار ہی کی طرف فرارگاہ ہے (لیعنی) مخلوق کا ٹھکانہ ہے، نبذاان کا حساب ایا جائے گا اور ان کوصلہ دیا جائے کا اس انسان کو اسک پجھیے سب ا تمال ہے آگاہ کر دیا جائے کا لیعنی اس کا اول عمل بھی اور آخر عمل بھی بتلا دیا جائے گا بلکدا نسان خود اپنے نفس پر شاہر ہو کا ،اس ئے اعضا واس کے امل ل کی واہی ویں گے، بنصیرہ (میں) ہا مبالغہ کے لئے ہالبذااس کی جزا وکاوا تع ہون ضرور کی ہے، ا ہر چہ کتنے بی حیبے بہائے بیش کرے، معادیسو ہ، مغدرہ کی جمع غیر قیاس ہے کینی آ سر چہ برقتم کے حیبے بہائے پیش کرے گا ٠٥ [رحَزم پيکاشرن] ٢٠٠٠

عکر قبول نہیں کئے جائیں گے،ابتد تعالی نے فرمایا ہم اس کو ضرور آگاہ کرویں گے (اے نبی!) آپ مِلْقَائِلَیْ قرآن پڑھنے کے ئے جبر نیل علاجات کے اس سے فارغ ہوئے ہے پہلے اپنی زبان کو قرآن کے فوت ہونے کے اندیشہ کے پیش نظر مجلت کرتے ہوئے حرکت ندد ہیجئے ،آپ میلی نماییز کے سینے میں اس کا جمع کرنا اور آپ میلی نمایز کو اس کا پڑھوا نا ہمارے ذمہ ہے لیعنی اس كا آپ مِن الله كان پرجارى كرنا (تارية مه ہے) پس جرئيل عليج لاول الله كى قراءت كے ذريعه آپ مِن عليه الله الله میں علیاں کی قراءت کو ہاعت فرہ کمیں چنانچے آپ میلی علیہ (اول) سنتے کھراس کو پڑھتے ، کھر آپ بلائلتیں کو سمجھانے کے لئے اس کا واضح کر دینا ہمارے ذمہ ہے اس آیت اور سابقہ آیت کے درمیان مناسبت رہے کہ وہ آیت خدا کی آیتوں ہے اعراض (کے مضمون) پرمشتمل ہے اور بیا آیت اللہ کے آپیوں کی حفاظت کی طرف سبقت (کے مضمون پر)مشتمل ہے (گویا کہ دونوں آ یتول میں ملاقۂ تضاد ہے لہٰذاد دنوں آ بیتی ہے رہانہیں ہیں) ہرگز ایب نہیں! کلّا مجمعنی اَلَا استفتاح کے لئے ہے، ہکہتم دنیا کومحبوب رکھتے ہو ، دونو ل فعلوں میں یا ءاور تاء کے ساتھ ، اور آخرت کوجھوڑ دیتے ہو ، کہاس کے لئے عمل نہیں کرتے ، اس دن لیمنی قیامت کے دن بہت سے چبرے تر وتازہ اور بارونق ہوں گے ، اپنے رب کود کھےرہے ہوں گے یعنی آخرت میں امتد سبحانہ تعالی کود کھے رہے ہوں گے اور بہت ہے چبرے اس روز بدرونق (اداس) بگزے ہوئے ہول گے یقین کرتے ہول کے کدان کے ساتھ کمر نوڑنے والا معامد کیا جائے گا یعنی ایک مصیبت نازل کی جائے گی کہ کمر کے منکوں کوتوڑ کر رکھ دے گی ، ہر گز ایسا حبیں! کلا جمعنی اَلا ہے، جب روٹ صل کی ہٹریوں (بنسلی) تک پہنچے کی اور کہا جائے گا اور کہنے والے وہ ہول کے جواس (مرنے والے)کے آس پاٹ ہوں گے، کیا کوئی جی ڑپھونگ کرنے والا ہے ؟ کہاس پرجھاڑ پھونگ کرے، تا کہاس کو شفاء ہو جائے ،اورجس شخص کی روح حلق میں بہنچے گی وہ یقین کر لے گا کہ بیدد نیا کو ترک کرنے کا وقت ہے اورموت کے وقت پنڈ لیال آپس میں بیٹ جائیں گی یا دنیا کو جھوڑنے کی تکلیف آخرت میں داخل ہونے کی تکلیف سے لیٹ جائے گی، آج تیرے پر وردگار کی طرف چینا ہے منسّاق مجمعنی مسوّق ہے اور بیہ إِذَا میں عامل پر دلالت َرتا ہے لینی یہ بیں، جب روح حلق میں پہنچے گی تو اس کواس کے رب کے تھم کی طرف لے جایا جائے گا۔

جَِّفِيقَ الْآلِيْ لِيَسْمَيُكُ لَيْسَمِيكُ الْفَيْسِارِي فَوَائِلُ

قَوْلَى ؛ لَا أُفْسِمُ، لَا تَسْم پِرْدَائدہ ہے، اور بیکلام عرب میں ظم ونٹر میں کثیر الوتوع ہے، قال اهرؤ القیس. ولا وَ اَبِیْكِ إِبْسَنَةَ الْسِعَ الْمِسِرِی لَا یسلَّهِ عِلَیْ الْمِسَدِی اَلْسَقَوْمُ أَیْسِی اَفِسِرِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ الْمُوالِمُ اللَّهُ اللَّ

فَخُولَنَىٰ ؛ الَّن نَحْمَعُ ، أَن مُففهُ عن التقيله باس كا اسم عمير شان مُحذوف ب، اى اَنَهُ اور لَنْ اوراس كامدخول اللَّ كَ خبر ب، اللَّن عبر بمز واورالام كورميان نون بيس ان الله عبر بمز واورالام كورميان نون بيس ان الله عبر بمز واورالام كورميان نون بيس بمز وي عبر بمراه محف كي طور برب-

فِيُولِكُ ؛ قَادِرِيْنَ يَعْلَ مقدر نَجْمَعُهَا كَاسْمِرة على عال بـ

فِوْلَى ؛ بَرِقَ الْبَصَرُ ، بَرِقَ مِين دوقراء تين بن راء ئ سروك ساته اورفيق كي ته ، كسره ك صورت مين مُتَحَيَّدُ اور خيره بوئے كمعنى بين اورفيق كي صورت مين ذهن كم عنى بين ، مفسر علام نے دونوں معنى كي طرف اش ره مردي ہے۔ فِيُولِ مَن ؛ يَفُولُ الْإِنْسَانُ بِهِ إِذَا كاجواب ہے۔

فَخُولَنَى ؛ لَلِ الْإِنْسَانُ عَلَى مُفْسِهِ بَصِيْرة ، لَلِ الإنسان مبتداء بِ بَصِيْرة فَبر، يبال انسان عمراد جوار (اعض م) بين جوكة بمع بهذا مطابقت موجود بمفسر طلام في تنفطقُ حواد حُهُ كَبدَراس جواب كي طرف اشاره كيوب بهدا محاج في المعتمد في في منظم في المعتمد المعتمد

سین اور الفی میں لو شرطام نے اس عبارت کا اضافہ کر کا شارہ کر ویا کہ وَ لَوْ اَلْقَی میں لوْ شرطیہ ہاور ما قُبلت اس کی جزاءِ مقدرہے۔ اس کی جزاءِ مقدرہے۔ قِوَلِ آنَا ، اَنَّا اَنَّهُ ، ای النَّاذِلُ بِهِ.

تَفْسِيرُ وَتَشَرَّتَ

لا أفسي مراق کام کی ابتداء ، (مهین) نے رنا خود بخو داس بات پردالات کرتا ہے کہ پہلے ہے کوئی بات چال ربی تھی جس کی تر دید میں بیسورت نازل ہوئی ہے اور اگلے مضمون ہے یہ بات بھی واضح ہوئی کہ وہ کیا بات تھی جس کی تر دید مقصود ہے ، اور دہ قیم متاور آخرت کی زندگی کے بارے میں تھی جس کا اہل مَدا نکار رَر ہے تھے بلکہ ساتھ ہی ساتھ اس کا نداق بھی اڑا رہے تھے۔ قر آن کریم نے نفس انسانی کی تین قسمول کا ذکر کیا ہے ، اس ایک دہ وہ نفس جوانسان کو برانیوں پر اکساتا ہے اس کا نام (دنفس اتمارہ) ہے ، اس کو فقس جونسا کو برانیوں پر اساتا ہے اس کا نام (دنفس اتمارہ) ہے ، اس کو آج کل کی اصطلاح میں شمیر کہتے ہیں ، اس وہ نفس جو تھے دراہ پر چلنے اور خدو راہ چھوڑ نے پر اس کا نام (دنفس اتمارہ) ہے ، اس کو نام (دنفس مطمئنہ) ہے۔ اس کا نام (دنفس مطمئنہ) ہے۔

ے، کی اور کوتا ہی محسوس کرتا ہے کیونکہ حق عبادت پوراادا کرنا تو کی کے بس کی بات نبیس ہے اس لئے ادائے حق میں کوتا ہی اس کے پیش نظر رہتی ہے اس پروہ ملامت کرتار ہتا ہے۔

نفس اماره ،لوامه،مطمئنه:

حضرات صوفی نے کرام نے اس میں یہ تفصیل کی ہے کہ نس اپنی جبت اور فطرت کے اعتبارے (امّساد ہ بالشّوء) ہوتا ہے گر ایم ان اور ممل صالح اور ریاضت و مجاہدہ سے یہ 'نفس اؤ امد' بن جاتا ہے گر بُر الّی سے بالکلیداس کا انقطاع نہیں ہوتا ، آگ ممل صالح میں ترقی اور قرب حق کے حصول میں کوشش کرتے کرتے جب اس کا بیرحال ہوجائے کہ شریعت اس کی طبیعت ثانیہ بن جائے اور خلاف پشری کام سے طبعی نفرت بھی ہونے گئے تو اس نفس کا لقب' مظمدنہ'' ہوجاتا ہے۔

یکا یک سلسلہ کلام کوموقو ف کرئے آیت ۱۷ ہے ۱۹ تک جملہ معتر ند کے طور پر آپ بیلائٹیٹ نے فرمایا جاتا ہے کہ اس وقی

کو یاد کرنے کے لئے آپ بیلائٹیٹ اپنی زبان مبارک کو حرکت نہ د ہی اس کو یاد کرانا اور پڑھوا نا بھارا کام ہے الخی اس کے

بعد آیت ۲۰ ہے پھرو ہی مضمون شروع بوج تا ہے جوشروع ہے چد آر باہے ، یہ جملہ معتر ضدا ہے موقع وکل ہے اور دوایات
کی رو ہے بھی اس بنا پر دوران کلام میں وار د بوا ہے کہ جس وقت حضرت جرئیل علی الفاظ اپنی زبان مبارک ہے دھرائے
تھے اس وقت آپ یکھٹٹ اس اند بیشہ ہے کہ کہیں بعد میں بھول نہ جونوں اس کے الفاظ اپنی زبان مبارک ہے دھرائے
جور ہے تھے، بعد میں جب آپ یکھٹٹ کواچھی طرح مشق ہوگئی اور خل وقی کی عادت پڑگئی تو اس تم کی مدایت و سے کی
ضرورت نہیں رہی ، لہذا وہ شبہ بھی ختم ہوگیا کہ آیے نہر سمااور ۱۵ میں کوئی جوڑ اور ریانہیں ہے جس کو مفسر ملام نے علاقہ تعناد
غارت کر کے ملاقہ ٹابت کرنے کی بایں طور کوشش کی ہے کہ سابقہ آیات میں آیا ہے سے اعراض کا ذکر تھا اور ای آیات میں

یُنکو الاِنسَانُ یَوْمَلِدُ مِمَا فَلَامَ وَاَحَّوْ، یه ایک برا اجامع فقره به اس کے ٹی معنی ہوسکتے ہیں ، ایک معنی اس کے بیہ ہیں کہ آ دمی کواس روزیہ بھی بتادیا جائے گا کہ اس نے اپنی دنیا کی زندگی میں مرنے سے پہلے کیا نیکی یابدی کما کراپنی آخرت کے لئے آگے بھی جھوڑ آیا آگے بھی اور یہ حساب بھی اس کے آگے رکھ دیا جائے گا کہ اجھے یا بر اعمال کے کیا اثر ات وہ اپنے بیچھے دنیا میں چھوڑ آیا تھا جواس کے بعد مدتہ کے درازتک آنے والی نسلوں میں جیتے رہے۔

دوسرے معنی یہ بین کداہ وسب کھ بنادیا جائے گا جوائے سرنا چہتے تھا گراس نے نہیں کیااور جو کھ نہ کرنا چہتے تھا گر اس نے کرڈ الا، تیسرے معنی یہ بین کہ جو کچھاس نے پہنے کیااور جو کچھ بعد میں کیااس کا پورا حساب تاریخ واراس کے سامنے رکھ دیا جائے گا، چوتھے معنی یہ بین کہ جو نیکی یہ بری اس نے کی وہ بھی اسے بن دی جائے گی اور جن نیکی یا بدی کے کرنے سے وہ بازر با اس سے بھی اسے آگاہ کردیا جائے گا۔

بَـلِ الْإِنْسَـانُ عَلَى نَفْسِه مَصِيْرَةٌ، انسان كااتمال نامداس كے سائے ركاد ياجائے گانگراس د كھنے كى غرض ورحقيقت بيد

نہیں ہوگی کہ مجرم کواس کا جرم بڑا یا جائے بلکہ ایسا کرنا تو اس وجہ سے ضروری ہوگا کہ انصاف کے نقاضے برسم عدالت جرم کا ثبوت پیش کئے بغیر پور نے ہیں ہوتے ورنہ ہرانسان خوب جانتا ہے کہ وہ خود کیا ہے؟ اپنے آپ کو جاننے کے لئے وہ اس کامختائی نہیں ہوتا کہ کوئی دوسراا سے بتائے کہ وہ خوہ کیا ہے؟ ایک جھوٹا دنیا بھر کو دھوکا و سے سکتا ہے لیکن اسے خود کو معلوم ہوتا ہے کہ وہ جھوٹ وں رہا ہے، ایک چور یہ کھیے بہ نے اپنی چوری چھپانے کے لئے اختیار کر سکتا ہے گر اس کے نفس سے تو یہ بات مخفی نہیں کہ وہ بچور ہے، ایک جورت کی عدالت میں چیش ہوتے وقت ہر کا فر، ہر منافق ، ہر فاسق ، ہر فاجراور ہر مجرم خود جانت ہوگا کہ وہ کی کر کے سے اور کس حیثیت میں آج ایئے خدا کے سامنے کھڑا ہے۔

"یا ہے اور کس حیثیت میں آج ایئے خدا کے سامنے کھڑا ہے۔

لَا تُحَوِّكُ بِهِ لِسَامَكَ لِنَعْجَلَ بِهِ ، يبال سے کے رُآیت ۱ ایک جملهٔ عنر ضدے جوسنسلهٔ کلام کوتو زَ رنبی پنولیجیو کو مخاطب کر کے ارشا وفر ما یا گیا ہے جبیبا کہ ماقبل میں ہم اس کی وضاحت کرآئے ہیں۔

ثُمَّرِانَ عَسلیْنَا بَیَانَهٔ ، یه ایک بزی اہم آیت ہے جس سے چندایس اصولی باتیں ثابت ہوتی ہیں جنہیں اً رآ ومی الچھی طرت سمجھ لے لوان مراہیوں سے نیج سکتا ہے جن میں پہلے بھی بعض لوگ مبتلا ہوتے رہے ہیں اور آج بھی مبتلا ہور ہے ہیں۔ اول اس ہے صرتے طور پر بیر ثابت ہوتا ہے کہ رسول اللہ میں نظامین پر صرف وہی دحی نازل نہیں ہوتی تھی جوقر ہن میں درج ہے: جکہ اس کے علاوہ بھی وحی کے ذریعہ ہے آپ نیٹونٹائیا کوالیاعلم دیا جاتا تھا جوقر آن میں درج نہیں ہے جس کواصطلاح میں'' وحی غیر متملوً' کہا ہا تا ہے اس لئے کہ قرآن کے احکام وفرامین اس کے اشارات اور اس کی مخصوص اصطلاحات کا جومفہوم ومدی حضور ﷺ کوسمجھا یا جاتا تھا وہ اگر قر آن ہی میں درجے ہوتا تو بیہ کہنے کی کوئی ضرورت نہتھی کہاس کا مطلب سمجھا وینا یا اس کُ تشریح کردینا بھی ہمارے ذمہہ، کیونکہ وہ تو پھرقر آن ہی ہیں ال جا تالبذایہ کرنا پڑے گا کہ مطالب قر آن کی تفہیم وتشریح جو الله کی طرف ہے کی جاتی تھی وہ بہر حال الفاظ قر آن کے ماسواتھی ہیڈ 'وحی خفی'' کا ایک اور ثبوت ہے جوہمیں قر آن سے ملتا ہے۔ كَلَّا بَلْ تُعِبُّونَ الْعَاجِلَةَ ، يبال يه السله كان م جرجر جاتا ب جوجمله معترضه بيلي جل آربانق ، بركز نبيس ؛ كاب مطلب ہے کہ تمہارے انکار آخرت کی اصل بدوجنہیں ہے کہتم خالق کا ئنات کو قیامت برپا کرنے اور مرنے کے بعید زندہ کرنے سے عاجز سیجھتے ہو؛ بلکہ اصل وجہ یہ ہے اور بیا نکار آخرت کی دوسری وجہ ہے پہلی وجہ آیت ۵ میں بیان کی گئی تھی کہ انسان چوں کہ فجو راور ہےراہ روی کی تھلی جھوٹ جا ہتا ہے اوران اخلاقی پابندیوں سے بچنا جا ہتا ہے جو آخرت کے وسنے ہے لاز ہااس پر عائد ہوتی ہیں،اس لئے خواہشات نفس اے انکار آخرت پرابھارتی ہیں اور وہ عقلی دلییں بگھارتا ہے تا کہ ا ہے اس انکار کومعقول ٹابت کرے،اب دوسری وجہ بیربیان کی جار بی ہے کے منکرین آخرت چوں کہ تنگ نظراور کوتا ہ بین ہیں اس لئے ان کی نگاہ میں ساری اہمیت انہیں نتائج کی ہے جوائ دنیا میں ظاہر ہوتے ہیں اور ان نتائج کووہ کوئی اہمیت نہیں دیتا جوآ خرت میں طاہر ہوئے د<u>ا لے ہیں</u>۔

و کُولُا یُومَنِدِ نَاصِرَهُ اِلَی رَبِیْهَا نَاظِرَهُ ، ناضوہ بمعنی ترونازہ لین اس روز کچھ چپرے ہشاش ہوش اور تروتازہ ہوں کے، یہ چبرے اپنے رب کود کھے رہے ہوں گے، اس سے ثابت ہوا کہ آخرت میں اہل جنت کوئی تعالیٰ کاویداز پیشم سرنصیب ہوگا، اس پر اہل سنت والجماعت وفقہاء کا اجماع ہے،صرف معتز لہ اورخوارج متئر ہیں اور ان کے انکار کی وجہ فلسفیانہ موشگافیوں اور شبہات ہیں کہ آنکھ ہے ویکھنے کے لئے ویکھنے والے اور جس کو دیکھا جائے ان دونوں کے درمیان مسافت کے لئے جوشرا نط ہیں ، خالق اور مخلوق کے درمیان ان کا تحقق نہیں ہوسکتا۔ اہل سنت والجماعت کا مسلک بیہ ہے کہ آخرت میں حق تعالی کی رویت وزیارت ان سب شرا کا ہے ہے نیاز ہوگی نہ کسی جہت ہے اس کاتعلق اور نہ کسی سمت ہے اس کوربط اور نہ کسی ہیئت وصورت ہے اس کو سروکارر دایات حدیث ہے میضمون بڑی صراحت ووضاحت ہے تابت ہے ، بنی ری شریف کی روایت ہے "انگے گھے سَتَوَوْنَ رَتَكُمْ عِيانًا" تَم اين رب كوتهم كل ديمهوك مسلم وترندي مين حضرت صبيب رَصِحَانُهُ مُعلى كاروايت ب كه حضور مِينَة اللهِ عَنْ ما يا جب بنتن وك جنت مين داخل ہو جائيں گة الند تعالى ان سة دريا فت فرمائ گا كه كياتم جا ہے ہوكھ میں مزید آجھ عطا کروں؟ و وغرض کریں گئے کیا آپ نے جارے چبر بروش خبیل کردیئے؟ کیا آپ نے جمیس جنت میں داخل مبیں کر دیا؟ اور کیا آپ نے جمعیں جہنم ہے بیجائبیں لیا؟ اس پر امتد تعالی پر دہ بٹاد ہے گا اس وقت ان ہو گول کو جو کچھ ا نعامات ہے تھے ان میں ہے کوئی بھی انہیں اس ہے زیادہ مجبوب نہ ہوگا کہ وہ اپنے رب کی ویدار ہے مشرف ہوں ،اور يبي وه مزيدانعام ہے جس كے متعلق قرآن ميں فرمايا "ياہے" لِللَّذِيْسَ أَحْسَنُوا الْحُسْنَى وَزِيَادَةٌ" بخارى وسلم كى ا یک دوسری روایت میں حضرت ابوسعید خدری نضانند تَعالیٰ اور حضرت ابوم مرہ دھنانندُ تَعَالیٰ ہے مروی ہے کہ لوگوں نے پو چھا یا رسول الند! کیا ہم قیامت کے روز اپنے رب کو دیکھیں گ؟ حضور بلق نتایا نے فر مایا کیا تمہیں سورج اور چ**یا ند**د میکھنے میں کوئی دفت ہوتی ہے جب کہ درمیان میں با دل بھی نہ ہو؟ او گوں نے عرض کیا تہیں آپ بھی نتیج نے فر مایا اسی طرح تم ا پنے رہاکودیکھو گے۔اسی مضمون ہے ملتی جلتی اور کنی روایتیں میں جن سے صاف طور پر معلوم ہوتا ہے کہ آخرت میں حق تع لی کا دیدار ہوگا ،لیکن دیدار کی کیفیت انتدکومعلوم ہے۔

كلا إذا بَلَغَتِ التَّرَاقِيلُ (الأية) الآيت على انسان ومتوجه كيا ليب كدا يل موت كونه بهول موت سي مهيم ملك ایں ن اور عمل صالح کی طرف آجائے ، تا کہ آخرت میں نجات ملے اس آیت میں موت کا نقشہ اس طرح تھینچا گیا ہے کہ خفعت شعارانسان غفیت میں رہتا ہے بیبال تک کے موت سر پرآ کھڑی ہواور روح ترقوہ لیعنی گلے کی ہنسلی میں آ کھینے اور ہم ردارلوگ ووا، مدج سے عاجز ہوکر حجھاڑ کچھونک کرنے والول کو تلاش کرنے کبیس اور ایک پاؤں کی پنڈلی دوسری پر لیٹنے لگےتو یہ وفت اللہ ک پاس جانے کا ہے،اب نہ تو بہ قبول ہوتی ہےاور نیمل ،اس کے تنگمند پراہازم ہے کہاں وقت سے پہیےاصلاح کی فکر کرے۔

فَلَاصَدَّقَ الاسسارُ وَلَاصَلَّى ﴿ اي لَه يُصدِّقُ وَلَهُ يُصل وَلَكُنْ كَذَّبُ مَانَقُرَان وَتَنَوَلَّى ﴿ عَبِ الايمان تُتُمِّرُذُهَبَ إِلَى آهَلِهِ يَتَمَظَّى ﴾ ينبخترُ في سفيته اغجت أَوْلَىٰ لَكَ فيه النِّفاتُ عن العينة والكنمةُ اسْمُ عنس واللامُ للشيين اي وليك ما تَكُرهُ فَأَوْلِي أَاي مَهُو أَوْلِي اللهِ مِنْ غَيْرِك ثُمَّرَ أَوْلَى لَكَ فَأُولِي أَ ناكند أيَحْسَبُ بِصُّ الْإِنْسَانُ أَنْ يُتُرَكُ سُدَّى ﴿ بِملاً لا بُكَنْتُ بِالشَّرائع اي لا يخسبُ دلِك ——= ﴿ [زَمَّزُمْ بِبَاشَرِنَ } 5-

کردانی کی (خود پسندی) ہے اترا تا ہواا ہے گھر والول کے پاس میا افسوس ہے تھے پر اس میں نیبت ہے (حاضر کی روگر دانی کی (خود پسندی) ہے اترا تا ہوا ا ہے گھر والول کے پاس میا افسوس ہے تھے پر اس میں نیبت ہے (حاضر کی طف) انتفات ہے ،اور (ویسل) کلمکا سم فعل ہے اور ہا میمیین کے لئے ہے یعنی جس چیز کوتو نا پسند کرتا ہے ، تھے کو پیش آنے والی ہے حسر ت ہے تھے پر ، پس وہ اولی ہے تی ہے لئے یعنی وہ تی ہے لئے دوسروں کے اعتبار ہے ، پھر ہو اولی ہے تی ہے لئے یعنی وہ تی ہے لئے دوسروں کے اعتبار ہے ، پھر ہو اولی ہے تی ہے ایک اور خرابی ہے تاکید ہے کیا انسان یہ بھتا ہے کہاں کو ہے کارچھوڑ دیا جائے گا ،کیا وہ میں کا طفہ نہیں تھا جو پکایا گیا تھی ؟ یا ،اور تا ، کے ساتھ (یعنی) رحم میں انسان ہی گھراس کے استفاء کو است کیا گھراس کے استفاء کو است کی گھراس کی خوب کارچھوڑ دیا ہا ہے کہ کوڑ است کیا گھراس کی کر نے والا اس بات پر قادر کئی کہ کر دول کوزند ہو کرے ؟ آ ہے بھر جھی جو بایا بال! کیوں نہیں ۔

جَِّقِيق تَرَكَيْ فِي لِيسَهُ الْحَاقِينِ الْعَالِمَ الْحَالِ الْعَلِيمَ الْحَالِمُ الْعَلِيمَ الْحَلِيمَ الْعَلِيمَ الْحَلْمَ الْعَلِيمَ الْحَلْمُ الْعَلِيمَ الْعَلِيمَ الْحَلْمُ الْعَلِيمَ الْعَلِيمَ الْعَلِيمَ الْحَلْمُ الْعِلْمُ الْعَلِيمَ الْعَلِيمَ الْعَلِيمَ الْعَلِيمَ الْعَلِيمَ الْعِلْمُ الْعَلِيمَ الْعِلْمُ الْعَلِيمَ الْعَلِيمَ الْعَلِيمَ الْعَلِيمَ الْعَلِيمَ الْعِلْمُ الْعَلِيمَ الْعِلْمُ الْعِلْمِيمِ الْعِلْمُ لِلْعِلْمُ الْعِلْمُ الْعِلْمُ لِلْعِلْمُ الْعِلْمُ لِلْعِلْمُ ا

بَغُولَى ؛ واللام للتبيين ، أولى لك مين لام مفعول كوضاحت كے لئے زائدہ ہے جومفعول پردافل ہے جيرا كه سقبًا ك ورّدِف لكم مين ہے۔

قِحُولِ ﴾ : وَلَيْكَ مَا مَكُوهُ لِيمِ عَنْ فَعَلَ كابيان بِ يعِنْ جَس كُونُو نا لِبَنْدَ كُرَابِ وه جَمُهِ كُوثِيْ آئِ گا۔ قِحُولِ ﴾ : يُمْنَى، بالياء والمتاء، اگرياء كيماتھ ہے و مرجع منی ہوگا اورا گرتا ہے ساتھ ہوتو مرجع نظفہ ہوگا۔

تَفَيِّيرُوتَشِّي

اُولی لَکُ فَاوْلی النح لفظ اَوْلی، وَیْلٌ کامقلوب ہے "وَیل" کے معنی ہلا کت اور بربادی کے بیں، یہاں اس نخص کیسے جس نے کفروتکندیب ہی کواپناشعار بنارہ ہے اور دنیائے مال ودوالت میں مست رہاہے، پھرای حالت پرمرسیا عدر استرام ہیں ہے کا ایک میں میں مست رہا ہے۔ یہ کواپناشعار بنارہ میں مست رہاہے، پھرای حالت پرمرسیا اس کیلئے چ رمر تبدلفظ ہلا کت و ہر بادی استعال کیا گیا ہے سب علی التر تیب ٹابت ہوں گے، مرنے کے وقت، پھر قبر میں، پھر حشر میں، پھرجہنم میں۔

اَلَیْت مَن ذٰلِكَ بِیقَدِدٍ النح لیمنی کیاوہ ذات حق جس کے قبضے میں موت وحیات اور ساراجہاں ہے اس پرقاور نہیں کہ مردوں کو دوبارہ زندہ کرد ہے؟ رسول اللہ بین نقط نے فرمایا کہ جو شخص سورۂ قیامہ کی اس آیت کی تلاوت کرے تو اس کو ب کلمات کہن چاہئیں ''بکلی و أنا عَلٰی ذٰلِكَ مِنَ الشَّاها بِیْنَ''

بعض مفسرین نے فکا صَدَّقَ وَ لَا صَلْمی المنع کا بیتر جمہ کیا ہے، گرائ نے نہ بنی مانااور نہ نماز پڑھی ہکہ جھٹلایااور ہیٹ گیا پھرا کڑتا ہواا پنے گھروالوں کی طرف چل دیا ، بیروش تیرے ہی لئے سزاوار ہے اور تجسی کوزیب دیتی ہے، ہاں بیروش تیرے ہی لئے سزاوار ہےاور تجھے ہی زیب دیتی ہے۔

مفسے ین نے اولسے لک، کے متعدد معنی بیان کئے ہیں، تف ہے بچھ پر ، ہلا است ہے بچھ پر ، خرابی یا تباہی یا بمختی ہے تیرے لئے ، لیکن موقع وکل کے لا سے اس کا من سب ترین مفہوم وہ ہے جو صافظ این کثیر نے اپنی تفسیر میں بیان کیا ہے کہ جب تواپنے ان کے ان کے اس کا من سب ترین مفہوم وہ ہے جو صافظ این کثیر نے اپنی تفسیر میں بیان کیا ہے کہ جب تواپنی خاتی ہے کہ جب تواپنی خاتی ہے کہ جو تو چل رہا ہے۔



مِرَةُ الدَّهُ مِرَكِيدَةً وَهِي إِجْدُونَا الْأَهُمُ مِرَكِيدَةً وَهِي إِجْدُونَا الْمُؤْلِقَةُ الْمُؤْلِقَةً

سُورَةُ الْإِنْسَانِ مَكِيَّةً إِحْدَى وَتَلَثُونَ آيةً. سورة انسان مَى جِ، النيس آيتين بين -

لَمْرَكِيْنُ فِيهِ شَيِّئًا مَّذَكُورًا ۞ كنان فنه منصورًا من طبل لا يُدكر او المرادُ بالأسسار الحسل وسيعس منده البحيفين إنَّاخَلَقْنَا الْإِنْسَانَ البحنيس مِنْ نُطْفَةٍ أَمْشَاكَ أَوْ احلاطِ اي سن سه البرخين وسه الممزاه المُحْمَطِينِ المُمُترِحِينِ لَنَّبَتُلِيمِ لَحْمَرُهُ بِالْمُكَمِّفِ وَالْحُمُدُ لِلسَّامِةُ أَوْ حَالُ لُمَدَرَهُ أَي لُرِيدِينِ البلاءِ فَ حنى تُرَقِمه فَجَعَلْنَهُ مسب ذلك سَمِيْعًا بَصِيرًا ﴿ إِنَّا هَدَيْنُهُ السَّبِيْلُ مَنَا لَهُ طَرِيقِ الْمُدى مغت الرَّسُ لِمُّالتَّاكِرُّا اي مُؤْمِنًا **قَرَامًا كَفُوْرًا**ءَ حالان من المنعُول اي مَمَا لهُ في حال شُكره او كُفره المُسدّره وامَ المقصيل الاخوال إِنَّا أَعْتَدْنَا هِيَّانَ لِلْكَفِرِينَ سَلْسِلا يُسْحِنْ فِي إِنَّا وَاَغْلَلُا فِي الْمَافِيمِ نُشَدُّ عَيْفِ السّلاسلُ **وَسَعِيْرًا**® نارًا مُستَعر ةَ اي مُنِيَحة لُعدَلُونَ بِهَا إِنَّ **الْأَبْرَادَ** جَمُعُ بَرّ او بَارٌ وهُمُ الـمُطَيْعُوْنِ **بَيْثُرَبُّوْنَ مِنْ كَأْسِ غ**َـو الـاءُ شُـزِكِ الْـحـمر وعي فيه والمُرادُ مِنْ حَمْر للسميةُ للحالَ عشم المحلّ ومن للنّعيص كَانَ مِزَاجُهَا م لِمرح به كَافُورًا مُعَيّنًا عدلُ من كافورًا فنيه رائحه ليَشْرَبُ بِهَا منها عِبَادُاللهِ اوْلِياءَ ذَي يُفَجِّرُ وَنَهَا تَفْجِيرًا ﴿ يَلْمُؤْونَ مِلْ مَا مُولِهِ مُنْ وَاسْ مَا رَلِيم يُوفُونَ بِالنَّذُرِ في عام الله وَيَخَافُونَ يُومًا كَانَ شُرَّهُ مُسْتَطِيرًا السندر ويُطْعِمُونَ الطَّعَامَ عَلَى حُيِّهِ الى الضعام وشهوتها -مِسْكِينًا فَنَدُرًا قَيَتِيمًا ذَابِ لَهُ قَالِسِيرًا بِعْسَى السَخْنُوسِ حِنَى إِنْمَانُطْعِمُكُرُ لِوَجُهِ اللهِ سِلْسَبُ وَاللهِ لِانْرِيْدُونَكُمْ جَزَاءً وَلا شُكُورًا ٥ شُكْرًا ونه عمى الائلعام وهن تكنفوا مذلك او علمه الله سنهنه دفعي حسيب وفولار إِنَّالَعَاقُ مِنْ مُربِنَايُومًا عَبُوسًا كُنتُ الدُّحُوهُ فقه اي كُريَّة الْمَنظَر ليسَدَّت قَمْطَرِيرًا شديدًا مي دلك فَوَقَهُمُ اللَّهُ شَرَّدُ لِكَ الْيَوْمِ وَلَقَهُم اخطاهُم نَضَرَةً خسس واصاء هُ مي وُحُوهيم وَسُرُولًا ھ (ومَزم پيڪلٽر]≥-

وَجَزْتُهُمْ مِمَاصَبِرُوّا مِصَدِهِمْ مِن المعتمية جَنَّةً أَدْحِدُوْهَ وَحَرِيْرًا ۗ ٱلْمِشْوَهِ تُمَّتُّكِيْنَ حَالٌ مِنْ مَرْفُوع أَدْخُهُ لَوْهِمَا الْمُقَدَّرَةَ وَكِدَا لَا يَرُونَ فِيُهَاعَلَى الْأَرَابِكُ السَّمَرِ فِي المُحَدِّلِ لَايَرَوْنَ بِحِدُوْلِ حَالُ ثَانِيةً فِيْهَاتُمُمْسًا وَلَانَهُهُولِيُولَةَ اي لاحرًا ولا مردًا وقنين الرنبيرينز النمز فيبي لنصينةٌ سل عير شنمس ولا قمر وَدَانِيَّةً مرنية عيفت حيين مُنحنَ لا يروَن اي عنر رائين عَلَيْهِمْ سَيْبَ ظِلْلُهَا شَيْحُرُهِ، وَدُلِّلَتَّقُطُوفُهَا تَذَلِيْلًا® أذبيت ثمارها فمالها المائم والناعذ والمنطعة ويُطَافَعَلِهِمْ بِإِنِيَةٍ مِنْ فِضَّةٍ وَأَلُوابِ افداح للا عُرَى كَانَتُ قَوَارِيْرَاهُ قُوَارِيْرًا مِنْ فِضَةٍ اى الله سن عنه برى الله سن سعر كالرعام قَدَّرُوْهَا اى العائمون تَقَلِيُرُكُ على قلد ري الشّارين من عير ربادةٍ ولا غص وديث الدَّ الشّراب وَلَيْنَقُونَ فِيْهَاكَأْسًا اي كالمراحس الدي مستند به العرب سيس المساع في الحدل وَيُطُونُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانُ مُّخَلِّدُونَ مِسْفَه الولدان لا يشنيلنون إذَارَايْتُهُمْ حَسِيْتَهُمْ للحنسية والمسارعة في الحدمة لُؤُلُوًّاهَ فَتُوَّاد من سلكه او من سدفه ونحو الحسل منهُ في عير ديك وَإِذَارَايَتَ ثُمَّ أي وُحدت الرَّوْبُ سنك في الْحَمَّه رَأَيْتَ حوابُ ادا نَعِيْمًا لايُوْمِيفُ قُومُلُكًاكِبِيرًا ﴿ والسِعَالا عالَمَ عَلِيَّهُمْ فِولِيْهُ فِيصِنُهُ على الطَّرُفيَّة ونحو حسرُ السُمُننداُ عَدةً وفي قراءةٍ مشتكون الياء مُلنداً وما سغدة حدرَة والصَّملُ الشَّصلُ له للمفوَّف عنيهم ثِيَابُ سُنُدُسِ خريْرٍ خُصُّرُ بالرَّفَ وَالسَّنْبُرَقُ الحرِّ ما عمد من المديد وهو البطائل والشبلدائ البطهائر وفي قراءةٍ سكسل ب ذكر فلهما وفي أحتري ترفعهما وفي أخرى حرِّهما وَّحُلُّوٓ ٱلْكَاوِرَمِنُ فِضَّةٍ وَفِي سَوْمِ الحَرِ مِنْ دَهِبِ لِلالْدَانِ بَاللَّهِ لَحِنُونَ سَ النَّوْعَيْنِ مِعَا وَمُعْرَفًا وَسَقْهُمْ رَبُّهُ مُرْتُهُ مُرْتُكُ اللَّهُ وَرَّانَا لَمُ مِعَدُ فِي صَهِدُ رَمَّهُ وَ عَدَافِ حَذَر الدِّي إِنَّ هُذَا السعيم عَ كَانَ لَكُمْ جَزَاءٌ وَكَانَ سَعْيُكُمْ مَّشَكُورًا *

ت المنظمين المنظم الله من المنطقة المن میں ایباوقت (بعنی) جا میس سال تھی گذرا ہے کہ واس میں کوئی قابل ذکر چیز نہیں تھا (بلکہ) و داس زمانہ میں ایک نا قابل ذکر منی کا پتلاتھا، یا اسسان ہے جنس انسان مراد ہے، اور حیسن سے مدت ممال مراد ہے، بے شک ہم نے انسان کو مرداور عورت (یعنی) حال ہے کہ ہم اس کوابل بنا کر آ ز مانے والے تھے، اس کے ہم نے اس کوشنوااور بینا بنایا، ہم نے اس کوراہ دکھائی (لیعنی) ر سول بھیج کر اس کے بئے راہ ہدایت واضح فر مائی ، اب خواہ وہ شکر گذارمومن ہے ، یا ناشکرا دونول مفعول ہے حال ہیں لیعنی اس کی حاست شکر یا حالت کفر میں جواس کے سئے مقدر ہے (یعنی) راستہ واضح کرد یا ،اور اِمسیا حالات کی تفصیل کے لئے ہے، بے

شک ہم نے کا فروں کے لئے زنجیریں جن کے ربعہ ان کوآ گے میں تھسیٹا جائے گااہ رطوق ان کی مرون میں کہ جن میں زنجیم ول ُ و با ندھا ج ہے گااور دہکتی ہوئی آ گ جس میں ان کو مذاب دیا جائے گاتیا رَسر رکھی ہے، ہے شک نیک لوگ ایسا جام شراب پئیں ئے جس میں کا فور کی آمیزش ہوگی سے اس شراب کے اس پیالے و کہتے ہیں جس میں شراب ہواور کاس سے مراد جا مرکی شراب ہے، لیعن کل بول کرحال مراد ہے اور میسٹ تبعیضیہ ہے، (کافور)ایک چشمہ ہے کہ جس سے اللہ کے نیک ہندے اس کے ولی بئیں گے غینٹا، کافور سے برل ہے،وہ چشمہ کہ جس میں کافور کی خوشبو ہوگی اورا یے گھروں میں جہاں جا ہیں گے اس سے نہریں نکال کرنے جائیں گے اور خدا کی طاعت میں جو نذریں پوری کرتے ہیں اور ا ں ان سے ڈرتے ہیں جس کی برانی عاروں طرف بھیں جانے واں ہےاورمشین کو بیجن فقیراور یہ ہم کو جس داباپ نہ ہو اور قیدیوں کو جو(اس پر) سی کے تق میں محبوس ہو اس کھانے کی خواہش کے باوجود کھلاتے ہیں (حال یہ کہ وہ کہتے ہیں) ہمتو تمہیں خدا کی رضا مندی یعنی طلب تواب کے نے کھلے تے جیں نہ ہم تم سے کوئی صد جا ہتے ہیں اور نہ شکر گذاری ،اس میں کھانا کھا، نے کی مدت کا بیان ہے ،خواوانہوں نے بیہ بات کہی ہویا خداکوان کے بارے میں اس بات کا علم ہونے کی وجہ سے القد تعانی نے ان کی تعریف فر مانی ہو، دونوں قول ہیں ، ب شک ہم اپنے پروروگارے اوای کے دن ہے جس میں چبرے بگڑ جا کمیں گے ڈرتے ہیں لینی اس دن کی نہایت شدت کی وجہ ے کر بہدالمنظر ہوجا تھیں گے، اپس انہیں امتد تھی نے اس ون کی برانی ہے بچا میا اور انہیں تاز کی (یعنی)حسن اور چہرے ی رونق اورخوشی عطافر مائی اوران کے معصیت ہے بازر ہے برصبر کرنے کے بدیلےانہیں جنت میں داخیہ اوررنیثم کالباس طا فرمایا، بہلوگ وہال مسہر یوں پر خیموں میں تکیدلگائے جینیس کے (مقکنیس) اد خصلو ها مقدر کی شمیر مرفوع سے حال ہے نہ وہاں آ فناب کی ترمی ویکھیں ئے اور نہ جاڑ نے کی سردی ، لیٹن نہ نرمی اور نہ سردی ہوگی ، (لَا یَسوَوْ فَ) لَا یَسجدُوْ فَ کے معنی میں حال ثانیہ ہے، کہا گیا ہے کہ د مصریب ہے مراد آمر ہے (جنت) بغیر تنس وقمر کے (نور عرش سے منور ہوگی) اوران پر جنت ک ور تنوں کے سایہ جھکے ہوئے ہوں گے ، (دانیة) كا عطف لاير ون كار يرب اى لاير ون عير رانين كے عنى بين ،اور ان درخنوں کے بچھوں کے شجھے نیچے لڑکا کے گئے ہول گے، لینی ان درختوں کے پچل قریب کردیئے گئے ہوں گے، کدان ہو کھڑے کھڑے اور جیٹھے بیٹھے اور لیٹے لیٹے حاصل کرلیں ، اور جنت میں ان پر حیا ندی کے برتنول اورا بسے جامول کا دور چلایا جائے کا، کہ جوششے کے ہول کے (الکواپ) ایسے جام کہ جن میں ٹوننی نہ ہواور شیشے بھی جاندی کے لیمنی وہ جام ایسی جاندی کے بوں *گے کہ* جن کا اندر باہر سے نظرا ہے گا، کا کچ کے ما ننداور دور جلانے والے ان جاموں کوایک انداز سے پینے والوں کے پیاس سے مطابق بغیرزیادتی اور کمی کے بھریں گے اور بی(طریقہ)لذیذ ترین طریقہ ہے اورانہیں وہاں ایسے جامشراب پیا نے جا کمیں گے کہ جن کی آمیزش زنجبیل (سونٹھ) کی ہوگی یعنی ان میں زنجبیل کی آمیزش ہوگی ، جنت کے ایک چنٹھے ہے کہ جس کا نام سلسبیل ہے، عَیْنًا، زنجبیل ہے بدل ہے بینی اس کا پانی زئیبل کی مانند ہوگا جس ہے عرب لذت حاصل کرتے ہیں جس کا حلق ہے اتر ناسبل ہوگا، اور ان کے باس ایسے نوخیز لڑ کے آمد ورفت رکھیں گے جو ہمیشہ لڑ کے ہی رہیں گے، یعنی نوجوائی کی < (مَنْزُم بِبَاشَهُ إِ

عَجِقِيق الْمِنْ اللَّهِ اللَّهُ اللّلْمُ اللَّهُ اللَّالِمُ الللَّا الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ

فِیوَ لَکُنَّ ؛ هَلَ فَلْهُ اس میں اشارہ ہے کہ ہال بمعنی فَلْهُ ہاست کہ استفہام کے معنی اللہ تعالی کے لئے می ل میں ، یا ؟ استفہام تقریری ہوسکتا ہے۔

فَخُولِ الله على الانسان، آدم يبال انسان كي تفسير آدم سے كى ہے اور "كنده انسان كي تفسير جنس آدم سے كى ہے، حالا نكدة ع من إذا أعيد من السمعرفة كانت عين الاولى جب معرف كاعاده كياجائة توعين اولى مراد ہوتا ہے اس كامقتضى ہے دونوں جگدانسان كي تفسير آدم سے ہو۔

جِهُ لَبْعِ: ية عده اكثريب كليبين-

كُرِّيِينْ إَجِولَ شِيْء خلقنا الانسان مي مضاف محدوف باى حلقما ذُرِية الإنسان.

قِوَلْ مَن بَنَلِيْهِ جمله متانف بيا خلفعا كي خمير فاعل سے حال مقدرہ ب اى خَلَفْنَاهُ حال كونِهِ مويدين إلى الاءَ ا اس لئے كدابتلا بالتكاليف من وبصير ہونے كے بعد بى ہوتى ہے ندكداس سے پہلے۔

فَيْخُولِكُمْ ؛ إِنَّا هَدَيْنَاهُ يَهِال مِدايت بِمرادولالت اورر بهمائی بِ مفسرعلام نے بَيَّنَا كَهِدَراس كَ طرف اشاره كيا ب فَيْخُولْكُمْ ؛ كَالِسِ "جامِشراب "يهال كانس بول كرمجاز أشراب مراد بيعنی ظرف بول كرمظر وف مراد ب، اوراگر كا، بے ظرف بی مرادلیہ جائے تو مِنْ كوابتدائيه ما ننا ہوگا لیمنی شراب چنے کی ابتداء جام شراب ہے ہوگی ، ظرف بول كرمظر وف م

--- ﴿ (مَرْزُم بِبُاشَلِ] ◄

لینے سے تکف ک وجہ رہے کہ کان مِزَاجُها کافورًا جملہ وکر کأس کی صفت واقع بوری ہے ترجمہ رہ وگا جنتی اسے ج ت بنیں گے کہ جس میں کا فور ک آمیزش ہوگی حالا نکہ جام میں کا فور کی آمیزش کا کوئی مطلب نہیں ہے' البعة شراب میں سمیزش ہوسکتی ہے ای شبہ کودفع کرے کے لئے کہدویا گاس سے مافی الکاس مراد ہے۔

قِوْلَنَىٰ: يشْسِرتُ بها، باويس چندوجود بين، 🛈 باءزائده اي يشسر بهااس وقت يشرب متعدى بنفسه بوگا،

🕑 بمعنی مِنْ مفسر طلام نے بہم معنی مراولئے ہیں ، 🕑 باءحالیہ،ای ممؤوجة بھا 🏵 یشر بون بلنڈون کے معن كوصمن مو، اى يلتذون بها شاربيس.

فَيْ وَلَكُن ؛ المعجبوس بعق الكامطلب يد بكاس يركس كاحق داجب عيشالاً قرض وغيره جس كويدادانبيس رسكت ،قرض خواہ نے اپنے حل کے عوض اس کو قید کراویا ، اس لئے کہ قرض خواہ کو بیچل ہے کہ مقروض کو عدم اوا لیکی کی صورت میں قید کراوی اوراً بركوني تخص بإطل اورنده طريقه برمحبوس بيتواس كوكها نا كحلا بالبطريق اولى كارتواب بوگا..

فِيُولِكُنَّ ؛ إِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللَّهِ الخ، قانلين اس ت يُبِلِي تعذوف بـــ

فِوْلِكُنى: شُكُورًا، شكرًا كمعنى مين إفواصل كارعايت كى وجه عن شكورًا الايا كيا ب، ايك أسخر مين فعيه علة الإطعام ب،اس كامطلب بكه المسا نطع مكر لوجه الله باطعام كى علت ب،اور بعض سنو مين علة ك ب نے علی ہے اس کا مطلب یہ ہے کہ ہم تم کو اوجہ اللہ کھانا کھلاتے ہیں اس کھلانے پر ہم شکریہ کے طالب نہیں ہیں ، مگراس صورت میں فیہ کی ضرورت نہیں ہے۔

فِيَوْلِكُنى: وَهَوْ تَكَلَّمُوا بذلكَ أَوْ عَلِمَه اللَّهُ مِنهُمْ اسعبارت كامقصدية بنانا بكد ذكوره جمله مي دواحمال بين اول بد کے بیمقولہ کھانا نے والوں کا ہواورانہوں نے زبان مقال ہے بیربات کہی ہو،اور دوسرااحتمال بیرہے کہ بیمقولہ ابتدتعالی کا ہو، اورا مند تعالی کو چونکہ ہر مخص کی نبیت اور ارادہ کاعلم ہے اور اللہ تعالیٰ کے علم میں بیہ بات تھی کہ انہوں نے کھا ، لوجہ اللہ کھلا یا ہے سی صد باشکر بیکا طالب: وکرنبیں کھلا یا تو اللہ تعالیٰ نے ان کی تعریف کرتے ہوئے میہ جملہ فرمایا۔

فِيُولِكَ : يَوْمًا عَبُوسًا قَمْطُويْرًا ، عَبُوسٌ صفت مشبه كاصيغه بمند بكارُ في والا ، ترش روبوف والا ، قسمطويرًا مصيبت اوررنج كاطويل دن (ليعني روز قيامت) كو كبتے ہيں،اصل محاور وہيں فَسَمْ علسر بِ السنساقية اس وقت بولتے ہیں جب اونٹنی ذم اٹھا کر، ناک چڑھا کر، منہ بنا کر مکروہ شکل اختیار کرلے، اسی مناسبت سے ہر مکروہ اور رہنج دہ دن کو "في مطرير" كهتيم بين اصل ماده قَطْرٌ ہے ميم زائد ہے (لغات القرآن) يَوْمًا موصوف ہے عَبُوْمًا صفت اول ہے اور فَمْطَرِيرًا صفت تانى بجمله بوكرنَحَاف كاظرف بـــ

قِوْلَ ﴿ فِي ذلك، أي في العبوس.

هِوُلِكَنَّ : لَا يَرَوْنَ مِي كُلُ أُذْخُلُوا كُلْمِيرِ عِي حال ثانيهـ

چھول کئی : زمھریو ۱، رمھویو کے معنی تخت سروی کے جی فسفہ کی اصطلاع میں زمبر سرفضاء میں ایک نہایت شدید سروطبقہ کا نام ہے اس کے ملاوہ فضاء میں سرہ ناری اور سرہ ہوائی بھی جیں۔

قِيَّوْلِ أَنَّى : على مَحَلَ لا يَوَوْن ، لَا يَوَوْن عال بوئ فَي بَرْتِنا منصوب باي وجهت دانية بهي منصوب ب-قِيَّوْلِ أَنَى : عليْهِ مْر، مِنْهُ مْر، على كَ تَفْيِهِ مِنْ سَرَّرَا اللهِ مِرْ الإِرَاء على بَمَعْنَ مِن باس سَحَ كه ذانية كاصلامِن مستعال مستعال

ستعمل ہےنہ کہ علی

قِیْوُلْکُی ، شہرها، طلالُها کی نمیر شہرها ہے کرے کامقصدایک احت انس کو دفع کرناہے، اعترانس یہ ہے کہ جنت کے سائے ان پر جھکے ہوئے ہوں گے، حالا نکد سامیسوری کی جدہ پیدا ہوتا ہے اور جنت میں شمس وقمر ند ہوں گئے وس میہ کہے ہوسکتا ہے؟ اس کا جواب دیا کہ ظلال سے مراونس شجر ہے، یعنی درخت کی شاخیس جنگی ہوئی ہوئی ہوں گی۔

قِوْلَيْ: أَخْسُ مِنْهُ فِي عِنْرِ دلك اس عبارت كان في كامقصدا يك وال كاجواب وينات

میکوال ؛ جنت کے ملان کو بھر ہے ہوئے موتیوں ہے تشبیہ دینے میں کیا تعمت ہے ؟ جب کہ یا مطور پر منظوم اور پروئے ہوئ موتیوں سے تشبیہ دی جاتی ہے ؟

جِوَّلَ بِنِي جَنْتَی غان کوشن وانتشار میں غیر مثقب (بن بند ھے) مو تیوں ت تغیید ینا مقصود ہے، اس سے کہ موتی میں سوراخ بونے کے بعد چک اور صفائی کم ہوجاتی ہے جو کہ ایک قتم کا نقص ہے اور بن بند ھے (غیر مثقب) موتی منتشر ہی ہوتے ہیں، ایمن موتی جب صدف اور سنک میں ہوتا تو وہ دسن وخو لی میں بہتر ہوتا ہے اس سے جو صدف یا سلک میں ہوتا ہے۔

یمنی موتی جب صدف اور سنک میں نہیں ہوتا تو وہ دسن وخو لی میں بہتر ہوتا ہے اس سے جو صدف یا سلک میں ہوتا ہے۔

یمنی موتی ہوئی ہے۔

یمنی کی مفعول کو حذف کردیا گیا ہے۔

کے مفعول کو حذف کردیا گیا ہے۔

تفسيروتشن

هَلْ اَتِی عَلَی الْانسانِ، هَلْ جمعیٰ فَذَ ہے جیسا کہ ترجمہ ہے الاسسان ہے بعض حضرات نے ابوالبشر'' آدم علیفراؤوالیفٹو'' مراد لئے بیں،اور حیس ہے روح بھو تکنے تک کا زیانہ مرادایا ہے، جو پالیس سال ہے،اورا کنرمفسرین نے الانسان کو بطور جنس کے استعمال کیا ہے،اور حین ہے مرادحمل کی مدت لی ہے جس میں جنین تو بل ذکر شی نہیں ہوتی،اس میں گویا انسان کو متنبہ کیا گیا ہے کہ وہ ایک پیکر حسن و جمال کی صورت میں رحم یا در سے باہر آتا ہے اور جب عفوال شباب کا زمانہ آتا ہے تو اب نے رب کے سامنے اگر تا اور اتر اتا ہے،ا ہے اپنی حیثیت اور حقیقت یا در کھنی جا ہے کہ میں تو وہی ہوں کہ مجھ پر ایک زمانہ ایس

اِنَّ الْاَبْرَارَ يَسْرِيُونَ ، عَبِلَ آيتوں ميں اشقياء کا ذَرتھا اب ان ڪ مقابله ميں سعدا ، کا ذَكر ہے ، ڪأس اس جام کو کہتے ہيں جو بھرا ہوا ہو ، کا فورائيک ٹھنڈی اور مخصوص خوشبو کی حامل شی ہوتی ہے اس کی آمیہ ش سے شراب کا ذا کقہ دوآ تشداوراس کی خوشبو

— ﴿ (فَرَمُ بِبَاشَ إِنَّ ﴾ -

شام جان کومعطر کرنے والی ہوجاتی ہے۔

۔ یُوفُونَ بِاللَّذِرِ الْح ، یعیٰ صرف ایک اللہ کی اطاعت اور عبادت کرتے ہیں اور نذر بھی مانے ہیں تو صرف اللہ کے سے اور اے پورا کرتے ہیں اس سے معلوم ہوا کہ نذر کا پورا کر تا ضرور ک ہے بشر طبیکہ معصیت کی نہ ہو۔

زر ماننے کی چندشرا نط:

نَشَنُکُنْکُنْ : نذر ماننے کی چند شرائط ہیں ، اول ہیر کہ جس کام کی نذر مانی جائے وہ جائز ہومعصیت نہ ہو، اگر کسٹنی نے ناجائز کی کہ نذر مانی تو اس پرلازم ہے کہ وہ ناجائز کام نہ کرے اور شم کوتو ژوے اور شم کا کفارہ اداکردے اگر نذر شم کے ساتھ ، نی ہو، ایس کی نذر مان لیے ہے واجب نہ ہواک لئے کہ اگر کوئی شخص واجب یا فرض کی نذر مان لیے یہ نوہوگی۔ امام صاحب زیجہ کا مکا کہ ناز دیک یہ بھی شمط ہے کہ جس کام کو بذر تعد نذرائے اور لازم کیا ہے، اس کی جنس کی کوئی

امام صاحب رَیِّمَنُلُدانُهُ عَالِیٰ کے نز دیک ہے بھی شرط ہے کہ جس کام کو بذر بعیہ نذرا ہے او پر لازم کیا ہے، اس کی جنس کی کوئی بادت شریعت میں واجب کی گئی ہو بھیے نماز ،روزہ ،صدقہ ، حج ،قربانی وغیرہ ،اور جس کی جنس کی شریعت میں کوئی عبوت واجب میں ،اس کی نذرہ سننے سے نذرلازم نہ ہوگی ، جھے کسی مریض کی عیادت کی نذریا جنازہ کے بیچھے چلنے کی نذروغیرہ ،نذرک احکام تفصیل کے لئے کتب فقہ کی طرف رجوع کریں۔

ویسط عسمون الطعام النے، لین اہل جنت کے لئے ندکورہ انعامات اس لئے بھی ہیں کہ وہ دنیا ہیں مسکینوں، تیبموں اور پر یوں کو کھانا کھلاتے ہیں کہ وہ دنیا ہیں مسکینوں، تیبموں اور پر یوں کو کھانا کھلاتے ہیں کہ وہ خود کھانے کے مسلم کے بین کہ عنی مع ہے مطلب بیکہ یہ لوگ ایسی حالت ہیں بھی غریبوں کو کھانا کھلاتے ہے، جب کہ وہ خود کھانے کے مطابق قید ہے۔ جب کہ وہ خود کھانے کے مطابق قید ہے۔ جو محف ان کو کھانا کھلانا حکومت اور بیت المال کی ذمہ داری ہے جو محف ان کو کھانا کھلانا حکومت اور بیت المال کی ذمہ داری ہے جو محف ان کو کھانا تا ہے وہ حکومت اور بیت المال کی مدد کرتا ہے۔

النَّحْنُ تَاكِيدُ إِسْمِ إِنَّ او فَصْلُ مُزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْانَ تَهُوْيِلُاهُ خَبَرُ إِنَّ اى فَصَلَانَاهُ وَلَمْ مُنَوِلَهُ جُمُدَةُ وَاجِدَةً صَيْرُ لِكُمْ مِرَاقًا اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمْ الرَجِعُ عِن هذا الأمر ويَجُورُ أَن يُرَادَ كُلُ اثم وَكَافِر اى لا تُطهُ مُعْيُرَةٍ قَالَا لِمعنَّى صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَم الرَجِعُ عِن هذا الأمر ويَجُورُ أَن يُرَادَ كُلُ اثم وَكَافِر اى لا تُطهُ صَدَهُ مَا أَيْ كَانَ فِيهُمْ دَعَاكَ اللهُ مِن إِدْم و كُفُر وَالْذَكُولُسُم رَبِّكَ فِي الصَّلوةِ مُبْكُرةً وَالْحِيلَاقُ يعنِي الفَجْرَ عَلَيْهُ وَالْمُؤُلِّهِ مِن المَعْورَةِ وَالْعِيشَاءَ وَسَيِّحَهُ لَيَلَاطُوبُكُ صَلِّ النَطَوعُ فَيهِ مِن اللهِ مِن المُعْرِبُ والْعِيشَاءَ وَسَيِّحَهُ لَيَلَاطُوبُكُ صَلِّ النَّطَوعُ فَيهِ مِن المَعْرِبُ والْعِيشَاءَ وَسَيِّحَهُ لَيَلَاطُوبُكُ صَلِّ النَّطُوعُ فَيهِ مِن النَّهُ مَ المَعْرَبُ والْعِيشَاءَ وَسَيِّحَهُ لَيَلَاطُوبُكُ وَاللهُ مُن المَعْرَبُ والْعِيشَاءَ وَسَيِّحَهُ لَيَلَاطُوبُكُ وَالْمُوبُولُ وَالْعَيْمُ وَاللهُ مُن اللهُ عَلَى المَعْرَبُ والْعَصْرَ وَالْعَشِرَ وَالْعَصْرَ وَالْعَرْقِ اللهُ مُن اللهُ عَلَى المَعْرَبُ والْعَشَرَ وَالْعَصْرَ وَالْعَصْرَ وَالْعَرْقُ اللهُ الل

ووقَعتُ إدا سؤقع الْ نحُو انْ يَشَا يُذُهنَكُمُ لانَهُ تعالى لم بشأ دلك وادا لمَا يِقْعُ إِ**نَّ هٰذِم** السُؤرَة ت**َذَكِرَةً ۚ** عطَةُ لِلْحَلْقِ فَمَنْ شَكَةُ اتَّخَذَالِلْ مَ يِهِ سَبِيلًا الله عَلَى الله إِلَّا أَنْ يَشَاآءُ اللَّهُ ولك إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيْمًا حِنْ حَكِيْمًا اللَّهِ مِي معد، يُذُخِلُ مَنْ يَشَآءُ فِي رَحْمَتِهُ خِنْتِهُ وَهُمْ ﴾ المُؤسنون وَالظّلِمِينَ ناصنهُ فِعَلّ مُقدّرٌ اي أعد يُعبَرُهُ أَعَدَّ لَهُ مُعَدَّابًا ٱلِيّمَا ﴿ مُؤلمَا وَهُمُ الْكَافِرُونَ

ے (سَزَّلْمَا عَلَيْك المنے) إِنَّ كَي خبر إِيعِنى بِم أَتِر آن تعورُ التحورُ الرك نازل كيا، بي تواہي رب كيم براس كے پيغام كو پہنچا کر قائم رہ اوران کفار میں ہے سی گنبگاراور ناشکرے کی بات نہ مان لیعنی منتبہ بن ربیعہ اور ولید بن مغیرہ کی جنہوں نے نبی خون کا این کے ایک اس تحریک ہے باز آ ج وَاور رہ بھی درست ہے کہ ہم گنبکا راور کا فرمراد ہولیعنی ان میں ہے تو کسی کی بات نہ مان اس گناہ اور کفر کے معاملہ میں جس کی طرف بیآ پ پانٹائٹیج کو دعوت دے رہے ہیں ، اور اپنے رب کے نام کا نماز میں صبح وشام ذکر کیا کر بعنی فجر اورظہر اورعصر میں اور رات کے دفت اس کے ساتھ بجدہ کر بعنی مغرب اورعشاء کی نمیاز پڑھ، اور بہت رات تک اس کی سبیج کیا کر (لیعنی) رات میں غل نماز پڑھا کرجیسا کہ سابق میں گذر چکا ہے، دو تہائی یا نصف رات یا ایک تہائی رات، بے شک بیلوگ دنیا کوچا ہتے ہیں اورا ہے چیچے ایک بڑے بھاری دن کوچھوڑ دیتے ہیں سخت دن کو، لیمنی قیامت کے دن کو، کہاس کے لئے عمل نہیں کرتے ہم نے ان کو پیدا کیا اوران کے اعضہ ءومفاصل کومضبوط کیا اور ہم جب جا ہیں ان کے بدلے تخیق میں ان جیسے (دیگرلوگ) لے آئیں اس طریقہ پر کہ ان کو ہلاک کردیں تعسیدیلاتا کید ہے اور اِذا، اِن کی جگہ واقع ہوا ہے جیسا کہ "اِنْ یَشایُله هِبگُمر" میں، گرالقدتعالی نے ایسانہیں جایا، اور اذا، یے بنی الوقوع کے لئے استعال ہوتا ہے، بے شک بیسورت مخلوق کے لئے تقییحت ہے کہی جو جا ہے طاعت کے ذرایعہ اپنے رب کی راہ اختیار کرے اورتم طاعت ے ذریعہ راستہ نہ جا ہو گے مگریہ کہ اللہ ہی جا ہے (تشاؤن) تاءاور یاء کے ساتھ بے شک اللہ تق کی اپنی مخلوق اوراپ فعل کے بارے میں علم وحکمت والا ہے جسے جیا ہے اپنی رحمت میں داخل کر لے اور و دمونین بیں اور ظالموں کے لئے اس نے در دناک عذاب تیار کررکھاہے اوروہ کا فرمیں (الطالمین) کا تاصب فعل مقدر ہےاوروہ اَعدَّ ہے جس کی تقبیر اَعَدَلهم مَرر ہاہے۔

عَجِفِيق الْرَبِي لِيسَبِيلُ الْفَيْسِيرِي فَوَائِل

فِيُولِنَى: تاكيدٌ لِاسْمراد، اوفصل، اسعبارت كامقصد إنّا نَخنُ مُرُّلْنَا النّ كَل دوتر كيبول كي طرف اشاره كرناب، 🛈 نَدْخُنُ، إِنَّا كَ صَمِيرًى تاكيد ہے اور تاكيد مؤكد ہے ال كر مبتداء اور نَه زَّ لغا اس كَى خبر، 🏵 إِنَّا مبتداءاول ندحهُ صَمير تصل، مبتداء ثانی مُؤَّلنا خبر مبتداء ثانی وه این خبرے ل کر جمعه بوکر ، مبتداء اول کی خبر۔

- ھ [ركزَم پئلشر]≥ -

فِيُولِكُنَى: إِنَّ هَوْ لَاءِ يُسجِّدُونَ الْعاجِلَة بِما قبل مُدكورام ونهى كى علت بِ العِنْ آپ ﷺ مُدكورين سے اعراض اور وجدال وَ رامنداس لئے سجے كدان لوكوں كے توجدالى القدندكرنے كى وجدد نياطلى اور آخرت سے بے خوفی ہے۔

فَيُولِكُنَى: وَيَدرُونَ وَرَاءَ هُمْ يَوُمًا ثَقِيلًا، وَرَاءَ هُمْ، يَوْمًا عصال مقدم جاس لَتَ كدراصل وَرَاءَ هُمْ، يَوْمًا كره ك صفت بيومًا ثقيلًا موصوف صفت سل كريذرون كامفعول بـ

فَيْكُولْكُمْ: وَقَعَتْ إِذَا موقع إِنَّ اسْ عبارت كامقصدابك سوال كاجواب بـ

مِينُوْ إِلَى اللهُ المور مُحققه كے لئے استعال ہوتا ہے اور بیتبدیلی واقع نہیں ہوئی اس لئے کداللہ تعالی نے نہیں جاہاتو میام محمل مواند کہ محقق اور امور محتملہ کے لئے إِنْ آتا ہے نہ کہ اِذا؟

جِيَوُلْئِي: إذَا بمعنى إنْ بِمِجَازاً.

فَيُولِكُم : ذلك، اي اتخاذ السبيل.

قَوْلَى ؛ نَاصِبُهُ فعلٌ مقدرٌ به ما أُضْمِرَ عامله على شريطة التفسير كَ قبيل سے بيعن الظالمين تعلى مقدر كى وجہ سے منصوب بے اى اَعَدَّ الظلمين اَعَدَّلَهُمْ.

تَفَيْلُرُوتَشِينَ عَ

فَ اصْبِرَ لِحُونِ مِنْ الْبِعِ لِيْنَ آپِ فِيْنَ آپِ فِيْنَ الْبِعِينَ آپِ فَيْنَ الْبِعِنَ اللَّهِ الْمُعَلِّمِ اللَّهِ الْمُعْلِمِ الْبِعِنَ الْبِعِنَ الْبِعَالَ اللَّهِ الْمُعْلِمِ اللَّهِ الْمُعْلِمِ اللَّهِ الْمُعْلِمِ الْمُعْلِمُ الْمُعْلِمُ الْمُعْلِمُ الْمُعْلِمُ الْمُعْلِمُ الْمُعْلِمُ الْمُعْلِمُ الْمُعْلِمِ الْمُعْلِمُ الْمُعْلِمِ الْمُعْلِمُ الْمُعْلِمِ الْمُعْلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعْلِمُ الْمُعْلِمُ الْمُعْلِمُ الْمُعْلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعْلِمُ الْمُعِلَمُ الْمُعْلِمُ الْمُعْلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلَمُ الْمُعِلَمُ الْمُعِلَمُ الْمُعْلِمُ الْمُعْلِمُ الْمُعْلِمُ الْمُعِلِم



مُرْفِعُ الْمُرْسِلُ الْمُكِنِّيَّةُ وَمُحْمِينُ الْمُرْسِلُ الْمُؤْتِكُ

سُوْرَةُ الْمُرْسَلاتِ مَكِّيَّةٌ خَمْسُوْنَ ايَةً.

سورہ مرسلات کی ہے، بیاس آیتیں ہیں۔

بِسْمِ وَاللَّهِ الرَّحْ مِن الرَّحِ يَعِر وَ الْمُرْسَلْتِ عُرْفًا أَاى الرِّياح مُتَسَعَةً كَعُرُف المرْس ينانو خصه بغضا وخلله على الحال فالعصفت عَصَّقًا لَا الرِّاحِ الشَّدندة وَّالنُّشِراتِ نَشُرًّا لِا الرَّاحِ نَلْشُرُ المطر فَ**الْفَرِقْتِ فَرْقًا**لاً أي ايّات النَّمَرُان تُغُرِقُ مِينَ الحِقَ والْدَيْسِ والْحَلالِ والْحَرام فَأَلْمُلْقِيلِتِ ذِكْرًاهُ أي الملائِكةِ نَمُرلُ بِالوخي إلى الانبياءِ والرُّسُلِ يُنقُونَ الوخي الى الأسم عُ**ذُرًّا أَوْنُذُرًّا** أَي لِإعْدار وللألدار مس المنه تَعالى وفي قراء ةِ يضَمّ ذَال نُدُرًا وقُرئ يضَمّ دال عُدُرًا إِنَّكَالُوْعَدُونَ اي كُنّارُ سكّة من المغب والعداب لَوَاقِعٌ ﴿ كَائِنَ لَا مُحَالَةَ فَإِذَااللَّهُوْمُرْطُمِسَتُ ﴾ مُحى يُوزِها وَإِذَاالتَّمَاءُفُرِجَتُ ﴾ مُنفَت وَإِذَا الْجِيَالُ لْيِهَتُنَى فَتَتَ وسُيَرِتَ وَإِذَالرُّسُلُ أُقِتَتُ لَى الواو وبالهمرة بدلًا سَها اي حُمَعت لِوقَتِ لِأَيّ يَوْمِ بيؤم عطنه أَجِّلَتُ أَلَى الله الله المهم بالناب المؤمِرالْفَصْلِ عن الحلق ويُؤخذُ سَهُ حوابُ ادا اي وَقَ المعطيلُ نَيْنَ الحلائق وَمُّ الدُّرِيكَ مَا يَوْمُ الْفَصْلِ ﴿ تَهْوِيْنُ لَمُناهُ ۖ وَيُلُّ يَوْمَبِدٍ لِلْمُكَدِّبِينَ ﴿ هُذَا وَمَيْدُ الهُمْ ٱلْمُرْ نُهُلِكِ الْأُوَّلِيْنَ ﴿ مَنْكُدِيْبِهِمْ أَى أَهْلَكُمَا هُمْ تُكُرُّنُتِهِ عُهُمُ الْاجْرِيْنَ ﴿ سَمَنَ كَدَّنُوا كَكُفَار مَكَة مُنهَ مُكُنَّهُمْ كَذَٰلِكَ مِثْنِ مِعَدِمَا وَلَمُكَدِّينِ لَفُعَلَ بِالْمُجْرِمِيْنَ مِ رَكْنَ مِنْ اخْرَمَ فَيْمَا يَسْقَبِلُ فَنُهُمُّ فَهُمُ كُنِّهُمْ وَيْلُ تَوْمَيٍدِ لِلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿ تَاكُمْ نَخُلُقُكُمْ مِنْ مَّأَءٍ مَهِيْنِ ﴿ صعنِبِ وهُو الْمِي فَجَعَلْنُهُ فِي قَرَامِ مَكِيْنٍ ﴿ صعنِبِ وهُو الْمِي فَجَعَلْنُهُ فِي قَرَامِ مَكِيْنٍ ﴿ حرنيز وهُو الرَحمُ إِلَى قَدَيِقَعُلُومِ ﴿ وهِ وقَتْ الولادةِ فَقَدَّرُنَاكَ على دلكَ فَنِعْمَ الْقُدِرُونَ ۞ نحل وَيُلَّ ي**َوْمَبِدٍ لِلْمُكَذِبِينَ® ٱلْمَرْجَعْعَلِ الْأَرْضَ كِفَانًا**۞ مَصْدر كفت بمغنى سمّ اى صامّة أَحْيَاءً عَلى طهرها وَّامُوَاتًا ﴿ فَي لِفُنهَ وَجَعَلْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ شَمِخْتِ حِلْهُ لُونِيعَاتِ وَّالْنَقَيْنَكُمْ مَا أَغُفْرَاتًا ﴿ عَذَالًا وَيُلُّ يُوْمَىدٍ لِلْمُكَدِّبِيْنَ؟ ويُف لُ لَمُمُكَدِّينِ يَوْم الفياسة إِنْطَلِقُوْآ اللَّمَاكُنْتُمْ يِهِ سِنَ الْعَذَاب تُكَذِّبُوْنَ؟

إِنْظَلِقُوْ اللهُ فِلْ الْمَا وَمُ الْمَاءِ فَى عَصْمَهُ وَالْمَا اللهِ عَلَى اللهُ عَلَيْهُ مَنْ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ اللهُ ال

ت المروع كرتا بول الله ك نام سے جو بروامبر بان نهايت رحم والا ہے، تسم ہے سلسل جانے والی بواؤل كى یعنی ان ہوا وَں کی جوشنسل میں گھوڑے کے (گردن) کے بالوں کی ما نند ہیں ، عُمِر فَا حال ہونے کی وجہ ہے منصوب ہے، بھرز ور سے جلنے والی ہوا وُں کی قتم یعنی زور دار ہوا وُں کی اور پھیلانے والی ہوا وُں کی قتم ، یعنی ان ہوا وُں کی جو با دلوں کو پھیلاتی ہیں، پھرفرق کرنے والی آیات کی تشم یعنی قر آئی آیات کی جوتن وباطل اور حلال وحرام کے درمیان فرق کرتی ہیں، پھر وہی کا انقاء کرنے والوں کی قشم یعنی ان فرشتوں ک^{وش}م جوانہیاء پیبٹ^{نبلا} پر وحی لے کرنازل ہوتے ہیں یا ان رسولوں ک^{وش}م جواس وحی کوامت کو پہنچاد ہے ہیں،القد تعالی کی طرف ہے تو بہ کایا ڈرانے کاالقاء کرتے ہیں اورایک قراءت میں نُسذُرًا ے ذال کے ضمہ کے ساتھ نُسُدُرُ ا آیا ہے ،اور عُسُدُرً ابھی ضمہ ذال کے ساتھ پڑھا گیا ہے ،اے مکہ کے کافرو! جس بعث و مذاب کاتم سے وعدہ کیا جاتا ہے وہ یقیناً ہونے والا ہے لینی لامحالہ واقع ہونے والا ہے جب ستارے بے نور کردیئے جائیں گے بعنی ان کا نورسلب کرلیا جائے گا ، اور جب آسان بھاڑ دیا جائے گا اور پہاڑتو ڑپھوڑ کراڑ اویئے جائیں گے اور جب رسولوں کو وقت مقرر ہ پر جمع کیا جائے گا (وُ قِبَنَتْ) واؤ کے ساتھ اور داؤ کے عوض ہمز ہ کے ساتھ ، کس دن کے لئے (ان سب کو) مؤخر کیا جائے گا؟ بڑے دن میں امتوں پر بلنج (رسالت) کی شہادت کے لئے (مؤخر) کیا جائے گا ،مخلوق کے درمیان فیصلے کے دن کے لئے (مؤخر کیا جائے گا)اوراس سے إِذَا کا جواب اخذ کیا جاتا ہے اوروہ جواب "وَ قَسع لعصل بین الحلائق" ہے، اور جھے کیامعوم کہ فیصے کادن کیا ہے؟ (ابھام) اس دن کی ہولنا کی کو بیان کرنے کے لئے ہے، اس دن جھٹلانے والوں کی خرابی ہے بیان کے لئے وعید ہے کیا ہم نے اگلوں کو ان کی تکذیب کی وجہ ہے بلاک نہیں ھ (زمَزَم پِبَلتَّرز) ≥-

- ﴿ (فَنْزُمُ بِبَالْقَرْلِ) ٢

کر دیا ؟ لینٹی ان کو ہلاک کر دیا ، پھر ہم ان نے بعد تکذیب کرنے والوں میں پچپلوں کولائیں گے جیسا کہ کفار مکہ کہ ان کو ہم نے ہلاک کردیا ، اور ہم ایسا ہی جارے تکذیب کرنے والوں کے ساتھ کرنے کے ما تند ہر مجرم کے ساتھ کریں گے لیعنی ہراک شخص کے ساتھ کریں گے جو مستقبل میں جرم کرے گا ،ان کوبھی بلاک کردیں گے ، اس دن حیثلانے والول کی بڑی خرابی ہے بیتا کیدہے، کیا ہم نے تم کوایک حقیریانی ہے کہ وہ نطفہ منی ہے نبیں پیدا کیا؟ کہ ہم نے اس (یانی) کوایک وفت مقررہ تک کے لئے ایک محفوظ جگہ میں کہوہ رخم مادر ہے رکھ دیا اور وہ وقت ولا دت ہے غرض ہم نے اس کی منصوبہ بندی کی (بلاننگ) کی ہم کیسے اچھے منصوبہ بندی کرنے والے ہیں؟ حجتالانے والوں کے بئے اس دن بڑی خرابی ہے، کیا ہم نے زمین کوزندوں کو اپنی پیچے پر اور مردوں کو اپنے پیٹ میں سمینے والی نہیں بنایا؟ (محسف اتّا) کے ف ت کامصدر ہے (كَفَتَ) بمعنى صَدِّر يعني مينتيوالي، اور بهم نے ان ميں بلندو بالا بہاڑ بناد ئے اور بهم نے تم كوشيريں باني بلايا،اس دن حجملانے والوں کے لئے بڑی خرابی ہے، قیامت کے دن حجملانے والوں سے کہا جائے گا کہ تم اس عذاب کی طرف چلو جس کوتم حجثلا یا کرتے تھے،ایک سائبان کی طرف چلوجس کی تین شاخیں ہوں گی اور وہ جہنم کا دھواں ہے، جب وہ بلند ہوگا تو اس کے عظیم ہونے کی وجہ ہے اس کی تمین شاخیں ہوجا کیں گی جس میں نہ محنڈا سابیہ ہے کہاس دن کی گرمی ہے ان پر سا بیکن ہو اور وہ نہان کوآگ کے شعلول ہے ذرا بھی بچا سکے گاوہ آگ کے انگارے برسائے گی شرراس چنگاری کو کہتے ہیں جوآ گ سے اڑتی ہے محل کے مانند لیعنی وہ (انگارے)عظیم ہونے میں اور بلند ہونے میں عمارت کی مانند ہوں گے گویا کہ وہ کا لے کا لے اونٹ میں جیئت میں اور رنگ میں ، جسمالات ، جمالة کی جمع ہے اور جسمالة ، جمل کی جمع ہے اورایک قراءت میں جسمَسالَة ہے،اور صدیث میں ہے کہ آگ کے شعلے تارکول کے مانندسیاہ ہول گے،اور عرب کالے اونث کو صُفَرٌ کہتے ہیں اس کی سیا ہی میں زردی کے ملنے کی وجہ ہے لبندا کہا گیا ہے کہ آیت میں صُفر جمعنی سُود ہے، ندكورة تول كى وجد اوركها كيا ہے كه صُفَرٌ بمعنى سود نبيل ب،اورشَورٌ شردة كى جمع باور شرور، شوارة كى جمع ہے اور قیر کے معنی قساد (تارکول) کے ہیں ، اس دن جھٹلانے والوں کیلئے بڑی خرابی ہے ، یہ قیامت کا دن ایسا ہے کہ وہ اس دن میں پچھ بھی نہ بول عمیں گےاور نہان کوعذر خواہی کی اجازت ہوگی کہاس میں وہ معذرت کرعمیں ، یہ یُسٹو دَنُ ہر عطف ہے، معطوف علیہ سے تسبب کے بغیر، للبذاوہ نفی کے تحت داخل ہے ای لا اذا فلا اعتدار، لین جب ا جازت نہیں تو معذرت بھی نہیں ، اس دن جھٹلانے والوں کے لئے بڑی خرابی ہے ، یہ فیصلے کادن ہے اے اس امت میں سے تکذیب کرنے والو! ہم نے تم کو اور تم سے پہلے تکذیب کرنے والوں کو جمع کرلیا لہذا تم سب کا حساب لیاج کے گا اور عذاب دیا جائے گا، اگرتمہارے باس تم سے عذاب کو دفع کرنے کی کوئی تدبیر ہوتو کرلو، اس دن حجمثلانے والوں کے لئے بڑی خرابی ہے۔

عَجِفِيق تَرِكِي لِيَهِ اللَّهِ اللَّلَّمِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ اللللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الللَّا اللَّهِ

فَيُولِكُنَّ : وَالْمُوسَلَاتِ عُرِفًا ، الله تبارك وتعالی نے پائے صفات کی شم کھائی ہے جن کے موصوف محذوف بیں بعض حضرات تمام موصوفات الزیاح (بواؤس) کومحذوف مانتے بیں اور بعض کل میں ملائکة موصوفات محذوف مانتے بیں اور بعض نے مختلف بعنی بعض کے مدئکہ اور بعض کے الزیاح.

جَنُولِ آنَى : عُسرُفًا، عُسرُف گھوڑے کی گردن کے ہالوں کو کہتے ہیں ، پھر حقیقت عرفیہ کے طور پرتسسل و تابع کے معنی میں استعمال ہونے لگا۔

فَيُولِكُنا ، إِنَّمَا تُوعَدُونَ جوابِتم إور مَا بَعَنَ الَّذِي جِاور مَا يَمْ فَي عَدُولَهُ .

قَوْلَ كَنَّرُ طَكُدُ مِنْهُ جواب إِذًا، مِنْهُ اى من يوم الفصل ليني إِذَا كَثَرُ طَكُدُوف بِجو لِيَومِ الفَصْل عَيْمُهُوم بِ اى وَقَعَ الفصلُ بين التحلائق.

قَوْلَى، وَيُلْ يَوْمَنِدُ لِلْمُكَدِّبِيْنَ، وَيْلُ دراصل مصدر بجوا بِ فَعَل كَانَمُ مَقَام بِ مَرَثَات ودوام پرداست كر في كَانَ صب سے رفع كي طرف عدول كرايا كي ہے، جيراك سكام علاي گفريس ہے، كداصل بيس سلمت سلامًا تھا۔ قَوْلَ كَنَ : لاظليل، الانافيہ ب يہ ظلّ كي صفت ہاور بطور تبكم مشركين كو جم كارو ہے، اس سے كظل توظيل ہوتا بى ب ان كاس وجم كو لا ظلِيْل كه كرروكرويا كظل بى نبيس ہوگا۔

فَيُولِكُ ؛ مِن غير تسبُّبِ عنه ياكسوال مقدركا جواب -

میر این کا بیرے کہ فاء کے ذریعہ منٹی پرعطف معطوف پرنصب کا تقاضہ کرتا ہے کیونکہ معطوف بھی منفی کے تھم میں ہوتا ہے حالا نکہ یہاں فیکع تَذِدُ وْ نَ کوحالت رفع میں لایا گیاہے؟

< (فِئزَم بِسَالَةُ إِنَّا

تَفَيْهُ رُوتَشِي عَ

عُدُرًا اَوْنُذُرًا ، یہ مُلْقِیَاتِ ذِکُوًا، ہے متعلق ہے، لیعنی یہذکراوردتی انبیاءورسل، " پراس کئے ، زل کی جاتی ہے کہ مومنین کے لئے ان کی کوتا ہیوں سے معذرت کا سبب ہے اور اہل باطل اور کا فروں کے لئے عذا ب سے ڈرانے کا ذریعہ ہو۔

اِنَّهُ اَ اُوْعَدُوْنَ لُوَاقِعٌ ، تمام قسموں کامقسم ہے، کہتم ہے جس قیامت اور حساب و کتاب کا وعدہ بذریعہ انبیاء کیا جارہا ہے۔

وہ ضرور پورااور واقع ہوکرر ہے گا، آگے اس کے واقع ہونے کے وقت کے چند حالات کا ذکر ہے، وَإِذَا الْسُوسُلُ أَفِّنَتُ مطلب میں انہا ، وقت میں اپنی اپنی امتوں کے معاملہ میں شہاوت کے سئے میں اپنی امتوں کے معاملہ میں شہاوت کے سئے .

حاضر ہوں ، وہ اس میع دکو بہنچ گئے اور ان کی حاضری کا وفتت آ گیا۔

اَلَمْ نُهْ لِكِ الْآوَلِيْنَ ثُمَّ مُنْدِعُهُمُ الْآخِوِيْنَ، كيابم نے پہلے لوگوں کوان کے نفروعن دکی وجہ سے ہلاک نہیں کیا؟ فُمَّ مُنْدِعُهُ مُ الْآخِوِیْنَ، کیابم نے پہلے لوگوں کوان کے نفرومن دکی ہم نے اولین کے بعد انْدِ عَهُ مُنْ مُسْہور قراءت کی روے عین پر جزم کے ماتھ ہے، اور نُهْ لِلگُ پرعطف ہے معنی یہ بیں کہ کیا بہم نے اولین کے بعد اور آخرین کوان کے پیچے ہلاک نہیں کر دیا؟ اس لئے آخرین سے مراد بھی سابقہ امتوں بی کے آخرین مراد ہوں گے، جن کی ہلاکت خرول قرآن سے پہلے ہو چی ہے، دو سری ایک قراءت بیل عین کے ضمہ کے ساتھ ہے، اس قراءت کے مطابق یہ جمد اور آخرین سے مراد امت محمد یہ فیلی امتوں کی ہلاکت کی خبر دینے کے بعد موجودہ کفار اہل کہ کوآئندہ ان پر آنے والے عذا ہے کہ خبر دینا مقصود ہے جیسا کہ غروہ قبرہ میں سلمانوں کے ہاتھوں ان پر ہلاکت کا عذا ہو باتی تھی امتوں پر آسانی عمومی عذا ہے آتا تھا جس سے پوری بستیاں تباہ ہو جاتی تھیں، امت محمد یہ فیلی تعلیم کو اس کے مار سے کوری بستیاں تباہ ہو جاتی تھیں، امت محمد یہ فیلی تعلیم کو اس کے کا در سے مراد کی خور سے بیا کرام خاص ہے کہ ان کے کفار پر آسانی عمومی عذا ہے بیں آتا : بلکہ ان کا عذا ہے مسلمانوں کی توار سے آتا ہے جس میں ہلاکت عام نہیں ہوتی ہمرف پر سے مراث مجم میں مارے جاتے ہیں۔

- ﴿ (مَّزَمُ بِهَالْشَرْزِ) ◄ -

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي الْحَلْلِ اى تَكاثُفِ اشْجَار إِذْ لَا شَمْسَ يُظُلُّ مِنْ حَرِّهَا وَّعُيُونٍ فَيْ فَاعِة مِن الْمَاء وَ فَوَاكِهُ مِمَا يَشْتَهُونَ فَي الْعَلْمُ الدُّنَ الْمَاكُلُ والْمَشْرَبَ فِي الْجَنَّة بِحَسْبِ شَهْوَاتِهِمْ بِخِلَافِ الدُّنَ فَيحَسْب سَ لَيْ الْمُنْ فَي بَانَ المَاكُلُ والْمَشْرَبَ فِي الْجَنَّة بِحَسْبِ شَهْوَاتِهِمْ بِخِلَافِ الدُّنَ فَي مَا لَمُنْ مَنْ المُنَعِنُ الْمُعُولُونَ اللَّهُ مَعْوَلَ اللَّهُ مَعْمَلُونَ اللَّهُ مَعْوَلَ اللَّهُ مَعْمَلُونَ اللَّهُ مِن المُنْقِقُ وَلَي هَا اللَّهُ الللللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللللَّهُ الل

کر کری ہے۔ اور دل پند اس کی گری ہے۔ اور ہتے ہوئے پانی کے چشموں میں ہوں گے، یعنی اُلمے ہوئے پانی کے ، اور دل پند میں دول میں ہوں گے، یعنی اُلمے ہوئے پانی کے ، اور دل پند میں دول میں ہوں گے، یعنی اُلمے ہوئے پانی کے ، اور دل پند میں دول میں ہوں گے ، یعنی اُلمے ہوئے ہوئی ، خلاف دیا میں دول میں ہوں گے اس میں اس بات کی طرف اشارہ ہے کہ جنت میں کھانے پینے کی چیز میں حسب خواہش ہوں گی بخلاف دیا کے کہ بہاں وہی میوے (پھل) ملتے ہیں جواغابًا لوگوں کو دستیا ہوئے ہیں اوران سے کہا جائے گا (اے جنتیو!) ہم خوشگواری کے کہ بہاں وہی میوے اللی اس کے صلامی کھا کہ ہو، کہ سنیڈ اس مال ہے ای مُدَکھ ترفیف ، بشک ہم ایک جزاء جسی کہ تمام پر بیز گا رول کو دی ہے ہر نیکو کارکود میں گے، اس دن جھلانے والوں کے لئے بری خرافی ہے (اے جملانے والو!) یہ کا فروں کو خواب ہے ہم دنیا میں تحد کھا اواور مزے اڑا اواس میں تبد پر (وسکی) ہے بلاشبہ تم مجرم ہو، اس دن حصلانے والوں کے لئے بری خرافی ہے بلاشبہ تم مجرم ہو، اس دن حصلانے والوں کے لئے بری خرافی ہے بلاشبہ تم مجرم ہو، اس دن حصلانے والوں کے لئے بری خرافی ہے بلاشبہ تم مجرم ہو، اس دن حصلان نے والوں کے لئے بری خرافی ہے بلاشبہ تم مجرم ہو، اس دن کے عملانے والوں کے لئے بری خرافی ہے بلاشبہ تم مجرم ہو، اس دن کے بعد تم میں بات پر ایمان لا وکے؟ بینی اس کتاب رقر آن کے ایمان لا کئی ہیں اس اعباز پر مشتمل ہونے کی وجہ سے کند یہ کے بعد ان کے لئے مکن نہیں ہیں۔

عَجِقِيق اللَّهِ اللَّهُ اللّلْمُ اللَّهُ اللّ

قِوَلَى ؛ مِن تكاثف الاشجار ياضافت مفت الى الموصوف كيس ب، اى الاشجار المتكاثفة. قَوَلَى ؛ كما جزينا المتقين، نجزى المحسنين.

مَنْ وَالْ بَهِ اللهِ اللهِ الموتاعِ متقين اور محسنين مِن مغايرت بين عبد ونول ايك بين البذاية فرمان كه بم عبد المؤلف بيال ايك موال پيدا بهوتاع متقين اور محسنين مِن مغايرت بين عبد ونول ايك بين البذاية فرمان كه بم ن جیسی جزامتقین کودی ہے محسنین کوبھی دیں گے بیتشبیدائشی نفسہ ہے؟ جو کہ درست نہیں ہے۔

جَوِّلَ بِنَ مَتَقِينَ مِهِ او كاملين في الطاعة بي، اور محسنين عوه لوگ مراوبين جونفس ايمان كي حال بين، چنانچ مغامرت پائي گئي، قلا شيكال

تَفَسِّيرُوتَنَ حَيْ

كُلُوْ اوَتَهمَّعُو عَلَيْلا إِنكُمر مِخْوَمُوْ ، چندون يعنى موت تَك كَدَا في واور مزيا الو، آخر كارتم كو تخت مذاب ميں جانا ہے اس لئے كهتم مجرم ہو۔

وَإِذَا قِيْل لَهُمُ ازْ كَعُوا لا يوْ كَعُون ، كَم كَيْب كه يه آيت بَى تُقين . ديس نازل مونى ، جب كهان عند كما يا كه نم زيرهو، تو انبول في كما بهم جمك نبيس سئة جمكنا به رب في مشال به ، تو آب بالقائلة في ما يا لاخيس فيه وكوع ولا سجود" اوركبا كيا به كه بيان سة خرت مي كها جائكا ، ممروه ركوع سجده يرقا ورشهول كه سهول المناه من القدير، شوكاني)

ا کنٹرمفسرین کے نز دیک یہال''رکوع'' کے اغوی معنی لیٹنی جھکنا اوراط عت کرنا مراد ہیں ،مطلب بیہ ہے کہ جب ان سے دنیامیں احکام الہید کی اطاعت کے لئے کہا جاتا تھ تو یہاطاعت نہ کرتے تھے ،اور بعض حضرات نے رکوع کے اصطلاحی معنی بھی مراد لئے ہیں اور مطلب آیت کا یہ ہے کہ جب ان کونماز کے نئے بلایا جاتا تھ تو وہ نماز نہیں پڑھتے تھے،رکوع بول کر پوری نماز مراد لی گئی ہے۔ (معارف، دوج)

فَبِاَيِّ حَدِیْتُ بَعْدَهٔ یُوْمِنُوْنَ یعنی جب بیلوگ قرآن جیسی عجیب وغریب حکمتول سے پُر ، واضح ولائل اور سابقه تمام آسانی کتابول کی تقید لیق کرنے والی کتاب پرایمان نہیں لاتے تو پھرکوئی کتاب پرایمان لائیں گے؟ حدیث شریف میں ہے کہ جب قاری اس آیت پر پہنچ تو اس کو کہنا جائے ، آمَ فَا بِاللّٰه یعنی ہم اللہ پرایمان لائے مگر فرائض میں ان الفاظ کے کہنے سے احتراز کرے۔ (معارف ملعمیہ)



ۯؾؙؙؙؙٳڵڗؠٵؚڡڴؾڗۘ؋ؖۿڶۯۼٷؽڗڣؠٳۯڣ

سُوْرَةُ النَّبَأَ مَكِّيَّةٌ إِحْداى وَارْبَعُوْنَ ايَةً.

سورہ نیا مکی ہے، اکتالیس آیتیں ہیں۔

بِسْمِ عِلْلَّهِ الرَّحْفَ مِنِ الرَّحِبْ عِنْ عَمَّر عن اي شي: يَشَّاءُ لُوْلَ أَ مِسْلُ عَسُ فُولِسْ عد ع**ن النَّبَا الْعَظِيمِ إِنْ بِينَ ل**َمِن النَّسِينَ والاسْتَقِيمَ أَلْتَتَعَبُسُهُ وَبُو مَا حَامَ لَهُ النَّبِيُّ صَلَّى الله عليه وسنم من الغران المشمن على المغت وغيره اللّذِي هُمُ فِيهِ مُخْتَلِقُونَ ﴿ وَلَمُؤْمِنُونَ لَشُنُولَا والدفؤول يُلكرُونه كُلُّ رَدْعٌ سَيَعُلَمُونَ أَ مَا يَحَلُّ مِهِمْ عَلَى الْكَارِسِمُ لَهُ تُتَرَكَّلُا سَيَعْلَمُونَ * ناكنِدُ وحلى فيه شَمَّ للأندال بال الموعيد الشَّاسي اشدّ من الأول شُمَّ اؤمناً سعالي الى المدرة على البغث فنال ألمر تَجْعَلِ الْأَرْضَ مِهْدًا " سرانسا ك نمنهد وَالْجِهَالَ أَوْتَأَوَّا " يُنستُ سب الازض كم نشتُ الحيامُ الاوتاد والانسسه المُ استَفْرِيْسِ قَحَلَقُنْكُمُ أَزْوَاجًا أَ وَكُورًا وَاسْتُ قَجَعَلْنَانُومَكُمُ سُبَاتًا فَي راحة لاندال كه وَّجَعَلْنَا الَّيْلَ لِبَاسًا لِا سَنَرَا سَنَوَادِه وَجَعَلْنَا النَّهَارَمَعَاشًا أَوْ وَتَتَا لَلْمَعَايِش وَّبَنِينَا فَوْقَكُمُ سَبْعًا سِنَه سَمُوب شِدَادًا ﴾ جَمْعُ شَدِيْدَةِ اي قُورَةِ مُخكمةِ لا يُؤْثَرُ فيها مُرُورُ الرِّمان وَّجَعَلْنَاسِ رَاجًا مُمَرِّزا وَّهَاجًا ﴾ وقدا يىغىنى الشَّمْس **وَّأَنْزَلْنَامِنَ الْمُعْصِرٰتِ** السحاب، الَّتي حال لها أن تُمْطَر كَالْمُعْصر الحارية الَّني دنب س الحيس مَا أَنْجَاجًا إِ حسنا، لِلنُخْرِجَ بِهِ حَبًّا كَاحِمْتُ وَنَبَاتًا ﴿ كَانِسَ وَجَشْتٍ عَسَانِسُ الْفَافَاقُ مُلْسَفَ حمة المنب كشريف واشراب لآن يَوْمَ الْفَصّلِ بين الحلائق كَانَ مِيْقَآتًا ﴿ وَقَدُ الشّوابِ والعنابِ يَّوْمَ يُنْفَحُ فِي الصُّورِ القرَرَ بعدلَ من ينوم المعضل او بيان له واننافخ انسرافيلُ فَتَأْتُونَ من قُنُور كُمُ الى المؤقف أفواجًا في خماعاتٍ مُحْتَفة وَفُتِحَتِ السَّمَاءُ بالتَشْدِيد والتَّحْمِيْفِ شُقِّقتُ لِمُرُول الملائكة فَكَانَتَ أَبُواَبًا فَيَ داتِ الْوَابِ **وَسُيِّرَتِ الْجِبَالُ دُسِ**تَ بِهِا عَنْ اماكِمِهَا **فَكَانَتَ سَرَابًا** فَي مِنْعَهُ في حف سرب أَنَّجَهَنَّمَ كَانَتُ مِنْ صَادًا * رامسه أو مُؤضده لِلطّغِينَ الكوريل فلا بنحاورُ وُسها مَا ابَاللهُ سزحع ≤[دحَزَم پِبَلتَ رزَ] ≥ —

میں یو چھ پیچھ کررہے ہیں؟ کیا اس بڑی ٹیمرے ہارے میں جس کے متعاق یا وے مختف مشم کی چاد کیوئیاں کرتے ہیں؟ (عل اللّغبا العطيم) (هي مسئوله كا) مطف بيان ہے،اوراستفهاماس شن كى مظمت كونيان مرے كے نے ہےاورود قر آن ہے جس كوليمي مِثَانِلَةُ لاَ عَنْ جُوكَدِ بعث وغير ه يرمشمنل ہے، (باين طور) سمومنين اس کو تابت سرت بيں ورکا فراس کا انکار کرت بيں، خبر دار! ان کو عنقریب وہ چیز معلوم ہو جائے گی جوان کے اور اس کے انکار کی مجہ سے نازل ہوئی (کلا) حرف و سنتی ہے، پھر ہالیقین انہیں بہت جدمعلوم ہوجائے گا، بیتا کیدہے،اس میں ٹُسفر اس بات کو بتائے کے شاہ یا گیاہے کہ وسری وعید کہیں ہے شدید تر ہے، پھرائندتعاں نے قدرت علی البعث کی طرف اشارہ کرتے جو نے فروی (المفر منحعل المنے) کیا بیوا قعیبیں کہ ہم نے زمین کو گہوارہ کے مانند بچھونا بنایااور پہاڑول کومیخول کے مانند گاڑدیا، زمین کو پہاڑول کے ذریعے ساکن (غیرمضطرب) سردیا جس طرح خیموں کومیخوں کے ذریعے قائم ً مردیا جاتا ہے ،اوراستغیبا متقریرے لئے ہے ،اورہم نے تم کو مردوں اورعورتوں کے جوڑوں کی شکل میں پیدا کیا اور تمہاری نیندکوہم نے تمہارے جسموں کے لئے (باعث) رحت بنایا اور ہم نے رات کو اس کی ظلمت کی وجهست ساتر بنایا وردن کومعاش لیعنی معاش کا وقت بنایا ، اورتمهر رے او پرس ت مضبوط سمان قائم کئے شیدا دًا ، شدید ہ کی جمع ہے یعنی ایسے قوی اور مضبوط کہ ان میں مرورز مان بھی اثر ندکر سکے، اور ایک نہایت ہی روشن و ہکتا ہوا چراغ یعنی سورج بنایا اور ہم نے یانی کھرے یا دلول سے لیعنی ان بادلول ہے جو ہر سنے کے قریب ہو کئے ہوں مثل اس عورت کے کہ جو قریب البلو نے ہواور جس کے حیض کا زمانہ قریب آگی ہو، بہت ہوا پانی برسایا، تا کہ ہم اس (پانی) کے ذریعہ مثل گندم اور گھا س مثل بھوسہ کے پیدا كرين اور كھنے كتھے ہوئے باغت اگا كيل (المضاف) لفيف كى جمع ب جبير كه الشيراف، مشويف كى جمع به الشبيخلوق کے درمیان فیصلے کا دن ایک مقرر وقت ہے (لیمنی) ۋاب وعقاب کا وقت ہے، جس روزصور میں پھونک مار دی جائے گی صبو د بمعنی قون، (یوم یُلفعنی) يَوْمَ الْفَصْل سے برل ہے ياس كا عطف بيان ہے، اور صور پھو نَكنے والے (حضرت) اسرافيل

علیجراہ الشائد ہیں تو ہم ای تی تیروں ہے محشر کی جانب محتف جماعتوں کی شکل میں چنے آؤ کے، اور آ ہان کھول دیا جائے گا (فتحت)

تشدید اور تخفیف کے سرتھ ہے بیٹی (آ ہاں کو) نزول ملائکہ کے لئے بچاڑ دیا جائے گا، تو وہ وروازے بی دروازے برج نے گا

یخی درواز وں والہ بوب نے گا، اور بہاڑ چلائے جائمی گے بعنی ان کوان کی جگہ ہے اکھاڑ دیا جائے گا، تو وہ چیکتے ہوئے رہت بو جہ میں گئی اور نہیں گے۔ اور وہ اس سے کہاں ہے گئی میں گئی ہے کہ وہ ان کا تھائہ ہے جس میں وہ واضل ہوں گے، اور وہ اس میں قبل کر نہیں جائے گا، تو وہ چیکتے ہوئے اور وہ اس میں گئی ہے کہ وہ ان کا تھائہ ہونا مقدر ہو چکا ہے ندان کو وہ اس نیز میں ہوگی اور نہ لذت کے ساتھ چینے کے قابل کوئی چیز اورا گر کچھ ملے گاتو بس نہایت گرم پائی اور بہتی بہت (خشافا) شخفیف ہوگی اور نہ لذت کے ساتھ بینی وہ ووز خیوں کے زخوں سے نکلے گی، بس وہ ای کوچھیں گئی، اور اس کے ذریعہ ان کوان کے انکان کے مصابی کے اور اس کے ان کے اس نہایت کرم پائی اور بہتی بہت (خیان کوان کے انکان کے مصابی کا ندیشر در کھتے تھے اور انہوں نے بہتی ہوں قر سن کو با کل جھٹا دیا تھا، حال ہیں ہیں ہوان کے بہتم کی وجہت حساب کا اندیشر در کھتے تھے اور انہوں نے بہتی ہوں قر سن کو بانکل جھٹا وہ انہوں نے ان کہ جماس کا بدلہ دیں اور ان بی (انہال) کا بدلہ چکھو، اب ہم تہبارے لئے مذاب پی غذاب بی کا اضافہ کرتے جائیں سے کہ جم نے ان کے جماس کا بدلہ دیں اور ان بی (انہال) کا بدلہ چکھو، اب ہم تہبارے لئے عذاب پی غذاب بی کا اضافہ کہ کرتے جائیں گے۔ ان کہ جماس کا بدلہ دیں اور ان بی (انہال) کا بدلہ چکھو، اب ہم تہبارے لئے عذاب پی غذاب بی کا اضافہ کہ کرتے جائیں گے۔

عَجِيقِيق الْمِرْكِي لِيسَهُيكُ لَقَيْسَارِي فَوَالِلا

فَيْوَلْكَى ؛ عَمَّر وحرفول عَن ، اور مَا عمر كب ب ، اصل مين عَمَّا تَفا، مَا استفهاميه باس پرحرف جروافل بوقو ب قائده معروف كي دجب مَا استفهاميه پرحرف جروافل بوقو بي قائده معروف كي دجب مَا استفهاميه پرحرف جروافل بوقو الف كوحذف كرديا جاتا ب ، البند فنرورت شعرى وغيروك لئے باتی بھی ركھا جا سكتا ہے ، مَا استفهام يه يهال تف حيم و مظمت كيلئے ہے ، اس لئے كه يهال استفهام كے حقيقی معنی ممكن نبيل كيول كواستفهام كے لئے ستفهم كا ناواقف بونا ضرورى ها ور بي خدا كے اور بي خدا كے لئے محال ہے۔

فَيْوَلِيْ ؛ اَلَـنَّبَـا، مَبَاء عظیم اشان اور بری خبر کو کہتے ہیں، یہال عظیم الثان خبر سے مراد قیامت ہے، کلا پر زف زجروق تخ ہاں میں وعیدوتہد ید کے معنی ہیں۔

قِيَوْلَنَى : مَا يَحِلُّ بِهِمْ يِهِ يَعْلَمُوْ نَكَامِقُول بدع-

فَيَوْلَنَى : وَجِي بِنُمَّ لِلْإِنْدَانِ الْح اسعبارت كاضافه كامقصدايك اعتراض كودفع كرنا -

اعتراض: اعتراض بیہ کہ جومفہوم معطوف علیہ کا ہے وہی بعینہ معطوف کا ہے اور بیعطف اکشی علیٰ نفسہ ہے جو کہ جائز نہیں ہے؟ جَوْلَتِي: جواب كا عاصل يد يك أُستَر كذر العد مطف ركاس وت كلطرف اشاره مرديات كدومرى تاكيد بهل كي نسبت شدید ہے، پس دونوں میں تغایر موجود ہے البندا معض انشی میں نفسہ کا عنز انس د کئے ہو گیا۔

فِيْوْلِكُنَّ ؛ أَلَمْ نَجْعَلِ الْأَرْضَ مِهَادًا ، أَلَارْصَ مفعول بِاول بِوادر مِهَادًا مفعول بدناني جب كه جَعَلَ بمعنى صَيَّرَ بواور الرجمعتي حلَقَ موتو مِهَادًا، الأرْضَ عنصال موكار

فِيَوَلِنَى؛ سُبَاتًا، سُبات، سَنْتُ عِي مُشتق ہارے معنی مونڈے اور تطع کرنے کے ہیں، نیند چونکہ ہموم وغموم کوشع کردیق ہے جس کی وجہ سے جسم کورا حت اور و ہائے کوسکون نصیب ہوتا ہے ، اس مجہ ب چینس حضر ات نے مشہبات کے عنی راحت کے ہے ہیں، انہیں میں ہے مفسر ملام بھی ہیں، یوھ السبت کو سبت اس کے کتب ہیں کہ یوم السبت میں بقوں بہود کے امتد تعانی نے کا کتات کی تخلیق ہے فارغ ہونے کے بعد آ رام فرہ یا تھا۔

فِيْوُلِكُنَّ ؛ وَقَلَّنَا لِلْمَعَايِشِ أَسْ مِينِ أَشْرَهُ رَوْياكِهِ مَعَاشَ مُعَدِرِينِي بَمَعَى ظرف زوان بيد

قِوْلَى ؛ الجارية يبال مطبق أنَّى مراوي-

فِيْ فُلِكُنَّ ؛ إِنَّا يَسوْم السف صل بيكار مهمت فف بجوكه أبيه سوال مقدر كاجواب بيه سوال بيب كدوه وفت كونسا بجوادله متقدمه سے تابت كيا ميا ہے؟ اس كاجواب إلى يوم الفضل سناه ياكيا ہے كه وغوق كدرميان فيلى كاون ہے اس وان ك آنے میں چونکہ کفارکوٹر دوتھاس سنے کلام کو إِنّ ئے ذريعيه مؤكداريا أبيا ہے۔

قِوْلَ إِنْ حُوزُوْا بِلذلِك اس عبارت كان فدت الثارة ردياك حسزاء وف افًّا فعل محذوف كامفعول مطلق ب، اى جُوزُوا جَزَاءً وَفَاقًا.

قِوْلَى: مُوَافِقًا لِعملهم الساتان ورديك وفافامسد بمعنى الم فاست اور جَواء كالفت به اى خزاءً مُوَ افِقًا لِعَمَلِهِمْ.

فِيَوْلِكُ : وَكُلِّ شَيْءٍ بِالشَّغَالِ كَ وَجِهِ مَنْ مُوبِ مِ تَقَدِّرِ عَبَارت بِيتِ أَخْصَيْفًا كُلّ شَيْءٍ أَخْصَيْفَ أُورِ بَصْ حضرات نے شکے۔۔۔ لُی کوابتداء کی وجہ سے مرفوع پڑھا ہے اوراس کا ہا بعداس کی خبر ہے ،اوریہ جمعہ سبب اور مسبب کے درمیان

فَيُولِنَى: كِتَابًا، كَتَامًا مصدريت كروجه منسوب باست كه الحصيدا بمعنى كتبدا ب اى كتبناه كتابًا فِيُولِنَى : فَدُوقُوا فَلَنْ نُرِيْدَكُمْ إِلَّا عَذَابًا يهجمدان كَ مْرُوتَكُمْ يَبُ كَامسبب بـ

جب رسول الله يلافظين كوخلعت نبوت ـــ نو از اسي ،اورآ پ نيوننيز ــنـ تو حيد ، قيامت وغير ه كوبيان قر مايا ،تو كفارآ ليس ميس یو چھتا چھ کرتے کہ کیا واقعی قیامت بر پا ہو عکتی ہے؟ اور بیقر آن جس کو بیٹھنس الند کا کلام کہتا ہے کیا واقعی الند کا کلام ہے؟ حضرت ان عب سے فصطفائنگالنظائنگا ہے منقول ہے کہ جب قرآن کریم نازل ہونا شروع ہوا تو کفار مکہ اپنی مجسوں میں بیٹھ کراس کے متعمق رائ زنی ور چہ میکوئیاں کیا کرتے تھے اللہ تعالی نے خود بی سوال کر کے ان امور کی حیثیت واہمیت کو واضح فر ، یا اور پھر خود بی جو ب و سے کر فیصد فر ، دیا اور کلا کے ذریعے ڈانٹ ڈپٹ کر کے فر مایا کہ ریہ چیزیں بحث ومباحث اور تنقید و تبھر و سے جھے میں تے والی نہیں جب بنی کھلی آنکھول سے دیکھو گے تو سب بچھ خود ہی معلوم ہوجائے گا اور یہ عنقریب ہونے وال ہے۔

نیند بہت بڑی نعمت ہے:

التدعی نے عورت ومرد کے جوڑے کا ذکر کرنے کے بعد جو کہ اسباب راحت میں ایک ہے، نیند کا ذکر فر مایا، اگر غور کی جائے وہ معلوم ہوگا کہ نیندائید ایس عظیم الشان نعت ہے کہ انسان کی ساری راحتوں کا مدارای پر ہے اور اس نعمت کو المدتوی نے پوری مخلوق کے لئے ایسا عام فرما ویا ہے کہ امیر، غریب، عالم، جابل، بادشاہ وفقیر سب کو یہ دولت بکساں اور مفت عصابوتی ہے، اگر دنیا کے حاریت کا تجزیہ کریں تو معلوم ہوگا کہ نفریبوں اور محنت کشوں کو بیغت جیسی حاصل ہوتی ہے ویلی وہ مالد روں اور برٹ سے اگر دنیا کے حاریت کا تجزیہ کریں تو معلوم ہوگا کہ نفریبوں اور موقت کشوں کو بیغت جیسی حاصل ہوتی ہے ہیں، مگر راحت کا برٹ سے مرد روں اور بادشاہوں کو نصیب نبیس ہوتی، ان کے پاس راحت کے سامان تو بیں مگر راحت نبیس ہوتی ہیں، مگر نیند مکان ہے، نیز سردی گرمی کے اعتدال کا انتظام ہے گرم سے گھے ہیں جوغریبوں کو بہت کم نصیب ہوتے ہیں، مگر نیند کی نعمت ان گذ وں، تکیوں یو کوشی، نگلوں کی فضا کے تا بعنہیں وہ تو حق تعالی کی نعمت ہے بعض اوقات مفس ہوسی ہوتی ہے اور بعض اوقات ساز وسامان والوں کوئیس دی جاتی حتی کہ ان کو بغیر سے راور شکھے کے تعلی زیمن پر فراوانی ہے دے دی جاتی ہے اور بعض اوقات ساز وسامان والوں کوئیس دی جاتی حتی کہ ان کو بغیر سے ورگولیں کھی کربھی پیغمت حاصل نہیں ہوتی ہے اور بعض اوقات ساز وسامان والوں کوئیس دی جاتی حتی کہ ان کو بغیر سے ورگولیں کھی کربھی پیغمت حاصل نہیں ہوتی ہے۔ اور بعض اوقات ساز وسامان والوں کوئیس دی جاتی حتی کہ ان کو

رات کوتار یک بن یا تا کهلوگول کوآ رام وراحت نصیب ہواور دن کوروش بنایا تا کهلوگ سب معاش کے لئے جدوجہد کریں ، اور زیادہ سے زیادہ سہولت کے ساتھ انسان اپنی معاش کی جنتجو کر سکے۔

وَأَنْوَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرَاتِ مَاءً نَجَاجًا، مُعُصِرات، مُعْصِرةً کی جمع ہے، ایسے بادل کو کہتے ہیں جو پائی ہے جرابواہو، اور برسنے کے قریب ہو گیا ہو، اَلْسَمَوْا أَهُ السمعصرة اس مورت کو کہتے ہیں جس کی ماہواری کا وقت قریب آگی ہو، فَسَجَمَاحًا کَثَرُ سَتْ ہے ہیں واری کا وقت قریب آگی ہو، فَسَجَمَاحًا کَثُر سَتْ ہے ہیں واری کا وقت قریب آگی ہو، اَلمال سید کثر سَتْ ہے ہیں واری باللہ ورا عمال سید کثر سَتْ ہے ہوگی، ازروے عدل واضاف اس میں کوئی زیادتی نہوگی۔

ان لِلْمُتَقِيْنَ مُفَازًا فَ مُوزِ فِي الجَنَّهِ حَدَا إِنَّ بَسُاتِيْنَ بَدُلٌ مِنْ مَفَازًا او بَيَانُ لَهُ وَاعْنَابًا فَ عَطْفَ على معرًا وَلَكُمْ عَلَى سِنَ وَاحِدِ جِمْعُ تَرُب كَسْرِ النّه معرًا وَلَكُور الراء وَكَالسَّادِهَا قَالُهُ خَمْرًا مَالِئَةً مَحَالَمُ اوفِي الْقِتَالِ وَانْهُرٌ مِن خَمْرٍ لَالسَّمَعُونَ فِيْهَا اى الجَنّة وسُكُول الراء وَكَالسَّادِهَا قَالُ مَالمَة مَحَالَمُ اوفِي الْقِتَالِ وَانْهُرٌ مِن خَمْرٍ لَالسَّمَعُونَ فِيْهَا اى الجَنّة عَد مُر الراء وَكَالسَّادِهُ اللّهُ اللّهُ اللهُ عَلَا اللهُ اللّهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ وَاللّهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ

اى كديث سن واحدٍ لِغَيْرِهِ مِخلَافٍ مَا يَقَعُ فِي الدُّنْيَا عَنْدَ شُرُبِ الْخَمْرِ جَزَّأَءُ مِنْ لَيْكُ اي حــزابُهُ اللهُ مالك حزاءً عَطَاءً بدلٌ مِنْ خِزَاءً حِسَالِيَّاكُ اي كَثِيْرًا مِنْ قَوْلِمِهُ أَعْطَانِيْ فَأَحْسَنَنِيْ اي أكثر عبي حتى فُلْتُ حسنى رَبِّ السَّمُوْتِ وَالْأَرْضِ بِالْجَرِّ وَالرَفْعِ وَمَابَيْنَهُمَا الْرَّحْنِ كَذَالِكَ وبرَفْعِه مَعَ خرّ ربّ استموات لَايَمْلِكُوْلَ اى الحَنق مِنْهُ تَعَالَى خِطَابًا ﴿ اَي لَا يَقْدِرُ اَحَدَّانَ يُتَخَاطِبِهِ خَوْفًا مِنْهُ يَوْمَر طَرْف بِلا يَمْبِكُوْر نَقُوْمُ الرُّوْحُ حَسِرِيْسُ او جُندُ اللهِ وَالْمَلَيِّكَةُ صَفَّاةً حَالً اي مُصْطَفِّيْنِ لَايْتَكَلَّمُوْنَ اي احْمِقَ الْأَمَنَ آذِنَ لَهُ الْرَّحْمَلُ مِي الكلام وَقَالَ قَوْلًا صَوَالَكُ مِنَ المُؤْمِنِينَ والمُلاَئِكَةِ كَارُ يَشْفَعُواْ لِمَن ادْتَضِي ذَٰلِكَالْيَوْمُ الْحَقُّ الثَّابِتُ وُقُوْعُهُ وَبُوَيُومُ القِيمَةِ فَ**مَنَ شَآءَاتَخَذَالِ رَبِّهِمَا بَا**۞ مَرْجِعًا اى رَجَعَ إِلَى الْدُو تعَالَى بِصَاعَتِه لِيَسْلَمَ سِنَ الغَذَابِ فِيهِ لِمَنَّ أَنْذُرُنِكُمْ اى كُفَارَ مَكَّةَ عَذَابَالَقَرِسِيَّالَةً اى عَذَابَ يَوْمِ القِيمَةِ الاتِي وكُنُّ اتِ قَرِيْبٌ يُّوْمَ طَرُفٌ لِعَذَابًا بِصِفَتِه كَي**ُنْظُوُالْمَرُءُ كُلُّ ا**مْرِءِ م**َاقَدَّمَتْيَلْهُ** بِـنْ حَيرِ وشَرِّ وَلَ**يُقُوْلُ الْكَفِرُيَا** حَرْفُ تَنْبِيهِ عَ لَيْتَنِيُ كُنْتُ ثُرُابًا هَ يَعْنِي فَلاَ أَعَذَّبُ يَعُولُ ذَلِكَ عِنْدَ مَا يَقُولُ اللَّهُ تَعَالَى لِلْبَهَائِمِ بَعْدَ الإقْتِصَاصِ مِنْ بَعْضِهَا لِبَعْضِ كُوْنِي تُرَابًا.

میں میں ہے۔ میر جی بی ناپر ہیز گاروں کے لئے کامیابی ہے (بعنی) جنت میں کامیابی کامقام ہے، باغات ہیں (حَدائسقَ) مَ فَاذًا سے بدل ہے یا اس کا عطف بیان ہے اور انگور ہیں مَ فَاذًا پرعطف ہے اور ہم عمر انجری ہوئی پت نوں والی نوخیز لڑکیاں ہیں گواعِب، کاعِبَة کی جمع ہے وہ لڑ کیاں جونو جوان ہوں اور ان کی بیتا نیں اکھری ہوئی ہوں، (اَتْرَاب) بِرْبٌ کی جمع ہے ہم عمر کو کہتے ہیں اور چھیکتے ہوئے جام شراب ہیں (لیعنی)الیی شراب ہے جو جاموں کو بھرنے والی ہے اور سور ہ قبل میں ہے،اور شراب کی نہریں ہیں، وہاں بعنی جنت میں کسی بھی وفت نہ تو شراب پینے کے وفت اور نہاس کے علاوہ نہ تو ہیہودہ کلام ہو گا بعنی باطل قول اور نہ جھوٹی با تیں سنیں گے (کِے ذَابًا) شخفیف کے ساتھ جمعنی محذب اور تشدید کے ساتھ جمعنی تسکذیب ہے یعنی کسی ہے کسی کی تکندیب نہ سنیں گے، بخلاف اس کے جود نیامیں شراب پینے کے وقت ہوتا ہے (لیعنی و نیامیں جوشراب بی کرمستی کی حالت میں گای گلوچ اور بکواس کرتے ہیں میر کیفیت جنت کی شراب میں نہ ہوگی) مہ تیرے رب کی جانب ہے بدلہ ہے لیعنی اللہ تعالى نان كوية جزاء عطافر ما لَى جوكثير انعام موكا (عَطاءً) جَزَاءً على برل باورية مرب كول "أعطاني فأخسنيني" ے مشتق ہے بعنی میرےاوپراس کثرت ہے انعامات کی (بارش کی) کہ میں نے بس بس کبہ دیا (یہ بدلہ)اس رب کی طرف ے ہوگا جو سی نوں اور زمین اور جو کچھان کے درمیان ہے، کامالک ہے (وَ الْارْض) جراور رفع کے ساتھ ہے (اور جو) رمن ہے اس میں بھی دونوں اعراب ہیں ،کسی مخلوق کو اس ہے بات چیت کرنے کا اختیار نہیں ہو گالیعنی خوف کی وجہ ہے اس ہے ہات کرنے پر کوئی قادرند ہوگا رہ پر کسرہ کے ساتھ، د حمل پر رقع بھی درست ہے، جس دن روح بعنی جرا ^{کی}ل علاق الشاک یا امند

کاشکر اور فرشتے صف بستہ کوڑے ہوں گے (صفّا) حال ہے ہمنی مصطفین تو کوئی مخلوق بات نہ کر سے گر سوائ ان کے جن کورمن کلام کی اجازت و ہوا اور موشین اور فرشتوں میں ہے ٹھیک بات کیے گا با یں طور کداس کی سفارش کریں، جس کے خدا نے رف مندی فی ہر کردی، یہ ون حق ہے لیعنی اس کا وقوع تابت ہے اور وہ قیامت کا دن ہے اب جوچ ہے اپنے رب کے فدا نے رف مندی فی ہر کردی، یہ ون حق ہے لیعنی اس کی طرف رجوع کرے، تا کہ وہ اس ٹھکا نہ میں عذاب ہے محفوظ رہا اس کی اطاعت کر کے اس کی طرف رجوع کرے، تا کہ وہ اس ٹھکا نہ میں عذاب ہے محفوظ رہا نے والی، کفار مکد! ہم نے تم کو مختفر یہ آئے والے عذاب سے ڈرایا لیعنی قیامت کے دن آئے والے عذاب ہے، اور ہرآئے والی، قریب ہے، جس دن انس نا ہے باتھوں کی کمائی خیر وشرکو دیکھ لے گا (یکوم) عَذَابًا کا مع اس کی صفت کے ظرف ہے اور کا فر کے گا کاش میں مئی ہوجا تا، یہ اس دفت کے گا جب اللہ تعالی جانوروں سے بعض کا جمف ہوجا و''۔

جَِّفِيق تَرَكِيكِ لِيَسَهُ مِن الْحَقْفِيلِيدِي فَوَائِلا

جَوَلَنَى ؛ عطف على مَفَازًا مناسب يه كه اغنابًا كاعطف حَدَانقَ بِهواوريعطف خَاصَ عَلَى العام كَتَبيل عهوكا -وَ وَلَنَى ؛ ثَدِيُّهُنَّ مِه ثَدِي كَى جَعْ مِهِ مَعْن لِبتان -

قَوْلَى ، خَسَمُوا مَالِئَةً مَفْسِ علام نے تَحَاسًا کَ تَفْسِر خَفُوا سے کی ہاور دھاقًا کَ تَفْسِر مالِئةً سے کی ہے، لیمن جام کو ہجرنے والی شراب، گویا کے ظرف بول کرمظر وف مرادایا ہے، زیادہ پہتر ہوتا کہ تکساسا کواپے معنی ہی میں رہنے دیے ،اور مَالِئَةً ہمعنی مُمتَلِئَةً ہومطب واضح ہے، لبالب بجراہوا جام۔

جَيُّ الْبِنِي: جواب كاه صل يہ ب كہ شُرْبٌ نے تا نيث اپنے مضاف اليہ خَـمْوًا ہے حاصل كرلى ہے اور يہ ہات درست ہ كەمضاف اليه كى رعايت ہے مؤنث كى خمير لائى جائے خَـمْوٌ مؤنث تا كى ہے، گوبعض اوقات ندكر بھى استعال ہوتى ہے، اور جض شخوں میں غير ها كے بجائے غير ہے ہائ صورت میں كوئى اشكال نہیں ہوگا۔

قِوَلَىٰ : جِسَابًا بِهِ عَطَاءً كَ صَفْت بِ، جِسَابًا الرَّ چِمصدر بِمَّرَقَائُمُ مَقَامِ صَفْت كَ بِ مِا يَعربطور مبالغه وصف ب، يا يَعرمضاف محذوف ب، اى ذو كِفايَةٍ الصورت مِيل زيدٌ عدلٌ كَتْبِل سے ، وگا۔ (صاوی)

- ﴿ (مَّزَمُ بِبَلشَ إِنَّ عَالَهُ إِنَّ عَالَهُ إِنَّ عَالَهُ إِنَّ عَالَهُ إِنَّ عَالَمُ الْعَالَ

قَیُوَلِیْ : کَنْالِكَ وَبِوَفْعِهِ مع حَرِّ رَبِّ لَینْ رَب کاجواعراب بِلِینْ رفع اور جرے وہی اعراب السوحمن کا بھی ہ، ایک مزید اعراب رحمن میں بیٹھی ہے کہ ربِّ کے جرکے باوجود رحمن پر رفع ہو،اس صورت میں رحمن، هو مبتدا، محذوف کی خبر ہوگی ، یا الموحمٰ مبتدا ، ہوگااہ ر لا یکٹلٹٹوٹ اس کی خبر ہوگ۔

تَفَيِّيُرُوتَشِيْنَ حَ

اِنَّ لِمُلْمُتَّقِیْنَ مَفَارًا ، کافروں کے احوال اور ان کی مزائے بیان کرنے کے بعد یہاں ہے موشین کے حالات اور ان کے لئے تیار کروہ انعامات کا ذکر ہے۔

جَزاءٌ مِنْ رَبِكَ عَطَاءٌ حِسَابًا ، یعن اوپر جنت کی جن نعمتوں کا ذکر آیا ہے وہ مونین کے اعمال صالح کی جزاء اور ان کے رہ کی جنب سے عطابی ، یہاں نعموں کو اوں جزاء اعمال بتایا پجرعطاء ربنی فرمایا ، بظاہر دونوں میں تعارض معلوم ہوتا ہے ، اس لئے کہ جزاء کوش اور بدلے کو کہتے ہیں اور حطاء وہ انعام ہے جو بااکس بدلے کے ہو؟ اس پر کہا جائے گا کہ مذکورہ دونوں لفظوں کو جمع کرنے کا ایک مطلب تو یہ ہے کہ بظاہر تو جنت کے انعامات جزاء اعمال ہوں کے گرحقیقت میں وہ عطاء ربانی اور انعامات بردانی ہوں گاس لئے کہ بند ہے کے لئے اعمال تو دنیوی ہوں کی گرحقیقت میں وہ عطاء ربانی اور انعامات بردانی ہوں گاس لئے کہ بند ہے کے لئے اعمال تو دنیوی انعامات کے مقابلہ میں بھی کم میں ، دوسرا مطلب یہ ہے کہ نذکورہ دونوں لفظوں کو لاکر یہ بتانا مقصود ہے کہ نیک بند کے وصلہ صرف استحقاق ہی کے مطابق نہیں طے گا بلکہ اس سے کہیں زیادہ ابطور عطا ، اللہ تعالی اپنے فضل وکرم بند کے عابت فرما کیل ہوتے پر جنت میں داخل سے علی بند کے مقابل کے بل ہوتے پر جنت میں داخل سے علی بند کے حق تھی کی کوفضل نہ ہو، صی برکرام دھو تھی تعالی کے بل ہوتے پر جنت میں داخل اللہ ؟

می ایس میں جو سکت جب تک کرچق تو کی کا فضل نہ ہو، صی برکرام دھو تھی تعالی تا میں کیا ، کیا آپ ہی میں یا رسول اللہ ؟

آپ میں جو سکت جب تک کرچق تو کی کا فضل نہ ہو، صی برکرام دھو تھی تعالی تھی ہوں کیا ، کیا آپ ہی بھی یا رسول اللہ ؟

آپ میں جو سکت جب تک کرچق تو کی کا فضل نہ ہو، صی برکرام دھو تھی تعالی تعالی کیا آپ بھی ہی دولول اللہ ؟

لا يَـمْـلِكُونَ مِنهُ خِطَابًا ، يعنى ميدان حشر مين دربارالبي كرعب كابيعالم بوگا كه ابل زمين بول يا ابل آسان كى كوبھى بيد بجال نه بوگ كه از خود بغيرا جازت خداوندى كالقد تى ئى كے حضور زبان كھول سك، يا عدالت كے كام ميں مداخلت كرے كه فلال كوا تنازيادہ كيوں ديا؟ اور فلال كوا تناكم كيوں ديا؟

یکو م یک فور کے السم النگری کے اسم النگری کے اسم النگری کے اور ترب مراد بعض انٹر تفسیر کے نزویک جبر کیل علیہ النظامی ہیں چونکہ حضرت جبر کیل علیہ النظامی کے اس النگری مقدم ہے اس وجہ ہے یا مدان کا فرکس النگری میں اور بعض روایات میں ہے کہ روح ،اللہ ان کا فرکس النگال محضوص الشکر ہے جوفر شنتے نہیں ہیں ،اس تفسیر کی روسے دو صفیل ہوں گی ایک روح کی اور دوسری فرشتول کی۔ (معارف ملعضا)

——= ﴿ الْعَزْمُ بِبَلْشَرْ] >

لاَ یَدَکَلُمُوں إِلَّا مَنَ اذِنَ لَهُ الرَّحْمَنُ وَقَالَ صوابًا، یبال کلام نہ کرنے ہے مراوشفاعت نہ کرنا ہے، شفاعت کی اب زت دوشر طوں کے سرتھ ممکن ہوگی، ایک شرط ہی کہ جس شخص کو جس گنهگار کے حق میں شفاعت کی اب زت اللہ تعالی ک طرف سے معے گی صرف وہی شخص اس کے حق میں شفاعت کر سکے گا، دومری شرط بیا کہ شفاعت کرنے والا بجااور درست بات کے بعنی ہے جسفارش نہ کرے اور جس کے معاملہ میں وہ سفارش کرر ہا ہمووہ و نیا میں کم کمرین کا قائل رہا ہمولی وہ گار ہو، کا فرشرک ند ہو۔

یون کینظر الکفر عُما فَدَّمَتْ یَدَاهُ ، ظاہر یک ہے کہ اس دن سے مرادروز قیامت ہے اورمحشر جی ہرخص اپنے اعمال کواپی آنکھوں سے دیکھ لے گا، یااعمال نامہ کی صورت میں کہ اس کا نامہ عمل اس کے ہاتھ میں آجائے گاجس میں وہ پہشم خود اپنے اعمال گنفسیں دیکھ لے گا، یا اس طرح کہ اس کے اعمال منتشکل ہوکر خود اس کے سامنے آجا کیں گے جیسا کہ روایات صدیث سے ٹابت ہے کہ وہ مال جس کی زکو قادانہ کی گئی ہوگی وہ ایک زہر ملے اثر دہ کی شکل میں اس پر مسلط کر دیا جائے گا، اور یکو ہے موت کا دن بھی مراوہ وسکت ہے اس وقت اعمال کود کھنے سے عالم برزخ میں ویکھنا مراوہ وگا۔ (مظہری)

وَیَکُوْلُ الْکُفِرُ یَلْیُنَنِی کُنْتُ تُوابًا ، حضرت عبدالقدین عمر وَحَیٰ اللهٔ تَعَالَی ہے کہ قیامت کے دوز پوری زمین ایک سطح مستوی ہو جائے گی، جس میں انسان و جنات اور وحشی و پالتو جانور سب جمع کر دیتے جائیں گے، اور جانوروں میں ہے اگر کسی نے دوسرے جانور پر دنیا میں ظلم کیا ہوگا تو اے اس کا انتقام ولوایا جائے گا، جتی کہ اگر سینگ والی بری نے بے سینگ والی بری کو مارا ہوگا تو آج اس کو یہ بدلہ دلوایا جائے گا، جب اس سے فراغت ہوگی تو تمام جانوروں کو تمام ہوجائیں گے، اس وقت کا فریتمنا کریں گے کہ کاش بم بھی جانور ہوتے اور اس وقت مئی ہوجا تا ہو جائے گا ، جب اس میں جانور ہوتے اور اس وقت مئی ہوجا تا ورحساب و کتاب اور جہنم کی مزاسے نے جائے جائے۔ (معارف)



مَرَقِ الْمِرْعِيْنَ وَهِي فَيْ الْمِعِينَ أَوْمِي فَيْ الْمُؤْتِ الْمُؤْتِقِيلِ الْمُؤْتِ الْمُؤْتِقِيلِ الْمُؤْتِقِقِيلِ الْمُؤْتِقِيلِ الْمُؤْتِقِيلِ الْمُؤْتِقِيلِ الْمُؤْتِقِيلِ الْمُؤْتِقِيلِ الْمُؤْتِقِيلِ الْمُؤْتِقِيلِ الْمُؤْتِقِيلِ

شُوْرَةُ والنَّازِعَاتِ مَكِّيَّةٌ سِتُّ وَّارْبَعُوْنَ ايَةً.

سورهٔ والناز عات مکی ہے، چھیالیس آیتیں ہیں۔

بِسُهِ اللهِ الرَّحَ مِن الرَّحِتِ مِن الرَّحِتِ مِن الرَّحِتِ المَلائِكَةِ تَنْزِعُ ارْوَاحَ الكُفَّرِ غَرْقًا أَنْ نَوْعَ بِشِدَةٍ وَّاللَّيْطُتِ نَشُطُلُ المَلائِكَةِ تَنْشِطُ اَرُوَاحَ المُؤْمِنِينَ اى تَسَلُّهَا بِرِفَقِ وَّاللَّيْطُتِ سَبِّحًا ﴿ المَلائِكَةِ تَسْبَحُ مِنَ السَّمَاءِ بَهُرِه تَعَالَى اى تَنُزِلُ فَالسِّيقَتِ سَبْقًا ﴿ اى المَلاَئِكَةِ تَسْبُقُ بِأَرُوَاحِ المُؤْمِنِيُنَ إِلَى الْجَنَّةِ ﴾ فَالْمُكَيِّرِتِ آمُرُّكَ المَلاَئِكَةِ تُدَبِّرُ آمُرَ الدُنْيَا اى تَنْزِلُ بِتَدْبِيْرِهِ وجَوَابُ بِذِه الاَقْسَامِ سَحَذُوفُ اى لَتُبْعَثُنَّ يَا كُفَّارَ سَكْةَ وَهُوَ عَامِلٌ فِي **يَوْمَرْتُرَجُفُ الرَّاحِقَةُ** ۚ الدَنفُحَةُ الأوْلَى بِهَا يَرْجُفُ كُلُّ شَـىءَ اى يَتَوَلُّوٰلُ فَوْصِفَتْ بِمَا يَحَدُثُ مِنْهَا تَتَبَعُهَا الْوَادِفَةُ النَّفَخَةُ النَّانِيَةُ وبَينهما أَرْبَعُون سَنَةً والجُمْلَةُ حَالٌ مِنَ الرَّاجِفَةِ فَ لَيَوْمُ واسِعٌ لِلنَّفُخَتَيْنِ وغيرِهِما فَضَحَّ ظَرُفِيَّتُهُ لِلبَعْثِ الوَاقِع عَقِيْبَ الثَّانِيَةِ فَلُوْ**بَ يَوْمَ إِزِقَاجِفَةُ** كَائِفَةٌ قَلُقَةً ﴿ الصَّارُهَا خَالِشَعَةُ ۚ ذَلِيدَةٌ لِمَوْلِ مَا تَرَى يَقُولُونَ اى أَرْبَابُ الغَيلُوبِ والاَبْصَارِ اسْتِهُزَاءً وإِنْكَارًا لِسُبَعُتِ عَإِنّا بِتَحْقِيْقِ الْمَمْزَتَيْنِ وتَسُمِيْلِ الثَّانِيَةِ وإِدْخَالِ اَلِعِ بَيُنَهُمَا عَلَى الْوَجْهَيْنِ فِي المَوْضِعَيْنِ لَمَرَدُودُونَ فِي الْمُوافِرَةِ أَنَّ اي أَنْرَةً بَعْدَ المَمُوْتِ إلى الحَيْوةِ والحَافِرَةُ اِسُمَّ لِأَوَّلِ الْأَمْرِ وسِنُهُ رَجَعَ فَلاَنُ فِي حَافِرَتِه اِذَا رَحَعَ سِنُ حَيْثُ خَاءَ عَ**اِذَاكُنَّاعِظَامًانَّخِرَةً۞ و**فِي قِرَاءَ ةٍ نَـاخِـرَةً بَالِيَةً مُتَفَتِّتَةً نُحْنِي قَ**الُوَاتِلُكَ** اي رجُعَتُـنَ إلى الحَيَاةِ **إِذًا** إنْ ﴿ صَحَتُ كُرُّةٌ رَجُعَةٌ خَالِسِرَةٌ ﴿ ذَاتُ خُسُرَانِ قَالَ تَعَالَى فَالنَّمَاهِى الرَادِفَةُ الَّسَى يُعقِبُهُ البَعْثُ زَجْرَةً ﴿ صَحَتَ كُرُّةً وَالنَّمَ البَعْثُ زَجْرَةً ﴿ عُحة وَّاحِدَةً ﴿ وَذَا نُفِخَتْ فَإِذَا هُمِ اى كُلُّ الخَلائِقِ بِالسَّاهِرَةِ ﴿ بِوَجِهِ الْأَرْضِ اخْيَاءً بَعْد س كَنُوا بِنَطْبِهِ عُ المُواتُ هَلَالَتُكَ بِ مُحَمَّدُ الصِّدِيْثُ مُوسِلُ عَامِلُ فِي الْذِنَادُ لَهُ رَبُّهُ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوبِي المُهُ الوادِي بالنّبويس وتُرُكَ فَقُلَ الْخُصِّ الْلَيْفِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَعَى اللَّهُ عَاوَزَ الحَدَّفِي الكُفَرِ فَقُلُ هَلَ لَكَ أَدْعُوك اللَّ اَنْ تَزَكَّ ﴿ وَفِي قرَاءَةٍ مَنْشَدِيُدِ الرَّاي بِإِدْغَامِ التَّاءِ الثَّانِيَةِ فِي الْأَصْلِ فِيْمَا تَطَّمَّرُ مِنَ الشِّرُكِ مَنْ تَشْمَدْ أَنْ لَا إِلَهَ الَّا اللَّهُ

ترجيبي في شروع رتا بول القدك المست جويز المهم بال نبايت رحم وارج بشم بهان فرشتول كرجو كفارى روح كو ذوب كر سخى سے تصفيخ والے بين بشم بان فشتول كى جوزى سے مسلما ول كى (روٹ) كو نكالنے والے بين يعنی روح کوآس فی کے سرتھ انکا سے والے بیں ، قشم ہے ان فرشتوں کی جو اللہ تھا کی کے تلم ہے آتان میں تیزی ہے تیر نے وا ہیں لیعنی نازل ہوتے ہیں، پھرفتم ہےان فرشتوں کی جو مؤنین کی روحوں کو لیے کر جنت کی طرف سبقت کرنے والے ہیں، پھرفتم ہےان فرشتوں ک جو و نیاوی معاملات ک تدبیر َرت جیں لیعنی اس کی تدبیر کو لے کر نازل ہوتے ہیں ، ان قسمول کا جواب محذوف ہے اوروہ لَنُبْعَتُ بِا كُفّارِ مكة ہے، (اے كارمَدائم كوشروراٹھا ياجائے گا) اور يبي يَوْه تو جُفُ الرَّاجِفَةُ میں مال ہے، جس دن بلا ڈاے گاہلہ ڈاٹے والا (لیتنی) تختہ اولی ،اس کی وجہ ہے ہر چیز کا نینے سکھ کی پینی ہرشی متزلز ل ہوجائے كى (قيامت كو) اى صفت ہے متصف كيا كيا ہے جواس سے پيدا جو كى ، اور اس كے بيجي ايك اور جھتاكا يڑ كاليمنى دوسر انتخد ، اورد ونوا اَنْتُخول كيارميان حياليس سال كاوقفة بوكاءاور إنمله رَاجِيعةٌ بية حال ہے، (روز قيامت ميں) دونوں تُنخوں وغير جما ك ۔ ''نبی ش ہوگی ،اہذاروز قیامت کا اس بعث کے لئے ظرف بنتا تی ہے جوفٹی ٹانیے کے بعدوا قع ہوگا ، بہت ہے دل ہول کے جواس ون خوف کی وجہ سے کا نب رہے ہوں گے لیمنی اضطراب کی وجہ سے خوف زوہ ہوں گے ان کی نگاہیں جھی ہوئی ہوں گی اس ہونا کی کی وجہ ہے جس کووہ و کیھر ہی ہول کی ، پست ہول گی ، پیلوٹ کہتے ہیں کہ کیا ہم پہنی جاست میں واپس ا۔ ئے جائمیں گ یعنی پیقلب ونظروالے(کفارمکہ)استہزا واورا کا ربعث کے طور پر کہتے ہیں (کیا ہم پہلی حالت میں واپس لائے جا کمیں گ لیمن کیا ہم مرنے کے بعداوٹائے یا میں گاور حافرہ اول امر کا نام ہے، ای سے رجع فلان فی حافرته ہے (لیمن فلا ب تعخص اپنے سابقہ حال پر آ گیا) مداس وقت ہوئتے ہیں جب ای طرف لوٹ جائے جہاں ہے آیا تھا، کیا اس وقت جب کہ ہم بوسیدہ مثریاں ہوجا کیں گے اورا یک قراءت میں ماحوٰۃ ہے جمعنی بوسیدہ ،ریز دریز د،زندہ کئے جا کیل گے کہتے ہیں کچرتو یہ بھارا دیات کی طرف لوٹنا بڑے تھائے کا ہوگا، ملد تھا ہی نے فرمایا پس بیہ لیجن نظمہ ثانیہ ایک آواز ہوگی جس کے بعد بعث ہوگی جب وہ پھونگ دی جائے کی تو اچا تک بوری مخلوق زندہ ہو کر سطح زمین پر آ جائے گی حالا نکدوہ مرد سے تھے زمین کے پنچے، کیا سے بالطاناتین کواے محمد بالطاناتین! موی کا قصد کیاتی ہے (حدیث) اذباداہ میں عامل ہے (ندکہ اُتساف) جب کدان کوان کے ﴿ (صَّزَم بِبَاشَ ﴿] > ----

رب نے مقدس، میدان طوی میں پکارا (طوئی) ایک وادی کا نام ہے، توین کے ستھ اور بغیر تنوین کے، تو فرمایا کہ تم فرعون کے پاس جاو کہ اس نے سرکتی افتیار کرر تھی ہے لیٹن کفر میں صد ہے تجو ذکر گیا ہے، اس سے ہو کہ کیا تیری چاہت ہے کہ میں جھوکوا ہی چیز کی دعوت دول جس ہے تو پاک ہوجائے ؟ ایک قراءت میں (توز نخی) میں زائ تشدید کے ساتھ ہے، توز کئی ک تاء خانے کواصل میں زاء میں اوغ مرکر کے، یعنی شرک ہے پاک ہوجائے، اس طریقہ ہے کہ تو آلا الله کی شمادت وے اور یہ کہ میں اوغ مرکزے، یعنی شرک ہے پاک ہوجائے، اس طریقہ ہے کہ تو آلا الله کی شمادت وے اور یہ کہ میں خان کی رہنمائی کے مولی معرفت کی طرف تیری رہنمائی کروں پھر موکی میں ہونے اس کو فوث نیوں میں ہے ایک بری نش نی دکھائی اور وہ یہ بیف ویا عصوری نشانی ہے، مگر فرعون نے موکی معرفت کی طرف تیری رہنمائی کے موکی میں ہوں جو اور اس نے بادو سروں اور اپنے شکر کو جھ کیا اور پہلے کی کے مذاب میں پڑالی یعنی آخری کلمہ ہے بہدی دونوں کلموں کے درمیان چالیس سال کا ہے، پھر الغذ نے اس کو غرق آ ہے کہ ذرمیان چالیس سال کا کے عذاب میں (اور وہ پہلے کلے کا فران دونوں کلموں کے درمیان چالیس سال کا فاصل تھا ہے تک اس (فروہ پہلے کلے کے عذاب میں گڑالی یعنی آخری کلمہ ہے بہدی فاصل تھا ہے تک اس (فروہ پہلے کلی کے اس اور وہ پہلے کلے کے اندا سے میں اور وہ پہلے کا کے اس (فروہ کلوں کے درمیان چالیس سال کا فاصل تھا ہے تک اس (فروہ پہلے کلی کی اس اس کا کا حقول کے میں اس کا کا سے فران کور کے اس کو خرق آ ہے کی کر سے تو المدت کی ہے۔ وہ المدت کی ہے کہ اس (فروہ پہلے کی کر میان کی کر کے اور ان دونوں کلموں کے درمیان چالیس سال کا فاصل تھا ہے تک اس (فروہ پہلے کی کر میان کی ہے جو المدت کی ہے۔

عَجِفِيق لِيَرِينِ لِيسَهُ الْحَالَةُ لَفَيْسَارِي فَوَالِلاَ

قَوْلَ النَّازِعَاتِ (ض) نَزْعُ ہے اسم فال جمع مونث، کینی کرنکا لئے والی ں، یہاں طائفة کے معنی میں ملائکہ مراد ہیں۔ قِوْلَ الله : غَرْفًا بِحدْف زوائد کے ساتھ مصدر ہے ای اِغْرَاقًا این عال النازعات کے معنی میں ہونے کی وجہ ہے مفعول مطلق ہے جیسے فیمٹ وُفُوفًا، یا فعدت جُلُوسًا، یا حال ہے ای ذوات اِغراقِ، اَغْرَق فی الشی اس وقت بولاجا تا ہے جب کسی معاملہ میں انتہائی حد کو بہنے جائے۔

فَخُولِلْنَى ؛ النَّاشِطاتِ (ض) مَشْطًا ہے اسم فائل جمع مؤنث، کھو لئے والیاں ، ہولت کرنے والیاں ، مَشَطَ فی العملِ اس وقت بولا جاتا ہے جب کس چیز میں ہولت اور جلدی کرتے ہیں ، مَشْطًا اور اس کے مابعد سب اپنے عوامل کی تاکید کرنے والے مصاور ہیں۔

چَوَلَیْ: ای تَـنْوِلُ بتـدبیوهِ اس اضافه کامقصدیه بتانا ہے که تدبیر کی نسبت مدا نکه کی جانب اسنادمجازی کے طور پرہے، اصل مدبر اللہ تعالی بیں، ای کے عکم سے ملا نکه تدبیر کرتے ہیں۔

فِی اَنْ اَلْمُنْ اَلِهُ اَلِهُ مَا اِللَّهُ مِنْ الْوره تَمُون كاجواب بَ، عَارِمَد كَ تَخْصيص صرف اس لئے ہے كدوه بعث كے منكر بين ورنه بعث مومن وكافرسب كے لئے ہے۔

قِيَوْلَكُ : فَالْيَوْمُ وَاسِعٌ لِلْنَفْخَتَيْنِ بِإِيكَ وَالْمَقْدِرَكَاجُواب ٢-

---- ﴿ [مَثَزَمُ بِبَلَشَرِنَ ﴾ ----

يَهُوْ إِلْ وَ سوال بدي كه يوم ترجُفُ الرَّاجفة عَنْ فَيْ أول مراوي، جوكه وت كاسب موكاتو يحروه لتُنعسُ مقدر كاظرف منس طرح بوسنت ہے، اس کئے کہ بعث تو نفخہ نا دید کے وقت ہوگا۔

جَنُولَ بُعْ: جواب كا حاصل يه ہے كه وه ون اتنابر ابو گا كه اس ميں دونوں نتخوں كى تنجائش ہوگى اگر چه دونوں نتخوں كے درميان عايس سال كافاصله وكا، حيايس سال كامطلب بيب كدايك بى دن جياليس سال كيرابرة وكا، فسصبح طر فيَّتُه للبعث بعنی یوم کا بعث مقدر کے لئے ظرف واقع ہونا سے ہے۔

فَيْوَلِّن : تَنْبَعُهَا الرَّادِفَة ، رَادفة يُمنى بين معسلا بعدين آف والا بَقي تائيه چونكداولى ك بعدواتع بوكان كورميان اوركو كي شئ حاكل ند موكى اس وجدية نفخه تانيكو رادفه كها كياب-

فِيُولِكُنَّ ؛ قُلُونٌ يُومَنِدُ واجفة، قُلُونٌ مبتدا، إور أَبْصَارُهَا اس كَ خبر بـ

ينيكواك، فَلُوبُ تَمره باس كامبتداء بناصح تبيس ب

جِحَلَثِيْ: وَاجِفَة، قُلُوبٌ كَ صَمَت مُصَدبِ حِس كَى وَدِيكَ مَرَه كَامِبْدَا بْنَاتِيجَ بِ، يَعِن واجفة، يَوْمَنِدُ ايخ ظرف ے اُس کر قلوب کی صفت ہے آبسکار ہا میں ہائتمیر قلوب کی طرف راجع ہے اور قلوب کا مضاف محدوف ہے، ای ابصارٌ اصحاب القلوب خاشعة.

مَتَرَكِكُيْتِ: قُلُوْبٌ مُوصُوف يَوْمَلِذٍ، وَاجِفَةٌ كَاظْرِفُمْقَدَم، وَاجْفَةٌ البِيْظْرِفِمْقَدَم كُلُوبٌ كَصفت،موصوف صفت ہے کا کرمبتدا ،، اَبْصَارُ هَا مبتدا تانی، خَاشِعَةُ اس کی خبر، مبتدا خبرے ل کر جملہ ہو کرمبتدا وال کی خبر ہے۔

فَيُولِكُنُّ : فِي الْحَافِرَةِ، أَى الى الحافرة، في جُعن اللي أورحافره جُمعنى حيات.

فِيْوَلِكُنَّ ؛ ءَ إِذَا كُنَّا عِظَامًا نَجِوة ، اذا كانا المَنا المَنذ وف السَّجِ مودودون ولالت كرر باب، اى ءَ إِ ذَا كُنَّا عِظَامًا بَالِية نُوَدُّ ونُبعَثُ.

فِيْوَلِكُنْ ؛ نَحْرَة يه نَخَوَ الْعَظْمُ عَ مَا نُوذَ بِ بُوسِيده اور كُوكُلِي بِرُى كُوكِتِ بِين .

يَعْوَلَكُ ؛ قالوا تلك ، تلك مبتداء بادراس كامثار اليه رجعة ب، كرَّةٌ بمعنى رجعة موصوف ب، محاسِرَةٌ صفت، موسوف صفت ے ال كرمبتدا ، كى خبر ہے۔

فِيْ إِنَّى : خَاسِرَةُ اس كَيْفير ذاتُ خُسْرَانِ يَدَركايك والمقدرك جواب كى طرف اشاره كرويد

سَيُواكُ: حَاسِرةُ كَامَل كَوَةُ يردرستُنبين بي؟

جَوَلَتِي، جواب كافلاصديب كد خاسوةً، ذات خسران كمعنى من ب، يا خاسوة عاصى بنس انمرادي، اور ان دى زى جىسى كەربىخت تىحارتىھى سى ان دىجازى ج

فِيْوَلَى ؛ فإذا نُفِحتْ أَسَ عبارت كاشافه كامتصدية بتانا عبكه فَإِذَاهُمْ بِالسّاهِرة شرط محذوف في جزاء عد

فِحُولَكُم : فقال ، اى فقال تعالى .

فِیُوَلِیْنَ ؛ بالتنوین و تو که ، لین طوّی اَس مکان کے عنی میں ہوتو منصر ف ہونے کی مجہے مُنوَّ نہ وگاا دراَس بُفَعَهُ کے معنی میں ہوتو غیر منصرف ہونے کی وجہ سے غیر مُنوَّ نُہ ہوگا۔

قِخُولَ مَن الآخرة ، آخرة بيمراد بعدوالا كلمه بجوكه "أنّا دِنْكُمُ الاغلى" باور اولى بيمراد بيبالكلمه بالأكلمه بالأكلمة بالأكلمة بالأكلمة بالأكلمة بالمحاورة والله المحرمن الله غيرى "باور بعض حفرات أولى منذاب فرق اور آخرة بنذاب حرق مرادليا بهد (والله اعلم)-

تَفَيِّيُرُوتَشِينَ ﴿

والمارغات عرفا، مارعات، مرع ساشتق باس معنی کردگالے کے بیں، اور غوفا اس کی تاکید ہے اس لئے کہ فرقالیے کے بیں، اور غوفا اس کی تاکید ہے اس لئے کہ فرق ور افراق معنی پوری حافت صن کرنے ہیں "اغیری الممازع" اس، فت ہو لئے بیں جب مان کھینچنے میں بورازورلگا ہے، بیرین اکا شاوالے فرشتوں کی منت ہے، فرشتے کافروں کی جان نہایت کت ہے کہ اس کی جان نہایت کت ہے کہ اس کی جان نہایت کت ہے کہ اس کی کالے بیں، اوراس کتی کا تعمل روح سے ہوتا ہے اکر سی کافروں مجرم کی جان بطاح میں بان بطاح میں اوراس کتی معلوم ہوتو یہ نہ جھان جا ہے کہ اس کی روح کوئی سے نہیں نکالا گیا۔

وَالْمُنْسَّاتِ طَاتِ نَشْطَا، مَشْطٌ مَرُهُ عُوتَ وَكُتِ بِينِ مطب بيبَ َ جِسَ هِنَ رَهُ عُوتْ بَعد چيزاً سافى سے نگل جاتی ہے،ای طرح مومن کی روح بھی فرشتے آ سانی ہے نکالتے ہیں۔

والتساب خیات سبخا، سنٹ کے انفول معنی تیرے کے بیں، یہاں تین کی سے چین مرادے، مطاب یہ ہے کہ روٹ قبل رئے کے بعد فرشجے روٹ کولے سرتیز کی سے بلاروک ٹوک آ سانوں کی طرف چے جاتے بیں۔

فالتنبقت سبفاً، لیخی ان فرشتوں کوشم جوسبقت کرنے والے ہیں ، س چیز میں سبقت کرنے والے ہیں؟ تو والی رہے کہ ایاں روحوں کو ان کے ٹھھکائے پر پہنچائے میں سبقت کرنا مراد ہے، ورندتو اس امر فاص میں سبقت اور مجلت کے ملاوہ فرشتے ہرام رفداوندی کی بجا آ وری میں سبقت کرتے ہیں۔

فَالْمُدَيِّرَاتِ أَمْرًا، لِينَ امرالَهِي کَ مَدِيرِ وَتَنفيذَ مُر نَے والے بين امرالَهِي کی مَدِيرِ وَسَفيذ ت رو لَ سَے مِن علے مِيل مَدِيرِ وتنفيذ مراد ہے اوراس کے ملاو واور ديگرامور هِل بُننی مَدِيرِ وتنفيذ مراد بهوسَتی ہے۔

اس امر پر دلائت کرتا ہے کہ میشم اس بات برکھائی گئی ہے کہ قیا مت سرور آئی ہے اس کی وضاحت نہیں کی ٹی کئین بعد کا مضمون اس امر پر دلائت کرتا ہے کہ میشم اس بات برکھائی گئی ہے کہ قیا مت ضرور آئے کی اور تمام مردوں کواز سرنوضرور زندہ کیا جائے گا، نیز اس امر کی وضاحت بھی نہیں کی گئی کہ بیاوصاف کن ہستیوں کے بیں کیکن صحابہ دھوکھ تھا تھی گااور تا بعیل اورا کشرمفسرین نے کہا ہے کہان سے مرادفر شتے ہیں۔

ح (مَنزم بِبَلتْ رِدٍ عَ

نفس اورروح يعيم تعلق قاضى ثناءالله رَيِّعَمُ لللهُ مُعَالِيَّ كَ شَحْقَيق:

فَاِذَا هُمْ بِالسَّاهِوَ قَ، سَاهِوَ ق، سَمِرادَ طَح زبین ہے، قیامت کے دن پوری زبین طُح اور چینی میدان ہوجائے گ، نہ کہیں نشیب وفراز ہوگا اور نہ آڑ بہاڑ، اس کے بعد کفار اور منشرین بعث کی ضد ہے جو آنخضرت بینی نیز کو ایڈ اء پینجی تھی اس کا از الد فرعون اور حضرت موکی علیج کلا خلافیک کا قصہ بیان کر کے کیا گیا ہے کہ خالفین ہے ایڈ اوپینج جانا بچھ آپ بینی نظیما کے ساتھ ف ص منہیں ، انبیا ء سابھین پیہانیا آ کو بھی ہڑی ہڑی او بیتیں وی گئی تھیں انہوں نے صبر کیا آپ بیلی نیز بھی صبر سیجئے۔

فَانَحَدُهُ اللَّهُ فَسَكَالَ الْاحِرَةِ وَالْآوْلَى، " نكال "السيعذاب كوكهاجاتا ب بسكود كير كردوسروس كوعبرت حاصل بوء " آخرة" اور" اولى" كا مطلب مفسر ملام في جوليا بوه تخفيق وتركيب كه زيرعنوان گذر چكا به ملاحظه فرماليا جائه بعض حضرات في نكال الآخرة سي فرعون كي لئي عذاب آخرت مرادليا به اورنكال اولى سي مرادوه عذاب بجود نياميس اسكى پورى توم كوغرق دريا بوجاف سي بنجا - (معارف)

ءَ **اَنْتُمْ** لَنَحْنَيْقِ الهُمْرَتَيْنِ واِبْدَالِ الثَّانِيَةِ اَلِغًا وتَسُمِيْلِهَا واِدْحَالِ اَلِثِ بَيْنِ المُسَمَّلَةِ والْأَخْرِي وَلَوْكَهِ اي حالتَّنَّهُ عَالِمَ المُ

مُنكرُوا النَعُبُ أَشَكُ خَلَقًا أَمِ السَّمَاءُ أَشَدُ خَلَقًا بَنْهَا ﴿ نَبُهَا لَهُ لَيْمِنَةِ خَلْفِهَا رَفُعُ سَمَّكُهَا تَفْسَيْرُ لكَنِفِية البساء اي حَعَلَ سَمُتَهَا مِنْ حِهَةِ العُلُوِّ رَفِيْعًا وقِيْلَ سَمُكُمَا سَقُفُهَا فَسَوِّيهًا فَسَوْيَةً بلاغيُس وَأَغْطُشَ لَيْلَهَا اطِّمهُ وَلَخُوجَ صُحْهَا أَبُرَزَ نُـوْرَ شَمْسِهَا وأَضِيْفَ اِلْيُهَا اللَّيْلُ لِآءٌ صِنَّهُ والشَّمْسُ لايَّهُ سراحُها وَالْأَنْ بَعْدَ ذَٰلِكَ رَحْهَا أَبْسَطَهَا وَكَانَتْ مَحْلُوْقَةً قَبْلَ السَّمَاءِ مِنْ عَيْرِ دَحُو أَخُرَجَ حالٌ برصُمار قَدُ اي مُخرِجًا مِنْهَامَأَهُمَا بِتَفَجِيرِ عُبُونِهَا وَمَرْعُهَا ۚ مَا تَرْعَاهُ النَّعَمُ مِنَ استَّحِر والعُشْبِ وَمَا ب كُنهُ النَّاسُ مِن الافُواتِ والشَّمَارِ وإطَّلاَقُ المَرْعي عَلَيْهِ اِسْتِعَارَةً ۖ وَالْجِبَالْ أَرْسُهَا ﴿ اَثْهَمَهُ عَلَى وَجُهِ الْارْض بِتَسُكُن مَتَاعًا مِفْعُولٌ لَهُ لِمُقَدَرِ اي فَعَلَ ذَلِكَ مُتُعَةً او مَصْدرٌ اي تَمْتِيْعًا لِكُمْوَ لِأَنْعَامِكُمُ خَمْعُ نَعْم وسِي الإسلُ والبَقْرُ والنَعْمَمُ فَإِذَاجَآءَتِ الطَّامَّةُ النَّكُبُّرِي ﴿ النَّانِيَةُ لَيُومَرِّيتَذَكَّرُ الْإِنْسَانُ بَدَلّ مِنْ إذا مَاسَعٰي ﴿ فِي الدُّنْيَ مِنْ خَيْرٍ وشَرَ **وَبُرِّنَ إ**َنَّ أَظْهِرَتِ ٱلْجَحِيْمُ النَّارُ المُخرِقَة **لِمَنْ يَرِي** لِكُلِّ رَاءٍ وَجَوَابُ إِذَا **فَأَمَّامَنَ طَعَىٰ ۚ كَفَرَ وَاثَرَالْحَيُوةَ الدُّنْيَا ۚ** إِلَّهِ السَّيِهِ وَاللَّا **الْجَجِيْمَ هِى الْمَأْوَى ۚ** مَا وَاهُ وَأَمَّاصَ خَافَ مَقَامَرَ رَبِّهِ قِيَاسَة بَيْنَ يَدَيْهِ وَنَهَى النَّفْسَ الْاَسَّارَة عَنِ ٱلْهَوْرِ ﴿ المُرُدِى بِإِيِّباعِ الشَّهَوَاتِ **فَإِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوَى ﴿ وَحَاصِلُ الجَوَابِ فَالْعَاصِيُ فِي النَّارِ وَالْمُطِيْعُ فِي الجَنَّو كَيْتَ أَوْلَكَ ا**ى كُفَّارُ سَكَّةَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسِلُهَا أَنَّ مَنْى وُقُوعُهَا وَقِيَامُهَا فِيْمَرَ فِي أَيِّ شَيْءٍ أَنْتُ مِنْ ذَكَّ لِللَّهَاثَ أَى لَيْسَ عِنْدَكَ عِنْمُهَا ختى تَذْكُرَبَ إِلَى رَبِكَ مُنْتَهُمَا أَنْ مُنْتَهِى عِلْمِهَا لَا يَعْلَمُهُ غَيْرُهُ إِنَّكَا أَنْتَ مُنْذِكُ إِنْ مَا يَنْفَعُ إِنْذَارُكَ عَ مَنْ يَخْشَمَاكُ يَخَافُهَا كَأَنَّهُمْ يَوْمَرَيْرُونَهَالْمُرِيلُبَتُوٓآ فِي قُبُورِهِمْ إِلَّاعَشِيَّةً أَوْضُحُهَا ۚ اى عَشِيَّةَ يَوْمِ او بُكُرَتَهُ وَصَـحُ إِضَـافَةُ الـطُّـحِي إلـي الـعَثِيثَةِ لِمَا بَيُنَهُمَا مِنَ الْمُلاَبَسَةِ إِذْهُمَا طَرُفَا النَّهَارِ وَحَسَّنِ الإِضَافَةَ وُقُوعُ الْكَيِمَةِ فَاصِيَةً.

سبان کی؟ (اَانْتُسْفُ): اے بعث کے منکرو! کیاتمہاری تخلیق زیادہ دشوار ہے یا آسان کی ؟ (اَانْتُسْفُ) دونوں ہمزوں کی تحقیق اور ثانی کوالف سے بدل کراور ثانی کی تسہیل کے ساتھ اور مسہلہ اور دوسرے کے درمیان الف داخل کر کے اور ترک اوخال کے ساتھ،امتٰدنے اس کو بنایا ہے آسان کی تخلیق کی کیفیت کا بیان ہے،اس کو بلند و بالا بنایا یہ کیفیت بناء کا بیان ہے یعنی اس کی بلندی کو اونیے کی، کہا گیاہے کہ رَفَعَ سَمْکَهَا ہے مراد رَفَعَ سَقْفَهَا ہے، لینی اس کی حیبت خوب او کِی اٹھ کی ، پھراس کوٹھیک ٹھا ک کیا (یعنی)اس کو بدنقص کے سیاٹ بنایا ، اور اس کی رات کو تاریک بنایا اور اس کا دن نکالا لیعنی اس کے آفتاب کا نور طاہر کیا ،اور پیل ک اضافت آسان کی جانب اس لئے کی کہ رات اس کا سامیہ ہے اور شمس کی اضافت آسان کی طرف کی گئی ہے اس سئے کہ شمس اس کا چراغ ہے، اوراس کے بعدز مین کو بچھایاوہ بغیر بچھائے اس کی تخلیق خلقِ ساء سے پہلے ہی ہو چکی تھی ، اوراس سے اس کا پانی ——— ﴿ [زَصَّزَم بِسَيْلِشَهُ إِنَّ ﴾ —

کا ، اس کے پیشموں کو جاری کر کے (اُخو َ ج) قلد کے اضار کے ساتھ صال ہے مُنٹحوِ جًا کے معنی میں ، اوراس کے جارے کو کالا ینی وہ جس ومویش کھاتے ہیں خواہ درخت کے قبیل ہے ہویا گھاس کے ،اوروہ چیز بیدا کی جس کوانسان کھتے ہیں خواہ ندہ ہویا کھیں ،اورانسانی خوراک پر موعیٰ کااطلاق بطوراستعارہ (مجاز) کے ہے،اور پہاڑوں کواس پر قائم کردیا یعنی زمین پر ثبت کر دیا ، تا کہ س کا بضطرا بختم ہوجائے میںسبتمہارےاورتمہارے جانوروں کے فائدے کے لئے ہیں (مَدَّاعًا) فعل مقدر کا مفعول رد ب اى فَعَلَ ذلِكَ مُتَعَةً يا مِنَاعًا بمعنى تمتيعًا مصدر ب(اسكابهي فعل مَتَّعَنَا مقدر بوكًا اى مَتَّعْنَا تمتيعًا) أنعام، نَعْمُر كَ جَنْ ہےاور انْعَام اونٹ، گائے اور بكري كو كہتے ہيں ، سوجب ہنگامة عظيم آوے گالینی فخهُ ثانیہ ، یعنی جس دن انسان د نی میں ہے کئے ہوئے خیروشر کو یاد کرے گا (یَـوم) إِذَا ہے بدل ہے اور ہردیکھنے دالے کے سامنے جہنم یعنی جلا دینے والی سگ ط ہر ک جائے گی اور اِذَا کا جواب ف اُمَّا مَنْ طَغی ہے تو جس تخص نے سرکشی لینی کفر کیا اور خواہش ت کی اتباع کی وجہ سے د نیوی زندگی کوتر جیح دی اس کا ٹھکانہ جہنم ہی ہے ، ہال جو مخض اینے رب کے سامنے کھڑا ہونے سے ڈرتا رہا ہو گا اور اپنے نفس ا تر رہ کوشہوبوں کی اتباع کے ذریعیہ ہلاک کرنے والی خواہشات ہے روکا ہوگا تو اس کا ٹھکا نہ جنت ہی ہے ،اور جواب کا حاصل میہ ہے کہ نہ فرہ ن دوزخ میں ہوگا اور فرما نبر دار جنت میں ، کفار مکہ آپ میں تنامت واقع ہونے کا وفت دریا فت کرتے ہیں یعن ہے کہ س کا وقوع اور قیام کب ہوگا؟ اس کے بیان کرنے ہے آپ پین ایٹ کا کیا تعلق ، یعنی آپ پین ایک یاس اس کاعلم نہیں ہے کہ آپ ﷺ اس کو بیان کریں ، اس کے علم کی انتہا تو اللّٰہ کی جانب ہے (بعنی) وقوع قیامت کے علم کی انتہا (اس کی طرف ہے) یعنی اللہ کے سوااس کوکوئی نہیں جانتا، آپ ﷺ تو صرف اس سے ڈرتے رہنے والوں کوآ گاہ کرنے والے ہیں یعنی آپ بَلْقَافِيَةً ﴾ كا ۋرا: صرف الشخص كوفائده دے گا جواس ہے ۋرے گا، جس روز بیا ہے د كھے ليں گے، تو ايب معلوم ہوگا كہ وہ اپني قبروں میں صرف دن کے پچھے پہریا گلے پہری مقدارر ہے ہیں لینی ایک دن کی شام یاضیح کی مقدار،اور طُسحی کی اضافت عَشِيَّةً كَى جانب اس وجدت ہے كدان كے درميان تعلق ہے، اس لئے كدوونوں دن كے كنارے بيں اور اضافت كوكلم يونا صله (او) کے واقع ہونے نے حسین بنادیا ہے۔

عَيِقِيق اللَّهِ اللَّهُ اللّلْمُ اللَّهُ اللَّا اللَّاللَّا الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ

فَوَلَى : أَأَنْتُمْ يِاسْتَفْهِ مِمْكُرِينِ بِعِثُ كَاتُونَ كَلَيْ بِهِ

قَوْلَیْ : بتحقیق الهمزنین ، ای مع إذ خسالِ الایفِ وَتو که ، پہلاہمزہ بمیشد محقق ہی ہوتا ہے سہیل و حقیق صرف دوسر بیں ہوتی ہے، لہذا دونوں ہمزوں کے حقق ہونے کی صورت میں اد خال الف اور ترک اد خال ، یہ دوقر اء تیں ہو میں اور دوسر بمزہ کے صورت میں بھی اد خال الف اور ترک اد خال ، دو بیہ و میں ، اور دوسر بمزہ کو الف سے بدل دوسر بمزہ کی اد خال الف اور ترک اد خال ، دو بیہ و میں ، اور دوسر بمزہ کو الف سے بدل مرایک قراء تیں ہوگئیں۔

فِيُولِكُنَى: اَشَدُّ خَلْقًا الى سے اشاره كرديا ہے كه أم السَمآءُ مبتداء ہے اور اَشدُّ خلقًا اس كَ فَرَى ذوف ہے۔ فِيُولِكُنَى: وَالْاَرْضَ، اَلَارْضَ اعْمَعَال كى وجہ سے منصوب ہے۔

فِيْوُلِكُ : كانت محلوقة بيايك سوال مقدركا جواب --

میکوان؛ سوال بہ ہے کہ سور و فصلت میں ہے کہ ابتداء تخلیق، ارض ہے ہوئی اس کے بعد آسان کی تخلیق ہوئی اور یہاں اس کا عکس ہے جو تعارض ہے؟

جِجُولُ بِنِي: جواب كاحاصل بدہ كەزىين كے مادو كى تخليق تو تخليق آئان ہے مقدم ہى ہے گھراس كا پھيلانا اور بچھ نابعد ميں ہے ہذا كوئى تعارض نہيں۔

فَيُولِكُمْ ؛ واطلاق السعرعنى عبليه استعبارة بياس شبه كاجواب بكرانسان كى غذا پرجارے كااطها ق كيا ميا جوكه من سبنبيں ب،اس لئے كه جارا جانور كى خوراك كوكباجاتا ہے، جواب كاحاصل يہ ہے كه بياطلاق بطور مجاز كے ہے بينى اس ہے مطاقاً ماكول مراد ہے، جس بيس انسانى اور حيوانى دونوں غذائيں شامل جيں۔

يَحُولُنَ ؛ وجوابُ إِذَا فَامَّا مَنْ طَعَى الْنَحَ لِيمَ إِذَا كَاجَوَابِ فَامّا مَنْ طَعْی ہے، اس میں قدر نے سہل ہے، اس لئے کہ فَامًا مَنْ طَعٰی بید نیا ہیں نُوگوں کی حاست کا بیان فَامًا مَنْ طَعٰی بید نیا ہیں نُوگوں کی حاست کا بیان ہے جس کی وجہ سے جزاء اور شرط دوالگ الگ مقاموں ہیں بول گی، البدا بہتر بیہ کہ إِذَا کا جواب محذوف ، ن جے جیما کہ و گھرمفسرین نے مانا ہے، اور وہ بیہ " ذَحَلَ آهُلُ النَّارِ النَّارَ وَ آهُلُ الْجَنَّةِ الْجَنَّةِ الْجَنَّةِ الْجَنَّةِ الْجَنَّةِ الْجَنَّةِ ".

فَیْحُولْنَیٰ ؛ مَاواہ اس بیں اشارہ ہے کہ جب کہ الماوی میں الف لام خمیر کے وضی میں ہے جو کہ "مَنْ طَعٰی" کی جانب لوٹ رہی ہے "اِذَا" کے جواب کا حاصل ہے ہے کہ عاصی دوزخ میں اور مطبع جنت میں ہوں گے، بیاس بات کی طرف اشارہ ہے کہ اِذَا کا جواب فَامَّا مَنْ طَعْنی کو قرار دینے کے بجائے محذوف مانا جائے تو زیادہ بہتر ہوگا، جبیہا کہ سابق میں اشرہ کیا گیا۔

(صاوی

فَيْوَلْنَى ؛ فِيْمَ أَنْتَ ، فِيْمَ اصل مِن فِيمَا تَهَا قاعده معروف كى وجدت الف كوحدُف كرديا كياء اور فِيْمَ فَبرمقدم باور أَنْتَ مبتداء مؤخر بـ

قِحُولِكَ ؛ وصع اضافة الضحى بيابك سوال مقدركا جواب بـ

بَيْنُوالْنَ: سوال رہے کررات کے لئے ضعنی نہیں ہوتا ضعنی تودن کے لئے ہوتا ہے و کیا وجہ ہے کہ ضعنی کی اضافت عشیدہ کی طرف لوٹے والی خمیر کی طرف کی گئے ہے؟

جِيُوَ النِّئِ: جواب کاحاصل ہے کہ عشیۃ اور صبحنی دونوں یوم کے اطراف(کنارے) ہیں لہٰذاان دونوں کے درمیان ربط وتعنق ہے،ای دجہ سے ایک کی اضافت دوسرے کی طرف درست ہے۔ قِوَلَى : وخسنَ الإضافَةَ وُفُوعُ الْكَلِمَةِ فَاصِلَةً مطلب يب كاساد في مناسبت كى وجد ساف فت ميل إذ اصل "يوت كري يت في حسن بيدا كرويا-

تِفَيِّيُرُوتَشِيُ

آآنڈ مرآنسا خلقا ام السّمآء بندھا ، یکفار کھر کو خطاب ہاور مقعد زیر وتو بی ہمطلب ہے کہ جم جوموت کے بعد دوبارہ زندہ کئے جانے کو برنا ہی امری لی بیجے ہواہ ربار ابر کہتے ہو کہ بھلا یہ کیے حمکن ہے کہ جب ہماری بڈیاں بوسیدہ اور ریزہ ریزہ ہو جانئیں گی تو ہم رہے ہم کے پراگندہ اور منتشر اجزاء دوبارہ جی کردیئے جائیں؟ اور ان میں جان ڈال دی جائے؟ بہی تم اس بات پہھی غور کرتے ہو کہ اس عظیم کا نمات کا بنانا زیادہ مشکل کا م ہے یا تمہارا دوبارہ بہا شکل میں بیدا کردینا کیوں مشکل ہے؟

وَاَغْطَشَ لَيْلَهَا ، اَغْطَشَ بِمَعَىٰ اَظْلَمَ اور اَخُوَجَ كامطلب بِ اَبْرَزَ ، اور نَهاد كَ جَلَه صُحها اسكَ كَهاكه ع شتكا وقت سب سے اچھ اور عمدہ بے مطلب یہ ہے كہ دن كوسورج كے ذريجہ دوشن كيا۔

وَالْآذُ ضَ بَغَدَ ذَلِكَ دَحِهَا آسَ آیت میں زمین کو پھیلانے اور ہموار کرنے کا ذکر ہے ، خلق بعنی (پیدا کرنا) اور چیز ہے اور ذخی (پھیلانا) اور چیز ہے اور ذخی (پھیلانا) اور چیز ہے، زمین کا مادہ تخلیق آسان سے پہلے پیدا کیا البتہ زمین کو ہموار تخلیق آسان کے بعد کیا اور پھیلانے کا مطلب صرف ہموار کرن ہی نہیں ہے بلکہ زمین کور بائش کے قابل بنانا اور اس پر دہنے بسنے والوں کے لئے تمام ضروریات زندگی کے اسباب مبیا کرنا ہے۔

فَامَّا مَنْ طَغَیٰ الْعُ ، اول اہل جہنم کی خاص علامات بیان کی گئیس اور وہ دو ہیں: اول طغیان ، یعنی اللہ اور اس کے رسول کے احکام کے مقابلہ میں سرکشی اختیار کرنا ، اور دوسرے دنیا کی زندگی کوآخرت کی زندگی پرترجیح دینا ، ایسے لوگوں کا محکانہ جہنم بتایا ہے۔

وَاَمَّا مَنْ خَافَ مَفَامَ رَبِّهِ النّح ، ال آیت میں اٹل جنت کی دوعلامتوں کو بیان فرمایا ، اول یہ کہ جسٹی کو دنیا میں ہم کمل کے کرنے کے وقت یہ خوف اور اندیشہ لگار ہا کہ جھے ایک روز حق تعالیٰ کے حضور پیش ہو کر اپنے تمام اعمال کی جواب دہی کرنی کے روز سرے اپنے نفس کو نا جائز خواہشات سے قابو میں رکھا، جس نے دنیا میں یہ دووصف حاصل کر لئے اس کے لئے قرآن کریم یہ خوشخری دے رہا ہے کہ اس کا ٹھاند جنت ہے جس میں وہ بھیشہ دہیں گے۔



سُوْرَةُ عَبَسَ مَكِّيَّةٌ اِثْنَنَانَ وَارْبَعُوْنَ ايَةً.

سورہ عبس کی ہے، بیالیس آیتیں ہیں۔

اغرج لاخل أَنْ جَاءُهُ الْأَعْمَى * عَبْدُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ مَكْتُوم فسعة سمَّا غو سشعُولٌ له سمَّل برخوا السلامة من انسراف قُريْس الَّمي هُو حريتلُ على البلامهم ولم بذر الاعُمي أنَّه مشعُولُ بدلك فباداهُ عتمني ممّا عبنيمك البنة فالنصرف النبيُّ صلَّى اللهُ عليه وسلَّم الى بيِّنه فعُوْ تب في ذلك بما برن في هذه السُّؤرة فكان معدّ دلك يُتُّولُ لهُ ادا جاء سرّحنا من عاتمني فيه رتى ويبسُطُ لهُ رداء هُ وَمَايُدُرِيكَ يُغلمُك **لَعَلَّهُ يَرَّكَّى ۚ** فَيْهِ إِذْ غَيْمُ النَّهِ فِي الرَّسُلِ فِي الرَّايِ اي ينصُهَرُ مِن الدُّنُوبِ مِما ينسمهُ مِنْكِ أَ**وْيَذَّكُرُ فَيْه** اذعامُ التاء فِي الاصْلَ فِي الدَّالِ أِي يتَعِطُ **فَتَنْفَعَهُ الذِّلْرِي**ُّ الْعِيفَةُ الْمَسْمُوعةُ عَلَكُ وفي قِراء قِ مسطس تنفعه حوال التَرحَى أَمَّاصِ السَّغَلَى أَب لمال فَانْتَ لَهُ تُصَدِّى ﴿ وَفِي قَرَّاء قِ مِتَفُ ديد الصَّاد باذغام التاءِ الثابية في الاصل فيها تُقُسُّ و نمعرَضْ **وَمَاعَلَيْكَ ٱلْاَيَزَكُ ۚ يُؤِس وَامَّاصَّنَجَآءَكُ يَسْغَي**ۗ خَالٌ مِنْ فَاعِلَ جَاءَ وَهُوَيَخْتُنِي أَفَ اللَّهِ حَالُ مِنْ فَاعِلَ يَسْعَى وَهُو الْأَعْمَى فَأَنْتَ عَنَّهُ تَلَهِي أَ فِيهِ حَذْف التاء الأخرى في الاصل اي تتشاعلُ كَلَّا لا تنعل من دلك إنَّهَا السُورة او الاياتِ تَلْكِرَةً يَا عِمةً ﴾ للحلق فَمَنْشَآءَذَكُرَهُ ۚ خَلِطُ دلك وتَعطه فِي صُحُفٍ حسرتان لاَنها وما قلِلهُ اغترَاضَ مُمَكَّرُمَةٍ ﴿ عِندَ الله تغالى قُرْفُوْعَةٍ في السّماءِ قُطَهُّرُةٍ ﴿ سُرَعةِ عن سَلَ الشّياطِينَ بِٱلَّذِي سَفَرَةٍ أَدُ كتبةٍ يُسَحُونهَا س النَّوْحِ الْمَحْمُوطِ كِرَامِ بَسَرَرَةٍ أَسْطَيْعِينَ لَهُ تعالى وهُمُ الملائِكَةُ قُتِلَ الْإِنْسَانُ لُعِي الكافِرُ مَا ٱلْفُرَةُ أَنْ استعهام تؤبين أي ما خملة على الكُفُر مِنْ أَيُّ شَيْءٍ خَلَقَة أَا استفهامُ تَقُرير ثُمَّ بَيَّهَ فَقَالَ مِنْ نُطْفَةٍ خَلَقَهُ فَقَدَّى أَنْ عَدِقَةً ثُمَّ سُضَعَةً إلى اخر حلقه تُكَّرِّ السَّبِيلَ اي طريق حُرُوحه من بطل أبّه يَسَّرَهُ أَ ﴿ (نِفِزَم پِبَلتَ ﴿] ٢

تربیجی است الله کرتا ہوں اللہ کے نام سے جو برا مہر بان نہایت رقم والا ہے، ترش رو ہونے محمد بلون کا کا منہ بنایا ، اور اعراض کیا ،اس وجہ ہے کہ نابینا ان کے پاس آیا ، عبداللہ ابن ام مکتوم رضی کندُ تَعَالِیجَۃٌ ،سواس نے آپ بیلین کا اس کام میں خلل ڈالا جس میں آپ بیلی نتیج مشغول تھے ان ہو ً وں کے ساتھ اشراف قریش میں ہے جن کے اسمام کی آپ المعنظة الميدر كھتے تھے، اس كئے كه آپ متقافية ان كاسلام ك بزے حريص تھے، اور نابينا كواس بات كاعلم نہيں تھا كه آپ بلافقة سی (اہم کام) میں مشغول میں ، واس نے آپ میفند ہو پکارنا شروع کردیا کہ مجھے اس میں ہے بچھ سکھا دو جواللہ نے آپ بلق علیا کو سکھایا ہے بھرآپ بنو نکٹا اپنے گھرتشریف لے گئے ،اس بارے میں آپ بنو نکٹی پرعما ب فر مایو کیو اس کے ذریعہ جواس سورت میں نازل ہوا،تواس کے بعد آپ منود میں عبدالقدائن ام مکتوم دضائدا سامے نے مایا کر ہے تھے جب وہ آیا کرتے تھے،اس شخص کے لئے مرحبا ہوجس کے بارے میں مجھ پرمیرے رب نے عمّا ب فرمایا اور آپ بلٹٹ ہے۔ ان کے نئے اپنی حیا در بچیادیا کرتے تھے، اور آپ کو کیامعلوم شاید کہ و وسٹور جاتا یک تا تھی میں تناء کااد غام ہے اصل زا ، میں لیعنی گنا ہوں ہے پاک ہوجا تا آپ ﷺ کی ہاتیں من کر اور نفیجت قبول کرتا (یسڈ تکو) میںاصل میں تا وکا او مام ہے ذال میں، یعنی نصیحت قبول کرتا ، اور نصیحت اس کے لئے نافع ہوتی یعنی آپ بھی تا بیا سے تنی ہوئی نصیحت اس کے ہے سود مند ہوتی اورا یک قراءت میں جواب تر بی کی وجہ ہے تَٹُ فَعَهٔ نصب کے ساتھ ہے، جو تخص مال کی وجہ ہے ہے پروا ہی کرتا ہے آپ پلٹٹٹٹٹٹ اس کی فکر میں تو پڑے ہیں اور ایک قراءت میں صاد کی تشدید کے ساتھ ہے،اصل میں تاء ٹانیہ کو مساد میں اویٰ م کر کے (لیعنی) توجہ کرتے ہیں اور فکر کرتے ہیں، حالا نکہ اگروہ نہ ایمان لائے تو آپ مِلِقِیْ ہیں پراس کی کوئی ذمہ - ﴿ [زَمَزُمُ يَبَلَثَهُ إِنَّا كُ

- ﴿ [وَمُؤَمَّ إِبُّ لِشَهِ إِنَّ الْمُؤَمِّ

واری نہیں ،اور جوآب میلی فائلی کے پاس دوڑ اور تاہے کے فاعل سے حال ہے اور وہ اللہ سے ڈرتا بھی ہے یہ یسسعن کے فاعل سے حال ہے اور وہ نابینا ہے سوآ یہ ﷺ اس سے بے رخی برتنے ہیں اس میں اصل میں تاء ثانیہ کا حذف ہے، یعنی آپ بالتفاشاس سے بے امتنائی کرتے ہیں، خبر دار! آپ بین اللہ الباہر گزند کریں، یہ سورت یا آیات تو نصیحت ہیں مخلوق کے لئے ،جس کا جی جاہے اسے قبول کرے (یا در کھے) اور نصیحت حاصل کرے، بیا بیے محیفوں میں درج میں جو عندامتہ مکرم ہیں (فسی صحف) اِنّ کی خبر ٹانی ہے اور اس کے ماقبل جملہ معتر ضہ ہے، آسان میں بلندمر تنبہ ہیں شیاطین سے مس کرنے سے پاکیزہ بیں معزز اور نیک یعنی اللہ تعالیٰ کے فر ما نبردار کا تبول کے ہاتھ میں رہتے ہیں ، جواس کولوح محفوط ہے نقل کرتے ہیں،اوروہ ملائکہ ہیں، لعنت ہو کافرانسان پر کیساسخت منکر حق ہے؟ استفہا متو بیخ کے لئے ہے یعنی کس نے اس کو کفریر "مادہ کیا؟ کیسی حقیر چیز ہے (اللہ نے) اس کو پیدا کیا یہ استفہام تقریری ہے، پھراس کو (خودہی) بیان فر ، نے ہوئے ارشا دفر مایا نظفہ سے ،اس کی صورت بنائی پھراس میں مختلف اطوار جاری فرمائے (اول) دم بستہ بنایا ، پھر گوشت کا لوٹھڑا بنایا ،اس کی تخلیق کے ممل ہونے تک تغیرات کو جاری فرمایا پھر اس کی ماں کے پیٹ سے اس کے نگلنے کا راستدآ سان فره یا، پھراسے موت دی اور قبر میں پہنچایا تعنی اس کوالیی قبر میں پہنچادیا جس نے اس کو چھپالیا، پھر جب اللہ جا ہے گا سے بعث کے لئے زندہ کرے گا، ہرگزنبیں!اس نے وہ فرض ادانبیں کیا جس کا اس کو اس کے رب نے تھم دیا پھر انسان ذرانظرعبرت ہے اپنی خوراک کود تکھے کہ س طرح اس کو مقدر کیا اوراس کے لئے تدبیر کی ، کہ ہم نے باولوں سے خوب یانی برساید پھرہم نے نباتات کے ذریعہ زمین کو بجیب طریقہ سے پھاڑا پھرہم نے اس میں غلہ مثلاً گندم، جو،اور انگوراورسبزه اوروه ہرا چارہ ہے زینون اور تھجورا در گھنے باغ (لیعنی) بکثر ت درختوں دالے باغات اورمیوےاور حیارہ پیدا کیا جس کومولیثی چرتے ہیں اور کہا گیا ہے، گھاس (پیدا کی) تمہارے اور تمہارے مویشیوں کے فائدے کے سئے تا کہ ف کدہ پہنچ ہے تم کوفا کدہ پہنچانا، جیسا کہ اس سورت میں اس سے پہلے گذر چکا ہے، (وَ لِاَ نَعَامِكُمْ) كَ تفسير بھى ابل، بقر، غلم سے سابق میں گذر چک ہے چھرآخر جب وہ کانوں کو بہرہ کردینے والی آواز آئے گی بینی نفخهُ ثانیہ، اس روز آدمی اپنے بھائی ہے اور اپنی مال سے اور اسینے باپ ہے اور اپنی بیوی سے اور اپنی اولا دستے بھائے گا یکسوم ، إذا سے بدل ہے اور اس کا جواب وہ ہے جس پر لِسٹک ل المسوی دلالت کرتاہے ، اس دن میں ہرشخص کوابیامشغلہ ہوگا کہ جواس کوکسی دوسری طرف متوجہ نہ ہونے دے گا، (یعنی)ابیاحال ہوگا جواس کو دوسر دں کے حال سے بے خبر کر دے گا یعنی ہر مخص اپنے حال میں مبتلا ہوگا، کچھ چبرے اس ردز روشن ہشاش بشاش ہوں گے لینی خوش وخرم ہوں گے اور وہ مؤمن ہیں، اور پچھ چبرے اس روز خاک آلود ہوں گے جن پرظلمت جھائی ہوگی تعنی تاریکی اور سیاہی ، یہی اس حالت والے کا فراور فاجر نوگ ہوں گے لینی کفرو فجور کے جامع ہوں گے۔

جَِّقِيق تَرَكِيكَ لِيَسَهُ مَا فَ تَفْسِّا يُرَى فُوالِدِنَ

جَوُلْکَ، عبس و تولی (ض) عَبْسًا، عُبُوْسًا، ترش روہ و تا، چیں بہ جیں ہونا، اظہار نا گواری کرنا، ہاتھ پربل ڈالنا، اور اکر منتھ پربل ڈالنے کے ساتھ دانت بھی ظاہر ہو جا کی تو گئے گئے ہیں اور اگر منہ بھی بنایا جائے تو بُسٹو کہتے ہیں اور ساتھ میں فصہ بھی بوتو بَسْلُ کہتے ہیں (لغات القرآن) عَبَسَسَ اور وَ تَولِی میں عَائب کے صفے استعال فر مانا، انتبائی لطف وَ رم کے اظہار کے طور پر ہے کہ عقب کے وقت حاضر کے صفے استعال نہیں فرمائے ؛ تا کہ ایسا معلوم ہو کہ جس کا م پرعماب کیا جارہ ہا ہے دہ آپ بھی جائے گئے گئے ہوتا ہے ، پھرآگے وَ مَائِلَا رِیْكَ، وَ مَا عَلَیْكَ اللّا بَزّ خی میں حاضر کے صفے ہے خطب فرمای، اس میں بھی آپ یکھی گئے کو اور احرّام کوظ ہے آگر بالکل خطاب کا صفحہ نہ فرمائے تو اس سے اعراض کا شبہ بہدا ہوسکتا تھ جس ہے آپ یکھی گئے کونا قابل پر داشت رنج وَ عُم ہوتا۔

فِیکُولُنَّ ؛ عَبَسَ وَتَوَلَی ان دونوں فعلوں نے اَنْ جَاءَ اُو الاعْمَیٰ مِی تنازع کیا ، دونوں اس کومفعول لا جلہ بنا نا جا ہے ہیں ، ایک کومل دے کر ، دوسرے کے لئے ضمیر کوحذف کر دیا فضلہ ہونے کی وجہ ہے۔

عَلَىٰ الله ابن ام مكتوم ، اى ابن شريح بن مالك بن ربيعة الفهرى من بنى عامر بن لؤى ، الى واوى ك كنيت عيم الله ابن ام مكتوم بين ، تعرب الله ابن ام مكتوم وَفِحَالْ اللهُ اللهُ

قَوْلَيْنَ ؛ وَمَا يُذُرِيْكَ اس مِن غيبت عضطاب كى طرف النفات عدما استفهاميه مبتداء عدي يُدُرِيْكَ فعل متعدى بدومفعول عنه ، كاف مفعول اول عباور لَعَلَّهُ يَزَّ شَى جمله بوكر قائم مقام دوسر مفعول كيد.

فَيْكُولْكُونَ ؛ فَتَنْفَعَهُ مرفوع بِ يذَّكُو برعطف ك وجه اورمنصوب بجواب رجى مونى وجه --

فِيُولِكُ ؛ فَأَنْتَ لَهُ تَصَدِّى جارم ورتصَدى كمتعلق ب، فواصل كى رعايت كى وجد عمقدم كرويا كياب-

فِيُولِكُ ؛ تَصَدِّى اصل مِن تَصَدَّدَ تفادوسرى دال كورف علت ياء عد برل ديا كى ..

فَيْوَلْكَى : وَمَا عَلَيْكَ ، مَا نافيه إورعَلَيْكَ مبتداء محذوف كَ فبر جادر الله يَوَّعَى مبتداء محذوف كَ متعلق ب، تقدير عبرت بيد، لَيْسَ عَلَيْكَ بأس في عَدْمِ تَزْكِيقِهِ.

فَيْ وَمَا قبله اعتراض ليني إنَّ كي دونون خبرون كدرميان جمله معترضه إلى أَ

قِوَلَكُ : بِأَيْدِى سَفَرَةٍ بَهِ كَاتبين، سَفَرَة بَحْ سَافِر جيها كه كَتَبَة بَحْ كاتب

فَوَلَى : لَعِلَ الْكَافِرُ اس مِن الثاره بكانسان عظل انسان مرادَّيس بلكهانسان كافرمرادب-

قِولَكَ : فَيِلَ الاساد اس آيت من دوطريقه الكال -

يهلااشكال:

یہ کہ اس سے بددعاء کا وہم ہوتا ہے اور دعاء یا بددعاء عاجز کیا کرتا ہے، حالا نکہ انڈتن کی قادر مطلق ہے؟ لہذا ہیاس کی شایان شان نہیں۔

د وسرااشكال:

تعجب اس امرعظیم سے ہوا کرتا ہے جس کا سبب مخفی ہو، اور بیمعنی القد تعالیٰ کے لئے محال ہیں؟ اس لئے کہ وہ تو علم کی تمام اشیاء ہے اجمالاً اور تفصیلاً واقف ہے؟

اشكال اول كايبلا جواب:

یدکلام، عرب کے کلام کے اسلوب پر ہے گویا کہ اس میں استحقاق عذا بعظیم کی طرف اشارہ ہے ان کے عظیم ترہین جرم کے ارتکاب کرنے کی وجہ سے ، عرب جب کسی چیز سے تعجب کرتے ہیں تو کہتے ہیں، فسائلَه اللّه مَا اَخْدَافَهُ اللّه اس کو بلاک کرے کس قدرضبیت ہے۔

دوسرے اشکال کا جواب:

يداستفه م تجبنبي ب بلكداستفهام تونخ ب اورمفسرعلام في بهى اى كواختياركياب. فَخُولْكَ ؛ فَفَدَّرَهُ به من نطفة حلَفَه كي تفصيل ب اى قدَّرَ أطواره يعنى اس كمراحل تخيق كوبيان فره ياب في فَكُولُكَ ؛ فَهَدَّرَهُ بي من نطفة حلَفَه كي تفصيل ب اى قدَّرَ أطواره يعنى اس كمراحل تخيق كوبيان فره ياب في فَكُولُكَ ؛ ثمر السبيل يَسَّرُه بيه باب احتفال سے به اى يَسَّرَ السّبِيْلَ يَسَّرَهُ.

فَخُولَنَى : إِذَا شَاءَ أَنْشَرَهُ مشيت كامفعول محذوف ب، اى إذا شَاء إنشَارَهُ أَنْشَرَهُ.

قِوَلَى ؛ هُوَ القت الرطب جانورول كابراجارا، برے جارے وقضبًا كہائ، اللئے كه قضبًا كم عنى كائے كے بيں اور جارا چونكه بار باركا ثاجاتا ہے، اس لئے اس كو قضب كتے بيں۔

- ﴿ (اِنْزَمُ بِهَالِثَهِ إِنَّا الْمَالِيَ

قِحُولَ أَنْ : غُلْبًا بِهِ أَعْلَب وَعُلْباء كَ جُمْع بِصِي أَخْمَرُ ، حمواء كَ جُمْع خُمْرٌ آتَى بِ، گُفِدر نتوں كو كَتِمْ بِي _ ____

جَوَلَ ﴾ وَاللَّهُ اللَّهُ بَهِى جِانُوروں كے جارے كو كہتے ہيں، اگر قَضْبٌ اور اَبٌ مِن فرق يہے كه قضبٌ ہرے جارے كو كہتے ہيں اور اَبٌ عام ہے خواوہراہو یا خشک۔

فَوْلَى : فَيل البِنبُ يه ابِّا كوومر ي معنى كابيان ب، تبن ك معنى ختك كهاس كي بين ، ال معنى كانتبار ي أبُّ، فضب كي ضد بوگي ...

فَيُولِكُنْ: مُنْعَة او تَهْمَتيعًا، مَنَاعًا كَيْفير منعة اور تَهْبَيْعًا يَكركا شار وكرديا كديه فعول لدبهي بوسكتا باور مفعول مطلق بهي _

قِيُّولِنَّى ؛ والصَّاحة، صَاحَه زوردارآواز جوكانوں كه بهراكردے۔

فَيُولِنَى: لكل امرىء بعا كنے كسب كوبيان كرنے كے لئے جملے متانف ب-

فِيُولِكُ ؛ أَشْغَلَ كُلُّ واحدٍ بنفسه بير إذًا كاجواب محذوف ب-

تَفِيارُوتَشِي

شان نزول:

مفسرین کااس پراتفاق ہے کہ عَبَسَق و تو لئی النع کے زول کا سب بیہ ہے کہ قریش کے سردارول کی ایک جماعت، جن کے ناموں کی مختلف روایات میں بیصراحت ملتی ہے کہ وہ عتبہ، شیبہ، ابوجہل، امیہ بن خلف، ابی بن خلف جیسے اسلام کے بدترین دشمن ہے، جوایک روز آپ بین فیل کرنے پر کے بدترین دشمن ہے ، جوایک روز آپ بین فیل کرنے پر سادہ کرنے کی کوشش فرمار ہے تھے، استے میں عبداللہ ابن ام مکتوم تفقیقات سے ابو کہ تابینا سے، حضور بین فیل کی فدمت میں اور کا برت کے اسلام کے متعلق آپ بین فیل کے بدور میں اور انہوں نے اسلام کے متعلق آپ بین فیل کی طرف سے بیا مور شور میں کو اس مداخلت پر نا گواری ہوئی اور آپ بین فیل کی اس مداخلت پر نا گواری ہوئی اور آپ بین فیل کی اس مداخلت پر نا گواری ہوئی اور آپ بین فیل کی طرف سے بیا مور سے نازل ہوئی۔

(ترمدی شریف)

غَدَسَ و تولنی ، اس فقرہ کا انداز بیان ،اپنے اندر عجیب لطف رکھتا ہے اگر چہ بعد کے فقروں میں براہ راست آپ بیلی کا تھا کا خصاب ہے ، جس سے میہ بات صاف ظاہر ہوتی ہے کہ ترش روئی اور بے اعتمالی برینے کا فعل آپ بیلی کا بی سے صادر ہوا تھ

کٹین کلام کی ابتداءاس طرح کی گئی جس ہے معلوم ہوتا ہے کہ حضور ﷺ نہیں بلکہ اور کو کی شخص ہے جس سے بیغل صادر ہوا ہے،اس طرز بیان سے ایک نہایت لطیف طریقہ پررسول القد بین اللہ اللہ کو بیاحساس ولایا گیاہے کہ بیالیا کا متی جوآب بلغی میں کے كرف كانتقا، وياكه يه حسفات الابرار، سيفات المقرمين كقاعده كمطابق فلاف اولى كافتيار يرتنبيكي، مقصدیہ ہے کہ خلاف اولی کا ارتکاب بھی آپ بیٹی بھٹے کی شایان شان نہیں ہے۔

آپ يَنْ فَاللَّهُ كَا إِحْتَهَا داوراس كَى اصلاح:

سرداران قریش کی طرف توجه کرنے اور عبدالقداین ام مکتوم رضحانند تعدای کی طرف توجه نه کرنے میں آپ بھٹا تھا کا خیال یہ تھا کہ میں اس وفت جن لوگول کوراہ راست ہر لانے کی کوشش کررہا ہوں ،ان میں ہے اً سرکوئی ایک شخص بھی مدایت یا لے تو وہ اسا, م کی تقویت کا بڑا ذریعیہ بن سکتا ہے، بخلاف ابن ام مکتوم دھی اُنڈ تعالیے کے کہ وہ تو ایمان لا ہی جکے بیں اور جو پچھان کومعلوم کر نہ ہے وہ بعد میں بھی معلوم کر سکتے ہیں ،اس اجتہادی خطاء پر ًرفت فرماتے ہوئے فرمایا وَ مَا یُدُویْكَ لَعلَّهُ یَزُّ خُی اللح آپ بالقائلة الله كيامعلوم كه بيصحالي لَصَحَانَتُهُ تَعَالِيَّةٌ جو بات دريافت كرر ۽ تخصاس كافا ئده متيقن تفاكه آپ ان كونعليم ديتے ،تو بيا سك ذريع اینے فنس کا تزکیہ کر لیتے یا کم از کم ذکر اللہ ہے ابتدائی نفع حاصل کرتے۔

تبليغ تعليم كاايك اجم قر آني اصول:

یہ بات تو ظاہر ہے کہ آپ بلتھ لاک سامنے دو کام بیک وقت آ گئے ایک مسلمانوں کی تعلیم اور ان کی دل جو تی ، د وسرے غیرمسلموں کواسلام کی طرف لانے کے لئے ان کی طرف توجہ،قر آن کریم کے اس ارشاد نے بیدواضح کر دیا کہ پہلا کا م دوسرے کا م پرمقدم ہے، دوسرے کا م کی وجہ ہے پہلے کا م میں تا خیر کرنا یا کوئی خلل ڈ الن درست نہیں ،اس ے بیہ بات معلوم ہوئی کہ مسلمانوں کی تعلیم اوران کی اصلاح کی فکر غیرمسلموں کے شبہات کے ازالے اوران کواسلام ہے مانوس کرنے کی خاطرا ہے کا م کرنے کہ جس ہے عام مسلمانوں کے دلوں میں شکوک وشبہات یا شکایات پیدا ہوجا نمیں مناسب نہیں ہیں؛ بلکہ ان قر آنی مدایات کے مطابق مسلم نوں کی علیم و تربیت اور حفاظت کو مقدم رکھنا چاہئے، اکبرمرحوم نے خوب فر مایا ہے۔

در والے کے ادا کہہ دیں سے بد نامی بھلی بے وفا مسمجھیں شہبیں اہل حرم اس سے بچو أَمَّا مَن اسْتَعْنَى فَأَنْتَ لَهُ تَصَدَّى، لِين إيها برَّزنه كرو، خدا كو بَعولے بوئے اورا بِي و ثيوي و جاہت پر پھولے

——≤ (مَزَم بِبَلشَنْ ع

ہوئے لوگوں کو ہے جو اہمیت نہ دو،اور نہ اسلامی تعلیم ایسی چیز ہے کہ جواس سے منہ موز ہے اس کے سامنے اسے بالحاح پیش کیا جائے اور ندآ پ بلی فیلی کی بیشان ہے کہ ان مغرورلوگوں کو اسلام کی طرف لانے کے لئے کسی ایسے انداز ہے کوشش کروکہ جس ہے بیاس نعط بھی میں پڑجا کیں کہ تمہاری کوئی غرض ان سے اٹکی ہوئی ہے، حق ان سے اس سے زیادہ ہے نیاز ب جتنے بیتن سے بے نیاز ہیں۔

ومساعَلَيْكَ الله يَسزُ تُحَى، الريلوك ايمان ندلا مين توآب بين كا كام توصرف تبليغ إلى لئ ال تتم كافارك چھھے پڑنے کی ضرورت مبیں ہے۔

فَأَنْتَ عَنْهُ تَلَقَى ، يعنى السِيخُص كى جن كرل مين خدا كاخوف ہوجس كى وجدت بياميد ب كدوه آپ ينونيتيا كى باتوب یر ممل کرے گا اور آپ کی نصیحت اس کے لئے مفید ٹابت ہوگی ، قدر کرنینی ضرورت ہے ، نہ کدان سے بے رخی برسنے کی ، ان آیات سے بیمعلوم ہوا کہ دعوت وہلتے میں کسی کو خاص نہیں کرنا جاہنے بلک اصحاب حیثیت اور بے حیثیت، امیر اور غریب، آقا وغلام ،مرد وعورت چھوٹے اور بڑے سب کو بکسال حیثیت دی جائے اور سب کومشتر کہ خطاب کیا جائے القدتعالیٰ جس کو جاہے گا ا بی حکمت بالغہ کے تحت مرایت ہے تو از ادے گا۔ ابن کتیں

فُتِلَ الإنسانُ مَا أَكْفَرَهُ، يهاس عناب كارخ براوراست ال كفار كي طرف چرتا ب جوت سے بنورى برت رے تھے۔اس سے پہلے ابتداء سورت ہے آیت ۱۱ تک خطاب نبی ﷺ کا اسے تھا اور عمّاب در پردہ کفار پر،اس کا انداز بیان بیق کہا ہے نبی! ایک طالب حق کو جھوڑ کرآپ بلی فیٹیلا یکن لوگوں پر اپنی توجہ صرف کرر ہے ہیں ، جودعوت حق کے نقطہ نظرے بالک بے قدرو قیت ہیں؟ اور جن کی یہ حیثیت نہیں ہے کہ آپ پینٹنڈیز جیساعظیم القدر پینمبرقر آن جیسی بلندمر تبہ چیز کوان کے آگے پیش کر ہے۔

مِسنْ أَيِّ شَمَىٰءٍ خَمَلَهٔ مَا اسْ آيت مِين سُرَش اورخداك باغی انسان کويه بات یاددلا لَی گئی ہے کہ پہلے وہ ذراا پی حقیقت پخورکرے کدودکس چیزے وجود میں آیا؟ کس جگداس نے پرورش پائی؟اورکس راستے ہے وہ و نیامیں آیا؟اور رحم ما در میں اس نے کیا غذا کھائی ؟ اور کس ہے بسی کی حالت میں اس کی زندگی کی ابتدا ہوئی ؟ اپنی اس اصل اور حقیقت کو بھول کر''جمچومن دیگر ہےنیست'' کی نلطنہی میں کیسے مبتلاء ہوجا تا ہے۔

خلقهٔ فَقَدَّرَهُ ، یعنی بی نبیس که نطفه ہے ایک جاندار کا وجود بتادیا بلکه اس کوایک خاص! نداز ہ اور بروی صَمت ہے بنایا ، اس ے قد وقد مت اور جسامت اور شکل وصورت اور اعضاء کاطول وعرض اور جوڑ و بند ، آئکھ ، ناک وغیر ہ کی تخلیق میں ایسا انداز ہ قونم كي كه ذرااس كے خلاف بوجائے تو انسان كى صورت بكر جائے۔ اُسَمَّ اَمَا اَسَهُ فَافَهُوهُ اَ تَخَلِقَ انسانی کی ابتداء بیان کرنے کے بعداس کی انتہاء کو بیان فربایا کہ اس کی انتہاء موت اور قبر ہے،

اس کا ذکر بسلسلۂ انعامات فرمایا ہے، اس سے معلوم ہوا کہ انسان کی موت ورحقیقت کوئی مصیبت نہیں ، نعمت ہی ہے، آپ بھی ہیں نے فرمایا "قصفة الممؤمن المموت" کہ مومن کا تخدموت ہے، اور اس میں مجموعہ عالم کے اعتبار سے بری حکمتیں ہیں فَافَنبَو و بیں زمین پر پر کمتیں داخل کیا، یہ بھی ایک انعام ہے کہ انسان کوئی تعالیٰ نے عام جانوروں کی طرح نہیں رکھا کہ مرگیا تو و بیں زمین پر پر اسر تا اور پھولتا پھڑوں کی ملبوں کر کے احتر ام کے سرتا ور پھولتا پھولتا رہے، بلکہ اس کا اکرام یہ کیا گیا کہ اس کونہلا کر نے اور پاک صاف کیڑوں میں ملبوں کر کے احتر ام کے ساتھ قبر میں دفن کرنا واجب ہے۔

مسئلیں؛ اس ہے معلوم ہوا کہ مردہ انسان کودٹن کرناواجب ہے۔ مسئلیں؛ اس ہے معلوم ہوا کہ مردہ انسان کودٹن کرناواجب ہے۔

لِلْحُلِّ اللّٰهِ عَيْمَ مِنْ فَهُمْ يَوْ مَنِوْ مَنِوْ مَنِوْ مَنِوْ مَنِوْ مَنِوْ مَنِوْ مَنَوْ يَعْوَلَمُونَ وَمَا يَا كَاللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰهُ الللّٰهُ الللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰهُ اللللّٰهُ اللللّٰهُ الللّٰمُ الللّٰهُ الللّٰمُ الللّٰمُ



٤

سُوْرَةُ التَّكُوِيْرِ مَكِّيَّةٌ تِسْعٌ وعِشْرُونَ آيَةً.

سورہ تکوریکی ہے،انتیس آیتیں ہیں۔

العصف وتساقطت على الازص وَإِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتُ أَنَّ دُبِبِ سَهَا عَنْ وَخَهِ الارْصِ فَعَمَارِتْ سِهَاءَ مُسَتَّ <u>وَلِذَاالْعِشَارُ النَّوْقُ الحواسلُ عُطِّلَتُ " تُركت ٦٠ راع او ١٠ حنب لما دسائبه من الانبر وله تكن مالُ</u> اغـحب النِيهِ منها وَإِذَا الْوَحُوشُ حَشِرَتُ " حُمعت بغد البغث لبُقْتِصَ لبغين مِن بغض ثُمّ تصرر نرانا **وَإِذَا الْبِحَارِسُجِّرَتُ ' المحتلف والمشد**ل أو فدت فصارت مارًا و**اذَالنَّقُوسُ رُقِجَتُ اللَّهُ** فُريتَ بالحسادي وَلِذَاالْمُوْءُدَةُ الحَارِيَةُ تُدْفَلُ حَبَّهُ حَوْفِ العارِ والتِعاحِ، سُيِلَتُ ﴿ تَلَكِينَا لِغَابِدِهِ بِأَيَّذَنَّكِ قُتِلَتُ ﴿ وَقُرِئَى بكنسر الناء حكايةً لما تُحاطِبُ به وحوالها ال تَفُولَ قُتِلَتُ بلا دلب وَإِذَاالصُّحُفُ صَعَفُ الاغمال لَيْسُرَقُ مُ التَّحْمَيْفِ والمنشدند فتحت وتسمنت وَإِذَااللَّمَ آءُكَيْطَتُ ۚ لَـرِحَتَ حَلَّ الماكسها كما يُسرعُ المحمد عن المشاة وَإِذَا الْجَحِيْمُ اللهُ سُعِرَتُ أَلَّ التَحْمَيْتِ والتَشْدَلِد أَحَجَتْ وَإِذَا الْجَنَّةُ أُزْلِفَتُ أُو قُرّتُ لا بعب ليذ حُدُوب وجوابُ ادا اوّلُ السُّؤرة وما عُقف عسم عَلِمَتْ نَفْسٌ اي كُنَّ سفس وقت بده الـمَذْكُوْرَاتِ وَهُوْ يَوْمُ الِقِيامَة مَّكَا آخْضَرَتُ أَ مَنْ حَيْرِ وَشَرَ فَلَآ أُقْيِمُمْ لا رائدةُ بِالْخُنْسِ ۚ لَجَوَارِالْكُنْسِ ۚ بَي السُّحُومُ الحنفسةُ رُحلٌ والمُشتري والمرّنحُ والربْرة ومُعَاردُ تَحْسُلُ عِمَةَ النَّوْنِ اي مُرحعُ في مخرابًا وراه به بيسما نرى المخم في احر البُرْح اد كرّ راحعًا الى اؤله وتكسسُ كسُر البُوْن تذخَّنُ في كماسه اى تعنيث مى المواصم الذي تعنيث ميم وَالَّيْلِإِذَا عَسْعَسَ ﴿ الْنِس علامه اوْ ادْر وَالصُّبْحِ إِذَا تَنَفَّسَ ﴿ المند حتى يصنر نهارًا مِنَا إِنَّهُ اي القُزار لَقَوْلُ رَسُولِ كُونِيعٍ أَعلى الله تعالى وبُو حنربُلُ أصيف اليه لِـنُزُولِه به ذِي قُوَّةٍ اى شدِيْدِ القُوى عِنْدَذِي الْعَرْشِ اى الله تعالى مَكِيْنِ ﴿ ذِي سَكَامَ مُتعَلَقُ به عِمُد

مُّطَاعَ ثَمَّرَ اى تُصِيْعُهُ المَلاَئِكَةُ فِي السَّمُوتِ **آمِينِ** ﴾ عَلى الوَحْي **وَمَاصَاحِبُكُ**مْ سُحَمَّدُ صنَّى اللهُ عَسُه وسنم عطف على إنَّهُ إلى الحِر المُقُسَمِ عَلَيْهِ بِمُحُنُّونٍ ﴿ كَمَا زَعَمْتُمْ وَلَقُلُّوا ۗ رَأَى سُحَمَّد جِبُرِيلَ عَلَبْهِمَ الصَّعوةُ والسَّلامُ عَلَى صُورَتِه الَّتِي خُلِقَ عَلَيْهَا بِالْأَقْقِ الْمُبِينِ ۚ الْبَيّنِ وَبُو الاَعْلى بناحِيَةِ المشرق وَمَاهُوَ اي مُخمّدٌ غيبهِ التسلوةُ والسّلامُ عَلَى الْعَلَيْ مَا غَابَ مِنَ الوَحْيِ وَخَبرِ السّمَاءِ **بِضَيْبَيْ** ﴿ مِمْتَهمِ وفِي قِرَاءَ ةِ بِالضَّادِ أَى بِبَخِيُلِ فَيَنْقُصُ شَيْئًا مِنْهُ **وَمَاهُو**َ أَى القُرانُ **بِقَوْلِشَيْطُنِ** مُسْتَرِقِ السَّمْع ت**َجِيْمِ** ﴿ سَرُجُوم فَأَيْنَ تَذْهَبُونَ ۚ فَايَّ طَرِيْقِ تَسُلُكُونَ فِي إِنْكَارِكُمُ القُرَانَ وإغرَاضِكُمْ عَنْهُ إِنْ مَ **هُوَالْآذِكُرُ** عِظُةٌ لْلَعْلَمِينَ ۚ الإِنْسِ والجِن لِمَنْ شَكَاءُ مِنْكُمْ بَدَلٌ سِنَ العَالَمِيْنَ بِإِعَادَةِ الجَارِ أَنْ يَسْتَقِيْمِهُ إِلإَبْاعِ الَّ الحَقِ وَمَا لَتَشَاءُونَ الْإِسْتِقَامَةَ عَلَى الحق <u>الْآاَنِّيْشَاءُ اللهُ رَبُّ الْعَلَمِيْنَ</u> الْعَلَائِق السَّقَامَتَكُمْ عَلَيْهِ.

ت بعد الله عند الله الله كام من جو بزام به بان نهايت رقم والاب، جب سورج لپيث دياجائكا، اوراس کی روشن ختم کردی جائے گی، اور جب تارے جھڑ جائیں گے اور زمین پر گرجائیں گ، ۱۰ر جب پہاڑ چا سے جائیں گے ، یعنی ا ن کوسطح زمین ہے اکھا ژ دیا جائے گا ،تو وہ اڑتے ہوئے غبار کی ما نند ہوجا نمیں گے ، اور جب دس ، و کی گانجھن اونٹنیاں اینے حال یر حچوژ دی جائیں گی (بعنی) بغیر گلران یا بغیر دو ھے جچوڑ دی جائیں گی ،اس لئے کہان کوایک عظیم ہولنا کی نے خوف زوہ کر دیا ہوگا،اورعرب کے نز دیک دس ماہدگا بھن اونمنی ہے زیادہ تغیس مال کوئی نہیں تھا، اور جب بعث کے بعد جنگلی جانورسمیٹ کرجمع کردیتے جا ئیں گے تا کہ بعض کا بعض سے بدلدلیا جائے اور پھر وہ ٹی ہوجا ئیں اور جب سمندر بھڑ کا دیتے جا ئیں گے سخفیف وتشدید کے ساتھ تو وہ آگ (کے مانند) ہوجا کیں گے، اور جب جانیں اپنے جسموں سے جوڑ دی جائیں گی اور جب زندہ دُنن کی ہوئی اڑکی سے تا تل کول جواب کرنے کے لئے یو چھاجائے گا، کدوہ کس قصور میں ماری کئی ؟ اور (قُدِلْتِ) کو تاء کے کسرہ کے ساتھ بھی پڑھا گیا ہے،اس کی حکایت کرتے ہوئے جس کے ذریعہاس کوخطاب کیا جائے گا اور اس کا جواب یہ ہوگا کہ وہ کہے گی کہ مجھے بلاکسی قصور کے آل کیا گیا،اور جب انگال ناہے کھو لے جائیں گے اور پھیلائے جائیں گے تخفیف اورتشدید کے ساتھ، اور جب آسان کا پر دہ ہٹا دیا جائے گا، (لیعنی) اپنی جگہ ہے ہٹا دیا جائے گا جس طرح بکری ہے کھال اتار دی جاتی ہے اور جب جہنم کی آگ و ہکائی جائے گی، (مسیقبر آٹ) تخفیف اورتشدید کے ساتھ اور جب جنت قریب کردی جائے گی، جنتیوں کے سئے تا كهاس مين داخل بوجا كين، اول سورت مين إذًا اوراس يرجومعطوف باس كاجواب عَلِمَتْ نَفْسَ النح ب(اس وفت) برشخص کومعلوم ہوجائے گا،لیعنی برشخص کوان ندکور ہ اوقات میں اور وہ قیامت کا دن ہے (معلوم ہوجائے گا) کہ وہ خیر وشر میں ہے کیال یا ہے؟ بس میں قتم کھاتا ہول بلننے والے اور چھنے والے ستارول کی (لَا زائدہ ہے) اوروہ پانچ ستارے میں 🛈 زهل 🏵 مُشتری 🕝 مریخ 🕝 زہرہ 🕲 عطارو، تسخفس نون کے ضمہ کے ساتھ، یعنی اپنے راستہ میں پیچھے ک

طرف بینتے ہیں جب وان ستاروں کوآخر برج میں دیکھے کہ اچا تک پلیٹ جاتے ہیں اپنے اول برج کی طرف اور مستخب س نون کے سر دیے ساتھ، (اس کے معنی ہیں) داخل ہوجائے اپنی جھاڑی میں یعنی ایسے مقام میں تھس جائے جہاں وہ حجیب سکے، اور (قتم ہے) رات کی جب وہ اپنی تاریکی کے ساتھ آئے یا جائے ، اور شیج کی جب کہ وہ دراز ہو یہاں تک کہ روشن دن ہوجائے یہ قر آن فی الواقع ایک پیغامبر کا قول ہے جوعنداللہ بزرگی والا ہے اور وہ جبرائیل عَلیْجَلاَۃُ طَلَیْتُلاَ مِلِیْجَلاۃُ طَلَیْتُلا کی طرف اس کے ذریعہ نازل ہونے کی وجہ ہے کروی گئی ہے قوت والا یعنی مضبوط تُو کی والا ہے اور عرش والے یعنی اللہ کے نزد یک بلندمرتہ ہے، عِنْدَ ذِی الْعَوْشِ، مَکِیْنِ ہے متعلق ہے وہاں اس کا تھم مانا جاتا ہے لیعنی آسانوں میں فرشتے اس کی ہات مانتے ہیں، وہ وحی کے ہارے میں بااعتاد ہے(اوراےاٹل مکہ!) تمہارار نیق محمد پیٹھٹی جیسا کہتم گمان کرتے ہو مجنون نہیں ہے (وَمَا صَاحِبُكُمْ) كاعطف إنَّة لَهَوْلُ النح مقسم عليه پرہے اس نے اس پيغ مبركولين محمد يافقي الله جبرئیل غلیج لاؤلائن کواس کی اس اصلی صورت میں صاف کنارے پر دیکھا ہے ،جس پراس کو پیدا کیا گیا ہے، جبکہ وہ شرق کی جانب اونجے کنارے پرتھا، اور وہ لینی محمد مالقائلہ مغیبات کے بارے میں جو دحی اور آسانی خبریں ہیں، معنبم نہیں ہے ، اورا یک قرا ، ت میں ضاد کے ساتھ ہے بعنی بخیل نہیں ہے کہ دحی میں ہے پچھ چھیا لے اور دہ لیعنی قرآن چوری ہے سننے والے شیطان مردود کا کلام نبیں ہے پھرتم لوگ کدھر چلے جارہے ہو؟ لیعنی قرآن کا انکار کر کے اور اس سے اعراض کر کے تم کو نسے راستہ پر ب رہے ہو؟ بیتو سارے جہان والوں (بینی) جن وانس کے لئے نصیحت ہے، تم میں سے ہراس مخص کے لئے جو (لِسمَنْ شَاءَ اللح) اعادة جاركے ساتھ المعنىلمين سے بدل ب، اتباع حق كة ربعه سيد هے راستد پر چلنا جا ب، تمهار سے استقامت على الحق كو جائے ہے كي كي بيس ہوتا جب تك كداللدرب الغلمين تمبرارے لئے استقامت على الحق نہ جا ہے۔

عَجِفِيق ﴿ لَكِنْ لِيَسْمَ اللَّهِ لَقَيْسًا لِمِحْ فُوالِالْ

فَيْوَلْنَى : تُكْسِ يه كانِسٌ كَ جَمْعَ بِ كناس برن كَ جِمَارُى لُو كَتِ بْنِ اورجِهارُى بين جِينَ كَبِي كِيتِ بين -

(لعات القرآن ملحصًا)

قَوْلَ آئَ ؛ اَذْكُوْ، اَنْ مِنَا تَوَى الْعَجِمَ بِعَضْ سَنُول مِن مَنْ مَنَا مِن الْفَ اشْبِاعَ كَابِ، اصل مِن مَنْ مَنِهُ مِن الْمَنْ عَبِيلُ وَرَاصُلُ مَانَ يَبِينُ كَامَصِدر بِ بِين كَانَ فِت بميشِهُ مُورَى طرف بوتى بِ مَنْ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ الله

چَوَلَیْ ؛ اَفْعَلَ بظلامه اَوْ اَدْمَوَ اس ان فه کامتصدید : تا ناب که عشعس اضداد میں سے ہے ،اس کے معنی کے بڑھنے اور چھے ٹئے ، دونوں کے ہیں۔

فِيَوْلِكُ : وَالصُّبْحِ إِذَا تَنَفَّسَ ، اذًا تُنَفَّسَ بالفارسيه، آنگاه كهدم زند، بعن طاوع كند، طوع مونا-

فِيُولِ أَنْ ؛ مُنْعَلِقٌ به عِند، به كَانَميرِ مَكِيْنَ فَي طرف راجَ ہے " ف عند، مكين .. متعنق ب عند خبر مقدم اور مكين

قِوَّلَىٰ ؛ الى آخر المقسم عليه، أَى عِنْد ذَى العَرْشِ. قِوَّلَهُ ؛ مِنَ الُوحِي الح، من بيانيہ۔

تِفَسِّيرُوتَشِينَ عَ

اذا الشَّمْسُ کُورَتْ ، بیسوریؒ کے بور ہوئے کے تئے بیاب نظیراستعارہ بے تسکویو کے معنی لیننے کے ہیں، سر پر عمامہ ہاند ھنے کو تسکسویو العمامة کہتے ہیں جس طرح کیتیے ہوئے تمامہ کوسر پر لپیٹ دیا جا تا ہے اس طرح سوری کی پھیلی ہوئی روشن کو لپیٹ دیا جائے گا،جس کی وجہ سے وہ قیامت کے دن بے نور ہوجائے گا۔

وَإِذَا الْمِعِشَارُ عُمِطِلَتْ ، عربول كَوَسى چيز كَتَى اور بولنا كى كاتصور دائے كے لئے يہ بہترين طرز بيان تھا،اس زمانہ ميں عرب كنز ويك وس مبينے كى كا بھن اونٹنى سے زيادہ فيمتی اور كوئی مال نہيں ہوتا تھا،ايں اونٹنى كى بہت زيادہ حفاظت اور د مكيے بھال كى جاتی تھى ،ايں اونٹنى كى بہت زيادہ حفاظت اور د مكيے بھالى كى جاتی تھى ،ايں اونٹنى سے لوگوں كا غافل ہو جانا گويا بيە معنی رکھتا تھا كہ اس وقت تي تھا ايس سخت افقاد لوگوں پر بڑے كى كہ انہيں اسے اس عزيز ترين مال كى حفاظت كا بھى ہوش نہ رہے گا۔

وَإِذَا الْبِعَارُ سُجِّونَ ، سُجَونَ ، تُسجير سے ماضی مجہول کا صیغہ ہے تَسْجِیْر تنور مِیں آ گ د ہکا نے کو کہتے بیں ، بظاہر یہ بات بجیب سی معلوم ہو تی ہے کہ قیامت کے دن سمندروں میں آ گ بھڑک اُسٹھے گی ،لیکن اگر پانی کی حقیقت معلوم ہوتو اس میں کوئی چیز قابل تعجب نہیں ، اس سے سراسر القد تعالی کی قدرت کا ظہور ہوتا ہے کہ اس نے آ سیجن اور

ھ[زمَزَم پتباشَرْد] ≥٠

ہ سیڈروجن، دوالیں گیسوں کو ملادیا جن میں ہے ایک آگ بھڑ کانے والی اور دوسری بھڑک اُٹھنے واں ہے اور ان دونوں کی ترکیب سے پونی جیس مفیداور کارآ مدمادہ پیدا کیا جوآگ کو بچھانے والا ہے ،اللّٰدتعالیٰ کا ایک اشارہ اس بات کے سئے بہ مکل کافی ہے کہ وہ پونی کی اس ترکیب کو بدل ڈالے اور میدونوں گیسیں ایک دوسر ہے ہے الگ ہوکر بھڑ کئے اور بھڑ کانے لگیس، جوان کی اصل بنیا دی خاصیت ہے۔

لر کیول کوزندہ دفن کرنے کی وجہ:

عرب میں لڑکیوں کو زندہ دفن کرنے کا یہ بے رحمانہ طریقہ، قدیم زمانہ میں مختلف وجوہ سے رائج ہوگی تھا، ایک تو معاشی بدحالی جس کی وجہ سے لوگ جا ہے تھے کہ کھانے والے افراد کم ہوں اور اولا دکو پالنے بوسنے کا باران پرنہ پڑے، بیٹوں کو اس امید پر پاس بیا جاتا تھا کہ وہ جھول معاش میں معاون ہوں گے، گر بیٹیوں سے بیتو قع نہیں ہوتی تھی، علاوہ اس امید پر پاس بیا جاتا تھا کہ وہ جھول معاش میں معاون ہوں گے، گر بیٹیوں سے بیتو قع نہیں ہوتی تھی، علاوہ ایک بیٹیوں کو پال پوس کر جوان ہونے کے بعد دوسروں کے حوالہ کروینا ہوگا جس میں سراسر زیان ہی زیان ہے، اس کے معاوہ ایک وجہ یہ بھی تھی کہ قبائی لڑائیوں میں دفاع میں وہ کچھ کام نہ آتی تھیں بلکہ الٹی ان کی حفاظت کرنی پڑتی تھی اور اگر و تھی اور اگر و تھی اور اگر و تھی ہوتی ہوتی تھی ، انہی وجوہ کو تو تر بیٹی سے عرب میں بیطریقہ پھل پڑا تھا کہ بھی تو زیجا تھا کہ اور اگر کھی ماں اس پر راضی نہ ہوتی بااور کوئی وقت صحرا میں نے جا کر زندہ وفن کر دیا جاتا ، اس بوتی ، تو با د ب ناخواستہ اسے کہ مدت تک بر داشت کر لیا جاتا اور پھر کسی وقت صحرا میں لے جا کر زندہ وفن کر دیا جاتا ، اس بوتی ، تو با د ب ناخواستہ اسے کے مدت تک بر داشت کر لیا جاتا اور پھر کسی وقت صحرا میں لے جا کر زندہ وفن کر دیا جاتا ، اس

معامله میں جوشقاوت برتی جاتی تھی اس کا قصدا یک شخص نے خودرسول اللہ ﷺ ہے بیان کیا۔

بٹی کے ساتھ بے رحمی کا واقعہ:

سنن داری کے پہلے ہی باب میں میرصدیث منقول ہے کہ ایک تخص نے حضور فیق اللے ساہنے عہد جاہمیت کا میر واقعہ بیان کیا

کہ میری ایک بیٹی تھی جو مجھ سے بہت مانوس تھی ، جب میں اس کو پکارتا تھا تو وہ دوڑی دوڑی میر سے پاس آتی تھی ، ایک روز میں

نے اس کو بلایا اور اپنے ساتھ لے کرچل پڑا ، راستہ میں ایک کواں آیا ہیں نے اس کا ہاتھ بگڑ کر کنویں میں دھکا دے دیا ، آخری

آواز جواس کی میرے کا نوں میں آئی وہ یہ تھی ، ہائے آتا ، بیس کر رسول اللہ فیل تھی اور آپ فیل تھی کے آئسو بہنے لگے ،

حاضرین میں سے ایک شخص نے کہا اے شخص ! تو نے حضور فیل تھی کو گھین کردیا ، حضور فیل تھی نے فر مایا اسے مت روکو ، جس چیز کا

دوبارہ بیان کیا آپ فیل تھی سے ایک حداروے کہ آپ فیل تھی گئی نے اس سے فرمایا تو اپنا قصہ پھر بیان کر ، اس نے دوبارہ بیان کیا آ ناز کر۔

فر مایا جاہمیت میں جو پچھ ہو گیا اللہ نے اسے معاف کردیا اب شئے سرے سے اپنی زندگی کا آغاز کر۔

یہ خیال سی خیال سی خیابی کہ اہل عرب اس انتہائی غیر انسانی تعلی کا قباحت ہی ندر کھتے تھے، ظاہر بات ہے کہ کوئی معاشرہ خواہ کتنا ہی بگڑ چکا ہو، ایسے ظالماندا فعال کی برائی کے احساس سے بالکل خالی ہیں ہوسکتا، عرب کی تاریخ سے معلوم ہوتا ہے کہ بہت سے لوگوں کوز مانہ جاہلیت میں اس رسم کی قباحت کا احساس تھا، طبر انی میں ایک روایت ہے کہ فرز وق شاعر کے داوا صحصعہ بن ناجیہ تفقائد تفائد تا ہوئے ہیں جن میں ہے کہ میں نے ۱۰ سالا کیوں کو زندہ وفن ہونے سے بچایا اور ہرا کے کی جان کے لئے دو دواونٹ فدیے میں دیتے ہیں تو کیا جھے اس براجر ملے گا؟ آپ ظائد تفائد نے تفید اسلام کی فعمت عطافر مائی۔

اسلام کاعورت براحسان:

دراصل بیاسلام کی برکتوں میں سے ایک بڑی برکت ہے کہ اس نے ندصرف یہ کہ جرب سے اس انتہا کی سنگدلانہ رسم کا خاتمہ یہ بکد اس تخیل کو من یا کہ بیٹی کی بیدائش کوئی حادثہ اور مصیبت ہے، جب باول ناخوات یہ برواشت کیا جات اس کے برنگر اسلام نے بیتا یم دی کہ بیٹیوں کی پرورش کرنا ان کی عمر ہتا ہم وتر بیت کرنا اور انہیں اس قابل بنانا کہ وہ ایک انچھی گھر والی بن سکے بہت بڑا نیکی کا کام ہے، اس کا اندازہ ان احادیث سے ہوسکتا ہے جو آپ بیٹی پیٹیٹ سے منقول میں، مثال کے طور پر ذیل میر آپ بیٹیٹ پیٹیٹ کے چندارشا وات نقل کئے جاتے ہیں۔

مَنْ ٱبْتُلِيَ مِنْ هذه البنات بشئ فَاحْسَنَ الَيْهِنَّ كُنَّ لَهُ سِترا مِن النار (معارى ، مسلم)

__ ھ [ومَنزَم مِسَائتُ لِلْ] ≥ ---

تَ وَهُلَامِ)؛ جو شخص ان لا کیوں کی بیدائش سے آز مائش میں ڈالا جائے اور پھروہ ان سے نیک سلوک کرے تو یہ اس کیلئے جہنم کی آگ ہے بیجا ؤ کا ذریعہ بنیں گی۔

کو کُنْ کَانَ لَهُ فَلَتْ بَنَاتٍ وَصَبَرَ عَلَيْهِنَّ وَكَسَاهُنَّ مِنْ جِدَتِهِ كُنْ لَهُ حجابًا مِن النارِ. (معاری، ابن ماهه) مَنْ كَانَ لَهُ فَلَكُ بَنَاتٍ وَصَبَرَ عَلَيْهِنَّ وَكَسَاهُنَّ مِنْ جِدَتِهِ كُنْ لَهُ حجابًا مِن النارِ. (بعاری، ابن ماهه) مَنْ خَبْمَ بُهُمُ عَلَيْ اللهُ اللهُ

﴿ إِنَّ النَّبِي ﷺ قَالَ لِسُراقَةَ بِن جُعشم اللَّا أَدُلُكَ على اعظم الصدقة قال بلى يا رسول اللَّه ﷺ قال إِنَّ النَّهِ اللهِ اللهُ الل

مَنْ الْحَجْمَعُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللهُ ال

یمی وہ تعلیم ہے جس نے لڑکیوں کے متعلق لوگوں کا نقطہ نظر صرف عرب ہی میں نہیں بلکہ دنیا کی ان تمام قو موں میں بدل دیا جواسلام کی نعمت سے فیض یاب ہوتی چل گئیں۔

سنگانی ایک صورت اختیار کرناجس ہے مل قرار نہ یائے ، جیسے آج کل ضبط تو لید کے نام سے دنیا میں ہزاروں صور تیں انکے ہوگئی ہیں ،اس کو بھی رسول اللہ فیق ہیں ہوا کہ حفی لیعنی خفیہ طور پر پچہ کو زندہ در گور کرنا، فرمایا ہے۔ (مسلم) اور بعض دوسری وایات میں جوعزل بعنی ایسی تد بیر کرنا کہ نطفہ رحم میں نہ جائے ،اس پر رسول اللہ فیق ہیں ہے سکوت یا عدم ممانعت منقول ہے وہ فرورت میں مرورت کے مواقع کے ساتھ مخصوص ہے ،وہ بھی اس طرح کہ ہمیشہ کے لئے قطع نسل کی صورت نہ ہے۔ (مطهری، معارف) معارف سے مواقع کے ساتھ مخصوص ہے ،وہ بھی اس طرح کہ ہمیشہ کے لئے قطع نسل کی صورت نہ ہے۔ (مطهری، معارف) معارف کے ایک مورث نہ ہے۔ اس کی مورث نہ ہے ہیں کہ معارف کے ایک مورث نہ ہے۔ اس کی مورث نہ ہے ہے کہ مورث کے ایک مورث نہ ہے۔ اس کی مورث کے ایک میں نہ ہونے کے ساتھ کی میں ہونے کے ساتھ کے ساتھ کے ساتھ کے ساتھ کے ساتھ کے ساتھ کو سوئی کے ساتھ کو سورت نہ ہوں کے ساتھ کے ساتھ

سُورَةُ الْإِنْفِطَا لِمِكْتِدَةً وَهَيْ عَالَى كَيْنَ وَالْإِنْفِطَا لِمِكْتِدَةً وَهَيْ عَلَيْكُ كَيْنَ وَالْكِنَّة

سُورَةُ الْإِنفِطَارِ مَكِّيَّةٌ تِسْعِ عَشَرَةَ ايَةً. سورهُ انفطار كل هِ مَاتِيسِ آيتِين مِين ـ

يَسْسَحِواللهِ الرَّحْسِمُ الرَّحِسِيْ وَإِذَا النَّمَا عَالْفَالُونَ النَّوْ النَّمَا عَالَمُ الْمَعْرَا وَاجِدَا وَاجْدَا وَاجْدَا وَاجْدَا وَاجْدَا وَاجْدَا وَاجْدَا وَاجْدَا وَاجْدَا وَاخْتَلَطَ العَدُلُ بِالمِنْعِ وَلَا النَّوْوَيُّورَيُّ فَيْ مِن لَوْ الْمَالِحُونَ فَيْ فَيْ مَا لَكُونَ وَهُو يَوْمُ القِيَامَةِ مَا فَكَمْتُ مِنَ الْاعْمَالِ وَ مَا لَحَوْتُ فِينَهَا فَلَهُ تَعْمَلُهُ الْمَيْمَا وَوَفَتَ بِذِهِ المَذَ كُورَاتِ وَبُو يَوْمُ القِيَامَةِ مَا فَكَمْتُ مِن الْاعْمَالِ وَ مَا لَحَوْتُ فِينَهَا فَلَهُ تَعْمَلُهُ الْمِنْمَالُكُونِ وَقَعْ القِيَامَةِ مَالْمَكَمُّ مِن الْاعْمَالُ وَمَا فَكُونُ فَيَوْلِكُ جَعَلَكُ مُسْمَوى الحَدُنِي وَقَعْ الْمَنْفَقِيقِ الْمَعْمَاءِ لَيْمَالُونُ المَعْمَاءِ فَلَكُونُ مَا عَلَيْهُ الْمُعْمَاءِ لَيْمَا وَلَيْمَالُونُ الْمُحْرِقِ حَتَّى عَصَيْتَهُ الْمُؤَلِّ مَعْمَالُ الْمُعْمَاءِ لَيْمَالُونُ الْمُحْرِقِ مَا الْمُحْرِقِ مَا اللهُ المَعْمَاءِ المَعْمَاءِ المَعْمَاءِ المَعْمَاءِ المَعْمَاءِ المَعْمَاءِ الْمُحْرِقِ مَا الْمُحْرِقِ مَا اللهُ وَعَالَى المَعْمَاءِ المُحْرِقِ مَا الْمُعْمَاءِ لَيْمَالُونُ الْمُحْرِقِ مَا الْمُعْمَاءِ لَلْمُ الْمُحْرِقِ مَن الْمُحْرِقِ مَن الْمُحْرِقِ مَن الْمُحْرِقِ مَا الْمُعْمَاءِ لَلْمَالُونُ الْمُحْرِقِ مَنْ المُعْمَاءِ لَلْمُعْمَاءِ فَيْنَ المَاءِ فِيْنَ فِي الْمُعْمَاءِ لَيْمَالُكُمْ وَمَالُونُ الْمُحْرِقِ مَعْمَالُ وَلَا لَامُعْمَالُ مَا مُولِمُ الْمُعْلِقُ مَا الْمُعْمَاعِ فَيْنَ المَالُونُ الْمُعْلِقُ وَلَوْلُونَ الْمُعْمَالُ وَلَا الْمُعْمَالُونَ الْمُعْمَاعِ فَيْنَالُونُ الْمُعْمَاعِ لَوْلَالِمُ الْمُعْمَاعِ الْمُعْمَالُونُ الْمُعْمَالُونُ الْمُعْمَاعِلَى الْمُعْمَاعِ الْمُعْمَاعِ الْمُعْمَالُونُ الْمُعْمَاعِلَى الْمُعْمَاعِلَى الْمُعْمَاعِلَى الْمُعْمَالُولُونَ الْمُعْمَالُولُونَ الْمُعْمَالُولُونَ الْمُعْمَاعِلَى الْمُعْمَاعِلَى الْمُعْمَاعِلَى الْمُعْمَاعِلَى الْمُعْمَاعِلَ الْمُعْمَاعِلَى الْمُعْمَالُولُونَ الْمُعْمَاعِلَى الْمُعْمَاعِلَ الْمُعْمَاعِلَى الْمُعْمَاعِلَى الْمُعْمَاعِلَى الْمُعْمَالُولُ الْمُعْمَاعِلَى الْمُعْمَاعِلَالْمُولِعُولُ الْمُعْمَاعِمُ الْمُعْمَاعِلَى الْمُعْمَاعِمُ الْمُعْمَاعُ الْمُعْمَاعِلَ الْمُعْمَا

سب المسبع على الله كا الله كام سے جو برا امهر بان نہایت رخم والا ہے، جب آسان بھٹ جائے گا اور جب ستارے جوز جائے کی اور جب ستارے جوز جائے گی ہور یا بہد پڑیں گے بعد از ان آپس میں ل جائیں گے تو سبال کرایک ستارے جوز جائیں گے اور جب سب دریا بہد پڑیں گے بعد از ان آپس میں ل جائیں گے تو سبال کرایک ستارے جوز جائیں گے تو سبال کرایک

٠ ﴿ (صُرَّمُ بِسَالِيَهِ إِنَّهُ الْمِيَ

سمندر ہوجا ئیں گے اور شیریں شور کے ساتھ مخلوط ہوجا ئیں گے ، اور جب قبریں اکھاڑ دی جا ئیں گی ان کی مٹی بلیٹ دی جا ب گی ،اوران میں مدفون مردول کوزندہ کرویا جائے گا، إذا اوراس بر معطوف کا جواب عَلِمَتْ نَفْسٌ ہے، ہر تخص اینے الگے اعمال کو اور پچھلے اعمال جن کونہیں کیا لیعنی ہرتفس ان مذکورہ اوقات میں جو کہ قیامت کا دن ہے جان لے گا، اے کا فر انس ن! کس چیز نے تجھے اپنے اس رب کریم کے بارے میں دھو کے میں ڈال دیا ،حتی کہتو نے اس کی نافر مانی کی جس نے تجھ کو بعداس کے کہ تو نہیں تھا بیدا کیا ، پھر بچھ کو ورست کیا تجھ کو اعضاء کی سلامتی کے ساتھ مناسب اعتدال بخشا، اور تجھ کو متناسب (الاعضاء) بن یا (فَعَدَ لَكَ) (دال) كَ تَخفيف اورتشد يد كساته ، يعني تجه كومعتدل الخلق اورمتنا سب الاعضاء بنايه ، كما يك باته دوسر _ ہاتھ ہے اورایک بیردوسرے بیرے طویل نبیں ہے، جس صورت میں تجھ کوچا ہاتر کیب دیا، مسا زائدہ ہے، ہر مزہیں! کلا خدا کے بارے میں دھوکے میں پڑنے سے روکنے کے لئے ،حرف تو بیخ ہے ، بلکہ (اصل بات بیہ ہے) اے مکہ کے کافرو! تم جزاء اعمال کو جھٹلاتے ہو، حالانکہ تہارے اوپر ملائکہ میں سے تہارے اعمال کے محکران مقرر ہیں ایسے عنداللہ معزز اعمال کے کا تب جو پچھتم کرتے ہوسب کو جانتے ہیں، بے شک اپنے ایمان میں مخلص نعمتوں دالی جنت میں ہوں گے اور بے شک کفر فیر جلا دینے والی آگ میں ہوں گے اس میں جزاء کے دن داخل ہوں گے ، اور اس کی گرمی کو برداشت کریں گے اس ے باہر نہ ہوں کے (یعنی) نکلیں کے نیس، اور آپ اللائنائیا کو کچھ نبر ہے کہ یوم جزاء کیا ہے؟ پھر (مکرر) آپ اللائنائیا کو کچھ نبر ے کہ وہ روز جزا وکیا ہے؟ (بیترار) یوم جزاء کی تعظیم کے لئے ہے، یومُ رفع کے ساتھ ہے ای مُو یَوْمٌ، وہ ایسادن ہے جس میں کسی مخف کا کسی مخف کے لئے سیجے بس نہ چلے گااور تمام ترحکومت اس روز اللہ ہی کی ہوگی اس دن میں کسی غیر کی حکومت نہ ہوگی بعنی اس (دن) میں کسی کا واسط ممکن نہ ہوگا بخلاف د نیا کے۔

عَجِفِيق الْأِيْبِ لِيَسْبَيلُ لَفَيْسِيرَى فَوَائِلًا

قِجُولُكَمَى: وَقُتَ هَذِهِ المذكوراتِ ، اى المذكورات الاربعة ① اذَا السَّمَاءُ انْفَطَرَتْ ۞ إذَا الْكُوَاكِبُ انْـتَــُـرَتْ ۞ إذَا الْبِحَارُ فُجّرَتْ ۞ إذَا الْقُبُورُ بُعْثِرَتْ.

فَيُولِكُم ؛ مَا قَدَّمَتُ لِينَ نُفس في جواجهم برے المال كئے ، ان كوائي المال ناموں بين ديكھ لے گا ، ما احوت سے وہ رسوم نيك ، بدمراد جي جواس في دنيا بين جارى كيس ، ان كا عذاب يا تواب اس كو مميث ملتار ہے گا ، اور بعض حضرات في كبا ب ماقد مت سے مراد وہ فرائض جيں جواس في اوا كئے اور مَا أَخَوت سے وہ فرائض مراد جيں جواس في بين كئے۔

فَيْ وَلَكُمْ: فَى ايَ صورة به رَكِّبك كَمتعلق باور شَاءَ، صورة كَ صفت بـ

قِعُولَى ؛ وَمَا أَدْرِكَ ، مَا استفهاميهمبتدا، أَدْرِ العل، كاف مفعول اول، ما يوم الدين مبتدا، خبر على كر أدرا كا مفعول ثاني_ قِيَّوْلِكَنَّى: يَسُومُ اللدين ، هُوَ مبتداء محذوف كَ خبر ہونے كى وجہ ہے مرفوع ،اور اَعْدِيْ فعل محذوف كامفعول ہونے كى وجہ ہے منصوب۔

<u>ێٙڣٚؠؗڒۅۘڎۺٛۘڂڿ</u>

عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا فَذَهَ مَنْ وَأَخُونَ ، لینی جب قیامت کے وہ حالات پیش آ بھے ہوں گے جن کا ذکر شروع سورت میر
کیا گیا ہے مثلاً آسان کا بھٹناوغیرہ ، تو اس وقت ہرانسان کو اپنے کرے دھرے کا سب تفصیلی پیتہ چل جائے گا، لیمنی کیا اس نے
آگے بھیجا اور کیا پیچھے چھوڑا؟ آگے بھیج ہے مرادعمل کرنا اور پیچھے چھوڑنے کا مطلب ترک عمل کرنا اور آگے بھیجنے اور پیچھے
چھوڑنے کا ایک مطلب ، اچھے برے ممل کے نمونے چھوڑ تا بھی ہوسکتا ہے کہ اس چھوڑے بوئن نمونوں پرلوگ عمل کرتے ہیں ،
اگر یہنمونے اچھے ہیں تو اس کے مرنے کے بعدلوگ ان پرعمل کریں گے تو اس کا ثواب اس کو بھی پہنچتا رہے گا ، اوراگرید دنیا میں
بُرے نمونے چھوڑ کر گیا ہے تو جو اِن بُرے نمونوں اور طریقوں پڑمل کریں گاناہ بھی اس کو پہنچتا رہے گا۔

فیی آئی صُوْرَ قُو مَّا مِشَاءَ رَشَّحَبَکَ ، اس کا ایک مفہوم توبیہ کہ اللہ تعالیٰ بچہ کوجس کے چاہے مشاہہ بنادے، باپ کے یا ماس کے، بچایا، موں وغیرہ کے، دوسرامطلب بیہ ہے کہ وہ جس شکل صورت میں چاہے بنادے حتی کہ تبیح ترین جانور کی شکل میں بھی ڈ ھال سکتا ہے؛ لیکن بیاس کا لطف وکرم ہی ہے کہ وہ ایسانہیں کرتا اور بہترین انسانی شکل ہی میں پیدافر ماتا ہے۔

-- ﴿ (مَرْمُ بِهَ اللَّهِ إِنَّهِ اللَّهِ إِنَّهِ اللَّهِ إِن اللَّهِ إِن اللَّهِ إِن اللَّهِ إِن ا

مُورَةُ النَّطْفِيلُونَ وَهِي كَالْمُونِ النَّالِيَّةِ الْمُؤْلِكَ الْمُؤْلِكَ الْمُؤْلِكَ اللَّهِ

سُورَةُ الْمُطَفِّفِينَ مَكِّيَّةً او مَدَنِيَّةً سِتُّ وَّثَلَاثُونَ آيَةً.

سورہ مطفقین کی ہے یا مدنی ہے ، چھتیں آبیتیں ہیں۔

بِسَسِيرِ اللهِ الرَّحْسِمُنِ الرَّحِسِيرِ وَيَلُّ كَلِمَ عَلَاب او وَادٍ فِي جَهَنَّهَ لَلْمُطَفِّفِيْنَ ٥ الَّذِيْنَ إِذَا ٱلْكَالُوْاعَلَى اى مِنَ النَّاسِ يَسْتَوْفُونَ ﴿ الكِيلَ وَلِذَا كَالُوهُمْ اى كَالُوا لَهُمْ اَوْوَزُنُوهُمْ اى وَزَنُوا لَهُمْ عُضِرُونَ ﴿ يَنَفُصُونَ الْكَيْلَ أَوِ الوَزْنَ الْآ اِسْتِفْهَامُ تَوْبِيْحَ يَظُنُّ يَتَيَقَّنُ اُولَيِكَ أَنْهُ مُمَّبِعُونُونَ ﴿ لِيُومِ عَظِيْمٍ ۚ اى فيه وبُو يَوْمُ القِيَامَةِ لِيُومِ بَدَلٌ مِنْ مَحَلِّ لِيَوْمِ فَنَاصِبُهُ مَبُعُوثُونَ لَقُومُ النَّاسُ مِنْ قُبُورِسِه لَرَبِ الْعَلَمِينَ ۚ الحِلَائِيقِ لِاجْهِلِ أَسْرِه وحِسَابِه وجَزَائِه كَلَّا حَتًّا إِنَّ كَتْبَ الْفُجَّارِ اي كُتُبَ أَعْمَال الْكُفَّارِ لَهِي بِيجِيِّينٍ ﴾ قِيْلَ شُو كِنَابٌ جَامِعٌ لِاعْمَالِ الشَّيَاطِيْنِ والْكَفَرَةِ وقِيُلَ شُوَ مَكَانٌ أَسْفَى الأرْضِ السَّاسِعَةِ وهُوَ مَحَلُّ إِبُلِيْس وجُنُودِه وَمَا الدُّلِكَ مَا سِجَيْنِ كَلَا مُتَابُ سِجَيْنِ كَلَا مُتَافُوهُ ٥ مَختُومٌ وَثَلُّ يَوْمَدِدٍ لِلْمُكَذِّدِينَ الْمُكَذِّدِينَ الْآلْذِينَ أَكَذِبُونَ بِيَوْمِ الدِّيْنِ اللهِ السَجَزَاءِ بَدَلُ او بَيَانٌ لِلمُكَذِّبِينَ اللهُ عَذَبِين وَمَا يُكَذِّبُ بِهَ إِلَّاكُنُّ مُعْتَدٍ مُنَـجَاوِزِ الحَدِ آثِينِمِ ﴿ صِينَةَ مُبَالِغَةٍ إِذَا تُتُلَّى عَلَيْهِ الِلتُنَا اللَّهُ وَانْ قَالَ اَسَاطِيْرُ الْأَوَّلِيْنَ ﴿ الْحِكَايَاتُ الَّتِي سُطِرَتُ قَدِيْمًا جَمْعُ أَسُطُوْرَةٍ بِالصَمَّ او إِسْطَارَةِ بِالْكَسْرِ كُلَّا رَدُعُ ورَجُرٌ بِقَوْلِهِمْ ذَلِكَ بَلَّ كَانَ غَلَبَ عَلَى قُلُوبِهِم فَغَشْمَا مَاكَانُوالِيَكْسِبُونَ عِنَ المَعَاصِي فَهُو كَالصّدَا، كُلُّ حَتَّا إِنَّهُمْ عَنْ مَّ يِهِمْ يَوْمَ القِيَامَةِ لُمَحْجُوبُونَ فَ فَلاَ يَرَوْنَهُ ثُمَّ إِنَّهُمْ مَلْكَ الْوَالْجَدِيرِ الْعَامَةِ لَمَحْجُوبُونَ فَ فَلاَ يَرَوْنَهُ ثُمَّ إِنَّهُمْ مَلْكَ الْوَالْجَدِيرِ لَا الْحَدُوا الدار الـمُخرِقَةِ تُتَرَّبُقَالُ لَهُمُ هٰذَا اى العَذَابُ الَّذِي كُنْتُمْرِيهِ ثَكَلِّذَبُونَ ۞ كَلَّ حَقًا النَّكِيْبُ الْأَبْوَارِ اى كُتُبَ اعْمال المُؤْسِنِينَ الصَّادِقِيْنَ فِي إِيْمَانِهِمُ لَهِي عِلِيِّيْنَ ﴾ قِيْلَ بُوَ كِتَابٌ جَامِعٌ لِأَعْمَالِ الْخَيْرِ مِنَ الْمَلَائكَة ومُؤسِي التَقلنِي وقِيْلَ بُومَكَارٌ فِي السَّمَاءِ السَّابِغَةِ تَخْتَ العَرُشِ وَمُّ الدَّلِكُ اَعْلَمَكَ مَاعِلِيُّوْلَ ۚ مَا كَتَابُ عَلَيْسِ بُو كِتُبُ مَّرْقُومُ ۚ مَخْتُومُ يَّتُهُدُهُ الْمُقَرَّبُونَ ۚ مِنَ المَلاَئِكِةِ إِنَّ الْآبُ رَامَ لَفِي نَعِيمِ حَنَةِ عَلَى الْأَلْإِلِي ه (مَزَم بِسَلسَّرِهَ) » -

السُّرُرِ فِي الحِحَالِ يَنْظُرُونَ ﴾ مَا أَعْطُوا مِنَ النَعِيْمِ تَعْرِفُ فِي وَكُوهِم مَنَّضَرَةَ النَّعِيْمِ فَ التَّنَعُم وحُسُنة لِيُسَقَّوْنَ مِنْ تَجِيْقٍ خَمْرِ خَالِصَةٍ مِنَ الدَنْسِ مَّنْحَتُّوْمِ اللَّهُ عَلَى إِنَائِبَ لا يَفُكُ خَتَمَهُ إِلا بُهُمُ خِتْمُهُ مِسْكُ اللهِ الْحِرُ شُرُبِه يَفُوحُ مِنْهُ رَائِحَةُ المِسْكِ وَفِي ذَلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ أَلْمُتَنَافِسُونَ ﴿ فَلْيَرْغَبُوا بالـمُبادَرَةِ إلى طَاعَةِ اللَّهِ تَعَالَى **وَمِزَاجُهُ** أي مَا يُمْزَجُ بِهِ مِ**نْ تَسْنِيْ**مِ ۖ فُسِرَ بِقَوْلِهِ عَيْنًا ۖ فَـنَصْبُهُ بِأَمْدَحُ مُقَدَرًا لِيَشْرَبُ بِهَاالْمُقَرَّبُونَ ﴿ اى منها او ضَمِنَ يَشْرَبُ مَعَنَى يَلْتَذُ إِنَّ الَّذِيْنَ الْجُرَمُوا كَابِي حَهُلِ ونَحْرِ. كَانُوْامِنَ الَّذِيْنَ امَنُوا كَعَمَّار وبلال وَنَحُومِمَا يَضْحَكُونَ أَنَّ اِسْتِهْزَاءً بِهِمْ وَإِذَا مَرُّوا اى المُؤسِنُونَ بِهِمْ يَتَعَامَرُونَ اللَّهُ أَى يُشِيرُ الْمُجَرِمُونَ اللَّي المُؤمِنِينَ بِالجَفْنِ والحَاجِبِ اِسْتِهْزَاءُ وَإِذَا انْقَلَبُوا رَجَعُوٰا ۚ إِ**لَىٰٓ اَهْلِهِمُ النَّقَلَبُوا قَرُهِ يُنَ** ۚ وَفِي قِرَاءَ ةٍ فَكِيهِيْنَ مُعْجِبِيْنَ بِذِكْرِبِمُ الْمُؤْمِنِيُنَ **وَاذَارَاوَهُمْ** رَاوُ المُؤْمِنِيْنَ قَالُوْٓ إِنَّ هَوُٰلَا لَضَا لُوْنَ ﴿ لِايْمَانِهِمْ بِمُحَمَّدٍ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ تَعَالَى وَمَا أَرْسِكُوا اي الكُفَّارُ عَلَيْهِمْ عَلَى المؤمِنِينَ لَحِفظِينَ ﴿ لَهُمُ او لِاعْمَالِمِمْ حَتَّى يَرُدُوبُمُ إلى مَصَالِحِمِمُ فَالْيُومُ اي يَوْمَ القِيمَةِ اللَّذِيْنَ الْمُنُوْامِنَ الْكُفَّارِيَضَحَكُوْنَ ﴿ عَلَى الْأَرَابِكِ فِي الجَنَّةِ يَنْظُرُونَ ﴿ مِنْ مَنَازِلِمِهُ إِلَى الْكُفَّرِ وَهُمُ عَ يُعَذَّبُونَ فَيَضَحَكُونَ مِنْهُمْ كَمَا ضَحِكَ الكُفَّارُ مِنْهُمْ فِي الدُّنْيَا هَلْ ثُوِّبٌ جُوزِيَ الكُفَّارُمَا كَالْوَّالِيَفْعَلُونَ ﴿

ت المراقي الله كالما الله كام من جوبزام بريان نهايت رحم والاب، برى خرابى ب وريال كلم يعذاب ب یا جہنم میں ایک وادی ہے، ناپ تول میں کمی کرنے والوں کے لئے ، کہ جب لوگوں سے کیتے ہیں تو پورا لیتے ہیں اور جب ان کو ناپ کر یا تول کردیتے ہیں تو کم دیتے ہیں بعنی ناپ تول میں کی کرتے ہیں ، کیا نہیں بیاستفہام تو بیخ کے لئے ہے یقین نہیں کہ انہیں ایک عظیم (سخت) دن میں زندہ کر کے اٹھایا جائے گا،اوروہ قیامت کا دن ہے، جس دن لوگ اپنی قبروں سے رب العالمین لعنی مخلوق کے پروردگار کے حضور میں اس کے علم سے اپنے حساب اور جزاء کے لئے کھڑے ہوں گے ، یکوم، لیکوم کے کل ے بدل ہے اور اس کا ناصب مبسعسو نمو ن ہے، ہر گرنہیں ایقینا کافروں کا نامہ عمل قیدخانہ کے دفتر میں ہے کہا گیا ہے کدوہ شیاطین اور کا فروں کے اعمال کے لئے ایک جامع کتاب ہے اور کہا گیاہے کہ وہ ساتویں زمین کے نیچے ایک مقام ہے اور وہ ابلیس اور اس کے نشکر کا ٹھکا نہ ہے، سخھے کیا معلوم تحبین کیا ہے؟ بعنی جیل خانہ کا وفتر کیا ہے؟ ایک کتاب ہے کلص ہوئی مہر شدہ، اس دن حجتلانے والوں کی بڑی خرابی ہوگی جوروزِ جزاء کو حجتلاتے ہیں (الَّـذِیْن) مکذبین کابیان یابدل ہے، اوراے وہی صحف حجمثلا تاہے جوحدسے تبجاوز کرنے والا بدمل ہے (اٹلیٹ) مبالغہ کاصیغہہ، جباسے ہماری کتاب قرآن سائی جاتی ہے تو کہتا ہے بہتوا گلے لوگوں کی کہانیاں ہیں تعنی وہ کہانیاں جوا گلے زمانوں میں تھی گئیں، (اَساطیس) اسطورہ بالضمر یا اِسطارة بالكسر كى جمع ب(يه بات) برگزنبيس! كلا، ان النع اس تول كے لئے حرف تو نيخ ب، بلكة حقيقت يد ب كدان كے داول ير

ان کی بدا عمالیوں کی وجہ سے زنگ چڑھ گیا ہے ہیں وہ بڑملی زنگ کے ما نند ہے، ہر گزنہیں! بالیقین بیالوگ قیا مت کے دن خد کے دیدار سے محروم ہوں گے جس کی وجہ ہے ان کوخدا کا ویدارنصیب نہ ہوگا، پھروہ جہنم میں جاپڑیں گے ، لیعنی جلا دینے والی آ گ میں داخل ہوں گے، پھران سے کہا جائے گاریو ہی عذاب ہے جسے تم جھٹلایا کرتے تھے ، ہر گزنہیں! بے شک نیک آ دمیوں کانا مہُ اعمال یعنی مومنین ،صادقین فی الایمان کا نامہ کمل علیین میں ہے کہا گیاہے کہ (علیبین) ملائکہ اور مومنین جن واس کے ا ممال خیر کی جامع ایک کتاب ہے اور کہا گیا ہے کہ وہ عرش کے نیچے ایک مقام ہے، تجھے کیامعلوم کے علیمیون کیا ہے؟ وہ تو مکھی ہوئی مہر شدہ ایک کتاب ہے جس کی نگہداشت مقرب فرشتے کرتے ہیں یقیناً نیک لوگ جنت کے خیموں میں مسہریوں پر ہوں گے ، جوان کو عطا کیا جار ہا ہوگا اس کو د کیھ رہے ہوں گے ان کے چبروں پرتم خوش حالی کی رونق اور اس کی تر وتازگی محسوس کروگے بیلوگ میل ہے پاک صاف سربمہرشراب پلائے جائیں سے تینی شراب کی صراحی سیل بند ہوگی اس کی سیل کوخود وہی توڑیں گے، اور اس کے آخری گھونٹ میں مشک کی خوشبو مہک رہی ہوگی ، سبقت کرنے والوں کواس میں سبقت کرنی جا ہے ہذا ان کواللد کی طاعت کی طرف سبقت کرنے میں سبقت کرنی جائے ، اور اس میں تسسندھ کی آمیزش ہوگی تسنیم کی تفسیر عَیْا ب ے کی گئے ہاندا (عَیْلنّا) کانصب اَمْدَحُ مقدر کی وجہ سے ہاس چشمہ کا پانی مقرب لوگ پئیں گے ، یا یَشْرَبُ، یَلَدُدُ ے معنی کو مصمن ہے ، اور ابوجہل اور اس جیسے مجرم لوگ ایمان والوں مثلاً ممار تفعّانندُ تَغَالِظَةُ اور بلال تفعّانندُ تَغَالِظَةُ اور ان جیسے لوگوں کی ہنٹی اڑایا کرتے تنھے، اور مومنین جب ان کے پاس سے گذرتے تنے تو مجر مین مؤمنین کی طرف آنکھ اور ابرو سے استہزاءً اشارہ کرتے تھے اور جب وہ اپنے گھر والوں کے پاس جاتے تھے (تو وہاں بھی) تمسنح کرتے تھے اور ایک قراءت میں فکھین ہے بعنی مومنین کے ذکر سے تعجب کرتے تھے، (مزے کیتے تھے) اور جب مومنین کود بھیتے تو کہتے بقینا بدلوگ محرینی کا پرایمان لاکر گمرا ہ ہیں،املاق کی نے فرمایا،ان کا فروں کومونین کایاان کے اعمال کا یا سبان بنا کرنہیں بھیجا گیا کہ بیان کوان کی اصلاح کی جانب لوٹا کیں، پس آج قیامت کے دن ایمان والے کافروں پرہنسیں گے جنت میں مسہریوں پر ہیٹھے ہوئے کا فرول کے ٹھکا نوں کو د کیچہ ہے جوں گئے حال یہ کہ کا فروں کوعذاب دیا جارہا ہوگا، تو موشین کا فرون پر بنسیں گے جیسا کہ وہ د نیا میں موشین پر ہنسا کرتے تھے، واقعی کا فروں کوان کے کئے کا خوب بدلہ ملا۔

عَجِقِيق تَرَكَيْ لِيَسَهُيُكُ تَفْسِيلُ لَفَيْسِيرِي فُوالِلِا

﴿ (فَكُزُمُ بِبَالشَّرْ) ≥-

ویل یہاں بدوعاء کے معنی میں ہے؛ لہذااس کا مبتداء بننا درست ہے۔

فِحُولِنَى : مُسطَفِيفِنَ، يمُطَفِق كَ جَمْع هِم كَرِن واللَّو كَتِ بِي كَي خواه ناپ تول ميں بويا سي اور چيز ميں ،حضرت عمر رَفِحَانَدُهُ مَعَالَ فَي نِهِ أَي عَلَى عَلَى عَلَى عَمَارُ بِرُحْت و يكها اور جب وه نمازے فارغ ہو گيا تو آپ نے فره يا "طَفَّف ت با رجل" اے خص تو نے نماز کاحق ادانہيں کيا۔

فِيُولِكُ : مِن الناس اس مين اشاره م كد على بمعنى من بـ

چَوَلَیْ : ای کالوا لهم اس میں اس بات کی طرف اشارہ ہے کہ کالُو هُمْ میں هُمْ سَمِیرمفعول ہے بیاصل میں لَهُمْ تھا، لام حرف جرکوحذف کردیا ، حرف جرکے حذف کے بعد کالواستعدی بنفسہ ہوگیا۔

فَيَوْلِلْنَى: اَى فَيلِهِ اَسْ مِن اسْمَاره ہے کہ لِيَوْمِ مِن لام بَمَعَىٰ فى ہے لِيَوْم، مبعوثون كاظرف بون كى وجدے كال منصوب ہے۔ منصوب ہے، يَوْمَ يقوم الناس مِن يَوْمَ، لِيَوْم كُل رِعطف بو س وجدے نسوب ہے۔

فَيُولِنَى ؛ كتب بمعنى مكتوب اعمال الكفاد مين حذف مضاف كاطرف اثاره باوراس بات كاطرف بحى اثاره يها أثاره مي كدكت بمعنى كتب بد

چَوُلِی ؛ سِجِین ، سِجین کے نون کے برے میں اختلاف ہے جس کہ نون اصلی ہے اور بیلفظ مسجن سے مشتق ہے جس کے معنی قیدو بند کے بیں ، اور بعض حضرات کہتے ہیں کہ نون ، لام سے بدلا ہوا ہے بیاصل میں سِمِدِل جو سِجْل ہے اخوذ ہے اس کے معنی لکھنے کے ہیں سِجِیل ہمعنی کتاب جامع ہے۔

قَوْلَ الله عَرْفُومٌ یہ کتاب الفجار میں ذکور کتاب کابیان ہے مطلب یہ ہے کہ یہ وہ کتاب ہے کہ جس میں اعمال کھے ہوئے ہیں، بعض حضرات نے دفقہ بمعنی ختم (مہر) لئے ہیں مفسر علام نے بھی یہی معنی مراو لئے ہیں۔ فقول کی جی جس مفرو، بروزن جمع ہے لفظوں میں اس کی جمع نہیں۔ فقول کی اس کی جمع نہیں۔

تِفِيْدُرُوتِيْشِنَ عَ

وَيْلٌ لِلمُطَفِفِنِنَ ، تطفیف ہے شتق ہے جس کے عنی ناپ تول میں کی کرنے کے ہیں ، عربی زبان میں طفیف چھوٹی اور خقیر چیز کے لئے بولا جا تا ہے ، ناپ تول میں کی کرنے والا بھی کوئی بڑی مقدار نہیں اڑا تا؛ بلکہ برگا مک ہے تھوڑا تھوڑا اڑا تا رہتا ہے ، جو عام طور پرخر یدار کو معلوم بھی نہیں ہوتا ، تاپ تول میں کی کرنا قرآنی تھم کے اعتبار ہے جرام ہے ، تسط فیف صرف ناپ تول ہی کے ساتھ فاص نہیں ہے بلکہ برخی واجب میں کی کرنے کو تطفیف کہتے ہیں ، ایک مزدورا گرکام کی چوری کرتا ہے یہ کوئی مدازم این فرض مصبی میں کوتا ہی کرتا ہے یہ سب بھی تطفیف میں شامل ہیں۔

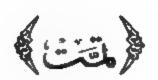
حفرت ابن عباس تفعَالِنَا کا گال الله کا روایت ہے معلوم ہوتا ہے کہ جب رسول اللہ بِلِفَالِمَثِیٰ کہ یہ تشریف لائے تو دیکھ کہ مدینہ کے لوگ ناپ تول میں کمی کرتے ہیں ،اس پر بیسورت نازل ہوئی ،اس سورت کے نازل ہونے کے بعد بیلوگ اس بری عادت سے بازآ گئے اورالیے بازائے کہ آج تک اٹل مدینہ پورانا ہے تو لنے میں معروف مشہور ہیں۔

(رواه الحاكم والنسالي)

قوم شعیب علیقالاً فالنظر برجس جرم کی وجہ سے عذاب نازل ہوا تھا وہ بھی تھا کہ اس کے اندر ناپ تول میں کمی کرنے کا مرض عام تھا حضرت شعیب علیقالاً فالنظر کے مسلسل نصیحت کرنے کے باوجودیہ قوم اپنی حرکتوں سے بازنہیں آئی تھی۔

سجین کے منی بیل یا قیدخانہ کے ہیں، کتباب موقوم میں اس کی تشریح کی گئی ہے اس سے معلوم ہوتا ہے کہ سِجِین سے مرادوہ رجس میں سزایانے والے لوگوں کے اعمال تا ہے درج کئے جارہے ہیں۔

سَکُلّا ہَال دَّانَ، لَینی جزاء ، سزاکوافسانداور اساطیر الاولین قرار دینے کی کوئی معقول دجنہیں ہے ؛ کین جس دجہ سے بہلوگ اسے افسانہ قرار دے رہے ہیں ان کا ذیک ان کے دلوں پر پوری طرح کے دھائی ہے اس لئے جو چیز سراسر معقول ہے وہ ان کو افسانہ نظر آتی ہے ، اس زیگ کی تشریخ رسول اللہ ﷺ نے یوں فر ، ئی ہے کہ بندہ جب کوئی گناہ کرتا ہے تو اس کے دل پر ایک سیاہ نقطہ لگ جاتا ہے اگروہ تو بہر لئے وہ نقطہ صاف ہو جاتا ہے لیکن اگروہ گناہ کا ارتکاب کرتا ہی چلا ج سے تو وہ نقطہ یورے دل پر ایک سیاہ نقطہ لگ جاتا ہے۔ اس دیکا بیک دل پر ایک سیاہ نقطہ لگ جاتا ہے۔ اس دیکا درمذی نسانی)



سُورَةُ الْإِنتِنْقَاقِ لِكُنِّهُ وَمَنْ الْمُورِةُ الْإِنتِنْقَاقِ لِكُنِّهُ وَكُلِّي اللَّهِ الْمُ

سُوْرَةُ الْإِنْشِقَاقِ مَكِّيَةٌ ثلث أوْ خَمْسٌ وعِشْرُونَ ايَةً. سورةُ انشقاق مَى جِهِيكِس يا پجيس آيتين بين-

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمُ مِن الرَّحِبُ مِن الرّحِبُ مِن الرَّحِبُ مِن الرّحِبُ مِن المُعْمِقِ مِن الرّحِبُ مِن الرّحِبُ مِن الرّحِبُ مِن الرّحِبُ مِن الْحَبْرِ مِن الرّحِبُ مِن الإنشِفَاقِ لِرَبِهَا وَكُوَقَتَ أَن اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ وَتُطِيعُ وَلَا الْأَرْضُ مُذَّتُ أَن ذِيدَ فِي سِعْتِها كُمَا يُمَدُّ الادِيهُ وَلَهُ يَبْقَ عَلَيْهَا بِنَاءٌ وَلا جَبَلٌ وَالْقَتَ مَا فِيهَا مِن المَوْتَى الى ظَاهِرِهَا وَتَخَلَّتُ ﴿ عَنْهُ وَالْذِنْتُ سَمِعَتُ وَاطَاعَتُ فِي ذَٰلِكَ لِ**لَرِّبِهَا وَحُقَّتُ ۚ** وَذَٰلِكَ كُـلُهُ يَكُونُ يَوْمَ القِيَامَةِ وَجَوَابُ إِذَا وَمَا عُظِفَ عَنْيُهَا مَنْ ذُوْنٌ دَلَّ عَلَيْهِ مَا بَعْدَهُ تَقْدِيْرُهُ لَقِي الْإِنْسَانُ عَمَلَهُ **يَايَّهُ الْإِنْسَانُ الْآنُكَادِحُ** مَا بَعْدَهُ تَقْدِيْرُهُ لَقِي الْإِنْسَانُ عَمَلَهُ **يَايَّهُ الْإِنْسَانُ الْآنُكَادِحُ** مَا بَعْدَهُ وَعَمَلِكَ **إِلَى** لِقَاءِ **كَيْكَ وَبُ**وَ الْمَوَتُ كَ**ذُحًا فَمُلْقِيْهِ ﴿** اللَّهِ عَسمَلُكَ السمذُكُودَ مِنْ خَيْرِ او شَرِينُومَ القِيَسامَةِ فَآمَّا مَنْ أُوْلِيَ كِتْبَاهُ كِتَابَ عَمَلِه بِيَكِينِيهِ ﴿ وَبُوالمُؤسِنُ فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا لِيَبِيُولُ ﴾ بُوعرُضُ عَمَدِه عَـنَيْهِ كَـما فُيِّسرَ في حَـدِيْـتِ الصَّحِيْحَيْنِ وَفيه مَنْ نُوقِشَ الحِسَابَ مِلْكَ وبَعُدَ العَرْضِ يُتَجَاوَزُ عنه وَّيَّنْقَلِبُ إِلَى آهُلِهِ فِي الجَنَّةِ مَسْرُورًا ۚ بذلِكَ وَإَمَّامَنْ أُونِيَ كِتُبَهُ وَرَآءَ ظَهْرِهِ ۚ بُوالْكَافِرُ تُغَلُّ يُمْنَاهُ إِلَى عُسُنِقِه وتُمخعَلُ يُسْرَاهُ وَرَاءَ ظَهْرِهِ فَيَاخُذُ بِهَا كَتَابَهُ **فَسَّوْفَ يَدُعُوۤا** عِسُدَ رُوْيَةِ مَا فِيْهِ ثُنُوۡوَاٰۤ يُمَادِي مَلاَكَهُ بِقُوْلِهِ يَا ثُبُوْرَاهِ وَلِيَصْلَى سَعِيْرًا ﴿ يَدُخُلُ النَّارَ الشَّدِيْدَة وفِي قِرَاءَ وَبِضَمَ الياءِ وفَتُح الصَّادِ وتَشُدِيْدِ اللَّامِ إِنَّهُ كَانَ فِي آهُلِهِ عَشِيرَتِهِ فِي الدُّنْيَا صَّسُرُورًا ۚ بَطَرًا بِإِنِّبَاعِه لِنهواهُ اِنَّهُ ظُنَّ أَنْ مُخَفَّعَةٌ من الثقيلةِ واسْمُهَا سخدُوف اى أَنَّه لَكُنْ يَعُور فَى يَرْجِعُ الى رَبِهِ بَلِكَ أَيْرْجِعُ اليه النَّكَرَبَّهُ كَانَ بِهِ بَصِيرًا فَ عَالِمَا برُجُوعه اليه فَكُلَّ أَقْسِمُ لا رَائِدَةً بِالشَّفَقِي ﴾ بهو الحُمْرةُ فِي الأَفْقِ بَعْدَ غُرُوبِ الشَّمْسِ وَالْيَلِ وَمَا وَسَقَ ﴿ حَمَعَ مَا دَحَلَ عليه مِنَ الدُّوابُ وغَيْرِمِا وَالْقَصَرِإِذَا الشَّكَ ﴿ الجُتَمَعَ وتَمَّ نُؤرُهُ وذلك فِي اللَّيَالِي البيُضِ لَتَّرَكُبُنَّ ايُمها الناسُ اصْلُه تَرُكُنُوْنَنَ حُذِفَتْ نُونُ الرَّفع لَتَوالِي الأَمْثالِ والوَاوُ لِالْتِقَاءِ السَّمَاكَنَينَ طَبَقَا عَنَظَيَقِ ﴿ حَالًا بِعُد حال

معابقمه عدائتاه

وبُو السمؤتُ ثُم الحَيَاةُ وسا بعُدبًا من الحوالِ القيَامَةِ فَمَالَهُمُّ اى الكُفَّارِ لَا يُؤْمِنُونَ أَلَا اى اي سام لمهم س الإسمار او ايُ خُيِعَةٍ لَهُم فِي تَوكِهِ مِع وُخُود بَرَابِيبِهِ وَ سالمِم لِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْانُ لَايَسْجُدُونَ اللهِ يحسعُون مان يُوْمنُوابه لاعُجازِه بَلِ الدِينَ كَفُرُوا بِكُذِبُونَ ﴿ بِالْبَعْبِ وَعَيْرِه وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُوعَنُّونَ ﴿ بخمعُون في صُحُفِهم من الكُفُر والنَكَذيب وأعُمالهم السُوءِ فَبَشِّمْ هُمُ الْحَرْبُمْ بِعَذَابِ ٱلْيَمِينَ سُؤلم إِلَّا لِكِنَ الَّذِيْنَ الْمَثُوَّا وَعَمِلُوا الصَّلِحَتِ لَهُمْ أَجْرُعَيْرُ مَنْمُنُونٍ فَ عَيْرُ سَفْطُوع ولا سنوص ولا يُمنُّ ب

مردع كرتا مول الله ك نام ع جوبرا مهر بان نهايت رقم والا ب، جب آتان بهت جائے گا اور اپ رب کے تھم پر کان لگائے گا، (یعنی اس کا تھم) سنے گا، اور کھٹنے میں اس کی تعمیل کرے گا، اور اس کے لئے بہی حق ہے (کدا پنے رب کا ظلم مانے) لیعنی اس پر لازم کر دیا گیا ہے کہ سنے اور اطاعت کرے اور جب زمین ہموار کر دی جائے گی۔ لیعنی اس کی وسعت میں اضافہ کر دیا جائے گا جس طرح چیزے کو پھیلا دیا جا تا ہے اور نداس پرکوئی عمارت رہے گی اور ندیباڑ ، اور مردے (وغیرہ) جو پچھاس کے اندر ہیں انہیں باہر مچینک کرخالی ہوجائے گی ادرائے رب کا تھم سنے گی ادراس باہر چینکنے میں اپنے رب کی اطاعت کرے گی اوراس کے لئے حق یہی ہے اور پیسب بچھ قیامت کے دن ہوگا اور ایز اوراس پرمعطوف کا جواب محذوف ے جس پراس کا مابعد دلالت کرتا ہے ، اس کی تقدیر کیفی الّانسسانُ عَمَلَهٔ ہے ، اے انسان اِتواسیخ مل میں اسے رب س منے تک کوشش میں لگا ہوا ہے اور وو (وقت) موت ہے، سوتو اس سے ملنے والا ہے بعنی قیامت کے دن اپنے اجھے برے مذکور عمل سے ملنے والا ہے، سوجس کے دائیں ہاتھ میں اس کا نامۂ عمل دیا جائے گا حال مید کدوہ مومن بھی ہوتو اس سے بلکا حساب لیو ب ئے گا،اور وہ اس کے ممل کواس پر بیش کرنا ہے جبیا کہ سیحین کی حدیث میں تفسیر کی گئی ہے،اور حدیث میں ہے کہ جس کے حساب کی جانج پڑتال کا گئی، وہ مارا گیا، اور پیٹ کرنے کے بعداس سے درگز رکر دیا جائے گا، اور وہ جنت میں اپنے اہل کی ج نب اس بات پر خوش وخرم لوئے گا، کیکن رباوہ شخص جس کا نامیز عمل اس کی پشت کی جانب سے دیا جائے گا (اور) حال میہ کہ وہ کا فر ہوگا، تو اس کا دابنا ہاتھ اس کی گردن ہے بائد ھدیا جائے گا اور اس کا بایاں ہاتھ بیشت کے بیچھے کرویا جائے گا تو وہ اس ے اپن نامیمل پکڑے گا، تو و واس میں مندر جات کو دیکھ کر موت کو پکارے گا (یعنی) اپنی بلاکت کوآ واز دے گا اپنے قول بے نگوراہ سے اور نبایت بخت آگ میں جاپڑے گا اور ایک قراءت میں باء کے ضمہ اور صاد کے فتحہ اور لام کی تشدید کے رتھ ہے وہ اپنے گھر والوں میں تعنی دنیا میں اپنے خاندان والوں میں مگن تھا ،اس کے اپنی خواہش کی اتباع کرنے کی وجہ ہے، اس نے بھاتھا کداہے اپنے رب کی طرف بھی بلٹمانہیں ہے (اَنَّ) مخفقہ عن الثقیلہ ہے اور اس کا اسم محذ وف ہے ، ہال بلٹن کیوں نہ ہوگا اس کی طرف بلٹے گایقینا اس کارب اپنی طرف اس کے لوٹے سے بخو بی واقف تھ بس میں مشم کھ تا ہوں شفق کی لا < (مَرْزَم پِبَالتَّرْ) > <

زائدہ ہے،اوروہ غروب شمس کے بعد کنارے کی سرخی ہے اور قتم ہےرات کی اوراس کی جس کو وہ سمیٹ لیتی ہے بعنی ہراس چیز کو جمع کر لیتی ہے جس پر وہ داخل ہوتی ہے مثلاً جانور وغیرہ اور جا ند کی جب کہ کامل ہو جائے اور اس کا نور کال ہو جائے اور بیہ ج ندنی را توں میں ہوتی ہے،اےانسان! تجھ کوایک حالت ہے دوسری حالت کی طرف گذرتے جیے جانا ہے اور (وہ حالت) موت ہے اور پھر حیات ہے ، اور اس کے بعد قیامت کے حالات ہیں (تَسَرْ کَلُونَ) تَرْ کَلُونَنَ تَفَاکَی نُونُوں کے جمع ہونے کی وجہ ہے نون رفع کوحذف کیا گیااورواوکوالتقاء ساکنین کی وجہ ہے حذف کر دیا گیا پھران کا فروں کوکیا ہو گیا کہ ایم ن نہیں لاتے؟ یعنی ان کوائیان لانے سے کیا مانع ہے، یعنی ترک ایمان کی ان کے پاس کیا دلیل ہے؟ جب کدایر ن لانے کی دلیل موجود ہے، اور جب ان کے سامنے قرآن پڑھا جاتا ہے تو سجدہ تبیں کرتے کہ جھک جائیں بایں طور کہ قرآن پرایمان لے آئیں ، قرآن کے اعبی زکی وجہ سے، بلکہ بیکا فرتو بعث وغیرہ کو حجمٹلاتے ہیں حالانکہ پیر جو پچھے اپنے اعمال ناموں میں جمع کررہے ہیں اللہ اس کو بخو بی جانتا ہے ان کے کفراور تکذیب اوران کے اعمال بدکو، لہٰذاان کو در دناک عذاب کی خبر دے دو، ابستہ جولوگ ایمان لے آئے اور نیک اعمال کئے ان کے لئے بھی ختم اور کم نہ ہونے والا تواب ہے اور ندان پراس تواب کا حسان جتریا جائے گا۔

عَجِفِيق تَرَكِيكِ لِيسَبِيلُ تَفْسِيرَى فَوَالِل

جِيُّوَلِينَى ؛ وحُفَّتْ ماضى مجبول واحدمؤنث عَائب،اس كے فاعل اور مفعول دونوں محذوف بیں،اصل میں حَقَ الله عَلَيْهَا إستماعها فاعل اورمفعول دونون كوحذف كرك يعل كي اسناد مسمنوات كي طرف لوشيخ والي ضمير كي طرف كردي -فِيُوَلِّينَ؛ أَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَخُقَّتْ يَكُرارُنبين إلى السَّكَ كراول مسموات كيار عين إوربير ارض كيار ب مين، إذًا كاجواب محذوف مع جس يراس كاما بعد يعني فَمُلاقِيْهِ ولالت كرتاب، اورجواب شرط لَقِي الإنسالُ عَمَلهُ ه اور بعض حضرات نے عَلِمَتْ مَفْسٌ کوجوابِشرط محذوف ما ناہے،اور بیزیادہ مناسب ہے اس کئے کہ سورہ تکویراورا نفطار میں عَلِمَتْ نَفْسٌ كُوبِي محذوف ما ناہے۔

فِيُولِكُنَّ ؛ كَادِحْ ، الْكَدحْ ، العمل والكسب والسعى كوشش كرنا ـ

قِخُولَنَى : إلى رَبِّكَ، اللي رَبِّكَ، اللي رَبُّكَ عَايت ٢٠ أور معنى بين كَدْحُكَ في الخير والشرِّ ينتهي بلقاء رَبِّكَ وهو الموت. فِيْوَلْكُمَّا: فَمُلاقِيْهِ اس كاعطف كادِحٌ رِب، يا كِير فانت مبتداء محذوف كي خبرب، اى فَأَنْتَ مُلاَ قِيْه، اورجمه معطوف ے سابقہ جملہ اِنگ کادِح پر۔

فِيْفِلْنَى: اى مُلَاقِ عَمَلَكَ، اس مِن اسطرف اشاره بكه فَمُلاقِينه كَالْميرمفعولى سَكَدْحٌ بمعنى عمل كى طرف راجع بادر مضاف محذوف ہے، ای فَمُلَاقِ حِسَابِ عَمَلِهِ اوربیجی درست ہے کہ مُلاقیهِ کی شمیرالله کی طرف راجع ہو، ای فَمُلاقِ رَبَّةُ يَعِنَى اس ك ليَّ كُونَى مَفْرَتْبِين ہے۔

—— ﴿ إِنْ مَرْمُ بِيَاشَرُ إِ

قِوَّلَ مَن يَدْعُوا ثُبُورًا اى يَعَمَنَّاه ، موت كوبكار في كامطلب هموت كي تمنا كرنااس لئے كه لا يعقل كونداء تمناى بوتى ہے۔

فَوَلَكُ : فَلَا أُقْسِمُ يَيْرُ طَامَدُونَ كَاجُوابِ إِنَا عَرَفْتَ هَذَا فلا اقسِمُ ، لا زائده إ

تَفَيِّيُرُوتَثَيَّنُ حَ

اس سورت میں قیامت کے احوال ،حساب و کتاب جزاء ومزا کا ذکر ہے، اور غافل انسان کوگرد و پیش میں نحور وفکر کر کے ایمان با مند تک پہنچنے کی ہدایت ہے اَذِنَ بمعنی سن لیا،اور مرادس کراطاعت کرنا، ذرّہ برابر سرتالی نہ کرنا ہے۔

وَإِذَا الْآرُ صُّ مُسَدَّتَ، زبین کو پھیلا دیے جانے کا مطلب یہ ہے کہ سمندراور دریا پاٹ دیتے جانمیں گے، پہاڑ ریزہ ریزہ کر کے بھیر دیتے جائے گا،سورۂ طلع بیس اس کیفیت کو یوں کر کے بھیر دیتے جائے گا،سورۂ طلع بیس اس کیفیت کو یوں بیان کیا گیا ہے کہ اللہ تعالی اسے چیٹیل میدان بنادے گا جس میں تم کوئی بل اور سنوٹ نہ یا ڈیگے۔

وَالْفَفَتْ مَا فِينَهَا وَتَخَلَّفُ، لَيْنَ بِرَاسَ چِيزَ لَوا كُلُ و على بواس عَظِن مِن ہوار بالكُلْ فَلْ بوج ئے گرز مِن على على اور ابتداء آفر فَيْش ہے مرنے والوں كے اجسام وذرات بھى ، زبين ايك زلزله كے سرتھ بيسب چيزي اپنظن سے باہرنكال و على ، كوئى چيزيمى چھپى بوئى يا د في بوئى نہيں رہ جائے گى ، يبال بينيس بنايا گيا كه اس كے بعد كيا ہوگا؟ اس لئے كه آگے كامضمون خود بنار باہے كدا سان! تواہے رب كی طرف چلا جار ہا ہے، تواس كے سامنے والا ہے تيرااعمال نامہ تجھے و ئے جانے والا ہے اور تيرے اعمال نامہ كے مطابق تيرى جزاء يا سراكا فيصلہ ہوئے والا ہے۔

اِنَّكَ سَحَادِحٌ ، سَحَدُحْ كَ مَعَنْ كَسى كام مِيں يورى جدوجبداورتوانا فَى صرف كرنے كے بيں اور إلنى دَبِيّكَ كامطلب ب الى لِقَاءِ دَبِيْكَ لِعِنْ سارى تَك ودواوردوڑ دھوپ صرف دنيوى زندگى تك محدود ہے؛ كين حقيقت اورواقعہ يہ ہے كشعورى ياغير شعورى طور پراپنے رب كى طرف جار ہاہے وہى انسان كى منزل اور ٹھكانہ ہے۔

فَسُوْفَ بُحَاسُبُ حِسَابًا يَّسِيْرًا جَسَ كَوا كَيْ بَالله المال نامدويا بِ كَالل سے آسان حساب ليوب كا،
مطلب يہ بكاس سے خت حساب بنبى ندكى جائے گى، اس سے يہ نہ يو چھاجائے گا كدفلال كام تونے كيول كيا؟ البتہ جس سے
خت حساب ليوب ئااس سے ہر بدى كے لئے خت مناقشہ كيا جائے گا، بخارى شريف كى ايك حديث جو حضرت عائشہ كفائلة النافة ا

٠ ﴿ (مَكْزَمُ بِسَكَاتُ فِيْ إِنَّهُ اللَّهُ فِي الْعَالِيَ الْعَالِيَةِ إِنَّهُ الْعَالِيَةِ إِنَّهُ الْعَالِ

اللی اَهْلِهِ مَسْرُورًا ، "ابل' سے مرادابل فائدان، دوست واحباب بھی مراد ہوسکتے ہیں جن کو حساب بسیر کے بعد چھوڑ دیا گیا ہوگا، اور جنت میں ملنے والے حور وغلمان بھی مراد ہوسکتے ہیں۔

فَلَا اُفْسِمُ بِالشَفْقِ الْمَحَ اللَّ يَت مِمْ ثَلْ تَعَالُ نِيْنِ جِيرُوں کُوسَم كِماتھ مؤكدكركانيان كو پھران چيزوں کی طرف متوجہ کیا ہے، پیتنوں چیزیں جن کی سم کھائی گئی ہے۔ گہر کیا ہے، پیتنوں چیزیں جن کی سم کھائی گئی ہے اگرغور کیا جائے تو معلوم ہوگا کہ بیاس مضمون کی شاہد ہیں جو جواب سم میں آنے والا ہے، بیتنی انسان کوایک ھالت پر قرار میں اس کے ھالات ہروفت بدلتے رہتے ہیں۔ قرار میں اس کے ھالات ہروفت بدلتے رہتے ہیں۔



٣٠٤ أَوْ الْأَرْفِ مِلْيَّتُمْ هِي الْمُنْتَا وَعُيْرِنَ لَيُّا اللَّهِ وَالْمُنْتَا وَعُيْرِنَ لَيْكًا سِوْرِيَّةُ الْأَرْفِ مِلْيَتَمَ هِي الْمُنْتَا وَعُيْرِنَ لَيْكًا

سُورَةُ الْبُرُوجِ مَكِيَّةً اِثْنَثَانِ وعِشْرُونَ ايَةً. سورة بروج مَى ہے، بائيس آيتيں ہيں۔

بِسُسِيمِ اللَّهِ ٱلرَّحْسِطِينِ الرَّحِسِيِّ عِنَ وَالتَّمَاءِذَاتِ الْمُرُوِّجِيِّ لِلكَوَاكِسِ اثْنَ عَشَرَ هُرُجُ تَقَدْمَتُ في الفُرُقَانِ **وَالْيَوْمِ اِلْمَوْعُودِ ۚ** يَوْمِ النِّيَامَةِ **وَشَاهِدٍ** يَوْمِ الجُمْعَةِ **وَمَثْنَهُودٍ ۚ** يَوْمِ عَرَفَةٍ كَذَا فُسِّرَتِ الشِّئةُ في الحديث ف، ول متوجود له والناسي سابد بالعسل فيه والثَّالِثُ ينسُّهُمُهُ النَّاسُ والملاَّئِكَةُ وجَـوَابُ الْقَسُمِ مَحُدُوفٌ صَدْرُهُ اى لَقَد قُتِلَ آصْحُبُ الْأَخْدُودِيُ الشَّقِ في الأرْضِ النَّالِر بَدَلُ اشْتِمَار سنه ذَاتِ الْوَقُودِيِّ مَا تُوقَدُ فيه الدِّهُمُ عَلَيْهَا اى حَوْلَها عَلَى حانب الاُخُدُود عَلَى الكُواسي قَعُودُيُّ وَّهُمَّمَعَلَى مَا يَفْعَلُوْنَ بِالْمُؤُمِنِينَ بِاللَّهِ مِنْ تَعُدِيبِهِم بِالإِلْقَاءِ في النّارِ إِنْ لَمُ يَرْجِعُوا عَن إيمنهم شُهُوَدُّنَ حُـضُورٌ رُوِيَ أَنَّ اللَّهَ أَنْجِي المُؤسِنِينَ المُلْقِينَ في النَّار بِقَبْض أَرُوَاحِمِمُ قَبُلَ وُقُوعِمِم فيمها وخَرَجَتِ النَّارُ الى سَن شَهَ مِاخِرَفَتُهُمْ وَمَانَقَتُمُوامِنْهُمْ إِلْآانَ يُتُومِنُوا بِاللَّهِ الْعَزِيْرِ في سُلَكِه الْحَمَيْدِي السَحُمُودِ الَّذِيْ لَهُ مُلْكُ الشَّمُوتِ وَالْأَضِ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءً شَهِيدٌ ۞ اى ما أَنْكَرَ الكُفَّارُ على المؤمنين إلَّا إيمانَهُم إِنَّ الَّذِيْنَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنْتِ بِالْإِحْرَاقِ ثُمَّ لَمْرِينُوبُوا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمٌ بِكُنْرِهِم وَلَهُمْ عَذَابُ الْحَرِيْقِ أَ اى عدابُ إِحْرَاقِمِمُ المُؤسِمِينَ في الأَخِرَةِ وقِيلَ فِي الدُّنيَا بِأن خَرَجَتِ النَّارُ فاحُرقَتُهُم كمَا تقدُم إِنَّ الَّذِيْنَ الْمَنُولُوعَيْلُوا الصَّلِحْتِ لَهُمْ جَنْتُ تَجْرِى مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهُ وَ ذَٰلِكَ الْفَوْرُ الْكَبِي يُرُرُّ إِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ _ إِنَّ عَنْ الْأَنْهُ وَ ذَٰلِكَ الْفَوْرُ الْكَبِي يُرُرُّ إِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ _ إِنْ عَنْ الْأَنْهُ وَ الْكَبِي الْمُؤْوِلُ الْكَبِي يُرُرُّ إِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ _ إِنْ عَنْ الْمُؤْوِلُ الْكَبِي يُرُرُّ إِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ _ إِنْ عَنْ الْمُؤْوِلُ الْكَبِي مُنْ أَنْهُ وَالْمُؤْوِلُ الْكَبِي يُرُرُّ إِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ _ إِنْ عَلَيْ اللَّهُ الْمُؤْوِلُ الْكَبِي الْمُؤْوِلُ الْكَلِي اللَّهُ اللَّهُ الْمُؤْوِلُ الْكَلِيمِ اللَّهُ اللّلْهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّالِ الللَّهُ الللَّهُ اللَّا اللَّلْمُ اللَّال لَشَدِيْدُ ۚ عَسْبِ إِرَادَتِهِ إِنَّهُ هُوكِيْدِئُ الخَلْقَ وَيُعِيْدُ ۚ فَلاَ يُعَجِزُه مَا يُرِيدُ وَهُوالْغَفُورُ لِمُؤسس المُدُسِينَ الْوَدُّودُ ۚ المُتَوَدِّدُ الى أَوْلِياتِهِ بِالكَرامَةِ ذُ**والْعَرْشِ** خَالِقُهُ ومَالِكُهُ ال**ُمَجِيْدُ ۚ** بالرَّفَعِ المُسْتَحِقُ اكمَ صناب العُنُو فَعَّالُ لِمَا يُرِيدُ لَا يُعْجِزُه شَيْءٌ هَلَ اللَّهُ يَا مُحَمَّدُ حَدِيْتُ الْجُنُودِ فَوْعَوْنَ وَثُمُودَ فَ مِنْ سِ الحُسُود واسْتغنى بِيذِكُر فِرُعَونَ عَنِ أَتْبَاعِهِ وحَدِيثُهِمِ أَنَّهُمِ أَمُلِكُوا بِكُفُرسِمِ وسِذا تنبية لمَن كُسر — :=[1.51 5.0 [51]≥-

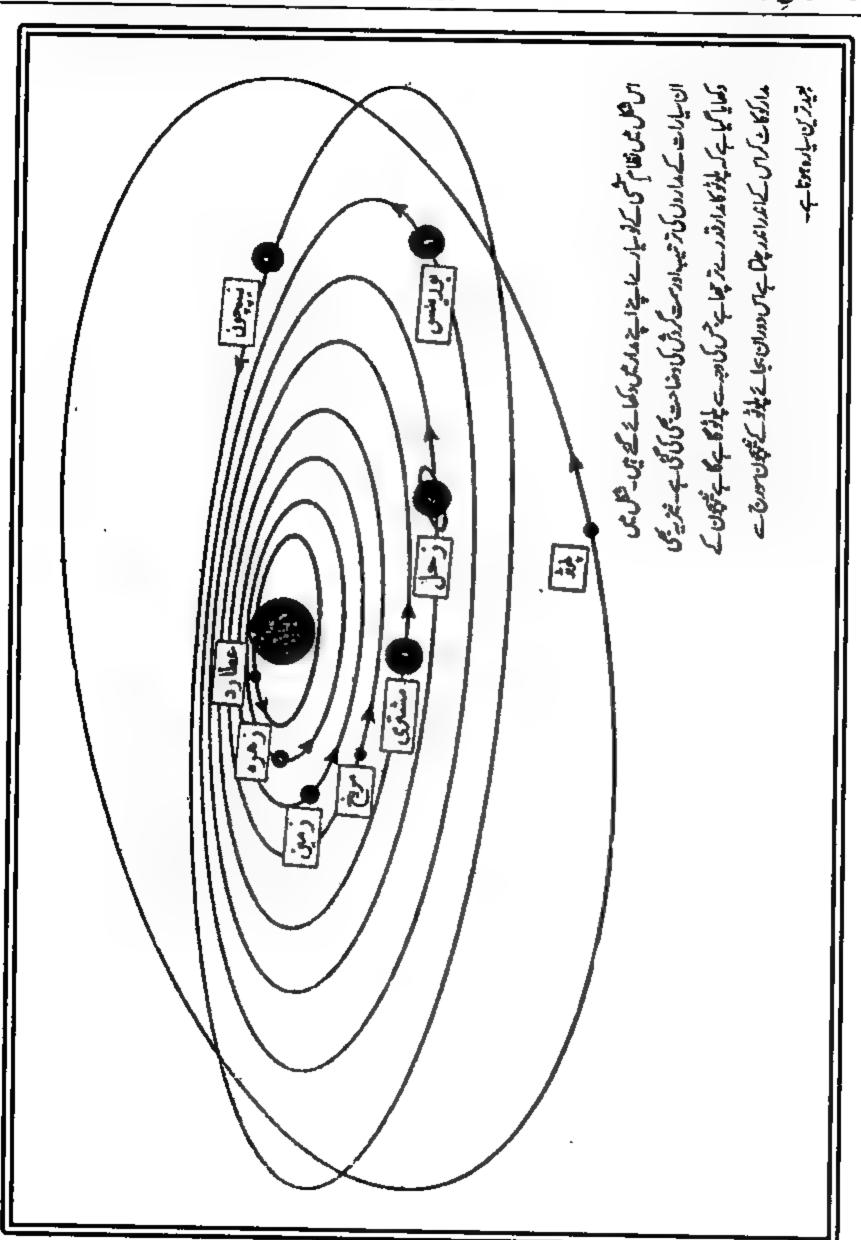
مالسَى صلى الله عليه وسلَّمَ والقُران لِيَتَّعِظُوا بَلِ الَّذِيْنَ كُفَرُوا فِي الْمَوْاءِ فَوْقَ السَّمَاءِ السَّابِعَةِ تَحَفُّوطٍ ﴿ لَا عَاصِمَ لَهُمُ منه بَلْ هُوَفَرُ إِنَّ يَجِعِيدُ ﴿ عَظِيمٌ فَي الْمَوْ فِي الْمَوَاءِ فَوْقَ السَّمَاءِ السَّابِعَةِ تَحَفُّوطٍ ﴿ لَا عَاصِمَ لَهُمُ منه بَلْ هُوفَرُ أَنَّ يَجِعِيدُ ﴿ عَظِيمٌ فَي الْمَوْفِي الْمَوْاءِ فَوْقَ السَّمَاءِ السَّابِعَةِ تَحَفُّوطٍ ﴿ اللَّهُ عَلَيْهُ مَا اللَّهُ عَلَيْ السَّمَاءِ وَالْاَرْضِ وَعَرُضُهُ مَا اَبَيْنَ الْمَشْرِقِ بِاللَّهُ عَنْهُمَا. وَالْمَعُوبِ وَهُوَ مِنْ دُرَّةٍ اللَّهُ اللهُ عَلَى اللَّهُ عَنْهُمَا.

سیارہ کے بارہ برج ہیں (جن کی تفصیل سورہُ فرقان میں گذر چکی ہے) اور قتم ہے یوم موعود (بعنی) قیامت کے دن کی اور حاضر ہونے والے جمعہ کے دن کی شم اور اس دن کی قشم جس میں حاضری ہوتی ہے بینی یوم عرفہ کی ،حدیث شریف میں متیوں کی الی بی تفییر کی تئی ہےاول موعود به ہے دوسرا (لیعنی جمعه)اسینے اندر ہونے دالے عمل کی شہادت دینے والا ہےاور تیسرا (یعنی) یوم عرفه کهاس میں انسان اور ملا تکه حاضر ہوتے ہیں اور جواب شم کا صدر محذوف ہے اور وہ لَفَدْ ہے ای لَفَدُ قُتِلَ أصحب الاحدود، بلاك كي كي كر صوالي يعنى زمين من خندق والي وه ايك آك هي ايندهن والى، الذار، احدود ے بدل الائتمال ہے وَ فُود اس ایندھن کو کہتے ہیں جس کے ذریعہ آگ جلائی جاتی ہے، جب کہوہ لوگ اس خندق کے اردگر و كرسيول پر بيٹے ہوئے تھے، اور مونين كے ساتھ ايمان سے بازندآنے كى صورت بيل آگ بيس ڈالنے كا جومل كررے تھے اس کوا پنے سامنے دیکے رہے ہتھے روایت کیا گیا ہے کہ اللہ تعالیٰ نے آگ میں ڈالے جانے والے مومنین کوآگ میں ڈالے جانے سے پہلے روح قبض کر کے نجات دی اور آگ ان لوگوں کی طرف نکلی جو وہاں موجود (تما شدد کھےرہے) تھے اور ان کوجلا ڈ الا ، اور اہل ایمان ہے ان کی وشنی کی وجہاس کے سواء کیجھ ندھی کہ وہ اس اللہ پر جو اپنے ملک میں غالب اور محمود ہے ایمان رکھتے تھے اور آسانوں اور زمین کی ملکیت اس کی ہے اور وہ سب کچھ دیکھ رہا ہے بعنی کا فروں کومومنین کی سوائے ان کے ایمان لانے کے اور کوئی بات ناپسندنہیں تھی ، یقیناً ان لوگوں کے لئے جنہوں نے مومن مردوں اور مومن عورتوں پر آگ میں جلا کر ظلم ڈ ھایا پھرتو بدند کی تو ان کے لئے ان کے کفر کی وجہ ہے جہنم کا عذاب ہے اور ان کے لئے آخرت میں جلانے کا لیعنی موشین کو آ گ میں جلانے کی وجہ سے عذاب ہے اور کہا گیا ہے کہ دنیا ہی میں ہے، اس طریقہ پر کہ (خندق ہے) آ گ نکلی اور ان کوجلا دیا جیا کہ اسبق میں گذرا، جولوگ ایمان لائے اور جنہوں نے نیک عمل کئے یقیناً ان کے لئے جنت کے باغ میں جن کے نیچ نہریں بہتی ہوں گی، یہ ہے بڑی کامیانی ہے شک کافروں پر تیرے رب کی پکڑ بڑی سخت ہے اس کے ارادے کے مطابق ، وہی مخلوق کو پہلی بار پیدا کرتا ہے اور وہی دوبارہ پیدا کرے گااس کواس کے ارادہ ہے کوئی چیز باز نہیں رکھ عتی وہ گنہ گارمومنین کو بخشنے والا ہے اور اکرام کے ذریعہ اپنے اولیاء سے محبت کرنے والا ہے اور عرش کا مالک ہے لیعنی اس کا خالق ہے، اور ، لک ہے، اور بزرگ وبرتر ہے (المعجید) کے رقع کے ساتھ، وہ صفات کمالات عالیہ کاستحق ہے اور جو پچھ جیا ہے کرڈ النے والا ہے اس کوکوئی ھی عاجز نہیں کرسکتی، کیا اے جمد ﷺ جمہیں فرعون اور شمود کے تشکروں کی خبر ہینی کی بید جنود سے بدل ہے، اور فرعون کے ذکر کی صرورت نہیں رہی، اور ان کا واقعہ بیہ ہے کہ ان کو ان کے نفر کی وجہ سے ہلاک کر دیا گیا، اور (در اصل) ان لوگوں کو تنابیہ ہے جنہوں نے نبی ﷺ اور قرآن کا انکار کیا، تا کہ وہ تصحت حاصل کریں، مگر جنہوں نے کفر کیا وہ نہ کور اصل) ان لوگوں کو تنابیہ ہے جنہوں نے نبی ﷺ اور قرآن کا انکار کیا، تا کہ وہ تصحت حاصل کریں، مگر جنہوں نے کفر کیا وہ نہ کور کیا ۔ اس سے ان کوکوئی نہیں بچاسکن، کے جھٹلانے میں گے ہوئے ہیں صالا نکہ اللہ نے ان کو ہر طرف سے تھیرے میں لے رکھا ہے، اس سے ان کوکوئی نہیں بچاسکن، لکہ بیقر آن بلند پا یہ ہے اس لوح میں جو فضا میں ساتویں آسان کے اوپر ہے محفوظ ہے اور اس کا طول آسان اور زمین کے بلکہ بیقر آن بلند پا یہ ہے اس کوخ مشرق سے مغرب تک کی مسافت کے برابر ہے اور وہ (لوح) سفید موتی کی ہے یہی حضر سات کی مسافت کے برابر ہے اور وہ (لوح) سفید موتی کی ہے یہی حضر سات کی مسافت کے برابر ہے اور وہ (لوح) سفید موتی کی ہے یہی حضر سات کی مسافت کے برابر ہے اور وہ (لوح) سفید موتی کی ہے یہی حضر سات کی مسافت کے برابر ہے اور وہ (لوح) سفید موتی کی ہے یہی حضر سات کی اس معتون کی ہے کہی حضر سات کی مسافت کے برابر ہے اور اس کا عرض مشرق سے مغرب تک کی مسافت کے برابر ہے اور وہ کی اسفید موتی کی ہے کہی حضر سات کی مسافت کے برابر ہے اور وہ کی کا مسافت کے برابر ہے اور وہ کی کی مسافت کے برابر ہے اور وہ کی کور کی کی کور کی کور کی کھور کی کی مسافت کے برابر ہے اور وہ کی کا کور کی کھور کی کھور کی کی کور کی کھور کی کی کھور کی کور کی کھور کی کھور کی کور کی کھور کی کھور کی کھور کی کی کھور کے کھور کی کھور کے کھور کی کھور کی کھور کے کھور کی کھور کے کھور کی کھور کی کھور کی کھ

عَجِقِيق الْرَكِ فِي لِيَّا لِمَا الْحِ لَفَيْسَارِي فَوَالِال

السحمل النحور الجوزاء السرطان الاسد السنبلة السنبلة السميزان السعوب المسترول السنبلة السنبلة السميزان العقرب القوس النجدى السائدلو السميران الحوت، يذكوره باره برج استارول كيان مرتخ كدوبرج بين المورة بين القول اور المستبركان برج ماوروه مرطان مي اورش كابحى ايك بي ماوروه اسدم اورشترى كدوبين القول اور حوت اورده اس كبحى دوبين الجدى اورداو.





< (مَرْزُم بِبَالِثَهِ إِ

قِجُولُكُم: الموعود اي موعود به هو القيامة.

قَوْلَى : محدوف صَدْرُهُ لين ماضى شبت بس كامعمول مقدم نه وجب جواب شم واقع بوتواس بر لام اور قد وافل كرنا ضرورى بايك براكتفاجا رئيس بالبنة طول كلام ياضرورت كى وجد بايك براكتفا كريك بين، جيماكه قذ اَفْلَحَ بين طول كلام كى وجد صرف قد براكتفا كيام قُيل أصْحَابُ الاحدود، اى لَقَدْ قُيلَ اصحبُ الاحدود، أَخَدُونُهُ مفرد بج جمع أَخَادِيدٌ بمعنى خدرت.

فِوْلَى ؛ النَّارُ بدل الاستمال منه، النَّارُ، أحدود عبدل اشتمال عاسك كه أخدود، نار رشتل عد

فَيُولِينَ ؛ الْوَقُود، والري فتى كساته بمعنى ايدهن اورضمه كساته مصدرب، جلانا-

فَحُولَنَى ؛ اِذْهم علَيْها، فَينل مقدم كاظرف مؤخر ب، يعنى مؤمنين كوخندق كي آك مين جلات وقت خندتوں ككار ب كرسيوں پر بيٹے ہوئے تنے، شهو دُ بعض نے كہا ہے كہ شهدادہ ہمعنى گواہى سے شتق ہے، يعنى بادشاہ كے حضور ہمنى كرسيوں پر بيٹے ہوئے بنى مادہ ہمعنى محضور سے شتق ہے، مغسر علام نے يہي معنى مراو لئے بيل بعض كى حسن كاركردگى كى شہاوت و يتے تنے يا شهدادہ بمعنى محضور سے شتق ہے، مغسر علام نے يہي معنى مراو لئے بيل مطلب بدہ كرمونين كے ساتھ تعذيب اور احراق فى الغاد كاجومعالم كياجاتا تقااس كوكرسيوں پر بيٹے كرتما شد كے طور يو كي تنے اور خوش ہوتے تھے۔

قِحُولَى اللَّذِي لَهُ مُلك السموات والارض بي العزيز الحميد كابيان --

فَكُولِكُما ؛ فَلَهُمْ عذابُ جهنم يه إنّ اللّذِينَ فَتَنُوا كَ ثَرِب، مبتداء يونكم تضمن بمعنى شرط باس ليخبر برفاء واظل بوئى ہے۔ واظل بوئى ہے۔

قِیُولِی ؛ بدل مِنَ الجنود ، فرعون حذف مضاف کے ساتھ جنود ہے بدل ہے ، ای جنود فرعون ، فرعون کوؤکر کرنے کے بعداً تباع فرعون کوؤکر سے کی ضرورت نبیس رہی۔

قِولَنَى: بِما ذُكِرَ، اى القرآن والنبي المُنْكَانَا، مَا عمرادَم آن يا في المُنْكَانِين الم

تَفَيْدُرُوتَشِينَ عَ

سورۂ بروج مکہ معظمہ کے اس دور میں نازل ہوئی ہے جب ظلم وستم پوری شدت کے ساتھ بریا تھا اور مشرکین مکہ سلمانوں کو سخت سے سخت اذبیتیں دے کرایمان سے مخرف کرنے کی کوشش کررہے تھے۔

سورهٔ بروج کے نزول کی حکمت:

کفارکواس ظلم وستم کے بُرےانجام ہے آگاہ کرنا ہے جووہ ایمان لانے والوں پرتو ژرہے تھے،اوراہل ایمان کو بیسلی دینا ہے کہا گروہ ان مظالم کے مقابلہ میں ثابت قدم رہیں گےتو ان کو بہترین اجر ملے گااوراللہ تعالیٰ ظالموں سے بدلہ لے گا۔

وَشَاهِدٍ وَّمَشْهُوْدٍ، شَاہِداور شہود کی تفسیر میں بہت اختلاف ہے،علامہ شوکا ٹی نَرِّمَمُ کادلاُلمُ تَعَالَیٰ نے آٹاروروایات کی بنیاد پر کہا ہے کہ شاہد سے مراد جمعہ کا دن ہے، لینی اس دن جس نے جو بھی ممل کیا ہوگا یہ قیامت کے دن اس کی گواہی دے گا اورمشہود سے مراد عرفہ کا دن ہے جس میں لوگ ۹ رذی الحجہ کوعرفات میں جمع ہوتے ہیں۔

اصحاب إخدود كاوا تعه:

ح (زَمَزَم بِبَلْتَهُ إِيَ

اس سورت میں''اصحاب اخدود'' کا واقعہ بیان ہوا ہے اور یہی واقعہ اس سورت کے نزول کا سبب ہے،گڑھوں میں آگ جلا کرایمان والوں کواس میں ڈال کرجلا دینے کے متعدد واقعات روایات میں بیان ہوئے ہیں جن سے معلوم ہوتا ہے کہ دنیا میں متعدد مرتبہ اس تتم کے واقعات ہوئے ہیں۔

گیا تھا عبدالقد بن تامرتھا،اور وہ راہب حضرت عیسیٰ علاہ کا ظائلا کے غرب کا بیر**و کارتھا، وہ لڑ کا کشف وکرا**مات کے ذریعہ ندھوں کو بینا اور کوڑھیوں کو تندرست کرنے لگا، اللہ تعالیٰ نے اسے ایسا پختہ ایمان نصیب فرمایا کہ ایمان کی خاطر لوگوں کی ذیتیں برداشت کرتا تھا،ساح کے پاس جاتے وقت راستہ میں راہب کے پاس کچھ دیر بیٹھتا تھا جس کی وجہ سے ساحراس کو نا خیر کی وجہ سے مارتا تھا اور والیس کے وقت بھی راہب کے پاس بیٹھتا جس کی وجہ سے گھر پہنچنے میں دمر ہو جاتی تو گھر والے ں کی پٹائی کرتے ،گراس نے کسی کی پرواہ کئے بغیرراہب کی صحبت اورمجالست نہ چھوڑی ،اورخفیہ طور پرمسلمان ہو گیا ،ایک ہ راس لڑ کے نے ویکھا کہ شیر وغیرہ کسی ورندے نے راستہ روک رکھا ہے اورلوگ پریشان ہیں تو اس نے ایک پھر ہاتھ میں لے کر دعاء کی کہا ہے اللہ!اگر راہب کا وین سچا ہے تو بیر جانو رمیر ہے پھر سے مارا جائے اوراگر کا ہن کا دین سچا ہے تو نہ مارا جائے ، یہ کہدکراس نے پھر ماراجس کی وجہ ہے وہ شیر ہلاک ہوگیا ،اس واقعہ ہے لوگوں میں بیمشہور ہوگیا کہاس لڑ کے کوکوئی بجیب علم آتا ہے ایک نابینا نے جب بیسنا تو آ کر درخواست کی کہ میری آٹکھیں اچھی ہوجا کیں گی؟ لڑے نے کہا بشرطیکہ تو سلمان ہو جائے۔ نابینا نے بیشرط قبول کرنی ،لڑ کے نے اللہ سے دعاء کی چنانجے وہ نابینا ہو گمیا اسی نشم کے بہت سے ا قعات وکرامات ظاہر ہوئیں ، جب با دشاہ کواس کی اطلاع ہوئی تو اس نے راہب کواورلڑ کے کواور ٹابینا کوگر فتار کر کے حاضر کرنے کا تھم دیا چنا نچہ نینوں گرفتار کر کے بادشاہ کی خدمت میں حاضر کئے گئے راہب اور تا بینا کونو فوراً ہی فتل کرا دیا ، اور زے کے لئے تھم ویا کہ اس کو پہاڑ کے اوپر سے گرا کر ہلاک کر دیا جائے ، مگر جولوگ اس کو لے کر پہاڑ ہر گئے تھے وہ سب لاک ہو گئے اورلڑ کا تیجے سلامت واپس آگیا ،اس کے بعد بادشاہ نے دریا میں غرق کرنے کا تھم دیاوہ اس ہے بھی نیج گیا اور بولوگ اس کو لے کر گئے تتے وہ سب غرق ہو گئے غرضیکہ کوئی ہتھیا را در کوئی حربہ کارگر نہ ہوا آخر کارلڑ کے نے با دشاہ سے کہا كُرتَة مِحْصَلَّلُ كُرنا بَى جَامِتَا ہے تَوْمِمَع عام مِيں ''بِساِشسمِ السَّلْبِهِ دَبِّ هندَا الغلام'' كهدكرتير مار مِيں مرجا وَں گا، چنا نچه ا دشاہ نے ایسا ہی کیا اور لڑکا مرحمیا ،لوگ بکارا مے کہ ہم اس لڑ کے کے رب پر ایمان لے آئے ، با دشاہ کے مصاحبوں نے ا دشاہ سے کہددیا کہ بیتو و بی مجھ ہوگیا جس سے آپ بچنا جا ہے تھے، لوگوں نے آپ کے دین کوچھوڑ کرلڑ کے کے دین کو نبول کرلیا، با دشاہ بیدد کیچے کر غصے میں بھر گیا، اس نے خندقیں کھدوا کیں اور ان کوآگ سے بھر دیا اور اشتہار دیا کہ جواسلام ہے نہ پھرے گااس آگ میں جلادیا جائے گا چنانچے ایک ایک مسلمان کولایا جا تا اور اس سے کہا جا تا کہ یا تو ایمان ترک کر و، ورنہ اس خندق میں جلنا پڑے گا، اللہ تعالیٰ نے ان مومنین کو الی استفامت بخشی کہ ان میں ہے ایک بھی ایمان بھوڑ نے برراضی نہ ہوا اور آگ میں جل کرمر جانا قبول کیا صرف ایکعورت جس کی گود میں شیرخوار ب_کیہ تھا وہ جھجگی تو فور أ ی وہ بچہ بولا اے اماں! تو صبر کر کیونکہ تو حق پر ہے، جن لوگوں کواس ظالم بادشاہ نے اس طرح آگ میں جلا کر ہلاک کیا ن کی تعداد بعض روایات میں ہارہ ہزاراور بعض میں اس ہے بھی زیادہ آئی ہے۔

روح المعاني، احمد، مسلم، ترمذي، ابن حرير، عبدالرزاق ابن ابي شيبه وعيره)

عجيب تاريخي واقعه:

محدین اسحاق کی روایت میں ہے کہ بیار کا جس کا نام عبداللہ بن نام تھا جس جگہ مدفون تھا حضرت عمر تفتحان لفتہ ہے زمان خلافت میں سے عبداللہ بن نام رکا جسم میجے سالم اس طرح برآ مد ہوا کہ ان خلافت میں کسی ضرورت سے جب وہ زمین کھودی گئی تو اس میں سے عبداللہ بن نام رکا جسم میجے سالم اس طرح برآ مد ہوا کہ ان کا ہاتھ تیر آگئے کی جگہ کئی پر رکھا ہوا ہے ، کسی شخص نے ان کا ہاتھ کئی ہے ہٹایا تو زخم سے خون جاری ہو گیا جب ہاتھ اس واقعہ اس جگہ رکھ ویا تو خون بند ہو گیا ان کے ہاتھ میں ایک انگوشی تھی جس پر "الله دیتی" کھا ہوا تھی ، یمن کے حاکم نے اس واقعہ کی اطلاع مدید منورہ فاروق اعظم حضرت عمر تفتح آلفتہ کودی تو آپ نے جواب میں لکھا کہ ان کوان کی ہیئت پر مع انگوشی کے اس جگہ دفن کردیا جائے جہاں وہ ظاہر ہوئے ہیں۔ (معارف این کئی)

﴾ این کثیر نے بحوالہ ابن الی حاتم نقل کیا ہے کہ آگ کی خندت کے واقعات دنیا میں مختلف ملکوں اور مختلف زمانوں میں پیش آئے ہیں ، ابن الی حاتم نے خصومیت کے ساتھ تین واقعات کا ذکر کیا ہے۔

يهلا واقعه:

یمی ہے جواوپر ندکور ہوا جو کہ آپ ظیفیٹیٹا کی ولا دت باسعادت سے ستر سال قبل ملک یمن میں پیش آیا، دوسرا واقعہ شام میں، تیسرا فارس میں،اس سورت میں جس واقعہ کا ذکر ہے وہ ملک یمن نجران کے علاقہ میں پیش آیا تھا، یہ عرب کا علاقہ تھا۔ (معارف)

دوسراواقعه:

حضرت علی نفتانند کا نفتانند کے درمیان تعلقات استوار ہوگئے جب بات کھل گئی اورلوگوں میں اس کا بہت جرچا ہوگی تو بادشاہ نے اعلان کرایا کہ درمیان تعلقات استوار ہوگئے جب بات کھل گئی اورلوگوں میں اس کا بہت جرچا ہوگی تو بادشاہ نے اعلان کرایا کہ خدانے بہن سے نکاح حلال کر دیا ہے لوگوں نے اسے قبول کرنے سے انکار کر دیا تو اس نے لوگوں کو طرح طرح کے عذاب دے کر بید بات مانے پرمجبور کیا یہاں تک کہ وہ آگ سے بھری ہوئی جندتوں میں ہراس شخص کو ڈلوا دیتا تھا جو اس بات کو مانے سے بحوسیوں میں محر مات سے نکاح کا طریقہ درائج ہوا ہے۔ (ابن حریر)

تيسراواقعه:

حضرت ابن عباس نے غالبًا اسرائیلی روایات سے نقل کیا ہے کہ بابل والوں نے بیہود یوں کودین موکی علیقت کا النظامی کا سے منحرف ہو جانے پر مجبور کیا تھا بیبال تک کہ انہوں نے آگ سے بھری ہوئی خند توں میں ان لوگوں کو بھینک دیا جواس سے انکار کرتے تھے۔ (ابن جریو، عبد بن حمید)

اِنَّ الَّذِیْنَ فَکَنُوا الْمُوَمِنِیْنَ بِیان ظالموں کی سزاکا بیان ہے جنہوں نے مسلمانوں کو صرف ان کے ایمان ک بناء پرآگ کی خندق میں ڈال کر جلایا تھا اور سزا میں دوبا تیں ارشاد فر ما تمیں فَلَهُ مَّر عذابُ جَهِنَّم یعنی ان کے سے آخرت میں جہنم کا عذاب ہے دوسری و لَهُ مَّر عذاب المحدیق لیحنی ان کے لئے جلنے کا عذاب ہے ، ہوسکتا ہے کہ دوسرا جملہ پہنے جملہ کا بیان اور تاکید ہو، اور یہ بھی ممکن ہے کہ دوسر سے جملے میں ان کی اس سزاکا ذکر ہوجیہا کہ بعض روایات میں ہے کہ جن موشین کو ان لوگوں نے آگ کی خندق میں ڈالا تھا اللہ نے ان کوتو تکلیف سے اس طرح بچالیا کہ آگ کے چھونے سے پہلے ہی ان کی ارواح قبض کر لی گئیں ، پھر بہ آگ اس قد ربح کو کا اس قد ربح کے اس آگ نے جلا دیا صرف نکل کر شہر میں پھیل گئی اور ان سب لوگوں کو جو مسلمانوں کے جلنے کا تماشہ دیکھ رہے تھے اس آگ نے جلا دیا صرف با دشاہ یوسف ذونو اس بھاگ نکلا اور آگ سے نبیخ کے لئے دریا میں کو دیا جس کی وجہ سے غرق ہو کر مرگیا۔

(مظہری)



سُوْرَهُ الطَّارِقِ عِكَتُ مَا مَا عَنْ عَلَيْكُ مَا مَا عَنْ عَالَمَ الْمَا الْعَالِقِ عَلَيْكُ الْمَا

سُوْرَةُ الطَّارِقِ مَكِّيَّةٌ سَبْعَ عَشرَةَ ايةً. سورهُ طارق مَى جِيستره آيتي بين-

بِسْمِ اللهِ الرَّحْ طِن الرَّحِبِ مِن وَالسَّمَاءِ وَالطَّارِقِ أَ اصْلُهُ كُلُّ اب لَيْلا وبِنَهُ النَّهُ وَمُ لِطُلُوعِهَا لَيُلاً وَمُّلَاكُولِكُ اعْلَمَكَ مَاالْظَارِقُ ﴿ مُبَنَدَأُ وَخَبرٌ فِي مَحَلِّ المَفْعُولِ الثَّانِي لِادري ومَا بَعْدَ مَ الأُولى خَبرُهَا وفِيُه تَعْظِيُمٌ لِشَانِ الطَّارِقِ المفَسَّرِ بِمَا بَعْدَهُ شُو النَّكَجُمُ اى الثُرَيَّا او كُلُّ نَجُم الثَّاقِبُ الْ المُضِيُّ لِثَقُبِ الظَّلَامُ بِضَوِّيْهِ وَجَوَابُ القِّسَمِ إِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّاعَلَيْهَا كَافِظٌ ٥ بَتَحُفِيُفِ مَا فَهِيَ مَزِيْدَةً وإنْ سُخَفَّهَةٌ سِنَ الثَّقِيلَةِ وَاسْمُهَا سَحُذُوفُ اي إنَّهُ واللَّامُ فَارِقَةٌ وبِتَشْدِيْدِهَا فَإِنْ نَافِيَةٌ ولَمَّ بَمَعُني إلَّا وَالْحَافِظُ مِنَ الْمَلَائِكَةِ يَحْفَظُ عَمَلَهَا مِنْ خَيْرٍ وشَرٍّ **فَلْيَنْظُرِالْإِنْسَانُ** نَظُرَ اعْتِبَارِ **مِمَّرُخُلِقَ** مِنْ أَيّ شُيْ: جَوَالُهِ خُلِقَ مِنْ مَّآيَةٍ ذَافِقٍ ﴿ ذِي إِنْدِفَاقِ مِنَ الرَّجُلِ والمَرَأَةِ فِي رَحِمِهَا يَخْصُ مِنْ بَيْنِ الصَّلْبِ لِلرِّجُلِ وَالنَّرَابِينِ®َ لِلْمَزُأَةِ وسِي عِظَامُ الصَّدْرِ إِنَّهُ تَعَالَى عَلَى رَجِيهِ بَعَثِ الْإِنْسَان بَعُدَ سَوْتِه لَقَادِرُهُ فَإِذَا اعْتَبَرُ أَصْلَهُ عَلِمَ أَنَّ الْقَادِرَ عَلَى ذَٰلِكَ قَادِرٌ عَلَى بَعْثِهِ لِيُ**وْمَرُتُبْكَى** تُخْتَبَرُ وتُكَثَفِ السَّرَ**آبِرُ** ضَمَائِرُ القُلُوبِ فِي العَقَائِدِ والنِّيَّاتِ فَمَالَةً لِمُنْكِرِ البَعْثِ مِنَّ قُلُوَّةٍ يَمْتَنِعُ بِهَا عَنِ الْعَذَابِ قَلَانَاصِرِ ﴿ يَدُفَعُهُ عَدُ وَالتَّمَاءِذَاتِ الرَّجْعِ ﴿ المَطَرِلِعَوْدِهِ كُلَّ حِنْنِ وَالْأَرْضِذَاتِ الصَّنِّ الشَّقِ عَنِ النَّاتِ إَنَّهُ اى القُرُارَ لَقَوْلُ فَصُلُّ ﴾ يَفُصِلُ بَيُنَ الْحَقِّ وَالْيَاطِلِ قَمَاهُو بِالْهَ زُلِي ﴿ بِاللَّغِبُ وَالبَاطِلِ إِنَّهُمُ اى الدُّفَّا يَكِيْدُونَ كَيْدًا ﴿ يَعْمَلُونَ الْمَكَائِدَ للِنَّبِي صَلِّي اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم قَالِكِيْدُكَيْدًا ﴿ أَسْتَذْرِحُهُمْ مِنْ حَيْثُ ﴿ لَا يَعْلَمُونَ فَمَهِلَ يَا مُحَمَّدُ الْكَهْرِيْنَ آمْهِلْهُمْ تَا كِيْدُ حَسَّنَهُ مُخَالَفَةُ اللَّفَظ اى أَنْظِرُهُم مَرُوَيْدًا فَأَ قَلِي وسُوَ سَصَدَرٌ سُؤَكِمَ لِمَعْنِي العَامِلِ مُصَغَّرُ رُؤدًا اوِ ارْوَادٍ عَلَى التَرْخِيْمِ وقَدْ أَحَدَسُمُ اللَّهُ بِنَدْرٍ ونُسِر الإسْمَالُ مَايَةِ السَّيْفِ أي بِالْآسُرِ بِالْجِهَادِ وَالقِتَالِ.

بہتر ہے ۔ مروع کرتا ہوں اللہ کے نام سے جو بڑا مہر بان نہایت رقم والا ہے، شم ہے آسان کی اور اس چیز کی جو ات کونمودار ہونے والی ہے طارق اصل میں رات میں ہرآنے والے کو کہتے ہیں، اور اسی میں سے ستارے ہیں اس لئے کہ رہ بھی رات ہی کوطلوع ہوتے ہیں ، اور آپ ﷺ کو پچھ معلوم ہے کہ وہ رات کونمود ارہونے والی چیز کیا ہے؟ (مَسا الطارق) مبتداءاورخبر ہیں جو کہ آفری کے مفعول ٹانی کے کل میں ہےاور پہلے مَا کا مابعداس کی خبر ہےاوراس میں ط رق کی شان کی تعظیم ہے جس کی مابعد کے ذریعیہ تفسیر کی گئی ہے (اور طساد ق)روثن ٹریا یا ہرروثن ستارہ ہے جواپنی روشنی کے ذرابعہ تاریکی کو پھاڑنے کی وجہ سے ٹا قب کہلا تا ہے اور جواب فتم محذوف ہے، کوئی جان ایسی نہیں کہ جس کے او پرکوئی و الله اورنافیه) کے درمیان فارقد ہے اور کست تشدید کے ساتھ بھی ہے سو اِٹ نافیہ ہے اور کست بمعنی اِلّا ہے اور کرانی کرنے والے فرشتے ہیں جو کہ ہرنفس کے ایچھے برے مل کی نگرانی کرتے ہیں مجھرذ راانسان اس پر عبرت کی نظر کرے کہ ہ کس چیز سے پیدا کیا گیا ہے؟اس کا جواب خُسلِ قَ مِنْ مَاءِ ذافقِ ہے(لیعن) مرداور عورت کے رحم میں اچھلنے والی پانی ے پیدا کیا گیا ہے جومرد کی پیٹھاور عورت کی پسلیوں کے درمیان سے نکاتا ہے اور تو انب سینے کی بڑیوں کو کہتے ہیں، یقینا تند تعالیٰ انسان کے مرنے کے بعد دوبارہ پیدا کرنے پر قادر ہے اپس جب انسان اپنی اصل میں نظرعبرت سے غور کرے گا ۔ یہ بات سمجھ لے گا کہ جوذات اس (ابتداء تخلیق) پر قادر ہے وہ اس کے اعاد ہ پر بھی قادر ہے، جس روز پوشیدہ اسرار کی انچ پڑتال ہوگی اور ظاہر کئے جائیں گے، لینی عقید ہے اور نیتوں کے بارے میں دلوں کے خفی راز وں کی (جانچ پڑتال دگی) تو اس وقت اس منکر بعث کے پاس نہ خودا پنا کو کی زور ہوگا کہ جس کے ذریعے عذاب ہے نیج سکے ، اور نہ کو کی اس کی وكرنے والا ہوگا جواس كاد فاع كرسكے اور شم ب بارش برسانے والے آسان كى مطركو دَ بخسع كينے كى وجد بياب كدوه بار ر جوع کرتی ہے، اور شکاف والی زمین کی بعنی وہ شکاف جو نباتات کے نکلنے سے ہوتے ہیں بلا شبہ یہ قرآن ایک قول مل ہے، (جو) حق وباطل کے درمیان فیصلہ کرتا ہے، اور وہ کوئی ہنٹی مذاق نہیں ہے لینی لہوولعب اور باطل نہیں ہے، یہ غار کھے چاکیں چل رہے ہیں بعنی نبی ﷺ کے ساتھ طرکررہے ہیں اور میں بھی ایک چال چل رہا ہوں ، بعنی ان کوڈھیل ے رہا ہوں اس طریقہ پر کہ وہ مجھ نیس پارے ہیں پس اے محمد ﷺ! ان کا فروں کو چھوڑ دو اُم بھالھ مرتا کید ہے فظی الفت نے اس میں حسن بیدا کردیا ہے یعنی ان کو پچھ وقت مہلت دیجئے (رُوَیْدًا) معنی عامل کے لئے مؤکد ہے اور رُوْداً مذف زوائد کے ساتھ ازواد کامصغر ہے، اور بلاشبہ اللہ تعالی نے ان کو بدر میں پکڑلیا، اور مہلت آیت سیف سے سوخ ہوگئی، بعنی قبال وجہاد کے علم ہے۔

عَجِقِيق ﴿ لِللَّهِ لِيسَهُ مِن اللَّهِ لَفَيْسَارِي فَوَائِلا اللَّهِ لَفَيْسَارِي فَوَائِلا اللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّه

قِحُولَنَى ؛ أَصْلهُ كُلُّ آتِ لَيْلاً ، طارق ، طارق الغت مِن كَفَكُونا في والله كَارَت مِن رات مِن آف والله والله الله على الله كَارِق كَمَة مِن كَدوه بهى وروازه كفكه نا تا به بهراس مِن وسعت كركرات من برظا بربوف والى چيز پراطلاق بون لگا ، پهراس مِن بحراس مِن بهى توسيع و مدكر مطلقا ظاهر بوف والى چيز كوكها جانے لگا خواه ون مِن ظاهر بو يا رات مِن اى سے بيرحديث ب الكور عارف الليل والنها و النها و الاقا يَظُر في بِحَدِدٍ يا رحمن "

فَيْوَلِّنَى ؛ وَمَا أَذُركَ استنهام الكارى باور مَا الطارق مين استنفها مُعظيم وَنَحَم كے لئے ب

فَيُولِنَى ؛ النجم، هُوَ مبتداء محذوف كى خبرب، اوربياس ابهام كي تفسير بھى ہے جواستفهام سے بيدا ہوا ہے۔

جَوْلِ آئَى ؛ النُسريَّا او كل نجعبر بيه المنجعر كي تفيير كي تين اتوال مين سے دو ہيں تيسرا قول زحل كا ہے اور زحل كا مقام سالواں آسان ہے زحل آسان كى خوبصورت ترين چيزوں ميں ہے۔

فَيُولِنَى ؛ بسَخفيف مَا ، لَـمَا مِين دوقراء تين بين اول مَا كَتَخفيف كـماته ذائده النصورت مِين إِنْ مُخففه عن الثقيله بوكا اوراس كااسم محذوف بوگا، اى إِنَّهُ اور لَمَا كا لام إِنْ مُخففه اورنافيه كـورميان فارقه بوگا۔

فَيْحُولِكُ : بتشديدها يه لَمَّا كى دوسرى قراءت كابيان إس صورت من لَمَّا مشدد بمعنى إلّا موكااور إن نافيه موكا-

قیم لیکی: فی در حمها ید دافق سے متعلق ہے، مطلب بیہ کے مرد کے نطفہ کا اندفاق، رحم مادر میں ہوتا ہے اورعورت کے نطفہ کا آلیاندفاق تورخم کے اندر ہوتا ہی ہے اس طرح مرداور عورت دونوں کے نطفہ کا اندفاق رحم ہی میں ہوتا ہے۔

عربی الصلب میں بین زائدہ ہے اس کے کہ بین کا استعال متعدد میں ہوتا ہے اور صلب میں تعدد نہیں ہے ال یہ کہ ملب سے مرادا جزاء صلب ہوں تو تعدد کی صورت ہو سکتی ہے۔

فَيُولِنَى ؛ إِنَّهُ لقولٌ فصلٌ ، فصل بمعنى فاصل بير والسماء ذات الرجع الخ كاجواب مم ب-

قِحُولَى ؛ تاكيد حسَّنَهُ مخالفة اللفظ يعني امِّهِلْهُمْ ، فَمَهِلْ كَ تاكيد مِمُ كَد اورمُو كِد كَورميان لفظى اختااف نے ايک فتم كاحسن بيداكرديا باوروه اختلاف بيب كم و كدين فعهل من استاداسم ظاہر يعنى كافرين كى طرف باورمؤكد يعنى المُعِلْهُمْ مِن استاداسم ظاہر يعنى كافرين كى طرف باورمؤكد يعنى المُعِلْهُمْ مِن مَن مِن هم كى جانب بال اختلاف سے افادة جديد ہواجوكة كم مِن تاكيس كے باور تاكيس تاكيد سے بهتر ب،

﴿ (مِكْزَم بِسَالَةُ فِي عَالِيهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَ

اورمؤ كدومؤ كدمين صيغه كے اعتبارے بھی اختلاف ہے بیاختلاف بھی عبارت کے تنوع پردلالت كرتا ہے جو كەمطلوب ہے۔ فِيَوْلَىٰ : على الترحيم الكاتعلق اروادًا سے ماور رُويَدَا إِرْوَادًا كَاتَفْخِر مِدْف زوائد كے بعد، امهال كاتكم جباد کے حکم ہے منسوخ ہو گیا۔

تَفِيْدُرُوتَثَيْنَ حَ

وَ السّماء و الطَّارِ ق اس ورت مين حق تعالى نے آسان اور ستاروں كي شم كھا كرار شادفر مايا ہے كه ہرانسان برمحافظ اور محمران مقررہے جواس کے تمام حرکات وسکنات وافعال واعمال کودیکھتا اور کھتا اور بیکھنا اور محفوظ کرنا حساب کے لئے ہے جو قیامت کے دن ہوگا اس لئے عقل کا تقاضہ ہے کہ انسان بھی آخرت کی فکر سے غافل نہو۔

حضرت خالدعدوانی تفعّاننهٔ تفالی فی ماتے ہیں کہ میں نے آنخضرت بیلی فیٹا کو تقیف کے بازار میں کمان یالانھی کےسہارے کھڑے دیکھا آپ فیق عقد میرے پاس مدوحاصل کرنے آئے تھے، میں نے دہاں آپ فیق عقد استعاری طارق سی اور میں نے اسے یا دکرلیا حالا تکہ میں ابھی مسلمان نہیں ہواتھا چر مجھے اللہ نے ایمان کی دولت سے نواز دیا۔ (مسند احمد، محمع الزوالد)

طارق سے کیا مراد ہے؟ خود قرآن نے واضح کردیا کدروش ستارہ مراد ہے، طارق طروق سے ماخوذ ہے جس کے لغوی معنی کھٹکھٹانے کے ہیں، رات میں آنے والے کو بھی طارق کہتے ہیں اس لئے کہ وہ بھی درواز ہ کھٹکھٹا تا ہے ستاروں کو بھی اس کئے طارق کہتے ہیں کہوہ دن کو چھپے رہتے ہیں اور رات کونمودار ہوتے ہیں۔

اِنْ كُلِّ نَفْسٍ لَمَّا عَلَيْها حافظ يعنى برنس پرالله كي طرف ي فظاور عران مقرر بين اوروه فرشت بين جيها كهوره رعد کی آیت اارے معلوم ہوتا ہے اور بعض مفسرین نے حافظ سے مراو خود اللہ تعالی کولیا ہے۔

يَسْخُورُ جُ مِنْ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالنُّوانِب "صلب"ريرُ ها الريدُ على الريد عَرانب ، تَوِيْبَةً ك جمع بين كاس حصد کو کہے ہیں جہاں ہار پہنا جا تا ہے،انسان کا مادہ تولیداس حصہ سے نکلتا ہے جوصلب اور سینے کے درمیان واقع ہے۔

خُلِقَ مِنْ مَاءٍ ذَافَقِ لِعِنَ انسان كوا يك الحِطنة بإنى سے بيدا كيا گيا ہے انسان كاماد و توليد مرد كى پينھ اور عورت كے سينے کی بڈیوں کے درمیان سے خارج ہوتا ہے اور بیہ مادہ انسان کے ہرعضو سے نکل کریہاں جمع ہوتا ہے لہٰذا دونوں یا توں میں کوئی تضاد تبیں ہے۔

والسماء ذات الرجع، رجع كانوى معنى لوثا، بلِثما كے بين، بارش كو رجع اى لئے كہتے ہيں كه وه بليث كربار بارآتی ہے۔

اِنَّهُ مِرِيَكِيْدُوْنَ كِيدًا لِين بِي كفارقر آنی دعوت كوشكست دینے کے لئے طرح طرح کی جالیں چل رہے ہیں، اپنی پھونکوں سے اس چراغ کو بجھانا چاہتے ہیں، ہرتنم کے شبہات لوگوں کے دلوں میں ڈال رہے ہیں، ایک سے ایک جھوٹا الزام تراش کراس کے بیش کرنے والے نبی بیش کرنے والے نبی بیش کرنے والے نبی بیش کرنے والے نبی بیش کرنے ہیں تاکہ دنیا میں اس کی بات چلئے نہ پائے اور کفر و جہالت کی وہی تاریکی چھائی رہے جسے وہ چھانٹنے کی کوشش کرر ہاہے ، اور خدا بھی ایک تذبیر کررہاہے کہ ان کی کوئی تدبیر اور کمر چلئے نہ پائے اور وہ نور پھیل کررہے جسے یہ بچھانے کے لئے ایڑی چوٹی کا زور لگارہے ہیں۔



سُوْرَةُ الْمَعْلَىٰ مَلِيَّةً وَهِي مَعْ يَعْشِرُوا الْمَيَّ

سُورَةُ الْأَعْلَى مَكِّيَّةٌ تِسْعَ عَشْرَةَ ايَةً. سورة اللَّاعَلَى مَكِيَّةٌ تِسْعَ عَشْرَةَ ايَةً.

الْكُمُلِي صِفَة لِرَبِّكَ اللَّذِي حَلَقَ فَسَوْى ﴿ سَخُلُوقَة جَعَلَة سُتَنَاسِبَ الاَجْزَاءِ غَيْرَ مُتَفَاوِتٍ وَالَّذِي قَذَّر َ سَاءَ **فَهَدَى ﴾** إلى مَا قَدَّرَهُ مِنْ خَيْرِ وشَرَ وَالَّذِي آخَرَجَ الْمَرْعَى ﴾ انبَتَ العُشْبَ فَجَعَلَهُ بَعُدَ الخُضُرَةِ عُثَالُمُ جَافًا بَشِينُ المَّوْى أَنْ اللهُ وَ يَابِسًا سَنُقُونُكَ القُرُانَ فَلَاتَنْكَى أَمَا تَقَرَوُهُ إِلَّا مَا ثَمَّا أَوَاللهُ أَنْ تَسْسَاهُ بِنَسْخ تِلاَوَتِه وحُكْمِه وَكُانَ صَـنْي اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم يَجْهَرُ بِالقِرَاءَةِ مَعَ قِرَاءَةِ حِبْرِيْلَ خَوْفَ البِّسْيَانِ فَكَانَّهُ قِيْلَ لَهُ لَا تَعْجَلُ بِهَا أَنَّكَ لَا تَنْسَى فَلَا تُتَعِبُ نَفْسَكَ بِالجَهُرِ بِهَا لِللَّهُ تَعَالَى لِيَّكُمُ الْجَهُرَ سِنَ الْقَوْلِ والفِعْلِ **وَمَا يَخْفِي** ۚ مِنْهُمَا **وَنُيَتِّرُكُ لِلْيُسْرِئُ لِلنَّ** لِلشَّرِيْعَةِ السَّمِلَةِ وبِي الإسُلامُ **فَذَكَرُ** عِظَ بِالقُرُانِ ال**َّنَّ لَفَعَيَ الذِّلْزُكُونُ** مَنْ تُذَكِّرُهُ الْمَذْكُورَ فِي **سَيَدُكُرُ** بِهَا **مَنْيَخْتُلِي** يخافُ اللَّه تعالى كآية فَذَكِرُ بالقرآن مَنْ يُخَافُ وَعِيْدِ وَيَتَجَنَّهُا اى الدِّكُورِي يَسُرُكُهَا جَائِبًا لاَ يَلْتَفِتُ إِلَيْهَا الْآلَيْقَي بِمَعْنَى الشَّقِيّ اى الكَافِرُ الَّذِ**يُ يَصْلَى النَّارَ الْكُبُرِي** فَارُ الْاجْرَةِ والصُّغُرَى فَارُ الدُّنْيَا ثُ**تُوَلِّ يَعُونُ فِيهُا** فَيَسُتَرِيْحَ **وَلَايَحَيْلِي ۚ** حَيَاةً سِينَةً قَدَافَكُحُ مَن تَرُكُي أَخَطَهُرَ بِالإِيْمَانِ وَذَكُرا السَمَرُيِّةِ مُكَبِرًا فَصَلَى السَلَوَاتِ الحَمْس وذلك مِن أَمُور الاحرة وكُفَارُ مَكَّة مُعْرِضُونَ عَنْمَها **بَلْتُؤْثِرُونَ** بِالتَّحْتَانِيَّةِ والفَوْقَانِيَّةِ ا**لْكَيْوَةَ الذَّنْيَا** الْأَخْيَا الْأَخْرَة وَالْفَوْقَانِيَّةِ والفَوْقَانِيَّةِ الْ**لَحَلُوةَ الذُّنْيَا** اللَّهِ عَلَى الأَخِرَة وَالْفَوْقَانِيَّةِ والفَوْقَانِيَّةِ الْ**لَحَلُوةَ الذُّنْيَا** اللَّهِ عَلَى الأَخِرَة وَالْفَوْقَانِيَّةِ والفَوْقَانِيَّةِ الْعَشْمَلَةُ عَلَى الجَنَّةِ خَمِيرُوَّ ٱللَّهِي ﴿ إِنَّ هٰذَا لَى فَلاَحْ مَنْ تَزَكَّى وَكُونَ الاَخِرَةِ خَيْرًا لَكِي الصَّحَفِ الْأُولِي ۗ المُنَزَّلَة قنس القُرُانِ صَحَيْفِ إِبْرِهِ مِ وَهُوسَى فَ وَسِي عَشَرُ صُحُفِ لِإِبْرَاسِيمَ والتَّوْرَاةُ لِمُوسِى.

نام کی سبیج کر یعنی اینے رب کی ان چیز وں سے یا کی بیان کر جواس کی شایانِ شان نہیں ہیں ،اورلفظ اسم زائد ہے (اَلاَغ لے) رب کی صفت ہے جس نے پیدا کیااورا بی مخلوق کو درست کیا (بعنی) متناسب الاعضاء بنایا نہ کہ غیر متناسب جس نے جیسی جا ہی تقدیر بنائی پھراس نے اس خیروشر کی راہ بتائی جواس نے مقدر فرمائی جس نے نباتات گھاس اگائی پھراس کو ہریالی کے بعد سوکھا سیاہ کوڑا کرکٹ کردیا ہم قرآن آپ کو پڑھوادیں گے پھرآپ ﷺ جو پڑھیں گےاس کو نہ بھوکیں گے سوانے اس کے کہ جس کواللہ بھلانا جا ہے گا اس تھم اور اس کی تلاوت کومنسوخ کر کے، اور آپ ﷺ جرائیل علیج کا اس تھم اور اس کی تلاوت کومنسوخ کر کے، اور آپ ﷺ جرائیل علیج کا الات کی قراء ت کے ساتھ ساتھ بھولنے کے خوف ہے زورز وریت قراءت کرتے تھے گویا آپ ﷺ کو پیفر مایا گیا کہ جلدی نہ بیجئے ،آپ ﷺ بھولیں کے نہیں،اس لئے زور سے پڑھ تعب نہ اٹھا ہے، اور اللہ تعالیٰ ظاہر قول وقعل کوبھی جانتا ہے اور پوشیدہ قول وقعل کوبھی (جانتا ہے) اور ہم آپ ملاقظ کو آسان شریعت کی سہولت دیتے ہیں اور وہ اسلام ہے، سوآپ ملاقظ قرآن کے ذریعہ تصیحت کرتے رہیں اگرنصیحت نافع ہوا سمخص کوجس کوآپ بیات الفیادی انسیار مائیں جو کہ سیکیڈ تگو مَنْ یکٹھشکی میں مذکورہے جو مخص الله ہے ڈرتا ہے تھیحت حاصل کر ہے گا جیما کہ آیت فَذَیّر بالقر آن مَن یخاف وعید میں ہے، لینی آپ ﷺ اس شخص کو تقییحت فر مائیں جو وعیدے ڈرتاہے اوراس تقبیحت کو وہنخص در کنار کرے گالیتنی اس کی طرف توجہ نہ کرے گا جوانتہائی بدبخت ہوگا جو بڑی آگ میں داخل ہوگا اور اشقلی بمعنی شقی، یعنی کا فر ہاوروہ (بڑی آگ) آخرت کی آگ ہے اور چھوٹی آگ دنیا کی آگ ہے، پھروہ اس میں ندمرے گا كدراحت يا جائے اور ند خوشگوارى كى زندگى جئے گا، وہ مخف كامياب ہوگا جس نے ايمان کے ذریعہ پاکیزگی اختیاری اورا پنے رب کا نام یا دکیا تکبیر کہتے ہوئے ، پھر پنج وقتہ نماز پڑھی اور بیامور آخرت میں سے ہیں اور مکہ کے کا فرروگردانی کرتے ہیں تم نوگ دنیوی زندگی کو آخرت پر ترجیح دیتے ہو (توٹسرون) یا اور تاء کے ساتھ ہے حالانکہ آخرت جو کہ جنت پر مشتمل ہے بہتر اور باقی رہنے والی ہے بلاشبہ یہی بات یعنی پاکیزگی حاصل کرنے والے کی فلاح اور آخرت کا بہتر اور دائمی ہونا پہلے محفول میں ہے اور ابراہیم علیہ الفظائی اور موی علیہ الفظائی کے محفول میں بھی جوقر آن سے بہلے نازل ہوئے ہیں اور وہ ابراہیم علیہ لا تا تاہی کے دس صحفے اور موی علیہ لا تا ایک کی تورات ہے۔

عَجِقِيق الْأَرْبَ لِيسَهُ الْحَاقَةُ لَفِيلًا لَهُ الْفِيلِينَ الْحَالَةُ لَفِيلًا لِمُعَالِمُ الْفِلْ

قِحُولَى ؛ صِفَةٌ لِوَبِّكَ لِين اَلْاعْملَى، وب كاصفت ہاسكاضافه كامقصدية بتاتا ہے كه اَلَاعْملَى، اِسْمَ كاصفت نبيس ہاسكة فَقَولَى ؛ صِفَةٌ لِوَبِّكَ اورصفت الله ي حَلَقَ كه درميان عبرصفت يعنى الاعلى كافصل ہے جوكہ درست نبيس ہے۔ غيرصفت يعنى الاعلى كافصل ہے جوكہ درست نبيس ہے۔ فيرصفت يعنى الاعلى كافصل ہے جوكہ درست نبيس ہے۔ فيرضفت يعنى الاعلى كافصل ہے جوكہ درست نبيس ہوسطے آب پر بہدكر چلاآتا ہے، يہاں مطلقاً سوكھا سياه كوڑا كركث مراد ہے لينى مقيد كومعنى ميں مطلق كاستعال كيا ہے۔

------ ﴿ (مَرْمُ بِبُلِشَرِزٍ ﴾ -

قَبُولَى ، فيستريح بياس والمقدر كاجواب بك الأسوت فِيها ولا يحيني معلوم موتاب كموت اورحيات ك درميان كوئى واسطه بحالا نكداييانبيس ب-

جِوَلَ بِنِيْ : جواب كا حاصل بيہ كماليل موت نه آئے گى كه بيمر نے كے بعدراحت پاجائے اور نه الي حيات ہوگى كه اس ميں خوشگوارى ہو۔

ڹ<u>ٙڣٚؠؙڔۅؘؾؿۘڕؙڿ</u>

سَبِّحِ اسْمَرَبِّكَ الْاَعْلَى رسول اللَّه يَقَقَعَ اس ورت اور سورة عَاشِيهُ وعيد بن اور جعه کی نماز میں پڑھا کرتے ہے، ای طرح وترکی پہلی رکعت میں سورة اعلی اور دوسری میں سورة کا فرون اور تیسری میں سورة اغلامی پڑھتے ہے، حضرت عقبہ بن عامر وَقِیَ اَنْدُنْ مَانِیْ کَا اَنْدُنْ مَانِیْ اور دوسری میں سورة کا فرون اور تیسری میں سورة اغلامی پڑھتے ہے، حضرت عقبہ بن عامر کرواور جب فسیح باسم رہك العظیم نازل ہوئی تو آپ نیس میں افل کرو۔

کرواور جب فسیح باسم رہك العظیم نازل ہوئی تو آپ نیس میں میں دافل کرو۔
سبِّح اسمَ دَبِّكَ الاعلی می معنی پاکر کھنے اور پاکی بیان کرنے کے ہیں سبح اسم و بلك الاعلی میں می من اور خضوع سبیح اسم و باک رکھنے ہوائی گئی تعلیم محریم سیجے اور جب انشہ کا نام آئے تو اوب اور خضوع میں کہ اظریکے ، اور ہرائی چیز ہاں کے نام کو پاکر کھنے جوائی کی شایانِ شان نہو، اس میں سیمی شامل ہے کہ انتہ تعالی کو مرف ان ناموں سے پکار ہے جو خود اللہ تعالی نے اپنے لئے بیان فرمائے ہیں یا اللہ تعالی نے اپنے رسول بین تھی شامل ہے کہ انتہ تعالی کو مرف ان ناموں سے پکار ہے جو خود اللہ تعالی نے اپنے لئے بیان فرمائے ہیں یا اللہ تعالی نے اپنے رسول بین تھیں ان کے سواکی اور نام سے اس کو پکار ناجا ترخیمیں۔

ای میں یہ بھی داخل ہے کہ جونام اللہ تعالیٰ کے ساتھ مخصوص ہیں وہ کسی مخلوق کے لئے استعمال کرتا اس کی تنزیہ و تقدیس کے خلاف ہے اس لئے جائز نہیں (قرطبی) جیسے رحمٰن، رزاق ، غفار، قد وی وغیرہ، آج کل اس معاملہ میں غفلت بردھتی جارہ ہے۔ بعض حضرات مفسرین نے اس جگہ اسم کے خود سلمی کی ذات مراد کی ہے اور لفظ اسم کوزائد کہا ہے مفسر علام کا بھی یہ خیال ہے، اور عربی ہے اور قر آن کریم میں بھی اس معنی کے لئے استعمال ہوا ہے اور حدیث میں جو رسول اللہ بلائی بھی اس معنی کے لئے استعمال ہوا ہے اور حدیث میں جو رسول اللہ بلائی بھی اس کا کہ کوئماز کے بحدے میں بڑھنے کا تھی ویاس کی تھیل میں جو کلمہ اختیار کیا گیا وہ سب میں اسم د بھی

---- ﴿ إِنْ كُنُّ مِينَا لِشَهِ إِنَّ اللَّهِ ا

الاعلى نبيل بلكه سبحان ربى الاعلى ب،اس يجى معلوم بواكه لفظ اسم ال جَدَّتُقعود نبيل خود سمى مقعود بـ
قَرَحَعَلهُ غُناءً جب هاس خشك موجائة واس كو غثاء كتبته بيل أخوى بمعنى سياه كرنا، يعنى تازه اورسر سبزلهلهاتي كهاس كو بمسكه كرسياه كوزا بهي كردية بيل-

ونیسے کے لسلیسے ی بیمام ہے مثلاً ہم آپ ﷺ پردتی آسان کردیں گے تا کہاں کو یادکرنااوراس پڑمل کرنا آسان ہوجائے ،ہم آپ ﷺ کی اس طریقہ کی طرف رہنمائی کریں گے جوآسان ہوگا،ہم آپ ﷺ کے لئے ایس شریعت مقرر کریں گے جوہل متنقیم اورمعتدل ہوگی،جس میں کوئی کی ادرعسراور ﷺ نہیں ہوگی ، وغیرہ۔

فَسِذَ یِّکِیْ اِنْ نَسْفَعَتِ الْسِدِّنْکُورٰی کی وعظ ونصیحت و ہال کریں کہ جہال محسوں ہو کہ فیبیحت فا کدہ مندہوگی ، یہ وعظ ونصیحت کا ایک اصول اوراوب بیان فرمادیا۔ (ابن سخند)



ڡڐڔ؋ؙٳٳٚڿٳۺێڗؙڮڒؾڗ؋ڔڮڛؾۼؿۅۯڵٳ؞ ڛۅڔڰٳٳڿٳۺێڗؙڮڒؾڗ؋ڔڰڛؾۼڝؽۅڬٳؽؠ

سُورَةُ الْغَاشِيَةِ مَكِّيَّةٌ ست وعشرون ايَةً.

سورهٔ غاشیه کلی ہے، چیبیس آیتیں ہیں۔

بِسْسِمِ اللَّهِ الرَّحِ مِن الرَّحِ سِيْسِمِ مَعَلَّ فَدَ ٱللَّكَ حَدِيْثُ ٱلْعَاشِيَةِ ﴿ السِيَدَ الرَّا اللَّهُ النَّعُ سُدى الحَلاَئِسَقَ بِهُوَالِمَهَا وَجُوهُ يُتُوصَيِلِ عُبِّرَ بِمَهَا غَنِ الذَّوَاتِ فِي الْمَوْضِعَيْنَ خَاشِعَتْكُ ذَلِيُلَةٌ كَا**صَبَة**ُ ۖ ذَاتُ نصب وتَعَبِ بِالسَّلَاسِلِ وَالْاغْلَالِ تُصَّلَّى بِضَمِّ النَّهُ، وفتحِمَ الْأَلْحَامِيَّةُ فَاتُّنْ عَيْنِ النِّيَةِ فَ شَدِيدة الحَرَارَةِ لَيْسَ لَهُمْطَعَامُ الْاِمِنْ ضَرِيْعٍ ﴾ بُو نَوْعُ سِنَ الشَّوْكِ لاَ تَرْعَاهُ دَابَهُ لِخُبَيْهِ لَلْيُسْمِنُ وَلَايُغَنِي مِنْ جُوْعٍ ﴿ وُجُوهُ يَوْمَيدٍ نَاعِمَةً ﴾ حَسَنَة لِسَعِيهَا فِي الدُّنيَا بِالطَّاعَةِ رَاضِيَةً ﴾ فِي الاجرَةِ لَمَا رَأَتُ ثَوَابَهُ فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ﴿ حِسًا ومَعْنَى لِالسَّمَعُ باليّاءِ والتّاءِ فِيهَالَاغِيَةُ أَن نَفْسٌ ذَات لَغُو اى بِذْيَان مِنَ الْكَلام فِيهَاعَيْنُ جَالِيَةُ أَنْ بِالمَاءِ بِمَعْنَى عُيُونَ فِيهَا سُرُومَ رُفُوعَةً ﴿ ذَاتًا وقَدْرًا ومَحَلًّا قَالُوابُ اَفُدُاحٌ لاَ عُرْى لَهَا مَّوْصُوعَةً ﴿ عَـلى حَافًاتِ العُيُون مُعَدَّةً لِشُرْبِهِمْ وَتَمَارِقُ وَسَائِدُ مَصْفُوفَةً ﴿ بَعْضَهَا بِجَنْبِ بَعْضِ يُسْتَنَدُ النِّهِ وَّزُرَا إِنَّ بُسُطٌ طَنَافِسُ لَمَا خُسُلٌ مَبْثُوثَةً ﴿ أَفَلَا يَنْظُرُونَ اى كُفَّادُ مَكَّةَ نَظُرَ اعْتِبَارِ الْ الْكَالْإِيلِ كَيْفَ خُلِقَتْ ﴿ وَإِلَى التَّمَّاءِكَيْفَ مُفِعَتُ ۚ وَلِلَى الْحِبَالِ كَيْفَ نُصِبَتُ ﴿ وَالْى الْأَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتُ ۗ اى بُسِطَتُ فَيَسُنَهِ لُـ وَ بِهَا عَلَى قُدْرَةِ اللَّهِ تَعَالَى ووَحُدَانِيَّتِهِ وصُدِّرَتُ بِالإبلِ لِآنَهُمُ أَشَدُّ مُلاَّبَسَةً لها مِنْ غَيْرِبِ وقَوْلُهُ سُطِحَتُ نَنَاسِرٌ فِي أَنَّ الْأَرْضَ سَطُحٌ وَعَلَيْهِ عُلَمَاءُ الشَّرَعَ لَا كُرَّةٌ كَمَا قَالَةٌ أَبُلُ النَّهِيّئَةِ وإِنْ لَمُ يَنْقُصُ رُكَّ مَنْ ازْكَان النَّسُرُع فَذَّكُرُنَ أَهُم بِعَمَ اللَّهِ وِذَلَائِلَ تَوْجِيْدِهِ إِنَّمَّا أَنْتَ مُذَّكِرُهُ لَسْتَ عَلَيْهِمْ بِمُصَّيْطِرٍ ﴿ وَفِي قراءَةِ بالصّاد بَدل السَيْنِ اي بِمُسَلَّطٍ وَبِنْذَا قَبُلَ الأَسْرِ بِالجِهَادِ [لَّا لَكِنُ مَ**نْ تَوَلَّى** أَعْرَضَ عَنِ الايْمَار وَكُفَى ﴿ الْقُرُار فَيُعَدِّبُهُ اللَّهُ الْعَذَابَ الْأَلْبَرُهُ عَذَابَ الاخِرَةِ وَالاَصْغَرُ عَذَابُ الدُّنْيَا بِالقَتُلِ والاَسْرِ إِنَّ اللَّيْنَآ إِيَابَهُمْ ﴿ رُحُوْعَهُمُ بِعُدَ المَوْتِ ثُمُّ إِنَّ عَلَيْنَا حِمَابَهُمْ خَرَائَهُمْ لاَ نَتُرُكُهُ أَبَدًا.

< (مَنْزَم بِبَالشَرِر) ع ·

میں ہے۔ پر جی بی ان شروع کرتا ہوں اللہ کے نام ہے جو بڑا مہر بان نہایت رحم والا ہے ، کیا تجھے حچھا جانے والی قیامت کی خبر پینچی (قیامت کو غیاشید) اس لئے کہا گیا ہے کہ وہ اپنی ہولنا کیوں کے ذریعہ بوری مخلوق پر چھاجائے گی ، کچھ چېرےاس روز ذکیل ہوں گے دونوں جگہ شخصیات کو وجوہ سے تعبیر کیا گیا ہے، سخت محنت جھیل رہے ہوں گے طوق اورز نجیروں کی وجہ ہے بخت محنت ومشقت جھیل رہے ہوں گے ، وہ بخت آگ میں جھلس رہے ہوں گے (تُسَصِّلنی) تاء کے ضمہ اور فتحہ وونوں کے ساتھ ہے ، نہایت گرم کھو لتے ہوئے جشمے کا یانی انہیں پینے کے لئے ویا جائے گاان کے لئے سوائے کا نے دار در فتق کے اور کوئی غذا نہ ہوگی ، (ضریع) ایک فتم کی کا نے دارگھاس ہے جسے اس کے خبث کی وجہ ہے کوئی جانورنہیں چرتا ، جوندموٹا کرے گی اور نہ بھوک مٹائے گی پچھ چہرے اس روز بارونق ہوں گے دنیا میں طاعت کی کارگزاری پرخوش ہوں گے ، جب حسّبا و معنّبا عالی مقام جنت میں (اپنی)سعی کا ثواب دیکھیں گے ،اے مخاطب! كوئى بيه بهوده بات و ہال ندسنے گا يسسم يا اور تا كے ساتھ، يعنى بيه بوده كلام، و ہال يانى كے بہتے چشم ہول گے عَنِینٌ جمعنی عیسو ن ہے اس میں ذات اور مرتبداور کل کے اعتبارے او نیچے او نیجے تخت ہول گے اور چشمول کے کنارے بغیر دیتے (ٹونٹی) کے ساغرر کھے ہوں گے جوجنتیوں کے بینے کے لئے بنائے گئے ہوں گے اور گا وَ تکیوں کی قطاریں لگی ہوں گی جن پر ٹیک لگائی جائے گی ، اور مملی غالیے بچھے ہوئے ہوں گے ، یعنی ایسے فرش جو روئیں دار ہوں گے، کیا بیر کفار مکہ عبرت کی نظر ہے اونٹوں کونبیں دیکھتے کہ کیسے بنائے گئے ہیں؟ (اور کیا) آسمان کو نہیں دیکھتے کہان کوئس طرح اونچا کیا گیا ہے؟ اور (کیا) یہاڑوں کونہیں ویکھتے کیسے جمائے گئے ہیں؟ اور (کیا) ز مین کونبیں دیکھتے کہ س طرح بچھائی گئی ہے کہ ان کے ذریعہ اللہ تعالیٰ کی قدرت اور اس کی وحدا نیت پراستدلال كري، إبال كوشروع مين لا يا كميا ہے اس لئے كەعرب بەنىبەت دىگر جيزوں كے ان سے زيادہ تھلے ملے رہتے تھے، اورالتد تعالیٰ کا قول مسطِحَتْ اس بات پر ظاہرالد لالت ہے کہ زمین سطح ہے اور اس نظریہ پر علماء شرع ہیں ، نہ کہ گول جیسا کہ اہل ہیئت کا قول ہے اگر چہ زمین کے گول ہونے سے شریعت کا کوئی رکن نہیں ٹو ثنا ، پس آپ مِلِقَالِمَا الصیحت کرتے رہنے کیونکہ آپ بیٹی تاتین صرف نصیحت کرنے والے میں ، آپ بیٹی تاتیان پر دار وغذ نہیں میں اور ایک قراء ت میں سیس کے بجائے صاد کے ساتھ ہے لین آپ القائل مسلط نہیں اور بیتکم، جہاد کا تھم آئے ہے پہلے کا ہے البتہ جو ایمان ہے اعراض کرے گا اور قرآن کا انکار کرے گا تو اللہ اس کو بھاری سزادے گا (لیتنی) آخرت کا عذاب، اوراصغرد نیا کا عذاب ہے قبل اور قید کے ساتھ، بلاشبہ ان لوگوں کو موت کے بعد ہماری ہی طرف پلٹنا ہے بھران کا ساب لینا بعنی ان کی جز اوسز اہمارے ذمہ ہے کہ ہم اس کو ہر گزیز ک نہ کریں گے۔

عَجِقِيق الرَّدِي لِسَهُ الْحَاقَفَيِّ الْمَرِي الْحَادِينَ الْحَدِينَ الْحَادِينَ الْحَدَادَ الْحَدَادُ ا

فَيُولِنَى : هَلُ اَتَكَ الك جماعت في كهائك هُلُ بمعنى قد ب، اى قد جاءَك يا محمد! حديث الغاشية، اوركها يرب عن يرب اورتجب معنى كوضمن ب-

فَيْ وَكُولْ اللَّهُ وَهُوهُ يَوْمَئِذٍ يه جمله متانفه سوال مقدر كاجواب ٢٠٠٠

سيوال، ماحديث الغاشية؟

جِكُلْتِيْ، وُجُوهٌ يَوْمَلِدٍ خَاشِعَة ، وُجُوهٌ مبتداء بادر خاشعة اس كَيْ تَربي

سَيُوان، و مُوه عُره باس كامبتدا ، بناكس طرح درست بع؟

جِيَّ الْبِئِ عَمْره بِونَد مقامَ تفصيل بين واقع بالبذااس كامبتداء بناسي بي قد منظ بي من توين مضاف اليد كوض بي ب اى يومَ غشيبان العاشية، يهال و مُجُوّه ساسحاب وجوه مرادي ياطلاق الجزء على الكل كتبيل سے به وجه چونکه اشرف الاعضاء باس لئے اس كوافتيار كيا ممياب۔

فَيُولِينَ ؛ عاملة محنت كشنده مشقت المان والا

فَيْوَلْكُونَى ؛ ناصِيهة تفكني والا ، در ما نده عاملة ناصية رفع كساتهديد دونول مبتداء كي دوسري خبر بيل-

فِيُولِكُمْ : آنية كولاً موايانى ، إنى عاسم فاعل واحدمو ند.

قِوَلْ مَن عَنويعُ خاردارجُمارُ، صوبع ايک گھاس برس کوثبرق کہاجا تا ہےاور جب بدگھاس خنگ ہوجاتی ہے تو اہل ججازاس کوضر لیے کتے ہیں اور بیز ہر ہے۔ (صحبح بعاری، کتاب التفسیر)

فَيُولَكُم ؛ لا تَسْمَعُ فِيلِهَا لَاغِيدَ ﴿ جَهور كَنزه يكتاء فوقانيك فتراور لاغية كفب كرماتهم ، اى لا تَسْمَعُ الله عَلَى المُعَلَى الله عَلَى الله عَل

لغوًّا ٢، اى لا يسمعُ فيها لَغُوًّا.

فِيَّوَلِكَنَى : اَكُواب، اَقْدَاحُ لا عُرى لَهَا، اَكُواب، كُوْبُ كَنْ عَبِيروزن قُفْلُ واقْفالُ، كُوْبُ اس برتن كوكت بين ها المُؤَلِّمَ : اَكُواب، اَقْدَاحُ لا عُرى لَهَا، اَكُواب، كُوْبُ كَنْ عَبِيروزن قُفْلُ واقْفالُ، كُوْبُ اس برتن كوكت بين

جس میں دستہ اور ٹونٹی نہ ہومثلاً گلاس ، پیالہ وغیرہ۔

قِوَلْ الله عَمَادِقَ يه نُمُرُفَةً كَ جَمْع ب، نون اورراء كضمه اوردونول كره كره كما تهر بمعنى تك بمند. قِوَلْ الله ورَابِي وَرَابِي وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَالْرَابِي وَلَا يَكِي مِن اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَلَيْنِ وَاللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَاللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَاللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَاللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَلَالِقُولُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَلِي اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَاللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَالْمُعَالِقُ وَاللَّهُ وَالْمُولِقُ وَاللَّهُ وَالْمُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَالْمُولِقِ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَالْمُولِقُ وَاللَّهُ وَاللّهُ وَاللَّهُ وَاللَّالِي اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّا لَا اللَّهُ وَاللَّالِمُ اللَّا

قِوَلْنَى ؛ طَنَافِس يه طِنفسة مثلث كى جمع ب،روئين دارفرش، چالى، قالين مملىفرش_

<u>ێٙڣٚؠؙڒۅؖێۺٛڕؙڿٙ</u>

مَّلُ اَتَنَكَ حَدِیْتُ الْغَاشِیَة یہاں عَاشیہ سے مراد قیامت ہے بعیٰ وہ آفت کہ جوسارے جہان پر چھاجائے گی ،اس آیت میں مجموعی طور پر یورے عالم آخرت کا ذکر ہے۔

و بُحُوهٌ يَّوْ مَنِلَا خَاشِعَةٌ بِهِالْ 'چِرے' كالفظاشخاص كے معنى ميں استعمال ہوا ہے ،اس لئے كہانسانى جسم كى نماياں ترين چيز چېره ہے اور انسان پراچھى برى كيفيات كااثر اولاً چېرے ہى پرنماياں ہوتا ہے ،اس لئے ' ' كچھالوگ' كہنے كے بجائے ' 'كچھ چېرے' كا فظ استعمال كيا گيا ہے۔

لَيسَ لَهُمْ طَعَامٌ اللَّهِ مِنْ صَبِيعٍ قَرْ آن مجيد من کبين قرمايا گيا که دوز خيول کو زقوم کھانے کوديا جائے گا،اور کبين ارشاد مواکہ عسليون طح گا،اور يبال فرمايا گيا که انبين (صوريع) خاردار سوگی گھائی کے سوا پچھ کھانے کونہ طے گا،ان مين درخقيقت کوئی تضاد نبين ہے،مطلب بيہ ہے کہ جہنم کے بہت ہے درجے ہوں گے جن مين مختلف قتم کے مجرمين اپنے جرائم کے کاظ ہے ڈالے جائيں گے،اس سے بيشبہ دور ہو گيا که دوز خيول کو دوز خيم من کاظ ہے ڈالے جائيں گے،اس سے بيشبہ دور ہو گيا که دوز خيول کو دوز خيم من کاظ ہے ڈالے جائيں دی جائيں گی؟ جيسا کہ او پر بيان ہوا،اورائ آيت من حمر کے ساتھ فرمايا گيا کہ ان کو صوريع کے علاوہ پچھ نہيں بلکداضا فی ہے لین کھانے کے لائق چيزوں کے مقابلہ میں حصر ہے اور ضريع کو بطور مثال بيان فرمايا گيا ہے حصر يع جيسی غذا جو گيا ہے مطلب بيہ کہ جنبيوں کو کوئی کھانے کے لائق خوشگوار جز و بدن بنے وائی غذانہ دی جائے گی بلکہ صور يع جيسی غذا جو گيا ہے مطلب بيہ کہ دبنيوں کو کوئی کھانے کے لائق خوشگوار جز و بدن بنے وائی غذانہ دی جائے گی بلکہ صور يع جيسی غذا جو گھانے کے لائق نہ ہو،دی جائے گی بلکہ صور يع جيسی غذا جو گھانے کے لائق نہ ہو،دی جائے گی بلکہ صور یع جيسی غذا جو گھانے نے کو لائق نہ ہو،دی جائے گی۔

لِسَغیبِهَا رَاضِیَةٌ لِین دنیا میں جوسی صالح اور عمل نیک کر کے جب آخرت میں پہنچیں گے اور اس کے بہترین اورخوشگوار نتر نج دیکھیں گے تو خوش ہوں گے اور انہیں اطمینان ہوجائے گا کہ دنیا میں ایمان اور صلاح وتقویٰ کی زندگی بسر کر کے انہوں نے جونفس کی خواہش سے کی قربانیاں دیں فرائض کو اوا کرنے میں جو تکلیفیں اٹھا کمیں معصیتوں سے بہنچے کی کوشش میں جونقصانات اٹھائے اور جن فائدوں اور لذتوں سے خودکومحروم رکھا ہے سب کچھ فی الواقع بڑے نفع کا سودا تھا۔

فِی جنّتِ عالیة معنوی اور حسی دونو ل طرح سے عالی مقام جنتوں میں ہول گے۔

لا تَسْمَعُ فيها لاغية بالل جنت كالمذكرة بج جوجبنيون كريكس نهايت آسوده حال اور برقتم كي آسائثول سي بهره

ة (فَرَرُم بِسُلِفَ لِهِ) ◄ -

ور ہوں گے، یعنی جنت میں کوئی ایسا کلام ان کے کا نول میں نہ پڑے گا جولغواور بے ہودہ اور دلخراش، تکلیف دہ ہو، اس میں کلمات کفریہاورگالی گلوچ اورافتر اءو بہتان سب داخل ہیں۔

لِعض آ واب معاشرت:

واکواب موضوعة ، اکواب، کوب کی جمع ہے، پانی پینے کے برتن کو کہا جاتا ہے جیسے آبخورے، گلاس وغیرہ، اکسواٹ کی صفت موضوعة ، اکواب، کوب بینی پانی کے قریب اپنی مقررہ جگہ پرد کھے ہوئے ہوں گے،اس سے یہ بات معلوم ہوئی کہ پانی پینے کا برتن پانی کے قریب ہی متعین جگہ پر ہونا چاہئے تا کہ وقت ضرورت اوھر الماش کرنا نہ پانے ہوگہ ہوتا ہے؛اس لئے ہر محض کواس کا اہتمام کرنا چاہئے کہ ایسی استعالی چیزیں جو تمام گھر والوں کے کام آتی ہیں جیسے لوٹا، گلاس، تولیہ، صابن ، کنگھا، سر مہوغیرہ ان کی ایک جگہ مقرر ہوا وراستعالی کرنے کے بعداس جگہ رکھ دیا جائے تا کہ کی کو پریشانی نہ ہو۔ (معدن)

اَفَلاَ یَنْظُرُونَ اِلَیْ الاِبِ کِیْفَ مُحُلِفَتْ عَربوں کی غالب واری اونٹ ہی تھی، نیز اونٹ عربوں کے لئے بیش بہا،

ہایت جیتی سر مایی تھا اور ہروفت ان کے استعال میں رہنو والی چیزتھی ای لئے اللہ تعالیٰ نے اس کا خصوصیت ہے ذکر فر میا، اللہ

تو لی نے اپنی جن قدرت کی نٹ نیوں میں غور کرنے کا تھم فر مایا ہے ان میں ایک اونٹ بھی ہے، اونٹ عربوں کے لئے جہاں مفید

اور نہایت کا رآمد چیز ہو وہی اس میں چھا کی خصوصیات بھی قدرت نے ودیت رکھ دی ہیں کدوسرے ہونوروں میں نہیں پی ک

اور نہایت کا رآمد چیز ہو وہی اس میں چھا کی خصوصیات بھی قدرت نے ودیت رکھ دی ہیں کدوسرے ہونوروں میں نہیں پی ک

ہا تھی، اول تو عرب میں سب ہے بڑا جانور اونٹ ہی ہے اس لئے کہ ہاتھی عرب میں نہیں ہوتا اللہ تبارک وتعالیٰ نے اس عظیم

المجھوڑ دیا جائے تو یہ ہے چارہ او نے اور نے دونوں کے ہے کھا کھا کر اپنا پیٹ خود ہی بھر لیتا ہے، ہاتھی و غیرہ دیگر جانوروں

المحمد کی طرح اس کی خوراک مبتئی نہیں پر تی عرب کے جنگلوں میں پائی بہت ہی کمیاب چیز ہے ہر جگداور ہروقت میسر نہیں ہوتا، قدرت نے اس کی خوراک مبتئی نہیں ہونی کے درائے سیروں ہونے کے لئے سیروی لگائی پڑتی ہے گرفدرت نے اس کی ٹا تک میں تین قبضے لگا دیے کام میں لا تا ہے اسے اور جدا تھی تین قبضے لگا دیے ہیں جس کی وجہ ہوا تا ہے محمت کی اتنا ہے کہت کی اور وہ سے اس کی ٹر تک عرب کے میدانوں میں مڑ جاتی ہے اس پر چڑ ھنا آسان ہوجا تا ہے محمت کی اتنا ہے کہ سب جانور وہو ہو جو اور کر سے خوراک سے ذیادہ ہو جو اتھا تے محمت کی اتنا ہے کہ سب جانور وہو ہو تا ہے محمت کی اتنا ہے کہ سب جانور وہو ہو جو اور کر می کی وجہ ہے دن کا سفر دشوار ہوتا ہے قدرت نے اس کو جاتا ہے محمت کی اتنا ہو جاتا ہے مسکین اس قدرکہ کی کے میں کو کیا تا ہو ہو اتنا ہے مسکین اس قدر درائے کہ کہی تا گور کہ ایک کے میں اس کی گئیل کو کر کر جان کا سے درائی ہیں اس کی گئیل کو کر کر جہاں جا ہے جاسکتا ہے۔

کَسْتَ عَلَیْهِ مَرِبِ مُصَیْطِ اس میں رسول الله یکھنگا کو کی فرمائی که آپ یکھنگان کے ایمان ندلانے سے رنجیدہ نہ ہوں ، اس لئے که آپ میکھنگان پر مسلط نہیں ہیں ، آپ میکھنگا کا کام تہلیغ اور نصیحت کرنا ہے ، وہ کر کے آپ بلون کا جا کیں باقی کام ہمارے اوپر چھوڑ دیں ، ان کا حساب کتاب اور جڑا ، ومز اسب ہمارا کام ہے۔

سُوْرَةُ الْفَجْرِهِ لِيَّتِي وَهُيُّ تَلْبُوْنَا لِيُ

سُوْرَةُ الْفَجْرِ مَكِّيَةٌ أَوْ مَدَنِيَّةٌ ثَلَاثُونَ ايَةً.

سورہ فجر کی یامدنی ہے،تیس آیتیں ہیں۔

بِسَسِ عِراللَّهِ السَّرِحْ مِن التَّرْحِثِ عِرْ وَالْفَحِينُ اى فَجر كُلَّ يَوْم وَلَيَّال عَثْرِثُ اى عَشْر ذِي الْحِجَّة وَّالْشَفْعِ الرَّوْح وَالْوَتْرِقُ بِفَتْح الواو وكنسربًا لُعنان الفرْدِ وَالْيَهْلِ إِذَالْيُسْرِ الى مُفَالَا ومُدْرَا هَلْ فِي ذَٰلِكَ القَسَمِ قَسَمُّ لِّذِي جِخْرُهُ عَفُل وحوابُ النَّسَمِ مَحْذُوْتَ اي لَتُعَذَّنُوَ يَا كُفَّارَ مَكَّةَ ٱلْمُرَثَّرَ تَغلَمْ يَا مُحَمَّدُ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادِ إِلَى إِرَهَ سِي غادُ رِ الأَوْلِي فَرَمُ عَنظفُ بَيَانِ أو بَدَلٌ وسُنِعَ الصَّرُف لِـنْعَلْمِيَّةِ وَالنَّانِيْتِ <u>ذَاتِ الْعِمَادِيُ ۚ</u> اى السطُّول كان طُولُ الطَّويْل سِنْهُمُ أَرْبَعَ سِاتَة ذِرَاع الَّتِي لَمْ يَخْلَقَ مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِي ۚ وَتُمُودَ الَّذِينَ جَابُوا الصَّخْرَبِ الْوَادِدُ ۚ وَادى السَّفرى وَفِرْعَوْنَ ذِى الْأَوْتَادِ ۗ كان يَسْدُ أَرْبَعْهُ اوْتَسَادٍ يَشُدُ اِلْيُهَا يِدِي وَرجُلِيٰ مَنْ يُعَدِّبُهُ الَّذِينَ طَعْوًا تَحَبّرُوا فِي الْهِلَادِيُّ فَأَكُثُرُوا فِيْهَا الْفُسَادَةُ القِتْلَ وغَيْرَهُ فَصَبَّعَلَيْهِمْرَتُكِكَ سَوْطَ نَوْعَ عَذَابٍ أَوْ إِنَّ رَبَّكَ لِبِالْمِرْصَادِ أَهُ يَرْضُدُ اغمَالَ العِمَادِ فَلاَ يَفُونُهُ مِنْهَا شَيْءٌ لِيُحَادِيَهُمْ عَلَيْهَا فَأَمَّا الْإِنْسَالُ الكَافِرُ إِذَامَا الْبَلَلُهُ لِخُنْبَرَهُ رَبُّهُ فَٱكْرَمَهُ سِالِمَالِ وغَيْرِه وَنَعَمَهُ هُفَيَقُولُ رَبِّنَ ٱكْرَمَنِ ﴿ وَامَّآ إِذَامَا ابْتَلْهُ فَقَدَرَ ضَيَّقَ عَلَيْهِ رِمْ قَهُ هُ **فَيَقُولُ مَ إِنَّ أَهَانَنِ ثَاكَلًا** رَدُعُ اى لَيْسِ الاكْرَامُ مالىعىلى والإنبانةُ بالفَقْرِ وإنَّمَا شُمَا بِالطَّاعَةِ والمَعْصِيّةِ وكُمَّارُ مَكَّةَ لَا يَتَمَبُّهُونَ لِذلِكَ مِ**لَا لَأَتُكْرِمُونَ الْيَتِيْ**مَرُ لَا يُخسِمُونَ الْيُه مَعَ غِنَامُهُم اولا يُعطُونهُ حَقَّهُ مِن المِيْرَاتِ وَلَاتَخَضُّونَ أَنْفُسَهُمْ وَلاَ غَيْرَهُمْ عَلى طَعَامِ اطْعَام الْمِسْكِيْنِ ﴿ وَتَأْكُلُونَ الْأَزُاتَ الْمِيْرَاتَ أَكُلًا لْمُنَّافُ اى شَدِيدًا لِلهِم نَصِيبُ النِسَاءِ وَالصنيّان مِنَ المِيراتِ مع نَصِيبهم مِنَّهُ أَوْ مَع مَالِيهم وَّتُحِبُّونَ الْمَالَ حُبَّاجَمًا ﴾ اي كَثِيرًا فلا يُمْفِقُونَهُ وفي قِرَاءَ قِ بالفَوْقَانِيَّةِ فِي الأَفْعَالِ الأَرْبَعَهِ كَلْآ رَدُعٌ لَهُمُ عن دلِكَ إِذَاكُكُتِ الْأَرْضُ دَكًّا دَكًّا أَنْ زُلْولِتْ خَتْى يَنْهَدِمَ كُلُّ مِنَاءٍ عَلَيْمًا وَيَنْعَدِمَ قَحَجَاءُ رَبُّكَ اى أَسُرُهُ

وَالْمَاكُ اى المَلاَئِكَةُ صَفّا صَفّا صَفّا هَ حَالَ اى مُصَطَفَيْنَ او ذَوى صَفُوْتِ كَثِيرَةٍ وَجِافَا يُومَعِ فِهِ بِجَعَنَمُ أَعْدَ بِسِنعِيْنَ الْفِ زِمامِ بَائِدِى سَبْعِيْنَ الْفَ مَلَكِ، لَهَا رَفِيْرُ وَتغِيظٌ يَوْمَعِ فِي نَذَكُرهُ دِلِك يَّنَادُ بِسِنعِيْنَ الْفِ زِمامِ بَائِدِى سَبْعِيْنَ الْفَ مَلَكِ، لَهَا رَفِيْرُ وَتغِيظٌ يَوْمَعِ فِي نَذَكُرهُ دَلِك يَتَكَكُرُ الْإِنْسَالُ اى الكَافِرُ مَا فَرَّطَ فِيهِ وَآقَ لَهُ الْكَلِيْرُى ﴿ السَبْفَهَامُ بِمَعْنَى النَّفِي الْخِرَةِ او وَقُتَ حَبَاتِى فَى يَقُولُ مَعْ نَذَكُره وَيَا لِلتَنْفِيهِ لَيْسَنِي فَكَرَّمُ النَّهِ الْخَيْرُ والإيمَانَ لِحَمَالِي ﴿ الطَّيَبَةِ فِي الاَخِرَةِ او وَقُتَ حَبَاتِي فِي لَيُقُولُ مَنْ فَرَاءَ فَلَى اللَّهِ الْحَكَةُ اللَّهُ الطَّيَبَةِ فِي الاَجْرَةِ او وَقُتَ حَبَاتِي فِي اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ وَقَاقَةً لِلكَافِرِ والمَعْنَى لاَيُعَدَّبُ بِكُسُرِ النَّاءِ وَقَاقَةً لِلكَافِرِ والمَعْنَى لاَيُعَدَّبُ بِكُسُرِ النَّاء وَقَاقَةً لِلكَافِرِ والمَعْنَى لاَيُعَلِقُ الللهُ اللَّهُ اللهُ وَقَاقَةً لِلكَافِرِ والمَعْنَى لاَيُعَدَّبُ بِكُونِ اللهُ اللهُ وَمَنْ اللهُ اللهُ وَمَنْ اللهُ اللهُ وَاللهُ وَمَا اللهُ وَاللهُ اللهُ وَاللهُ اللهُ وَاللهُ اللهُ وَاللهُ اللهُ اللهُ وَاللّهُ اللهُ اللهُ اللهُ وَاللّهُ اللهُ اللهُولِ اللهُ ا

ت مروع كرتا مول الله ك نام سے جو بردامهر بان نهايت رحم والا ب جسم بے فجر كى لينى مردن كى فجر كى ، اور دس را توں کی بینی ذی الحجہ کی دس را توں کی اور جفت کی بینی زوج کی ، اور طاق کی اور المو تو واؤکے فتہ اور کسرہ کے ساتھ ہے بیہ دولغت ہیں (وَتُسر) میں بمعنی فروء اور رات کی جب وہ رخصت ہونے لگے لیعنی جب وہ آئے اور جائے ، کیااس فتم میں عظمند كے سے كافى تتم (نہيں) ہے؟ اور جواب تتم محذوف ہے (اوروہ) كَتُعَدَّبُنَّ يَا كُفَّار مَكَّةَ! ہے، (اے كفار مكه! تم كوضرور عذاب ویاجائے گا) کیااے محمد فیق الله ا آپ فیق الله کومعلوم نبیل کہ تیرے رب نے عادیوں کے یعنی قوم ارم کے ساتھ کیا گیا؟ اِرَمْ عاداولی ہے، اِرَمْ عطف بیان یا بدل ہے ادرعلیت و تانیث کی وجہ سے غیرمنصرف ہے جن کے قد و قامت درازی میں ستونوں جیسے تھے ان میں کا دراز ترین چارسوگز کا تھا، زور وقوت میں دنیا بھر میں ان کے جیسا کوئی نہیں پیدا کیا گیا، اور تو مثمود کے ساتھ کیا معاملہ کیا؟ جووادی قری میں پھرتر اشاکرتے تھے اور ان سے گھر بنایا کرتے تھے، صَبْخُورٌ صَبْحُو ہ کی جمع ہے، اور میخوں والے فرعون کے ساتھ کمیا معاملہ کمیا؟ اور وہ چارمیخیں گاڑ دیتا تھا اور جس شخص کوسز اویٹی ہوتی تھی اس کے حیاروں ہاتھوں پیرول کوان سے باندھ دیا کرتا تھا، جنہوں نے شہروں میں بڑی سرکشی کی تھی، اوران میں تقل وغیرہ کے ذریعہ بہت فساو ہر پاکر رکھا تھا سوآپ بیٹ بھٹا کے رب نے ان پرعذاب کا کوڑا ہرسایا، بے شک آپ بیٹھٹٹا کارب گھات میں ہے بندوں کے اعمال ک تگرانی کرر ہاہے لہٰذا کوئی عمل اس سے تخفی نہیں رہ سکتا کہ اس کی جزانہ دے ، سواس کا فرانسان کو جب اس کا رب آ زما تا ہے بایں طور کہ مال وغیرہ کے ذریعیہ اس کا اکرام کرتا ہے اور اس کو انعام دیتا ہے تو وہ کہتا ہے میر ہے رب نے میری قدر بڑھا دی (یعنی عزت بخشی) اور جب اس کو (دومری طرح) آز ما تا ہے لینی اس کی روزی اس پر تنگ کر دیتا ہے تو کہتا ہے کہ میرے رب ب ﴿ (مَكْزُمُ بِبَلِكَ فِي عَالِهِ عَالِهِ) €

میری قدر گھٹادی (یعنی ذلیل کر دیا) ہرگز ایسانہیں ہے لیعنی غنا کی وجہ ہے اکرام ہواور فقر کی وجہ سے تو بین ہو،ان وونو ل با تو ل ک تعلق اطاعت اورمعصیت ہے ہیکن کفار مکہاس بات سے واقف نہیں ہیں، بلکہتم پتیم کے ساتھ عزت کا سعوک نہیں کرتے یعنی وہ لوگ فارغ البالی کے باوجود اس کے ساتھ حسن سلوک کا معاملہ نہیں کرتے یا میراث ہے اس کاحق نہیں دیتے ، اور آپیر میں ایک دوسر ہے کومسکین کو کھانا کھلانے کی ترغیب نہیں دیتے ، نہ خود کواور نہ دوسروں کو، طعام مجمعنی اطعام ہے، اور میراث کے مال کوسمیٹ کر کھا جاتے ہو عورتوں اور بچول کے مال میراث پران کے شدید حریص ہونے کی وجہ ہے،اینے جھے کے ساتھ ب اینے مال کے ساتھو، اور مال کی محبت میں بری طرح گرفتار ہو جس کی وجہ ہے اسے خرچ نہیں کرتے ہو، اور ایک قراء ت میں حیاروں فعلوں میں تا وفو قانیہ کے ساتھ ہے، ہر ترنہیں! (خبر دار!) بیان کی اس خصلت پر تنبیہ ہے، جب زمین کوٹ کوٹ کر برابر کر دی جائے گی (یعنی) زمین کو ہلا دیا جائے گاحتی کہ اس زمین پر کی ہر ممارت معدوم اورمنہدم ہوجائے گی ، اورتمہارا رب جبو ا فروز ہوگا لیعنی اس کا تھکم حال ہے کہ فرشتے صف درصف کھڑے ہوں گے (صفًا صفًا) حال ہے معنی میں مصطفین کے، ملائکہ کی بہت ی صفیں ہوں گی ، اور جہنم اس روز ستر بزار لگاموں کے ذریعہ تھینچ کر سامنے لائی جائے گی اور بیدلگا میں ستر ہزار فرشتوں کے ہاتھوں میں ہوں گی اور بخت آ واز ہوگی اور جوش ہوگا اس دن انسان یعنی کا فرانسان اس چیز کو بمجھ جائے گا، یہو ملذ، اذا ہے برل ہے اور اس کا جواب یت ذکیر الانسان ہے، جس میں اس نے صدیے تجاوز کیا ہوگا، اور اس وقت اس کے سبحھنے ہے کیا حاصل ہوگا ،استفہام بمعنی نفی ہے، یعنی اس وقت سمجھ میں آنااس کے لئے پچھ نافع نہ ہوگا ،تمجھ میں آنے کے ساتھ ہی وہ کہاگا ہائے افسوس! میں آخرت میں اپنی عمدہ زندگی کے لئے خیراورا بمان آگے بھیج ویتا، یاد نیوی زندگی کے زمانہ میں (نیک اعمال کرلیتا) پھراس دن اللہ(خود)عذاب دے گا کوئی (دوسرا) نہ دے گا ، یعذِّب کسر ہ کے ساتھ ہے یعنی وہ تعذیب غیر کے سپر ہ نەكرے گا اور نداس كے جكڑنے والے كے مانند كوئى جكڑنے والا ہوگا يُسوثِيقُ ميں ثاء كے كسر ہ كے ساتھ اورا يك قراءت ميں ذال اور ، ء کے فتحہ کے ساتھ ہے لہذا عذابکہ اور و شاقہ کی خمیریں کا فر کی طرف راجع ہوں گی اور معنی بیہوں گے کہ نہاس کے جیسا کو کم عذاب دے گااور نداس کے جبیبا کوئی جکڑے گا (دوسری طرف ارشاد ہوگا) اے نفس مطمئن! (یعنی) مامون حال بیر کہ وہ مومنہ ہو ً اینے رب کی طرف اس حال میں چل کہ تو ثواب ہے خوش ہے اور اپنے عمل کی وجہ ہے اللہ کے نز دیک پہندیدہ ہے بعنی دونو ا وصفول کوجامع ہوگااوروہ دونوں حال ہیں، یہ بات اس ہے موت کے دفت کہی جائے گی بینی تو اس کے امراورارادہ کی طرف لوٹ اور قیامت کے دن اس سے کہا جائے گا تو میرے نیک بندوں میں شامل ہو جااور میری جنت میں ان کے ساتھ داخل ہو جا۔

عَيِقِيق اللَّهِ السِّبَيلُ الْفَيْسِيرَى فَوَائِلُ

قِی کی ؛ وَالسفجو، السفجو اسم نعل ،مصدر بمعنی یؤ پھٹنا، منح کی روشنی نمودار ہونا، بھاڑ کر بہانا، وقت فجر ،ان کے علاوہ اور بہرنا سے معانی کے لئے مستعمل ہے قرآن مجید میں صرف وقت فجر اور طلوع سحر کے لئے اس کا استعمال ہوا ہے (لغات القرآن ف جس سے یا تو ہرروز کی طلوع فجر مراد ہے یا خاص طور پر دسویں ذی الحجہ کی پامحرم کی پہلی تاریخ کی فجر مراد ہے اس لئے کہ اس دن سے عربی کا نیاسال شروع ہوتا ہے، اور لیسال عشسو سے ذی الحجہ کی ابتدائی دس راتیں مع ان کے دنوں کے مراد ہیں، اس لئے کہ ان کی بہت فضیلت وارد ہوئی ہے۔

فَيْ وَالنَّهُ عَوِ اللَّوْرِ كَمْ عَنْ جَفْت اورطال كي بي، شَفع اور وَتَوْ كَمْ عَنْ مِنْ مُعْسر بِن كابهت اختلاف بحق كه جفت وطال كي معنى كي

فَيْحُولَنَّى ؛ إِذَا يَسْوِ، يَسُو دراصل يَسُوِى تَعَا تَحْفَيفًا، ياء كونواصل كى رعايت كى وجه صحف ف كرديا گيا۔
فَيْحُولَنَّى ؛ هَمَلْ فِسَى ذَلِكَ قَسَمْ لِذِي حجو بهاسته اس قوم كے دونام بيں ① عاد ⑥ ارم،اس كے كه عاد بيئا ہے وص كا اور به بيئا ہے اور ارم بيئا ہے مام بين فوح كا؛ لبذا به في قاس قوم كے باپ عاد كی طرف نسبت كر ك قوم عاد كته بيں اور بيئا ہے ازم كا، اور ارم بيئا ہے سام بن فوح كا؛ لبذا به في قواس قوم كے باپ عاد كی طرف نسبت كر ك قوم عاد كته بيں اور بيئا ان كے داداك نام كی طرف نسبت كر ك قوم ارم كته بيں ؛ پس عاد اور شود دونوں اور ميں جا كر الله جا بي عاد دواول اور ميں جا كر الله جا بي عاد دواول اور ميں عاد دواول اور ميں اور دوسرا متاخرين كا جن كو عاد افرى كہتے ہيں اس معلوم بوگيا كہ يہاں عاد اولى مراد ہے، عاد نے بارہ سوسال عمر علوم بوگيا كہ يہاں عاد اولى مراد ہے، عاد نے بارہ سوسال عمر بيئى جس جا دروہ کا نقال حالت كفريس ہوا۔ (جمل) ما قبل ميں چار چيزوں كي شعداد چار بيرائى كا جو ايك بيرائى كوراس كا انقال حالت كفريس ہوا۔ (جمل) ما قبل ميں چار چيزوں كي شعداد چار بيرائى كا جو ايك بيرائى كا جو ايك بيرائى كوراس كا انقال حالت كفريس ہوا۔ (جمل) ما تبال ميں چار چيزوں كي شعداد چار بيرائى كا تول "إن دَبَالُه بيرائي كيا ہے، اور دوراز ترين قدوالا پا چي سو ہا تھى كا خودا ہے ہا تھے كہ ذوات المعماد بعض حضرات نے اس كا ترجمہ شونوں والى بلند عارتوں والے مرادليا ہے سے اور تھيرترين تين سو ہا تھى كا ، اور بعض حضرات نے ذات المعماد كا ترجمہ شونوں والى بلند عارتوں والے ، مرادليا ہے سے اور تھيرترين تين سو ہا تھى كا ، اور بعض حضرات نے ذات المعماد كا ترجمہ شونوں والى بلند عارتوں والے ، مرادليا ہيں حاد تھے ماد كا ترجمہ شونوں والى بلند عارتوں والے ، مرادليا ہيں حاد توں مرادلے ہيں۔

ێٙڣٚؠؗڔؙ<u>ۅؙ</u>ڗۺٛڕؙڿ

اس سورت میں پانچ چیزوں کی تتم کھا کراس مضمون کی تاکید کی گئے ہوآگے (اِنَّ رَبَّكَ لَبِا لَمِوْصَاد) میں بیان ہواہے لینی اس دنیا میں تم جو کچھ کررہے ہواس پر جزاء وسزا ہو تالازمی ہے تمہارے سب اٹمال تمہارے رب کی تکرانی میں ہیں۔ ودیا نچ چیزیں جن کی تتم کھائی ہے ان میں ہے۔

پہلی چیز فسجسر میعن مبنی صادق کاوفت ہے اور یہ بھی ہوسکتا ہے کہ ہرروز کی مبنی صادق مراد ہو؛ اس لئے کہ ہر مبنی صادق عالم میں ایک عظیم انقلاب لاتی ہے اور حق تعالی شانہ کی قدرت کا ملہ کی طرف رہنمائی کرتی ہے اور یہ بھی ہوسکتا ہے کہ المصحو میں الف لام کوعہد کا قرار دے کر کسی خاص دن کی فجر مراد ہو، حضرت علی ، حضرت ابن عباس ، اور حضرت ابن ذبیر

دوسری چیزجس کی شم کھائی گئی ہے وہ وس راتیں ہیں کیونکہ صدیث شریف میں ان کی بردی فضیلت آئی ہے۔

سفع اور و تسو کے ہارے میں بہت سے اقوال ہیں مثلاً بعض نے نماز وتر اور غیروتر مراد لی ہے بعض ائر تفسیر مثلاً ابن سیرین تعققاننه تفالی مسلم مسلم مسلم اللہ مسفع سے مراد تمام ابن سیرین تعققاننه تفالی نے فرمایا کہ مسفع سے مراد تمام مخلوق ہے کیونکہ اللہ تعققانی نے فرمایا کہ مسفع سے مراد تمام مخلوق ہے کیونکہ اللہ تعققانی نے فرمایا ہے تمام مخلوقات کو جفت پیدا کیا ہے "وَمِنْ مُحلِّ مَنْسَى عِلَى خَلَقْفَا ذَوْ جَدْنِ " یعنی ہم نے برخی کو جوڑے ہے بیدا کیا اور ان کے بالمقابل و تسو صرف اللہ ہے مطلب یہ کہ ہرفی بلکہ ہرفر ترہ باجوڑ ہے ، ہرفی اور ہرفر ترہ میں سوائے اللہ کے دو پہلو، مثبت اور منفی ضروریا ہے جاتے ہیں۔



ڛۅٚڒؚۼۘٳڵؠڵڒڡڴؾؠ؋<u>ؖۿۼۺۨڔۅڵڶؙؠؙ</u>

سُورَةُ الْبَلَدِ مَكِّيَّةٌ عِشْرُونَ ايَةً.

سورة بلد كمي ہے، بيس آينتيں ہيں۔

بِسُ مِ اللهِ الرَّحِ مِن الرَّحِ سُ مِن الرَّحِ مِن الرَّحِ سُ مِن الرَّحِ مِن الرَّحِ مِن اللهِ الرَّحِ مَن الرَّحِ مَن الرَّحِ مُن الرَّحِ مَن الرَّحِ مِن اللَّهِ الرَّحِ مِن الرَّحِ يُهِذَا الْلِكُونَ بَانُ يَحِلُ لَكَ فَتُقَاتِلُ فِيهِ وَقَدْ أُنْجِزَ لَهُ هَذَا الوَعَدُيَوْمَ الفَتْح فَالجُمُلَةُ إِعْتِرَاضَ بِينَ المَقْسَمِ بِهِ ومَا عُطِفَ عَلَيْهِ **وَوَالِدٍ** اى أَدَمَ **وَمَاوَلَا** أَى ذُرَيْتِه ومَا بِمَعْنَى مَنْ لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ أَى الجنسَ فِيُكُبُدُ اللَّهُ نُصْب وشِدَّ وَيُكَاهِدُ مَصَائِبَ الدُّنْيَا وشَدَائِدَ الاخِرَةِ أَيْكُتُكُ اى أَيَظُنُ الإنْسَانُ قَوِي تُرَيْشِ وهُوَ أَبُو الاَ شُدِ بنُ كَنَدَةَ بِقُوَّتِه أَنَّ مُخَفَّفَةً مِنَ التَقِيلة وَاسْمُهَا مَخَذُوْفُ اي أَنَّهُ لَن يَقُورَ عَلَيْهِ أَكُدُّ وَاللَّهُ قَادِرٌ عَلَيْهِ يَقُولُ الفَكُتُ عَلَى عَدَاوَةِ مُحَمَّدِ مَالْالْبُدَالْ كَثِيرًا بَعْضُهُ عَنى بَعْضِ أَيْحَمَّكُ أَنَّ اى أَنَّه لَمْ يَرَهُ آحَدُنُ فِيْمَ أَنْفَقْهُ فَيُعَلِمُ قَدْرُهُ وَاللُّهُ أَعْلَمُ بِقَدْرِهِ وَأَنَّهُ لَيْسَ مِمَّايُتَكَثَّرُ بِهِ ومُجازِيْهِ عَلَى فِعْبِهِ السَّيَّءِ ٱلْمُرْجِعُكُلّ السُتِفْهَامُ تَقْرِيْرِ اى جَعَلْنَا لَّذَعَيْنَيْنِ ﴿ وَلِيكَانَا وَشَفَتَيْنِ ﴿ وَهَدَيْنِ اللَّهُ النَّجُدَيْنِ ﴿ وَلَلْمَا لَنَّجُدَيْنِ ﴿ وَلَلْمَا لَنَّا لَهُ طَرِيْقَى الْحَيْرِ والشَرِّ فَلَا فَهَلَا الْتَتَحَمَّالُحُقَبَةً ﴾ جَاوَزَهَا وَمَا الدُّرِيكَ اعْلَمَكَ مَاالْعَقَبَةُ ۚ الَّتِي يَقْتَحِمُهَا تَعْظِيمٌ لِشَانِهَا والجُمُلَةُ اعْتِرَاض وَنَيْنَ سَبُبَ جَوَازِهَا بِقَوْلِهِ فَكُّرُقَبَةٍ ﴿ سِلَ الرَقَ بِأَنُ أَعْتَقَنِهَا أُولِطُعُم فِي يُومِ ذِي مَسْعَبَةٍ ﴿ سَجَاعَةٍ يَّتَيْمُاذَا مَقُرْكَةٍ ﴾ قَرانَةٍ أَوْمِسْكِينَا كَالُمَتُرُبَةٍ أَن لَصُونِ بِالتَّرَابِ لِغَقُرِه وفِي قِزَاءَ ﴿ بَدَلَ الْفِعُلَيْنِ مَصْدران مَرْفُوعَن مُصَافُ الاوَّل لِـرَقَبَةٍ ويُمُوَّنُ الثَّانِيٰ فَيُقَدَّرُ قَبْلَ العَقَبَةِ اِقْتِحَامٌ والقِرَاءَةُ المَذُكُوْرَةُ بَيَانَةً **تُقُوَّانَ** عَطَفَ على اقْتَحمَ وثُمَ لدَّ بَيْبِ الذَّكْرِيّ والمغنى كَانَ وَقُتَ الْإِقْتِحَامِ صَ اللَّذِينَ المُثَوَّا وَتُواصُّوا بَعْضُهُمْ بَعْضًا بِالصَّبِرِ عَلَى الطَّعنوعِ المعصد وتواصوابالمرحمة الرّحمة على الدّخلق الطّلك المؤصّوفون بهذه الصّفات المحك الميمنة اليمني وَالَّذِنْيَ لَقُرُوا بِالتِّينَاهُمُ وَاصَّابُ الْمُشْتَمَةِ ﴿ الشِّيمَالِ عَلَيْهِمْ زَارُمُو صَدَةً ﴾ بالْهَمُزَةِ وبالوَاوِبدلَهُ مُطنقة

ورين

سبعتر میں اللہ کے نام سے جو برام ہربان نہایت رحم والا ہے، میں قتم کھا تا ہوں ال شہر مکہ ک

(لَا أَفْسِمُ) مِين، لازائده ب، اور اح محمد ينف تنزيا آب ينف فيتاك كية اس شهر مين قبال حلال بون والاب، باين طورك آپ بلق الله الله الله المال كرديا جائے گا، سوآپ بلق الله اس ميں قبال كريں گے، چنانچه الله تعالى نے اس وعدہ كو فتح مكه ك ون بورافر ما ديا (أنت حِلَّ النع) مقسم بهاوراس كورميان جس كامقسم به برعطف كيا كيا ب، جمعه معتر ضهب، اور شم ہے والد آ دم عَلِي الله الله كل اوران كى اولان كى اولان كى ذريت كى اور مَا بمعنى مَنْ ہے، يقينا بهم نے انسان كو يعنی جنس انسان کو مشقت اور شدت میں پیدا کیا ہے کہ وہ دنیا کے مصائب اور آخرت کی مشقت برداشت کرتا ہے کیا انسان یعنی قریش کا طاقتو چخص اور وہ ابوالا شدین کلدہ ہے اپنی قوت کی وجہ سے میہ جھتا ہے کہ اس پر کوئی قابونہ یا سکے گا؟ حالا نکیہ التّداس يرقابويائے والا ب، أن مخففه عن الثقيله باوراس كااسم محذوف ب، اى أنَّهُ وه كبتا بكه محمد يَلا في الله ك عداوت میں، میں نے ڈھیروں جمع شدہ مال خرج کردیا کیاوہ سیجھتا ہے کہاس کوکسی نے دیکھانہیں ہے کہاس نے وہ مال کس میں خرچ کیا ہے؟ (اور کنٹا خرچ کیا ہے؟) کہوہ اس کی مقدارلوگوں کو بتار باہے،اور حال بیہ کہ اللہ اس کی مقدار کو خوب جانتا ہے اور وہ مال اس قدرنہیں کہ اس پر فخر کیا جائے ، اور وہ اس کی بد کر داری پرسز ا دینے والا ہے کیا ہم نے اس کو ووا تکھیں اور ایک زبان اور دو ہونٹ نہیں دیے؟ یہ استفہام تقریری ہے لیعنی ہم نے اس کو (یہ چیزیں) دی ہیں اور ہم نے اس کو خیروشر کے دونوں راستے بتا دیئے تو پھرکس لئے گھائی میں داخل نہیں ہوا؟ اورتم کو کیا معلوم کہ کیا ہے وہ (دشوارگز ار) گھائی؟ جس میں وہ داخل ہوگا، (بیاستفہام) عقبہ کی عظمتِ شان کو بیان کرنے کے لئے ہے اور جملہ معترضہ ہے، اور کھاتی میں دخول کا طریقہ اللہ تعالیٰ نے اپنے تول فک رقبہ ہے بیان فرمادیا ، لیعنی غلامی سے کردن کوچھڑانا بایں طور کہ اس کوآ زادکردے بیافاقہ کے دن کسی قریبی بیتیم پاکسی خاک نشین مسکین کوکھا نا کھلہ تا ، یعنی وہ فقیر کہ جوایخ فقر کی وجہ ہے خاک نشین ہو گیا ہو،اول فقیر کہ جواینے فقر کی وجہ سے خاک نشین ہو گیا ہو،اورا یک قراءت میں دونوں فعلوں کے بجائے دونوں مرفوع مصدر بیں،اول،صدروقبه کامضاف ہاوردوسرامصدرمُنوّن ہے،انبذا العقبه ے پہلے اقتحام مقدرماتا جائے گا،اورندکورہ قراءت اقتحام کابیان ہوگی، اور پھروہ اقتحام (یعنی گھاٹی میں داخل ہوتے دفت) مونین میں سے ہواور جنہوں نے آپس میں ا یک دوسرے کو طاعت پراورمعصیت ہے باز رہنے پر صبر کی اورخلق خدا پر رحم کی تلقین کی ہو بیلوگ جوان صفات ہے متصف ہوں گے دائمیں ہاتھ والے ہیں اور جنہوں نے ہماری آیات کے ماننے سے انکار کیا یہ ہیں بائیں ہاتھ والے ،ان پر آگ جھائی ہوئی ہوگی (مؤصدة) ہمزہ کے ساتھ ہاور ہمزہ کے بجائے واؤکے ساتھ بھی ہے جمعنی چھائی ہوئی۔

عَجِفِيق تَرَكِيكِ لِيسَهُيكُ تَفْسِيرِي فِوَائِل

فَخُولَكُمْ: وَأَنْتَ حِلَّ بهذا البلد آبِ يَعْقَلَهُ كُلل إورآ تنده فتح مكى خوشخرى ب، يقين الوقوع بون كى وجه عال كصيغه تعيركيا بجبياكه إنَّكَ مَيَّتُ وَإِنَّهُمْ مَّيَّتُونَ مِن (وَأَنْتَ حِلَّ) جملة معترضه به ما قبل عاس كاكوني تعلق ے اور نہ ہ بعدے، بلکه اس جملہ ہے آئندہ ہونے والے واقعہ کی خبر دی گئی ہے، اور بہتریہ ہے کہ اس جملہ کوھ لیہ قرار دیا جائے۔ فِيْ وَلَكُم : بِأَذْ يحلُ لك ياس بات كى طرف اشاره بكرمصدر بمعنى متقبل بـ

فَيُولِكُ ؛ لَقَدْ حلقنا الإنسان يقسم عليه (جواب شم) --

فَيْخُولِكُمْ ؛ وَمَا وَلَدَ، مَا جَمَعَىٰ مَن ہے۔

فَيُولِنَّهُ: فَهَلَا اس مِس اشاره بك "لا" بمعنى هلا ب، اورائي اصل برجى موسكتاب

مَنْ وَالْ الله الله والله من يرداخل موتا بيتولاكي تكرار ضرورى موتى بي جبياكه فلا صَدَق و لا صَلْي؟

جَيُولَ شِيْء معنى تحرار بِ الفظا تكرار بين ، اس ليَ كراصل بين فلا فَكَ رَفَبَةً وَلَا اطَعَمَ مسكينًا بـ

فَيُولِنَى : أَلْعَقَبَة ، عقبه بہاڑوں كورميان دشواركز ارراستة كوكتے ہيں إقتحام كمعنى كھائى ميں داخل ہونے كے ہيں بعد میں مطلقا ترک محتر مات اور فعل الطاعات میں مجاہدہ پراطلاق ہونے لگا ہے۔

قِوْلُكُ ؛ جَاوَزَهَا بِي اقتحام العقبة كَافْسِر بِ.

يَجُولُكُم : بِيِّنَ سَبَبَ جَوَازِهَا ، اى بيَّنَ طرِيقَ دخولها، وفي قراءة بَدُلُ الفعلين مَصْدَرَ ان مرفوعان، يه فَكُ رَ فَهَةٍ أَوْ إطلَعَامٌ مِين دوسرى قراءت كابيان ہے،مفسر علام فرماتے ہيں كەبعض قراءتوں ميں مذكورہ دونوں فعلوں كے بجاسئے يعنی فَكَ كَ بِي عَ فَكُ اور أَطْعَمَ كَ بِالْ اطسعام بين معلوم بوتا ب كمفسرعلام كييش نظرقر آن كاجونسخ باس مين مصدر کے بجائے تعل ہیں ، اور ہمارے سامنے جونسخہ ہے اس میں دونوں جگہ مصدر ہی ہیں ، اگر مصدروں کے بج نے افعال مانے جائیں تو پھردونوں فعل فسلا افْتَسحسمَر ہے بدل ہوں کے بعنی وہ عقبہ میں داخل نہیں ہوئے بعنی گرونوں کوآ زاد نہیں کرایا اور فاقہ کے دن کھا نہیں کھلا یا ،اورا گر دونو ل نعلوں کے بجائے مصدر ہی مانا جائے جیسا کہ ہمارے پیش نظرنسخہ میں ہے تو بیدونو ل مصدر مَا الْعَفَية كَتْفِيرِ مُول يَعِمُراس صورت مِن ذات كَيْفير مصدرت مونالازم آئے كى اس كے كەعقبدذات باور فك اور اطعامٌ مصدر إن اوريه جائز نبيس بي البداعقيه يهلي اقتحام مسدر مان ضروري بوگا، تقدير عبارت بوگ مها افتحام العقبة؟ هو فك رقبة او اطعام يوم ذى مسغبة ال تقدير كے بعد مصدر كا حمل ذات ير بونالازم بيس آتا۔

فِيْ فُلْكُ : ثُمَّ لِلترتيبِ الذِكرِى اس عبارت كاضاف كامقصدا يكسوال كاجواب مد

مَيْنِ وَإِلْى : او بركى آيت ميل طاعات برنياور ماليد كور بعد مجاهره كالظم ديا كيا باور شعر كسان مِنَ السَدِّينَ المَنُوّا مين ايمان لا نے کا تنام دیا گیا ہے حالا نکدایمان طاعت سے مقدم ہے؟ جِيَّ النبعِ: جواب كاخلاصه بيہ كه نہ قرتب ذكرى كے لئے ہے ترتيب زمانی كے لئے نہيں اور مطلب بيہ كه مجابد وُنفس بالا طاعت كے وقت مومن ہو۔

<u>تَفَيْرُوتَشِيْ</u>

لَا أُفْسِمُ بِهِلْذَا الْلَلَةِ ، بلَد ہے مراد مکہ کرم ہے جس میں اس وقت جب کہ اس سورت کا نزول ہوا نبی کریم ﷺ کا قیام تھا آپ ﷺ کے مُولد وسکن کی سم کھائی ہے اس کا قیام تھا آپ ﷺ کے مُولد وسکن کی سم کھائی ہے اس سے مکۃ المکر مہ کی دوسر ہے شہروں کی بہ نسبت شرافت اور فضیلت ٹابت ہوتی ہے، حضرت عبداللہ بن عدی تو تحالات تابت ہوتی ہے، حضرت عبداللہ بن عدی تو تحالات تابت ہوتی ہے دوایت ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے ہجرت کے وقت شہر مکہ کو خطاب کر کے فرمایا کہ، خدا تعالیٰ کی قتم : تو تمام روئے زمین پراللہ کے نزد یک سب سے زیادہ بہتر اور مجبوب ہے اگر مجھے یہاں سے نکلنے پر مجبور نہ کردیا گیا ہوتا، تو میں تیری زمین سے نہ نکائی۔ (درمذی وابن ماجه)

وَانْتَ حِلَّ بِهِاذَا الْبَلَدِ اس فقرہ کے تین معنی مفسرین نے بیان کئے ہیں ،ایک بیکہ آپ فیلائی اس شہر میں مقیم ہیں ،اس وقت بیصول سے مشتق ہوگا جس کے معنی حلول کرنے ،اتر نے اور فروکش ہونے کے ہیں یوں تو شہر مکہ خود بھی محترم اور مکرم ہے مگر آپ فیلائی ایک اس میں مقیم ہونے کی وجہ سے اس کی عظمت میں اور اضافہ ہوگیا ہے۔

دوسرے معنی یہ ہیں کہ لفظ جو گی مصدر ہے جو جگٹ سے شتق ہے جس کے معنی کسی چیز کے حلال ہونے کے ہیں اس اعتبار سے لفظ جے گی ہوسکتے ہیں ایک بیا کہ کفار مکہ نے آپ بیٹی تھیں کو حلال سمجھ رکھا ہے کہ آپ بیٹی تھیں کے آپ اس مدتک ہو تھی کی کے جس در پے ہیں حالا نکہ وہ خود بھی شہر مکہ بیس شکار تک کو بھی حلال نہیں سمجھتے مگران کاظلم اور سرکشی اس حدتک ہو تھ گیا ہے کہ جس مقدس مقام پر کسی جانور کافتل بور حودان لوگوں کا بھی بھی عقیدہ ہے وہاں انہوں نے اللہ کے رسول کافتل اور خون حال کے سول کافتل اور خون حال کی بھی عقیدہ ہے وہاں انہوں نے اللہ کے رسول کافتل اور خون حال کی بھی عقیدہ ہے وہاں انہوں نے اللہ کے رسول کافتل اور خون حال کی بھی عقیدہ ہے وہاں انہوں نے اللہ کے رسول کافتل اور خون حال کی بھی عقیدہ ہے وہاں انہوں ہے۔

تیسرے معنی میہ بیں کہ آپ بیلائی کی بینصوصیت ہے کہ آپ بیلائی کے لئے حرم مکہ میں کفار کے ساتھ قبال حلال ہونے والا ہے جیسا کہ فتح مکہ میں کفار کے ساتھ قبال حلال ہونے والا ہے جیسا کہ فتح مکہ میں ایک روز کے لئے آپ بیلائی سے احکام حرم اٹھا گئے گئے تتے اور کفار کا قبل حول کر دیا گیا تھا ہوئے عبد اللہ بن خطال کو فتح مکہ کے دن اس وفت قبل کر دیا گیا جب کہ وہ بیت اللہ کے پردوں سے چمٹا ہواتھ، بیخص قریتی تھا لوگ اس کو ذوقعیوں کہا کرتے تھے، آنحضرت بیلائی کے تھم سے اس کو ابو برزہ بن سعید بن حرب اسلمی نے قبل کر دیا، اس نے اپنے مسلمان ہونے کا اظہار کیا تھا اور چندروزوی کی کتابت بھی کی تھی گئی مگر بعد میں مرتد ہوگیا اور رسول اللہ بیلائی کی شان میں گتا فی کہا کہا ہے۔ کرنے لگا تھا اور کہتا تھا کہ محمد بیلائی ہونے کا طرف سے بوتی ہے۔

- ح (مَزُرُ بِيَكِلْشَيْلِ = -

و و البدو مَا ولَدَ بعض مفسرين في ال ي حفرت أوم اور ان كي صلى اولا ومراد في ہے اور بعض كے زويك عام ہے ہر باب اور اس كى اولا داس ميں شامل ہے۔

لَقَدُ حَلَقَنَا الْإِنْسَانَ فِي كَبَدِ لِينَ انسان كَى زَرْ گَمِنت ومشقت اورشدا كدے معمور ہے، يہجواب ہم ہے۔
اَوْ اِطْعَامٌ فِنِي يَوْمٍ ذِي مَسْغَبَةٍ ، مسغبة بھوك، اور ذى مسغبة بھوك والے دن اور ذا متربة (مثى والا) ليتى وه شخص جونقر وغربت كى وجہ ہے زمين پر پڑار ہتا ہو، اس كا گھر يار پھے تہ ہو، مطلب به كہ كى غلام كو آزاد كرناكى بھوك كو، رشته دار يہ بيتم كوكھ ناكھ نا يہ دشوارگز ارگھائي ميں واض ہونا ہے جس كے ذريجا انسان جہم ہے تھ كر جنت ميں جا پہنچ گا يہتم كى كفائت و يہ بھى بڑے اگر كا كام ہے اور اگر وہ رشتہ دار بھى ہوتو اس كى كفائت كا اجر بھى دگنا ہے ايك صدقة كا اور دومر اصدر حى كا اس طرح غلام آزاد كرنيك بھى صديث شريف ميں بؤى فضيلت آئى ہے آج كل اس كى ايك صورت كى مقروض كو قرض كے بوجھ سے نجات دل و ين بھى ہوسكتى ہے، يہ بھى ايك شم كا فكِ د قبہ ہے۔



مِورَةُ التَّهُمِينَ وَهُيَ مِنْ اللهِ

سُورَةُ الشَّمْسِ مَكِّيَّةٌ خَمسَ عَشرَةَ ايَةً. سورة واشمس على ہے، بندره آبیس بیں۔

لِيسْ عِلْقُهُ النَّهُ الرَّحْ عَنْ الرَّحِيةِ وَالشَّمْسِ وَضَحْهَا أَنْ عَنْ عَنْ وَالْقَمْرِ إِذَا لَهُ النَّا الْمَا عَنْدَ عُرُوبِهَا وَالنَّهَ الْمَا الرَّحْ النَّفَاعِةِ وَالْيُلُ النَّا الْمَا الْمَا الْمَا الْمُعَلَى الْمُلْكَةِ وَالْمَا الْمَا الْمَا الْمَا الْمَا الْمُعَلَى الْمُلْكَةِ وَالْمُعَلَى الْمَلَمَةِ وَالْمُعَلِيمَ اللَّهُ الْمُعَلَى الْمُلْكَةِ وَالمَّعْلِيمَ اللَّهُ الْمُعَلِيمَ الْمُعْلِقَةَ وَالْمُعَلِيمَ الْمُعْلِقَةَ وَالْمُعَلِقَةَ وَمَا فِي النَّلاَةِ مَصْدَرِيَّة او بِمَعْنَى الْمُعْلِمَ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ ا

سبعتری فی شروع کرتا ہوں اللہ کے نام ہے جو بڑا مہر بان نہایت رحم والا ہے، سورج اور اس کی روشی کی قسم او چاند کی قسم جب وہ سورج کے پیچھے آتا ہے، لینی اس کے غروب ہوئیکے بعد طلوع ہوتا ہے اور دن کی قسم جب وہ اب ارتفاع کے ساتھ سورج کو نمایاں کردیتا ہے اور قسم ہے دات کی جب وہ سورج کو اپنی تاریکی کے ذریعہ چھپالیتی ہے اور إد تیوں جگہ مخض ظرفیت کے لئے ہے اور عامل (إفا) میں فعل قسم ہے اور آسان اور اس ذات کی قسم جس نے اسے قائم کیا او

ز مین کی اوراس ذات کی شم جس نے اسے بچھایا،اور شم ہے تنس کی اوراس ذات کی جس نے اس کی تخلیق کو درست کی اور نفس جمعتی نفوس ہےاور مانتیوں جگہ مصدر پیہ ہے یا جمعتی مَنْ ہے، پھراس کی بدکاری اوراس کی برہیز گاری کا الہام فرمایا لیعنی خیر وشر کے دونوں طریقے واضح فر مائے اور تقو ک^ا کوفواصل کی رعابیت کی وجہ سے ،مؤخر کیا ہے ،اور جواب تشم فَسد اَفْسلَحَ ے جواب قتم سے لام طول کلام کی وجہ سے حذف کر دیا گیا ہے، یقینًا وہ مراد کو پہنچا جس نے اس نفس کو گنا ہوں سے پاک كرليااوريقيناً نا مرا د مواوه جس نے نفس كو معصيت ميں د باديا " ذَيشْهَا" اصل ميں دَمسَّسَهَا تفاد وسر يے مين كۆتخفيفا الف سے بدل دیا ، اور قوم ثمود نے اپنے رسول صالح عصلاً اللہ کی اپنی سرکشی کے سبب تکذیب کی جب کہ اس قوم <u> کے شقّ ترین شخص نے</u> جس کا نام فُسداد تھااپنی قوم کی رضامندی سے اونٹنی کی کونچیں کا شنے کی طرف سبقت کی ، توان ے اللہ کے رسول صالح علیق کا اللہ کی اللہ کی اونمنی ہے بچو (یعنی اس کو بدنیتی سے ہاتھ نہ لگانا) اور اس کی باری کے دن میں پانی چینے سے خبر دار رہنا اور ایک دن اس کی باری کا تھا اور قوم کے لئے ایک دن تھا سوانہوں نے اس صالح عَلا ﷺ لَا الله لِللهِ لَا اللهِ اللهِ عَلَى اللهِ بِات مِين كه بياللَّه كى جانب ہے ہے اگروہ اس كا خلاف كريں گے تو اس پرنزول عذاب مرتب ہوگا تو پھرانہوں نے اس اونمنی کو ہلاک کر دیا تعنی اس کونل کر دیا تا کہ اس (اونمنی) کی پانی پینے کی باری خالص اُن کے لئے ہوجائے تو ان کے پروردگار نے ان کے گناہوں کے سبب ان پر ہلاکت نازل فرمائی پھراس ہلا کت کو ان کے اوپر عام کردیا کہ ان میں ہے کسی کو ہاقی نہ چھوڑ ااور اللہ تعالیٰ کواس کے (برے) انجام کا خوف نہیں (وَ لا) میں واواور فادونوں ہیں۔

عَجِقِيق يَرْكِيكِ لِيَسَهُ مِيلُ تَفْسِلُونَ فَضِيلُوكُ فَوَالِلا

قِحُولِ ﴾ وَضُحِهَا، الصَّحُوَةُ، ارتفاع النهار،اور الصُّحٰى بالضهرو القصر ارتفاع النهارے برده کراور اَلصَّحَاءُ فتہ اور مرکے ساتھ وہ وقت جب کہ دن نصف النہار کے قریب بھنچ جائے۔

قِحُولَیَ ؛ والمنهادِ إِذَا جَلْهَا ، إِذَا جَلْهَا کُضمیر مرفوع متنتریاتونهار کی طرف یاالله کی طرف را جع ہےاور ضمیر بارزمنصوب یا تو شمس کی طرف راجع ہے بیاظلمت کی طرف۔

عِوْلَى : لمجرد الظرفية بياضافت الصقت الى الموصوف كيل عهد اى الظرفية المجردة عن الشرط.

غِوْلِي، فَذَ أَفْلَحَ يه جواب سم ب، حذفت منه اللام لين قد پر سطول كلام كى وجه الم حذف كرويا كيا ب، ماضى نبت جب جواب سم واقع بوتواس برلام اورقد لا ناضرورى ہوتا ہے؛ البنة صرف قد بربھى اكتفاجائز ہے۔

ؾٙڣ<u>ٚؠؙڔۅۘؾۺ</u>ٛڕڿ

والقمرِ إِذَا تَلْهَا لَيْ مِي سورج غروب ہونے كے بعدوہ طلوع ہوجيبا كرمبينے كے نصف اول ميں ہوتا ہے۔ وَ السّماءِ وَمَا بَنْهَا لَيْ فِي اس ذات كي شم جس نے اس كو بنايا ،اس معنى كے اعتبار سے مَا بمعنى مَنْ ہے، اورا گر ترجمہ بيكيا جائے كہتم ہے آسان كي اور اس كے بنائے كي ،اس صورت ميں مَا مصدريہ وگا۔

فَالْهَمَهَا فَجُوْرَهَا وَتَفُوهَا الهام كامطلب يا توبيه كانبين انبياء يبلطنا اوراً سانی كتابون ك ذريعه سے خيروشر كى پېچان كرادى، يا مطلب بيه ہے كدان كى عقل و فطرت ميں خير وشر، نيكی اور بدى كا شعور و ديعت فره ديا؛ تا كه وه نيكی كو اختيار كرين اور بدى سے اجتناب كريں۔

فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللّهِ فَاقَةَ اللّه وَسُفَيهَا صَالَح عَلَيْكَ وَاللّهُ وَسُفَيهَا صَالَح عَلِيْكَ وَاللّهُ وَا

وَلَا يَخَافُ عُفْنِهَا لِينَ الله تعالى دنياكے بادشاہوں اور تسر انوں كی طرت نبيں ہے كہ جوكس قوم كے خلاف كوئى قدم اٹھانے كے وقت بيسوچنے پرمجبور ہوتے ہیں كہ اس اقدام كے نتائج كيا ہوں گے؟ اس كا اقتدار سب ہے بالاتر ہے، اسے اس امر كاكوئى انديشنہيں تھا كہمودكى حامى كوئى اليى طاقت ہے جواس سے بدلہ لينے كے لئے آئے گی۔



سُوْرَةُ الْيَالِ مِكِيَّةً وَهِي الْحَكَ وَعِيْثُورِ الْمُعَالِيَةِ الْمُعَالِينَةِ الْمُعَالِينَةً

سُورَةُ اللّهِ مَكِيّةُ اِحْداى وعِشْرُونَ ايةً. سورة اللّه مَي هِي اكبس آيتي بين ـ

بِسُ حِمَا لِلْهِ الرَّحِ لِمُن الرَّحِيْ مِن الرَّحِيْ مِن الرَّحِيْ مِن الرَّحِيْ وَالأَرْضِ **وَالنَّهَالِإِذَا لَبَعَلْي** ۚ تَكَشَّفَ وظَهَرَ وإذَا فِي الـمَوْضِعَيْنِ لِـمُجَرَّدِ الظَّرُفِيَّةِ والعَاسِلُ فيها فِعُلُ القَسَمِ **وَمَاۤ** بِمَعْنِي مَنْ او مَصْدَرِيَّةٌ خَ**لَقَ الدُّكُرُ وَالْائْتُى** ﴿ ادْمَ وحَـوَّاءَ، وكُلَّ ذَكْرٍ وكُلَّ أَنْثِي وَالحُنْثِي المُشْكِلُ عِنْدَنَا ذَكُرٌ او أَنْشَى عِنْدَ اللَّهِ تَعَالَى فَيَحْنَتُ بِتَكْلِيْمِهِ مَنْ حَلَفَ لاَ يُكَلِّمُ ذَكُرًا وَلَا أَنْثَى إِنَّ سَعْيَكُمْ عَمَىٰكُمُ **لَشَتَىٰ** مُخْتَبِتٌ فَعَامِلٌ لِلُجَنَّةِ بِالطَّاعَةِ وعَامِلٌ لِلنَّارِ بِالمَعْصِيَةِ فَ**اَمَّامَنَ اَعَظَى** حَقَّ اللهِ وَا**تَّقَى** الله وَصَدَّقَ بِالْحُسْنَى ﴿ اللهَ إِلَّا اللهَ إِلَّا اللهَ فِي المَوْضِعَيْنِ فَسَنَيَيِّوُوْ نُهَيِّمَ لِلْيُسْرَى ﴿ لِيسَار وَامَّا مَنْ بَخِلَ وَاسْتَغْنَى ﴿ وَكَذَّبَ بِالْحُسْنَى ﴿ فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْصُسْرِى ﴿ وَمَا نَافِيَةٌ لِكُغْنِي عَنَّهُ مَالُهُ ٓ إِذَا تَرَدَّى ﴿ وَا النَّارِ **إِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدَى اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ ال**َّالِ لِيَمْتَثِلَ أَمْرَنَا بِسُلُوكِ الأوَّلِ وَنَهُينا عَنِ ارُتِكَابِ الثَّنِي **وَاِنَّ لَنَّا لَلْاِخِرَةَ وَالْأُوْلِي** آي الـدُّنْيَا فَمَنُ طَلَبَهَا سِنَ غَيْرِنَا فَقَدُ اَخْطَأ**ْ فَاَنَذَرْتُكُمْ** خَوِّفُتُكُمْ يَ اَبُلَ مَكَّةَ **نَازُاتَلَظَى ۚ بِحَدُفِ إِحْدَى التَّائِينِ مِنَ الْاَصْلِ وقُرِئَ بِثُبُوتِهَا اى تَتَوَقَّدُ لَايصَلَهَآ** يَدْخُدُهُ إِلَّا الْإَشْقَى ﴾ بمَعنى الشَّقِيّ الَّذِيْكَكَذَّبَ النِّبِيّ وَتَوَلَّى ۚ عَنِ الْإِيْمَانِ وَبِذَا الحَصْرُ مُؤُوّلٌ لِقَوْلِهِ تَعَالَى وَيَغُفَرُ مَا دُوْنَ ذَلِكَ لِمَنْ يَّشَاءُ فَيَكُونُ المُرَادُ الصَّلْيُ المُؤْبَدُ وَسَيْجَنَبُهُمَا يُبَعَدُ عَنْهَا الْلَّتْقَى ﴿ بِمعنى التَّقِي الَّذِيْ يُـؤْ**يِّنَ مَالَهُ يَـتَزَكُّي** شَمْنَز كَيُـا بِـه عِنْدِ اللهِ بَانَ يُخرِجَهُ لِلَّهِ تَعَالَى لاَ رِيَاءً ولاَ سُمَعةُ فيكُونُ ركيًّا مندا بـه تَعَالَى وَسِدًا سَرَلَ فِي الصِّدِّيْقِ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عنهُ لَمَّا اشْتَرَى بِلاّلًا المُعَذَّبِ عَلى إيُمَابِه وأعْتقهُ فقال الكُفَّرُ إِنَّمَا فَعَلَ ذلِكَ لِيَدٍ كَانَتَ لَه عِنْدَهُ فَنَزَلَ وَمَ**الِأَحَدِ** بِلاَلِ وَغَيْرِهِ عِنْدَهُ مِنْ يَعْمَةٍ تُحْزَى ﴿ إِلَّا لِكِنْ عَعَلَ دَلِكَ الْمِتَغَلَّاءُ وَجُهِ رَبِي الْكُعْلَى ﴿ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ وَلَسَوْفَ مَرْضَى ﴿ بِمَا يُعَطَاهُ مِنَ الشَّوَابِ فِي الحِدَةِ والايةُ تَشْتَملُ مَنُ فَعَلَ مِثْلَ فِعَلِهِ فَيُبَعَّدُ عَنِ النَّارِ ويُثَابُ. سے ہیں ہے ہے۔ پر جب عن شروع کرتا ہوں القد کے نام سے جو بڑا مہر بان نبایت رقم والا ہے ہتم ہے رات کی جب وہ اپنی تاریکی ے آ سان اور زمین کی ہرشی پر جھا جائے اور شم ہے دن کی جب وہ روشن ہو (لینی) جب کہوہ واضح اور ظاہر ہو، اور إذا دونوں جگہ ظرفیت کے لئے ہےاوراس میں عامل فعل قتم ہےاور مَسا بمعنی مَنْ یامصدر رہےہے اور قتم ہےاس ذات کی جس نے نرومادہ پیدا کئے ، (یعنی) آ دم وحوا ، یا مذکرومؤنث کو بیدا کیا ،اور خنثیٰ مشکل ہمارے نزویک ہے (مگر)القد کے نزویک وہ مذکریا مؤنث ہے لہذا وہ شخص جس نے قسم کھائی کہ وہ مرداورعورت سے بات نہ کرے گاتو وہ خنثیٰ مشکل سے کلام کرنے ے جانث ہوجائے گا، یقینا تمہاری کوشش (یعنی)عمل مختف تھم کے ہیں کچھلوگ طاعت کے ذریعہ جنت کے لئے عمل كرنے والے بیں اور پچھلوگ معصیت كے ذريعيج نبنم كے لئے عمل كرنے والے بیں سوجس نے اللہ كاحق ادا كيا اور اللہ ے ڈرااور سچی بات کی تصدیق کی لیعنی لا إلى الله كى ، دونوں جگد، تو ہم اس كے لئے جنت كاراسته آسان كرويں کے اور جس نے اللہ کے حق میں بخل کیااور اس کے ثواب سے بے نیازی برتی اوراجیمی بات کو جھٹلایا تواس کو ہم سخت راستہ یعنی آگ کے لئے سہولت مہیا کریں گے اوراس کا مال اس کے چھوکام نہ آئے گا جب کہ وہ آگ میں ہلاک ہوجائے گا بے شک راہ دکھانا ہمارے ذمہ ہے لیعنی ہدایت کے راستہ کو گمرا ہی کے راستہ ہے متاز کرنا ، تا کہ اول راستہ پر چل کر ہمارے تحکم کی تعمیل کرے اور ہماری نہی برعمل کرے ثانی راستہ کواختیار نہ کر کے اور بلا شبہ آخرت اور اولی لیعنی و نیا ہماری ہی ملک ے لبذا دنیا کوجس نے ہمارے غیرے طلب کیا اس نے خطا کی ، پس میں نے تم کو اے اہل مکہ! بھڑ کتی ہوئی آگ ہے خبر دار کردیا ہے ،اصل میں ایک تاء کوحذف کر کے ،اور تاء کو ہاتی رکھتے ہوئے بھی ، یعنی تَغَوَقَدُ بھی پڑھا گیا ہے، جس میں صرف وہی بد بخت داخل ہوگا جس نے نبی کی تکذیب کی اور ایمان سے اعراض کیا اور اشقی جمعنی شقی ہے،اور بیہ حصر مؤوّل ہےاللہ تعالیٰ کے قول "ویغفو ما دون دالك لمن يشاء" كى وجہ ہے لبُدادائمی دخول مراد ہوگا، اور اس ہے وہ متقی دوررکھا جائے گا جواینے مال کو عسند اللّٰہ یا ً میز ہ ہونے کی خاطر دیتا ہے اور اتقلٰی جمعنی تقبی ہے، ہایں طور کہوہ مال الله کے لئے خرج کرتا ہے نہ کہ دکھانے اور سنانے کے لئے ؛ لہٰذابی خص عند الله پاکیزہ ہوگا اور بیآیت ابو بکرصدیق رضی انتا تعالی کے بارے میں تازل ہوئی جب کہ انہوں نے باال نضافتاً تعالی کواس وقت جب کہ وہ اپنے ایمان کی وجد ے تکلیف میں مبتلا تھے خرید کرآ زاد کر دیا تھا تو کفار نے کہا. ابو بمر نے بیمل اس لئے کیا کہ بلال دھنجانندُ تَعَالِثَةُ کاان پرایک احسان تقاءتوبية يت ، زل بوئي "وَمَا لِأَحَدِ المخ" ليعني بلال وغيره كاان يركوئي احسان نبيس ہے كه جس كابدلها سے چكانا ہو وہ تو صرف اینے رب برتر کی رضا جوئی (بینی) اللہ کی جانب ہے صلہ حاصل کرنے کے لئے پیکام کرتا ہے اور وہ اس ثواب سے ضرورخوش ہوگا، جواس کو جنت میں دیا جائے گااور آیت ہراس شخص پرشتمل ہے جس نے حضرت ابو بکر ریفحانانا مُنالِقَةَ ا جیساعمل کیا تو اس کودوزخ سے دوررکھا جائے گا اوراس کوا جردیا جائے گا۔

- ه (زَرْرُ بِبَالثَهِ ا

عَجِقِيق تَرَكِيكِ لِيسَهُ الْحَاقَفَيِّا أَرِي فَوَائِلا

فِيَوْلِنَى : تَكُلَّ مَا بَيْنَ السّمَاءِ وَالْآرْضِ السمااتاره إلى مَا تَاره على مَعْدل بمحدوف إ

قِولَكُ : لمجرد الظرفية، اي المجرد عن الشرط.

فَيْ وَلَنَّى: آدم وحَوّاء سَلِمُ إِلَّا ال مِن اشاره بك اللَّكر وَ الْأَنْثَى مِن الف المعبدكاب

فِيُولِكُمُ ؛ أَوْ كُلَّ ذَكْرٍ وكلَّ انتنى اس اس اس بات كى طرف اشاره بهكه الذكر و الانتنى كا الف لام استغراق كالبحل

فَيُولِنَ ؛ والخنشى المشكل عندنا، المحنشى المشكل مبتداء باور عندنا خبر، اور عند الله ذكر أو انشى كاظرف به اوربيابك والمقدركا جواب ب-

يَيْكُواكَ، سوال بيب كفنش مشكل ند فركر كيموم بن داخل باورندانل كيموم بن توده إس تقم بين كيدواخل بوا؟ جيكُواليَّنِ: جواب كا خلاصه بيب كيفنش مشكل بهار علم كاعتبار سيب مرالله كعلم كاعتبار سيفنش يا تو فدكر بي يا مؤنث ب، البذابية كراورانش كيموم بين داخل ميفنش كوئي تيبرى جنن نبيل باس كى تائيدالله تعالى كياس قول سيجى بوتى ب "يهبُ لمن يشاء اناثا ويهب لمن يشاء الذكور".

مفعول به محذوف میں ـ

هِ فَكُولِكَ ؛ نُهَيِّلُهُ اس لفظ كاضافه كامقصدا يك سوال كاجواب دينا بـ

بِینُوالْ، فَسَنْیَسِرُهُ لِلْعُسْرِی سے معلوم ہوتا ہے کہ عسو کے لئے بھی یسو ہے، حالانکہ عسو میں یسو کاکوئی مطلب بیں ہے؟

جِينَ لَيْنَ: جواب كاماحسل يب كديهال يسس سے مراداسباب مهيا كرنا ہے جو يسسو اور عسس دونوں كے لئے ہوسكتا ہے لين ہم اس كے لئے اس كے لئے ہوسكتا ہے لين ہم اس كے لئے اليے اعمال آسان كرديتے ہيں جواس كوجنم كى طرف لے جائيں۔

قَوْلَى : وَهذا الْحَصْرِ مؤوّلُ لِين يرحرانِ ظاہرے بھراہوا ہے، اس عبارت کے اضافہ کا مقصد فرقه کُو حله بردکرنا ہے، جن کاعقیدہ ہے کدایمان کے ساتھ کوئی گناہ مفتر ہیں ہے اور استدلال فدکورہ آیت "لَا یَصْلَهَا إِلَّا الْاشْفَی" ہے کرتے ہیں بعنی جہنم میں شقی ترین محفی ہی داخل ہوگا اور شقی ترین کا فرہوتا ہے، مومن داخل نہ وگا اگر چہر تکب گن ہ بیرہ ہی کیوں نہ ہو۔

ح[زمَزَم بِهُ لَشَرَز]≥

ر د کا خلاصہ بیہ ہے کہ دخول سے مرا د دخول مؤید ہے لہٰذا ہیاس کے منافی نہیں کہ گنہگا رمومن جہنم میں داخل ہوا ور بعد میں کال اساحائے۔

چَوُلْنَى : يَتَنَوَّكِي اس مِين دواخمال مِين ايك بدكه يُوثِي سے بدل ہواور دوسرے بدكه يُوثِي كے فاعل سے حال ہو مفسر علام نے متز كيًا كهدكراس بات كي طرف اشاره كرديا كه ان كنز ديك حال ہونارانج ہے۔

تَفَسِّيرُوتَشِينَ حَ

وَالَّيْسِ إِذَا يَعْشَى الْمَحَ تَيْنَ چِيْرُوں کُٽُم کُھائی گئے ہاور مقسم عليہ اِنَّ سَعيَکُمْر لَشَنَّی ہاں کے بعد نیک وہر عی کا ذکر ہے، پھر ہرایک کی تین تین صفت بیان فر مائی ہیں، نیک سعی کی تین صفتیں فَامّا مَنْ اَعْظَی و اتقّی و صَدَّقَ بیان فر مائی ہیں اور سعی بدکی تین صفتیں و اَمّا مَنْ بعل و استعنی و کذّبَ بالحسنی بیان فر مائی ہیں، مطلب بیہ ہے کہ انسان فطری طور پر کسی بدکی تین صفتیں و اَمّا مَنْ بعد کا عادی ہے، بعض لوگ آئی جدوجبد ہے دائی راحت کا سرمان کر لیتے ہیں اور بعض اپنی اسلی نہ کہ کی کام کے لئے سعی اور جدوجبد کا عادی ہے، بعض لوگ آئی جدوجبد ہے دائی راحت کا سرمان کر لیتے ہیں اور بعض لوگ آئی جدوجبد ہے دائی راحت کا سرمان کر لیتے ہیں اور بعض لوگ اپنی ہے کہ ہرانسان جب شی کو افستا ہے تو وہ اپنی نفسی کو تجارت کی در ایجہ دائی عذا ہے تو وہ اپنی اور بعض لوگ ایسے پرلگا دیتا ہے کوئی تو اپنی ہیں کہ اور بعض لوگ ایسے بھی ہوئے ہیں کہ ایک سعی اور محنت ہی ان کی ہلاکت کا سبب بن جاتی ہیں۔

سعی اور مل کے اعتبار سے انسانوں کی قتمیں:

آئندہ آیات میں اللہ تعالی نے سعی اور عمل کے اعتبار ہے انسانوں کے دوگروہ بتلائے ہیں اور دونوں کے تین تین اوصاف ذکر کئے ہیں، پہلا گروہ کا میاب لوگوں کا ہے ان کے تین عمل یہ ہیں، ① راہِ خدا میں خرج کرنا، ② اللہ ہے درنا اور ۞ اچھی بات کے تقدیق کرنا، اچھی بات ہے مراد کلمہ لا اللہ الا الله کی تقدیق ہے۔

ویے جا کیں گے، کیول کہ آس نیامشکل ہونا اٹھال ہی کی صفت ہو سکتی ہے اس لئے کہ نہ خود ذوات اور اشخ ص آس نہوتے ہیں اور نہ مشکل مگر قر آن کریم نے اس کی تعبیر اس طرح فر مائی کہ خودان لوگوں کی ذات اور وجودان اٹھال کے لئے آسان کر دینے جا کیں گے۔ اس میں اس بات کی طرف اشارہ ہے کہ ان کی طبیعتوں اور مزاجوں کو ایسا بنایا جائے گا کہ پہلے گروہ کیلئے اس کی طبیعت بن جا کیں گے ان کے خلاف کرنے میں وہ تکلیف محسوس کرنے گیس گی ، اس طرح دوسرے گروہ کا مزاج ایسا بنا ویا جائے گا کہ اس کو اٹھال جہنم ہی پیند آئیں گے۔ اور اٹھال جنت سے نفرت ہوگی ، ان دونوں گرد ہوں کے مزاج ایسا بنا ویا جائے گا کہ اس کو اٹھال جنبم ہی پیند آئیں گے۔ اور اٹھال جنت سے نفرت ہوگی ، ان دونوں گرد ہوں کے مزاج وی میں یہ کیفیت پیدا کرد ہے کو اس ہے تیسر فرمایا کہ بیخودان کا موں کے لئے آسان ہوگئے۔

وَمَا يُغْدِنِي عَنْهُ مَالُهُ إِذَا تُوَذِّى لِعِنْ جَسِ مال كَي خَاطَر بِهِ مِخْتَ حَقُوقَ واجبه مِن جُل كيا كرتا تفايه مال ان پرعذاب آنے كوفت بجھ كام نددے گا تو ذَى كِفظى معنى كُرْ ھے مِن كَرَجانے اور ہلاك ہونے كے بیں ،مطلب بیہ ہے كہ موت كے بعد قبر میں اور پھر قیامت میں جب وہ جہنم كے كر ھے میں گرتا ہو گا تو بیر مال اس كو پچھٹ نہیں دے گا۔ (معادن)

صحابه كرام مَضِحَاللهُ تَعَالَيْنَهُ جَهِمْم مِهِ حَفوظ مِين:

اس کی وجہ یہ کہ اول تو ان حضرات سے گناہ کا صدور شاؤ و تا دربی ہوا ہے اور پوجہ خوف آخرت کے ان کے حالات سے یہ معلوم ہوتا ہے کہ انہوں نے تو ہر کی ہوگی علاوہ ازیں ان کے ایک گناہ کے مقابلہ یس ان کے اعمال حسنات زیادہ ہیں کہ ان کی وجہ سے بھی یہ گناہ معاف ہوسکتا ہے جیسا کہ خود قرآن مجید یس قرمایا گیا ہے "اِن المحسنات یذھین المسیلات" یعنی نیک اعمال برے اعمال کا گفارہ بن جاتے ہیں اور خود آخضرت یکی تھی جس رہنا ایسا عمل ہے کہ جو تمام اعمال حسنہ پر غالب ہو حدیث میں مسلماء امت کے بارے یس آیا ہے "ھی قوم لا یَشْفی جلیسھم و کا یَخوابُ انبسھم" (صحیحین) یعنی یہ وہ لوگ ہیں جن کے پاس بیضے والا شف ہی اور نام ادنیس ہوسکتا اور جو ان سے مانوس ہووہ محروم نیس ہوسکتا تو جو خص سید لا نمیا ء کا جلیس اور انبس ہووہ کیے شقی ہوسکتا ہے احاد یہ صحیحہ میں اس کی تصریحات موجود ہیں کہ صحابہ کرام تف کا تعالیم الله سب کے سب عذا ہے جہنم سے برئ ہیں خود قرآن مجید میں صحابہ کرام تف کا تعدہ فرمایا ہے۔

اللہ حسنی " یعنی ان میں سے برایک کے لئے اللہ نے حسنی لیمی جنت کا وعدہ فرمایا ہے۔

شان نزول:

وَ فَعَانَهُ لَهُ مَا لِنَا اللّهِ مَا مِنْ فَعَالِمُنَا فَعَالَمُ اللّهِ مِنايا بُواتُق جَبِ لَهُ مَا لِيهِ تقيم بن كو كفار مكه نے اپنا نلام بنايا بُواتُق جب و مسلمان بُو گئة تو ان كوطرح طرح كى ايذا كي ويت تقے حضرت صديق اكبر وَ فَعَالَهُ فَعَالِمَ اللّهُ اللّهِ اللّهُ اللّهُ اللّهُ كَانَ كُوكُفار من عَلَم اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ الللّهُ الللّهُ اللللّهُ الللّهُ الللللّهُ اللللّهُ الللّهُ اللللّهُ الللّهُ اللّهُ اللللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ الل



مُورِةُ الصِّبِي وَكُلِّيمُ وَمُ الصِّبِي الصَّالِمُ الصَّالِينَ السَّالِينَ السَّالِمُ السَّالِمُ السَّالِمُ السَّالِمُ السَّلِمُ السَّالِمُ السَّلِمُ السَّالِمُ السَّالِمُ السَّالِمُ السَّالِمُ السَّلِّمُ السَّلِمُ السَّلِّمُ السَّلِّمُ السَّلِّمُ السَّلِمُ السَّلِمُ السَّلِّمُ السَّلِمُ السَّلِّمُ السَّلِّمُ السَّلِّمُ السَّلِّمُ السَّلِمُ السَّلِّمُ السَّلِّمُ السَّلِّمُ السَّلِّمُ السَّلِّمُ السَّلِّمُ السَّلِمُ السَّلِّمُ السَّلِّمُ السَّلِّمُ السَّلِّمُ السَّلِّمُ السَّلِمُ السَّلِّمُ السَّلِّمُ السَّلِّمُ السَّلِّمُ السَّلِّمُ السّلِمُ السَّلِّمُ السَّلِّمُ السَّلِّمُ السَّلِّمُ السَّلِّمُ السَّلِمُ السَّلِّمُ السَّلِمُ السَّلِّمُ السَّلِمُ السَّلِمُ السَّلِمُ السَّلِمُ السّلِمُ السَّلَّمُ السَّلَّمُ السَّلَّمُ السَّلَّمُ السَّلِّمُ السّلِمُ السَّلِمُ السَّلِّمُ السَّلِمُ السَّلِّمُ السَّلِمُ السَّلِمُ السَّلِمُ السَّلِمُ السَّلِمُ السَّلِمُ السَّلِمُ السَّلِّمُ السَّلِمُ السَّلَّمُ السَّلِّمُ السَّلِمُ السَّلِّمُ السَّلِمُ السَّلَّمُ السَّلِمُ السَّلَّمُ السَلَّمُ السَّلَّمُ السَّلَّمُ ال

سُورَةُ وَالضَّحٰي مَكِّيَّةٌ اِحْدَى عَشرَةَ ايَةً.

سورۂ واضحیٰ کمی ہے، گیارہ آبیتیں ہیں۔

وَلَمَّا نَوْلَتْ كَبَّرَ الْنَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَسُنَّ الْتَكْبِيْرُ اخِرَهَا ورُوِى الأمر به خَاتِمَتَهَا وخَاتِمَةَ كُلِّ سُوْرَةٍ بَعْدَهَا وَهُوَ اَللَّهُ اَكْبَرُ اَوْ لَا إِلَّهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ اَكْبَرُ.

اور جب بیسورت نازل ہوئی تو آپ یکی تھائے نے کیمیر کھی؛ لہذااس کے آخر میں کیمیرسنت قراردے دی گئی، اوراس سورت کے آخر میں اور جب بیسورت نازل ہوئی تو آپ یکی تھی کی البذا اس کے آخر میں اور ہراس سورت کے آخر میں جواس کے بعد ہے کیمیر کا تھم بھی مردی ہے، اوروہ اللّٰه اکبر یا لا الله الا الله واللّٰه اکبر ہے۔

يَسْ عِلْلَهُ النَّهُ النَّهُ النَّهُ وَدَّعَهُ وَقُلاَهُ وَلَا النَّهُ الْمُعَلِّ اللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَم اذَا وَلَيْ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَم اذَا وَلَيْ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَم اذَا لَا مُعَلِّ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَم اذَا لَا اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَم اذَا النَّهُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَم اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَم اذَا النَّهُ اللَّهُ عَلَيْهُ وَسَلَم اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَم اللَّهُ اللَّهُ عَلَيْهُ وَسَلَم اللَّهُ عَلَيْهُ وَسَلَم اللَّهُ عَلَيْهُ وَسَلَم اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَم اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَم اللَّهُ عَلَيْهُ وَسَلَم اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَم اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَم اللَّهُ عَلَيْهُ وَسَلَم اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَم اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَم اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَم اللَّهُ عَلَيْهُ وَاللَّهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ وَاللَّهُ اللَّهُ عَلَيْهُ وَالْمُولِي اللَّهُ اللَّهُ عَلَيْهُ وَاللَّهُ اللَّهُ عَلَيْهُ وَاللَّهُ اللَّهُ عَلَيْهُ وَالْمُ اللَّهُ عَلَيْهُ وَاللَّهُ اللَّهُ عَلَيْهُ واللَّهُ اللَّهُ عَلَيْهُ وَاللَّهُ اللَّهُ عَلَيْهُ وَاللَّهُ اللَّهُ عَلَيْهُ وَاللَّهُ اللَّهُ عَلَيْهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ عَلَيْهُ ولَا اللَّهُ اللَّهُ عَلَيْهُ وَاللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَيْهُ وَاللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَيْهُ وَا عَلَوْ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الل

فِي بَعْضِ الْأَفْعَالِ رَعَايَةً لِلْفَوَاصِلِ.

ت جيئي : شروع كرتا بول الله كے نام ہے جو برا مبر بان نہايت رحم والا ہے بشم ہے شروع دن كى يا پور ہے دن کی اور قشم ہےرات کی جب وہ اپنی تاریکی کے ساتھ چھا جائے یا پرسکون ہو جائے (اے محمد بین علیہ!) تمہارے رب ئے تم کو ہر گزنہیں جچھوڑ ااور نہوہ آپ ہے ناراض ہوا بیسورت اس وقت نازل ہوئی جب آپ پیٹھھٹا ہے پیدرہ روز تک وحی کا سلسعہ منقطع ہوگیا تو کفارنے کہا تھا کہ محمد بلالا کا کوتو اس کے رب نے چھوڑ دیا اور اس سے ناراض ہوگیا ، اوریقینا آپ بلوناللہ کے لئے آخرت دنیا ہے بہتر ہے اس لئے کہ آخرت میں (آپ بلوناللہ کے لئے) عظمتیں ہیں اور عنقریب يقيناً آپ ينفين كارب آپ ينفين كوآخرت ميں خيرے اور بے انتها انعامات ہے نوازے گا، كه آپ ينفين اس ہے خوش ہو جا کیں گے تو آپ پیچھٹا نے فرمایا تب تو میں اس وقت تک رانٹی نہیں ہوں گا جب تک میرا ایک امتی بھی دوزخ میں رہے گا، یہاں تک جواب قشم دومنفی انعاموں کے بعد دومثبت انعاموں پرختم ہو گیا، کیا اس نے آپ پیلی کا کتاب کو پنتیم نہیں پایا آپ بلاقات کے والد کے ،آپ بلاقات کی ولادت یا اس کے بعد فوت ہو جانے کی وجہ ہے اور پھر ٹھاکا نہ فراہم کیا؟ استفہام تقریر کے لئے ہے لین آپ بلوٹھیں کو یتیم پایا اس طریقہ پر کہ آپ بلوٹھیں کو آپ بلوٹھیں کے جیا ابوطالب کے ساتھ ملاویا، اور آپ مین فیل کو اس شریعت سے بے خبر پایا جس پر آپ میلی فیلی اب ہیں تو اس نے آپ ﷺ کی اس کی طرف رہنمائی فرمائی اور آپ میلی نازار پایا بھر آپ میلی کو مستغنی کردیا اس مال غنیمت وغیرہ کے ذرابعہ جس یہ آپ بلی علیٰ نے قناعت کی ،اور حدیث میں ہے کہ غنا مال ومتاع کی کثرت سے نبیس ہے بلکہ غنا تو دل کا غنا ہوتا ہے، لہٰذاتم بھی پیتیم پر اس کا مال وغیر و لے کر سختی نہ کرنا اور نہ سائل کو فقر کی وجہ ہے جھڑ کنا اور اپنے او پر اپنے رب کی نبوت وغیرہ نعمتوں کوظا ہر کرتے رہنا بیان کرتے رہنا ،اور بعض افعال ہے آپ پین پین کی (طرف لوٹے والی) ضمیریں فواصل کی رعایت کی وجہ ہے حذ ف کردی گئی ہیں۔

عَجِقِيق الْزِكْدِ فِي لَيْسَهُ الْحَالَةِ لَفَيْسَارُ كَافِرَا الْإِنْ الْعَالِمَ الْعَلَى الْحَالَةِ الْمِلْ

قِحُولَ مَنْ ؛ صَنحَى ون چِرْ ہے، چِ شت کا دفت، ضحی مذکر دونوں طرح استعمال ہوتا ہے۔ قِحُولَ مَنْ ؛ سَحی (نَصَرَ) ہے ، صنی واحد مذکر غ ئب، اس نے سکون پایا، وہ چھا گیا۔ قِحُولَ مَنْ ؛ وَمَا فَلَی یہ اصل میں فَلَكَ تَقا، مفعول بہ کو ماقبل پر قیاس کرتے ہوئے حذف کر دیا۔ قِحُولَ مَنْ ؛ فَلَی (صن) ماضی واحد مذکر غائب شخت نفرت کرنا۔ قِحُولَ مَنْ ؛ جَزِیْلٌ بہت زیادہ کثیر۔

(مُرَنَّ مِیتَ اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ عَلَیْ اللّٰہ فِيُولَنَى : تَمَّرُ حُوابُ القسم بِمُثْبَتَيْنِ بَعْدُ المَنْفِييْن جَوابِشَم مَا وَدَّعَكَ عَيْرُوعَ بُوكر فَتَرْضي بِثْمَ بُواج، اس ميں جارچيزوں كابيان ہاول دوليعني مَا و دَّعَكَ اور وَمَا قَلَى منفى ہيں اوراس كے بعد وَ لَلَا خِسرَةُ خَيْرٌ لَكَ من الاولى اور لسوف يُعْطِيك ربُّكَ فَتَرْضَى اس شرو چيزول كابيان بي يعنى خيرا خرت اوراعطاءرب اوريدونول

فِيُولِنَ ؛ فَأَمَّا الْمَيْمِيْمَ فَلَا تَقُهُرْ ، ٱلْمَيْمِيْمَ ، فَلَا تَفْهَرْ كَ وجهة معوب (مفعول بمقدم) -

قِجُولَكُ ؛ وحُدِف ضميره صلى الله عليه وسلم في بعض الافعال رعايةً للفواصل اوروه تين افعال بين، 🛈 لَيْخُ فَاوِى اصْلَ مِينِ فَاوْكَ ثَمَّا 🎔 فَهَدَى اى فَهَداك 🕆 فَاغْنَى اى فاغْنْكَ تَمَّاءُ مُدَكَوره تَنْيُول افعال مِين ے ضمیر مفعولی کوفواصل کی رعایت کی وجہ ہے حذف کر دیا گیا ہے۔

ؾٙڣٚٳؙڽؗڔۘٷؚؾۺٛ*ڕ*ڿ

شان نزول:

اس سورت کے سبب نزول کے متعلق بخاری ومسلم میں حضرت جندب بن عبداللہ دَفِحَانَلْهُ مَعَالِينَ کی روایت ہے آیا ہے اورتر مذی نے حضرت جندب ہے روایت کیا ہے کہ ایک مرتبہ نبی ﷺ کی ایک انگلی زخمی ہوگئی اس ہے خون جاری ہوا تو آپ خانف علیٰ ان فرمایا:

وفسى سبيسل السلسه مسا ليقيست هَــلُ أنسب إلّا إضبَـع دُمِيْسب

'' یعنی تو ایک انگلی ہی تو ہے جوخون آلود ہو گئی اور جو تکلیف تخفیے پیٹجی وہ اللّٰہ کی راہ میں ہے''، (اس لئے کی غم ہے؟) نضرت جندب مَضَانَهُ مُنَعَافَ في بيدوا تعلق كرنے كے بعد فرمايا كه اس واقعه كے بعد (كي محدوز) جرئيل امين علي كاوالمثلا تی لے کرنہیں آئے تو مشرکین مکہنے میطعنددینا شروع کردیا کہ محمد (ﷺ) کوان کے خدانے جھوڑ دیا اور ناراض ہو گیا، س پر بیمورت نازل ہوئی ،حضرت جندب وَ اَ کَاندُهُ مَعَالِينَ کی روایت جو بخاری میں ہے اس میں ایک دورات تہجد کے لئے نه انچنے کا ذکر ہے ، وحی کی تاخیر کا ذکرنبیں اور تریڈی میں تہجد میں ایک دورات نداشھنے کا ذکرنبیں صرف وحی میں تاخیر کا ذکر ن من م ہے کدان دونوں میں کوئی تعارض نہیں ، بوسکتا ہے کہ دونوں باتیں پیش آئی ہوں ، راوی نے بھی ایک کو بیان کیا ، بھی دو سرے کواور جس نے آپ میلی کی طعنہ ویا وہ ابولہب کی بیوی ام جمیل تھی، جیسا کہ دوسری روایت میں اس کی م احت موجود ہے،اور تاخیر وحی کے واقعات متعدد مرتبہ پیش آئے ہیں ایک شروع نزول قرآن کے وفت پیش آیا جس کو ں نہ فتر ت وی کو، جاتا ہے ، میسب ہے زیاد ہ طویل تھا ایک واقعہ تاخیر وحی کا اس وقت پیش آیا جب کے مشر کین اور یہود نے

﴿ ﴿ وَمُؤْمَّ بِسَكِنْكُ إِلَى ٢٠

آنخضرت بالقلطة الماروح كى حقيقت كمتعلق سوال كياتها اورآب بالقطية في بعد من جواب دين كا وعده فرها تعامكر انثاءاللدند كہنے كى وجہ سے بچھروز تك سلسلة وحى بندر ہااس پرمشركين نے بيطعندد يناشروع كرديا كەمجد (مَيَّقَ عَلَيُلا) كاخداان سے ناراض ہو گیا اور ان کو چھوڑ دیا ای طرح کا بیروا قعہ ہے جو سورو صحیٰ کے نزول کا سبب ہوا بیضر وری نہیں کہ بیرسب واقعات ایک بی زماندمیں پیش آئے ہوں؛ بلکه آگے بیچھے بھی ہو سکتے ہیں۔ (معارف)

وَلَلْآخِوَةُ خَيْرٌ لَكَ مِنَ الْأُولَىٰ بعض مفسرين نے آخرت اوراولی سے دنیاوآخرت مرادلی ہے اور بعض ديمرمفسرين نے اولی سے ابتدائی دوراور آخر ق سے بعد کا دور مرادلیا ہے، یہ خوشخبری الله تعالیٰ نے آنخضرت پین اللہ کوایس حالت میں دی تھی جب کہ چند متھی بھرافراد آپ میلائیٹیٹ کے ساتھ تھے، ساری قوم آپ میلوٹیٹ کی مخالف تھی ، بظاہر کامیابی کے آٹار دور دور تک نظر نہیں آرہے تنے اسلام کی متمع مکہ میں شمار ہی تھی اور اس کو بجھانے کے لئے جاروں طرف سے طوفان اٹھ رہے تھے اس وقت الندنے ا بے نبی میلانظیما سے فرمایا کدابتدائی دور کی مشکلات ہے آپ میلانگیا کی عزت وشوکت اور آپ میلانگیا کی قدر ومنزلت برابر برحتی چلی جائے گی اور آپ بین الفاقاتان کا نفوذ واثر پھیلتا چلا جائے گا ، پھریہ دعدہ صرف دنیا ہی تک محدوز نہیں ہے اس میں بیدوعدہ بھی شامل ہے کہ آخرت میں جومر تبہ آپ بینٹھٹٹا کو ملے گاوہ اس مرتبہ ہے بھی بدر جہا بڑھ کر ہوگا جود نیا میں آپ بیٹٹھٹٹا کو حاصل ہوگا،طبرانی نے اوسط میں اور بیبی نے دلائل میں ابن عباس تضعَات تعالیج کی روایت نقل کی ہے کہ حضور بھڑ تھی نے فرہ یا میرے سامنے وہ تمام فتوح ت پیش کی گئیں جومیرے بعدمیری امت کوحاصل ہونے والی ہیں اس پر مجھے بڑی خوشی ہوئی ، تب اللہ تعالیٰ نے بیارشادنازل فرمایا کہ آخرت تمہارے لئے دنیا ہے بہتر ہے۔

وَكَسَوْفَ يُسفِطِيْكَ رَبُّكَ فَنَسرْطسى يَعِنْ آب المَعْقَدِ كارب آب المَعْقَدَة كوا تناد عكاكرا ب المعتقدة الانس ہوجا کیں ،اس میں حق تعالیٰ نے بیٹھین کر کے نہیں بتلایا کہ کیاویں گے؟ اس میں اشارہ عموم کی طرف ہے کہ آپ میلانی ج کی ہر بیندیدہ چیزاتنی عطاکی جائے گی کہآ پے خوش ہوجا ئیں گے،آپ پینٹیٹٹیٹا کی مرغوب چیزوں میں اسلام کی ترقی ، دین اسلام کا عام طور پر دنیا میں بھیلنا دغیرہ وغیرہ سب داخل ہیں ، یعنی اگر چہد ہے میں پھھتا خیر ہوگی کیکن وہ وفت دورنہیں کہ جب آپ بلان میں ایس بلان میں کے رب کی عطا و بخشش کی وہ ہارش ہوگی کہ آپ بلان میں خوش ہوجہ تمیں گے ہیروعدہ آپ ﷺ کی زندگی ہی میں اس طرح بورا ہوا کہ سارا ملک عرب جنوب کے سواحل سے لے کرشال میں سلطنت روم کی شامی اور سلطنت فارس کی عراقی سرحدول تک اور مشرق میں خلیج فارس ہے لے کر مغرب میں بحراحمر تک آپ بلون کا اگر کے زیر نگین ہو گیا ،عرب کی تاریخ میں بیسرز مین پہلی مرتبہ ایک قانون اور ضابطہ کی تابع ہوگئی تھی ، جو طاقت بھی اس ہے تکرائی و دیاش یاش ہوکررہ گئی،لوگوں کےصرف سربی اطاعت کے لئے نہیں جھک گئے بلکہان کے قلوب بھی مسخر ہو گئے پوری انسانی تاریخ میں اس کی نظیر نہیں ملتی کہ ایک جاہلیت کی تاریکی میں ڈو بی ہوئی تو مصرف77سرسال کے اندراتی بدل گئی ہو،اس کے بعد آپ ﷺ کی بر با کی ہوئی تحریک اس طاقت کے ساتھ اٹھی کہ ایشیا ، افریقہ اور بورپ کے ایک براے جھے پر چھا کی —— ح (فَئزَم بِبَنَاشُورَ) ٢٠٠٠

اور دنیا کے گوشے گوشے میں اس کے اثرات بھیل گئے یہ کچھتو اللہ تعالیٰ نے اپنے رسول ﷺ کو دنیا میں عطافر مایا اور ، خرت میں جو کچھءطا کرے گااس کی عظمت کا تصور بھی کوئی نہیں کرسکتا۔

حديث شريف مين بيك جب بيآيت تازل بمولَى تو آپ ﷺ في ايا "إذًا لا ارطب و واحد من امتى في الغار " يعنى جب به بات بيتو مين ال ونت تك راضى قد بول كاجب تك ميرى امت كاليك فرد بهى جهنم مين رب كا_

صحیح مسلم میں حضرت عمرو بن عاص دَفِحَا مُنفُهُ تَغَالِثَ کی روایت ہے کہ ایک روز رسول الله مَالِظَافِیْن نے وہ آیت تلاوت فرمائي جوحضرت ابراتيم عَالِجَلَة طَالِيَكُ كُمْ تَعَلَق بِ "فسمن تبعني فانه مني ومن عصاني فانَّك غفور رّحيم" كم دوسرى آيت تلاوت فرمائى جس ميس حضرت عيسى عَلَيْ الله الله كاقول "إن تمعذبهم فَإِنَّهم عبادك " كِهر آب الله الله النهائية ال دعا کے لئے دونوں ہاتھ اٹھائے اور گربیوز اری شروع کی اور باربار فرماتے تنے "اللّٰہ مرامتی امتی" حق تعالیٰ نے جبرئيل امين علافة كلا فلاتنظر كو بهيجا كه آپ ہے دريافت كريں كه آپ ينفظ كائيل كيوں رويتے ہيں؟ (اور يہ بھی فرمايا كه اگرچه جمیں سب معلوم ہے) جبرئیل امین علیہ لائول ایک آئے اور سوال کیا، آپ بلون کا ان کے فرمایا کہ میں امت کی مغفرت جا ہتا ہوں حق تعالی نے جبرئیل امین علیج کا فالنظر ہے فر مایا کہ پھر جا وَاور کہددو کدانند تعالیٰ آپ مِلِق کی شاہر مات میں کہ ہم آپ الفائلية كوآپ الفائلية كامت كے بارے ميں راضى كروي كاورآپ الفائلية كورنجيده نه كريں كے۔ أكَمْرِينجِدْكَ يَتِيمُنا فَاوْى فَعِنْ آبِ النَّيْعَةَ وجهورُ ويناورا بنَ وَتَعَقَدُ عاراض موجان كاكياسوال؟ بم تواب المنظامة الله الله وقت سے مهر بان بیں جب آپ بیٹی پنتم بیدا ہوئے تھے آپ بیٹی پیٹیا ابھی بطن مادر میں چھ ماہ ہی کے تھے کہ آپ ﷺ کے والد ماجد کا انتقال ہوگیا تھا، اس لئے آپ نیٹھٹیلا و نیامیں یتیم کی حیثیت سے تشریف لائے مگر اللہ تعالیٰ نے ایک دن بھی آپ ﷺ کو ہے سہارانہیں جھوڑا، جو سال کی عمر تک والدہ ماجدہ نے آپ ﷺ کی پرورش کی ،ان کی شفقت ہے محروم ہوئے تو آٹھ سال کی عمر تک آپ ﷺ کے جدامجد نے آپ ﷺ کی تگرانی اور برورش فرمائی اور نہ صرف ہیا کہ پرورش فرمائی بلکه ان کوآپ بلنظ عَلَیّا پرفخرتھ اور وہ لوگوں ہے کہا کرتے تھے کہ میرا بیر بیٹا ایک دن دنیا میں بڑا نام پیدا کرے گا جب دارا کا بھی انقال ہو گیا تو آپ نیٹھ کا بھی جی ابوطالب نے آپ نیٹھ کی کفالت اپنے ذمدلے لی اور آپ نیٹھ کھی کے ساتھ الی محبت کا برتا ؤکیا کہ کوئی باپ بھی اس سے زیادہ نہیں کرسکتا جتی کہ نبوت کے بعد ساری قوم آپ بیٹٹٹٹٹٹ کی وشمن ہوگئی تھی اس وقت دی سال تک وہی آپ ﷺ کی حمایت میں سید سپر رہے۔

وَوَجَدَكَ صَالًّا فَهَدَى لَفظ صال معتى كمراه يجمى آتے بين اور ناواقف وي خبر كيمى، يہال دوسر معنى مراد بیں کہ نبوت سے پہنے آپ بالفائق شریعت البید کے احکام اور علوم سے بے خبر تھے، اللہ نے آپ بالفائق کو منصب نبوت پر ف مز فرما كرآب يتوفين كرجهما كي فرما كي- وَوَجَدُكَ عَائِلاً فَاغْلَى "وغَیٰ کرنے" کامطلب ہے کہ ہم نے آپ ﷺ کواپے سواہرایک ہے ہے نیاز کردیا ہی آپ ﷺ کواپے سواہرایک ہے ہے نیاز کردیا ہی آپ ﷺ فقر میں صابراور عنیٰ میں شاکرد ہے خود نبی ﷺ کا بھی فرمان ہے کہ تو نگری ساز دسامان کی کثر ت کا نام نہیں اصل تو نگری دل کی تو نگری ہے۔ (صعبے مسلم کتاب الزکون)

وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثَ، حَدِّثْ تحدیث ہے مشتق ہے اس کے معن بات کرنے کے ہیں ، مطلب یہ کہ آپ وَ اَمَّا اِللّہ کی نَعْمَوں کا لوگوں کے سامنے ذکر کیا کریں ، کہ یہ بھی شکر گذاری کا ایک طریقہ ہے حتی کہ آ دمی جو کسی پراحسان کرے اس کا بھی شکرا واکرنے کا تھم ہے۔

مستعلی المراد کاشکرادا کرنا واجب ہے، مالی نعت کاشکر ہیہ کہ اس مال میں سے پچھاللّہ کے لئے اخلاص نبیت کے ساتھ خرج کرے اور نعمت بدنی کاشکر ہیہ ہے کہ جسمانی طاقت کو اللّہ تعالیٰ کے واجبات ادا کرنے میں صرف کرے۔



200

سُوْرَةُ الْاِنْتِرَاكَ عَلَيْهُ وَعَيْدَالِ الْمِنْتِرَاكَ عَلَيْهُ وَعَيْدَالِهِ الْمِنْ

سُوْرَةُ المُرنشر ح مَكِيَّةٌ ثَمَانُ ايَا ت.

سورة الم نشرح ملى ہے، آٹھ آبیتیں ہیں۔

بِسْ عِلَاللَهُ الرَّحِ مِن الرَّحِ عَيْرِ الرَّحِ الْهِ الرَّحِ الْهِ الْهُ مَا تَقُرِبُ وَ وَغَيْرِ بَا وَوَضَعْنَا حَعَلَنَا عَنْكَ وَمَ رَكَ اللَّهِ الْهَ وَعَيْرِ بَا وَوَضَعْنَا حَعَلَنَا عَنْكَ وَمَ رَكَ اللَّهُ الْهَ وَعَيْرِ بَا وَوَضَعْنَا حَعَلَنَا عَنْكَ وَمَ الْمَا اللَّهُ مَا تَقَدَّمَ مِن فَنْهِ فَ وَمَا تَاَخْرَ وَوَفَعْنَاللَكَ ذَلَاكَ أَلْكُ وَلَا اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ مَا تَقَدَّمَ مِن فَنْهِ فَ وَمَا تَاخْرَ وَوَفَعْنَاللَكَ وَلَا اللهُ عَنْهُ وَالنَّهُ اللهُ عَلَيْهِ وَالخَطْبَةِ وَغَيْرِ بَا فَإِلَى مَعْ الْعُسْرِ الشِيدةِ لَيُسُولُ اللهُ عَلَيْهِ فَاللهُ وَالخَطْبَةِ وَغَيْرِ بَا فَإِلَى مَا الْعُسْرِ الشِيدةِ لَيُسُولُ اللهُ عَلَيْهِ فَا الْعُسْرِلُيلُ وَاللّهُ وَاللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ قَاسَى مِنَ الْكُفَارِ سَدَةً ثُمْ حَصَلَ لَهُ الْيُسُرُ بِنَصْرِهُ عَلَيْهِمْ فَاذًا فَرَغْتَ مِن الصَلوةِ فَالْعَبُ فَى الدُعَاء فَواللّهُ وَالْمُولِ اللّهُ عَلَيْهِ فَى الدُعَاء وَالْمُولِ اللّهُ عَلَيْهِ فَاللّهُ وَسَلّمَ قَاسَى مِنَ الْكُفَارِ سَدَةً ثُمْ حَصَلَ لَهُ الْيُسْرُ بِنَصْرِهُ عَلَيْهِمْ فَاذًا فَرَغْتَ مِن الصَلوةِ فَالْعَبُ فِي الدُعَاء وَاللّهُ وَلّهُ وَاللّهُ وَلَا اللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَلَا اللّهُ وَاللّهُ وَلَا اللّهُ وَاللّهُ وَلَا اللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَالْعُولُولُوا وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ

سیند نبوت وغیرہ کے لئے نہیں کھول ویا استفہام تقریری ہے، یعنی کھول دیا، اور ہم نے تجھ سے تیرا وہ ہو جھاتار دیا

جس نے تیری پینے تو رُدی یعنی جس نے تیری کمر کوگرال بار کر دیا، اور بیایا ہی ہے جیسا کہ اللہ تعالی کا قول "لید ہے سو

لک المللہ ما تقدم میں ذَنبِکَ وَمَا تَأْخَوَ "اور ہم نے تیراؤ کر بائد کر دیا ہاور بیالیا ہی ہے جیسا کہ اللہ تعالی کا قول "لید ہے سو

لک المللہ ما تقدم میں ذَنبِکَ وَمَا تَأْخُو "اور ہم نے تیراؤ کر بائد کر دیا ہاور کہا اِن اِن واق مت میں اور تشہدا ور خصرہ فیرہ میں میرے ذکر کے ساتھ تیرا بھی ذکر کیا جاتا ہے بقیناً مشکل کے ساتھ آسانی ہے ہے شک مشکل کے ساتھ اسانی ہے ہو شک مشکل کے ساتھ آسانی ہے ہو آسانی حاصل ہوئی "پکو آسانی حاصل ہوئی "پکو آسانی حاصل ہوئی "پکو ان پر فنج دے کر ، اور جب آپ نماز سے فارغ ہو جا کیں تو دعا میں کوشش سیجے ، اور این درب ہی کی طرف توجہ دکھنے ان پر فنج دے کر ، اور جب آپ نماز سے فارغ ہو جا کیں تو دعا میں کوشش سیجے ، اور این درب ہی کی طرف توجہ دکھنے یہ خوا کی عاجزی انکساری سیجے۔

٥ (وَالْوَالِيُّهُ بِهِ النَّارُ) ٥٠

عَجِفِيق الْمِنْ الْمُ لِلْمَا لِمَا الْمُ لَكُونِ الْمِنْ الْمُ الْمُ لَفِينَا الْمُ الْمُؤْلِدُ لَ

فَيْوَلِيْ ؛ اَلَهْ نَشْوَحْ لَكَ صَدُوكَ استفهام تقریری ہے، اس لئے کہ لَمْ نشوح منفی ہے اور اس پراستفہم انکاری داخل ہے، البندامنفی کے نفی ہوئی اور منفی کے نفی تقریر کا فائدہ دیتے ہے مفسر علام نے ای شوحنا کہدکر ای کی طرف اثبارہ کیا ہے۔ فی فیولی ، وغیر ہا اسے شق صدر کی طرف اثبارہ ہے۔ فیولی ، وغیر ہا اسے شق صدر کی طرف اثبارہ ہے۔

قِعُولِنَ ، وِذَرٌ كسره كے ساتھ - بوجھ، كرانى -

قِرُ لَنَى ؛ وهذا كقوله "لِيَغْفِر لَكَ الله النع" مطلب يه كرش طرح ليغفر لَك الله مَا تقدم الني ظاهر مع وال المحال الله مَا تقدم الني ظاهر عن وال الله مَا الله مَا تقدم الني ظاهر عن والتي المحال الله مَا الله مَا الله مَا الله عن الله عن

تَفِيْدُوتَشِيحَ عَ

اَلَمْ نَشْوَحُ لَكَ صَدُوكَ مَ كَدْشَة سورت مِينَ آپ برتين انعاموں كاذكر تفااس سورت ميں مزيد تين احسانات كاذكر به ان ميں سے بہلاسيد كھول دينا ہاں كامطلب ہے سينے كامنوراور فراخ ہوجانا، شرح صدر ہوجانا، تاكد ق واضح ہوكرول ميں سا جائے اس منہوم ميں قرآن كريم كى بيآيت "فَسمنْ يُود اللّه أَنْ يَهديه يشوح صَدْرَةُ لِلْاسلام" (سورة انعام) جس كوالله بدايت سے نواز نے كاراده كرتا ہائى اسين اسلام كے لئے كھول ديتا ہے، اس شرح صدر ميں وه شق صدر بھى آجات ہومعتبر روايات كى روسے دومرتبہ نى نيون تاك كا كيا كيا ايك ايك مرتبہ بجين ميں جب كدآپ نيون تا عرك جو متے سال ميں تھ، حضرت بجرئيل عليد كا تا ورآپ نيون تا كا كيا كيا ايك ايك مرتبہ بجين ميں جب كدآپ نيون تا عرك بوجرانسان كے اندر موجود ہوتا ہے بھراسے دھوكر بندكرديا۔

رموكر بندكرديا۔

وَوَضَعْمَا عَلَكَ وِذْرَكَ الَّذِي اَنْفَضَ طَهُوكَ ، وِزْدُّ كَمَعَىٰ بوجھ كے ہیں اور تقض كے معیٰ کمرتو ژدیئے لیمیٰ کمرجھکا دی تھی ہم نے اس کو آپ سے ہٹا دیاوہ بوجھ دینے ہیں ،اس آیت ہیں ارشاد میہ کے کدوہ بوجھ جس نے آپ ﷺ کی کمر جھکا دی تھی ہم نے اس کو آپ سے ہٹا دیاوہ بوجھ کی تھی جھکے تھی ۔ بعض مفسرین کہتے ہیں کہوہ بوجھ جائز اور مباح کام ہیں جن کو بعض اوقات آپ ﷺ نے قرین حکمت و مصلحت ہجھ کر

=[زمَزُم بِهَاتَهِ إِ

اختیار فرمایا بعد میں معلوم ہوا کہ وہ مصلحت کے خلاف یا خلاف اولی تنصر سول اللہ ﷺ کواپٹی علوشان اور تقرب الہی میں خاص مقدم حاصل ہونے کی بنا پرایک چیزوں پر بھی سخت رہنے وملال اور صدمہ ہوتا تھا حق تعالیٰ نے اس آیت میں بشارت سنا کروہ بوجھ آپ سے ہنا دیا کہ ایسی چیزوں پرآپ سے مواخذہ نہیں ہوگا۔

بعض مفسرین کہتے ہیں کہ یہ ہو جھ نیوت ہے تمل چا لیس سالد دورز ندگی ہے متعلق ہاں دور ہیں اگر چداللہ نے آپ ہیں ہیک کو محفوظ رکھا کی بت کے سامنے آپ ہیں گائے ہیں کیا نہ بھی آپ ہیں گائے ہیں گائے ہیں ہونے ہیں کا نہ آپ کا بیان کا سے تاہم معروف متنی میں اللہ کی عبادت اور اطاعت کا نہ آپ ہیں گا کو مجم تھا نہ آپ ہیں گائے کی ، اس لئے آپ ہیں گائے گائے کے دل و د ماغ پر اس چا لیس سالہ عدم عبادت اور عدم اطاعت کا بوجھ تھا جو حقیقت میں تو نمیس تھا لیکن آپ ہیں گئے تھا ہونے کے دل و د ماغ پر اس چا لیس سالہ عدم عبادت اور عدم اطاعت کا بوجھ تھا جو حقیقت میں تو نمیس تھا لیکن آپ ہیں گئے تھا ہونے کہ دار اس کے آپ اس اللہ مسا المعدم عبادت اور عدم اطاعت کا بوجھ تھا جو حقیقت میں تو نمیس تھا لیکن آپ ہیں گئے تھا ہونے کہ مسلور نے اس بوجھ بین کہ دیا ہوئے ہیں کہ دیا بازبوت تھا جے اللہ نے ہاکا کر دیا یعنی اس راہ کی مشکلات برداشت کرنے کا وہ حوصلہ وہ ہمت، وہ اولوالعزی اور وہ وسعت قلب عطافر مادی جو اس منصب عظیم کی قرمدواریاں سنجا لئے کے لئے درکارتھی آپ ہیں گئے ہیں کہ ہوتا سنجا لئے کے لئے درکارتھی آپ ہیں گئے ہیں ہوتا کہ ہوتا کہ ہوتا ہو گئے ہیں ہو تا میں اس آپ ہو تھی ہوتا کہ ہوتا ہا دراگر بغیر الف لام تحریف کے مکر درایا جائے تو دونوں کے مصداق اولگ الگ ہوتے ہیں اس آپ میں سے معلوم ہوا کہ دومرا ایس میں جو اس آپ معدم ہوا کہ ایس کے عالادہ ہے تو اس آپ معدالی الگ ہوتے ہیں اس آپ میں ہوتا ہوں کہ دونو اس کے دونو سانے دونوں کے دونو سانے دونوں کے دونوں کے مصداق اولی کہ اس کے دونوں کے

فَا عَكِنَا ؟ بعض صالحین نے سور ہ الم نشر ہے کہ خواص ذکر کئے ہیں ان ہیں ہے بعض مندرجہ ذیل ہیں اگر کو کی صور ہ الم نشر ہے کوکسی کا نچ یا چینی کے برتن ہیں لکھ کرا در گلاب کے پانی ہے دھو کر چیئے تو اس ہے رنج ، نم اور دل تنگی زائل ہو جائے گی ، اور اگر کسی بھی برتن میں لکھ کر اور دھو کر چیئے تو حفظ وفہم کے لئے مفید ہے اور جو شخص ہر فرض نما زے بعد مذکورہ سورت دس مرتبہ پڑھنے کا التزام کر ہے تو اس کورزق میں سہولت حاصل ہوگی اور عبادت کی تو فیق ہوگی ، اور کسی اہم مقصد کے لئے ب طہارت قبلہ روہ کر بیٹھے اور اس سورت کو اس کی تعداد حروف کی مقدار جو کہ ۱۰ اے پڑھے اور اپنے مقصد کے لئے دی ء کرے تو انشاء اللہ دعاء قبول ہوگی۔ (یہ محرب اور صحیح ہے، صاوی)



سُورَةُ الْتِيْنِ عَلِيَّةً فِي عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ الْتُلْتِياتِ

سُورَةُ النِّينِ مَكِيَّةُ أَوْ مَدَنِيَّةٌ ثَمَانُ ايَاتٍ. سورةُ والنين كي يامدني ہے، آٹھ آيتيں ہيں۔

لِسْسِواللُّهِ السَّرَحُ مَن الرَّحِسِ وَوَالْيَن وَالْمَا كُولَيْن او جَهَلَيْن بِالشَّام بُنْبِتَانِ السَّاكُولَيْن وَطُوْرِسِيْنِيْنَ السَّاكُولَيْن وَطُوْرِسِيْنِيْنَ السَّاكُولَيْنِ السَّاكِ الْمَعْنِ اللَّهُ تَعَالٰي مُوسَى عَلَيْهِ السَّلَامُ عَلَيْهِ ومَعْنى سِيْنِيْنَ السَّبَارَكُ أَوالحَسَنُ بِالاَشْجَارِ المُعْبِرَة وَلَهُ اللَّهُ اللَّ

سینین کی بین اس پہاڑی کہ جس پر موئی علاقہ کا م ہے جو ہڑا مہر بان نہایت رحم والا ہے، شم ہے انجیر کی اور زیتون کی لیمنی کھائے جو نے والے دونوں پھلوں کی ، یافتم ہے دو پہاڑوں کی جن پر (فہ کورہ) دونوں پھل پیدا ہوتے ہیں ملک شام ہیں ، اور شم ہے طور سینین کی بینی اس پہاڑ کی کہ جس پر موئی علاقہ کا اللہ تعالی ہم کلام ہوئے شے اور سینین کے معنی مبارک (یا وہ مقام) جو پھل دار درختوں کی وجہ سے حسین ہو اور شم ہے اس پُر امن شہر کمہ کی اس شیں لوگوں کے زمانۂ جا ہلیت اور اسلام میں مامون ہونے کی وجہ سے ، اور ہم نے جنس انسان کو بہترین معتدل صورت پر پیدا کیا پھر ہم نے اس کے بعض افراد کو نیچوں سے پنج کردیا

یہ بڑھا پے اورضعف ہے کتابہ ہے، چناچہ مومن کاعمل (بڑھا ہے کے زمانہ میں) شباب کے زمانہ کی بنبست گھٹ جاتا ہے، گر اس کے اجرکا سسلہ بدستور جاری رہتا ہے، اللہ تعالی کے قول" آلا اللّٰ فیس آمسنوا" الآیة، کی دلیل ہے، گروہ لوگ جوائیا ن لا نے اور نیک عمل کئے ان کے لئے فتم نہ ہونے والا اجر ہے اور حدیث شریف میں ہے، جب مومن بڑھا ہے کی وجہ ہے اس حالت کو پہنچ جاتا ہے کہ جواس کو عمل ہے عاجز کردیتی ہے قواس کے لئے وہی اجراکھا جاتا ہے جووہ (زمانہ شباب میں) کیا کرتا تھا، بس اے کافر التجے اب یعنی فدکورہ صورت حال کے بعد اور وہ صورت حال، انسان کواحسن صورت میں بیدا کرنا پھر اس کو گھٹیا ترین عمرتک پہنچا دینا ہے جو کہ بعث (بعد الموت) پر قدرت رکھتے پر والمات کرتی ہے روز جزاء کے جمثل نے پر کس چیز نے آمادہ کیا؟ وہ جزا کہ جو بعث اور حساب کے بعد ہوگی، یعنی کس چیز نے تھے اس کی تکذیب کرنے والا بنادیا؟ حالا نظم اس کو برا کا تھا کہ سب سے بڑا فیصلہ کرنے والا ہے، اور نہیں ہے، کیا اللہ تعالی سب حاکموں کا حاکم نہیں ہے؟ بعنی وہ تمام فیصلہ کرنے والوں میں سب سے بڑا فیصلہ کرنے والا ہے، اور میں کہ جزا کا حکم کرنے کا تعلق بھی اسی فیصلہ سے ہاور حدیث شریف میں آیا ہے کہ جو پوری سورہ تین پڑھاس کو 'اہلی و آنا

عَجِقِيق الْمِنْ الْمِينَ الْمُ الْمُ الْمُ الْمُ الْمُ الْمُلِكُ الْمُلْكُ اللّهِ الللّهِ اللّهِ الللّهِ اللّهِ الللّهِ الللّهِ الللّهِ الللّهِ اللّهِ الللّهِ الللّهِ الللّهِ الللّهِ الللّهِ الللّهِ اللّهِ الللّهِ

فَيُولِنَّى ؛ والنَّينِ والزَّينون، وَطُور سِيْنِيْنَ، وَهَذَا البَلَدِ الْآمِيْنِ اللَّهْ الرَّدُوالَ وَتَعَالَى فَا يَكُمُ عَلَيْهُ كَلِيْ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ اللَّنْ عَلَيْهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ عَلِيهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَ

قِیُولِی، وَالنّین و الزّیتون ، تین اور زیتون سے کیامراد ہے؟ اس میں دوتول ہیں، ابن عباس تَعَمَّاتُ النَّامَ ان سے مرادا نجیراورزیون دونوں پھل ہیں۔

فَا عَلَيْكَا ؛ الجير، غذا، دواء، اور پھل، تينوں ادصاف كا جامع ہے، اطباء كى رائے ہے كدا نجير لطيف اور زود ہضم غذا ہے، معده ميں ذيا ده دير نہيں تھہرتا، طبيعت كى تسكين كرتا ہے، بلخم كو كم كرتا ہے گردوں كى تطبير كرتا ہے، نيز ريك مثاند كو خارج كرتا ہے، مثاند كو خارج كرتا ہے، مثاند كو تقويت ديتا ہے، بدن كو فربه كرتا ہے اور جگر اور تلى كے سدوں كو كھولتا ہے، اور بعض حضرات نے كہا ہے كدا نجير كھانا مند كى بد بوكوز ائل كرتا ہے اور بالوں كو دراز كرتا ہے، روح المعانى ميں يہ كى ہے كدا نجير بہترين غذا ہے اگر نہار مند كھايا جائے اور اس كے بعد كچھ ند كھائے ، اور مزيد كلھا ہے كہ يہ كثير النفع دوا ہے، سدوں كو كھولتا ہے جگر كو توكى كرتا ہے ورم طحال كوز ائل كرتا ہے اور عمر اليول ميں نافع ہے ہزال الكلى (ذبول گرده) اور خفقان اور خيق النفس نيز كھائى اور وجع الصدر وغيره ميں مفيد ہے۔ (روح المعانى) اگر خواب ميں كى نے انجير پايا تو اس كو مال حاصل ہوگا اور اگر انجير كھايا تو اس كو ال حاصل ہوگا اور اگر انجير كھايا تو اس كو ال حاصل ہوگا اور اگر انجير كھايا تو اس كو اول دنسيب ہوگ۔ (حسل، صادى)

بعض حضرات نے کہا ہے کہ نین اور زیتون ملک شام کے دو پہاڑ ہیں مفسرعلام نے بہت سے اقول میں سے دوقول مقل کئے ہیں۔

هِوَلَكُم : وطور سينين ياضافت موصوف الى الصفت كيبل عهد

فَيْحُولْكَمْ)؛ فسی بعض افراده بیان بات کی طرف اشاره ہے کہ آیت میں صنعت استخدام ہے اس طریقہ پر کہانسان کواولا جنس انسان کے عنی میں لیا پھر جب د دونساہ کی شمیر کواس کی طرف لوٹایا تو انسان کودوسرے عنی بیعنی بعض افرادانسان کے عنی میں اور پھر شمیر کوانسان کی طرف لوٹایا۔

ێٙڣٚ؊<u>ڒۅۘڗۺٛ</u>ؗٛڕۼ

بعض مضرین نے تین اور زیتون سے وہ مقامات مراد لئے بین جن مقامات بیں یہ پیدا ہوتے ہیں، کعب تفقائدانی اللہ المناز اور قادہ اور ابن زید نفو النی تفائد کی کہتے ہیں کہ تین سے مراد دستن ہے اور زیتون سے مراد بیت المقدس۔
و طور سیندین، صِیْنِنْیْنَ جزیرہ نمائے سینا کا دوسرانا م ہے اس کو صِیْدنا اور صَیْدنا بھی کہتے ہیں۔
لَقد خلقانا الانسان المنح کی ہے وہ بات جس پر خدکورہ چاروں قسمیں کھائی گئی ہیں، انسان کو بہترین سافت پر پیدا کرنے کا مطلب یہ ہے کہ اس کو وہ اعلی درجہ کا جسم عطا کیا ہے کہ جودوسری کسی جاندار مخلوق کوئیس دیا گیا اور اسے فکرونہم اور علم وعقل کی وہ بلندیا یہ قابلیتیں بخش گئی ہیں جو کسی دوسری مخلوق کوئیس بخش گئی ہیں جو کسی دوسری مخلوق کوئیس بخش گئی ہیں۔

حسنِ انسانی کاایک عجیب واقعہ:

ترطبی نے نقل کیا ہے کہ یہی بن موکی ہاتی جو خلیفہ ایوجعفر منصور کے در بار کے خصوص لوگوں میں سے بتھے ،اوراپنی بیوی سے

بہت مجت رکھتے تھے ایک روز چا ندنی رات میں بیوی کے ساتھ بیٹے ہوئے بول اٹھے ،اگر تو چا ندسے زیادہ خوبصورت نہ ہوتو تھے

تین طلاق ، یہ سنتے ہی بیوی پردے میں چلی گئی کہ آپ نے مجھے طلاق دے دی ، بات اگر چہنی دل گئی کی تھی ؛ گر طلاق کا تھم بہی

ہے کہ بنسی نداتی میں بھی واقع ہوجاتی ہے ، عیلی بن مولی نے رات پڑے کرب و بے چینی میں گذاری ، جبح کو خلیفہ وقت ابوجعفر

منصور کی مجلس میں حاضر ہوئے اور رات کا اپنا قصد سنایا اور اپنی پریشانی کا اظہار کیا ، خلیفہ نے شہر کے نقبها ءاور اہل فتوئی کو جمع

کر کے سوال کیا سب نے ایک ہی جواب دیا کہ طلاق واقع ہوگئ ؛ کیونکہ چا ندسے زیادہ حسین ہونے کا کسی انسان کے لئے

امکان ہی نہیں، گرایک علم جوامام ابوحنیفہ وَ تُحَمَّلُاللَّهُ مَعَاكُ کے شاگر دول میں سے تھے خاموش بیٹے رہے منصور نے بو چھا آپ کیوں خاموش بیسی جب بولے اور بسیر اللَّه الرحمن المرحیم پڑھ کرسورہ والنین کی تلاوت کی اور فرہ یا امیر المونین اللہ عالی نے ہرانسان کا احسن تقویم ہوٹا بیان فرمادیا ہے ،کوئی شکی اس سے حسین نہیں ، بین کرسب علماء اور فقہاء جران رہ گئے اور کسی نے خالفت نہیں کی اور منصور نے تھم و رے دیا کہ طلاق نہیں ہوئی۔

ثُمَّر ددناهُ أَسْفَلَ سَافِلِينَ ، مفسرين في بالعموم اس كروومطلب بيان كئة بي ابك بدكهم في است ار ذل العمر لینی بردهای کی ایس حالت کی طرف پھیر دیاجس میں وہ کچھ سوچنے بچھنے اور کام کرنے کے قابل ندر ہا، دوسرے بیاکہ ہم نے اسے جہنم کے سب سے بنچے درجے کی طرف پھیر دیا،لیکن بید دونوں معنی اس مقصود کلام کے لئے دلیل نہیں بن سکتے جسے ثابت کرنے کے لئے بیسورت نازل ہوئی ہے،سورت کا مقصد جزااورسزا کے برحق ہونے پر استدلال کرنا ہے اس پر نہ بیہ بات د لالت کرتی ہے کہانسانوں میں ہے بعض لوگ بڑھا ہے کی انتہائی کمزور حالت کو پنجاد یئے جاتے ہیں اور نہ یہ بات دلالت کرتی ہے کہانسانوں کا ایک گروہ جہنم میں ڈالا جائے گا، پہلی بات اس لئے جز اسزا کی دلیل نہیں بن سکتی کہ برزھا پے کی حالت اچھے اور برے دونوں شم کے لوگوں پر طاری ہوتی ہے اور کسی کا اس حالت کو پہنچنا کوئی سز انہیں ہے جواسے اس کے اعمال پر دی جاتی ہو، ر ہی دوسری بات تو وہ آخرت میں پیش آنے والا معاملہ ہے اسے ان لوگوں کے سامنے دلیل کے طور پر کیسے پیش کیا جا سکتا ہے؟ جنہیں آخرت ہی کی جزاسزا کا قائل کرنے کے لئے بیسارااستدلال کیا جار ہاہے؟اس لئے آیت کالیحیح مفہوم بیمعلوم ہوتا ہے کہ بہترین ساخت پر پیدا کرنے کے بعد انسان اپنے جسم اور ذہن کی طاقتوں کو برائی کے راستے میں استعمال کرتا ہے تو القد تعالی اسے برائی ہی کی تو فیق دیتا ہے اور گراتے گراتے اے گراوٹ کی اس انتہاء تک پہنچا دیتا ہے کہ کوئی مخلوق گراوٹ میں اس حد کو کپنجی ہو کی نہیں ہوتی ، بیالک ایس حقیقت ہے جوانسانی معاشرے کے اندر بکثر ت مشاہدہ میں ہتی ہے، حرص ، طمع ، خود غرضی ، شہوت پرستی ،نشہ بازی ، کمینہ بن ،غیظ دغضب اور ایسی ہی دوسری خصلتوں میں جو ٹوگ غرق ہوجائے ہیں وہ اخلاقی حیثیت سے نی الواقع سب نیچوں سے نیچ ہوکررہ جاتے ہیں ،مثال کے طور پرصرف اسی بات کو لے کیجئے کہ ایک قوم جب دوسری قوم کی دشمنی میں اندھی ہوجاتی ہےتو کس طرح درندگی میں تمام درندوں کو مات کردین ہے، درندہ تو صرف اپنی غذا کے ہے کسی جانو رکا شکار کرتا ہے جانوروں کاقتل عام نہیں کرتا مگر انسان خود اپنے ہی ہم جنس انسانوں کاقتل عام کرتا ہے، درندہ صرف اپنے پنجوں اور دانتوں ہی سے کام لیتا ہے گریداحس تقویم پر پیدا ہونے والا انسان اپنی عقل سے کام لے کرتوب، بندوق، ٹینک، ہوائی جہاز، را کٹ،میزائل،ادرایٹم بم جیسےخطرناک ہتھیار بنا تاہے، تا کہ آن کی آن میں پوری بستیوں کی بستیوں کو تباہ کر کے رکھ دے،اور ا نقام کی آگ خصندی کرنے کے لئے کمینہ بن کی اس انتہاء کو پہنچتا ہے کہ غورتوں کے نتگے جلوس نکالیّا ہے، ایک ایک عورت کو دس دس ہیں ہیں آ دمی! پی ہوں کا نشانہ بناتے ہیں اور بالوں اور بھائیوں اور شوہر دل کے سامنے ان کے گھر کی عورتوں کی عصمت لوٹتے ہیں، بچوں کوان کے ماں باپ کے سامنے آل کرتے ہیں، ماؤں کواپنے بچوں کا خون پینے پرمجبور کرتے ہیں،انسانوں کو زندہ جلانے میں جھجک محسول نبیں کرتے ، ونیامیں وحشی ہے وحشی جانوروں کی بھی کوئی قتم ایسی نہیں ہے جوانسان کی اس وحشت کا ھ (زمَزَم پتکلشَن)>

کسی درجہ میں بھی مقابلہ کرسکتی ہو، شاہ ولی اللہ صاحب انسان کی ای ارذ ل صفت کی طرف اشار ہ کرتے ہوئے لکھتے ہیں کہ: اس کولائق بنایا فرشتوں کے مقام کا پھر جب منکر ہواتو جانو روں سے بدتر ہے۔ (فوالد عندانی)

یمی حال دوسری بری صفات کا بھی ہے کہ ان میں ہے جس طرف بھی انسان برخ کرتا ہے اسپنے آپ کوار ذل المخلوقات ٹا بت کردیتا ہے حتی کہ مذہب جوانسان کے لئے مقدس ترین شکی ہے اس کو بھی وہ اتنا گرادیتا ہے کہ درختوں اور جانوروں اور پھروں کو پو جتے پو جتے بستی کی انتہا ،کو پہنچ کرمر داور عورت کی شرمگا ہوں کو پوج ڈالٹا ہے۔

جن مفسرین نے اسفکل مسافلین سے مراد بڑھا ہے کی وہ حالت لی ہیں جس میں انسان اپنے ہوش وحواس کھو بیٹھتا ہے، وہ
اس آیت کا مطلب یہ بیان کرتے ہیں، جن لوگوں نے اپنی جوانی اور تندر کی حالت میں ایمان لا کرنیک عمل کئے ہوں ان کے
لئے بڑھا ہے کی اس حالت میں بھی وہی نیکیاں تکھی جا تیں گی ، ان کے اجر میں اس بنا پرکوئی کی نہ کی جائے گی کہ عمر کے اس دور
میں ان سے وہ نیکیاں صادر نہیں ہوئیں ، اور جومفسرین اسفل سافلین کی طرف پھیرے جانے کا مطلب ، جہنم کے اسفل ترین درجہ میں کھر نے بیان لا کرعمل صالح کرنے والے اوگ اس سے
درجہ میں کھینک ویا جانا لیتے ہیں ، ان کے نز ویک اس آیت کے معنی یہ ہیں کہ ایمان لا کرعمل صالح کرنے والے اوگ اس سے
مشتنی ہیں ، وہ اس درجہ کی طرف نہیں پھیرے جائیں گے ؛ بلکہ ان کو وہ اجر طے گا جو بھی منقطع نہ ہوگا۔



سُورَةُ الْعَلَقُ مُكِيِّم وَهِي مَعْضَوَةُ الْهُمَّ

سُورَةُ اِقْرا مَكِّيَةٌ تِسْعَ عَشَرَةَ ايةً.

سورهٔ اقرأ مکی ہے، انیس آیتیں ہیں۔

صَدْرُهَا إلى مَالَمْ يَعْلَمْ أَوَّلُ مَا نَزَلَ مِنَ الْقُرْانِ وَذَلِكَ بِغَارِ حِرَاءَ. (رواه البعارى) اس كا مَالَمْ يَعْلَمْ تَك كا ابتدائى حصه، قرآن كاسب سے پہلے نازل ہونے والاحصه ہاور بیزول عارحراء میں ہوا۔

إِسْسِيرِاللهِ الرَّحْسِمُونَ التَّرْجِسْسِيرِ وَإِقْرَأَ أَوْجِدِ السِيرَاءَةَ مُنْتَدِءً ا بِالسَورَيَّإِكَ الَّذِي تَحَلَقَ الْ الخَلَائِقَ خَ**لَقَالِانْمَانَ** الجنسَ مِنْعَلَقِ^ق جَمْعُ عَلَقَةٍ وهِيَ القِطْعَةُ اليَسِيْرَةُ مِنَ الدِّمِ الغَبِيُظِ [قُولً تَاكِيْد لِلاَوَّلِ وَرَبُّكُ الْكُرُوُكُ اللّٰهِ لَايُسَوَازِيْهِ كَرِيْمٌ حَالٌ مِن ضَمِيْرِ اِقْرَأُ الَّذِي عَلْمَ الخَطَّ بِالْقَلْمِ ۗ واَوَّلُ مَنْ خَطَ به إدريس عَنيهِ السَّلامُ عَلْمَالِالْسَانَ الجنس مَالْمَاعِيلَةِ قَبْلَ تَعْلِيبِهِ مِنَ الْهُدي والكِتَابَةِ والصَّناعَةِ وَغيرِهَا كَلَّا حَقًا إِنَّ الْإِنْسَانَ لَيَطْعَى ﴿ أَنْ تَلْهُ اى نَفْسَهُ السَّتَغُنَى ﴿ بِالسَّالِ نَزَلَ فِي أَبِي جَهُسِ ورَأَى عِلْمِيَّةُ وَاسْتَغُسْى سَفُعُولٌ ثَان وَأَنْ رَّاهُ مَفْعُولٌ لَهُ <u>إِنَّ الْحُالَاثِي</u> يَبَا إِنْسَانُ **الْرُّجَعِٰ** الرُجُوعَ تَبِحُويت له فَيُجَاذِي الطَّاغِيَ بِمَا يَسْنَحِقُهُ ۚ أَرْمُيْتُ في سَوَاصِعِهَا الثَلاثَةِ للتَّعَجُّبِ الَّذِي يَنْهَى ﴿ هُوَ ابُو جَهُلِ عَبُدًّا هُوَ السنَّبِيُّ صَمَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَاصَلَ الْمَاكِانَ كَانَ اى المَنْهِيُّ عَلَى الْهُلَاى الْهُ لَكَيْ الْهُلَاكَ الْهَالُوكَ لِلسَّفْسِينِم المَرْبِالْتَقُوٰى اللهُ اللهُ اللهُ السَّاهِي السَّاهِي النَّبِي صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ وَتَوَلَّى عَن الإيْمَار ٱلْمُرْبِيَلُمُ بِإِنَّ اللَّهُ يَرِيكُ مَا صَدَرَ مِنْهُ اي يَعْلَمُ فَيُجَازِيْه عَليه اي إعْجَبْ مِنْه يَا مُخَاطَبُ مِنْ حَيْثُ بَهْيه عَي الصَّلوةِ وبنُ حَيْثُ أنَّ الْمَنْهِيَّ عَلَى الهُداي الْمِرِّ بِالتَّقُوٰي ومِنُ حَيْثُ أنَّ النَّاهِيَ مُكَذِّبٌ مُتَوَلِّ عَنِ الإيْمَار كُلّا رَدُعُ له لَيِنَ لَامُ قَسَمِ لَمُريَنْتَهِ فَعَمَّا هُوَ عَلَيْهِ مِنَ الكُفُرِ لَنَسْفَعَّا بِالنَّاصِيَةِ فَ لَسَبَ بَاصِيَتِه إلى السّر <u>نَاصِيَة</u> بَدَلُ نَكِرَةٍ مِنُ مُعُرِفَةٍ كَالِاِبَةِخَاطِئَةٍ ۗ وَوَصْفُها بَذَٰلِكَ مَجَازٌ أَو المُرَادُ صَاحِبُهَا فَلَيَدُعُ نَالِالله ۖ اى أَهْلَ نَادِيْهِ وَهُو المَجْلِسُ يُنْتَدى يَتَحَدَّثُ فِيهِ الْقَوْمُ كَانِ قَالَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم لَمَّا انْتَهَرهُ حَيثُ ﴿ (فِئزَمُ بِبَالشَّرْزِ) >-

نهاهُ عَنِ الصَّلُوة لَقَدُ عَلِمُتَ مَا بِهَا رَجُلُ أَكْثَرُ نَادِيًا مِنِي لَامْلَانَ عَلَيْك هِدَا الوادِي إِنْ شِئتُ حَيُلا جُرُدًا ورحَالًا مُرُدًا سَنَدُعُ الرَّبَانِيَةُ فَي المَلائِكَةَ الغِلَاظَ الشِّدَادَ لِاهْلاكِه فِي الْحَدَيْثِ لَوْدع نادِيَهُ لَاحَدَتُهُ عَلَيْ الرّبَانيَةُ عَيَانًا كَلَّا رَدُعٌ لَه لِالشَّطِعْةُ يَا مُحَمَّدُ فِي تَرُكِ الصَّلَاةِ وَالسَّجُدُ صَلَّ لِلْه وَاقْتَرِبُ فَي بنه بِطاعته

نام كے ساتھ جس نے مخلوق كو بيداكيا جنس انسان كودم بسة سے عَلَقَ، عَلَقَةٌ كى جمع ہے اوروہ دم بسة كا جھوٹا سائكرا ہے پڑھو، یہ پہلے اِقسوا کی تاکید ہے، آپ ین ایک کارب بڑا کریم ہے اس کی برابری کوئی کریم نہیں کرسکتا، (وَ رَبُّكَ) اِقسوا كالممير ے حال ہے، جس نے قلم کے ذریعیہ لکھنا سکھایا اورسب ہے پہلے جس نے قلم ہے لکھاوہ اوریس علیج لاہ والٹ کو ہیں جنس انسان کو وہ علم سکھایا جسے وہ سکھانے سے پہلے نہیں جانتا تھا، (مثلاً) مدایت اور کتابت اور صنعت وغیرہ، درحقیقت انسان سرکشی کرتا ہے اس بنا پر کہوہ خود کو مال کی وجہ ہے بے نیاز سمجھتا ہے (بیآیت) ابوجہل کے بارے میں نازل ہوئی ،اوررؤیت ہےرؤیت علمیہ مراد ہےاوراستغناءمفعول ثانی ہےاور اَن رَّاہُ مفعول لہ ہے، یقینااے انسان! تجھ کو تیرے رب ہی کی طرف بلٹمناہے میانسان کو خوف دلا نا ہےلہٰذاسرکش کوسزادے گا جس کا وہ ستحق ہے ، کیا تو نے اس شخص کودیکھا ؟ جوایک بندے کو اوروہ نبی پانتی ہے ہی منع كرتا ہے جب كدوہ نماز پڑھتا ہے أر أنستَ تنيوں جُكرتعجب كے لئے ہاوروہ (منع كرنے والا) ابوجبل ہے، بھلا بتلا ؤتو اگروہ جس کومنع کیا گیا ہدایت پر ہویا پر بیز گاری کی تنقین کرتا ہو او تقتیم کے لئے ہے، بھلاد یکھوتو اگریہ نبی بلق علی کومنع کرنے والا حجثلاتا ہواور ایمان ہے منہ موڑتا ہو، کیاوہ بیں جانتا کہ اللہ تعالیٰ وہ سب کچھ دیکھر باہے جووہ کرر ہاہے یعنی وہ جانتا ہے لہٰذااس کواس کی سزادے گا،اے مخاطب! تواس ہے تعجب کراس حیثیت ہے کہاس کامنع کرنانماز سے ہے اوراس حیثیت ہے کہ جس تخص کومنع کیا گیاہے وہ راہ راست پر ہےاور پر بیز گاری کی تلقین کرنے والا ہے،اوراس حیثیت ہے کہ منع کرنے ولا ، جھٹلانے والا اورا بمان ہے مندموڑنے والا ہے خبر دار!اگر وہ اختیار کر دہ گفرے بازندآیا، کیلا حرف ردع ہے اور کمینی میں لام قسمیہ ہے تو ہم یقیناً (اس کی) پیشانی کے بال پکڑ کر جہنم کی طرف تھینچیں گے یہ تکرہ معرفہ سے بدل ہے، ایسی پیشانی کہ جوجھوٹی اور خطا کارے، اور مَاصِیَة کی صفت کاذِبَة لا نامیری از ہے (یعنی مجاز عقلی ہے) اور مرادصاحب ناصیہ ہے، اپنی مجلس والوں کو بلا لے اور مجس مرادوہ ہے جواس لئے بلائی جاتی ہے کہ قوم کے لوگ اس میں باتیں کریں، جب آنخضرت بلونظی انداز ابوجہل کونماز ہے منع کرنے پر ڈانٹا تھا تو ابوجہل نے نبی پیچھٹی ہے کہا تھا کہتم جائے ہو کہ مکہ میں کوئی شخص جھے ہے بڑی مجلس والانہیں ہے میں تمہارے خلاف اگر جا ہوں تو اس وادی کوعمدہ گھوڑ وں (گھوڑ سواروں) اورنو جون مردوں (بیادوں) ہے بھردوں، تو جم بھی اس کو ہلاک کرنے کے لئے سخت دل توی فرشتوں کو بلالیں گے، حدیث شریف میں ہے کہا گروہ اپنے جمایتیوں کو بلا تا تو دوزخ کے فرشتے اس کوسب کے سامنے بکڑ لیتے ، خبر دار! بیآ ب بیٹھٹٹ کو تنبیہ ہے ، اے محمد بیٹھٹٹٹٹ! ترک صلوۃ میں آپ بیٹھٹٹٹٹ ہرگز اس ٠ (وَرَوْمُ بِهَالِمَالِهِ عَالَمَالِهِ عَالَمَالِهِ عَالَمَ الْمُعَلِمُ عَلَيْهِ الْمُعَلِمُ عَلَيْهِ الْمُعَلِمُ

کی بات ندما نیں ، اور سجدہ کرو، (بیعنی) اللہ کے لئے نماز پڑھو اور اس کی طاعت کے ذریعہ اس کا قرب حاصل کرو۔

جَّقِيق تَزِكِيكِ لِيَهِ بَيْلُ لَقَيْسِارِي فَوَالِلا

سورة اقراً بعض شخول بین مسورة العلق ہے اور بعض بین مسورة القلم، اس سے معلوم ہوا کہ اس سورت کے رہاں۔ رہام ہیں۔

فَيْخُولَ مَنَا ؛ خَلَقَ كَمْفُعُولَ وَعُمُومَ بِرُولَالتَ كَرِينَ كَيْكَ ذَكُرْبِينَ كَيَا كَيْمُ عَلَامَ فَ ، الْمُحَلَاثَقَ مُقَدَرُ مان كُرعُمُومَ كَ طَرِفُ اشَارُهُ كَرُويا ہے۔

قِوَلِنَى : خَلِفَ الانسان انسان كواس كثرف كى وجهة مفردلايا كيا جاكر چەعنى بين جمع كے جاس كے كدالف لام استغراق كے لئے ہے۔

فَيْوَلْنَى ؛ عَلَقٌ يه عَلَفَةٌ كَ بَعْ ب، وم بسة كوكت بن اى نَفْسَهُ ساس بات كى طرف اشاره كدر أى كاخمير فاعل انسان كى طرف راجع باور خمير مفعولى بعى انسان كى طرف راجع باور مراداس سيفس انسان ب-

فَيْحُولْنَى : رُجْعني (ض) كامصدر باوثابروزن بسوى لازم بحى استعال بوتاب-

فَيْ وَلَيْنَ اللَّهِ اللَّهِي اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ

فِيُولِيْ ؛ لَنَسْفَعًا، سَفْعٌ ہے مضارع جمع متعلم کا صیغہ ہے دراصل لمنسفعن تھا، نونِ خفیفہ کوتنوین ہے بدل دیا گیا ہے، سَفْعًا سی چیز کو پکڑ کرختی سے کھینچنا، اور صراح میں ہے موئے چیثانی گرفتن۔

فَيْوُلْكُ ؛ بَدَلُ نكرةٍ مِن معرفةٍ، ناصية كره كاصفت لان كا وجد الناصية معرفد عدل واقع موناتي بدل

تَفْسِيرُ وَتَشِيرُ حَ

سب ہے ہی وحی:

اِفْر أبِ السَّمِرَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ بِيسِ سِي كِلَ وَى ہے جورسول الله ﷺ پراس وقت نازل ہوئی جب آپ اِن الله ﷺ براس وقت نازل ہوئی جب آپ اِن عارم او میں مصروف عبادت تھے، فرشتے نے آکر کہا'' پڑھو''! آپ ﷺ نے فر مایا میں تو پڑھا ہوائیں ہوں،

فر شتے نے آپ ﷺ کو پکڑ کرزور سے دیایا اور کہا پڑھوآپ ﷺ نے پھروہی جواب دیا اس طرح فر شتے نے آپ کوتین مرتبہ دیایا۔

ز مانهٔ نزول وی:

اس سورت کے دوجھے ہیں پہلاحصہ اِقْدِ اُسے مَالُمْرِیَعْلم تک اور دوسراحصہ کلا اِنّ الإنسانَ لَیَطْعٰی ہے آخر سورت کے دوجھے کے متعلق علاءامت کی عظیم اکثریت اس بات پر شفق ہے کہ بیسب سے پہلی وق ہے،اس معاملہ میں حضرت عائشہ دَضِیَ الله عَلَیْ اَللہ مَن اَماد مِن عَلَیْ اِللہ مِن اَماد مِن عَلَیْ اِللہ مِن اَماد مِن اَما

دوسراً حصہ بعد میں اس وفت نازل ہوا جب رسول اللہ ﷺ نے حرم میں اپنے طریقہ سے نماز پڑھنی شروع کی اور ابوجہل نے دھمکیاں دے کراس سے روکنے کی کوشش کی۔

آغاز وي كاواقعه:

غرضیکہ آپ ﷺ گھر سے خور دو نوش کا سامان لے جا کر وہاں چند روز گذارتے، پھر حضرت خدیجہ وضحاہ نند کتفالت کا اس آتے اور مزید چندروز کے لئے حضرت خدیجہ وضحالتند کتفا آپ ﷺ کے لئے سامان مہیا کر دیتی تھیں۔

غار حراء میں قیام کی مدت:

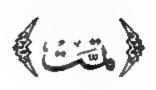
پھر حضرت فدیجہ تفکائلاُ تفائلاُ تفائلاُ تا آپ بھی اللہ کو اپنے پچاڑا دیمائی ورقہ بن نوال کے پاس لے کئیں، انہوں نے نفر انی ندہب اختیار کرلیا تھا، عربی اور عبر انی بی انجیل لکھا کرتے تھے بہت بوڑھے تھے آپ کی بینائی بھی جاتی رہی تھی ہوں ورقہ بن نوال تھی ، حضرت فدیجہ تفکلاُ تفائلاُ تفائلاُ تفائلاُ تفائلاُ تفائلاُ تفائلاً تفائلاُ تو آپ بھی تفاقلا کے فائلاُ تفائلاُ تا بیان کردیا، ورقہ بن نوال کی نوت کے زمانہ بیل تو ی ہوتا اور کاش کہ بیل اس وقت زندہ ہوتا جب کہ آپ بھی تفائلا کی قوم آپ بھی تفاقلا کو اور قد نے کہا بلا شہد نکا لے کی ، رسول الند بھی تفائلا نے بیل تو اس کی تو اس کو ستایا ہے، اور اگر کی کوئلہ جب بھی کوئی تفال کے بیل تو اس کی تو می ناموں کی تو می ناموں کی تو می نوال کے بیل تو اس کی تفال کے بادھ اس کی تفال کر گے، ادھ اس کی اقد کے بعد وی قرآنی کی مسلم کی کوئر تو رہ دوگیا، فترت وی کی مت کے بارے میں سیمنی کی روایت یہ ہے کہ ڈھائی سال تبال تک رہی اور بعد می اور اس کی جند روایات یہ بھی تین سال بیان کی گئی ہے۔

(مظہری، معارف)

دوسرے حصہ کا شان نزول:

کلا ان الانسان لیطفی اس ورت کا پیصداس وقت نازل ہواجب رسول اللہ ﷺ فرم میں اسلامی طریقہ پر نم نم زرج فنی شروع کی ،ابوجہل نے آپ ﷺ کوڈرادھ کا کراس سے روکنا چا ہا، حضرت ابو ہر برہ و فئی الله تھنا ہے۔ کہ ابوجہل نے قریش کے لوگوں سے کہا کہ محمد (ﷺ) تمہارے سامنے زمین پر اپنا مند شکتے ہیں؟ لوگوں نے کہا ہاں ،اس نے کہا لات و عنوی کی فتم اگر میں نے حرم میں ان کواس طرح نماز پڑھتے ہوئے دیکھ لیا توان کی گردن پر پاؤں رکھ دوں گا ، اوران کا مندز مین میں رگڑ دوں گا ، پھرا کی روز ایسا ہوا کہ آنحضرت ﷺ کوحرم میں نماز پڑھتے ہوئے دیکھ کردہ آگے بڑھا، تاکہ آپ نیس میں رگڑ دوں گا ، پھرا کی روز ایسا ہوا کہ آنحضرت ﷺ کوحرم میں نماز پڑھتے ہوئے دیکھ کردہ آگے بڑھا، تاکہ آپ نیس میں میں کہ دون پر پاؤں رکھے ،گریکا کی لوگوں نے دیکھا کہ دہ چیچے ہٹ رہا ہے اور اپنا مندکس چیز سے بی نے کی کوشش کر رہا ہے ، اس سے پوچھا گیا کہ یہ تھے کیا ہوگیا ہے؟ اس نے کہا میر سے اور ان کے درمیان آگ کی ایک خندق اور ایک ہولئاک چیز تھی ، رسول اللہ فی تھی نے فر مایا کہا گروہ میر سے قریب آتا تو ملائکہ اس کے چیتھڑ سے اڑا و سیتے۔

(احمد، مسلم ،نسالي وغيره)



مِوْرَةُ الْقَلْ رُولِيَّةً وَهِي مِنْ اللَّهِ

سُورَةُ الْقَدْرِ مَكِيَّةُ أَوْ مَدَنِيَّةُ خَمْسُ او سِتُ ايَاتٍ. سورهُ قدر مَى يامدنى ہے، پانچ يا چھآ يتن بين۔

لِسَسَمَاءِ الدُنْيَا فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِقَ عَيْرَ السَّرَفِ والعَظْم وَمَالَدُوكَ اَعْلَمَ العَرْانَ جُمْلَة وَاجِدَة بِنَ اللَّهُ الْقَدُرِقَ تَعْظِيْهُ الله سَمَاءِ الدُنْيَا فِي لَيْلَةُ الْقَدْرِقَ عَيْرَ السَّرَفِ والعَظْم وَمَالَدُوكَ اَعْلَمَكُ يَا مُحَمَّدُ مَالَيْلَةُ الْقَدُرِ اللَّهُ الْقَدْرِ فَالعَمَلُ الصَّالِحُ فِيهِ خَيْرٌ بِنَهُ لِينَا الْمَائِحُ فِيهِ خَيْرٌ بِنَهُ فِي الْفِ شَهْرِ لَيْسَتُ فِيْهَا قَدْرُو فَالْعَرَقُ الْفَالِحُ فِيهِ خَيْرٌ بِنَهُ فِي الْفِ شَهْرِ لَيْسَتُ فِيْهَا قَدْرُو الْمُلْكِكَةُ بِحَذْفِ إِحْدى التَانَيْنِ بِنَ الاصلِ وَالرُّوقُ العَمْلُ الصَّائِحُ فِيهِ خَيْرٌ بِنَهُ اللَّهُ فِي اللَّهُ اللَّهُ فَيْهَا لِي السَّنَةِ إلى قَابِلُ وبِنُ سَبَيَّةٌ بِمَعْنَى الْبَءِ اللَّهُ فِي اللَّهُ اللللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّه

ترات سراسرسامتی کی بوتی ہوئی ہو کہ مقدا موجو ہوا مہر بان نہایت رحم والا ہے، یقینا ہم نے اس کو یعنی قرآن کوشب قدر کی شرف اور عظمت والی رات میں لوح محفوظ ہے آسان و نیا کی طرف یکبارگی نازل فر مایا اور اے محمد علی ایک شرف اور عظمت اور اس سے تعجب کے اللہ رکا بیان ہے، شب قدر ہزار مہینوں ہے بہتر ہے، جن میں شب قدر نہ ہو، یعنی شب قدر میں عمل صالح ہزار مہینوں میں عمل سے بہتر ہے، جن میں شب قدر نہ ہو، یعنی شب قدر نہ ہو اس رات میں (عام) فرشتے اور جرکی عظمت اور اس سے تعجب کے میں عمل سے بہتر ہے جن میں شب قدر نہ ہو، اس رات میں (عام) فرشتے اور جرکی علاقت اللہ الرتے میں (تکنو کُل) کی اصل (تند نول) ہے ایک تاء کے حدف کے ساتھ ہے اپنے رب کے تھم سے ہرکام کو سرانجام دینے کے لئے جس کے کرنے کا اللہ نے اس رات میں فیصلہ کرلیا ہے اس سال سے آئندہ سال تک کے ، مِنْ سبیہ بمعنی ہاء ہے یہ رات سراسر سلامتی کی ہوتی ہے مسکر می مبتداء مو خرکی خبر مقدم ہے اور فجر کے طلوع ہونے تک رہتی ہے (مطلع)

کے لام کے فتحہ اور کسرہ کے ساتھ ، لیعنی فجر کے طلوع ہونے کے وفت تک اس رات کو (سرایا) سلام بنا دیا گیا ہے ، اس رات میں فرشتوں کی جانب سے کثر متوسلام ہونے کی وجہ ہے ،ان کا کسی مومن اور مومنہ پر گذرنہیں ہوتا مگریہ کہ وہ ان کوسلام کرتے ہیں۔

عَجِقِيق الْرَكِ لِيَسَهُ الْحَالَةِ الْفَيْسَارِي فَالْمِلْ

فَيْ وَلِكُمْ : إِنَّا أَنولْنَاهُ. بلاشبهم بى في الرَّآن كونازل كيا-

مین والی، آنز لفا کو کنمیر کامر جنع قرآن ہے حالانکہ قرآن کا ماقبل میں ذکر نہیں ہے بیاضار بل الذکر ہے جوممنوع ہے؟ جنگ البینی، قرآن کے شرف وشہرت پراعتاد کرتے ہوئے مرجع کا ذکر نہیں کیا گیا ہے گویا کہ قرآن اپنی عظمت وشہرت کی وجہ تھم میں فذکور کے ہے اور ہر مخص کے ول و د ماغ میں موجود ہے ، عرب کی عادت ہے کہ مرجع کے مشہور و معروف ہونے کی وجہ سے ، اس کا ذکر کرنا ضروری نہیں سمجھتے۔

من ازال اجمام كى صفت باورقر آن عرض بندكة مم لبذااس كى صفت ازال لا ناكس طرح درست بوگا؟ جَوَلَ الله عن ايجاء بوعرض كے لئے ہوتا ہے۔

ككرينين الجوائية وآن كاطرف زول كنبت اساد كازعقى باصل بيب كداساد حال قرآن كاطرف مو

فَيْكُولْكُمْ : مِن كل امر من سيب ب اى لِأجل كل امر.

قِی کُرِنَی ، سَلام هِی ، سَلام خبر مقدم اور هِی مبتدامؤخرے، اور بی نقدیم قصر وحصر کے لئے ہے بینی اللہ تعالی نے اس رات میں سلامتی ہی سلامتی مقدر فرمائی ہے۔

قِوَلْكَ ، وقت طلوعة يرمذف مضاف كى طرف اشاره ي-

ێ<u>ٙڣٚؠؗڒۅۘڗۺۣٛ</u>ڂڿ

شان نزول:

ابن ابی حاتم نے مرسلاً روایت کیا ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے بنی اسرائیل کے ایک مجاہد کا حال ذکر فر مایا جوایک ہزار مہینہ تک مسلسل مشغول جہاد رہا ، بھی اس نے ہتھیا رہیں اتارے، مسلمانوں کو بیس کر تعجب ہوا اس پرسور ۂ قدر

۵ (مَزَم بِبَاشَ إِنَّ

نازل ہوئی،جس میں اس امت کے لئے صرف ایک رات کی عبادت کو اس مجاہد کی عمر مجر کی عبادت یعنی ایک ہزار مہینے (۸۳ ساں چار ماہ) ہے بہتر قرار دیا اور این جریر ریجھ کانٹائے نے بروایت مجاہدا یک دوسرا واقعہ بیدذ کر کیا ہے کہ بی ا سرائیل میں ایک عابد کا بیرحال تھا کہ پوری رات عبادت میں مشغول رہتا اور ضبح ہوتے ہی جہاد کے لئے نکل کھڑ اہوتا ، دن کھر جباد میں مشغول رہتا ایک ہزار مہینے اس نے اس طرح مسلسل عبادت میں گذار دیئے اس پراللہ تع لی نے سور ہَ قدرنا زل فرما کراس امت کی فضیلت سب پر ثابت فرمادی ،اس ہے بیجی معلوم ہوا کہ ہب قدر امت محدید ﷺ کی خصوصیات میں ہے ہے۔ . (معارف القرآن)

يهال كها كيا بكر بم في قرآن كوشب قدريس نازل كيا، اورسورة بقره ين ارشادفر مايا "شَهَدُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنْزِلَ فِيْهِ السَفُولانُ" رمضان وهمبیند ہے کہ جس میں قرآن نازل کیا گیا،اس ہے معلوم ہوا کے قرآن کے نزول کی ابتداءرمضان کے مہیند میں ہوئی ،اس رات کو یہاں شب قدر کہا گیا ہے اور سور ہُ دخان میں اس کومبارک رات کہا گیا ہے ''إِنَّسا أَنْسزَ لْسَنَاهُ فِسي لَيْسَلَةٍ مُبركة " بم في اساك بركت والى رات مين نازل كيا-

ليلة القدر كے معنی:

قدر کے ایک معنی عظمت اور شرف کے ہیں، زہری دُوْوَافِندُ مُغَالِقَةُ وغیرہ حضرات نے اس جگہ یہی معنی مراد کئے ہیں، قدر کے دوسرے معنی تقدیرا ورتھم کے بھی ہیں، لیعنی بیدہ دات ہے جس میں اللہ تعالیٰ تقدیر کے فیصلے نافذ کرنے کے لئے فرشتوں کے سپر د كرديةاب،اس كى تائيرسورة دخان كى اس آيت سے جوتى ہے "فيھا يُفوق كُلَّ أَمْرِ حَكِيْمِ" كماس رات ميں ہرمعامله كا تحكيما ندفيعله صادركيا جاتاب

ليلة القدر كي تعيين:

اب رہا بیسوال کہ بیکونسی رات تھی؟ تو اس میں اتنا اختلاف ہے کہ اقوال کی تعداد قریب قریب حالیس تک پہنچتی ہے، کیکن علاءامت کی غالب اکثریت بیرائے رکھتی ہے کہ رمضان کی آخری دس تاریخوں میں ہے کوئی ایک طاق رات شب قدر ہے ،تفسیرمظبری میں ہے کہ ان سب اقوال میں سیجے یہ ہے کہ لیلۃ القدر رمضان المب رک کے آخری عشرہ میں ہوتی ہے، مگر آخری عشرہ کی کوئی رات متعین نہیں اور ان دس میں ہے خاص طور ہے طاق راتوں کا از روئے احادیث زیادہ احتمال ہے اور ان میں بھی زیادہ تر لوگوں کی رائے یہ ہے کہ وہ ستائیسویں رات ہے، اس معاملہ میں معتبرروايتي مندرجه ذيل بي: حضرت ابو ہریرہ وَ وَ وَ اَنْدَا مُنَا اَنْدَ اَنْدَ اِنْدِ اللهِ عَلَیْمَ اِنْدَ اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ ال

AGP



سُوْرَةُ الْبَيِّنَةِ مَا لَيْنَةُ مَا لَيْنَا فَيَ مَا لِيَا الْبَيْنَةُ مَا لِيَا الْبِيَالُهُ الْمَا

سُورَةُ الْبَيْنَةِ مَكِيَّةُ أَوْ مَدَنِيَّةٌ تِسْعُ ايَاتٍ. سورة بينه كي يامدني هي انوآييس بين ـ

الأصْنَامِ عَطَفْ عَلَى أَسُلِ مُنْفَكِّلُنَ خَبِرُ يَكُنُ اى زَائِلِيْنَ عَمَّا شُهُم عَلَيْهِ حَتَّى تَأْتِيَهُ مُوالْبَيِنَةُ ﴿ اَى الحُجَّةُ الوَاضِحَةُ رَسُولُ مِنَ اللَّهِ بَدَلٌ مِنَ البَيْنَةِ وهُوَ النَّبِيُّ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَيْتُلُواصُحُمَّا مُطَهَّرُهُ ﴿ مِنَ البَطِل فِيهَاكُنْكُ اَحْكَامُ مَكْتُوبَةٌ قَيِّعَةً ﴿ مُسَتَقِيْمَةً اى يَتُلُوا مَضْمُونَ ذَٰلِكَ وَشُوَ الْقُرُالُ فَمِنْهُمُ مَنْ اسَنَ بِ وَسِنُهُمْ مَنْ كَفَرَ وَمَاتَعَرَّقَ الْآذِيْنَ أُوْتُواالْكِيْبَ فِي الإيْمَانِ بِ صَلَّى الدُّهُ عَنيه وَسَلَّمَ اللامِنَ بَعْدِمَاجَاءُتُهُمُ الْبَيِنَةُ ۚ أَى بُوَ صَلَّى النَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم أَوِ القُرُانُ الجَائِي بِهِ مُعْجِزَةً لَهُ وَقَبُلَ مَجِيْبِه صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كَانُوا مُجْتَمِعِيْنَ عَنَى الْإِيْمَانِ بِهِ إِذَا جَاءَ فَحَسَدَهُ مَنْ كَفَرَ بِهِ مِنْهُمْ وَمُّٱلْمِوْقَا فِي كِتَابَيْهِمُ التَّوْرةِ وَالْإِنْجِيْلِ اللَّ لِيَعْبُدُوا اللَّهُ اي أَنْ يَعْبُدُوهُ فَحُذِفَتْ أَنْ وزيدَتِ اللاَمُ مُخَلِّصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ أَهُ بنَ الشِّرْكِ حُنَّقًا أُو مُسْتَقِيْمِينَ عَلَى دِيْنِ إِنْرَاسِيْمَ ودِيْنِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا جَاءَ فَكَيْفَ كَ فَرُوا بِهِ وَيُقِيمُواالصَّالْوَةَ وَيُؤْتُواالزَّكُوةَ وَذَٰلِكَ دِيْنُ المِلَّةُ الْفَيِّمَةِ ٥ السُسْتَقِيْمَةُ إِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوا مِنْ اَهْلِ الْكِتْبِ **وَالْمُشْرِكِيْنَ فِي نَارِحَهَنَّمَرِ خِلِدِيْنَ فِيهَا ۚ حَالٌ مُقَدَّرَا مُلَوَّدُوا خُلُودُهُمُ فِيْهَا مِنَ اللَّهِ تَعَالَى أَوَلَيْكَ هُمْرَشُوالْبَرِيَّةِ ۞** إِنَّ الَّذِيْنَ امِّنُوْ اوَعَلُوا الْصَلِعَتِ الْوَلَيْكَ هُمْ خَيْرًا لَهَرِيَّةِ ﴿ السَحَدِينَةَ بَحَزَاؤُهُمْ عِنْدَرَتِهِمْ جَنَّتُ عَدْنِ إِنَى مَهِ تَجْرِي مِنْ تَعْتِمَ الْأَنْهُرُ خِلِدِينَ فِيهَ الْبَدَارُضَى اللَّهُ عَنْهُمْ بِطَاعَتِهُ وَرَضُواْعَنْهُ مِنْ اللَّهُ اللَّ عن مُعْصِيِّته تَعَالِي.

كافر تصيين بت يرست تن (والمشركين) كاعطف أهل برباور مِن أهل الكتاب بين من بيانيب، وه (اپ كفرے) بازآنے والے بيس تھے (مُنفِيِّنُ مِي يكن كى خبر ب، يعنى جس (كفر) پروہ تھاس كوچھوڑنے والے بيس تھ تا آ نكدان كے ياس واضح وليل آجائے ، يعنى الله كى طرف سے ايك رسول (رسول من الله) البينة سے بدل ہے اوروہ نبى يَنْ فَيْنَا بِين، جوان كو باطل سے پاك صحيفے پر صرسنائے ، جن بیل سحیح احكام مكتوب ہوں بعنی اس کے مضمون كو پر هر كر سنائے اور وہ قرآن ہے، چنانچیان میں ہے بعض اس پرایمان لائے اوران میں ہے بعض نے انکار کردیا ، اوراہل کتاب نے آنخضرت ﷺ پرایمان لانے میں اختلاف نہیں کیا تھر بعداس کے کہان کے پاس واضح بیان آچکا اور وہ محمد ﷺ ہیں یا قرآن ہے جس کوآپ والے بیں جوآپ کا معجزہ ہے اورآپ میں اورآپ میں اور آپ میں اور کے اور کی سے پہلے آپ بین میں ہے اس ایران لانے بر منفل سے بر مر میں ان کواس کے سوا کوئی تھم نہیں دیا گیا کہ وہ اللہ کی بندگی کریں ، لیعنی بید کہاس کی بندگی کریں ، اَنْ حذف کردیا گیااور لام اس کی جگہ زیادہ کردیا گیا، اینے دین کواس کے لئے شرک سے خالص کر کے دین ابراہیم اور دین محمد ظافی تھا پر استقامت کے ساتھ اور نماز قائم کریں ، اور زکو ۃ ادا کریں بھی درست دین ہے اہل کتاب اورمشر کین میں سے جن لوگوں نے کفر کیا ہے وہ یقینا جہنم ک آگ میں جائمیں گے ،اور (محالدین) حال مقدرہ ہے بعنی اللّٰہ کی طرف ہے ان کے لئے جہنم میں ہمیشہ کے لئے دخول مقدر ہو چکا ہے یہی لوگ بدترین خلائق ہیں اور جولوگ ایمان لائے اور نیک اعمال کئے وہ یقیناً بہترین خلائق ہیں ان کا صلهان کے رب کے یہاں دائمی قیام کی جنتیں ہیں جن کے نیچے نہریں بہدرہی ہوں گی وہ ان میں ہمیشہ ہمیش رہیں گے اللہ ان سے ان کی طاعت کی وجہ سے راضی ہوا اور وہ اس سے اس کے ثواب کی وجہ سے راضی ہوئے، ید (صلہ) اس مخض کے لئے ہے جس نے اینے رب کا خوف کیا لیعنی اس کی مزا کا خوف کیا اور الله تعالیٰ کی نافر مانی کرنے ہے ڈرا۔

عَجِقِيق اللَّهِ السِّهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللّلَّهُ اللَّهُ اللللَّا الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ

قِيَّوْلِلَى، لَمْرِيَكُن الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ، الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ، الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ، يَكُنْ كااسم م مِنْ بيانيه م نَه كَرْبِعِيهِ ، مِنْ اَهْلِ الكتاب والمشركين جمد بوكر كَفَرُوْا كُفْمِير عال م ، الَّذِيْنَ الْهُ صلا على يَكُنْ كااسم م مُنْفَكِيْنَ يكُنْ كَ فَهر م ، فَفَكِيْنَ يكُنْ كَ فَهر م ، فَفَكِيْنَ الفكاك عاسم فاعل ، بازآن والي مجدا بون والي منفول كيام المفعول كيام الوراس كورف يها وليل م ؟

جِهُ لَيْنِ مَسْرِعلام نے عَمَّاهُمْ عَلَيْهِم كه كرحذف مفعول كى طرف اشاره كرديا اوروه كفر ب، اوروليل حذف ير الَّذِيْنَ كا صله كفروا ب-

يَيْكُولُكُ: الل كتاب كے لئے كَفَرُوا ماضى اور مشركين كے لئے المشركين كواسم فاعل لانے ميں كيا نكتہ ؟

≤[زمَزَم بِهَاشَهِ] ≥ •

جِکُلِیْے: اہل کتاب ابتداء ہے کا فرنہیں تھے آپ ﷺ کی نبوت کا انکار کر کے کا فرہوئے بخلاف مشرکین عرب کے کہ وہ شروع ہی ہے کا فریتھے۔

فِيُولِكُ : الحجة الواضحة يدهذف موصوف كى طرف اثاره -

فَيْكُولِكُ يَنْلُوا مضمونَ ذلِكَ اس عبارت كاضافه كامقصدايك والمقدر كاجواب بـ

مِينُوْالْنَ؛ مِنْدُلُوا صُحُفًا مُطَهَّرَةً ہے معلوم ہونا ہے کہ آپ ﷺ صحیفہ لینی قرآن میں مکتوب کو پڑھ کرساتے تھے، حالا نکہ اس وقت مصحف میں کوئی چیز کھی ہرئی نہیں تھی اور آپ زبانی پڑھ کرساتے تھے؟

جَوْلَ اللَّهِ اللَّهِ مَنْ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ اللَّهِ الصحف الذي يتضمنه الصحف.

(فتح القدير شوكاني)

قِوَلْكُ ؛ أَنْ يَعْبُدُوه مِي مِن ايك سوال مقدر كاجواب بـ

بِيَخُوالْ ، إلَّا لِيَعْبُدُوهُ مِين لامِ عُرض كے لئے ہے لين الله تعالى في الله على الله على الله على الله الله على الله الله على الله على

جَوْلَتُنِيْ اصل مين أَنْ يَعْبُدُونُ مُنا ، أَنْ كوحذف كرك لام الايا كياب كويا الطرح الام بمعنى أن ب-

قِولَي : دين القيمة. يهال بحى ايك سوال --

المنطق الله المستحن بو المستحن بي المستحن بي المستحن بي المستحن الله المنتسب المستحن بو المستحد المستحد بو المستحد المستحد بو المست

جِي لَيْنِ مفسرعلام نے اَلملة محذوف مان كراى سوال كے جواب كى طرف اشاره كيا ہے۔ جواب كا خلاصہ يہ ہے كددين اور ملت ميں فرق اعتبارى ہے لہذا اضافت الشي الى نفسه كا اعتراض لازم نيس آتا۔

هِ خَالِدِينَ فِيهَا حَالٌ مُفَدَّرَةٌ اس اضافه كامقصد بهي أيك سوال مقدر كاجواب ٢-

سَيْخُوالَى: حال اور ذوالحال كازماندا يك بوتا بيهان دونون كازماندا يكنبين باس كئے كه خداليدين، إن كى خبر محذوف كى ضمير سے حال بيدين، إن كى خبر محذوف كى ضمير سے حال بي، اور دو منسو كون ہے مطلب بيك بهم ان كے جہنم مين خلود كا عقاد ركھتے ہيں، فعا هر ہے كه اعتقاد كازماند دنيا ہے اور خلود كازماند آثرت ہے؟

جِهُ الْبِيْ : جواب كاخلاصہ بيہ كهم الله تعالى كى جانب سے ان كافروں كے خلود مقدر كا اعتقاد ركھتے ہيں ، اعتقاد جهارا كام ہے اور جميشہ كے لئے جہنم ميں ڈائنا الله كاكام ہے ، اور الله كے جانب سے تقدیر كاز مانداوراعتقاد كاز ماندا يك ہے ؛ لهذا اس ميں كوئى حرج اور اشكال نہيں۔

تَفَيْهُ رُوتَثِيْنَ مَ

اس سورت کانام بینفة قراردیا گیاہے،اس کے کی یامدنی ہونے میں اختلاف ہے بعض مفسرین کہتے ہیں کہ جمہور کے نزدیک ہی ہوات میں اندرونی کوئی الیی شہادت نہیں۔ مرزدیک ہی ہوات میں اندرونی کوئی الیی شہادت نہیں۔ مرکہ جو مدنی یا تکی ہونے کی طرف اشارہ کرتی ہو، ابن زبیر قفی اندائی تفایق اور عطابن بیار تفی اندائی تفایق کا قول ہے کہ بید فی ہونے کا اور دوسرا مدنی ہونے کا ،ابوحیان بھی بحرمی ابن عباس تفی اندائی اور قبادہ و تفی اندائی تفایق کے دوقول ہیں ایک کی ہونے کا اور دوسرا مدنی ہونے کا ،ابوحیان بھی بحرمیط میں کی ہونے ہی کوتر جے دیتے ہیں۔

سورت كالمضمون اورموضوع:

اس سورت میں بتایا گیا ہے کہ اس کتاب کے ساتھ رسول بھیجنا کیوں ضروری تھا؟ سب سے پہلے رسول بھیجنے کی ضرورت بیان کی گئی ہے اور وہ رید کہ دنیا کے لوگ خواہ وہ اہل کتاب ہوں یا مشرکییں جس کفر کی حالت میں ہتلا ہتھا سے ان کا نکلنا بغیر اس کے ممکن نہ تھا کہ ایسارسول بھیجا جائے کہ جس کا وجود خود اپنی رسالت پر دلیل ہوا ور وہ خدا کی کتاب کولوگوں کے روبرواس کی اصلی اور سی حصورت میں پیش کر ہے ، جو باطل کی ان تمام آمیز شوں سے پاک ہو جن سے بچھلی آسانی کتابوں کو آلودہ کر دیا گیا تھا۔

'' اہل کتاب'' سے وہ لوگ مراد ہیں جو کسی آسانی کتاب کے مانے والے ہوں، خواہ وہ کتاب ان کے پاس اصلی شکل ہیں ہاتی ہو یا محرف ہو چکی ہو، مثلاً یہود ونصاری ہے وہ آپ نیکھیٹیا کی بعثت کے بعد یہود ونصاری پرلازم تھا کہ وہ آپ نیکھیٹیا پر ایمان لاتے مرا نکاری وجہ سے کا فرہو گئے اور آیت میں مشرکین سے مرادعام ہے خواہ بت پرست ہوں یا آتش پرست، خرضیکہ ایمان لاتے مرا نکاری وجہ سے کا فرہو گئے اور آیت میں مشرکین سے مرادعام ہے خواہ بت پرست ہوں یا آتش پرست، خرضیکہ اللہ کے علاوہ جو بھی کسی ہی پرست مراد کا مرکام صدات ہوگا۔

فیها کتب قیمة یہاں گُنُب سےمراداحکام دیدہ ہیں اور قیمة سید ھے اور معتدل راستہ کو کہتے ہیں۔

وَمَا تَفَرَقُ الَّذِيْنَ أُوتُوا الْكُتْبَ الْحَ يَهِال تَفْقَ عِمِادا نكاروا خَتَا فَ ہِ ، مزول قرآن اورآنخضرت بِمَنْ اللّهِ عَلَيْهِ مَا اللّهُ مَا اللّهُ مَنَا مِ اللّهُ مَنْ اللّهُ مَنْ اللّهُ مَنَا مِ اللّهُ مَنْ اللّهُ مَنْ اللّهُ مَنَا مِ اللّهُ مَنَا مِنْ اللّهُ مَنَا مَنَا مَنْ اللّهُ مَنَا مُنْ اللّهُ مَنَا مِنْ اللّهُ مَنَا اللّهُ مَنْ اللّهُ اللّهُ اللّهُ مَنْ اللّهُ اللّهُ مَنْ اللّهُ مُنْ اللّهُ مَنْ اللّهُ مُنْ اللّهُ مَنْ اللّهُ مُنْ اللّهُ مَنْ اللّهُ مُنْ اللّهُ مَنْ اللّهُ مُنْ اللّهُ مُنْ اللّهُ مُنْ اللّهُ مُنْ اللّهُ مُل

مشرکین کے درمیان نزاع ہوتا اور مشرک اپنی عددی طاقت میں زیادہ ہونے کی وجہ سے یہود پر غالب آجاتے تو یہود آنخضرت ظین شکا کے واسطے سے مشرکین پر فتح مندی کی دعاء کیا کرتے تھے اور کہا کرتے تھے کہ اے اللہ! تو آن والے نبی آخر الزبان کی برکت سے ہمیں فتح نصیب فربادے، یا یہ کہ مشرکین سے کہا کرتے تھے کہ آبوگ ہمارے فلاف زور آزبائی کرتے ہو؛ مگر عنقریب ایک ایسے دسول تھی آنے والے ہیں جوتم سب کوزبر کردیں گے اور ہم چونکہ ان کے ساتھ ہول گے تو ہماری فتح ہوگی، مگر جب وہ نبی تھی آگے والے ہیں جوتم سب کوزبر کردیں گے اور ہم جونکہ ان کو بہچان لیا، تو حسد کی وجہ سے اس کا اٹکار کر بیٹھے، اور آپس میں اختلاف کرنے لگے، پچھلوگ آپ پر ایمان لائے مگرا کھرنے انکار کردیا۔



مِنَةُ الزِّلْزَالِيَّيْنَ وَهُجَانِكُ الْمَاكِيْ

سُورَةُ زُلْزِلَتُ مَكِيَّةٌ أَوْ مَدَنِيَّةٌ تِسْعُ ايَاتٍ سورة زلزلت على يامدنى ہے، نوآ ينيس بيس۔

يَسَدِواللهِ السَّدِيد المُناسِبَ لِعَطْمِهَا وَآخُرَحَتِ الْأَنْ الْآنُ مُسَوْدِها وَمَوْتَابَا فَالْقَنْهَا عَلَى ظَهُوبِهَا وَحَوْلَالهَا السَّعَةِ وَلَوْلَهَا السَّعَةِ وَلَوْلَهَا اللَّهُ السَّعَةِ وَلَوْلَهَا اللَّهُ السَّعِيمَ السَّعَةِ وَلَوْلَهَا اللَّهُ السَّعِيمَ السَّعَةِ وَلَوْلَهُمَا اللَّهُ ال

ا ممال لیعنی ان کی جزاءکو،خواہ جنت ہے ہو یا دوزخ ہے ان کو دکھائے جائمیں پھرجس نے ذرہ برابر لیعنی چھوٹی چیونٹی کے برابر نیکی کی ہوگی وہ اس کوبھی و کیھے لے گااورجس نے ذرہ برابر بدی کی ہوگی تو وہ اس کی جزاء بھی دیکھے لے گا۔

عَجِقِيق تَزِكِيكِ لِيَسَهُيكُ تَفْسِينُ فَوْلِلِهُ

قِوْلِكُ ؛ إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ زِلْزَالَهَا، إِذَا ظرفيهُ صَمَن بمعنى شرط ب، يَوْمَنذِ الى عدل باور تُحدِّث جواب شرط ہاورجمہور کے زدیک یمی ظرف کا ناصب ہے،اوربعض حضرات نے کہاہے کظرف کا عال محذوف ہےاوروہ اُسخ مسرون ہاور بعض نے اُذکھر محذوف کوعامل ماناہے جھراس صورت میں إذا ظرفیت اور شرطیت سے خارج ہوج نے گا، تُسحدِن متعدى بدومفعول معمفعول اول محذوف ہے، اى تحدث الناسَ أخْعبَارها، الناسَ مفعول اول ہاور احبارَها مفعول انى، زِنْزَالَها مِسمصدرى اضافت فاعلى كاطرف بـ

فِيْخُولِكُمْ : كُنُوْزَهَا وَمَوْتاها مناسب، واؤ كربجائ أوْتُها، أس كُنُك "اخرجت الارضُ اثقالها" كي تغير مين دو قول ہیں، لیعنی تقل ہے مرادخزانے یا مردے ہیں اور دونوں بھی ہوسکتے ہیں تو "و او" مجھی درست ہوگا۔

فَيُولِكُونَ ؛ انكارًا لِتِلْكَ الحالة مفسرعلام كي ليُمناسب تهاكه، تعجبًا لِتِلكَ الحالة فرمات ،اس سے كه يوقت الكاركا نه ہوگا بلکہ حیرت اور تعجب کا ہوگا۔

قِعُولِكَ ؛ يومندِ بدل من إذًا ، يَوْمَنِدِ ، اذَا ع بدل إورجوعال مبدل مندكا جوى بدل كا جـ فَيْكُولْكُمْ : يَوْمَنِذِ يَصْدُرُ الناسُ أَشْتَاتًا ، يَوْمَنْذِ ، اول يومَنِذِ عدل إورَبْض حضرات في يَصْدُرُ كوعال مانا ب،

اور اَشْمَاتًا، الناسُ سے حال ہے۔

هِوْلِكَ ؛ لِيُسرَوْا أَعْمَالَهُمْ ، لِيُسرَوا ، يَصْدر الناسُ عَتَعَلَق عِ، اوررؤيت عدويت بعرى مرادع، باب افعال ك ہمزہ کی وجہ سے متعدی بدومفعول ہے، اول مفعول لِیُروا کا واق ہے جوکہ ٹائب فاعل ہے اور دوسرامفعول اَعْمَالَهم ہے۔ فَيُولِكُمْ : خَيْرًا مِيمْقال تِميز بادراى طرح شَرًا ب-

لَفِسْارُولِشَوْنَ

إِذَا زُلْسِ زَلْسِ الْأَرْضُ زِلْسِ الْهَساء السورت كعى يام في بون مين اختلاف باين مسعود وَفِيَ اللهُ عَالِيَ ،عطاء وَفِيَانِهُ مَنْ اللَّهُ ، جابر وَفِيَانِفُهُ مَعْ اللَّهُ اورمجامِر وَفِيَانِفُهُ مَنْ اللَّهُ كُلِّ مِين كه كل بيء حضرت ابن عباس وَفِيَالنَّهُ مَا أَنْ اللَّهُ مَا أَيْكُ وَلَ يَهِي ے، تمادہ اور مقاتل کہتے ہیں کہ دنی ہے، حضرت ابن عباس تفعین تفائق کا دوسر اقول اس کی تا ئید کرتا ہے۔ ح[الِمَزَم بِهَاللَّهُ إِ

فضائل سورت:

زلزله يے كون سازلزله مراد ہے؟

اس امر میں اختلاف ہے کہاس آیت میں جس زلزلہ کا ذکر آیا ہے، یہ وہ زلزلہ ہے جونٹی اوٹی ہے پہلے و نیا میں واقع ہوگا جیسا کہ علامات قیامت میں اس زلزلہ کا ذکر آیا ہے؟ یا اس زلزلہ سے مراد نتی ٹانیہ کے بعد کا زلزلہ ہے؟ جب مُر دے زندہ ہوکر زمین ہے گئیں گے؟ تو واضح رہے کہ اس میں کوئی بُعد نہیں کہ زلز لے متعدد ہوں ،گریہاں مابعد کے قرینہ ہے دوسرا زلزلہ مراد معلوم ہوتا ہے، اسلئے کہ اس سورت میں آگے احوال قیامت اور حساب و کتاب کا ذکر ہے۔

(معارف، مظہری)

وَاخُورَجَتِ الْآدُفُ الْفَالَهَ الْمُعْمُون كُومُورهُ انشقاق مِن الطرح بيان فرمايا گيا به "وَالْفَتْ مَا فِيْهَا وَتَخَلَّتُ" اور جو پچھاس كاندر ہے اسے باہر پچينك كرخالى ہوجائے گى ،اس كے متعدد مطلب ہيں :ا يك بيد كه مرب ہوئ انسان زمين كاندر جهاں اور جس شكل ميں بھى پڑے ہوں گے ان سب كوده نكال كربا ہر پچينك دے گى ،اس مفہوم پر بعد كافقره بعن "وَقَالَ الإنْسَانُ مَالَةَ اللهُ مَالَة مُنْ مُنْتُمُ اجْراء جمع ہوكراز سرنواى شكل وصورت ميں جمع ہوجائيں گے ،جس ميں وه دنيوى زندگى كى حالت ميں خيم بوجائيں گے ،جس ميں وه دنيوى زندگى كى حالت ميں خيم ؛ كيونكه اگرايسانہ ہوتو وه يہ كيے ہيں گے كه زمين كويدكيا بوربا ہے؟

دومرا مطلب میہ ہے کہ صرف مردہ انسانوں ہی کو باہر پھینکتے پر اکتفا نہ کرے گی؛ بلکہ ان کی پہلی زندگی کے افعال واقوال ،حرکات وسکنات کی شہادتوں کا جوانباراس کی شہوں ہیں و باپڑا ہے، ان سب کو بھی وہ نکال کر باہر ڈال دے گی، اس مطلب پر بعد کا فقرہ '' یہ و مَینیڈ ٹیکے دِیٹ اَخیادَ ہیا'' ولالت کرتا ہے، کہ زمین اپنے او پر گذر ہے، ہوئے حالات بیان کرے گی، اس ترتی یا فتہ دور ہیں اس شبر کی کوئی گنجائش نہیں ہے کہ زمین اپنے او پر گذر ہے، ہوئے حالات کس طرح بیان کرے گی، اس ترتی یا فتہ دور ہیں اس شبر کی کوئی گنجائش نہیں ہے کہ زمین اپنے او پر گذر ہے، ہوئے حالات کس طرح بیان کرے گی، آج علوم طبحی کے انکشافات اور دیڈیو، ٹیلی ویژن، ٹیپ رکار ڈر، اور الکٹر انگس کی ایجوات کے اس دور بیں یہ سمجھنا مشکل نہیں کہ زمین اپنے حالات کیسے بیان کرے گی، انسان جو کچھ یولٹا ہے اس کے نقوش ریڈیا کی لہروں میں، ہوا اور فضا میں، اور در ود یواروں پرتیش ہیں، انسان نے زمین پر جہاں جس حالت میں بھی کوئی کام کیا ہے اس کی ایک ایک ایک

حرکت کانکس اس کے گردو پیش کی تمام چیزوں پر پڑا ہے ،اس کی تصویریں ان پرنقش ہو پیکی ہیں ،گھپ اندھیرے ہیں بھی اگرکوئی عمل ای خدائی بیں ایسی شعا کیں موجود ہیں جن کے لئے اندھیر ااجالا کوئی معنی نہیں رکھتا ،آج جب کہ تاریکی میں و کیھنے والے چشمے ایجاد کئے جا تھے ہیں تو خدائی شعاؤں کے موجود ہونے میں کیا شک ہوسکتا ہے؟ بیساری تصویریں قیامت کے دن متحرک فلم کی شکل میں وکھائی جا کیں گی۔



وَ فَالْمُ الْمُتَّامِّةِ مِنْ الْمُلْكِمِ الْمُتَّامِّةِ الْمُلْكِمِ الْمُتَّامِّةِ الْمُلْكِمِ الْمُتَّامِ الْمُتَامِ الْمُتَامِ الْمُتَامِ الْمُتَامِ الْمُتَّامِ الْمُتَّامِ الْمُتَّامِ الْمُتَّامِ الْمُتَّامِ الْمُتَّامِ الْمُتَّامِ الْمُتَامِ الْمُتَامِ الْمُتَّامِ الْمُتَامِ الْمُتَّامِ الْمُتَّامِ الْمُتَّامِ الْمُتَّامِ الْمُتَّامِ الْمُتَامِ الْمُتَّامِ الْمُتَامِ الْمُتَّامِ الْمُتَامِ الْمِنْمِ الْمُتَامِ الْمُتَامِ الْمُتَامِ الْمُتِي مِلْمِي الْمُتَامِ الْمُتَامِ الْمُتَامِ الْمُتَامِ الْمُتَامِ الْمُتَامِ الْمُتَ

سُوْرَةُ الْعلدِيَاتِ مَكِيَّةُ أَوْ مَدَنِيَّةً اِحْداى عَشرَةَ آيةً. سورهُ عاديات مَى يامدنى هِ گياره آيبتى بين -

لِسَّدِهِ النَّهُ الرَّحْمُ مَن النَّوْهِ الحَيْلِ تُورى النَّارَ قَلْهُ الْخَيْلِ تَعَدُوْ فِي الغَرْوِ وَتَصْبَحُ صَيْحًا الْ الْحَيْلِ تُورى النَّارَ قَلْهُ الْحَيْلِ تَعَدُوْ وَقَتَ الصَّبْحِ بِاغَارَةِ اَصْحَابِهَا فَالْمُولِيَ الخَيْلِ تُغِيرُ عَلَى العَدْوِ وَقَتَ الصَّبْحِ بِاغَارَةِ اَصْحَابِهَا فَالْمُنْ مَن العَدْوِ اللهِ الْحَبَونِ وَاللَّهُ الْحَيْلِ تُغِيرُ عَلَى العَدْوِ وَقَتَ الصَّبْحِ بِاغَارَةِ اَصْحَابِهَا فَالْمُولِيُ الْحَيْلِ تَغِيرُ عَلَى العَدْوِ اللهِ الْحَبْوِقِ الْحَبْوِقِ الْحَيْلِ الْعِنْ الْعَلْمُ اللَّهُ عَلَى العَدْوِ اللهِ اللهِ عَلَى العَدْوِ اللهِ العَلَمُ اللهُ عَلَى الفَعْلِ عَلَى الاسْمِ لِاللهُ فِي تَاوِيلِ الغِعْلِ الى واللَّاتِي عَدُونَ فَاوَرَئِنَ فَاغَرُنَ صِرْنَ وَسَطَة وَعَطْفُ الفِعْلِ عَلَى الاسْمِ لِانَّهُ فِي تَاوِيلِ الغِعْلِ الى واللَّاتِي عَدُونَ فَاوَرَئِنَ فَاغَرُنَ صِرْنَ وَسَطَة وَعَطْفُ الفِعْلِ عَلَى الاسْمِ لِانَّهُ فِي تَاوِيلِ الغِعْلِ الْعَلَى اللهُ عَدُونَ فَاوَرَئِنَ فَاغَرُنَ اللهُ الْعَلَيْقُ اللهُ الله

سبائی ہے۔ ان گھوڑوں کی جو جہاد ہیں اللہ کے نام ہے جو بڑا مہر بان نہایت رخم والا ہے، شم ہے ان گھوڑوں کی جو جہاد ہیں بھرکارتے ہوئے (ہنچے ہوئے) دوڑتے ہیں، ضَبَعے جوف (ہیٹ) کی اس آ داز کو کہتے ہیں جو دوڑتے وقت نگتی ہے، پھران گھوڑوں کی جو ٹاپوں سے چنگاریاں جھاڑتے ہیں پھران گھوڑوں کی جو جو سورے دشمن پر شب خون مارتے ہیں، اپنے سوار کے شب خون مارنے ہیں کو اس موقع پر یعنی اپنے دوڑنے کی جگہ یا اس وفت اپنی شدید حرکت کی وجہ سے غبار

﴿ (مَنزَم بِهُ الشَّرْ) :

اڑاتے ہیں پھرای غبار میں مثمن کے مجمع میں تھس جاتے ہیں یعنی ان کے وسط تک پہنچ جاتے ہیں ،اور فعل کاعطف اسم پر اس سے درست ہے کہاسم بعل کی تاویل میں ہے، لینی معنی میں و اللّائسی عَدَوْنَ، فَاوْرَيْنَ فَاعَرْنَ كے ہے حقیقت ب ے کہ کا فرانسان اپنے رب کی نعمتوں کا انکار کر کے بڑا ناشکرا ہے اور وہ خوداس اپنی ناشکری پر گواہ ہے کہ وہ اپنے عمل سے ا پنے نفس پر گواہ ہے اور وہ مال کی محبت میں بری طرح مبتلا ہے بیغنی وہ مال سے بے حد محبت رکھنے والا ہے جس کی وجہ ہے وہ اس (ك خرج كرف) ميں بخل كرتا ہے تو كياوہ اس وقت كونبيں جانبا كہ جب قبروں ميں مدفون مردوں كونكالا جائے گا؟ اور دلوں میں جو کفر وایمان (مخفی) ہے اس کو برآ مد کر لیا جائے گا ، لینی ظاہراورعیاں کر دیا جائے گا ، ان کارب اس روز ان ہے خوب باخبر ہوگا پھران کوان کے کفر کی سزاد ہے گا، (ھُے، صَمیر کوانسان کے معنی کالحاظ کرتے ہوئے جمع لا با گیا ہے اور یہ جمعہ يَعْلَمُ كَمفعول برولالت كرتا بيعني بم انسان كوندكور ووقت مين جزاءوي كي، اور حبيس كاتعلق بومَلِدُ سے ب حالا تكدالله تعالى جميشه باخبر ہاس كئے كدوه صلدد ہے كاون ہے۔

عَجِفِيق بَرَكِيبُ لِيَسَهُ أَنْ تَفْسِّا يُرَى فَوْ اللِّهِ

فَيُولِكُ ؛ والْعلديات، عَادِيَةٌ كَ جَمْع بيز دورُ نه واليال، يه عَدُو سي شتق بجس كمعنى تجاوز كرف اور تيز دورُ ف كے بيں، واو كى اقبل سره بونے كى وجهد واؤكو ياء بدل ديا ب بنانچه عَدْوٌ ب عادياتُ بوكيا، جيب كه غَزْوٌ

فَيْ وَلَكُ : صَبْحًا (ف) يه صَبَحَ يَصْبَحُ كامصدر ب، كُورُوں كرورْ نے كروت مانينا، يكار مارنا، مفسرعن مكا صَبْحًا ے سلے تطبیع کااف فہ کرنایہ بتائے کے لئے ہے کہ صبحا تعل مقدر کی وجہ سے منصوب ہے۔

فِيُولِكُ ؛ السَمُورِيَسات، مُورِيَةٌ عامم فاعل جمع مؤنث إبراءٌ عضتق إدار كروش كرف والع، إيسواء (افعال) آگ نکالنا،مرادوہ گھوڑے ہیں جو پھر لمی زمین پر چلتے ہیں بتوان کی ٹاپوں کی رگڑے چنگاریاں نکلتی ہیں۔

هِ فَلْكَ ؛ فَدْحًا (ف) فَدَحَ كامصدر، يَمْ رِيكُم ماركراً كُنكالنا، فَدَحَ الزَّنْدَ بِهمَاق رَكْر كرا كُنكالى، فَدْحًا بَكى ضَبْعًا كَ طرح تعل مقدر ك وجد عضوب ع، اى يَقْدَ حُ قَدْحًا.

فِيُولِلَنَى : فَالْمُ غِيْرَاتِ صُبْحًا صَح كودت شب خون مارنے والے ، غارت كرى كرنے والے وبالفارسيد، يس فتم باسيان غارت كننده بوقت صبح، ألسمُغِيْرَاتِ اسم فاعل جمع مؤنث، واحد السمغيرة، مصدر إغسارة، لوثنا، حِهابيه مارنا،مراد حچھایہ مارد ستے ہیں۔

قِغُولِكَ ؛ فَأَفَرْ وَ (ض) ماضى صيغة جمع مؤنث عائب، يه إثارَةٌ ہے ہے بمعنى برا الحيخة كرنا ،اڑانا۔

فِخُولَ ﴾ : فَوَسَطْنَ بِه، بِهِ اى ذالك الوقت.

يَيْنُوْلِنَّ: فَأَثَرُ نَ اور فَوَسَطْنَ كَاعَطَف وَالْعَلْدِينَ، فالمورينَ، فَالمَّغِيرات بِهِ، اس يسمعطوف عبيه اساء بي اور معطوف افعال بين جودرست نبين ہے؟

جَوُلَ بَيْ اللَّهِ مِن مَرُورِ مَيْنُول اساء تاويل مِن افعال كے بين ، اس لئے كه موصول كا صله واقع بين ، جيسا كه مفسر علام نے والى لاتى عَدُونَ كه بين ، هيك ذا السهوريات اور والى لاتى عَدُونَ كه بين ، هيك ذا السهوريات اور فالمغد ات .

فَيُولِكَ ؛ وهذه الجملة دَلَّت على مفعول يَعْلَمُ اس جمله كامقصداس اعتراض كاجواب ك يغلَم فعل متعدى بهرس ك لئے مفعول كا ہونا ضرورى ب؛ مگريها ل اس كامفعول نبيس بع؟

جِيُ لَيْنِيَ ، يَعْلَمُ كَامْفُعُولَ مُحَدُوفَ بِ اور حَدْفَ بِرجَمَلَدِ إِنَّ رَبَّهِ مُربِهِم يَومِنِذِ لَخَبِيرِ دَلَانْت كرر ما ب ، اور مفعولِ مُحدُوف انا نُجَازِيْهِ ، تَقْدَرِ عِهارت بدِ ب : افلا يَعْلَمُ إِذَا بُعْثِرَ مَا فِي القُبُوْدِ وَحُصِّلَ مَا فِي الصدور انا نُجَازِيْهِ.

فَيُولِلْنَى : مُصِلَ يَحْصِل سے بحس كمعن حَفِك سے مغزيا خوشے سے غلد نكا لئے كے إلى - فَقُولِلْنَى : تَعَلَق خَبِيْرِ بِيَوْمَئِدٍ بِيالْ مَالِك سوال مقدار كاجواب ہے؟

سَيْخُوالْ: سوال بيت بُك يَوْمَنِدُ للحبير كون كباجب كالله تعالى مرزمان ومكان عا جرب؟

جِيُولَ بِنِي: جوابِ كا حاصل بيہ ہے كہ اللہ تعالى اس روز برخص كواس كے ہرمل كى جزاديں گے اور ظاہر ہے كہ جزاعلم كے بغيرمكن نہيں ہے، اوراس ہے اللہ تعالى كے عمومى علم كی فن نہيں ہوتی۔

<u>ؠٚٙڣٚؠؙڔۅؖؾۺٛؗؖڂڿ</u>

اس سورت میں پانچ صفات کی شم کھا کرایک بات کہی گئی ہاوروہ ہے (اِنَّ الإِنْسَانَ نِسَرَبِسَه لَسَحَنُودٌ) بلاشہانسان براناشکراہے، ندکورہ پانچ صفات کا قرآن مجید میں موصوف بیان نہیں کیا گیا؛ اس لئے مقسم بہیں مفسرین کا اختلاف ہوا ہے کہ دوڑ نے والوں اور جَبْع میں واضل ہونے والوں سے کیا مراد ہے؟ صحابہ فَعَوَلَیْ تَعَنَّاتِیْنُ اور تابعین کی ایک جماعت اس طرف گئی ہے کہ ذکورہ صفات کے موصوفات گھوڑے ہیں، اور ایک دوسری جماعت اس طرف گئی ہے کہ ذکورہ صفات کے موصوفات گھوڑے ہیں، اور ایک دوسری جماعت اس طرف گئی ہے کہ اور تابعین کی ایک جماعت اس طرف گئی ہے کہ ذکورہ صفات کے موصوفات گھوڑ ہے ہیں مضب ہے کہ وہ شرع ہیں جمالہ ہیں، مگر دوڑتے ہوئے ایک خاص شم کی آ واز نکالنا جس کو عربی میں صبح کہتے ہیں وہ گھوڑ ای نکالنا ہے ، اور بعد کی آیات بھی جن میں چنگاریاں جھاڑ نے مہی سویرے چھاپہ مارنے کا ذکر ہے یہ بات بھی گھوڑ وں ہی پرصاد تی آتی ہے؛ اس لئے اکثر محققین نے ان سے مراد گھوڑ ہے ہیں ، این جریر فوکائٹنگنٹائٹ فرماتے ہیں کہ مگوڑ وں وہ لول میں گھوڑ وں والا تول قابل ترجے ہے۔

یہاں جنگی گھوڑوں کی سخت خدمات کا ذکر گویا اس بات کی شہادت میں لایا گیا ہے کہ انسان بڑا ناشکرا ہے ،تشریح اس کی بہ ہے کہ گھوڑوں کے اور بالخصوص جنگی گھوڑوں کے حالات پرنظر ڈالئے کہ وہ میدان جنگ میں اپنی جان کو خطرہ میں

ة (اَصَّزُم پِهَ الشَّهْ) ≥ -

ڈال کریسی کیسی بخت خدمات، انسان کے تھم واشارہ کے تابع انجام دیے ہیں؛ حالاں کہ انسان نے ان گھوڑ وں کو بید انہیں
کیا، ان کو جو گھ س داندانسان دیتا ہے وہ بھی اس کا پیدا کیا ہوائیس ہے، اس کا کام صرف اثنا ہے کہ خدا کے بیدا کئے ہوئے
رزق کوان تک بہنچانے کا ایک واسطہ ہے، اب گھوڑ وں کو دیکھئے کہ انسان کے استے سے احسان کو کیسا پہچا تنا ہے کہ اس کے
ادنی اشارہ پراپی جان کو خطرہ میں ڈال دیتا ہے، اس کے بالمقابل انسان کو دیکھو کہ ایک حقیر قطرہ سے التدنے اس کو بیدا کیا
وراس کو محتف کا مول کی صلاحیت بخشی، عقل وشعور بخشا، نیز اس کی تمام ضرور بات کو کس قدر آسان کر کے اس تک پہنچا دیا
کہ عقل جیران رہ جاتی ہے، گر انسان ان احسانات کا شکر گذار نہیں ہوتا، اس منا سبت سے گھوڑ وں کی قتم کھا کر فر مایا کہ باشہدانسان ناشکر ایے۔

ندکورہ آیت میں جہ دی گھوڑوں کی تم کھا کردوبا تیں کبی گئی ہیں: ایک بید کدانسان ناشکرا ہے، مصیبتوں اور تکلیفوں کو یاد
رکھتا ہے، نعمتوں اور احسانات کو بھول جاتا ہے، دوسر ہے بید کہ وہ مال کی محبت میں شدید ہے، بیدونوں با تیں شرعاً اور عقلاً
غدموم ہیں، ناشکری کا فدموم ہونا تو بالکل فلا ہر ہے، مال کی محبت کو بھی فدموم قر اردیا گیا ہے؛ حالانکہ مال پرانسانی بہت ی
ضروریات کا مدار ہے، بہت می عبادات کا تعلق مال ہی ہے ہے، مال کے کسب اور اکتساب کوشر بعت نے نصرف بید کہ
حلال کی ہے؛ بلکہ بقدرضرورت فرض قر اردیا ہے، اس ہے معلوم ہوا کہ مطلقاً مال کی محبت فدموم نہیں ہے؛ بلکہ شدت کے
ماتھ فدموم ہے کہ انسان مال کی محبت میں ایسا مغلوب ہو جائے کہ اللہ تعالیٰ کے احکام سے فی فل ہو جائے اور
حلال وحرام کی پروانہ رہے، حاصل بیہوا کہ مال کو بقدرضرورت حاصل کرنا اور اس سے کام لینا تو امرمحمود ہے؛ مگر دل میں
اس کی محبت کا جاگزیں ہو جانا فدموم ہے۔



لَهُ النَّا إِنَّ وَكُنَّ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّا اللَّاللَّا الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ

سُورَةُ الْقَارِعَةِ مَكِّيَّةُ ثمانُ ايَاتٍ. سورةُ القارعه في هيء آخم آسيتن بين۔

ور کور کور کور کی ہولنا کی سے کھڑ کھڑادے گی کیا ہے وہ کھڑ کھڑادیے والی؟ (ساستقہام) قیامت کی ہولنا کی ک شان کو بیان کرنے کے لئے ہو، رہا الْقَارِعَةُ کی ہولنا کی ک شان کو بیان کرنے کے لئے ہے، رہا الْقَارِعَةُ مہتداء جر ہیں، اور مبتداء جر سے ل کر القارِعَةُ کی خبر ہے اور تم کیا جانو کہ وہ کھڑ اویے والی کیا ہے ؟ یہ قیامت کی مزید ہولنا کی کابیان ہے، (مَا الْقَارِعَةُ بِس) پہلا مَا مبتداء ہے اور اس کا مابعد یعنی آذر کے آپ ورنوں مفعولوں سے ل کر مبتداء کی خبر ہے، اور ی کامفعول اول کے ہاور مَا الْقَارِعَةُ مبتداء خبر سے ل کر مفعول ٹانی ہے، ورنوں مفعولوں سے ل کر مبتداء کی خبر ہے، اور ی کا مفعول اول کے ہاور مَا الْقارِعَةُ مبتداء خبر سے ل کر مفعول ٹانی ہے، حس دن انسان پریشان پروانوں کی طرح ہوجا کیں گے یو مَ کاناصب وہ ہے جس پر المقارعة ولالت کرتا ہے لین تھڑ کے،

تعنی ٹڈی کے منتشر بچے جوجیرانی کی وجہ ہے ایک دوسرے پر چڑھ جائیں، یہاں تک کہوہ حساب کے لئے بلائے جائیں،اور پہاڑ دھنی ہوئی رنتین اون کے ما نند ہوں گے یعنی تیز رفتاری میں دھنی ہوئی اون کے ما نند ہوں گے؛ یہاں تک کہ زمین نے ہم سطح ہو جا ئیں گے، پھرجس کے پلڑے بھاری ہوں گے بایں طور کہ اس کی حسنات زیادہ ہوں گی بے نسبت سیئات کے تو وہ منسی خوشی ک زندگی میں ہوں گے ،رضا وخوشنو دی کی جنت میں ، بایں طور کہ وہ اس ہے خوش ہوں گے یعنی اس کی رضا کے مطابق ہوں گی ،اور جس کے بگڑے ملکے ہوں گے بایں طور کداس کی سیئات زیادہ ہوں گی بانسبت اس کی حسنات کے، تو اس کا ٹھکانہ دوزخ میں ہوگا، تجھے کی معلوم کہ وہ کیا ہے؟ بعنی هاویه کیا ہے؟ وہ نہایت خت گرم آگ ہے،اور هینه کی ها وقف کے لئے ہے جو کہ وقافا اوروصلاً باقی رہتی ہے اور ایک قراءت میں وصلاً حذف کردی جاتی ہے۔

جَِّقِيقِ تَزِكِدِ فِي لِيَسَهُ أَنْ لِيَّا الْمُ لَقَالِيًا الْمُؤْلِدِلْ

قِوْلَكَى، ما المقارعة زيادة تَهْوِيل لها ، اس عبارت كاضاف كالمقصدية بتانا هي كه استفهام بعدالاستفهام سے قيامت ك زيادتى بولناكى كوبيان كرناب اور مَسا اللولى مبتدا النع كاضاف كامقصد المقادِعَةُ مَا الْقَادِعَةُ كَارْ كيب محوى بيان كرنا ہے، ترکیب کا خلاصہ بیے کہ پہلا ما مبتدا، ہے، آذری تعل مائٹی متعدی بدومفعول ہے، ك مفعول اول ہے اور ما الْقَادِعة مبتداخرے لر اَذرَی کامفعول ثانی ہے بعل این فاعل اور دونوں مفعولوں سے ل کر مامبتدا کی خبر ہے۔

فِيَوْلِكُ : يَوْمَ ناصبه البع، يومَ كاناصب تَفْرَعُ تعلى محذوف ب؛ جبيها كمفسر علام في ظاهر كرك بتاديا ب، اورلفظ الْقارعة اس مدن يرولالت كرر باير، تقدر عبارت بيبوك، تَفَرّعُ القلوبَ يومَ يكون الناس كالْفَراش المبنوب، يَوْهَ كَانَاصِ يَفْرَ مُ مُدُوف مائن كَيْ صَرورت اس لِتَه فِيشَ آئى كه يَوْهَ مِن رَبُّو أَلْقَادِ عَدَ أول عل موسكنا باورنه ثانى اور ا الث، اول تو اس لئے نبیں ہوسکتا کہ عامل ومعمول کے درمیان خبر کا قصل لا زم آتا ہے، اور ٹائی و ٹالث اس لئے نبیس ہوسکتا کہ يوم كامعنى كاعتبار سان سكوئى جورتبيس بـ

صفت المبدوث لائي كن ب،صاحب جلالين نے الفراش كاتر جمد غوغاءُ الْجَواد سے كيا ب، غوغاء ثرى كاس بجه كوكت بين، جوأ زنے كے قابل بوكيا بور

فِيَوْلِكَى ؛ المنتشر بمعنى پراگنده، برترتيب، قيامت كروز حيراني اور پريشاني كي وجه انسان پراگنده اور برتيب چليل کے،ای جیرانی اور پریشانی کوظاہر کرنے کے لئے انسانوں کو جرادِمنتشر کے ساتھ تشبید دی گئی ہے۔

فَوْلِكُونَ : المعفوش يه نَفْشٌ (ض سن) _ اسم مقعول بي بمعنى وُصنا موار

چَۈلکَنَى: دات رصًا كااضافهاس بات كی طرف اشاره بے كه راضية بمعنی موضية ہے، علم معانی كى زبان ميں اس كو

اسنادمجازی کہتے ہیں، ای عیشیۃ موضِیَةِ اس لئے کہ عیسش راضی یعنی پہند کرنے والانہیں ہوتا؛ بلکہ موضیعة یعم پہندیدہ ہوتا ہے۔

لَفَيْ الْمُؤلِّثِينَ فَيَ

آلفارعة بيقامت كمتعددناموں ش سايك نام به قامت كمتعددنام الله شرك ريج بين، مثلا المحاقا المطآمّة ، المصآخة ، الغاشية ، السّاعة ، الواقعة وغيرو، يهال آلفارِعة كالفظ استعال بواب، ال كاصلى عن كه كرّان والى بغونك والى بعن المعارى وي بعارى آفت كران والى بغونك والى بعن الفور عن كامتارى وي بعارى آفت كران والى بغونك والى بعن المعارى المن والى بعن المعارى المن المعارى المن المعارك والمعارك والمعار

الفادعة سے تکالیعین الممنفوش تک پہلے مرسلے کا ذکر ہے یعنی جب وہ حاوی عظیمہ برپا ہوگا جس کے منتبج میر ونیا کا سارا نظام درہم برہم ہوجائے گاءاس وفت لوگ گھبراہٹ کی حالت میں اس طرح بھا کے بھا گے پھریں گے جیسے روشنی پر پروانے ہرطرف پراگندہ ومنتشر ہوتے ہیں ،اور پہاڑرنگ برنگ کی دھنی ہوئی اون کے ماننداس لئے ہوں گے کہ خود پہاڑ مختلف رنگ کے ہوتے ہیں۔

فَ أَمَّا مَنْ ثَـقُـلَتْ يَهال سے قيامت كے دوسرے مرحلے كاذكر ہے كہ جب دوبارہ زندہ ہوكرانسان اللہ تعالیٰ ما عدالت میں چیش ہوں گے۔

وزن اعمال کے متعلق ایک شبراوراس کا جواب:

قرآن مجيد يلى بروز قيامت وزن اعمال كامستله بهت كآيات يلى مختلف عنوانول سے آيا ہے اورروايات مديث يم اس كى تفسيلات بيشار جي ، وزن اعمال كے متعلق جو تفسيلى بيان آپ ين الله كا ادار يث بيس آيا ہے ، اس ميس ايك بار توبية قابل غور ہے كہ متعددروايات بيس آيا ہے كہ مشركى ميزان عدل بيس سب سے بھارى وزن كلم يك الله الله الله محمد رسول الله "كا بوگا۔

-- ح (مَزَم بِبَافَرَ) >

تر ندی، این ماجد، این حبن، یمی اور حاکم نے حضرت عبداللہ بن عمر وَ مَعَالَقَهُ اللّهُ عبدوایت نقل کی ہے کہ رسول اللہ یہ تعقیقات نے رمایا کہ محشر میں میری امت کا ایک آ دی ساری مخلوق کے ساسے لایا جائے گا اور اس کے ننا نوے اعمال نامے لائے ہوں ہو کی جہاں تک اس کی نظر پنچے گی، اور بیا عمال نامے برائیوں ہے ابر بر بول کے اور ان میں سے برائیول سے ابر ان بول سے ابر بر بول کے اس خص سے بو چھا جائے گا کہ ان تا مہائے اعمال میں جو پھے تھا مہرے جو مسب سے ہے ہا مہ ان اللہ والے فرشتوں نے تم پر پر پھوظم کم کیا ہے؟ اور خلاف واقعہ کوئی بات کھودی ہے؟ وہ افر ارکرے گا کہ اے میرے پر وردگار! جو پھے تھا کہ ان تمام کوئی بات کھودی ہے؟ وہ افر ارکرے گا کہ اے میرے کہ آج کی پر ظلم نہیں ہوگا، ان تمام گنا ہوں کے مقابلہ میں تمہاری ایک نیکی کا پر چہ تھی ہمارے پاس موجود ہے جس شرح تباراکلمہ ''اشھید ان لا اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ واشھید ان محصد اللہ میں تباراکلمہ ورسولہ'' کھا ہوا ہے، وہ عرض کرے گا، اے پر وردگار! استے بر سے سیاہ نامیا عمال کے مقابلہ میں وہ تمام سیاہ نامیا عمال رکھ جو تمیں میر چھوٹا سا پر چہ کیا وزن رکھے گا، اس وقت ارشاد ہوگا کہ تم پڑھلم نہیں ہوگا اور ایک بلہ میں وہ تمام سیاہ نامیا عمال رکھ جو تمیں سے کھوٹا سا پر چہ کیا وزن رکھے گا، اس وقت ارشاد ہوگا کہ تم پڑھلم نہیں ہوگا اور ایک بلہ میں وہ تمام سیاہ نامیا عمال رکھ جو تمیں نے فرمایا کہ ان کہ ان کا دائد کے نام کے مقابلہ میں کوئی چر بھاری ہوجائے گا تو اس کھری کے بھاری ہوجائے گا ، اس واقعہ کو بیان فرما کر رسول اللہ میں نے فرمایا کہ انٹر کہ نام کے مقابلہ میں کوئی چر بھاری نہیں ہو گئی ۔ (معارف، مظہری)

مند برار، مند حاکم میں حضرت ابن عمر تفقانفهٔ مُغَالِق کے روایت ہے کہ آپ فیلی فیلی نے فرمایا کہ جب حضرت نوح کی
وفات کا وفت آیا تو اپنے لڑکول کو جمع کر کے فرمایا کہ میں تنہیں کلمہ "لا السلہ الا السلہ" کی وصیت کرتا ہوں ! کیونکہ اگر ساتوں
آسان اور زمین ایک بلہ میں اور کلمہ "لا الله الا المله" ووسرے بلہ میں رکھ دیا جائے تو کلمہ کا بلہ بھاری ہوجائے گا، اسی مضمون کی
روایتیں حضرت ابوسعید خدری تفقائلہ تُقالِق اور این عباس حَفَق النّائية المؤق عبر ہم ہے معتبر سندوں کے ساتھ منقول ہیں۔

(مظهری)

ان روایات کامقتضی تو یہ ہے کہ مؤمن کی نیکیوں کا بلہ جمیشہ بھاری ہی رہے گاخواہ کتنے ہی گناہ کر لے، کیکن قرآن مجید کی دوسری آیات اور بہت می روایات صدیث سے ثابت ہوتا ہے کہ مسلمان کی حسنات سیئات کو تولا جائے گا،کسی کی حسنات کا بلہ بھاری ہوگا اور کسی کی سیئات کا بلہ بھاری رہے گا وہ نجات پائے گا،اور جس کی سیئات کا بلہ بھاری رہے گا اسے جہنم رسید کیا جائے گا۔

مثلاقرآن مجيد كالكآيت مي إ:

وَنَضَعُ الْمَوَاذِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيامَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَإِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلِ اَتَيْنَا بِهَا وَكَفَى بِنَا حَاسِبِيْنَ.

ت کر بھنی ہم قیامت کے دن انصاف کی ٹر از وقائم کریں گے اس لئے کسی شخص پرظلم نہیں ہوگا، جو بھلائی یا برائی ایک رائی کے دانہ کے برابر بھی کسی نے کی ہوگی وہ سب میزان عمل میں رکھی جائے گی اور ہم حساب کے لئے کافی ہیں۔

دوسرى آيت: ينسورهٔ قارعة كى ب:

فَامَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيِّنُهُ فَهُوَ فِي عِيْشَةٍ رَّاضِيَة. وَأَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِيُّنُهُ فَأُمُّهُ هَاوِيَة.

ابوداؤد میں بروایت حضرت ابو ہریرہ تَوْعَلَا ثَنْهُ مُنقول ہے کہ اگر کسی بندہ کے فرائض میں کوئی کی پائی جائے گی تو رب ابعہ کمین کا ارشاد ہوگا کہ دیکھواس بندے کے پچھٹوافل بھی ہیں یانہیں؟ اگر نوافل موجود ہیں تو فرائض کی کی کونفلوں سے پورا کردیا جائے۔ (مظهری)

ان تمام روایات کا حاصل بیہ ہے کہ مؤمن کا پلیم بھاری اور بھی ہلکا ہوگا ،اس لئے بعض علما تیفسیر نے فرمایا کہ اس سے معلوم ہوتا ہے کہ محشر میں وزن دومر تبدہ ہوگا اول کفروا کیمان کا وزن ہوگا جس کے ذریعہ مؤمن ، کا فر میں امتیاز ہوگا ، پھر دوسرا وزن نیک وبدا عمال کا ہوگا ،اس میں کسی مسلمان کی نیکیاں اور کسی کی بدیاں بھاری ہوں گی ،اور اس کے مطابق اس کو جزاء وسرزا سلے گی ،اس طرح تمام آیات اور روایات کا مضمون اپنی جگہ درست اور مربوط ہوجاتا ہے۔

(بیان الغران)

جبیها کداو پرمعلوم ہو چکا ہے کدانسان کے اعمال کا وزن دومر تبہ ہوگا اس سورت میں بظاہروہ پہلا وزن مراد ہے جس میں ہر مؤمن کا ایمان کی وجہ سے پلہ بھاری رہے گا خواہ اس کاعمل کیسا بھی ہو، نیز نذکورہ آیات اور روایات سے یہ بھی معلوم ہوتا ہے کہ انسان کے اعمال تو لے جائیں گے، گئے نہیں جائیں گے اور عمل کا وزن بفتر را خلاص ہوگا۔

اب رہا پیشبہ کہ انگال تو اعراض ہوتے ہیں اور کرنے کے بعد فنا ہوجاتے ہیں، پھر ان کے وزن کرنے کی کیا صورت ہوگی؟
وزن تو جو ہر کا ہوتا ہے نہ کہ عرض کا تو اس ترقی یا فتہ دور ہیں اس شبہ کے کوئی معنی نہیں ہیں، سائنسی نئی نئی ایجا وات نے بیٹا بت کر دیا
ہے کہ اعراض فنا نہیں ہوتے ؛ بلکہ جو ہرکی طرح باقی رہتے ہیں نیز اعراض کو تو لئے اور نا پنے کے مختلف آلات ایجا دکر لئے گئے
ہیں، جن کا رات دن مشاہدہ ہوتا ہے، گرمی سردی نا پنے کے آلے، گیس اور بجلی نا پنے کے میشر، تو یہ بات خدا کی قد رت سے بعید
نہیں کہ دہ ایسے آلے ایجا دفر مادے جن سے اعمال واقو ال کا وزن کیا جا سکے۔



سُوْرَةُ التَّكَا أَرُوكَتُمَ وَهُي يَالَيْ الْكَالِمُ الْمُعَالِمُ اللَّهِ الْمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَلِمُ اللَّهِ الْمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ اللَّهُ الْمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ اللَّهِ الْمُعَالِمُ اللَّعْلِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعِلِّمُ اللَّهِ الْمُعَلِمُ اللَّهِ الْمُعَالِمُ اللَّهِ الْمُعَالِمُ اللَّهِ الْمُعَالِمُ اللَّهِ الْمُعَالِمُ اللَّهُ الْمُعَالِمُ اللَّهِ الْمُعَالِمُ اللَّهُ الْمُعَالِمُ اللَّهُ الْمُعَالِمُ اللَّهُ الْمُعَلِمُ اللَّهُ الْمُعَالِمُ اللَّهُ الْمُعَالِمُ اللَّهُ الْمُعَالِمُ اللَّهُ الْمُعَالِمُ اللَّهُ الْمُعَلِمُ اللَّهُ الْمُعَلِمُ اللَّهُ الْمُعَلِمُ اللَّهُ الْمُعِلِّمُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُعِلِّمُ اللَّهُ الْمُعِلِمُ اللَّهُ الْمُعِلِمُ اللَّهُ الْمُعِلِمُ اللَّهُ الْمُعِلِّمُ اللَّهِ الْمُعِلِّمُ اللَّهُ الْمُعِلِمُ اللَّهُ الْمُعِلِّمُ اللَّهُ الْمُعِلِمُ اللَّهُ الْمُعِلِّمُ اللَّهُ الْمُعِلِّمُ اللَّهُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ اللَّهِ الْمُعِلِمُ الْمُعِلَمُ الْمُعِلَّمُ اللَّهُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلَمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِّمُ الْمُعِلِّمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعْمِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلْمُ الْمُعِلَمُ الْمُعِلَمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمِعِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلْمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلْمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ ا

سُورَةُ التَّكَاثُرِ مَكِّيَّةٌ ثمانُ اياتٍ.

سورہ نکاٹر کی ہے، آٹھ آپینی ہیں۔

يَسْسِيوالله الدّولاد والرّجَال حَلَى رُرْتُهُ الْمَكُمُ بِانْ بُسُّمُ فَدُونْتُمُ فَيها أَوْ عَدَدْتُمُ المَولَى تَكَاثُوا كَلّا وَالاَولاد والرّجَال حَلَى رُرْتُهُ الْمَقَالِينَ فَي بِانْ بُسُّمُ فَدُونْتُمُ فَيها أَوْ عَدَدْتُمُ المَولَى تَكَاثُوا كَلّا حَقًا رَدُعْ سَوْفَ تَعْلَمُونَ فَي الْقَبْرِ كَلّا حَقًا لَا مُونَ عَلَمُونَ وَلَمُ النَّهُ فِي الْقَبْرِ كَلّا حَقًا النَّوَ النَّارُ عَلَمُ اللَّهُ النَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَ

(عَيْسَنُّ دُوْيَةٌ كَمِعَىٰ مِينِ ہے) پھراس كود مكھنے كے دن تم ہے ضرور بالصرور نعتوں كے بارے ميں سوال ہوگا و نعتيں كہ جن ہےتم دنیامیں لذت اندوز ہوتے ہوجو کہ صحت ، فارغ البالی ، امن اور ما کولات دمشر وبات دغیر ہیں ، (لَکُنسٹَلُنَّ) ہے نون رقع (تبن) نونوں کے سلسل آنے کی وجہ ہے صذف کردیا گیااور ضمیر جمع کا و اؤ التقاء ساکنین کی وجہ ہے حذف کردیا گیا۔

عَجِفِيقَ الْمَالِيَ لِمَا لَيْهَا لَهُ اللَّهُ اللَّالِيلُولُ اللَّهُ اللَّا اللَّهُ اللَّهُ اللَّا اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ ا

فِيْغُولْكُنَّى الْهَاكُفر الْهَاءُ سه ماضى واحد ذكر عائب كاصيغه بيم كوعافل كرديا يَقِوُلَنَى ؛ تكانُو (تفاعل) كامصدر ب، مال واولاد، نيزعزت وجاه كى كثرت مين ايك دوسر بر بخركرنا_

فِيُولِكُ ؛ أَوْعَدَدْتُمْ ي زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ كَ ووسرى تفير --

فِيُولِكُمُ ؛ عَاقِبَةَ الْتَفَاخِرِ السَمَارت كاصافه كامقصدية بثاناب كه تَعْلَمُوْنَ كامفعول محذوف م اوروه عاقبة

فِيُولِكُ ؛ مَا اَشْعَلْتُمْ بِهِ يه لَوْ كاجواب -

فَيُولِكُنَّ ؛ جواب قسم محدوف ليني لَتَرَوُكَ الْجَحِيْمَ يَسْمِ محذوف كاجواب ب، اى وَاللَّه لَتَرَوُنَّ الْجَحِيْمَ. سَيَوُاكُ: لَتَرَوُدٌ كو لَوْ كاجوابِقر اردين من كيا قباحت بكراس كاجواب محذوف مانا؟

جَجُولَ شِيعَ: لَوْ كاجواب غير يقيني الوقوع موتاب اوربيقيني الوقوع ب: للبذاب فو كاجواب مبيس موسكتا

خِيُّولِكُمُ ؛ حُذِف منه لام الفعل وعَيْنُه وَٱلْقِيَ حَرْكَتُهَا عَلَى الرَّاءِ ، لَتَرَوُنَ اصل سُ لَتَرُ أَيُوْنَ بروزن لَتَفْعلون ثما، لام كلمد جوكدياء باء باور عين كلمد جوكة بمزه ب حذف كروية كئه، يساء النقاء ماكنين كي وجد سه حذف موكى ،اس لئے كدياء متحرک ماتبل اس کے ہمز ومفتوح ماء الف ہے بدل گئی، واؤ اور ماء کے ساکن ہونے کی وجہ ہے ماء حذف ہوگئی، پھر ہمز ہ (جو کہ مین کلمہ ہے) کی حرکت راء (جو کہ فاکلمہ ہے) کو دبیری اور ہمز ہ حذف ہو گیا، پھراس برنون تا کیدمشد د داخل کر دیا اور نون رفع تین نونوں کے جمع ہونے کی وجہ سے حذف ہو گیا اور واؤ کواس کی مناسبت سے ضمہ دے ویا۔

سَيْخُوالْ ، واو كوالتقاء ساكنين كى وجه عدف كيول بيس كيا؟

جِهُ النبع: ال لئے كماكر واؤ خميركومذف كردية توقعل ع فحل (نيست) بوجاتا، اس لئے كمين كلمه اور لام كلمة و بہلے بى صذف كئ جا يك ين اب اكر واؤكر كاف صدف كردياجا تاتوباتى كياره جاتا؟ اللي في واؤكو حذف بيس كيا كيا-

يَجُولِكُمْ : ثمر لَتُسْلِكُنَ تعمتول كے بارے ميں بيهوال عام ہے، مؤكن اور كافر دونوں سے سوال ہوگا ، كافر سے تو بخ كے طور پراور مومن سے تشریف اور اظہار فضیلت کے طور بر۔

----- ح[رَعَزُم بِبَائِينٍ]≥

قِیُوَ لِکُنَا: تُحذِفَ منه النح تُسلَلُنَ کی اصل تُسلَلُوْنَنَّ تھی ہوں اعرابی تین ٹونوں کے جمع ہونے کی وجہے صدف ہوگیا، پھر التقاء ساکنین کی وجہ سے وافر حذف ہوگیا اور واؤ کی جگہ بطور دلالت ضمہ رہ گیا۔

<u>ێٙڣٚؠؙڔۅؖؾۺٛؗڽٛ</u>

سورهٔ تکاثر کی فضیلت:

رسول الله والمنظمة في محابه كرام تفع الفيانة التفاق التفاق التفاق التفاق التفاق التفاقية التفاق الت

(مظهری، معارف)

آلف کھر النگائو ، آلف گھر، لَفُو ہے مشتق ہے، جس کے اصل معنی غفلت کے ہیں ؛ کیکن عربی محاورہ میں اس شغل کے لئے بولا جاتا ہے، جس سے آدمی کی دلچیں آئی بڑھ جائے کہ وہ اس میں منہمک ہوکر دوسرے اہم ترین کا موں سے غافل ہوجائے ، تکاٹر سے محشوۃ سے ماخوذ ہے اور اس کے تین معنی ہیں: ایک یہ کہ آدمی زیادہ سے زیادہ مال حاصل کرنے اور جمع کرنے کی کوشش کر ہے، دوسرے سے آگے بڑھنے کی کوشش کریں، تیسرے یہ کہ لوگ اول حاصل کرنے اور جمع کرنے میں ایک دوسرے سے آگے بڑھنے کی کوشش کریں، تیسرے یہ کوگ ایک دوسرے کے مقابلہ میں کھرت مال واولا دمیں تفاخر کریں، حضرت قمادہ وفق کا فلک تھا گھڑے کی بہی تفییر ہے۔

اور حضرت ابن عباس نظمَ النَّاقَة النَّاقَة النَّاقَة النَّاقَة النَّاقَة النَّاقَة النَّاقَة النَّاقِة النَّاق النَّاقِق النَّاق النَّاقِق النَّاقِق النَّاق النَّاق النَّاق النَّاقِق النَّاقِق النَّاقِق النَّاقِق النَّاقِ



ووره العضروكية وهي العامات المارية

4A**+**

سُورَةُ وَالْعَصْرِ مَكِّيَّةٌ اَوْ مَدَنِيَّةٌ ثَلَاثُ ايَاتٍ.

سورۂ عصر کی یامدنی ہے، تین آبیتی ہیں۔

يِسْ مِ اللّهِ الرَّحِ مِن الرَّحِ مِن الرَّحِ مِن الرَّحِ الدَّبِرِ وَمَا بَعْدَ الزَّوَالِ الى الغُرُوبِ او صَلاَة العَصْرِ إِنَّ الْإِنْسَانَ الجِنْسَ لَفِي خُسْرِ فَ فَى تِجَارَتِه إِلَّالَّذِيْنَ الْمَنْوَاوَعَمِلُوا الصَّلِي فَلَيْسُوا فِي خُسْرَانِ عُمْ وَتُواصَوْ اَوْصَى بَعْضُهُمْ بَعْضًا بِالْحَقِّيَةُ اى الإيمان وَتُواصَوْا بِالصَّبِّرِ فَ عَلَى الطَّاعَةِ وعَنِ المَعْصِيةِ.

ت کی کے زمانہ یا عصر کی نماز کی قسم بلاشہ انسان اپنی تجارت میں بڑے خسارے میں ہے سوائے ان کے جوامیان لائے اور کے رہائی کے اور ایک کی تعانی لائے اور کے اور ایک ورسے میں ہے موائے ان کے جوامیان لائے اور نیک کے اور ایک و وسرے کوئی کی لیمنی ایمان کی تقیین کر ہے۔

رہے ، خسارے میں نہیں ہیں۔

عَجِقِيق اللَّهِ اللَّهُ اللّلْمُ اللَّهُ اللّ

مفرعلام نے المدّھر، او مابعد الزوال، او صلوة العصر، كهدر عصوكى تين تفيرول كى طرف اشاره كيا ہا الله الله ين آمنُو الانسان كى بعد لفظ جه نس كااضافه كركے بتادياكه الانسان بى الف لام جنس كا اضافه كركے بتادياكه الانسان بى الف لام جنس كا جادراس كى تائيد إلاّ الله ين آمنُو كے استثناء ہے بھى ہوتى ہے، اور بعض في الف لام كوعهد كاليا ہے، اور معين افر ادم او لئے ہيں ، بعض نے وليد بن مغير اور عاص بن وائل اور اسود بن المطلب اور بعض نے ابولہب مراوليا ہے۔

مَيْ وَالْ اللَّهِ اللَّهِ وَاللَّهِ وَاللَّهِ وَاللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ ال

ھ (فِرَمُ بِسَائِسَ اِ = -

مُؤال : تواصِي بالحق تمام تواصى بالخيركوشائل ميتو كر تواصى بالصبر كوكيول متقلًا ذكرفر مايا؟

بِحُلْثِئِ: تواصی بالصبو کی اہمیت کوظا ہر کرنے کے لئے منتقلاً ذکر فرمایا اور بیذکر خاص بعد العام کے قبیل سے ہے جیسا کہ افظوا علی الصَلَواتِ والصلوة الوسطی میں ہے۔

لِفَسِيرُ وَلَشِينَ حَيْثَ

ورة العصر كى فضيلت:

حضرت عبیداللہ بن حصن فاقتانلهٔ تغلیق فرماتے ہیں کہ رسول اللہ سلی اللہ کے صحابہ فاقتانی تعلیق میں دو محف ایسے تھے کہ جب وہ آپس میں ملتے تھے تواس وفت تک جدانہیں ہوتے تھے جب تک کہ ایک دوسرے کوسور ہ و المصصور نہ الیس۔ (طبرانی) اور امام شافعی رَحْمَ کا لفائے تھائی نے فرمایا کہ اگر لوگ صرف اسی سورت میں تد ہر کر لیتے تو بہی ان کے لئے کافی تھی۔ (ابن کثیر، معارف) یہ سورت جامع اور مختفر کلام کا ایک بے نظیر نمونہ ہے اس کے اندر چند جھے تلے فاظ میں معنی کی ایک و نیا بجردی گئی ہے۔

اس سورت میں حق تعالیٰ نے زمانہ کی قتم کھا کرفر مایا کہ نوع انسان بڑے خسارے میں ہے اور اس خسارے سے اسٹی صرف وہ لوگ ہیں جو چار چیزوں پر عامل ہیں: ① ایمان ④ عمل صالح ⑥ دوسروں کوحق کی نصیحت ﴾ اور صبر کی تلقین ، دین ودنیا کے خسارے ہے نیچنے اور نفع عظیم حاصل کرنے کا بیقر آئی نسخہ چارا جزاء ہے مرکب ہے ، جن میں پہلے دوا جزاء اپنی ذات کی اصلاح کے متعلق ہیں ، اور دوسرے دو جز دوسروں کی ہدایت واصلاح سے خلق ہیں۔

ورت کے مضمون کے ساتھ زمانہ کی مناسبت:

یہاں یہ بات غورطلب ہے کہ اس مضمون کے ساتھ زمانہ کی کیا مناسبت ہے جس کی قتم کھا گئی ہے کیونکہ قتم اور اب قتم میں باہم مناسبت ضروری ہوتی ہے، تو یہ بات پہلے بھی بار ہا گذر چکی ہے کہ اللہ تعالی نے مخلوقات میں سے ی چیز کی قتم مخض اس کی عظمت یا اس کے کمالات و عجائب کی بنا پرنہیں کھائی ہے؛ بلکہ اس بنا پر کھائی ہے کہ وہ اس بات دلالت کرتی ہے جے نابت کرنا مقصود ہے، لہذا زمانہ کی قتم کا مطلب رہے ہے کہ زمانہ اس حقیقت پر گواہ ہے کہ انسان سے خسارے میں ہے، موائے ان لوگوں کے جن میں یہ چارصفات پائی جا کمیں، زمانہ کا لفظ، ماضی، حال ، مستقبل مے خسارے میں ہے، موائے ان لوگوں کے جن میں یہ چارصفات پائی جا کمیں، زمانہ کا لفظ، ماضی، حال ، مستقبل

تینوں زمانوں پر بولا جاتا ہے، حال کسی لمبےزمانہ کا تام نہیں ہے؛ بلکہ حال، ہرآن گذر کر ماضی بنمآ چلا جاتا ہے اور ہر آن ، آ کرمستنقبل کو حال اور جا کر ، ماضی بتار ہی ہے ، یہاں چونکہ مطلق ز مانہ کی قشم کھائی گئی ہے ، اس لئے تینوں قشم کے ز مانے اس کے مفہوم میں شامل ہیں جگذرے ہوئے زمانہ کی قتم کھانے کا مطلب بیہ ہے کہ انسانی تاریخ اس بات پر شہادت دے رہی ہے کہ جولوگ بھی ان صفات ہے عاری تھے دہ بالآخر خسارے میں پڑے رہے اور گذرتے ہوئے ز ماند کی مشم کھانے کا مطلب سمجھنے کے لئے پہلے یہ بات اچھی طرح سمجھ لینی جا ہے کہ جوز مانداب گذرر ہاہے بددراصل وہ وقت ہے جو ہر فرد وقوم کو کام کرنے کے لئے دیا گیا ہے، اس کی مثال اس وقت کی سی ہے جو طالب علم کوامتخان گاہ میں پر چہل کرنے کے لئے دیا جاتا ہے، بیوونت جس تیز رفقاری ہے گذرر ہاہاں کا انداز ہ کھڑی کی سکنڈ کی سوئی کی حرکت سے ہوجائے گا، حالانکہ ایک سکنڈ بھی وقت کی ایک بہت بڑی مقدار ہے، اس ایک سکنڈ میں روشنی ایک لاکھ چھیاسی ہزارمیل یا تقریباً دولا کھنواسی ہزارکلومیٹر کا فاصلہ طے کر کیتی ہے،اور خدا کی خدائی میں بہت ہی ایسی چیزیں بھی ہوسکتی ہیں جواس سے بھی زیاوہ تیز رفتار ہوں ،تا ہم اگروفت گذرنے کی رفتارہ ہی سمجھ لی جائے جو گھڑی کی سکنڈ کی سوئی ک حرکت ہے معلوم ہوتی ہے تو ہمیں مجسوس ہوگا کہ ہمارااصل سرمایہ یہی وقت ہے جو تیزی ہے گذرر ہاہے ،امام رازی رَيِّمَ كُلدُلْهُ تَعَالَىٰ فَيْ كِيرِرُكُ كَا تُولِ تَقَلَّ كِيابِ كَدِيشِ فِي صورة العصوكامطلب ايك برف فروش سي سمجها جوبازار میں آواز لگار ہاتھا کہ رحم کرواس شخص پرجس کا سرمایہ بچھلا جار ہاہے، رحم کرواس شخص پر کہ جس کا سرمایہ گھلا جار ہاہے، اس كى يديات س كريس نے كها: يدب وَالْعَنْصُدِ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَفِى خُسْدِ. اس كامطلب ب، يمركى جومدت انسان کوعمل کے لئے دی گئی ہے وہ برف کی طرح تھل رہی ہے اس کو اگر ضائع کیا جائے یا غلط کا موں میں صرف کیا جائے ، تو یبی انسان کا خسارہ ہے ، پس گذرتے ہوئے زمانہ کی قتم کھا کر جو بات اس سورت میں کہی گئی ہے کہ یہ تیز ر فمآری ہے گذرتا ہوا زیانہ شہادت دے رہاہے کہ ان چارصفات سے خالی ہوکرانسان جن کا موں میں بھی اپنی مہلت عمر کوصرف کرر ہاہے وہ سرا سرخسار ہے ہی خسار ہے ہیں ہے، تفع میں صرف وہ لوگ ہیں جوان جار صفات ہے متصف ہوکرد نیا میں کام کررہے ہیں ، روائی بات ہے جیسے ہم اس طالب علم سے جوامتخان کے مقررہ وفت کواپنا پر چاس کرنے کے بجائے کسی اور کام میں صرف کرر ہا ہو، کمرہ میں لگے ہوئے گھنٹے کی طرف اشارہ کر کے کہیں کہ بیے گذرتا ہوا وقت بتا ر ہاہے کہتم اپنا نقصان کررہے ہو، تفع میں صرف وہ طالب علم ہے جواس وقت کا ہرلیحہ اپنا پر چیمل کرنے میں صرف کرر ہا ہے، بعض علاء حقیقت شناس نے کیا خوب کہا ہے۔

مَطَى نَفَسٌ منها انْتَقَصَتْ بِهِ جُزْءً ا حَياتِكَ انسفاسٌ تُعَدُّ فكلَّما يَرْجَعَكُمُ الله تيرى زندگى چند كنے ہوئے سانسوں كانام ب، جب ان ميں سے ايك سانس گذر جاتا ہے تو تيرى عمر کا ایک جزئم ہوجا تا ہے۔

ح (مَزَم بِبَاشَرٍ) ع

یہ بات بیٹی ہے کہ عمرے زیادہ قیمتی سرمایہ کوئی چیز نہیں ہے اور اس کوضائع کرنے سے بڑا کوئی نقصان نہیں ،اس بات کی تائیدایک صدیث مرفوع سے بھی ہوتی ہے جس میں رسول اللہ بیٹی تھیں نے فرمایا ہے: مگسل یَسفد و فَبَسائِسع نَفْسَه فَهُ عَیْفَهَا اَوْ مُوْبِقُهَا لِین ہر محص جب کواٹھتا ہے تواپی جان کا سرمایہ تجارت میں لگا تا ہے ، پھرکوئی تواپنے اس سرمایہ و خیارہ سے آزاد کرالیتا ہے اورکوئی ہلا کت میں ڈالیا ہے۔

نجات کے لئے صرف این عمل کی اصلاح کافی نہیں بلکہ دوسروں کی فکر بھی ضروری ہے:

ا پیٹمل کوقر آن وسنت کے تابع کر لیما جتنا اہم اور ضروری ہے اتنا ہی اہم بیہے کہ دوسر ہے مسلمانوں کو بھی ایمان اور عمل صالح کی طرف بلانے کی مقدور بھر کوشش کرے ورنہ صرف اپناعمل نجات کے لئے کافی نہ ہوگا ،خصوصاً اپنے اہل وعیال نے ففلت برتنا اپنی نجات کاراستہ بند کرنا ہے۔



مروره آهر آهر والمراق مي المان المراق المرا

سُورَةُ الْهُمَزَةِ مَكِّيَّةٌ أَوْ مَدَنِيَّةٌ تِسْعُ ايَاتٍ.

سورهٔ ہمزه کی یامدنی ہے، نوآ بیتی ہیں۔

يسسيراللوالترخسطن التوسيسيراللوالترخسطن الترجسير وقال كليمة عذاب او واد في جَهَنَم لَكُل هُمَزَة الْمُوبِنِينَ اى كَثِيرِ الهَمْزِ اللهُ عليه وسلم والمُؤبِنِينَ كَ اللهُ عَلَيْهِ اللهُ عليه وسلم والمُؤبِنِينَ كَ اللهُ عَلَيْهِ اللهُ عَلَيْهِ وسلم والمُؤبِنِينَ كَ اللهُ عَلَيْهِ اللهُ عَلَيْهِ والمُؤبِنِينَ كَ اللهُ عَلَيْهِ والسَّمُ والمَولِيدِ بِي المُغيرة وغيرِهِما والدِّي حَمَلَهُ خَالِدُا لا يمُؤتُ كَلَّ رَدْعٌ لَيْنَالَالُ حَوَادِ والسَّمُ والسَّمُ والمُؤسِنِ والمُعْرَدُ والمُوادِ والمُعْرَدُ والمُعْرَ

سر کرد کی اللہ اور اللہ کا نام ہے، ہرا لیے تخص کے لئے جو برا امہر یا نہایت رحم والا ہے، برای خرابی ہے (وَاللہ لَی بَکُمْ تَ عَذَاب ہے یا جہنم میں ایک وادی کا نام ہے، ہرا لیے تخص کے لئے جو عیب ٹو لئے والا، طعنہ زنی کرنے والا ہو، بعنی بکثر ت برگوئی کرنے والا اور طعنہ زن ہو، بیسورت اس شخص کے بارے میں نازل ہوئی جو آنخضرت یک تفیق اور تشدید کے ساتھ ہے تھا، جیسا کہ امید بن خلف اور ولید بن مغیرہ وغیر ہما جس نے مال جمع کر کے دکھا ہے جسمنع تخفیف اور تشدید کے ساتھ ہے اور اس کو گون کن کر رکھا اور اس کو حوادث زمانہ کے لئے تیار کر کے دکھا، (اور) وہ اپنی جہالت کی وجہ سے سمجھتا ہے کہ اس کی مال اس کو دوام بخشے گا کہ بھی نہم سے گا، ہم گر نہیں (کلا) حرف تعبیہ ہے، پیشخص یقیناً آگ میں پھینک دیا جائے گا جو ہم ال اس کو دوام بخشے گا کہ بھی نہم رے گا، ہم گر نہیں (کلا) حرف تعبیہ ہے، پیشخص یقیناً آگ میں پھینک دیا جائے گا جو ہم اس چیز کوتو ٹر پھوڑ کرنے والی کیا ہے؟ وہ اللہ کی ساگائی بو کی

﴿ (مَرْزَم بِبَاشَهِ) ◄

کے ہے بین ہرکائی ہوئی، جودلوں تک سرایت کرجائے گی تو ان کوجلا کررکھدے گی اور دلوں کی تکلیف دیگراعضاء کی بہ سبت زیادہ ہوتی ہے ان کے لطیف ہونے کی وجہ ہے، وہ آگ ان پرڈھا تک کر بند کردی جائے گی تک سبق کی معنی کی عایت کی وجہ ہے ، (مؤصدة) ہمزہ کے ساتھ ہے اور ہمزہ کے عوض واؤ کے ساتھ ہمی عایت کی وجہ ہے (مؤصدة) ہمزہ کے ساتھ ہوا ور ہمزہ کے عوض واؤ کے ساتھ ہی ہمنی بند ہونے والی ، بڑے بڑے لہے ستونوں میں (عَدَدُ) میں دونوں حرفوں کے ضمہ اور فتح کے ساتھ، (مُدَدَةِ) ہے ماتیل کی صفت ہے؛ لہذا آگ ستونوں کے اندرہوگی۔

جَّقِيق بَرَكِيكِ لِيَهِمُ الْحِثَانِ لَقَسِّلُو فَاسِّلُونَ فَاللَّهِ الْمِنْ

غِولَ)؛ هُمَزَةٍ، بروزن فُعَلَة ، بهت طعنةن ، براعيب كو، فُعَلَة فاعل كمبالفه كاوزن ب،اس من ة مبالفه ك لئے ع ب، هَمَّزُ (نَصْ) كامصدر ب، طعنة زنى كرنا، آكھ سے اشاره كرنا۔

غ قِحُولِی ؛ کَسَسَزَۃ میغہ صفت برائے مبالغہ پس پشت برائی کرنے والا بعض حضرات نے کہا ہے دونوں کے تقریبا ایک ہی من مین۔

وَلَكُنَّ ؛ جَوَابُ فَسَمِ محذوفِ تَقْتَرِيمِ ارت بيب، وَاللَّهِ لَيُنْبَذَنَّ فِي الحطمة.

وُلْ آنَى ؛ جُمِعَ الصمير دعَايَة لِمعنى كُل ، لين عَلَيْهِمْ كُثْمِير كُلُّ كَاطرف راجع ب، وال بوتا ہے كہ كل مفرد ہے ر هُمْ جَمْع ہے؛ لہٰذا ضميرا ور مرجع مِن مطابقت جبیں ہے؟

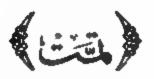
بِحُولَ بَيْنَ؛ جواب بيب كه لفظ كل معنى كاعتبارت جمع ب،اى رعايت سے هم تغمير كوجمع لايا حميا ب، عَمَدُ اور عُمد بيد بنوں عُمُود كى جمع بين جمعنى ستون -

ێٙڣێؚؠؙڒ<u>ۅؖؾٚۺٛ</u>ؙڽؙڿ

ان سورت میں تین سخت گناہوں پر عذاب شدید کی وعید کا بیان ہے اور پھراس عذاب کی شدت کا بیان ہے، وہ تین گناہ، مز، لمز، جمع مال جیں، همز اور لمز چند معانی کے لئے استعال ہوتے ہیں، جو بہت حد تک قریب قریب ہیں، جی کہ ض اوقات وونوں ہم معنی استعال ہوتے ہیں، اور بعض لوگوں نے خفیف فرق کے ساتھ بھی استعال کیا ہے؛ مگر جومعنی قدر نترک ہیں وہ یہ ہیں، کسی کی تذکیل وتحقیر کرتا، کسی کی کروار کشی کرنا، کسی کی طرف انگلیاں اٹھانا، اشارہ کنا یہ سے کسی کے نسب وغیرہ پرطعن کرنا ،کسی کی شخصیت کو مجروح کرنا ،کسی کے منہ درمنہ چوٹیس کرنا یا پس پشت بدگوئی کرنا ، بیسب ہی معنی فذکورہ دونو ل لفظوں کے مفہوم میں شامل ہیں ،اور ظاہر ہے کہ بیسب باتنیں نہایت فدموم اور شریعت کی نظر میں ممنوع ہیں۔

تیسری خصلت جس پراس سورت میں وعید آئی ہے، وہ مال کی حرص اور محبت ہے، اور بار بار شکنے ہے اس کی حرص اور محبت کی طرف اشارہ ہے، مگریہ بات ذبہن نشین رہے کہ بہت کی آیات وروایات اس پر شاہدیں کہ مطلقا مال کا جمع کرنا کوئی حرام اور گنا نہیں ؛ اس لئے یہاں مال جمع کرنے ہے وہ مال مراد ہے، جس میں حقوق واجبہ ادانہ کئے محتے ہوں یا بخر و تفاخر مقصود ہویا مال کو محبت میں منہمک ہوکر دین کی ضروریات ہے ففلت یائی جاتی ہو۔

تَ طَلِعُ عَلَى الْافْلِدة لِين جَهُم كَى يِهَ كُولُول تَكَ بَيْنَ جَهُم كَى بِهِ آكُ وَلُول تَكَ بَيْنَ جَائِ كَا بِولَ وَهِمَ آكُ كَا بِي فَاصِهِ بِكِهِ جَوَبُعَى اسْ بِرِ بِرْ بِهِ اللّهِ فَاللَّهِ عَلَى اللَّهُ فَلِدَة لَي اللَّهُ وَلَى تَكْ بَيْنِ عَلَى اللَّهُ وَلَى تَكْ بَيْنِ عَلَى اللَّهُ وَلَ تَكْ بَيْنِ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى



مَوْرِيُّو الْفِيْلِ كِيْتُ وَهِي مَا يَوْلِيَّا الْمِوْرِيُّ الْفِيْلِ كِيْتُ وَهِي مِنْ الْمِوْرِيِّ الْمُوْرِيِّ الْمُؤْمِنِي الْمِنْ الْمُؤْمِنِي الْمِنْ الْمُؤْمِنِي الْمِنْ الْمُؤْمِنِي الْمُؤْمِنِينِي الْمُؤْمِنِي الْمِؤْمِنِي الْمُؤْمِنِي الْمُؤْمِنِي الْمُؤْمِنِي الْمُؤْمِنِي الْمِؤْمِنِي الْمُؤْمِنِي الْمُؤْمِي الْمُؤْمِنِي الْمُؤْمِنِي الْمُؤْمِنِي الْمُؤْمِنِي الْمُؤْمِنِي الْمُؤْمِنِي الْمُؤْمِنِي الْمُؤْمِنِي الْمُؤْمِنِي الْمُؤْمِي الْمُؤْمِنِي الْمُؤْمِنِي الْمُؤْمِنِي الْمُؤْمِنِي الْمُؤْمِنِي الْمُؤْمِنِي الْمُؤْمِنِي الْمُؤْمِنِي الْمُؤْمِنِي الْمُؤْمِي الْمُؤْمِنِي الْمُؤْمِنِي الْمُؤْمِنِي الْمُؤْمِنِي الْمُؤْمِنِي الْمُؤْمِي الْمُؤْمِنِي الْمُؤْمِنِي الْمُؤْمِنِي الْمُؤْمِنِي

سُوْرَةُ الفِيلِ مَكِّيَّةٌ خَمْسُ ايَاتٍ.

سورهٔ فیل ملی ہے، پانچ آیتیں ہیں۔

يَاصَحٰي الْفِيْلِ فَ هُو سحمود واَصْحَابُهُ آبَرَهَهُ مَلِكُ اليَمَنِ وَجَيْشُهُ بَنَى بِصَنْعَاءَ كَنِيسةُ لِيَضْرِفَ اليها الحَاجُ مِن مَكُّةُ فَاحُدَت رَجُلٌ مِن كِنانَة فيها ولَطَحَ قِتَلَتَهَا بِالعَذَرَة إِحْتِقَارًا بِها فَحَلَقَ آبَرَهَةُ لَيهُ مِنَ الحَجُ مِن مَكُّة فَاحُدَت رَجُلٌ مِن كِنانَة فيها ولَطَحَ قِتَلَتَهَا بِالعَذَرَة إِحْتِقَارًا بِها فَحَلَقَ آبَرَهَةُ لَيهُ مِنَ الحَجْبَةِ فَا الحَدَة بِحَيْثِهِ عَلَى افْيَالِ مُقَدَمُهَا محمود فجئن توَجُهُوا لِهَدَم الكَعْبَةِ أَرْسَلَ الله عليهم مَن فَا اللهِ عَلَى اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ مَن كَنْ وَاحِدُهُ وَقِيْلِ وَاحِدُهُ الْوَلِي اللهُ اللهُ وَاللهِ وَهُلالِ وَاللّهُ عَلَى اللهُ وَاللّهُ عَالَى كُنْ وَاحِدُهُ وَقِيْلِ وَاحَدُهُ النّولِ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ عَلَى اللّهُ وَاللّهُ وَلَا اللّهُ وَلِي اللّهُ وَاللّهُ اللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ اللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ اللّهُ وَاللّهُ اللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ اللّهُ وَالللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ

90

ا پن قول اکفریخعل کیند گفر النع بی بیان قرمایا ہے، کیاای نے انہدام کعب کے بارے میں ان کی تدبیر کوا کارت اور تا کارہ تہیں کردیا؟ اور ان پر پر تدوں کے جمنڈ کے جمنڈ ہی جے دیے، کہا گیا ہے کہ (اَجَابِیْلَ) کا واحد نہیں ہے اور کہا گیا ہے کہ واحد ابنیل واحد ابنیل کے جہنا کہ مقاح ، مفاتی کا واحد ہے یاای کا واحد ابنیل ہے ، جہنا کہ مقاح ، مفاتی کا واحد ہے یاای کا واحد ابنیل ہے ، جہنا کہ مقال من مفاتی کا واحد ہے یاای کا واحد ابنیل ہے ، جوان پر پکی ہوئی مٹی کی پھر یال پھینک دے تھے، پھران کا ایما حال کردیا جیسا کہ جانوروں کا کھایا ہوا بھوسہ جیسا کہ بھی ہوئی مٹی کی پھر یال کو جانوروں نے پڑ دیا ہو، اور اس کوفنا کردیا ہو، یعنی القد تعالیٰ نے ان میں سے ہرا کے کواس کی اس پھری سے ہلاک کردیا ، جس پر اس کا نام لکھا ہوا تھا، اور وہ مسور سے پینی القد تعالیٰ نے ان میں سے ہرا کے کواس کی اس پھری سے ہلاک کردیا ، جس پر اس کا نام لکھا ہوا تھا، اور وہ مسور سے بردی اور پین تک پہنچ جاتی تھی ، اور بیوا قعد آ پ پھی تھی گائیں گا

عَجِقِيق الْمِنْ الْمُ اللَّهِ الللَّلَّمِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ اللللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الللَّا اللَّهِ ا

قَوْلَ أَنَّ الْسَمْ تَسَرَ رَوَيت سے روَيت علميه مراد ب، اور خطاب آپ فَيْقَافِينَا کو ب، روَيت سے روَيت بھرى بھى مراد ہو سكتی ہے ، اس لئے كه اگر چه آپ فِيْقَافِقَة ان اس واقعه كونبيں ديكھا ؛ گراس كة ٹاروعلامات كوديكھا تھايا آپ فيقافِقَة ان اس واقعه كومتو اتر بيان كرنے والوں ہے اس قدر تو اتر كے ساتھ سنا كه بمز له مشامدہ كے ہو گيا ، اس لئے كه تو اتر كے ساتھ سن ہوئى چيز بمز له مشامد كے ہوتى ہے۔

فَيُولِكُ : استفهام تعجيب ياكسوال مقدر كاجواب --

لَيْنَوْ النَّهُ عَوْلَ مِنْ اللَّهُ تَعَالَى عَالَم الغيب بِي ان كُونُو مَا تَكَانَ ومَا يكونُ كَاعَلَم بِ ، تَوْ بَكِر اللَّهُ تَعَالَى فَ اللَّمْ تَوَ كَوْر لِعِهِ كيول سوال فرمايا؟

قِبُولِ آنَى ؛ هـو محمود تمام ہاتھیوں کا سردارا یک محمود نامی ہاتھی تھا، جوظیم الجنة اور بزے ڈیل ڈول والا تھا،اس کی کنیت ابو العباس تقی۔

قِيْ فَلْكُن ؛ ابابيل ايك پرنده جوكه كور عقدر عيمونا موتاب-

قِيَّوَلِنَىٰ: سِبِدِيْكُ يَهِ سَلِكُ كَامَعرب ہے،وہ پُقرجس مِیں مٹی كی آمیزش ہو،آگ میں کی ہوئی مٹی کوبھی "مِسجِيل" کہتے ہیں۔

﴿ (مَزَم بِبَاشَلا) ٢

<u>تَ</u>فَيْدُرُوتَشِينَ

اس سورت میں واقعہ فیل کا مختمر بیان ہے، شاہ صبتہ کی طرف ہے یمن میں ابر مدہ الا شرم گورز تھا، اس نے صنعاء میں ایک بہت بڑا گر جاتھ ہر کرایا تھا اور اس کی کوشش تھی کہ لوگ خانہ کعبہ کے بجائے اس گر جا کا جج کیا کریں، یہ بات اہل مکہ اور دیگر عرب قبائل کو سخت نا گوار تھی؛ چنا نچہ بنی کنانہ کے ایک قریشی محتی نائے ہوئے قوال نے ایر ہہ کے بنائے ہوئے قوال ان خانہ کعبہ کو منہدم کرنے کا عزم کر لیا اور ایک لشکر جمالہ آور ہوا، پچھ ہاتھی بھی اس کے ساتھ تھے جب بیلشکر وادی مختر کے پاس پنچا تو اللہ تعالی نے پرندوں جونول بھی کرا ہے گھر کی تھا قلت قربائی، ہر پرندے کی چونچ میں ایک ایک اور پنجوں میں ووروکٹریاں تھیں جو چنے یا مسور کے برابر تھیں، جس لشکری کے بھی وہ کئری گئی وہ و ہیں ڈھیر ہوجا تا، خود ابر بہ کا بھی میں حشر ہوا، اس طرح اللہ تعالی نے مرابر تھی کہ کری میں قلت کر ہی تھی تھی گئی کے دو اداع بدالمطلب (جو کہ مکہ کے سردار تھے) کے دو سواونٹوں پر قبضہ کرلیا، جس پر آپ کے کو اداع بدالمطلب نے ابر بہ سے آکر کہا: میر سے اوشٹ واپس کروو، باتی رہائی رہا خانہ کعبہ کا مسلہ تو وہ اللہ کا گھر ہے وہ خود اس کی حق قلت کرے گا۔

واقعه كي تفصيل اور پس منظر:

اصحاب فیل کا واقعہ آپ فیل بھی کی من ولا دت اے ۵ میں بیش آیا تھا، آپ فیل کھی بعثت الا میں ہوئی تھی اس وقت بھی اس وقت بھی اس واقعہ کے بیٹر آیا تھا، آپ فیل کھی الا میں ہوئی تھی اس واقعہ کے بیٹر اس واقعہ کے بیٹر کے اور ہا صاحت میں سے ہار ہاص تاسیس وتمہید کے معنی میں استعمال ہوتا ہے، دھم سنگ بنیا دکو کہتے ہیں۔

تاریخی پس منظر:

نجران میں یمن کے فرہانرواذونواس نے عیمائیوں پر آئش بحری خندق میں جلا کرظم کیا تھا اس کا بدلہ لینے کے لئے جش کی عیمائی سلطنت نے یمن پر تملد کر کے جمئیر کی حکومت کا خاتمہ کر ویا تھا،اورین ۵۲۵ و میں اس پورے علاقہ پر جبشی حکومت قائم ہوگئ تھی ، یہ پوری کا رروائی دراصل قسطنطنیہ کی رومی سلطنت اور جبش کے باہمی تعاون سے ہوئی تھی ، یہ عسکری کا رروائی شاوجش کے مانڈراریا طاور ابر بہ کی زیر کمان پائے بخیل کو پیچی تھی جمیر کا بادشاہ ذونواس فرارہ و گیا؛ گر دریا میں غرق ہوکر مرگیا،ادھریہ ہوا کہ اریاط اور ابر بہ کی زیر کمان پائے بخیل کو پیچی تھی جمیر کا بادشاہ ذونواس فرارہ و گیا؛ گر دریا میں غرق ہوکر مرگیا،ادھریہ و کا اسلطنت تسلیم کرلیا،اس کے بعد ابر بہرفتہ رفتہ بمن کا خودمختار اور شاہ جدار کر ہدرفتہ رفتہ بمن کا خودمختار بادشاہ بن گیا اور برائے نام بی اس نے شاہ جبش کی بالادتی قبول کرد کھی تھی۔

بمن پر پوری طرح افتد ارمضبوط کرلینے کے بعد ابر ہدنے اس مقصد کے لئے کام شروع کر دیا جواس مہم کی ابتداء سے
رومی سلطنت اور اس کے حلیف عبشی عیسائیوں کے پیش نظر تھا بینی ایک طرف عرب میں عیسائیت کا پھیلانا اور دوسری طرف
اس تجارت پر قبضہ کرنا جو بلا دِمشرق اور رومی مقبوضات کے درمیان عربوں کے ذریعہ ہوتی تھی ، بیضرورت اس بناء پر بڑھ
گئ تھی کہ ایران کی ساسانی سلطنت کے ساتھ رومی سلطنت کی کشکش افتد ارنے بلادِمشرق سے رومی تجارت کے دوسرے
تمام راستے بند کر دیئے تھے۔

اہر ہدنے اس مقصد کے لئے یمن کے دارالسلطنت صنعاء میں ایک عظیم الثان کلیسا بنایا ، مجد بن اسحاق کی روایت کے مطابق کلیسا کی شخیل کے بعد ابر ہدنے شاہ میش کو کھیا کہ میں عربوں کو جج کعبہ ہے اس کلیسا کی طرف موڑے بغیر نہ رہوں گا ، ابن کثیر روقت کلیسا کی طرف موڑے بغیر نہ رہوں گا ، ابن کثیر روقت کلیسا کی منادی کرادی کدا ہے بمن ہے کوئی کعبہ کے تعقیم کا منادی کرادی کدا ہے بمن ہے کوئی کعبہ کے ججے کے نہ جائے ، اس کی اس حرکت کا مقصد ہمارے نز دیک بین تھا کہ عربوں کو غصد دلا کیں ؟ تا کہ وہ کوئی ایس کا رروائی کریں جس سے اس کو مکہ پر جملہ کرنے اور بحبہ کو منہدم کرنے کا بہانہ ال جائے ، مجمد بن اسحاق کا بیان ہے کہ اس کے اس اعلان سے عرب کے قبائل عد تان ، قبطان اور قریش کے قبائل میں غم وغصہ کی فہر دوڑگئی ؛ یہاں تک کہ ان میں سے کسی نے رات کے وقت کلیسا میں داخل ہوکراس گوگندگی ہے آلودہ کر دیا۔

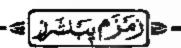
ابر ہدکو جب اس حرکت کاعلم ہوا تو اس نے قتم کھالی کہ میں کعبہ کی اینٹ سے اینٹ بجادوں گا ،اس کے بعدہ ۵۵ و یا ۵۵ م میں ۲۰ ہزار نوج اور ۱۲ ہاتھی لے کر مکہ کی طرف روانہ ہوا ، راستہ میں عربوں کے ایک ہر دار ذونفر نے اس کی مزاحمت کی ؛ مگروہ فکست کھا کر گرفتار ہوگیا ،اس کے بعد شعم کے علاقہ میں ایک عرب سروار نفیل بن حبیب شعمی نے مزاحمت کی ؛ مگروہ بھی فکست کھا کر گرفتار ہوا ،اوراس نے اپنی جان بچانے کے لئے رہبری کی خدمت انجام دینا قبول کرلیا۔

نے آپ کو میری نظر ہے گرادیا کہ آپ اپنے اونوں کا مطالبہ کرد ہے ہیں اور یہ گھر جو آپ کا اور آپ کے دین کا آبائی مرجع ہے، اس کے بارے میں پھنیں کہتے ،عبدالمطلب نے جواب دیا: ہیں تو صرف اپنے اونوں کا مالک ہوں اور انہی کے بارے میں آپ سے درخواست کر رہا ہوں ، اب رہا کعبہ، تو اس کا مالک رب ہے ، وہ اس کی حفاظت خود کرے گا، ابر ہمہ نے جواب دیا: وہ اس کی حفاظت خود کرے گا، ابر ہمہ نے جواب دیا: وہ اس کو جھ سے نہ بچا سکے گا، عبدالمطلب نے کہا آپ جا نیں اور وہ جانے ،عبدالمطلب کے اونٹ ابر ہمہ نے واپس کر دینے وہ اپنے اونٹ لے کرواپس آٹے تو بیت اللہ کے دروازے کا علقہ بکڑ کر دعاء میں مشغول ہوئے جس میں قریش کی بڑی جماعت ساتھ تھی سب نے اللہ سے گڑ گڑ اگر بڑی عاجزی کے ساتھ دعا کیں کیں ، اس خانہ کعبہ میں ہیں ہوں نے صرف اللہ کے آگے دست موجود ہے ؟ گریوگ اس نازک گھڑی میں ان سب کو بھول گئے اور انہوں نے صرف اللہ کے آگے دست سوال پھیلا یا ان کی جود عا کیں تاریخوں میں منقول جیں ان میں اللہ وحد فول شریک لؤ کے سواکسی دوسرے کا نام تک نہیں سوال پھیلا یا ان کی جود عا کیں تاریخوں میں منقول جیں ان میں اللہ وحد فول شریک لؤ کے سواکسی دوسرے کا نام تک نہیں یا یا جا تا ، بچ ہے کہ مصیبت کے وقت خدا ہی یا و آتا ہے۔

مقصودكلام:

جوتاریخی تفصیلات او پردرن کی گئی ہیں ان کونگاہ ہیں رکھ کرسور ہ فیل پرخور کیا جائے تو یہ بات اچھی طرح سمجھ ہیں آجاتی ہے کہ اس سورت ہیں اس قدراختصار کے ساتھ صرف اصحاب فیل پر اللہ تعالیٰ کے عذاب کا ذکر کردینے پر کیوں اکتفاء کیا گیا ہے؟ واقعہ کچھ پرانا نہ تھا مکہ کا بچہ بچہ اس کو جانا تھا عرب کوگ عام طور پر اس سے واقف ہے ، تمام اہل عرب اس بات کے قائل ہے کہ ابر ہہ کے اس حملہ سے کعبہ کی حفاظت کی ویوی دیوتا نے نہیں؛ بلکہ اللہ تعالیٰ نے کی تھی ، اللہ بی سے قریش کے حام داروں نے مدد ما تی تھی اور چند سال تک قریش کوگ اس واقعہ سے اس قدر متاثر رہے ہے کہ انہوں نے اللہ کے سواکسی کی عباوت نہیں کی تھی اس لئے سور کہ فیل ہیں ان تفصیلات کے ذکر کی حاجت نہیں تھی ، بلکہ صرف اس واقعہ کو یا دولا نا کی تھا؛ تا کہ قریش کے لوگ خصوصا اور عرب عموما این دوس سے معبودوں کو چھوڑ کر صرف اللہ وحدہ لاشر کی لوگ عبادت کی جائے ، نیز وہ یہ بھی سوچ لیس کہ اگر اس دعوت تی کو دیا نے کے لئے انہوں نے زور زبروتی سے کام لیا تو جس خدانے اصحاب فیل کؤس نہیں کہا تھا اس کے عضب میں وہ گرفتار ہوں گے۔





مُرَوَّةُ يَنْ يَعْلَيْنَ وَهِي أَنْكُ الْكُولِ

سُورَةُ قُريشٍ مَكِيَّةُ أَوْ مَدَنِيَّةُ أَرْبَعُ ايَاتٍ. سورهُ قريش عَي يامدني ہے، جارآ بيتي ہيں۔

ورم النفوسد بہلے ایسلاف) کی تا کیدے یہ آلف بالمد کا مصدرے لین سرویوں میں یمن کے سنرے اور گرمیوں میں شام کے سنر النفوسٹر پہلے ایسلاف) کی تا کیدے یہ آلف بالمد کا مصدرے لین سرویوں میں یمن کے سنرے اور گرمیوں میں شام کے سنر سے مانوس، ہرسال دونوں تجارتی سنروں سے بیت اللہ کی خدمت کے لئے مکہ میں قیام پر مدو لیتے ہتے، جو کہ ان کے لئے موجب فخرتی اور وہ نغر بن کنانہ کی اولاد میں سے ہے، لہذا ان کو چوک ہے بچا کہ لایلف، فَلْیَعْبُدُو ا کے متعلق ہے اور فازا کہ وہ ہے، اس کھ کے دب کی عبادت کریں، اس لئے کہ اس نے ان کو بھوک ہے بچا کہ کھانا کھلایا اور خوف سے بچا کر ان کو امن عطا کیا ملہ میر زراعت نہونے کی وجہ سے ان کو بھوک لاتن ہوجاتی تھی اور ہاتھیوں کے شکر سے وہ خوف زوہ ہے۔

عَجِفِيق الْأَرْبِ لِيَهِ الْمِينَالُ الْفَيْسَارِي الْوَالِدِنَ

قِوَّلَى، لِإِبْلَفِ قُرِيْشِ، إِبْلَفِ بابِ افعال كامصدر ب، مانوس ركهنا ، الفت كرنا ـ قَوَّلَی، قُسرَیْسِ قبیلهٔ عدنان كے قبیلهٔ كنانه كی ایک شاخ ب، جوغاندان قریش كے نام سے مشہور ہوئی، قریش ك مورث اعلیٰ مَصر كوئی قریش كہا جاتا ہے، لایسلفِ جار مجرور سے ل كرس كے متعلق ہے؟ اس میں بہت اختلاف ہے اول رائح قول لکھاجاتا ہے، رائح قول بیہ کہ بیا ہے ابعد فَلْیَعْبُدوا سے متعلق ہے، تقدیر عبارت بیہ وگ فان لمر بعبدوا اللّه لسائو نِعَمِهِ السابقة فَلْیَعْبُدُونَ لِایْلقِهِمْ رحلة الشقاء والصیف لیخی اگر قریش اللّه کی دیگر کامل نعتوں کا شکر بیادا نہیں کرتے تو کم از کم اس کی نعت کے شکر بیمی اس گھر کے مالک کی بندگی کریں کہ جس نے ان کو سردی، گرمی کے ان دوسفروں کا خوگر بنایا جوان کی خوشحالی کے ضامی ہیں۔

عام طور پرجار بحرور کاتعلق مقدم ہے ہوا کرتا ہے لہذا لایلف کا تقاضہ یہ کہ اپنے ماقبل ہے متعلق ہو، ای لئے متعلق میں متعددا قوال ہیں، گذشتہ سور ہ فیل ہے معنوی تعلق کی بناء پر بعض حصرات نے فرمایا ہے کہ لائے لئے ہیں گرشتہ سور ہ فیل ہے معنوی تعلق کی بناء پر بعض حصرات نے فرمایا ہے کہ لائے سائی کہ قریش مکہ مردی اور گرمی کے دو ہوروہ اِنّا اَهْلَ کُنا اصحاب الفِيلِ ہے لینی ہم نے اصحاب کے داول میں ان کی عظمت پیدا ہوجائے ؛ چنا نچراصحاب سفروں کے عادی تھے، تاکہ ان کی راہ میں کوئی رکاوٹ ندر ہے اور سب کے دلول میں اور اضافہ ہوگیا اور عرب کو پورایقین ہوگی فیل کے بلاک ہونے کے بعد نصرف یہ کر قریش مکہ کی عظمت ہم ہوجاتی ؛

میں کے بلاک ہونے کے بعد نصرف یہ کر قریش مکہ کی عظمت باتی رہی ؛ بلکداس میں اور اضافہ ہوگیا اور عرب کو پورایقین ہوگی کہ میں اور اضافہ ہوگیا ہو ہوگیا۔ اللہ کی حفاظت کم ہوجاتی ، در بڑنی اللہ کے خادم اور مجاور ہونے کی وجہ سے جوقد روقیت ان کو حاصل تھی وہ سب خاک میں بل جاتی ، در بڑنی اور لیت اللہ کی حفاظ ہوگی۔ اور لوٹ مار کے جو واقعات غیروں کے ساتھ ہوں ہوئی استے ہی نہا ہو ہی ہونے گئے ؛ لیکن اللہ نے بیت اللہ کی حفاظت فرا کر کر ایش کی عزید وقار میں اور جارہا نواز کی دیا ہوران کے لئے رائے میں نواز وہا مون و محفوظ ہوگئے۔

ر ، روسان رف رہا دیں ہور ہا ہے ہیں ہوں کے سیور کی سے بہت کے سال میں ہورہ میں ہورہ ہورہ کے دورہ کی کری اور بعض حضرات نے معتلق محذوف جملہ اعسجہ وا مانا ہے بعنی قریش کے معاملہ سے تعجب کرو کہ وہ کس طرح سردی گرمی کے سفر آزادا نہ بے خطر ہوکر کرتے ہیں۔

فَيْحُولْنَى ؛ إِنْلَافِهِم يه بِهِلَ إِيْلَف كَ مَا كَيْلِفْظَى بِ بِعَضْ مَعْرَات نِ ثَانَى كُواول سے بدل قرار دیا ہے، دِ خلَة بِهِلَ إِيْلَف كا مفعول بدے۔

يَجُولُكُم ؛ فَلْلَيَعْبُدُوا الى بَى فَاء جزائيه ب، شرط محذوف ب، تقريم ارت يه كد إن لَـمْ يَعَبُدُوا لِسَسائِ ينعَمِهِ فَلْيَعَبُدُوه لِإِيْلَةِهِمْ دِخْلَةَ الشِّنَاءِ والصَّيْفِ، فَانَّهَا اَظُهَرُ نِعَمِهِم عَلَيْهِم اور فَلْيَعْبُدُوا مِن لام امركا ب-

ێٙڣٚڛؗ<u>ڒۅۘڎۺٛ</u>ؙڂڿ

اس پرسب کا اتفاق ہے کہ معنی اور مضمون کے اعتبار ہے میہ مورت سورہ فیل بی ہے متعلق ہے اور شاید اس وجہ ہے بعض مصاحف میں ان دونوں سورتوں کو ایک بی سورت کر کے لکھا گیا تھا، بایں طور کدان کے درمیان ہم اللہ نہیں لکھی تھی؛ مگر حضرت عثان غنی تفقیق نفائق النظاف کے جب تمام مصاحف کو جمع کر کے ایک نسخہ تیار فر مایا اور تمام صحابہ کرام تفقیق تفائق کا اس پر اجماع ہوا، جس نبخہ تر آن کو جمہور کے نزدیک دمصحف امام "کہا جاتا ہے تو اس میں ان دونوں سورتوں کو الگ الگ بی لکھا گیا ہے۔ جس نبخہ تر آن کو جمہور کے نزدیک دمصحف امام "کہا جاتا ہے تو اس میں ان دونوں سورتوں کو الگ الگ بی لکھا گیا ہے۔ رخے لکھ المبقیق تمردی اور گرمی کے سفر دی سے مراویہ ہے کہ گرمی کے زمانہ میں قریش کے سفر شام اور میں سے مراویہ ہے کہ گرمی کے زمانہ میں قریش کے سفر شام اور میں سے مراویہ ہے کہ گرمی کے زمانہ میں قریش کے سفر شام اور میں سے مراویہ ہے کہ گرمی کے زمانہ میں قریش کے سفر شام اور میں سے مراویہ ہے کہ گرمی کے زمانہ میں قریش کے سفر شام اور میں سے مراویہ ہے کہ گرمی کے زمانہ میں قریش کے سفر شام اور میں سے مراویہ ہے کہ گرمی کے زمانہ میں قریش کے سفر شام اور میں سے مراویہ ہے کہ گرمی کے زمانہ میں قریش کے سفر شام اور میں سے مراویہ ہے کہ گرمی کے نمانہ میں تو نمانہ میں تو کہ کھوں سے مراویہ ہے کہ گرمی کے زمانہ میں قریش کے سفر شام اور کھوں سے مراویہ ہے کہ گرمی کے زمانہ میں قریش کی کھوں سے مراویہ ہے کہ کرمی کے زمانہ میں قریش کو کھوں سے مراویہ ہوں سے مراویہ ہوں کے دونوں سے مراویہ ہوں ہوں سے مراویہ ہوں کو کھوں سے مراویہ ہوں کے دونوں سے مراویہ ہوں کو کھوں سے مراویہ ہوں کے دونوں سے مراویہ ہوں کے دونوں سے مراویہ ہوں کی کھوں کے دونوں سے مراویہ ہوں کی کھوں کو کھوں کے دونوں سے مراویہ ہوں کے دونوں سے دونوں سے مراویہ ہوں کے دونوں سے دو

فلسطین کی طرف ہوتے تھے،اس لئے کہ وہ ٹھنڈے علاقہ ہیں اور سردی کے زمانہ میں جنوب یعنی ٹیمن کی طرف ہوتے تھے،اس لئے کہ بیگرم علاقہ ہے۔

رَبَّ هلٰذَا البیت صمراد بیت الله کارب بربَ هلذا البیت میں اس طرف اشارہ برکتریش کو بین کو سے کا گھر کی جہ دوت حاصل ہوئی ہے اور اس بیت کے رب نے انہیں اصحاب فیل کے حملے سے بچایا اور اس گھر کی خدمت اور سدانت کی وجہ سے انہیں سازے کرب میں اور وہ پورے کرب میں بے خوف وخطر سفر کرتے تھے، پس ان کو جو پچھ نصیب ہواوہ اس گھر کے رب کی بدولت نصیب ہواوہ اس کھر کے رب کی بدولت نصیب ہواوہ اس کی عبادت کرنی جائے۔

الکّذی اَطْعَمَهُمْ مِنْ جوعِ ال میں اشارہ ہے کہ کمیں آنے سے پہلے قریش عرب میں منتشر ہے تو بھوکوں مرر ہے تھے، یہاں آنے کے بعدان کے لئے رزق کے درواز ہے کھلتے چلے گئے اوران کے قل میں حضرت ابراہیم عَلَا اللّٰهُ اللّٰہُ اللّٰہِ اللّٰہُ اللّٰہِ اللّٰہُ اللّٰہُ اللّٰہُ اللّٰہُ اللّٰہُ اللّٰہِ اللّٰہُ اللّٰہُ اللّٰہُ اللّٰہُ اللّٰہِ اللّٰہِ اللّٰہُ اللّٰہِ اللّٰہِ اللّٰہُ اللّٰہِ اللّٰہِ اللّٰہِ اللّٰہُ اللّٰہِ اللّٰہِ اللّٰہِ اللّٰہِ اللّٰہِ اللّٰ اللّٰہُ اللّٰہُ اللّٰہُ اللّٰہُ اللّٰہُ اللّٰ اللّٰہُ اللّٰہِ اللّٰہُ اللّٰ اللّٰمُ اللّٰہُ اللّٰہُ اللّٰہُ اللّٰہُ اللّٰہُ اللّٰہُ الل

و آمسنگھٹرمسن محسوف میں دشمنوں، ڈاکوؤل کے خوف سے مامون ہونا بھی شامل ہے اور آخرت کے عذاب سے مامون ہونا بھی۔ (معارف)



لاَرَقُ الْمَالِمُ فَيَالِينَ مِنْ فِي مَالِينَا فِي الْمِلْتِينَ فِي الْمِلْتِينَ فِي الْمِلْتِينَ سِيوَ الْمَالِمُ فَي مَلِينَا وَفِي عَلَيْنِا مِنْ فَي الْمِلْتِينَا وَفِي الْمِلْتِينَا وَفِي الْمِلْتِينَا

سُورَةُ المَاعُونِ مَكِيَّةُ أَوْ مَدَنِيَّةُ أَوْ نِصْفُهَا وَنِصْفُهَا وَنِصْفُهَا وَنِصْفُهَا سُورَةُ المَاعُونِ مَكِيَّةٌ أَوْ مَدَنِيَّةٌ أَوْ نِصْفُهَا وَنِصْفُهَا وَنِصْفُهُا وَنِصْفُهَا وَنِصْفُهُا وَنِصْفُهَا وَنِصْفُهَا وَنِصْفُهُا وَالْمُعْمُا وَالْعِنْ وَالْمُعْمُا وَالْمُعْمُا وَالْمُعْمُا وَالْمُعْمُا وَالْمُعُلُولُوا وَالْمُعُلِي الْمُعْمُا وَلَوْلُوا وَالْمُعْمُا وَالْمُعُلُولُ وَلَا مُعْلَقُولُ وَلَا مُعْلَا وَالْمُعْمُا وَالْمُعْلُولُ الْمُعْلِقُا وَلَا لَمُعْلَا وَالْمُعُلِقُا وَلَالْمُا وَالْمُعُلِقُولُ الْمُعُلِقُولُ اللَّهُ الْمُعْلِقُولُ وَالْمُعُلِقُا وَلَوْلُولُوا وَالْمُعُلُولُ وَلَالْمُ وَالْمُعُلُولُ وَلَالْمُعُلُولُ وَلَالْمُعُلُولُ وَلَالْمُ الْمُعْلِقُولُ وَلَالْمُ ال

سورہ ماعون کی ہے یامدنی ہے یانصف نیس، چھ یاسات آبیتیں ہیں۔

يِسْسِيمِ اللهِ الرَّحْسِهُ الرَّحِسِيْسِ الرَّحِسِيْسِ آرَعَيْتَ الَّذِي يَكُمُ الْكِنْ الرَّحِسَابِ والجزاء اى هَلَ عَرَفْتَهُ او لَهُ تَعرِفُهُ فَلَالِكُ بِتَقْدِيرِ هُو بَعْدَ الفَاءِ الَّذِي يَكُمُ الْكِنْدُ الْ اَي يَدَفَعُهُ بِعُنْفِ عَنْ حَقِّهِ وَلَلْكُمُ الْمُفَيرَةِ وَلَا يَحْسُ ولا عَيرَهُ عَلَى طَعَامِ اللَّهُ الذَي المُعَامِ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّه

مرد نہا ہے۔ کیا آپ میں اللہ کام ہے جو ہوا مہر بان نہایت رقم والا ہے، کیا آپ میں ہے اس محض کود یکھا جو روز جزاء یعنی حساب اور جزاء کے دن کو جھلاتا ہے؟ لیعنی آپ میں ہی نایا نہیں پہچانا؟ بیوی تحض ہے فاء کے بعد هُوَ مقدر ہے جو یتیم کود ھکے دیتا ہے لیعنی اس کو تی ہے ماتھا اس کے حق ہے جم وم رکھتا ہے اور مسکینوں کو کھانا دینے کی نہ خود کو ترغیب مقدر ہے جو یتیم کود ھکے دیتا ہے لیعنی اس کو تی ہے ماتھا اس کے حق ہے جم وم رکھتا ہے اور مسکینوں کو کھانا دینے کی نہ خود کو ترغیب دیتا ہے اور نہ دوسروں کو (بیآیت) عاص بن وائل یا ولید بن مغیرہ کے بارے بھی نازل ہوئی، سوایے نماز یوں کے لئے برئی خرابی ہے جو غفلت کرتے ہیں ہایں طور کہ اس کواس کے وقت سے مؤخر کردیتے ہیں، جوالیے ہیں کہ نماز وغیرہ میں ریا کار ک کرتے ہیں اور برتنے کی چیز ہے منع کردیتے ہیں مثلاً سوئی ، کلہاڑی اور ہانڈی اور پیالہ۔

عَجِفِيق اللَّهِ اللَّلَّمِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ

قِیُوَلِیْ ؛ هَلْ عَرَفِیْهُ أَوْ لَیْمُ تَعرِفه اس عبارت کے اضافہ کا مقصداس بات کی طرف اشارہ کرنا ہے کہ ادایت سے رؤیت علمیہ مراد ہے جومتعدی بیک مفعول ہے۔

فَوَلْكَى ؛ بنقدير هو بعد الفاء يه تقديرلازم نبيس ب؛ بلكهاسم اشاره كامبتدادا تع بهونااورموصوف كاخبروا قع درست ب، بهر حال! فذلك جمله اسميه ب جوكه جواب شرط دا قع ب، اى وجه ساس پرفاء داخل بادر شرط مقدر ب.

لَفَيْ أَيْرُولَا لَيْنَا مُنْ حَيْقًا

سورة ماعون کے می اور مدنی ہونے میں اختلاف ہے جبکہ بعض نے کہا ہے کہ اس کا نصف کی اور نصف مدنی ہے ، ابن مردویہ نے ابن عباس اور ابن زبیر فَعَافَ النَّحَافُ کَا النَّحَالُ کَا تُولُ نَقَل کیا ہے کہ یہ سورت کی ہے اور یہی تول عطاءاور جابر کا ہے !لیکن ابوحیان نے ابحر المحیط میں ابن عباس اور قمادہ فَعَافَ کَا النَّحَالُ اور ضحاک رَحِمَ کُلُالْدُ مَعَانَ کا بیقول نقل کیا ہے کہ بید بینہ میں نازل ہوئی ہے۔

آر ایت شی بظاہر خطاب آپ ﷺ کو ہے ؟ گرقر آن کا انداز بیان یہ ہے کہ وہ ایسے موقع پرعموما ہر وہ صاحب عقل وخردکو مراد لیتا ہے جس میں مخاطب بننے کی صلاحیت ہواور رویت سے مراد رویت علمیہ ہے، رویت بھر بیہ بھی مراد ہوسکتی ہے اور استفہام سے مرادا ظہار تعجب ہے۔

اس سورت میں آیت (۲) اور آیت (۳) میں ان کفار کی حالت بیان کی گئی ہے جوعلانیہ آخرت کو جھٹلاتے ہیں اور آخری چار آغوں میں ان منافقین کا حال بیان کیا گیا ہے جو بظاہر مسلمان ہیں گر دل میں آخر ست اوراس کی جزاوسزااوراس کے تو اب وعقاب کا کوئی تصور نہیں رکھتے ،مجموعی طور پر دونوں گروہوں کے طرزِ عمل کو بیان کرنے سے متصود بیر حقیقت لوگوں کے ذہن نشین کرانا ہے کہ انسان کے اندرا کیے مضبوط اور مشحکم یا کیزہ کر دار ،عقیدہ آخرت کے بغیر بیدانہیں ہوسکتا۔

جن اعمال قبیحہ کا ذکرائ سورت میں فرمایا گیا ہے وہ یہ ہیں: ① یتیم کے ساتھ بدسلو کی اور اس کی تو ہین، ﴿ مسکین وحتاج کو قدرت کے باوجود کھانا نہ ویٹا اور دوسروں کو اس کی ترغیب نہ دینا، ﴿ نماز پڑھنے میں ریا کاری کرنا اور سستی وغلت سے کام لینا، ﴿ برینے کی چیزیں نہ دینا یاز کو قاوانہ کرنا، یہ سب اعمال اپنی ذات میں بہت ندموم اور سخت گناہ ہیں اور جب کفرو تکذیب کے نتیجہ میں میا عمال سرز دہوں تو ان کا وبال دائی جہنم ہے، جس کو اس سورت میں ویل کے الفاظ سے بیان فرمایا گیا ہے۔

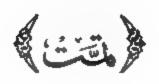
بَدُ عُ الْمَیْنِی مَ اسْ فَقرہ کے کی معنی ہو سکتے ہیں ایک ہے کہ وہ یتیم کاحق مارکھا تا ہے اوراس کواس کے باپ کی جھوڑی ہوئی میراث ہے بہ دخل کر کے اسے دھے مارکر نکال ویتا ہے، دوسرے ہے کہ اگریتیم اس سے مدد ما نگنے آتا ہے تو رتم کھانے کے بجائے اسے دھتکارویتا ہے، تیسرے ہے کہ وہ میتیم پرظلم ڈھاتا ہے، مثلاً اس کے گھر میں اگراس کا اپناہی کوئی رشتہ داریتیم ہوتو اس کے ذمہ بورے گھر کی خدمت گاری کرنے اور بات بات پرچھڑ کیاں اور دن بحر ٹھوکریں کھانے کے سوا پھی بیس ہوتا ،اس نقرہ سے بہتی مفہوم ہوتا ہے کہ اس تحق کے بھی بھی کوئی پراکام ہے جو وہ کر دہا ہے۔

عجيب واقعه:

اس سلسله میں ایک برواعجیب واقعہ قاضی ابوالحن الماور دی نے اپنی کتاب اعلام العبوۃ میں لکھا ہے، ابوجہل ایک پیتیم کا وصی تھاوہ بچدا یک روز اس حالت میں اس کے پاس آیا کداس کے بدن پر کپڑے تک نہ تھے،اس نے آگریدالتجاء کی کہاس کے باپ کے چھوڑے ہوئے مال میں سے وہ اسے پچھ دیدے؛ گراس ظالم نے اس کی طرف پچھ توجہ نہ کی اور وہ کھڑے کھڑے آخر مایوں ہوکر واپس چلا گیا،قریش کے سرداروں نے ازراہ شرارت اس سے کہا کہ محمد فیقن ہیں کے پاس جاکر شکا یت کر، وہ ابوجہل ہے۔ سفارش کر کے تختیے تیرا مال دلوادیں گے، بچہ پیچارہ حالات سے ناوا تف تھا کہ ابوجہل کاحضور الله المنظمة الله الماريد بدبخت السيم عرض كے لئے بيمشور ود بر ہے جيں؟ ووسيدها حضور المين الله الله يہنجا، اور آپ میلان الله سے اپنا حال بیان کیا، آپ میلان کا ای وقت اٹھ کھڑے ہوئے اور اسے ساتھ لے کرا ہینے بدترین دشمن ابوجهل کے یہاں تشریف لے محے ،آپ بین فیٹ کود کھے کراس نے آپ بین فیٹ کا استقبال کیااور جب آپ بین فیٹ انے فرمایا کماس بچه کاحق اے دیدو، تو وہ فور آمان گیا اور اس کا مال لا کراہے دیدیا، قریش کے سردار تاک میں لگے ہوئے تھے کہ دیکھیں ان دونوں کے درمیان کیا معاملہ پیش آتا ہے؟ وہ کسی مزے دار جھڑپ کی امید کررہے تھے؛ مگرانہوں نے بیمعاملہ و یکھا تو جیران ہوکرابوجہل کے پاس آئے اوراے طعنہ دیا کہتم بھی ابنادین چھوڑ گئے ،اس نے کہا خدا کی تتم میں نے ابنا دین بیں چھوڑا؛ مگر مجھے ایبامحسوں ہوا کہ محمد (ﷺ) کے دائیں اور بائیں ایک ایک نیز ہے، جومیرے اندر تھس جائے گا اگر میں نے ذرابھی ان کی مرضی کےخلاف حرکت کی ،اس واقعہ سے نہصرف بیمعلوم ہوتا ہے کہاس زیانہ میں عرب کے سب سے زیادہ ترتی یافتہ اورمعزز قبیلہ تک کے بڑے بڑے سرداروں کا بتیموں اور دوسرے بے یارومددگاروں کے ساتھ كياسلوك تها؛ بلكه بيهى معلوم ہوتا ہے كه رسول الله ﷺ كس بلندا خلاق كے مالك يتصاور آپ يَلِقَ اللَّهُ الله علاق كا آپ فیق فی ایک برترین دشمنول تک بر کیار عب تھا؟

فَوَیْلٌ لِّلْمُصَلِّیْنَ (الآیة) بیمنافقین کا حال بیان فر مایا ہے جولوگوں کود کھلانے اور اپنے دعوائے اسلام کو ثابت کرنے کے لئے نماز تو پڑھتے ہیں بگر چونکہ وہ تمازی کی فرضیت کے معتقد نہیں ،اس لئے نداوقات کی پابندی کرتے ہیں نداصل نماز کی۔

ویہ منعو ن الماعو ن ماعو ن کے اصل لفظی معنی ' وقی قلیل' کے ہیں ،اس لئے ،اعون ایسی استعالی اشیاء کو کہا جاتا ہے جو عاد ق آپس میں عاریۃ وی جاتی ہیں ، جیسے کلہاڑی ، کھا وڑا یا کھانے بکا نے کے برتن ، چاتو ، چھری وغیرہ ان اشیاء کا ضرورت کے وقت پڑوسیوں ہے ما تک لینا کوئی عیب نہیں سمجھا جاتا اور جواس میں دینے ہے بخل کرے ، وہ بڑا کبوس و کمینہ سمجھا جاتا ہے ، آ یہ نہ ذکورہ میں لفظ ماعو ن سے بعض نے زکو ق مرادلی ہے اورزکو ق کو هاعو ن اس لئے کہا گیا ہے کہ وہ مقدار کے اعتبار سے نہ نہ بہت قلیل ہے لیمن صرف چالیسوال حصہ ، حضرت علی ، این عمر ، حسن بصری ، قادہ ، ضحاک مقدار کے اعتبار سے نہ نہ بہت قلیل ہے لیمن صرف چالیسوال حصہ ، حضرت علی ، این عمر ، حسن بصری ، قادہ ، ضحاک نو وقت النے نکا وغیرہ جمہور مفسرین نے اس آیت میں مساعون کی تفییر زکو ق سے کی ہے۔ (مظہری) اور بعض روایا ت صدیث میں مساعون کی تفییر استعمالی اشیاء ہے گئی ہے ، مطلب سے ہے کہ جو خص معمولی چیز وں کے دیئے میں کبوی کرتا ہے وہ ذکو ق کیا دے گا؟



مُؤْرِّةُ الْمُؤْرِّولِكَيَّةً وَهِي تَلْثُ أَيَّا

سُوْرَةُ الكُونُورِ مَكِيَّةُ او مَدَنِيَّةُ ثَلَاثُ ايَاتٍ. سورة كوثر على يامدنى ہے، تين آيبيس ہيں۔

يُسْسِيراً للْوَالْرَحْسِهُ مِنَ الرَّحِسِيِّ حِنَ النَّهُ العَيْدُ العَيْدُ النَّوْقَ اللَّهُ الْمُحَدِّدُ الكَوْقُ هُو نَصَرُ النَّهُ الْهَ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ وَسِلْمَ النَّهُ عَلَيْهُ وَسِلْمَ النَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ وَسِلْمَ النَّهُ الْمُنْقَطِعُ النَّهُ عَلَيْهُ وَسِلْمَ النَّهُ عَلَيْهُ النَّهُ اللَّهُ عَلَيْهُ وَسِلْمَ النَّهُ عَلَيْهُ وَسِلْمَ النَّهُ عَلَيْهُ وَسِلْمَ النَّهُ عَلَيْهُ وَسِلْمَ النَّهُ عَلَيْهُ النَّهُ اللَّهُ عَلَيْهُ وَسِلْمَ النَّهُ عَنْ كُلِّ خَيْدٍ الفَاسِمِ.

کونہر کور عطاکی، (کوش) جنت میں ایک نہریا حوض ہے، جس پر آپ یکھٹٹا کی امت وارد ہوگی، یا کور خرکشر کو کہتے ہیں، جو کہ نبوت، قرآن اور شفاعت اور ان جیسی چزیں ہیں، پس آپ یکھٹٹا پندرب کے لئے عیداللہ کی نماز پر دھے ایں، جو کہ نبوت، قرآن اور شفاعت اور ان جیسی چزیں ہیں، پس آپ یکھٹٹا پندرب کے لئے عیداللہ کی کی نماز پر ھے ور اپنی قربانی سیجے یقینا آپ یکھٹٹا کا دشمن ہی دم ہریدہ (لاوارث) ہے (یعنی ہر خیرے منقطع ہے یا منقطع النسل ہے)، یہ آپ یکھٹٹا کو آپ یکھٹا کو آپ یکھٹٹا کو آپ یکھٹٹا کو آپ یکھٹٹا کو آپ یکھٹٹا کو آپ یکھٹا کو آپ یکھٹٹا کو آپ یکھٹٹا کو آپ یکھٹٹا کو آپ یکھٹٹا کو آپ یکھٹا کو آپ یکھٹٹا کو آپ یکھٹٹا کو آپ یکھٹٹا کو آپ یکھٹٹا کو آپ یکھٹا کو آپ یکھٹٹا کو آپ یکھٹٹا کو آپ یکھٹٹا کو آپ یکھٹٹا کو آپ یکھٹا کو آپ یکھٹٹا کو آپ یکھٹٹا کو آپ یکھٹٹا کو آپ یکھٹٹا کو آپ یکھٹا کو آپ یکھٹٹا کو آپ یکھٹٹا کو آپ یکھٹٹا کو آپ یکھٹٹا کو آپ یکھٹا کو آپ یکھٹٹا کو آپ یکھٹٹا کو آپ یکھٹٹا کو آپ یکھٹٹا کو آپ یکھٹا کو آپ یکھٹٹا کو آپ یکھٹٹا کو آپ یکٹا کو آ

جَّقِيق الْمِنْ الْسِيمَ الْمُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّالِمُ الللَّا اللَّا اللَّهُ اللَّهُ الللَّا اللّل

غِوَلْكَى الْكُونُورَ جنت كى ايك نهريا وض كانام ب، سعيد بن جبير في ابن عباس حَفَظَ النَّكَ النَّكَ الما كَالِي المَعْدَ النَّكَ النَّالَ النَّكَ النَّالَ النَّكَ النَّكُولُ النَّكُ النَّكَ النَّكُ النَّلُكُ النَّكُ النَّلُكُ النَّلُكُ النَّلُكُ النَّكُ النَّلُ النَّلُكُ النَّلُكُ النَّلُكُ النَّلُكُ النَّلُكُ النَّلُكُ النَّلُكُ النَّلُكُ النَّلُكُ النَّلُولُ النَّلُمُ النَّلُكُ النَّلُ النَّلُولُ النَّلُكُ النَّلُكُ النَّلُكُ النَّلُمُ النَّلُكُ النَّلُمُ النَّلُكُ النَّلُ النَّلُمُ النَّلُمُ النَّلُمُ النَّامُ النَّامُ النَّلُمُ النَّلُمُ النَّلُمُ ال

ح (رَكُزُم بِهَالتَهُ إِنَّا

قِخُلِنَى ؛ شَانِلَكَ تیرادشن، یه شَنَاءً سے اخوذ ہے، جس کے معنی دشنی کے ہیں۔ قِخُولِنَی ؛ اَبْنَرَ لاولد، وم کٹا، یہ بَدُّر سے صفت مشہ کا صیغہ ہے، (ن) بَدُّوا کا ٹنا، کثنا، باتو، شمشیر براں۔

تَفَيِّ إِرُوتَشِي مُ حَ

شان نزول:

ابن الی حاتم نفتی الله تفاین الل

بعض روایات میں ہے کہ کعب بن اشرف یہودی ایک مرتبہ مکۃ المکر مدآیا تو قریش مکہ اس کے پاس سے اور کہا کہ آپ اس نوجوان کوئیں و بچوان کوئیں و بچھتے جو کہتا ہے کہ وہ ہم سب سے دین کے اعتبار ہے بہتر ہے؟ حالا نکہ ہم حجاج کی خدمت کرتے ہیں اور بیت اللہ کے تلہبان ہیں ، لوگوں کو پائی پلاتے ہیں ، کعب نے یہ بات من کر کہاتم لوگ اس سے بہتر ہو، اس پر بیسورت نازل ہوئی۔ اللہ کے تلہبان ہیں ، لوگوں کو پائی پلاتے ہیں ، کعب نے یہ بات من کر کہاتم لوگ اس سے بہتر ہو، اس پر بیسورت نازل ہوئی۔ (ابن کھیں)

اِنَّا اَعْطِینْكَ الْكُوْفُرَ، امام بخاری دَوِّمَ کُلافُهُ عَالَیْ نے حضرت ابن عباس تعکی النظافی اس کی تغییر میں بیروایت نقل کی ہے کہ انہوں نے فرمایا کہ کو فو وہ خیر کثیر ہے، جواللہ تعالی نے آپ بیٹی تھٹا کوعطافر مائی ہے، ابن عباس تعکی النظافی کے خاص شاگر دسعید بن جبیر تفوی الفائن منظالے ہے کہ کہ کہ کے جس کہ محسو شسو جنت کی ایک نہرکا نام ہے؟ تو سعید بن جبیر تفوی انفائن منظالے نے جواب دیا کہ وہ جنت کی نہرجس کا نام کو ٹو ہے وہ بھی اس خیر کثیر میں داخل ہے۔

(ماقتت

رَقُ الْمُفْرُونُ لِنَيْهِ وَهُي أَيَاتُهُ

سُورَةُ الكفِرُونَ مَكِيَّةٌ او مَدَنِيَّةٌ سِتُ ايَاتٍ سوره كافرون كلي يارتى هي جيراً يتن ميل-

نَوْلَتْ لَمَّا قَالَ رَهِطُ مِنَ المُشْوِكِينَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَعْبُدُ الِهَتَنَا سَنَةً ونَعْبُدُ الِهَكَ سَنَةً. بيسورت ال وقت نازل ہوئی جب مشركين ميں ہے کچھلوگوں نے نبی ﷺ تشائلے بيكها كرتم ہمارے معبودوں كى ايك سال بندگى كرواورا يك سال ہم تمہارے معبودكى بندگى كريں۔

يَسْسِيمِ اللّهِ الرّخِيدُ فَى الحَالِ مَا أَعْبُدُهُ وَهُ و اللّهُ نَعَالَى وَحْدَهُ وَكَاكَاكُورُونَ هُ لَا أَنْتُمُ فِي الحَالِ مَا أَعْبُدُونَ فَى الرَّسْتَقُهُ اللّهُ وَعُدَهُ وَكُلْأَنْ اللّهُ فِي الرَّسْتَقُهُ اللّهُ عَلَى وَحْدَهُ وَكُلْأَنَا كَالِكُورُونَ فِي الرَّسْتِقُهُ المَّاكُمُ وَهُ وَاللّهُ مِنْهُم انَّهُمُ لا يُومِنُونَ وإطلاقُ ما عَلَى اللّهِ على جِهَةِ وَكُلْأَنْتُمُ عَبِدُونَ واطلاقُ ما عَلَى اللّهُ على جَهَةِ المُثَنَّةُ عَلَى اللهُ مِنْهُم اللّهُ مِنْهُم اللّهُ مِنْهُم اللهُ مِنْهُمُ المُؤْمِنُ وَالطلاقُ ما عَلَى اللهِ على جَهَةِ المُثَابَلَةِ المُثَابَلَةِ لَكُمْ وَيُنْكُمُ الشّرَكُ وَلِى وَلَى الرّفَافَةِ السّبَعَةُ فَيْ الرّفَافَةِ السّبَعَةُ فَيْ وَمُو اللّهُ مِنْهُم اللّهُ مِنْهُم اللّهُ مِنْهُمُ اللّهُ مُنْهُمُ اللّهُ مَا عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ مَا اللّهُ اللّهُ مِنْهُمُ اللّهُ مِنْهُمُ اللّهُ مِنْهُمُ اللّهُ مُنْهُمُ اللّهُ مُنْهُمُ اللّهُ مِنْهُمُ اللّهُ مَا اللّهُ اللّهُ اللّهُ مُنْهُمُ اللّهُ اللّهُ مُنْهُمُ اللّهُ مُنْهُمُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللللّهُ الللللّهُ اللللّهُ الللللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللللهُ اللّهُ اللللهُ اللللّهُ الللللهُ اللللهُ الللللهُ اللللللللهُ الللللهُ اللللهُ الللهُ اللّهُ اللّهُ اللللهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللهُ الللهُ اللّهُ اللللهُ اللّهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ اللللهُ اللللهُ الللهُ الللللهُ الللهُ الللهُ الللهُ اللّهُ الللهُ الللهُ الللهُ اللّهُ اللللهُ الللهُ اللّهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ اللللهُ الللهُ الللهُ اللّهُ الللهُ اللّهُ الللهُ الللهُ الللهُ اللّهُ اللللهُ الللهُ اللّهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ اللللهُ الللهُ الللهُ اللللهُ الللللهُ اللللهُ الللهُ الللهُ الللهُ اللهُ اللللهُ اللللهُ الللهُ الللهُ الللهُ اللّهُ ا

سر فی الحال ان بتوں کی بندگی کرتا ہوں اللہ کے تام سے جو بردامہر مان نہا بت رخم والا ہے، آپ ﷺ کہد و بیجے ،اے کافرو!

نہ میں فی الحال ان بتوں کی بندگی کرتا ہوں جن کی تم بندگی کرتے ہواور نہ فی الحال تم بندگی کرتے ہوائ کی جس کی میں بندگی کرتا ہوں اور وہ اللہ وصدہ ہے، اور نہ میں آئندہ بندگی کرنے والا ہوں جن کی تم بندگی کرتے اور نہ تم آئندہ بندگی کرنے والا ہوں جن کی تم بندگی کرتے اور نہ تم آئندہ بندگی کرنے والے ہوائ کی جس کی میں بندگی کرتا ہوں اللہ کوان کے بارے میں علم تھا کہ وہ ایمان لانے والے نہیں ہیں، اور مرا کی جس کی میں بندگی کرتا ہوں اللہ کوان کے بارے میں علم تھا کہ وہ ایمان لانے والے نہیں ہیں، اور میکم، میں بندگی کرتا ہوں اللہ کوان کے بارے میں علم تھا کہ وہ ایمان لانے والے نہیں ہیں، اور میکم، ویک جن اور می بندگی کرتا ہوں وار قبور بندہ میں باقی کو با اور بیتھو ب نے بیاد کا تو با اور بیتھو ب نے بیاد کا تو با اور بیتھو ب نے سے پہلے کا ہواور قبور آء سبعہ نے بیاء اضافت کو وقفا اور وصلاً حذف کر و یا، اور بیتھو ب نے دونوں حالتوں میں باقی رکھا ہے۔

﴿ (مُزَم بِبَلتَ إِ

عَجِقِيق اللَّهِ اللَّهُ اللّلْمُ اللَّهُ اللّ

قَبُولِكَ، ایها الكافرون اس كاطب مخصوص كافرین جن كے بارے ش الله كام مقا كه وہ ايمان لانے والے نہيں ہیں۔ قَبُولِكَ، فَى المحالَ لفظ فَى الحالَ حقيق صورت حال پر دلالت كرنے كے لئے ہے، يعنی واقعہ يہى ہے كه نديس تمهارے معبودول كى بندگى كرتا ہوں اور ندتم ميرے معبودكى بندگى كرتے ہو۔

فِيُولِكُ ؛ في الاستقبال، في الاستقبال كااضافهاك والمقدرك جواب ك لئے -

سيوان، آيت من اعبد كي كرار م جوك بنديده بين م

جَوْلَتِي: كمرازيس باس لئے كداول ميں حال اور دوسرے ميں استقبال مراد ہے۔

يَعْوَلْنَى ؛ عَلِمَ اللَّهُ مِنْهُم انَّهُمُ لا يُومِنُونَ العارت كاضافه كامقصد بحى ايك وال كاجواب ويناب

مِينُوالْ، آپ ﷺ مشركين مكے ايمان سے كوں ناميد ہوگئ؛ حالانكه آپ ﷺ كى بعثت توان كى ہدايت ہى كے لئے ہوئى تقى ؟ نيز آپ ﷺ توان كى ہدايت ہى كے لئے ہوئى تقى ؟ نيز آپ ﷺ توان كے ايمان پر بہت زيادہ حريص تھے۔

جَبِحُولَ شِیْعَ، ایمان نہ لانے کی اطلاع کی مخصوص کا فروں کے بارے میں ہے جن کے بارے میں القد تعالی نے آپ کو بذریعہ وحی بتلا دیا تھا کہ فلاں فلاں ایمان لانے والے نہیں ہیں۔

قِيْوُلْكُ ؛ وإطلَاقُ ما، عَلَى اللهِ على وجه المُقَابَلَةِ يَكِي أيك والمقدركا جواب ٢-

سَيْخُولُانَ؛ سوال بدہے کہ مکا، کااطلاق غیر ذوی العقول پر ہوتا ہے نہ کہ ذوی العقول پر حالا نکہ یہاں مکا، کااطلاق اللہ تعالیٰ کے لئے ہوا ہے جو کہ خلاف ضابطہ ہے؟

جیکی انسینی سے اعدہ کلینہیں ہے؛ بلکہ بعض تحویین کے نزویک ما اکا اطلاق ذوی العقول پر بھی درست ہے؛ لہٰذااس صورت میں جواب کی کوئی ضرورت بی درست نہیں ہے اور جن لوگوں کے بیہاں مَا اکا اطلاق ذوی العقول پر درست نہیں ہے توان کی طرف سے بیہ جواب کی کوئی ضرورت بی نہیں ہے توان کی طرف سے بیہ جواب ہوگا کہ بیمشا کلت کے طور پر استعال ہوا ہے؛ چونکہ سابق میں بتوں کیلئے مَا کا استعال کیا گیا ہے؛ لہٰذااللہ تعالی کیلئے بھی مَا کا استعال کیا گیا ،اورمشا کلت کی رعایت رکھنا فصاحت کے تقتضی سے مین مطابق ہے۔

لَفْ الْمُولِّشِينَ فَيَ

اس سورت کے فضائل اور خواص:

صحیح احادیث سے ثابت ہے کہ رسول اللہ ﷺ طواف کی دور کعتوں اور فجر اور مغرب کی سنتوں میں "قسل یہ آ ٹیھسا السکافرون" اور سور کا خلاص پڑھتے تھے، اس طرح آپ ﷺ نے بعض صحابہ تض کھنا کھنا کے است کو سوتے وقت میں سورت پڑھ کرسوؤ گے تو شرک سے بری قرار پاؤگے۔ (مسند احمد، نرمذی)

حضرت جبیر بن مطعم تغ مَا الله و ماتے بین که رسول الله ﷺ نے ان سے فر مایا که کیاتم بیرجا ہے ہوکہ جب تم سفر میں جاؤتو وہاں تم اپنے سب رفقاء سے زیادہ خوش حال ، بامراد ہواور تمہارا سامان زیادہ ہوجائے؟ انہوں نے عرض کیا ، یارسول اللہ التعلقة البشك شرايها جامتا مول آب التعلقة ان فرمايا كمآخرة آن كى يائج سورتين يعنى قبل بنايها الكافرون سية خرتك پڑھا کرواور ہرسورت بسم اللہ سے شروع کرواور بسم اللہ بی پڑتم کرو،حضرت جبیر نفو کا تفائلہ فریائے ہیں کہ اس وقت میراحال بہ تھا کہ سفر میں اپنے دوسرے ساتھیوں کے بالمقابل قلیل الزاداور خستہ حال ہوتا تھا، جب رسول اللہ ﷺ کی اس تعلیم پمل کیا، میں سب سے بہتر حال میں رہنے لگا۔ (مظہری، معادف)

حضرت على تَوْمَانْنَهُ مَنَالِكَ سے روایت ہے کہ ایک مرتبہ نبی کریم ﷺ کو بچھونے کا ٹ لیا تو آپ ﷺ نے پانی اور نمک منگایا بوب المناس پڑھتے جاتے تھے۔ (مظهری، معارف)

شانِ نزول:

ابن اسحاق کی روایت ابن عباس تفخیلاً کنگالی کی التی ہے ہیے کہ ولید بن مغیرہ، عاص بن وائل، اسود بن عبد المطلب اور أميه بن خلف رسول الله الله الله المات على إس آئے اور كها كر آؤ جم آئيس بيس اس يوسلى كرين كراكيس مال آب المفاقظ جمارے بنوں كى عباوت

اورطبرانی کی روایت حضرت ابن عباس تفحالف تفالف است بیرے کہ کفار نے اول توبا ہمی مصالحت کے لئے رسول الله بين الله کے سامنے بیصورت پیش کی کہ ہم آپ بین بھٹا کو اتنا مال ویتے ہیں کہ آپ بین بھٹا سارے مکہ میں سب سے زیادہ مال دار ہوجا نیں اور جس عورت سے آپ ﷺ جا ہیں آپ ﷺ کا نکاح کردیں، آپ ﷺ اسرف اتنا کریں کہ ہمارے معبودوں کو برانه کہا کریں ،اورا کرآپ ﷺ بھی جھٹی مانے تو ایسا کریں کہ ایک سال ہم آپ ﷺ کے معبود کی عباوت کیا کریں اورایک سال آپ فیل این است معبودول کی عبادت کیا کریں۔ (مظهری)

كرآب ينتفظيا جارب بنول من سے بعض كو صرف ماتھ لكادين تو ہم آپ ينتفظيا كى تعديق كرنے لكيس كے، اس يرجر يُنل امين سورۂ کا فرون لے کرنازل ہوئے جس میں کفار کے اعمال ہے براءت اور خالص اللہ کی عبادت کا تھم ہے، شان نزول میں جو متعدد واقعات بیان ہوئے ہیں ان میں کوئی تصاد تبیں ، ہوسکتا ہے کہ ریسب ہی واقعات پیش آئے ہوں اور ان سب کے جواب من بيسورت نازل مونى مو،جس كاحاصل اليي مصالحت سے روكتا ہے۔

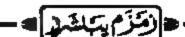
تَبْدُنَيْنَ : كافسر ، كالفظ كوئى كالى بيس بجواس آيت كے مخاطبوں كودى كئى بى ؛ بلك عربی زبان میں كافر كے معنی انكار كرنے

والے اور نہ مانے والے کے ہیں اور اس کے مقابل مو من کالقظ مان لینے اور تسلیم کر لینے والے کے لئے بولا جاتا ہے۔

كفاري كيعض مسائل:

سورہ کا فرون میں کفار کی چیش کی ہوئی مصالحت کی چندصورتوں کو بالکلیدرد کرنے کے بعداعلان براءت کیا گیا، گرخو دقر آن كريم ميں بدار شاديمي موجود ہے: فسان جَسنَستُوا لِلسّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا لِعِنْ كَفَاراً كُرْمِلْ كَ طرف جُفكِين تو آپ بھى جَعَك جَاسِيّ (معامدة صلح كريجة) اورىدىند طيبه جب آپ ينتاهينا جرت كرك تشريف لے كئے تو يبود مديندے آپ ينتائيا كامعامدة صلح مشهور ومعروف ہے،اس لئے بعض مفسرین نے سورہ کا فرون کومنسوخ کہددیا ہے اورمنسوخ کہنے کی بڑی وجہ "لے حد دیا نے معر ولى دين" كوقراردياب؛ كيونكه بياحكام بظامر جهادكمنافي جن ، مرضيح بيب كديهال "لكمر دينكمرولي دين" كامطلب ينيس كه كفار كوكفر كى اجازت يا كفرير برقر ارر كھنے كى منانت دے دى كئى؛ بلكاس كا حاصل دى ہے جو "لَـنَا أغهمالْـنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ" كاب، جس كامطلب بيب كرجيها كروك ديها بمكتوك، اس لئے رائح اور يح جمهور كنزو يك بيب كريسورت منسوح نبیں جس متم کی مصالحت سور و کا فرون کے نزول کا سبب بنی وہ جیسے اس وقت حرام تھی آج بھی حرام ہے اور جس صورت كى اجازت آيت فدكوره من آئى اوررسول الله والقطائل كمعابدة يبود يعملاً ظاهر موئى، وه جيساس وقت جائز تقى آج بهى جائز من كفار على معامده كوجائز قراردي كما تحدايك استناه كاارشاد بوه بيب الاصلى أحل حرامًا أو حرَّم حَلالًا لين ہ مسلح جا نزے بجزاس مسلح کے جس کی روسے اللہ کی حرام کی ہوئی کسی چیز کو حلال یا حرام کی ہوئی کس چیز کو حرام قرار دیا گیا ہو، اب غور سیجئے کہ کفار مکہ نے سلح کی جومورتیں چین کی تعییں، ان سب میں کم از کم کفراور اسلام کی حدود میں التباس یقینی ہے اور بعض صورتوں میں تو شرک تک کا ارتکاب لازم آتا ہے ، ایس سلح ہے سورہ کا فرون نے اعلانِ براءت کیا ہے اور دوسری جگہ جس سلح کو جائز قرار دیا اور معاہد ہ یہود ہے اس کی مملی صورت معلوم ہوئی۔اس میں کوئی چیز ایس ہیں جس میں اصول اسلام کا خلاف کیا گیا ہو یا کفرواسلام کی صدود آپس میں ملتبس ہوئی ہوں، اسلام سے زیادہ کوئی ندہب رواداری،حسنِ سلوک، صلح وسالمیت کا داعی نہیں! تمر صلح اپنے انسانی حقوق میں ہوتی ہے،خدا کے قانون اور اصول دین میں کسی صلح ومصالحت کی کوئی منجائش نہیں۔ (والله اعلم، معارف)





رَكُوْلُ الْمُصْرِمَةِ فِي أَوْ فِي تَلْكُ لَا يَالِيْ سُوْلِ الْمُصْرِمَةِ فِي أَوْفِي تَلْكُ لِيَالِيْ

سُوْرَةُ النَّصْرِ مَدَنِيَّةٌ ثَلَاثُ ايَاتٍ.

سورة نصر مدنی ہے، نین آبیتیں ہیں۔

يسَ عِلَاللهِ النَّهِ النَّهِ النَّهِ النَّهِ النَّهِ النَّهِ النَّهِ النَّهِ النَّهِ اللهِ النَّهُ عليه وسلم على اعدائه والفَتْحُ فَ فَتْحُ مَكَة وَلَا يَا النَّهُ عَلَيْ اللهِ النَّهِ اي الإسلامِ افْوَاجًا فَ جَمَاعَاتِ بَعَدَ مَا كَانَ يَدْخُلُ فيه وَاحِدٌ وَاحِدٌ وَاحِدٌ وَلِحِدٌ وَاحِدٌ وَلَحِدُ وَنَعِ مَكُة جَاءَ العَرَبُ مِنْ اقْطَارِ الأرْضِ طَائِعِينَ فَسَرِّحُ وَحَمَّلِيكُ اى مُتَنَبِسًا وَاحِدٌ وَاحِدٌ وَلَاكَ بَعُدَ فَتْحِ مَكُة جَاءَ العَرَبُ مِنْ اقْطَارِ الأرْضِ طَائِعِينَ فَسَرِّحُ وَحَمَّلِيكُ اى مُتَنَبِسًا بِحمدِه وَاحِدُ وَلَيكَ بَعُدَ فَتْح مَكُة وَكَانَ صَلَّى الله عليه وسلم بَعُدَ نُزُولِ هذِه السُّورَةِ يُكْثِرُ مِن قَولِ مِحمَدِه وَاسْتَغُفِرُ اللهُ واتُوبُ إليه وعلِم بها أنَّة قدِ اقْتَرَبَ اجَلَة وكَانَ فَتَحُ مَكَة في رَمَضَانَ مَسَنَة مُعُدَ اللهُ وبِحَمُدِه اللهُ عليه وسلم في ربيع الأوَّلِ سَنَة عَشُرٍ.

کے دشمنوں پر اللہ کی مداآ جائے، اور فتح کمہ نصیب ہوجائے اور تو لوگوں کود کھے لے کہ اللہ کے دشمنوں پر اللہ کی مداآ جائے، اور فتح کمہ نصیب ہوجائے اور تو لوگوں کود کھے لے کہ اللہ کے دین اسلام میں جو ق در جوق داخل ہور ہے ہیں بعداس کے کہ دین میں ایک ایک کر کے داخل ہور ہے ہے، اور بیصورت حال فتح کمہ کے بعد ہوئی کہ عرب بخوشی اطراف وجوائی سے (دین میں داخل ہونے کے لئے) آئے، تواپنے رب کی تبیع وتحمید کرنے لگوا وراس سے مغفرت طلب کرو، بے شک وہ بڑا تو بیقول کرنے والا ہے؛ چنا نچاس سورت کے زول کے بعد آپ بعد سے کہ اللہ وَ اِسْحُ مُلْدِهُ اَسْتُغْفِر اللّه وَ اَتُوْبُ اِلَيْه اَلَٰ اَورَاس سے بحد گئے کہ از قال کا وقت قریب آگیا ہے، اور فتح کمہ رمضان ۸ھ میں ہوا اور آپ بیسی کی وفات رہے الاوں اور میں ہوا اور آپ بیسی کی وفات رہے۔ الاوں اور میں ہوا اور آپ بیسی ہوا اور آپ بیسی ہوئی۔

<\ الْعَزَّم بِنَالِثَهْ إِنَّهُ اللهِ عَالِمَةُ فَعَلَمُ اللهِ عَلَيْهُ اللهِ عَلَيْهُ اللهِ عَلَيْهُ اللهِ ع

عراجان-وقعن النبي المالية الم

عَجِقِيق الْرَكِي لِيسَهُ الْحَاتِفَ لَفَيْسَارَى فَوَالِالْ

قِرُ لَكُ الله الله الله المصدرمضاف الى الفاعل باوراس كامفعول نَبيَّهُ محذوف ب، بس كومفسرعلام في ظاهر كردياب قَوَ لَكُ الله المصدرمضاف الى الفاعل المحادية الله المعالم المعالم الله المعالم الله المعالم الله المعالم الله المعالم الله المعالم المعالم الله المعالم الله المعالم المعالم

فَيْوَلِّي ؛ أَفُواجًا، يدخلون كَفاعل عال مِ، اكررويت بصريه مرادبو، ادراكررويت علميه مرادبوتو مفعول ثاني م

<u>ێٙڣێڔؙۅؘؾؿۘڕؙڿ</u>

یہ سورت بالا جماع مدنی ہے اس سورت کا ایک نام مسورة التو دیع بھی ہے، تو دیع کے معنی رخصت کرنے کے ہیں، اس سورت میں چونکہ رسول اللہ ﷺ کی وفات کے قریب ہونے کی طرف اشارہ ہے، اس لئے اس کو سورة التو دیع بھی کہا گیا ہے۔

قرآن مجيد كي آخرى سورت اور آخرى آيات:

صحیح مسلم میں حضرت ابن عباس تعطف تفالق النظاف المستقول ہے کہ سورہ نصو قرآن مجید کی آخری سورت ہے۔

(قرطبی، معارف)

مطلب یہ ہے کہ اس کے بعد کوئی کھمل سورت نازل نہیں ہوئی ، بعض آیات کا جواس کے بعد نازل ہونا بعض روایات سے ثابت ہے وہ اس کے منافی نہیں۔

 كَ كُل ٣٥ ، روز باتى تنصي اس كے بعد آيت "اتَّ هُوْ ا يَوْمًا تُوْجَعُونَ فِيهِ إِلَى الله" نازل بهونى جس كے بعد صرف اكبس روز باقی تصاور مقاتل کی روایت کے مطابق اس کے صرف سمات روز کے بعد آپ پیٹھٹٹا کی وفات ہوگئ۔ (معارف، فرطسی)

اس بات پرسب کا اتفاق ہے کہ اس مورت میں فتح ہے فتح کم مراد ہے؛ البتہ اس میں اختلاف ہے کہ بیرمورت فتح کمہ ہے پہلے نازل ہوئی یا بعد میں؟ لفظ إذا جـــاء ہے بظاہر تبلِ فتح مکہ تازل ہونامعلوم ہوتا ہے،روح المعانی میں بحرمحیط ہے ایک روایت بھی اس کےموافق نقل کی ہے،جس میں اس سورت کا نزول غزوہ نیبر سے لوٹنے کے وقت بیان کیا گیا ہے اور خیبر کی فتح مكه ہے یقینا مقدم ہے نیز روح المعانی میں بسند عبد بن حمید حضرت قمّا دہ تفحّانلفہ کا بیقول نقل کیا گیا ہے کہ آتحضرت فیقائلہ کا اس سورت کے بعد دوسال زندہ رہے ،اس کا حاصل بھی یہی ہے کہاس کا نزول فتح مکہ سے پہلے ہوا؛ کیونکہ فتح مکہ ہے وفات تک کی مدت دوسال ہے کم ہے، فتح مکد ۸ ھرمضان السبارک میں ہوئی ، اورآپ ﷺ کی وفات رہے الاول • اھیں ہوئی اور جن روایات میں اس کا منتح مکہ یا ججۃ الوداع میں نازل ہونا بیان کیا گیا ہے ان کا مطلب بیہ دسکتا ہے کہ اس موقع پررسول اللہ التنظیمان برسورت برسی موجس سے لوگوں کو بیرخیال موگیا کہ بیسورت ابھی نازل موٹی ہے۔ (معادف)

آپ بلته الله کی وفات کے قریب آجانے کی طرف اشارہ:

متعددا حادیث مرفوعه اورآثار صحابه نضحَك منتعالی کنه کاس سورت میں رسول الله بین کی وفات کے وفت کا قریب آ جانے کی طرف اشارہ ہے کہ اب آپ بین منظائی کی بعثت اور دنیا میں قیام کا وفت بورا ہو گیا ہے! للبذا اب سبیح واستغفار میں لگ ج ہے ، مقاتل کی روایت میں ہے کہ جب بیسورت نازل ہوئی تو آپ میٹھٹٹا نے محابہ کرام نضَّطَالنعُنگا کے مجمع میں اس کی تلاوت فرمائي،اس مجمع ميں حضرت ابو بكر تفحّانندُ تَغَالِثُهُ وعمر تفحّانندُ مَغَالثُهُ اور سعد بن ابي وقاص تفحّانندُ تغالثُهُ وغيره موجود تتے ،سب اس کوس کرخوش ہوئے کہاس میں فتح مکہ کی خوشخبری ہے ؟ مگر حصرت عباس تفخ کا فلائے ہوئے لگے، رسول اللہ وظف فلائے ال كدرون كاكيا سبب بياتو حضرت عباس تفحّاننهُ مّعنات أن عرض كيا كداس مين تو آب يفضيها كي وفات كي خبر مضمر بي جس كي

جب موت قريب موتوتنبيج واستغفار كرني حايئ:

حضرت عائشہ صدیقہ وضحالتلائقا فرماتی ہیں کہ اس سورت کے نازل ہونے کے بعدرسول اللہ بین علیہ جب کوئی نماز يرُ صة توريدعاء كرية: سُبْحَانَكَ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ اللَّهُمَّ اغفرلى. (بیعاری)



سُورَةُ أَبِي لَهَبِ مَكِيَّةٌ خَمْسُ آيَاتٍ. سورة الى لهب كى ہے، يانچ آيتيں ہيں۔

يِسْسِيمِ اللهِ الْرَحْسِمُ الرَّحِسِيْسِ وَمَا النَّهِ الْهَا اللهُ عليه وسلم قَوْمَهُ وقَالَ إِنِي نَذِيرُ لِكَمُ البُهْ اللهُ عَلَيهُ اللهُ وَلَهُ اللهُ وَلَهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ عَلَيْهُ وَعَيْرَ عَنْهًا بِالْهَدَيْنِ مَجَازًا لِآنَّ الْكُفُرُ الاَفْعَالِ تُزَاوَلُ بِهِمَا وَهِذِهِ الجُمُلَةُ وُعَاءٌ وَتَهَ فَ عَيْرَ اللهُ عَليه وسلم بالعَذَابِ فَقَالَ إِنْ كَانَ ما يَقُولُ خَبِرٌ كَقَوْلِهِم أَبُلَكَهُ اللهُ وقَد بَلكَ وَلَمَّا خَوْفَهُ الني صلى الله عليه وسلم بالعَذَابِ فَقَالَ إِنْ كَانَ ما يَقُولُ ابْنُ أَخِيلُ خَقًا فَائِنِي اَفْتَدِي مِنه بِمَالِي وَوَلَدِي نَزَلَ مَا أَخْفَى عَنْهُ مَاللهُ وَمَا كَمَنَ اللهُ عَليه وسلم بالعَذَابِ فَقَالَ إِنْ كَانَ ما يَقُولُ ابْنُ أَخِيلُ خَقًا فَائِنِي اَفْتَدِي مِنه بِمَالِي وَوَلَدِي نَزَلَ مَا أَخْفُى عَنْهُ مَاللهُ وَمَا كُمَنَ اللهُ عَليه وسلم بَاعَذَابُ وَلَدُهُ وَاغَنِي النَّهُ عَلَيْ وَجَهِ إِنْمُ اللهُ عَليه وسلم اللهُ عَلي وَجَه إِنْمُ اللهُ عَلَيْ وَالسَّعَدَانِ تُلْقِيهِ فِي طَرِيقِ النَّيِ صلى الله عليه وسلم فَي حَمَّالَةً بِالرف والنَّفِ اللهُ عَلَي ضَعِيدٍ والسَّعَدَانِ تُلْقِيهِ فِي طَرِيقِ النَّي صلى الله عليه وسلم فَي حَمَّالَةً بِالرف والنَّعْبِ وَهِذِهِ البُحْمُ لَهُ حَالً بِن حَمَّالَةُ الخَطَبِ الَّذِي مُونَ عَتْ لا مُرَاقِة او خَبُرُ مُنْتَذَا مُعَلِّى اللهُ عَلَيْهُ وسلم فَي المُعَلِي وَالسَّعْدَانِ تُلْقِيهِ فِي طَرِيقِ النَّي صلى الله عليه وسلم فَي عَلَي مِن وَمِنْ وَهُذِهِ الجُمْمُ اللهُ عَلَي اللهُ عَلَيْهُ وَلَهُ المُعُولُ وَالسَّعْدَانِ تُلْقِيهِ فِي طَرِيقِ النَّي صلى الله عليه وسلم فَي عَنْ المُعْمَلُ مَنْ اللهُ عَلَيْ وَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَلَا الْمُعْلَى مَالِكُمُ عَلَيْهُ وَلَا الْمُعْمَلُهُ مَا لَا الْمُعْمَلِ الْمُعْمَلِ اللْهُ عَلَيْهُ الْمُعُولُ وَلَا الْمُعْمَلُ وَلَا الْمُعْمَلِي اللهُ عَلَيْهُ وَلَا الْمُعْلَى اللّهُ عَلَيْهُ اللهُ عَلَيْهُ اللهُ عَلَيْهُ وَلَا الْمُعْلَى اللهُ عَلَيْهُ اللهُ الْمُعْلَى اللهُ عَلَيْهُ اللْهُ عَلَيْهُ اللهُ الْمُعْلَى اللهُ اللهُ عَلَيْهُ اللهُ الْمُعْلِى اللهُ الْمُؤْمِلُولُ اللْهُ عَلَى اللهُ الْمُعْلَى اللهُ عَلَيْهُ الللهُ عَلَيْهُ اللهُ الْمُؤْمِلُولُ اللهُ اللهُ عَلَيْهُ ال

- ح (رَكَزُم بِسَالِقَ إِلَ

نی ﷺ غذاب سے ڈرایا تواس نے کہا جو کھی مرا بھتیجا کہتا ہے اگروہ تن ہے تو ہیں اس کا اپنے مال اور اولاد سے فدید د دے دوں گا، تو "مَااَغْنی عنه مالهٔ وَمَا کَسَب" نازل ہوئی، اس کے نداس کا مال کام آیا اور نداولاد، اور اَغْنی جمعی یُغینی ہے، اور وعنقریب ہو کئے والی آگ میں جائے گا، یعنی شعلہ زن، سلگنے والی آگ میں، یوانجام ہے اس کی کنیت کا، اس کے چہرے کے وکنے کی وجہ سے، چمک اور سرخی کے اعتبار سے، اور اس کی یوی بھی جائے گی اس کا عطف یَصْلیٰ کی صفیر پر ہے مفعول اور اس کی صفت کے قصل نے اس عطف کوجائز کر دیا ہے اور اس کی یوی ام جیل ہے جو لکڑیاں ڈھونے والی ہے، جن کو وہ ہے گا اس کی گرون میں مونچھ کی رسی ہوگی لینی چھال کی اور یہ جملہ حَسمّالَة المحطب سے حال ہے جو کہ امر اُقی کی مفت ہے یا مبتدا یہ وفی کن جرہے۔

عَجِفِيق الْمِرْكِيةِ لِيَسْهُ الْحَاقِفَةُ الْمِنْ الْحَافِلِا الْمُعْتَفِقُ الْمِلْ

فَیُولِ اَی اَ بَدُنَا آبِی لَهَبِ اس مورت کوسورهٔ مَندُ اورسورهٔ الی لَبَبِ بھی کہتے ہیں، ابولہب کا اصل نام عبدالعزیٰ ہے، اپنے حسن وجمال اور چہرے کی سرخی کی وجہ سے اسے ابولہب (شعله فروزال) کہاجا تا تفاء نگست بسدا ابھی لَهَب بددعاء ہے اور تست قبل اور دوسری کل جسم و تسب قبولیت دعاء کی اطلاع ہے اور دوسری کل جسم کے لئے اور دوسری کل جسم کے لئے ، ہاتھوں سے بھی کل ہی مراد ہے؛ لہٰذا و تب، تَبَّتْ یدا کی تاکید ہوگی۔

فَيْ وَكُلُّ ؛ مَالُ مَكْنِينِهِ لِعِنْ تارجهم من واخلداس كى كنيت كى تا ثيراور نتيجه تفا-

فِی کُولِکُمُ ؛ لِنَسَلَقُ بِ وَجُهِم بِیاس کی کنیت کی علت ہے،مطلب بید کہاس کی کنیت ابولہب اس لئے پڑی کہ وہ خوبصورتی اور سرخی میں شعلہ فروز اں کے مانند تلی !مگریمی کنیت تالازم الغار کی طرف پلیٹ گئی۔

چَوُلْکَمُ ؛ وَامْسَوَانُسَهُ اس کاعطف سیسصللی کی خمیر مرفوع متفتر پرہے، لینی نارجہنم میں ابولہب داخل ہو گااوراس کی بیوی (ام جمیل جس کا نام اروکی تھا) بھی اس آگ میں داخل ہوگ۔

فِيُولِكُمْ : سَوَّغَهُ الفصل الن بيايك والمقدر كاجواب ٢٠

جَوَّ الْبِيْ عَمِيرِ مرفوع متصل متنز پرعطف کرنے کے لئے دوشرطوں میں سے ایک کا پایا جانا ضروری ہے ، ایک بد کہ میر منفصل کے ذریعہ تاکیدلائی جائے اور دوسری شرط موجود ہے ؛
کے ذریعہ تاکیدلائی جائے اور دوسرے بید کہ معطوف اور معطوف علیہ کے درمیان فصل واقع ہو، اوریہاں دوسری شرط موجود ہے ؛
اس لئے کہ معطوف علیہ اور معطوف کے درمیان مفعول یعنی ندارً ۱ اوراس کی صفت یعنی ذات لَهَبِ کافصل موجود ہے ؛ لہٰذااب

• ﴿ (فَكُورُم بِسَالِتَهُ إِنَّا لَكُونَ }

4|+

کوئی اعتراض نہیں ہے۔

فَحُولُنَ ؛ ام جمیل، ام جمیل ایوسفیان بن ترب کی بہن تھی اور عوراء لین کائی تھی۔

فَحُولُنَ ؛ بالرفع و المنصب ، حمّالَة شمار تع اور نصب و و نوس جائز ہیں ، رفع یا تو امْر أته کی صفت ہونے کی وجہ سے (اور بہ جائز ہے اس کے کہ حسالة المحطب ہیں اضافت تقییہ ہے) یا امْر أته سے عطف بیان ہونے کی وجہ سے ، اور یہ می ہو سکت ہو ہ کہ مبتداء محد و فی وجہ سے ، اور اس کے کہ مبتداء محد و فی وجہ سے ، اور اس کے کہ مبتداء محد و فی وجہ سے مرفوع ہو، ای هی حَدَّ اللهُ المحطب، ایک قراءت نصب کی ہی ہو اور اس کا صب فعل محد وف ہے ، ای اعد یہ حمّا لمة المحطب (یا) اَذُمُّ حَدَّ اللهُ المحطب، حَطَب ایک خار دار گھاس ہوا وار کی مبتداء و نہیں کھاس کو اور نہ کے علاوہ کو کی جائو رئیس کھا تا اور و نک ہونے کے بعد وہ ہی نہیں کھا تا۔

متری ہیں ''اوٹ کٹارا'' کہتے ہیں ، اس گھاس کو اور نے درخت کی چھال کو کہتے ہیں ، مطلقا چھال کو بھی ہیں ، موجھ جس کی عام طور پرتی بنائی جاتی ہوئی ہی ہے ہیں ، موجھ جس کی عام طور پرتی بنائی جاتی ہوئی ہے تھیں ، موجول ہی ہوتی ہے۔

عور پرتی بنائی جاتی ہوئی مبتداء و نہر سے مرکب جملہ اور وہ فی جیسد ها حبل من مسلم ہے ، حَبْلٌ موصوف، من مسلم ، کھائن کے متعلق ہو کرصفت ، موصوف ، من مسلم ، مبتداء نہر سے مرکب جملہ ہو کہ میں جیسد ها خبر مقدم ، مبتداء نہر سے مل کر جملہ ہو کہ حصالة المحطب سے حال ہے۔

ێ<u>ٙڣٚؠؙڒۅۘڗۺٛ</u>ڂڿ

ابولہب کا اصلی نام عبدالعزی تھا، یہ آنخضرت فیل کھی گھا تھا، اس کو ابولہب اس لئے کہا جاتا تھا کہ اس کا رنگ بہت چکتا ہوا، سرخ وسفید تھا، لہب آگ کے شعلے کو کہتے ہیں اور ابولہب کے معنی ہیں: شعلہ رو، یہاں اس کا اصل نام ذکر کرنے کے بجائے اس کی کنیت کو ذکر کرنے کے بجائے اس کی کنیت سے معروف تھا، دوم یہ بجائے اس کی کنیت کو ذکر کرنے کی وجوہ ہو سکتی ہیں، اول بید کہ وہ اپنے اصلی نام کے بجائے اپنی کنیت سے معروف تھا، دوم یہ کہ اس کا اصل نام عبدالعزی مشرکا نہ نام تھا جس کو تر آن ہیں پیند نہیں کیا گیا، سوم یہ کہ اس کا انجام جو اس سورت میں بیان کیا گیا ہے۔ اس کے ساتھ اس کی بیکنیت ذیا دہ مناسبت رکھتی ہے، پیشن آپ بیلی تھی کا بے حدد شمن اور اسلام کا شدید مخالف تھا۔

شان نزول:

صحیحین میں ہے کہ جب آنخضرت فِقَقَقَ پر آیت "وَ اَنْفِرْ عَشِیْرَ تَکَ الْاَقْرَبِیْنَ" تازل ہوئی تو آپ فِقَقَانے کو وِصة پر چڑھ کرا ہے قبیلہ قریش کے لوگوں کو یکا صَبَاحَاه، یا بنی عبد مناف اور یابنی عبد المطلب وغیرہ کہ کرآ واز دی، سب قریش بھی تو کیا تھ جو گئے تو رسول اللہ فِقَقَقَانے فر مایا کہ اگر میں تمہیں یہ خبر دول کہ دیشن تم بھی تمام میں تملہ آور ہونے والا ہے تو کیا تم لوگ میری تصدیق کر وگے؟ سب نے یک زبان ہوکر کہا ہاں! ضرور تصدیق کریں گے، پھر آپ فِقَقَقَا نے فر مایا میں تمہیر عذاب شدید سے ڈرا تا ہوں، یہ تن کرا پولہب نے کہا "تبقًا لَكَ أَلِهِ فَذَا جَمَعْنَذَا" اور آپ فِقَقَقَا کو مارنے کے لئے ایک پھر

اٹھالیا،اس پریسورت نازل ہو گی۔

تنبت یک انبی نکھب اس کے معنی بعض مغسرین نے دنو نے میں ابولہ کے ہاتھ "بیان کے ہیں، اور تبت کا مطلب بیان کیا ہے کہ وہ خود ہلاک ہوجائے یاوہ ہلاک ہوگیا، کین در حقیقت بیر کوئی کوستانہیں ہے جواس کو دیا گیا ہو؛ بلدا یک بیشین گوئی ہے جس میں آئندہ پیش آنے والی بات کو ماض کے صیفوں میں بیان کیا گیا ہے، گویا کہ اس کا ہو باایسا یقینی ہے جسے وہ ہو چکی، اور فی الواقع آخر کارون کی کھے ہوا جو اس سورت میں چند سال پہلے بیان کیا جاچا تھا، ہاتھ ٹوشنے نفاہر ہے کہ جس نی ہاتھ ٹو شنا مراد میں ہو بالاب نے اپنا پوراز دوراگا دیا ہوا ور ابولہ ب نے نہا کہ اس مقصد میں قطعی ناکام ہوجا با امراد ہے جس کے لئے اس نے اپنا پوراز دوراگا دیا ہوا ور ابولہ ب نے رسول اللہ بیکھنے تھا کہ وہ کہ دورات کے دواقعی اپنا پوراز دوراگا دیا ہوا ور ابولہ ب نے سال ہی سول اللہ بیکھنے تھا کہ بور میں کے لئے واقعی اپنا پوراز دوراگا دیا ہوا در ابولہ ہو ہو سال ہی سول اللہ بیکھنے اس کو دور ہو گئی ہوائی دوراگا دیا ہوائی اس کے جواسلام کی دشنی میں ابولہ ب کے ساتھی تھے، مکہ گذر سے بیکھ کہ جنگ بدر میں قریش کے اکثر و دیشتر وہ بڑے سردار مارے کئے جواسلام کی دشنی میں ابولہ ب کے ساتھی تھے، مکہ میں جہ بار شکی خواس کی موت بھی نہا ہو ہے کہ نہا ہو ہو کہ کہ وہ برائے سے معرف اللہ کی موت بھی نہا ہو کہ ہو کہ اس کی موت بھی نہا ہو کہ ہوائی کی جوت لگ کے دوران کے کھوت لگ جائی کی حالت میں دہ مرکبا، تھی روزت اس کی بھی ہوئی کہ جس دیں کی راہ دو کے لئے اس نے ایک بھی کہ دوروں سے اٹھوا کہ دوران کی دوروں ہے گئے تھوں کہ لیا ہوں سے پہلے اس کی بٹی در تر ہورت کی راہ دو کے سے کھور شے تھی ہوئی کہ دست مبارک پر بیعت کی سے دینے میں مورش کے میات مورش کی بھی تھی۔ کے سے دینے اس کے بٹی اور اسلام لا کمیں پھر فتح کہ دوران کی دونوں بیا تھی جس میں میں مورش کی دوران کے بھی تھی ہو کے اورائیان لاکر آپ بھی تھی کے دوران کی دوران کی دوران کی جو تر انہ ہو کے دونوں بھی تھی ہو کے دونوں بھی تھی۔ کے دوران کی جو تر کہ مورت کی دوران کی جو تر کی دوران کی دونوں بھی تھی۔ کے دوران کی دونوں بھی تھی ہو کہ کہ دوران کی دونوں کے مورش کے دوران کی دوران کے دوران کے دونوں کی دوران کی

مَا أَغْلَىٰ عَلَمُهُ مَا لُهُ وَمَا كَسَبَ الِولهِ بهت خَتِ بَخْل اور ذر پرست آدی تھا، این اثیر کابیان ہے کہ ذما نہ جا ہلیت شک ایک مرتبدا س پر بیالزام بھی لگایا گیا تھا کہ اس نے کعبہ کے ثرزانے بیس سے سونے کے دو ہرن چرالئے ہیں، اگر چر بعد میں وہ ہرن دوسر نے خص کے پاس سے ہرآ مدہوئے الیکن بجائے خود بیات کہ اس پر بیالزام لگایا گیا، بی ظاہر کرتی ہے کہ مکہ کوگ اس کے بارے بی کیارائے رکھتے ہے، اس کی مالداری کے متعلق قاضی رشید بن زبیرا پی کتاب "اللذ خانو المنتحف" بیس کہ دو قریش کے ان چار آدمیوں بیس سے تھا جوا کیے قبطار سونے کے مالک تھے، اس کی زر پرتی کا نداز واس سے لگایا جاسکتا ہے کہ جنگ بدر کے موقع پر جب کہ اس کے نہ ہب کی قسمت کا فیصلہ ہونے والا تھا قریش کے نما مردار لڑنے کے لئے بھیج ویا اور کہا کہ بیان چار ہزار کمام سردار لڑنے کے لئے بھیج ویا اور کہا کہ بیان چار ہزار ایک کا بدل ہے جو میرے تیرے فرمن ہیں، اس طرح اس نے اپنا قرض وصول کرنے کی ایک ترکیب نکال کی، کیونکہ عاص دیوالیہ و چکا تھا اور اس سے دقم طنے کی کوئی امید نہیں۔

مَا كَسَبَ بِعَضْ مُفْسِرِين نِے مَاكَسَبَ كَ مَعَىٰ كَمَا كُى كَ لِنَهُ إِي لِينِي وه نَعْ جَوَاسَ نِ تَجَارت وغِيره مِيں كمايا،اوربعض غسرين نے اس سےاولا دمراد لی ہے؛ كيونكه آپ ﷺ نے فرمايا "إِنّ اطليب مَا اَكَلَ مِنْ كَسَبِ وَإِنَّ الْوَلَهُ مِنْ ——— ﴿ اَنْعَزُمْ بِبَنَائِمَ لِيَ اَلْهُ اللّهِ عَلَيْهِ اللّهِ اللّهُ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهُ اللّهِ اللّهُ اللّ تحسب " لعنی جو کھانا آ دی کھاتا ہے اس میں سب ہے زیادہ حلال وطیب وہ چیز ہے جوآ دمی اپنی کمائی سے حاصل کرے اور آ دمی کی اولا دہمی اس کے کسب میں داخل ہے لیعنی اولا دکی کمائی کھانا بھی اپنی ہی کمائی سے کھانا ہے۔ اس کے حضرت عائشہ مجاہد، عطاء ابن سیرین رین رین کھنے تھا گئے افغیرہ نے اس جگہ مَا تکسَبَ کی تفسیر اولا دیے کی ہے، ابولہب کوالتدنے مال بھی بہت دیا تھا اوراولا دبھی ، یہی دونوں چیزیں ناشکری کی وجہ سے اس کے فخر وغر وراور و ہال کا سبب بنیں۔ وَ الْمُواْتِلَةُ حَدِمًا لَهُ الحطب جس طرح الولهب كوآب يَلْ الله السيحة عيظ وغضب اورد ممنى تقى اس كى بيوى بهي اس عثر میں اس کی مدد کرتی تھی، اس کا نام اُڑ وٹی تھا اور ام جمیل اس کی کنیت تھی، یہ ابوسفیان بن حرب کی بہن تھی، حضرت ابو بکر تَعْمَالْلُنَامُنَالِكَ كَيْ صاحبز اوى حضرت اساء دَضِعَ اللَّهُ مَنَا كَابِيان ہے كہ جب بيسورت نازل ہوئى اورام جميل نے اس كوسنا تو غصه میں بھری ہوئی رسول اللہ ﷺ کی تلاش میں نکلی ؛ اس کے ہاتھ میں پتھر نتھے اور وہ حضور فیلقظیّنا کی ججو میں اپنے ہی کچھا شعار پڑھتی جارہی تھی، جب حرم میں پہنچی تو وہاں حضرت ابو بمرصدیق و کھنانٹانٹ کے ساتھ حضورتشریف فرما ہتے حضرت ابو بمر نَعْمَانْ لَلْمُتَعَالِكَ فِي عِرْضَ كِيا يارسول الله وَيَعْتَقِالِي آرى إور مجھانديشے كرآپ فَقَائِقَيْ كود كيم كركوئى ب موده حركت كرے گ، آپ نیفن کا از مجھے دیکے نہ سکے گی چنانچہ ایسا ہی ہوا کہ آپ نیفن کا کے موجود ہونے کے باوجود آپ نیفن کا کونہ دیکھ سکی ، اور اس نے حضرت ابو بکر تفخ اُنٹائٹ سے کہا ہیں نے سنا ہے کہتمہارے صاحب نے میری ججو کی ہے؟ حضرت ابو بکر نَعْظَانْلُهُ تَغَالِظَةً نِهَ كِها السَّحْرِكِ رب كُنتم انہوں نے تیری کوئی جونبیں کی ، اس پر وہ واپس چکی گئی۔ (ابن ابی حاتم ، ابن ہشام نے بھی اس سے ملتا جلتا واقعہ تل کیا ہے)۔

حمّالَة الحطب اسكالفظى ترجمه ب، ولكن إل وهون والى "مفسرين في اس كمتعدومعنى بيان ك بير، ابن کثیر رَیِّمْ کُلانْهُ مُتَعَالیٰ نے کہا ہے ،اس کا مطلب یہ ہے کہ یہ عورت جہنم میں اپنے شوہر کی آگ پرلکڑیاں لا لا کرڈا لے گی ؟ تا کہ آ گ مزید بعز کے بعنی جس طرح دنیا میں ہیکفروشرک میں اپنے شوہر کی مدد گارتھی آخرت میں بھی عذاب میں اس کی مدد گار ہوگی ،حضرت عبداللہ بن عباس ،ابن زید ،ضحاک اور رہیج بن انس تفحک تعالی کیتے ہیں کہ وہ رات میں خار دار شہنیاں لاکر رسول الله يتفقيق كدرواز مريز ال ديت تحى ،اس لئے اس كونكرياں دھونے والى كہا كيا ہے، قاده ،عكرمه،حسن بصرى ، مجامد ، سفیان توری نفع النفی می ایس کے وہ او گوں میں فساد ڈلوانے کے لئے چغلیاں کھاتی پھرتی تھی ، اس لئے اسے عربی محاورہ کے مطابق لکڑیاں ڈھونے والی کہا گیا ہے، فاری محاورہ میں ایسے شخص کو،''ہیزم کش' کہتے ہیں، شیخ سعدی رَجْمُ كُلِللَّهُ مَعَالَىٰ فِي الى مفهوم كواس شعر ميں ادا كيا ہے:

سخن چین بدبخت "بیزم کش" است میان دوکس جنگ چول آتش است ار دومحاورہ میں اس کو'' جلتی پرتیل چیٹر کنا'' کہتے ہیں ، بہرحال اس سورت میں اس کی ہلا کت کو بیان کیا گیا ہے۔



٩

سُورَةُ الإِخْلَاصِ مَكِّيَّةٌ او مَدَنيَّةٌ ارْبَعُ او خَمْسُ آيَاتٍ. سورهٔ اخلاص کمی یامدنی ہے، جاریا پانچ آیتیں ہیں۔

بِسُــِ إِللهِ الرَّحِـ مِن الرَّحِسيِّ حِرِ سُئِلَ النبيُّ صلى الله عليه وسلم عَن رَبِّه فَنَزَلَ قُلْ هُوَاللّٰهُ أَحَدُّةً فَاللّٰهُ خَبرُ سُو وَاَحَدٌ بَدَلَّ مِنه او خَبرٌ ثَانِ أَللّٰهُ الصَّمَدُةُ مُبُتَدَاً وَخَبرٌ اي المَقْصُودُ فِي الحَوَائِج عنى الدَوامِ لَمُربَلِدُهُ لانتِفَاءِ مُجانَسَةٍ وَلَمْ يُؤُلُّدُ ۚ لانتِفَاءِ الحُدوثِ عنه وَلَمْرَبَكُنَّ لَهُ كُفُوا أَحَدُ ۗ ﴿ يَا الْحَدوثِ عنه وَلَمْرَبَكُنَّ لَهُ كُفُوا أَحَدُ ۗ ﴿ يَا اى سُكَافِيًا وسُمَاثِلاً فَلَهُ سُتَعَلِقٌ بكُفُوّا وقُدِّمَ عَلَيه لِاَنَّهُ مَحَطُّ القَصْدِ بالنَّفَي وأُخِرَ أَحَدٌ وهُو إسْمُ يكُنْ عَن خَبرِها رِعَايةً لِلْفَاصِلَةِ.

ت المروع كرتا مول الله كام ب جوبرا مهر بان نهايت رقم والاب، ني ينتقطه سان كرب ك بارك ميں سوال كيا گيا تو قسل هــو المــُـــه احد نازل ہوئى، كہووہ الله يكتا ہے، المــُـــه، هُوَ كُرْبِر ہے اور اَحَدُّ اس ہے بدل ہے يا (مبتداء) کی خبر ٹانی ہے، اللہ بے نیاز ہے بیمبتداخبر ہیں یعنی وہ حاجتوں میں ہمیشہ مقصود ہے، نداس کی کوئی اولا د مجانست کے منتمی ہونے کی وجہ سے نہ وہ کسی کی اولا و اس سے صدوث کے منتمی ہونے کی وجہ سے، اور نہ کوئی اس کا ہمسر ہے لیعنی ہمسراور مماثل نبیں، لَهٔ کُفُوا ہے متعلق ہے، لَهٔ کو کفوا پر مقدم کردیا گیاہے؛ اسلے کہ وہی (مماثل سے) مقصود بالفی ہے اور اَحَدٌ کوجوکہ بکن کااسم ہاس کی خبرے مؤخر کردیا گیا ہے فواصل کی رعایت کی وجہے۔

عَجِقِيق الْمِرْكِي لِيسَهُ الْحَالَةِ لَفَسِّلُو لَفَسِّلُو كَفَسِّلُو كَافِلُا

سورة اخلاص ، ال سورت كے متعدد تام بیں اور كثرت اساء شرف سمى پر دلالت كرتے ہیں ، صاوى رَبِّمَ كَاللهُ مَعَالیٰ نے اس كبيس نام شاركرائي بين ال ميس ع چنديه بين: سورة المقفريد، سورة القبحريد، سورة التوحيد، سورة الاخلاص، سورة التحيات، سورة الولاية، سورة النسبة، سورة المعرفة، سورة الجمال، سورة

٤ (وَكُزُم بِهَالثَّهُ إِنَّا

المقشقشة، (تلك عشرة كاملة).

فَوْلَنَى الله الله اَحَدُ اس كَارَكِ بِين چندصورتين بِين، ﴿ هُوَ صَمِير شان مفتر مبتداءاور الله الصمد مفسر جله بوكر في الله احد الله مبتدا عانى اور اَحَدُ مبتدا عانى كخبر، مبتداء عانى ابن فبرسال كرجمله بوكر مبتداء اول كخبر، اس هُوَ مبتداء اول الله احد، مشركين ك مبتداء اول كخبر، اس صورت بين هُو كامرجع وه بجوسابق مين فدكور بواء اس لئے كه قبل هو الله احد، مشركين ك سوال يا محمد! انسب لَنا دبك، المجمد بين توجم سے اين دب كانسب بيان كر، كے جواب مين به اور يهى درست ہے كه الله، هُو سے بدل بو۔

فَيَوْلِكُمْ: الله الصمد، الله مبتداء الصمداس كنبر، السَّمَدُ مَايُضمد اليه في الحاجات، كوكهاج تاب، يعنى عاجون عن المحاجات، كوكهاج تاب، يعنى عاجون من من عاب المعنى عاجون من عن عاب المعنى عاجون من عن عاب المعنى عاجون من عن عاب المعنى عاجون المن عن عاب المعنى المناسكة عاب المعنى المناسكة عن الم

تِفَيْدُرُوتَشِيْنَ فَيَ الْمُؤْتِثَيْنَ فَيَ الْمُؤْتِثِينَ فَيَ الْمُؤْتِثِينَ فَي الْمُؤْتِثِينَ فَي الْمُؤتِ

سورهٔ اخلاص کی فضیلت:

يەسورت اگرچە بهت مختصر بے بمربوے فضائل كى حامل بآپ ماين الله الكونكث قرآن قرارديا بـ

شان نزول:

لفظ فسل، اس میں نی ﷺ کی نبوت کی طرف اشارہ ہے کہ آپ ﷺ کواللہ تعالیٰ کی طرف ہے ہدایت کا تھم ہورہا ہے اور انتہ اس ذات کا نام ہے جو داجب الوجود اور تمام کمالات کی جامع اور تمام نقائص ہے پاک ہے، اَحَدُ اور وَاحد کا ترجمہ تو ایک ہی کی جامع اور تمام نقائص ہے پاک ہے، اَحَدُ اور وَاحد کا ترجمہ تو ایک ہی کیاجا تا ہے! گرم نم ہوم کے اعتبارے احد کے مفہوم میں یہ بھی شائل ہے کہ وہ ترکیب و تحلیل، تعدد اور تجزیبا در کوئی کی مشابہت ومشاکلت ہے پاک ہے لینی وہ ایک یا متعدد مادول ہے ہیں بنا ہے اور نہ اس میں تعدد کا کوئی امکان ہے، اس کے سو دنیا کی ہرفئی جفت تھے کہ وہ سونے چاندی کا ہے یا کسی جو ہم کا جاس ایک جو ہم کا جاس میاحث آگئے۔

لَمْرِيَلِنْدُ وَلَمْرِيُوْلَذَ يَهِ ان لُوگُوں كا جواب ہے جنہوں نے اللہ تعالی کے نسب نامہ كاسوال كياتھا كہاس كوڭلوق پر قياس نبيس كيا باسكتا جوتو الدو تناسل كے ذريعہ وجود ميں آتی ہے ، نہ وہ كى كى اولا دہے اور نہاس كى كوئى اولا د

وَلَـهْرِيَكُنْ لَهُ كُفُوًا اَحَد ، كفو كِفظى معنى شل اور مماثل كي بيس، معنى بيه كدند كوئى اس كاشل باورند بى كوئى اس سے مشاكلت ومشابهت ركھتا ہے۔ (معارف)

مور و اخلاص میں مکمل تو حبیداور ہر طرح کے شرک کی نفی ہے:

اللہ کے ساتھ کسی کوشر یک سیجھنے والے ، منکرین تو حید کی و نیا میں مختلف اقسام ہوئی ہیں ، سورہ اخلاص نے ہرتہم کے مشرکانہ سیالات کی نفی کر کے کمل تو حید کا سبق و یا ہے؛ چٹانچے منکرین تو حید میں ایک گروہ تو خود اللہ کے وجود ہی کا منکر ہے ، جبکہ بعض وجود کے تو قائل ہیں مگر وجوب وجود کے منکر ہیں ، بعض وونوں کے قائل ہیں مگر صفات کمالات کے منکر ہیں ، بعض بیسب پچھ مانے ب ، مگر پھر بھی غیر اللہ کوعباوت میں شریک تھم رائے ہیں ، ان سب خیالات باطلہ کارڈ المسلم المصصم میں ہوگی ، بعض لوگ ب وت میں بھی کسی کوشریک نہیں کرتے ، مگر حاجت روا کارساز اللہ کے سواد وسروں کو بھی سیجھتے ہیں ، ان کے خیالات کا ابطال لفظ ب ورت میں ہوگی ، بعض لوگ میں ہوگی ۔ دیمارن کے خیالات کا ابطال لفظ میں ہوگی ا

لہٰذااس مخضر مگر جامع سورت ہے ہرطمرح کے نثرک کی نفی ہوگئی جس کی طرف راہ نکالنے کی کسی نشم کی اب قطعاً کوئی گنجائش قی نہیں رہ جاتی۔ (واللہ اعلم بالصواب)



٩٤٤ إلْهَ لِقَ مَنْ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ الل

سُوْرَةُ الْفَلَقِ مَكِّيَّةُ او مَدنية خمْسُ آيَاتٍ.

سور و فلق کی یامدنی ہے، پانچ آبیتی ہیں۔

نَـزَلَـتُ هـذه والتي بَعْدَها لمّا سَحَرَ لَبِيّدٌ اليَهُودِيُّ النبيُّ صلى الله عليه وسلم فِي وترِبه إحدى عَشَرَة عُقْدَةٌ فَاعْلَمَهُ اللَّهُ بِذَلِكَ وبِمحلهِ فأحضِرَ بَيْنَ يَدَيْهِ صلى الله عليه وسلمرواُمِرَ بِالتَّعَوُّذِ بِالسُّورَ تَيْن فَكَانَ كُلَّمَا قَرَا ايَةً مِنهُما اِنْحَلَّتْ عُقْدَةً وَوَجَدَ خِفَّةً حَتَّى انْحَلَّتِ العُقَدُ كُلُّها وقَامَ كَانَّمَا نُشِطَ مِن عِقَالٍ.

یہ سورت اوراس کے بعدوالی سورت اس وفت نازل ہوئی جب کہلبید یہودی نے نبی ظیفی کی برایک تا نت کی گیارہ گرہوں میں جا دوکردیا تھا ؛ اللہ تعالیٰ نے آپ ﷺ کواس سحری اوراس کی جگہ کی اطلاع فرمادی ، آپ ﷺ کے سامنے اس کولایا گیااور د ونوں سورتوں کے ذریعے تعوذ (بناہ) کا تھم دیا گیا، جب آپ ظِلَاللَّا ان دونوں سورتوں میں سے ایک آیت پڑھتے تھے،تو ایک گرہ کل جاتی تھی اور آپ بین تعقیقا ہلکا پن محسوس فر ماتے ، یہاں تک کہتمام کر ہیں کھل کنیں اور آپ بین تعقیقا اس طرح اٹھ کھڑے ہوئے جیسا کہ آپ نیٹ فائٹ کو بندشوں سے کھولا یا گیا۔

هِ فَأَحْدِهِ مَنْ بَدُيْهِ بِيُعَالِقُهُ لِعِن لبيد بن الاعظم كوآب يَعْقَلْمُ كسامن عاضر كيا كيا، (حضرت على تَعْمَالْنَهُ مَاللَّهُ اس

هِنُولِنَيْ، فسى وَتَسرِ! وَتَسرْ تانت جوكه جانورول كي آنت سے بنائي جاتی ہے، بدا يك تتم كى رگ ہے جومضبوط و حا محيسى

بِسُــِ عِلْ اللَّهِ الزَّحِدُ مِن الزَّحِدِ مِن قُلْ الْحُوْدُ بِرَبِّ الْفَلَقِ الصُّبْحِ مِنْ شَرْمَا خَلْقَ ﴿ مِن حَبُوا مُكَلَّفٍ وغَيْرِ مُكَلَّفٍ وجَمَادٍ كَالسَّمِّ وغَيْرِ ذلك وَمِنْ شَرِّعَالِيقِ إِذَا وَقَبَ ﴿ أَي النَّيْلِ إِذَا اَطُلَم او القَمَرِ إِذَا غَابَ وَمِنْ شَرِّالْنَفْتُ السَّوَاحِرِ تَنْفُثُ فِي الْعُقَدِهُ الَّتِي تَعْقُدُهَا فِي الخَيْطِ تَنْفَخُ فيها بِشَيءٍ تَقُولُه مِنْ غَيْرِ غُ رِيْقِ وَقَالِ الرَّمَحُشُرِيُّ مَعَهُ كَبَنَاتِ لَبِيْدِ المَذْكُورِ وَ **وَمِنْ شَرِّحَالِدٍ إِنَّاحَكُ ا** أَظُهَرَ حَسدهُ وعَمِلَ بِمُقْتَضَاهُ كَنبيدِ المَدُكُورِ مِنَ اليَهُودِ الحَاسِدِينَ لِلنَّبِيِّ صلَّى الله عليه وسلم وذِكُرُ الثَّلاثةِ الشَّامِلِ لَهَا مَا حَسَ نَعْدَهُ لِشِدَةِ شَرِّهَا.

ترکیکی فی شروع کرتا ہوں اللہ کے تام ہے جو ہزا مہر بان نہایت رحم ولا ہے، کہو کہ میں شیح کے دب کی بناہ میں آتا ہوں، ہراس چیز کے شرسے جواس نے پیداکی (بینی) حیوان مکلف اور غیر مکلف کے شرسے اور جماد کے شرسے مثلا زہرہ وغیرہ، اور دات کی تاریکی کے شرسے جب وہ تاریک ہوجائے، یا چا ند کے شرسے جب وہ تاریک ہوجائے، یا چا ند کے شرسے جب وہ فروب ہوجائے، اور پھو نکنے والی جا دوگر نیوں کے شرسے جو گر ہوں میں تھوک کے بغیر پھوٹلیس وہ گر ہیں کہ جن کو وہ دھا گے میں لگاتی ہیں اور زخشری نے کہا ہے؛ تھوک کے ساتھ، جیسا کہ لیبید مذکور کی بیٹیاں اور حاسد کے شرسے جب وہ حسد کر سے لین این ایس کے شامل ہے اور شیوں کو جن کو حسد کر نے دالے بہود میں سے لبید مذکور ہے اور شیوں کو جن کو منا کے گئی شامل ہے ما خکلق کے بعد ذکر کرنا ان کے شرکے شدید ہونے کی وجہ ہے۔

يَجِقِيق تَزَكِيكِ لِيَسَهُ الْحَاقِظَةُ الْفِيلَا لَهُ الْفِلْ الْمُعَالِمِينَ الْحَالِمُ الْفِلْ

قِرُ لَكَى الْفَلَقُ السم فعل: رُكا اول مَن فَلَق بَعَى مَفْلُون . قِرُ فَلَكَ ؛ وَفَبَ ماضى ، واصد لد كرغائب (ض) وَقْبًا وُقُوبًا ، جِها جانا ـ قِرُ فَلَكَ ؛ غاسِق اسم فاعل ، رات كى تاريك غسق (ن) غُسُوقًا رات كا تاريك ، ونا ـ قِرُ فَلَكَ ؛ او القمر بيغاس كى دومرى تغير ب _

فَيْحُولْكَى ؛ السَّوَاحِ بِياسِ بات كَى طرف اثاره ہے كه نفظت كاموصوف محذوف ہے ، مفسر علام فے موصوف ، اكسواحر محذوف نكالا ہے يعنى سحركر في والى عورتيں ، مرادلبيد بن اعصم يبودى كى لڑكياں ہيں ، اس كاموصوف نفوس بھى ہوسكتا ہے ، نفظت ، نفاقة كى جمع اور مبالغه كاصيغه ہے نفَت (ض ن) نَفَقًا: ہے تقتكارتا ، نفث اور تفل ميں فرق يہ ہے كه نفث ميں تھوك كم ہوتا ہے اور تفل ميں تھوك زياده ہوتا ہے۔

ڷؚڣٚؠؗٳؙڒ<u>ۅؖڷۺٛڕؙ</u>ڿ

سوره فلق اورسورهٔ ناس کے فضائل:

کے مثل میں نے جمعی نہیں دیکھی پیفر ما کرآپ ﷺ نے بید دونوں سور تیں تلاوت فر ما کیں۔

(صحيح مسلم، كتاب صلاة المسافرين وقصرها)

ابوحابس جہنی نفخاننفئنغالظ ہے آپ یکھٹا نے فرمایا اے ابوحابس نفخاننفئنگا کیا میں تجھے سب ہے بہترین تعویذ نہ بناؤں ،جس کے ذریعہ پناہ طلب کرنے والے پناہ مانگتے ہیں؟ انہوں نے عرض کیا، ہاں! ضرور بتاہیے یارسول اللہ یکھٹا گا! آپ یکھٹا نے ان دونوں سورتوں کا ذکر کر کے فرمایا کہ بیددونوں 'معو ذتان' ہیں۔

سحر، نظر بداورتمام آفات كاعلاج:

— = (رَئِزَم بِبَاشَانِ) ≥

سورہ فلق اورسورہ ناس ایک ہی ساتھ ایک ہی واقعہ میں نازل ہوئی ہیں، ان دونوں سورتوں کوسحر، نظر بداور تمام آفات روحانی وجسمانی کے دورکرنے میں عظیم تا میرہے۔

ز مانة نزول:

ان دونوں سورتوں کے کی یا مدنی ہونے میں اختلاف ہے، حضرت حسن بھری وَتَعَمَّلُونَدُهُ مَعَالَیّ، عکر مد وَتِعَمَّلُونَدُهُ مَعَالَیّ وَقِیل ہے کہ یہ سورتیں کی جی جی ایک روایت یہی ہے، حضرت این عباس تعَمَّلُونَدُهُ اَلَّهُ کَا کُھی ہے، جی ہے، جن روایت مدنی ہونے کی بھی ہے، اور یہی تول حضرت عبداللہ بن زیبر تعَمَّلُونَدُهُ اور قادہ تعَمَّلُونَدُ کَا بھی ہے، جن روایتوں ہے اس تول کی تقویت ہوئی ہے ان میں سے بیروایات بھی ہیں کہ جب مدینہ میں مجود نے رسول اللہ میں تھی ہواہ و کیا تھا تو اس کے اثر سے آپ بھی تھی ہاں دوت یہ سورتی بازل ہوئی تھی، ابن سعد نے واقدی کے حوالہ سے بیان کیا ہے کہ بیروا قعہ کھا آپ بھی تھی، اس سعد بھی المنت بغوی، امام بھی ، امام بھی ، حافظ این تجر وَتِهُ اِلْاَلْکُونَالِیّ وَغِیرہم نے روایت کیا ہے کہ مدینہ میں مبدونے رسول اللہ بھی تھی، ان روایات سے کہ مدینہ میں ان روایات سے رسول اللہ بھی تھی بازل ہوئی تھی، ان روایات سے کہ مدینہ میں ان روایات سے کہ تھی، اس وقت یہ سورتی نازل ہوئی تھیں، ان روایات سے کہ تھی، اس وقت یہ سورتی نازل ہوئی تھیں، ان روایات سے اس کی تقویت ہوتی ہے کہ بیدونوں سورتیں مدنی ہیں۔

آپ ظِلْقَانَا عَلَيْهُمْ بِرِجاد و كااثر مونا:

یہاں ایک اہم مسمند ہے کہ دوایات کی روے آپ یکھاتھ پر جادو کیا گیا تھا، اور اس کے اثرے آپ یکھاتھ پارہوگے
تھے، اور اس اثر کو زائل کرنے کے لئے جرائیل تلجہ لا تلاکھ اللہ کا نے آگر آپ یکھیٹے کو سرسور تھی پڑھنے کی ہدایت کی تھی، اس پر قدیم
اور جدید زانے کے بہت سے عقلیت پندوں نے اعتراض کیا ہے کواگر بیروایات مان کی جا تھی تو شریعت ساری کی ساری مشبہ
ہوجاتی ہے؛ کیونکہ اگر نبی یکھیٹھ پر جاوو کا اثر ہوسکتا ہے جیسا کہ روایات کی روسے اثر ہو بھی گیا تھا، تو نہیں کہ جا سکت کہ فیفین نے
جادو کے زور سے نبی سے کیا کیا کہ والی اور کروالیا ہو؟ اس مسلکی تحقیق کے لئے ضروری ہے کہ سب سے پہلے بید یکھا جائے کہ کیا
ورحقیقت مسمند تاریخی روایات کی روسے بیٹا بت ہے کہ رسول اللہ یکھیٹھ پر جادو کا اثر ہوا تھا؟ اگر ہوا تھا؟ اگر ہوا تھا؟ اگر ہوا تھا؟ اس حد تک تھا؟ اس
کے بعد بید یکھا جائے کہ جو پکھتار ن نے جا بت ہے اس پر وہ اعتراضات وار دہوتے جی یا نہیں جو کئے جیں؟
جہاں تک تاریخی حیثیت کا تعلق ہے نبی یکھیٹیٹ پر جادو کا اثر ہونے کا تو یہ واقع طور پر ٹا بت ہے، اسے حضرت عائشہ جہاں تک حیثیت کا تعلق ہے نبی یکھیٹیٹ ، اور حضرت و بیٹونٹیٹ ، اور حضرت و بیٹونٹیٹ ، اور حضرت نہیں اگر جموٹی طور پر مرتب کیا جائے تو اس سے ایک مر بوط واقعہ گا اس طرح بنی ہو ہوا ہے، اس سلسلہ کی جوروایات آئی ہیں، انہیں اگر جموٹی طور پر مرتب کیا جائے تو اس سے ایک مر بوط واقعہ گئی اس طرح بنی ہو ہے۔

واقعه كي تفصيل:

صلح حدید بیدے بعد جب بی کریم بین فلی و اله الشریف لائے تو محرم کے میں خیبر سے بہود یوں کا ایک و فدمدید آیا اور
ایک مشہور جاد وگرلبید بن الاعظم سے ملا جوانسار کے قبیلہ بی ذُریس سے معلق رکھتا تھا (بعض روا یوں بیس بہودی اور بعض میں منافق بھی خدکور ہے) ان لوگوں نے اس سے کہا کہ محمد بیلون نے جمار سے ساتھ جو پھے کیا ہے وہ تہ ہیں معلوم ہے، ہم نے ان پر بہت جاد وکر نے کی کوشش کی ؛ مگر کوئی کا مما بی تبیل ملی ، اب ہم تمہار سے پاس آئے ہیں ؛ کیونکہ تم ہم سے بڑے ہو دوگر ہو،
ان پر بہت جاد دکر نے کی کوشش کی ؛ مگر کوئی کا مما بی تبیل ملی ، اب ہم تمہار سے پاس آئے ہیں ؛ کیونکہ تم ہم سے بڑے ہو دوگر ہو،
لویہ تین اشر فیاں حاضر ہیں ، ان بیل کر دوادر چر بیلون تھی ہوائی کی تنگھی کا ایک گڑا حاصل کرلیا ، جس میں آپ یہودی کو نگھی کا ایک گڑا حاصل کرلیا ، جس میں آپ کوشک کا موم کا ایک گڑا حاصل کرلیا ، جس میں آپ بیلون کو شکل کا موم کا ایک بیل ہی بنایا اور اس میں گیارہ سوئیاں چھودی گئی تھیں ، ایک روایت میں یہ ہی ہے کہ آپ بیلون کو کہ کو تھیں ، ایک روایت میں یہ ہے کہ آپ بیلون کے کہ کہ کہ کہ دور جاد و کیا تھا اور بعض ہیں بہنوں کا ذکر ہے ، ان میں کوئی تھا وہ کیا تھا اور بعض ہے یہ میں بہنوں کا ذکر ہے ، ان میں کوئی تھا وہ کیا تھا اور بعض میں بہنوں کا ذکر ہے ، ان میں کوئی تھا وہ کیا تھا اور بعض میں بہنوں کا ذکر ہے ، ان میں کوئی تھا وہ کیا تھا اور بعض میں بہنوں کا ذکر ہے ، ان میں کوئی تھا وہ کیا تھا اور بعض میں بہنوں کا ذکر ہے ، ان میں کوئی تھا وہ بوت ہے کہ دیک ہے کہ سب نے مل کر یہ کہ اس کی لڑ کیوں نے جاد دکیا تھا اور بعض میں بہنوں کا ذکر ہے ، ان میں کوئی تھا وہ کیا تھا اور بعض میں بہنوں کا ذکر ہے ، ان میں کوئی تھا وہ کیا ہے کہ دیا ہو کیا تھا اور بعض میں بہنوں کا ذکر ہے ، ان میں کوئی تھا وہ کیا تھا اور بعض میں بہنوں کا ذکر ہے ، ان میں کوئی تھا کہ کیا ہے کہ سب نے مل کر یہ کہ ان کی کر بیا کہ کیا ہوئی کیا ہے کہ کہ کو کر کے ، ان میں کوئی تھا کہ کیا ہوئی کی تھا کہ کیا گئی کے کہ کیا ہوئی کیا گئی ہوئی کیا کہ کیا ہوئی کیا گئی کیا گئی کی کیا گئی کیا گئی کو کر کے ، ان میں کوئی تھا کی کیا گئی کہ کیا گئی کیا گئی کوئی کی کر کے کہ کی کی کی کر کیا گئی کی کر کے کر کر کے کر کر کے کر کیا گئی کر کی کر کر کی کر کر کر کے کر کر کر کر کر کر کر کر کوئی کی کر کر کر کر کر کر

کام کیا ہو، ان تمام چیز ول کوایک نر مجود کے خوشے کے غلاف میں دکھ کرلدید نے بنی ڈریق کے کویں ذروان کی تہہ میں پھر

کے بنچ دبادیا، ابتداء میں اس جادو کا اثر بہت ہلکا تھا؛ گربتدریج آپ کی طبیعت زیادہ خراب ہونی شروع ہوگی، آخری جالیس
روز بخت خراب ہوئی ان میں بھی آخری تین روز زیادہ بخت گزرے؛ گراس کا زیادہ سے زیادہ جواثر آپ ﷺ پر ہواوہ اس میہ
تھا کہ آپ کھلتے چلے جار ہے تھے کسی کام کے متعلق خیال ہوتا کہوہ کرلیا ہے؛ حالا نکہ نہیں کیا ہوتا تھا اپنی ازواج کے متعلق خیال
فرماتے کہ ان کے پاس کئے ہیں؛ حالا نکہ نہیں گئے ہوتے تھے وغیرہ وغیرہ ، پیتمام اثر ات آپ کی ذات تک محدودر ہے؛ حتی کہ
دوسر بے لوگوں کو یہ معلوم تک نہ ہوسکا کہ آپ پر کیا گذرر ہی ہے، رہی آپ کے نبی ہونے کی حیثیت تو اس میں آپ کے فرائض
کے اندر کوئی خلل واقع نہیں ہونے پایا۔

ا یک روز کا واقعہ ہے کہ آپ حضرت عا کشر صدیقہ دیجھ کا لنگانگھنا کے یہاں تھے کہ آپ نے بار بار اللہ سے دعاء ما تکی ،اس حالت میں آپ کو نیند آگئی اور پھر بیدار ہوکر آپ نے حضرت عائشہ دَفِحَالِمَتَّعَالِطُفَا ہے فرمایا کہ میں نے جو ہات اپنے رب ے پوچی تھی وہ اس نے جھے بتا دی،حضرت عائشہ رضحاً دُناہُ تَغَالطَ عَمَا سَنے عرض کیا ،وہ کیابات ہے؟ آپ نے فر مایا دوآ ومی (لیعنی د وفر شنتے آ دمی کی صورت میں) میرے پاس آئے ایک سر ہانے کی طرف تھا اور دوسرا پائکتی کی طرف، ایک نے دوسرے ے پوچھاانہیں کیا ہوا ہے؟ دوسرے نے جواب ریا ان پر جادو ہوا ہے،اس نے پوچھاکس نے کیا ہے؟ جواب دیا لبید بن الاعصم نے پوچھا: کس چیز میں کیا ہے؟ جواب دیا تنگھی اور بالوں میں ایک نرکھجور کے خوشے کے غلاف کے اندر، پوچھاوہ کہاں ہے؟ جواب دیا بنی زریق کے کئو کمیں ذروان کی تہد میں پھر کے بنچے ہے۔ یو چھا اب اس کے لئے کیا کیا جائے؟ جواب دیا کنویں کا پانی نکال دیا جائے اور پھر کے نیچے ہے اس کو نکال لیا جائے ، اس کے بعد آپ ﷺ نے حضرت علی ، حضرت عمار بن یاسراورحضرت زبیر کو بھیجاان کے ساتھ جبیرایاس اور قیس بن محصن نصَّطَكَ مُعَمَّا لیسٹنے بھی شِامِل ہو گئے ، بعد میس خودحضور ﷺ بھی چنداصحاب کے ہمراہ وہاں پہنچ گئے یانی نکالا گیا ،اور وہ غلاف برآ مدکرلیا حمیااس تنکھی اور بالوں کے ساتھ ایک تانت کے اندر گمیارہ گر ہیں گئی ہوئی تھیں اور موم کا ایک بتلا تھا جس میں سوئیاں چبھوئی ہوئی تھیں، جرئیل ساتھ ایک ایک گرہ کھولی جاتی اور پہلے میں ہے ایک سوئی ٹکالی جاتی غرضیکہ سورتوں کے خاتمہ تک پہنچتے پہنچتے ساری گرہیں کھل گئیں اور تمام سوئیاں نکل گئیں اور آپ بیٹی ہیں جادو کے اثر ہے نکل کرایسے ہو گئے جیسے کوئی شخص بند ھا ہوا تھا بھر کھل گیا، اس کے بعد آپ بین ایک البید کو بلا کر بازیرس کی ،اس نے اپنے قصور کا اعتراف کرلیا مگر آپ بین ایک اس کو جھوڑ ویا:

یہ ہے۔ سارا قصہ جاد د کا اس میں کوئی چیز ایک نہیں ہے کہ جو آپ ﷺ کے منصب نبوت میں قادح ہو، ذاتی طور پراگر آپ ﷺ کوزخی کیا جاسکتا تھا جیسا کہ جنگ احد میں ہوا، اگر آپ ﷺ گھوڑے سے گر کر چوٹ کھا سکتے تھے جیسا کہ احادیث سے ٹابت ہے، اگر آپ ﷺ کونچھو کا ٹ سکتا ہے جیسا کہ روایات میں وار دہوا ہے، اور ان میں سے کوئی چیز بھی اس تحفظ کے منافی

----- ﴿ (صَّزَمُ بِبَالِثَالِ) ﴾ -

نہیں ہے جس کا نبی ہونیکی حیثیت ہے اللہ تعالیٰ نے آپ یکھٹھا ہے وعدہ کیا تھ ، تو آپ یکھٹھٹا بی ذاتی حیثیت میں جادو کے اثر سے بی ربھی ہوسکتے تھے ، نبی یکٹھٹٹ پر جادو کا اثر ہوسکتا ہے ، بیہ بات تو قر آن کریم ہے بھی ٹابت ہے ، سور ہ ظاہ میں ہے کہ جو لاٹھیاں اور رسیاں انہوں نے بھی تا ان کے متعلق عام لوگوں ہی نے نہیں ؛ بلکہ حضرت موی علاقات کا فالٹھٹ نے بھی مہم تھا کہ دہ ان کی طرف سانپوں کی شکل میں دوڑی چلی آر ہی جی اور اس سے حضرت موی کا ایکٹھٹٹ خوف زدہ بھی ہو گئے تھے۔

معو ذتین کی قرآنیت:

معو ذین کے قرآن ہونے پرتمام صحابہ تفظیف کی اجماع ہے اور عبد صحابہ تفظیف کی اجماع ہے اور عبد صحابہ تفظیف کی الم تبد صحابی تفظیف کے متعدد میں قطعی کسی شک و شبہ کی گنجائش نہیں، مگر حضرت عبد اللہ بن مسعود تفخیف کی المرتبہ صحابی تفخیف کی المرتبہ صحابی تفخیف ہے ان کوسا قط روایتوں میں یہ بات منقول ہوئی ہے کہ وہ ان دونوں سورتوں کو قرآن کی سورتیں نہیں مانے تھے اور اپنے مصحف ہے ان کوسا قط کردیا تھا، امام احمد، برزار، طبرانی ، ابن مردویہ، ابویعلی ،عبداللہ بن احمد بن شبل ،حمیدی ، ابوقیم ، ابن حبان ترجفہ کی فیرہ محدثین نے مقاف سندوں سے جن میں اکثر و بیشتر صحیح ہیں ، یہ بات حضرت عبداللہ بن مسعود سے قل کی ہے۔

قرآن میں مخالفین کاطعن:

ان روایات کی بنا پر مخالفین اسلام کوقر آن کے بارے ہیں شبہات ابھارنے اور طعن کرنے کا موقع مل گیا کہ معاذ اللہ یہ کتاب تحریف ہے محفوظ نبیس ہے؛ بلکہ اس میں جب بید وسور تیس عبداللہ بن مسعود تا تھا تھا تھا تھے۔ بیان کے مطابق الحاقی ہیں تو نہ معلوم اور کیا کیا حذف واضافے اس میں ہوئے ہوں گے؟

طعن کے جوابات:

قاضی ابو بکر تفقائنلگ تفایق با قل فی اور قاضی عیاض تفقائنلگ وغیرہ نے ان کے طعن کا یہ جواب ویا ہے کہ عبداللہ بن مسعود تفقائنلگ تفایق معوذ تین کی قرانیت کے منکر نہ تھے؛ بلکہ صرف ان کو مصحف میں درج کرنے سے انکار کرتے تھے، کیونکہ ان کے نزدیک مصحف میں صرف وہی چیز درج کی جانی چاہئے جس کے ثبت کرنے کی رسول اللہ بیلی تفقیق نے اجازت دی ہواورا بن مسعود تفقائنلگ تک ان کے درج کرنے کی اجازت کی اطلاع نہیں کینچی تھی۔

(قتح الباری صفحه: ۷۱،۱ ح: ۸)

یہ واضح رہے کہ ان کوبھی ان سورتوں کے کلام اللہ ہونے میں شہدنہ تھا، وہ مانتے تھے کہ بلاریب یہ اللہ کا کلام ہے اور بدشبہ
آسان سے نازل ہوا ہے، مگر ان کے نازل کرنے کا مقصد رقیہ اور علاج تھا، معلوم نہیں کہ تلاوت کی غرض ہے نازل کی گئی ہے یا
نہیں؟ اس لئے وہ یہ بچھتے تھے کہ ان کومصحف میں ورج کرنا اور اس کوقر آن میں شامل کرنا جس کی تلاوت نماز وغیرہ میں مطلوب

السیاری اس لئے وہ یہ بچھتے تھے کہ ان کومصحف میں ورج کرنا اور اس کوقر آن میں شامل کرنا جس کی تلاوت نماز وغیرہ میں مطلوب

السیاری اس لئے وہ یہ بچھتے تھے کہ ان کومصحف میں ورج کرنا اور اس کوقر آن میں شامل کرنا جس کی تلاوت نماز وغیرہ میں مطلوب

السیاری اس لئے وہ یہ بچھتے تھے کہ ان کومصحف میں ورج کرنا اور اس کوقر آن میں شامل کرنا جس کی تلاوت نماز وغیرہ میں مطلوب

ب، طاف احتياط ب، روح البيان شي " إنَّمة كَانَ لَا يَعُدُّ المُعَوَّ ذَنَيْنِ مِنَ الْقُرْآنِ وَكَانَ لَا يَكُتُبُهُمَا فِي مُصْحَفِه يَقُولُ إِنَّهُمَا مُنَزَّلَقَانِ مِنَ السَّمَاءِ وهما مِنْ كَلامٍ رَبِّ الْعالمين ولكن النبي صلى الله عليه وسلم كَانَ يَرُقى وَ يَعُودُ ذُبِهِمَا، فَاشْتَبَهُ عَلَيْهِ انَّهُمَا مِنَ الْقُرْآنِ فَلَمْ يكتبهما في مصحفه.

(روح البيان، صمحه ٧٢٣، ج: ٤، فوالدعثماني)

بهر حال ان کی بدرائے بھی شخص اور انفردی تھی ، اور جیسا کہ بزار نے نقل کیا ہے کہ کسی ایک صحابی تفقانلہ تفالی ہے ہی ان سے انفاق نہیں کیا ، حافظ ابن جمرفر ماتے ہیں "واجیب بساحت مسال انسهٔ کسان متوات افی عصر ابن مسعود تفقانلہ تفالی کی خصر ابن مسعود تفقانلہ تفالی کا اور صاحب معانی مسعود تفقانلہ تفالی "اور صاحب معانی فرماتے ہیں "وَلَعَلَ ابن مسعود وَ رَجَعَ عَن ذلك ". (نواند عندانی ملعمته)



وروالا مكريد ويركروه مراير سِوالناس بيماوهي سِت أيابٍ

سُوْرَةُ النَّاسِ مَكَّيَّةٌ او مَدَنيَّةٌ سِتُّ ايَاتٍ.

سورهٔ الناس مکی یامدنی ہے، چھآ بیتیں ہیں۔

يس على الله الرّخ الله الرّخ الله على الرّخ الله الله الله الله الرّخ النّاس في النّاس النّاس

سرافت اوران کے سینوں میں وسوسرڈ النے والے شیطان کے مالک کی (پناہ میں آتا ہوں) انسانوں کا ذکر خاص طور پران کی شرافت اوران کے معبود کی بناہ میں آتا ہوں) انسانوں کا ذکر خاص طور پران کی شرافت اوران کے سینوں میں وسوسرڈ النے والے کے شرسے پناہ چا ہے کہ مناسبت کی وجہ سے کیا گیا ہے، لوگوں کے باوشاہ کی اور وونوں جگہ مضاف الیہ کوزیادتی بیان کے لئے ظاہر کیا کی معبود کی، دونوں بدل ہیں یاصفت ہیں یاعظت بیان ہیں، اور دونوں جگہ مضاف الیہ کوزیادتی بیان کے لئے ظاہر کیا ہے، وسوسرڈ النے والے، پیچھے ہمٹ جانے والے شیطان کے شرے (پناہ چا ہتا ہوں) شیطان کا نام و سب و اس (یعنی معنی مصدری) رکھا گیا ہے، اس کے کثر مت سے وسوسرڈ النے کی وجہ سے، اس لئے کہ وہ چھپ جاتا ہے اور قلب سے پیچھے ہمٹ جاتا ہے ورقلب سے پیچھے ہمٹ جاتا ہے ورقل ہوتے ہیں وسوسرڈ النے کی وجہ سے، اس لئے کہ وہ چھپ جاتا ہے اور قلب سے پیچھے ہمٹ جاتا ہے ورقال ہوتے ہیں وسوسرڈ النے کی وجہ سے بندہ اللہ کا ذکر کرتا ہے، جولوگوں کے دلوں میں جب اللہ کے ذکر سے عافل ہوتے ہیں وسوسرڈ النا ہے (خواہ وہ)

جي-

ارقبیل جن ہو یا از قبیل انسان، یہ وسوسہ ڈالنے والے شیطان کا بیان ہے کہ وہ جنی ہے اور آئی ہے، جیسا کہ اللہ تعالیٰ کا قول شیساطین الإنس و الْجِنِّ، یا مِن الْجِنَّة (شیطان) کا بیان ہے اور الْغاس کا الوسو اس پرعطف ہے، اور ہرصورت میں، سورت ما قبل میں فہ کورلبید اور اس کی لڑکیوں کے شرکوشتمال ہے، پہلی صورت میں اعتراض کیا جاتا ہے کہ انسان، انسانوں کے قلوب میں وسوسہ ڈالنے ہیں؟ (تو اس اعتراض کا) جواب دیا گیا ہے کہ انسان بھی ایسے طریقوں سے وسوسہ ڈالنے ہیں جو بظاہران کے مناسب ہو، (مثلًا نمیمہ دغیرہ کے ذریعہ) پھران کا وسوسہ قلب تک ایسے طریقوں سے وسوسہ ڈالنے ہیں جو بظاہران کے مناسب ہو، (مثلًا نمیمہ دغیرہ کے ذریعہ) پھران کا وسوسہ قلب تک ایسے طریقوں سے وہوسہ ڈالنے ہیں جو بظاہران کے مناسب ہو، (مثلًا نمیمہ دغیرہ کے ذریعہ) پھران کا وسوسہ قلب تک ایسے طریقت سے پہنچ جاتا ہے جو ثبوت تک مفضی ہوتا ہے۔ (واللہ اعلم)۔

عَجِقِيق الْمِنْ الْمُ لَيْسَمُ الْحُ لَفَيْسِ الْمُ الْفَيْسِيرَى فَوَالِالْ

سورہ فلق اورسورہ الناس کی آیتوں کی مجموعی تعداد گیارہ ہے، یہ گرجوں ادرسوئیوں کی تعداد کے مساوی ہے، جو آپ ﷺ برسحر میں استعمال کی گئی تھیں۔

فَيُولِنَى ؛ قل اعود من خطاب أكرية بي التنظيم ألوب؛ مرامت كابرفرداس كامخاطب بـ

فَيْ لَكُونَا ؛ المناس اس كى إصل إناس ب،اس بهمزه صدف كرويا كياب_

قِيُولَكُ﴾؛ ومـناسبة لـلاستعاذة من شر الموسوس، كَانَّـةً قِيْـلَ، اَعْـوذُ مِنْ شَرِّ المُوَسُوسِ اِلَى النّاسِ بربهم الّذِي يَمْلِكُ امْرَهُمْ.

فِيُولِيْ ، مسلك السناس يبال تمام قراء كاحذف الف براتفاق ب، بخلاف سورهُ فانخد كرد مال اختلاف ب بعض الف كو حذف كرتے بين اور بعض باقی رکھتے ہيں۔

قِحُولِ ؟ زیادہ للبیان مزیدوضاحت کے لئے ہے، اس لئے کدرت کا اطلاق بعض اوقات غیراللہ پر بھی ہوتا ہے، جیبا کہ اللہ تفالی کے قول "إِنّ حدُول اللّٰہ عزید و مُعْبَانَهُمْ ازْبَابًا مِنْ دُون اللّٰه "اس لئے رب کی تین صفات لائی گئی ہیں ! تا کہ غیراللہ سے متاز ہوجائے ، ندکورہ صفات میں اونی سے اعلی کی طرف ترقی ہے، اس لئے کہ مربی سے لئے ملک ہونا ضروری ہیں ! مگر جو ملک ہوتا ہے، اور الله سب سے اعلی ہے، اس لئے کہ دیت اور مذلك سے لئے والله ہونا ضروری ہیں ! مگر الله سب عامل ہونا ضروری ہیں ! مگر الله ہونا ضروری ہیں ! مگر الله سب سے اعلی ہے، اس لئے کہ دیت اور مذلك سے لئے والله ہونا ضروری ہیں ! مگر الله کے لئے دید اور مذلك ہونا ضروری ہے۔

قِوَلَهُ ؛ من شر الوسواس بياعوذ كم تعلق بـ

فَيْوُلْكَىٰ ؛ سمی بالحدث نیخی موسوس کووسواس کها گیاہے یہ زید عدل کے قبیل ہے ہے ، کویا کہ زید سرایاعدل ہے ، ای طرح شیطان اس قدر دسوسہ ڈالیا ہے گویا کہ وہ خود دسوسہ وگیا ہے۔

فَيُولِكُ ؛ المحناس بيم الغدكا صيغه بي بهت زياده يجهي بلنن والاء اور بحناس شيطان كوبهي كتب بير-

قِحُولَكُم، وَيَتَاخِو بِيالْحِناسُ كُتْفَيْرِ ہِـــ

----- (زَئِزُمُ بِبَاشَرِدٍ) ≥-

ہوجا تاہے۔

لِفَيْ يُرُولِيْنَ مُ حَ

اس سورت کی نصیلت سابقہ سورت کے ساتھ بیان ہو چک ہے۔

ایک صدیت میں وار وہوا ہے کہ ایک مرتبہ ہی اکرم ظِلَقَافَتُنا کونماز میں ایک بچھونے کا ثباز سے فراغت کے بعد آپ ظِلَقَافَةُ اللہ نَا عَلَى اور نمک منگوا کراس کے اوپر مَلا اور ساتھ ساتھ (فُلْ ینایُّهَا الْکفِرون، قُلْ هُوَ اللّه اَحَدٌ اور قُلْ اعوذ ہوتِ الغاس) پڑھتے رہے۔ (معمع الزوالد)

قُلْ اَعُوْذُ بِوبِ الناسِ ، دِبِ '' پروردگار'' کامطلب ہے جوابتداء سے بی ، جَبکدانسان رحم مادر ہی میں ہوتا ہے اس کی تدبیر واصلاح کرتا ہے، اور بیاصلاح و تدبیر کاسلسلدزندگی بحرجاری رہتا ہے، پھر بیاصلاح و تدبیر چند مخصوص افراد کے سئے نہیں ؛ بلکہ تمام انسانوں ؛ بلکدا پی تمام مخلوق کے لئے کرتا ہے؛ یہاں صرف انسانوں کا ذکر اس شرف وضل کے اظہار کے سئے ہے جو تمام مخلوق پراس کو حاصل ہے۔

مَسلِكِ الْسنساس ، جوذ است تمام انسانوں؛ بلكه تمام مخلوقات كى پر درش اور تكہداشت كرنے والى ہے ، وہى اس لائق ہے كه كائنات كى حكمرانى اور بادشاہى بھى اس كے پاس ہو۔

الله المنساس ، اورجوتمام کا ننات کا پروردگار ہو، پوری کا ننات پراس کی باوشاہی ہو، وہی ذات اس کی مستحق ہے کہاس کی عبادت کی جائے اور وہی تمام لوگوں کا معبود ہو، چنانچے میں اس عظیم برتر ہستی کی پناہ حاصل کرتا ہوں۔

مِن شر الوسواس ، الوسواس بعض كنزد يك اسم فاعل السموسوس كمعنى ميں ہاوربعض كنزد يك بيذى الوسواس ہوں سے معنى ميں ہاوربعض كنزد يك بيذى الوسواس ہے، وَسُوسه مخفى آ وازكو كہتے ہيں، شيطان بھى نہايت غيرمحسوں طريقة ہے انسان كے دل ميں برى باتيں وال ديتا ہے، الوسوسہ كہا جاتا ہے والا بي شيطان كى صفت ہے جب اللّٰد كاذكركيا جاتا ہے تو بيكھسك جاتا ہے اور ذكر

﴿ ﴿ (مُرَامُ بِسَالِشَ إِنَّ ﴾

ے غفلت کی حالت میں واپس آ کردل پر چھاجا تاہے۔

مِنَ الجنة و الناس، بيوسوسه والنوال كي دوسمول كابيان ب شياطين الجن اور شياطين الانس.

شیداطیس البعن، کواللہ تعالی نے انسانوں کو گمراہ کرنے کی قدرت دی ہے، اس کے علاوہ ہرانسان کے ساتھ ایک شیطان اس کا ساتھی ہوتا ہے جواس کو گمراہ کرنار ہتا ہے، چنانچہ عدیث میں آتا ہے کہ جب آپ بیلی ہیں نے یہ بات فر ، کی تو صحابہ کرام نفو کا گفتا گفتا گفتا کہ یا رسول اللہ بیلی کا اللہ بیلی کا ایک کا تو صحابہ کرام نفو کا گفتا گفتا گفتا کہ یا رسول اللہ بیلی کا کہ کا وہ آپ بیلی کا کہ کا دہ کی کے فر مایا، ہاں! میر ہے ساتھ بھی ہے، لیکن اللہ نے میری مدوفر مائی ہے، وہ میرامطیع ہو گیا ہے، وہ مجھے خیر کے علاوہ کسی ہوتا کا حکم نہیں دیتا۔ (صحبح مسلم)

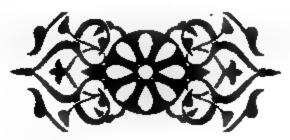
اسی طرح ایک حدیث میں آیا ہے کہ ایک مرتبہ آپ بیٹھ کاف میں تھے کہ آپ بیٹھ کا تا کا فرح نہ مطہرہ حضرت صفیہ دفع کا لئنگا کا نظام کا کہ ایک مرتبہ آپ بیٹھ کا نہیں جھوڑ نے کے لئے ان کے سفیہ دفع کا لئا کہ نظام کا نات کا دفت تھا، آپ بیٹھ کا نات کے لئے ان کے لئے ان کے لئے ان کے ساتھ کے ، راستہ میں دوانصاری صحابی حکو کا نات کے نال سے گذر ہے، تو آپ بیٹھ کا نات کو بلا یا اور فر مایا یہ میری اہلیہ صفیہ بنت جی دفع کا نات میں ، انہوں نے عرض کیا، یارسول اللہ بیٹھ کا ایک بابت ہمیں کیا بدگانی ہو سمی محفی ہوا کہ سفی ہوا کہ سمی کے خطرہ محسوس ہوا کہ سمیں دور تا ہے، مجھے خطرہ محسوس ہوا کہ سمیں دور تا ہے، مجھے خطرہ محسوس ہوا کہ سمیں دور تا ہے، مجھے خطرہ محسوس ہوا کہ سمیں دور تا ہے، مجھے خطرہ محسوس ہوا کہ سمیں دور تا ہے، مجھے خطرہ محسوس ہوا کہ سمیں دور تا ہے، مجھے خطرہ محسوس ہوا کہ سمیں دور تا ہے، محمد بعدری)

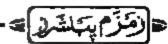
دوسرے شیطان انسی ہوتے ہیں، جو ناصح اور مشفق کے روپ میں انسانوں کو گمراہی کی ترغیب دیتے ہیں ، بعض لوگوں کا کہنا ہے کہ شیطان ، جنات کو بھی گمراہ کرتا ہے صرف انسان کا ذکر تغلیبا ہے۔

اے با ابلیس، آدم روئے ہست پی بہ ہر دیتے نہ باید داد دست

كالمجتزالفال

ٲڵڷۿٳڸڎڴۺؽۜٷؠؽٵڵڷؽػڴؽؽٳڷڣٙٳڵٷۼؚڵۿؚڮٙڿٙڵؠڲٳڂڿڵؽٵٵٵٷڡڒٳ ٷۿڴڰٛڔڿؿٵٛڵڶؿڒڴڒڮ؞ؽڮۮؿػٷڿٷڟڿۿٵڿۿڮٵڿڶٷڶؽٷؽڵڒۏؽ؆ ڵڟڐڵٷٲڟٳڷۿٳۅؙڶڿڶڸڮڿڴڸڮڿؿڴۯڵڮڸؽٵ۫ۼؽ





سُورَةُ الفَاتِحَةِ مَكِّيَّةُ، سَبْعُ ايَاتٍ. سورهُ فاتحكى ہے، مع بسم الله كسات آيتيں ہيں۔

يِسْسِيمِ اللّهِ الرَّحْسِينِ الرَّحِسِيمِ الْلَهُ عَمْدَة خَبُرِيَّة قُصِدَ بِهَا النَّنَاءُ على اللهِ يَخَمُدُوهُ واللَّهُ عَلَمْ عَلى بمن مُسْسُونِها مِن أَنَّهُ تَعَالَى مَالِكَ لِجَمِيْمِ الحَمْدِ مِنَ الخَلْقِ او مُسْتَحِقٌ لأن يَحْمَدُوهُ واللَّهُ عَلَمْ عَلى المَعْبُودِ بِحَقِّ رَبِّ الْعَلَمِيْنَ أَى سَالِكِ جَمِيمِ الخَلْقِ مِنَ الإنسِ وَعَالَمُ الْجِنِ الى غَيرِ ذَلِكَ و خُلِّب مى وَعَيْرِهِمْ وَهُومِنَ العَكْمَة وَالدُوا بَعْبُ مَعْلَقَ عَلَيْهِ عَالَمٌ يُقَالُ عَالَمُ الْإِنْسِ وَعَالَمُ الْجِنِ الى غَيرِ ذَلِكَ و خُلِّب مى جَمْعِ مِاليَاءِ وَالنَّون أُولُوا العِلْمِ عَلَى غَيْرِهِمْ وَهُومِنَ العَلَامَة لِأَنَّهُ عَلامَة عَلَى مُوجِده الرَّحْنِي الرَّحْمِيمُ الرَّحْمَةِ وهِى ادادَةُ الحَيْرِ لِاهْلِهِ مَعْلِيلِ لِمَن العَلَامَة عَلى مُوجِده الرَّحْمِي الرَّحْمَةِ وهِى ادادَةُ الحَيْرِ لِاهْلِهِ مَعْلِيلِ لِمَن العَلَامَة عَلى الجَزَاءِ وهُو يَوْمُ القِيمَةِ وَخُصَّ بِالذِكَ وَالدَّلُ الدَّوْمَ لِلْهُ وَمَن العَلَامَة وَلَى المَعْرَاءِ اللَّهُ اللَّهُ وَمَلُ التَّهُ اللَّهُ مُعْلَقُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ مَعْنَامُ مَالِكِ المَعْرِفَةِ إِلَيْكَ وَعُلَامَة عَلَى مُوجِدِ وغيره ونظُلُ وَقُوعُهُ مِفَةً لِلمَعْرِفَةِ إِلَيْكَ لَعْمُ مُوجِدِ وغيره ونظُلُب وَقُومُ المَعْرِفَةِ إِلَيْكَ نَعْمُ اللّهِ المَعْرِفَةِ إِلَيْكَ لَعْمُ الْعَلَى المَعْرِفَةِ إِلَيْكَ وَعُومُ وَعَلَى المَعْرِفَةِ إِلَيْكَ وَعُومُ وَالْمُلْكُ الدَّهُ مُن وَعَيْرِهِ وَعُومُ اللّهُ الْمَالُ الْمَالِ الْمُعْرِفَةِ إِلَيْكَ وَعُرَامُ وَاللّهُ الْمُعْرِفَة وَعَلَامُ اللّهِ الْمُعْرِفَةِ إِلَيْكَ وَعُرِهُ وَاللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الْعَرِفَةِ إِلَيْكُ وَاللّهُ اللّهُ الْمُعْرِفَةِ إِلَيْكُ اللّهُ المُعْرِفَةِ إِلْمُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللللّهُ الللّهُ الللّهُ اللللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ الل

ت برائی میں اور کے کرتا ہوں اللہ کے تام سے جو بڑا مہر بان نہایت رقم والا ہے ، ہرتعریف خدا بی کومز اوار ہے ، یہ جملہ ا خبریہ ہے،اس جملہ ہے اس کے مضمون کے ذریعہ خدا کی تعریف کا قصد کیا گیا ہے، بایں طور کہ الند تعالیٰ تمام مخلوق کی تعریف کا ما لک ہے یا اس کامستحق ہے کہ اس کی حمد بیان کی جائے ،اورالقد معبود حقیقی کاعلم ہے جوتمام عالموں کا رب ہے بیعن وہ تمام مخلوق کا ما لک ہے،خواہ انس ہول یا جن اور ملائکہ اور حیوا نات وغیرہ اور ان میں ہے ہرایک پر عالم کا اطلاق کیا جاتا ہے، کہا جاتا ہے، عالَم الإنسس، عالم البعن و على هذا القياس (عالم) كى ياورن كرماته جمع لائے ميں، ذوى العقول كوغيرذوي العقول برغلبدد يا كيا ہے اور (عَسالَم) علامة عيمشنق ب،اس لئے كه (عَسالَم) الين ايجادكرنے والے برعلامت بروا مبر بان نہایت رحم والا ہے بعنی رحمت والا ہے اور'' رحمت' مستحق خیر کے ساتھ خیر کے ارادے کا نام ہے، یوم جزاء کا مالک ہے، اوروہ (یوم جزاء) قیامت کا دن ہے اور یوم جزاء کو خاص کرنے کی ہے وجہ ہے کہ اس دن بظاہر اللہ کے سواکسی کی ملک نہیں ہوگی ، لِمَن الْمُلْكُ الْمَوْم؟ لِلله! كى دليل عاور جن لوگول في حالك يوم المدين برُها عِنْوَاس كِمعنى بين، قيامت كون وہ تمام امور کا مالک ہے لیعنی وہ مالکیت کی صفت کے ساتھ ہمیشہ متصف ہے جیسا کہ غلاف الذنب میں ،الہذاس کامعرفہ کی صفت واقع ہونا سیجے ہے، ہم تیری عبادت کرتے ہیں اورصرف تجھ بی ہے مدد چاہتے ہیں، ہم تجھ ہی کوعبادت کے لئے خاص کرتے ہیں جو کہ وہ تو حید وغیرہ ہے اور عبادت وغیرہ پر تجھ ہی سے مدد حاسبتے ہیں ، ہمیں سیدھی راہ دکھا، لیعنی راہ متنقیم کی طرف رہنمائی فرما،اور صراط الذین، الصواط المستقیم ہے بدل ہے،ان لوگوں کاراستہ جن پرتونے ہدایت کے ذریعہ انعام قر ما یا اور اللذین مے مع اس کے صلہ کے غیر المسمعضوب عَلَیْهِمْ بدل ہے، ان کی نہیں جن پرغضب کیا گیا اوروہ یہود ہیں اور نہ گمراہوں کی اور وہ نصاریٰ ہیں اور نکتہ بدل قر اردینے میں اس بات کا فائدہ پہنچانا ہے کہ یہود ہدایت یا فتہ نہیں ہیں اور نہ تُصاري بين، واللُّه اعلم بالصواب واليه المرجع والمآب وصَلَّى الله عَلَى سيدنا محمد وعلى آلِه وأصحابه الطَيّبيْنَ الطَّاهِرِيْنَ صلوةً وسَلامًا دائمَيْن مُتَلَازِمَيْنِ إلى يَوْمِ الدِّيْن و الحمد للله رب العالمين. اورهيقت عال ہے اللہ ہی واقف ہے اور وہی مرجع اور ٹھکا نہ ہے، اللہ کی رحمت ہو ہمارے سردار محمد بین اور آپ کی یا کیزہ اور سقری آل اصحاب پر ہمیشہ باہم پیوستہ تا قیام قیامت درود وسلام ہواور سب تعریفیں اللہ کے لئے ہیں جو تمام عالموں کارب ہے۔ ---- ﴿ [وَمُؤَمُّ بِبَالثَمْ إِنَّ اللَّهِ إِنَّ اللَّهِ إِنَّ اللَّهِ إِنَّ اللَّهِ إِنَّ اللَّهِ

جَّقِيق ﴿ لِيَهِ لِيهِ اللَّهِ الللَّاللَّمِ اللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ اللل

فَيُولِكُ ؛ سبعُ آباتِ بِالْبَسْمَلَةِ المَامِ ثَافِقَ رَحْمُ لَلْلُهُ تَعَالَىٰ كَيهال چونكه بسم الله سوره فاتحك ايك آيت ب،اس وجه سے ماتوي آيت، صراط الذين سے آخرتک ب،اوراحناف كنزديك بسم الله سوره فاتحكا چونكه جزئيس ب،اس لئے ماتوي آيت غير المغضوب عليهم سے آخرتک ہے۔

فَيْخُولْنَى ؛ المحسمد الله خَبُرية ، خَبرية كاضافه كامتصدية تاناب كـ "الجمدالله "افظا جملة جريب، اس كى تقدير المحمد ثابت لله باور فصد بها النفاء النع كاضافه كامتصدية تاناب كه فذكوره جمله معنا انشائيه ب، جس كمضمون سالله ك حديان كرف كاقصد كيا تياب مدينان كرف كاقصد كيا كياب -

قِی کُولِی ؛ مِنْ انه تعالیٰ مالك لجمیع الحمد من المحلق اس جمله كاضافه كامقصد مضمون جمله كی تعین كرنا ب، يعنی الله تعالى الله كام مناك الله به اس صورت می الله كالام ملك كے لئے ہوگا۔

قِوْلَكُ ؛ قُصِدَ بِهَا النفاء مفسرعلام كامقصدال عبارت الكمشهورسوال كاجواب ويناب-

ایک خرسے مخرکا مقصد خاطب کو یا تو خبر کافا کدہ پہنچانا ہوتا ہے، اس کواصطلاحی زبان میں فا کدۃ الخبر کہتے ہیں مثلا ایک خص کہتا ہے زید قائم اگر خاطب قیام زید سے واقف ہوجائے گا،
اوراگر مخاطب خبر ہے واقف ہوں اسے لازم فاکدۃ الدر اگر مخاطب خبر ہے واقف ہوں اسے لازم فاکدۃ الخبر کہتے ہیں، مثلاً مخبر کہتا ہے "خو فظ ست القر آن" تو نے قرآن حفظ کرلیا ، مخبر کا مقصد مخاطب کو یہ بتانا ہے کہ میں اس الخبر کہتے ہیں، مثلاً مخبر کہتا ہے "خو فظ ست القرآن" تو نے قرآن حفظ کرلیا ، مخبر کا مقصد مخاطب کو یہ بتانا ہے کہ میں اس بات سے واقف ہوں کہ تو نے قرآن حفظ کرلیا ہے، فاہر ہے کہ جس نے قرآن حفظ کیا ہے اسے یہ بتانے کی کوئی ضرورت نہیں کہتونے قرآن حفظ کرلیا ہے، بلکہ اسے اپنی باخبر ہونے کی خبر و یتا ہے، جے علم معانی کی زبان میں لازم فاکدۃ الخبر کہتے ہیں۔ مذکورہ تفصیل کے بعد آپ غور کریں کہ "المحد للذ" جملہ خبر ہے ہے، مگر دونوں نہ کورہ فاکدوں سے خالی ہے، نہ تواس

ے فائدة الخبر حاصل بور ہا ہے اور ندلازم فائدة الخبر ،اس لئے کدید بات کہ جمعے محامد کاستی اللہ تعالی ہی ہے،سب کو
معلوم ہے، البذان الحمد اللہ اللہ مقصدا خبار بفائدة الخبر ندہ وگا ،اورید بات بھی ظاہر ہے کہ متکلم کا مقصدیہ بھی نہیں کہ وہ مخاطب
کوید بتائے کہ میں اس بات سے واقف ہوں کہ جمتے محامد کاستی اللہ تعالیٰ ہے، تو معلوم ہوا کہ الحمد اللہ ، جو کہ جملہ خبر بیہ ہو ،
وونوں تہ (فائدة الخبر اور لازم فائدة الخبر) ہے قالی ہے اور جو جملہ خبر بید دنوں تہم کے فائدوں سے فالی ہو، وہ لغو ہوتا
ہے، اور اللہ تعالیٰ کا کلام اس سے منزہ ہے، لبذا اس جملہ کو انشائیہ وٹا چا ہے جبیا کہ قاضی مبارک شاہ رَحِمَلُ لللهُ تعالیٰ نے شرح تہذیب کے ماشید میر زادہ میں افتیار کیا ہے، حَیْثُ قال الحسمد للله بحقمل الانشاء و الا حبار و الا و ل
او فَقُ بالحدیث وَهُوَ قوله علیه السلام "کُلُّ اَمْرِ ذِیْ بَال". (الحدیث)

جِيَحُ لَهُنِيْ عاصل جواب بيہ كه جمله خبر بيہ سے مذكورہ دونوں فائدوں بيں ہے كى ايك فائدہ كا حاصل ہونا اس وقت ضرورى ہوتا ہے جب كه مخبركا مقصداعلام (اخبار) ہو، اور يبال مقصدانشاءِ ثناء ہے نه كه اخبار، اور جمله خبر بيہ به اوقات فائدۃ الخبر اور لازم فائدۃ الخبر كے علاوہ ديكرمقاصد كے لئے بھى لاياجا تا ہے جبيا كه اللہ تعالى كے تول " دَبِّ اَنبى وَ صَفَعْتُهَا أَنْفَى" بيہ جملہ خبر بيہے مجرمقصدا ظهار حسرت ہے نه كہ فائدۃ الخبر اور نہ لازم فائدۃ الخبر۔

خلاصة الكلام:

رد کی مہلی دلیل: رد کی چہلی دلیل:

ردى پہلى دليل بيے كه جمله انشائيه الى بات پردلالت كرتا ہے كه الى كامضمون زمانة استقبال سے متعلق ہے؛ لہذا المحمد لله كامفہوم، ايجاد المحمد في زمان المستقبل ہوگا اور يقيم زمان كے منافی ہے جوكه "المحمد لله" بي معتبر ہے، الله كے كه جمله فعليه سے معدول كرنے كامقصد بى بيہ كه دوام واستمرار پردلالت كرے نه كه حدوث وتجدد پر۔

وسری دلیل:

دوسرى دكيل بيب كه جمله انشائية خواه اسميه بوجي مسلام عليكم يافعليه بوجيها كه نعمر الرجل زيد، وه بهر حال قائل كى جانب سے عدوت مضمون پر دلالت كرتے ہيں، ندكه غير قائل كى جانب سے البذا" سَلَام عَلَيْ عَسلَيْ عَسلَيْ عُرْن كَمْ عَن الله عَلى جانب سے البذائ المعدم مِن المعتكلم دون غيره بول كے احداث المعدم مِن المعتكلم دون غيره وربي حامد كى حمد كمنافى م جوكه "السحمد للله" ميں حذف فاعل ما معجول الله ين حلى نه

المخبرية كهدكر فدكوره دونو ل اعتراضول كود فع كرديا به والله اعلم بالصواب في كله المعالى المعتراض المعتراض المعتراض والمعتراض والله المعتمدة والمعتمدة والمع

اعتراض: تمام محامد کا اختصاص الله تعالی کے لئے'' الحمد'' کے الف لام سے مستقاد ہے خواہ الف لام استغراق کا ہویا جنس کا جس کی تفصیلی تقریریوں ہے:

عتراض کی تقریری:

﴿ (مُزَمُ بِبَالشَّرْزِ) ◄

بہاشق کواختیار کر کے جواب کی تقریر:

جواب سے کہ حمد کے تمام افراد اللہ تعالیٰ کے ساتھ خاص ہیں باعتبار ملک اور خلق کے، بایں طور کہ ہر حمد خواہ وہ خالق ہے صادر ہو یا مخلوق سے وہ اللہ ہی کی مخلوق اور مملوک ہے، اس لئے کہ اٹل حق کے نزد یک اللہ کی ذات اور اس کی صفات کے سواہر شک کا خالق اللہ تعالیٰ ہے اور غیر اللہ دھیقۂ نہ کسی ہی کا خالق ہو سکتا ہے اور نہ مالک؛ لہٰذا جمیع محامد کا اختصاص باعتبار خلق اور ملک سے اللہ ہی کے ساتھ ہوگا ، نہ کہ باعتبار نسبت کے؛ لہٰذا ریا ختصاص حقیقت کے اعتبار سے ہوگانہ کہ ظاہر اور نسبت کے اعتبار ہے۔

دوسری شق کواختیار کرنے کی صورت میں جواب:

دوسری شق بیہ ہے کہ حمد کے تمام افراد اللہ تعالیٰ کے ساتھ مخصوص ہیں، مجمود ہونے کے اعتبار سے اور یہ اختصاص لفس الامری وقوع کے اعتبار سے نہیں ہے، (یعنی فی الواقع ایسا ہویہ بات نہیں ہے) بلکہ استحقاق کے اعتبار سے ہے، یعنی تمام محامد کا استحقاق اللہ تعالیٰ ہی کے ساتھ خاص ہے، اللہ کے علاوہ کوئی بھی، حمد کے کسی فرد کا مستحق نہیں، اس لئے کہ حمد کا استحقاق خیر کی وجہ سے ہوتا ہے اور خیراللہ ہی کی طرف سے ہے، خواہ انسان کے کسب کے اعتبار سے ہو، بایں معنی کہ اس کے کسب علیہ انتقاق خیر کی وجہ سے ہوتا ہے اور خیراللہ ہی کی طرف سے ہے، خواہ انسان کے کسب واضیار کو بالکل وخل نہ ہو (جیسے پیدائش کسب میں بندے کے کسب واضیار کو وخل نہ ہو (جیسے پیدائش کسب میں بندے کے کسب واضیار کو بالکل وخل نہ ہو (جیسے پیدائش کسب میں بندے کے کسب یہ بات ثابت ہوگئی کہ اختصاص بطریق استحقاق ہے، تو بیاس کے منافی نہیں ہے کہ حمد کے بعض افراد غیراللہ کے لئے ثابت ہوں؛ لہٰذااگر پچھوٹوگ بنوں کی یا کو کب یاد گیر مظاہر کی بندگی اور ان کی حمد وثناء کرتے ہیں تو بیاللہ تعالیٰ کے لئے تمام افراد حمد کے استحقاقی طور پراختصاص کے منافی نہیں ہے۔

فَيْحُولِكُمْ ؛ وَاللّه عَلَمْ على المعبود بعق ، يعنى الله معبود برحق كاعَلَمْ (نام) بِ مِفسرعلام جلال الملة والدين في لفظ الله كي تشريح عَلَمٌ على المعبود بعق سے كركے ايك اعتراض كاجواب ديا ہے۔

اعتراض: اس مقام (بعنی السحه مد لله) میں لفظ اللہ کودیگر صفاتی ناموں (مثلاً خالق، رازق وغیرہ) کے مقابلہ میں کیوں اختیار کیا؟ ہا وجود یکہ صفاتی نام ذات مع الصفات پر دلالت کرتے ہیں؟

جَوَّلْ بِنِيَّ جُوابُ كَا حَاصَل بِهِ بِ كَهُ أَلَكُ الْكِهِ الْكِهِ عِوْمَتُحُصْ كَانَام بِ، جَوْمَام صفات كمال كوجامع بو، الله كے علاوہ ديم تمام نام صفاتی ہيں اگر الله کے بجائے کی صفاتی نام كوافقيار كرتے تو کسی كو بيرہ بم بوسكنا تھا كہ الله ای صفت كی وجہ ہے ستحق حمد ہے نہ كہ اپنی ذات کے اعتبار ہے ، اس لئے كہ کسی حکم كا کسی وصف ہے متعلق ہونا ، اس بات پر دلالت كرتا ہے كہ بيوصف ہى اس حكم كا علمت ہے ، اور بيا باطل ہے ، اس لئے كہ الله تعالى جس طرح اپنی صفات كے اعتبار ہے ستحق حمد ہے اس طرح وہ اپنی مجرو ذات کے اعتبار ہے ہے کہ عمل طور پر متحق حمد ہے۔

قِيَّوْلِكَ، رُبِّ العلمين، اى مَالِكِ، رُبِّ مصدر بِ بمعنى تربية ، وَبَ كوالله كى صفت بطور مبالغدلا يا كيا ب، رب كمتعد

: (صَرَّمُ بِسَاشَ فِيَ

معانی آتے ہیں،سید، مالک،معبود، مسلح وغیرہ،مناسب مقام کی وجہ سے مفسر علام نے مالک کے معنی کو اختیار کیا ہے،لہذارب کے اللہ رحمل کے عدم جواز کا اعتر اض نہیں ہوسکتا۔

میر کوال ؟: عالم مفرد ہونے کے باوجود کا سُنات کے ہر فر دکوشال ہے،اس لئے کہ عالم اسم جنس ہے تو اس کی جمع لانے کی کمیا ضرورت تھی؟ جِحُولَ شِيْ جَمْع كاصيغه اس كِيَالا يا كياتا كه اسي ما تحت اجناس مختلفه كوصراحة شامل موجائه

سَيْنُوالْ: عالممين كى جمع يا، ك كساته كيول لائ بي، جب كه عالم من غير ذوى العقول كى تعدادزياده باورذوى

جِجُولِ شِيعٌ؛ ذوی العقول کی شرافت کی وجہ سے غیر ذوی العقول پرغلبہ دینے کی وجہ سے اس کی جمع یاء، ن کے ساتھ لا أی گئی ہے۔ فِيْ فُلْ الله الله الحدو، لا هله مغسرعام كاس اضافديم مقصدا يكسوال كاجواب --

الميكوان، رحمن اور رحيم دونون مبالخ كے صيغ بين اور رحمة عيمتن بين، رحمة كمعنى بين رقت قلب اور يصغت باری تعالی میں متنع ہے۔اس لئے کہ رفت قلب کے لئے قلب کی ضرورت ہوگی اور قلب کے لئے جسم کی ضرورت ہوگی ،اورجس كاجسم ہوتا ہے وہ مجسم ہوتا ہے! حالا نكداللد تعالى جسم اور جسمانيات سے منز واور پاك ہے؟

جِيَّوُلْ بُنِيْ: الله تعالىٰ كے لئے رحمت كا اطلاق عابت اورانجام كے اعتبارے ہے بعنی رفتت قلبی كا انجام اور نتيجه خيرير آماده كرنا ہوتا ب؛ للبذارحمت بول كرانجام رحمت مرادب_

هِ وَلَكُمْ ؛ مَلِكِ يوم الدين ، مَلِكِ شن دوقر اوتين بن ، أيك الف كما توليني مَالِكِ يوم المدين اور دوسري حذف الف کے ساتھ، لیعنی مَسلِكِ يَوْم الدين، دوسری قراءت میں کوئی اشكال نہیں ، لیعنی وہ روز جزاء کا بادشاہ ہے ، پہلی قراءت لیعنی مالِكِ بوم المدين ميں اشكال ہے۔

اَنَهِ كَالَىٰ: مَالِكِ اسم فاعل ہےاس كى اضافت اضافت لفظيه موتى ہے، جوكه مفيد تعريف نہيں موتى ؛ للبذااس كاالله كى صغت بنتا ر رست نبیس ہے، اس کئے کہ اللہ معرف ہے اور مالك يوم الله ين محره ، اور محرف كى صفت واقع نبيس موسكت؟

جِحُولَثِيْ براب كاحاصل بيب كداسم فاعل ي جب حال يا استقبال كا قصد كيا جائة واضا فت لفظيه موتى ب اوراكر ماضي يا ۔ دام داستمرار کا ارادہ کیا جائے تو بیاضا فت هیقیہ ہوتی ہے جو کہ مفیدتعریف ہوتی ہے اور چونکہ اللہ تعالیٰ کی تمام صفات میں استمرار وردوام بى مراوبوتا ب؛ للبدااب كوكى اشكال تبيس-

غِوُلَكُونَ وخص بالذكر المن المنع اس عبارت سي بهى ايك سوال كاجواب مقصود بـ

يَهُوْإِلَ، مالك يوم الدين من يوم جزاء كي تخصيص كيول كي تل يجبكه الله تعالى تمام زمان ومكان كاما لك ب؟ جَجُولَ شِيْءِ: جواب كا حاصل بدہے كه يوم جزاء كے علاوہ دنيا ميں انسانوں كى بھى ملكيت ہوتى ہے،اگر چەمجازى اور عارضى ہى سہى وريوم جزاء ميس كس كى ملكيت عارضى اورمجازى بھى نە بهوگى، قيامت كروز الله تعالى سوال فرمائيس كے لِمن المملك الدوم؟

﴿ ﴿ وَمُؤَمِّ بِهَا لِشَرْدًا ﴾ -

اورالله تعالى خود بى اس كاجواب بهى عنايت فرما كيس ك "لِلهِ الواحد القهّاد "مفسرعلام نے آپ تول: لا ملك ظاهرًا فيه لِاَ حَدِ إِلَّا لَهُ تَعالىٰ سے اى جواب كى طرف اشاره كيا ہے۔

قِوُلْكَ ؛ نسخت بالعِبَادةِ النع اس اضافه كامقصدية تاناب كراياك مفعول كى تقديم بخصيص پرولالت كرفي لئے اس اصل ميں نعبُدك تھا۔

فَيُولِنَّى ؛ اى ارشدنا اليه اى البقاعليه، ارشاد بمعنى اثبات باس كے كه بدايت تو عاصل بوچى بهذااب اس بردوام عطام فرمار

قِوُلِيْ : وَيُبَدَلُ منه (صراط الذين انعمت عليهم) يه بدل الكل من الكل ب، اس كو الصراط المستقيم كى مدح و تاكيد ك لئے لايا كيا ہے۔

فَيُولِكُ ؛ يُبْدَلُ من اللّذِين بِصلته النبي الذين مع الين صلك مبدل منه ما ورغير المعضوب عليهم اس م برل مي اس مين مبدل منه عرفداور بدل تكروم جوكد درست نبين م

ؾٙڣٚؠؙڒ<u>ۅۘڷۺٛؠؙ</u>ڿ

سورة الفاتحة مكية سبع آيات بالبسملة. سورة فاتحكى ب،مع بسم الله سات آيتي بير-

قرآنی سورتول کوسورت کہنے کی وجہ تسمیہ:

سورة كِ لفظى معنى بلندى يابلند منزل كے بين، السُّوْرَةُ: الرفيعة (لسان) السورة المغزلة الرفيعة (راغب) كوبا برسورت بلندم تبكانام ب،سورة كے ايك معنى فصيل (شهريناه) كے بين، سورة السديدنة، حَائطُهَا (راغب) قرآنی

الفاتحة:

ف انتحة کے لفظی معنی ہیں ابتداء کرنے والی ،قر آن مجید کی اس پہلی سورت کو بھی فاتحدای وجہ سے کہا جاتا ہے، گویا کہ بید و يباچه تر آن ہے، قر آنی سورتوں کے نام بھی تو قیفی ہیں اور ایک ایک سورت کے کئی کئی نام بھی ہیں، (وقد ثَبَتَتْ جميعُ اسماءِ السُّورِ بِالتَّوْقِيْفِ مِنَ الْأَحَادِيْثِ وَالْآثَارِ).

سورۃ الفاتحہ کے متعدنام احادیث میں آئے ہیں ، بعض حضرات نے ان کی تعداد ہیں تک پہنچائی ہے ، ان میں سے چند مشہورنام بیرہیں۔

① سورة الشفاء، ۞ سورة الوافية، ۞ ام القرآن، ۞ سورة الكنز، ۞ الكافيه، ۞ السبع

سورهٔ فاتحه کے فضائل وخصوصیات:

سورۂ فاتحہ قرآن کی سب سے پہلی سورت ہے، اور مکمل سورت کی حیثیت سے نزول کے اعتبار ہے بھی پہلی سورت ے، غالبًا اس وجہ سے اس سورت کا نام سورہ فاتحدر کھا گیا ہے، اس کی خصوصیت بدہے کہ بیسورت ایک حیثیت سے پور ہے قر آن کامتن ہےاور پورا قر آن اس کی شرح ؛ بیسورت اینے مضمون کے اعتبار سے ایک دعاء ہے ، ایک طالب حق کو جا ہے کہ حق کی تلاش وجنتجو کرتے وقت ہید عاء بھی کرے کہ اسے صراط متنقیم کی ہدایت عطا ہو، دراصل بیا یک د عاء ہے، جو ہراس شخص کوسکھائی گئی ہے جوحق کا متلاشی ہو، اس بات کوسمجھ لینے کے بعدید بات خود بخو د واضح ہو جاتی ہے کہ قرآن اور سور و فاتحہ کے درمیان صرف کتاب اور اس کے مقدمہ کا سابی تعلق نہیں ؛ بلکہ دعاء اور جواب دعا ء کا سا بھی ہے،سورۂ فاتحہ بندے کی جانب ہےا بک دعاء ہے،اور قر آن اس کا جواب ہے۔خدا کی جناب میں، بندہ دعاء كرتا ہے كہاہے پروروگار! تو ميرى رہنمائى كر، جواب ميں الله تعالى پورا قر آن اس كے سامنے ركھ ديتا ہے كہ يہ ہے وہ ہدایت اور رہنمائی جس کی ورخواست تونے مجھے کی ہے۔

اس سورت كى ابتداء، المحمد لله رب العالمين كركاس بات كي تعليم دى كئ بكر دعاء جب ما تكو، تو مہذب طریقہ سے مانگو میرکوئی تہذیب نہیں ، کدمنہ کھولتے ہی حجت اپنا مطلب پیش کردیا ، تہذیب کا تقاضہ یہ ہے کہ جس سے دعاء کررہے ہو پہلے اس کی خوبیوں کا ،اس کے احسانات اور اس کے مرتبے کا اعتراف کر دپھر جو پچھے مانگنا ہو شوق ہے مانگو۔

بسم الله ي متعلق مباحث:

بہم اللہ کے بارے میں اختلاف ہے کہ آیا یہ ہرسورت کی مستقل آیت ہے یا ہرسورت کی آیت کا حصہ ہے یا صرف سور ہ فاتحد کی ایک آیت ہے، یا کسی بھی سورت کی مستقل آیت نہیں ہے بلکہ ایک سورت کو دوسری سورت ہے متاز کرنے کے لئے ہرسورت کے آغاز میں کبھی جاتی ہے؟ قراء مکہ و کوفہ نے اسے ہرسورت کی آیت قرار دیا ہے، جب کہ قراء مدید ہورہ وشام نے اسے کسی بھی سورت کی آیت تسلیم نہیں کیا سوائے سور ہمل کی آیت ۳۰ اے کہ اس میں بالا تفاق بھی ہورت کا جری نمازوں میں اس کے اونچی آواز سے پڑھنے میں بھی اختلاف ہے بعض اونچی آواز سے پڑھنے کھی اختلاف ہے بعض اونچی آواز سے پڑھنے کھی اختلاف ہے بعض اونچی آواز سے پڑھنے کھی اختلاف ہے بعض اونچی رائے قرار دیتے ہیں۔

سورة فاتحه كےمضامين:

سورہ فاتحہ سات آبنوں پرمشمل ہے جن میں ہے پہلی تین آبنوں میں اللہ تعالیٰ کی حمہ وثناء ہے اور آخری تین آبنوں میں انسان کی طرف سے دعاء و درخواست کامضمون ہے جواللہ رب العزت نے اپنی رحمت سے خود ہی انسان کوسکھایا ہے اور درمیانی آبت دونوں چیزوں میں مشترک ہے،اس میں کچھ حمد کا پہلو ہے اور کچھ دعاء و درخواست کا۔

اهدنیا المصواط المسقیم بیابک بری اورجامع دعاء ہے جس چیز کی اس میں دعاء کی گئی ہے اس ہے کوئی فرد بے نیاز نہیں ،اوروہ ہے' صواط مستقیم'' صراط منتقیم کی ہر کام میں ضرورت ہوتی ہے خواہ دین کا ہویا دنیا کا ،اب رہی ہیہ بات کہ وہ صراط منتقیم ہے کیا؟ اس کی نشاند ہی اگلی آیت میں کی گئی ہے۔

صراط المذين انعمت عليهم لين ان ان الوكون كاراسة كه جن مين افراط وتفريط نه مو،اوروه، وه لوگ بين جن پرتو نافعام فرمايا، اوران منعم عليهم كوايك دوسرى آيت "الكذين اَنَعَمَ الله عَلَيهم" (الآية) مين بيان كيا كيا به العنى وه لوگ جن پرالله تعالى كا انعام بوا، يعنى اخياء اور صديقين اور شهداء اور صالحين _مقبولين بارگاه كه بيرچار درجات بير جن مين سب سياعلى اخياء بيراه المين _ معلى اخياء بير جن مين سب سياعلى اخياء بيراه المين _ معلى اخياء بيراه مين المين مين المين مين المين المين مين المين ا

اس آیت میں پہلے مثبت اورا بیجا بی طریق سے صراط متنقیم کو تعین کیا گیا ہے کہ ان چارطبقوں کے لوگ جس راستہ پر چلیں و،

المَزَم بِهَ الشَّرْدَ عِن السَّرْدَ عِن السَّرِيرَ عِن السَّرِيرَ عِن السَّرِيرَ عِن السَّرِيرَ عِن

صراطمتنقیم ہے،اس کے بعد آخری آیت میں سلبی طریقہ براس کی تعیین کی گئے ہے؛ چنانچارشادفر مایا:

غیس السمنعضوب علیهم و لا المضالین یعنی ندراسته ان اوگول کاجن پرآپ کا خضب نازل بوا، اور ندان اوگول کاجوراسته سے بھٹک گئے، منعضوب علیهم سے وہ اوگ مراد ہیں جودین کے احکام کوجانے بہچانے کے باوجودشرارت یا نفسانی اغراض کی وجہ سے ان کی خلاف ورزی کرتے ہیں، جیسا کہ عام طور پر یہود کا یہی حال تھا کہ دنیا کے ذلیل مفاد کی خاطر دین کو قربان کرتے اور انبیاء پینبائلا کی تو بین کرتے تھے۔ اور حضالین سے وہ اوگ مراد ہیں جو ناوا تفیت اور جہالت کے سبب دین کے معاملہ میں غلطراسته پر پڑگئے ہیں، جیسا کہ نصاری کا عام طور پر یہی حال تھا کہ ناوا تفیت اور جہالت کے سبب دین کے معاملہ میں غلطراسته پر پڑگئے ہیں، جیسا کہ نصاری کا عام طور پر یہی حال تھا کہ نی کی تعظیم میں اسے برصے کہ انہیں خدا بنالیا، اور دوسری طرف نظم کہ اللہ کے نبیوں کی بات نہ مانی ؛ بلکہ انہیں قبل کرنے تک سے گریز نہ کیا۔ (واللہ اعلم بالصواب)

गिरं

الحمد الله، كتفسير جلالين كے نصف ثانی كی تشریح وتو شیح آج بتاریخ ۱۹ صفر المظفر بروز چہار شغبه بعد نماز عشاء ۱۳۲۴ ه مطابق ۱۲۲/۲۲ بل ۲۰۰۳ ءاختیام پذیر یہوئی۔

خدا کی دی ہوئی مہلت کو خفلتوں اور گنا ہوں ہیں ضائع کرنے پر جتنا بھی افسوس کیا جائے کم ہے، گرفتدم فتدم پر انعامات اور رحمتوں کی ہارش اور اپنی کتاب کی خدمت کی تو فیق کا جتنا بھی شکر اوا کیا جائے کم ہی ہے، آخر میں دست بدعاء ہوں کہ اللہ تعالیٰ اس حقیری کا وش کو قبولیت سے نواز کر قبول عام عطافر مائے ،اوراہے اس سیاہ کا رکی بخشش اور والدین کے رفع ور جات کا ذریعہ بنائے اور نصف اول کی خدمت کی تو فیق عطافر مائے۔ (آمین)

بندهٔ ناچیز محمد جمال سیفی بن کلیم شیخ سعدی سیفی استاذ دارالعلوم دیو بند، سهار نپور یویی ،انڈیا



